हो ! तुम महारथी हो तुमकूं योग्य होय सो ही युद्ध करो। तासमय वसुदेव श्वसुरसूं कहते भये हे पूज्य ! मुझे एक रथ दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्रनिकरि पूरण शीघ्र ही देवो अर मोहि आज्ञा करो कि कौन दिशि इन भूपनितैं युद्ध करूं यह कुलवंते मेरे अकुलीनके वाण संहारें। यह वचन वसुदेवने कहे तव राजा रुधिर जानी यह बडे वंशके उपजे महा शूरवीर पुरुष हैं तव रोहिणीका पिता इनकूं महारथ देता भया जाके महा तेजस्वी तुरंग जुरे अर शस्त्रनिकरि पूर्ण जा समय वसुदेव रथपर चढ्या ताही समय दधिमुख नामाविद्याधर महा शूरवीर दिव्यरथ पर चढ्या वसुदेवके निकट आया मानूं वसुदेवका मनोरथ ही कार्य प्राप्त हुवा दिव्यास्त्र कहिए देवोपुनीत शस्त्र तिनकरि दैदीप्यमान महामित्र आया ॥ ६७ ॥ सो वसुदेवकूं नमस्कारकरि कहता भया जो तुम मेरे रथपर चढो अर मैं तिहारा सारथी तुम शत्रूनिके समूहकूं युद्धविषैं जीतो तव वसुदेव दधिमुखके रथमें चढे सो रथ नाना प्रकारके वाणनिकर भर्‌या है अर कैसा है वसुदेव चापी कहिये धनुषकूं धरैं है अर कवची कहिये वक्तर पहिरे है ॥ ६९ ॥ अर रोहिणीका पिता ताकी सेना रथ हजार दो हाथी हजार ६ अर पियादे एक लाख चौदहहजार सो रोहिणीके पिताका कटक शत्रूनिके निवासके अर्थ उद्यमी हुता ताहि वसुदेव शत्रूनिकी सेना रूप समुद्रकूं अवगाहता भया। कैसा है शत्रूनिका कटकरूप समुद्र, नाहीं दीखै है पार जाका अर वसुदेवकी चतुरंग सेना सव ही वलवंत है दोऊ सेनानिमें परस्पर महा युद्ध भया। ऐसा ही तुरंगनिका हींसना अर ऐसा ही शंख आदि वादित्रनिका नाद सो समुद्रकी गरजना सारिखा सेनानिमें शब्द होता भया ॥ ७३ ॥ हाथी घोडे रथ पयादे इनमें यथायोग्य युद्ध होता भया हाथीनिके असवार हाथीनके असवारनितैं अर तुरंगनिके असवार तुरंगनिके असवारनितैं अर रथनिके असवार रथनिके असवारनितैं अर पयादे पयादनितैं युद्ध करते भए ॥ ७४ ॥ परस्पर सामंतनिके वाणनिकर आकाश आच्छादित होय गया सो सूर्यहू दृष्टि न पडता भया तो औरकी कहा बात ? ता रणविषैं तेजोनिधि जो सूर्य ताकी किरणनिका संचार रुक गया तो औरनिकी कहा बात ?

या रंकका औसर कहां या ठौर अकुलीनका प्रवेश ही अयोग्य है अगर यह कुलवंत है तो अपना कुल प्रगट करै वरना यह नीच है सो नीचकूं कूटकरि काढ देवो। किसी राजपुत्रकूं कन्या परणाय देवो। यह वचन सुनकरि वह महाधीर वसुदेव जो राजा क्षोभकूं प्राप्त भये हुते तिनसूं कहता भया अहो क्षत्रीनिके पुत्र हो तिहारेमें कितनेक सतपुरुष हैं अर कितनेक मदोन्मत्त हैं ते सब ही मेरे वचन सुनो स्वयंवरका यही मार्ग है जो कन्याकी इच्छा होय वाहीकूं वरै। यहां राव अर रंकका विचार नाहीं अर यहां कन्याके माता पिता अर भाईकूं कोप नाहीं करना स्वयंवरविषैं काहूकी आज्ञा नाहीं यहां कन्याकी इच्छाहीका कारण है ॥ ५३ ॥ कोई महा कुलवंत रूपवंत भाग्यवंत लक्ष्मीवंत होवै अथवा अकुलीन कुरूप दरिद्री होवै जाहि कन्या वरै सोई वर यहां कुल सौभाग्यका नेम नाहीं या कन्याने मेरा कुलसौभाग्य निरखकरि वरमाला डारी है अर अगर विना जाने डारी तौहू डारी तुमकूं वाद विवादका क्या प्रयोजन है ॥ ५६ ॥ अर जो कोऊ तुममें पुरुषार्थके गर्वकरि शांतता न धारैगा ताहि मैं अपने वाणनिकरि शांत करूंगा जवमैं धनुष चढाय कान पर्यंत खैंच वाण चलाऊंगा तब सबकूं खवर पडैगी यह वचन वसुदेवके सुनकरि जरासिंधने कोप किया अर सर्व राजानिसूं कही यह वाजंत्रीकी विपरीत वुद्धि है याहि वांधो अर कन्याका पिता रुधिर अपने पुत्रसहित अविवकी है स्वयंवरशालामें अकुलीनकूं आवने दिया यातैं याकूं पुत्रसहित पकडो ॥ ५८ ॥ जे दुर्जन राजा हुते वह पहिले ही क्रोधरूप हुते अर जरासिंध अर्धचक्री ताकी आज्ञा पायकरि महा प्रज्वलित होय युद्धकूं उद्यमी भए ॥ ५९ ॥ अर जे न्यायरूप विवेकी राजा हुते ते अपनी सेनासहित दूर जाय खडे रहे न इनमें न उनमें अर जो रोहिणीका पिता राजा रुधिरके पक्षेमें हुते ते वैरिनके भेदिवेकी इच्छाकरि शस्त्रनितैं सजकरि तत्काल राजा रुधिरके समीप आये ॥ ६१ ॥ रुधिर समान अरुण हैं नेत्र जिनके अर रुधिरका वडापुत्र हिरण्यनाभ अपनी वहन रोहिणीकूं रथमें चढाय समस्त सेनासहित सज्या खड्या अर राजा रुधिर रोहिणीका पिता अति मधुर वचनकरि अपने योधानिकूं कहता भया अहो सुभट

देखिवे मात्रहीतैं हृदयविषैं स्नेह उपजै है तेरे कहिवेकरि कहा ॥ ३६ ॥ जैसैं मुनिके मनविषैं न तो राग न द्वेष न मोह तैसैं मेरे मनविषैं तो ये दिखाये तिनविषैं किसी प्रकार इच्छा नाहीं जो इनतैं भिन्न अर कोई विधिने मेरा वर रच्या सो दिखा ॥ ३७ ॥ धायके अर कन्याके बात भई ताही समय कन्याने वसुदेवके हाथमें मादल अर बीन हुती तिनकी ध्वनि सुनी सो कन्याके कानके मारग होय चित्तमें जाय बसी तब धाय कन्यातैं कहती भई। हे राजपुत्री ! तेरे मन हरिवेकूं समर्थ यह राजहंस बीनका बजावनहारा प्रगट है ॥४०॥ तब कन्या दृष्टिधरि वसुदेवकी ओर विलोकती भई सो राजनिके लक्षणकरि पूर्ण देवनि समान वसुदेव देख्या ॥४१॥ इन दोऊका परस्पर दृष्टिका मिलाप सोई भया तीक्ष्ण बाण ताकरि काम इन दोऊके मनकूं घायल करता भया दोऊ ही अभिलाषवंत भये तब रोहिणी वसुदेवके कंठविषैं वरमाला डारती भई स्तनके भारकरि नय गया है अंग जाका ॥ ४२ ॥ वसुदेव अपने स्थानक बैठे हुते तिनके समीप जाय तिष्ठी सो रोहिणी कैसी सोहती भई जैसैं चंद्रमाके समीप रोहिणी चंद्रमाकी स्त्री सोहै है ॥ ४३ ॥ नया मिलाप ताकरि उपज्या जो आनंद कछुयक लज्जाके योगकरि शंका सो कन्या अपने अंगके संगकरि पतिके अंगकूं सुख उपजावती भई ॥

भावार्थ—पतिके निकट जाय बैठी तब कैयक सुबुद्धि राजा स्वयंवरमें बैठे हुते सो प्रसन्न भए अर कहते भये इनका संयोग भया जैसा रत्न अर कांचनका मिलाप सोहै तैसैं इनका संयोग सोहै है। अहो देखो या कन्याकी निपुणता जो कैसा वर ढूंढ्या है या समान इतने राजानिमें और नाहीं यह कोई पुरुष मोटा बडे राजाका पुत्र है सो अपना कुल छिपाय क्रीडाके अर्थ विहार करै है भले पुरुष तो यह वचन कहते भए अर जो दुर्जन हुते वे कहते भये कन्याने बहुत अयुक्त करी जो इतने कुलवंत राजानिके पुत्र बैठे तिनकूं छोडि वाजंत्रीके कंठमें वर-माला डारी यह समस्त राजानिका अपमान देखना योग्य नाहीं अर जो ऐसा ही होय तो हरकोई पुरुष हर किसी स्त्रीकूं वरै तो अतिप्रसंगनामा दोष लागै कुल ऊंच नीचका विचार ही न रहै इतने बडे पुरुष बैठे तिनमें

श्वेत छत्र इनके यशहीका स्वरूप है अर सब भूमिगोचरी विद्याधर इनके आज्ञाकारी हैं ॥२१॥ मानो यह चंद्रमा ही रोहिणीदेवीका संग त्यागकरि तेरे लोभ थकी यहां आया है तेरी इच्छा होय तो याहि वर ॥ २२ ॥ जब रोहिणीने वाकी तरफ न देख्या तब धाय बोली यह जरासिंधका पुत्र है तेरी इच्छा होय तो याकूं वर ॥ २३ ॥ बहुरि धाय कहती भई यह मथुराका धनी राजा उग्रसैन है तेरी बांछा होय तो याहि वर ॥ २४ ॥ बहुरि धाय बोली ह पुत्री ! यह मोर्यपुर नगरका अधिपति राजा अंधकवृष्टीका पुत्र समुद्रविजय अपने भाइनिकरि संयुक्त है सो यह सबही भाई सकल गुणनिकरि पूर्ण है तेरी वांछा होय तो इनमैंतैं वर ॥ २५ ॥ बहुरि धाय कहती भई हे पुत्री ! यह राजा पांडु है यह विदुर है ॥ २६ ॥ यह दमघोष है या यशोघोष है यह दंतवक्र है यह महा पराक्रमी राजा शल्य है शत्रुनिके उरमें शल्य समान शालै है। अर यह राजा चंद्रवक्र सो चंद्रमा समान है प्रभा जाकी अर यह राजा मुख्य यह कालमुख यह पुंडरीकाक्ष अर यह राजा मत्स्य जाके अदेखसका भाव नाहीं ॥ २८ ॥ बहुरि धाय कहै है हे पुत्री ! यह राजा संजय जीतविषैं निपुण अर यह राजानिमें उत्तम सोमदत्त अर यह सोमदत्तका पुत्र अपने भाईनिकरि युक्त भूरिश्रवा ॥ २९ ॥ अर यह राजा अंसुमति अपने पुत्रनिकरि संयुक्त अर यह कपिल यह विपुलेक्षण अर यह राजा पद्मरथ यह राजा सौमक अर यह राजा सौम सौम्यक ॥३०॥ अर यह देवनिके नाथ समान राजा दिवक अर यह राजा श्रीदेव इत्यादि धायने अनेक राजा रोहिणीकूं दिखाये अर इन राजानिके वंश अर नगर सब बताये अर इनमें गुण हुते सो जताये बहुरि धाय न्यायकी वेत्ता और भी बहुत राजा बताये अर कहती भई हे कन्ये ! तेरे सौभाग्य गुणकरि खेंचे ये राजानिके समूह आये हैं सो तू अपना चित्त एकविषैं लगा, योग्य भरतारके प्राप्त भये चित्तकी चिंता अस्त होय है तातैं योग्य वरकूं वरकरि मातापिताकी चिंता मेटि, उनकूं सुख अवस्था उपजाय तेरे विवाहनेकी चिंताकरि मातापिताकी भूख अर निद्रा जाती रही हैं। या भांति धायने कही तब कन्यां कहती भई हे मात ! तैं ये राजकुमार दिखाये तिनविषैं मेरा मन अनुराग नाहीं धरै है वरके

रीके मंत्रीकी पुत्री परणी तासहित जलक्रीडा करते हुते बहुरि सूर्यकनामा विद्याधर आकाशमें ले उड्या अर गंगाविषैं डारे ॥५॥ सो गंगाके तीर एक म्लेच्छखंडका राजा तानैं देखे सो अपनी जरानामा पुत्री वसुदेवकूं परणाई ताके जरत्कुमारनामा पुत्र भया सो महापराक्रमी बहुरि वसुदेव अवंतिसुंदरीनामा अर शूरसेनानामा राजपुत्री परणीं अर एक जीवंयशानामा राजकन्या ताहि परणकरि अरिष्टपुर नगर गये तहां राजा महाधीर ताका नाम रुधिर युद्धविषैं प्रवीण, ताके मित्रानामा राणी साक्षात स्वर्गकी देवी समान सुंदरी ॥ ९ ॥ ताके बडा पुत्र हिरण्यनाभ सो अनेक नयका वेत्ता अर रणविषैं शूरबीर महापराक्रमी शस्त्र अर शास्त्रविद्याविषैं महानिपुण ॥ १० ॥ अर ताकी पुत्री रोहणी जैसी चंद्रमाकी राणी रोहणी तैसी यह सुंदरी ॥ ११ ॥ ताके स्वयंवरविधानविषैं अनेक राजा आये जरासिंधहू आया अर समुद्रविजयादिक भी आये ॥ १२ ॥ तहां मणिमय सिंहासननि पर सब राजा आभूषण पहिरे विराजे ॥१३॥ तहां वसुदेवहू भाईनिसूं अलक्ष अपना भेष छिपाय वादित्र बजावनहारेनिमें बैठे, इनके हाथमें वीणा। अथानंतर—राजकन्या रोहिणीनामा सौभाग्यकी भूमि स्वयंवरशालामें प्रवेश करती भई ॥ १५ ॥ ता समय सब राजनिकी दृष्टि रोहिणीपर पडी मानूं सब राजा एकसाथ अपने नेत्ररूप कमलनिकरि याकी अर्चा ही करते भये जाके रूपकूं देखकरि सबनिके वांछारूप व्याकुलता उपजी वह जानै मैं वरूं वह जानै मैं वरूं ॥ १६ ॥ जाके रूपके श्रवणही थकी राजनकूं अति इच्छा उपजी हुती सो साक्षात देखकरि जो इच्छा उपजै ताका आश्चर्य क्या जो अनुरागरूपी अग्नि श्रवणही करि प्रज्वलित भई हुती याके दर्शनरूपइंधनकरि वृद्धिकूं प्राप्त होय ताका क्या कहना ॥ १९ ॥ जा समय रोहिणी स्वयंवरशालामें आई ता समय शंख भेरी आदि अनेक वादित्र वाजते भये। अद्भुत शृंगारकरि युक्त जो कन्या ताहि धाय मनोहर वचन कहती भई जो राजा स्वयंवरशालामें बैठे हैं तिनके नाम कहती भई ॥ १९ ॥ हे कन्ये! यह वसुधाका ईश्वर जरासिंध तिष्ठै है शरतकी पून्योंके चंद्र समान श्वेत छत्र जाके शिरपर फिरै हैं तीनखण्डके जीतिवेतैं जानै यश पाया है मानूं वह

मैं अपराध क्या किया ? जो तुम कोपकरि मोहि पकडते हो तब तिनने कही जो राजाकी पुत्रीका ग्रह उतारै अर समझनी करै सो राजाके वैरीका वाप है यातैं तुम्हें मारिवेकूं ले जाय हैं। नीचलोग मारिवेके लिये फिरै हैं सो यह वार्त्ता कही ता समय एक विद्याधर वसुदेवकूं आकाशमें ले उड्या ॥ ५१ ॥ अर वानैं वसुदेवतैं कही हे वीर ! जो प्रभावती तुमकूं सोमश्रीके समीप लेगई ताका मैं भगीरथनामा पिता हूं तिहारे मनोरथका मैं सिद्धकरणहारा हूं हे नीतिके वेत्ता ! मैं तुमकूं प्रभावतीके समीप ले चला हूं ऐसे प्रियवचन कहि प्रभावतीका पिता भगीरथ वसुदेवकूं विजयार्द्धगिरि लेगया, गंधसमृद्धनामा नगरविषैं महाविभूतिसहित अनेक विद्याधर सन्मुख आय कुमारका प्रवेश कराया ॥५२॥ भली तिथि भला नक्षत्र भले योगविषैं प्रभावतीके मातापिता आदि सब कुटुंबी प्रसन्न होय प्रभावतीका वसुदेवतैं विवाह करावते भये इनके विवाहतैं पहिलेही परस्पर प्रीति तो उपजी हुती अब परस्पर मोहित भये वीर वींद वींदनी भोगसागरविषैं मगन होते भये ॥ ५६ ॥ जो मित्रनि करके संयुक्त है अर उनके पापका उदय आवै तो वियोग होय जाय अर जो जिनधर्मके भक्त हैं तिनके पुण्यके प्रभावतैं वियोगका अभाव होय है अर मित्रनितैं मिलाप होय है ॥ ५७ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ प्रभावतीलाभवर्णनोनाम त्रिंशतिमःसर्गः ॥ ३० ॥

अथानंतर—प्रभावतीसहित एकसमय आप मंदिरविषैं पौढे हुते सो सूर्यकनामा विद्याधर शत्रु वसुदेवकूं आकाशमें ले उड्या ॥ १ ॥ ताहि वसुदेवने मुकोंते मार्‍या तब वाने आकाशतैं डारे सो गोदावरीनदी प्रवाहविषैं परे ता नदीके तीर कुंडपुरनगर तहां राजा पद्मरथ ताकी पुत्रीकी यह प्रतिज्ञा जो फूलमालके गूंथिवेकी प्रवीणता करि मुझे रिझावै सो मेरा पति। ताहि मालाकी प्रवीणताकरि प्रसन्न करते भये अर वसुदेवने ताहि परणी ॥ ३ ॥ सो तहांतैं एकसमय इनकूं नीलकंठ ले उडा उसने चंपापुरीके सरोवरविषैं डारे तहांतैं निकलकरि चंपापु-

तब वह बलसिंहनामा वैजवंतीपुरीका जो पति वासूं मिल्या ॥ ३३ ॥ न्यायमें तो वसुदेव सांचे तब वह मायाचारी विलखा होय युद्धहीका उद्यमी भया ॥ ३४ ॥ कैयक विद्याधर वसुदेवके पक्षी आये वसुदेवके अर मानसवेगके महा संग्राम भया ॥३५॥ सो मानसवेगकी बहिन वेगवती वसुदेवकी स्त्री ताकी माता अंगारवतीने पुत्रीका पक्षकरि जंवाईकूं धनुष दिया अर दिव्यवाणनिके भरे दो तरकस दिये ॥ ३६ ॥ अर वह प्रभावती जो इनकूं ले आई हुती ताने मानसवेगतैं युद्ध जानकरि प्रज्ञप्तिविद्या दई सो प्रज्ञप्तिविद्याके प्रभावतैं वसुदेवने मानसवेगकूं बांध्या तब वाकी माता अंगारवती वसुदेवकी सासू वानैं पुत्रकी भीख मांगी, तब आप दयावान सोमश्रीके मंदिर ले जाय ताहि छोड्या तब मानसवेगकूं वसुदेवतैं अति हित उपज्या तब वह मानसवेग वसुदेवकूं सोमश्रीसहित सोमश्रीके पिताके महापुर ले गया तब सोमश्रीका बंधुजनतैं मिलाप भया अर वसुदेव सोमश्रीके रहै अर मानसवेग इनकी आज्ञापाय अपने स्थानकूं गया अर यह वचन दे गया जब कुमार आज्ञा करोगे तब मैं हाजिर सो वसुदेव सोमश्रीसहित सुखसूं तिष्ठै । देखी सुनी अनुभवी परस्पर वार्ता करते सुखसूं कालक्षेप करते भये । अर अनुरागके रसकरि लीन है चित्त जिनका एकसमय सूर्यकनामा वैरी विद्याधर अश्वकारूपधरि यदुपतिकूं ले उड्या, सो गंगामें डारे ॥ ४१ ॥ वसुदेव गंगा उतरकरि तापसनिके आश्रम गये तहां एक उन्मादरूप बावरी नारी नरनिके अस्थीके आभूषण पहिरे वसुदेवने देखी ॥ ४३ ॥ तब काहू तापसतैं पूछ्या यह सुंदर स्त्री महाउन्मादके वश भई ऐसी बैंडी क्यों होय गई है तब तापसने कही यह राजा जरासिंधकी पुत्री है याका नाम केतुमती यह राजा यतिशत्रुकी रानी है सो एक मंत्रवादी परिव्राजकने याहि बादमें जीती अर याने ताहि क्रोधकरि मार्‍या सो बैंडी होय गई ताके हाडनिकी मालाकरि पृथ्वीविषैं परिभ्रमण करै है । यह वार्ता सुनि वसुदेव दयावानने महामंत्रके प्रभावतैं ताके ग्रहका निग्रह किया अर वाहि वावरीतैं समझनी करी ॥४७॥ अर वाही समय जरासिंधके चाकर जो वसुदेवकूं पकडकरि पुरमें ले चले इन्होंने उपकार किया था सो उलटा औगुण मान्या तब वसुदेवने उनकूं पूछ्या

करि सम्पन्न वह प्रभावती विजलीकी न्याईं प्रकाश करती भई आकाशकूं उलंघन करि स्वर्णनाभपुर जाय पहुंचे कोऊ न जानै या भांति प्रभावतीने वसुदेवकूं सोमश्रीके समीप पंहुचाया सो वसुदेव सोमश्रीकूं देखता भया कांतके वियोग करि कुमलाये कमल समान है वदन जाका अर मलिन है कपोलनिकी शोभा जाकी कैयक दिन होय गये हैं शरीरके संस्कार विना जाकूं विना संवारे केश और ही रूप होय गये हैं तांबूलके रंग रहित किंचित धूसर है अधर जाके जैसे दाहकरि वेलकी कूंपल मुरझाय तैसे वियोगकरि मुरझाय रहा है मुख जाका ॥ २३ ॥ सो वसुदेवकूं देखकरि सोमश्री उठकर सन्मुख आई। कुमारने प्रिया देखी मानो शरत्की लक्ष्मी है दोऊ परस्पर उरतैं लगाय मिले अर रोमांच होय आये बहुरि कदापि विरह न होय सो मानों एक अंग ही होय गये ॥ २५ ॥ सोमश्रीने जानी प्रभावतीने मेरा बड़ा उपकार किया अर भली भांति कार्य्य सिद्ध किया सो प्रभावतीकूं प्राणसमान सखी जानि सोमश्री मनकरि मिली उरसूं लगाय लई इनकी परस्पर परम प्रीति भई बहुरि प्रभावती रूपवान कुलका सब निश्चयकरि धनीधिरानीकी आज्ञा पाय अपने स्थान गई ॥ २७ ॥ वसुदेव सोमश्री सहित मानसवेगके घरविषैं रूपपरावर्तनी विद्याकरि अपना रूप पलट कर रहै कैयक दिन होयगये सो एकदिन सोमश्री रात्रिविषैं जागी सो वसुदेवकूं और आकार न देख्या वसुदेवही रूप देख्या तब वैरीके भयकरि रुदन करती भई जो यह रूप देखे शत्रु इनका घात करेगा ऐसी शत्रुकी शंका उपजी ॥ २९ ॥ तब वसुदेवने सोमश्रीकूं पूछ्या हे प्रिये! तू रुदन क्यों करै है तब वाने कही तुम-रूप पलटनी विद्याकरि रूप पलट्या हुता सो अब नाहीं देखती हूं तिहारा मूलरूप देखूं हूं तातैं शत्रुका भय उपजा है तब कुमारने कही तू भय मत करि इन विद्यायोंका यही स्वभाव है जो जाग्रित दशामें तो शरीरमें रहे है अर शयन दशाविषैं दूर होय जाय है तातैं तू संदेह न करि ऐसा कह करि वसुदेवने विद्याकरि रूप पलट लिया जैसा रूप-विद्याकरि वाहि दिखाया हुता तैसाही किया अर कई दिनोंतक प्रिया सहित मानसवेगके मंदिरही रहे ॥ ३२ ॥ कई दिननिमें मानसवेगने जानी जो यह वसुदेवकुमार सोमश्रीका स्वामी है

जानोंहीगे ऐसा कहकरि वह मंदिरके बाहर गई अर वसुदेव भी प्रियंगुसुंदरीके भुजपिंजरतैं निकसिकरि वाके निकट गये तब वह अपने आगमनका वृत्तांत कहती भई, हे राजपुत्र! तुम अपना मन समाधानमें लाय मेरे वचन सुनहु दुर्लभ वस्तुकी प्राप्तिके उपाय मेरे वचन हैं ॥ ५ ॥ या भरत क्षेत्रविषैं विजयार्द्ध गिरि ताकी दक्षिण-श्रेणीविषैं गांधारनामा देश तहां गंधसमर्द्धनामा नगर ताका राजा गंधार ताके पृथ्वीसमान बल्लभारानी पृथिवी ताकी पुत्री मैं प्रभावती शरीरकी प्रभाकूं धरैं ॥ ७ ॥ सो एक दिन मैं मानसवेगका सुवर्णनाभ नामा नगर तहां गई सो मानसवेगकी माता अंगारवती तातैं मैं मिली अर ताकी पुत्री वेगवती मेरी सखी है सो ताकी वार्ता मैं पूछी ॥ ८ ॥ तब वेगवतीकी सखियोंने मोहि वेगवतीसूं मिलाई अर वेगवतीका संगम तुमसों भया सो मैं सब वृत्तांत जान्या तब मैं वेगवतीसूं हंसकरि कहा जैसे चित्रा नक्षत्रका चंद्रमासे संगम होय तैसे तिहारा यादवनिकै चंद्रसूं संगम भया ॥९॥ अर ताही नगरविषैं तिहारी प्रिया सोमश्री शुद्ध शीलरूप आभूषणकरि मंडित तिहारा नाम ग्रहण सोही है आहार जाके मानसवेगकी माता ताके समीप सोमश्री तिष्ठै है तिहारे वियोगकरि उपज्या महादुःख ताकरि श्वेत होय गये हैं कपोल जाके शीलके गढमें बैठी है वैरीके वचनकरि अलंघ्य है परंतु शत्रुके घरविषैं कबलग रहै तातैं सोमश्रीने मोहि तिहारे निकट पठाई है मैं ताका संदेशा तुमकूं पहुंचाया वाने यह विनती करी है। शत्रुकी माताने मोहि भलीभांति राखी है अर अपने पुत्रकूं वहुत दबाया है अब तुम शीघ्र मोहि छुडाओ अब मेरी सुध न लेवोगे तो तिहारे वियोगकरि मेरे प्राणनिका वियोग होयगा यातैं कठोरबुद्धि तजि मेरे छुडायवेका यत्न करहु आंसूनिकरि भरे नेत्रनि सहित ताने यह विनती करी सो मैं तुमसे कह कृतार्थ भई अब तुम नीके जानों सो करो अर तुम यह संदेह न करो जो जगह अगम्य है तिहारी आज्ञा होय तो जरासी देरमें ले चलूं यह वार्ता सुनि वह विवेकी जानता भया जो यह यथार्थ कहै है तब उसे कही हे सोमवदनी! तू मोहि शीघ्र ही सोमश्रीके समीप ले चलि तब वह प्रभावती विद्याधरी वसुदेवकी आज्ञा पाय आकाशमें ले उडी विद्याके प्रभाव

वसुदेवकूं पकडाया ताही रात्रिविषैं इनका पाणिग्रहण भया अर देवी वसुदेवसूं कहती भई हम अमोघदर्शन हैं हमारा दर्शन निष्फल न जाय सो तू वर मांग तब वसुदेवने यह वर माग्या जो तुमको चितारूं जवही मेरी सहायकूं आवो तब देवीनें कही यही वचन प्रमाण है तुम सुखसे रहो ऐसा कहकरि देवी तो अपने स्थानकूं गई अर वसुदेव देवीके वचन प्रमाणकरि कामदेवके मंदिरविषैं प्रियंगुसुंदरीसे गंधर्वविवाह किया वसुदेवसा वर पाकर प्रियंगुसुंदरीका मुखकमल प्रफुल्लित भया ॥६५॥ यदुवंशके सूर्य वसुदेव तिनकूं पायकरि प्रियंगुसुंदरी कमलनिके भावकूं प्राप्त भई । प्रियंगुसुंदरीके महलविषैं कैयक दिन विराजे इन दोऊके परस्पर प्रेम बंध्या प्रियंगुसुंदरीका पिता राजा ऐंणीपुत्र तानें सुनी जो देवीने एकांतविषैं इनका संयोग कराया तब राजा प्रसन्न भया जैसी कन्या हुती तैसा ही बर पाया या लोकविषैं प्रसिद्ध ताके अर्थ राजाने इनका प्रकट विवाह किया सब लोक इनके संबंधतैं हर्षित भये । वसुदेवकुमार महासुंदर प्रियंगुसुंदरी सहित सुखसूं रमैं ॥ ६९ ॥ वह महाभाग राजा समुद्रविजयका बीर राजाकी पुत्री प्रियंगुसुंदरी अर सेठकी पुत्री बंधुमती इन दोऊ सहित देवनिकीसी क्रीडा करता राजा प्रजाकरि पूज्य कैयक दिन या पुरीमें रहता भया । कैसी है पुरी श्री जिनेश्वरके चैत्यालयनि करि मंडित तीर्थ समान यात्रा योग्य है अर कैसी है वे दोऊ वसुदेवकी प्रिया प्रसिद्ध हैं गुण संपदा जिनकी अर अनेक कलानिके समूह तिनविषैं निपुण हैं अर रूप यौवनकरि मनकी हरनहारी हैं जैसे शची सहित इंद्र रमै तैसैं वसुदेव रमता भया ।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वन्धुमतीप्रियंगुसुन्दरीलाभवर्णनोनाम एकोनत्रिंशः सर्ग ॥ २९ ॥



अथानंतर—कार्तिक पूर्णमासीके दिन प्रियंगुसुंदरीके सहित प्रीतम पौढे हुते चिरकाल करी है नाना प्रकारकी क्रीडा जा करि खेदखिन्न दोऊही निद्राके वश हुते सो कुमार काहू प्रकार जागे एक रूपवती कन्या मानों साक्षात् लक्ष्मी ही है ताहि देख पूछते भये, हे कमलनेत्रे ! तू कौन है तब वह बोली हे कुमार ! मैं जो हूं सो तुम

समय तापस पुत्री तो काल वश भई ॥४५॥ सो मरकरि चारणमुनिके उपदेशके प्रभावकरि ज्वलनप्रभनामा नागकुमारके मैं वल्लभा भइ सो अवधिकरि पहला भव जाण्या ॥४६॥ तब दया अर स्नेहके वशतैं बनविषैं माता पिता हुते अर बालक पुत्र हुता तहां मैं आई माता पिता सोककरि तसायमान हुते तिनकूं धैर्य बंधाया अर पुत्र बालक हुता ताहि गोदमें उठाय लिया अर मृगीका स्वरूपकरि मैं बालककूं दूध चुखाय वडा किया अर मेरा पिता अमोघदर्शन ताहि पूर्व वैरतैं कौशिक तापस मरकरि सर्प होय डस्या हुता सो मैं अमोघ मंत्रकरि निर्विष किया अर धर्मोपदेशकरि वह जो क्रोधकरि दूषित हुता सो क्षमारूप किया ॥ ४९ ॥ अर वाके दयारूप श्रद्धा न हुती सो ताहि करुणामई जिनधर्मी किया । सो मरकरि उत्तमगतिकूं गया अर मैं ऋषिदत्ता तापसनीका रूपकरि पुत्रकूं लेय राजा शीलायुधपै गई अर ताहि कहती भई । हे राजेंद्र ! यह रानी ऐडीपुत्रनामा तिहारा पुत्र राजलक्षण करि मंडित ताहि तू ग्रहि तब राजाने कही मैं अपुत्र मेरा पुत्र कहां ॥ ५२ ॥ अर हे तापसनी ! तैं यह पुत्र कहां पाया तब मैं आद्योपान्त सकल वृत्तांत कह्या तब राजा पुत्रकूं लेता भया अर मैं पुत्रके स्नेहकरि मोहित भई, राजाके भांति भांतिके प्रताप बढावती भई । हम देव हमकूं कठिन कहा अर राजा शीलायुधकूं परम जिनधर्मी किया कईयक दिनमें राजा अपने एणी पुत्रकूं राजदेय मुनि भया स्वर्गलोक गया अर एणी पुत्र राजकुमार राज करै ॥ ५६ ॥ ताके प्रियंगुसुंदरीनामा महा सुन्दर कन्या स्वयंवर विधानविषैं काहू राजकुमारकूं न परणती भई वह कन्या कामभोगतैं विरक्त एक दिन तुमकूं बंधुमती सहित देखती भई ॥ ५८ ॥ सो जबसे तुम देखे तबसे वह कन्या कामके वाणकरि वेधी गई है सो वाहि चैन नाहीं यातैं हे धीर ! मेरे वचनतैं तुम वाहि अंगीकार करहु अर तिहारे मनमें यह आशंका है जो अदत्तादान मैं कैसे लूं याका पिता परणावै जब मैं परणूं सो या राज्य कुलकी सर्व मर्यादाविषैं मैं अधिष्ठाता हूं अर यह राजा एडी पुत्र मेरे पुर्व भवका पुत्र है इनके घरमें कर्ता धर्ता मैं ही हूं ॥६०॥ मैं यह कन्या तोहि दई तव माता पिता सबने दई तातैं तिहारा संगम होवै ऐसा कहकरि कन्याका कर

नृत्यकी आज्ञा करी सो कामपताका नृत्यकलाकरि सब मनुष्यनिका मन हरती भई। कौशिकनामा तापस फल पत्रका आहारी ताका मन चलायमान भया तो औरकी क्या कथा? राजाके यज्ञविधान निवृत्य भया तब वह कामपताका राजाके पुत्रने अंगीकार करी तब यह तापस राजापै आए राजाकूं अपने भक्त जान कहते भए यह कन्या कौशिककूं दे तब राजाने कही कन्या तो मेरे कुंवेरने वरी॥ ३१॥ तब कौशिक क्रोधकरि राजातैं कहता भया मैं सर्प होकर तोहि डसूंगा। या भांति क्लेशकरि कौशिक गया तब राजा अमोघदर्शन डरचा पुत्रकूं राज देय आप राणी चारुमती सहित तापस भया सो राणीकूं एक दो मासका गर्भ वाहि कोऊ भी न जानै सो तापसनीके आश्रमविषैं ऋषिदत्तानामा पुत्री भई॥ ३४॥ सो बडी भई एक दिन वनमें चारण मुनि आये तिनके समीप ऋषिदत्ताने जिनधर्मका श्रद्धान किया। फिर यह कन्या यौवनअवस्थाविषैं अति रूपवान् भई जाकूं देखि संसारी जीवनिके मन अर नेत्र मोहित होवैं॥ अथानंतर—श्रावश्री नगरीका पति राजा शांतायुधका पुत्र शीलायुध सो तापसीके आश्रम आया सो ऋषिदत्ता तापस कन्या अकेली ही हुती ताने शीलायुधकूं मनोहर आहार कराया यह दोऊ ही तुल्य रूपसूं इनके प्रेम बध्या जो चिरकालकी मर्यादा हुती ताहि तोड एकांतविषैं संगमकरि दोऊ एक होय यथेष्ट रमते भए जब राजकुमार चला तब यह तापसकन्या भयकी भरी कहती भई हे नाथ! मोहि कदाचित् गर्भ रहै तो क्या कर्तव्य है सो कहो तब वाने कही। हे प्रिये! तू व्याकुल मत हो मैं कहूं सो सुन। मैं श्रावश्रीनगरीका पति इक्ष्वाकुवंशी राजा शांतयुधका पुत्र हूं शीलायुध मेरा नाम है। सो तू पुत्र सहित मेरे पास आइयो॥ ४१॥ या भांति तापस कन्याकूं राजकुमार धैर्य बंधाय याहि उरसूं लगावता भया इतनेमें ही कटक आया तब कटक सहित शीलायुध तो श्रावश्री नगरी गया अर वाके गये पीछे कन्याके माता पिताने कन्याकूं देखी अर कहा हे निर्लज्ज! तूने यह क्या काम किया तब कन्याने माता पितासूं सकल वृत्तांत कहा॥ ४४॥ नवमें मास वह तापसपुत्री पुत्रकूं जनती भई सो पुत्र पिता समान रूपवान होता भया अर प्रसूति

रणवासके लोग भी देखने गये सो राजाकी पुत्री प्रियंगुसुंदरी जाके अर्थि यापुरमें यदुपति आये हैं सोहू इनकूं काहूप्रकार देखकरि अनुरागिनी भई ॥ १४ ॥ ऐसी मोहित भई जो ताहि खान पानहू न रुचै सो वह प्रियंगुसुंदरीकी यह वंधुमती सेठकी पुत्री सखी है सो वह अपनी सखीसूं एकांतविषैं पूछती भई। जो तू भरतारके अति वल्लभ है सो अपने पतिकी प्रवीणताकी वार्ता हमकूं भी कहो ॥ १५ ॥ तब वाने वसुदेवकी प्रवीणताकी सब वार्ता वासूं कही सो वह सुनकरि अति विह्वल होयगई ॥ १६ ॥ सो अभिमान छोडकरि इनके द्वार ही आई तब वाहि आई सुनि वसुदेवकूं अति चिंता उपजी जो यह अपनी इच्छासूं आई सो आदर योग्य नाहीं अर याहि मारिएं तो स्त्रीहत्या लगै सो अनुचित-विचारकरि यादवने किसी मिसकरि कालक्षेप किया ॥ १८ ॥ आप तो वंधुमती सहित एक सेजपर सोए अर वह अलग वंधुमतीके महलमें सोई अर रात्रिसमय एक नागकुमारी देवी ज्वलनप्रभानामा नागकुमार देवकी स्त्री अचानक आगई ॥ १९ ॥ सो अपने आभूषणनिकी कांतिकरि प्रकाशरूप करी है सब दिशा जाने नागका चिन्ह जाके ताहि देखकरि वसुदेव अचरजकूं प्राप्त भया चित्तमें चिंतवै है कि यह दिव्य स्त्री कौन है ॥ २१ ॥ तब वा देवीने वसुदेवकूं बुलायकरि प्रिय वचन कहे वह देवी महाविनयवान है अर मिष्ट वचन बोलवेविषै अति प्रवीण है देवी वसुदेवतैं कहै है हे धीर वीर ! मेरे आगमनका कारण सुनि जाकरके तेरे कान तृप्त होंय जैसैं अमृतरसकरि तृप्ति होय ॥ २३ ॥ हे कुमार ! एक चंदनबननामा नगर तहां राजा अमोघदर्शन अरि मंडलका जीतनहारा प्रबल है पराक्रम जाका ताकी राणी चारुमती अर चारुचंद्र नामा पुत्र सो महा नीतिवान बलवान पुरुषार्थकरि मंडित अर नवयोवन करि शोभित तानगरमैं एक रंगसेना नामा गणिका कला अर गुणनिकर मंडित ताकी पुत्री कामपताका सो मानूं कामकी ध्वजा ही है ॥ २६ ॥

अथानंतर—कैयक दिनमें राजा अमोघदर्शन धर्मकी नाहीं है परख जाके सो यज्ञके मार्गकी श्रद्धा करता भया तहां कौशिकादिक जटाधारी अनेक तापस आए ॥ २७ ॥ सो तापस राजाकी सभामें बैठे राजाने कामपताकाकूं

भया। अर सबही सभाके लोक केवलीके शब्द सुनकरि प्रतिबोधकूं प्राप्त भये ॥ ४९ ॥ सबही सुर असुर नर केवलीकूं नमस्कारकरि अपने २ स्थानकूं गये अर मृगध्वज केवली आयुपूर्णकरि परमधामकूं सिधारे ॥ ५० ॥ जो शुद्धव्रतका धारनहारा अपने मनविषैं महिष अर मृगध्वजका चरित्र निरंतर धारण करै सो सम्यक्तकी शुद्धताकूं पावै वह भव्यजीव जिनभाषित पदार्थनिकूं श्रद्धान करै ॥ ५१ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे वरिवशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ मृगध्वजमहिषोव्याख्यानवर्णनोनाम अष्टाविंशः सर्गः ॥ २८ ॥



अथानंतर—कामदत्तसेठने चैत्यालयके आगे जहां लोगनिका आगमन होय तहां मृगध्वज केवलीकी प्रतिमा थापी अर ताके निकट महिषकी मूर्ति स्थापी ॥ १ ॥ अर याहि टार कामदेव अर रतिकी मूर्ति थापी अनेक लोग कामदेव अर रतिकी मूर्ति देखिवेकूं आवैं अर मृगध्वज अर महिषकी मूर्ति देखि इनका वृत्तांत सुनै सो सुनकरि बहुत जीव प्रतिबोधकूं प्राप्त होय ॥ २ ॥ यह चैत्यालयप्रसिद्ध है अर यह वृत्तांतहू बहुत जानै हैं कैयक जीव यहां आय धर्मकी श्रद्धाकूं प्राप्त होय हैं सो कामदत्तसेठकी संतानमें अनेक पुरुष भये हैं या समय तिनकी संतानमें कामदेव सेठ हैं ताके रूप यौवनकरि पूर्ण चंद्रवदनी बंधुमतीनामा पुत्री है सो बंधुजननिकूं आनंद उपजावै है सो कन्याके पिताने निमित्तज्ञानीकूं पूछया हुता जो मेरी कन्याका वर कौन होयगा तब ताने कही जो कामदेवके मंदिरका पाट उघारै सो कन्याका वर यह वचन वसुदेव सुनकरि तहां गया कामदेवके मंदिरके द्वार बत्तीस आगल हुती सो तत्काल यदुपति उघाडकरि जिनपतिके दर्शनकूं गया प्रभुकी पूजा करी बाहिर आय आंगनविषैं मृगध्वज अर महिषकी मूर्ति देखी अर कामदेव और रतिकी मूर्ति देखी ॥ १० ॥ ताही समय सेठकूं खबर भई सो हर्षित होय वसुदेवकूं बंधुमती परणावता भया सुंदर है वदन जाका ॥ ११ ॥ कामदेव सेठकी कन्याका कंत यदुपति भया सो यदुपतिका रतिपतितैंहू अधिकरूप है यह वार्ता सबनगरमें प्रसिद्ध भई जहां सुनियै तहां वसुदेवकी बात राजाके

तेज वायु इनके मिलापतैं चैतन्यशक्ति प्रगट होय जैसैं मदिराकी सामग्री मिले मदशक्ति प्रगटै है ॥ ३४ ॥ सो यह लौकिक व्यवहार है जो जीव है पृथ्वी अप तेज वायु टार कोई और जीव नाहीं अबतक जीवकूं काहूने नाहीं देख्या ॥ ३५ ॥ पापपुण्यका कर्ता अर सुखदुःखका भोक्ता जीव पदार्थ नाहीं जो जीव होता तो काहूकी दृष्टिमें तो आता सो देखिवेके अभावतैं जीव नाहीं ॥ ३६ ॥ अर यह देव नारकी मनुष्य तिर्यंच अज्ञानीने विकल्प उठाय लिया है परलोकविषैं सुखदुःखका भोक्ता कोई पदार्थ नाहीं परलोक है ही नाहीं यातैं न कोई मोक्ष न कोई मोक्षका जानेहारा सब वार्ता अप्रमाण है यह पृथिवी आदि तत्व तिनका मिलाप सो जन्म अर इनका वियोग सो मरण है यातैं परलोकके अर्थ संयम धारण वृथा ही भोगका नाश कारण है ऐसी खोटी श्रद्धाकरि मोहित वह मंत्री आगमप्रमाणतैं रहित जीवादिक पदार्थनिकूं न मानै जिसके निकट कोई परलोककी कथा न करि सकै निरंतर खोटी कथा ताहीका श्रवण सदा कामभोगविषैं आसक्त धर्मका द्रोही ॥३७॥ वह पापी नास्तिक परलोकका न माननेवाला तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि महापुरुषनिकी जाके श्रद्धा नाहीं मंत्री महाखोटी चेष्टाका धारक धर्मतैं विमुख अज्ञानरूप तिष्ठै ॥ ४२ ॥ जब त्रिपृष्टिनारायणका अर अश्वग्रीवका युद्ध भया तब त्रिपृष्टिने अश्वग्रीव मार्‍या अर विजयनामा बलभद्रने हरिश्मश्रू मंत्री मार्‍या सो अश्वग्रीव अर हरिश्मश्रू दोऊ नरककूं गये चिरकाल भ्रमणकरि अश्वग्रीवका जीव तो मैं मृगध्वज भया अर हरिश्मश्रूका जीव यह भैंसा भया सो पहिले जन्ममें दोष उपजा हुआ हुता सो कोपकरि मैंने या भैंसेका पांव तोड्या ॥ ४६ ॥ सो अकामनिर्जराके योगतैं यह भैंसा लोहितनामा महा-असुर भया सो अब यह हू बंदनाभक्तिकूं आया है ॥ ३७ ॥ केवली कहै हैं हे राजन्! या लोकविषैं सब जीव-निसूं मित्रभाव ही करना क्रोधका संबंध है सो जीवनिकूं अंध करिवे समर्थ है यातैं हे राजन्! जे मोक्षाभिलाषी हैं वे क्रोधकूं वशकरि शांतिभावकूं अंगीकार करो। शांतभाव ही शिवपदका कारण है यह कथा सुनि राजा आदि अनेक जन जिनदीक्षा धारते भये। अर वह महिसासुर कपटकरि रहित भया। मायामिथ्या त्यागकरि शोभता

मृगध्वज ॥ १७ ॥ अर याही नगरीविषैं सेठ कामदत्त सो एकदिन अपने चतुष्पद पशु देखिवे आया तव एक बालक भैंसा महा दीन सेठके पांवनि पड्या तव सेठने ग्वालेसूं पूछी यह क्या आश्चर्य है तब ग्वालेने कह्या यह भैंसा जन्मा उसीदिन मेरे पांवों पड्या तव मोहि अति दया उपजी तव मैं बनविषैं मुनिकूं नमस्कारकरके पूछ्या ॥२०॥ हे प्रभो! या भैंसा पर मेरी अति करुणा याका कारण कहो तब मुनिने कही हे ग्वाले! तू सुन ॥२१॥ तेरे यह भैंस जाके उदरविषैं यह पांचवार भैंसा भया सो तैंने मारा छठी वेर याही भैंसके यह फिर बालक भया सो तुमकूं देखि याहि भवका स्मरण भया यातैं डरकरि तेरे पांयनि पडता है कि अब तू मुझे मत मारि ॥ २३ ॥ यह वचन मुनिने कहे तव मैं याहि पुत्रकी नाईं पाला अव भी यह जीतव्यका अर्थी तिहारे पांवनि पड्या है ॥२४॥ यह वचन ग्वालाके सुनकरि सेठ दयाकरि नगरमें ले आया अर राजासूं अभयदान दिलाया॥ २५ ॥ एक दिन पूर्वभवके वैरतैं राजाके पुत्र मृगध्वजने भैंसेका एक पग तोड्या तव राजाने पुत्रकूं मारिवेकी आज्ञा करी सो राजाका मंत्री बुद्धिमान हुता सो छलकरि कुंवरकूं वनविषैं लेगया। मुनिका दर्शनकरि कुंवर मुनि भया अर भैंसा पग तोडे पीछें अठारहवें दिन शुभभावसूं मूवा अर राजकुमार मुनि भये पीछे बाईसवें दिन शुक्लध्यानके प्रभावतैं केवली भए ॥ २८ ॥ सो केवलीकी पूजासूं चतुर्निकायके देव आए अर मनुष्य आये तिनने पूजा करी अर राजा जितशत्रु भी केवलीके दर्शनकूं आया तानैं भैंसेसूं वैरका कारण पूछ्या तब मृगध्वज केवली कहते भये अर देव दानव मानव सवही सुनते भये कथाकूं सुनकरि संतुष्ट भया है चित्त जिनका सो कर्णपुट करिके कथारूप अमृतका पान करते भए ॥ ३० ॥ केवली कहै हैं पहिला नारायण त्रिपृष्ट ताका शत्रु अश्वग्रीव अलकापुरीका पति विद्याधरनिका ईश्वर पहिला प्रतिनारायण पृथिवीविषैं प्रसिद्ध ॥ ३१ ॥ ताका मंत्री हरिश्मश्रू तर्कशास्त्रका पाठी पंडिताईमें प्रसिद्ध सो नास्तिक ॥ ३२ ॥ सो एकांतवादी एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही मानै परोक्ष प्रमाण न मानै जो वस्तु प्रत्यक्ष न दीखै सो नाहीं ताके यह श्रद्धा ॥ ३३ ॥ जो पृथिवी अप

तपकरि मुक्त होय अर मौन धारण करि तप करै तपमें वृथा कथन योग्य नाहीं यातैं मौन गहि मनकूं रोकि प्रभुका ध्यान धरो यह वार्ता वसुदेवने कही तब वह कहते भये हम नव दीक्षित हैं यातैं चित्तकी वृत्ति चंचल है मौनधारणा नाहीं सधै है अर हम किस कारणसे तापस भये हैं सो सुनो। यहां श्रीवस्तीनामा नगरी तहां राजा ऐणी पुत्र महा पराक्रमी पृथिवीका पति ॥ ५ ॥ ताके प्रियंगसुंदरी नामा पुत्री सो लोकविषैं प्रकाशमान ता समान और सुंदरी नाहीं ताके स्वयंबरके अर्थ हम बडे २ राजा उसके पिताने बुलाये हुते सो किसी कारणकरि उस कन्याने एककूं भी स्वीकार न किया जैसे बनकी हथनी बन सिवाय अन्य गजकूं ग्रहण न करै। जब वाने कोई हू स्वीकार न किया तब हम सब बिलखे होय भेले भये अर कन्याके पितासूं युद्धका उद्यम किया सो जैसैं एक सूर्य हजारां मनुष्यनिके नेत्रनिकूं संकोचरूप करै तैसैं उस एकने हम सब हराये तब कैयक जे महाअभिमानी हुते वह तो रणभूमिविषैं प्राण त्याग करते भये। अर हम सब गंभीर बनमें प्रवेश करते भये जैसैं सूर्यकी किरणनितैं भागकरि तिमिरका समूह गहन बनमें प्रवेश करै तैसैं हम तिमिर समान अज्ञान गंभीर बनमें बैठे हैं ॥११॥ हम धर्मका स्वरूप नाहीं जानै हैं तुम हमकूं धर्मका उपदेश करहु तिहारे वचनकरि ऐसा जाना जाय है जो तुम तत्वके ज्ञाता हो जिनधर्मी हो या भांति तापसीनिने कही तब वसुदेव उनकूं कहते भये धर्मके दोय भेद हैं एक यतीका धर्म है दूजा श्रावकका धर्म है यह दोऊ ही धर्म कल्याणके कारण हैं सम्यक्त्व सहित जो महाव्रत तथा अणुव्रत धारै ताहीका जन्म सफल है विस्तारकरि दोऊ धर्म यदुपतिने तिनकूं कहे तब वे श्रद्धावान होय अपने स्थानकूं गये यथायोग्य व्रत धारे ॥१३॥ अर यदुपति राजा राणी पुत्रकी पुत्री प्रियंगसुंदरी ताके लाभके लोभकरि श्रावस्तीनगरी गये वह नगरी समस्त वस्तुके विस्तारकरि प्रसिद्ध है ॥१४॥ तहां बाह्य उद्यानविषैं एक कामदेवका मंदिर ताके अग्रभागविषैं सुवर्णका तीन पांवनिका कृत्रिम भैंसा हुता ताहि देखते भए अर काहूसूं पूछ्या यह तीन पांवनिका भैंसा सुवर्ण रत्नमई कौन कारण बनाया है तब वानैं कही, हे आर्य्य ! याही नगरीविषैं इक्ष्वाकुवंशी राजा जितशत्रु ताके पुत्र

इनकूं सिद्ध न आयेंगी दूसरे पुरुषनिकूं तपश्चरणकरि सिद्ध होयगीं या भांति नागेंद्रने आज्ञा करी तब विद्याधर याही भांति करते भये। अर धरणेंद्रकी बहुत स्तुति करी बारंबार नमस्कार करते भये देव तो अपने स्थानक गये। अर विद्याधर विद्याके अर्थी हिमवंत पर्वतपर संजयंत स्वामीकी सुवर्णरत्नमई प्रतिमा स्थापते भये। अर नानाप्रकार उपकरण पधराये ॥ ३० ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कही, हरी है विद्या जिनकी ऐसे विद्याधर या हिमवंत पर्वत पर नम्रीभूत होय तिष्ठे तातैं याका नाम लोग ह्रीमंत कहे हैं ॥ ३१ ॥ अर लांतवेंद्रका जीव स्वर्गतैं चयकरि मथुरापुरीविषैं राजा रत्नवीर्य महा विभूतिवान ताकी रानी मेघमाला तिनके मेरुनामा पुत्र भया ॥ ३२ ॥ अर ताही राजाके दूसरी रानी अमितप्रभा ताके धरणेंद्रका जीव मंदरनामा पुत्र भया ॥ ३३ ॥ चंद्रमा समान अति सुंदर दोऊ भाई तरुणअवस्थाहीविषैं संसारका त्यागकरि श्रेयांसनाथ जिनेंद्रके शिष्य भये ॥ ३४ ॥ बडा भाई मेरु सुमेरु सारिखा अचल केवलज्ञान पाय मुक्त भया अर मंदराचल समान महानिश्चल छोटा भाई मंदर गणधरपदकूं प्राप्त भया ॥ ३५ ॥ यह संजयंतस्वामीका चरित्र तीनलोकविषैं प्रसिद्ध अतिभक्ति भावतैं भव्यजीव भली भांति सुनें अर स्मरण करैं। कैसे हैं भव्य जिनपदके प्राप्त होयवेकी है इच्छा जिनकी ॥ ३६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ संजयंतपुराणवर्णनो नाम सप्तविंशतिः सर्ग. ॥ २७ ॥

अथानंतर—गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहते भये। हे श्रेणिक! अब तू वसुदेवकुमारका वृत्तांत सुन। वसुदेव वेगवतीके वियोगकूं प्राप्त भया उद्यान भ्रमण करै, कैसा है वसुदेव पवित्र है पुरुषार्थ जाका सो बनमें भ्रमण करता तापसनिके आश्रम गया तहां तापस राजकथा युद्धकथा कामकथाविषैं आसक्त तिनकूं जिनपतिके सेवक यदुपति कहते भये तुम काहेके तापस हो यह तापसका धर्म नाहीं जो युद्धकथा कामकथा करै, तापस तो

विमानविषैं इंद्र भया ॥ १५ ॥ अर वह भीलका जीव सातवें नरकतैं निकलकरि भुजंग भया सो मरकरि पहिले नरकमें गया तहांसे निकलकरि तिर्यंचगति विषैं बहुत भ्रमणकरके दुःखी भया ॥ १६ ॥ बहुरि ऐरावती नदीके तटपर भूतरमणनामा बनविषैं मालीनामा तपस्वी वाकी कनककेशीनामा नारी, ताके मृगशृंगनामा तापस भया सो मृग समान मूर्ख पंचाग्नि तप करता भया, एकदिन चंद्रप्रभ विद्याधरकूं आकाशविषैं जाता देखकरि यह निदान करता भया जो तपके प्रभावतैं मैं विद्याधरनिकी विभूति पाऊं सो निदानके योगतैं वज्रदंष्ट्रनामा विद्याधर ताकी स्त्री विद्युत्प्रभा नामा ताके गर्भविषैं यह विद्युदंष्ट्रनामा विद्याधर भया अर वज्रायुध मुनिका जीव सर्वार्थसिद्धि गया हुता सो तहांतैं चयकरि संजयत मुनि भये अर तू महेंद्र तहांसे चयकरि जयंतनामा संजयंतका भाई भया सो मरकरि निदानके योगतैं तू धरणेंद्र भया ॥ श्रीभूतिपुरोहित जो सतघोष कहावता हुता जिसे सिंहसेनने एक भवविषैं मारा हुता सो उसने बहुत जन्म वैर लिया सो वैरकरि मारणहारेकूं मारै है सो अपने गुणनिका नाशकरै है और सुखमें विघ्न करै है। राजा सिंहसेन तो गजके जन्मविषैं वैर त्यागकरि संजयंतके भवविषैं सिद्ध भये। अर तू वैरके योगतैं भवभ्रमण करै है यातैं हे धरणेंद्र ! तू वैरकी बुद्धिकूं तजि यह वैर भयंकर संसारका बढावनहारा है सो तू किसी जीवके साथ वैर मतकरि अर मिथ्यात्व छोड़ि या भांति आदित्यप्रभनामा देव लौकांतिक स्वर्गका इंद्र ताने धरणेंद्रकूं संबोधन किया। तब वैर तज्या और सम्यक्त्व गहा सो सम्यक्त्व संसारसमुद्रका तारक है ॥ २७ ॥ धरणेंद्रने विद्याधरनिकूं जीवदान तो दिया परंतु विद्या खंडित करी सो कटी पांखके पक्षीकी न्याईं लंडूरे होगये तब धरणेंद्रतैं विद्याधरनिने विनती करी, हे देव ! हमकूं विद्याकी सिद्धि कैसे होय तब नागेंद्रने कहा तुम सब विद्याधर स्वामी संजयंतकी पवित्र प्रतिमा पांचसौ धनुष ऊंची ताहि हिमवंत पर्वतपर पधराओ ॥ २८ ॥ अर प्रतिमाके चरणारविंदके समीप तपश्चरण करो कायक्लेशकरि तुमकूं चिरकालमें विद्या सिद्ध होयगी अर आजहीके दिनतैं विद्युदंष्ट्रकी संतानविषैं रोहिणी प्रज्ञप्ती गौरी यह तीनों विद्या

कहा कुछ मांग तब वाने यह वेश्या मांगी ॥ १ ॥ सो असंयमी वेश्याका सेवनकरि अर मांसाहारी मरकरि सातवें नरकमें गया ॥ २ ॥ तहांसे निकसकरि संसारवनविषैं बहुत भ्रमण किया संसारमें सार नाहीं बहुत भ्रमणकरि यह हाथी भया सो साधुके दर्शनतैं जातिस्मरण भया ॥ ३ ॥ सो अब यह अपने पापकर्मकी निंदा करता संता शांतताकूं प्राप्त भया है यह मुनिके वचन सुनकरि नरेंद्र अर गजेंद्र दोऊही मिथ्यारूप कलंककूं त्यागकरि श्रावक भये ॥ ४ ॥ अर अजगरका जीव चौथे नरक गया हुता सो तहांतैं निकलकरि दारुणनामा भील ताकी मंदीनामा स्त्रीके अतिदारुणनामा भील भया ॥ ५ ॥ अर वज्रायुधनामा मुनि राजासिंहसेनका जीव प्रियंगुखंडनामा बन विषैं ध्यानधरि विराजे हुते। तिनकूं वह पापी अतिदारुण भील उपसर्ग करता भया सो मुनि उपसर्ग सहि सर्वार्थसिद्धि गये अर भील अतिदारुण सातवें नरक गया सो मुनि हत्याके योगतैं महा भयंकर दुखकूं भोगता भया अर वज्रायुधकी स्त्री रत्नमाला रत्नायुध पुत्रीके मोहतैं आर्या न हो सकी श्राविकाहीके व्रतमें महातप किये। अर रत्नायुध यह दोऊ माता पुत्र अणुव्रतके प्रभावतैं सोलहवें स्वर्गमें उत्कृष्ट देव भये ॥ ८ ॥

अथानंतर—धातकीखंडद्वीपविषैं पूर्वमेरुतैं पश्चिमविदेहविषैं गंध्यनामा देशमें अयोध्यानामा पुरी ॥ ९ ॥ राजा अरहदास ताकी दो स्त्री एक सुव्रता दूसरी जिनदत्ता ताके वह दोनों सोलहवें स्वर्गके निवासी देव बलभद्र नारायण पुत्र भये सुव्रताके वीतभयनामा बलभद्र भया अर जिनदत्ताके विभीषणनामा वसुदेव भया ॥ १० ॥ यह दोऊ राजा अरहदासके पुत्र सो छोटा पुत्र विभीषण पहिले नरकमें गया। अर वीतभयनामा बलभद्र बडा भाई अनिव्रतनामा मुनिके समीप तप करके लांतवस्वर्गमें इंद्र भया सो मैं हूं मेरा आदित्यप्रभु नाम सो मैं प्रथम नरकमें विभीषणके जीवकूं समझाया ॥ १२ ॥ सो सम्यक्तकूं प्राप्त भया नरकतैं निकलकरि जंबूद्वीपके विदेहविषैं गंधमालिनी देश विजयार्द्धगिरि ताविषैं राजा श्रीधर्मा ताकी रानी श्रीदत्ता ताके श्रीदामनामा पुत्र भया सो मैं संबोध्या ॥ १४ ॥ तब वह श्रीदाम अनंतमति स्वामीके निकट साधुके व्रत धारणकरि पांचवें स्वर्गमें चंद्राभ-

पुत्र भया, ताकी स्त्री चित्रमाला ताके उदरविषैं राजा सिंहसेनका जीव जो गजकी पर्यायतैं बारहवें देवलोक गया हुता सो तहांतैं चयकरि रश्मिवेगनामा विद्याधर भया हुता अर रश्मिवेगके भवतैं आठवें स्वर्गमें हुता वह तहांतैं चयकरि चक्रायुधका पुत्र वज्रायुध भया ॥९१॥ अर एक पृथ्वीतिलकनामा नगर तहां राजा प्रियंकर ताकी रानी अतिवेगा ताके श्रीधरा आर्यिकाका जीव जो स्वर्गविषैं देव हुआ हुता सो चयकरि रत्नमालानामा पुत्री भई यह रानी रामदत्ताका जीव है ॥ ९० ॥ सो रत्नमाला राजा प्रियंकरने चक्रायुधके वज्रायुधकूं परणाई ताके यशोधरा आर्यिकाका जीव देवलोकतैं चयकरि रत्नायुधनामा पुत्र भया ॥

अथानंतर—राजा चक्रायुध अपने वज्रायुध पुत्रकूं राज देयकरि स्वामी पिहिताश्रवके समीप मुनि होय मोक्ष गये। अर वज्रायुध हू अपने पुत्र रत्नायुधकूं राज्य देयकरि मुनि भये। अर रत्नायुध मिथ्यात्वके योगतैं मदोन्मत्त भया यह पूर्णचंद्रका जीव है ॥ ९३ ॥ एक दिन रत्नायुधका पाट हस्ती जलके अवगाहने अर्थ गया सो मुनिका दर्शनकरि पूर्व भव स्मरण भया। सो श्रावकके व्रत धारे सो न अयोग्य जल पीवै न अयोग्य आहार करै ॥ ९४ ॥ हाथीका नाम मेघनिनाद हुता सो राजाकूं अति वल्लभ सो राजाने हाथीका वृत्तांत न जान्या तब बज्रदत्त मुनिकूं पूछी तिनने कही ॥ ९५ ॥ एक चित्रकार नगर ताविषैं राजा प्रीतिभद्र ताकी रानी सुंदरी ताका पुत्र प्रीतंकर अर राजाके मंत्री चित्रबुद्धि ताकी स्त्री कमला, अर पुत्र विचित्रमति राजाका पुत्र अर मंत्रीका पुत्र यह दोऊ ही स्वामी श्रुतसागरके समीप तपका फल सुनकरि तरुण अवस्थाहीमें मुनि भये ॥ ९८ ॥ सो यह दोऊ नानाप्रकारके तप करते हुए अर निर्वाणक्षेत्रका दर्शन करते हुए एक समय अयोध्यामें आये ॥९९॥ सो मंत्रीका पुत्र नगरमें आहार करिवेकूं गया हुता सो बुद्धिसेनानामा वेश्या अति रूपवती हुती ताहि देखकरि कर्मयोगतैं वह निर्लज्ज भ्रष्ट भया सो वाकूं निर्धन जानकरि वानैं स्वीकार न किया ॥१००॥ तहां राजा गंधमित्र सो दुराचारी मांसाहारी था ताके यह पापी रसोइया होयरहा। मांसकी विधिविषैं प्रवीण होनेसे राजा प्रसन्न हुवा, सो राजाने

श्रेणीमैं प्रभाकरपुरका पति राजा सूर्यावर्ततैं विवाही। ताके राजा सिंहसेन रानी रामदत्ताका पति गजकी पर्यायतैं सहस्रार जो बारहवां देवलोक तामें श्रीप्रभ विमानमें श्रीधरनामा देव हुआ हुता सो चयकरि यशोधराके रश्मिवेग नामा पुत्र भया देखो संसारका चरित्र यशोधराका जीव राजा सिंहसेनका पूर्णचंद्र नाम पुत्र हुता सो दैवयोग करके यशोधरा विद्याधरी भई। ताके राजाका जीव पुत्र हुवा सो पुत्रतैं माता होगई राणी रामदत्ता राजा सिंहसेनकी स्त्री हुती सो रश्मिवेगके भवविषै धरानामा नानी होगई ऐसा जगतका चरित्र है॥ अथानंतर—रश्मिवेगका पिता सूर्यावर्त प्रभाकरपुरका पति सो रश्मिवेगकूं राज्य देय आप मुनिचंद्रमुनिके निकट मोक्षके अर्थ महाव्रत धारे॥८०॥ महातप किया अर रश्मिवेगकी माता यशोधरा अर नानी श्रीधरा यह दोऊ सम्यग्दर्शनकी धरणहारी गुणवती आर्याके समीप आर्यिका भई॥ ८१॥ एक दिन राजा रश्मिवेग सिद्धकूट चैत्यालयके दर्शनकूं गया हुता सो हरिश्चंद्र मुनिके पास धर्म सुनकरि मुनि भया ॥ ८२॥ सो एक दिन कांचननामा गुफा ताविषै जिनआगमकी ध्वनि करता हुता अर वह दोऊ आर्या मुनिकी माता और नानी बंदनाकूं आई हुतीं सो ता मुनिके समीप तिष्ठी थी। अर वह पापी सत्यघोषका जीव मरकरि सर्प भया बहुरि चमरीमृग भया पुनः कुर्कट सर्प भया, कुर्कट सर्पमरकरि तीसरे नरकमें गया। तानरकतैं निकलकरि याही कांचनगुफाविषैं अजगर भया॥८४॥ सो रश्मिवेगमुनि कायोत्सर्गधरि खडे हुते अर ये दोऊ आर्यिका तिष्ठी हुतीं सो अजगर उन तीनोंको निगल गया। वडा है उदर जाका॥८५॥ सो रश्मिवेगमुनि मरकरि आठवें स्वर्गविषैं रुचकनामा विमानमैं अर्कप्रभनामा देव भया। श्रेष्ठ है वुद्धि जाकी अर अजगर मरकरि रौद्रध्यानके योगतैं पापरूपी कीचडतैं मलीन पंकप्रभा जो चौथा नरक तहां गया॥ ८७॥

अथानंतर—चक्रपुर नामा नगर ताविषैं राजा अपराजित रानी सुंदरी ताके पांच रत्नवाला वणिक मरकरि रानी रामदत्ताका पुत्र सिंहचद्र भया हुता सो पीछे मुनिव्रत धारि अहमिंद्र भया हुता सो चयकरि चक्रायुधनामा

स्वर्ग गया तहां श्रीप्रभु विमानविषैं श्रीधरनामा देव भया सो धर्मके प्रभावकरि अनेक देवीनि सहित स्वर्गके सुख भोगै है। अर धम्मिलका जीव जाहि राजाने पुरोहित पद दिया हुता सो मरकरि ताही वनमें बंदर भया हुता वानैं क्रोधकरि कुर्कुट सर्पकूं मारा सो पापी तीसरे नरक गया ॥ ६८ ॥ अर गजराजके दांतनिके अस्थि अर मोती सो शृंगालदत्त भीलने धनमित्र वणिककूं वेचे अर वणिकने राजा पूर्णचंद्रकूं वेचे तव राजा वणिकतैं तो वहुत तुष्ट भया अर गजदंतका सिंहासन वनवाया। ता पर वैठे हैं अर मोतीनिका हार वनाया सो पहिरे है। हे माता! देख संसारकी विचित्रता मोहके उदयतैं प्राणी क्या क्या चेष्टा करै है वापके अंग भोगनिके कारण होवैं हैं यह विपरीत देखो ॥ ७१ ॥ यह कथा रामदत्ता आर्यिका स्वामी सिंहचंद्रके मुखतैं सुनि आप आयकरि महाप्रसादरूप जो पूर्णचंद्र ताहि सकल वृत्तांत कहि संवोध्या सम्यक्तसहित श्रावकके व्रत लिवाये। दान, पूजा तप, शील पालकरि वारहमें स्वर्गमें जहां राजा सिंहसेनका जीव गजकी पर्यायतैं गया है तहां ही पूर्णचंद्रका जीव वैडूर्यप्रभ विमानविषैं देव भया अर रामदत्ता आर्यिका भी व्रतके प्रभावतैं वाही स्वर्गविषैं प्रभंकर विमानमें सूर्यप्रभ नामा देव भया ॥ ७४ ॥ अर सिंहचंद्र मुनि चार आराधना आराधि ग्रैवेयकविषैं प्रीतंकर विमानमें अहमिंद्र भया ॥ ७५ ॥

अथानंतर—राणी रामदत्ताका जीव सूर्यप्रभनामा देव तहांतैं चयकरि विजयार्द्धकी दक्षिण श्रेणीविषैं धारिणीतिलकनामा नगर ताविषैं ॥ ७६ ॥ अतिवलनामा राजा ताकी राणी सुलक्षणा ताकी श्रीधरानामा पुत्री भई रामदत्ताके भवविषैं तप वहुत किया सो देवायु दीर्घ वांधी ताकरि देव भया देवी न भई देवीनिका आयु अल्प है ॥ ७७ ॥ सो माया अर मिथ्याके योगतैं देव पर्यायविषैं वहुरि स्त्री पर्यायका वंध किया सो चयकरि श्रीधरी भई। सो श्रीधरीके पिता अतिवलने अपनी पुत्री अलंकापुरीके पति राजा सुदर्शनकूं परणाई। ताके पूर्णचंद्रका जीव जो वैडूर्यप्रभ विमानविषैं देव हुता सो राणी श्रीधराके उदरविषैं यशोधरानामा पुत्री भई ॥ ७८ ॥ सो उत्तर

अपने पति सुनि उनके मुखतैं यह कथा सुनी जो राजा सिंहसेन तो सर्पका डसा मरकरि गज भया है अर पांचरत्नवाला वणिक मरकरि रामदत्ताके सिंहचंद्रनामा पुत्र भया सो राज करै है अर माता पुत्रके मोहतैं वैराग्य न भई यह कथा रामदत्ताकी माता सुन रामदत्ताकूं संवोधिवे आई। सो रामदत्ता हू माताके निकट आर्यिका भई। अर राजा सिंहचंद्र वणिकका जीव स्वामी राहुभद्रके समीप साधु भये ॥ ५७ ॥ अर छोटा भाई पूर्णचंद्र राज करै सो अपने प्रतापकरि सव शत्रु नवाये परंतु सम्यक्त अर व्रतरहित इंद्रीनिके भोगनिविषैं आसक्त ॥ ५८ ॥ अर पूर्णचंद्रका वडा भाई सिंहचद्र रामदत्ताका पुत्र मुनि भया हुता सो चारणऋद्धि पाई। अर तिनकूं अवधिज्ञान हू उपज्या रामदत्ता आर्यिका स्वामी सिंहचद्रकूं नमस्कारकरि अपने अर अपनी माताके अर पुत्रके पूर्वजन्म पूछे ॥ ५९ ॥ तव मुनिने कहा यही भरतक्षेत्रविषैं कौशलनामा देश तहां वर्द्धकनामा ग्राम ताविषैं मृगायणनामा एक ब्राह्मण ॥ ६० ॥ ताके पुत्री दो एक मधुरा दूजी वारुणी सो वारुणी कहिये मदिरा उसे पीय जैसैं मदोन्मत्त होवै तैसैं या वारुणीकूं देखकरि अविवेकी लोग विह्वल होवें ॥६१॥ कैयक दिनमें मृगायणनामा ब्राह्मण मरकरि अयोध्याविषैं राजा अतिबलके श्रीमतीनामा राणी ताके हिरण्यवतीनामा पुत्री भई सो तेरी या भवकी माता पूर्वले जन्मविषैं तेरा पिता हुता सो या जन्मविषैं तेरी माता हिरण्यवती भई ॥ ६२ ॥ अर ब्राह्मणकी बडी बेटी मधुरा सो तू राणी रामदत्ता हमारी माता भई अर ब्राह्मणकी छोटी बेटी वारुणी सो तेरा लघु पुत्र पूर्णचंद्र भया अर वह सुमित्रदत्त वणिक पांचरत्नवाला मैं तेरा पुत्र सिंहचंद्र भया ॥ ६३ ॥ अर हमारा पिता राजा सिंहसेन श्रीभूतिका जीव जो सर्पने डसा सो मरकरि गजराज भया ताहि मैं श्रावकके व्रत दिये ॥ ६४ ॥ अर श्रीभूतिका जीव सर्प भया हुता सो मरकरि चमरीमृग भया। वहुरि वह मरिकरि महादुष्ट कुर्कट सर्प भया ॥ ६५ ॥ अर राजा सिंहसेनका जीव हस्ती भया हुता तहि मैं श्रावकके व्रत दिये सो अनेक उपवासनिकरि खेदखिन्न पारणाके दिन नदीविषैं डोहल्या जल पीवेकूं गया सो कुर्कट सर्पने डसा जिनधर्मके प्रसादकरि गजराज तो बारहवें

मल्लकी मुष्टि सहार सो वह पापी मल्लकी मुष्टि खाय मूवा आर्त्तध्यानके योगतैं मरकरि राजाके भंडारविषैं गंधमादन जातिका सर्प भया सो राजाका द्रोही ॥ ४१ ॥ अर सत्यघोषका पुरोहितपद एक धम्मिलनामा ब्राह्मणकूं दिया सो हू मिथ्यादृष्टि अनर्थविषैं उद्यमी अर ये पंचरत्नवाला वणिक अपने पद्मखंडनामा नगर गया अर जैनी भया अर याके धन वहुत भया सो महादान किये अर यानैं यह निदान बांध्या जो मैं मरकरि रामदत्ताका पुत्र होवूं ॥ ४३ ॥ अर या वणिककी भार्या सुमित्रदत्ता उसके यासूं विरोध सो मरकरि व्याघ्री भई । अर वणिक साधूनिके दर्शनकूं पर्वतविषैं गया हुता सो व्याघ्रीने खाया सो मरकरि राणी रामदत्ताके सिंहचंद्रनामा पुत्र भया सो राणीके यासूं वड़ा स्नेह ॥ ४४ ॥ अर या सिंहचंद्रका दूजा भाई पूर्णचंद्र होता भया सो ये दोनों इंद्र यतींद्र समान दिपैं या पृथ्वीविषैं ये दोऊ कुमार चंद्र सूर्य समान उद्योत करते भये ॥ ४६ ॥ एकदिन राजा सिंहसेन भंडारमें गया था सो वैरभावतैं उसे गंधमादन सर्पने डसा तव गरुडमंत्रका धारक गरुडदत्तनामा तानैं मंत्रकरि गंधमादनजातिके सब सर्प वुलाये सो आये ॥ ४८ ॥ तव गरुड़ने कहा एक अपराधी है सो रहो अर सब जावो तब और सब तो गये अर यह अपराधी रहा ॥ ४९ ॥ तव याहि गारुड़ने कहा हे दुष्ट ? तू अपना विष शीघ्र खैंच अथवा अग्निमें प्रवेशकर तव यह पापी पृथ्वीपतिके प्राणनिका हर्ता विष न खैंचता भया अर अग्निमें प्रवेशकर भस्म भया सो मरकरि चमरीमृग भया । अर राजा सिंहसेन मरकरि शल्लकी वनविषैं हाथी भया वह धम्मिल सत्यघोषके पुरोहित पदका धारक ताही वनविषैं वंदर भया । मिथ्यादृष्टीनिकूं शुभ गति कहां ॥ ५२ ॥ अर राणी रामदत्ताके दो पुत्र सिंहचंद्र अर पूर्णचंद्र सो सिंहचंद्र तो पिता पीछे राज पाया अर पूर्णचंद्र युवराज पद करै सो दोऊ भाई समुद्रांत पृथ्वीकूं सुखतैं पालते भये अर राणी रामदत्ताका पिता पोदनापुरका राजा सुपूर्ण है नाम जाका अर ताकी राणी हिरण्यवती सो दोऊ ही जिनशासनके भक्त सो राहुभद्रमुनिके निकट रामदत्ताका पिता तो मुनि भया । अर माता हिरण्यवती दत्तवती आर्यिकाके समीप आर्यिका भई ॥ ५५ ॥ सो रामदत्ताकी माता आर्यिका

देवै है अतिलुब्ध है बुद्धि जाकी लोभी पराया माल दिया न चाहै या भांति यह वणिक पहरके तडके नित्य पुकारै बहुत दिवस भये एकसमय राणीने राजासे कही हे महाराज ! पृथ्वीविषैं बलवान अर दुर्बल सभी हैं जो राजा न्यायवंत न होवै तो बलीनिसूं दुर्बल कैसैं जीवैं ॥ ३० ॥ या दुर्बल बणिकके बलवंत पुरोहितने रत्न हरे हैं सो तिहारे दया है तो दिला दीजिये ॥ ३१ ॥ तब राजाने कहा हे प्रिया ! समुद्रमें याका जहाज फट गया अर धन जाता रहा जाका धन जावै सो गहला होवै तातैं अति दुखी बैंडा भया वृथा प्रलाप करै है याके लज्जा नाहीं ॥ ३२ ॥ तब राणीने कहा जो बैंडा होवै सो कभी कुछ कभी कुछ कहै यह सदा एक वचन बोलै है सो याका न्याय करो । एक तो याका समुद्रमें धन गया अर पुरोहितने रत्न दाबे सो बहुत दुखी है ॥ ३३ ॥ ये राणीके वचन सुनि एकांतमें राजाने सत्यघोषसूं पूछा सो नट गया जे धनके लोभी तिनके सत्यधर्म कहां तब राजाने राणीहीकूं न्याय सौंपा राणी द्यूतक्रीडाके छलकरि परखवेकूं उद्यमी भई । आप तो पुरोहिततैं द्यूतक्रीडा करै अर निपुणमति धायकूं पुरोहितकी प्रिया पास पठाई जो तुमकूं पुरोहितने पांच रत्न दिये हैं सो देवो तब वानै न दिये । यह कही कि मैं न जानूं पतिने याही भांति सिखाय राखी हुती ॥ ३६ ॥ बहुरि राणी द्यूतक्रीडाविषैं पुरोहितका जनेऊ जीता । सो जनेऊ लेयकरि धाय गई तोहू पुरोहितकी स्त्रीने रत्न न दिये सो पतिकी ऐसी ही आज्ञा हुती । बहुरि राणी पुरोहितके हाथमें नामकरि संयुक्त मुद्रिका हुती सो द्यूतक्रीडामें जीती अर वह पठाई । तब पुरोहितकी प्रियाने धायके रत्न दिये सो ले आई । राणी द्यूतक्रीडा निवार पुरोहितकूं सीख दई ॥ ३३ ॥ वे पांचरत्न राजाकूं दिखाये अर राजाने वे रत्न अपने बहुत रत्ननिमें मिलाय वणिककूं दिखाये तब वानैं अपने पांच रत्नही उठाय लिये पराया एक हू न उठाया तब राजा सत्यवादी जान वणिककी शुश्रूषा करी वह सुमित्रदत्तनामा वणिक राजमान्य भया ॥ ३१ ॥ अर राजाने सत्यघोष पुरोहितकूं आज्ञा करी जो तेरे पर-धन हरनेकी प्रीति है सो तीनदंड अंगीकार कर यातो अपना सर्व धन दे अथवा गोबरके तीन थाल खा अथवा

पूजाकूं धरणेंद्र आये। सो विद्याधरनिका कर्तव्य जान महा क्रोधरूप भये दोऊ श्रेणीके विद्याधर नागपाशतैं बांधे अर उनकी विद्या खोस लीन्ही। अर सबकूं समुद्रमें डबोयवेकूं उद्यमी भये ॥ १७ ॥ तासमय सातवें स्वर्गका पति लांतवेंद्र आयकरि कहता भया है हे नागनिके इंद्र! तू इतने जीवनिकी हिंसा मत करहु तू अर मैं अर यह विद्युद्दंष्ट्र अर स्वामी संजय इन चारों जीवनिकी कथा भली भांति सुनो परस्पर वैरके योगतैं संसारवनविषैं भ्रमण किये हैं। यह कथा लांतवेंद्र कहै है अर धरणींद्र सुनै है। या भरतक्षेत्रविषैं शकटनामा प्रसिद्ध देश ताविषैं सिंधुपुरनामा नगर तहां राजा सिंहसेन ताके राणी रामदत्ता सो समस्त कला गुण तिनकरि शोभित ताके निपुणमतिनामा धाय सब निपुणनिमें महा निपुण। अर राजाके श्रीभूति नामा पुरोहित सो आप सत्यवादी अर निर्लोभी कहावै अर महालाभ पर महालोभी ताके श्रीदत्तानामा स्त्री ॥२१॥ सो श्रीभूति लोभी दुष्टने जगत्के ठगने अर्थ नगरके चारों ओर भांडशाला बनाईं। पृथिवीमें याका बडा विश्वास सबलोग याकै धरोहरि धरैं ॥ २२ ॥

अथानंतर—पद्मखंड नामा नगर तहां सुमित्रदत्त नामा वणिक सो सिंहपुर आय बहुमूल्य पांचरत्न पुरोहितके धरोहर धरि तृष्णाका प्रेर्‍या जहाज चढि समुद्रकूं गया सो दैवयोगतैं जहाज फट गया माल डूब गया अर यह बचा सो सिंहपुर आयकरि पुरोहिततैं पांचरत्न मांगे सो पुरोहित महा ठग वह नट गया अर वणिककूं खेद दिया नगरमें पुरोहित सत्यघोष कहावै राजा प्रजा सबकूं पुरोहितका बडा विश्वास ताहि कोई झूंठा न कहै। वणिककूं सब विकल कहैं। पुरोहितने यह प्रसिद्ध किया कि समुद्रमें याका जहाज फट गया तातैं यह वरडा [redacted] जहां जायकरि यह पुकारै तहां पुरोहितकी बोली सब बोलैं इसे गहला ठहराय खेद देवैं कोई न्याय न करै सो यह आशाकरि दग्ध भया राजमंदिरके समीप एक ऊंचा वृक्ष तापर चढकरि नित्य पुकारै ऐसे शब्द करै कि यह राजा सिंहसेन महा दयावान अर राणी रामदत्ता महा दयावती अर सभी लोग नगरके भले मनुष्य हैं सो मेरी बात कृपाकरि सुनो। मैं इसी मासके कृष्णपक्षमें श्रीभूतिके हाथ सत्यवादी जान पांच रत्न सौंपे हुते सो मुझकूं नहीं

विद्युदंष्ट्रनामा राजा भया सो महा पराक्रमी दोऊ श्रेणीका स्वामी ॥ २ ॥ एक दिन पश्चिम विदेहतैं मुनिकूं यहां लायकरि महा उपसर्ग करता भया तब श्रेणिकने पूछी हे नाथ! कौन कारण मुनिकूं उपसर्ग करता भया। तब गणधर पापकी नाश करनहारी संजयंतकी कथा राजा श्रेणिकतैं कहते भये ॥ ३ ॥ हे राजन्! या जंबूद्वीप विषैं पश्चिम विदेह तहां गंधमालिनी नामा देश तामें वीतशोकनामा पुरी तहां राजा वैजयंत होता भया ॥ ५ ॥ ताकी रानी सर्वश्री लक्ष्मी समान रूपवान ताके दोय पुत्र महामनोग्य एकका नाम संजयंत एकका नाम जयंत एक समय स्वयंभुनामा तीर्थंकर विहार करते वीत शोकापुरी आए सो राजा दोऊ पुत्रनिसहित धर्मश्रवणकरि वैराग्य भया पिहिताश्रवस्वामीके साथ विहार करै सो वैजयंत मुनि तो घातिया कर्मनिका घात करि केवली भये ॥ ८ ॥ चतुरनिकायके देव केवलीके दर्शन हेत आये सो धरणेंद्रकी विभूति देखके वैजयंतका छोटा पुत्र जयंत निदान करता भया जो तपके प्रभावकरि ऐसी विभूति मैं पाऊं सो काल पाय धरणेंद्र भया अर जयंतका बडा भाई संजयंत सो वीतशोकापुरीके समीप भीमदर्शननामा मसाण ताविषैं सात दिनका प्रतिमा योगधरि तिष्ठे हुते॥ १० ॥ अर विद्युदंष्ट्र विद्याधर अपनी स्त्रीसहित भद्रशालवनविषैं रमकरि अपने गगनवल्लभ नगर आवै था सो संजयंत मुनिकूं देखकरि पूर्वभवके वैरके योगतैं क्रोधायमान होय विद्याके बलकरि तहांतैं उठाय या भरतकी विजयार्द्धकी दक्षिणश्रेणीके समीप एक वरुणनामा गिर तहां पांच नदीनिका संगम भया है। उन नदीनिका नाम हरिण्यवती चण्डवेगा गजवती, कुसुमवती, सुवर्णवती, इन पांचनिके संगमविषैं मुनिकूं रात्रिविषैं थापे अर आप घर गया प्रभात अनेक विद्याधरनिकूं एकत्रकरि पापी कहता भया। जो आज रात्रिविषैं मोहि स्वप्न आया है जो एक राक्षस महाकायाका धारक हमारे सबनिके क्षय करिवेकूं आया है सो आपन भेले होय ताहि हतें ॥१५॥ ऐसा कहकरि सबकूं ले गया वे दुराचारी नानाप्रकारके आयुधनिकरि मुनिकूं उपसर्ग करते भये। सो मुनि परम समाधि योगकरि शीतलनाथके समय सिद्धपदकूं प्राप्त भये। अर अंतकृतकेवली भये तिनकी निर्वाण

नंदनामा तीर्थ है। यह सब वृत्तांत वेगवतीने वसुदेवतैं कह्या चंद्रमा समान है मुख जाका ता सहित वसुदेव धीर नदीनिके मनोहर तटनिविषैं रमते भये ॥ ४६ ॥ एक दिन वसुदेव ह्रीमंतका पर्वतपर अपनी इच्छातैं गमन करते हुते तहां एक विद्याधरकी कन्या धन्य है रूप जाका सो नागपाशतैं दृढ बंधी देखी जैसी गज बंधनसे बंधी हथिनी होवै ॥ ४७ ॥ तब कुमार महा दयालुचित्त ताहि नागपाशतैं छुडावता भया जैसे यती जीवनिकूं पापबंधतैं छुडावैं। कैसी है वह कन्या चंद्रमा समान है मुखकी कांति जाकी तब वह विद्याधरी बंधनतैं मुक्त होय नमस्कार कर कहती भई। हे नाथ! तिहारे प्रसादतैं मुझे विद्या सिद्ध भई सो मेरे तुमही नाथ हो ॥ ४९ ॥ मेरी कथा सुनो गगनवल्लभनामा नगरविषैं राजा विद्युदंष्ट्रके वंशविषैं उपज्या राजा ताकी मैं बालचंद्रानामा पुत्री नदीके तटविषैं विद्या साधती हुती सो एक विद्याधर वैरी ताने मोहि नागपाशकरि बांधी सो तुमने छुडाई ॥ ५१ ॥ आगे हमारे वंशमें एक केतुमती नामा कन्या भई हुती सो याही भांति विद्या साधती हुती सो काहू विद्याधरने बांधी थी सो पुंडरीकनामा अर्द्धचक्री पांचवें नारायण तानैं छुडाई, जैसैं तुमने मोहि छुडाई सो केतुमती भी पुंडरीककी प्रिया भई। तैसे मैं हू तिहारी वल्लभा अवश्य हूंगी ॥ ५३ ॥ अर हे प्रभो! विद्याधरनिकूं दुर्लभ है यह विद्या सो तुम लेवहु तब वसुदेवने कही मेरी आज्ञातैं तुम वेगवतीकूं विद्या देवो। तब यह बालचंद्रा कुमारकी आज्ञा पाय वेगवतीकूं आकाश मार्ग गगनवल्लभ नामा नगर लेगई वहां वेगवतीकूं बालचंद्राविद्या देकर निःशल्य भई जिनधर्मीनिका यही मार्ग है जो वचन कहै सो करैं ॥ ५६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ बालचंद्रादर्शनवर्णनो नाम षड्विंशति सर्गः ॥ २६ ॥

अथानंतर—गौतमस्वामीतैं राजा श्रेणिक पूछता भया हे प्रभो! विद्युदंष्ट्र विद्याधर कौन भया अर ताका आचरण कहा सो कहो तब गणधरदेव कहते भए। एक गगनवल्लभ नामा नगर तामें नमिके वंश विषै

हुते तिनने वसुदेवकूं भाथडीमें डाल पहाडतैं डारचा जो तत्काल मरजाय तासमय इनकी वेगवती भार्या आय पहुंची सो भाथडीसमेत उठाय लेचली सो वसुदेवने जाना यह वेगवती है सो चित्तमें चिंता करते भये जैसैं चारुदत्त सेठकूं भेरुंड लेउडा था तैसैं मुझकूं अनेकवार लेउडे मुझकूं उपसर्गमें कमी न रही ॥ ३४ ॥ यह वंधुजनका संबंध दुःखदायक है अर भोगसंपदा दुःखदायक है। अर कायकी कांति दुःखदायक है। तथापि यह प्राणी समझै नाहीं। पुण्यपापका कर्ता यह एक ही है अर पुण्य पापके फल सुखदुःख उनका भोक्ता यह अकेला ही है अर जन्मै अकेला मरै अकेला याका साथी कोई नाहीं तथापि वृथाही कुटुंबका अनुराग धरै है ॥ ३६ ॥ न याका कोई न यह काहूका वे धीर पुरुष सुखी हैं अर तिननेही आत्मकल्याण किया सो समस्त भोगोपभोग तजकरि मोक्षमार्गमें प्रवर्तें ॥ ३७ ॥ अर हम सारिखे भोगतृष्णारूप लहरमें डूबे पापकर्मके करणहारे संसारसमुद्रविषैं वारंवार झकोला खावै हैं। यह संसार समुद्र दुःखरूप जलकरि पूर्ण है याविषैं सुखका लेश नाहीं ये इंद्रियजनित सुख दुःखरूपही हैं ॥ ३८ ॥ या भांति चिंतवन करता वह समुद्रविजयका वीर वसुदेव वेगवतीके स्थान पहुंचा तब वेगवती आकाशतैं उतर वसुदेवकूं भाथडीतैं बाहिर काढ्या ॥ ३९ ॥ पतिकूं वेगवती देखकरि विरहकी भरी रुदन करती भई। तब वसुदेवने उरतैं लगाय लई। अर वाहि सुखरूप करी अर आपहू सुखकूं प्राप्त भये। बहुरि वसुदेवने वेगवतीकूं पिछली सब बातें पूछी तब वह कहती भई तुमकूं शत्रु ले उडा ॥ ४० ॥ तब मैं दोऊ श्रेणीविषैं सकल नगर अर वन ढूंढे समस्त भरतक्षेत्र हेरा कहीं न पाये तब ढूंढते २ मदनवेगाके समीप देखे सो ताकूं वियोग उपजाऊं यह भी बात मनमें न आई सो आपकूं देखकरि बहुरि त्रिशिखिरकी भार्या सूर्यनखाने तुमकूं हरा ताके तुमकूं मारिवेकी इच्छा ताका पति त्रिशिखर तुम हत्या सो वह तुमसूं वैर धरै बहुरि वानैं मानसवेगकूं सौंप ताने आकाशतैं डारे सो राजगृहके वनविषैं तृणनिपर पडे तहां जरासिंधके सेवक भाथडीमें डालकरि गिरिके शिखरतैं डारते भये। सो भाथडीमैं यहां ले आई अब तुम ह्रीमंतपर्वतपर तिष्ठो हो अर या पर्वतविषैं पंच-

विद्याधर सो पांडुरथंभके आश्रयकरि वैठे हैं अर वैडूर्यमणि समान है वर्ण जिनका ऐसे वस्त्रनिकूं धारे हैं॥ १७॥ अर यह कालस्वपाकी जातिके विद्याधर कालस्थंभकूं आश्रयकरि वैठे हैं। कृष्णचर्मकूं धरे अर कृष्णचर्मके हैं वस्त्र अर माला जिनके ॥ १८ ॥ अर ये सुपाकजातिके विद्याधर सुपाकी विद्याके थंभके आश्रय वैठे हैं तप्तकांचन हैं अभूषण जिनके अर पीत हैं मस्तकके केश जिनके ॥ १९ ॥ अर यह पार्वतेयजातिके विद्याधर पर्वतस्थंभके आश्रयकरि वैठे हैं वृक्षनिके पत्र समान हरित वस्त्र धरे। अर नानाप्रकारके मुकुट धरे अर माला पहिरे सोहै हैं ॥२०॥ अर यह वंशालयजातिके विद्याधर वंशस्थंभके आश्रयकरि वैठे हैं वांसके पत्रका किया है मुकुट जिन्होंने अर सव ऋतूनिके फूलनिकी है माला जिनके ॥ २१ ॥ अर ये वृक्षमूलकजातिके विद्याधर वृक्षमूलनामा महास्थंभ ताकूं आश्रय करि वैठे हैं। महा भुजंगनिके हैं आभूषण जिनके ॥ २२ ॥ या भांति अपने अपने भेप धरे अपने अपने आभूषणनिकरि मंडित संक्षेपताकरि सव समूह मदनवेगाने कुमारकूं दिखाये तव वसुदेवकुमार सवके भेद जाने वहुरि सव अपने अपने स्थानक गये वसुदेवहू अपने स्थानक गये ॥ २४ ॥ एक दिन वसुदेवने मदनवेगातैं कही। हे वेगवती ! आ, तव वेगवती नाम सुनि क्रोधकूं प्राप्त भई अर घरमें वैठ गई इनके पास न आई ॥ २५ ॥ ताही समय त्रिशिखरकी स्त्री सूर्यनखा वसुदेवकूं मदनवेगाका रूप धरि छलकरि कहती भई ॥ २६ ॥ ताही समय इनका शत्रु मानसवेग आकाशमें दृष्टि पडातव सूर्यनखाने जाना यह मानसवेग इनका मारनेवाला शत्रु है तव उसे सौंप वह तो उड गई। अर मानसवेगने कुमारकूं आकाशसूं डारचा सो वसुदेव तृणनिके पुंजपर आय पडे सो चोट न लगी ॥ २८ ॥ वहां अनेक लोग जरासंधका यश गावते थे तव वसुदेवने जाना यह राजगृहनामा पुर है तव नगरमें गये ॥ २९ ॥ अर द्यूतक्रीडाविषैं कोड दीनार जीति ताही समय दानकरि दई किंचित भी न राखी ॥ ३० ॥ आगे जरासिंधुकूं किसी निमित्तज्ञानीने कहा हुता जो ऐसा उदार चित्त होवै ताका पुत्र तेरा घाती होवै सो निमित्तज्ञानीके ऐसे वचन सुनि जरासिंधुने द्यूतिक्रीडाके स्थानकमें सेवक राखे

वसुदेवहू मदनवेगासहित गया ॥२॥ तहां विद्याधर प्रभुकी महापूजाकरि अनेक श्रृंगार किये। अपने २ थंभनिके लग करि विद्याधर बैठे॥ ३ ॥ अर मदनवेगाका पिता विद्युद्वेग अपनी गौरी विद्याका थंभ वासूं लागकरि पूजा देखते भये अपनी गौरिकनामा जातिके विद्या तिनसहित बैठे ॥४॥ तासमय वसुदेवने मदनवेगातैं पूछ्या इन सब विद्याधरनिकी जाति मोहि कहो तब मदनवेगा कहती भई हे प्रभो! यह कमलकी माला धरे अर कमल हाथमें लिये मेरे पिताकी चौगिरद गौरीविद्याके थंभके आस पास हमारे कुलके गौरिकनामा विद्याधर हैं ॥६॥ अर रक्तमाला धरे रक्त हैं वस्त्र जिनके गांधार थंभके आश्रय गांधारजातिके विद्याधर बैठे हैं ॥ ७ ॥ अर ये मानवस्थंभके आश्रय मानवजातिके विद्याधर बैठे हैं। नानाप्रकारके सुवर्णसमान पीत पाटंवरके हैं वस्त्र जिनके ॥ ८ ॥ बहुरि किंचित् आरक्त हैं वस्त्र जिनके अर दैदीप्यमान हैं मणीनिके आभूषण जिनके ऐसे मनुजातिके विद्याधर मनुस्तंभतैं लगकरि बैठे हैं ॥९॥ अर नानाप्रकार औषधि हाथमें धरे अर नानाप्रकारके आभरण अर पुष्पमाला जिनके ये मूलवीर्य जातिके विद्याधर औषधी स्तंभतैं लगकरि बैठे हैं ॥ १० ॥ अर अंतर्भूमिचरजातिके विद्याधर सब ऋतूनिके पुष्पनिकी सुगंधताकूं धरैं अर रत्न स्वर्णके आभूषणनिकूं पहरे रुंडमुंडनामा स्तंभके आश्रय बैठे हैं ॥ ११ ॥ हे प्रभो! ये संकुकजातिके विद्याधर संकुकथंभके आश्रय बैठे हैं नानाप्रकार कुंडलका है श्रृंगार जिनके अर अनेक आभूषण पहिरे सर्पनिके भुजवंध वांधे विराजे हैं। अर ये कौशिक स्तंभके आश्रय कौशिकजातिके विद्याधर शिरपर मुकुट धरे दैदीप्यमान मणिकुंडल पहिरे बैठे हैं ॥ १३ ॥ हे नाथ? यह विद्याधरनिके कुल संक्षेपताकरि तुमकूं कहे अब ये मातंगजातिके विद्याधर तिनकी जातिका वर्णन सुनहु ॥ १४ ॥ कालीघटा समान श्याम है वर्ण जिनका अर श्यामवस्त्र अर श्यामपुष्पनिकी माला श्याम मणीनिके आभूषण ये मातंगजातिके विद्याधर मातंगथंभके समीप बैठे हैं ॥ १५ ॥ मसाणनिके हैं हाड उनके हैं आभरण जिनके अर भस्मरेणुकरि धूसर हैं अंग जिनके मसाणविषैं है निवास जिनका श्मसान थंभसे लगकरि बैठे हैं। सो मातंगथंभहीका नाम श्मशान थंभ है। अर पांडुकजातिके

धनुषवाणादिकरि युद्ध करते भये ॥ ६२ ॥ केंतीकवेरमें चंडवेगने त्रिशिखरके अंगार वेगार नीलकंठ आदि पुत्र जीते ॥ ६३ ॥ वसुदेव रथविषैं आरूढ है ताके महा तेजस्वी अश्व यूपे हैं। अर तो रथमें अनेक दिव्यास्त्र अर सामान्य शस्त्र भरे हैं। अर रथका सारथी दधिमुख है सो जब त्रिशिखर वसुदेवपर आया ॥६४॥ तब वसुदेवके अर त्रिशिखरके प्रथम तो सामान्य शस्त्रकरि युद्ध भया अर परस्पर छूटे वाण तिनकरि अंवर आच्छादित भया ॥ ६५ ॥ वहुरि दोऊनिमें दिव्यास्त्रनिकरि युद्ध होता भया। वसुदेवने त्रिशिखरपर आग्नेयशस्त्र चलाया सो वज्राग्निकरि शत्रुके कटककूं जलावता भया ॥ ६६ ॥ तब त्रिशिखर वारुणाशस्त्र कहिए जलवाण ताकरि अग्नि बुझावता भया अर वसुदेवपर तानैं मोहना शस्त्र चलाया सो वसुदेव मोहित होयगया ॥ ६७ ॥ वहुरि वसुदेवने चित्तप्रसादशस्त्रकरि मोहनाशस्त्र निवार्‍या। अर वायुव्यशस्त्रकरि ताका वारुणाशस्त्र निवार्‍या। जे जे शस्त्र शत्रुने चलाये वे वे अपने शस्त्रनिकर निवारे। वहुरि वसुदेवने माहेंद्रशस्त्रकरि शत्रुका शिर छेद्या जब त्रिशिखर पड्या तब वाके साथके सब विद्याधर दिशा विदिशाकूं भाजे जैसें सूर्यकी किरण दिशा विदिशामें विस्तरै वैसें ताके साथके जगह जगह विचरते भये वहुरि वसुदेव समस्त विद्याधरनिकरि मंडित त्रिशिखरके नगरमें जाय अपने श्वसुरकूं वंधनतैं छुडाय श्वसुरकूं नगर लाये। यह कथन गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं। त्रिशिखर समान दुर्जय वैरी महा शूरवीर अर अनेक योधा विद्याधर जाके साथ ताहि तत्काल जीतकरि अनेक राजानिके वसुदेव अधिपति होते भये सो यह जिनधर्मका प्रताप जानहु ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ मदनवेगालाभत्रिशिखरवधवर्णनोनाम पंचविंशतिः सर्गः ॥ २५ ॥

अथानंतर—वसुदेवके मदनवेगातैं कामदेव समान महारूपवान अति वली अनावृतनामा पुत्र होता भया सो महा विवेकी बुद्धिमान ॥ १ ॥ एकदिन विद्याधर अपनी स्त्रियनिसहित सिद्धकूट चैत्यालय वंदनाके अर्थ गये। अर

युद्ध करते भये। दधिमुख अर चंडवेग विधिपूर्वक बहुत विद्यामय शस्त्र देवनिकरि सेवनेयोग्य वसुदेवकूं दिये ॥ ४६ ॥ प्रथम ब्रह्मशस्त्र फिर लोकोत्सादननामा दिव्यास्त्र फिर आग्नेयनामा शस्त्र वारुणनामा शस्त्र महेन्द्रनामा शस्त्र तथा वैष्णवानामा शस्त्र फिर यमदंड ईशान शस्त्र स्तंभनामा शस्त्र मोहनामा शस्त्र वायव्य नामा शस्त्र जृंभणनामा शस्त्र वंधनामा शस्त्र मोक्षणानामा शस्त्र फिर विशल्यकरणनामा शस्त्र व्रणसंरोहण नामा शस्त्र छादन नामा शस्त्र छेदनाशस्त्र हरणशस्त्र इत्यादि अनेक शस्त्र यादवकूं दधिमुख अर चंडवेगने दिये ॥ ५० ॥

अथानंतर—महाक्रूर इनका शत्रु त्रिशिखर अपने पुरतैं चढकरि इनके नगरके समीप आया तव वसुदेव यह वार्ता सुनि हर्षित भये जो हमही तापर जायवेकूं उद्यमी भये हुते अर वही आया तो या समान अर कहा। मनमें हर्षित होय श्वसुरकुलकूं साथ लेयकरि त्रिशिखरपर गये ॥ ५२ ॥ विद्याधरनिके मध्य यादव कैसे सोहैं जैसा स्वर्ग वासी देवनिके मध्य इंद्र सोहै। अर राजा त्रिशिखर मातंगजातिके विद्याधर तिनमैं कैसा सोहै जैसा असुर कुमारनिमें चमरेंद्र सोहै ॥५४॥ वडे विमान वडे गज मदोन्मत्त अर पवन समान तुरंग उनकर आकाश आच्छादित भया दोनों सेना आकाशमें भिडीं शस्त्रनिके समूहकी क्रांतिकरि सूर्यकी किरण दबि गई अर दोनों सेनाके वादित्रनिके शब्दकरि आकाश शब्दायमान होय गया धनुष खैंच वाणनिके समूह योधा चलावते भये सो वाणनिकरि वखतर भिद गये अर हृदय भेदे गये अर कैयक योधानिके शिर चक्रकरि छेदे गये परंतु चंद्रमा समान उज्वल यश न भेदे गये।

भावार्थ—सुभटनिने सिर दिया पर यश न दिया खड्गधारीनिके निपातकरि बडे बडे योधा रणविषैं पडे परंतु तिनका प्रताप न डिगा महामानी जोधा तिनकी मुद्गरनिके घातकरि आंख भ्रमती भई परंतु मन न भ्रम्या ॥ ६० ॥ हाथी घोडे रथ पयादे परस्पर महायुद्ध करते भये शूरपनेमें वे उनसे अधिक वे उनसे अधिक वे महायोधा महोत्सवके भरे प्रथम तो खेदरहित बहुत वेर लग सामान्य शस्त्र कहिये तलवार कटारी सेल भाला

सूभूम वानैं वृथा क्षत्री विनाशे यानैं वृथा विप्र विनाशे । शास्त्रकी आज्ञाकरि तो यह है जो काहूसूं द्वेष न करना जो आपसूं वैर करै वासूं मित्रता करनी यह तो धर्मकी रीति है अर किसीसूं क्षमा न होवै क्रोधी होवै तो यथार्थ अपराधीकूं मारै कार्तवीर्यने जमदग्नि मारा सो परशुरामकूं क्षमा न होनेसे कार्तवीर्यकूं मारे अर परशुरामने क्षत्री मारे सो वृथा ही मारे । अर सूभूम कार्तवीर्यका हू वैर न लेते अर परशुरामसूं मित्रता करते यह तो सर्वोत्कृष्ट हुता अर यह क्षमा न होवै तो कार्तवीर्यके वैर परशुरामकूं मारै विप्रनिका क्या प्रयोजन ? यह दोनों महापातकी महातापसी शठताप्रति शठता करते भये ॥ ३२ ॥ सुभूम साठहजार वर्ष राज भोगकरि तृप्त न भया वीतरागके मार्गकी आराधना विना विरोधक होय सातवें नरक गया ॥ ३३ ॥ अर सुभूमका श्वशुर मेघनाद ताकी संतान विषैं छठा बलनामा प्रतिनारायण भया ॥३४॥ ता समय छठा बलभद्रनंद अर छठा नारायण पुंडरीक ये दोऊ महा बलवान तिनने बलीकूं मारा सो बलीके वंशविषै सहस्रग्रीव बहुरि पंचशतग्रीव बहुरि द्विशतग्रीव ॥ ३५ ॥ इत्यादि बडे बडे राजा भये वहुत पाटविनीत भये तावंशविषैं हमारा पिता तिहारा श्वशुर विद्युद्वेगनामा राजा भया ॥३७॥ सो वह राजा विद्युद्वेग एकदिन अवधिज्ञानी मुनिकूं पूछता भया हे भगवन् ! मेरी पुत्री मदनवेगाका पति कौन होवैगा तब मुनिने कही गंगाविषैं तिष्ठता जो चंडवेगनामा विद्याधर विद्या साधै है सो रात्रिविषैं उसके कांधेपर आय पडेगा ताके पडिवेकरि वाकी विद्या सिद्ध होवैगी सो तेरी पुत्रीका पति होवैगा यह वार्ता मुनिके मुखतैं सुनि वहां सेवक राखे ॥ सो तुम वाके कांधे आन पडे तब तुमकूं पुत्री परणाई अर नभस्तिलकनामा नगरका धनी राजा त्रिशिखरनामा विद्याधर अपने पुत्रके अर्थ मदनवेगा मांगी सो मेरे पिताने न दई ॥ ४१ ॥ तब युद्धविषैं छिद्र पाय त्रिशिखरने हमारा पिता विद्युद्वेग पकडा सो वाके वंदीगृहमें है ॥४२॥ अर तुम महापराक्रमी यहां आये तुम्हारा श्वशुर छूटै सो करो । अर हमारे वडोंको सुभूम चक्रवर्तीने कृपाकरि विद्यामय अनेक शस्त्र दिये हैं सो लेकरि शत्रुकूं जीतो ॥ ४४ ॥ ये दधिमुख सालेके वचन सुनिकरि वसुदेव महा प्रतापी श्वशुरके छुडायवेके अर्थ

अनेक समूह मारे हैं उनकी डाढ भोजन करते क्षीर होय प्रवर्तें सो तिहारा प्रबल शत्रु है यह वार्ता सुनिकरि शत्रुके जानिवेकी है इच्छा जाके ऐसा परशुराम ताने डाढे क्षत्रीनिकी इकट्ठी कराय दानशालाविषैं रखाईं जब भोजनवाले आवैं तब उनकूं डाढसे पात्र भर दिखावैं सो किसीके देखवेकरि कुछ न भया। अब सुभूमि जावेगा तब क्षीर हो जावेगी। तब इसे मारिवेकूं शत्रु आवेगा सो जीमनेका थाल ही सुदर्शन चक्र होवेगा ताकरि सुभूम शत्रुकूं हनैगा तब यह वार्ता मेघनाद विद्याधर सुनिकरि केवलीकूं वंदि हस्तिनापुर गया ॥ २३ ॥ तापसके आश्रममें जाय सुभूमकूं देख्या। शस्त्र अर शास्त्र विद्या विषैं महाप्रवीण प्रतापकरि अति देदीप्यमान सूर्य समान मेघनादेने सुभूम देख्या ॥ २४ ॥ तब एकांतविषैं सब वृत्तांत कह्या जो तुम शत्रुके नाशक हो तातैं अब तुम उद्यम करो अरि रूप जो इन्धन ताके भस्म करिवे अर्थ सुभूमरूप अग्निकूं मेघनादरूप पवनने प्रज्वलित किया ॥ २५ ॥ सो सुभूम मेघनाद सहित शत्रुके घरमें आया। याहि दाभका आसन विछाय भोजनकूं बैठाया अर याकूं भोजनविषैं क्षत्रीनिकी दाढ दिखाई सो याके प्रभावकरि वे दाढ क्षीररूप होय परणीं ॥ २८ ॥ तब भोजनशालाके जो अधिकारी हुते तिनने शीघ्रही परशुरामतैं कहा जो तिहारा शत्रु प्रगट भया है। तब वह फरसी हाथमें लेकर सुभूमिकूं मारिवे आया। अर सुभूमि पात्रविषैं क्षीरका भोजन करते हुते सो थाली ही सुदर्शन चक्र होयगया ताकरि सुभूमने शत्रुकूं हरा ॥ २९ ॥

अथानंतर सूभूमके चौदह रत्न अर नवनिधि होती भई। अर वत्तीसहजार मुकुट बंध राजा सेवा करते भए सबने जाना यह आठवां चक्रवर्ती भया मेघनाद विद्याधरने अपनी पुत्री सामैश्री चक्रीकूं परणाई तब चक्री स्त्रीरत्नके लाभकरि अति प्रसन्न भया सो मेघनादकूं सब विद्याधरनिका ईश्वर किया तब मेघनाद अपने शत्रु वज्रपाणिकूं युद्धविषैं हनता भया जो वज्रपाणि पद्मश्री परणा चाहे था सो मेघनादने यमपुर पहुंचाया ॥ ३१ ॥ साठ हजार वर्ष सुभूम इकछत्र राज किया इकबीस बर क्रोधकरि विप्रविनासी जैसी तीव्रकषायी परशुराम तैसाही

विद्याधर कोपायमान भया परंतु मेघनादकूं न जीत सक्या सो अपने नगर उठ गया ॥ ५ ॥ बहुरि मेघनाद कन्याके पिताने तत्काल उपज्या है केवलज्ञान जिनकूं ऐसे केवली भगवान उनकी पूजाकरि सुर असुरनिके समीप पूछता भया हे प्रभो ! मेरी पुत्रीका पति कान होवेगा तब भगवान केवलीकी ध्वनिमें आज्ञा भई ॥ ७ ॥ जो हस्तिनापुरविषैं कुरुवंशिनिका अधिपति राजा कार्तिवीर्य महाबलवान उद्धत सो कामधेनुके अर्थ यमदग्निनामा तपस्वीकूं मारता भया अर यमदग्निके पुत्र परशुरामने पिताके वैरकरि कार्तिवीर्यकूं मार्‍या ॥ ९ ॥ अर कई वार क्षत्रीनिकूं क्रोधकरि नाश किया। जा समय परशुरामने कार्त्यवीर्यकूं मार्‍या ता समय कार्त्यवीर्यकी राणी तारा गर्भवती हुती सो एकांतविषैं किसी भांति निकसकरि कौशिकनामा तापसके आश्रममें शरण गई ॥ ११ ॥ तहां निर्भय वसै गर्भके मास पूर्ण भये तब माता शुभ नक्षत्रविषैं अष्टम चक्रवर्तीकूं जनती भई। सो चक्रवर्ती परशुराम करि उपज्या जो क्षत्रीनिकूं त्रास ताका निवारणहारा है। कौशिकनामा तापसके आश्रममें माता भूमि ग्रहणविषैं जनती भई तातैं सुभूमि कहाया कौशिकका महा रमणीक आश्रम तहां सुभूमि छानै बढै यद्यपि तापसके आश्रमविषैं भय नाहीं उनका दृढ शरण है तथापि माताकूं यह संदेह जो शत्रु कदाचित् तापसकूं मारकरि मेरे पुत्रकूं मारे ।। १३ ॥ यातैं छानैं बडा किया सो सुभूमि परशुरामका हननेवाला षट्खंडका पति महाप्रबल थोडेही दिनमें तिहारी पुत्रीका पति होवेगा। यह वार्ता मेघनादकूं केवलीने कहा अर कह्या अब वह तापसके आश्रम रहै है परशुराम क्षत्रीनि पर कालका स्वरूप भया सात वार पृथिवी क्षत्रीरहित करी अर आप पृथिवीका इकछत्र राज करै है। प्रतापरूप अग्निकरि मंडित महाप्रज्वलित पृथिवीकूं भोगै है अर ज्यूं ज्यूं सुभूमि बडा होवै है त्यूं त्यूं परशुरामके गृहविषैं अनेक उत्पात होय हैं अर परशुरामने निमित्तज्ञानीनिसूं पूछ्या जो यह क्या वृत्तांत है सो मुझे आश्चर्य भया है। ये अनिष्टके दिखावनहारे उत्पात मेरे गृहविषैं क्यों होवैं हैं ॥१८॥ तब निमित्तज्ञानीनिने कहा किसी स्थानकविषैं तेरा शत्रु छानै बढै है तब परशुरामने पूछ्या वह जाना कैसैं जावै ॥१९॥ तब निमित्तज्ञानीनिने कह्या तुम क्षत्रीनिके

ताके कांधे आय पड्ये। सो कुमारके प्रतापतैं विद्याधरकूं विद्यासिद्ध होय गई ॥ ७९ ॥ जब वाकूं विद्या सिद्ध भई तब वह यदुपतिकूं प्रणामकरि अपने नगर गया। अर विद्याधरनिकी कन्या वसुदेव कुंवरकूं विजयार्धमें लेय गई। तहां नमस्तलनामा नगर विद्याधरनि करि भर्या सो अनेक नभचर पांचप्रकार पुष्पनिकी वर्षा करते कुंवरकूं पुरमें ले गये ॥ ८१ ॥ अर सूर्यके रथ समान देदीप्यमान रथ तापर आरूढ ये यदुपति अनेक वादित्रनिकी ध्वनिकरि पूरित हैं दशोंदिशा ऐसे उत्सवतैं पुरमें प्रवेशकरि मदनवेगा नामा राजकन्या परणी। कामदेवसमान है रूप जाका। ऐसे कुमार दधिमुख आदि विद्याधरनिकरि दई महासुंदर देवकन्या समान कन्या वरी ॥८२॥ वसुदेव मदनवेगाकूं परणि मदन जो काम ताके वेगकरि उपज्या जो अनुरागभाव ताहि धरता देवकी न्याई क्रीडा करता भया। कैसी है वह मदनवेगा सुंदर हैं सब अंग जाके। यह वसुदेव जिनधर्मके प्रसादतैं देवनि समान सुख भोगता भया। एकदिन मदनवेगातैं प्रसन्न होय कह्या तू वर मांग तब याने यह वर मांग्या मेरा पिता शत्रुकी बंधमैं है सो छुडावहु ॥ ८३ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ सोमश्री, बनमाला, कपिला, पद्मावती, चारुहासिनी, रत्नवती, सोमश्री, वेगवती, मदनवेगा, लाभ वर्णनो नाम चतुर्विंशतिमः सर्गः ॥ २४ ॥



अथानंतर—वसुदेवने मदनवेगाके भाई दधिमुखतैं पूछ्या। तिहारा पिता कौन भांति बंधमें है अर कैसे छूटै। तब वह पिताके छुडायवेके अर्थ सकल वृत्तांत वसुदेवतैं कहता भया, हे कुमार! यह कथा सुनो। नमि विद्याधरके वंशविषैं अनेक राजा भये। कैयक ट पीछे अरिंजयपुरके स्वामी राजा मेघनाद भया ॥ २ ॥ ताके पद्मश्रीनामा कन्या भई सो निमित्तज्ञानीने कही यह कन्या चक्रवर्तीके स्त्रीरत्न होवेगी अर नभस्तिलकनामा नगरका नाथ राजा वज्रपाणि ताने पद्मश्री अनेक बार मेघनादतैं मांगी सो वाने न दई। तब कन्याके अलाभविषैं वज्रपाणि

विजयार्द्धगिरिकी दक्षिण श्रेणीविषैं सुरनाभनामा नगर ताका राजा चित्तवेग विद्याधर ताके राणी अंगारवती ताकापुत्र मानसवेग अर मैं वेगवतीनामा बेटी ॥ ६९ ॥ एकदिन राजा चित्तवेग मानसवेगकूं राज देय पापके नाशकरिबे अर्थ तप करिवेकूं वनमें गया मुनि भया अर मेरा भाई मानसवेग वाने तिहारी सोमश्री हरी अर अपने नगर ले गया। सो वह पतिव्रता शीलरूप गढमें अखंड रहै है ॥ ७१ ॥ सो मेरे भाईने मोहि सोमश्रीके निकट प्रसन्न करिवेकूं भेज्या। सो मैं उसे डिगाय न सकी तब मैं वाकी सखी भई वाके शील अर सत्यकरि वशी भई ॥ ७२ ॥ वाने मोहि वृत्तांत कहिवेकूं आपके निकट पठाई सो मैं कुंवारी तो हुथी ही तिहारा रूप देखि मोहितहोय-गई सोमश्रीकी न्याईं तुमसूं रमी चित्तकी विचित्र गति है जो तुम मोहि बेगवती जानते तो मुझे न स्पर्शते सो मैं कुंवारी कन्या तुमकूं आपही वरी। अब तुम मेरे पति मैं तिहारी पत्नी बडे कुलकी बेटी हूं अर कुंवारी हूं तुम निश्चयकरि लेवो। ज्यूं तुम सोमश्रीके पति त्यूं मेरे पति वह मेरी सखी है ऐसा कहि बेगवती नीची होय रही। अनुक्रमतैं सोमश्रीके हरिवेका वृत्तांत कह्या ॥ ६४ ॥ सो सुनकरि यदुपति खेदखिन्न भया। जो दोऊही बात अयोग्य भईं सोमश्रीका हरण याका अदत्तादानग्रहण यह जिनशासनकी आम्नाय नाहीं। जो भले पुरुष स्त्रीकूं वाकी इच्छासूं न ग्रहै जो ताके मातापिता ज्येष्ट भ्रातादिक न देवें तो ग्रहै अब तो जो भई सो भई। वेगवती अपना प्राचीन रूप धरै पतिकूं रमावै ॥ ७५ ॥ ता सहित समुद्रविजयका छोटा भाई वसुदेव सुखतैं रमै। वह पतिव्रता पतिकी अति सेवा करै ॥

अथानंतर—वसंत ऋतु आई उन्नत भये हैं मधुकर जा विषैं ॥ ७६ ॥ सो एक समय वसुदेवकुमार वेगवतीसहित शयन करते हुते सो वेगवती रति खेदकरि सोयगई। वा समय दुष्ट मानसवेग वेगवतीका भाई जो सोमश्रीकूं हर ले गया हुता सो सूते वसुदेवकूं भी ले उड्या ॥ ७७ ॥ सो वसुदेव जागे विद्याधरकूं मुष्ठि मारी तब कंपायमान भया वासुदेवकूं डार्‍या सो गंगामें आय पडे। एक विद्याधर विद्या साधता हुता

थी ॥ ५२ ॥ सो मैं देवीकी पर्य्यायविषैं केवलीकूं पूछ्या हुता जो मेरा पति कहां उपजेगा तब केवलीने कहा था हरिवंशविषैं उपजेगा सो अब मैं जान्या वह हरिवंशविषैं उपज्या है अर वह विद्याधर क्षेत्रमें आवैगा सो हाथीके जीतिवेकरि प्रसिद्ध होवैगा सो अब आपका आगम सबने जान्या वह सोमश्री तिहारे पूर्वभवकी देवी या भव-विषैं हु तुमकूं वरया चाहै है यह वार्ता द्वारपालिनीने कही जो आपके हाथीके जीतिवेका वृत्तांत मैं राजासूं कह्या सो राजाने मोहि भेजी है। हे सौम्य चंद्रवदन! तुम सोमश्रीसूं विवाह करहु यह वार्ता सुनि अंधकवृष्टिका पुत्र वसुदेव प्रसन्न भया अर सोमश्रीकूं परणी. वह राजा सौम्यदत्तकी पुत्री महा रूपवान ॥ ५८ ॥ दोऊही सुगंध शरीर अर महाभाग सो परस्पर मुखारविंदका मकरंद पीवते सुखसूं काल व्यतीत करते भये ॥ ५९ ॥

अथानंतर—एकसमय रात्रिविषैं सोमश्री वसुदेवके भुजरूप पंजरविषैं शयन करती हुती सो एक विद्याधर सोम-श्रीकूं पतिके समीपतैं ले उड्या अर शत्रुने अपनी वहन वेगवती सोमश्रीका रूपकरि तहां राखी ॥६०॥ वसुदेव जागे सोमश्री न देखी तव व्याकुल होय शब्द किया हे सोमश्री! तू कहां गई तब वह सोमश्रीकी रूपधारिणी शत्रुकी वहन वेगवती बोली यह मैं आपकी अनुचरी हूं आपके हजूरही हूं, वसुदेवने वेगवती ऐसी देखी मानूं साक्षात् सोमश्रीही है ॥ ६२ ॥ तव वसुदेव बोले हे प्रिये! तू बाहर क्यों गई तब मायाचारिणी बोली। हे प्रभो! महलमें गरमी लगी तातैं बाहर निकसी ऐसे बोली मानूं सोमश्रीही है वह पापिनी रूपपरावर्तिनी विद्याकरि सोमश्री समान पतिकूं अनुरागकरि रमावती भई। यह कन्या हुती सो कन्याके भावकूं तजकरि सोमश्री समान चातुर्य्यः तासूं स्वामीकूं सेवती भई। सो निरंतर भोग भोगवे पतिकूं शयन कराय आप शयन करै। अर पतिसूं पहिले आप जागे अर पतिके पांव पलोटै ॥ ६५ ॥ एकदिन वसुदेव किसीप्रकार पहिले जागे सो सोमश्रीका रूप न निरख्या जैसा वेगवतीका था वैसा देख्या ॥ ६६ ॥ तब वसुदेव महाधीर तत्काल ताहि जगाय पूछते भये। तू कौन है सोमश्रीकी रीति रहै है सो प्रयोजन क्या है ॥ ६७ ॥ तब वह प्रणामकरि कहती भई, हे सोम्य हे चंद्रवदन!

बनाये तब वाने कही राजा सोमदत्तने कन्याके स्वयंबरविषैं अनेक राजानिके रहनेके लिये बनाये सो कन्या तो एक कारण पाय आर्या भई सब राजा उठि गये यह वार्ता सुनि वसुदेव कन्याके वैराग्यकी प्रशंसा करते भये अर कहते भये धन्य है वह स्त्री पुरुष जे बाल ब्रह्मचर्य धारै हैं अर धन्य है यह जिनशासन जाकरि अनंत तिरगये अर अनंत तिरैंगे या भांति वीतरागके मार्गकी प्रशंसा करते इंद्रध्वजपूजा देखते तिष्ठे हुते ता समय राजाकी राणी इंद्रध्वजकी पूजा देखिवे आई सो तत्काल दर्शनकरि घर गई । वाही समय माताहाथी बंधनका थंभ उखाडि साक्षात् मृत्युकास्वरूप मनुष्यनिकूं मारता आया ॥ ४२ ॥ सो अनेक लोक मारे वाका महाकोलाहल शब्द भया जो दशों दिशा शब्दरूप होय गई ॥ ४३ ॥ वह माताहाथी शीघ्र आया सो स्त्रीनिके समूह भागे एक कन्या भयकरि पृथ्वीपर गिर पडी ॥ ४४ ॥ अर वसुदेवकुमार गजके सन्मुख जाय गजसूं युद्धकरि ताहि निर्मद किया अर सब लोकनिकी रक्षा करी, यदुपतिने गजपतिसूं क्रीडा करी सो सब लोकनिने देखी हाथीकूं अति खेदखिन्न निर्बलकरि छोड्या अर आप वह कन्या मूर्छित पडी हुती ताहि धैर्य बंधाय उठाई सो वह या सुंदर पुरुषकूं देखती भई ऐसा रूपवान या पृथ्वीमें नाहीं तब वह लंबे २ श्वास खींचती अश्रुपातकरि व्याकुल हैं लोचन जाके सो लज्जाकरि नम्रीभूत भई कुमारका करग्रहण करती भई, कैसा है इनका कर सुखदायक है स्पर्श जाका ॥४७॥ कुमार तो अपने स्थानक गये अर कन्याकूं धाय अर सहेली अंतःपुरमें लेगई ॥४८॥ अर कुबेरदत्तके घर कुमार आभूषण पहरते हुते जिनके निकट राजाकी द्वारपालिनी आई अर कहती भई हे देव ! एक राजा सोमदत्त ताके राणी पूर्णचंद्र वाके पुत्र भूरिश्रवा अर पुत्री सोमश्री सो सोमश्री स्वयंबरके अर्थ अनेक राजा बुलाये ॥ ५१॥ सोमश्री रात्रिविषैं मंदिरमें तिष्ठी हुती सो आकाशविषैं देवनिका गमन देखि जातिस्मरण भई अर प्रेमकीभरी मूर्च्छित होयगई ॥५२॥ फिर सचेत होय वह स्वर्गका देव अपना पति उसे ध्यावती मौन धार तिष्ठी तज्या है स्नान भोजन जाने तब एकांतविषैं ताहि पूछ्या तब वाने कही मैं पूर्व जन्मविषैं देवी हुती सो देवसहित क्रीडा करती

नाशक असाध्य है किसीसूं जीत्या न जाय सो आप महाशक्तिवान् आज ताहि मारया ॥ २३ ॥ या भांति वृद्ध वयवाले सौदासकी कुचेष्टा कहिकरि वसुदेवकूं वस्त्र आभूषण मालादिकरि पूजते भये ॥ २४ ॥ फिर अचल ग्रामविषैं एक समुद्रका वडा व्यापारी ताकी वसुदेवने पुत्री परणी ताका नाम वनमाला तासहित वे दशांपुर नगर गये वहांका राजा कपिलश्रुत ताहि युद्धविषैं जीतकर याकी पुत्री कपिला परणी ॥२५॥ उसके कपिलनामा प्रसिद्ध पुत्र भया वहां वसुदेव विराजे सो कपिलाका भाई अंशुमत तासूं वनदेवके अति प्रीत बढ़ी ॥२७॥ सो एकदिन कुमार बनविषैं हाथी पकड़िवे गयेहुते सो नीलकंठनामा विद्याधर इनका शत्रु गंधहस्तीका रूपकरि ले उडा तब कुमार महायोद्धा नीलकंठ जो मायामयी गज हुता ताहि मुष्टिसूं मारया तब वाने आकाशसूं डारे सो वसुदेव उद्यानविषैं एक सरोवरहुता तामैं आय पडे नाहीं है व्याकुलता जिनके वहरि सरोवरतैं निकसि एक सालगुहानामा पुरी तहां गये ॥२९॥ वहां एक पद्मावतीनामा राजकन्या ताहि धनुषविद्याके प्रभावतैं परणी वाके प्रतिज्ञा हुती जो धनुर्वेदविषैं जीतै ताहि मैं परणूं वहुरि जयपुरके राजाकूं जीतकरि ताकी पुत्री परिणी ॥ ३० ॥ फिर कपिलाका भाई आपका साला अंशुमत् ताहि तज भद्रलपुरनामा नगर गये । तहां राजा पांडू ताकी पुत्री चारुहासिनी सो दिव्य औषधके प्रभाव करि पुरुषका वेस धरे रहै सो वसुदेवने याका वृत्तांत जानि परणी ॥ ३२ ॥ ताके सपौंद्रनामा पुत्र भया एकरात्रिविषैं चारुहासिनीसहित आप पोढ़े हुते सो रात्रिविषैं हंसकारूप धरि अंगारक विद्याधर ले उड़ा तब तासूं युद्ध किया तव वाने आकाशतैं डारे सो नमोकारमंत्रका स्मरण करते गंगाविषैं पडे सो प्रातही गंगातैं निकसि इलावर्द्धननामा नगर गये । तहां एक महाजनकी हाट वैठे सो महाजनने भला आसन विछया दिया आप क्षणमात्र बैठे सो सेठकी दुकान धनसूं भर गई । तव सेठने जान्या यह पुण्याधिकारी पुरुष है । सो घर ले जायकरि अपनी रत्नावती पुत्री परणावता भया । कुमार ता सहित दिव्य भोग भोगता तिष्ठै । एक दिन महापुरानामा नगर तहां इंद्रध्वज पूजा देखिवेकूं गया सो नगरके वाहर अनेक महल देखे, सो किसीसूं पूछी एते मंदिर काहे वास्ते

या नगरमें न आवै ॥ ७ ॥ वह तो दूर देशांतर गया प्रभात भई लोगनिने जानी वह दुराचारी इन्होंने मारचा तब कुमारकूं रथ चढाय नगरमें लाय लोगनिने यह स्तुति करी इनका पुरुषार्थ पृथिवीविषैं प्रसिद्ध भया। तहां पांचसौ कन्या रूपवती लावण्यवती कुलवंती शीलवंती परणीं अर तहां ही तिष्ठे। लोगनिसूं पूछचा यह नरमांसका आहारी दुष्ट मानस कैसैं भया तब वृद्ध लोगनिने कह्या कलिंग देशविषैं कांचनपुर नगर तहां राजा जितशत्रु जाकी देशविषैं अखंड आज्ञा अर प्रजाका पालक जाके राजमें जीवमात्रकी हिंसा न होवे। सर्वत्र देशविषैं अभयदानकी दुहाई फिरै किसी जीवकूं भय नाहीं ॥ १२ ॥ ताके पुत्र सौदास सो महापापी मांसका भक्षी उसे पिताने वहुत निंद्या सो सवसूं गोप्य मांसभक्षण कर पिताकी आण खंडी अर निरंतर मयूरका मांस रसोईदार हाथ रंधावे और कोई न जानै या रीति भखै महलमें ऐसे विपरीत कार्य्य करै ॥ १४ ॥ एक दिन याके भक्षणका मांस मार्जार लेगया तव रसोईदार ग्रामसे बाहर जाय मरे बालककूं एकांतविषैं ल्यायकर वाका मांस सौदासकूं जिमाया तब सौदास प्रसन्न होय आदरसूं रसोईदारकूं पूछता भया हे भाई! सत्य कहो यह मांस किसका है। मैं अनेक जीवनिके मांस खाए परंतु याके सौवें भागहू स्वाद नाहीं ॥ १७ ॥ मेरेसे तुझे भय नाहीं यथार्थ कहहु तब ताने कही यह बालकका मांस है तब ताने कही ऐसा ही नित्य लाया करो तब रसोईदारने कहा तिहारे पिताके राज्यमें तो यह कार्य न होवै तुम अर हम सब मारे जावेंगे या नगरमें मांसका नाम नाहीं सुनिए है। याभांति दवाया तौहू पापी मृतक बालकका मांस मगाय खाया करै कईयक दिनमें पिता तो परलोककूं गया अर सौदास पिताके पाट बैठ्या सो रसोईदार रसोईमें लाडू बांटे। लड्डुओंके अर्थ बालक आवें सो रसोईदार किसी बालककूं मार डाले अर सोदास खावे अब निरंतर नगरमें बालकनिकी हानि होने लगी तब लोगनिने जान्या यह सौदास बालकनिका नाश करै है। तब सब लोगनिने मिलके याकूं देशतैं काढ़ दिया ॥ २१ ॥ सो दिनमें तो वनमें रहै है अर रात्रिविषैं छिद्र पाय वयाघ्रकी न्याई आवै है सो किसी मनुष्यकूं खाय जाय है वह पापी लोगनिका

एक विश्वदेव नामा ब्राह्मण ताके क्षत्रिया नामा स्त्री ताके सोमश्रीनामा पुत्री सो अवधिज्ञानी ब्रह्मदत्त मुनिने कही थी जो वेदविषैं इसे जीतै सो याका वर ॥ ४९ ॥ यह वार्ता सुनकरि यदुपतिने सर्व वेद पढकरि सोमश्रीकूं जीती अर परणी ॥५०॥ सोमश्रीका तो वसुदेवतैं स्नेह बढा हुवा अर वसुदेवका वासूं स्नेह बब्या। दोऊका परस्पर अति स्नेह वहां सुखका वर्णन क्या करिए ॥५१॥ एकांतमें दंपती महा अनुरागरूप रमते भए वह वसुदेवकुमार अनेक विद्याधरनिका अधिपति महा स्वरूप गुण संपदाकरि पूर्ण रतिक्रीडाविषैं निपुण गिरितटनामा नगर विषैं सोमश्रीनामा द्विजपुत्री तासहित देवनि कैसी क्रीडा करता भया। वसुदेवकुमारकी संगतिकरि सोमश्री जिनराजकी महाभक्त भई। वसुदेव वडे सुबुद्धि हैं अर सोमश्री स्त्रीनिमें शिरोभाग है महामनोहर अद्भुत सुख दोऊ भोगते भए ॥ ५३ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ सोमश्रीलाभवर्णनो नाम त्रयोविंशतिः सर्गः ॥ २३ ॥

अथानंतर—वसुदेव एक इंद्रशर्मा नामा पुरुष ताके उपदेशतैं उद्यानविषैं विद्या साधता हुता सो रात्रिविषैं धूर्तनिने देख्या सो पालकीपै बैठायकरि पिछली रात्रि दूर जाय डाल्या तहांतैं गमनकरि तिलवस्तुक नामा नगर गए ॥ २ ॥ तहां बाह्य उद्यानविषैं भगवानका चैत्यालय ताके समीप शयन करते हुते सो कोई मनुष्य राक्षसी विद्याका साधक नरमांसका भक्षणहारा आयकरि यदुपतितैं कहता भया, हे मनुष्य ! तू कौन है ? क्या सोच करता है ? उठ जाग मैं भूखा नाहर हूं सो मेरे मुखमें तू आप ही आया है ॥४॥ तव वसुदेव जाग्या महाशूरबीर कुमार सो वा दुष्टकूं भुजा प्रहारकरि कूट्या दोऊ ही महा उद्धत सो मुष्टीनिके दृढघातकरि दोऊमें महा भयंकर युद्ध भया जिसे देखि कायर जन कंपै बहुत देरमें यादवबलीने दुष्ट दानवकूं पछाडकरि पांवनि तले दिया जब वाने जीवदान माग्या जो आप महाबली हो दयालु हो मुझे मत मारो तब जीवता छोड्या ऐसा किया जो फेर

ताहि वनका दहन कठिन क्या ॥ ३५ ॥ या भांति पर्वतकूं कहकरि वह दुष्ट उसे अग्रेसरकरि भरतक्षेत्रके आर्यखंड विषैं सब राजा अर प्रजाकूं सैकडों व्याधियों करि व्याकुल करता भया ॥ ३६ ॥ तब पर्वत व्याधिके मेटवे अर्थ शांति कर्म करता भया याके विश्वासकरि बहुत लोग याके शरणागत भए। राजा सगर महा मूर्ख अनेक क्षत्रीनि सहित आदरसूं पर्वतका आश्रयकरि मंत्र विधानवाला होम कराय नीरोग भया ॥ ३८ ॥ वह दुराचारी असुर हिंसाकी प्ररूपणाकरि भगवतप्रणीत आर्षवेदतैं विमुख अपने किए महाक्रूर अनार्षवेद दुष्ट विप्रनिकूं पढाय अपने वश करता भया, अनेक पापी जीव पर्वतके मार्गमें प्रवर्ते। प्रथम अजापुत्र होम किए सो अजामेधयज्ञ कहाया। बहुरि अश्व होम्या सो अश्वमेधयज्ञ कहाया। फिर गोमेधयज्ञ किया गौका होम किया याभांति अनेक यज्ञ किये अर सब लोकनिमें साक्षात यज्ञकाफल दिखाया। पर्वतने जो पशुहोमे ते असुरने मायायाकरि ऐसे दिखाए। जो वे पशु विमान बैठकरि स्वर्ग चले जाय हैं ऐसा भ्रम दिखाया। जो यज्ञविषैं मरणका साक्षात् फल स्वर्ग है अनेक यज्ञ करि पर्वतने एक राजसी यज्ञ प्रारंभ किया जहां अनेक राजा भेले होवें सो राजसी यज्ञ कहिए। राजा सगरका वैरी महा कालासुर ताने अनेक प्रपंच दिखाए ॥ ४१ ॥ तब नारदसहित दिवाकरदेव विद्याधर आया सो असुरकी माया आगे विद्याधरका बल न लागा अणिमादिक गुणनिकरि प्रबल पापीदेव जहां विक्रिया करै तहां विद्याबलकरि पूर्णभी मनुष्य कहा करै ॥ ४३ ॥ कालासुरने अनेक जीवनिका घात करया अपने बैरी अनेक राजा तिनकूं होम किए तिनने जान्या हमकूं होमै तो स्वर्ग पावैं सो अपनी इच्छासूं अनेक भस्म भए बहुरि निर्दय कालासुरने सगर अर सुलसाका पर्वतके हाथतैं होम कराया सो कुगति गए ये हिंसारूप अनार्षवेद कोपकरि महा कालासुरने किए अर सर्व पृथिवीविषैं पर्वतादिकने विस्तारे सगर अर सुलसाका होम किए पीछे कालासुर तो अपने स्थानक गया ॥४६॥ अर नारद ब्राह्मणके पुत्रकूं विद्याधर अपनी पुत्री परमकल्याणी नामा महाविद्याकरि संयुक्त परणावते भए नारदका पुत्र सम्यग्दृष्टि है ॥ ४७ ॥ यह सब कथा अध्यापक यदुपतितैं कहकरि बहुरि कहता भया। हे कुमार!

स्वयंवर मंडपविषैं अनेक दुष्ट राजा मिले सो इसमें आंखनिके लक्षणकी हीनताका दोष ठहराया। पिंगल नेत्रका अति औगुण वर्ण्या जैसे मांसका आहारी निंद्य अर परनिंदाका करणहारा अर अपनी प्रशंसाका करणहारा निंद्य तैसैं ही पिंगल नेत्रका धारक निंद्य ॥२१॥ सो यह मधुपिंगल तो भोला आप सामुद्रिकमें समझै नाहीं अन्य कहै है सो प्रमाण सो याने पराए वचन सुनि आपकूं लक्षणहीन जान्या पिंगलनेत्रका आपमें दोष जानि निरास होय तप धारता भया ॥ २२ ॥ जे आप प्रमाद आलस्य अर गर्वके योगतैं आगमके ज्ञाता नाहीं वे पराये बहकाये बहकैं हैं ॥ २३ ॥ यह तो व्रतधारी भया अर कन्याने स्वयंवरविषैं राजा सगरकूं वरया सो ताविषैं भोगासक्त क्षत्रीनिके समूहकरि मंडित तिष्ठे। यह वार्ता सुनकरि मधुपिंगल क्रोध संयुक्त होय मूवा सो व्यंतर देवनिमें महाकालनामा असुर होय कर अवधि विचारि ताकरि जानी जो सगरने छलकर सुलसा परणी सो क्रोधरूप अग्निकरि महा काल हृदयविषै अत्यंत जलै ॥ २७ ॥ स्त्रीका जो वर सोई भया विष ताकरि दग्ध है हृदय जाका सो क्षमारूप जलविना क्रोधरूप दाहके बुझावे अर्थ समर्थ नाहीं भया ॥२८॥ महाक्रोधकरि ऐसा विचारता भया जो ऐसा उपाय करूं मेरा वैरी सगर दीर्घ संसारविषैं दुःखकी परंपरा भोग या भवमें मारा जाय अर नरक निगोदके अनन्त दुःख भोगै यह कथा अध्यापक वसुदेवतैं कहे है जो मूर्ख पर जीवके अकल्याणके अर्थ उपायकरि पापका उपार्जन करै सो आप महा दुःख भोगै है कुगतिका अधिकारी होवै है ॥ ३० ॥ सो पापी महाकालनामा असुर क्रोध करि प्रज्वलित या भरतक्षेत्रविषैं आया। नारदकरि वादविषैं हारया जो पर्वत परिश्रमरूप भ्रमण करता हुआ ताहि देख्या सो शांडिल्यनामा तापसका रूप धरि पर्वतकूं विश्वास उपजाय कहता भया। हे पर्वत ! तू खेद मत करै मैं तुझे सर्वथा जिताऊंगा तू मेरी वार्ता सुनि। एक ध्रौव्यनामा मुनि ताके पांच शिष्य तिनमें पहिला शिष्य मैं शांडिल्य अर दूजा तेरा पिता क्षीरकदंबका पुत्र तैसा मेरा पुत्र सो तेरा जिसने अपमान किया है उसके उडायबेके अर्थ मैं उद्यमी भया हूं ॥३४॥ तू मेरा सहाय पायकर या क्षेत्रकूं बशी कर। पवनसमान मित्र जाके ऐसी प्रज्वलित अग्नि

दुर्भाग हैं क्रूर हैं कपटी हैं अपराधी हैं ॥४॥ पुरुषके समस्तलक्षणके गुण चिंतवनविषैं आंखका लक्षण मुख्य है अर जो शुभलक्षण होवैं अर नेत्र पिंगल होवैं तौ अपलक्षणही जानिए अर जिनके नेत्रकमलकेपत्रसमान होवें नेत्रनिकी अणी अरुण होवें वे महाधनके भोक्ता होवैं अर गजेंद्र सारिखे नेत्र तथा वृषभसारिखे नेत्र वे पृथिवीपति होवें याभांति पुस्तकविषै विश्वभूतिने वांच्या सो मधुपिंगल सुनकरि पिंगलनेत्रके दोपकी आशंकाकरि स्वयंवर मंडपतैं निकसि गया सुलसाकी आशा तजि नवयौवनविषैं मुनिव्रत धारि देशांतर विहार करता भया ॥८॥ अर सुलसा कमलसमान नेत्र जाके सो स्वयंवरविषै सगरके कंठमें वरमाला डाली सो सगर सुलसा सहित सुख भोगता भया अर मधुपिंगल मुनिभेप धरे एक नगरविषैं मध्यान्ह समय अनेकउपवासनिका धारक पारणाके अर्थि गया हुता सो एक सामुद्रिक शास्त्रका पाठी मधुपिंगल यतीकूं पांवनितैं लेय मस्तक पर्यंत देखि शिर धुनता भया अर आश्चर्यकूं प्राप्त भया ये वचन कहता भया ॥१२॥ याके देहविषैं सामुद्रिकशास्त्रकी दृष्टिकरि तिलमात्र हू दोष नाहीं सो यह यती इन लक्षणनिके समूहका धारक क्या राज संपदा न पावै अर याके पिंगल नेत्र ही माधुर्यताकूं धरैं राज्य सौभाग्यके कारण ऐसे लक्षणनिकरि युक्त यह नवयौवनविषैं भिक्षाके अर्थ भ्रमै है सो धिकार सामुद्रिक शास्त्रकूं जो पूर्वोपार्जित कर्मने इसे दुःखहीके अर्थ उपजाया तो ऐसे शुभलक्षण याके अंगविषैं क्यों धरे ॥ १६ ॥ अथवा ऐसा भी होय है जे सुखाभिलाषी संसारके दुखसूं भयभीत हैं उदय आई लक्ष्मीकूं भी विषकी वेलसमान जानि नाहीं अंगीकार करैं हैं विषकी वेल फली है तो भी खोटा है विपाक जाका तैसैं यह राजलक्ष्मी अनेक फलरूप फली है तथापि दुःखरूप है उदय जाका ॥

भावार्थ-यह राज लक्ष्मी है सो नरक निगोदका कारण है ऐसे शुभ लक्षणनिकर पूर्ण शुद्धवंशका उपज्या मोक्ष अभिलाषी ताके जिनदीक्षा होकर आनंद उपजै ॥ १८॥ ये सामुद्रिक पाठीके वचन सुनि एकमनुष्य या बातका मरमी था सो बोला हे सामुद्रिकके पाठी ! या वार्ता तो पृथिवीविषैं प्रसिद्ध है ते क्या न सुनी ॥ १९ ॥ सुलसाके

धनवान् होय । अर जाके अंगुली सघन न होवै सो निर्धन होवै । अर जाके मणिबंधनतैं नीचे तीनरेखा करकी होंय सो राजा होवै ॥ ९३ ॥ अर जाके रेखाका लक्षण अखंड होवै सो दीर्घायु होवै । अर जाकै न होवै सो अल्पायु जानहु ॥ ९४ ॥ अर जाके करमें खडगरेखा तथा शक्तिकी तथा गदाकी बरछीकी चक्रकी तोमरकी होवै सो सेनाका नाथ होवै ॥ ९५ ॥ अर जिनकी ठोडी कृश होवै अर दीर्घ होवै वे निर्धन होवैं अर जिनकी ठोडी मासल कहिये पुष्ट होय वे महा धनवान् होवैं अर जिनकी ऊंटकीसी ठोडी होवै वे प्रसिद्ध पुरुष न होवें अर जिनकी ठोडी किंदूरीफलके समान वे राजा जानहु ॥ ९६ ॥ अर जिनकी दाढ तीक्ष्ण होवै समान होवै स्निग्ध होवै अर दांत निर्मल होवै सघन होवै अर जिह्वा आरक्त होवै दीर्घ होवै मनोहर होवै वे महाभाग्यवंत भोगी पुरुष जानहु ॥ ९७ ॥ अर जिनका मुख वर्तुलाकार होवै सौम्य होवै सम होवै वक्र न होवै वे लक्षण राजानिके जानहु अर जो भाग्यहीन हैं उनका मुख भारी होवै । अर जो मूर्ख हैं उनका मुख कूलडी समान होवै ॥ ९८ ॥ जे स्त्रीं बांझ हों उनका मुख नीचा होवै अर वक्र होवै अर जे कृपण मनुष्य हैं उनका मुख ह्रस्व होवै । अर जे द्रव्यरहित हैं उनका मुख अति दीर्घ होवै यह निश्चय जानहु ॥ ९९ ॥ जिनके कीला सारिखे कर्ण हैं वे महीपाल जानहु अर जिनके काननिके केश होवैं वे दीर्घायु होवें । अर जिनकी नासिका सरल अर सम्पुट होवैं अर छिद्र स्वल्प होवैं सो भोगी होवैं ॥ १०० ॥ अर जो धनवान् हैं उनके छींक एक वार होवै अर जो शास्त्रके पाठी हैं उनके दो तीन वार छींक होवै अर संहित कहिये लगती अर प्रमुक्त कहिये आंतरे २ छींक होवै सो ये दीर्घायु धारीनिके लक्षण जानहु ॥१॥ अर जिनके नेत्रनिके कोए कमलपत्रसमान आरक्त होवैं वे धनके भोक्ता अर यशवंत जानहु अर जिनके गजराज समान नेत्र अर वृषभसमान नेत्र वे पृथ्वीपति जानहु ॥ २ ॥ शास्त्रके अनुसार संक्षेपमात्र लक्षण कहे । तहां लक्षणशात्रविषैं मार्जारिलोचनका अति दोष गाया जो मार्जार नेत्र हैं वे अमांगलीक हैं पापी हैं मार्जार समान हैं उनकूं न देखिए न संभाषण करिए ॥३॥ वे मन वचन कायके पापनिकरि पूर्ण हैं, दुर्जन हैं,

होवै सो शूरवीर होवै बहुरि जाकी पीठ रोमरहित सम भग्न होवै सो शुभ लक्षण जानहु। अर जाकी पीठ रोमनिके संचयकूं धरै अर अति भग्न होवै सो शुभ लक्षण न जानहु ॥८३॥ जाके कांधे अल्प होवैं अर पुष्ट होवैं अर भग्न रोमनिकरि युक्त सो निर्धन पुरुष जानहु अर धनवंत मनुष्यनिके कांधे सुंदर पुष्ट रोमरहित होंय ते धनवान और शूरवीर होवें अर जिनके कर पुष्ट होवैं दोऊ समान होवैं हाथीकी सूंड समान लंबायमान होवैं ते लक्षण राजनिके जानहु अर निर्धन मनुष्यनिके कर छोटे होवैं अर रोमसंयुक्त होवैं ॥८५॥ बहुरि जो दीर्घायु पुरुष है उनकी कर शाखानिविषैं रेखा दीर्घ होवें॥ अर कोमल होवें अर जो भाग्यवान होवें उनके रेखा अव्यक्त होवैं अर जो बुद्धिमान होवें उनके कर रेखा सूक्ष्म होवें ॥ ८६ ॥ अर जो निर्धन हैं उनके कर स्थूल होवें अर जो पराये किंकर हैं उनके कर चिपटे होवें अर जो धनवान हैं उनके कर मर्कट समान होवैं। अर जो महाक्रूर निर्दय हैं उनके कर व्याघ्र समान होवैं ॥ ८७ ॥ अर जिनके संधि मणिवंधन निगूढ होवैं अर संधि सुश्लिष्ट होवैं वे लक्षण राजनिके जानहु अर जिनके संधि मणिवंधन शब्दसहित होवैं अर शिथिल होवैं वे पुरुष दरिद्री होवें अर जिनकी हथेली नीची होवै वे पुरुष नपुंसक होवैं अर पिताके धनतैं रहित अर जिनकी हथेली गोल होवै अर किंचित नीची होवै वे धनवान होवैं अर जिनकी हथेली उच्च होवै वे दातार होवैं॥ ८९ ॥ अर जिनकी हथेली आरक्त होवै वे धनाढ्य होवैं। अर जिनकी हथेली विषम होवै वे कठोरचित्त अर दरिद्री होवें अर जिनकी हथेली पीत होवै वे अगम्यगामी अर जिनकी हथेली रूक्ष होवै वे कुरूप होवैं ॥ ९० ॥ अर जिनके नख तुसकी छवि धरैं वे नपुंसक होवें अर जिनके नख फाटे होवैं वे निर्धन होवैं। अर जिनके नख अत्यंत अरुण होवैं वे सेनाके नाथ होवें। जिनके कुत्सित नख होवें वे पराधीन होवें ॥ ९१ ॥ अर अंगुष्ठकरि उपजा जो यवका आकार ताकरि धनाढ्य होवें। अर अंगुष्ठके मूलविषैं उपजा जो यव ताकर पुत्रवान् होवें । अर नीची अति स्निग्ध जो रेखा तिनकरि धनवान् होवैं। यातैं अन्यथा होवै तो धनका नाश होवै ॥ ९२ ॥ अर जाकी अंगुली सघन होवै सो

विषम होवै उनके वायुशूलकी बाधा होवै और दरिद्री होवें फिर वह त्रिवली बांई अथवा दहिनी आवर्तकरि युक्त होवै तो वह पुरुष धनवान होवै अर बुद्धिवान होवै ॥ ७२ ॥ अर जिनकी त्रिवली कमलकी कर्णिका समान दीर्घ होय तो वह पुरुष राजा होवै अर जिसकी त्रिवली अधोभागविषैं दीर्घ होवै तो उस पुरुषके निकट धन होवै, पंडित होवै, ग्रामपति होवै, अर जाके चतुपद होवै दीर्घायु होवै ॥ ७३ ॥ अर शास्त्रके अर्थका वेत्ता होवै अर स्त्रीनिकूं सदा प्रिय होवै अर रूपवान होवै उसके बहुत पुत्र होवैं। एक दो तीन चार इन त्रिवलीनिकरि युक्त होवै सो पुरुष राजा होवै बलवान होवै ॥ ७४ ॥ अर जिनके त्रिवली सरल होवै वे पुरुष परदाराके त्यागी स्वदारसंतुष्ट होवैं अर जिनके विषम त्रिवली होवै वे महाव्यभिचारी अर अन्यायमार्गके प्रवर्तनहारे होवैं ॥७५॥ अर जिनकी पांशु मोटी अर मृदु होय अर दक्षिणावर्त रोम होय सो राजा होय अर जिनकी पांशु मोटी न होय मृदु न होय अर दक्षिणावर्त रोम न होय वे पराये किंकर होवैं अर जिनके बाहु दीर्घ न होवें अर पुष्ट न होवें वे पुरुष सौभाग्यहीन होवैं अर जिनके कुच दीर्घ होवैं अर विषम होवें सो मनुष्य निर्धन होवैं ॥ ७७ ॥ अर जिनका हृदय पुष्ट होवै विस्तीर्ण होवै ऊंचा होवै निष्कंप होवै सो राजा होवैं ये लक्षण राजानिके हैं अर जो यातैं विपरीत हृदय हो सो हीनपुण्यके लक्षण जानहु अर खरसमान कठोर रोमनिकरि मंडित सो हीनपुण्यी जानो ॥७८॥ अर जिनका वक्षस्थल सम होवै वे धनवान होवें। अर जिनका वक्षस्थल पुष्ट होवै वे पुरुष शूरवीर होवें अर जिनका वक्षस्थल विषम होवै वे निर्धन होवें अर शस्त्रकरि उनकी मृत्यु होवै ॥ ७९ ॥ अर पुष्टजर्वुणाकरि मनोग्य होवै अर उन्नतकरि भोगवान होवै अर नीचीकरि दरिद्री होवै अर हाडनकरि मंडित तथा विषम ऐसे जर्वुणाकरि विषम पुरुष होवैं ॥८०॥ अर जिसकी पसेवरहित कांख होवै अर पुष्ट होवै उन्नत होवै सुगंध होवै सो धनवान होवैं अर जिसकी कांख सम रोमनिकरि युक्त होवैं सो धनवान होवै। अर जिसकी ग्रीवा चिपटी होवै अर शुष्क होवै अर नसानिकरि युक्त होवै सो दरिद्री होवै अर जिसकी शंख समान ग्रीवा होवै सो राजा होवै अर जिस मनुष्यकी महिष समान ग्रीवा

ऊष्मा घनी अर छिद्रसहित कसैले रंग जे पांव ते वंशके छेद करणहारे जानहु ॥६१॥ अर जाकी जंघा अर गोडे नितंव वर्तुलाकार अर जिनके रोम अति अल्प अर अति सूक्ष्म यह लक्षण महाशुभ । अर सूकी जंघा अर सूके गोडे अर सूके नितंव वे अति अशुभ लक्षण वहुरि राजानिके हृदयविषैं एक एक रोम अर बुद्धिमाननिके दो दो रोम अर जे जडबुद्धि अर दरिद्री तिनके तीन तीन आदि चार चार हृदयविषैं रोम जानहु यह उरस्थल रोमनिका फल कह्या ॥ ६३ ॥ अर बालकका लिंग अति अल्प होय अर दाहिनी ओर वांका होय अर गांठ जाकी स्थूल होय सो शुभ लक्षण है। अर यासूं विपरीत हो तो विपरीत फल जानहु । अर वृण कहिये पोता अल्प होय सो बालक न जीवें अर जिनके वृष्ण विषम होवें वे स्त्रीविषैं चलचित्त होवें अर जिनके समान वृष्ण वे मूक होवें अर जिनके लंबे वृष्ण होवें वे दीर्घायु होवें ॥ ६५ ॥ अर जिनका मूत्र शब्दसहित होवै वे सुखी जानहु । अर जिनका मूत्र शब्दरहित वे दुःख भोगें। अर जा स्त्रीके दो आदि मूत्रकी धारा प्रदक्षिणावर्त होवै सो स्त्री प्रशंसायोग्य सौभाग्यवती है और नाहीं ॥ ६६ ॥ अर जाके टकूणे स्थूल सो पुरुप दरिद्री जानो। अर जाके टकूणे मांससहित पुष्ट सो पुरुप सुखी अर मींढकसमान जाके टकूणे सो व्याघ्रतें मृत्यु लहै ॥ ६७ ॥ अर नाहरकीसी जाकी कटि होय सो राजा होवै। अर वंदरनिके ओष्ट समान है कटि जाकी सो धनवंत होवै । अर जाका समान उदर होवै सो सुखी होवें। अर घटसमान पिठर कहिये हांडीसमान जाका उदर होवे सो दुखी होवे ॥ ६८ ॥ अर जाकी पांसली अति नीची अर वक्र सो पूर्ण धनवंत होवै अर जाकी कुक्ष नीची न होवै सो भोगरहित होवै अर जाकी समकुक्ष होवें वे भोगी होवैं ॥ ६९ ॥ अर जिनकी उन्नत कुक्ष होवै सो राजा होवै अर जाकी विषम कुक्ष होवै सो कुधन होवैं। अर जिनका उदर सर्पसमान होवैं वे दरिद्री होवें अर वहुत आहारी होवें ॥ ७० ॥ अर जिनकी नाभि विस्तीर्ण होवें वे दरिद्री होवें अर वहुत ऊन होवे गंभीर होवे वर्तुलाकार होवे वे सुखी होवें। अर जिनकी नाभि नीची होवें अल्प होवें अदृश्य होवें वे क्लेशके भाजन पुरुप कहे ॥ ७१ ॥ अर जिनके मध्यकी त्रिवली

भक्त है मेरे स्तनका तैंने दूध पिया है तो मेरी बात मानि, मेरा बडा भाई तृणविंदु ताके राणी सर्वयशा ताका पुत्र मधुपिंगल सो अपनी शोभाकरि सब राजपुत्रनिकी शोभाकूं जीते है। मैं मनकरि तुझे वाकूं दिया है सो तू स्वयंबर विषैं मेरे मनोरथ पूरि मधुपिंगलके गलेविषैं माला डारि यह वचन माता पुत्रीसूं कहि नेत्र अश्रुपातसंयुक्त किये। तब सुलसा कहती भई हे माता! तू रुदन मतकरै मैं सब राजानिके निकट तेरी आज्ञा प्रमाण करूंगी ॥ ५३ ॥ माता अर पुत्री दोऊके परस्पर यह बात भई सब वार्ता सगरकी द्वारपालिनी मंदोदरी सगरसूं कहती भई। सगरका चित्त सुलसाके अंगीकारविषैं अनुरागी है ॥५५॥ तब सगरका पुरोहित विश्वभूति सामुद्रिकशास्त्रका पाठी नरके लक्षणनिका बतानेवाला एकांतविषैं नयाशास्त्र रचता भया अर स्वयंबरके अर्थ जो स्थान रचा हुता तहां धरती खोद लोहकी मंजूषमें मेलि गाड दिया। फिर किसीके हाथ कढाय राजानिकूं दिखाया पुस्तक धूमतैं धूमराकरि जीर्ण समान कर दीनी स्वयंबर अर्थी राजनिके आगे सगरका विश्वभूति मंत्री बांचता भया। कैसे हैं राजा पुरुषनिके लक्षण सुनिनेका है अभिलाप जिनके ॥ ५७ ॥

अथानंतर—स्त्री पुरुषनिके शुभ अशुभ लक्षण कहै हैं। जा पुरुषके ऐसे चरण होवें सो राजा होवै। जाके चरणनिमें मत्स्य शंख अर अंकुशका चिन्ह होवै अर कमलके गर्भ समान आरक्त पगथली होवै अर जाके दोऊ पसवाडे शोभायमान होवें अर सुंदर होंय, सघन होंय अंगुलीनिकी गांठ जिनके, अर सचिक्कण होंय, अर आरक्त होंय नख जिनके अर गूढ होंय पगनिके टकूणे जिनके अर नस नजर आवें अर चरणनिमें किंचित् उष्णता होय अर कूर्म समान उन्नत होवें प्रस्वेदरहित होवें ऐसे चरण पृथिवीपतिके होवें ॥ ५८ ॥ अर ऐसे चरण पापी जीवनिके होवें सो सुनहु सूर्य्याकार कहिये वर्तुलाकार होवैं अर नसाजाल प्रगट नजर आवै अर वक्र होय अर रूक्ष होय नख जिनके अर शुष्क होंय लहलहाट करते नाहीं अर अमीलित हैं असुंदर हैं अंगुली जिनकी ॥ ६० ॥ अर ऐसे पांव पातकीनिके होवें अर हिंसकजीवके पांव जली माटी समान पीतवर्ण जानहु अर जिनके

राजानि सहित दिगंबरी दीक्षा धारते भए सो भगवान महावीर स्वयंभू हजारवर्ष पर्यंत महादुर्द्धर तप किया बाईस परीषह जीते ॥ ३८ ॥ बहुरि केवलज्ञान पाया केवलज्ञानरूप नेत्रनिकरि सब पदार्थ निरखे धर्मरूप तीर्थकरि आर्यक्षेत्रविषैं जीवनिकूं विवेकरूप कीये अनेकजीव दुष्टतातैं रहित भए ॥ ३९ ॥ ता भगवानने यती श्रावकके दो धर्म स्वर्गमोक्ष सुखके अर्थ भाषे। केवलीप्रणीत वेद ताके बारह अंग तिनविषैं यतिका धर्म मुख्य अर यतीधर्मके अनंतर गृहस्थनिका आचार दिखाया। भावार्थ—हिंसादि पापनिका यतीके सर्वथात्याग सो महाव्रत कहिये अर गृहस्थके एकोदेश त्याग सो अणुव्रत कहिये ॥ ४१ ॥ सो गृहस्थके पांच अणुव्रत यह तो महाव्रतमें गर्भित हैं। हिंसा, मृषा, आदत्तादान, अब्रह्म, परिग्रह इनका सर्वथा त्याग सो महाव्रत अर एकोदेश त्याग सो अणुव्रत ॥४२॥ अर तीनगुणव्रत चार शिक्षाव्रत इत्यादि श्रावकके अनेक नेम हैं सो ऋषभप्रभुने सातवें उपासकाध्ययन अंगविषैं दिखाये जामैं यतीका श्रावकका धर्म सो आर्षवेद कहिये। आर्ष कहिये केवली तिनका प्ररूप्या ॥ ४३ ॥ सो केवलीप्रणीत वेदकूं पढकरि वेदकी आज्ञाप्रमाण धर्मकेधारक भरत चक्रवर्तीने विप्र थापे ॥ ४३ ॥ यह तो आर्षवेदका स्वरूप वसुदेवसूं ब्रह्मदत्तनामा अध्यापकने कह्या बहुरि वह कहै है। हे वसुदेव! अनार्षवेदकी उत्पत्ति सुनहु। अनार्ष कहिये मनुष्यनिका प्ररूप्या सो या युगके विप्रनिका तात्पर्य अनार्षवेदहीविषै है ॥४४॥ सो वाकी उत्पत्ति सुनहु—एक चारणयुगलनामा नगर ताविषैं राजा अयोधन रणभूमिविषैं जिससूं कोई युद्ध न करि सकै तातैं अयोधन कहाया सो राजा सूर्यवंशी ताके दितिनामा राणी सोमवंशमें उपजी राजा तृणविंदुकी छोटी बहन ताके सुलसानामा पुत्री महारूपवती स्त्रीनिके गुणरूप आभूषणकी मंजूषा होती भई सो योवनअवस्थाविषैं याका पिता याका स्वयंवर रचता भया। राजा सगर आदि बडे २ राजा पृथिवीविषैं प्रसिद्ध है कीर्ति जिनकी सो स्वयंवरके अर्थ बुलाये ॥४८॥ सबमें राजा सगर नामी है सो वाकी मंदोदरीनामा द्वारपालिनी सुलसाकी माताके निकट राजलोकमें गई सो एकांतविषैं सुलसाकी माता दिति सुलसासूं कहती भई ॥४९॥ हे सुलसे! जो माताकी

॥ २४ ॥ वहां एक गिरतटनामा नगर जाके ऊंचा कोट गंभीर खाई अर पडकोटा सो देख करि यदुपति हर्षित भया अर नगरमें पैठा तहां वेदपाठी विप्रनिके वेदाध्ययनके शब्दकरि वाचाल हो रही है सब दिशा। तहां एक मनुष्यकूं वसुदेव कौतुकसूं पूछते भए यहां कोई विप्रनिकूं महादान दे है जो इतने वेदपाठी इकट्ठे हुए हैं? तब वह वोल्या हे कुमार! यहां विश्वदेव नामा ब्राह्मण है। ताके सोमश्री नामा कन्या सो चन्द्रकला समान महा मनोहर अर वेद विद्याविषैं प्रवीण ॥२८॥ जो वेद विद्याविषैं जीते सो याका वर यह वचन निमित्तज्ञानीने कह्या सो वाके जीतवे अर्थ इतने वेदपाठी इकट्ठे हुए हैं ॥ २९ ॥ सो वह कन्या अति नाजुक वदन है जाकी कटि महाक्षीण सो नितम्ब अर कुचनिका भार नाहीं सहसकै है महा रूपवान है सो न जानिए वह सुन्दरी कौनकूं वरै, मनकी हरणहारी वह सोमश्री कन्या ताका यश यदुपतिने काननिसूं सुन्या सो वह श्रवणमात्रही राजहंसिनीकी न्याईं या राजहंसका चित्त हरती भई ॥ ३१ ॥ तब वह वसुदेव कुमार ता नगरविषैं एक ब्रह्मदत्तनामा अध्यापक है तापै जाय कहते भए अहो तुम मुझ वेद पढावहु, गोत्र शाखा सब सिखावहु तब वह अध्यापक बोला तुम आर्षवेद भणोगे वा अनार्ष भणोगे यह कहा तब यदुपति कही ये दो भेद कैसे हैं। तब वह द्विज प्रसन्न होय यदुपतिसूं यथार्थ वचन कहता भया, ब्राह्मण महाविवेकी ब्रह्मविद्याका वेत्ता जिनधर्मी है। सो कहै है हे वसुदेव कुमार! महा विदेह क्षेत्रविषै तो सदा ही कर्मभूमि है अर धर्मकी प्रवृत्ति है अर भरत पांच अर ऐरावत पांचविषैं अठारह कोडाकोडि सागर भोगभूमि है अर दो कोडाकोडि सागर कर्मभूमि है सो भोगभूमिविषै यहां कल्पवृक्ष हुते सो कर्मभूमिकी आदि विलाय गए ता समय श्रीऋषभदेव प्रजाकी रक्षा करते भए प्रजा षट्कर्मविषैं प्रवर्ती सो प्रभु आदितीर्थंकर वेदके वेत्ता तीनों वर्णोंकी प्रतिपालना करते भए। वे प्रभु समस्त वसुधारूप वधू उसे एकक्षत्र भोगते भए, कैसी है वसुधारूप वधू हिमाचल अर विंध्याचल ये दोऊ हैं कुच जाके अर रूपामय विजयार्द्ध पर्वत सोई है हार जाके अर समुद्र है कांचिदाम जाके ॥ ३६ ॥ कैयक दिन राजकरि वे जगन्नाथ भरतादि पुत्रनिकूं राज देय चारहजार

परण्या ताके नीलकंठ पुत्र भया अर तिहारे श्वशुरके नीलंयशा पुत्री भई सो पुत्रीका जन्म भया तब मुनीनिकूं पूछ्या याका वर कौन होवेगा तब बृहस्पतिनामा साधुने कही नवमें नारायनका पिता वसुदेव याका पति होवेगा तब सिंहदंष्ट्रने तुमकूं परणाई अर वह नील अपने नीलकंठपुत्रके अर्थ मागे है अर कहै है अपना वचन याद करहु सो पिता नील अर पुत्र नीलकंठ दोऊ दुष्ट सभाविषैं आयकरि तिहारे श्वसुरसूं विवाद करते भये सो तिहारे श्वसुरने न्यायमार्ग करि जीते सो विद्याधर लोग शब्द करैं हैं ये वचन द्वारपालनीके सुनकरि वसुदेव हंसे अर नीलंयशा सहित तिष्ठे वहुरि शरद ऋतु आई महा गर्ववंत जो काम ताके बाण समान गुंजार करते भंवर तेई भए फिडच अर वाणासनजातिके वृक्ष ते ही भए कामके धनुष सो कामने धनुष चढाया ॥ १२ ॥ तासमय विद्याधर विद्यारूप औषधनिकी सिद्धिके अर्थ अपना मन निश्चलकरि शीघ्रही निकसे तब वसुदेव अर नीलंयशा हीमंत पर्वतकी ओर चले जैसे मेघ विजुलीसंयुक्त गगनविषैं गमन करै तैसैं ये दंपति विद्याधरनिकरि मंडित गगनविषैं गमन करते भये ॥ १४ ॥ दोऊ हीमंतगिरिमें जाय पहुंचे तहां मकरंदके पानकरि उन्मत्त भए मधुकर शब्द करै हैं सो मानूं कामके धनुषकी फिडचका शब्द है ॥ १५ ॥ ये दोऊ हीमंतगिरिके महासुगन्ध सप्तवर्ण वनविषैं उतरे, सो वन महा मनोहर पवनकरि हालें हैं वृक्ष जहां सो वनका वर्णन करते दोऊ वनविषैं भ्रमण करते बहुत देरतक वनकी शोभा विलोकि तृप्त न भए सो वनकी शोभा देखते भये जहां मोर मनोहर शब्द कर रहे हैं विचित्र हैं गात जिनके ॥ २१ ॥ सो वनकी शोभाकरि हरया गया है चित्त जिनका अर नीलंयशा कौतुक भरी पतिसूं क्षणेक विछुडी ता समय राजा नीलका पुत्र नीलकंठ मायाकरि मोरका रूप धरि आया हुता सो कान्धेविषैं चढाय पापी नीलंयशाकूं गगनविषैं ले गया जब प्रिया हरी गई तब वसुदेव विह्वल होय ता वन विषैं भ्रमता भया तहां ग्वालनिके बाडे वहां गोपनिकी वधू उन्होंने कुमारका आदर किया इनके पीने योग्य पवित्र जल अर खाने योग्य पवित्र वस्तु ल्याय दई। रात्रिविषैं कुमार ग्वालीनिके स्थानविषैं रहे प्रभात ही उठकरि दक्षिणदिशा गये

ताके मिलापकी है अभिलाषा जाके नीलंयशाका पिता वनविषैं वसुदेवपै आया ॥ अर वसुदेवकूं सपराया अर अद्भुत आभूषण पहिराए अर रथमें चढाय सब विद्याधर साथ होय स्वर्गपुरसमान असित पर्वतपुर वहां यदुपतिकूं ल्याए ॥ ४८ ॥ सो सब नगरके लोगनिने अर अंतःपुरके लोगनिने आदरसहित कुमारकूं देख्या ॥४९॥ अर पवित्र दिनविषै वसुदेवका अर नीलंयशाका महामंगलतैं विधिपूर्वक पाणिग्रहण भया। कैसे हैं दोऊ पूर्ण है रूप जिनका अर पूर्ण है पुण्य जिनका ॥ ५० ॥ सो वसुदेव नीलंयशासहित असितपर्वतपुरविषैं नानाप्रकारके काम भोग सेवता भया जैसैं रतिसहित काम नानाप्रकार क्रीडाकरै, संसारमें ऐसी कोई भी स्त्री नाहीं जो नीलंयशाके यशकूं हरै ॥ भावार्थ—या समान कोई स्त्री रूपवती गुणवती सौभाग्यवती नाहीं अर कोई पुरुष भूमिगोचरी विद्याधरनिमें ऐसा नाहीं जो अपने गुणनिकरि वसुदेवका यश जीतै, ऐसा रूपवंत गुणवंत सामंत कोऊ पुरुष नाहीं सो सब स्त्रीनिके मुख नीलंयशाका यश अर सब मनुष्यनिके मुख कुमारका यश ये दोऊ परस्पर प्रेमविषैं आसक्त अत्यंत सुखरस भोगते भए, सो इनके समस्त सुखका वर्णन कौन कहि सकै ॥ १५२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ नीलंयशालाभवर्णनो नाम द्वाविंशति सर्गः ॥ २२ ॥

अथानंतर—एक दिन वसुदेव मंदिरमें तिष्ठे हुते सो महा कोलाहल शब्द सुनकरि द्वारपालनी निकट थी उसे पूछ्या आज नगरमें क्या कोलाहल है सब स्त्री पुरुष व्याकुल भए शब्द करै हैं तब द्वारपालिनी कहती भई हे देव ! मैं सब वृत्तांत जानूं हूं सो तुम सुनहु। या विजयार्द्धगिरिविषैं एक शकटामुखनामा नगर ताका राजा विद्याधरनिका अधीश्वर नीलवान है ताके नीलनाम पुत्र अर कन्या नीलाञ्जना नीलकुमारकी बहिन सो तिहारा श्वसुर सिंहदंष्ट्र परण्या ता नीलांजनाके नीलंयशा पुत्री भई सो तुम परणी अर सिंहद्रंष्ट्र नीलके परस्पर वचन था जो तिहारे पुत्र होय अर मेरे पुत्री होय तो विवाह अर मेरे पुत्री होय तिहारे पुत्र होय तो विवाह सो नील बडे राजाके

ते विद्याधरी विजुलियोंके समूहकी न्याईं चमत्कार करती भईं जब प्रातः समय भया तब वसुदेवकी न्याईं सूर्य है सो अपने कर कहिये किरण तिनके संयोगतैं पूर्वदिशारूप जो नीलंयशा वधू ताके मुखकूं अपनी प्रभाकरि उज्वल करता भया ॥ भावार्थ—जैसैं वसुदेव अपने करग्रहणकरि नीलंयशाके मुखकमलकूं विकाशरूप करै वैसैं दिनकर अपनी किरणनिकर पूर्वदिशाकूं प्रकाशरूप करता भया ॥ ३६ ॥ सूर्यका आधा बिम्ब उदय भया आरक्त है वर्ण जाका सो अति सोहता भया मानूं पूर्वदिशारूप तरुणीका अरुण अधर ही है ॥३७॥ अर जब संपूर्ण उदय भया तब रविमंडल ऐसा सोहता भया मानूं पूर्वदिशारूप पद्मनीके मुख मंडलका मंडन कनकमय काननिका कुंडल ही है ॥३८॥ जैसैं वसुदेव वनविषैं उद्योत करै है तैसैं सूर्य पृथिवीविषैं उद्योत करता भया पृथ्वी अर आकाशविषै शीघ्र ही नेत्रनिका अवरोध मिट गया। नेत्रनिकरि घटपटादि वस्तु दीखने लगीं ता समय वसुदेवकूं नीलंयशाकी दादी हिरण्यवती कहती भई हे कुमार ! भूमिविषैं ह्रीमंतनामा पर्वत है सो देखहु। नाना भांतिके वृक्षनिके वनकरि मंडित है, यहीं ह्रीमंत पर्वतपर विद्याधर तपकरि विद्या साधै हैं । अशनिवेगका पुत्र अंगारक विद्याधर श्यामाने युद्धविषैं विद्यारहित किया ताकी सब विद्या खंडित करी सो या गिरिविषैं तपकरि विद्या साधै है ॥४२॥ सो तिहारे दर्शनकरि ताकी विद्या सिद्ध होवेगी सो तिहारी इच्छा जो वापर अनुग्रहकी है तो ताहि दर्शन देवहु ॥ ४३ ॥ याभांति हिरण्यवती वसुदेवतैं आकाशविषैं कही इनकूं विद्याधरीनिके समूह क्रीडाके अर्थ आकाशविषै लेगए हुते। हिरण्यवतीके ये वचन सुनि वसुदेवने जान्या मेरी स्त्री श्यामा सुखसूं है युद्धविषैं बची मनमें प्रसन्न भया अर हिरण्यवतीसूं कह्या अंगारक तो अनिष्ट है श्यामाका शत्रु है ताके देखिवेकरि कहा ? अर यहां आकाशमें क्रीड़ा कहां, वृथा काल क्यों खोवहु यहांतैं चलो मोहि श्वसरके पुर ले चलहु तब हिरण्यवतीने कहा बहुत भला चलो इनकूं शीघ्र ही ल्यायकर असित पर्वतपुरके बाह्य मनोहर वनविषैं थापे अर अनेक विद्याधरीं इनकी रक्षाकूं रहीं ॥४६॥ नीलंयशा पुरके भीतर गई मातासूं मिली। अंतःपुरविषैं वसुदेवकी कथा करती भई ॥ अर

अति खेदखिन्न दशा जानकरि वहां जानेका वसुदेव अभिलाषी भया परंतु तत्काल चंपापुरीतैं निकसना न इच्छता भया। वृद्धा विद्याधरीसूं वसुदेव कहै है, हे माता ! मैं अवश्य आऊंगा यामैं संदेह नाहीं तू जायकर मेरे वचन कहि ता सुंदरीकूं धैर्य वंधाय। कैसी है वह सिंह समान हैं क्षीण कटि जाकी अर किंदूरी समान अरुण हैं अधर जाके सो वृद्धाने वसुदेवके वचन सुनकरि यह आशीस देय कह्या हे कुमार वेगतैं आवहु मैं जाऊं सो मनोरथरूप रथपर चढकर जाय कन्याकूं धैर्य वंधावती भई। अर वसुदेवकुमार नेहरूप नवीन जलमें स्नानकरि गंधर्वसेनासहित एक सेज पर पौंढे हुते ॥२३॥ सो रात्रिसमय भयंकर है दर्शन जाका ऐसी वैताल कन्यारूप धरि वह हिरण्यवती वृद्ध विद्याधरी आई ताने कर ग्रह वसुदेवकूं खैंच्या तव वसुदेव जाग्या दृढि मुष्टिकर उसे कूटता भया तौहू उसने न छोड्या ॥ २४ ॥ गलीके मार्ग यदुपतिकूं श्मशान भूमिमें लेगई ॥ २६ ॥ वहां अनेक मातंग जातिकी विद्याधरी तिनकूं वसुदेव देखता भया तव वह हिरण्ययती हंसी अर कहा मैं हिरण्यवती हूं वैतालविद्याकरि यहां तुमकूं लाई हूं तू डरै मत ॥ २८ ॥ तेरे कार्यकी सिद्धिके अर्थ तुझे ल्याई हूं वह तेरी वल्लभा नीलंयशा तेरी अप्राप्तिसूं मुख मुरझाय रही है, मलिन होय रही है कांति जाकी वह वाला भुजपाशके वंधनकरि तुझे बांध्या चाहै है ॥ २९ ॥ वसुदेवकूं ऐसा कहकरि नीलंयशातैं कहती भई। तेरा वल्लभ आया तू अपने करतैं याका करपल्लव स्पर्श ऐसा कहकरि याकूं वाका करग्रहण कराया। सो अनुरागकी भरी पतिका कर ग्रहण करती भई ॥३१॥ कामके प्रकोपकरि प्रस्वेदरूप है अंग जाका सो वाला वालमका करग्रहण करि आनंदकूं प्राप्त भई तिनके स्पर्शका सुख सोई भया जल ताकर सींचा हुवा इन दोऊके प्रेमरूपी वृक्ष रोमांचके मिसकरि मानूं अंकूरे धरता भया, वे दोऊ स्नेहकरि भीजे हैं चित्त जिनके सो स्नेहरूप पाणिग्रहण तो प्रथमही करते भए, अर विहाररूप भी पाणिग्रहण होवेगा ॥ ३३ ॥ नीलंयशाकी सखी अनेक विद्याधरी वसुदेवका रूप देखि हर्षित भई, कैसी है विद्याधरी शरीरकी प्रभा अर आभूषणनिकी प्रभा औषधनिकी प्रभा ताके समूहकरि निवाऱ्या है अंधकारका समूह जिनि

वज्रबाहु, महाबाहु, अरिंदम इत्यादि विनमिके अनेक पुत्र स्तुति करवे योग्य उत्तरश्रेणीके आभूषण भये भद्रानामा कन्या भई। अर सुभद्रा भई सो सुभद्रा भरत चक्रेश्वरके स्त्रीरत्न भई ॥ ४ ॥ अर नमिके कांतिधारी बहुत पुत्र भये उनके नाम। रवि, तनय, सोम, पुरूहुति, अंशुमानु, हरिजय पुलस्ति विजय, मातंग, बासव, इत्यादि, अनेक पुत्र भये अर दो पुत्री भई, कनकश्री, अर कनक मंजरी ॥ ६ ॥ ये नमि अर विनमि महा पंडित विवेकी पुत्रनिकूं राज्य देय मुनि भये ॥ ७ ॥ नमिका पुत्र मातंग ताके अनेक पुत्र भये तिनकी संतानविषैं अनेक मोक्ष गये। अर अनेक स्वर्गवासी देव भये ॥ ८ ॥ अब इक्कीसवें तीर्थंकरका समय है सो या समयमें असितपर्वतनामा पुरविषैं राजा प्रहसित ॥ ९ ॥ मातंगवंशरूप आकाशविषैं सूर्य समान प्रतापी ताकी हिरण्यवती नामा राणी विद्याकरि पूर्ण है ॥ १० ॥ अर मेरा पुत्र सिंहदष्ट्र ताके स्त्री नीलांजना नीलकमल समान नेत्र जाके। ताकी कन्या नीलंयशा उज्ज्वल है यश जाका कुलवंती शीलवंती कलावंती गुणवंती ताके वंशका वर्णन मैं तुम्हारे आगे सब किया है। हे हरिवंशरूप! आकाशके चंद्र वह चंद्रमुखी वासुपूज्यस्वामीके चैत्यालयके समीप नृत्य करती हुती ताने तुमकूं देख्या सो तिहारे दर्शन सब जीवनिकूं सुखका कारण भया है। वह तुमपर अनुरागिणी भई है सो तिहारे विरह करि अति व्याकुल है ॥ १४ ॥ न स्नान करै है न भोजन करै है न बोलै है न कुछ चेष्टा करै है, कामके वाणकरि भेदो जीवै है सो ही आश्चर्य है ॥ १५ ॥ ताकी यह अवस्था देखि कुलके सब व्याकुल भये हैं ताके मातापिता आदि सब चिंतावान हैं ॥ १६ ॥ कन्याके मनमें क्या है यह वार्ता सुनि सबनिने कुलविद्यासे पूछ्या तब विद्याने सब बार्ता कही, तिहारा वृत्तांत कह्या। तब हम सबनिने निश्चय किया जो यादवेश्वरके दर्शन करि यह अभिलाषवती भई है। माते हाथी समान चाल ताका सो कन्या तिहारे अभिलाषाकरि व्यथारूप भई है सो मैं तुमकूं लैबे आई हूं। मैं ताकी दादी हूं हे यादव! वह तिहारी नियोगिनी है निमित्तज्ञानीने यही कही है तातैं चलहु उसे शीघ्र परणो ॥ १९ ॥ यह वार्ता सुनिकरि वह चित्तकी हरणहारी ताका अनुराग अवस्था अर विरहकरि

श्रेणीके ६० दक्षिणश्रेणीके ५० सो उनमें उत्तरश्रेणीके साठ नगरनिके नाम कहे हैं। अलिकापुर आदित्यपुर गगनवल्लभपुर चमर चम्पापुर गगनमण्डनपुर विजयपुर वैजयन्तपुर शत्रुंजयपुर अरिंजयपुर पद्मालयपुर केतुमालपुर रूद्राश्वपुर धनंजयपुर वस्ताकपुर निंवहपुर जयंतपुर अपराजितपुर बराहपुर हस्तिनापुर सिंहपुर शौकरपुर हस्तिनायपुर पाण्डुकपुर कौशिकपुर वीरपुर गौरिकपुर मानवपुर मनुपुर चम्पापुर कांचनपुर ईशानपुर मणिवज्रपुर जयावपुर नैमिकपुर हस्तिविजयपुर खण्डिकापुर मणिकांचनपुर अशोकपुर वेणुपुर आनंदपुर नंदनपुर श्रीनिकेतनपुर अग्निज्वालापुर महाज्वालापुर माल्यंकपुर नंदिवीपुर विद्युतप्रभपुर महेन्द्रपुर विमलपुर गंधमादनपुर महापुर पुष्पमालापुर मेघमालपुर शिशुप्रभुपुर चूडमणिपुर पुष्पचूडपुर हंसगर्भपुर बलाहकपुर बंशालयपुर सोमनसपुर इत्यादि साठपुर हैं अर दक्षिणश्रेणीके पचास नगर तिनके नाम रथनूपुर आनंदपुर चक्रवालपुर अरिंजयपुर मंडित वहुकेत शकटापुर गंधसमृद्ध शिवमंदिर वैजयंतपुर रथपुर श्रीपुर रत्नसंचयपुर आषाडपुर मानसपुर सूर्यपुर स्वर्णमासपुर सितर्हद्पुर अंगावर्तपुर जलवर्तपुर आवर्तपुर वृद्धगृहपुर शंखवज्रपुर वज्रनाभपुर मेघकूटपुर मणिप्रभपुर कुंजरावर्तपुर असितपर्वतपुर सिन्धुकक्षपुर महाकक्षपुर सुकक्षपुर चन्द्रपर्व्वतपुर श्रीकूटपुर गौरिकूट लक्ष्मीकूट धराधरपुर कालकेशिपुर रम्यपुर पार्वतेयपुर हिमपुर किन्नरोगीतपुर नभस्तिलकपुर मगधासारनलकपुर पांशुमूलपुर दिव्यौषधपुर अर्कमूलपुर उदयपर्वतपुर अमृतधारपुर मातंगपुर भूमिकुण्डकपुर कूटपुर जम्बूपुर शंकुपुर ये पचास पुर दक्षिणश्रेणीमें अपनी शोभा करि स्वर्गनगर समान शोभै हैं ॥१००॥ इन नगरनिविषैं अनेक निधिके विद्याधर रहै ऋषभजिनेश्वरके प्रसादतैं नागेश्वरने अर नागेश्वरकी देवांगना दिति अदिति तिनि नमि विनमिकूं विद्याधरनिके ईश्वर किये ॥१॥ तिनमें उत्तरश्रेणीका अधिपति विनमि ताके बहुत पुत्र भये। सो सबही न्यायवान् विनयवान् यशवान् अनेक विद्याके धारक होते भये; उनके नाम—संजय, अरिञ्जय शत्रुञ्जय, धनंजय, मणिचूल, हरिश्मश्रु मेघानीत प्रभञ्जन ॥ २ ॥ चूलामणि, सतनीक, सहस्रानीक, सर्वंजय

॥ ६५ ॥ भद्रकाली २३, महाकाली २४, काली २५; कालमुखी २६, इत्यादि महाविद्या विद्याधरनिके ईश्वर की कही हैं ॥६६॥ फिर एक पर्व्वा १, द्विपर्व्वा २, त्रिपर्व्वा ३, दशपर्व्वा ४, शतपर्व्वा ५, सहस्रपर्व्वा ६, लक्ष्यपर्व्वा ७ उत्पातिनी, ८ त्रिपातिनी, ९ धारिणी १० अंतर्विचारिणी, ११ जलगति १२ अग्निगति १३ ये समस्त विद्याधरनिविषैं नानाप्रकार शक्तिकर मण्डित अनेक विद्या अनेक पर्वतनिकी निवासिनी नाना प्रकार औषधनिकी वेत्ता ॥६९॥ फिर सर्वार्थसिद्धा १, सर्वार्था २, जयन्ती ३ मंगला ४ जया ५ संक्रामिणी ६ प्रहारिणी ७ असिज्याराधिनी ८, विशल्याकारिणी ९, व्रणसंरोहिणी १०, सवर्णकारिणी ११, अमृतसंजीवनी १२ ॥ ७१ ॥ ये सर्व परम कल्याण की दाता सर्व मंत्रनिकरि मण्डित सर्व विद्या बलकर युक्त सर्व लोककी हितकर्ता ॥७२॥ ये सर्व पठित सिद्ध दिव्य औषध धरणींद्रने नमि अर विनमिकूं दई धरणींद्रका दिया नमि विनमिकूं विजयार्द्धका राज्य सो नमि तो दक्षिणश्रेणीविषैं राज्य करता भया अर विनमि उत्तरश्रेणीका करता भया ॥ ७४ ॥ ये दोनों मित्र बांधवनिकरि संयुक्त सामन्तों कर स्तुति करने योग्य नानाप्रकारके देशोंके स्वामी दोऊ योद्धा दोनों श्रेणीका राज्य करते भये ॥७५॥ सो उन दोऊ नृपतिने सर्व विद्याधरोंको औषधि अर विद्या वांट दई। जो विद्याका नाम हुता ताके नाम विद्या धरनिके कुल कहाये ॥ ७६ ॥ जिनको गौरी विद्या दई ते गौरिक अर जिनकूं मन नामा विद्या दई वे मनु कहाये अर जिनको गांधारी विद्या दई वे गांधार कहाये अर जिनकूं मानवी विद्या दई ते मानव कहाये ॥७७॥ अर कौशिकी विद्या वाले कौशिक हुवे । अर भूमितुण्डक विद्यासे भूमितुण्ड कहाये, अर मूलवीर्य विद्यासे मूलवीर्य अर संकुक विद्यासे संकुक विद्याधर कहाये ॥ ७८ ॥ अर पांडुकीय विद्यासे पाण्डुकेय अर काल विद्यासे काल कहाये अर सुपाक विद्यासे सुपाक कहाये ॥ ७९ ॥ अर मातंगी विद्यासे मातंग अर पर्वत विद्यासे पार्वतेय अर वंशालय विद्यासूं वंशालय अर पासमूलक विद्यासे पासमूलक अर वृक्षमूल विद्यासे वृक्षमूल कहाए अनुक्रमणसे विद्याधरनिके वंश ठहरे ॥८२॥ विजयार्द्धकी दोऊ श्रेणी हैं तिनके एकसौ दश नगर हैं तिनमें उत्तर

जो विशेषज्ञ हैं अर्थात् सब जानै ताके निकट क्या अल्पबुद्धि न कहै किंतु कहै ही सो मेरी कथा सुनहु भगवान श्रीऋषभदेव बताई है जगतकूं आजीविकाकी वृत्ति अर युगकी आदि सकल विधिके विधाता सो भरतेश्वरकूं राज्य देय आप मुनि भए ॥ ५१ ॥ तासमय प्रभुके साथ क्षत्रीनिके शिरोमणि इक्ष्वाकुवंशी सोमवंशी भोजवंशी उग्रवंशी चार हजार राजा तप धारते भए सो क्षुधा तृषादि परिषह न सहकर तपोभ्रष्ट भए ॥५२॥ अर कच्छ महा कच्छके पुत्र नमि विनमि दोनों राज्यके अर्थ प्रभुके पांवों लगे ॥५३॥ तब प्रभुका है शरण जिनके ऐसे धरणींद्रने उनके पास आय इनकूं विश्वास उपजाया अर दिति अर अदिति दोय देवीहू इनकूं विश्वास उपजावती भई यह दोऊ धरणींद्र हैं अर धरणींद्र भगवानके बडे भक्त सो भगवानके समीप विद्याका भंडार नमि विनमिकूं अपनी दोनों देवियोंके हाथ विद्या दिवावते भये धरणींद्र बडा पुरुष है।५५। ताकी अदिति नामा देवी नमिकूं विद्याकाभंडार प्रकाशती भई तिनमें आठ गंधर्वसेनका विद्या देती भई आठ विद्याओंके नाम मनु १ मानव २ कौशिक ३ गौरिक ४ गांधार ५ भूमिसुण्ड ६ मूलवीर्य ७ शंकुक ८ इन आठ विद्याको आचार्य आदित्य गंधर्व तथा व्योमचर कहै हैं ॥५८॥ यह विद्या तो अदितिने दीनी फिर दितिने दई सो सुनो, मातंग १ पांडुक २ काल ३ सुपाक ४ पर्वत ५ वंशालय ६ पांशुमूल ७ वृक्षमूल ८ सो इन विद्याओंके नाम दैत्य पन्नग अर मातंग कहिये हैं यह सोलह सकल विद्यानिमें मुख्य इन विद्याओंहीसे विद्याधरोंके भेद भये हैं कैयक गंधर्व कहाये कैयक यक्ष कहाये कैयक देव कहाये कैयक असुर कहाये कैयक राक्षस कहाये कैयक पन्नग कहाये, कैयक मातंग कहाये, इत्यादि अनेक भेद विद्याधरनिमें पडे इन विद्यानिके महात्म्य हैं फिर और अनेक महाविद्या हैं ॥ ६१ ॥ उनके नाम प्रज्ञप्ति १, रोहिणी २, अंगारिणी ३, महागौरी ४, गौरी ५, सर्व विद्यापकर्षिणी ६, महाश्वेता ७, मायूरी ८, हारी ९, निरवाग्यशाद्धला १०, तिरस्कारिणी ११, छाया १२, संक्रामिणी १३, कूष्माण्डगणमाता १४, सर्व विद्याविराजिता १५, आर्यकूष्माण्डदेवी १६, देवदेवियों कर नमस्कार करने योग्य फिर ॥ ६४ ॥ आच्युता १७, आर्य्यवती १८, गांधारी १९, निवृत्ति २०, दण्डाधिष्यगणा २१, दण्डभूतिसहस्रका २२

अर सर्व गणधर देवनिके तांई हमारी बारम्बार नमस्कार होवै ॥ ३९ ॥ अर भगवानके कृत्रिम अकृत्रिम सर्व चैत्यालय अर सर्व प्रतिमा तिनके तांई हमारी नमस्कार ॥ ४० ॥ याभांति वसुदेव अर गंधर्वसेना महाभक्तिसूं प्रभुकी स्तुतिकरि हर्षित भया है चित्त जिनका हो आये हैं रोमांच जिनके माथा नवाय गोडकरि धरतीविषैं लगाय प्रभुकूं प्रणाम करते भये ॥ ४१ ॥ फिर पूर्वरीति उठकरि कायोत्सर्ग धरि पंचपरमेष्ठीका पवित्र स्तोत्र उच्चारते भये ॥४२॥ अर्हद्भ्यः कहिये श्रीअरहंत देवनिके तांई सर्वदा कहिये सदाकाल, सर्व सिद्धेभ्यः कहिये सर्व सिद्ध-निके तांई अर सर्वभूमिषु कहिये सब भूमिविषैं। आचार्य्येभ्यः कहिये आचार्यनिके तांई बहुरि उपाध्याय साधुभ्यः कहिए उपाध्याय अर जे साधु तिनके तांई नमोनमः कहिए बारंबार नमस्कार होवै, याभांति स्तुतिकरि वे दोऊ देवनिके प्यारे प्रभुके मंदिरकी प्रदक्षिणा देयकरि रथविषैं आरूढ भये अर चंपापुरीविषैं प्रवेश किया परम विभूति करि अपने महलमें प्रवेश करते भए ॥ ४४ ॥ नृत्यकारिणीके देखिवेकरि गंधर्वसेनाके नेत्र किंचित् वक्र भए हुते सो वसुदेवने प्रणामकरि जाना गंधर्वसेना मानिनी सो ताका मान निवार्‍या ॥४५॥ ग्रंथनिमें यही कहा है दूजी नायिकाकूं आसक्तताकरि अवलोकन करनेमे अपराधी भया जो पति तापर स्त्रीनिका अनुरागरूप कोप होवै है सो पतिके प्रणाम करने मात्रसूं कोप मिट जाय है। पति नया अर प्रियाका कोप गया, गंधर्वसेना वसुदेवके नम्रीभूत होयवेकरि अति प्रसन्न भई ॥ ४६ ॥

अथानंतर–एक वृद्ध विद्याधरी मानों मूर्तिवंती विद्या ही है सो वसुदेवके समीप ता नृत्यकारिणीने पठाई सो आई ललाटविषैं पुंड्रका है तिलक जाके ॥ ४७ ॥ एकांतविषैं महलमें आय तिष्ठी जाकी वार्ता सुनि मन हरा जाय सो वृद्धा वसुदेवकूं आशीर्वाद देयकरि सन्मुख बैठती भई अर कहती भई हे वीर! त्रैसठशलाकाके पुरु-षनिके पुराण तिनका विस्तार तो तिहारे चित्तविषैं भास रहा ही है तो भी कछुक विद्याधर संबंधी कथा मैं कहूं हूं जैसैं औषधिनाथ जो चंद्रमा ताकीकिरणनिकरि स्पर्शी जो वस्तु ताहि कया और न स्पर्शे स्पर्शे ही ॥५०॥ भावार्थ–

उत्तम अर ये ही चार शरण तिनकूं उरविषैं धारते भये अर कहते भये अढाईद्वीपविषैं एकसौसत्तर आर्यक्षेत्र तिनमें धर्महीकी प्रवृत्ति है उनमें जे केवली भये अर हैं अर होवें तिनकूं हमारा नमस्कार होवै ॥ २७ ॥ हम सामायिक करैं तवतक सकल पापयोग तजै हैं यह पाठ पढि दोऊ विवेकी कायोत्सर्ग लेकरि खडे ॥ २८ ॥ शत्रुविषै मित्रविषैं सुखदुःखविषैं जीवन मरणविषैं हमारी समता है लाभ अलाभविषैं हमारी समता है सात श्वासोस्वास प्रमाण खडे रहकरि हाथ जोड शिर निवाय चतुर्विंशति तीर्थंकरनिका स्तवन पढते भये ॥३०॥ प्रथम ऋषभदेवके तांई नमस्कार, अजितके तांई नमस्कार संभवके तांई नमस्कार, अभिनंदनके तांई नमस्कार, सुमतिके तांई नमस्कार, सुपार्श्वके तांई नमस्कार, चंद्रप्रभुके तांई नमस्कार, पुष्पदतके तांई नमस्कार, शीतलनाथके तांई नमस्कार सव ही जीवनिके पालक अर लक्ष्मीके स्वामी कल्याणके कर्त्ता जो श्रीश्रेयांसनाथ तिनके तांई नमस्कार होवै, वासुपूज्यके तांई नमस्कार होवै, वे वासुपूज्य त्रैलोक्यकरि पूज्य हैं चंपापुरीविषैं जिनके कल्याणककी पूजा अचल है ॥ ३४ ॥ फिर विमल, अनंत धर्मनाथके तांई नमस्कार अर रागादिक रोगनिकी शांतिके अर्थ श्रीशांतिनाथके तांई नमस्कार ॥ ३५ ॥ फिर कुंथनाथके तांई नमस्कार । अरःनाथके तांई नमस्कार । मल्लिनाथके तांई नमस्कार । कैसे हैं मल्लिनाथ माया मिथ्या निदान यह तीन शल्यरूप मल्ल तिनके मसलनेवाले हैं अर जीवनिकूं मुनिव्रतके दायक श्री मुनिसुव्रतनाथ तिनके तांई नमस्कार ॥३६॥ फिर वसुदेव अर गंधर्वसेना कहै हैं इक्कीसवां तीर्थंकर श्रीनमिनाथ तिनके तांई नमस्कार होवै जाका अवार भरतक्षेत्र तीर्थ है ॥

भावार्थ—जवतक नेमिनाथका जन्म न होवै तबतक नमिनाथका तीर्थ कहिये सो जिन दिनोंमें वसुदेव निकसे हैं उनदिनोंमें नमिनाथका ही तीर्थ है ॥ १७॥ फिर वसुदेव कहै हैं बाईसमें स्वामी तीर्थंकर स्वामी अरिष्टनेमि तीर्थके कर्ता हरिवंशरूप आकाशविषैं चंद्रमासमान उद्योत करैंगे तिनके तांई हमारी बारंबार नमस्कार होहु ॥ ३८ ॥ फिर श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र तिनके तांई नमस्कार श्रीवर्द्धमान महावीरके तांई नमस्कार । सर्व तीर्थंकर

रंगका विभाग अर ऐसी ही गवैया ऐसा ही राग ऐसे ही मृदंग अर ऐसे ही ताल मंजीरादि कांसीके बाजे ॥१२॥ ऐसे ही विपंची ऐसी ही वीणा ऐसा ही नृत्यकारिणीका समूह जैसा जा स्थानक सोहै वैसेही बनाये अर ऐसेही भाव बतलानेहारे अर ऐसेही रस ऐसे ही अभिनय उनकूं प्रगट करती ता नृत्यकारिणीकूं गंधर्वसेनासहित वसुदेवने रथ चढे ही देखी ॥ १८ ॥ सो वह नृत्यकारिणी अपने रूप अर चतुराईके पाशकरि वसुदेवका मन बांधती भई। बांधने योग्य अर बंधानेवाला परस्पर दोनों अनुरागकूं प्राप्त होते भये ॥ भावार्थ—ताका रूप अर चतुराईरूप चरित्र तो बांधनेवाले भये अर वसुदेवका मन बांधने योग्य है अर वसुदेवका रूप अर वसुदेवकी लीला तो बांधनेवाले भये अर उसका मन बांधने योग्य भया दोनों परस्पर प्रीतिकरि बंधे, तब गंधर्वसेनाकूं उसपर ईर्षा उपजी अर अपने नेत्र संकोचे सो यह रीति है जब विपक्षी निकट आवै तब नेत्र कुपित होंय ॥१७॥ गंधर्वसेना सारथीकूं कहती भई जो यहां बहुत देर खडे रहे अब रथकूं यहांतैं आगैं चलावो यहांका तमाशा देखा मिसरी भी बहुत आस्वादी, ये तो कछु दूजा रस नाहीं नही मिसरी है गंधर्वसेनाने जब ऐसैं कहा तब सारथी शीघ्र ही रथकूं चैत्यालयके समीप लेगया, वहां रथ खडाकरि ये दोनों धनी और राणी जिनमंदिरकी प्रदक्षिणा देय ताके मध्य प्रवेश किया वहां श्रीवासुपूज्यस्वामीकी प्रतिमा मनुष्य देव अर असुरनिकरि पूज्य उसे वासुदेव प्रिया सहित दूध, दधि, घृत, इक्षुरस, अर जल ये पंचामृत तिनकरि अभिषेक करावता भया ॥ २१ ॥ निर्मल जल अर मलियागिरि चंदन अर अखंडित अक्षत अर सुगंध पुष्प अर नानाप्रकारके नैवेद्य अर कालोगुरुकी धूप अर देदीप्यमान दीपकी शिखा अर फल ये अष्टद्रव्य तिनकरि जिनपतिकी दंपती पूजा करते भये ये दोनों ही पूजाकी विधिविषैं प्रवीण ॥ २३ ॥ सम हैं पांव जिनके सो प्रभुके आगे खडे रहे हाथ जोड पहिला ईर्यापथ शोधि ये अष्टांग दंडवत करते भये ईर्यापथकरि शोधी जो पृथ्वी ताविषैं दोऊ निपुण बैठे बहुरि उठे बहुरि पवित्र पंच णमोकार मंत्रके पाठकरि पवित्र है चित्त जिनका वे दोऊ अरहंत सिद्ध साधु केवलीप्रणीत धर्म ये चार मंगल अर यही चार

अर द्वीपांतरमें विचरै। तौहू लक्ष्मी हाथ न आवै, यह लक्ष्मी धर्मकी दासी है धर्मही है मित्र जिनके तिनकूं यह मिलै है। पापके अभावतैं लक्ष्मीका सद्भाव है, तातैं बुधजन जिनेश्वरका कह्या धर्म मनवांछित फल देनेकूं चिंतामणि समान ताहि चितारहु।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ चारुदत्तचरित्रवर्णनोनाम एकविंशतिमः सर्गः ॥ २१ ॥

अथानंतर—वसुदेव गंधर्वसेनासहित चंपापुरीविषैं रमैं जब फाल्गुणकी अष्टान्हिकाके दिन आये तब अष्टान्हिकाके दिननिमें देव नंदीश्वरद्वीपकूं गये अर विद्याधर सुमेरु पर्वतादिविषैं बंदनाके अर्थ आनंदकूं धरते हुये गये ॥ १ ॥ अर चंपापुरी वासुपूज्यप्रभुकी पांचों कल्याणकी ठौर महापूज्य वहां भगवानकी पूजा करिवेकूं उत्सवसहित सब ओरसूं भूमिगोचरी अर विद्याधर आवै हैं अर देव आवै हैं सो वासुपूज्यकी प्रतिमा नगरतैं बाहिर है ताहि पूजिवेकूं राजा आदि चंपापुरीके वासी सबही निकसे ॥ ५ ॥ कैयक रथपर चढे कैयक गजपर आरूढ कैयक अश्वनिपर आरूढ कैयक पालकीनिपर बैठे नर नारी नानाप्रकारके वस्त्राभूषण पहिरे यात्राके अर्थ नगरीतैं बाहिर निकसे वसुदेव गंधर्वसेनासहित घोडियनिके रथपर आरूढ भगवानकी पूजाके अर्थ पूजाकी सामिग्रीसहित नगरीके बाहिर निकसे ॥ ७ ॥ बडे बडे योधा वसुदेवके साथ सो जिनग्रहके अग्रभाग जाते हुते यदुपतिने एक कन्या भीलकी कन्याके भेष नृत्य करती देखी ॥ ८ ॥ सो कन्या नीलकमलके पत्र समान श्याम सुंदर अर अद्भुत आभूपण पहिरे मानों वह तो वर्षाकी विभूति है अर आभूषण विजुली समान चमकै हैं ॥ ९ ॥ रक्तपुष्प समान अरुणता धरे होंठ जाके अर कमल समान हैं कर चरण जाके अर पुंडरीक समान हैं नेत्र जाके मानों मूर्तिवाली शरदकी लक्ष्मी ही है। सो अतिरूपिणी जिनेंद्रकी भक्तिकरि नृत्य करती हुती श्रीवासुपूज्यस्वामीके पांचों कल्याणकके यश गावती थी जैसे श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी सरस्वती सोहै वैसैं सोहती थी, ऐसा ही

आर्य्यानिके निकट श्राविकाका व्रत धार कर मेरी माताके निकट आय रही मेरी माताकी अर स्त्रीकी तानें अति सेवा करी सो दोऊ ही वासूं अति प्रसन्न भई अर जगतमें ताका यश बहुत भया सो मैं भी अति प्रसन्न होय ताहि अंगीकार करता भया ॥ ७२ ॥ अब मैं निधिके प्रतापकरि दीन अनाथनिकूं तृप्त करणहारा किमिच्छक दान दूं हूं सो जाकी जो इच्छा होय सो मेरेसे ले जाय है। अर बंधु लोगोंको मन वांछित दूं हूं यह अपनी कथा चारुदत्तने वसुदेवतैं कही। तुम मुझकूं अक्षयनिधिकी वार्ता पूछी सो यह निधि देवनिकी दी हुई है अर गंधर्वसेना अमितगति विद्याधरकी पुत्री है याके पिता तो मुनि भये हैं। अर याके दोऊ भाई राज्य करै हैं यह मेरे बहन समान है। सो तुमकूं परणाई। हे यादव! यह समस्त वार्ता तोहि कही जो मुनि इसके वर कहे थे वे इसके भाग्यकर तुम यहां आये तुम्हारे ही अर्थ यह विजयार्द्धतैं आई अर यहां रही धन्यभाग्य याके जो तुम जैसे वर पाये अर मैं तुमकूं परणाय कृत्यकृत्य भया मेरा चित्त तपविषैं हुता परंतु याकी चिंताकरि तप न धर सकता था, सो अब निश्चिंत होय तप धरूंगा जे तप करै हैं तिनके स्वर्गमुक्ति समीप है यह गंधर्वसेनाका आदिसे वृत्तांत सुन अर चारुदत्तका उत्साह अर देवनिका मिलाप सुनकरि वसुदेव हर्षित होय चारुदत्तसेठकी अति स्तुति करता भया ॥७॥ वसुदेव कहै है धन्य है इस निष्कपट पुरुषकूं अर धन्य है उदारपना इनका अर धन्य है इनका पुण्यका बल ऐसा अर पुरुषमें नाहीं अर धन्य है पुरुषार्थ इनका ऐसा पुरुषार्थ अर विभव औरके नाहीं। देव विद्याधरनिकूं यह विभव दुर्लभ तो अरकी क्या वात। चारुदत्तकी कथा सुनकर वसुदेवने अपनी सब कथा कही जो मैं राजा अंधकवृष्टिका पुत्र समुद्रविजयका छोटा भाई या भांति निकस्या सो दैवयोग गंधर्वसेना परणी यहां तक सर्वथा कही चारुदत्तने तो वसुदेवका वृत्तांत जाना अर वसुदेवने चारुदत्तका जाना परस्पर रहस्यके मरमी भये सुखसूं चारुदत्त वसुदेव चंपापुरीविषैं धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका साधन करते तिष्ठै हैं ॥८२॥ जो कोई या लक्ष्मीके अर्थ समुद्रविषैं प्रवेश करै अर कूपविषैं उतरै अर महा अलंध्य पर्वतनिविषैं संचरै अर महा गंभीर वनमें विचरै

अब तो तुम अपने स्थानक जावो अर जब मैं चितारूं तब शीघ्रही आइयो, मैं जब यह कहा तब देवोंने कहा जो आज्ञा होयगी सोही करेंगे, वे हाथ जोडकरि मुनिकूं नमस्कार कर फिर मुझे नमस्कार कर मेरी आज्ञा पाय निज स्थानक गये ॥ ५९ ॥ अर मैं मुनिकूं प्रणामकरि मुनिके पुत्रनिके साथ विमान चढि आकाशके मार्ग उनके शिव· मंदिरनामा पुरमें आया । तहां सुखतैं नगरविषैं रहते भये, ऐसे कैयक दिनोंतक विद्याधरनिकरि पूजित उनके नगरमें रहा, सब लोगनिके मुख मेरा यश मैंने सुना, जन जनके मुखमें यह वचन जो या नगरीके पतिका यह प्राणदाता है ॥ ६१ ॥ एक दिन गंधर्वसेनाकी माता अर गंधर्वसेनाके भाई दोनों मुझसे मंत्रकर मुझे गंधर्वसेना दिखाई। अर कही हे भाई चारुदत्त ! तू सुन, एकदिन राजा अतिगति हमारे पिता अर गंधर्वसेनाके पिता तुमारे मित्र उन्होंने अवधिज्ञानी मुनिसे पूछी जो मेरी पुत्रीका वर कौन होवेगा ॥६३॥ तब मुनिने कहा चंपापुरीविषैं चारुदत्त सेठके घर यादवनिका पति गंधर्व विद्याविषैं पण्डित सो इसे वरेगा ॥ ६४ ॥ यह वार्ता सुनकरि राजाने निश्चय किया फिर वे तो मुनि भये अब यह कार्य हमकूं करना ॥ ६५ ॥ तब मैंने यह बात प्रमाण करी जो भाईनिका कार्य होय सो अवश्य करना तब धाय आदि परिवार सहित यह कन्या मुझे सौंपी । अर कन्याके दोऊ भाई नाना प्रकार रत्नसंपदासहित वडी सेना साथ लेकरि मेरे साथ चंपापुरीकूं उद्यमी भये ॥ ६७ ॥ ता समय वे दोऊ देव मैंने चितारे, वे देव मित्र कार्यविषैं उद्यमी सो स्मरण मात्रसेही नवनिधि लिये मेरे समीप आये ॥ ६८ ॥ अर महा मनोहर हंस विमान कर गंधर्वसेना सहित मुझे महाविभूतितैं चंपापुरीमें ले आये ॥ ६९ ॥ यहां मेरे मंदिरविषैं मुझे थाप अर ऐसे निधि जिनका क्षय नाहीं सो मेरे घरमें पूण कर फिर मोहि नमस्कार कर वे दोऊ देव अपने धाम गये, अर गंधर्वसेनाके भाई मेरे साथ आये हुते वे भी अपने स्थानककूं गये ॥ ७० ॥ अर मैं मेरी माता और मामासे मिला, अर सब कुटुंबसे मिला अर मेरी विवाहिता स्त्रीसूं मिला, सबही मुझे देख अति हर्षित भये ॥ ७१ ॥ अर यह कलिंगसेना वेश्याकी पुत्री बसंतसेना पतिव्रता मेरे परदेश गये पीछे अपनी माताका गृह छोडि

सौधर्म स्वर्गविषैं देव भया चारुदत्त मेरा गुरु है तातैं पहिले नमस्कार किया ऐसा कहकरि बकरेका जीव चुप हो रहा। अर दूसरा देव कहता भया अहो विद्याधरो ! मेरी वार्ता सुनो चारुदत्त मेरा धर्मका उपदेशक कैसे भया ॥४२॥ एक ठग परिव्राजकका भेष धारक रसायनका लोभ दिखाकर रसकूपविषैं मुझे डारता भया अर उसीका भुलाया चारुदत्त भी रसकूपविषैं आया वहां दयाकरि धर्मका उपदेश मुझे दिया ॥ सो मैं प्रथम स्वर्गविषैं देव भया उससे चारुदत्त मेरा गुरु सो मैंने पहिले नमस्कार किया ॥ ५१ ॥ पापरूप कूपविषैं डूबते प्राणीनिकूं धर्मरूप हस्तावलंब देकर थांभे, उन मनुष्योंके तुल्य या संसारविषैं और कौन ? सो धर्म संसारका तारणहारा है एक अक्षर अथवा आधा पद कहिये चार अर पद कहिये आठ अक्षर उनका देनेवाला जो उपकारी उसे भूलै सो पापी अर धर्म उपदेश देनेवालेको जो भूलै सो महापापी उस समान और निंद्य कौन जो पहिले किसीका उपकार करै है उसका पीछे प्रत्युपकार कर उस समान भया चाहै है सो कदेही न होवै, काहेसे जो उसने तो इसपर विनागुण गुण किये अर यह गुणपर गुण करै है सो उसकी तुल्यता नाहीं अर भला ही है। अर जो पराये गुणकूं भूल जाय अथवा गुण पर अवगुण करै ता समान और दुराचारी नाहीं। कृतघ्न समान अर निंद्य नाहीं उससे यह ही योग्य है जो आप पर अल्प भी गुण करै उसकी सज्जन जन्मपर्यंत सेवा करै। उसका गुण कभी न भूलै सो कृतज्ञ कहिये अर जो कुछ ही करने न सकै तो सदा गुण ही माना करै अर उससे अति उज्ज्वल भाव राखै, अर वासूं गर्व न करै ॥५५॥ ये कुलवंत पुरुषनिके धर्म हैं ऐसा कहकर ये दोऊ देव मुनिके निकट विद्याधरोंको अपनी विभूति दिखावते भये अनेक हैं देव देवी विद्यमान जिनके ॥ ५६ ॥ फिर चारुदत्त वसुदेवसे कहै है दोनों देवनिने अग्निमें न जलैं ऐसे अद्भुत वस्त्र मुझे पहिराये अर अनुपम आभूषण पहिराए अर कल्पवृक्षनिकी माला मुझे दई अर देवलोकके सुगंध मेरे अंगतैं लगाये। या भांति मुझे शोभित कर अति सत्कारतैं कहते भये ॥ ५७ ॥ हे स्वामिन् ! जो हमकूं आज्ञा करो सोही करैं अर आज्ञा होय तो अबही अपार धनके सहित चंपापुरी ले चालैं तब मैंने कहा भो देवो !

याज्ञवल्कतैं प्रश्न किया सो याज्ञवल्क या पक्षकूं दूषणकरि अपना पक्ष थापता भया। यह सुलसा वादमें हारी अर याज्ञवल्क जीता तव वह इसका कर गह कुचेष्टा विचारता भया इसने वहुत मने किया जो तू यह क्रिया मत करै। परन्तु वह विषयरूप मांसका लोभी इससे रमता भया। सो सुलसाके उसके योगतैं पुत्र भया। उसे पिप्पलवृक्षके तले डार वे निर्दयी दोनों जाते रहे॥ अर वह बालक ऊंचा है मुख जिसका पिप्पलवृक्षके नीचे सीधा पडा सो सुलसाकी वडी वहिन भद्रा उसने वालकको देखकर जाना जो यह मेरी छोटी वहिनका पुत्र है, याज्ञवल्कसे इसका जन्म है जव पीपलके नीचे याकूं पडा देखा इसका पिप्पलाद नाम धरा, अर वृद्धिकूं प्राप्त किया ॥ ३६ ॥ यह वहुत शास्त्रका पारगामी भया एकदिन इसने भद्रासे पूछा हे माता! मेरा पिप्पलाद नाम किसलिये धरा अव मेरा पिता जीवै है कि नहीं तव भद्राने कही हें पुत्र? तेरा पिता तो याज्ञवल्क है अर मेरी छोटी सुलसानामा बहिन सो तेरी माता है सो याज्ञवल्कने उसको वादमें जीता उसका करग्रहण किया सो उनके तू पुत्र भया वे पापी निर्दय तुझे पिप्पलके नीचे डार जाते रहे॥ ३९ ॥ सो मैं तेरी बडी मासी सो धाय लगाय तुझे पाला, अर वडा किया तेरे माता पिता तो कामातुर थे अर तेरी पालना न करी, कानोंको शूलसमान यह वार्ता सुन पिप्पलाद क्रोधरूप भया अर पिता पास गया सो पितासे वादकरि उसे जीता फिर मातापिताकी विनयपूर्वक शुश्रूषाकर शांत किये परंतु उनको अपने पंथ चलाये अर पिप्पलादके शिष्य कहाये सो पिप्पलाद क्रूरप्रणामी पर्वतके मार्ग प्रवर्त्ता सो वकरेका जीव कहै है पिप्पलादका शिष्य मैं वाग्वलीनामा उसीके हिंसामार्गकूं दृढकर नरककी भयंकर वेदनाको प्राप्त भया ॥ ४४ ॥ तहांतैं निकसकर छहवार अजापुत्र ही भया सो पर्वतके मार्गी याज्ञ विद्याके पाठी वडे निर्दय उन्होंने मुझे यज्ञविषैं होमा, सो नरकमेंसे निकसे पीछे छहवार तो मेरा होम भया अर सातवीं वेर टंकणनामा देशविषैं पापके उदयकर अजा पुत्र ही भया सो चारुदत्तने मुझे जिनधर्मका उपदेश दिया, जिनदेवकी आराधना वताई॥ महा दयाकर पंचणमोकार मंत्र दिया ताके प्रभावकरि मैं

छोटा वराहग्रीव दोऊ विनयवान ॥१८॥ सो मैं सिंहयशकूं तो राज्य दिया अर वराहग्रीवकूं युवराजपद दिया जो हमारे घरकी रीति हुती सो करि मैंने हू जो अपना पिता महामुनि सोई गुरु तिनके निकट जाय जिनदीक्षा आचरी इतनी वार्ता कहि फिर मोहि पूछ्या हे चारुदत्त तू यहां कैसें आया। यह समुद्रके मध्य कुंभकंटकनामा द्वीप है अर कर्कोटकनाम गिरि है ॥२०॥ तब मैंने आदि अंतसे अपनी सुखदुःख मिश्रित सब कथा स्वामीके निकट कही। ता समय दो विद्याधर आकाशतैं उतर साधुके समीप आये। वे मुनिके पुत्र उन दोऊ पुत्रनिकूं स्वामीने कहा तुमको जो पहिले कहा हुता कि मेरा जीव चारुदत्तने बचाया सो मेरा भाई है सो यह यहां आया है। ऐसा जब श्रीगुरुने कहा तव वे दोऊ मुझसूं मिले सो बहुत प्रीति जनाय मुझे निकट ले बैठे ॥ २४ ॥ ताही समय दो देव आये सो पहिले मुझे नमस्कारकरि पीछे मुनिकूं नमस्कार किया सो यह रीति क्रमभंग है चाहिये पहिले साधुकूं नमस्कार करें पीछे श्रावकनिसूं संभाषण करें, सो मैंने रीति भंग देखकर दोऊ विद्याधरनितैं अर दोऊ देवनितैं कारण पूछ्या तब वे दोऊ कहते भये। हम दोऊनिकूं जिनधर्मका उपदेशक साक्षात् गुरु ये चारुदत्त सेठ हैं, तब विद्याधरने पूछी यह कथा कैसे तब प्रथम बकरेका जीव जो देव भया हुता सो कहता भया, अहो विद्याधर हो ! वाणारसीपुरीविषैं एक सोशर्म्मानामा विप्र ताकी सोमिलानामा स्त्री सो ब्राह्मण वेद व्याकरण पुराणादिकका वेत्ता ताके दो पुत्री हुती एक भद्रा दूसरी सुलसा सो यह पुत्री हू व्याकरणादि शास्त्रकी पारगामी ॥ २९ ॥ ये दोऊ कुमारी परिव्राजकका भेष धारती भईं, अर विबाह न किया। सो इनकी पंडिताई अर तप जगतविषैं प्रसिद्ध भया। अनेक वादि इन दोऊने जीते ॥ ३० ॥ एक याज्ञवल्कनामा परिव्राजक प्रसिद्ध पृथ्वीविषैं परिभ्रमण करता उन दोनोंसे जीतनेकी इच्छा करै वाराणसीपुरीमें आया ॥३१॥ तब वे दोनों बहिन भद्रा अर सुलसा तिनमें सुलसाके गर्व घना सो पण्डितनिकी सभाके मध्य ऐसी प्रतिज्ञा करती भई जो मैं अनेक वादी जीते हैं अर याकूं भी अवश्य जीतूंगी सो यातैं वाद करने लगी बडे बडे न्यायशास्त्रके वेत्ता बैठे तिनके निकट सुलसाने

अपने जीवनिमें अर इन जीवनिमें भेद क्या ? याभांति बहुत समझाया परंतु वह पापी रौद्रध्यानी ताके मनमें करुणा न आई वह पापी मेरी दृष्टि बचाय अपने पशुका विनाश करता भया तब मैंने वा पशुकूं णमोकार मंत्र दिया वह पापी रुद्रदत्त जो पशु हुता वाकी भाथडी बनाय मोहि वामें घाल्या अर शस्त्र मेरे हाथमें दिया अर दूजी भाथडीमें शस्त्र ले पापी आप उसमें बैठ्या ॥४॥ तासमय तहां भेरुंड पक्षी आये सो प्रचंड है चूंच जिनकी सो चारुदत्त वसुदेवसूं कहै हैं, हे कुमार ! मैं जा भाथडीमें हुता ताहि काणा भेरुंड ले उड्या सो सुवर्णद्वीपकूं छोडि अर ही मनोग्य स्थानकविषैं भाथडी जाय राखी ॥ ५ ॥ मेरे करमें शस्त्र हुता ताकरि भाथडी फाड़ मैं निकस्या सो स्वर्गलोक समान रत्ननिकी किरणनिकरि दैदीप्यमान रत्नद्वीप देख्या जहां सब दिशा महा मनोग्य अर एक महासुंदर गिरि ताके शिखरविषैं जिनेश्वरदेवका मंदिर देख्या कैसा है मंदिर पवनकरि हालैं हैं ध्वजा जाकी सो मानों नृत्य ही करै हैं ॥ ७ ॥ तहां आतापन योग धरे एक चारणमुनि विराजे तिनकूं देखे सो देखिवेतैं ऐसा आनंद भया जो अब तक कभी न भया हुता चारुदत्तने गिरिपर आरोहणकरि चैत्यालयकी तीन प्रदक्षिणा दई अर जिनचंद्रकी कृत्रिम प्रतिमा चारुदत्त वसुदेवसूं कहै है मैं बंदि प्रभुका दर्शन करि बहुरि मुनिकी वंदना करी सो मुनिका ध्यान समाप्त भया हुता सो मुनि धर्मबुद्धि देय पूछ्या हे चारुदत्त ! तोहि कुशल है तेरा आगम यहां कैसैं भया विना सहाय इतनी भूमि कैसैं आया तब मैंने नमस्कारकर विनती करी हे नाथ ! तिहारे प्रसादकरि कुशल है बहुरि मैंने आश्चर्यरूप होय मुनितैं पूछ्या हे प्रभो ! आपने मोहि आगे कहां देख्या मेरे जाननेमें तो अपूर्व दर्शन है । तब मुनिने कहा तू जानै है चंपापुरीके उद्यानमें मोहि मेरे शत्रुने कीला अर तैनें छुडाया । वह अमितगति विद्याधर मैं हूं अर मेरा पिता मोहि राज्यविषैं थाप आप हिरण्यकुमार मुनिके समीप मुनि भये ॥ १६ ॥ मैं सम्यक्त सहित राज्य करूं मेरे दो राणी एक विजयसेना दूजी मनोरमा सो विजयसेनाके तो गंधर्वसेना पुत्री भई ॥ १७ ॥ अर दूजी मनोरमाके बडा पुत्र सिंहयश अर

काटा तब पाषाण तो रसमें जाय पडा अर चारुदत्त वसुदेवतें कहै है मैं बच गया वह दुष्ट तो अपना कार्यकरि उठ गया अर मैंनें अगिले पडे हुयेकूं बाहर निकसनेका उपाय पूछ्या तब वा दयावंतने मोहि निकसनेका उपाय बताया ॥ ८७ ॥ जो एक गोह यहां रस पीनेकूं आवै है ताकी पूंछ पकडकरि निकस यह निश्चय है या भांति वानैं मुझसे कहा तब मैं वाकूं सम्यक्तपूर्वक कथा श्रावकका धर्म कह्या अर णमोकारमंत्र सुनाया सो वाके देव अरहंत गुरु निर्ग्रंथ अर जीवदया धर्मका श्रद्धान भया अर जीवदया सत्य अचौर्य एकोदेश ब्रह्मचर्य परिग्रह प्रमाण वानैं व्रत धरे ॥ ९० ॥ अर दिनमें वह गोह रसपान कर जाती हुती ताकी पूंछ मैंने दोऊ हाथनिसूं गाढी पकडी सो वह मुझे वाहिर ले निकसी मेरा गात्र छिल गया मैंने जाना आज नया जन्म पाया ॥ ९१ ॥ बहुरि मैं नीठ नीठ उठ धीरा धीरा जाता हुता सो एक आरण्य भैंसा मोहि मिल्या सो वह कालसमान भयंकर हुता ताहि देख मैं गुफामें पैठा ॥ ९२ ॥ तहां एक अजगर सर्प सोया हुता सो भैंसेकूं निगलने उठा भैंसा हू वाकूं मारिवेकूं उद्यत हुआ तब दोनोंका विषम युद्ध भया तासमय मैं शीघ्र निकस गया, सो ता बनमेंसे निकसिकरि एक प्रत्यंत ग्राम वहां आया तहां दैवयोगकरि मोहि रुद्रदत्त मिला ॥ ९५ ॥ तानैं मेरी क्षुधा तृषा निवारी अर कहा हे चारुदत्त ! विषाद मत करहु मेरे वचन सुनि एक सुवर्णद्वीप है तहां हम प्रवेशकरि अति धन ल्यावैं ताकरि कुल समूहकी रक्षा होय ऐसा विचारकरि हम दोऊ ऐरावतीनदीके उत्तरकी ओर गिरिकूटनामा गिरिकूं उलंघ करि वेत्र वनमें गये तहांतैं टंकणदेशमैं पहुंचे तहां रुद्रदत्तने दो अजापुत्र खरीदे वे चालविषैं प्रवीण तिनपर हम दोनों चढकर पर्वतका मार्ग अति विषम ताहि धीरे धीरे उलंघकरि गिरिके शिखर पर जायकर पहुंचे तहां पापी रुद्रदत्त मोहि कहता भया। हे चारुदत्त! इन दोऊनिकूं मारकरि हम दोऊ भाथडीमें प्रवेश करैं यहां भेरुंड पक्षी आवेंगे सो प्रचंड है चूंच जिनकी सो भाथडियोंको मांसके लोभ ले उडेंगे सो सुवर्णद्वीप ले जावेंगे ॥ १ ॥ यह बात रुद्रदत्तने मोहि कही तब मैंने ताहि बहुत निषेध्या जो यह कार्य कर्तव्य नाहीं

हुता तानैं मोहि देख्या अर राख्या अर कैयक दिन सुखतैं तहां विश्राम किया ॥७८॥ बहुरि समुद्रविषैं नावमें चढ व्यापारकूं गया सो छहवार समुद्रप्रवेश किया, सातवींवार जहाज फट गया आठ करोड मेरा धन हुता सो सब समुद्रमें डूब गया। मैं एक लकड पर चढ समुद्रके तीर गया तहां राजपुरनामा नगर हुता तहां एक तापस परिव्राजके भेषका धारक मैंने देखा सो मुझे रसकूपिकाका लोभ दिखाया वनविषैं लेगया ॥७९॥ अर ता तापसने मुझकूं रस्सेसूं बांधकर खाडेमें उतार्या सो मैं रसायनकी तृष्णाका प्रेर्या भयंकर अंधकूपमें रस्सेकूं दृढ पकडे नीचा उतर रसकूपिकातैं रसका ग्रहण करने लगा तहां एक पुरुष आगे पडा हुता तानैं मोहि मनै किया जो तू जीया चाहै है तो या दुष्ट तापसका विश्वास मत कर विश्वास करेगा तो न जीवेगा जैसैं क्षय रोगवाला न जीवै ॥ ८० ॥ यह रहस्य मैं सुनकरि चकितचित्त होयगया अर वासूं पूछ्या तू कौन है यहां तेरे डालनेवाला कौन तब वानैं कहा मैं उज्जयिनीका वासी वणिकपुत्र हूं सो मेरा जहाज समुद्रमें फट गया, अर मैं लकडीनिपर चढि तीर निकस्या सो या वनमें एक अपात्र कुलिंगी तापस भेषधारी रहै है वाने मोहि रसकूपिकाका लोभ दिखाया यहां ल्याय यह कार्य किया मोहि रस्सेसूं बांध तेरी न्याईं रसकूपमें उतार्या सो मैं रसकूपतैं रससूं पात्र भर रस्सेके बांध्या सो पात्र तो वानैं खैंच लिया। अर दूजी वेर रस्सेकूं पकड मैं चढता हुता सो वानैं रस्सा काट डाल्या जानैं वह बाहर आवेगा तो रसायनमें वांट लेवेगा सो मैं बहुत दिनका यहां पडा हूं चर्म अर अस्थि रह गये हैं या रसके भोजन करि यह अवस्था मेरी भई ॥ जैसैं मृतकका जीवना कठिन तैसा यहांसे मेरा निकसना कठिन है यह अपनी बात कहकरि वाने मोहि पूछ्या तू कौन है तब मैंने कहा मैं चंपापुरीका वासी भानुदत्त सेठका पुत्र हूं सो वह तेरा वैरी तापस तानैं मोहि यहां डार्या है ॥ ८४ ॥ यह दुष्टात्मा बगलेकी वृत्ति धरै है मुखमें मीठा पेट खोटा है ऐसे पापी महा अधोगतिमें पडैं ताका आश्चर्य क्या ॥ ८५ ॥ चारुदत्त ता तापसकूं कपटी जान गया तब वाका पात्र रससे भरे ऊपर चढाया फिर ताने याके अर्थ रस्सा डार्या तब रस्सेतैं एक पाषाण बांध दिया तब वानैं रस्सा

पुरुष असार है, यातैं अब तू कोई धनवान् नये गन्नेकी न्याईं रसका भरया उसे सेवन कर। ये वचन माताके महा पापके करणहारे सुनकर सो शीलवंती ऐसी पीडित भई जैसैं किसीके कानमें कीला ठोकिये वैसी पीडित भई। अर अपनी मातासे कहती भई हे माता! तूने यह क्या कहा यह चारुदत्त मेरी कुमार अवस्थाका पति अर बहुत दिन जाकी सेवा करते भये ताहि त्यागकर मुझे अर धनवानसे क्या प्रयोजन? जो कुबेर समान संपत्तिवान होय तो मेरे किसी अर्थ नाहीं जो चारुदत्तका वियोग होय तो मेरे प्राणनिकरि क्या प्रयोजन? जो तोहि मेरा जीतव्य प्रिय है तो ऐसे वचन मोहि मत कह। अर तू महाकृतघ्नताकी धरणहारी तेरा घर यानैं करोडों सुवर्णकी दीनारनि करि भरया तौहू पापिनी वाहि तजना चाहै है, स्त्रीका जन्मही कृतघ्न है ॥ ६८ ॥ हे माता! ऐसे पतिका त्याग मुझसूं कहां होवै, सकल कलाका पारगामी अर उत्कृष्टरूपका धरणहारा, नवयौवन धर्मात्मा, धर्मका उपदेशक, महाउदारचित्त जाका त्याग कैसे करिये ॥६९॥ तब वसंतसेनाकी माता कलिंगसेना दुराचारिणीने जानी जो मेरी पुत्री यातैं बडी अनुरागिणी है याका अनुराग मेरा मिटाया न मिटै। तब याके यह चिंता उपजी काहू भांति इनकूं जुदा करिये, ऐसा विचार आसनविषैं शयनविषैं स्नानविषैं भोजनविषैं हम दोऊ युक्त हुते सो यानैं उपायकरि जुदे किये अर मोहि रात्रिविषैं निद्रा अणाय घरतैं वाहिर डारया, सो मेरी निद्रा गई तब मैं अपने घर गया सो मेरा पिता भानुदत्त तो मुनि होयगया हुता अर मेरी माता पतिके वियोगकरि महादुःखिनी हुती अर मेरी भार्या अति दुखी हुती सो दोऊ मोहि देखि रुदन करने लगी ॥७२॥ तब मैंने उनकूं धीर्य बंधाया अर स्त्रीके आभरण उनकी कुछ पूंजी हाथकरि रावर्तनामा देशमें मामासहित व्यापारकूं गया, यहांलग अपनी कथा चारुदत्त वसुदेवसूं कहकर फिर कहै है उसी रावर्त्तदेशविषैं कपास खरीदा मामा अर मैं ताम्रलिप्तनामा नगरकूं जाते हुते सो दैवयोगकरि कपास दावानल करि मार्गमें जल गई ॥ ७४ ॥ तब मामाकूं तजकरि अश्वारूढ होय मैं पूर्वदिशाकूं जाऊं था, सो मार्गमें अश्व भी मरया तब पांव पयादा ही खेदखिन्न प्रियंगु नगरमें गया ॥ ७४ ॥ तहां मेरे पिताका सुरेंद्रदत्तनामा मित्र

करि रुद्रदत्तकूं वशी किया, रुद्रदत्त वेश्याके मंत्रमैं आया, यह कथा चारुदत्त वसुदेवसूं कहै है सो रुद्रदत्त मोहि उपाय करि बाके महलविषैं ले गया ॥ ५१ ॥ तहां कलिंगसेना हू हुती सो हमारा अतिसत्कार किया सन्मुख आई अर आसन दिया ॥ ५२ ॥ जातेही वेश्याने द्यूतक्रीडा आरंभी सो द्यूतक्रीडाविषैं रुद्रदत्तका उत्तरासन जीत्या तब मैं कलिंगसेनासूं द्यूतक्रीडा करवेविषैं उद्यमी भया तब ताकी पुत्री वसंतसेनाने मातातैं द्यूतक्रीडा छुडाय मोहि अपने सन्मुख किया, वह चतुर मेरे साथ द्यूतक्रीडा करती भई सो मैं वाके रूप अर चातुर्यताकरि अति आसक्त भया घनी देरतक मैंने वासे द्यूतक्रीडा करी मुझे तृषा लगी तब मेरे पीनेके जलमें वेश्याने मोहिनी चूर्ण डारया सो मोहि अति भ्रम होय गया वाका अति विश्वास भया, मेरा उससे अनुराग उपज्या वाकी माताने वाका मुझसे कर ग्रहण कराया तहां बारह वर्ष मैं वाके घर रहा। माता पिता अर स्त्री तीनोंको भूल गया अर कार्यकी क्या कथा ? जो बडे पुरुषनिकी सेवा कर मेरे जिन गुणनिकी वृद्धि भई हुती सो तरुणीकी सेवा करवेतैं दोषनिकरि मलिन होय गये जैसैं दुर्जनकी संगतिकरि सज्जनकूं कलंक लागे । बारह वर्षमैं सोलह क्रोड दीनार मेरे घरतैं गणिकाके घर गई, घरमें द्रव्य नाहीं । तब मित्रवती मेरी स्त्री ताके आभूषण आवने लगे । तब पापिनी कलिंगसेना अपनी पुत्री वसंतसेनाकूं कहती भई हे पुत्री ! मैं तोहि हितकी बात कहूं हूं सो मेरी बात कान धर ॥६१॥ गुरू-निके वचन अमृत समान हैं जो प्राणी गुरुके वचन रूपमंत्रका अभ्यास करैं तिनके घरके अनर्थ सदा दूरही रहें। तू जाने है अपनी वृत्तिकूं यह सबमें हीन है वेश्या समान अर हीनाचरण नाहीं सो जाकी जैसी वृत्ति होवै वह ताके माफिक करै, महावर पगांही लागै, तैसे जो निषिद्धाचरण है सोही अपनेकूं कर्त्तव्य है, उत्तम आचरणका प्रयोजन नाहीं । चारुदत्तकी बहूके आभूषण आवन लगे सो जानिये है याके घरमें अब धन नाहीं यातैं याका द्रव्य तो सब ले लिया अब तू याहि त्याग दे यही सार है अर कोई धनवान्‌सा देखकर सेवन कर जैसे गन्नेकी गनेरी रसकी भरी जो होय वही सार अर रस चूसे पीछे असार होय वैसे वेश्यानिके धनवंत पुरुष सार, अर धनरहित

है तो मुझकूं अपने पुत्रनिसमान गिणहु ॥ ३५ या भांति जब मैंने कही तब अमितगति विद्याधर बहुत प्रसन्न भया अर मेरा नाम गोत्र अर ग्राम सब चित्तमें धारि अर मोहि पूछिकरि स्त्रीसहित आकाशके मार्ग जाय अपने स्थानकूं गया अर मैं पीछे चंपापुरी आया विद्याधरकी कथा विषैं अनुरागी है चित्त जाका न देखी न सुनी अर न अनुभवी जो वस्तु चित्तकूं अति हर्षित करै है । अथानंतर–वसुदेवसूं चारुदत्त सेठ कहै है फिर मेरा मामा सर्वार्थनामा ताके सुमित्रानामा स्त्री ताके मित्रवतीनामा पुत्री परण्या ॥ ३७ ॥ परंतु मेरे निरंतर शास्त्रके अध्यनतैं स्त्री की वार्ता ही नाहीं शास्त्रका अध्ययन सब व्यसननिका बाधक है ॥३८॥ तब मेरी माताकूं मेरी सासने उलाहना दिया जो तेरा पुत्र पढ्या भी बडा मूर्ख है स्त्रीकी चर्चा ही न जानैं, तब मेरी माताने मेरा काका रुद्रदत्त महा व्यसनासक्त ताहि बहुत सन्मान करि कह्या मेरा पुत्र जैसे कामासक्त होवे सो करहु ॥ ३९ ॥ तब वह ताहि एक कलिंगसेनानामा गणिका सो सब गणिकानिमें मुख्य ताकी पुत्री वसंतसेना जो अपनी शोभा करि वसंतकी शोभाकूं जीतै ताके घर ले गया, सो कन्या नृत्य गीत वादित्र आदि कलाविषै अति प्रवीण अर स्वरूपकी परम हद अर नवयौवना सो ताके नृत्य मंडपविषैं श्रृंगार विद्याविषैं प्रवीण अनेक लोक बैठे नृत्यका प्रारंभ हुवा, सो रुद्रदत्त महित मैं भी जाय बैठ्या सूची नाटक कहिये सूइयनिकी अणीविषैं नाचना सो नृत्यके प्रथमही ताने जायकी कलियां आंजुलीमें थी बखेरी सो तत्काल फूल गईं ॥४०॥ वह वेश्याकी पुत्री वसंतसेना रस कहिए श्रृंगारादि नवरस अर भाव कहिए उनके भाव विभाव अनुभाव तिनके भेदकूं प्रगट करणहारी सो नृत्यके समय अपनी अंगुलीनिकरि भावनिकूं बतावती सब लोगनिके देखते मेरे सन्मुख नृत्यकरती भई और भी लोग देखते थे सो गणिकाकी पुत्री हर्ष अर अनुरागकी भरी अप्सरा समान नाची ॥४८॥ फिर नृत्य संकोचकरि अपने महलमें माताके समीप गई, मुझे देख कामातुर भई । सो अपनी मातासूं कहती भई जो या जन्मविषैं मेरे चारुदत्त बिना और पति नाहीं मेरी यह प्रतिज्ञा है इससे तू इससूं रमाय ॥ ४९ ॥ ये वचन पुत्रीके सुन कलिंगसेना मेरे वश करवेके अर्थ दान सन्मान

नामा नगर है ताका राजा महेंद्रविक्रम ॥ २२ ॥ ताका मैं अमितगतिनामा पुत्र उनकूं अतिप्रिय अर मेरे मित्र भूमिसिंह अर गोरमुख विद्याधर ॥ २३ ॥ सो अपने दोनों मित्रनिसहित मैं हिमवतनामा पर्वतपर गया तहां एक हिरण्यरोमनामा तापस ताके सुकुमारिकानामा पुत्री सो सरसोंके पुष्प समान अति कुमार अंगकी धरणहारी ताहि देखि मैं मोहित भया। ताने मेरा चित्त हर्‍या ॥ २५ ॥ सो मेरे चित्तविषैं ताकी अभिलाषारूप शल्य चुभी तब मेरे पिताने तापससूं याचना करी अर मोहि परणाया. परम उत्साह सो मेरा अर सुकुमारिकाका विवाह भया ॥ २६ ॥ सो भूमिसिंह मेरा मित्र स्त्रीविषैं चित्तकरि अभिलाषी अर मैं उसका अभिप्राय न जानूं प्रमादी भया, तासहित निरंतर विहार करूं । आज मैं सुकुमारिकासहित या चंपानगरीके उद्यानविषैं रमता हुता सो मुझे मेरा कुमित्र भूमिसिंह कील गया अर कामिनीकूं लेय गया सो मोहि तैंने छुडाया, तब मैं तत्काल जाय शत्रुसूं युद्धकरि स्त्री छुडाई सो यह स्त्री है ॥ २८ ॥ जैसा तैंने उपकार किया वैसा काहूसूं न बनै तातैं अब तू जो कहै सो मैं करूं मोहिं आज्ञा देवहु यद्यपि मैं वयकरि बडा हूं तथापि तू प्राणनिका दाता सो तेरी सेवा करनी मोहि योग्य है ॥ २९ ॥ जब तैंनैं मेरी शल्य काढी तब मैं जिया तातैं यदि मैं भी कुछ पीछे उपकार करूं तब मेरा जन्म सफल अर मेरी शल्य मिटै ॥ ३० ॥ ऐसे प्रिय वचन अमितगति विद्याधरने कहे स्त्री है संग जाके तब चारुदत्तने कही तुम बडे हो मुझसूं हित जनाया अर सज्जनपना दिखाया अर अपना शुद्धभाव दिखाया, तब क्या न किया तुम विद्याधर देवनिसमान तिहारा दर्शन मनुष्यनिकूं दुर्लभ सो मोहि सुलभ भया या समान अर लाभ क्या । आपने मुझसूं जब मित्रताकरी तब क्या न किया, यही बडा उपकार है जो मित्रकूं सरल भाव दिखावना ॥ ३२ ॥ तातैं मैं महा पुण्यवान अर लोकविषैं मान्य जो तुमसमान बडे पुरुषनिका दर्शन भया ॥ ३३ ॥ अर तुम ऐसा चित्तविषै विषाद न करहु जो मुझे वैरीने कीला यह सबही जीवनिका साधारण लक्षण है जो एक अवस्था-तैं अर अवस्थारूप होय यह जगतकी रीति है जो आप मुझतैं कृपा करहु अर यदि मेरे ऊपर उपकारकी बुद्धि

पुत्र विना सोहै नाहीं, साक्षात् गृहस्थपदका फल पुत्रका मुखकमल देखनाही है ॥ ८ ॥ यह अभिलाषाधरि वह जिनपूजा अर दानादिविषैं विशेष प्रवर्ती । एकदिन चारणमुनिकूं सुभद्रा पुत्रकी उत्पत्तिके अर्थ पूछती भई ॥ ९ ॥ वे अवधिज्ञानी अवधि विचारि सेठानीकूं कृपाकरि कहते भये, जो तिहारे शीघ्रही पुत्र होवेगा अर अति श्रेष्ठ होवेगा यह आज्ञाकरि मुनि तो विहार करि गये, अर थोड़े ही दिननिमें मैं उनके पुत्र भया सो मेरा चारुदत्त नाम धरचा अर बडा उत्सव किया ॥ ११ ॥ जब मैं बडा भया तबें मोहि श्रावकके व्रत दिये अर सर्वकला मैंने सीखी अर मैं बालचंद्र समान ज्यूं ज्यूं वृद्धिकूं प्राप्त भया त्यूं त्यूं मातापिता अर बांधवनिके चित्तविषैं हर्षरूप समुद्रकी वृद्धि करता भया, ॥ १२ ॥ अर मेरे मित्र वराह गोमुख हरिसिंह तमोंतक मरुभूति ये पांच मेरे समान वय, सो मुझे अतिप्रिय ॥ १३ ॥ उनके सहित मैं क्रीडा करिवे अर्थ रत्नमालनीनामा नदीपर गया, सो नदीके पुलिनमें विद्याधरी अर विद्याधर रतिक्रीडा करते देखे सो मैं मनमैं जानी ये विद्याधर हैं पुष्पनिकी सेजपर कदली गृहविषैं केलि करै हैं उनके रतिके संघट्टकरि पुष्प अर पल्लवनिकी सेज मलिन होय गई हुती सो मैं तो आगे थोडी ही दूर गया पीछे कोई उनका शत्रु विद्याधर पहुंचा सो शत्रुने ताकूं लोहेकी कीलनिकरि जड्या, वह शत्रु ताके निकट खड्ग अर खेट लिये रक्तनेत्र खड्या ॥१७॥ सो हमकूं देखि शत्रु तो टल गया अर ता बंधे विद्याधरने तीन दिव्य औषध गूढ थीं सो मुझकूं सेनकरि बताई, तब मैंने तीनों औषधि लेयकरि उसका यत्न किया औषधनिके नाम चालन १ उत्कीलन २ अर व्रणसंरोहण ३ सो मैं चालन औषधिकरि ताहि चलाया अर उत्कीलनिकरि उत्कीला अर व्रणसंरोहणकरि उसके घाव अच्छे किये ॥ १८ ॥ तब वह कीलरहित घाव रहित होय खड्ग अर खेट दो आयुध हाथमें लेयकरि तत्काल उत्तरदिशाकी ओर शत्रुपर दौडा ॥१९॥ ताकी स्त्री शत्रु ले गया हुता सो तत्काल छुडाय स्त्रीसहित हमारे निकट आया, अर अति आदरसूं कहता भया । हे भव्य ! जैसैं मोहि तुमने प्राण दिये अर मरतेकूं बचाया वैसैं मोहि आज्ञा देवहु मैं तुम्हारी सेवा करूं वैताढ्य पर्वतकी दक्षिणश्रेणीविषैं शिवमंदिर-

असंभव बात है, सो कोई न करि सकै अर साधुकी अतुल्य शक्ति है उनकूं कोऊ कार्य विषम नाहीं जो चाहैं सो करैं परन्तु जो कार्य कदापि न हुवा हो सो न करैं, जिन मार्गका तप ताकी जो प्रवृत्ति सोई भई लक्ष्मी ताका है संयोग जिनके ऐसे योगी जिनके अनंतशक्तिरूप केवलऋद्धि प्रगट होय उनके अर ऋद्धिका क्या आश्चर्य्य है ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ विष्णुकुमारमाहात्म्यवर्णनो नाम विंशतितमः सर्गः ॥ २० ॥

अथानंतर—गंधर्वसेनाकूं विद्याधरकी पुत्री जानिकरि अर जो राजानिकी संपदाकूं उलंघे ऐसी चारुदत्तकी विभूति देखिकरि वसुदेव एकदिन चारुदत्ततैं पूछते भये, वसुदेव यदुवंशविषैं श्रेष्ठ अर सुंदर गोष्ठीके श्रवणकरि उपजे है सुख जिनकूं आप उदारचरित्र हैं, अर औरनिके उदार चरित्र जिनकूं अतिप्रिय हैं, चारुदत्तकूं कुमार पूछे हैं हे पूज्य ! ॥ १ ॥ ऐसी सम्पदा जो राजानिके नाहीं सो आपने कैसैं उपार्जी अर भाग्य पुरुषार्थ जो तुमविषैं है सो अरविषैं नाहीं यह अद्भुत महिमा कैसैं प्रगटी अर यह विद्याधरकी पुत्री कैसैं आई यह सकल कथा मोहि नीके कहो मेरे काननिकूं यह कथा अमृतकी वृष्टि समान अतिप्रिय है सो आप अमृतकी वृष्टि करैं ॥ ४॥ या भांति कुमारने चारुदत्ततैं जब पूछ्या तब वह खुशी होय अति आदरसूं कहता भया । हे धीर ! तुमने भली पूछी यह सब वार्ता मैं कहूं हूं सो सुनहु ॥ ५ ॥ याही चंपापुरीविषैं एक सेठनिका स्वामी महा धनवान भानुदत्तनामा प्रसिद्ध सेठ ताकी स्त्री सुभद्रा । ॥ ६ ॥ सम्यग्दर्शनकी महा शुद्धताकूं वे दोऊ सेठ सेठाणी धारते भये अर दोनोंही नानाप्रकार अणुव्रतकेधारी उनका सुखसूं काल व्यतीत होय, सदा आनंदसागरविषैं मग्नही रहैं, अर दोनोंही यौवनवंत ॥ ७ ॥ वह सुखसूं काल व्यतीत करैं किसी बातकी हू चिंता नाहीं परंतु सुभद्राके पुत्रकी वांछा उपजी मनमें विचारती भई जो मैं ऐसा पति पाया अर ऐसा धन पाया अर ऐसा रूप पाया परंतु

रूप दिखाया चांद सूर्य्यकूं उलंघिकरि शरीर ऊंचा गया अर एक पग तो सुमेरु पर धरया अर एक पैर मानुषोत्तर पर्वतपर धरया अर तीजे पैरकी इससे दवाबनेकरि तब वह चकित होय गया तीजा पैर स्वामीने आकाश पर धरया तब मुनिके प्रभावकरि तीनलोक क्षोभकूं प्राप्त भये । क्या है क्या है यह ध्वनि जगतविषैं भई किन्नर किंपुरुष आदि देव विस्मयकूं प्राप्त भये ॥ ५२ ॥ तव किन्नर किंपुरुष गंधर्व आदि देव अपनी स्त्रीनि सहित वीणा बांसुरी आदि अनेक वादित्र बजाकरि स्वामीकी स्तुति करते भये ॥ ५३ ॥ सो वह तो विष्णुकुमार त्रैलोक्यके नाथ हैं देव मनुष्य अर असुर, उनके भी नाथ हैं उनकी प्रशंसा करिवे योग्य कौन ? परंतु विष्णुकुमारके चरणनिके अरुणतल आकाशविषैं सोहते भये । किन्नरादिक देवनिकी स्त्री संगीत करती हुई, उनके मुखरूप कमलनिके दर्पण स्वामीके चरणनिके नख होगये, देव विद्याधर भयरूप भया है मन जिनका सो हाथ जोडिकरि कहते भये । हे स्वामिन् ! ॥ ५४॥ तुम्हारी ऋद्धि अब संकोचो तुम्हारे तपके प्रभावतैं तीनलोक कंपायमान भये ॥५५॥ देव विद्याधर गंधर्व किन्नर वीणा बजाय अति स्तुतिकरि स्वामीके गुण गावते भये अर आकाशविषैं चारणमुनि प्रशंसा करते भये मुनिदेव विद्याधरनिने प्रार्थना करी, अर शांत किये तब स्वामी विक्रियाऋद्धिकूं संकोचकरि शरीराकार भये मुनीनिका उपसर्ग दूर भया, अर बलीकूं बांधि देव दूर डारि आये ता दुरात्माका निग्रह किया उसे दूर नसाया ॥ ५८ ॥ ता समय देवलोककी तीन वीणा देव ल्याये सो विद्याधरनिकूं दई घोषानामा वीणा सो उत्तरश्रेणीविषैं दई अर सुघोषा दक्षिणश्रेणीविषैं दई अर महाघोषा सिद्धकूटविषैं दई ॥ ५९ ॥ मुनिनिका उपसर्ग निवारि जिनमार्गका वात्सल्यकरि विष्णुकुमारस्वामी अपने गुरुके निकट जाय विक्रियाकूं सल्य कहते भये ॥६०॥ फिर महा दुर्धर तपकरि घातिया कर्मनिका क्षयकरि केवली होय जगतका निस्तारकरि मोक्ष गये । यह विष्णुकुमारका चारित्र पापनिका नाश करणहारा जो भक्तिकरि सुनै सो सम्यक्तकी शुद्धताकूं प्राप्त होवै ॥६२॥ ऐसा पृथ्वीमें कौन है जो सुमेरुकूं स्थानकतैं चलावै अर चांद सूर्यकूं आकाशतैं भूमिविषैं डारै अर समुद्रकूं चलायमान करै ये

स्वभाव जिनका ऐसे जे साधु तिनकूं ताप उपजावना शांतिके अर्थ नाहीं जैसे जल महा शीतल है परंतु तपाया हुवा अग्निकी न्याईं जलावै वे मुनि कदापि कोपकूं भजैं तो अग्निकी न्याईं भस्म करैं वे महाधीर हैं अर सामर्थ्य जिनकी कोई जानै नाहीं। त्रैलोक्यके उडानेकी उनमें शक्ति है साधु जो कदाचित् कषाय करैं तो प्रलयाग्निकी न्याईं भस्म करैं ॥ ३७ ॥ तातैं जौलग बली आदिकका नाश न होवै वातैं पहिले तू ताहि अमार्गतैं निवृत्त करि विलम्ब मत कर ॥ ३८ ॥ तब पद्मने नमस्कारकरि कही हे नाथ! मैं सातदिनका राज्य बलीकूं दिया सो मेरा वश नाहीं सो आपही जायकरि ताहि समझावहु, वह आपकी आज्ञाप्रमाण करेगा, ऐसा राजा पद्मने कह्या तब विष्णुकुमार वामनरूप धारकरि बलीके निकट गये अर कहते भये तैंनैं थोडे दिनके जीनेके अर्थ अर चार दिनका राज्य पाय ऐसे पापकर्म क्यों किये ॥४१॥ वे महापुरुष तपोनिधि उन्होंने तेरा अनिष्ट क्या किया जैसैं कोई छोटे मनुष्यका अविनय करै तैसैं तू मुनीनिका करै है सो कहा योग्य है, जो कर्मबंधतैं डरैं सो किसीकूं अनिष्ट न करैं सबका लाभ ही करैं, जे तपस्वी मनवचनकायकरि महा तप करैं उनसे द्वेष कौन करै तातैं तू इनका उपसर्ग टारि प्रमादकरि जो कार्य्य तैंनैं किया सो अब या कार्यतैं पीछे आवहु ॥४४॥ तब बली बोला जो ये मेरे राज्यतैं जावैं तो उपसर्गकी निवृति होय और भांति नाहीं ॥ ४५ ॥ तब विष्णुकुमारने कही वे योगारूढ हैं चातुर्मासमें गमन न करैं, वे व्रती शरीरका त्याग करैं परन्तु व्रत भंग न करैं ॥ ४६ ॥ यातैं यह करि मैं वामनरूप हूं सो मेरे पांवनिसूं मापी तीन पैंड पृथ्वी तिनके स्थानककूं देवहु वे वहां रहेंगे, या बात प्रमाण करो अपनी आत्माकूं अति कृश न करहु इतनी याचना मैंने करी सो देवहु तब बलीने यही बात प्रमाण करी तुम्हारे पैरनितैं तीन पैंड धरती माप लेवहु वहां ये रहैं ता सिवाय एक पैर अधिकमें न विचरैं जो विचरैं तो मैं मारूंगा मुझे दोष नाहीं ॥ ४८ ॥ वह बली अविनयी कपटी सर्पसमान महा दुष्ट स्वभाव ताहि वश करिवेकूं मुनि विक्रयाऋद्धिके धारक उसे विक्रियाऋद्धि दिखावते भये ॥ ४९ ॥ उसे कहैं हैं ये दो पैर तो तू देखि अर तीसरे पैरकूं जगहकरि स्वामीने अपना विक्रियाका

कायोत्सर्ग धर तिष्ठे अर यही नियम करते भये जो या उपसर्गतैं बचेंगे तो आहार पानी लेंगे नहीं तो सन्यास है। ता समय विष्णुकुमारके गुरु मिथलापुरीविषैं विराजे थे वे महादिव्यज्ञानी दयाकरि संयुक्त ऐसे वचन कहते भये जो अकंपनाचार्य आदि सातसौ मुनीनिकूं महा भयंकर उपसर्ग वर्तें है। यह वचन सुनि एक पुष्पदंतनामा क्षुल्लक श्रावक व्याकुल होय पूछता भया हे नाथ ! कहां उपसर्ग होय है तब स्वामीने कही हस्तिनापुरमें होय है तब ताने पूछ्या वह उपसर्ग कैसैं दूर होय ? तब गुरुने कही विष्णुकुमार मुनिकूं विक्रियाऋद्धि उपजी है सो सुन ताके प्रभावतैं मिटै। यह इंद्रसे भी अधिक शक्ति उनमें है। तब क्षुल्लक भी विद्याधर है जो जब व्रत धारै तब लौकिकविद्या सब तजी थी परंतु धर्मके निमित्त राखी थी सो विद्याके प्रभावकरि तत्काल क्षुल्लक विष्णुकुमारके समीप जाय गुरुका कह्या सकल वृत्तांत बतावता भया सो विष्णुकुमारकूं सुध भी नाहीं जो मुझे विक्रियाऋद्धि उपजी है क्षुल्लकने कह्या तब जाण्या अर विद्याकी परीक्षाके अर्थ भुजा पसारी सो कहीं न अटकी दूर चली गई ॥३०॥ तब स्वामीने जाण्या जो मोहि ऋद्धि उपजी तब तत्काल अपना भाई जो पद्म राज्य करै है ताके समीप गये वह इनके पावनिमें पड्या ॥ ३१ ॥ तब विष्णुकुमारने कही तैंने यह क्या आरंभा जो तेरे राज्यमें मुनीनिकूं उपसर्ग होवै अपने कुरुवंशविषैं कदापि ऐसा भूप न भया जो भक्तजननिकूं भय उपजावै या पृथिवीविषैं ऐसा कार्य कदापि न भया मिथ्यादृष्टि लोक तपस्वीनिकूं उपसर्ग करते होवें, अर राजा न मेटै तो वह राजा काहेका जातैं धर्मकी प्रवृत्ति कहांतैं होवै। जैसैं जलती अग्नि महा प्रबल है तो भी जलकरि बुझै, अर जलहीतैं अग्नि प्रज्वले तो आग कैसैं बुझै, ऐश्वर्यका फल आज्ञा है, आज्ञा विना ऐश्वर्य काहेका। जाकी आज्ञा प्रवर्ते सो ईश्वर जैसैं स्थाणु नाम ईश्वरका है अर ठूंठका भी है। सो आज्ञा विना ही ईश्वर कहावे तो यह स्थाणु कहिये ठूंठ समान है तातैं हे पद्म ! तू उठि अर या दुराचारतैं बलीकूं मनै कर। तेरा मंत्री बली पशु समान है जे सकल जीवनिविषैं समभावके धारक जे साधु तिनविषैं द्वेष कहा ॥ ३५ ॥ शीतल है

सभामें कैयक तो वादित्रनिक वजावनेमें तत्पर, कैयक गान अर नाचनेविषैं तत्पर अर कैयक कौतूहली लोक ॥ ३२ ॥ पीछै वह कन्या सभामें आई, निर्मल है प्रभा जाकी आभूषणनिकरि मंडित जैसी वर्षाऋतुमें विजुली मेघ मंडलमें आवै तैसे कन्या सभाविषैं आई वह गंधर्वसेना मानूं साक्षात् गंधर्वविद्या ही है वीणाके बजायवे-विषैं प्रवीण आगे जानैं अनेक जीते हैं अब वसुदेव आयकरि श्रेष्ठ सिंहासनपर विराजे, ताने जितनी वीणा ल्यायकरि कुमारके निकट धरीं तिन सबमें कुमार दूषण काढै । तब वह गंधर्वसेना सुघोषानामा वीण ल्यायकरि कुमारके करविषैं सौंपती भई सो वीणा सप्तदशतंत्री महा मनोहर देवोपुनीत ताके तार कुमार बजायकरि हर्षित होय कहते भये ॥ ३६ ॥ यह वीणा महा निर्दोष है अति सुंदर है गंधर्वसेना तू कहै अर जो तेरी अभिलाषा होय सो ही गाऊं, अर वैसे ही बजाऊं मेरे रूप अर गुणकरि यह वीणा भी मेरे वश भई अर तूभी वशीभूत होवेगी यातैं हे पंडिते ! मुझे गानेकी आज्ञा देवहु ॥३८॥ तब गंधर्वदत्ता कहती भई जा दिन विष्णुकुमार मुनिने वलिको बांधा ता दिन तुम्बर अर नारद यह गंधर्व जातिके देव हैं तिनि विष्णुकुमारकी बीणा बजाय स्तुति करी ऐसी वीणा बजानेकी तुम्हारेमें प्रवीणता है तो बजावो । जो पुराणमें कथा प्रसिद्ध है सोही प्रशंसा योग्य है ॥ ४० ॥ चार जातिके वादित्र हैं तत कहिये तारका वाजा वीणादि अर अवनद्ध कहिये मंढ्या बाजा मृदंगादि अर घन कहिये कांशीका वाजा मंजीर नूपुरादि अर सुपिर कहिये फूंकका बाजा सुंदरी तुरही (ई) आदि ॥ ४२ ॥ यह चार-जातिके वादित्रप्राण जीवनिके श्रोत्रनिकूं तृप्त करै हैं । यातैं गंधर्वशास्त्रके शरीर यह वादित्र कहे हैं. (गांधर्वशास्त्र शरीर) गांधर्वकी उत्पत्तिके स्थानक वीणा १ वंशी २ अर गान ३ यह गंधर्वशास्त्रकी उत्पत्तिके स्थानक हैं । अर गंधर्वका स्वरूप तीन प्रकारका है स्वर १ ताल २ पद ३ यह गन्धर्वका त्रिविधि स्वरूप है ॥ ४४ ॥ अर स्वरके मुख्य भेद दो हैं, एक वैण १ दूजा शरीर २ उनके विधान अर लक्षण कहे हैं ।

जो स्वर जिस जिस स्थानविषैं योग्य हुते सो सो स्वर वसुदेवने यथायोग्य उसी स्थानविषैं लगाये बसुदेवने गंधर्व

कायोत्सर्ग धर तिष्ठे अर यही नियम करते भये जो या उपसर्गतैं बचेंगे तो आहार पानी लेंगे नहीं तो संन्यास है। ता समय विष्णुकुमारके गुरु मिथलापुरीविषैं विराजे थे वे महादिव्यज्ञानी दयाकरि संयुक्त ऐसे वचन कहते भये जो अकंपनाचार्य आदि सातसौ मुनीनिकूं महा भयंकर उपसर्ग वर्ते है। यह वचन सुनि एक पुष्पदंतनामा क्षुल्लक श्रावक व्याकुल होय पूछता भया हे नाथ! कहां उपसर्ग होय है तब स्वामीने कही हस्तिनापुरमें होय है तब ताने पूछ्या वह उपसर्ग कैसैं दूर होय? तब गुरुने कही विष्णुकुमार मुनिकूं विक्रियाऋद्धि उपजी है सो सुन ताके प्रभावतैं मिटै। यह इंद्रसे भी अधिक शक्ति उनमें है। तब क्षुल्लक भी विद्याधर है जो जब व्रत धारै तब लौकिकविद्या सब तजी थी परंतु धर्मके निमित्त राखी थी सो विद्याके प्रभावकरि तत्काल क्षुल्लक विष्णुकुमारके समीप जाय गुरुका कह्या सकल वृत्तांत बतावता भया सो विष्णुकुमारकूं सुध भी नाहीं जो मुझे विक्रियाऋद्धि उपजी है क्षुल्लकने कह्या तब जाण्या अर विद्याकी परीक्षाके अर्थ भुजा पसारी सो कहीं न अटकी दूर चली गई ॥३०॥ तब स्वामीनें जाण्या जो मोहि ऋद्धि उपजी तब तत्काल अपना भाई जो पद्म राज्य करै है ताके समीप गये वह इनके पावनिमें पड्या ॥ ३१ ॥ तब विष्णुकुमारने कही तैंने यह क्या आरंभा जो तेरे राज्यमें मुनीनिकूं उपसर्ग होवै अपने कुरुवंशविषैं कदापि ऐसा भूप न भया जो भक्तजननिकूं भय उपजावै या पृथिवीविषैं ऐसा कार्य कदापि न भया मिथ्यादृष्टि लोक तपस्वीनिकूं उपसर्ग करते होवें, अर राजा न मेटै तो वह राजा काहेका जातैं धर्मकी प्रवृत्ति कहांतैं होवै। जैसैं जलती अग्नि महा प्रवल है तो भी जलकरि बुझै, अर जलहीतैं अग्नि प्रज्वलै तो आग कैसैं बुझै, ऐश्वर्यका फल आज्ञा है, आज्ञा विना ऐश्वर्य काहेका। जाकी आज्ञा प्रवर्ते सो ईश्वर जैसैं स्थाणु नाम ईश्वरका है अर ठूंठका भी है। सो आज्ञा विना ही ईश्वर कहावे तो यह स्थाणु कहिये ठूंठ समान है तातैं हे पद्म! तू उठि अर या दुराचारतैं वलीकूं मनै कर। तेरा मंत्री वली पशु समान है जे सकल जीवनिविषैं समभावके धारक जे साधु तिनविषैं द्वेष कहा ॥ ३५ ॥ शीतल है

विद्याधर हर लेगये थे ॥१२॥ सो वे शुद्धशील संवेगकी धरणहारीं चक्रवर्तीके योद्धा ले आये सो वे कन्या आर्यिके व्रत धरतीं भईं अर वे आठों विद्याधर मुनि भये यह वृत्तांत देखि चक्रवर्ती अपने पद्मनामा ज्येष्ठपुत्र राणी लक्ष्मीमतीके उदरतैं उपज्या ताहि राज देय छोटा पुत्र विष्णुकुमार तासहित दिगंबर भया, कैसा है चक्रवर्ती अनंत देही कहिये जिसे अर देह धारणा नाहीं याही भवतैं लोकशिखर पधारेंगे अब पद्म राज्य करै अर विष्णुकुमार रत्नत्रयके धारक तप करते भये जैसें नदीपति नदियनिका आश्रय होवै, वैसे यही अनेक ऋद्धियोंके स्वामी होते भये, अर पद्म विष्णुकुमारका बडा भाई हस्तिनापुरका राज्य करै सो पद्मका नवा राज्य ताके राज्यमें एक सिंहवलनामा गढपति गढके वस राजाके देशमें उपद्रव करै सो राजाके ताकी चिंता। बली आदि चारों पद्मके आय रहे सो बली सिंहवलकूं बांधि राजाके समीप ले आया यह पापी चारों देशकालके वेत्ता राजविद्यामें प्रवीण सो राजा पद्मके प्रधान भये। जब बली सिंहवलकूं बांध लाया तब राजाने अति प्रसन्न होय बलीकूं कहा तू वर मांग ॥ १७ ॥ तब बली राजाकूं प्रणामकरि राजाका वचन धरोहर राखि राजाकूं कह्या आपका वचन भण्डारमें रहै सो जब मैं चाहूंगा ता समय लूंगा, याभांति इनका काल व्यतीत होय इनका राजाके अधिकार भया ॥१८॥ कैयक दिनमें वही अकंपनाचार्य हस्तिनापुरके उद्यानविषैं चातुर्मासिक योग धारते भये, इनका वृत्तांत सुनि मंत्री अपने पापतैं डरे जो हमने इनकूं उपद्रव किया था सो शंकारूप विषके भरे निराकरणके अर्थ उपाय चिंतते भये ॥२०॥ बलीने जाकर पद्मराजापै वर मांगा हे प्रभो! मुझे जो वर दिया था सो अब सात दिनका राज्य दो ॥ २१ ॥ तब राजा बलीकूं सात दिनका राज्य देय आप अदृश्यकी न्याईं घरविषैं रहा अर बली राज्य करै सो मुनियनिकूं उपद्रव करता भया ॥ २२ ॥ जहां यति तिष्ठे हुते ताकी चोगिरद यज्ञ आरंभे सो साधुनिकूं धूम्रकी अति बाधा हुई रात अर दिन होम किया अर लोक भोजन करैं उनकी जूठी पत्तलें साधुनिकी ओर डारीं, अर माटीके जूठे शरावा आदि उसी तरफ डारे ॥२३॥ सो वह साधु उपसर्गके सहनहारे मनुष्यकृत उपसर्ग जानि

विष्णुकुमार माहात्म्य।

अथानंतर–राजा श्रेणिक गौतम गणधरसूं पूछता भया, हे प्रभो! विष्णुकुमारने बलीकूं कैसे बांध्या? तब गातम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहते भये हे श्रेणिक! यह विष्णुकुमार स्वामीकी कथा सम्यग्दर्शनकी शुद्ध करण हारी भव्यनिके सुनिवे योग्य तोहि कहूं हूं सो तू सुनि ॥ ३ ॥ उज्जयनी नगरीविषैं राजा श्रीधर्म प्रसिद्ध ताके पटरानी महा शोभायमान श्रीमती अति गुणोंकरि भरी अर मंत्री चार मंत्रमार्गके वेत्ता उनके नाम बलि १ बृहस्पति २ नमुचि ३ प्रह्लाद ४ ये चार एकदिन द्वादशांगके पाठी अकंपनाचार्य सातसौ संयमी मुनिसहित नगरके वाह्य उद्यानमें तिष्ठे सो मुनियोंकी वंदनाके अर्थ लोग वनमें जाते हुते ज्यूं समुद्र उलटै त्यूं सारा नगर जाय था सो देखकरि राजा मंत्रीनिसूं पूछता भया ॥६॥ जो आज क्या है विना समय सकल लोक कहां जाय हैं तब बली बोला हे राजन्! अज्ञानी यति आये हैं सो अज्ञानी देखिवेकूं जाय हैं ॥ ७ ॥ तब राजा भी गमनकी इच्छा करता भया, मंत्रियनिने वर्ज्या परंतु राजा नाहीं रह्या वलात्कारतैं गया मंत्री भी साथ गये जायकरि कुछ चर्चा करते भये, आचार्य्यने पहिलेही सव मुनियनिकूं शिक्षा दे राखी थी कि यहां दुर्जनोंका अधिकार है, सो तुम मौन रहियो सो सब मौन ही तिष्ठे थे किसीने इनकूं पीछा जवाव न दिया मौनारूढ रहे। राजाके साथ मंत्री भी वापिस आये। सो एक श्रुतसागरनामा साधु जिसने आचार्य्यकी शिक्षा न सुनी थी पहिलेही नगरमें गये थे सो आवते इन देखे राजाके निकट मार्गमें साधुसूं मंत्रियनिने चर्चा करी। मंत्री मिथ्यामार्गकरि मोहित सो स्वामीने नय प्रणामके मार्गकरि जीते ॥ १० ॥ अर गुरुके निकट गये गुरुने कहा तुन भला नाहिं किया, संघकूं उपद्रव किया। तब श्रुतिसागर मुनि जहां उनसे वाद भया था, उसी जगह आयकरि कायोत्सर्ग धरि तिष्ठे। रात्रिविषैं वे पापी मुनिकूं मारिवेकूं आये सो वनके देवने इनकूं कीले सो प्रभात भये लोगनिने धिक्कार किये। राजाने उनकूं कुरीटादि दिवाय देशसे काढ दिया, सो यह चले चले हस्तिनापुर गये। सो पहिले राजा महापद्म चक्रवर्ती थे, उनके आठ कन्या सो

सो सुनिकरि सब विस्मयकूं प्राप्त भये ॥ ६० ॥ ये सब कहते भये यह
विद्याका विस्तार श्रोतानिके समीप गाया, अर कौन होवे। याभांति
गंधर्व जातिके देवनिमें तुंवरु है वा नारद है वा किन्नरदेव है ऐसा वीणा बजानेवाला अर्थ जैसी
प्रवीण पुरुष प्रशंसा करते भये ॥ ६१ ॥ गंधर्वदत्ताने कहा कि जो विष्णुकुमार स्वामीकी स्तुतिकरने
तुंवरु अर नारदने वीणा वजाई हुती अर गाया हुता वैसीही बजावो अर गावो सो याही भांति वसुदेवने वीणा
बजाई अर गाया सो सुनिकरि गंधर्वदत्ता अति प्रसन्न भई अर उत्तर रहित भई ॥ ६२ ॥ जीतकी ध्वजा वसुदेवके
हाथ सभाविषै आई अर वसुदेवकी प्रशंसा गम्भीर नाद सभाविषैं विस्तरता भया ॥ ६३ ॥ वह गंधर्वसेना अनु
रागकी भरी वसुदेवके कंठविषै वरमाला डारती भई। जैसे गंधर्व देवांगना गंधर्वदेवकूं वरै वैसैं गंधर्वसेना वसुदेवकूं
वरती भई ॥ ६५ ॥ चारुदत्त सेठ यथोक्तविधि करि इन दोऊनिका विवाहकरि निर्वृत्त भया ॥ ६६ ॥ अर सुग्रीव
यशोग्रीव ये दो वीण विद्याके अध्यापक थे गंधर्वशास्त्रके पाठी उन दोउनिने अपनी कन्या वसुदेवकूं परणाई। अर
बहुत हर्षित भये वे तीनों कन्या गुणकरि चतुर उनसहित महा मनोहर देवनि कैसी क्रीडा वसुदेव करता भया
॥ ६० ॥ देखो भव्य जीव हो क्षुद्र पापतैं किसीप्रकार वसुदेवकूं विद्याधर वैरीने हरया अर आकाशविषै दूर ले गया
अर जाकर ऊंचेसे डारे सो महासरोवरविषैं आय पडे, नहीं है कोई आश्रय जाके अर पुण्यके प्रभावकरि यहां
तीन राणी परणीं यह पुण्यकर्म प्राणीनिकूं उत्कृष्ट लाभ करि संयुक्त करै है, ऐसा जानिकरि जे उत्तम जीव हैं वे
जिनभाषित धर्मविषैं यत्न करहु। यह जिनधर्म ही जीवनिका बंधु है।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वसुदेवगन्धर्वसेनादिविवाहवर्णनो नाम एकोनविंशः सर्गः ॥ १९ ॥

सभामें कैयक तो वादित्रनिक वजावनेमें तत्पर, कैयक गान अर नाचनेविषैं तत्पर अर कैयक कौतूहली लोक ॥ ३२ ॥ पीछे वह कन्या सभामें आई, निर्मल है प्रभा जाकी आभूषणनिकरि मंडित जैसी वर्षाऋतुमें विजुली मेघ मंडलमें आवै तैसे कन्या सभाविषैं आई, वह गंधर्वसेना मानूं साक्षात् गंधर्वविद्या ही है वीणाके बजायवेविषैं प्रवीण आगे जानैं अनेक जीते हैं अब वसुदेव आयकरि श्रेष्ठ सिंहासनपर विराजे, ताने जितनी वीणा ल्यायकरि कुमारके निकट धरीं तिन सबमें कुमार दूषण काढै। तब वह गंधर्वसेना सुघोषानामा वीण ल्यायकरि कुमारके करविषैं सौंपती भई सो वीणा सप्तदशतंत्री महा मनोहर देवोपुनीत ताके तार कुमार बजायकरि हर्षित होय कहते भये ॥ ३६ ॥ यह वीणा महा निर्दोष है अति सुंदर है गंधर्वसेना तू कहै अर जो तेरी अभिलाषा होय सो ही गाऊं, अर वैसे ही बजाऊं मेरे रूप अर गुणकरि यह वीणा भी मेरे वश भई अर तूभी वशीभूत होवेगी यातैं हे पंडिते ! मुझे गानेकी आज्ञा देवहु ॥३८॥ तब गंधर्वदत्ता कहती भई जा दिन विष्णुकुमार मुनिने वलिको बांधा ता दिन तुम्बर अर नारद यह गंधर्व जातिके देव हैं तिनि विष्णुकुमारकी बीणा बजाय स्तुति करी ऐसी वीणा बजानेकी तुम्हारेमें प्रवीणता है तो बजावो। जो पुराणमें कथा प्रसिद्ध है सोही प्रशंसा योग्य है ॥ ४० ॥ चार जातिके वादित्र हैं तत कहिये तारका वाजा बीणादि अर अवनद्ध कहिये मंढ्या बाजा मृदंगादि अर घन कहिये कांशीका बाजा मंजीर नूपुरादि अर सुषिर कहिये फूंकका वाजा सुंदरी तुरही (ई) आदि ॥ ४२ ॥ यह चार-जातिके वादित्रप्राण जीवनिके श्रोत्रनिकूं तृप्त करै हैं। यातैं गंधर्वशास्त्रके शरीर यह वादित्र कहे हैं. (गांधर्वशास्त्र शरीर) गांधर्वकी उत्पत्तिके स्थानक वीणा १ वंशी २ अर गान ३ यह गंधर्वशास्त्रकी उत्पत्तिके स्थानक हैं। अर गंधर्वका स्वरूप तीन प्रकारका है स्वर १ ताल २ पद ३ यह गन्धर्वका त्रिविधि स्वरूप है ॥ ४४ ॥ अर स्वरके मुख्य भेद दो हैं, एक वैण १ दूजा शरीर २ उनके विधान अर लक्षण कहे हैं।

जो स्वर जिस जिस स्थानविषैं योग्य हुते सो सो स्वर वसुदेवने यथायोग्य उसी स्थानविषैं लगाये बसुदेवने गंधर्व

बहुरि तिनके परस्पर कलह भया। तब में गिर पड्या तहां उसे ऐसा उत्तर दयेकरि आप ब्राह्मणका भेष धारकरि चंपापुरीमें प्रवेश किया कैसा है कुमार विशाल हैं नेत्र जाके अर पुरी रागरंगकी भरी मानों गंधर्वपुरी ही है वहां लोकनिकूं बीणा बजावते इधर उधर देखे तब एककूं पूछते भये जो ये लोक कहां भ्रमै हैं। वह कहता भया यहां एक चारुदत्त नामा श्रेष्ठी है सो कुबेरसमान लक्ष्मीवान है या नगरविषैं वह सेठनिका पति है। ताके गंधर्व सेना नामा पुत्री गंधर्वविद्याविषै अति प्रवीण है अर रूपके गर्वकरि महा गंधर्ववंती है। ताकी यह प्रतिज्ञा है कि जो गंधर्वविद्याविषै मोहि जीते सो मेरा भर्त्तार होय सो या अर्थके प्रेरे लोक नाना देशनिसे आये हैं। वीणा बजा- वनमें वह बहुत निपुण है सो ये राजानिके पुत्र तथा सेठनिके पुत्र वीणा बजावनेवाले यहां आये हैं वह गंधर्वदत्ता रूप लावण्य सौभाग्यका समुद्र अर मनकी हरणहारी हिरणी समान हैं नेत्र जाके जगतकूं मोह उपजावै। ब्राह्म- णका पुत्र क्षत्रीका पुत्र अर वैश्यका पुत्र जो वीणा बजायवेविषैं प्रवीण है वे सभी कन्याके अर्थी अर यशके अर्थी यहां आये हैं महीने महीने गंधर्वदत्ताके समीप रागका समाज होय है। बहुत वीणा बजानेवाले वहां इकट्ठे होय हैं। वह कन्या जीतकी ध्वजा लिये साक्षात् सरस्वतीका स्वरूप धार ऊभी है, सो आज तो समाज पूरा भया आजसे महीने पीछे फिर समाज होवेगा। यह समाचार वसुदेव सुनकरि ताकूं पूछता भया। कि जो यहां गंधर्व विद्याका उपाध्याय कौन है, तव ताने कह्या उपाध्यायका नाम सुग्रीव है ॥ २८ ॥ तब वह सुग्रीवके पास जायकरि कहता भया। हे गौतम गोत्र ! मैं गंधर्वविद्याविषैं तुम्हारा शिष्य हुवा चाहूं हूं तब याका रूप देखिवेतैं याने जान्या कि यह महा सुंदर बडे घरका पुत्र है अर भद्र कहिये सरल है ऐसा जानकरि वह दयावान् इनकूं शिष्य करता भया, सो आप अति प्रवीण परंतु भोले होय वीणा सीखते भये। सो जानते ही ऐसी अयोग्य बीणा बजावते भये जाकरि ता विद्यावाले सब हंसैं, अब वह समाजका दिवस आया, ता दिन वसुदेव भी वा स्थानकविषैं प्रवेश- करि लोकनिकूं देखता भया वह सभा वसुदेवकूं देखकरि चकित होय रही, ऐसा पुरुष अब तक देख्या नाहीं।

जीवते मेरे प्राणनाथकूं क्यों हरे हैं ॥ २०१ ॥ ते राज्य पाया तो भी तृप्त न भया। सदा हमकूं दुःख देवेहीविषै उद्यमी मैं आज तुझे घने दिनमें देख्या अब मेरे आगे जीवता कैसैं जायगा। मैं आज तोहि मारे छोडूंगी। ऐसा कहकर म्यानसे खडग काढि अर उसके सिरपर आई तब वह वैरी अपनी रक्षा करता हुवा श्यामासे सूखे वचन कहता भया। हे श्यामली ! स्त्री हतैं बडा पाप तातैं पापिनी परे जाहु। प्रथम तो तू स्त्री जाति फिर मेरे काकाकी बेटी बहन, मैं तुझे कैसे मारूं। मेरे हाथ तेरे हनिवेका उद्यम न करैं ॥ ४ ॥ तब श्यामा बोली कौन बहन अर कौन भाई। जो वैरी होय ताहि मारना, इसमें अपयश नाहीं ॥ ५ ॥ सिंहनी अर व्याघ्री ये स्त्री जाति हैं सो चलाय करि मारवेकूं आवैं तो सामंत उनकूं मारै तू वृथा न्याय विचारै है, जो तेरेमें सामर्थ्य है तो मेरेपर शस्त्र चला तू हमारा वैरी है पिताका वैरी अर पतिका वैरी है। ऐसे कठोर वचन कहकर ताका मार्ग रोका तब वह श्यामा पर खड्ग चलाता भया। इन दोऊका परस्पर महा युद्ध भया परस्पर लोहेकी मारकरि आगैं भडक उठी। इन दोऊका महा युद्ध देख वसुदेव वैरीकूं मुष्टि प्रहार करि खेदखिन्न करता भया तब वाने वसुदेवकूं छोड्या सो श्यामाकी सखीने थांभे अर इनकूं श्यामाके पुरमें ल्यारही हुती सो आकाशविषैं देववाणी भई ॥ १० ॥ जो इनकूं या क्षेत्रविषै बहुत लाभ है सो यहां ही राखो। तब श्यामाकी सखी जो लच्छिया ताने लघुपूर्ण विद्याकरि इनकूं पृथ्वीविषैं पधराया ॥ ११ ॥ सो चंपापुरीके उद्यानविषैं अंबुजसंगमनामा सरोवरविषैं पडे तामेंसे निकसिकरि वाके तीरमें विराजे वहां श्रीवासुपूज्यका चैत्यालय हुता। जिसमें मानस्तंभादि समवशरणकी रचना सो वसुदेवकुमार चैत्यालयकी प्रदक्षिणा देकरि दर्शन किया। यहां प्रभात ही एक ब्राह्मण जिनपूजाके अर्थि आवै था ताहि वसुदेव पूछते भये यह कौन पुरी है ॥ १५ ॥ तब ब्राह्मण कहता भया, जो यह अंगदेश है यामें यह चंपापुरी तीन भुवनविषैं प्रसिद्ध तू नहीं जाने क्या आकाशसे पड्या है ॥ १६ ॥ तब कुमार बोले तू सावधान है जानिये है किं कुछ ज्योतिष शास्त्र भी पढा है मैं आकाशसे ही पडा हूं दो विद्याधर कुमारी हैं तिनि रूपके लोभसे मोहिं आकाशमें हरया

नमस्कार करि मेरा पिता पूछता भया हे नाथ ! मेरा पूर्वस्थान क्या हाथ आवेगा ? तब मुनिने कही तेरी पुत्री
श्यामा ताके पतिकरि तेरा राज्य पीछा आवेगा । तब मेरे पिताने पूछी मेरी पुत्रीका वर कौन होयगा अर वह
कहां है तब साधुने कही जो जलावर्तनामा सरोवर तीर माते हाथीका मद हरेगा सो तेरी पुत्रीका वर होगा
॥ ८९ ॥ मुनिने ये समाचार कहे तब उसीदिन सरोवरविषैं दो विद्याधर राखे हुते जो तुम गजके जीतनेहारेकूं
यहां ले आवो सो विद्याधर तिहारे दर्शनके अभिलाषी हुते तिनकी दृष्टिमें तुम आये अब सब मनोरथ सिद्ध
भये । हे नाथ ! मुनिका वचन अन्यथा न होय । सो यह वृत्तांत अंगारकने सुना होयगा, सो क्रोधकरि बलै है जैसैं
अग्नि धूमको धरै वैसे वह कपटकूं धरै है । अर महा विद्याके बलकरि उद्धत है अर आप विषैं आकाशगामिनी
विद्या नाहीं है । अर मैं विद्यावती हूं सो मो विना मत कदाचित वह अरि आपकूं हरै ॥ ९३ ॥ ये श्यामाके
वचन सुनकरि स्वामीने कहा इसमें क्या दोष है । हम तुम विना अकेले न रहेंगे ऐसा कह वह आनंदवदन
वा आनंदवदनीकूं उरतैं लगाय लेता भया । अर वसुदेव ता विद्याधरीकूं महा मनोहर गंधर्व विद्या सिखावता
भया । कैसा है वसुदेव नहीं है मतसर जाके ये दोऊ सदा सावधान रहें हर्ष विनोदमें इनका काल व्यतीत होय,
दिन रात्रिविषैं चिरकाल रतिक्रीडा करि खेद खिन्न भये दोनों सोय गये ॥९६॥ ता समय अंगारकनामा वैरीने
आयकरि वसुदेवकुमारकूं श्यामाके भुजपिंजरमेंतैं काढ्या । अर काढिकर आकाशविषैं ले उडा जैसे गरुड नाग
कूं ले उडै ॥९७॥ जब वसुदेवकूं चेत भया । आपकूं आकाशविषैं हरा जान ताहि देख कहते भये । पापी ! तू कौन
है अर मुझे क्यों हरै है छोड छोड ॥ ९८ ॥ फिर ताहि जाना यह अंगारक है । सो ताहि मारवेकूं मूठी बांधी
आप ऐसे हैं जो वाहि मूकोंसे मार डारैं परंतु न मारा । जो इसे मारैंगे तो हमहू भूमिविषैं जाय पडेंगे । फिर
तत्काल श्यामा जागी । एक हाथमें खड्ग । अर एक हाथमें खेट लिए अशनिवेग पर जाय पहुंची । वसुदेवकी
बहू श्यामा बडी शूरवीर है ताहि श्यामा कहै हैं । हे दुराचारी हे चोर हे निर्दई विद्याधर ! निर्लज्ज खडा रह तू मेरे

अवलोकनमें न आया। फिर भली तिथी भला वार शुभ नक्षत्र शुभ मुहूर्त भला करण एसा पंचांग शुद्ध मुहूर्त देख राजा अशनिवेग अपनी श्यामानामा पुत्री वसुदेवकूं परणावता भया । कैसी है श्यामा कहिये नवयौवना है ॥ ७४ ॥ ताहि परणकर वसुदेव नानाप्रकारकी क्रीडाविनोद कर अत्यंत रमते भये, कैसी है समस्त कला अर समस्त गुणनिकरि चतुर है ताके सुखरूप कमलका कुंवर भ्रमर होता भया ॥७५॥ सोकुमारके वीणा विद्याका प्रेम आप वहुत निपुण। अर श्यामा भी अति निपुण सो श्यामाने अपने स्वामीके निकट सप्तदशतंत्री वीणा बजाई। सो सुनकर कुमार अति प्रसन्न भये। अर कहा हे प्रिये ! तू मोपै मांग जो कहै सो तोहि दूं तब वह नमस्कारकरि यह मांगती भई हे प्रभो ! जो तुम प्रसन्न भये हो तो मुझे यह वर दो जो रात्रि तथा दिवस मेरे बिना न रहना सो इसमें कारण है सो सुनहु हे देव ! हे प्यारे ! एक अंगारकनामा वैरी है सो मत कदाचित छिद्र पाय तुमकूं ले उडे यह भय है इससे वर मांगा है यह कथा नीके सुनो। किन्नर देवनिकरि गाये हैं गुण जाके ऐसा एक किन्नरगीत नामा नगर वैताढ्यकी दक्षिणश्रेणीविषैं नरोंका भरा एक नगर है। याका राजा अरचिमाली अनेक विद्याधरनिका भूप ताके प्रभावती राणी ताके दो पुत्र भये। वडा ज्वलनवेग छोटा अशनिवेग ॥ ८० ॥ सो राजा अर्चिमाली बडे पुत्रकूं राज्य अर प्रज्ञप्ति विद्या । अर छोटेकूं युवराज पद देकर आप स्वामी अरिंदमुनिके निकट दिगंबर दीक्षा धारता भया।सो ज्वलनवेगके राणी विमला ताके अंगारक नामा पुत्र भया अर अशनिवेगके राणी सुप्रभा ताके मैं श्यामानामा पुत्री भई ॥ ८२ ॥ कईयक दिनमें राजा ज्वलनवेग जो मेरा पिता उनका छोटा भाई ताकूं राज्य देय अपने अंगारकनामा पुत्रकूं युवराज पद अर प्रज्ञप्ति विद्या देकर आप मुनि भये ॥८३॥ कईएक दिनोमें अंगारक मेरे पिताका भतीजा संग्रामविषै मेरे पिताकूं जीतकर राज हरता भया सो मेरा पिता राजभ्रष्ट भया सो जरावर्त पट्टनविषैं तिष्ठै है। हे नर कुंजर ! मेरा पिता चिंतावान भया ज्यों पींजरेमें पंछी तिष्ठै तैसे तिष्ठै है, एक दिन मेरा पिता कैलाश पर्वतके दर्शनकूं गया ॥८५॥ तहां अंगिरिनाम चारण मुनि त्रिकालदर्शी तिनकूं

समान उज्ज्वल वह श्वेत वर्ण गंध हस्ती ताहि वश करि वसुदेव कुमार ताके कुम्भस्थलविषैं जाय बैठ्या। अपने हाथों कर हाथी जीता हाथी निश्चल भया ऊभा ॥ ६३ ॥ यह गजक्रीडा करि कुमार माथा हिलाय विचार करता भया। जो मैं अकेले यह क्रीडा करी काहूके देखवेमें न आई जैसे कोऊ वनमें रोवै ताका रुदन कौन सुने। तैसे मेरा कर्तव्य काहूने न देख्या ॥ ६४ ॥ जो यह कार्य सौर्यपुरमें होता तो सब लोक मेरा यश करते । हाथीके मस्तक चढेही कुमारनै यह विचार किया। सो विचार करते ही दो विद्याधर कुमार महा धीर शांतरूपके धारक कुमारकूं हाथीके मस्तकसे ले उडे। विजयार्ध पर्वतविषैं एक कुंजरावर्त नामा नगर ताके बाह्य सर्वकामिक नामा वन ताविषै अशोक नामा वृक्ष ताके तले वसुदेवकूं पधराय वे दोनों नमस्कार कर विनती करते भये। हे स्वामिन्! यहांका राजा अशनिवेग विद्याधर महा ईश्वर है ताकी आज्ञातैं हम तुमकूं लाये हैं ताहि तुम अपना शुसर जानहु। वह अपनी पुत्री तुमकूं परणावेगा ॥ ६९ ॥ उनमें एक मुख्य सो कहै है। मेरा नाम अरचिमाली है अर यह दूजा वायुवेग है ऐसा कह करि एक तो इनके निकट रहा अर एक नृपके नगरमें गया अकस्मात् वसुदेवकूं विद्याधरने गजके कुम्भसे उठाया परंतु रंचमात्र कुमारके भय न उपज्या। कैसे हैं कुमार सदा शोक अर क्लेशसे रहित हैं। महा निःशंक गिरि समान अचल हैं। जिनका चित्त कदाचित न डिगै। यह तो अशोकके वृक्ष तले बिराजे हैं। अर उन दोऊमें एक विद्याधर जायकर नृपसे कहता भया। हे देव! तिहारे मंगल होवै। वृद्धि होवै ता हाथीके जीतनहारेकूं हम ल्याये हैं, कैसा है वह महाधीर अर शूर कहिये अनेकका जीतनहारा है अर महा रूपवान विनयवान् नवयौवन है ॥७१॥ नमस्कारकरि वाने राजासूं विनती करी तब राजा हर्षित होय एक धोवती मात्र पहिरे रहे। अर सब वस्त्र आभूषण जो पहिरे हुये थे सो याहि दिये ॥७२॥ अर राजा साम्हने जाय महा मंगलाचारसे कुमारकूं नगरमें ल्याया सकल नगर उछाला, जैसे बडोंका आगम होय तैसे किया। वसुदेवकुमार आभूषणनिके आभूषण महा सुंदर उनकूं नगरकी नर नारी निरखते भये। जो ऐसा पुरुष अब तक

लोक तिन सहित बाहर निकस्या। प्रभात ही राजा प्रजा सब रोवत कुमारकी चिताकी ओर आये भस्मविषै कुमारके आंभरण देखकरि राजाने जाना भाई मूवा ॥ ५० ॥ तब अति रुदन करि भाईकी क्रिया करी पाश्चात्तापकरि हत्या राजा अति दुखी भया। अपनी भूलकूं निंदता दुखरूप गृहविषै तिष्ठ्या मंद है उद्यम जाका।

अथानंतर—वसुदेव निशंकपने पश्चिमकी दिशामें द्विजका भेष धरि बहुत दूर गये। धीर है चित्त जिनका देवनके नगर समान एक खेदपुर नगर तहां एक सुग्रीव नाम गंधर्व विद्याका आचार्य क्षत्रीके कुलविषै श्रेष्ठ गंधर्व विद्याके अर्थ तिनकूं अनुग्रहकरि गंधर्व शास्त्र सिखावै सो वसुदेवका रूप देख मोहित भया। ताके सोमा नाम कन्या जा समान अर सुंदर नाहीं। चन्द्रमा समान है वदन जाका। अर दूजी विजयसेना ये दोऊ ही महा मनोहर रूपकी हद अर गंधर्वादि कलाविषै अति प्रवीण सो इनके पिताने यह धारण करी हुती जो इनकूं गंधर्व विद्याविषैं जीते सो इनकूं बरे ॥ ५५ ॥ सो वसुदेव यादव, विद्याके योगकरि सभाविषैं उनकूं जीतता भया। वे सदा जीतरूप हुती तिनसूं यह जीत्या ॥ ५६ ॥ तब उनका पिता सुग्रीव अति हर्षित होय अपनी दोनों कन्यानिकूं शुभ महूर्तविषैं कुमारसूं परनावता भया सो परणकरि महा मनोहर मन्दिरविषैं तिन सहित रमता भया ॥ ५७ ॥ उनमें विजयसेना छोटी ताके अंकूरनामा पुत्र उपज्या तापीछे वसुदेव अकेला ही काहूकूं विना पूछे निकस गया। शूरवीरता ही है सहाय जाके ॥ ५८ ॥ मार्गमें जाता हुवा एक महा उद्यानविषैं प्रवेश करि एक मनोहर सरोवर देख्या सो कमलनिकरि मंडित अर जहां हंस अर सारस क्रीडा करैं हैं पक्षीनिके अर भ्रमरनिके शब्द होय रहे हैं। सरोवरका नाम जलावर्त उसे अवगाह कर वसुदेवने बहुत देर तक जलक्रीडा करी ॥ ६० ॥ शीतल जलके तीर सुखसे तिष्ठे। जल जातिका वादित्र बजाया। अर मृदंग बजाया सो वादित्रनिकी ध्वनि सुनकर सूता गज जागा सो वसुदेवके ऊपर हनवेकूं आया सो यह अति चतुर ताकी घात चुकाय कर वातैं अति क्रीडा करि दन्ती जो हाथी ताके दांतनि पर ऐसे हींडे जैसैं हिंडोरे हींडैं ॥ ६२ ॥ चंद्रमाके किरण

अर कही हे कुवंर ! तू चिरकाल वनविषै भ्रमणकर अति खेदखिन्न भया वर्णही और होय गया क्रीडाविषैं क्षुधा तृषाकी गम्य नाहीं सो या भांति बहुत भ्रमण मत करहु ॥ ३५ ॥ अर पवन आताप शीत तिनकरि तिहारा मलीन वदन भया कांति ही वदनकी अर होय गई तिहारा भ्रमणविषैं प्रेम है शरीरका खेद नाहीं गिनो हो तातैं स्नानकी अर भोजनकी बेला उलंघो मति । आज पीछे महलनिहीमें वन है तिनविषैं रमो ॥ ३७ ॥ या भांति महाभक्त जो लघुवीर ताहि शिक्षा दे राणी शिवदेवीका सातखणा महल तहां भाईका हाथ पकड पधारे। भाई सहित स्नान भोजन कर अर भाईका बाह्य परिभ्रमण मेटि राजा राणी सुखसूं विराजे ॥ ३९ ॥ ता पीछे कुवंर महलनिमें शिवदेवीके वनविषै नृत्य गीत वादित्रादि विनोदकरि क्रीडा करता तिष्ठै ॥ ४० ॥ एक दिन कुब्जानामा दासी शिवदेवीके अर्थ सुगंध लिये जाती हुती सो कुमारने खोस लिया तब वह कोधकर कहती भई तिहारी यह चेष्टा है तवही तो वंदीगृहमें पडे हो ॥ ४२ ॥ तब कुमारने कही हे कुब्जे ! तैंनै क्या कहा। तब वह कहती भई जो तिहारे रूपकरि मोहित भई नगरकी नारी विह्वल होइ गई सो लोकनिके कहिवेकरि भाईने तिहारा भ्रमण निवारा है ॥४३॥ तव कुमार अपना वंधन जानभाईतैं उदास भये। कछू छलकरि महलनितैं निकस्या नगरतैं निकसि वनविषै गया एक चाकर लार लिया। मंत्र साधनके मिसकरि रात्रिमें निकसे मसान भूमिविषैं सेवक-कूं एक ठौर राखि आये आप उत्तरकी ओर कछु दूर जाय तिष्ठे ॥ ४५ ॥ एक मृतकको मसानमें अपने आभू-पण पहिराय ताहि अग्निविषै डारचा। अर मुखसे सेवकको सुनाय ये शब्द कहते भये। राजा निष्कपट है हमारे पिता समान है सो सुखसों जीवो। अर नगरके लोग संतुष्ट भये सुखसों जीवो अर हमारे दुर्जन हू चिरकाल सुखसों जीवो। हमतो अग्निविषैं प्रवेश करै हैं ॥ ४७ ॥ ऐसा कहकर वसुदेव दौडे अर चाकरको ऐसा दिखाया जो कुमार अग्निमें पडे। अर आप छिपकर निकस गये। सेवकने जाना कुमारने अग्निमें प्रवेश किया॥ ४८॥ सो नगरमें जाय कर कुमारका वृत्तांत राजासे कहता भया। सो राजा भाईनिके समूह अर राजलोक अर नगरके

॥२२॥ या भांति हमकूं अतुल्य सुख ही है। अर स्वल्प दुख सो कहिवेमें आवै नाहीं ॥ २३ ॥ प्रजाके मुख वार्ता सुनकर जे पुरजनमें मुख्य हैं तिनकूं राजा कहता भया। हे लोको! जो तुम मेरे हितू हो तौ मोहि अपना दुःख निशंक होयकर कहो। आधि व्याधि अल्प हृदयविषै प्रवेश करै तो प्राणिनिकूं हरै यामें संशय नाहीं जैसैं अन्न प्राण धारणका कारण है अर अन्न ही हृदयविषैं लाग होय बैठै तो वाके प्राण ही हरै। २५ ॥ या भांति राजाने जब कही तब प्रजामें मुख्यलोक जो हुते ते विश्राम पाय कहते भये। हे प्रभो! यह विनती करवेकी नाहीं परंतु तिहारी आज्ञातैं कहै हैं प्रजाके अर्थि सो तुम सुनहु। वसुदेव कुमारका नित्य नगरसे उपवनकी ओर भ्रमण होय है सो कुमारके रूपका दर्शनकर स्त्री मोहित भई शरीरकी सुध भूल जाय है कुमारके निकसने अर प्रवेश करवेतैं स्त्रियें विकलेंद्रिय होजावैं हैं सो न कुछ देखैं हैं न कुछ सुनैं हैं। देखना कुमारकी ओर अर उनके यशको सुनना पुत्रादिककी ओर नाहीं निरखैं। अर निजपरका हित अहित नाहीं विचारै हैं अर बात तो दूर ही रही जे कुलीन स्त्रियोंके आचरण हैं वे सब विस्मरण होयगये अपने पुत्रका भी ग्रहण नाहीं जहां पडा तहां पडा रहै ॥२९॥ कुमार अति रूपवंत है ऐसा अनुपमरूप देवनकूं दुर्लभ है अर कुमार अतिधीर है स्वभावहीकर निर्मल है चित्त जाका अर सर्वथा शुद्ध है आत्मा जाका शीलका शिखर है ॥३०॥ कुमारका कछु अपराध नाहीं चित्तमें विकार नाहीं या समस्त वसुधा विषै ऐसे विवेकी अर नाहीं। जैसे सूर्यके काहूसूं द्वेष नाहीं परंतु सूर्यकी घामसे पित्तकी उत्पत्ति होय है। तैसे कुमारविषैं विकार नाहीं परंतु उनके रूपके अतिशयसे स्त्रीनिका चित्त चलायमान होय है ॥ ३१ ॥ यह विज्ञप्ति हुती सो हमने कही अब योग्य होय सो करहु जामें कुमारको सुख उपजे अर पुरकी व्याकुलता मिटै सो कर्त्तव्य है। ये वचन सुनकर राजा चित्तमें विचार प्रजाकूं कहता भया। तिहारी व्याकुलता जैसे मिटेगी सोई होगा। लोकनिकूं तो धैर्य वंधाय विदा किये अर प्राणनिसे प्यारा जो कुमार सो चिरकाल भ्रमणकरि बडे भाईनिके निकट आय प्रणाम करता भया। तब बडे भाई उरसे लगाय गोदमें बैठाया अर स्नेहकरि माथे हाथ धरया ॥ ३४ ॥

पुरकी स्त्रीनिके इनके रूपके अवलोकनकरि अति व्याकुलता होती भई नगरकी नारियनिके समूह वसुदेवके देखिवेकी इच्छाकर ऐसे उमगे जैसैं पूर्णचंद्रके उदयविषैं समुद्रकी लहर उमगैं ॥ ११ ॥ बाजारमें गलीनिमें महलनिके झरोखनिमें नगरीकी नारी कुमारका रूप निरखि घरके सब काम तज वह नगर आसक्तारूप वसुदेवकी कथामई होता भया इनके रूपके सौभाग्यकरि नारियनिका चित्त हरा गया ग्रामके बाहर भीतर वसुदेवकी ही कथा ॥ १२ ॥ एक दिन नगरके वडे वडे लोग समुद्रविजय राजापै जाय प्रणामकर विनती करते भये। हे प्रभो! हमको अभयदान देवहु । अर हमारी विज्ञप्ति तथा अयुक्ति सुनहु। जैसैं पिता बालकनिकी वाणी उचित तथा अनुचित सुनै ॥१५॥ हे नाथ! तुम मनुष्यनिके रक्षक तातैं नृप कहावो हो। अर भूमिरक्षक यातैं भूप कहावो हो अर प्रजाके अनुराग वढावते राजा कहावो हो ॥ १६ ॥ हे राजन्! तिहारे राजविषैं प्रजा सदा हर्षरूप ही रहै है, काहू दुष्टका उपद्रव नाहीं। जैसैं पिताके कांधे पुत्र कँवरपदके सुख भोगवै तैसैं तिहारी प्रजा सुख भोगै है ॥ १७ ॥ हे देव! तिहारे राज्यविषैं यह पृथिवी सर्वधान्यकर फलै है । दोनों भांतिके चावल गेहूं वा चना आदि सर्व धान्य वाधारहित प्रतिवर्ष उपजै है । तिहारे राज्यमें ईति भीति नाहीं धरती सफल है ॥ १८ ॥ जो किसान तिहारे राज्यमें खेती करै हैं तिनके धान्य वहुत फलै हैं। अर जो व्यापारी क्रय विक्रय करै है तिनके बडा नफा होय है। अर तिहारे राजमें गायभैंसके समूह वहुत हैं। कुंभ सारिखे हैं स्तन जिनके। सो गोप निरंतर दूध दुहे हैं। तिहारी पृथिवीमें किसी ठौर गोरसकी कमी नाहीं ॥ २० ॥ अर तिहारे राजमें अन्नपानकी ऐसी सत्ता है जो घरके अर्थ लोक अन्न अल्प ही पचावै हैं। सो दिनके अंतलग दान धर्म अर घरका भोजन ताकरि खान पान अटूट दीखै हैं। मणि मंत्र औषधादि कोईप्रकार यत्न नाहीं तौहू तिहारी नीतिकी सत्ताकरि काहूके किसी वस्तुकी कमी नाहीं। काहू ठौर कदे नष्ट मास बर्ष आवै है तब अन्नका दुकाल होय है। अर तिहारे राजमें सदा सुकाल ही है कदे भी दुष्काल नाहीं। सदा दुंदुभी बाज रहे हैं । काहूके काहू वस्तुकी कमी नाहीं

चौथा अधिकार

(वसुदेवका चरित्र)

अथानंतर—गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहै हैं हे श्रेणिक । अब मैं वसुदेवका वर्णन करूं हूं सो तू सुन । वसुदेवका घरसे निकसना अर विजयार्द्धकी वसुंधराविषैं विहार । अर नानाप्रकारकी चेष्टाका करना सो तू भलीभांति चितविषैं धारि । राजा समुद्रविजय अपने लघु भाई नव तिनमैं आठ तो परणये तिनकी राणीनिके नाम सुनहु । आपसे छोटा अक्षोभ ताहि धृति परणाई । अर वातैं छोटा स्तिमितिसागर ताहि स्वयंप्रभा परणाई । अर वातैं छोटा हिमवान ताहि सुनीता परणाई अर वातैं छोटा विजय ताहि सिताव परणाई । अर वातैं छोटा अचल ताहि प्रियलापा परणाई । अर वातैं लहुरा धारण सो प्रभावती परणता भया ॥ ४ ॥ अर वातैं लहुरा पूर्ण सो कालिंगी परणाई अर वातैं छोटा अभिचंद्र सो सुप्रभाकूं व्याहता भया । इन आठनिके आठ स्त्री होती भई ॥ ५ ॥ ये सब कलागुणकरि पूर्ण सो भर्ता अर भार्यानिके परस्पर अति प्रेमका निवंध होता भया औरनिके ऐसी रीति नाहीं ॥ ६ ॥ वसुदेवकुमार समान लक्ष्मीकरि मंडित शौर्यपुरविषैं कुमारपनेकी क्रीडा करता भया ॥७॥ रूप लावण्य सौभाग्य अर चातुर्यता तिनका समुद्र वह कुमार कामदेव समान सुंदर लोकनिके चित्तकूं हरता भया ॥ ८ ॥ पूर्व दिशा आदि चार दिशा सो चारों ही दिशाकी ओर लोकपालनिका भेषकरि निकसैं सो वह शोभा कथनमें न आवै । दिन प्रति असवारी करैं पूर्वके द्वारकी ओर सोमका स्वरूप धर निकसैं । अर दक्षिणकी ओर यमका स्वरूप धर निकसैं । अर पश्चिमकी ओरके द्वार वरुणका भेपधरि निकसैं । अर उत्तरकी ओरके द्वार कुवेरका रूप धार निकसैं सो आप नवयौवन अर सब साथी नवयौवन अर ऐसे ही गज अश्व रथ अर ऐसे ही पयादे ऐसे ही सबके वस्त्र आभूषण अर ऐसा ही सुगंध ऐसाही रागरंग सब ठाठ देवनि कैसा है ॥ ९ ॥ चंद्रमा समान सौम्य मुखकमल । अर सूर्य समान अंगविषैं दीप्ति सो मंदिरतैं राजमार्ग होय चहुं ओर गमन करैं । सो शौर्य-

कित्सा अंग ॥ ६७ ॥ धन्य यह जिनमार्गकी वात्सल्यता । धन्य तिहारी निःशल्यता । हे मुने ! जो औरहू बुद्धिवानकी यह बुद्धि होय तो उनको जिनशासनके भक्त कहिये याभांति स्तुतिकरि मुनिकूं नमस्कार कर वह देव सम्यक्तकूं अंगीकार करता भया ॥ ६९ ॥ वह स्वर्गवासी जिनमार्गविषैं दृढ होय अपने धाम गया । अर नंदिषेण मुनिने पैंतीस हजार वर्ष तप किया । अर छै महीने पर्यंत प्रायोपगमन सन्यास धरि तजा है शरीर अर आहार जाने । अर तजी है शरीरकी सुश्रूषा जाने । अपने शरीरका आप यत्न करै नाहीं अर काहूसे यत्न करावै नाहीं ॥ ७१ ॥ परंतु लक्ष्मी अर रूप सौभाग्यके निदानकरि मोह थकी आपकूं बांध्या । जो यह मुनि महा तपकर रूप सौभाग्यका निदान न करता तो तीर्थंकरनामा प्रकृतिका बंध करता । सो आराधनाकूं आराधिकर दशमा जो महाशुक्रनामा स्वर्ग ताविषैं इंद्र तुल्य बडी ऋद्धिका धारी देव भया ॥ ७३ ॥ सोलह सागर स्वर्गके सुख भोग तहांतैं चयकर सो तेरी राणी सुभद्रा ताके वसुदेवनामा दशमा पुत्र भया । या भांति राजा अंधकवृष्टि अपने अर अपनी स्त्रीके अर दशों पुत्रनिके भव सुनकरि ॥ ७५ ॥ संवेग कहिये धर्मकी रुचि ताहि प्राप्त भया अर मनुष्य तथा देव सुप्रतिष्ठित केवलीकूं प्रणामकरि अपने अपने स्थानक गये ॥ ७६ ॥ अर राजा अंधकवृष्टि अपने पुत्र समुद्रविजयकूं राज्य देय अर वसुदेवकूं बडे भाईकूं सौंप आप प्रतिष्ठित केवलीके निकट निर्ग्रंथ भया । कैसा है राजा याही भवका अंत करणहारा है तद्भव मोक्षगामी है ॥ ७७ ॥ अंधकवृष्टिने तो सौर्यपुरका राज्य तजा । अर छोटे भाई भोजकवृष्टिने मथुराका राज्य उग्रसेनकूं देयकरि पंचमहाव्रत आदरे ॥ ७९ ॥ शौर्यपुरका राज्य समुद्रविजय करै तानैं शिवदेवीकूं पटराणीका पद दिया । सकल राणीनिमैं शिरोभाग करी । सो राजा समुद्रविजय जिन सूर्यकी नाईं प्रतापकी वृद्धि करता स्थिर जो राज्यकी स्थिति अखंड ताहि पालता भया । कैसा है राजारूप जिनसूर्य अपने लहुरे भाई भव्यजीव कमलसमान तिनका प्रफुल्लित करणहारा है जैसैं जिनरवि अपने उदयकरि भव्यरूप कमलनिकूं प्रफुल्लित करता भया ॥ ८० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य विरचिते समुद्रविजयराज्यलाभ बर्णनो नाम अष्टादश सर्गः ॥ १८ ॥

चौथा अधिकार

(वसुदेवका चरित्र)

अथानंतर—गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहै हैं हे श्रेणिक ! अब मैं वसुदेवका वर्णन करूं हूं सो तू सुन। वसुदेवका घरसे निकसना अर विजयार्द्धकी वसुंधराविषैं विहार। अर नानाप्रकारकी चेष्टाका करना सो तू भलीभांति चितविषैं धारि। राजा समुद्रविजय अपने लघु भाई नव तिनमैं आठ तो परणये तिनकी राणीनिके नाम सुनहु। आपसे छोटा अक्षोभ ताहि धृति परणाई। अर वातैं छोटा स्तिमितिसागर ताहि स्वयंप्रभा परणाई। अर वातैं छोटा हिमवान ताहि सुनीता परणाई अर वातैं छोटा विजय ताहि सिताब परणाई। अर वातैं छोटा अचल ताहि प्रियलापा परणाई। अर वातैं लहुरा धारण सो प्रभावती परणता भया ॥ ४ ॥ अर वातैं लहुरा पूर्ण सो कालिंगी परणाई अर वातैं छोटा अभिचंद्र सो सुप्रभाकूं व्याहता भया। इन आठनिके आठ स्त्री होती भई ॥ ५ ॥ ये सब कलागुणकरि पूर्ण सो भर्ता अर भार्यानिके परस्पर अति प्रेमका निबंध होता भया औरनिके ऐसी रीति नाहीं ॥ ६ ॥ वसुदेवकुमार समान लक्ष्मीकरि मंडित शौर्यपुरविषैं कुमारपनेकी क्रीडा करता भया ॥७॥ रूप लावण्य सौभाग्य अर चातुर्यता तिनका समुद्र वह कुमार कामदेव समान सुंदर लोकनिके चित्तकूं हरता भया ॥ ८ ॥ पूर्व दिशा आदि चार दिशा सो चारों ही दिशाकी ओर लोकपालनिका भेषकरि निकसैं सो वह शोभा कथनमें न आवै। दिन प्रति असवारी करैं पूर्वके द्वारकी ओर सोमका स्वरूप धर निकसैं। अर दक्षिणकी ओर यमका स्वरूप धर निकसैं। अर पश्चिमकी ओरके द्वार वरुणका भेषधरि निकसैं। अर उत्तरकी ओरके द्वार कुवेरका रूप धार निकसैं सो आप नवयौवन अर सब साथी नवयौवन अर ऐसे ही गज अश्व रथ अर ऐसे ही पयादे ऐसे ही सबके वस्त्र आभूषण अर ऐसा ही सुगंध ऐसाही रागरंग सब ठाठ देवनि कैसा है ॥ ९ ॥ चंद्रमा समान सौम्य मुखकमल। अर सूर्य समान अंगविषैं दीप्ति सो मंदिरतैं राजमार्ग होय चहुं ओर गमन करैं। सो शौर्य-

नंदिषेणने किया वैसा अरसूं न वनै ॥ ३३ ॥ वह नंदिषेणनामा मुनि आनंदरूप तपके प्रभावकरि उपजी है लब्धि जाके । ग्यारा अंगका पाठी वाईस परीसह सहता भया ॥ ३४ ॥ जेती उपवासकी विधि हैं तेती याने सब करीं ऐसा दुर्द्धर तप अरसूं न बनैं । महाउग्र तप याके धैर्यके योगकूं सुगम होता भया । तपकी लब्धिके प्रभावकरि यह मुनि आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, गण, कुल, संघ, साधु, मनोज्ञ ! ये दश प्रकारके मुनि तिनका वैयावृत्त करता भया ॥ ३६ ॥ तपोंमें वैयावृत्त वडा तप सो याके विशेष होता भया याके तपकी महालब्धि वैयावृतके अर्थ भई । जो औषधि आदिक वस्तु हैं अर यह मनमें जो चिंतवै सोई आय प्राप्त होय । या भांति ऋद्धिसहित तप करते बहुत वर्ष व्यतीत भये ॥ ३८ ॥ एक समय याके वैयावृतकी प्रशंसा इंद्र अपनी सभामें करता भया ॥ ३९ ॥ जो या समयमें नंदिषेण मुनि जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै जैसा मुनियोंका वैयावृत करै है वैसा अरसूं न वनै ॥ ४० ॥ वह सम्यग्दृष्टि क्षमावान नंदिषेण संयमी योगीश्वरनिके वैयावृतविषैं उद्यमी है । जो संयमी यतीश्वरनिका वैयाव्रत करै ताके निर्जराही है वंध नाहीं । यह शरीर धर्मका मुख्य साधन है ॥ ४२ ॥ तातैं सम्यग्दृष्टि जीव यथाशक्ति मुनिनिके शरीरकी रक्षा करैं । आचार्य आदि सब मुनियोंका वैयाव्रत करैं । सम्यग्दृष्टिकूं यही योग्य है जो उपायकर मुनियोंकी वाधा हरै । अर जो उपकार करवेकूं समर्थ है अर न करै मध्यस्थ होय रहै व्याधिवानकी व्याधि न हरै सो नष्ट पुरुष सम्यक्तका घातक है । जा गृहस्थकी धन अर शरीर वैयावृतविषैं लाग्या सोई सफल है ॥ ४६ ॥ अर जो समर्थ होय जिन धर्मीनिकी वाधा दूर करनेका उपाय न करैं सो कठोर चित्त है ॥ ४७ ॥ ताके जिनशासनकी भक्ति कहां अर सम्यग्दृष्टीनिकी भक्ति कहां जब सम्यग्दृष्टी जैनी तिनकी भक्तिका लोप भया तब यह विनयवान नाहीं अर विनयका अंग नाहीं तब दर्शनकी विशुद्धता कहां ? अर जब दर्शनकी विशुद्धता नाहीं तब ज्ञानका लाभ कहां । अनेक भवविषैं इसको ज्ञानकी प्राप्ति दुर्लभ है अर ज्ञानकी प्राप्ति नाहीं । तब मुक्तिका साधन कहांतैं होय ॥ ५० ॥ ज्ञान विना चारित्र कहां अर चारित्र बिना मुक्ति कैसे

भाइ हैं। यहां कोई प्रश्न करै कि माताका अर दोनों बहनोंका जीव आर्यकासे सोलहवें स्वर्गदेव होय फिर स्त्रीका जन्म क्यों पाया । ताका समाधान जो स्त्रीतैं पुरुष होय पुरुषतैं स्त्री होय। जो सम्यक्तके प्रभावकरि स्त्रीलिंग छेदै सो स्त्री न होय। यह पूर्वभवका वृत्तांत राजा अंधकवृष्टिकूं स्वामी सुप्रतिष्ठिने कह्या। बहुरि राजाने दशवें पुत्र वसुदेवके पूर्वभवका वृत्तांत पूछ्या। तब भगवान केवली कहते भये ॥१२४॥ हे राजन्! जैसे समुद्रके पूर्वदिशाकी ओर पडा जूडा अर पश्चिमकी ओर पडी कीली ताका जूडेके छिद्रमें प्रवेश अति कठिन है तैसैं संसार समुद्रविषैं मनुष्यदेह पाना अति दुर्लभ है सो या संसारसमुद्रविषैं भ्रमण करते करते वसुदेवका जीव मगधदेशमें सालिग्राम नाम ग्राममें दरिद्री ब्राह्मणके घर पुत्र होता भया जाकूं तुच्छमात्रहू सुख नाहीं। सो जब यह गर्भमें आया तब याका पिता शांत भया। अर बाल्याअवस्थाविषैं माताका मरण भया। अर जब यह अभागा वर्ष आठका भया तब याकी मौसी मुई। सो यह राजगृह नगरविषैं मामाके घर रहै। मामाकी बहू याकी भूवा ताने इसका प्रतिपालन किया॥ २८ ॥ सो यह महा मलीन दुर्गंध शरीर बिखरे केस मलीनवस्त्र पीले नेत्र याके मामाका नाम दमरक्त ताकी पुत्री परणवेकी याने इच्छा करी। सो वाकी पुत्रीनिकूं याकी ग्राण आवै सो याकूं घरतैं निकास दिया ॥ ३० ॥ सो यह दुर्भागरूप अग्निकी शिखाकरि प्रज्वलित महा चिंतावान सो मरवेकी इच्छाकरि झंपापात लेवेकूं वैभारनामा पर्वतपर चढ्या। जैसे पतंग दीपककी ओर सन्मुख होय। सो तहां गिरि पर अनेक मुनियों सहित महामुनि विराजे हुते ॥ ३१ ॥ तिनके शंख अर निर्नामिक दो मुनि शिष्य। सो श्री गुरु नंदिषेणकूं पडता देखकरि शंख अर निर्नामक शिष्यनिकूं कही। जो यह अगिले भवविषैं तिहारा पिता होयगा तब शंखनामा मुनि याकूं आयकर उपदेश दिया। उपदेश देकर गुरुके निकट याकूं ले गया। सो यह अपनी निंदाकरि धर्म अर अधर्मके फलकूं जानकरि श्रीगुरुके निकट चारित्र धारता भया। गुरुके उपदेशतैं आशारूपी पाशी छेदकरि दुर्द्धर तप आचरता भया। सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रका धारक भया। जैसा तप

अर ताही नगरविषै एक धनदत्तनामा सेठ बडा धनवान राजा समान, ताके स्त्री नंदयशा ताके पुत्री दोय। एक सुदर्शनी एक सुज्येष्टा। अर सेठके नव पुत्र तिनके नाम धनपाल, जिनपाल, देवपाल, अरहदास, जिनदास, अरहदत्त, जिनदत्त, प्रियमित्र, धर्मरुचि, एक दिन राजा मेघरथ स्वामी सुमंदिरके समीप जिनदीक्षा ग्रही अर धनदत्त सेठ अपने नव पुत्रों सहित मुनि भया। अर सुदर्शन आर्याके निकट राणी सुभद्रा अर सेठकी दोनों पुत्री सुदर्शना अर सुज्येष्ठा आर्या भईं॥ १६ ॥ कईयक दिनमैं सुमंदिर गुरु राजा मेघरथ अर सेठ धनदत्त ये तीनों मुनि काशीके वनविषै केवलज्ञान पायकरि पृथ्वीविषै विहार करते भये॥ १७॥ सो वे जगतपूज्य बारह वर्ष विहारकरि राजगृहपुरतैं सिद्धलोक सिधारे॥ १९ ॥ धनदत्तसेठकी स्त्री नंदयशा सो सेठ जब मुनि भया, नव पुत्र मुनि भये अर दोनों पुत्रीं आर्यिका भईं तब यह गर्भवती हुती यातैं आर्यिका न भई। ताके धनमित्रनामा पुत्र भया तब नंदयशानामा आर्यिका भई। सो एक दिन वह माता अपने नव पुत्र मुनि तिनकूं प्रायोपगमन सन्यास धारे विराजे देखे एक शिलापर नव साधु सन्यास धारे तिष्ठते कैसे सोहते भये मानों सिद्धशिलापर विराजे सिद्ध ही सोहै हैं। सो माता नंदयशा पुत्रनिकूं देख आनंदकूं प्राप्त भई। अर धर्मस्नेहतैं ऐसा निदान किया। जो ये नौऊ साधु अगिले भवविषैं हू मेरे पुत्र होवें। अर वे दोनों बहिन सुदर्शना अर ज्येष्ठा आर्यिकाने भी निदान किया जो यह साधु अगले भवविषैं भी हमारे भाई होवें स्नेहके भारकरि मोहित भयीं। ऐसी इच्छा करती भईं बहुरि माता अर पुत्री आराधना आराधि अच्युतस्वर्गविषैं देव भये स्त्रीलिंग छेद्या। अर वे नवपुत्र महामुनि भी तहां सोलहवें स्वर्ग जाय देव भये। ये वारह जीव एक ठौर उपजे ये सब बाईस सागर आयुके भोक्ता भये। तहांतैं चयकर इनकी माता नंदयशाका जीव तो, राजा अंधकवृष्टिकूं केवली कहै हैं तेरे राणी सुभद्रा भई। अर नंदयशाकी दोनों पुत्री सुदर्शना अर ज्येष्ठा जिनका जीव कुन्ती अर माद्री भईं। अर नवपुत्र नंदयशाके तेरे समुद्रविजय आदि नव पुत्र भये। इनमें वसुदेव जुदा वसुदेवके पूर्वभव और हैं अर नव भाई पूर्वभवके भी

विषैं खोया। अर वेश्याओंके विषयमें खोया। पूजा प्रभावनामें कछू भी न लगाया। सकल द्रव्यका नाशकरि चोरीविषैं प्रवर्त्या। सो कोतवालने पकड्या फिर छोड्या। सो पापी महादुष्ट उल्कामुखनामा बनविषैं जायकर भीलनितैं मिल्या। अर पृथ्वीविषैं धाडा देता भया। जैसैं व्याधि लोकनिकूं पीडै तैसैं यह व्याधि कहिये भील तिनमें मिलकरि लोकनिकूं पीडा करता भया। सो अयोध्याके राजाका सेनापति श्रेणिक तानै युद्धकेविषैं अनेक भील मारे तिनमें येहू मार्या गया। सो मरकरि सप्तम नरकविषैं गया ॥ १०० ॥ देव द्रव्यके विनाशकरि तेतीस सागर नरकविषैं दुःख भोगे ॥ तहांतैं निकलकरि दुष्ट तिर्यंच होय बहुरि नरक गया। सो पापके बहुतकाल कुगतिविषैं भ्रमण किया। फिर कछुयक पापके उपशमतैं हस्तिनागपुरविषैं कापिष्टवायननामा जो ब्राह्मण ताके अनुमतीनामा जो स्त्री ताके गौतमनामा पुत्र भया। सो याकी बाल्य अवस्थाविषैं याके माता पिता मर गये सो यह महा विपत्तिसूं कालक्षेप करै ॥ १०२ ॥ एक दिन यह भिक्षाके अर्थ भ्रमण करता संता एक समुद्रदत्तनामा मुनिका दर्शन करता भया। सो उनके लार लार उनके आश्रममें जायकर वीनती करी। हे नाथ! मोकूं आप समान करहु। तव मुनि याकूं भव्य जानकरि जिनदीक्षा देते भये। सो हजारवर्ष तपकरि याका पाप शांत भया ॥ ५ ॥ तव यह गौतमनामा मुनि अक्षीणमहानसी ऋद्धि बहुरि पादानुसारिणीलब्धि अर वीजबुद्धिनामा ऋद्धिकूं प्राप्त भया। कैयक दिनमें इनका गुरु समुद्रदत्तनामा मुनि आराधना आराधिकरि विशालनामा विमानमें अहमिंद्र भया। अर यह शिष्य पचासहजार वर्ष तपकरि ताही विमानविषै अहमिंद्र भया अट्ठाईस सागरका छठी ग्रीवकविषै इन दोऊनिकी आयु भयी। अहमिंद्रपदके सुखभोगकरि वह गौतमनामा मुनिका जीव तहांतैं चयकर सो तू अंधकवृष्टि भया। अर तेरा गुरु समुद्रदत्तनामा मुनि सो मैं सुप्रतिष्ठितनामा केवली भया। या भांति पूर्व जन्मका वृत्तांत केवलीने कहा। फिर राजाने अपने दशूं पुत्रनिके पूर्वभव पूछे सो केवली कहैं हैं ॥ १० ॥ एक भद्रलपुरनामा नगर जहां राजा मेघरथ ताके राणी सुभद्रा तिनके दृढरथनामा पुत्र

अर वेइंद्रीके रसनाका विषय धनुष चौसठ अर तेइंद्रीके धनुष एकसौ अट्ठाईस । अर चौइंद्रीके धनुष दोयसौ छप्पन । अर पंचेंद्री असैनीके धनुष पांचसौ । अर सेनीके योजन नव, यह रसनाका विषय कह्या । अर घ्राणका विषय वेइंद्रीके तो नाहीं । अर तेइंद्रीके घ्राणका विषय धनुष सौ अर चौइंद्रीके धनुष दोय सौ । अर असैनीके धनुष चारसौ । अर सेनीके योजन नव, यह घ्रणका विषय कहा । अर तेइंद्रिय तक नेत्रका विषय नाहीं चौइंद्रीके नेत्रका विषय योजन गुणतीससे चव्वन अर असैनीके योजन गुणसठ सौ आठ सैनी पंचेंद्रीके योजन सैतालीसहजार दोसै तिरेसठ यह चक्षुका विषय कह्या । अर श्रोत्रका विषय चौइंद्री तक तो नाहीं । अर असैनी पंचेंद्रीके योजन एक । अर सैनी पंचेंद्रीके योजन बारह । यह कानका विषय कहा ये पांचो इंद्रियनिके उत्कृष्ट विषय कहे एते २ दूर क्षेत्रतैं इंद्री जानै हैं, यह धनुष वा योजन बडा जानना अनेक विकल्परूप यह संसार असार याविषै मनुष्य देह ही दुर्लभ है । मुक्तिका साधन अर गतिमें नाहीं अशुभ कर्मनिके उपशमतैं काहूप्रकार मनुष्यदेह पायकर अर कछू उपाय न करना । जे विवेकी हैं ते संसारतैं विरक्त होय करि मुक्तिहीके अर्थ यत्न करैं है । तातैं जे मनुष्य देह सुफल किया चाहैं वे निर्वाणहीके अर्थ यत्न करैं हैं । या भांति सुप्रतिष्ठित केवलीके मुखतैं धर्मका व्याख्यान सुनकरि राजा अंधकवृष्टी अपने पूर्वभव केवलीकूं पूछता भया । तब सर्वज्ञ देव कहते भये ॥ ९५ ॥ हे राजन्! अयोध्या नगरीविषै राजा रत्नवीर राज्य करै । जीते हैं शत्रु जाने जाके राजविषैं सुरेंद्रदत्तनामा सेठ होता भया जासमय भगवान ऋषभदेवका तीर्थ अजितनाथके उपजनेसे पहलेकी यह वार्ता है । सो सुरेंद्रदत्त सेठ वत्तीसकोटि द्रव्यका धनी सो महा जैनी ताके मित्र रुद्रदत्तनामा ब्राह्मण ॥ ९७ ॥ सो सेठके तिथि कहिये अष्टमी चतुर्दशी अर अष्टाह्निकादि पर्व अर चौमासेके दिन तिनविषै जिनपूजाके अर्थ बहुत द्रव्य खर्च होय । सो सेठ व्यापारके अर्थ परदेश चाल्या, सो चलते समय बारह वर्षका द्रव्य पूजाके अर्थ रुद्रदत्त विप्रकूं सौंप्या ॥ ९८ ॥ सो पापी जुवारी सकल धन जुवा

उत्कृष्ट काय पांचसै धनुष सातमें नरक है। अर देवोंके शरीरकी उत्कृष्ट अवगाहना धनुष पच्चीस सो असुरकुमार देवोंकी जानो सो यह कथन पीछे भी कर आये हैं। अर अब भी प्रसंग पाय किया है॥

अथानंतर—पर्याप्त अपर्याप्तका भेद कहे हैं॥ ८१॥ पर्याप्त छह उनके नाम आहार कहिये नवीन कर्म वर्गणाका ग्रहण, अर शरीर कहिये देहका धारण, अर इंद्री कहिये स्पर्शादि पांच। अर आणप्राण कहिये श्वासोश्वास। अर भाषा कहिये वचन। अर मन कहिये चित्त, यह छह पर्याप्त उनमें एकेंद्रीके चार भाषा अर मन नाहीं अर वेइंद्रीसे लेकर असैनी पंचेंद्री पर्यंत पांच पर्याप्त हैं एक मन नाहीं अर सैनी पंचेंद्रीके मनसहित षट् पर्याप्त हैं। जब एकेंद्रीके चार पूर्ण होय चुकें अर पांचमा वालोंके पांच होय चुकें अर छहवालेके छह होय चुकें तब पर्याप्त कहिये। अर जब तक इन जीवोंके पर्याप्तकी पूर्णता नाहीं अर पूर्णता होयगी तौलग पर्याप्तकाल कहिये। अर जो अपर्याप्तकालहीमें मरण करै सो अलब्धपर्याप्त कहिये ॥ ८३॥ अर स्पर्श रस घ्राण चक्षु श्रोत्र यह पांच इंद्री कहिये। जिसके यह स्पर्श इंद्री ही है उसको थावर कहिये। अर वेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री पंचेंद्री। यह त्रस जीव कहिये। सो इंद्रियोंके भेद। एक भावेंद्री एक द्रव्येंद्री उनमें लब्धि कहिये क्षयोपशम लब्धि अर उपयोग कहिये देखने जाननेकी शक्ति इनको धरै होय सो भावेंद्री कहिये अर निर्वृत्ति कहिये इंद्रियोंका माहिला आकार, तिनमें स्पर्शके तो अनेक आकार। अर रसनाका आकार खुरपे समान है। अर घ्राणका आकार तिलके पुष्प समान है॥ ८५॥ अर आंखका आकार मसूरकी दाल समान है। अर कानका आकार यवकी नाली समान, यह निर्वृति भेद कहे हैं। अर उपकरण कहिये इंद्रीका बाहिरला आकार सो प्रत्यक्षही नजर आवै है। निर्वृति अर उपकरणकूं धरैं सो द्रव्येंद्री कहिये॥८६॥

अथानंतर—इंद्रियनिके विषयका व्याख्यान करै हैं। एकेंद्रीके स्पर्शका विषय धनुष चारसौ। वेइंद्रीके स्पर्श का विषय धनुष आठसौ। अर तेइंद्रीके धनुष सोलहसौ अर चौइंद्रीके धनुष बत्तीससौ। अर असैनीपंचेंद्रीके धनुष चौंसठ सौ। अर सैनी पंचेंद्रीके योजन नव यह तो स्पर्शका विषय कहा। अर रसनाका विषय एकेंद्रीके तो नाहीं

संस्थान हैं। अर मनुष्य अर तिर्यंचोंके छहों संस्थान। देवोंके समचतुरसंस्थान ॥ ७२ ॥ अर अपर्याप्तमें सूक्ष्म निगोदियाका शरीर अंगुलके असंख्यातवें भाग अतिसूक्ष्म जानो जब यह जीव वर्तमान देहको तजकर नूतन शरीर गहिवेको गमन करै है तब अंतरालविषैं एक समय दो समय तीन समय अनाहारक है। अर जब दूजी गतिको जाय पहुंचै तब जैसे अपर्याप्त कहिये अपूर्ण दशा है वैसे शरीरका आकार अल्प ही है। अपर्याप्तके तीजे समयविषैं इसकी जघन्य अवगाहना होय है। अर वनस्पति टारि अर स्थावरनिका आकार सूक्ष्म है। अर वनस्पतिकायको आदि लेकर पंचेंद्रीपर्यंत शरीरका आकार सूक्ष्म भी है अर स्थूल भी है। वनस्पतिमें कमल-समान अर दीर्घ देह नाहीं हैं। सो कमलकी उत्कृष्ट उच्चता हजार योजन अर एक कोस समस्त एकेंद्रियोंमें उत्कृष्ट शरीर कमलका कहा ॥ ७९ ॥ अर बेइंद्रियोंमें बडा शंखका शरीर उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन अर तेइंद्रियोंमें बडा कानखजूरा उसकी उत्कृष्ट अवगाहना तीन कोस अर चौइंद्रीमें बडा भ्रमर उसकी उत्कृष्ट अवगाहना एक योजन। अर पंचेंद्रियोंमें बडा शरीर मच्छका सो हजार योजन लंबा पर्याप्त अवस्थामें यह दीर्घता कही। सो यह मच्छ स्वयंभूरमण समुद्रमें है। इनसमान दीर्घदेह अरका नाहीं इसके कर्णविषैं अल्पशरीरका धारक तंदुल मच्छ है सो भी महापापी है जिस नरकविषैं महामच्छ जाय तहांही वह जाय। सन्मूर्छन जीवोंमें जलचर थलचर नभचर तिर्यंच उनका अपर्याप्त कालविषैं शरीर वितस्ति प्रमान है। अर पर्याप्त समय जलचर थलचर गर्भज अर पर्याप्त सन्मूर्छन नभचर अर थलचर इनका शरीर धनुष पृथत्व कहिये तीनसे ऊपर नवके भीतर एते धनुष जानो। अर नभचर तिर्यंच गर्भज पर्याप्त तथा अपर्याप्त उनकी देहका प्रमाण भी इतना ही जानो। अर थलचर जलचर गर्भज पर्याप्त उनका शरीर पांचसौ योजन। अर भोगभूमिविषैं नर अर तिर्यंचका आयु तीन पल्य। अर काय तीन कोस अर तिर्यंच अनेक प्रकारके हैं। उनका शरीर यथायोग्य है सो जानना। अर भोगभूमिविषैं जलचर नाहीं। अर विकलत्रय नाहीं। अर सन्मूर्छन नाहीं गर्भज जलचर नभचर सैनी हैं॥ ८० ॥ अर नारकीयोंकी

सुनो। पृथ्वीकायके बाईसलाख कोडी। अर जलके सातलाख कोडी कुल अर वायुके सातलाख कोडीकुल। अर तेजके तीन लाख कोडीकुल। अर वनस्पतिके अठाईस लाख कोडी कुल। अर वेंइंद्रीके सात। तेइंद्रीके आठ चौइंद्रीके नव। ये विकलत्रयके चौईसलाख कुलकोडी भये ॥ ६० ॥ अर पंचेंद्री तिर्यंचोंमें जलचरके साढे बारहलाख कोडी कुल। अर पंखियोंके बारहलाख कोडी कुल। अर स्थलचरोंके दशलाख कोडी कुल अर सर्पोंके नवलाख कोडी कुल। अर मनुष्योंके चौदहलाख कोडी कुल। अर नारकियोंके पचीसलाख कोडी कुल। अर देवोंके छब्बीस लाख कोडी कुल। ये सब एकसौ साढे निन्याणवे लाख कोडी कुल भये ॥ ६३ ॥ अर जीवोंकी आयु सुनो। कठोर पृथ्वीकायका उत्कृष्ट आयु बाईस हजार वर्ष। अर मृदु पृथिवीकायका आयु बारह हजार वर्ष ॥ ६४ ॥ अर जलकायका सातहजार वर्ष। वायुकायका तीन हजार वर्ष। अर अग्निकायका तीन दिन ॥ ६५ ॥ अर प्रत्येक वनस्पतीकाय आयु दशहजार वर्ष। यह उत्कृष्ट आयु जानना। अर वेंइंद्रीका बारह हजार वर्ष, तेइंद्रीका उणंचास दिन। अर चौइंद्रीका छहमास यह उत्कृष्ट आयु कही। अर पंचेंद्रीमें पशु पक्षियोंकी उत्कृष्ट आयु बहत्तर हजार वर्ष। अर कईएक जातिके पक्षियोंका वियालीस हजार वर्ष भी है ॥ ६८ ॥ अर सर्पोंकी उत्कृष्ट आयु नवपूर्वांग एक पूर्वांगके चौरासीलाख वर्ष अर मनुष्योंकी आयु उत्कृष्ट कोटि पूर्व। अर मच्छकी भी एती ही आयु जानना। यह तो कर्मभूमिकी अपेक्षा कथन किया। अर भोगभूमिकी अपेक्षा नर अर तिर्यंचकी उत्कृष्ट आयु तीन पल्य। देव अर नारकीयोंका आयु उत्कृष्ट सागर तेतीस। अर जघन्य आयु दश हजार वर्ष अर मनुष्य तिर्यंचका आयु जघन्य अंतर्मुहूर्त यह तो जीवोंकी आयु कही अब कायका आकार सुनो। पृथ्वीकायके जीवोंका आकार मसूर अन्न समान। अर जलकायके जीवोंका आकार तृणविंदुवत्। अर अग्निकायके जीवोंका आकार सूई समान। अर पवनकायके जीवोंका आकार ध्वजा समान। अर वनस्पति वा त्रसकायके जीवोंके अनेक आकार पांचों जातिके स्थावर अर विकलत्रय अर नारकी ये सब हुंडक

आखेट इत्यादि पापोंका त्याग सो श्रावकका धर्म कहिये। यावज्जीव जीवहिंसा त्याग, अर नियम कहिये पक्ष मास वर्ष आदि मर्यादा रूप त्याग। सो अभक्ष्यका त्याग तो यावज्जीव ही करना। अर भक्षका भी यावजीव त्याग करे सो तो अति उत्तम है। अर प्रमाणरूप नेम करै तोभी भला। अर सप्तव्यसनोंका त्याग अर अयोग्य वस्तुवोंका यावज्जीव त्यागही करना ॥ ४८ ॥ यति अर श्रावकके व्रतका मूल सम्यक्त है। उसके आठ अंग निःशंकित निष्कांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितीकरण, वात्सल्य, प्रभावना। इन आठ अंगोंकरि सम्यक्त सोहै है। सम्यक्तसहित श्रावकका धर्म साक्षात् स्वर्गका कारण है। अर परंपरासे मोक्षका कारण है अर साधुका धर्म साक्षात मोक्षका साधन है। यतिका धर्म मनुष्य देहविषैं ही होय दूजी देहविषैं न होय, श्रावकका धर्म मनुष्य तथा तिर्यंचके होय। देवनारकियोंके न होय। अर सम्यक्त चारों ही गतिमें उपजै परंतु सैनी पंचेंद्रीके उपजै। या संसारविषैं ये प्राणी त्रसस्थावर योनिविषैं कर्मके उदयतैं अनंत क्लेश भोगै है। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय इन शरीरोंविषैं एक स्पर्शइंद्रीको धार यह जीव बहुतकाल परिभ्रमण करै है। अर अनंत जीव नित्य ही निगोदमें ऐसे हैं जिन्होंने अनादिकालसे कभी भी अबतक त्रसपर्याय न पाई। निगोदमें है निवास जिनका। ये सकल संसारी जीव चौरासी लाख योनि, अर अनेक कुल कोडिविषैं भ्रमण करै हैं। चौरासीलाखके भेद सुनहु। पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, नित्यनिगोद। ये छह जाति तो प्रत्येक प्रत्येक सात सातलाख योनि उनकी बयालीसलाख भई। अर प्रत्येक वनस्पति दश लाख योनि तब स्थावरयोनिके सब भेद बावन लाख भये। अर बेइंद्री तेइंद्री चौइंद्री ये प्रत्येक प्रत्येक दो दो लाख योनि तब छहलाख योनि भई। तब स्थावर अर ये अट्ठावन लाख योनि भई। अर चार लाख पंचेंद्री पशु ये बासठलाख एक एक तिर्यंचगतिके भेद भये। अर चौदहलाख योनि मनुष्योंकी अर चारलाख नारकीनिकी कही अर देवगति चारलाख, ये सब चौरासीलाख योनि भई। अर एकसौ साढे निन्याणवें लाख कुलकोटियोंके भेद

॥ ३६ ॥ यह धर्म उत्कृष्ट मंगल है इसके लक्षण सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्र हैं, दया संयम तप इनकर धर्म उपजै है ॥३७॥ सकल पदार्थोंसे इस लोकविषै धर्मही उत्तम है। अर यह धर्मही कामधेनु समान पूर्ण सुखकी खान है ॥ ३८ ॥ अर जो शरणार्थी हैं उनको इस लोकविषै धर्मही परम शरण है। कैसे हैं संसारके जीव जन्म जरा मरण रोग शोक दुःखरूप जो सूर्य उसकर आतापको प्राप्त भये हैं उनको धर्म बिना अर आतापका हर्त्ता नाहीं ॥ ३९ ॥ मनुष्य अर देवोंके समस्त सुख अर प्रतापका कारण धर्मही है। अर मुक्तिके सुखका मूल भी धर्मही है ॥ ४० ॥ इकीसवें तीर्थंकर श्रीनमिनाथ उन्होंने लोकोंको यही धर्म भाष्या जो अनादिकालसे केवली भगवान कहते आये हैं। जबतक नेमिनाथका जन्म न होय तब तक नमिनाथ स्वामीका तीर्थ है, सो नमिनाथ स्वामीने जो धर्म निरूपण किया सोई हम तुमको कहे हैं। वे नमिनाथ गर्भावतारादि पंच कल्याणक पूजाके भाजन जगत्पूज्य संसारके तिरने अर्थ धर्मको प्रगट करते भये। याही भांति अनादिकालसे परिपाटी है ॥ ४२ ॥ धर्मके दो भेद हैं एक यतीका धर्म दूजा श्रावकका सो यतीका धर्म पंचमहाव्रतरूप। प्रथम अहिंसा महाव्रत। दूजा सत्य, तीजा अचौर्य, चौथा ब्रह्मचर्य, पांचवां परिग्रह त्याग, यह पंच महाव्रत। अर मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, यह तीन गुप्ति। अर ईर्यासमिति, भाषासमिति एषणासमिति, आदाननिक्षेपण, प्रतिष्ठापन यह पंच समिति तेरह प्रकार चारित्र मुनिका धर्म। जहां सर्व पापयोगका त्याग सो साधुका धर्म ॥४५॥ अर श्रावकका धर्म पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत। यह बारह श्रावकके व्रत हैं। जो सर्वत्याग सो मुनिका धर्म। अर एकादेश त्याग सो श्रावकका धर्म। वे ही पंच महाव्रत एकोदेश रूपमे अणुव्रत कहिये। अर दिग्व्रत देशव्रत अनर्थदंड परिहार यह तीन गुणव्रत अर त्रिकाल सामायिक चार प्रोषधोपवास अर अतिथिसंविभाग। अर भोगोभोगप्रमाण अति संलेखणा मरण। यह चार शिक्षाव्रत कहे ॥ ४६ ॥ अर मद्य मांस मधु उदंबरादि पंच फलोंका त्याग अर जिनवृक्षोंमें दूध झरै। जंबू करोंदा आदि उनके फलका त्याग अर जूवा वेश्या चोरी परनारी

पुत्रको राज देकर मुनिराज होय स्वर्ग मोक्ष गये ॥ २० ॥ फिर शत्रुवोंका जीतनहारा राजा निहतशत्रु होता भया उसके पुत्र सत्पतिके वृहद्रथ सो राजगृहका राज्य करता भया। उसका पुत्र जरासंध वश करी है तीनखंडकी भूमि जिसने। सो रावण समान त्रिखण्डी नवमा प्रतिनारायण लक्ष्मीकरि देवसमान ॥ २२ ॥ उसको पटराणी कालिंदसेना समस्त पतिव्रतावोंमें गुणकरि मुख्य। उसके कालयवनादि पुत्र, अर अपराजित आदि भाई, वह जरासिन्धु अर्द्धचक्री भ्रातृ पुत्रादि संयुक्त, हरिवंशरूप महावृक्ष उसकी शाखाका फल होता भया ॥ २५ ॥ एक वह योद्धा पृथ्वीका अद्वितीय पति विद्याधर अर भूमिगोचरीके समूहको जीतकरि राजगृहविषैं सुखसे राज करता भया। वह नृपोंमें सिंह समान उसने उत्तर दिशाके और दक्षिण दिशाके राजा सब वश किये ॥ २८ ॥ पूर्वके समुद्र पर्यंत अर पश्चिमके समुद्रपर्यंत सब राजा वश किये अर मध्यदेशके सब भूपति सेवा करैं भूचर अर खेचर सब राजाओंके सिरका सेहरा। वह अर्द्धचक्रवर्तीकी लक्ष्मीका भोक्ता इंद्र समान सुख भोगता भया। एक दिन शौर्यपुरके उद्यानविषैं गंधमादननामा जो पर्वत उसपर रात्रि समय प्रतिमा योगधर सुप्रतिष्ठितनामा मुनि विराजे हुते। सो एक सुदर्शननामा यक्ष देवताने पूर्ववैरके योगसे यतीको उपसर्ग किया। अग्निपात, महापात, मेघवृष्टादि उसके किये दुःसह उपसर्ग जीतकरि घातिया कर्मोंके क्षयसे मुनिने केवलज्ञान पाया तब सौधर्म इंद्रादिक देवोंके समूह जो चार प्रकारके अपनी देवियोंसहित आय केवलीकी पूजाकरि बंदना करते भये ॥ ३२ ॥ सुप्रतिष्ठत मुनिको केवल उपज्या सुनि शौर्यपुरका राजा अंधकवृष्टि, स्त्री पुत्रादि परिवारकरि संयुक्त सर्वज्ञकी पूजा कर अपने स्थानमें वैठे ॥ ३३ ॥ अर भी जगत्के जीव अंजुली जोड सावधान होय तिष्ठे, धर्मश्रवणविषैं लगाये हैं कान जिन्होंने तब भगवान केवली कहते भये, धर्मसे अर्थ काम मोक्षकी प्राप्ति होय है तीनलोकविषैं धर्मही सार है, जो कोई अर्थ काम मोक्षकी इच्छा करै सो निरंतर धर्मका संग्रह करो ॥ ३५ ॥ यह धर्म जो है सो जीवोंको सुखका आधार है। अर जो मन वचन कायकरि धर्मको सेव पापको तजै सो सुखके समूहको पावै

पंद्रहहजार वर्ष सो राजा यदु या भूमिविषैं भूपनिका दूजा भास्कर कहिये सूर्य भया ॥ ६ ॥ ताके वंशके यादव कहाये। उस यदुके नरपतिनामा पुत्र भया सो पृथ्वीरूप स्त्रीका पति भया। ताहि राज देय राजा यदु जिनराजका तपधरि देवलोक गया ॥ ७ ॥ फिर नरपतिके शूर अर सुवीर ये दोय पुत्र भये। सो दोऊ ही महा शूरवीर तिनकूं राज्यविषैं थापि राजा मुनि भया। फिर बडा भाई शूर छोटे भाई सुवीरको मथुराविषैं थापकरि आप कुसद्यनामा देशविषैं शौर्यपुरनामा नगर वसाया ॥ ९ ॥ ता शूरके अंधकवृष्टि आदि महा शूरवीर पुत्र भये। अर सुवीर मथुराका ईश्वर उसके भोजकवृष्टि आदि महा योद्धा पुत्र भये। कैयक दिनमें राजा शूर तो अपने वडे पुत्र अंधकवृष्टि तिनके शिर राजका भार धरथा अर मथुराका पति सुवीर उसने भोजकवृष्टिकूं राज दिया। ये दोऊ भाई अपने अपने ज्येष्ठ पुत्रकूं राज्य देय सुप्रतिष्ठित स्वामीके समीप साधुके व्रत धार सिद्ध भये ॥ ११ ॥ अंधकवृष्टि शूरका पुत्र शौर्यपुरमें राज करै। ताके महा उत्तम राणी सुभद्रा ताके देवलोकतैं चयकरि दश पुत्र भये। यह देवनिसमान महादिव्यरूप हुते तिनके नाम समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमितिसागर, हिमवान, विजय, अचल, धारण पूरण, अभिचंद्र, वसुदेव यह दश पुत्र राजा शूरके महाभाग्य सत्यार्थ हैं नाम जिनके वे लोकविषैं दशान्हिक कहाये ॥ १४ ॥ अर कुन्ती तथा माद्री ये दो कन्या स्त्रीनिके गुणकरि शोभित। सो साक्षात् लक्ष्मी अर सरस्वती समान दश भाईनिकी बहन अति सोहती भई ॥ १५ ॥ अर सुवीरका पुत्र भोजकवृष्टि ताके राणी पद्मावती ताके उग्रसैनं, महासैन, देवसैन, ये तीन पुत्र भये। यह तो राजा वसुका दशमा पुत्र वृहध्वज उसके वंशका विस्तार कह्या, अर वसुका नवमा पुत्र सुवसु नागपुर गया था उसके वृहद्रथ नामा पुत्र भया सो मगधदेशका राज्य करता भया। उसके नरवर उसके पुत्रका नाम दृढरथ उसके सुखरथ उसके दीपन सो कुलका दीपक उसके सागरसेन। उसके सुमित्र उसके विंदुसार उसके देवसर्व उसके दर्भक उसके शतधनु सो महा योद्धा धनुषधारियोंमें मुख्य। या भांति अनेक राजा हरिवंशमें भये वे अपने अपने

विषैं महिमा पाई। लोकनिनें जान्या यह सत्यवादी है। फिर हिंसा मृषानंदके योगसे अधोगति गया अर पापी पर्वत अभिमानके योगतैं हिंसाका पक्षकरि वसुके पीछेही वसुके स्थानकूं गया। सप्तनरक समान अर दूजा पापका फल नाहीं। अर सर्वार्थसिद्धि समान धर्मका फल नाहीं सो पापका पूर्णफल वसु अर पर्वतने पाया। अर नारद महाधर्मात्मा सो दिवाकर नामा विद्याधर सम्यक्दृष्टि उसे परममित्र कर पर्वतके खोटे मतका क्षयकरि ऊर्ध्वलोककूं गया। परम सुखका निवास देवलोक सो नारद ब्राह्मण पावता भया। परंपराय मोक्ष पावेगा। प्राणियोंके दया सोई धर्म है अर हिंसासे रहित मन सो ही दया तातैं मनवचन कायकरि प्राणीनिकी हिंसा न करनी। जे धर्मविषैं सावधान हैं वे अपने प्राण जांय तौहू किसी प्राणीके प्राणघात न करैं। सो विवेकी आदरकरि दयाधर्मकूं धारैं सो मोहमई मुक्तिके आगे जो आड उसे तोडकरि निर्वाणकूं प्राप्त होय अर जो कोई भव धरना भी होय तो स्वर्गविषैं जाय वीतरागदेवका प्ररूप्या धर्म जो आचरैं सो विपुल कहिये विस्तीर्ण, परम आनंदपदकूं निश्चयसेती पावैं॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वसु उपाख्याने नारदपर्वतविवादवर्णनं नाम सप्तदश सर्गः॥ १७॥

अथानंतर—जो बृहध्वज नामा वसुका दशमा पुत्र मथुराविषैं गया। ताके महा विनयवान सुबाहुनामा पुत्र भया। सो राजा वृषध्वज ताहि राजलक्ष्मी देयकरि आप तपोलक्ष्मीकूं प्राप्त भया। फिर राजा सुबाहु अपने पुत्र दीर्घबाहुकूं राज देय ऋषि भया अर दीर्घबाहु वज्रबाहुकूं, अर वज्रबाहु अभिमाननामा पुत्रकूं अर वह सुभानकूं अर सुभान भीमकूं राज देय निर्ग्रंथ दीक्षा धारता भया॥ ६॥ याभांति अनेक नरेश्वर हरिवंशी मुनि सुव्रतनाथके तीर्थविषैं व्यतीत भये। मुनिसुव्रतका तीर्थ कहिये समय छह लाख वर्षका। बहुरि इकीसवें तीर्थंकर नमिनाथ उनका तीर्थ पांचलाखवर्षका। ता समय हरिवंशरूप उदयाचलविषैं राजा यदु प्रगट भया। ताकी आयु

मुखसे य वचन निकसे तब तत्कालही स्फटिकका सिंहासन पृथिवीविषैं डूब गया अर वसु पातालविषैं गड्या सो निश्चयसेती पापसे यत्नही होय। पातालविषैं प्रवेशकरि प्राण तजे सो सातवें नरक गया। महा रौरव जो वह नरक ताविषैं नारकी भया। हिंसानंद मृषानंद नामा रौद्रध्यान तिनकरि युक्त जो बसु सो नरक जायही जाय वह नर्क न जाय तो कौन जाय, रौद्रध्यान ही दुःखका कारण है। सर्व लोकके प्रत्यक्ष वसु पातालमें पडा। तब लोकनिके मुखतैं हाय हाय धिक्कार धिक्कार यह शब्द निकस्या। वसुने असत्यका फल पाया। अर सब लोक वसुकी निंदा करते भये अर महादुष्ट जो पर्वत ताकूं धिक्कार देयकरि नगरतैं निकास्या ॥ ५५ ॥ अर नारद सत्यवादी निःकपट ताकी वादविषैं सभामें जीत भई। सो सबने प्रशंसा करी अर धन्य धन्य कहा। अर पूजाकरि लोक अपने अपने स्थानक गये ॥ ५६ ॥ अर पर्वत धिक्कार पाय अनेक देशनिविषैं भ्रमण करता हुवा महाकालनामा असुरकुमार क्षुद्रदेव ताहि देखता भया। कैसा है असुर क्रूर हैं परिणाम जाके महा निर्दय अनेक जीवनितैं द्वेषरूप रहै है बुद्धि जाकी ॥ ५७ ॥ ताका भी परभवविषैं पराभव हुवा है। तिन जीवनितैं वैररूप है उसे पर्वत अपना पराभव कह उससे मित्रताकरि एक मंत्र किया ॥ ५८ ॥ दोनों पापियोंने मिलकरि हिंसाका शास्त्र बनाया यालोकविषैं पृथिवीकूं डुबावनहारा हिंसायज्ञ उपदेशा। मूढ लोकनिकूं हिंसाविषैं प्रवर्तावता भया ॥ ५९ ॥ पापके उपदेशकरि वह पापी मरके सातवें नरक गया। मानों वसुकी सेवा करनेको समीप ही गया। वसु अर पर्वत दोनों सातवें नरक गये ॥ ६० ॥ फिर लोकनिने वसुके राजविषैं बडे पुत्रकूं थाप्या। सोहू थोडेही दिन जिया, फिर दूजेको थाप्या सोहू अल्प दिनमें मूवा। या भांति वसुके आठ पुत्र तो थोडे २ दिनमें काल प्राप्त भये। जब नवमां पुत्र सुवसु मृत्युके भयसे भागकरि नागपुरनामा नगरमें गया अर दशवां बृहध्वज मथुराविषैं आया ॥ ६२ ॥ हाय हाय बडा कष्ट पापी पापका फल प्रत्यक्ष पावैं हैं तोहू पापकूं नाहीं तजै हैं। राजा वसु प्रत्यक्ष पातालमें डूब गया अर दुर्गति गया तोहू पर्वतने पाप न छांड्या। हिंसाकी श्रद्धाकरि ताही गतिकूं प्राप्त भया। देखो पहिले वसुने पृथ्वी

स्थूल भी कहिये। जैसें दीपकका प्रकाश जैसा मंदिर पावै वैसा ही विस्तरै तैसें देहके संबंधसे प्राणी प्रदेशनिके संकोच विस्तारकूं प्राप्त होय है। जैसा देह पावै वैसा ही प्रमाण प्रदेश विस्तरै। इससे शरीरके योगतें सूक्ष्म भी कहिये अर स्थूलहू कहिये। यह जीव अनादिकालसे शरीर धारै है सो अनंत शरीर धरै अर जो सर्वथा सूक्ष्म ही कहिये तो सुखदुःख कौन भोगै है। यातैं तुम यह निश्चय जानहु जो निश्चय तो यह जीव लोकप्रमाण है अर विवहारनयकरि देहप्रमाण है। अर देहका वियोग सो ही मरण। यातैं मंत्र तंत्र शस्त्रविषैं अग्नि आदिके योगसे याके देह छुटनेसे दुःखही है ॥ ४२ ॥ अर जब यह प्राणी अति दुःखकर देहकूं छोडै है तब नेत्र आदि सब इंद्रीनिका वियोग होय है। सो वे आपही छूटै हैं तिनका छूडावनहारा कोई देव नाहीं। ये इंद्री देवतानिके अंश हैं अर तिनहीमें मिलै हैं। सो यह बात प्रमाण नाहीं ये सबही पुद्गलके अंश हैं अर पुद्गलहीमें मिलै हैं ॥४३॥ अर यह यज्ञका फल स्वर्ग बतावै है। सो जीवकी हिंसासे स्वर्ग कहांसे होय। यज्ञकूं करणहारे हिंसक वेई स्वर्ग जांय तो नरक कौन जाय। नरकका कारण तो हिंसाही है। सुखकी प्राप्तिका कारण तो धर्म ही है सो धर्म दयारूप है। यज्ञके करणहारेके दया विना धर्म कैसें होय। माता जो कुपथ्य भोजन करै तो बालकको सुख न होय। या भांति नारदके वचन वेई भये मेघ सो सभारूप वर्षाऋतुविषैं वचनरूप वज्रपातकरि पर्वतकी खोटी पक्ष सोई भया पर्वत ताहि चकचूर करते भये ॥ ४५ ॥ तब सभाविषैं जितने धर्मात्मा पंडित परीक्षाके करणहारे बैठे हुते तिनि नारदकी प्रशंसा करी अर पृथिवीविषैं यश भया ॥ ४६ ॥ फिर जितने पंडित बहुश्रुत हुते तिनि राजा वसुकूं पूछ्या। हे राजन्! तुम जैसा क्षीरकदंब गुरुके मुखसे सुना होय सो सत्य कहहु ॥ ४७ ॥ तब वह मूढ दुष्टबुद्धि वसु गुरुका वचन जानता हुवा भी झूठा बोला। गुरुका वचन तो यही था जो अज कहिये बोये न ऊगे ऐसे तिवरषे यव तथा तिवरषे शालि उनकर होम करना। गुरुकी तो यह प्ररूपणा थी। अर यह दुष्ट वसु कहता भया अहो सभाके लोगो नारद तो युक्तिकरि कहै है अर पर्वत जो कहै है सो गुरुकी आज्ञाप्रमाण कहै। जब राजा वसुके

अग्निहोत्र करैं हैं सो होमविषैं अचित्त सामिग्री योग्य है सचित्तका होम नाहीं। या विधानकरि किया होम सो स्वर्ग फलका दाता है ॥ २९ ॥ देवपूजा, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप अर दान ये षट्कर्म वीतरागके आगममें बताये हैं। सो भगवान् वीतराग देव धर्मका विधाता पुराण पुरुष परम उत्कृष्ट सबका रक्षक मुनिनिका इंद्र इंद्रादिक देवनिकरि पूज्य सो स्वयंभू वेदनिविषैं बखाना है ॥ ३० ॥ जो भगवान मुक्तिमार्गका उपदेशक संसारसमुद्रका तारक अनंतज्ञान अनंतसौख्यादि अनंत गुणका स्वामी ईश्वर महामहेश्वर ज़ाके अनंत नाम, ब्रह्मा, विष्णु, ईशान, सिद्ध, बुद्ध, नीरोग, निर्भय, आदित्यवर्ण, वृषभ उसे हितके वांछिक पूजै हैं। ता भगवान्के प्रसादतैं पुरुषनिकूं स्वर्गसुख तथा मोक्षसुख निश्चयसे होय है यह उसीके प्रसादतैं कीर्ति दीप्ति कांति धैर्य इत्यादि अनेक गुण होय हैं। पशुकी कहा बात चूनका भी पशु बनाय होम न करना जब पशुका आकार चूनका बनाया तब याके परिणाम दुष्ट भये सो दुष्ट परिणामनितैं पाप अर शुभ परिणामनितैं पुण्यका बंध होय है अर नाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार निक्षेप हैं सो नाम कहिये नाममात्र स्थापना कहिये आकार बनाय द्रव्य कहिये होनहार अर भाव कहिये साक्षात् ये चार भेद पशुके उनकी हिंसा न चिंतनी अर पर्वतने कही जो मंत्र थकी मरण होय उसमें पशुको दुःख नाहीं सो यह बात मिथ्या है। दुःखविना मृत्यु ही नाहीं जो मृत्यु सोई दुःख, सुखतैं किसीके प्राण न छूटैं। अर मंत्रकरि मरण कैसैं होय। पापी पशुके होमनेहारे ता पशुके पग बांधि नासिकाका निरोध करि निपात करैं हैं सो शास्त्रके निपातसे अधिक दुःख होय है। जो स्वतःस्वभाव प्राण छूटैं ताकेहू प्राण दुःखविना न छूटैं। वह भी मरण समय विलाप करता दीखै है। तो परके निमित्तकरि जो मरै ताके दुःखकी कहा बात, किसीका मारा मरै सो तो दुखीही होय है ॥ ३८ ॥ या पापी पर्वतने कही जो यह जीव सूक्ष्म है सो मरा न मरै सो यह बात मिथ्या है। यह आत्मस्वरूपकरि तो अविनाशी है अर अमूर्तिक है न सूक्ष्म है न स्थूल है अर शरीरके संबंधसे सूक्ष्म स्थूल होय है। जो सूक्ष्म शरीर धरै तो सूक्ष्म कहिये अर स्थूल शरीर धरै तो स्थूल कहिये। ये जीव देहके संबंधसे सूक्ष्म भी कहिये अर

सूर्यही नेत्रनिका स्वामी है अर कानन्के स्वामी दिशा सो कानविषैं जाय हैं अर घ्राणनिका स्वामी वायु सो प्राण वायुमें जाय हैं अर रुधिर जलविषैं जाय है अर शरीर पृथ्वीविषैं मिल जाय है। ये अंग अपने अपने आश्रमविषैं जाय प्राप्त होय हैं अर मंत्रकरि होम किये पशु स्वर्गलोकके सुखकूं प्राप्त होय हैं। जैसे यज्ञका करणहारा कल्पपर्यंत बहुत काल स्वर्गविषैं सुख भोगै है वैसे पशु भी भोगै॥ ११॥

अविसंधिकृतावंधस्वर्गात्पाशोस्यनेत्यपि। नवलातुत्याज्यमानस्य प्रशोवृद्धिर्घृतादिभिः॥ १२॥

या भांति पापका प्रहार (पहाड़) जो पर्वत सो अपने पक्षकूं स्थानपनकरि चुप होय रह्या तब नारद ताकी अयोग्य श्रद्धाके खंडनके अर्थि कहता भया। वह नारद श्रावकके ब्रतका धारक महा विचक्षण ब्राह्मण है॥१३॥ सकल सभाकूं कहता भया। अहो सुबुद्धि हो! तुम सावधान होकर सुनहु। यह पर्वत अन्यायरूप वचन कहै है। सो याके जो वचन सो मैं खंडन करूं हूं। अज शब्दके अर्थ बहुत हैं। अर यह अज शब्दका अर्थ एक छेलाही करै है सो वृथा है। जैसैं हरिशब्दके अर्थ अनेक हैं। हरि नाम इंद्रका हरिनाम नारायणका, हरिनाम सिंहका, हरिनाम मर्कटका। सो शब्दके अनेक अर्थ हैं अथवा कौशिक नाम इंद्रका अर कौशिक नाम घूघूका सो शब्दके अनेक अर्थ हैं अर यह विपरीत अर्थ याकी बुद्धिमें भासा है अज नाम बकरेका। सो यह अर्थ यहां नाहीं। यहां यह अर्थ है जो त्रिवर्षी शालि तथा तिवरसे यव उनका होम करना॥१५॥ अर अज कहिये छेली सो यह अर्थ अपने अभिप्रायसे करै है यह अर्थ यहां नाहीं। अर वीतरागके उपदेशका नाम वेद है केवलीकी दिव्यध्वनि सो वेद अर नाहीं।

गुरुपूर्वक्रमादर्थानदृशः शब्दार्थनिश्चिताः।

पृथ्वी आदि सामग्री होते संते बीजसे अंकूरे होय हैं। जो बीज अंकूर शक्तिसे रहित होय वाह्या न ऊगे सो अज कहिये। वाह्या ऊगे सो अज नाहीं। सो तिवरसी शालि तिवरसे यव वाह्या न ऊगे। अचित है इससे उन करि क्रिया निधानविषैं होम करना। भगवंतकी पूजाका नाम यज्ञ है अर पूजा किये पीछे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

एककूं सांचा करिये एककूं झूंठा करिये ॥ ८६ ॥ या वादविषैं वेदके अनुसार न्यायका निश्चय करिये संदेहरहित प्रवृत्ति है सो सबलोककी उपकार करणहारी है ॥ ८७ ॥ याभांति सभाके लोकनिने नरेंद्रसे वीनती करी। नरेंद्र तो पर्वतका पक्षपाती हुता सो नृपके बलकरि गर्वका भरा पर्वत अपना पक्ष प्रगट करता भया। राजाने पर्वतकूं आज्ञा करी तुम्हारा रहस्य तुम कहो। तब पर्वत कहता भया। वेदका वचन है कि स्वर्गके अर्थी अजनिकरि यज्ञकी विधि करहु अर अज नाम अजापुत्रका सो चतुष्पद पशु है यह प्रगट अर्थ है अर वेदही विषैं यह अर्थ नाहीं। पशुका नाम अज लोकविषैं भी प्रसिद्ध है। बाल गोपाल अबला सब ही या अर्थकूं जानैं हैं। संसारविषैं बालवृद्धसूं अजका अर्थ गोप्य नाहीं। यह नर माताका दूध न मिलै तो अजाके दुग्धसूं पलै है। या मनुष्यके शरीरमें अजापुत्रके गंध समान गंध आवै है। सो अज शब्दका अर्थ देवनिकर भी लोपा न जाय। सो प्रगट अर्थ अर सांचा अर्थ ताकूं औरसे और कहै तो व्यवहारका लोप होय है ॥२॥ शास्त्रमें भी अर लौकिकमें भी शब्दका अर्थ अखंडित है अर वेदविषैं कहा है स्वर्गका अभिलाषी अग्निहोत्र यूपात ताका अर्थ अग्निविषैं होम करहु। सो अग्नि आदि शब्दका अर्थ प्रसिद्ध है जैसैं अग्नि शब्दका अर्थ कोई अर भांति न करि सकै तैसैंही अज शब्दका अर्थ पशु है, यह बात प्रगट है इससे अनादिसे अजका अर्थ पशु अर वेदविषैं निश्चयकरि अजका होम है। अजैर्यष्टव्यं यह वेदका वाक्य है ये वचन पापी पर्वत सभाविषैं कहता भया। बहुरि कहा ऐसी आशंका न करनी जो पशुकूं निपातविषैं महादुःख होय सो मंत्रके प्रभावकरि पशुकूं पीड़ा नाहीं सुखसे मरण होय है। मंत्रनिके पाठविषैं अर स्वाहा शब्दविषैं यज्ञ दीक्षाके अंत प्रत्यक्ष सुखकी अवस्था होय है। मणिमंत्र अर औषध इनका अचिंत्य पराक्रम है ॥ ८ ॥ इत्यादि पापके भरे वचन पर्वतने कहे अर कहता भया जीव तो महा सूक्ष्म है सो उसका निपात नाहीं अग्निविषैं शस्त्रादिकरि जीवका निपात नाहीं तो मंत्रकरि होममें कैसैं ताका निपात होय जीव तो अमर है ॥ ९ ॥ अर ये देहके अंग हैं वे अपने अपने देवतानिमैं जाय हैं नेत्र तो सूर्यविषैं जाय हैं

न्याय अर अन्याय ऊपर दृष्टि न धारी अर गुरानीको वचन दिया हुता ताही पर दृष्टि धारी । गुरानीका वचन प्रमाण किया तब प्रसन्न होय घर गई ॥७१॥ अर राजा वसु सिंहासन पर बैठ्या जैसैं देवनिके समूह इंद्रकूं सेवैं। तैसैं छात्रयोंके समूह याकूं सेवते भये ॥ ७२ ॥ तासमय पर्वत अर नारद राजाकी सभामें गये अर अनेक शास्त्रके पाठी भी सभामें बैठे ॥ ७३ ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार वर्ण अर तापसादि आश्रमके धारक सभामें आये। अर लोक सहज ही कौतुक देखवेकूं सभामें आये ॥ ७४ ॥ वहां कैयक विप्र तो सामवेदकी चरचा पढते भये। जिनके श्रवणकरि वेदपाठी प्रसन्न होय अर कैयक ओंकारका उच्चार करते पदक्रमसहित मंत्र पढते भये अर कैयक उदात्त अनुदात्त जे शब्द शास्त्रसंबंधी स्वर पद उनका उच्चारण करते भये। ह्रस्व दीर्घ प्लुत इनके स्वरूपका उच्चारण करते भये अर कैयक ब्राह्मण ऋग्वेद यजुर्वेद इनका पाठ करते भये । उच्चस्वरकरि पाठ किया ताकरि औरका शब्द सुन्या न जाय। अनेक विप्रनिकरि राजाका आंगण पूरित होय गया। सिंहासनपर तिष्ठ्या जो राजा ताकूं आशीर्वाद देयकर पर्वत अर नारद राजाके समीप बैठे । अर सभाविषैं अनेक तापस आये तापस मानूं वृक्ष-समान हैं। वृक्षके तो अंकूरे हैं अर इनके डाढी है अर वृक्षके वडे फल हैं अर इनके कमंडलु है, वृक्षनिके जटाका भार है अर इनके वृक्षनिके वल्कल हैं ॥ ८० ॥ सभाविषैं कैयक पक्षपातरहित तराजूकी डंडीसमान तिष्ठे ॥८१॥ कैयक कुमार्गविषैं प्रवर्ते जे वादीरूप माते हाथी तिनकूं अंकुशकरि मार्गविषैं ल्यावनहारे विराजे हैं । अर कैयक कसौटीके पाषाणसमान वस्तुके निश्चयके करणहारे बैठे हैं। याभांति पंडित यथायोग्य स्थान अपने अपने आसन बैठे हैं। तासमय जे ज्ञान अर वयकरि वृद्ध हैं ते राजासूं प्रज्ञप्ति करते भये। हे राजन्! ये नारद अर पर्वत दोऊ पंडित शब्दशास्त्रके वेत्ता तिहारे निकट आये हैं। शब्दके विचारविषैं इनका विवाद है ॥ ८४ ॥ हे राजन्! वेदके अर्थका विचार याभांति पृथ्वीविषैं तुमकूं टार अर न जानै । अन्य लोक संप्रदायके मरमी (ज्ञाता) नाहीं तुम सव संप्रदाय जानो हो ॥ ८५ ॥ यासे तुम्हारे समीप सब पंडितनिके आगें इनकी हार जीत होवै । न्यायकरि

तिमिर जानै ॥ ५६ ॥ नारद कहै है हे भद्रके पुत्र ! ऐसा अयोग्य व्याख्यान तू कहांसे सीख्या । यह विपरीत संप्रदाय तेरे कहांसे आई ॥५७॥ रे पापी ! मेरा अर तेरा तो गुरु एक, शिष्यनिकूं गुरू तो धर्महीका उपदेश दिया । तेरे हाथ अधर्म कहांसे आया । जो सरलबुद्धि यथार्थके वेत्ता भले शिष्य हैं तिनके तो संप्रदाय एक है । जे गुरुकी शुश्रूषाविषैं सावधान हैं, तिनके जुदी आम्नाय नहीं तैं यह संप्रदायका भेद कहांसे पाया । तू नाहीं जानै है जो अपने गुरु क्षीरकदंब अज शब्दका यह अर्थ करते हुते जो तीन वर्षकी शालि बोई न उगे सो अज कहिए अथवा जो न ऊगे सो अज कहिये । तिनकरि होम करना यह प्रगट अर्थ यह व्याख्यान तो बडे बड़े पुरुष सदा करते आये हैं तू यह विपरीत व्याख्यान कहांसे सीख्या । ऐसा नारदने कहा तौ भी वह पापी दुर्निवार जो हठ ताकरि विपरीत है बुद्धि जाकी । सो नारदके वचन न मानता भया अर यह कहता भया । हे नारद ! बहुत कहवेकरि कहा मेरी बात सुन जो तू इस वादविषैं जीते अर मैं हारूं तो मेरी जिह्वा छेद करूं तब नारदने कही । हे पर्वत ! तू खोटी पक्षरूप अग्निकी शिखाविषैं क्यों पडै है ॥६२॥ तब पर्वत कहता भया बहुत कहिवेकरि कहा तेरी अर मेरी चर्चा राजा वसुकी सभामें होगी, वसु कहै सो प्रमाण तब नारदने कही तू भ्रष्ट है गुरुतैं विमुख है ऐसा कहिकरि नारद तो अपने स्थानक गया । अर पर्वतने यह वार्ता माताके समीप कही ॥६४॥ सो सुनकरि पुत्रके वचन निंदती भई । अर कही तू असत्यवादी है नारदका वचन सत्य है ॥६५॥ नारद विद्वान् है अर तू विपरीतमार्गी है । तेरा पिता समस्त शास्त्रके समूहका वेत्ता जो कहता हुता सोई नारद कहै है ॥६६॥ ऐसा कहकरि पर्वतकी माता प्रभातही वसुके घर गई । तब राजा अति आदरकरि गुरानीकूं आगमनका कारण पूछता भया । तब वह सर्व वृत्तांत वसुकूं कहकरि पर्वतकी माता राजासे गुरुदक्षिणा मांगती भई । अर कही तुम गुरुके घर वचन दिया हुता सो याद करहु ॥ ६९ ॥ हे पुत्र ! तुम तो सब जानो हो शास्त्रका मार्ग तुमसे छिपा नाहीं । बात जो नारद कहै है सो सत्य है परंतु तुम पर्वतका वचन थापना अर नारदका वचन न थापना ॥ ७० ॥ वसुका बुरा होनहार सो धर्म अधर्म अर

निजस्थानक गया। नारद महा जिनधर्मी निर्मलचित्त है ॥४२॥ कैयक दिनमें वसुका पिता अभिचंद्र वसुकूं राज्य देय संसारतैं विरक्त होय दिगंबरी दीक्षा धारता भया। गृह छोडि तपके अर्थि बनमें गया ॥४३॥ ता पीछे पिताके पाटपर वसु बैठ्या। सो इंद्रकी न्याई राज करै नवयौवनविषैं आरूढ जैसे बींद बनिताकूं वश करै तैसैं पृथ्वीकूं राजा वसु वश करता भया राजनीतिविषैं अति निपुण ॥ ४४ ॥ सो राजा वसु आकाशतुल्य स्फटिक मणिके सिंहासनपर बैठ्या ऐसा भासै मानूं आकाशविषैं बैठ्या है सो सब प्रजा यही जानती भई जो राजाधिराज सत्यके प्रतापकरि आकाशविषैं विराजे हैं ॥ ४५ ॥ पृथ्वीविषैं याकी कीर्ति अति विस्तरी कि राजा धर्मके प्रसादकरि अधर विराजै है। स्फटिकमणिके सिंहासनका मरम कोई न जानै। वसुका झूठा प्रपंच लोकनिने सत्य जान्या ॥ ४६ ॥ उस वसुके दो राणी एक इक्ष्वाकुवंशी राजाकी बेटी दूजी कुरुवंशीभूपकी पुत्री तिन दोऊ राणीनिके वसुके योगसे वसुही समान दश पुत्र भये ॥४७॥ तिनके नाम—वृहद्वसु, चित्रवसु, वासव, अर्क, महावसु, विश्वावसु, रवि, सूर्य, सुवसु, वृहध्वज ये दश ही शस्त्रविद्याविषैं निपुण होते भये। इन दसूं पुत्रनिकरि वेष्टित राजा वसु सुख भोगता भया। ये दश पुत्र परस्पर महा प्रीतिवान जैसे पांच इन्द्री अर पांच उनके बिषय इनमें अभेदता वैसे इन दसूंके चित्तकी एकता पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध होती भई।

अथानंतर—एकदिन बहुत शिष्यनि सहित नारद पर्वतकूं गुरुका पुत्र जानि देखिवे आये ॥५१॥ सो आयकरि पर्वतका समाधान पूछ्या अर गुरुकी स्त्रीका समाधान पूछ्या अर गुरुकी कथा कहते तिष्ठते हुते। अथानंतर—पर्वत महा गर्वित वेदार्थका व्याख्यान करता हुता सो नारदके समीप अजैर्यष्टव्यं इस वचनका निस्संदेह पापीने यही अर्थ किया। अज कहिये अजाके पुत्र पशु तिनकरि स्वर्गाभिलाषी जे द्विज तिनको यज्ञ करने। कैसे हैं द्विज? पदवाक्य पुराणार्थ उनका जो परमार्थ ताविषैं प्रवीण हैं ॥५५॥ ऐसी अयोग्य वार्ता ही अंधके मुखतैं निकसी ताका प्रत्युत्तर नारद युक्त्यागमके बलकरि पर्वतसूं कहता भया, कैसा है नारद शास्त्रके बलिकरि दूर किया है लोकका अज्ञानरूप

ये तीनों गुरुने शास्त्रके रहस्यमें प्रवीण किये। गुरु महा विद्वान सो इनकूं बनविषैं आरुण्यकनामा शास्त्र पढावता हुता तहां आकाशगामी चारण मुनि अंबरविषैं विहार करते हुते सो इनकी ध्वनि सुन जो मुनि गुरु था ताने अवधिज्ञानी जो अपना शिष्य मुनि ताकूं पूछी ये चार ब्राह्मण शास्त्राध्ययन करै हैं इनमें एक गुरु अर तीन शिष्य यह चार हैं सो इनमें अधोगतिके जानहारे कैं? अर ऊर्द्धगति जानहारे कै? तब शिष्यने कही क्षीरकदंब गुरु अर नारद शिष्य यह दो तो ऊर्द्धलोकके जानहारे हैं अर राजाका पुत्र वसु अर अध्यापकका पुत्र पर्वत ये दोऊ अधोगामी हैं॥३१॥ ऐसा कहकरि मुनि महा दयावान गगनके मार्ग चले गये। जाना है संसाराका स्वरूप असार जिनि ॥ ३२ ॥ ये मुनिके वचन क्षीरकदंब सुन भयकरि युक्त भया है चित्त जाका सो संध्या समय शिष्यनिकूं घरकी सीख देय आप बनमें मुनीनिके ढूंढिवेके अर्थि गया ॥ ३३ ॥ जब ये शिष्य घर आये अर पाठक न आया तब पाठककी स्त्री स्वस्तिमती इनकूं पूछती भई तुम आये अर तिहारा गुरु नआया सो कहां रह्या। तब ये कहते भये। हमकूं तो सीख दीनी सो आज्ञा प्रमाण आये अर वेहू हमारे पीछे आवैं हैं। तुम खेद न करहु ॥३५॥ शिष्यनिके ये वचन सुनि स्वस्तिमती सुखसूं तिष्ठी। दिवस वीत्या अर रात्रिहू क्षीरकदंब न आये ॥ ३६ ॥ तब ब्राह्मणी जानी विप्रने वीतरागदेवकी दीक्षा लीनी सो भरतारका यह रहस्य जानि चित्तविषैं व्याकुल होय सारी रात रुदन किया। प्रभात क्षीरकदंबके हेरवेकूं पर्वत अर नारद गये। सो ये दोऊ कैयक दिननिमें गुरुकूं हेरते फिरे सो भ्रमण करि अति खेदखिन्न भये। कैयक दिनमें ढूंढते ढूंढते बनविषैं महामुनिके समीप क्षीरकदंबकूं यती हुआ देख्या। सो आचारांग सूत्र भणता था सो दूरहीसे देख पाछा फिरा नाहीं है धैर्य जाकूं ॥ ३९ ॥ सो जायकरि माताकूं पिताके वैराग्यका वृत्तान्त कह्या सो अति चिंतवान् भई अर पर्वत महामूढ चिन्तारहित सुखसूं तिष्ठ्या ॥४०॥ अर नारद ब्राह्मण महा विनयवान तीन प्रदक्षिणाकरि श्रीगुरुकूं अर अपने गुरु क्षीरकदंबकूं प्रणामकरि श्रावकके व्रत आदरे, व्रत धारि गुरुकूं नमस्कारकरि घर आया ॥ ४१ ॥ शोककरि महा तप्तायमान पर्वतकी माताकूं धैर्य बंधाय नारद

एक पौलोम दूजा चरम तिनकूं राज देय जैनेंद्री दीक्षा धारता भया ॥ १५ ॥ वाके दोऊ पुत्र राज करैं। चंद्र सूर्यकी न्याईं जगतविषैं प्रकाश किया। दोऊ भाई प्रतापके समूह अखंड है मंडल जिनका सो महा प्रचंड राजनिकूं जीतते भये। दोऊ भाइनिका एक चित्त इन भाइनिने रेवानदीके तीर तीन नगर बसाए। इंद्रपुर जयंती नगरी अर नवास्या नगरी। तिनमें बडे भाई पौलोमने तो इंद्रपुर बसाया अर छोटे भाई चर्मने ये दोय पुरी बसाईं ॥ १७ ॥ बहुरि चर्मके पुत्र संजय भया अर पौलोमके महीदत्त भया सो अपने अपने पुत्रनिकूं राज्य देय दोऊ भाई मुनिव्रत धारते भये तिनके पीछे पौलोमका पुत्र महीदत्त ताने कुल्पपुर नगर बसाया ताके अरिष्टसोम अर मत्स्य ये दोय पुत्र भये ॥ १९ ॥ तिनमें छोटा मत्स्यनामा पुत्र चतुरंग सेनाकरि भद्रपुर तथा हस्तिनागपुरकूं जीति महाप्रतापी सुखसूं तिष्ठता भया ॥ २० ॥ ताके अयोधनादिक सौ पुत्र भये वे सकल इंद्र समान पराक्रमी। कैयक दिनमें राजा मत्स्य बडा पुत्र अयोधनकूं राज देय आप जिनदीक्षा धारता भया। अयोधन राज करै ताके मूलनामा पुत्र भया। ताके सालनामा पुत्र भया अर सालके सूर्य ताने शुभ्रपुर शहर बसाया। सूर्यके अमरनामा पुत्र भया ताने वज्रनामा शहर बसाया। अमरके देवदत्तनामा पुत्र भया सो देवेंद्रसमान पराक्रमका धारक भया ॥ २३ ॥ ताके मिथुलानामा पुत्र भया सो सावंतनिमें शिरोमणी, ताके हरिषेणनामा पुत्र भया। ताके नभसेननामा पुत्र भया ॥ २४ ॥ ताके शंखनामा पुत्र प्रसिद्ध भया। शंखके भद्र, भद्रके अभिचंद्र। सो अभिचंद्र शत्रुनिकी कांतिकूं हर्ता भया ॥ २५ ॥ ताने विंध्याचलकी पृष्ठिविषैं वेदीपुरनामा शहर बसाया। अर सुक्तीमती नदीके तीर सुक्तीमती पुरी बसाई। सो अभिचंद्रने उग्रवंशी राजाकी पुत्री बसुमती व्याही, ताके वसुनामा पुत्र भया सो चंद्रकांति मणिसमान कांतिका धारक। ता नगरविषैं एक क्षीरकदंबनामा ब्राह्मण शास्त्रका पाठी शिष्यनिकूं विद्या पढावै ताके स्वस्तिमती स्त्री ताके पर्वतनामा पुत्र सो महा दुष्टबुद्धि विपरीत अर्थका धारक क्षीरकदंबके शिष्य घने तिनमें तीन मुख्य। राजाका पुत्र बसु अर क्षीरकदंबका पुत्र पर्वत अर विदशी ब्राह्मण नारद

अथानंतर—मुनिसुव्रतका पुत्र सुवृत हरिवंशीनिका प्रभु वश करी है पृथ्वी जाने अर जीते हैं काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर माहिले छह वैरी जानै अर धर्म अर्थ काम मोक्षका साधक ॥ १ ॥ जो अपने दक्षनामा पुत्रकूं राज्य देय पिताके निकट दीक्षा धार तपके बलतैं मोक्ष गया। अर दक्ष राज करै ताके राणी इला ताके उदर-विषैं एलेयनामा पुत्र अर मनोहरीनामा पुत्री भई। सो मनोहरी महा रूपवान् जैसैं समुद्रतैं लक्ष्मी प्रगट होय तैसैं दक्षतैं मनोहरी प्रगट भई। दक्षके पुत्री अर पुत्र महा मनोहर, पुत्र चंद्रमा समान अर पुत्री चंद्रकला समान सो यह पुत्री यौवनवंती अति सोहै है कृश है कटि जाकी अर ऐसी नाजुक वदन जो स्तन अर नितंबहूका भार सहारि न सकै जाका रूप शस्त्रसमान ताकरि कामी पुरुषनिका मन भेदता भया अर काम अपनें पांच बाण-निकी गुरुता याके रूप आगे लघु जानता भया। याके रूपहीकूं अपना अनुपम शस्त्र जानता भया ॥ ६ ॥ याके रूप शस्त्रकरि मदन अत्यर्थपने दक्ष कहिये प्रवीण तिनकूं काम न भेदता भया औरनिकी कहा बात ॥ ७ ॥ कैयक दिन राजा दक्ष जिनधर्मसे बहिर्भूत होय मिथ्यामार्गविषैं प्रवर्त्या तब राणी इला अपने एलेय पुत्रकूं लेयकरि देश देशांतरकूं गई। सुरपुर समान एक एलावर्धननामा नगर बसाया। तहां एलेय प्रजाकूं पालता राज करता भया। महा बलवान् महा न्यायवान् महा धीर हरिवंशका तिलक होता भया ॥ ९ ॥ तानें एक अंगदेशविषैं ताम्रलिप्त नामा पुर वसाया। सो महा सुंदर पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध भया अर या राजाने अनेक देश जीते अर नर्मदाके तीर एक माहिष्मती नगरी बसाई सो महीविषैं विख्यात भई। तहां तिष्ठकरि चिरकाल राज्य किया। प्रणाम करैं हैं अनेक पृथ्वीपति जाकूं सो कुणिमनामा पुत्रकूं राजदेय तपका उद्यमी होय बनविषैं गया। बहुरि कुणिम राज करै सो विदर्भदेशविषैं शत्रुनिके जीतिवेकी है इच्छा जाके सो कुंडिनपुरनामा नगर नर्मदा नदीके तीर बसावता भया ॥ १३ ॥ कैयक दिन राज्यकरि राजा कुणिम जीतव्यकूं क्षणभंगुर जानि अपने पुत्र पुलोमकूं राज्य देय आप तपोवनविषैं गया ॥ १४ ॥ तांने पुलोमपुर बसाया। बहुरि वह नृपति अपने दोय पुत्र

जलकी वृष्टि करै तैसैं धर्मरूप अमृतकी वृष्टि करते भये ॥ ६७ ॥ भगवानके अठाईस गणधर ते चतुर्दश पूर्वके वेत्ता अर तीस हजार यति नानाप्रकार गुणनिकरि मंडित। सातप्रकार तिनका संघ ॥६८॥ तिनमें पांचसौ मुनि पूर्वनिके पाठी अर इकीस हजार शिष्य अर अठारह सौ अवधिज्ञानी अर इतने ही केवलज्ञानी अर बावीस सौ विक्रिया ऋद्धिके धारक अर पंद्रह सौ विपुलमति मनःपर्ययके धारक अर बारहसौ वादित्र ऋद्धिके धारक अर आर्यिका पचास हजार अर श्रावक अणुव्रतके धारी एक लाख अर श्राविका तीनलाख याभांति चतुर्दश संघ करि मंडित भगवान जगतके जीवनिकूं मोक्षके मार्गमें लगाये। मुनिसुव्रतनाथका आयु वर्ष तीस हजार। तामें कुमारकाल साढे सात हजार वर्ष अर राज्यविषैं पंद्रहहजार वर्ष अर साढा सात हजार वर्ष तेरह मास घाट अर्हंत पद अर तेरह मास मुनिपद ॥ ७० ॥ अंतसमय हर्षका करणहारा सम्मेदशिखरका वन तहां योग निरोध किया ॥ ७१ ॥ एक महीनातक वाणी न खिरी उपदेश न भया। समवशरण विघट गया। अर माघ शुदी तेरसके दिन पिछले पहर सम्मेद शिखरसे हजार मुनीनिहित लोकशिखर पधारे। अर्हंतपदतैं सिद्धपद पाया। निर्वाण कल्याणककी पूजाकरि सुरेंद्र आप भी निर्वाणप्राप्तिकी प्रार्थना करते भये ॥ ७२ ॥ मुनिसुव्रत पीछे छहलाख वरष व्यतीत भये नमिनाथ भये जेते मुनिसुव्रतका तीर्थ जानहु। देवनिके निरंतर आयबेकरि बढा है लोकविषैं हर्ष जहां ॥ ७३ ॥ जो भव्य जीव वीसवां तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ ताके पंचकल्याणकका चरित्र भक्तिकरि पढै सुनै सो भव्य जीव सिद्धपदके सुखकूं शीघ्र ही प्राप्त होय ॥ ७४ ॥ याभांति यह जो वसंततिलका छंद वे ही भये मनोहर पुष्पनिकी माला तिनकरि पूजा हुआ मुनिसुव्रतनाथ हमारे रागादिक सब रोगनिकूं टारि समाधिबोध देवहु ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य विरचिते मुनिसुव्रतनाथपंचकल्याणक वर्णनो नाम षोडशो सर्गः ॥ १६ ॥

कार करी। जैसैं अनंते तीर्थेश्वर अपने तीर्थ कहिये समयमें धर्मकी प्रवृत्ति करते भये तैसैं ही सर्व मर्यादाके वेत्ता मुनिसुव्रत जिनसूर्य करते भये ॥ ६० ॥ जादिन वृषभदत्त ऋषींद्रके हाथविषैं परम पवित्र अन्न शुद्धताकरि मंडित देता भया तादिन वह अन्न अटूट होगया हजारमुनियोंने आहार लिया मुनियोंके पीछे सर्वनगरने जीम्या तौहू आहार अटूट रहा जिनेंद्रके आहार लेवेकरि वृषभदत्तके घर पंचाश्चर्य भये। रत्नवृष्टि कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वृष्टि, सुगंध जलकीवृष्टि शीतल मंद सुगंध पवन अर देव दुंदुभी बाजे यह पंचाश्चर्य भये ॥ ६२ ॥ यह पंचाश्चर्य देव आकाशविषैं करते भये। अर दानपतिकी पूजाकरि अपने स्थानकूं गये। कैसा है दानपति उपार्ज्या है पुण्यका स्वरूप जाने देव तो अपने स्थानकूं गये अर जिनेंद्र आहार लेय विहार करते भये। विहार योग्य जो आर्यक्षेत्र ताविषैं विहार किया ॥ ६३ ॥ तेरह महीने पर्यंत तप किया। फिर छद्मस्थ दशा उलंघि करि मार्गशीर्ष शुदी पंचमीके दिन ध्यानाग्निकरि दग्ध किये जे घातिया कर्म सो केवलज्ञानके लाभकरि जिनराज या तिथिकूं पवित्र करते भये। विशुद्ध केवलज्ञानरूप निर्मल नेत्रकरि एकसमयमें सकल लोकालोककूं प्रत्यक्ष विलोकते भये जैसैं मेघपटलके आवरणतैं रहित दिनकर पदार्थकूं भासै तैसैं जिनवर कर्मरूप आभरणके अभावसे अखिललोककूं प्रकाशते भये। भक्तिकरि इंद्रादिक देवाधिदेवकी पुजा करते भये। अर मनुष्यनिके इंद्र राजा पूजा करते भये। कैसे हैं भगवान अष्ट प्रातिहार्यादि अद्भुत विभूतिकर अरहंत पदकूं धरै हैं। चिंतवनमें न आवै महिमा जिनकी। जिनके समोशरणमें अशोकवन चंपकवन आम्रवन सप्तच्छदवन यह चार वन तिनमैं चार ही चैत्यवृक्ष ॥६५॥ सो जिनेंद्र मुनींद्र आदि वारह सभाविषैं तिष्ठे जे भव्य जीव तिनकूं द्वादशांग सूत्रका उपदेश देते भये विशाखा नामा गणधरने विनयकरि धर्मका प्रश्न किया सो गणधरके प्रश्नतैं जिनवर धर्मका व्याख्यान करते भये। इंद्रादिक देव प्रभुके चतुर्थ कल्याणककी पूजाकरि विहारकी प्रार्थना करते भये। सो भगवान इच्छा विना ही सहज स्वभाव भव्यनिके पुण्यके प्रेरे विहार करते भये। अनेक देशनिमें धर्मका उद्योत किया। जैसैं मेघ

तिक देव या भांति स्तुतिकरि नमस्कार करते भये। तिनका यह नियोग है। जो तपकल्याणकके प्रारंभविषैं प्रभुके निकट आय वैराग्यकी प्रशंसा करैं। प्रभु तो सब समझही रहे हैं। तिनकूं कोऊ कहा समझावै। यहां कोई प्रश्न करै जो समझेकूं समझावना पुनरुक्त है। ताका समाधान वे महाभक्त हैं अनादिकालतैं तिनका यही नियोग है। जो तपकल्याणकविषैं प्रभुके वैराग्यकी प्रशंसा करैं, यहां पुनरुक्तका दोष न लेना। वे लौकांतिक तो अपना समय साधि अपने स्थानक गये। अर सौधर्म इंद्रादिक चतुर्निकायके देव नानाप्रकारके विमान ऊपर चढे आकाशके मार्ग प्रभुके निकट आय सुगंध जलसूं अभिषेक कराय अद्भुत आभूषण पहिराय नमस्कार करते भये॥

अथानंतर—श्रीमुनिसुव्रतस्वामी अपना सुव्रतनामा पुत्र प्रभावती राणीके गर्भतैं उपज्या ताहि राज्याभिषेक कराया। सो सुव्रतकुमार श्वेत क्षत्र श्वेत चमर सिंहासन तिनकूं शोभित करता भया, हरिवंशरूप आकाशविषैं चंद्र समान भासता भया। अर प्रभुकी पालकी पहिले तो भूपनि उठाई पीछे देव ले चाले। भगवान् ता मनोहर पालकीविषैं आरूढ होय वनकूं गये। कार्तिक सुदी सप्तमीके दिन जिनेश्वर वेला पारण माडि तिष्ठे। जिनेंद्रने हजार नरेंद्रनिसहित जिनेंद्रीदीक्षाधारी सर्वलोकके देखते जगत्रयका गुरु सिद्धनिकूं नमस्कार करि सिरके केश-लोंच करता भया। सो केश सुरेंद्र ले जायकरि क्षीरसागरमें पधरावता भया। जे देव हैं ते जिनेंद्रदेवके तीजे तप कल्याणककी पूजाकरि अपने स्थानक गये। अर भगवान् चार ज्ञानकरि विराजमान भानुसमान हजार राजा-रूपी किरणनिकरि शोभते भये। तीन ज्ञान तो गर्भविषैं ही धारे हुते। अर चौथा मनःपर्ययज्ञान मुनिपद धारते ही भयां। बेलाके पारणे कुशाग्रपुरमें आहारकूं उतरे सो भलीविधिकरि वृषभदत्त नामा प्रसिद्ध श्रावक आहार देता भया। सो भगवान् मुनीनिके अधिपति विधिपूर्वक साधनके लेवे योग्य आहार लिया। साधुकूं कैसा आहार लेना स्वाधीन कहिये अपने वशि आप जायकरि दोष टार लेना अर अप्रतिहत कहिये सूत्रविरुद्ध न लेना सूत्रोक्त लेना बैठकर न लेना खडे रहकर लेना करपात्रमें लेना। यांभांति लेवेकी प्रवृत्ति है सो विधि तीर्थंश्वरने अंगी-

भई शीतल जलकी धाराकरि भोगाभिलाषीरूप अग्नि बुझै है तृष्णारूप अग्निक बुझायवेका कारण ही है ॥ ४७ ॥ तातैं असारभूत जो इंद्रीनिके सुख तिनकूं तजकरि शीघ्रही मोक्षमार्गविषैं प्रवृत्तिकरि आत्मकल्याण करूं। प्रथम परम आत्मरूप अर्थकूं साधकरि परजीवनिके कल्याणअर्थ सांचा जो तीर्थ कहिये बीतरागका मार्ग ताकूं विस्तारूं। जिनमार्गका प्रवर्तन ही जीवनके कल्याणका कारण है। यही तीर्थ कहिये तिरिवेका उपाय है। अर तथ्य कहिये सत्य है ॥ ४८ ॥ या भांति भगवान् स्वयंभू स्वयमेव बोधकूं प्राप्त भये। मति, श्रुति, अवधि, ये तीन ज्ञान ही हैं नेत्र जिनके। जा समय जिनेंद्रने वैराग्यका चिंतवन किया ताहीसमय सब इंद्र अर अहमिंद्रनिके आसन कंपायमान भये। सो अहमिंद्र तो सिंहासनतैं सात पेड़ जाय प्रभुकूं प्रणाम करते भये उनका एताही नियोग है। अहमिंद्रनिके निज आश्रमतैं परक्षेत्रविषैं गमन नाहीं। अर इंद्रादिक देव तपकल्याणके उत्सव-केलिये आयवेकूं उद्यमी भये ॥ ४९ ॥ प्रथम ही लौकांतिक देव आय हाथ जोडि नमस्कारकरि पुष्पांजली चढाय जिनवरकी स्तुति करते भये। कैसे हैं लौकांतिक देव सुंदर कुंडल अर मनोहर हार तिनकरि शोभित हैं अर उज्ज्वल है प्रभा जिनकी महा निश्चल सारस्वत आदि अष्ट हैं जाति जिनकी ॥ ५० ॥ यह लौकांतिक देव-निमें मुख्य ब्रह्मचारी ऐसैं स्तुति करैं हैं। हे जिनेंद्रचंद्र ! तुम जयवंत होहु तुम चिरकाल जीवहु। नादो विरधो। ज्ञानरूप किरणनिकरि मोहतिमिरके समूहकूं हरहु, भव्यजीवरूप कुमद तिनकूं प्रफुल्लित करहु, तुम बंधरहित हो। अर भव्यनिके बांधव हो बीसमां तीर्थ जो तिहारा समय ताविषैं धर्मतीर्थ प्रगट करहु तीर्थके करता तुम तीर्थंकर हो ॥ ५१ ॥ हे त्रिलोकीनाथ ! तुम धर्मतीर्थकूं प्रवर्तावनेकूं समर्थ हो। तिहारे धर्मतीर्थविषैं स्नानकरि यह प्राणी प्रचंड दावानलरूप जो भवानल ताके दाहकूं निवारोगे। तुम्हारा मार्ग शांतरसरूप भवाग्निका बुझावनहारा है यह प्राणी समस्त मोहमल्लकूं शीघ्रही निवारकरि कल्याणरूप जो सिद्धलोक तहां जावेंगे। शिवपुरकी प्राप्तिका मूल तिहारा मार्ग है ॥ ५२ ॥ चारित्रमोहके उपशमतैं वैराग्यभावकूं प्राप्त भये। स्वयंबुद्ध भगवान तिनका लौकां-

अतृप्त भया सुगंधकूं अति आसक्त होय सेवै है सो विषय पुष्पकूं सूंघ शीघ्र ही मृत्यकूं प्राप्त होय है। कैसी है विषयपुष्पकी सुगंध विपरीत है फल जाका। जैसे भ्रमर गंधका लोलुपी कमलमें मुदित होय मरण पावै है। अथवा गजके कुंभस्थलका मद अतृप्ति होय सूंघता गजके काननिके घातकरि प्राणांत होय है ॥ ४१ ॥ अर जैसे रूपका लोभी पतंग दीपकी शिखामें पडकरि भस्म होय है अग्निके योगकरि तीव्र आतापकूं पावै हैं। तैसैं विषयी जीव रूप है प्रिय जाकूं। सो चित्तके वश करिवेकूं प्रवीण जो नेत्रनिके कटाक्षनिकी निपात ताकरि प्रफुल्लित है मुख जिनका ऐमी सुंदर वनिता तिनके अंगविषैं लगाई है दृष्टि जाने। सो यहभव परभवविषैं अधिक आतापकूं पावै हैं। अर नरक निगोदविषैं पडै हैं ॥ ४२ ॥ अर जैसैं मृग कर्णेंद्रीकरि लुब्ध भया पारधीके मुखका राग सुनि ताके शत्रुतैं मरणकूं प्राप्त होय है तैसैं यह मनुष्य महा अधीर रंचमात्र हू नाहीं धीरपना जाके सो कर्णेंद्रीकरि मोहित भया अपनी प्यारी जो नारी ताके बाजते जे नूपुर अर कटिमेखलादि नानाप्रकारके आभूषण तिनके शब्दकरि अर वाके मुखके प्रिय वचन अर मधुर गीत तिनकरि हरी है बुद्धि जाकी सो चपलचित्त अनेक जन्मविषैं दुखी होय है। निगोदविषैं अनंते जन्म मरण करै है ॥ ४३ ॥ जे विषयभोग सोई भई चिंताकीच ताविषैं अल्पवीर्यके धारक वृद्ध दुर्वल वलधसमान क्षुद्र मनुष्य फसैं ताका अचरज नाहीं अर वज्रसमान है काया जिनकी ऐसे महापुरुष या कीचमें फसैं सो बड़ा अचरज है ॥ ४४ ॥ जो जीव स्वर्गके सुख सागरोंपर्यंत दीर्घकाल भोगकरि भी तृप्त न भया सो या मनुष्य लोकके अल्प सुख अति चंचल तृण ऊपर ओसकी बूंदसमान अति रंच तिनकरि कैसैं तृप्त होय यह अल्प दिवसके अल्प सुख याकूं कैसैं तृप्त करैं। जैसे इंधनके समूहकरि अग्नि तृप्त न होय। अर हजारां नदीनिके जलकरि समुद्र तृप्त न होय त्यों ही संसारसंबंधी ये काम भोग तिनकरि यह जीव तृप्त न होय। यह इंद्रीजनित सुख तृप्तिके कारण नाहीं ॥ ४६ ॥ यह विषयरूप इंधनकी राशि भोगाभिलाषरूप वज्राग्निकी शिखाके वढायवे अर्थि ही है। अर इंद्रीनिका जीतना विषयसूं पराङ्मुख होना सोई

विलाय जांय तैसैं सब शरीर कालकरि विलाय जाय। तातैं देहसूं नेह करना वृथा है ॥ ३४ ॥ यह वयकी वृद्धि सोई भई शीघ्रवायु सो कायरूप मेघकी निरंतर घात करणहारी है, कैसा है बडे पुरुषनिका देहरूपी मेघ सौभाग्यरूप जो नवयोवन तेई हैं आभूषण जाके अर चिंतवनहीकरि लोकविषै अमृत वरषै ऐसे हू देहरूप नेहकी घात करणहारी दिन दिन वयकी वृद्धि है।

भावार्थ—ज्यूं ज्यूं वय बढै है त्यूं त्यूं आयु घटै है ॥ ३५ ॥ जे राजा पर्वत समान तेहू कालरूप वज्रके घात करि चूर्ण होय हैं कैसे हैं भवरूप गिरि अपनी शूरवीरताके प्रभावकरि वश करी है समुद्रांत पृथ्वी जिनि अर बडे २ राजा सिंह तिनकरि चिरकाल थांभी है पृथ्वी जिनि अर महामनोहरराज्यके भोक्ता गिरींद्रसे निश्चल ऊंचे हैं शिखर जिनके ऐसे हू नरेंद्र तिनहूकी चूर्ण करणहारी कालरूप वज्रकी घात है ॥ ३६ ॥ यालोकविषै नेत्र अर मन तिनकूं प्यारी सुंदर वल्लभा है। अर प्राणसमान सुखदुःखविषै समान ऐसे मित्र अर पुत्र हैं। ते सब कालरूप वायुकरि सूके पत्रसमान उड जाय हैं। या संसारविषै देवनिके हू इष्टका वियोग होय है। मनुष्यनिकी कहा बात है ॥ ३७ ॥ इन प्राणीनिके देहादिक देखते देखते विनश जाय है। तौ हू ये मूढ जीव मृत्युतैं नाहीं डरै हैं ॥ मोहके अंधकारकरि दब रही है दृष्टि जिनकी सो कल्याणके मार्गकूं तजि विषयरूप आमिषके ग्रहणकूं प्राप्त होय हैं। यह मूढ प्राणी कामके मदकरि सर्व अंगविषैं माते गजकी न्याईं उन्मत्त भया। अपने अंगकरि सुंदर स्त्रीनिके शरीरकूं स्पर्शता मुदित किये हैं नेत्र जाने ऐसा यह मनुष्य गजकी न्याईं विषयबंधनकूं पावै है। धिक्कार या स्पर्शन इंद्रीके सुखकूं ॥ ३९ ॥ अर लोहके आंकडेके लागी मांसकी डली ताकी इच्छाकरि जैसे चपल मीन धीवरके जालमें परै है तैसैं जिह्वाके वसि भया अविवेकी या लोकविषैं षट्रसकै स्वादरूप जो बहुप्रकार आहार ताकूं अति लोलुपताकरि ग्रहता भवजालमें पडै है। कर्मरूप दृढ बंधनकरि बंध्या संसारवनविषैं दुःख भोगवै है ॥ ४० ॥ अर नासिका इंद्रियका विषय है प्रिय जाकूं ऐसा भ्रमर सो अज्ञानी

रजकरि धूसरे है अंग जिनके, ते कदंबादि पुष्पनिकूं तजकरि माते हाथीनिका सुगंध मद अर सप्तच्छद जातिके जे वृक्ष तिनविषैं प्रीति विस्तारते भये ॥ २७ ॥ ऐसे शरदसमयमें श्रीमुनिसुव्रतनाथ तेई भये राजहंस सो कैलाश पर्वत समान उत्तंग उज्ज्वल जो महल ताविषैं तिष्ठे पटराणीसहित शरदरूप राजहंसकी शोभा देखते हुते। कैसी है राणी अद्‌भुत है आभरण जाके अर अपनी लीलाकरि तिरस्कार किया है रतिरूप राजहंसीका विभ्रम जिनि॥ भावार्थ–राणी तो रति हू तैं अधिकरूपकूं धरै है। अर राजहंसीतैं अधिक मनोहर है गमन जाका अर शरद ऋतु राजहंसीहूतैं अधिक उज्ज्वल है अर विजुरीसमान हैं आभरण जाके सो श्रीमुनिसुव्रतनाथ ऊंचे महिलपर राणीसहित विराजे शरदकी सकल शोभा देखते हुते सो आकाशविषैं अति उज्ज्वल मेघमंडल ऐरावतके आकार देख्या मानूं ऐरावतही आकाशरूप समुद्रविषैं रमनेकूं आया है ॥ २९ ॥ मानूं वह ऐरावतके आकार मेघमंडल अंबरका आभूषणही है। ऊंचा उज्ज्वल सुंदर ताहि देखकरि प्रभुका मन हर्षित भया। विपुल कहिये पुष्ट ऐसा वह मेघपटल दिशारूप स्त्रीनिका नीररहित मानूं उत्तरासनही है, ताहि अनुरागकी दृष्टिकरि जिननाथ निरखते भये। सो निरखते निरखते तत्काल वह मेघपटल प्रचंड पवनके घाततैं विलाय गया। सब अवयव वाके विघट गये। जैसैं अग्निकी ज्वालाकरि तप्तमाखन पिघल जाय। ऐसा वृत्तांत देखि लोकका प्रभु चित्तमें ऐसे चिंतवता भया। यह जलधर तत्काल विलाय गया। सो मानूं जगतकूं उपदेश ही विस्तारै है। आयु काय यह सबही विनश्वर हैं। अर लोक यह बात भूलि रहे हैं। सो लोकमें जे निर्मलबुद्धि हैं तिनकूं संसारकी अनित्यता प्रगट दिखावै है ॥ ३२ ॥ यह शरीर महातुच्छ जे पुद्गलपरमाणु तिनके समूहकरि रच्या है। रागादिके परिणामनिके वशतैं उपार्जे जे ज्ञानावरणादि कर्म तिनके संयोगतैं याकी उत्पत्ति है। सो कालरूप पवनके वेगतैं मेघ समान शीघ्र विघट जाय है ॥३३॥ वज्रमई हाडनिकर बेढ्या वज्रवृषभनाराच महारमणीक संहनन सोहू तत्काल विलाय जाय है ॥ जीवनिके समस्त ही गात्र मृत्युरूप वायुके प्रकोपकरि भग्न होय हैं। जैसै मेघ पवनकरि

के राजा राज्य करते भये। वे समस्त लोकपाकके पालक जगतके नाथ राजाधिराज अर देवनिकरि सेवनीक हैं चरणकमल जिनके। सो चारित्रमोहके उदयतैं राज्यसुखकूं भोगते भये अखंड है आज्ञा जिनकी॥ २१॥ अथानंतर—वर्षाऋतुरूप वधूके वीतनेसे शरदऋतुरूप सुरांगना अद्वितीय प्रगट भई। कैसी है शरदऋतुरूप सुरवधू प्रफुल्लित है मुख कमल जाका अर मझन्धाके पुष्पादिक जे अरुण पुष्प तेई हैं अधरपल्लव जाके अर दिशानिकी उज्वलता तेई हैं शुक्ल चमर जाके अर निर्मल जल सोई हैं वस्त्र जाके॥ २२॥ जब वर्षा गई शरद आई तब मेघके अवरोधकरि दसूं दिशा रहित भई। तब सूर्यने सकल दिशाविषै पाद कहिये किरण सो पसारीं। वर्षाऋतुमें सूर्यकी किरणें न पसरती हुती सो शरदमें पसरीं॥ भावार्थ—पद नाम किरणनिका अर पदनाम पांवका सो जाके पांव न पसरें वह खेदखिन्न होय सो शरदमें सूर्यकी किरणें पसरीं तब पांव पसरे ताकूं सुख भया। वर्षामैं मेघमालाकरि सूर्य दब रह्या हुता सो उघरया अर वर्षामें मेघमाला शब्द करती सो शरदमें महा उज्वल धवल गायनिके समूह शब्द करने लगे सो मानूं इनके शब्दकरि मेघावली छिप गई अर शरद समय नदीरूप नारी क्रीडा विषैं नरनिके चित्त हरती भई। कैसी है नदीरूप नारी निर्मल जल सोई है मनोहर वस्त्र जाके। अर भवनरूप नाभिकूं धरें शुभ है गमन जाका अर मनोहर हैं नेत्र जाके अर भागनिकी पंक्ति सोही है वलय कहिये चूडा जाके तरंगनिके विलास तेई हैं वाहु जाकी ऐसी सरितारूप सुंदरी जगतकूं अति रमणीक भासती भई॥२४॥ शरदऋतुरूप वधू जगतका चित्त क्रीडाविषैं अनुरागी करती भई, कैसी है शरदरूप वधू तरंगरूप है भोंह जाकी अर मीन हैं नेत्रनिकी कटाक्ष जाके। अर उन्मत्त जे भ्रमर अर कलहंस तिनके नादकरि रमणीक हैं अर फूले जे कमल तिनकी मकरंद रज सोई है अंगका वर्ण जाके। ऐसी शरदऋतु सुंदर स्त्री समान सोहती भई। शरदविषैं सुगंध शालिफलके भारकरि नम्रीभूत भई अति सोहती भई अर सुगंध कमल फूले अति मनोहर भासते भये। सो ये दोऊ सुगंध शालि अर सुगंध कमल अर रसतिनकी अधिकताकरि मनुष्यनिका मन हरते भये॥२६॥ अर भ्रमरनिके समूह कदम्बके पुष्पनिकी

जिनराजकूं बाहिर ल्याई तब इंद्रादिक जिनेंद्रकूं ऐरावत गजेंद्रपर आरूढकरि गिरींद्र जो सुमेरु तहां ले गये। सकल देव महातीर्थ जो सुमेरु ताकी प्रदक्षिणा करि प्रभूकूं सुमेरुके शिखर जो पांडुक बन ताविषैं पांडुकशिला तापर जो सिंहासन ताके ऊपर पधराय क्षीरसागरके जलकरि अभिषेक करावते भये। बहुरि आभूषण पहिराय महा स्तुतिकरि मुनिसुव्रत नाम धर नमस्कार करते भये ॥१७॥ बहुरि विधिके वेत्ता प्रभुकूं सुमेरुतैं ल्यायकरि माताकी गोदमें मेलि आनंदनाटककरि मातापिताकी स्तुति करते भये अर तीन भुवनकूं आनंदका उपजावनहारा जगतगुरु जिनवर ताकूं नमस्कारकरि इंद्रादिक देव अपने २ स्थानकूं गये। अर इंद्र अपने देवनिकूं देवाधिदेवकी सेवाके अर्थि राखे सो प्रभुकी वय प्रमान मनुष्यका रूप धरैं सब ऋतुकी कीडा करैं। वे भगवान तीन ज्ञानके धारक विशाल हैं नेत्र जिनके देवकुमारनिकरि सेव्य अद्भुत बालक्रीडा करते भये। निरंतर इंद्रकी आज्ञातैं कुवेर सेवा करैं। खानपान वस्त्र आभूषण सब सामग्री देवोपुनीत ल्यावैं। जो वस्तु जगतमें दुर्लभ सो जिनपतिके सुलभ, ज्यूं ज्यूं जिनपतिका शरीर वृद्धिकूं प्राप्त भया त्यूं त्यूं गुणनिकी वृद्धि भई ॥ १९ ॥ जब जगदीश नवयोवनकूं प्राप्त भये तब उनका विवाह किया। महा मनोग्य राणी प्रभुकूं पाय कृतार्थ होती भई जैसे महानदी समुद्रकूं पाय विश्रामकूं प्राप्त होय। नदी तो कुलाचलतैं उपजी है। अर वे महाराणी बडे कुल तेही भये कुलाचल तिनतैं उपजी है। अर महानदी आदि मध्य अंतविषैं निरंतर प्रबाहकूं धरै हे अर यह महाराणी आदि मध्य अंतविषैं निरंतर प्रभाकूं धरै है। अर समुद्र तो लावण्यबाहन कहिये लवणताके भावकूं धरै है अर प्रभु लावण्यता कहिये सुंदरता कोमलता ताकूं धरै हैं। अर समुद्र भी सदा नवल है कबहू जीर्ण नाहीं अर प्रभु भी नागर नवल हैं सदा नवयौवनरूप हैं। कबहूं जराकरि ग्रस्त नाहीं। ऐसे वरकूं पाय वह वधू स्त्रीनिकी सृष्टिमें शिरोमणि होती भई। प्रभुसारिखे पृथ्वीमें पुरुष नाहीं अर इनसारिखी पृथ्वीमें स्त्री नाहीं ॥ २३ ॥ श्रीमुनिसुव्रतनाथ हरिवंशके सूर्य राजसिंहासन पर विराजे। समस्त राजा अर समस्त प्रजा तेही भई कमलिनी तिनकूं प्रफुल्लित करणहारे जगतके सूर्य त्रैलोक्य-

पूर्णचंद्रको प्रगट करै है। स्त्री पुत्रकूं जनै है सो प्रसूति समयमें खेदखिन्न होय है यह जगतकी जननी जिनकूं जनती रंचमात्रहू खेदखिन्न न भई अति आनंदसूं आनंदघन जिनकूं जाना है। कैसे हैं भगवान् जगतके जीवनिके जे मन अर नेत्र उनकूं उत्सवके उपजावनहारे हैं। अर कैसी है माता अघ रहिता कहिये जीवहिंसादि जे पाप उन सबनिसे रहित है। धर्म ही है स्वरूप जाका ऐसी पतिव्रता ऐसी श्राविका संसारमें दूजी नाहीं। जिनधर्मविषैं लीन है चित्त जाका ॥ १२ ॥ वे प्रभु मुनियोंके नाथ मुनिसुव्रत है नाम जाका ताके जन्मकरि माता पद्मावती प्रमोदरूप भई। कैसे हैं प्रभु मुनिसुव्रत शंख चक्रादिक एकहजार आठ लक्षणनिकर संयुक्त है शरीर जाका पुत्रकूं जनकर माता कैसी सोहती भई जैसैं मयूरी रागके भरे कण्ठतैं रागकूं प्रकाशकर सोहै है ॥ १३ ॥ कैसी है माता महा श्याम स्निग्ध जो इंद्रनीलमणि ताकी अद्वितीय खान है।

भावार्थ—श्रीमुनिसुव्रतनाथ इंद्रनीलमणिसमान श्याम सुंदर हैं। अर यह माता मणियोंकी खान है। सो चौवीस तीर्थंकरोंमें मुनिसुव्रत अर नेमिनाथ यह दोनों श्यामवर्ण हैं। अर सुपार्श्वनाथ अर पार्श्व यह दोनों हरित् वर्ण हैं। अर चन्द्रप्रभ अर पुष्पदंत यह दोनों शुक्लवर्ण हैं। अर पद्मप्रभ अर वासुपूज्य ये दोऊ अरुणवर्ण अर सब सुवर्ण वर्ण हैं। जासमय जिनेंद्रका जन्म भया तासमय चतुरनिकायके देवनिके अकस्मात घंटा, सिंहनाद, ढोल, शंख, यह सब वाजे वाज उठे अर इंद्रादिक देवनिके मुकुट नय गये। अर सिंहासन कंपायमान भये तब अवधिज्ञानकरि सुरेंद्रने जिनेंद्रका जन्म जान्या। अर सब देव जन्म कल्याणकके अर्थि चाले ॥१४॥ ते देव रत्नवृष्टि, पुष्पवृष्टि, सुगंधजलकी वृष्टि, शीतल मंद सुगंध पवन अर जय जयकार शब्द यह पंचाश्चर्य करते जगतकूं हर्षकरि पूरित करतेभये। सुंदर वस्त्राभरणकरि शोभित। सर्व इंद्रादिक राजपुर नगर जाहि कुशाग्रपुरहू कहै हैं ताहि प्रदक्षिणाकरि जिनराजके माता पिताकूं वारंवार नमस्कार करते राजाके आंगनविषैं आए, दिक्कुमारी देवीनिकरि होय रह्या है उत्सव जहां। इंद्रकी आज्ञातैं इंद्राणी प्रसूतिगृहविषैं जाय माताकूं सुखनिद्रा अनाय मायामई बालक पधराय

राणी पद्मावती पुष्पसमान महाकोमल अर सुगंध अर पुष्पानिके आभरणनिकरि नम्रीभूत है अंग जाका। अर कल्पबेल तो आरक्त जे पल्लवनिकूं धरै है। अर राणी अति सुंदर अर महा अरुण जो करपल्लव तिनकूं धरै है। अर कल्पवेल तो महा कोमल शाखा उनकूं धरै है। अर यह राणी कोमल जे वाहु तिनकर मंडित है। अर कल्पवेल भी मणियोंके आभूषणनिकर मंडित है अर यह त्रैलोक्यकी माता अद्भुत मणियनिके आभूषणनिकर मंडित है। माता कैसे आभरण इंद्राणी चक्राणी नागेंद्राणीके भी नाहीं। अर कल्पलता तो स्थिरभूत है। अर यह विहार करणहारी है। अनुपम कल्पलता है। अर कल्पवेल भी कल्पद्रुमसे वेढ रही है। अर यह तन मन कर पतिसूं मिल रही राणी जायकर राजेश्वरकूं प्रणाम करती भई। राजाने बहुत आदर किया। राजाके समीप सिंहासनपर जाय वैठी अर पृथ्वीपतिसूं माता विनयकर जो सोलह स्वप्न देखे हुते तिनका फल पूछती भई। तब राणीके तांई राजा कहते भए। हे प्रिये! त्रैलोक्यका स्वामी जगतगुरु तेरे गर्भमें आया, यह वार्ता सुन हर्षित भई। राजारूप सूर्य ताके वचनरूप किरणकी पंक्ति तिनकर स्पर्शी वह पद्मिनी कमलनीकी न्याईं विकसती भई परम आनंदकर भर्या रोमांच शरीर होय गई। मानो हर्षके अंकूरे उगे। संसारमें स्त्रीका जन्म महा निकृष्ट है। तौ भी तीर्थंकरदेवके गुरुपनेसे आपकूं धन्य मानती भई। अर अपना जन्म सुफल जानती भई। सहस्रार नामा वारवां स्वर्ग तहांतैं चय भगवान मुनिसुव्रत बीसवें तीर्थंकर माताके गर्भविषै आए। गर्भतैं पहिले छह महीनातैं रत्नवृष्टि होने लगी। सो पंद्रह मास पिताके घरमें रत्न वरषे। नव महीने प्रभु गर्भमें विराजे। माताका गर्भरूप गृह दिक्कुमारी देवियोंने शुद्ध किया ॥ १० ॥ वह जगत माता जगदीश्वरकूं गर्भविषै धरै ऐसी सोहती भई जैसी शरदके समय जलकी भरी मेघमाला सोहै है। अर मेघमाला तो विजुरीकी प्रभारूप आभरणकूं धरै सोहै है। अर वह राजा सुमित्रकी राणी विजुरीतैं भी अधिक प्रभाकूं धरे जे आभरणोंके समूह तिनकूं धरै सोहै है ॥११॥ सो माता पद्मावती माघके शुक्लपक्षविषैं द्वादशीके दिन नक्षत्रविषैं जिननाथकूं जनती भई। जैसैं पूर्वदिशा

अथानंतर—श्रीशीतलनाथस्वामीकूं सिद्धलोक पधारे पीछे श्रेयांसनाथ भये बहुरि वासुपूज्य, विमल, अनंत, धर्म शांति, कुंथु, अरह मल्लि। ये प्रभु जगतके हितके अर्थि तीर्थ जो धर्म ताकी प्रवृत्तिकरि परम धाम पधारे। यह सब स्वर्गलोकके आये तीर्थेश्वर होय लोकशिखिर गये। बहुरि बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथ राजा सुमित्रके घर राणी पद्मावतीके उदरविषैं आवेंगे। यह विचारि इंद्रने धनपतिकूं आज्ञा करी। सो आज्ञाप्रमाण सुमित्रके घर कुवेर मणीनिकी वर्षा करता भया अर पद्मावती राणी कोमल सेजविषैं शयन करती हुती। सो पिछली रात्रिविषैं सोलह स्वप्न देखे। तिनके नाम गज, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चंद्र, सूर्य, मत्स, कलश, कमलपूरित सरोवर समुद्र, सिंहासन, देवविमान, फणींद्रभवन, रत्नराशि, निर्धूम अग्नि, जिनवरकी जननी यह सोलह स्वप्न देखि अति आनंदरूप भई। वह माता दिव्य है प्रभाव जाका अर उपमासे रहित ऐसी दिक्कुमारी निन्यानवे करैं हैं सेवा जाकी सो माता महामनोग्य पुष्पनिसे पूरित जो सेज ताविषैं जाग्रत होय कैसी सोहती भई जैसें आकाशविषैं तारानिकरि मंडित चंद्रमाकी कांति सोहै है। भावार्थ—माता तो चंद्रमाकी कांति भई अर सेज आकाशसमान उज्वल अर पुष्पनिके समूह तारानिकी मंडली समान सोहते भये॥ ४ ॥ वह जगत्रयकी जननी फूले कमल समान हैं नयन बदन अर करचरण जाके सो सदा अनुरागकी भरी प्रभात ही अपने पति राजा सुमित्र सूर्यसमान सिंहासनरूप उदयाचलपर विराजे हते। तिनके समीप यह राणी पद्मावती स्थल कमलनीकी न्याई फूली हुई गई॥ ५ ॥ जैसें नदी समुद्रकी ओर जाय तैसें राणी राजाके समीप गई। कैसी है राणी सुन्दर जे वस्त्र वे ही हैं जल जाविषैं अर नदी पक्षियोंके नादकरि रमणीक है अर राणी नूपुरोंके शोरकरि शोभित है अर नदी मीनरूप नेत्रनिकूं धरै है, रानी मृग मीन इत्यादिकके नेत्रनिकी शोभाकूं जीतै ऐसे नेत्रोंको धरै है अर नदी तो तरंगनिकूं धरै है अर यह आनंदरूप तरंगनिकूं धरै है॥ ६ ॥ अर वह जगत्की माता कल्पलता समान जगत्का पिता जो राजा याका पति कल्पवृक्ष समान ताके ढिंग गई। कैसी है कल्पलता फूलनिके गुच्छानिके जे समूह तिनकरि नम्रीभूत है अंग जाका अर

सके सो आकाशविषैं गमनकी शक्ति तो इनकी गई सो या पृथ्वीविषैं थिरता करने भये ॥ ५४ ॥ दशमैं तीर्थंकर श्रीशीतलनाथ जिनिका शरीर नव्वे धनुष ऊंचा अर एकलाखपूर्व आयु तिनके तीर्थविषैं यह वार्ता भई । चौथा काल कोडाकोडी सागरका तामैं केता काल बाकी रह्या हुता सो सुनहु निन्ययाणवें लाख निन्याणवें हजार नवसौ सागर छ्यासठ लाख छवीस हजार वर्षघाटि चौथा काल बाकी था। ता समय वह राजा चंपापुरीविषैं राज्य करता भया नये हैं अनेक राजा ताकूं माने हैं आज्ञा राजा जाकी सो राजा रागभावकरि अतृप्ति है मति जाकी सो अपनी राणीसहित बहुत काल सुख भोगता भया । इन दोऊनिके पूर्वभवतैं अखंड प्रीति है अपने भुजदंडकरि वश कीये हैं अनेक भूप जाने ऐसा वह भूपाल वा राणीके संयोगकरि हरिनामा पुत्र भया । अर वे दोऊ राजा राणी पर-लोक गये राजाका नाम आर्य राणीका नाम मनोरमा ॥ ५९ ॥ अर राजा हरि चंपापुरीका राज्य करै सो हरि-वंशविषैं मुख्य होता भया । या जगतविषैं वाकी संतानके हरिवंशी कहावते भये । राजा हरिके पुत्र महागिर अर ताके हिमगिर भया ताके वसुगिर ताके गिर ये राजा मरकरि स्वर्गलोकके देव भये । या हरिवंशविषैं सैकडों राजा इंद्रसमान विभवके धारक भये सो राज्यसंपदा भोगि मुनिव्रतधरि तपकरि शिवपुर गये । कैयक सुरपुर गये ॥ ६० ॥ या भांति अनेक राजा हरिवंशविषैं अद्भुत चरित्रके धारक भये । बहुरि याही वंशविषैं एक मगध देशमें कुशाग्रपुरनामा नगर ताका अधिपति कल्याणका धाम राजा सुमित्र होता भया ॥ ६१ ॥ पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध है नाम जाका अर शास्त्रविषैं निपुण पुरुषार्थकरि शोभित ताके राणी पद्मावती तासहित सुख भोगता पृथ्वीकी रक्षा करता भया । वह राणी जिनमार्गकी अति भक्त अर राजा जिनभक्तिविषैं अति अनुरक्त ये दोऊ देव देवी समान पृथ्वीविषैं सुख भोगते भये ।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ हरिवंशोत्पत्तिवर्णनो नाम पंचदश सर्गः ॥ १५ ॥

प्राप्त भया बहुरि अवधिकरि दोऊनिका जन्म विद्याधरनिमें जाण्या। वे दोऊ या जन्मविषैं हू पतिपत्नी भये हैं। वे दोऊ जहां हुते तहां जाने। मनमें विचारी सुमुखके जीवने राजपदका गर्वकरि मेरा अपमान किया, मेरी वनिता वनमाला हरी अर या जन्मविषैं हू तासहित रति करै है। अब दोऊ धणी धिराणी भये हैं। वा दुष्टकूं लज्जा नाहीं ताने मेरा जितना अपमान किया अर मोहि कलेश दिया तातैं मैं दूना हू न करूं तो मेरी समर्थता कहा। ऐसा चिंतवनकरि वह देव क्रोधकरि कुलषित भया इनकूं दुःख देयवेका निश्चयकरि स्वर्गसूं मध्यलोकविषैं आया ॥ ४६ ॥ कैसा है वह देव भास्वर कहिये महा दैदीप्यमान है। वह देव सुमुख राजाका जीव विद्याधरके पुत्र भया है ताहि वनमालाका जीव जो विद्याधरकी पुत्री तासहित हरिवर्षक्षेत्र जो मध्यभोगभूमि तहां क्रीडा करता देखता भया। कैसा है विद्याधरका पुत्र हरिविभ्रम कहिये वसुदेवसमान है लीला जाकी ॥ ४८ ॥ वह देव दोउनिकूं देखि क्रोध करता भया फिर विचारी यह दोऊ नवयौवन हैं। सो मारवेयोग्य तो नाहीं तब अपनी अखंड देवमायाकरि इनकी आकाशगामिनी विद्या छेदता भया अर कहता भया हे सुमुख! तू मुझे जानै है मैं वह वीरक सेठ हूं जाकी प्रिया वनमाला तैंनैं हरी हुती अर हे पापिनी वनमाला! तैंनैं पूर्वजन्मविषैं शीलसारिखा आभरण खोया सो धिक्कार तोकूं। मैं तिहारे दुखकरि गृहस्थाश्रम तजि जिनराजका धर्म लिया। सो तपकरि पहिले स्वर्ग देव भया अर तुम मुनि-दानके फलकरि विद्याधर विद्याधरी भये अब तुम्हारी विद्या तो मैं हरी अब तुमकूं कहा दुख दूं तुम मेरे पूर्वभवके दुखदाई हो ॥५१॥ ऐसा कहकरि वह देव उन दोउनिकूं उठाय लेता भया। जैसैं गरुड नागयुगलकूं उठाय लेय। वे दोऊ ताके भयकरि कंपितचित्त अर शिथिल शरीर मृतकतुल्य होय गये अर वह देव इन दोउनिकूं उठायकरि दक्षिण भरतकी ओर ल्याया ॥ ५२ ॥ चंपापुरीका राजा चंद्रकीर्ति कालप्राप्त भया हुता। सो चंपापुरी अनाथ हुती ताका राजा सुमुखका जीव जो विद्याधर ताकूं देकरि देव तो देवलोक गया वा मंडलके राजा यासूं आय नये ॥५३॥ देव-करि खंडी गई है विद्या जिनकी ऐसे वे दंपती विजयार्द्धगिरि जायवेकूं असमर्थ भये। जैसैं पक्षी पांख बिना उडि न

नूपुर जहां अर या पृथ्वीविषैं जो वस्तु और ठौर दुर्लभ है सो विजयार्द्धगिरिविषैं सब सुलभ है। ये दंपती मनवांछित अद्भुत सुख निरंतर भोगते भये ॥ ३७ ॥

अथानंतर—वह वीरक सेठ देवका मारा बनमालाके विरहतैं सुखकूं न प्राप्त होता भया महा कोमल शीतल पल्लवकी सेज ताविषैं हू आतापरहित न होता भया, कैसी है वह पल्लवकी सेज जाविषैं दुःखका लेश हू नाहीं ताविषैं यह दाह दुःख भोगता भया। या विरहीके हृदयका दाह रात्रिविषैं चंद्रमाकी किरणके समूहकरि सरोवरके तीर हू न मिटता भया, कैसी है चंद्रमाकी किरण। हिम कहिये वरफ ताहूतैं अधिक शीतल है। जैसे रात्रिविषैं चकवीतैं विछुरा जो चकवा ताके हृदयका दाह सरोवरके तीरहू चंद्रमाकी किरणनिकरि न मिटै तैसैं याका न मिट्या जैसैं या जगतविषै योगीश्वरका मन काहू वस्तुविषैं न रमै तैसैं या वियोगीका मन काहू ठौर न रमता भया॥ ३९ ॥ सो वीरकनामा सेठ चिरकाल विरहकी व्यथा भोगकरि कैयक दिनमें दुःखका मूल जो गृहस्थाश्रम ताकूं तजकरि जिनभाषित मुनिका धर्म अंगीकार करता भया। सो मुनिका धर्महो शरणार्थीनिकूं बडा शरण है। कैसा है वीरक वश किये हैं मन इंद्री जिनि ॥ ४० ॥ सो वीरकमुनि शरणार्थी शरीरका है शोषण जाविषैं ऐसा तपकरि पहिले स्वर्गमें देव भया॥ सो स्वर्ग सुखरूप सागरका बढावनहारा है अर देवनिकूं हर्षका उपजावनहारा है, अर कैसा है मुनिका धर्म मनोभव जो काम ताका चूर्ण करणहारा है निर्वाणका कारण है। मुनि जो तद्भव मोक्ष न होय तो स्वर्गके सुख भोगि नर होय निर्वाणपद पावै ॥ ४१ ॥ सो देव सकल आभूषणकरि शोभित अनेक देवांगनाके समूह आदि विस्तीर्ण है परिग्रह जाके सो सुखरूप अमृतके सागरविषैं मग्न हुवा तिष्ठता भया रागरूप है भाव जाके ॥ ४२ ॥ सो देव एकवार स्वर्गविषैं देवांगनानिके समूहमें तिष्ठता पूर्वभवकी अवधिकरि विचारता भया सो पूर्वभवकी प्रिया बनमाला सो ताहि चितारी। जीवनिके रागभाव तजना कठिन है। सुमुख राजाने किया जो अपना अपमान सो अवधिकरि देवने जाण्या सो जानकरि द्वेषकूं

मसली हैं आंखि जिनि सो अति सोहते भये अर वचनके उच्चारणविषैं इनके मुखकी ध्वनि मातापितादि सुजन वर्गनिके मनकूं हर्ष उपजावती भई। इनकी चेष्टा देख २ सुजनलोग खुशी होते भये ॥ २९ ॥ अर ये दोऊ बालक भोगभूमिके बालकनिकी चेष्टाकूं जीतैं ऐसी सुंदर चेष्टा धारते भये अर मनोहर है भाव जिनका ये दोऊ अपनी माताके स्तन पीवते अपनी कांतिकरि देव देवीनिकी कांतिकूं उलंघते भये ॥३०॥ ज्यूं ज्यूं दिन दिन इनका शरीर वृद्धिकूं प्राप्त भया त्यूं त्यूं दिन दिन कला गुण वधते भये, ज्यूं ज्यूं बाल अवस्था व्यतीत भई त्यूं त्यूं इनका तन परम कांतिकूं धारता भया ॥ ३१ ॥ यह बालयुगल अपने अपने मंदिरमें साधी है समस्त खेचरी विद्या तिनकरि अति सोहते भये। सुंदर यौवनकी दीप्तिकरि मनुष्यनिके मनकूं हरणहारे गुणकरि महा मनोहर भासते भये ॥ ३२॥

अथानन्तर—मेघपुरके पतिकी पुत्री वनमालाका जीव हरिपुरके राजाका पुत्र सुमुखका जीव तासूं सगाई भई। वह कन्या साक्षात् कमलसमान। सो माता पिताने विधिसूं परिणाई ॥३३॥ सो वह वर तो वधूकूं परणकरि संसारके सुख भोगता भया। कैसी है वह वधू मदनरूप नाटकाचार्यने सुरतिरूप नाटकविषैं प्रवीण करी है अर वह महा विनयरूपिणी है अर नवरसके भाव तिनकरि संयुक्त है ॥ ३४ ॥ वह राजपुत्र ता राजपुत्रीसहित राजमंदिरविषैं रमता भया। जैसे देव देवीनिसहित नंदनवनविषैं रमैं, तैसे वह वल्लभ वल्लभासहित नंदन वन समान सुन्दर वन तिनमें रमता भया। वे कैसे हैं वन महा सुगंध सुरतरु समान हैं वृक्ष जहां। अगर चंदन आदि अनेक जातिके हैं तरुवर जहां अर उन्नत हैं चंदनके तरुवर जहां ॥ ३५ ॥ सो राजपुत्र ता कांतासहित कुलाचल पर्वत अर मानसरोवर अर गंगा नदियनिके तटविषैं रागसहित रमता भया वह कांता अति सुन्दर समस्त खेदरहित आंनदरूप है। सो ये दंपति अढाईद्वीपविषैं जे सुन्दर स्थल हैं तिनविषैं ये क्रीडा करते भये। कदाचित भोगभूमिविषैं कल्पवृक्षके तले रमते भये ॥ ३६ ॥ ता कांताकरि वह कंत कल्पवासी देवकैसे सुख भोगता भया। वे विजयार्द्धगिरिके पुर, सुरपुर समान तिनमें निवास। कैसे हैं वे पुर बाजे हैं दिव्यध्वनिके पांयनिके

मुनिदानके फलतैं वे दोऊ मरकरि विजयार्ध गिरिविषैं विद्याधरनिके जन्म पावते भये। सो विद्याधर पदके विस्तीर्ण सुख दानके प्रभावकरि पावते भये ॥ १८ ॥ कैसा है विजयार्द्धगिरि जाकी दोनों अणी समुद्रकूं स्पर्शे हैं। पूर्वकी अणी तो पूर्वके समुद्रविषैं जाय लगी है। अर पश्चिमकी अणी पश्चिमके समुद्रविषैं जाय लगी है। बहुरि वह गिरि अपनी उज्वलताकरि चंद्रमाकी अर क्षीरसागरकी उज्वलताकूं हरै है अर रूप्यमयी राजै है मूर्ति जाकी मानूं पृथिवीरूप वधूका विस्तीर्ण हार ही है। पृथिवीतैं दश योजन ऊंचे चढिये तहां दोय श्रेणी हैं। एक दक्षिण एक उत्तर मानों वे दोऊ श्रेणी या गिरिके बाहुयुगल ही हैं। तिन दोनों श्रेणीनिमें ऐसी ऐसी खेचरपुरी हैं मानों दूजी भोगभूमि ही हैं ॥ २० ॥ सो दोऊ श्रेणीनिमें अनादिनिधन एकसौ दश पुरी हैं अर वह गिरि पचीस योजन ऊंचा अर पचास योजन चौडा अर समुद्रांत लंबा ॥ २१ ॥ ता गिरिविषैं जो उत्तर श्रेणी तामें हरिपुर नामा नगर सो महा सुखका स्थानक जहां काहू प्रकार खेद नाहीं मानूं वह हरिपुर हरि कहिए इंद्र अथवा वासुदेव तिनहीके पुरसमान सुंदर है ॥ २२ ॥ ता पुरका राजा पवनगिरि विद्याधर ताके महा गुणवती कलावती कुलवती मृगावती नामा राणी ताके राजा सुमुखका जीव पुत्र भया ॥ २४ ॥ अर ताही गिरिकी उत्तरश्रेणीविषै एक मेघपुर नामा नगर बडा अपार है विभव जाविषैं मणीनिके मंदिर ताकी हैं पंक्ति जाविषैं तहां राजा पवनवेग विद्याधर राज करै। सो राजा रिपु कहिये वैरी तेई भये माते हाथी तिनके समूहके मदन हरवेकूं केहरि कहिये सिंह समान ताके मनोहरी नामा रानी महा सुंदर सो रतिविषैं राजाके मनकूं हरै है। सो महा पतिव्रता जाके अति प्यारी ॥ २६ ॥ तिन दोहूनिके वह वनमाला सुमुखकी सहचरी मनोरमानामा पुत्री भई सो जगतविषैं चंद्रकला समान महामनोहर सुमुखसूं पूर्वभवका है स्नेह जाके दानके प्रभाव करि या भवविषैं धर्मरूपिणी भई पतिव्रता है वे दोऊ बालक दोऊ नृपनिके घर सुखसूं लडाए थके वृद्धिकूं प्राप्त होते भये। कैसे हैं दोऊ आनंदकारी है क्रीडा जिनकी अर मुलकनसहित सुंदर है मुख जिनका सो अपनी हथेलीनिकरि

जैसें जराकरियुक्त मनुष्य लोकविषैं प्रसिद्ध होय तैसें विपुल निर्जराकरि युक्त योगी सोहता भया ॥ ८ ॥ जीते हैं दोष कषाय परीषह जिनि। अर निगूह किया है इंद्रीनिका चंचल भाव जाने। ऐसे महामुनि तिनकूं गृहविषैं आया जान राजा सुमुख तत्काल आसनतैं उठ्या ॥ ९ ॥ हर्षके भारकरि वश भया है मन जाका। सो बनमाला सहित सन्मुख जाय प्रदक्षिणा देय विनयसहित महापवित्र जे साधु तिनकूं पडगाहवता भया। महा पवित्र मणीनिका आंगन ताविषै मुनींद्रकूं आहारके अर्थि थापता भया ॥ १० ॥ प्रिया जो बनमाला ताके करतैं देदीप्यमान कनककी झारी लेय राजा जलधाराकरि अपने हाथनिकरि मुनिके पांव धोवता भया ॥ ११ ॥ अर सुगंध चंदन अर उज्ज्वल अक्षत अर मनोहर पुष्प अर नैवेद्य दीप धूप फल इन अष्ट द्रव्यनिकरि मुनिकूं पूजि अर मनवचन कायकरि बारंबार बंदि, विधिपूर्वक आहारदान देता भया ॥ १२ ॥ सो मुनिदानके फलकरि सुमुख भले मनतैं बनमालासहित पुण्यका बंध करता भया अर पापकूं भेद्या ॥ १३ ॥ वे महामुनि बहुत दिनके अनसनव्रतके धारक अर महाक्षीण शरीर। शरीरके आधारनिमित्त किया है पारणा जिनि। दानके करणहारेनकूं किया है सुखका उदय जिनि सो मुनि तो आहारकरि शीघ्र ही विहार करि गये। तत्वका है विचार जिनके ॥ १४ ॥

अथानंतर—पुण्यके फलकरियुक्त जो सुमुख नृप ताका वनमालासहित सुखसूं काल व्यतीत होय। कैसा है सुमुख जो परनारीका अंगीकार जो महा कुचेष्टा ताका है पश्चात्ताप जाके। या कार्यकरि जीवके सकल कल्याणका नाश होय है। एक दिन राजा गुणनिकी माला जो बनमाला तासहित सुगंधगृहविषैं सुंदर सेजविषै शयन करता हुता, सो कैसा है सुगंधगृह मणीनिके जो समूह तिनकी छविकरि विस्तरि रह्या है प्रकाश जाविषैं। बहुरि कैसा है वहितादर कहिये राजाने किया है बहुत आदर जाका, राजाके जा मंदिरसूं बहुत प्रीति है सो मंदिरमें सेज पर पौढे हुते सो दोऊनिका आयु पूर्ण भया। तिनपर दैवयोगतैं विजुरी पडी ॥१७॥ सो वे दोऊ तत्काल निर्जीव होय गये। कैसे हैं दोऊ प्रीतिविषैं विरागी चित्त जिनके सो कार्य तो ऐसा किया हुता जाकरि कुगतिही जांय परंतु

अथानंतर—फूले कमलनिके वन तिनकूं स्पर्शकरि आई शीतल मंद सुगंध पवन ताकरि हरया गया है शरीरका खेद जिनका ऐसे राजा अर वनमाला दोऊ निद्रातैं रहित भये। सेज महा कोमल सुरनदीकी तरंगसमान उज्ज्वल अर मले गये हैं पुष्पनिके समूह जाविषैं तापर राजा वनमालासहित जाग्रत होय बैठे सो राजा वल्लभासहित कैसा शोभता भया जैसा तरुण हंस मदका भरया हंसनीसहित नदीके पुलिनविषैं सोहै। वे वधू अर वररूप यौवनकरि श्रेष्ठ तिनका हृदय क्षणमात्रहू वियोगकूं न सहि सकता भया। जैसैं रात्रिविषैं विरही चकवा चकवी पक्षी तिनका मन क्षणमात्र हू वियोगकूं न सहार सकै सो दशा इनकी भई। कैसे हैं दोऊ मनोहर है रागरूप चेष्टा जिनकी ॥ ३ ॥ राजा वनमालाकूं वाके घर न भेजी। अपने घर ही राखी जाने जा वस्तुका रस पाया ताहि वह न तजैं। मनवांछित दुर्लभ वस्तु एकांतविषैं मिलै ताहि रागी जीव छांड़ि न सकै ॥ ४ ॥ वाहूका मन नृपकूं छांड़ि न सक्या सुमुखके जेती राणी हैं तिनमें मुख्य जे पटराणी तिनहूमें यह मुख्य ठहरी। सब राजलोकमें सेठिनी शिरोभाग भई। रूप यौवनकी सुंदरता, लावण्यता, चातुर्यता आदि गुणनिकरि वनमाला पटराणी यहां पतितैं अति प्रतिष्ठा पावती भई जो सुमुखके घरमें याहि लाभ भया सो औरकूं दुर्लभ। भरतारके घरविषैं यह सुख कहां। सो दुराचारणी घरकूं विस्मरण होय गई ॥ ५ ॥ या भांति कैयक दिन व्यतीत भये। एक समय राजाके घर वरधर्मनामा मुनि आहारकी वेला आये। जब कोई गृहस्थका महाभाग्य होय तब मुनिका आगमन होय। जैसैं अनचिंती निधि घरमें आवै तैसैं तपोनिधि अनचीते आये। कैसे हैं मुनी परम दर्शनविशुद्धिकरि विशुद्ध है बुद्धि जिनकी। अर ज्ञानकी आधिक्यता ताकरि जाने हैं पदार्थ जिनि अर व्रत समिति गुप्ति इन तीन शुद्धतामय जो तेरह विधि चारित्र है ताकरि पवित्र है शरीर जिनका ॥ ७ ॥ अर अनशन अध्ययनादि तपरूप लक्ष्मीकरि शोभित है शरीर जिनका। सो कैसी है तपोलक्ष्मी महा निर्मल है अर शांतभावकरि अस्त किये हैं समस्त विकार जिनिने। अर महा निर्जराकी करणहारी है। अर महामहिमाकरि मंडित है। मनिसमान महिमा महेंद्रकी नाहीं

शयन करावता भया ॥९३॥ सो इनि दोऊके चरित्र देखिवेकूं केतीक रात्रि गये निशाकर उदय भया ॥९४॥ सो चंद्रमाके किरणनिके उदय होते कुमुदनी विकसी । जैसैं सुमुखके करस्पर्शतैं बनमालाका चित्त विकसै । प्रेमसंबंधी वृद्धिके अर्थि वे दोऊ विषयाभिलाषी अनेकप्रकार हावभाव प्रगट करते भये निज स्त्रीका सेवन हू जिनश्रुत विषैं निषेध्या है वह भी भवभ्रमणका कारण है तो परदारासंगमके पापकी कहा बात । यह तो प्रत्यक्ष कुगतिका कारण ही है । धिक्कार होहु या मदनकूं जो मनकूं मोहितकरि अधर्मविषैं प्रवर्तावै है ॥ १०० ॥ वे दोऊ नाना प्रकार क्रीडाकरि श्रमयुक्त होय शय्यापर पौढे प्रेमकरि बंध्या है चित्त जिनका विषयकी विदग्धताकरि हत्या गया है आत्मा जिनका ये दोऊ निद्राविषैं लीन होय गये हैं । सो इनका वृत्तांत देखिवेकूं मानूं प्रभात संध्या प्रगटी पहिली सन्ध्या रात्रिके आगमकी अति सुंदर सो चंद्रमासहित रागकी बढावनहारी होती भई सो रात्रिसमय चित्तकी वृत्तिकरि वह सुंदरवदनी सुमुखने नवीन बधूकी नाईं भोगी जैसैं नवीन वनमालाकूं पहरि रागी पुरुष हर्षित होय तैसैं यह विषयानुरागी बनमालाके संगमकरि प्रसन्न भया ॥ १०२ ॥ राजा सुमुख सेजपर बनमालासहित शयन करताहुता ताहि सूर्य सरोवरविषैं कमलनिके वनकी नाईं प्रबोधित करता भया । राजाकी पक्षप्रबोध कहिये जागना । अर कमलनिकी पक्षप्रबोध कहिये फूलना सो सूर्यके प्रकाशकरि राजा जाग्या अर कमल फूले उदयाचल पर्वतविषैं तिष्ठता सूर्य तिमिरकूं हर लोकविषैं उद्योत करता भया, सूतनिकूं जगावता भया जैसैं जिनराज सिंहासनविषैं विराजे अविद्यारूप रात्रिकूं हरैं मोहरूप तिमिरकूं मेटैं अनादिकालके सूतनिकूं जगावैं प्रतिबुद्ध करैं भव्यनिके हृदयरूपी कमल प्रफुल्लित होय तैसैं सूर्यके उदयकरि लोक जागे अर तिमिर भाग्या ।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ सुमुखवनमालासंभोगवर्णनो नाम चतुर्दशसर्गः ॥ १४ ॥

प्रार्थनातैं अपने चित्तकी वार्ता नीठि २ कहती भई, उष्ण श्वासकर कुम्हलाय गये हैं होंठ जाके वनमाला कहै है, हे माता ! तो बिना मेरे विश्रामका स्थानक अर कौन। अर मंत्र जब छह कान भया तब प्रगट होय जाय तातैं मंत्रका यत्नतैं गुप्त राखना ॥ ८० ॥ मैंने आज महा रूपवान सुमुख राजा देखा जा समान सुंदर मुख काहू पुरुषका नाहीं। सो देखवे मात्रहीतैं वह मेरे उरविषैं आ बस्या है। अर मदनने मेरे उरविषैं प्रवेश किया है ॥ ८१ ॥ सो प्रथम तो यह अभिलाषा दुर्लभ बहुरि या कार्यके शत्रु अनेक तिनकरि होय न सकै। अर यह दुष्ट हृदय ताकी अभिलाषारूप अग्नि जीवकूं दाह उपजावै है सो मिटै नाहीं। मेरा हृदय चंदनके लेपकरि लिप्त भयाहू दाहकूं नाहीं तजै है। अर बाहरला उपचार मांहिले दाहकूं कैसैं मेटै। भीगे वस्त्र मेरे अंगसूं लगाइये सो तत्काल सूक जाय हैं। अति उष्णविषैं अल्प शीतका स्पर्श क्या करै। पल्लवनिकी सेज भी तत्काल कुम्हलाय जाय। ऐसा दाहकरि उष्णगात्र मेरा ताविषैं अल्प शीत कहा करै ॥ ८५ ॥ ताके अंगस्पर्श बिना मेरे मनका आताप न मिटै तातैं हे माता ! मोपर कृपाकरि मेरा महीपतिसे मिलाप होय सो करहु ॥ ८६ ॥ अर वाके मनकी वृत्ति भी मेरे देखनेसे मेरे मनोरथरूप होय गई है। यह तू निश्चय जान सर्व आकारकरि मेरे लखिवेमें ताके मनकी वृत्ति मोहित भई मैं यह जानी है। तातैं हे प्रवीणे ! हम दोऊ कामाग्निसे तप्त हैं। सो तू एकांतविषैं सुखसूं मिलाय तू समयकी जाननहारी है। तप्त वस्तुसूं तप्त मिल जाय है। ये वचन बनमालाके दूती सुनकरि अति हर्षित भई। वाके वचनमें वाका भाव सूचा गया है। तब दूती कहती भई। हे वत्से ! वत्सदेशका ईश्वर राजा सुमुख ताने तिहारे पास मोकूं भेजी है। तेरे रूपकरि वाका मन हरया गया है। तातैं तू चलि मैं तोहि वासूं मिलाऊं। याभांति दूतीके वचन सुनि बनमाला अति कामातुर पतिके परोक्ष दूतीके संग सुमुखपै गई शीघ्र ही राजमंदिरविषै प्रवेश किया ॥९१॥ राजा सुमुख यह सुंदरवदनी मनकी हरणहारी ताहि निरखिकरि आदरसूं कहता भया। आवो आवो ऐसे मिष्ट वचन कहि वह मोहित याहि मोहरूपिणी करता भया अर अपने हस्तकरि वह मदनातुर वनमालाकूं निज सेजविषैं

उरसूं लगावै तैसे तुम बनमालाकूं कंठसे लगावौ ॥ ६६ ॥ तुम स्नान करहु अर पूर्ववत् भलीभांति भोजन करहु ॥ ६७ ॥ अर सुगंधका लेप करहु महामनोहर वस्त्राभरण पहरहु । पुष्पमाला अर तांबूल अंगीकार करहु। या भांति मंत्री महीपतितैं विनती करी तब राजा मंत्रीके वचनतैं प्रमाण करता भया। यद्यपि किसी वस्तुविषैं मन नाहीं मन तो बनमालामें है परंतु मंत्रीके प्रसन्नताके अर्थ स्नान भोजनादि करता भया ॥ ६८ ॥ सुमुखका अभिप्राय जान मानूं कृपाकर सूर्य पश्चिमकी ओर आया अर अपनी किरण संकोची। जब सूर्य अस्ताचलकी ओर सन्मुख भया तब तेज घटा तब सब लोग उद्यम छोड निरुद्यमी भये। चकवा चकवीनिके स्नेहका दृष्टिकर थांभनेका घनाही यत्न किया परंतु क्षणमात्रमें दिनकर अस्त होय गया सांझकी ललाई कर अंबर अरुण होयगया ॥७१॥ जैंसे वनमालाके अत्यंत अनुरागकरि सुमुख रागरूप भासै, कमलनिका वन संकोच गया अर मित्र कहिये सूर्य ताके उदयकरि वनका विकास हुता सो मित्र अस्त भया तब कमल मुदित होय गया। सो यह उचित ही है। मित्रकी आपदाविषैं कौन प्रफुल्लित होय कोई न होय ॥७३॥ अर क्षणमात्रमें संध्याकी ललाई रही फिर ललाई जाती रही, सर्वत्र अंधकार फैल गया। सो मानों जगतने अरुण वस्त्र तज नील पट पहिरे जब रात्रिका समय विशेष भया तब नेत्र वाले भी न देख सकैं अंधकारका अत्यंत विस्तार भया ॥ ७५ ॥ ता समय सुमतिनामा मंत्रीने राजा सुमुखकी आज्ञातैं वनमालाके समीप आत्रेयीनामा दूती पठाई। सो वनमालाके निकट गई। उसने दूतीका बहुत सम्मान किया। आसन दिया तब दूती ताकी बहुत प्रशंसाकर एकांतविषैं कहती भई। वह पापिनी दूती अन्यायविषैं अति निपुण ॥७५॥ दूती कहै है—हे वनमाले! हे प्रिय! हे वत्स कहिये पुत्री! आज तू चिन्तावती क्यों दीखै है। चित्तकी उदासीका मोहि वृत्तांत कहो। तू पति सो रूसी है कि पतिने तोकूं रुसाई है, वीरक सेठके तो एक तू ही है कोपका कारण क्या या कोई अर कारण है सो चित्तका अभिप्राय मोहि कहो ॥७९॥ हे पुत्री! सर्व रहस्यविषैं मोहि परख है, मोकूं तेरे मनवांछित वस्तु दुर्लभ कहा जब यह वचन दूतीने कहे तब बनमाला याकी

तृप्त भये हैं। अर तुम सब बातनिमें निपुण हो सो स्नेहकर राजलोक भी बहुत पोषै हैं। तिहारे प्रसादकर वे बहुत प्रसन्न हैं तुम सबहीका सन्मान करहु सो काहूकी अरुचि तुमतैं नाहीं। तातैं आज उदासी काहेकी है। जो अपने मनका दुःख होय सो अपना प्राणसमान मित्र होय ताकर वाका उपायकर मनका दुःख मिटै है, यह जगत्की रीति है। तातैं हे प्रभो! मनकी बारता मोसे कहो। जो अबही यत्नकर तिहारे मनकी चिंता हरूं अर आपकी निश्चिंतता कर प्रजाकी निश्चिंतता है। राजा सुखी तो प्रजा सुखी यह लोकविषैं प्रसिद्ध है॥५९॥ याभांति सुमति-नामा मंत्री सुमुख राजातैं कही। तब राजा कहता भया। हे मित्र! मैंने आज परवधू देखी। ताके देखिवेकरि मेरा मन ताके वश भया है। जैसे मंत्रविद्याकरि देव वश होय है॥ ६०॥ ऐसी रूपवान अर ऐसी आभरणादि कर शोभित या जगतमें कोई नज़र न आवै। बहुत नाहीं सो वाके देखिवेकरि मेरा चित्त चलायमान भया अर वाकी वाह्यचेष्टाकर ताका चित्तभी मोविषैं अनुरक्त भया भाषै है॥ ६१॥ ये शब्द सुनकरि मंत्रीने कही। हे नाथ! मैं वह लखी सो वीरकनामा सेठकी बनमाला नामा वधू है॥ ६१॥ तब राजाने कही जो आज मुझे उसका संयोग न होय तो मेरा जीवना मत जानों। वह वक्रभौंहकी धरणहारी मेरे मनमें चुभ रही है॥ ६२॥ अर मैं जानूं हूं मो विना वह भी एक दिवस न रह सकै अर वा विना मैं भी न रह सकूं। तातैं तुम शीघ्रही उपाय करो॥ ६३॥ अर मैं जानूं हूं या कार्यतैं या लोकविषैं अपयश अर परलोकविषैं अनर्थ परंतु मूढ जीव कार्य अकार्यकूं न देखै जैसे जन्मका अन्धा कछुही न देखै। अकार्यविषैं प्रवृत्ति है बुद्धि मेरी सो तुम मने मत करहु। जो जीतव्य है तो पापके शांतके करिवेकूं अनेक यत्न हैं॥ ६४॥ राजा ये वचन कहे सो यद्यपि न्याय-रूप न हुते तथापि मंत्री मानै। राजानिकूं विपत्ति निकट आवै तब मंत्री ही निवारै मंत्री राजातैं सन्मुख होय कहता भया। हे प्रभो! यह कार्य करिवेका नाहीं परंतु तिहारे प्राण पीडित होंय सो हम कैसे देखि सकें यातैं तुम चिंताकूं तजहु। आजही बनमाला तुमकूं मिलावेंगे। जैसे भोगी पुरुष बनके पुष्पनिकी माला कंठविषै पहरै अर

चंचल मनकूं अपने चञ्चल नेत्रनिकरि हरती भई। दोऊनिकी आंखें अर मन परस्पर लगे ॥ ४३ ॥ नेत्रनिकी वक्र चितवनकरि बनमाला राजा सुमुखके समर कहिये काम ताका उद्दीपन करती भई। स्नेहके भरे नेत्र दोनोंके तिनहीकरि हितके आलाप भये अर दोऊही विह्वल होय गये। सो जीभतैं बोलनेका अवसर न पाया ॥

भावार्थ—मन अर नेत्र तो दोऊके मिलि गये। अर नेत्रोंहीमें बतरावन होइ गई। बोलनेका अवसर दोउनिमें न भया। चित्त दोनोंके विह्वल भये ॥४५॥ वे दोऊ न छुटै ऐसा जो प्रेमका बंधन ताकरि बंधे स्नेहके शिखर आरूढ भये मनके अभिलाषका दुर्लभ फल जो संभोगका लाभ एकांतविषैं मिलाप ताका है अभिलाष जिनके ॥ ४६ ॥ महा अनुरक्त जो वह बनमाला ताका चित्त तो राजा लिया अर अपना चित्त बहि दिया। नेत्रनि हीमें यह लीला करि राजा नगरीतैं बाहिर बनमें गया। मानों राजा परस्पर मिलापकी साई दे गया अर ले गया वसंतके मुकुटतुल्य जमुनोत्तसनामा बन नंदन बन समान वहां नरेंद्र प्रवेश करता भया ॥ ४७ ॥ वह वन महा मनोग्य जाविषै नारेल दाडिम द्राक्ष कमरख नारंगी इत्यादि वृक्ष फल रहे हैं अर नागलता, माधवीलता इत्यादि अनेक लता फूलरही हैं ॥४१॥ सो राजा राणीनि सहित बनविषैं विहार करते भये। बहुरि अपने समान वयके जे मित्र महा अनुकूल कहिये सन्मुख राजानिके पुत्र तिन सहित रमता भया ॥५०॥ किंचित्काल उस रमणीक बनविषैं अनेक क्रीडायें करीं अर बहुत लोकनिकरि वह बन भरा है तोहू बनमाला विना शून्य भासता भया ॥५१॥ बनमालाके वियोगतैं राजा सुमुख चिंताकर दुर्मुख होता भया। विषयानुरागकर हरथा गया है हृदय जाका ऐसाही ये अंध राजा बनतैं नगरविषैं गया सो राजा। किंचित्काल सभाविषैं शून्यचित्त तिष्ठ्या ॥५२॥ फिर राजाकूं सुमतिनामा मंत्री एकांतविषैं बहुत विनयकर पूछता भया। हे प्रभो! आज चिंतावान् क्यों हो ॥ ५३ ॥ इकछत्र तिहारा राज्य अर सब प्रजा तुमकूं अनुरागी तिहारे राज्यकूं सब चाहें। अर तिहारे अनुरागकरि सब सुखी अर तिहारे प्रतापकर सब राजा तिहारी आज्ञा सिरपर धरै हैं। कोऊ तुमसूं बराबरी करणहारा नाहीं ॥ ५४ ॥ अर याचकनिकूं मनवांछित दानकर सब अर्थी

नवाय नमस्कार करे हैं। राजाकूं देख लोक आनंद कर भर गए हैं। ता समय स्त्रीनिके समूहमें एक स्त्री नेत्रनिकी अंजुलिकर नृपका रूप अमृत अति रुचकर पीवती भई अनेक स्त्रीनिके मध्यमें वह एक चित्तकी हरणहारी साक्षात् रति समान सो राजा हू निरखी ॥ ३२ ॥ जिसका मुख चंद्रसमान अर नेत्रयुगल कमलदल समान अर होंठ किंदूरी समान, कंठ कोयल समान, कटि केहरि समान ॥ ३३ ॥ अर कर कहिये हाथ चरण कहिये पैर सवही अंग प्रशंसा योग्य ॥ ३४ ॥ सो राजा देखकर अति अनुरागी भया अपने मनकी प्रेरी चंचल दृष्टि ताके वदन पर जायपड़ी सो राजा पीछे फेरवेकूं समर्थ न भया ॥ भावार्थ—नृपकी दृष्टि लागी सो पाछा न फिरै सो राजा अति अनुरक्त होय वाकी ओर चितेर रहा ॥ ३५ ॥ अपने मनमें विचारता भया ॥ जो यह कौनकी स्त्री है। अपने रूप पाशिकर मेरे मनकूं बांधै अर खेंचै है। यह नवयौवन मृगनेत्रा स्त्रीनिकी सृष्टिविषै अनुपम है ॥ ३६ ॥ यह मनकी हरणहारी जो न भोगूं तो मेरा नवयौवन ऐश्वर्य सर्व वृथा है ॥ ३७ ॥ परदाराका सेवन सकल जगतका वैर करना अर अति अयोग्य यह हू कठिन। अर मन विषयाभिलाष कर दौडा है ॥ ३८ ॥ उसका थांभना सो हू कठिन। ये दोऊही वातें अति विषम हैं। यह विचार कर राजाने लोकापवाद सहना तो अंगीकार किया अर मनको विषय विकारकर थांभ न सक्या। राजाका मन तापर अत्यंत आसक्त भया। तव ताके हरवैविषै बुद्धि करी। राजा मनकी व्यथा जीत न सक्या। जैसे सूर्य प्रभावंत है परंतु अस्त समय मंद हो जाय है। तैसे राजा लौकिक आचारका जानन हारा अर प्रकाशमान हुता तथापि कामके आताप कर मंद बुद्धि होय गया ॥ ४० ॥ अर वह बनमाला हू महा रूपवान सो राजा सुमुखके रूपकूं देखकर सिथल अंग होयगई। सो अपना मन थांभ न सकी। ताका मन भी अभिलाषके हिंडोला हिंडता भया ॥४१॥ वह अपने मनके अनुरागकूं वाहिर प्रगट दिखावती भई। कैसे हैं अनुराग भाव नानाप्रकारके स्पर्शके रस तिनका प्रगटपना सोई है फलका उदय जिनके दूरहीसे कटाक्षका चलावना अर राजाके रूपविषैं नेत्रनिका लगावना सो वह राजाके

तरुणपुरुष प्रीतकरि नानाप्रकार क्रीडा करते भये ॥ २१ ॥ हिरण जो हैं सो दूबके अंकुरे आप चरकर अपने मुखसे हिरणीकूं देता भया अर हिरणी दूबके अंकूरे हिरणकूं देती भई । सो वाके मुखका वाके प्रिय अर वाके मुखका वाके प्रिय ॥ २२ ॥ अर शल्यकी कहिये शालरि वाके पल्लव उल्हासरूप ताके ग्रासविषै है लालसा जिनकूं ऐसे गजकूं हथिणी अपनी सूंडकर ग्रास देती भई सो हथिनीके मुखके स्पर्श कर वे पल्लव गजनिकूं अति प्रिय लागे । वे हस्ति हथिनीनिके स्पर्शकरि आंधे होय रहे हैं ॥ २३ ॥ वसंत ऋतुविषै मधु कहिये मकरंद ताके पानकरि उन्मत्त भए भ्रमर मिष्ट शब्द करै हैं । तिनके शब्दकर वन शोभित होय रहा है । वे भ्रमर परस्पर शब्दकरते मानों वनकी सुगंधताकूं सूंघै हैं । भावार्थ—पुरुषनिकी सुगंधता अर भ्रमरनिकी गुंजार बनविषै विस्तर रही है अर कोयलतैं हू अधिक सुंदर कंठ जिनका ऐसी वा नगरीकी नारी मनोहर गीत गावतीं भई तिनकूं सुनकर कोयल जीती गई । मानों कोयल हू कामिनीकी भाषा सीख्या चाहै है ॥ २५ ॥ मधुर कहिये भ्रमर अर कोयल मिष्ट शब्दके उच्चारणकरि वसंतके यशगावै है, तहां औरनिकी कहा कथा ॥

भावार्थ—जाका यश पशुही गावैं तो मनुष्यनिकी कहा वात । या भांति सबही जिनके मनका हरणहारा वसंत समय जब आया तब राजा वनविषै विहारके अर्थ अपना मन करता भया । राजाका मन मदन कर विभ्रमकूं धरै है ॥ २७ ॥ राजा अद्भुत वस्त्राभरण पहिरे हस्ती पर आरूढ भया । अर गजकूं बहुत सिंगारा है नाना प्रकारके आभरण गजकूं पहराए हैं । अखंडमंडल जो चंद्रमा ता समान उज्वल छत्र राजाके सिरपर फिरै है ताकरि सूर्यकी प्रभा हू दब गई है ॥ २८ ॥ राजा अन्य राजानिके समूहकरि शोभित जैसे समुद्रके जलके प्रवाहकर पूरित । सो राजमहलतैं राजमार्ग होय वनमें जाता हुता । वंदीजननिके समूह विरद बखानते हुते ॥ २९ ॥ वह राजा प्रजाके हृदयविषै सदा वसै है । सो नगरकी नारी साक्षात् वसंतका स्वरूप भूपकूं देखती भई ॥ ३० ॥ नगरकी नर नारी सब राजाकूं आसीस दे हैं । जो तुम वृद्धिकूं प्राप्त होवो सदा आनंद रूप रहो । हाथ जोड़ सीस

शब्दरूप स्त्रीनिके सुंदर कोमल चरण तिनकर स्पर्शते संते नवीन निकसे जे पल्लव तिनकर शोभते भये। भावार्थ—अशोकवृक्ष स्त्रीनिके चरणस्पर्शकर फूले हैं। अर मोलश्री स्त्रीनिके मुखके मधुके अखंड कुरला तिनके पानकर पूर्ण भया है अर्थ जिनका सो पुष्पनिकर फूलती भई ॥१५॥

भावार्थ—मोलश्री नारीनिके वदनके मधुके कुरलानितैं प्रफुल्लित होय है अर कुरक जातिका वृक्ष भ्रमरनिके शब्दकरि महामनोहर है सो यौवनवान कामी पुरुष जे संयोगी हैं तिनकूं सुख उपजावता भया अर जो विरही हैं तिनकूं आतुरता उपजाता भया। जेते श्रुत कहिये शास्त्र सो विवेकीनिकूं रुचि उपजावै अर अविवेकीनिकूं अरुचि उपजावै ॥ १६ ॥ फूले तिलक जातिके जे वृक्ष तिलक समान शोभा ताकरि वनकी लक्ष्मीरूप वनिताकूं अतिशयपने करि पुष्पवती करते भये। कैसी है वनकी लक्ष्मीरूप वनिता पाटल जातिके जे वृक्ष तिनकी सुंगधताकरि महा सुंदर है ॥

भावार्थ—तिलकजातिके वृक्षोंकरि वनकी पंक्ति अति शोभित दीखै है। अर वनकी पंक्ति तो पाटलादि सुगंध वृक्षनिकरि महा सुंदर है, अर जैसे रूपवान वनिता पाटलहूसूं अधिक सुगंधता अंगविषैं धारै है ॥१७॥ तिलककरि अति मनोहर है अर वनविषैं सिंह केसरिजातिके वृक्षनि सिंहनिके केशनिकी छटाकी शोभाकूं धरै मानों विकसते नागवृक्ष तिनके समूहकी पंक्तिके जीतवेविषैं अर्थ विस्तारै है ॥ १८ ॥ जैसे सिंहके समूह वनविषैं नाग कहिये हस्ती तिनके जीतिवे अर्थ विचरै हैं। मधु कहिये वसंत सोई भया वल्लभ सो अपनी मालतीरूप वल्लभा घने दिननिके वियोगकरि सूकि गई हुती ताहि अपने मिलापकरि तत्काल प्रफुल्लित करता भया ॥१९॥ अर वसंतविषैं हिंडोले हींडनेकी क्रीडा ताविषैं आसक्त स्त्रीजन महासुंदर गीत गावती भई, हिंडोला ग्रामनामा जो राग ताकरि अनुरागी हैं कंठ अर अधर जिनके। महा शोभाकूं धरै वनिता वसंतविषै हिंडोला रागविषै गावती हिंडोलानिपरं झूलै हैं ॥ २० ॥ वनखंडविषैं वसंतसमय कैयक किये हैं उचित शृंगार जिनि अर स्त्री हैं समीप जिनके ऐसे

विस्तरै है तैसे यह पुरी बहुल दोषा कहिये अंधेरी रात्रि ताविषै हू रत्ननिकी कांति कर उद्योतकूं धरै है ॥ ५ ॥ ताका पति राजा सुमुख होता भया सो महा सुखी। अर जाके राजमें सकल प्रजा सुखी सो राजा सुमुखका प्रताप सर्व राजानि पर प्रगट होता भया जैसे सूर्य अपनी किरणनिकरि मंडलको प्रकाशरूप करै सब दिशानिमें सूर्यकी किरण विस्तरैं तैसैं राजा अपने सूर्य समान अपने कररूपी किरणनिकरि सर्वत्र उद्योत करता भया याका हाथ सबनिपर पड्या। सब याके वश भये ॥ ६ ॥ अर याका धनुष अपने गुण कहिये फिडच कर इंद्रधनुषकूं जीतता भया, कैसा है इंद्रधनुष जाके गुण कहिये फिडच नाहीं निर्गुण है अर वर्णशंकर दोषकर युक्त है जाविषै नाना प्रकारके वर्ण मिले हैं अर राजाका धनुष वर्णशंकर दोषतैं रहित है। अर गुणनिकर युक्त है।

भावार्थ जो जारजातक होय ताहि वर्णशंकर कहिये। सो इंद्रधनुष तो वर्णशंकरताके दोषकूं धरै है अर याका धनुष गुणरूप है दोषरूप नाहीं। अर इस राजाको कामकी उपमा दीजै। सो कामतो अनंक उसका रूप दृष्टिगोचर नाहीं, अर यह राजा महा सुंदर शरीर नवयोवन देखनेयोग्य अंग जाका सो काम याकी उपमा कैसैं पावै ? ॥८॥ सो राजा धर्मशास्त्रके अर्थविषैं प्रवीण अर विशेष कला विशेष गुण उनकूं धरै अर दुष्टनिका निग्रह अर सुजीवनिपर अनुग्रह करिवेविषैं समर्थ अर प्रजाका पालक ॥ ९ ॥ सो राजा छहऋतुके भोग भोगवै जो ऋतु आवै तामें ताहीकी सामिग्री पूर्ण होय ॥ कैसा है राजा नहीं है धर्म अर्थकी कमी जाके अनेक जे राणी तेई भई कमलवनकी पंक्ति तिनविषैं भ्रमर होय रह्या है। अथानंतर-वसंतऋतु आय प्राप्त भई। तब राजा या वसंतऋतुके विलासका उद्यमी भया। वननिकी पंक्ति पुष्प अर पल्लव तिनकी शोभाकर मनोहर भई अर आम्रोंके वृक्ष नवीन आरक्त कोंपल तिनकर संयुक्त लोकनिका चित्त हरते भये। मानों ये वन नाना प्रकारके वृक्षनिकर फले फूले राजा सुमुखकूं वनमालाके अनुरागहीके बढावनहारे हैं। अर केसूलनिके फूलनिके समूह अग्नि ज्वाला समान दैदीप्यमान ऐसे भासते भये मानों वियोगिनीकूं विरहकी अग्निकर जलावै हैं। अर अशोकवृक्ष घूघरानिके

तीसरा अधिकार।

हरिवंशकी उत्पत्ति

अथानंतर—गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतें कहते भये कि हे श्रेणिक! अब तू हरिवंशकी उत्पत्ति सुनि। वत्सनामा देश सब देशनिमें कैसा सोहै है॥ जैसे गायके दोहनेके समय वत्स कहिये वछरा सोहै तैसा सोहै है॥ १॥ ता देशविषै कोशांबीनामा नगरी अति गंभीर सोहै है जैसे शरीरके मध्य नाभी है, सो नगरी यमुनाके तीर वसै है। सो यमुना श्याम स्निग्ध जलकरि सोहै है ताविषैं राजाके मंदिरका प्रतिबिंब सोहै है॥ २॥ सो वह पुरी वप्र कहिये परकोटा अर प्राकार कहिये कोट अर परिखा कहिये खाई तिनकरि वेष्टित पुरी कैसी सोहै है जैसी वस्त्राभरणकरि मंडित स्त्री सोहै। कैसी है स्त्री नितंब अर स्तनके भारकरि श्रमरूप भई मंद मंद गमन करै है या पुरीविषै विवेकी लोक निरखि मंद मंद गमन करै हैं॥ ३॥ यह पुरी वर्षा ऋतुकी अंधेरी रात्रिविषै अभिसारिका नायिकाकी उपमाकूं भजै है। जो स्त्री चलायकरि परपुरुषपै जाय ताहि अभिसारिका कहिये। अभिसारिकाके रतननिके नानाप्रकार आभूषण अर नानाप्रकारके अथवा रत्ननिकरि मंडित जे अंवर कहिये वस्त्र तिनिकूं धरै है अर यह पुरी वर्षाऋतुविषै नानाप्रकारके रतननिकरि मंडित जे अंवर कहिये आकाशविषै उद्योतकी धरणहारी अर अभिसारिका वर्षाकी अंधेरी रात्रिविषै अपने मुखकी चांदनीकरि प्रकाश करै है। अर यह पुरी मंदिररूप मुखकरि आकाशविषै उद्योत करै है, जाके महल उच्चताकरि मेघमंडलकूं स्पर्शे हैं। यह पुरी स्निग्धा कहिये स्नेहकी भरी है॥ ४॥ वह पुरी अंधेरी रात्रिविषै दोषाकर जो चंद्रमा ताका किरणनिकरि नाहीं प्राप्त भया है प्रकाश जाविषैं तोहू रत्ननिकी ज्योतिके समूहकरि प्रकाशरूप होय रही हैं जैसैं महासती पतिव्रता दोषां करि जो कुशीले पुरुषनिके कर नाहीं पाया है स्पर्श जाने अर शीलरूप रत्नके प्रकाशकरि जगतविषै किया उद्योत जिनि संसारकी वहुल दोषा कहिये अनेक दोषनिकी भरी नारी तिनविषै पतिव्रता शोभा पाय है वाका सौभाग्य पृथिवीमें

बहुरि ऋषभकूं मुक्ति गये पचास लाख कोडि सागर व्यतीत भये तव सर्वार्थ सिद्धितैं दूजे तीर्थंकर अजितनाथ प्रगट भये सो जैसा पंच कल्याणकका वर्णन ऋषभका भया तैसा अजितनाथका जानहु ॥ २६ ॥ ताके समय दूजा चक्रवर्ती सगर भया जैसा निधि रत्नका स्वामी भरत प्रसिद्ध वैसाही सगर ॥ २७ ॥ ताके साठ हजार पुत्र भये महा रमणीक है चेष्टा जिनकी अर भाइनिमें परस्पर अधिक प्रीति सबनिमें वडेका नाम जन्हुकुमार सो ये सब कैलाशमें जाय पहिले तो कैलाशके आठ पग तय किये फिर दंडरत्नकरि कैलाशकी चौगिरद पृथ्वीकूं खोदते भये सो कोपकरि नागेंद्रने भस्म किये ॥ २८ ॥ तव सगर चक्रवर्ती संसारकी वृत्तिका वेत्ता पुत्रनिका शोक तजि अजितनाथके समीप गया जिनदीक्षा धरि कर्मनिका नाशकर सिद्धलोक गये ॥ २९ ॥ फिर संभवनाथ भये बहुरि अभिनन्दन ता पीछे सुमति ता पीछे पद्म ॥ ३० ॥ ता पीछे सुपार्श्व ता पीछे चंद्रप्रभ ता पीछे पुष्पदंत ता पीछे दशवें शीतलनाथ ॥ ३१ ॥ यह इक्ष्वाकुवंश प्रथम प्रगट भया इक्ष्वाकु मध्य सूर्यवंश अर सोमवंश प्रगट भये अर कुरुवंश उग्रवंश नाथवंश ऋषभके समयही भये । अर ऋषियनिके समूह ऋषभहीसे प्रवर्ते या भरत क्षेत्रविषैं सागर अठारा कोडाकोडी भोगभूमि प्रवर्ती ताविषैं महाव्रत अणुव्रतनिकी प्रवृत्ति न भई अर वर्ण आश्रम न भये ऋषभके समयतैं क्षत्रीनिके वर्ण भये अर यति श्रावकके धर्म विस्तरे अर भूमिगोचरिनिके अर विद्याधरनिके वंश मैं तोहि कहे ॥ ३२ ॥ याभांति गौतम गणधर राजा श्रेणिकतैं कही अर शीतलनाथके समय हरिवंश प्रगट्या । ताकी कथा कहूं हूं सो तू सुन । कैसा है शीतलनाथका समय शुद्ध कहिये पवित्र है अर उज्वल केवलज्ञानरूप दीपकके उद्योतकरि प्रकाशकारी भया जगतविषैं निरंतर इंद्रादिक देवनिका आगम भया । समवशरणविषैं ता समय क्षत्रीनिके वंशविषैं हरिवंश प्रगट्या सो जैसा जिनशासनविषैं सत्यरूप वर्णन किया है तैसा तू सुन ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ इक्ष्वाकुवंशवर्णनो नाम त्रयोदश सर्गः ॥ १३ ॥

ताके महाबल ताके अतिबल ताके अमृतबल सुभद्र ताके सागर अर ताके भद्र [illegible]
प्रभुतेज ताके तेजस्वी ताके तपन ताके प्रतापवान ताके अतिवीर्य ताके सुवीर्य ताके [illegible]
विक्रम ताके सूर्य ताके इन्द्रदुमन ताके महेंद्रजित ॥ १० ॥ ताके प्रभु ताके विभु ताके [illegible] ताके [illegible]
ताके वृषभध्वज ताके गरुडांक ताके मृगांक इत्यादि पृथ्वीपति अनुक्रम कर सूर्यवंशविषैं भये । [illegible]
जिनकी वे पुत्रनिविषैं राज्यका भार थाप तप धर निर्वाण पधारे, इक्ष्वाकुवंशविषैं सूर्यवंशी भये सो [illegible]
यह धारि निर्वाण पधारे तव एक राजा पाटधारी अहमिंद्रपदकूं प्राप्त भया ॥ १३ ॥ अस्सी राजा मुक्ति गये तिनके
अंतर एक इंद्रपदका धारक भया ॥ १४ ॥ वे धीर राजधुराकूं तजकरि तपकी धुरा धरी, कई स्वर्ग गये, कैयक
मोक्ष गये याभांति सूर्यवंशके उपजे अनेक भूप शुभगति गये इत्यादि इक्ष्वाकुवंशमें अर्ककीर्तिकी सन्तानके
सूर्यवंशी राजा कहे अर भरतका दूजा भाई वाहूबली ताके पुत्र सोमजित तातैं सोमवंश कहाया ताका पुत्र महा-
वल ॥ १६ ॥ ताके सुवल ताके भुजवल इत्यादि सोमवंशी अनेक राजा मोक्षकूं प्राप्त भये पचास लाख कोडि
सागर ऋषभका तीर्थ प्रवर्त्या ॥ १० ॥ वहुरि अजितनाथ भये इक्ष्वाकु वंशविषैं दो वंश निपजे भरतके पुत्रसे
सूर्यवंश अर वाहूवलीके पुत्रसे सोमवंश सो दोऊ ही वंशनिमें वहुत राजा मुक्ति पधारे अर उग्रवंशी कुरुवंशी
अनेक भूपति मोक्ष गये अर स्वर्गलोक गये ॥ १९ ॥ नमिनामा विद्याधर ताके पुत्र रत्नमाली भया ताके रत्नवज्र
ताके रत्नरथ ताके रत्नचिन्ह ताके चन्द्ररथ ताके वज्रजंघ ताके वज्रसैन ताके वज्रदंड ताके वज्रध्वज ताके वज्रायुध
ताके वज्र ताके सुवज्र ताके वज्रभद्र ॥ २२ ॥ ताके वज्राभ ताके वज्रवाहु ताके वज्रांक ताके वज्रसुन्दर ताके
वज्रमुख ताके वज्रपाणि ताके वज्रभानु ताके वज्रवान ॥ २३ ॥ ताके विद्युन्मुख ताके सुमुख ताके विद्युद्दंष्ट्र ताके
विद्युत्वान ताके विद्युत्प्रभ ताके विद्युद्वेग ताके विद्युत ॥ २४ ॥ इत्यादि विद्याधरनिके अधिपति अपने पुत्रनिकूं
राज्य देय तप धार सिद्ध भये अर कैयक स्वर्ग गये ऋषभके तीर्थविषैं अनेक नृपति निवृत्ति भये ॥ २५ ॥

कर देवाधिदेवकी देहकूं पुष्प सुगंध धूप निर्मल अक्षत दीप जल चन्दन फलादि द्रव्यनिकरि पूजि निर्वाण कल्याणकका समय साध यही प्रार्थना करते भये जो जिनगुणकी संपतिरूप फल ताकी प्राप्ति हमको होहु ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ ऋषभेश्वरनिर्वाणगमनवर्णननाम द्वादशसर्गः ॥ १२ ॥



दूसरा अधिकार।

राजानिके वंशकी उत्पत्ति।

अथानंतर—गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहते भये कि हे श्रेणिक! अब तू राजानिके वंशकी उत्पत्ति सुन। ऋषभदेवकूं निर्माण गये पीछे कैयक दिन भरतने राज किया, बहुरि अर्ककीर्तिकूं राज्याभिषेक कराय आप जिनदीक्षा आदरी। कैसी है जिनदीक्षा परिग्रह कहिये आत्मा हीका है अंगीकार जाविषैं बहुरि कैसी है जिनदीक्षा उग्र कहिये अति कठिन है बहुरि जाहि महा धीर ही धार सकै हैं। अर कैसी है अति चंचल जे इंद्रीरूप मृग तिनके रोकवेकूं वागुरा कहिए पाशि समान है। भरतने पंचमुष्टीनिकरि केश उपारे मानो बंधकी स्थिति ही उपारी लौंच किये पीछे एक मुहूर्तकालके अंत तत्काल केवलज्ञान उपज्या ॥ २ ॥ तब बत्तीस इंद्र केवलपूजा-करि (वत्तीस इंद्रमें स्वर्गके वारह, भवनपतियोंके दश, व्यंतरोंके आठ अर सूर्य चन्द्र ये वत्तीस) भरत भगवान मोक्षमार्गके दीपकने चिरकाल पृथ्वीविषैं विहार किया ॥ ४ ॥ भरतका आयु चौरासी लाख पूर्व तामें सतहत्तर लाख पूर्वतो कुमारकालमें गए छै लाख पूर्व चक्रवर्ती पदमें रहे अर लाख पूर्व केवल पाये पीछे पृथ्वीपर विहार कर जगतके जीव संवोधे अर मुनि भये पीछे छद्मस्थ अवस्था तो अंतमुहूर्त रही ॥ ५ ॥ बहुरि वृषभसेनादि सहित कैलास पर्वतसे अघातिया कर्मनिका क्षयकरि मोक्ष पधारे बहुरि भरतकापुत्र अर्ककीर्ति ताके यशश्रुत पुत्र भया सो अर्ककीर्ति अपने पुत्रनिकूं राज्य देय मुनि होय मोक्ष गया बहुरि ताके बलनामा पुत्र भया ताके सुबल

सुबिशाल वज्र बैर चंद्रसूर मेघेश्वर कच्छ महाकच्छ सुकच्छ अतिकच्छ अतिबल भट्टावलि नमि विनमि भद्रबल नंदी महानुभाव नंदीमित्र कामदेव अनुपम ये चौरासी गणधर जिनवरके भये। सात प्रकारके ऋषि ऋषभके समवसरणमें होते भये ॥१७१॥ सैंतालीस सौ पचास महाभाग चतुर्दश पूर्वके धारक भये ॥७२॥ अर इकतालीस सौ पचास शिष्य मुनि होते भये। अर नवहजार अवधिज्ञानी, बीस हजार केवली अर बीसहजार छैसौ विक्रिया रिद्धिके धारक जे अपनी विक्रियाकरि चाहें तो इंद्रादिक देवनिकूं जीतैं अर बारह हजार सात सौ पचास विपुलमति मनःपर्ययके धारक अर वाद ऋद्धिके धारक जिनसे वाद कर कोऊ न जीतै वे भी बारहहजार साढे सातसौ ॥७७॥ अर पचास हजार आर्य्यका अर तीन लाख श्रावक अर श्राविका पांच लाख ॥७८॥ भगवानका आयु चौरासी लाखपूर्व तिनमें लाख पूर्व बाकी रहे तब मुनि भये एक हजारवर्ष तप किया हजारवर्ष घाट एक लाख पूर्व केवलज्ञान संयुक्त पृथ्वीविषैं विहार किया अर अनेक भव्य भवसागरतैं तारे ॥ ७९ ॥ या भांति संसार सागरके तारवेकूं समर्थ रत्नत्रयरूप भावतीर्थ ताहि प्रगट किया, कल्पके अंत तक पृथ्वीमें प्रवर्त्तेगा। तीन भुवनका हितकारी धर्म ताहि दृढकर कैलाशकूं तीर्थ करवे अर्थ तीर्थनाथ कैलाशपर आरोहण किया, भगवानका विहार अर स्थिति स्वतःस्वभाव है इच्छापूर्वक नाहीं जैसें पूर्ण वृषका सूर्य निषधाचल पर्वत पर तिष्ठै है तैसे जगतका भानु भगवान मुनिगण अर सुर समूह कर पूज्य कैलाश पर विराजे ॥ ८० ॥ ता पर्वतविषैं जिनेंद्र स्फटिकमणिकी मनोग्य महा मनोहर शिला ताविषै तिष्ठ योगनिका निरोध किया अर चार अघातिया कर्मनिकूं खपाय दश हजार योगींद्र सहित जिनराज जगतके शिखर पधारे। कैसा है जगत् शिखर अनंत सुख ताका स्थानक है अर कैसे हैं जिनेंद्र निर्मल कल्पवृक्षकी मालाके धारणहारे जो सुरेंद्र तिनकर पूजनीक हैं अथवा निर्मल कहिये शब्दार्थ मल कर वर्जित शुद्ध स्निग्ध दि अनेक जे छंद तिन कर करै हैं भव्य जीव स्तुति जिनकी ॥ ८१ ॥ तीन जगतके गुरु भगवान निर्वाण पधारे तब मुनियोंके समूह मौन पकड दूर जा बैठे अर देवनिके समूह अर चक्रवर्त्यादिक समस्त राजादिक आय-

कोठेमें बेठा अर ये भरतकी राणी सुभद्रादिक स्त्रीनिके कोठेमें बैठी हैं ॥ ४३ ॥ हे वल्लभे ! यह आश्चर्य देखिये सिंह गजादिक गरुड सर्पादिक परस्पर विरोधी तिर्यंच प्रभुके प्रतापसे शांत भये मित्रकी न्याईं एकत्र तिष्ठे हैं ॥ ४४ ॥ याभांति जयकुमार बिमानमें बैठ्या स्त्रीके ताईं समवसरणकी शोभा आकाशतैं दिखाई बहुरि विमानतैं उतरि समवशरणमें आया प्रभुकूं प्रणामकरि चक्रवर्तीके पास महाविनय युक्त आय तिष्ठ्या, जयकुमार महानीतिका वेत्ता विवेकी है अर सुलोचना भरतकी राणी जो सुभद्रा ताके समीप जाय बैठी तहां जयकुमार विस्तार सहित कथारूपी अमृतका पानकर मोहके अभावतैं ज्ञानके लाभकूं प्राप्त भया ॥ ४७ ॥ तब गाढा जो स्नेहपाश ताकूं छेदकर सुलोचनाकूं प्रतिबोध अपने पुत्र अनंतवीर्यकूं राज देय छोटे भाई विजयकुमार सहित जिनेश्वरके समीप यति भया । चक्रवर्तीने स्नेहके वश कर घनाही मने किया परन्तु न रहा । जयकुमारके लार एकसौ आठ राजा पुत्र मित्र कलत्रनिकूं तज राज भोगतैं विरक्त होय वीतरागके मार्गविषैं प्रवर्ते अर सुलोचना संसारका चरित्र असार जान अपनी सखीनि सहित एक श्वेत वस्त्रधार ब्राह्मी सुंदरीके समीप आर्या भई ॥ ५१ ॥ जयकुमार द्वादशांगका धारक इकहत्तरवां गणधर भया अर सुलोचना आर्यका ग्यारह अंगकी धारक भई ॥ ५२ ॥ अनेक राजा भूमिगोचरी अर विद्याधर महाव्रतके धारक भये तिनकूं राजलक्ष्मी असुहावनी लागी जैसैं दुराचारणी स्त्री पतीकूं अभावनी लागे ॥५३॥ प्रभुके चौरासी गणधर अर चौरासी हजार मुनि होते भये । गणधरनिके नाम वृषसेन, कुंभ, दृढरथ, शत्रुगमन, देवशर्मा, धनदेव, नंदन सोमदत्त, सुरदत्त, वायशर्मा, सुवाहु, देवाग्नि, अग्निदेव, अग्निभूत, तेजस्वी, अग्निमित्र, हलधर, महीधर, माहेंद्र, वासुदेव वसुंधर अचल, मेरुभूति सर्वसह यज्ञ सर्वगुप्त सर्वपर सर्वदेव विजय विजयगुप्त विजयमित्र विजयश्री परोक्ष अपराजित वसुमित्र वसुसेण साधुसेण सत्यदेव सत्यदेव सर्वगुप्त मित्र सत्यवान विनित संवर ऋषिगुप्त ऋषिदत्त यज्ञदेव यज्ञगुप्त यज्ञमित्र यज्ञदत्त स्वयंभू भागदत्त भागफल्गु गुप्तफल्गु मित्रफल्गु प्रजापति सत्ययश वरुण धनवाहिक महेंद्रदत्त तेजोराशी महारथ विनयश्रुत महाबल

कर्मभूमिविषै उपजा अर विद्याके बलकरि भोगभूमिविषैं क्रीडा करता भया, धनी धिराणी दोऊ ही कलागुणकरि चतुर सो यथेष्ट अढाई द्वीपविषैं रमते भये ॥ २९ ॥ एक दिन इंद्रके मुख इनकी प्रशंसा सुनकरि रतिप्रभ नामा देव अपनी देवीसहित सुमेरुविषैं इनकी परीक्षा करी सो इन दोउनिकूं महा शीलवान जान पूजता भया ॥ ३० ॥ जितनी शुद्धता है उनमें शीलकी शुद्धता महा प्रशंसा योग्य है शीलकी शुद्धताकरि जे पवित्र हैं तिन मनुष्यनिके देव किंकर हैं ॥ ३१ ॥ वहुत वर्ष जयकुमार अपने छोटे भाई विजय सहित पृथ्वीका राज्य करता भया। सुंदर है स्त्री जाके सो देवनि कैसे भोग भोगता भया बहुत सुखी है प्रजा जाकी ॥३२॥ एक दिन जयकुमार सुलोचना सहित सुमेरादिक अनेक गिरि पर क्रीडाकर जगत गुरुकी वंदनाके अर्थ आया सो प्रभुकी बंदनाकरि अपनी प्रियाकूं कहता भया, हे प्रिये! त्रैलोक्यके पति सुर असुर मनुष्य तिर्यंचनिकरि मंडित अष्ट प्रातिहार्य अर चौंतीस अतिशयकरि युक्त धर्मके कर्ता जगतके ईश्वर सोहै हैं अर ये चतुरनिकायके देव सो धर्म इंद्र आदि प्रभुकी सेवा करैं हैं अर इनकी देवी जिनेंद्रकूं नमस्कार करै हैं ॥ ३६ ॥ अर ये वृषभसेन आदि नानाऋद्धिकर युक्त प्रभुके निकट मुनिनकी सभामें सत्तर गणधर हैं। भावार्थ—प्रभुके गणधर चौरासी हैं परंतु जादिन जयकुमारने दीक्षा लीनी तादिन गणधर सत्तर ही हुते इकहत्तरवें ये भये अर जयकुमार सुलोचनासूं कहै हैं हे कांते! यह बाहुबली केवली अपने भाई जे मुनी तिनसहित ऐसा सोहै है जैसा अर वृक्षनिकरि बडा वृक्ष सोहै ॥ ३८ ॥ हे देवी! यह राजा सोमप्रभ हमारा पिता है अपने छोटे भाई श्रेयांस सहित मुनि भया तपरूप लक्ष्मीकर वेढ्या बहुत सोहै है ॥ ३९ ॥ अर यह तेरा पिता अकंपन अपने हजार पुत्रनिकर सहित यति भया सो मुनियोंकी सभामें विराज्या है, तपरूप लक्ष्मीकरि मंडित महातपविषैं तिष्ठ्या है अर यह दुर्मर्षण दुर्मुख आदि राजा तेरे स्वयंवरविषैं युद्धके कर्ता शांत बुद्धि होय जिन भाषित तप करै हैं ॥४१॥ अर ये ब्राह्मी सुन्दरी दोनों प्रभुकी पुत्री समस्त आर्यकानिकी गुराणी महातप करैं हैं, कुमार अवस्थाहीमें जिन मदनका अंत किया ॥४२॥ ये भरत अनेक राजानिसहित मनुष्योंके

पुरविषैं कौतुक भया, जो ये कहा कहैं हैं। तब उनके संदेह निवारवेके अर्थ सुलोचना जयकुमारकी आज्ञा लेय अपने प्रीतमके पूर्वले भव कहती भई। सुख अर दुःखके उदयकरि मिश्रित दोउनिका चरित्र पूर्वले चार भवका सुलोचना कहती भई। पहिले भव पतिका नाम सुकांत प्रियाका नाम रतिवेगा। अर इनका शत्रु भवदेव जाका नाम लोक उष्ट्रग्रीव कहै हैं ताने इन दोउनिकूं अग्निविषैं दग्ध किये ॥ १८ ॥ बहुरि वाकूं शक्तिषेणके सामंतनिने मारया अर अग्निहीमें जलाया सो मरकरि मंजार भया। अर वे पति पत्नी परेवा परेवी भये। सो बनमें विलावने भखे ताके भक्षणविषैं दुःखसे मरण भया सो सुलोचनाने सब बृत्तांत कहा बहुरि कबूतर कबूतरी मुनिदानकी अनुमोदनाकरि हिरण्यवर्मा प्रभावती नामा विद्याधर विद्याधरी भये। अर वह वैरी विलाव मरकरि विद्युद्वेग नामा चोर भया। सो वे राजा राणी विद्याधर पदकी विभूति तज मुनि अर्यिका भये हुते सो वा वैरी चोरने फिर भी मारे सो मुनि आर्जिका तो स्वर्गविषैं देव देवी भये अर ता चोरकूं राजाने पकरया सो लक्षागृहमें जलाया मरण समय चाण्डालके उपदेशसे चोरकूं ज्ञान उपज्या, परंतु मुनि हत्याके पूर्वपापसे पहिले नर्क गया बहुरि ज्ञानके प्रतापतैं नर्कतैं निकसि भीमनामा वणिक पुत्र होय मुनिव्रतधारे। वे देव देवी क्रीडाके अर्थ मध्यलोकमें आये हुते सो भीमनामा मुनिका दर्शन भया तब देवधर्मका स्वरूप पूछ्या। ताने पूर्व भवका चरित्र कहा, सो परस्पर सुन कर निःशल्य भये। भीम मुनि तो वाही भवसे निर्वाण गया ॥१२॥ अर देव देवी स्वर्गसे चय जयकुमार सुलोचना भये, ये पूर्व भवका चरित्र देख्या सुण्या अनुभया सो सुलोचनाने विस्तारसे कह्या ॥ २३ ॥ बहुरि श्रीपाल चक्रवर्तिका चरित्र जयकुमारकी आज्ञातैं सुलोचनाने विस्तारसे कह्या। सो सुनकर सब रणवास आश्चर्यकूं प्राप्त भया ॥ २४ ॥ पांच भवका संबंध प्रिया अर प्रीतमका ताके स्मरणतैं पूर्वभवकी विद्या दोउनिकूं सिद्धभई सो विद्याके प्रभावकरि दोऊ अढाई द्वीपविषैं विहार करते भये ॥ २५ ॥ जिनेंद्रकी वंदना पूर्वक धर्म अर्थ कामको पोषते सुमेरुके कंदराविषैं दोऊ रमते भये ॥ २७ ॥ कुलाचलनिके तट जहां किन्नर देवनिके मनोहर गीतविषै जो सुंदर प्रिया सहित प्रीतम रमते भये ॥१२८॥

अथानंतर—चक्रेश्वर जिनेश्वरकूं प्रणामकरि त्रिषष्ठिशलाका पुरुषनिके पुराण विस्तारसहित सुनता भया अर चौबी-
स तीर्थंकरनिकी वंदनाके अर्थ यह महाभाग घरनिके द्वारवंदन माला कराता भया। सो एक दिन चक्रवर्ति जिनेंद्रके
समवसरणमें दर्शनकूं गया । सो साथ विवर्द्धन कुमारादिक पुत्र गये हुते। तिन समवसरणकी विभूति देख आश्च-
र्यकूं प्राप्त भये। पुत्र चक्रवर्तिके विवर्द्धन आदि राजकुमार नौ सौ तेईस नित्यनिगोदके निकसे हैं। ये अनादि
मिथ्यादृष्टि सदा काल नित्य निगोदके निवासी स्थावर कायविषै क्लेशनिकूं पावें, कदेही त्रस योनि इनि न पाई
सो प्रभुका दर्शन करि अतिशयकूं पाय तत्काल संयमी भए ॥ ५ ॥ तिन पुत्रनिकी प्रशंसा कर अर जिन सा्श-
नकी अद्भुत महिमा जान साधुनिके संघकूं नमस्कार कर पीछे अयोध्यापुरी आया। हर्षित है चित्त जाका ॥ ६ ॥
लोकनिका पालक भरतेश्वर छहखंडका राज करै, सो सुखसे वहुत काल बीते। धर्म, अर्थ, काम मोक्षके ज्ञान रूप
उत्तम जलकर पखाला है चित्त जाका ॥७॥ भरतके राजमें जयकुमारका सुलोचनासे विवाह भया स्वयंवरके आरंभ
विषैं भूचर खेचर सव ही आए। तथा भरतेश्वरके पुत्र अर्ककीर्तिने जयकुमारसे युद्ध किया सो जयकुमार जीता
चक्रीके पुत्रको वांधा अर छोडा अर बहुत स्तुति करी अर चक्रवर्तिने उसकी प्रशंसा करी । राजा सोमप्रभका
पुत्र राजा अकंपनकी पुत्रीका पति महा योधा चक्रवर्तिका महा उमराव चक्रवर्तिसे आज्ञा पाय हस्तिनापुर गया।
सो एक दिन राजमंदिरमें बैठा हुता सो सुलोचना आदि राणी समीप हुती ता समय आकाशविषैं विद्याधर विद्या-
धरीके युगलको देख जयकुमार मूर्छित भया ॥ अर अंतःपुरकी स्त्री शीतोपचार करि मूर्छा निवारी । तव
सचेत होय यह वचन कहता भया। जो हा प्रभावती कहां गई ॥ ११ ॥ जयकुमारकूं जातिस्मरण भया उसी समय
सुलोचनाकूं भी कवूतरी कवूतरको क्रीडा करते देख जातिस्मरण उपज्या। सो मूर्छित होय गई सो फिर सचेत
होय हाय हिरण्यवर्मा यह नाम कहती उठी तव जयकुमार बोला यह हिरण्यवर्मा मैं जव सुलोचना कही वह
प्रभावती मैं ॥१४॥ पूर्वला विद्याधरका भव उसे प्रगट जान दोऊ अति हर्षित भए ॥ १५ ॥ यह वार्ता सुन अंतः-

कोटि हस्ती, तीन कोटि गाय कामधेनु समान। अर पवनसे अधिक चाल चले ऐसे अठारह कोटि अश्व। अर चौरासी लाख मदोन्मत्त कुंजर। अर चौरासी लाख ही रथ ॥ २९ ॥ तथा विवर्धन कुमार अर अर्ककीर्ति। अर निन्यानवे हजार चित्रकार आदि पांचसौ पुत्र चरमशरीरी अर भाजन भोजन शय्या सेना वाहन, आसन, निधि, रत्न, नगर, नाट्य। ये दशांग भोगनिका भोक्ता अर सोलह हजार सेवक चक्रीके शरीरकी सेवा करैं। ये महा हितु सेवामें सदा सावधान महा चतुर ॥ ३२ ॥ ऐसी विभव कर युक्त हैं चक्रवर्ती तोहू शास्त्रके अर्थ करि निपुण है बुद्धि जाकी सो सदा धर्महीके विचारमें ही काल क्षेप करता भया, बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजादिकोंका गर्व अपनी विभूति कर हरता भया अर आपके रंचकमात्र गर्व नाहीं। उर विषैं श्रीवत्सलक्षण कर शोभित। अर शरीर चौसठ लक्षणनि करि मंडित चक्रवर्तियोंमें आदि। जिसकी संपदाविषै इन्द्रकी संपदा अल्प दीखै जाकी विभूति कहां लग वर्णन करैं ॥ ३५ ॥ ऋषभ भगवान उनके पुत्र महाभाग भरत जब नीति कर भरतक्षेत्रकी रक्षा करता भया तब भूमिमें रंच मात्र हू दुःख न रहा। अपने अखंड पौरुष करि षट्खंडकी रक्षा करी ॥ ३६ ॥ जिसके राज्यमें प्रजा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष विषै यथेष्ट अनुरागी भये। निरंतर विघ्न रहित सुखसों रमते भये ॥३७॥ वह भूपोंका भूप अपनी लक्ष्मीकरि पूर्वोपार्जित धर्मका फल सृष्टिकूं दिखाता भया, बडे पुरुष कौनको धर्मके दिखावनहारे न होंय ॥३८॥ सबहीको धर्मका अतिशय दिखावें। वह भरत लक्ष्मीकरि इन्द्र समान अपने मनकी वृति सम्यक्दर्शन रूप रत्न करि शोभित करता भया। कैसा है भरत महागुणोंकी निधि है अर पूर्वोपार्जित जिनमार्गका दिखाया धर्म ताके महात्म्यकरि लोकनिकूं कल्पवृक्ष समान मनवांछित फलका दाता है अर पुरुषार्थ करि पूर्ण है शार्दूल समान है पराक्रम जाका ॥ ३९ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभदेवकेवलज्ञानचक्रिकादिग्विजयवर्णनो नाम एकादश सर्गः ॥

भेद जिनि। यह निरूपण किया ॥ १५ ॥ तीजी पांडुकनिधि सो सकल जातिके धान्य, शालि यव गेहूं इत्यादि सर्व धान्य, अर कडवा, कषायला, चिरपरा, खारा खट्टा, मीठा सर्व रस देय। सव बस्तु भोजनकी सामग्री यामें है ॥ १६ ॥ चौथी निधि माणवकनामा सो वखतर खड्ग, खेट, बाण शक्ति, धनुष चक्रादि अनेक आयुध देय ॥ १७ ॥ पाचवीं सर्पनाम निधि सो सेज आसन, दुलाई इत्यादि गृहस्थ योग्य नाना प्रकारकी वस्तु भोजन देय सकल भाजन जिसमें पाइये ॥ १८ ॥ छठी सर्व रत्ननामा निधि सो समस्त रत्नोंकरि पूर्ण है। ऊंची है शिखा जिनकी ऐसी रत्ननिकी राशि जाविषैं वहुत वडी है। इंद्रनील, महानील वज्र वैडूर्य पद्मराग मरकत इत्यादि अनेक मणियनिकी खान यह निधि है ॥ १९ ॥ सातवीं शंखनामानिधि भेरी, शंख, नगारे, वीणा, झांझ, झालरी मृदंग आदि अनेक जातिके वादित्र देय। यह निधि वादित्रनिकरि पूर्ण है ॥२०॥ यह आठवीं पद्मनामानिधि सो सकल जातिके वस्त्र देय। पाटंवर, वीणा, महानेत्र कुकूल पस्मी कंबलादिक नाना जातिके नाना भांतिके रंगके समस्त वस्त्र इस निधिमें हैं ॥ २१ ॥ पिंगलनामा नवमी निधि सो रत्न स्वर्णादिकके सकल आभूषण देय स्त्री अर पुरुष को तथा हाथी घोडोंके सकल आभूषण जो चाहिए सो दे। कटुक कहिए कडे कटिमेखला, केयूर हार, अंगद, मुकुट इत्यादि सकल आभूषणनिकी खानकी यह निधि है इनका कथन किया ॥ २२ ॥ ये नवनिधियें कामवृष्टि नामा गृहपतिके हाथ हैं। सदा चक्रवर्तीकी मनबांछित अर्थ निपजावें हैं ॥ २३ ॥ अर चक्रवर्तीके तीन सौ साठ रसोईदार हैं। जो निरंतर चांवल आदि कल्याण आहार निपजावें हैं ॥ २४ ॥ हजार चावल भरा एक ग्रास। सो वत्तीस वत्तीस ग्रास चक्रवर्ती लेय। अर पटरानी सुभद्रा चक्रवर्ती की रसोईके एक ग्रासमें तृप्त। अर एक ग्रास औरोंके अर्थ ॥

भावार्थ—चक्रवर्तीका आहार अति गरिष्ठ है। सो पटराणीको एकही ग्रास घना अर एक ग्रास घनोंको तृप्ति करे ॥ २५ ॥ वत्तीस हजार राजा मुकुटवंध सेवा करें। अर बत्तीस हजार देश। अर छयानवे हजार राणी अर

अंगसे लिपट गई ॥१००॥ लताको दूर करती जे विद्याधरी तिन करि महामुनि योगविषै स्थिर हरित मूर्ति ऐसा सोहता भया जैसा हरित वर्ण मरकत मणिका पर्वत सोहै है, वर्ष दिनके अंत भरतने आय पूजाकरि प्रणाम किया ताही समय घातिया कर्मका अंतकर वाहूवली केवली भया गंध कुटी आदि केवल अतिशय प्रगट भए दिव्यध्वनि करि ऋषिकी नाईं जगतकूं संवोधता भया ॥२॥ चौदह महारत्न अर नव निधि ताकरि युक्त चक्रवर्ती पृथ्वीका निष्कंटक राज्य करता भया ॥३॥ द्वादश वर्ष पर्यंत दया भावकरि सव लोकनिके ताईं मनवांछित दान देता भया व्रती अव्रतीकी परीक्षा करी बहुरि वह चक्रवर्ती जिनशासन पर है अति वात्सल्य भाव जाका जो भक्तिके भारकर वशीभूत है चित्त जाका ॥ ४ ॥ सो जवनिके अर शालिके जो अंकूर तिनकर व्रतियोंको परखता भया जे हरी खूंदते गये ते अव्रती अर हरीपर न गए ते व्रती। सो व्रतियोंका आदर किया सो रत्नत्रयका जो चिन्ह जो यज्ञोपवीत सूत्र सो उनके कंठमें डार अति सत्कार किया अर भक्तिकरि उनकूं विनयसे दान दिया कृतयुग की आदि आदिश्वरके पुत्रने व्राह्मण थापे अर तीन वर्ण आगे ऋषभने थापे हुते सो व्राह्मणादि चार वर्ण भए ॥ ७ ॥ चक्र छत्र खड्ग दंड कांकिणी मणी चर्म ये सात अचेतन रत्न हैं अर सेनापति गृहपति गज अश्व पुरोहित शिलावट अर पटराणी ये सात चेतन रत्न ॥८॥ चौदह रत्न जिनकी प्रत्येक प्रत्येक सहस्र देवरक्षा करैं। नव निधियोंके नाम-काल १ महाकाल २ पांडुक ३ माणव ४ नैसर्प्प ५ सर्व वरतन ६ शंख ७ पद्म ८ पिंगल ९ ये नव निधिपतिके निधिपालक नाम देवनिकर सेवित लोकके उपकार अर्थ होती भई। चक्रवर्ती जैसा पुण्य अर मनुष्यके नाहीं ये सकल निधि गाढाके आकार जिनके आठ आठ पहिये, नव योजन चौडी बारह योजन लंवी आठ योजन ओंडी। एक एक निधिकी सहस्र २ देव रक्षा करें ॥ १३ ॥ प्रथम काल नामानिधि सो ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र न्यायशास्त्र कलाशास्त्र, शब्दशास्त्र तथा पुराणादिक जे हैं चाहे जेते पुस्तक या निधिमें लेवो। दूजी महाकालनामा निधि सो ये लोहादिक नानाप्रकारके लोहादिक उपकरण दे हैं। पाया है अक्षरका अर्थ

रहा है अर अखंड है ताहीकूं कर्दम मलिन करै है तैसे कमला बड़े पुरुषनिकूं विपरीत करै है। यह जो कमला कर्दम समान ताहि बारंबार धिक्कार ॥९२॥ बहुरि यंत्र कहिये घाणी ता समान लक्ष्मी ताकूं धिकार, कैसी है यह लक्ष्मी रूप घाणी चालचल है स्वरूप जाका अर मधुर कहिये मिष्ट स्निग्ध कहिये सचिक्कण स्वभाव जाका ऐसे तिलोंमें चिरकालका स्नेह कहिये तेल ताहि हरै है ॥

भावार्थ—घाणी तो मधुर स्निग्ध जो तिल तिनकूं स्नेह रहित करै है अर ये लक्ष्मी महामधुर मिष्टवादी स्नेहके भरे सत्पुरुष तिनकूं स्नेहसे रहित करै है, प्रीतिसे परांगमुख करै है, घाणी भी चलाचल कदै ही थिर नाहीं। अर लक्ष्मी भी एक ठौर नाहीं चंचल है ॥ ९३ ॥ यह नरेंद्रकी भी लक्ष्मी दृष्टिविष—सर्पकी दृष्टि समान भयंकर सर्वथा प्रकार न देखवे योग्य है, धिकार धिक्कार या लक्ष्मीकूं अर लक्ष्मीके लोभीनिकूं ॥ ९४ ॥ सदा काल यह लक्ष्मी अग्निकी शिखा समान आदि अंत मध्यविषै दुःखकारी है स्पर्श जाका यद्यपि प्रकाश रूप है तथापि संतापकी करणहारी है।

भावार्थ—जैसे अग्निशिखा यद्यपि उद्योतरूप है तथापि आतापकी कर्त्ता है वैसे ही यह लक्ष्मी हू उद्योतरूप है परंतु सर्व संतापकी कर्त्ता है अर अग्निकी शिखाका स्पर्श भी मूल मध्य अंतविषैं दुखकारी है तैसे कमलाका ग्रहण भी आदि मध्य अंतविषैं क्लेशकारी है ॥९५॥ इस मृतलोकविषैं चित्तका जो संतोष सोई सुखका लक्षण है सो बांधवनिके विरोधकरि न तो सुख है न धन है॥९६॥इन मनुष्यनिके ये भोग दुख ही उपजावैं हैं जैसे शीतज्वरकरि पीडित पुरुषकूं शीतका स्पर्श दुखही उपजावै है इस राजभोगके अभिलाषकरि भाईनिसूं विमुख होय ॥९७॥ ऐसा चिंतवन कर वह महाधीर राजकूं तज तपविषै तिष्ठ्या कैलाशविषैं निश्चल एक वर्ष कायोत्सर्ग धार्या ।९८। बालमीक कहिये बांवी तिनके छिद्रसे निकसे जे मणिधारी सर्प तिनकरि मंडित बाहूबलीके चर्ण सोहते भये ॥ ९९ ॥ अर जैसे राज अवस्थाविषैं अंगसे आलिंगन करती तैसे मुनि अवस्थाविषैं भी कोमल अंगकी धरणहारी माधवीलता समस्त

बाहुबलि जीत्या। इसकी अधोदृष्टि अर भरतकी ऊर्द्धदृष्टि सो ऊंचा चौंधते नेत्रनिकूं खेद होय सो दृष्टियुद्धमें बाहुबली जीता, फिर दोऊ वीर जलयुद्ध करने लगे अपनी भुजानि करि सरोवरमें उठाये हैं तरंगनिके समूह जिनि, सो परस्पर महा रौद्र जलयुद्ध भया ताहूविषै राणी नंदाका पुत्र भरतसे सुनंदाका पुत्र बाहुबली जीत्या ॥८३॥ बहुरि दोऊ योधा मल्लयुद्ध करने लगे सो रंगभूमिमें चिरकाल दोऊमें बाहूयुद्ध विशेष भया, बलात कहिये गर्जना अर आस्फोटिक कहिये खंभ ठोकना अर आटोप इत्यादि नाना प्रकारके कारण तिनकरि पूर्ण मल्लयुद्ध विशेष भया दोऊ योधा पृथ्वीके वर पायकर उछलते हुए परस्पर भिड़ते भये सो इनके पांवोंके संचार करि भिन्न भया है हृदय जाका ऐसी वसुधारूप वधू मानों शब्द करती भई ॥ ८५ ॥ घनी वेरमें भुजविक्रमी कहिये बाहुबलीने महादयावान महाबलवान अपने भुजरूप यंत्र करि भरतकूं दाव करि उठाय लिया परन्तु रत्नावलीकी नांई भूमिपर पधराये अर अविनय न किया। भावार्थ—वड़े भाईके मौरा तथा छातीकूं भूमिका स्पर्श न होने दिया ॥ ८६ ॥ तब आकाशविषै अर भूमिविषै देखनहारे देवनिके समूह अर खेचर भूचर मनुष्यनिके समूह बाहूबलीका यश वर्णन करते भये। जो धन्य यह वीर, धन्य यह धैर्य, उत्तम उत्तम पुरुषनिमें नाहीं ॥ ८७ ॥ जब लघुवीर जीत्या तब भरतकूं अति क्रोध उपज्या अर चक्रकूं स्मरण किया सो तत्काल करविषै आय तिष्ठ्या जाकी सहस्र देव सेवा करैं अर सूर्य समान है प्रभा जाकी सो चक्रकूं फिरायकरि बाहुबलीके ऊपर चलाया सो ब हुबली चर्मशरीरी आदि कामदेव तिनका निपात करवेकूं चक्र समर्थ न भया। वह देवाधिष्ठित चक्र बाहूबलीको तीन प्रदक्षिणा देय पीछे भरतके हाथमें गया तब बाहूवली बडे भाईकूं निर्भय देख अपने करतैं दोऊ कान मूंदकर लक्ष्मीकूं निंदता भया, सो धिक्कार है या लक्ष्मीकूं यह लक्ष्मी निर्म्मल पुरुषनिके चित्तकूं मलिन करै है, जे पुरुष महा पवित्र हैं अर धर्म्मके सन्मुख हैं अर परस्पर जिनका मन मिल रहा है उनहीके मनकूं जुदा करै है, जल स्वच्छ कहिये निर्मल है अर अनुकूल कहिये सुलटा वहै कदापि उलटा न बहै अर संहत कहिये जो जल मिल

प्रस्थाल ३२ तीर्ण ३३ कर्ण ३४ ये उत्तरकी ओर अर खडग १ अंगारक २ पौंड्र ३ मल्लप्रवक ४ मस्तक ५ प्राद्योतिषँ ६ बंग ७ मगध ८ मानवर्तक ९ मर्दल १० भार्गव ११ ये देश पूर्वदिशाकी ओर हैं अर वाड मुक्त १ वैदर्वमानवायक २ कायर मूलक ३ अश्मक ४ दंडिक ५ ये देश कलिंग ६ आसिक ७ कन्तल ८ नावाराष्टिक ९ महिषक १० पुरषदेश ११ भागवर्धन १२ दक्षिणकी ओर हैं अर माल्य १ कल्लीवनउपात २ दुर्गसपुर ३ करचूर ४ काक्ष ५ नासरिक ६ अगरतस ७ सारस्वत ८ तरशसमाहेघ ९ भरकछ १० सुराष्ट्र ११ नर्मद १२ ये देश पश्चिमकी ओर के अर दशार्णव १ किंधि २ त्रिपुरावर्त्त ३ नैषध ४ नेपाल ५ उत्तमर्ण ६ वैदिशा ७ अंतप ८ कौशल ९ मदन १० विणिहात्र ११ ये सब देश विंध्याचलके पृष्टभागविषै ॥७४॥ अर भद्र १ वत्स २ विदेह ३ कुसुमंत ४ सैतव ५ वज्रखंड ६ ये देश मध्य देशके समीप हैं॥७५ ॥ ये सब देश भरतेश्वरकी भूमिमें जानकर भरतके छोटे भाई मोक्षके अभिलाषी तजते भए जैसे श्रीपतिकी आज्ञामें होय वैसे भरत क्षेत्रकी भूमि भरतेश्वरकी अनुचरी है सो हमकूं ग्राह्य नाहीं ऐसा जान ये सब ऋषभके पुत्र मुनि भये ॥ ७६ ॥

अथानंतर-- वाहूबलीने चक्रेश्वरकी आज्ञा न मानी, चक्रकूं आलात कहिये घेघली ता समान जानता भया, चक्रवर्त्तीके दूतकूं उत्तर दिया जो मैं चक्रवर्त्तीका सेवक होय पृथ्वी न भोगूं ऐसा कहकर आप युद्धके अर्थ अपनी सेनासहित पोदनापुरसूं निकस्या ॥ ७८ ॥ ताकी वात सुन चक्रवर्त्ती भी निकस्या सेनारूप समुद्रकरि रोकी है दिशा जानै दोनों सेनाका निकटपना भया ॥ ७९ ॥ तब दोनोंके मंत्री मंत्रकर अपने स्वामीनिसूं कहते भये जो तुम दोऊमें कटक युद्धतैं अनेक जीवनिका क्षय होवेगा तातैं दोऊ भाई धर्मयुद्ध करो ॥८०॥ तब मंत्रीनिके वचन दोऊ भाई निर्मापे, दृष्टियुद्ध, मल्लयुद्ध, जलयुद्ध थापे, सो प्रथम ही दृष्टियुद्ध भया सो चिरकाल दोनों वीरोंमें पलक रहित नेत्रनिकरि निरखते भये सो इनका नेत्रयुद्ध भूचर खेचर सुर असुर देखते भये ॥८१॥ बाहुबलि छोटा शरीर भरततैं पचीस धनुष ऊंचा भरतका देह पांचसौ धनुष अर बाहूवलिका पांचसौ पचीस धनुष सो नेत्रयुद्धमें

अर विजयार्द्धगिरिका विजयार्द्ध कुमारदेव हू नरेंद्रका किंकर भया ही था ॥५२॥ अठारहहजार म्लेच्छखंडनिके राजा तिनकूं वशकर नानाप्रकार अद्भुत रत्न नृपतीनितैं भेंट ले, सब नृपति सहित छहखंडका पति विजयार्द्धकी दूजी गुफाके निकट आया ॥ ५३ ॥ तहां भी पृथ्वीनाथ तेला करता भया। तहां नाट्यशाल नामादेव चक्रेश्वरके समीप आया नानाप्रकारके आभरण विजुरीसमान भेट किये। महा प्रकाशरूप दो कुंडल नजर किये खंड कपाट नामा गुफाका द्वार अयोध्य सेनापतिने अगली भांति पहिली ही उघाडा हुता सो नरेश्वर गुफामें प्रवेश करि बाहर निकस्या। गंगासमान सेनाकरि युक्त वह भरतक्षेत्रका नाथ महाप्रवीण साठहजार वर्ष दिग्विजयकरि छै खंड पृथिवी जीत अखंड आज्ञा सबनिकूं सुनाय अयोध्या आया ॥ ५६ ॥ तहां सुदर्शन चक्र अयोध्याके द्वार प्रवेश न करै। तब चक्रेश्वरने बुद्धिसागर पुरोहितकूं पूछ्या कि चक्रके प्रवेशमें संदेह कहा है ॥५७॥ सब भरत क्षेत्र वश भया, अब यह चक्र पुरमें प्रवेश क्यों न करै ॥५८॥ कोई अर भी जीतना है? तब पुरोहितने कहा तिहारा भाई महा बलवान है वह आज्ञामें नाहीं ॥ ५९ ॥ तब पुरोहितके वचन सुनकर पृथ्वीनाथने भाइयनिके समीप दूत भेजे। अर कृपाकर भली भली वस्तु भेजी। अर प्रीतिके समाचार लिखे सो दूत तिनके समीप गये। तब वे सब भाई एक बाहुबल विना पाया है आत्मज्ञान जिन्होंने सो सबही राज्यका त्याग करते भये अर त्यागहीकूं महा उत्सव मानते भये ॥६०॥ श्री आदीश्वरके शरण जायकर वे सबही संसारसे विरक्त निःशल्य मोक्षाभिलाषी परमेश्वरी दीक्षा धारते भये ॥ ६१ ॥ वे कुमार अति सुकुमार भव्यनिमें सिंह समान सब एकेलार वैराग्य धारते भये अर इतने देश कुमारनिने तजे ॥ ६२ ॥ देशनिके नाम-कुरुजांगल १ पंचाल २ सूरसेन ३ पटच्चर ४ कुलिंग ५ काशी कौशल्य ६ मद्रकार वृकार्थक आठ ॥६५॥ कोलु ९ अमृष्ट १० त्रिगत ११ कुमतस्य १२ फुनीर १३ कोशल १४ मौकदेश १५ मध्यदेश १६ वाल्हिक १७ आश्रय १८ कांबोज १९ पवन २० आरीर २१ मरुक २२ कापतोप २३ सूर २४ वाट वानस्व २५ कईकय २६ गंधार २७ सिंधु २८ सौवीर २९ भारद्वाज ३० दशोरुक ३१

किया ॥७॥ यह महा वायु ज्यों गोड प्रमाण धरतीकूं अवगाहिए त्यों समुद्र अवगाहन करि वज्रकांडनामा धनुष हाथ लिए । दृष्टि कहिए नेत्र निश्चल किए । अर मूठी दृढ करी अर धनुषविषैं वाणका रोपण करि वह प्रवीणपने नामकी मुद्रिकाकरि युक्त अमोघनामा बाणकूं मगधदेवके निवासपर चलावता भया सो बाण अतिशीघ्रगामी है अर शत्रुवनिके प्राणनिका हर्ता है गगाद्वारतैं बारह योजन जायकरि चक्रवर्तीने वाण चलाया सो मागधदेवके मंदिरविषैं वज्रपात सारिखा बाण पर्‍या सो मगधका मंदिर कंपायमान भया अर हृदय कंपित भया, अतिसभ्रमकूं पाय चक्रेश्वरके परवाने सहित बाण देख्या ॥८॥ चक्रवर्तीकूं क्षेत्र विषै प्रगट भया जानि अपने अल्पपुण्यकी निंदाकरि मानतैं रहित होय अद्भुत रत्न भेंट लेय पृथ्वीनाथके पांय ढोकने चाल्या ॥ ९ ॥ पृथ्वीविषैं सार ऐसा मोतीनिका हार अर मुकुट अर रत्ननिके कुण्डल अर अनेक रत्न अर अद्भुत वस्त्र अर स्नानके अर्थ तीर्थनिका जल लेयकरि देव नरेंद्र पर आया बारंवार नमस्कार करि वीनती करता भया, हे नाथ ! आज्ञा करहु जो आज्ञा होय सो मैं करूं, तिहारा किंकर हूं यह समस्त क्षेत्र तिहारा है इत्यादि विनयरूप वचन मगधदेव महीपतसूं कहतां भया, महीपतिने कृपाकरि वाकूं विदा किया सो अपने स्थानक गया ॥ ११ ॥ अर भरतेश्वरहू यहांतैं कूच किया, सो दक्षिण दिशाके समस्त देव अर समस्त राजा तिनकूं वश करता संता समुद्रके वैजयंत नामा द्वारमें गया ॥ १२ ॥ तहां मगधकी नांई वर्तन देवकूं बुलाया, सो महा नम्रीभूत होय पृथ्वीपतिके पांयन आया अर एती भेंट करी । शिरका आभूषण चूडामणि, मनोहर मोतीनिकी कंठी, हार, कडे, कटिसूत्र, बाजूबंद अर यज्ञोपवीत भेंटकरि भूपतिकूं प्रणामकरि वह किंकर आज्ञापाय अपने स्थानक गया, अर राजेश्वर तहांतैं कूंचकरि पश्चिम दिशाके देवनिकूं अर राजानिके समूहकूं वश करता महा मनोहर जो सिंधुद्वार जा द्वार होय सिंधु नदीका सागरसूं संबंध भया है तहां आया ॥१५॥ जैसे मागध अर वर्तन वश किए हुते तैसैं प्रभास देवकूं वश किया, कैसा है वह चक्रेश्वर सुरेश्वर समान है पराक्रम जाकां ॥१६॥ प्रभासन आय नमस्कारकरि एती भेंट करी सन्तान जातिके कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला अर

सर्ग
११
२०१

आया जानि सिंधुदेवी आयकरि राजेंद्रका अभिषेक करती भई अर दोय सिंहासन महा सुंदर भेंट किये बहुरि चक्रवर्ती सेनाकूं हिमवानगिरिकी तलहटीमें थापकरि आप तेला धरि दाभकी शय्यापर बैठे ॥ ३९ ॥ किया है तीर्थजलकरि स्नान जिनि अर पहिरे हैं सुंदर वस्त्राभरण जिनि चक्र है अग्रेसर जाके अर हाथमें धनुषवाण लेय करि रथविषैं आरूढ भया जुपे हैं दिव्य अश्व जाके जहां हिमवान्पर्वतका हिमवत् कूट है तहां धनुष धारि आया अर धनुषवाण लगाय ऊंचेकूं चलाये ॥ ४१ ॥ अर मुखतैं ऐसा शब्द कह्या हो नागकुमार हो ! हो गरुडकुमार हो ! मेरी आज्ञा उरमें धारहु तुम सब मेरे क्षेत्रमें बसो हो सो आयकरि सेवा करहु यह आज्ञाकरि धनुष चढाय बाण चलाया सो वाण ऐसा शब्द करता भया जैसा बज्रपातका शब्द होय बारह योजन बाणका शब्द भया सो हिमवत् कूटके बासीने बाणकूं देखि बाणकी पूजा करी अर बाणकूं माथे धरकरि चक्रवर्तीपै आया ॥ ४३ ॥ महा दिव्य-ऊषधीनिकी माला अर महादिव्य मलयागिरि चंदन भेंट किया अर नानाप्रकार वस्त्राभरण अर्पणकरि पूजता भया अर कही मैं तिहारा अनुचर हूं आज्ञा होय सो करूं तब चक्रवर्तीने ताकूं कृपाकरि विदा किया ॥ ४४ ॥ वह नरनाथकी आज्ञा सिर चढाय अपने स्थानक गया ॥

अथानंतर—भरतचक्रवर्ती वृषभाचल नामा पर्वतपर आये। तहां कांकणीरत्ननिकरि अपना नाम लिख्या ॥ ४७ ॥ ऋषभदेवका पुत्र मैं भरतचक्रवर्ती बहुरि तहांतै प्रयाणकरि विजयार्धके कोटके समीप नरनिका ईश्वर आया ॥ ४८ ॥ तब दोऊ श्रेणीनिके निवासी विद्याधर राजेश्वरकूं आया जानि नमि विनमि सहित कटकमें आये ॥ ४९ ॥ नवनिधिके स्वामीकी नानाप्रकारके रत्ननिकरि विद्याधर आराधना करते भये । सुभद्रा नाम स्त्री रत्नकूं चक्रेश्वरने परणकरि प्रयाण किया । गंधार आदि अनेक विद्याधरनि सहित नमिविनमि भरतेश्वरकी अति भक्ति करते भये । बहुरि भूपनिका भूप गंगाके तीर तीर गमनकरि गंगाकूटके निकट आया जान सुवर्णके सहस्र कलशनिकरि भरतेश्वरका अभिषेक किया, रत्ननिके दोय सिंहासन पीठसहित भेट किये

चरित्र मोक्षके साधन हैं। सो इनका श्रद्धान करना अर आचरण करना जे अविनाशनी लक्ष्मी इच्छै हैं उनको अर दूजा उपाय नाहीं एक रत्नत्रयहीका सेवन सिद्धपदका कर्ता है ॥५७॥ या रत्नत्रयसूं अर श्रेष्ठ नाहीं। पहिले हू इन समान कोई नहीं हुता। अर अब हू इनके समान कोई न होगा इससे यही है कि ये मुक्तिके कारण जानने यहही सार समुच्चय है इत्यादि ॥ ५८ ॥ आदि जिनेंद्रके वचनरूप औषधि पीकर जगत्त्रयके जीव संदेह रूप रोगसे रहित भये समवसरणमें वारह सभाके भव्य ऐसे सोहते भये मानूं मुक्तिकूं ही प्राप्त भये हैं ॥ ५८ ॥ कर्मभूमिकी आदिही विषैं कृतयुगविषै अनेक गुणनिकरि युक्त भव्य जीव सोहते भये। ग्रहे हैं रत्नत्रयरूप आभूषण जिनने। निश्चय भई है शुद्धभावकी भावना जिनके कैयक तो यति व्रतके धारक भये। अर कैएक श्रावक धर्मके धारी भये ॥ ६० ॥ वे आदि जिनचतुर्विधसंघकरि युक्त आर्यक्षेत्रविषैं विहारकूं सन्मुख भये। उनकूं चतुर्विधदेव प्रणाम करते भये अर कैयक निर्मल सम्यक्तके धारक भये ॥ ६१ ॥ अथानंतर जिनेश्वरकूं भरतेश्वर प्रणामकरि अयोध्या गया, कैसा है भरतेश्वर वडे २ वंशके वडे २ नरेश्वरनिकरि सेवनीक है अर महा हर्षवान् है अर वडा गृहस्थ है श्रावकनिमें मुख्य है ॥ ६२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभनाथकेवलोत्पत्तिवर्णनं नाम दशमः सर्गः समाप्तः ॥

अथानंतर—भरत चक्रवर्ती पुत्रके जन्मका उत्सवकरि चक्रकूं आगे धरे छहो खंड जीतवेकूं उद्यमी भया। प्रथमही करी है चक्रकी पूजा जाने चतुरंग सेनाकरि युक्त देव विद्याधरनिकरि मंडित सेवै हैं राजानिके समूह जाकूं। सो प्रथम पूर्वकी ओर प्रयाण किया गंगाके तीर पर प्रयाण करता जहां गंगाका सागरसूं संगम भया तहां गया। गंगाके प्रवेशका द्वार है तहां तेला किया। कैसा है भरत शोभित है वचन अंग जाके। तहां समुद्रके देवने अजितजितनामा रथ चक्रवर्तीकूं दिया। ताके दो अश्व जुते हैं। तापर चढि गंगाके द्वारही करि समुद्रमें प्रवेश

करना जो ध्वजाही है अर धारणा कहिये कालांतरविषै न भूलना। ये चार भेद जब पंचेंद्री अर छठे मनसों गुणिये तब चौबीस भेद होवें. अर जब चौवीसोंको वह्वादिक छह तथा अवह्वादिक छह इन बारहसे गुणिये तब दोसौ अठासी होवें सो ये अर्थावग्रहके भेद कहे। अर व्यंजनावग्रह मन अर नेत्रनिकूं नाहीं स्पर्श रसना घ्राण शब्द ये चार वह्वादिक बराहसे गुणिये तब अडतालीस होवें ये अडतालीस दो सौं अठासीमें मिलाइये तब तीन सौ छत्तीस हों, ये मतिज्ञानके भेद हैं, मतिज्ञानावरणीके क्षयोपशमसे अनेक भेदको धरें। सम्यक्दृष्टिके होय हैं। मिथ्यादृष्टिके मतिज्ञान नाहीं। कुमति अर कुश्रुत है मति अर श्रुत सम्यक्त बिना न होय, ये तो दोऊ परोक्ष कहे। अर अवधिज्ञान एकोदेशप्रत्यक्ष ताके भेद तीन —देशावधि, सर्वावधि, परमावधि। सो सर्वावधिका धारक पुद्गलपरमाणु पर्यंत देखै है यह अवधि हू सम्यक्त विना न होय अर सर्वावधि परमावधि तद्भव मोक्षगामीहीके होय है ॥ ५१ ॥ चौथा मनपर्ययज्ञान हू एकोदश प्रत्यक्षही है ताके भेद दो—ऋजुमति १ विपुलमति २ सो यह मनःपर्यय ज्ञान मुनिहीके होय है तामें विपुलमति चरमशरीरीके होय है। पांचवांज्ञान केवल सो सकल प्रत्यक्ष ज्ञानावरणी दर्शनावरणीके सर्वथा क्षयसे केवलज्ञान होय है, अर ज्ञान तो आवरणके क्षयोपशमतैं अर यह केवलज्ञान सर्वथा आवरणके अभावतैं होय है। चार ज्ञान एक जीवकी अपेक्षा आदि अंतसहित हैं। अर यह पांचवां ज्ञान पंचमगतिका मूल है अविनाशी है अर केवल कहिये परद्रव्यके मिलापसे रहित है। इसमें दूजा भेद नाहीं। समस्त लोकालोकका ज्ञाता केवलज्ञान है, कोई भी वस्तु इसमें अगम्य नाहीं। या विना अर सब ज्ञान परोक्ष ही हैं, सो परोक्षज्ञानका फल हेयोपादेय बुद्धि अयोग्यकूं तजै योग्यकूं गहै। अर प्रत्यक्षज्ञानका फल सर्व विषैं मध्यस्थभाव अर मोक्षका भाव ये दो फल ॥ ५३ ॥ वे चार ज्ञान तो परंपरासे मोक्षके कारण अर केवलज्ञान साक्षात् मोक्षरूप है अक्षय अनंत है। सम्यक्ज्ञानकर जाना है प्रमाण जिनका ऐसे जो जीवादि पदार्थ तिनका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन कहिये। अर अशुभक्रियाकी निवृत्ति शुभकी प्रवृत्ति सो चारित्र कहिये ॥ ५६ ॥ ये सम्यग्दर्शज्ञान-

चार वार शिर नवाय नमस्कार करना। सो एक एक नमस्कारमें तीन तीन नमस्कार आवर्त ताके बारह आवर्त अर आह्वान अर एक विसर्जन इत्यादि कृतकर्मकी है विधि जाविषैं ॥ ३३ ॥ अर सातवां प्रकीर्णक दशवैकालिक ताविषैं ग्रहगोचर ग्रहणादिकका कथन। अर आठवां उत्तराध्ययन ताविषै महावीरके निर्वाण गमनका कथन। अर नवमा कल्पव्यवहार नामा प्रकीर्णक ताभें तपस्विनिका योग्याचरण अर अयोग्य आचरणविषैं प्रायश्चित्तविधि ॥३५॥ अर कल्पाकल्पनामा दशमा प्रकीर्णक ताविषैं हेयका त्याग उपादेयका अंगीकार विषयकषाय हेय अर ज्ञानवैराग्य उपादेय ॥ ३६ ॥ अर ग्यारहवां महाकल्पनामाप्रकीर्णक ताभें यतिकूं उचित वस्तु उचित क्षेत्र उचितकालका कथन अर बारहवां पुण्डरीक नामा प्रकीर्णक, देवनिकी उत्पत्तिका कथन। अर तेरहवां महापुण्डरीकनामा प्रकीर्णक ताभें देवीनिकी उत्पत्ति ॥ ३७॥ अर चौदहवां निषद्यनामा प्रकीर्णक ताविषैं प्रायश्चित्तकी विधि। यह चौदह प्रकीर्णकनिका वर्णन कह्या। समस्त द्वादशांगका अर चौदह प्रकीर्णक तिनके केते अक्षर सो कहिये हैं। एक कहिये एकका अंक ताके ऊपर आठ फिर चवालीस फिर सरसठका अंक फिर चवालीस फिर एक बिंदी तापै तिहत्तर तापै सत्तर अर पंचानवे फिर इक्यावन फिर छैसौपंद्रह ये बीस अंक भये ॥ १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५ इतने अक्षर समस्तश्रुतके हैं, शब्दकरि जिनका श्रुतसंख्या अर्थकर अनंत हैं। यह श्रुतज्ञान श्रुतावरणीके क्षयोपशमकरि जीवनिके होय है। सो यह ज्ञान मतिपूर्वक कहिये, मतिज्ञान है आदि जाके मति बिना श्रुत न होय ये मतिश्रुत दोऊ परोक्षज्ञान हैं। यद्यपि यह श्रुतज्ञान शब्दकरि संख्यारूप है तथापि अनंतविषय कहिये अनंतताके भेद कथन करणहारा है ॥ ४३ ॥ मतिज्ञान पांचइंद्री अर छठे मनकर उपजै है, परोक्षज्ञान है, अर मूर्तीक निकटवर्ती पदार्थको ही प्रत्यक्ष देखै है मतिज्ञानावरणीका क्षयोपशम होय तब मतिज्ञान उपजै है ताके भेद तीन सौ छत्तीस प्रथम अवग्रह १ ईहा २ अवाय ३ धारणा ४ ये चार भेद तिनका अर्थ अवग्रह कहिये सामान्य अवलोकन जो कछू श्वेत वस्तु है। अर ईहा कहिये विचार जो खगपंक्ति है कि ध्वजा है। अवाय कहिये निश्चय

अर व्याकरण आदि शब्दशास्त्रनिका वर्णन अर शिल्प आदि अनेक कला अर अनेक गुण तिनका निरूपण ॥ १२० ॥ अर चौदहवां लोकविंदुसार नामा पूर्व ताके बारह कोटि पचासलाख पद तामें नक्षत्र राशि अष्ट विधि तथा व्यवहारविधि अर परिकर्मविधि इत्यादिक कथन है। समस्त श्रुत सपदा पूर्वनिमें कही। बारहवें अंगका पचवां भेद चूलिका ताके पांच भेद—जलगत १ स्थलगत २ आकाशगत ३ रूपगत ४ मायागत ५। ये पांच चूलिकानिके प्रत्येक प्रत्येक पद दो कोटि नव लाख निवासी हजार दौसौ एक, एक चूलिकाके इतने इतने पद हैं। सबनिके समानपद हैं, यह भीतर अंगका कथन किया। अर वाह्यअंग चौदह प्रकीर्णक तिनका पद-संख्याकरि प्रमाण कहे हैं। सामायिक आदि चौदह प्रकीर्णकके आठ कोटि एक लाख आठ हजार एक सौ पचहत्तर इतने इतने अक्षर हैं। अर आठ अक्षरका एक पद सो यहां प्रमाणपद लिया है, मध्यमपद नाहीं लिया ताके अक्षर बहुत हैं सो वर्णन पहिले कर आये अर प्रकीर्णकनिके अक्षर कहे तिनके पद एक कोटि तेरह हजार पांच सौ इकीस अर सात अक्षर इतने प्रमाणपद भये। आठ अक्षरका एक पद ॥ १२७ ॥ अर चार पदका एक श्लोक सो चौदह प्रकीर्णकनिके श्लोक पचीस लाख तीन हजार तीन सौ अस्सी अर पंद्रह अक्षर ॥ २८ ॥ अर पहिला सामायिक नामा प्रकीर्णक ताविषैं समभावका वर्णन सो समभाव राग द्वेषके त्यागतैं होय है, शत्रु मित्र सुख दुःख आदिविषैं तुल्यभाव सो समभाव कहिये ॥२९॥ अर दूजा जिनस्तवननामा प्रकीर्णक जामें चतुर्विंशतितीर्थेश्वरकी स्तुति। अर तीजा वंदना प्रकीर्णक जामें बंदिवे योग्य पंचपरमेष्ठी अर चैत्य चैत्यालय तीर्थ अर शास्त्रनिका वर्णन, अर बंदनाकी विधि ॥ ३० ॥ अर चौथा प्रतिक्रमणनामा प्रकीर्णक ताविषैं द्रव्यकरि क्षेत्रकरि कालकरि भावकरि किया जो अपराध ताका शोधन, प्रायश्चित्तादिकका अंगीकार ॥ ३५ ॥ अर पांचवां वैनयकनामा प्रकीर्णक तामें पांच प्रकार विनयकरि व्याख्यान। दर्शनविनय १ ज्ञानविनय २ चारित्रविनय ३ तपविनय ४ उपचार विनय ५ इनका विशेष वर्णन ॥ ३२ ॥ अर छठा कृतकर्मनाम प्रकीर्णक तामैं त्रिकाल सामायिककी विधि। सामायिकविषैं

राजगरुका वचन प्रमाण अर योगरीतिविषैं योगीश्वरका वचन प्रमाण। अर नवमा भावसत्य जो द्रव्यनिका यथार्थ ज्ञान केवली हीको है छद्मस्थको नाहीं। जे छद्मस्थ हैं ते ज्ञानकरि मंद हैं तथापि केवलीके वचनकरि अप्राशुक अर प्राशुकका निश्चय करै हैं। प्राशुक ही भोजन करैं अर अप्राशुक न करैं उनके भावनिमें यह प्रतीति है जो केवलीके वचन अन्यथा नाहीं ॥ ६ ॥ अर दशमा समयसत्य जो षद्द्रव्यनिकी स्वभाव पर्यायनिके भेदका यथार्थ बक्ता जैन आगम ही है ताविषैं जो गाया तो सत्य है ऐसी जिनवाणीकी दृढ प्रतीत करनी सो समयसत्य कहिए ॥ ७ ॥ अर सातवां आत्मप्रवाद पूर्व ताके छव्वीस कोटि पद तिनमें कर्तृत्व, भोक्तत्व, नित्यत्व, अनित्यत्व, इत्यादि जीवके अंनत स्वभावनिका निरूपण है। अर प्रमाण नय निक्षेपकी युक्ति जाविषैं ॥९॥ अर आठवां कर्मप्रवाद नामा पूर्व ताके एक कोटि अस्सी लाख पद तामें कर्मबंधका वर्णन ॥ १० ॥ अर नववां प्रत्याख्याननामा पूर्व ताके चौरासी लाख पद तिनमें द्रव्यसंवर अर भावसंवरका वर्णन। जो द्रव्य संवर तो प्रमाणरूप अर भावसंवर अनंतरूप। कैसा है प्रत्याख्यानका व्याख्यान यतिव्रतकीहै वृद्धि जाविषै ॥१२॥ अर दशमें विद्यानुवादपूर्व ताके एक कोटि दश लाख पद ॥ १३ ॥ तामें अंगुष्ठप्रसेना आदि सातसौ क्षुद्रविद्या अर रोहिणी आदि पांचसौ महा विद्यानिका वर्णन है ॥१४॥ अर ग्यारहवां कल्याणनामा पूर्व ताके छव्वीस कोटि पद तामें समस्त ज्योतिर्गणनिका विचार अर त्रेसठ शलाकाके पुरुषनिका अर सुरेंद्र असुरेंद्रनिके कल्याणका विस्तारसहित वर्णन। अर अष्टांग निमित्तका निरूपण तिनके नाम स्वप्न १ अंतरिक्ष २ भौम ३ अंग ४ स्वर ५ व्यंजन ६ लक्षण ७ छिन्न ८ ये आठ निमित्तज्ञानके भेद कहे। इनका विस्तार ग्यारहमें पर्वमें है ॥ १७ ॥ अर बारहवां प्राणवयनामा पूर्व ताके तेरह कोटि पद तिनमें कायचिकित्सा आदि अष्ट प्रकारके वैद्यकका वर्णन है अर श्वासोछ्वासके निश्चय ताका उपाय अर पवनाभ्यासका साधन ॥ १८ ॥ अर पृथ्वी १ अप् २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ इन तत्वनिविषै पवनका प्रचार। अर तेरहवां क्रियाविशालनामा पूर्व ताके नव कोटि पद तामें छंद कहिए पिंगलादि छंदशास्त्रका वर्णन

कहैं। नेत्र तो सुंदर अर नाम कमलनयन, सो लोक कमलनयन ही कहैं। अर दूजा रूपसत्य जो काहू चित्रामका पुरुष मांड्या काहूने गज लिख्या। सो अचेतन है उनमें कछु शक्ति नाहीं परन्तु जगतमें जैसा रूप देखें तैसा ही कहैं सो रूपसत्य कहिये ॥ ९८ ॥ अर तीजा स्थापना सत्य, जो जो व्यवहारके अर्थ छती वस्तुकी अथवा अछती वस्तुकी स्थापना करनी जैसा जिसका आकार हुता वैसा ही बनाया अर मंदिरादिकविषैं प्रतिमा पधराई सो स्थापनासत्य कहिये। ऋषभदेवकी प्रतिमाकूं ऋषभदेव ही कहिये ॥ १०० ॥ चौथा प्रतीतसत्य, जो उपशमिक आदि पंच भाव तिनकूं आगमप्रमाण प्रतीति करि व्याख्यान करिये ताका नाम प्रतीतसत्य कहिये।

भावार्थ—शास्त्रकी प्रतीतिकरि न देखी वस्तुका भी वर्णन करिये सो प्रतीतिसत्य कहिये। अर पांचवीं स्मृतिसत्य, जो भेरी आदि अनेक वादित्रनिके शब्द मेले भये तिन्हें वाचक एकोदेश रूप कहे जो उच्चस्वरका वादित्र होय ताका नाम लेय तामें सबके शब्द मिले हैं परंतु मुख्यका नाम कहिये सो स्मृतिसत्य। अर छठा संयोजनानाम सत्य जामें चेतन अचेतन द्रव्यनिकी रचनाका विभाग नाहीं, युद्धसमय दोनों सेनानिमें नानाप्रकारके व्यूह रचे हैं। चक्रव्यूह गरुडव्यूह क्रौंचव्यूह इत्यादि सो संयोजनासत्य कहिये। सेना तो चेतन अचेतन सब द्रव्यनिकरि पूरित है ताहि चक्रव्यूह कहना सो चक्र तो अचेतन है अर गरुडव्यूह कहना गरुड चेतन है सेनाको इनरूप कहिये परंतु चक्रके गरुडके आकार रची तातें जैसी व्यूह रची होय तैसा कहिये तो मिथ्या नाहीं यह संयोजनासत्य है। सातवीं जनपदनाम देशका है जा देशमें जिस वस्तुका जो नाम होय सोही सत्य यह जनपदसत्य कहिये। देशनिमें कोई आर्यदेश हैं कोई म्लेच्छदेश है, तिनमें धर्म अर्थ काम मोक्षका करणहारा जो वचन हैं सो जनपदसत्य जानहु. अर आठमा उपदेशसत्य जो ग्राम नगरकी रीति है अर राजधर्मकी रीति अर आचार्यपद साधुपदका उपदेश जे पुरुष जिन बातनिमें प्रवीण हैं तिनका वचन उन बातनिमें प्रमाण करणा ग्रामाचारमें अर नगराचारमें लोकाचारमें जो इन बातनिमें प्रवीण होय ताका वचन प्रमाण अर राजनीतिमें

योगद्वार कहे। इनमें अल्पबहुत्वका विशेष वर्णन अर भी पूर्वोंकी वस्तूनिविषैं पाहुड हैं। तिनके भेद सिद्धांततें जानने ॥८७॥ अर तीजा पूर्व वीर्यानुप्रवाद है नाम जाका। ताके पद सत्तर लाख तिनमें वीर्यवंत जे संत तिनके वीर्यका वर्णन है ॥८८॥ अर चौथा अस्तिनास्तिप्रवादनाम पूर्व ताके पद साठलाख तिनमें जीवादिक पदार्थनिके अस्तिनास्तित्वका निरूपण, स्वभावकर सारे ही अस्तिरूप अर परभावकर सारे ही नास्तिरूप हैं, पर भाव काहूमैं न पाइये। अर पंचमा ज्ञानप्रवाद नाम पूर्व ताके एक कोटि पद तामें ज्ञानके पांच भेदनिका निरूपण है ॥९०॥ अर छठा सत्यप्रवादनाम पूर्व ताके कोटिपद तिनमें बारह प्रकारकी भाषाका कथन। अर दशप्रकारके सत्यका निरूपण ॥९१॥ सो बारहप्रकार भाषाका कथन करै हैं—प्रथम अभ्याख्यान कहिये कोऊ एक हिंसादिकका अकर्त्ता है अर कोऊ कर्त्ता है। तिनके समीप कोऊ मूर्ख ऐसे कहे जो हिंसा कर्त्तव्य है। ऐसे दुर्वचनका नाम अभ्याख्यान कहिये। अर दूजा वाक्कलह ताका अर्थ। जो कलह कर्त्ता ही बोलै। अर तीजा पैशून्य जे दुष्ट जीवपर ये दोष प्रगट करै अर काहूके ढिंग चुगली करै। अर चौथा अवध्यप्रलाप कहिये जो प्रलापका अंत नाहीं सो प्रलाप करवो ही करै, जाके वचनमें धर्म अर्थ काम मोक्षका उपदेश नाहीं। अर पांचमा रति उत्पादक वचन जो जीवनिकूं राग उपजावै। अर छठा अरति उत्पादक, जो जीवनिकूं क्रोध उपजावै। अर सातवां वंचनाप्रवरण जाके सुनिवेतैं अर अयथार्थ वस्तुविषैं श्रोतानिकी बुद्धि आसक्त होय ॥९४॥ अर आठवां निकृतिवचन निःकृति नाम कपटका है सो कपट लिये वात करै, अर नवमां अप्रणतिवाक् जो आपतैं अधिक है तिनकूं नमस्कार न करै अर विनयका वचन न कहै ॥ ९५ ॥ अर दशमां मोघ वचन जाकरि लोक चोरीविषैं प्रवर्तैं। अर ग्यारहवां सम्यग्दर्शन वचन जाकरि जीव सम्यक्तका ग्रहण करै ॥ ९६ ॥ अर बारहवां मिथ्यादर्शन वचन जाके श्रवणतैं मिथ्यात्वमार्गकी प्रवृत्ति होय. ये बारहप्रकार वचन स्थावरकायविषैं नाहीं। वेइंद्री आदि त्रस जीवनिविषैं हैं तिनमें पंचेंद्रीके सब पाइये ॥९७॥ अर दशप्रकारके सत्य कहे। तिनमें पहिला नामसत्य जो उसका नाम होय सो लोक

जीवनिके समूहके भेद हैं। षट् द्रव्यनिका जाविषैं समस्त विस्तार है, परिकर्मके ए पांच भेद कहे। अर दूजा भेद सूत्र ताके अट्ठासीलाख पद हैं तिनिमें प्रथम भेदविषैं बंधके अभावका कथन अर दूजे भेदविषैं श्रुति स्मृति पुराणके अर्थ श्रुति कहिये केवलीकी दिव्यध्वनि अर स्मृति कहिये गणधरनिकी वाणी अर पुराण कहिये मुनीनिके वचन ॥ ६९ ॥ अर सूत्रके तीजे भेदविषैं नियति कहिये निश्चयका कथन अर चौथे भेदविषैं दर्शनके भेद सम्यक्त अर मिथ्यात्वका निरूपण ये नाना भेद सूत्रमें हैं ॥७०॥ अर बारहवें अंगका तीजा भेद अनुयोग ताके पांच हजार पद तिनमें तिरेसठ शलाकाके पुरुषनिका कथन ॥७१॥ अर बारहवें अंगका चौथा भेद पूर्वगति ताके भेद चौदहसौ चौदह पूर्वमें एकसौ पंचानवै वस्तु अर एक एक वस्तुमें बीस बीस पाहुड सो सकल पाहुड गुणतालीससौ हैं, चौदह पूर्वविषैं एकसौ पंचानवै वस्तु तिनकी प्रत्येक संख्या सुनहु। पहिले पूर्वविषै वस्तु दश, दूजेमें चौदह, तीजेमें आठ, चौथेमें अठारह, पांचवेमें बारह, छठेमें बारह, सातवेमें सोलह, आठवेमें बीस, नववेंमें तीस, दशवेंमें पंद्रह ग्यारहवेमें दश, बारहवेमें दश, तेरहवेमें दश, चौदहवेमें भी दश ये सब मिल एकसौ पंचानवें हैं ॥७४॥ पहिले पूर्व का नाम उत्पाद ताके एक कोटि पद तिनमें द्रव्यके उत्पाद व्यय ध्रौव्यका वर्णन ॥ ७५ ॥ दूजा अग्रणी नाम पूर्व ताके छ्यानवै लाख पद तामें चौदह वस्तुनिके अनुक्रमतैं ये नाम जानहु। पूर्वांत १ अपरांत २ ध्रुव ३ अध्रुव ४ अच्यवनलब्धि ५ अध्रुव सम्प्रणयव्यात ६ कल्प ७ अर्थ ८ भौमावय ९ सर्वार्थक कल्प १० निर्वाण ११ अतीतानागत १२ सिद्ध १३ उपाध्याय १४ ये चौदह दूजे पूर्वमें वस्तु हैं तिनमें पांचवीं वस्तु अच्यवनलब्धि ताके पाहुडवीस २० तिनमें चौथा पाहुड कर्मप्रकृति ताविषैं इतने ही योगद्वार तिनके नाम ॥ ८९ ॥ वेदना १ स्पर्श २ कर्म ३ प्रकृति ४ बंधन ५ निबंधन ६ प्रक्रम ७ उपक्रम ८ उदय ९ मोक्ष १० संक्रमण ११ लेश्या १२ लेश्याकर्म १३ लेश्या परिणाम १४ सातासात १५ दीर्घ १६ ह्रस्व १७ भवधारण १८ पुद्गल आत्मा १९ निधताधत २० सनिकाचित् २१ अनिकाचित् २२ कर्मस्थितिक २३ स्कंध २४ ये दूजे पूर्वके पांचमी वस्तुके चौथे पाहुडविषै चौबीस

जीवादि पदार्थ परभावकी अपेक्षा नाहीं परंतु नास्ति ही कहिये तौ अस्तिका अभाव तातैं अस्तिका अवक्तव्य है। अर अस्तिनास्ति अवक्तव्य कहिये जीवादि पदार्थ अस्तिनास्ति ही हैं परंतु कहिवेमैं अनुक्रमसूं आवै एकै लार कहा न जाय आगैं पीछे ही कहा जाय तातैं अस्तिनास्ति अवक्तव्य है। विज्ञानवादीके त्रेसठि भेद तौ ये कहे। अर कोइयक सद्भावका पक्षी कोइक असद्भावका पक्षी कोइक सत्यासत्यका पक्षी। अर कोइक अवक्तव्यका पक्षी वे तरेसठि भेद इनि चारिसूं मिलाय सड़सठि भेद होंइ, एक एक नयका छल पकरि एक एक अंशका ग्रहण करै तत्वका यथार्थ ज्ञान न होइ सो अज्ञानवादी कहिये ॥ ५८ ॥ अर विनयवादीके भेद बत्तीस कहिये हैं। विनयवादी कहै हैं—मन वचन काय अर दान इनि चारि करि आठका विनय करना तब विनय भेद वत्तीस होय। आठवें माता १, पिता २, देव ३, नृप ४, जाति ५, वाल ६, बृद्ध ७ अर तपस्वी ८। ए आठ इनिका मन वचन काय दानकरि सत्कार करना याभांति विनयवादी कहे। भावार्थ—विनय तौ योग्य है जिनधर्मका मूल है, परंतु विनयवादी विनयका स्वरूप यथार्थ न जानै, मूर्तिमात्रकूं देव जानै, भेषमात्रकूं साधु जानै, पत्रमात्रकूं शास्त्र जानै, जलमात्रकूं तीर्थ जानै, एक नयका छल पकरि एक अंगका ग्रहण करि वृथावाद करै इत्यादि वादीनिका है कथन जाविषैं ऐसा दृष्टिवाद नामा वारहवां अंग ताके भेद पांच—परिकर्म १, सूत्र २, अनुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिका ५। तिनिमें परिकर्मके भेद पांच—चंद्रप्रज्ञप्ति १, सूर्यप्रज्ञप्ति २, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ३, द्वीपसमुद्रप्रज्ञप्ति ४, व्याख्याप्रज्ञप्ति ५, तिनिमैं चंद्रप्रज्ञप्तिके छत्तीसलाख पांचहजार पद हैं तिनमें चंद्रमाके भोगादिक संपदाका वर्णन है। अर सूर्य प्रज्ञप्तिके पांचलाख तीनहजार पद हैं। तिनिमें सूर्यके विभवका अर उदयका अर सूर्यकी स्त्रीनिका वर्णन है। अर जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिके तीनलाख पचीसहजार पद हैं, तिनिमें जंबूद्वीपका संपूर्ण वर्णन है। अर सर्व द्वीप समुद्र प्रज्ञप्तिके वावनलाख छत्तीसहजार पद हैं, जिनिमें असंख्यात द्वीप समुद्रका वर्णन है। अर व्याख्याप्रज्ञप्तिके चौरासीलाख छत्तीसहजार पद हैं, तिनिमें रूपी द्रव्य पुद्गल अर अजीवादि पांच अरूपी यह कथन है। अर भव्य अभव्य

कुवादीनिके मूल भेद चारि तिनके विशेष भेद तीनसै तरेसठि हैं। चारिमें प्रथम क्रियावादी तिनके भेद एकसौ अस्सी अर दूजे अक्रियावादी तिनके भेद चौरासी। अर तीजे अज्ञानवादी तिनके भेद सडसठि अर चौथे विनयवादी तिनके भेद वत्तीस ए तीनसै तरेसठ भये तिनका वर्णन सुनहु। प्रथम एक सौ अस्सी क्रियावादी तिनिका व्याख्यान करिये हैं नीति कहिये निश्चय अर स्वभाव कहिये वस्तुका स्वभाव अर काल कहिये समय अर दैव कहिये पूर्वकर्मका उदय अर पौरुष कहिये उद्यम ए पांचसो स्व कहिये आप अर पर कहिये दूजा नित्य कहिये थिर अनित्य कहिये अथिर ए चारि तिनसूं पांच गुनिए तव वीस होइ अर वीसकूं नव पदार्थनिमूं गुनिए तब एक सौ अस्सी भेद होय ये क्रियावादीनिके भेद कहे, एक एक अंसका छल कपट करि वाद करै ॥ ५० ॥ अक्रियावादीनिके भेद चौरासी सो सुनहु जीवादिक सप्त तत्व स्वतः कहिये आपतैं अर परतः कहिये परतैं गुनिए तव चौदह भेद होंइ अर चौदहकूं नियति स्वभाव काल दैव पौरुप इन पांचनिसूं गुणिए तव सत्तरि भेद होंइ। अर नियति काल ये दोय भेद आपही करि सप्त तत्वनिकूं गुणिए तव चौदह भेद भये। वे सत्तरि अर ये चौदह मिलि करि चौरासी भये एक एक भेदका छल कपट करि वाद करै मोक्षके उपायतैं विमुख होय सो अक्रियावादी उदयकूं मानै उद्यम न ठानै ए अक्रियावादीके भेद कहे ॥ अव अज्ञानवादीके सड़सठि भेद सुनहु नव पदार्थ तिनिकूं सप्त भंगकरि गुणिए तव तरेसठ होंय। सप्त भंगनिके नाम—स्यात् अस्ति कहिये कंथचित् प्रकार स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभावकी अपेक्षा जीवादि द्रव्य है अर स्यात् नास्ति कहिये परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परभाव इनिकी अपेक्षा नाहीं अर स्यात् अस्तिनास्ति कहिये एक ही समै अस्तिनास्ति है, जा समै स्वभावकी अस्ति है ताही समै परभावकी नास्ति है, जातैं अस्तिनास्ति उभयरूप हैं। अर स्यात् अवक्तव्य कहिये वचनतैं अगोचर है। अस्ति कहिये तौ नास्तिका अभाव अर नास्ति कहिये तौ अस्तिका अभाव तातैं अवक्तव्य है। अर अस्ति अवक्तव्य कहिये स्वभाव करि है परगोचर नाहीं, अस्ति कहिये तौ नास्तिका अभाव तातैं अवक्तव्य है। अर नास्ति अवक्तव्य कहिये

उत्सर्पिणी दशहीकी अवसर्पिणी यह कालकी समानता कही। अर ज्ञानकी अनंतता अर दर्शनकी अनंतता यह भावकी तुलना कही। याभांति समवायांगमें निरूपण किया अर पांचवां अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति ताके पद दोय लाख अट्ठाइस हजार तामें शिष्यने विनय करि गुरुसूं प्रश्न किए तिनके विस्तारका वर्णन है। कैसा है शिष्य कुमारगतें अति उदास है ॥३५॥ अर छठा अंग ज्ञातृधर्मकथा ताके पांच लाख छप्पन हजार पद तामें जिनधर्मकी अमृत कथाका कथन है अर सातवां उपासकाध्ययन अंग ताके पद ग्यारह लाख सत्तर हजार यामें सम्पूर्ण श्रावकके व्रतका व्याख्यान है। अर आठवां अंतकृतदशांग ताके पद तेईस लाख अठाईस हजार तामें उपसर्गके जीतनहारे महा मुनि एक एक तीर्थंकरके वारेमें दश दश अन्तःकृतकेवली होंहि तिनिका कथन है। अंतकृतकेवली ते कहिए जिनका केवल कल्याणक अर निर्माण कल्याणक लार ही होइ। आयुके अंत ही केवल उपजै ॥ ३९ ॥ अर नववां अनुत्तरोपपादकदशांग ताके पद वानवै लाख चवालीस हजार तामें एक २ तीर्थंकरके समै दस दस मुनि उपसर्ग जीति नव अनुत्तर तथा पांचनुत्तर इनिविषै जाहि तिनका कथन है। संसारविषै उपसर्ग दश प्रकार है। तीन प्रकारके मनुष्य स्त्री पुरुष नपुंमक अर तीन प्रकार ही तिर्यंच स्त्री पुरुष नपुंमक अर देवनिमें नपुंसक नाहीं स्त्री पुरुष दोय ही भेद हैं। तब आठ तो ए चेतन उपसर्ग भए अर एक अपने ही शरीर करि आपकूं उपसर्ग होय। अर एक अचेतन उपसर्ग होय भीत पत्थर इत्यादि आप ऊपर आ परै ये दस प्रकार उपसर्ग कहे। इनकूं संत ही जीतैं। अर दशवां प्रश्नव्याकरण नामा अंग ताके तिराणवे लाख सोला हजार पद तामें चारि प्रकार धर्मकथा आक्षेपणी कहिये धर्मकी स्थापक अर विक्षेपणी कहिए अधर्मकी उत्थापक अर संवेगनी कहिए जिनधर्म अर जिनधर्मका फल तासूं अनुरागकी उपजावनहारी अर निर्वेदनी कहिए वैराग्यकी वढावन हारी है अर विपाकसूत्र नामा ग्यारवां अंग ताके एक कोडि चौरासी लाख पद तामें कर्मनिके विपाक कहिये उदय तिनिका वर्णन है ॥४४॥ अर बारहवां दृष्टिवाद नामा अंग ताके पद एकसौ आठ कोडि अर साठि लाख छप्पन हजार पांच तामें तीनसै तरेसठि कुवादीनिका कथन है सो

बधैं पद कहिए सो पद समासकी मर्यादा कहिए सो अक्षरसमास कहिए अर पीछे एक एक अक्षर बधे पद कहिये ताके ऊपर एक एक अक्षरकी वृद्धि करि पदके भेद तीन अर्थपद, प्रमाणपद, मध्यमपद, ये तीन प्रकार पद तिनमें एक, दोय, तीन, चारि, पांच, छह, सात, आठ, अक्षर लग अर्थपद कहिए सो वे अक्षर अथ संयुक्त हैं । अर दूजा प्रमाण पद सो आठ आंक हीका होय ॥ २३ ॥ अर तीजा मध्यमपद सोलासै चौंतीस कोडि तियासी लाख सात हजार आठ सै अठासी अक्षरनिका कहिए ॥ २५ ॥ सो एक अक्षर की वृद्धि करि पद समासतैं लेय पूर्ण समास पर्यंत द्वादशांगका प्रमाण है । ऐसे अठारह हजार मध्यमपदनिकरि आचारांग सूत्रका व्याख्यान है, सो द्वादशांगके आदि है, तामें यतीके आचारका वर्णन है । अर दूजा सूत्रकृतांग ताके पद छत्तीस हजार तामें सुसमयपर समयका विशेष वर्णन है । अर तीजा स्थानांग ताके पद वियालीस हजार तामें एक आदि दश पर्यंत गिणितीका व्याख्यान है । एक केवलज्ञान एक मोक्ष आकाश एक धर्म एक अधर्म इत्यादि अर दोय दर्शन ज्ञान अथवा राग द्वेष इत्यादि हैं । तीन रत्नत्रय तीन शल्य त्रिदोष इत्यादि चार गति अनंत चतुष्टय चारि कषाय इत्यादि, पंच महाव्रत पंचास्तिकाय पंचभेद ज्ञान इत्यादि, षटद्रव्य छह लेश्या इत्यादि, सप्ततत्व सप्तभय सप्तविसन सप्तनरक इत्यादि, अष्ट कर्म अष्ट मद अष्टगुण अष्टरिद्ध इत्यादि नव पदार्थ नव नय नवधा शील इत्यादि अर दशलक्षण धर्म दशधा परिग्रह दशदिशा इत्यादि अनेक गणितकी चरचा तीजे स्थानांगमें है ॥ २९ ॥ अर चौथा समवायांग ताके चौसठि हजार पद तामें द्रव्यादिककी तुल्यता कही । कोऊ द्रव्य काहू तैं न्यून नाहीं सबही द्रव्य सत्ता लक्षण करि समान हैं ॥ ३० ॥ धर्म अधर्म अर एक जीव लोकाकाश ये प्रदेशनिकरि समान हैं । ये असंख्यात प्रदेशी हैं । यह तो द्रव्यनिकी तुल्यता कही ॥३१॥ अर क्षेत्रमें अढाई द्वीप अर पहले स्वर्गका ऋजु विमान अर पहले नरकके पहले पाथडेका नाम सीमन्तक नाम इन्द्रकविला अर मुक्ति शिला अर सिद्धक्षेत्र ये पांच स्थानक पैंतालीस लाख योजनके हैं । यह क्षेत्रकी समानता कही अर दश कोडा कोडी सागरकी

संघातसमास ८ प्रतिपत्ति ९ अर प्रतिपत्ति समास १० अनुयोग ११ अर अनुयोगसमास १२ प्राभृत १३ अर प्राभृतप्राभृतसमास १४ प्राभृत १५ प्राभृतसमास १६ वस्तु १७ अर वस्तुसमास १८ पूर्व १९ अर पूर्वसमास २० ये श्रुतज्ञान ज्ञानके भेद कहे, सो अक्षर ही रूप कहिये अर अनंतानंत पुद्गुल परमाणु तिनिके खंधनिका समूह ताका कथन हू श्रुतविषैं ही है। श्रुतके अनंतानंत विभाग तिनिमें एक भागका नाम पर्याय कहिये, श्रुतके भेद अपार हैं ॥१५॥ जीवनिमें सूक्ष्म निगोदिया अलब्धपर्याप्त ता समान अर कोई तुच्छ नाहीं सो वाके अंशमात्र ज्ञान है सबनिमें अल्प ज्ञानावास मानना ही सो श्रुतज्ञानके आवर्णका अभाव वाहूके है। अक्षरके अनंतवें भाग सूक्ष्म निगोदियामें ज्ञान है, एतेहू ज्ञानका अभाव जीवके कदे ही न होय। संसार अवस्थाविषैं जीव अनादिकालका अज्ञानी है परंतु निश्चय नयकरि ज्ञानरूप ही है। जो उपयोगका वियोग होय तौ जीव न कहावै। जीव है सो उपयोग लक्षणका धारक है। जैसैं चंद्र सूर्य अति मेघपटलके तलै आय गये हैं तौहू तिनकी प्रभाका अभाव न होय किंचित उद्योत रहै तैसैं कर्मके आवर्णतैं जीवके किंचित् ज्ञान है। निगोदहू विषैं अचक्षुदर्शन अर कुमति कुश्रुतिज्ञान ये तीन उपयोग हैं ॥१८॥ जो एक अक्षर सो श्रुतका पर्याय अर अक्षरका अनंतवां भाग सो पर्याय समास ये आवर्ण सहित श्रुतके भेद हैं॥ १९ ॥ अर अक्षरका अनंतवां भाग असंख्यातवां भाग संख्यातवां भाग यह तो अनुक्रमकरि हाणि कही। अर संख्यातगुणी वृद्धि असंख्यातगुणी वृद्धि अनंतगुणी वृद्धि यह अनुक्रमकरि वृद्धि कही॥ २० ॥ याही भांति एक भागतैं जौलग अक्षरकी पूर्णता होय तौलग पर्यायसमास कहिए भावार्थ—एक अक्षरके अनन्त भाग करिए तिनमें सूक्ष्मनिगोद अलब्धपर्याप्तके अक्षरका अनंतवां भाग है सो एक भाग है अर काहू जीवके एक भागतैं दोय भाग है तब ज्ञान बध्या कहिए याही प्रकार अंश अंश बढते जब एक अक्षरकी पूर्णता होय तहां लग पर्याय समास कहिए सो याके असंख्यात लोकमात्र भेद हैं ताका विशेष कथन गोम्मटसारकी ज्ञानमार्गणातैं जानना। बहुरि एक एक अक्षरकी अनुक्रमतैं वृद्धि होय ताके ऊपर एक अक्षर

१०

स्वरूप विवेक दृष्टि करि देखते भये। कैसा है धर्मतीर्थ गंभीर है अर्थ जाका अर सर्वथा प्रकार प्रगट है । जब जिनेंद्ररूप दिनकर वचनरूप किरणनिके उद्योत करि अर्थका प्रकाश करै तब मिथ्यात्वरूप अंधकार कहां रहै ? कोई ही निकटभव्य जीव जिनवरके होते हुये मिथ्यात्वरूप तिमरको न ग्रहै ॥ ३ ॥ जगत्‌गुरु जिनेश्वर यह आज्ञा करते भये। सर्व सुखका करणहारा धर्म ही जीवनिकूं सर्व यत्न करि कर्त्तव्य है । यह धर्म प्राणीनिकूं हितके अर्थ है ॥ ४ ॥ चतुरनिकायके देवनिविषैं अर मनुष्यनिविषैं जो इंद्रियजनित सुख देखिये है सो सर्व सुखका करणहारा धर्म ही जीवनिकूं सर्व जतनकरि कर्तव्य है । यह धर्म प्राणीनके क्षयकरि उपज्यो जो आत्माधीन निरवाणका सुख सो हू धर्म थकी उपजै है ॥ ६ ॥ ता धर्मके भेद सुनहु—दया, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रह त्याग यह पंच महाव्रतरूप यतीका धर्म है । जहां रंचमात्र हू हिंसादिक अपराध नाहीं सो यतीका धर्म सर्वथा अव्रतका त्यागी है ॥ ७ ॥ अर गृहस्थका धर्म किंचित् त्यागी है। तातैं श्रावक अणुव्रती है अर साधु महाव्रती है। अर दान पूजा तप शील यह चार प्रकार गृहस्थका धर्म है सम्यक्‌दर्शन है मूल जाका ऐसा अणुव्रत रूप श्रावकका धर्म है, वडी ऋद्धिके धारी स्वर्गके देव तिनकी विभूतिकूं दे है। अर यतिका धर्म सेयाथका मोक्षका सुखका दाता है ॥ ९ ॥ स्वर्ग मोक्षका मूल जो धर्म ताका लक्षण श्रुतज्ञानथकी मोक्षाभिलाषीनिकूं निश्चय करना ॥ भावार्थ–जे परोक्षज्ञानी कल्याणके अर्थी हैं तिनकूं गुरुके मुख श्रुतज्ञानथकी धर्मके लक्षणका निश्चय करना। सुरपुर—शिवपुरका वीज वीतरागका भाष्या धर्म ही है। अर धर्मका कथन करनहारा सर्वज्ञदेवका द्वादशांग सूत्र है। ताकूं द्रव्यश्रुति कहिये अर भावसूत्र आतमबोध है केवलीका प्ररूप्या सूत्र ही प्रमाण है, काहेतैं जो केवली निर्दोष हैं अर आवरणतैं रहित हैं। जाके आवरण होय सो यथार्थ न जानै अर जाके दोष होय सो यथार्थ न कहै ॥ ११ ॥ सर्वज्ञ वीतराग ही यथार्थ कहै। सर्वज्ञके भाषे सूत्र तिनमें ये भेद पर्याय १ अर पर्यायसमास २ अक्षर ३ अक्षरसमास ४ पद ५ अर पदसमास ६ संघात ७ अर

नाईं शरीरकेविषैं हू ममत्व न रहा, जैसैं केश उपाडे तैसैं देहका नेह हू तज्या, तिनके केश अति स्निग्ध अति श्याम अति सघन अति कोमल सो तत्काल उपाड डारे ॥ २१ ॥ भगवान्‌के समवसरणमें चतुर्निकायके देव अर चतुर्विधिसंघ सवही धर्मश्रवणके अभिलाषी भये। ऋषभका समवसरण बारह योजन विस्तार भया ॥ २२ ॥ जहां जिनशासनके अधिष्ठाता देवता महा प्रभावके धारी धर्मचक्रवर्ती जे भगवान आदिनाथ तिनकूं नमस्कार करते भये ॥ २३ ॥ अप्रतिचक्रा है नाम जाका ऐसी जिनशासनकी सेवक देवी जिनेश्वर अर मुनिनिका दर्शन पाय अति हर्षित भई ॥ २५ ॥ भगवान्‌की दाहिनी ओर प्रथम सभामें मुनि, दूजी सभामें कल्पवासी देवनिकी देवी, तीजी सभामें आर्यिका अर श्राविका अनेक नारी, अर चौथी सभामें ज्योतिषी देवनिकी देवी. पांचवीं सभामें व्यंतरनी, छठी सभामें भवनवासिनी, सातवीं सभामें भवनवासी देव, आठवीं सभामें व्यंतर अर नवमी सभामें ज्योतिपी स्त्री, दशवीं सभामें स्वर्गवासी, ग्यारहवीं सभामें नरेंद्रादिक मनुष्य अर बारहवीं सभामें तिर्यंच यह बारह सभानिका वर्णन किया ॥ २६ ॥ तीनलोकके जीव जिनशासनके श्रवणकी इच्छा कर तिष्ठे । जहां प्रथम गणधर वृपभसेन जिन ऋषभदेवकूं पूछ्या तव जिनरूप सूर्य अपनी भाषारूप किरणनिकरि मोहरूप अंधकारकूं दूर करते भव्यनिकूं प्रतिबोधते भये। अधरनिका मिलाप न होय अर रंचमात्र खेद न होय। या भांति दिव्यध्वनि कर सकल भेद धर्मके विस्तार कर कहते भये ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभनाथकेवलोत्पत्तिवर्णनं नाम नवमः सर्गः समाप्तः ॥

अथानंतर—धर्मका व्याख्यान करणहारे आदि पुरुषने उन त्रैलोक्य जीवनिके निकट धर्मका उद्योत किया। मुनिपदविषैं सहस्र वर्ष मौन धारी हूते सो जिनपदविषैं केवल अवस्थामें अनिच्छा पूर्वक दिव्यध्वनि कर तत्त्वका निर्णय किया ॥१॥ संसारके तरनेका उपाय जो तीर्थ ताका स्वरूप तीर्थनाथने दिखाया। सो जगत्‌के जीव तीर्थका

राजकूं सेनासहित निपात किया। बहुरि ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अर अंतराय ये चार एकही साथ हने तब चार घातियनिके क्षयतैं केवलज्ञान उपज्या समस्त द्रव्य गुणपर्यायसहित विलोके लोकालोकका अवलोकन भया तब चतुरनिकायके देव इंद्रनि सहित आये जैसैं गर्भजन्मतपविषैं आये हुते तैसैं केवलकल्याणकमें सब आये, भगवानके कर्मनिके जीतवेका यश गावते भये। भगवान् चौतीस अतिशय, अष्टप्रातिहार्य अर अनंतचतुष्टय तिनकरि संयुक्त सोहते भये ॥ १३ ॥ अर भरत चक्रवर्तीकूं एकसमय तीन वधाई लोकनिने दीनी, एक कहै प्रभुकूं केवलज्ञान उपज्या। अर एक कहै तिहारी आयुधशालाविषैं चक्र उपज्या। एक कहै तिहारे पुत्र उपज्या तब भरत अति हर्षित होय पहिले प्रभुके दर्शन आया। इक्ष्वाकुवंशी, कुरुवंशी, भोजवंशी, उग्रवंशी इत्यादि बड़े बड़े राजानि सहित चतुरंग सेनाकरि शोभित समवसरणविषैं जाय केवल अतिशयकरि मंडित परमेश्वरकी पूजाकरि प्रणाम करता भया। ता समय भरतका छोटा भाई वृषभसेन अनेक राजानि सहित मुनि भया, संयम अंगीकारकरि पहिला गणधर भया ॥ १६ ॥ अर राजा सोमप्रभ अर श्रेयांस दोऊ भाई जयकुमारकूं राज देय मुनि भये। अर रानी लक्ष्मीमती जयकुमारकी माता आर्या भई अर जयकुमार अपने भाईनि सहित सुखसूं राज्य करै। अर श्री ऋषभदेवकी पुत्री ब्राह्मी अर सुंदरी दोऊ महाधीरकी धरणहारी अनेक रानीनि सहित आर्या भई। सब आर्यानिकी ये दोऊ स्वामिनी भई। श्रीऋषभदेवकी केवलविभूति आश्चर्यकारी देख अनेक धीर सम्यक्त सहित व्रत आदरते भये, कईयक मुनि भये कईयक आर्या भई कई श्रावक भये कई श्राविका भई अर कई व्रत नियम आखडी ताकूं धारते भये अर कईयक चतुर्थगुण स्थानकूं धारक अव्रतसम्यग्दृष्टि भये। जाकी जैसी सामर्थ्य भई ताही प्रमाण व्रत तप शील आदरे। अनेक स्त्री पुरुष पद्मरागमणि समान हैं हथेली जिनकी। अर इंद्रनीलमणि समान हैं केश जिनके सो अपने हाथनिकरि केश उपाडते अति सोहते भये। प्रथम अवस्था रागरूप हुते सो वीतरागभावका प्रसंग पाय विरागी भये ॥ २० ॥ वैराग्यके धरणहारे वे भव्यजीव महा विवेकी तिनके केशनिकी

ताकूं स्नान कराय देवनिने पूज्या ॥ ९६ ॥ अर जगतविषैं यश भया यह समाचार अयोध्याकेविषैं भरतने सुने। जो दानपतिकूं देवपति पूजते भये। तब भरत आदि भूपति भी आयकरि कुरुवंशकूं पूजते भये ॥ १९७ ॥ देखा है प्रत्यक्ष दानका फल जिन्होंने ऐसे नृप दानकी विधि पूछते भये। अति श्रद्धाकरि युक्त भरतादिक पूछे हैं। तिनकूं दानपति श्रेयांस दानकीविधि कहै हैं। मुनिराज गृहके निकट आवैं। तब श्रावक ऐसे कहै हैं। हे स्वामिंस्त्वमत्र तिष्ठ तिष्ठ ये वचन कहिकरि मुनिकूं पडगाहै हैं। फिर उच्चस्थानक खडा राखै, दाता मुनिके पांव धोवै, पूजाकरै, प्रणामकरै, मनशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि आहारशुद्धि ये नव प्रकार दानकी विधि है ॥२००॥ यह पुण्य प्रथम तो अभ्युदय कहिये इंद्रादिपद तिनका कारण है। पश्चात् मुक्तिका कारण है। यह दान दाताकूं स्वर्ग मुक्ति दे है ॥ १ ॥ या भांति सुना है यथार्थ दानका स्वरूप जिन्होंने ऐसे भरतादिक भूप श्रेयांसकी बारंबार प्रशंसाकरि दानधर्मविषैं भया है अंतःकरण जिनका ॥ वे सकल अपने अपने स्थानकूं गये ॥ २ ॥ अर ऋषभदेव चार ज्ञानके धारक हजारवर्ष पर्यंत मोक्षके अर्थि नानाप्रकारके तप करते भये। कैसे हैं भगवान्? ज्ञानहीका है प्रयोजन जिनके भगवानके शिरपर केशनिरूप मणियनिका समूह कैसा सोहै है। जैसैं वटवृक्षके जटाका भार सोहै है। भगवान जिष्णु कहिये प्रकाशरूप सो सुंदर केशनिकरि अति सोहते भये। कंचन वर्णविषैं श्यामवर्ण अति सोहै ॥ ५ ॥ एक दिन विहार करते पुरमिताल नामा नगरके निकट प्राप्त भये। जहां राजा वृषभसेन भरतका छोटा भाई आपका पुत्र सो राज करै ॥ ६ ॥ ता नगरका संकटनामा वन तहां वटके वृक्ष तले ध्यानधरि योगींद्र विराजे। महामनोहर शिला तापर पद्मासनधरि शुक्लध्यानरूप खड्गकी धाराकरि मोहशत्रुकूं मारते भये। कैसे हैं मुनींद्र वश किये हैं मन इंद्रिय जिनि अर क्षपकश्रेणीविषैं आरूढ हैं। वह क्षपकश्रेणी रणभूमि समान है जैसैं रणभूमिमें शूरवीर शत्रुका नाश करै। तैसैं क्षपकश्रेणीविषैं महामुनि मोहका नाश करै; भगवान आदीश्वर महा उत्साहरूप गजपर चढे। रागादिक परसेनाका नाश करते भये ॥ ८ ॥ पहिले तो प्रभुने मोह-

अर दानधर्म विधिका वेत्ता आहारकी शुद्धता जानता भया । श्रद्धा आदि गुणनिका भऱ्या पात्रके संपूर्ण हैं लक्षण जाविषैं ऐसा जो मुनींद्र ताहि इक्षुरसकरि पूर्ण जो कुंभ ताहि उठायकरि कहता भया । हे प्रभो ! प्रासुकरस लेवहु यह आहार छ्यालीस दोष रहित है । छ्यालीस दोषनिमें सोलह उद्गम । अर सोलह उत्पाददोष ॥ ८८ ॥ दश एषणादोष अर धूम्र अंगार प्रमाण अर संयोजन ये छ्यालीस दोष तिनकरि रहित । यह प्रासुकरस ऋषियनिके लेयवे योग्य है ॥ ८९ ॥ तब भगवान शुद्धात्मा व्रतकी वृद्धिके अर्थि पाणिपात्रकरि वर्षवेंदिन पारणा करते भये । दोऊ पांव वरावर राखिकरि खडे खडे आहार करते भये । मुनिराजके आहारकी क्रियाकी विधि लोकनिकूं दिखावते भये । राजा श्रेयांसने परमपात्रकूं विधिपूर्वक पारणा कराया कोई अंतराय आहारमें न पड्या । तब प्रभुके आहारके लिये पीछे पंचाश्चर्य भये । रत्नवर्षा ये कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वर्षा । सुगंध जलकी वर्षा । शीतल मंद सुगंध पवन अर धन्य धन्य वचन ॥ ९० ॥ आकाशविषैं देवकृत ऐसे शब्द होते भये । जो धन्य यह दान अर धन्य यह पात्र अर धन्य यह दाता अर धन्य यह मुनिके दानकी विधि ऐसे धन्य धन्य शब्द होते भये अर आकाशविषैं देवदुंदुभी बाजै । तिनके शब्द मेघकी ध्वनिकूं जीतैं ॥ ९१ ॥ श्रेयांसके दानके यशकी राशिकरि तीनलोक पूर्ण भये । तीनलोकमें श्रेयांसका यश विस्तऱ्या, यशके समूहकरि दिशारूप नारियनिके मुख उज्ज्वल भये । अर शीतल मंद सुगंध पवन ऐसी बाजी मानूं दिशारूप आंगना तेई भई देवांगना तिनके मुखतैं निकसे ये सुगंध श्वास ही हैं अर फूलनिकी वर्षा आकाशतैं भई सो मानूं श्रेयांसके सुमनकी वृत्ति अंतःकरणमें न समाई सो सृष्टिविषैं वरषी सुमन नाम पुष्पका है । अर सुमन नाम सत्पुरुषनिके मनका है । सो मानूं यह पुष्पवृष्टि ही भई कुरुवंशियनिके सुमनकी वृष्टि ही वर्षी ॥ ९४ ॥ अर श्रेयांसने योगींद्रके करपात्रविषैं इक्षुरसकी धारा डारी । ताकी स्पर्धा हीकरि मानूं देवनिने आकाशसूं रत्नधारा वर्षाई । जिननाथकूं पूजे बहुरि तपकी वृद्धिके अर्थि धर्म तीर्थके कर्त्ता ऋषभ सो तो वनमें गये अर दानतीर्थका कर्ता सोमप्रभका लघु वीर श्रेयांस

अकस्मात् आज आपके पाहुना आया। क्षमा अर सब जीवनिसूं सुमित्रता। अर तपोलक्ष्मी है संग जाके ॥ ७२ ॥ सो उत्तरकी ओरसूं नगरीमें प्रवेश किया है। जूडाप्रमाण धरती देखता चल्या आवै है ईर्यासमितिका पालक महा दयालु चांद्रीचर्या कहिये महानिर्मल आचारकी प्रवृत्ति ताहि गहकरि विहार करै है अर नगरके लोक ता लोकेश्वरकूं देखकरि अति हर्षसूं भेले भये हैं। अर चरणारविंदकूं अर्घ देवै हैं। अर स्तुति वंदनादिकरि सेवैं हैं जैसैं चंद्रमा घर घर प्रति उद्योत करता ऊंचा चढै है। तैसैं जिनचंद्र गृहनिकी पंक्तिकूं प्रकाशता अपने गृहके निकट आया है ॥ ७५ ॥ ये सिद्धार्थके वचन सुनिकरि दोऊ भाई अति आदरसूं उठे। ईश्वरके सन्मुख गये ललाटविषैं दोऊ हाथ लगाय नमस्कार किया। अर जैसैं चांद सूर्य सुमेरकी प्रदक्षिणा करैं। तैसैं ये दोऊ भाई प्रभुकी प्रदक्षिणा करते भये। अर पांयनिपर पडकरि समाधान पूछते भये। अर कहते भये हे प्रभो! आगैं पधारो हमकूं आज्ञा देवहु सो करैं हम तुम्हारे सेवक आज्ञाकारी हैं, आप मौनावलंवी इनकूं कुछ उत्तर न देवें सो ये सन्मुख ठाढे मौनका कारण विचारैं हैं ॥७८॥ अर राजा सोमप्रभकी राणी लक्ष्मीमती सो भी चंद्रमाकी कलाकी न्याईं जिनेंद्ररूप गिरींद्रकी प्रद्रक्षिणा करती भई ॥८१॥ अर श्रेयांस राजाका छोटाभाई नहिं लगै हैं पलक जाके सो नेत्रनिकरि निरंतर ऋषभका रूप निरखता ऐसा विचार करता भया। जो मैंने पूर्वभवविषैं ऐसै निर्ग्रंथ रूपके धारक मुनि देखे थे। प्रभुका महा दैदीप्यमान शरीर महाशांतिरूप ताकरि प्रतिबोधकूं पाया, श्रेयांस अपने अर प्रभुके दश भवजानकरि पांयनिपर गिरि मूर्छित होय गया। मूर्छित भया तोहू प्रभुके पांव अपने सिरके कोमल केशनिसूं पूछकरि मार्गका खेद निवारणे अर्थि आनंदकी अश्रुधारारूप उष्णजलकरि प्रभुके चरण प्रक्षाले, पूर्वजन्मविषैं प्रभु तो वज्रजंघ राजा हुते। अर श्रेयांसका जीव राणी श्रीमती था सो राजा राणीने चारण मुनिकूं आहार दिया हुता। सो जिनराजके दर्शनसूं सब विधि याद आई तब ये शब्द कहे। हे भगवन् तिष्ठो तिष्ठो ऐसे कहि मंदिरमें लीने। अर उच्चासनविषैं पधरायकरि पांव धोये ॥ ८५ ॥ अर चरणनिकी पूजाकरि मन, वचन, कायकरि प्रणाम कीया

खंडनिका बंधु चंद्रमा कुमुदबनकूं प्रफुल्लित करै। तैसैं जगतको प्रफुल्लित करणहारा जगतका बांधव सबनिकूं आनंद उपजावै। यह तो चंद्रमाके देखिवेका फल है अर इंद्रकी ध्वजाके देखिवेतैं यशरूप ध्वजाका धारी अर सुमेरुके देखिवेतैं कल्याण कहिये सोनेका पर्वत। अर प्रभु कल्याणका पर्वत। अर जैसैं विजुरी क्षणएक प्रगट होयकरि छिप जाय तैसैं मुनिराज एक क्षण पुरमें आय वनकूं जाते रहे। सो विजुरीके देखिवेतैं मुनींद्रका आगम जाण्या जाय अर रत्नद्वीपके देखिवेतैं धर्मरूप रत्नका महाद्वीप अर विमानके देखिवेतैं सर्वार्थसिद्धिका चया। ये सात स्वप्न तो अनुमानकरि ऋषभका आगमन सूचै हैं। अर आठवें स्वप्नमें ऋषभदेव देखे सो आज ऋषभका प्रत्यक्ष दर्शन होगा यह पंडितनिने निश्चय किया अर नगरकी तथा राजमंदिरकी आज कछु और ही शोभा दीखै है। ऐसी अब तक देखी नाहीं। अर आज सर्व दिशा निर्मल भासै है सो कल्याणकूं सूचै है ॥ ६४ ॥ यह स्वप्नका फल वे दोऊ भाई जानकरि भीतर अर बाहिर सब ठौर समझदार मनुष्य मेलकरि जिननाथकी कथा विषैं आसक्त तिष्ठे हुते सो दुपहरके समय शंखनाद भया मानूं वहां शंखनाद ऋषभके आगमनके निवेदनतैं दोऊ भाइयनिकूं बधाई देता भया। अर परिवारने रच्या है दोऊ भाइयनिके अर्थि महामनोहर दिव्य आहार सो भोजनकी सब सामग्री तैयार है अर दोऊ भाई भोजनके अर्थि मणीनिके चौकविषैं बैठे हैं ताही समय सिद्धार्थनामा द्वारपाल शीघ्र ही आयकरि दोऊ भाइयनिकूं मंगलरूप बधाई देता भया ॥ ६५ ॥ हे प्रभो! जगतका पति श्री-आदिनाथस्वामी जाने समुद्रपर्यंत पृथिवी वैराग्यके अर्थि तजी। अर घरतैं वनकी ओर पालकीपर बैठि पधाऱ्या। तब इंद्रादिक देव पालकीके कहार भये। अर कच्छ महाकच्छादि राजा जाकी लार यति भये थे, सो परीषह जीत न सके। तपोभ्रष्ट होगये। अर यह योगेंद्र महादुर्द्धर तपका धारी अकेला धारै है। या ऋषभके समान जगमें योगी नाहीं ॥ ७० ॥ जाकी कथारूप अमृतकरि तृप्त न भये। तुमकूं आदि देय सत्पुरुषनिके आहार बुद्धि विषैं भी अभिलाषा नाहीं होय है। सदा पंडितनिकी गोष्ठीविषैं वाहीकी चर्चा है ॥ ७१ ॥ सो वह जगतका पति

सो इनकी भांतिभांतिकी सेवा करिये। सो कैयक लोक नानाप्रकारके वस्त्र ल्यावैं। कैयक गहना ल्यावें। कैयक दिव्य सुगंध पुष्प प्रभु प्रभुके आगैं धरैं हैं। अर कैयक असमझ वडे वडे तुरंग लावें। अर उतंग मातंग लावें। कैयक रथ पालकी लावें। सो ये सब वस्तु प्रभुके काम नाहीं अर लोकनिने पूर्वे भोगभूमिविषैं यतिका धर्म सुण्या नाहीं यति देखे नाहीं। यतिके आहारकी विधिकूं कोऊ समझे नाहीं, सो विधिपूर्वक योग्य आहार काहू ठौर न बण्या अर लोकनि अनेक विकल्परूप अवधि करी ॥ ५४ ॥ लोकके प्रतिबोधनेके अर्थ उदयरूप भया है जिनवररूपी दिनकर सो अहारके अलाभविषै हूं प्रभुकूं खेद न भया जैसैं दिनपतिकूं दिनविषैं जगद्भ्रमणका खेद न उपजै तैसैं जिनपतिकूं प्रतिदिन आहारके अर्थि पृथिविषैं विहारका खेद न उपज्या ॥ ५५ ॥ जैसैं षट्मास उपवासविषैं खेदरहित ध्यानारूढ तिष्ठे। तैसैं ही षट्मास आहारका अन्तराय भया। आहारके अर्थि नगर ग्रामादिकमें गये। परंतु विधिपूर्वक आहारका लाभ न भया लोकनिने नानाप्रकार पूजे बंदे भांति भांतिकी वस्तु भेंट ल्यायें। परंतु प्रभुके कामकी नाहीं सो पाछे ही फिरैं। छै महीने पृथिवीविषैं विहार किया वर्षएक निराहार भये। परंतु शरीर-विषैं रंचकमात्रहू खेद न उपज्या। अर मनविषैं आर्ति न उपजी ॥ ५६ ॥

अथानंतर—जगतका स्वामी हस्तिनागपुरके निकट गया। जा नगरविषैं सदा मदोन्मत्त हाथी विचरैं हैं तातैं ताका नाम हस्तिनागपुर प्रसिद्ध है। दान कहिये गजनिका मद ताकी प्रवृत्ति विशेष है। सो मानूं दानकी प्रवृत्ति ही दिखावे है ॥ भावार्थ—हस्तिनागपुरविषैं प्रभुका आहार होगा ॥ ५७ ॥ तहां राजा सोमप्रभु अर श्रेयांस दोऊ भाई, प्रभु पधारे ता दिनकी पहिली रात्रिविषैं यह स्वप्न देखते भये ॥ ५८ ॥ चंद्र अर इंद्रकी ध्वजा मेरु विजुरी कल्पवृक्ष, रत्नद्वीप, विमान। अर भगवान ऋषभ ये आठ स्वप्न पुरुषोत्तमके पधारिवेके कारण देखे ॥ ५९ ॥ प्रभात दोनों भाई सभाविषैं विराजे तहां आश्चर्यके भरे पंडितनिके समूहके निकट स्वप्नफलकी कथा करते भये ॥ ६० ॥ सो यह निश्चय भया कोऊ पूज्य पूर्णप्रभाका धारी जगतका बांधव आज ही आवै। जैसैं कुमुदिनीके

भावार्थ—प्रभुके पायनिकी पगथली पद्मरागमणि समान अति आरक्त है ॥ सो पायनिके धरिवेकरि पृथिवी कोंपलसमान आरक्त भासै है। वह जिनेश्वर केवलज्ञानपर्यंत मौनी लंबी हैं भुजा जाकी सो मार्गविषैं विहार करता अति सावधान जीवदयामें तत्पर इर्यासमितिकूं पालता पृथ्वीकूं देखि देखि पांव धरता भया, न अति शीघ्र न अति धीरे ॥ ४३ ॥ मध्यान्हसमय पुरग्रामविषैं गृहपंक्ति अवलोकता चांद्रीचर्या कहिये महाउज्ज्वल आचरता पृथिवीविषैं भव्य जीवनिकूं दर्शन देता भया ॥ ४४ ॥ अनेक देशनिविषैं घूमते भगवान जगतके नाथ सौम्य है शरीर जिनका ताहि जगतके लोक ऊंचा मुखकरि देखते तृप्त न भये। जैसैं लोक नये चांदकूं देखते २ तृप्त न होवें। लोक प्रभुकूं देखि देखि ऐसा विचार करै हैं यह श्वेतभ नु कहिये चंद्रमा है। राहुका संसर्गतजि भूमंडलमें आया है। तजे हैं तारा ग्रह नक्षत्र जाने ॥ ४६ ॥ अथवा यह अपूर्व कहिये दूजा सूर्य पृथ्वीविषैं आया है। भूभृत् कहिये पहाड प्रसाद कहिये मंदिर भूरुह कहिये वृक्ष तिनकी छायारूप जो तम कहिये अंधकार ताके दूर करिवेकूं प्रगट्या है ॥ भावार्थ—सूर्य तिमिरकूं हरै है परंतु गिरिमंदिर अर वृक्ष तिनकी छायारूप तिमिर दिनकरसूं न मिटै। यह सब तिमिरका हर्ता दूजा सूर्य अद्भुत दिनकर है अहो लोक यह कांतिका परम स्थानक है अर दीप्तिका परम पद है अर शीलका शैल कहिये पर्वत है अर महा गुणनिकी राशि है ॥ ४८ ॥ यह पुरुषोतम मनोहररूपकी परम हद्द है। अर सुजनताकी खान। माधुर्यताकी अवस्था है यह धीर्यताकी अवधि है। आहारके अर्थि नगर ग्रामादिकविषैं जाय हैं तहां लोक देखकरि परस्पर ऐसी वार्ता करै हैं यह भगवान आदिनाथ अति रमणीकताकी मानूं खान है। ताकी परम हद्द है अर धीर्यताकी सीमा है या समान धीरवीर अर नाहीं ॥४९॥ हे लोक! आवो या जिनवरकी दिगंबर दिशाविषैं परम रमणीयता देखहु देखहु याके दर्शनसूं दृग सफल होवें हैं ॥५०॥ या भांति परस्पर किया है आलाप जिनि ऐसे लोकनिके समूह नर नारी आश्चर्यके भरे आदीश्वरकूं अवलोकते भये ॥५१॥ चतुर्थकालके आदि लोक सरल (जड) चित्तके सूधे। परंतु असमझ मुनिका अर गृहस्थका धर्म जानै नाहीं। यह जानैं वे बडे राजा हैं।

श्रेणियनिविषैं अपने कुटंबसहित तिष्ठे ॥ ३३ ॥ विजयार्द्धके विद्याधर महाधीर इन दोऊ भाइयनिकूं अपने शिरोमणि जानकरि सब लोकसूं उत्कृष्ट आपकूं मानते भये ॥३४॥

अथानंतर—वह भगवान पुरुषोत्तम प्रतिमासमान निश्चल योग धरे अडिग ऊभे परीषहरूपी अग्निके बुझावनहारे ध्यानरूप समुद्रविषैं स्थिर जिनकूं कोऊ बाधा नाहीं। सो छै महीना तो कायोत्सर्ग धरि उपवास किये बहुरि ऐसा विचारकरि आहारग्रहणकूं गमन किया, मनमें यह विचारी कि मैं तो तीर्थंकरपदका धारक हूं मेरी शक्ति विशेष। अर और मनुष्य अल्पशक्तिके धारक प्रवर्तें हैं अर आगामी कालविषै होंयगें जो मोक्षके अर्थि कर्मशत्रुअनिकूं जीत्या चाहै हैं। तिनकूं भोजनके अभावविषैं मुनिव्रतका साधन कैसे होय। मैं तो तीर्थंकर प्रकृतिके प्रभावकरि महा शक्तिवंत। बहुत दिनभी अनशनरूप रहूं तो खेद नाहीं परंतु अल्पशक्तिके धारी बहुत नर आहार विना न रहि सकैं। तातैं मुनिके आहारकी विधि मेरे आहारकी प्रवृत्ति विना प्रगट न होय। तातैं आचारांगसूत्रकी आज्ञा प्रमाण मोहि श्रावकके घर आहार लेना ॥३३॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषाथ तिनमैं उत्तमक्षमादि हैं लक्षण जाके। ऐसा धर्म सो वडा पुरुषार्थ है। मोक्षका अर अर्थ कामका साधन एक धर्म ही है ॥ ३७ ॥ सो धर्मका साधन शरीर है। अर शरीर प्राणनिके आधार है। प्राणनिकरि यह प्राणी आयुपर्यंत शरीरमें रहै है सो प्राण अन्नके आधार हैं। अन्नविना प्राण न रहै तातैं परंपरायकरि यह अन्न ही धर्मका साधन है अल्प बलके धारक जो मनुष्य तिनकूं अन्नही स्थिरताका कारण है ॥३९॥ तातैं निर्दोष आहारके लेनेकी विधि धर्मके अर्थीनिकूं मैं या भरतक्षेत्रविषैं मार्गके चलायवे अर्थि दिखाऊं ॥ ४० ॥ ऐसा विचारकरि वह ईश्वर सब बातनिमें समर्थ क्षुधा आदि सकल परीषहका जीतनहारा जो जन्म पर्यंत आहार न करै तो ताहि बाधा नाहीं परंतु परमार्थविषैं है बुद्धि जाकी सो साधुके आहारकी शास्त्रोक्तविधि दिखावने अर्थि विहारकूं उद्यमी भया। छै महीने तो एक आसन एक स्थानकमें खडे रहे बहुरि पृथिवीकूं अपने चरणनिके धरनेकरि कोंपलरूप करते गमन करते भये।

आताप ही हैं। अर प्रभुकी छायाविषैं फल न होय तो आताप भी नाहीं ॥२२॥ जो हम प्रभुका आचरण आचारिवेकूं समर्थ नाहीं तो वनविषैं तो रहैं यह वनविषैं रहना ही प्रभुके आचरणके पीछे लगना है। ऐसा निश्चयकरि वे चार हजार फलाहारी भये। वृक्षनिके पत्र अर फल भखे। अर वृक्षनिके वल्कल पहिरे जटाधारी बनवासी तापस भये अर प्रभुका पोता मारीच तपकरि तप्त है तन जाका। सो जैसें कोई मरुस्थलविषैं मरीचिका कहिये भाडली ताविषैं तृषाकरि पीडै भ्रमकरि जल देखै। वैसें मारीच सांख्यसूत्ररूप मरीचिकाविषैं तत्वके ज्ञानजलकूं हेरता भया सो कहां पावै। भावार्थ—मारीचने सांख्य पातंजल दो शास्त्र प्रगट करे जैसें दाहकरि पीडित जो गज ताके जलका अवगाह दाहका हर्ता नाहीं। तैसें मारीचके परसूत्रका अभ्यास शांतभावका कर्ता न भया। यह मान कषायका धारक भगवानका भेषकरि सन्यास मतका पोषक भया। एक दंडका है धारण जाके। मुंडित स्नानादिक शुचिका करणहारा ऐसा परिव्राजकका भेष प्रगट करता भया ॥ २७ ॥

अथानंतर—नमि विनमि कुमार कच्छ महाकच्छके पुत्र भोगनिकी याचनाकरि आतुर भए। प्रभुके पायनि लगिकरि ऊभे भोगाभिलाषकरि चिंतावान है चित्त जिनका। जब वे प्रभुके पास आय ठाडे भये। अर प्रभु ध्यानारूढ तब नागेंद्रका आसन कंपायमान भया। सो अवधिज्ञानकरि प्रभुके निकट उनका आगमन जानि आप धरणेंद्र आया। भक्तिकरि प्रभुकूं प्रणाम करता भया ॥ २९ ॥ ज्यों अपने भाइयनिकूं कोई विश्वास उपजावे। त्यों इन दोनों भाइयनिकूं विश्वास उपजायकरि महाविद्या देता भया गुरुकी सेवाके प्रसादतैं इनकूं विद्याका लाभ भया ॥ ३० ॥ अर विद्याधरनिका आधार जो विजयार्ध पर्वत वहां इनकी लार जाय इनकूं वहांका राज्य देता भया। जगतगुरुकी सेवाकरि क्या न होय ॥ ३२ ॥ दक्षिणश्रेणीके पचास नगर उनका स्वामी तो नमि भया। अर उत्तरश्रेणीके साठ नगर तिनका स्वामी विनमि भया। नमि तो दक्षिणश्रेणीविषैं रथनूपुर पुष्पनगर वहां तिष्ठता भया। अर विनमि उत्तरश्रेणीविषैं नभांस्तिलकनामा मुख्य नगर तहां तिष्ठता भया ये दोऊ भाई दोऊ

तिनकी बुद्धि जिनने धारी है जैसैं बौद्ध आत्माकूं क्षणभंगुर मानै हैं अतीत अनागत अनंत पर्यायका ज्ञान नाहीं वर्त्तमान पर्यायरूप क्षणभंगुररूप मानै हैं। तैसैं ये अपूर्व परिपाटीरूप मुनिव्रत तैं भ्रष्ट भये वर्तमान आतुर बुद्धिकरि खान पानके अभिलाषी भये हैं ॥ १० ॥ या भांति वे चार हजार राजा क्षुधातृषादिकरि अति व्याकुल भये। कायोत्सर्गकूं तजकरि धीरे धीरे गमन करते भये स्वामीकी सेवा अर बडे कुलके पुत्रनिकूं मर्यादा तबहीलग है जबलग शरीर न डिगै। अर जब क्षुधातृषाकरि शरीर डिगै तब मर्यादा न रहै। ये सब ही फलादिका भक्षण अर सरोवरादिविषैं जलका पान करने लगे। तब आकाशतैं देवनिकी वाणी भई, हे नर! मंदबुद्धि हो! या रूपकरि यह क्रिया योग्य नाहीं। यह दिगंबररूप महापुरुषनिका है। सो तुम यतिके भेषकरि यह आचरण न करहु, ये डरे दशोंदिशाकी ओर देखकरि यह शब्द देवनिका जानि दिगंबरका भेष तज्या। डाभ वल्कलादि इनकूं ग्रहणकरि भेष पलट्या। ये भेष पलटि जल फलका आहारकरि चित्तविषैं विचार करते भये। अर जब तक उदर-पूर्ण न होय तबतक चित्तकी स्थिरता नाहीं, अर चित्तकी स्थिरता बिना बुद्धि न उपजै। जब विश्राम पाया तब इन्होंने यह विचार किया जो कि भगवान् ऋषभ जगत्के प्रभु इनका क्या अभिप्राय है। जो ये सब भोग तजि दुर्द्धर योगकूं धरि विराजै हैं। सो या लोकका फल तो ऐसा कार्यकरि कुछ दीखै नाहीं ॥ १७ ॥ प्रभुने सकल संपदा तो आपदाकरि जानी है अर रागद्वेषकूं घातकरि समस्त विषय विषसमान गिने हैं। अर सब आभरण तजे। जैसैं कोई कुव्यसनकूं तजै है तैसैं वसन कहिये वस्त्र तजे हैं. अर जैसैं कोई शत्रूनिकूं निर्मूल उखाडे तैसैं अपने हाथसूं सिरके केश उखाडे हैं। अर सकल आहारकी वस्तूनिके त्यागकरि शरीरहू तज्या है। तिनकूं शरीरका ममत्व नाहीं। सो जानिये है कि यह कछु परलोकका साधन है। इन बातनिमें तो या लोकका फल दीखै नाहीं। परलोकका फल कछु होगा अपना स्वामी तो यह चेष्टा धरि वैराग्यरूप विराज्या है। अब अपने तांई क्या कर्तव्य है सो हम न जानैं। हम स्वामीके लार निकसे सो अब घरकूं जाना तो उचित नाहीं। उलटे जायवेमें तो

हमारे पुत्र कलत्र चाकर अन्न जल लेकर आवेंगे हम सांझ सवेरे क्षुधा तृषाकरि व्याकुल हैं। दो महीनेके ऊपर अर तीजे महीनेके भीतर कच्छ महाकच्छ प्रभुके साले, अर मारीच प्रभुका पोता भरतका बेटा ये तीन सबनिमें, अग्रसर सो क्षुधादि तीव्र परीषहकरि चारित्रभ्रष्ट भये, क्षुधाकरि अति दुर्बल हैं अंग जिनके उनकी दृष्टि अति अस्थिर भई सो भ्रमै मानूं अति क्षुधाकरि खेदकूं प्राप्त भई उनकी दृष्टि भ्रमै नाहीं है जे भ्रांतदृष्टि आगे होवेंगे तिनके आदि ही यह पहिले अखाडेमें भ्रमेंका नाटक करै हैं, यद्यपि अन्नजलके अभावतैं उनकी चक्षु चंद्रमा समान श्वेत होय गई है तथापि क्षुधाकी बाधाकरि नेत्रनिमें ऐसा अंधकार होय गया जो दशों दिशा तिमिरही रूप भासै अर भ्रमरूप होय-गये जो दो नेत्रनिकरि आकाशविषैं जिनकूं एक चंद्रके अनेक चंद्र भासैं। अर अनेक चंद्र भासै तो हू आकाश अंध-काररूप दीखै। जैसें वेदांतमार्गविषैं एकही आत्मा अनेकरूप भासै। चंद्रमाका बिंब एक ताके अनेक प्रतिबिंब जलके भरे अनेक घटोंमें भासैं। अर कैयक समस्त शास्त्रका शब्दरूप भावते संते आप हू शब्दरूप प्रवर्तें। भावार्थ—मौन छोडि वार्ता करने लगे। आत्माका स्वरूप आकाशतुल्य अमूर्तिक है। आत्मा तो चिदाकाश अर अंबर जडाकाश। सो नैयायिक वैशेषिक शास्त्रके पाठी आकाशकूं शब्दगुणवाला मानै हैं। तैसें ये चिद्रूपकूं शब्दरूप मान परस्पर वचनोच्चारण करते भये, अर कैयक मारे भूखके भूमिमें गिर पडे जिनमें रचमात्र ज्ञान न रह्या। मानूं कैयक अविवेकी आत्माकूं अचेतन स्वभाव मानै हैं तिनहीका पंथ इनने पकड्या। अर कैयक चिंतवैं हैं। अर स्वइच्छा चार व्रतकरि फलादि भख्या चाहै हैं। अर जलादि पीया चाहै हैं, परंतु अवांछिकव्रत लोका-पवादके भयकरि जल फल नाहीं ग्रहै हैं। सो मानो सांख्यमतके पुरुष ऊभे हैं जो सांख्यमतविषैं पुरुष कहिये आत्मा अकर्ता है अर प्रकृति ही कर्ता है। सो ये प्रकृति कहिये कुबुद्धि ताके प्रेरे उद्यमी भये हैं। परंतु संख्यातैं नाहीं हिले हैं। सांख्यकैसे पुरुष होय रहे हैं। अर कैयक अन्वय कहिये परंपराय यतिका मार्गादि जाके जानने-विषैं अस्त है बुद्धि जिनकी, सो पूर्वापर नाहीं जानै हैं क्षुधाकी मूर्छाकरि पीडित भये। क्षणभंगुरवर्ती जो बौद्ध

हो प्रजा ! तुम शोक तजहु ॥ सब संयोग वियोगकूं धरै हैं ॥ या जीवका देहतैं संयोग है सोई वियोग होगया। तो और संयोगकी क्या बात ॥ ९६ ॥ अर मैंनें तुम्हारी रक्षाके अर्थि राजा भरत थाप्या है ॥ सो तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम धर्म वृत्तिकरि सुखसूं रहो ॥ या भांति प्रजापतिने प्रजासूं कही ॥ तब वे नमस्कारकरि पीछे गये जा ठौर ऋषभने योग धरया सो स्थान प्रयाग कहाया ॥ ९७ ॥ आप जगतके पति माता पिताकूं पूछि सकल कुटुंबसूं क्षमाकरि नम्रीभूत जे राजानिके समूह तिनकूं विदाकरि माहिले परिग्रह रागादिक अर बाहिरले परिग्रह वस्त्राभरणादिक सब तजकरि संयम आदरया, जो मुनिका व्रत अनादिकाल जिनेंद्र आदि महापुरुष लेते आये हैं सोई आदीश्वरने आदरया।

भावार्थ—यह जिनधर्म अनादि निधन है काहूका किया नाहीं। अर कबहू जायगा नाहीं अनादि अनंत है सदासूं सत्पुरुष जिनधर्मकूं जानि योगीश्वरनिका मार्ग अंगीकारकरि लोकशिखर जाय हैं। अर सदाही योगीश्वर जिनधर्मका आराधनकरि निर्वाणपुर पावेंगे। सो अनादिसिद्धि यतिका धर्म ऋषभने धारया। पंचमुष्टि करि अपने केश आप उपाडे। तब इंद्रने इन केशनिकी पूजाकरि क्षीरसागरविषैं जाय डारे। वह पवित्र सागर ही इन केशनिके पधरायवे योग्य है ॥ ९९ ॥ जब जिनराजका तप कल्याणक होय चुक्या तब सुर असुर अर मानव सब ही नमस्कारकरि अपने अपने स्थानक गये ॥ १०० ॥ अर चारहजार राजा कच्छ महाकच्छादि उग्रवंशी भोजवंशी सोमवंशी इक्ष्वाकुवंशी आदि अनेक वंशनिके धारक मुनिव्रतकी रीतिमें तो न समझें पर केवल स्वामिभक्तिकरि नग्नमुद्राके धारक भये ॥ अर आप आदिनाथ कायोत्सर्ग धरि छै महीनेके उपवासधरि परीषह सहते खडे रहे, कैसे हैं प्रभु महातपके धारक चार ज्ञानकरि युक्त गिरि सारिखे स्थिरि मौनधरि ठाडे वे राजा स्वामीके छांदे चलनहारे जैसैं कायोत्सर्ग नाथ निश्चल ऊभे तैसे ये हू नग्न होय निश्चल ठाडे। योगीश्वरनिके मार्गका ये रहस्य जाने नांहीं। यह भोले जीव भगवानका मत न जान्या। सो मनमें ऐसा विचार करें। जो

दाता है ॥ ८४ ॥ अर आकाश तो केशनि समान श्याम मेघ ताकूं धरै है ॥ अर देवांगना घन कहिये अत्यंत सघन श्याम केशनिकूं धरै हैं अर पालकी महा सुंदर बहुत नीलमणिकरि जडित है, वे नीलमणि केशनितैं हू अतिश्याम हैं तब इंद्रने अति हर्षित होय जिननाथसूं विनती करी कि पालकी तय्यार है ॥ तब आप माता पिता पुत्र परिवारकूं पूंछकरि पालकी चढिवेकूं उद्यमी भये ॥ सब परिवार प्रभुके निकटही है ॥ ८६ ॥ ग्रहे हैं चमर अर छत्र जिनने ऐसे सुर असुरनिकरि सेवनीय ॥ ऋषभदेव वत्तीस पैंड तो पैदल ही चाले ॥ ८७ ॥ सब लोकनिने हाथ जोड वंदना करी ॥ अर आशीर्वाद दिया प्रभु पालकीविषैं आरूढ भये ॥ पहिले वह पालकी पृथ्वीतैं पृथ्वीपति जे राजा तिनने उठाई बहुरि आकाशविषै इंद्र पालकीकूं ले चाले ॥ मानों इंद्रने पालकी कांधे न धरी है शिरपर ईश्वरकी आज्ञाही धरी है सबही इंद्र जिनेंद्रकी आज्ञाविषैं सावधान हैं ॥ ८८ ॥ जब प्रभु पालकी पर आरूढ भये ता समय अनेक वादित्रनिके शब्द भये शंख अर भेरी ऐसी बाजीं जिनका दशोंदिशाविषै नाद भया ॥ अर बांसुरी, तथा वीणा अर ढोल इत्यादि अनेक वादित्र बाजे ॥ ८९ ॥ आकाशविषै तो नानाप्रकारकी सुरनिकी सेना चली जाय है अर पृथ्वीविषै बडे बडे राजा इक्ष्वाकुवंशी, कुरुवंशी, उग्रवंशी इत्यादि अनेक वंशविषै उपजे चले जाय हैं ॥ पृथ्वीमंडल राजानिकरि मंडित मनोहर भासै है ॥ आकाशविषै तो नृत्यकरतीं अप्सरा तिनकरि नवरस प्रगट भये हैं ॥ अर पृथ्वीविषैं ऋषभने तजी राणी तिनकूं आदि देय सब राजलोक रुदन करते जांय हैं ॥ तिनकर शोकरस प्रगट भया है ॥९१॥ भगवान ऋषभ सुर नर नागनिके ईश्वर जगतके सेवने योग्य सिद्धार्थबन जाय पहुंचे सो वन अशोक, चंपक, सप्तच्छद, अर आम्र, बट इत्यादि अनेक वृक्षनिकरि मंडित है ॥ ९२ ॥ तहां भगवान वीतराग भावके अर्थि पालकीतैं उतरे ॥ जैसैं सर्वार्थसिद्धिनैं उतरि मध्यलोकविषैं आये हुते तैसैं पालकीतैं उतरि वनमें आये । कैसी है सर्वार्थसिद्धि सव देवलोकके शिखर तिष्ठै है । अर कैसी है पालकी सब देवलोक कहिये देवनिके समूह तिनके शिर तिष्ठी है ॥ अर वनविषैं आय जिनवर सकल प्रजासूं कहते भये

बुदबुदों समान उज्वल चंद्रकिरणनिकूं धारै है अर देवांगना जलके बुदबुदों समान निर्मल कपोलोंकूं धारै है अर चंद्रसमान है मुख शोभा जिनकी अर पालकी जल बुदबुद समान है दोनों हद्द जिसकी अर चंद्रकला समान उज्वल सोहै है, अर आकाश तो सांझके अरुण अभ्रनिकी रक्तताकरि सोहै है, अर देवांगना सांझके बादलों समान अरुण विद्रुम (मूंगा) के समान अधरनिकूं धारै है अर पालकी सांझके बादलों समान रक्त अनेक विद्रुमादि मणीनिकूं धरै है अर आकाश तो वर्षते जलकी बूंदनिसूं निर्मल शोभित है अर देवांगना जलकी बूंद समान जे मोती तिन समान दांतनिकरि शोभित है अर पालकी जलवत् निर्मल मोतीनिकी झालरनिकरि सोहै है अर आकाश तो शुभ राहु केतु आदि ग्रह तिनके विमानकी ध्वजानि करि शोभै है अर देवांगना ध्वजों कैसी कला धरे अति चंचल भुजोंकरि मनोहर है अर पालकी सुंदर जे ध्वजा पताका तिनकी लीलाकरि शोभित है ॥ ८२ ॥

श्लोक—दिग्नागनासिकाजंघा, रंभास्तंभोरुशोभिनी । चित्रस्त्रीतारकालोका, जगती जघनस्थला ॥ ८३ ॥

अर आकाश तो जलकी धाराकरि पूर्ण जे पयोधर कहिये मेघ तेई भये कलश तिनकूं धरै है अर देवांगना दैदीप्यमान पयोधर कहिये कुच तेई भये कलश तिनकूं धारैं अर यह पालकी जलकी धारा समान शीघ्र है गमन जाका ॥ अर दैदीप्यमान कलश कुचनिकरि मंडित है । अर आकाश तो तारारूप पुष्पनिकरि शोभित है अर देवांगना तारनि समान दैदीप्यमान पुष्पनिकी कांतिकूं धरै है नानाप्रकार पुष्पनिकूं धारैं महारमणीक हैं अर पालकी तारारूप कांतिकूं धरै नानाप्रकार पुष्पनिकरि शोभित है । अर आकाश तो सुनक्षत्र कहिये शोभायमान नक्षत्रकूं धारै है, अर देवांगना नक्षत्रमाला नामा हार ताकर शोभित है ॥ अर पालकी शुभनक्षत्रमें रची है । अर आकाश तो वृहत्फला कहिये विस्तीर्ण है विस्तार जाका अर फलावटि नाम विस्तारका है अर देवांगना शुभकर्मका विस्तीर्णफल भोगवैं है अर यह पालकी तपकल्याणकरूप महाफलकूं धरै है ॥ अर मोक्षरूप महाफलकी

॥ ७३ ॥ अथानंतर—आपके जे शत १०० पुत्र तिनकूं धरा बांट दई अर बडे पुत्र भरतकूं राज्य दिया जैसा सहस्रकिरणनिकरि सूर्य सोहै तैसैं आप तपकल्याणकसूं सोहते भये। देवनि क्षीरसागर आदि अनेक तीर्थनिके जलकरि जिनराजका अभिषेक किया। अर सुगंधका लेप किया वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी जे माला तिनकरि जगतभूषणकूं सुशोभित किया ॥ ७५ ॥ जैसा सुमेरुपर्वत कुलाचल पर्वतकरि सोहै है। तैसैं जगतगुरु राजानिकरि अर देवनिकरि वेढ्या सोहता भया। पहिरे हैं मणियोंके आभूषण जिन्होंने ॥ ७६ ॥ अथानंतर—वैश्रवण कहिये कुवेर सुदर्शनानामा नई पालकीकूं निर्मापिता भया सो पालकी महादिव्य अर अत्यंत शोभाकरि सुंदर है दर्शन जाका कुवेरने वह सुदर्शना नामा पालकी आकाश समान निर्मल निर्मापी। अर स्वर्गकी सुंदर स्त्री समान महारमणीक इंद्रके तांई दिखाई, कैसी है पालकी कैयक उपमा आकाशकी धरै है। अर कैयक देवांगनाकी धारै है आकाश तो तारनिकरि दैदीप्यमान है। अर देवांगना तारा कहिए नेत्रनिकी जो कांतियें तिनकरि शोभित हैं। अर पालकी तारानिके समान नानाप्रकारके रत्ननिकरि प्रकाशरूप हैं। आकाश तो मंडलाकार उज्वल धवल जे अभ्रपटल तिन समान उज्वल शोभै है। अर आतापके निवारणहारे हैं कैसी हैं देवांगना मंडलाकार जे अभ्रपटल तिनके समान निर्मल हैं अर आतापकी निवारणहारी हैं अर पालकी मंडलाकार कहिये गोल शुभ्र कहिये उज्वल जो शरदका मेघ तासमान धवल जो आताप निवारण कहिये छत्र तिनकरि शोभित है ॥ ७९ ॥ अर आकाश तो उज्वल हंसनिकी पंक्तिकरि सोहै है अर देवांगना हंसनिकी पंक्तिसमान उज्वल वस्त्रनिकरि सोहै है। अर पालकी हंसनिकी पंक्तिसमान उज्वल ढुरते चमरनिके जो समूह तिनकरि सोहै है अर आकाश तो आदर्श मंडल कहिये सूर्य ताकी अखंड दीप्तिकरि दिशामंडलके मुखविषैं उद्योत करै है। अर देवांगना आदर्शमंडल कहिये दर्पण समान जो अपने मुखकी अखंड दीप्ति ताकरि दिगमंडलविषैं प्रकाश करै है अर पालकी दर्पणनिके मंडलनिकी अखंडदीप्तिकर मंडलमें उद्योत करै है अर आकाश तो जलके

भलीभांति जानो हो सो सब जीवनिकूं उपदेश दे संसारसूं पार करहु । अब तिहारे धर्मतीर्थके प्रवर्तनका समय वर्तें है ॥६५॥ हे ईश्वर ! यह लोग चतुर्गतिरूप महावनविषैं दिशाभूल होय रहे हैं, सो इनकूं मोक्ष स्थानकके प्रवेशका मार्ग दिखावहु । जैसैं मंत्रकी संप्रदाय चिरकालतैं विनष्ट होय जाय तैसैं या क्षेत्रमें मोक्षमार्गकी प्रवृत्ति विनष्ट होयगई सो तुम उदयकूं प्राप्त होय उद्योत करहु ॥ ६७ ॥ हे प्रभो ! या संसारसमुद्रविषैं तुम भ्रमते प्राणीनिकूं कर्णधार कहिये खेवटिया हो, कैसा है संसारसमुद्र दुखत्रय कहिए जन्म, जरा, मरण तीनप्रकारके दुख तेही हैं मोटे भंवर जाविषैं अर दोषत्रय कहिए राग, द्वेष, मोह तेही हैं महामच्छ जाविषैं । अर तुम कैसे हो भवभर्ता कहिए सकल लोकके स्वामी हो ॥ ६८ ॥ हे प्रभो ! तुम या संसार महाचक्रके भ्रमणतैं उपदेशरूप हाथनिकरि जगतकूं उधारो, कैसा है संसारचक्र अति शीघ्र है भ्रमण जाविषैं ॥ ६९ ॥ जे संत हैं ते तिहारे दिखाये मार्ग करि संसारका खेद मेटि विश्रामकूं पायकरि अब त्रैलोक्यके शिखर पहुंचेंगे । कैसा है त्रैलोक्यका शिखर अखंड है आनंद जहां । ये लोकांतिक देवनिने कीर्तिकरि स्तुतिके वचन कहे । सो भगवान स्वयंबुद्धके ऐसे ये वचन पूजाके अर्थ होते भए जैसैं कोई समुद्रकूं जलकरि अर्घ देय सो समुद्रकूं जलकी कमी नाहीं परंतु अर्घ देनहारेकी भक्ति है, तैसैं भगवान तो ज्ञानके समुद्र हैं तिनकूं लौकांतिक कहा ज्ञान बतावैं । परंतु उनका यह नियोग है जो वैराग्यकी प्रशंसारूप स्तुतिके वचन कहें ॥ ७१ ॥ वहुरि इंद्रादिक सकल चतुर्निकायनिके देव नमस्कारकरि पूजाकरि तपकल्याणकका प्रारंभ करते भए । जाविषैं लोकांतिक देवनि प्रणामकरि विज्ञप्ति करी ताही विधि सव देव वारंवार स्तुति करते भये । भगवान ऋषभ स्वयंबुद्ध लोकांतिक देवनिकरि आराधे कैसे सोहते भये जैसैं सूर्यकी किरणनिकरि पद्मसागर सोहै । कैसा है पद्मसागर फूल रहे हैं कमल जाविषैं जैसैं सरोवरमें सूर्यकी किरणनिकरि सरोज कहिये कमल विकसै । अर कमलनिकरि सरोवर सोहै तैसैं ज्ञानरूप भानुकरि वैराग्यरूप किरणनिकरि स्वयंबुद्ध भगवानके भावरूप कमल फूले हैं तिनकरि आप अद्भुत सरोवर सोहते भये

न रहै तब स्वाधीनता कहिये तातैं कर्मनिके योगतैं भोगासक्त हूं अर विषय तृष्णाकरि व्याकुल हूं तहांतक पराधीनपनके योगकरि दुखी ही हूं, जे मुनि आत्माधीन हैं पराधीनतातैं रहित भये हैं तिनहीके आत्माधीन अव्याकुल अतेंद्री सुख होय है अर जे कर्मनिकरि पराधीन हैं तिनके इंद्रियजनित पराधीन सुख ही है, स्वाधीन अव्याकुल सुख नाहीं ॥ ५६ ॥ या जीवने अनंतकाल सुर असुर नरनिके सुख भोगे परंतु संसारविषैं जीवनिकूं तृप्ति न भई जैसैं नदीनिके समूहकरि समुद्रकूं तृप्ति न होय ॥ ५७ ॥ मैं महाबलके भवविषैं विद्याधरनिका अधिपति भया बहुरि दूजे स्वर्ग ललितांग देव भया बहुरि तीजे भव वज्रजंघ राजा अर चौथेभव उत्तरकुरु भोगभूमिविषैं भोगभूमियां बहुरि पांचवें भव दूजे स्वर्ग श्रीधरदेव बहुरि छठे भव राजा सुविधि बहुरि सातवेंभव अच्युत स्वर्गविषैं इंद्र बहुरि आठवेंभव विदेहक्षेत्रविषैं वज्रनाभचक्रवर्ती अर नवमेंभव सर्वार्थसिद्धिविषैं अहमिंद्र ॥ ५९ ॥ बहुरि वहांतैं चयकरि यहां, सो चिरकालतक दिव्यसुख देवनिकैसे भोगे तिनकरि मेरे रंच मात्रहू तृप्ति न भई, अब तीर्थंकरपदके विस्तीर्ण विषय पाये हैं अब सब बात मोहि सुलभ हैं जो चाहूं सो मौसरै तथापि इन भोगनिकरि तृप्ति नाहीं भोगाभिलाषरूप व्याकुलता ही है ॥ ६० ॥ तातैं यह संसारके सुख सदा दुःखकरि दूषित तिनकूं तजकरि मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ तपोवनविषैं प्रवेश करूं हूं। मैं गर्भहीतैं तीनज्ञानका धारक अर सामान्य जनकी न्याईं ही राज्यविषैं तिष्ठा, इंद्रियानिके भोग भोगूं हूं या समान और भूल कहा? एते दिनतक मेरा ऐसा ही उदय हुता। जो कार्य है सो कालके आधीन है अर काल काहूसूं हू उलंध्या न जाय। जाने हैं पूर्वभव जाने ऐसा जिनराज जब वैराग्यविषैं चिंतवन करता भया, तब पंचम स्वर्गके निवासी लोकांतिकदेव प्रभुके अंतःकरणविषैं वैराग्य उपजा जान तत्काल प्रभुके समीप आए सारस्वत आदित्य आदि आठ जातिके लोकांतिकदेव चंद्र सूर्यतैं अधिक है कांति जिनकी सो आकाशविषैं उद्योत करते संते भगवंतके समीप आए नमस्कारकरि ऐसे शब्द कहते भए ॥६४॥ हे नाथ! जैसा निजपरका हित तुम विचारया है तैसा ही करहु, जैसा जिनसूत्रविषैं कल्याणका मार्ग है तैसा तुम

अनेक राजा प्रजाके पालक होते भये। सोमप्रभ श्रेयांस आदि कुरुपुत्र तिनकरि पृथ्वी सोहती भई ॥ ४५ ॥ दिव्य भोग देवोपुनीत भोगते भगवान्के जन्मके दिनतैं लेय तिरासीलाख पूर्व व्यतीत भये ॥ ४६ ॥ एक दिन भगवान नृत्य देखते विराजे हुते सो एक नीलंयशा नामा नृत्यकारिणी सो नृत्य करते करते विलाय गई ताकूं देखि भगवान्कूं वैराग्य उपज्या ॥ ४७ ॥ जे वाह्य राग पहिले प्रभुकूं राज्यके कारण हुते सो अंतरंगका अनुराग मिटनेतैं सब ही भाव शांतताका कारण भये, जे मनोग्य विषय पहिले मतिविभ्रमके कारण भये ते विरक्तता के उपजिवेतैं शांतताके कारण भये सो भगवान् स्वयंबुद्ध व्यतीत भई है विषयकी स्पृहा जिनके अर चिरकाल भोगनिकी आसक्तताकरि उपजी है लज्जा आपकूं सो अति लज्जावान होय चित्तविषैं विचारते भये, अहो या संसारकी परम विचित्रता देखहु जो विचारिये कछु अर ही अर होय जाय कछु अर ही ॥५१॥ यह नृत्यकारिणी अनेक रस अनेक भाव दिखावती भई हुती हाव भावकी वाहुल्यता करि विचित्रता रूप हुये भाव नृत्यके अंग जाके जो मैं भगवान्कूं नृत्यकरि प्रसन्न करूं सो इंद्र घना प्रसन्न होय अर इंद्रकी प्रसन्नतातैं मैं सुखी मेरी प्रशंसा होय या मोहके योगतैं ऐसा मानती सो क्षणमात्रमें क्षय गई ॥ ५३ ॥ पराधीन प्राणीके जो सुखके अनुभवकी वांछा उपजै सो धिक्कार है वाकी समझकूं जे परके आराधनविषैं तत्पर हैं तिनका मन निरंतर व्याकुल ही रहै है जहां व्याकुलता वहां सुख काहेका, अर जे आपकूं स्वाधीन मानै हैं अर सुखी कहावैं हैं तिनमें क्या सुख, वे अपने उपार्जे कर्मनिके आधीन हैं ताके स्वाधीन नाहीं पराधीनही हैं, जे कर्माधीन अर भोग तृष्णाकरि व्याकुल तिनके सुख काहेका?

भावार्थ—कर्माधीन तो सब जगत् ही है कोई हू कर्माधीनपनेसूं रहित नाहीं अर यह नीलंयशा कर्माधीनपनेतैं इंद्रके आधीन अर इंद्र मेरे आधीन सो जो आराधना है सो वे सब पराधीन ही हैं अर मुझे स्वाधीन जानै सो मैं हू कर्मनिके आधीन तातैं भोग तृष्णांकरि व्याकुल पराधीन ही हूं, जब मेरे कर्म जाते रहें अर भोग तृष्णा

लग लग क्रीडा करते हुते सो अब हमकूं उद्वेग उपजावे हैं, जैसैं खोटे पुत्र पिताकूं खेद उपजावे तातैं अब हम क्षुधाकरि पीडित सो अब हमकूं अजीविकाका उपाय वतावहु अर भय थकी रक्षा करहु तब करुणाके सिंधु पुरुषोत्तम सकल प्रजाके प्रतिपालक प्रजाकूं क्षुधाकरि पीडित देखि तिनकी आर्ति हरते भये, आजीविकाकी सिद्धिके अर्थ सर्व उपाय वतावते भये, धर्म अर्थ कामका साधन लोकनिकूं बताया असि कहिये खड्ग, मसि कहिये स्याही कृपि कहिये खेती, विद्या कहिये पठनपाठन, अर वाणिज्य कहिये व्यापार, अर शिल्प कहिये सुवर्णकारादि अनेक धंधा ये षट्कर्म आजीविकाकी सिद्धिके अर्थ जगत्गुरु वतावते भये, अर गौ महिपी अश्व ऊंट आदि पशूनिका पालना अर सिंह आदि दुष्ट जीवनिका वर्जना या भांति कर्मभूमिकी रीति वताई तब सकल पुत्रनिने अर प्रजाके लोकनिने समस्त कलाके शास्त्र सीखे अर लोकनिने अनेक भांतिकी शिल्पविद्या सीखी अर जे शिल्पीजन हैं तिन नगर गांवनिमें स्थानक वनाये अर भरतक्षेत्रविषैं सर्वत्र खेट कर्वटादि सब थापे अर तीन वर्ण थापे जे पीड़ाथकी रक्षा करें ते क्षत्री अर जे वाणिज्यके योगथकी धन उपार्जैं ते वैश्य कहाये अर शिल्प आदि जे अनेक धंधे तिनके प्रबंधतैं शूद्र कहाये तीन वर्ण कर्मभूमिके आदिविषैं आदीश्वरने रचे ॥ ३९ ॥ षट् कर्मनिकरि प्रजाकूं सुख अवस्था उपजाय, सकल दुख निवारण किये, प्रभुका किया जो युग तातैं प्रजाके लोग हर्षित होय कृतयुग कहते भये ॥ ४० ॥ वहुरि इंद्रसहित सकल देव आय ऋषभका राज्याभिषेक करि प्रजाकूं आनंदरूप करते भये॥ ४१ ॥ योधानितैं न जीता जाय तातैं अयोध्या, अर विनयवान जीवनिकरि भरी तातैं अयोध्या विनीत कहाई अर सुंदर मंदिरनिकरि मंडितपुरी तातैं साकेता हू कहिये सो पुरी अधिक शोभती भई, सर्व लोकनिके बांधव त्रिलोकीनाथने प्रजाकी रक्षाके अर्थ क्षत्रीनिके वंश थापे जे सकल क्षत्रीनिमें वडे ऋषभके बांधव ते इक्ष्वाकुवंशी कहाये ॥ ४३ ॥ अर कुरुजांगलदेशके अधिपति तिनकूं प्रभुने कुरुवंशी किये अर उग्र है आज्ञा जिनकी ऐसे उग्रदेशके अधिपति ते जिनपतिने उग्रवंशी किये अर प्रजाकूं न्यायकरि पालनेथकी प्रभुके थापे भोजवंशी भये ॥ ४४ ॥ तथा

है अर उन दोऊ राणीनिविषै है वैसी त्रैलोक्यविषैं नाहीं सो उनके सुखकी महिमा त्रैलोक्यविषैं कैसैं कथनमें आवै अपितु न आवै।

भावार्थ—तीर्थेश्वरके तुल्य नर त्रिभुवनमें नाहीं अर तीर्थेश्वरकी राणी समान जगत्रयमें नारी नाहीं ॥ २० ॥ कैयक दिनमें राणी नंदा भरतनामा पुत्रकूं जनती भई, कैसे हैं भरत ? समस्त भरतक्षेत्रकूं आनंदके कर्ता आदि चक्रवर्ती हैं, बहुरि ब्राह्मीनामा पुत्रीकूं जनती भई ॥ २१ ॥ अर दूजी राणी सुनंदा महा बलवंत बाहुबलीनामा पुत्रकूं जनती भई अर महा सुंदर सुंदरीनामा पुत्रीकूं जनती भई ॥ २२ ॥ अर फिर भरतकी माता नंदाके वृषभसेनादिक अठानवै पुत्र और होते भये, ऋषभके पुत्र सब चरमशरीरी जिनकूं अर शरीर धरना नाहीं याही देहतैं केवल पाय निर्वाण होंहिगे ॥ २३ ॥ एक दिन ऋषभदेव दोऊ पुत्रियनिकूं अक्षरविद्या अर गणितविद्या अर गंधर्वादिक अनेक कला सिखावते भये, दोऊ पुत्री महा बुद्धिमान हैं जगतगुरुकूं गुरु पाय वे दोऊ कन्या श्रुतरूप सागरके पार होती भईं।

अथानंतर—सकल प्रजा नाभिराजाके साथ नाभिनंदनके समीप आईं स्तुतिपूर्वक प्रणामकरि महा आर्तिके भरे सब लोक प्रभुसूं वीनती करते भये, हे नाथ ! पहिली भोगभूमिविषै प्रजाके जीवनके कारण कल्पवृक्ष हुते तिनके गये पीछे स्वयमेव सांठे उपजे हुते जिनमेंतैं रस झरिवो करै ॥ २७ ॥ सो तिहारे प्रतापकरि हम अब तक इक्षुरससूं उदर पूर्ण करै हैं हे नाथ ! हम तिहारे पाले कल्पवृक्षनिकूं भूलि गये अब कालके प्रभावकरि वे इक्षु महारस देते मृदु हुते ते अति कठोर होय गये, पहिले उनमें स्वयमेव रस झरता सो अब छेदे भेदे भी रस नाहीं निकसै है ॥ २९ ॥ अर अब कैयक तृण जाति फलनिके भारकरि नम्रीभूत दीखै हैं परि हम न जानैं ये क्या हैं अर इनके खायवेकी विधि कहा है अर घट समान है थन जिनके ऐसी जे गाय भैंस तिनके थननितैं रस झरै है सो रस भक्ष्य है कि अभक्ष्य है सो कहो अर आगे सिंह व्याघ्र ल्याली इत्यादि नखवारे जीव पहिले हमारे गलेसूं

समूह सोहै, प्रभुका शरीर तो हेमाचल समान है अर चोटीके केशनिका समूह छत्रके आकार सोहै सोई इंद्रनीलमणीनिका समूह है ॥ ११ ॥ प्रभुका सुंदर ललाट अर सुंदर नासिका अर महा मनोहर कर्ण तिनकी उपमा वचनतैं अगोचर होती भई अर चढे धनुष समान दोऊ भौंह, तिनकी महिमा कथनमें न आवे चंद्रमा तो चांदनीकरि रात्रिविषै हर्षका कारण होय है अर दिवाकर अपनी दीप्तिकरि दिवसविषै हर्षका कारण होय है अर जिनचंद्रमाका मुख निशदिन तीन भुवनकूं आनंदका कारण होय है तातैं भगवानके मुखकी उपमा समान कोई पदार्थ नाहीं। शशिकी चंद्रिका निशाविषैं दिनकरकी दीप्ति दिन ही विषैं सोहु सर्वत्र नाहीं अल्प क्षेत्रविषैं है अर प्रभुकी दीप्ति अर कांति सर्वत्र विस्तर रही है अर सबकूं आनंदकारिणी है ॥ १३ ॥ अर कमलदल समान नाभिकुमारके नेत्र दोऊ समान अर कर्णांत पर्यंत अर हथेली अर पगथली अर अधर अशोकके पल्लव समान आरक्त तिनकी अरुणता प्रवालमें नाहीं विद्रुममें नाहीं किंदूरीमें नाहीं ॥ १४ ॥ अर जिनेश्वरके दांतनिकी पंक्ति महा उज्वल सोहती भई मानों शुद्ध मुक्ताफलनिके समूहकरि अर कुन्दपुष्प समान है द्युति (कांति) जाकी, कैसी है दांतनिकी पंक्ति जो कि अदंतुरा कहिये अधिक ऊंची नाहीं सब दांत समान हैं अर महा शोभाकूं धरै हैं ॥ १५ ॥ अर ऋषभकी देह धनुष ५०० ऊंची अर हेमाचलसमान पीतवर्ण नवसै व्यंजन अर एकसौ आठ लक्षण उनकरि मंडित ॥ १६ ॥ ऋषभके रूपकी पूर्ण शोभा कौन कहि सकै, सौ कोटि इंद्र कथन करैं तोहु लेशमात्र न कहि सकैं, ऋषभकासा रूप त्रैलोक्यमें औरका नाहीं ॥ १७ ॥ जब आप यौवनकूं प्राप्त भये तब पिताने दोनों राणी विवाहकी विधिकरि ऋषभदेवकूं परणाई जो उन समान त्रैलोक्यमें रूपवंती नाहीं महायौवनवंती एकका नाम नंदा दूजीका नाम सुनंदा वे दोनों गौरी श्यामा कल्पलता समान तिनकरि वह जगतका कल्पवृक्ष शोभता भया, कैसी हैं दोनों फूलनिकी गेंद समान हैं कुच जिनके जैसैं कल्पलता कल्पवृक्षसूं लिपटी सोहै तैसैं वे दोऊ महा भागवंती भगवानसूं बेढी सोहती भई ॥ १९ ॥ जैसी कांति दीप्ति संपदा कला प्रभुविषैं

अर प्रतिदिन वृद्धितैं जगतका आनंदरूप समुद्र वढता भया, आप जिननायक बालक्रीडारूप अमृतरसकूं पीवता हुवा हू निरंतर लोकनिकूं जाका दर्शन सुलभ है तोहू समस्त लोकनिके लोचननिकूं अति अनुराग वधावता भया लोक निरखते तृप्त न भए ॥ भावार्थ—यद्यपि वाल अवस्थाविषैं प्रभु वारंवार बाहर निकसै हैं अर समस्त लोक देखै हैं तोहू लोकनिकी लालसा न मिटै अर्थात् त्रिलोकीनाथकूं देखाही करैं ॥ ३ ॥ वे प्रभु नाभिकुमार इंद्रने राखे जो देव तिनके सहित मनोहर क्रीडा करैं। जो अवस्था आपकी सोई विक्रियाकरि देव करिलेंहिं मानों प्रभुके प्रतिविंब ही हैं तिन सहित मनोहर क्रीडा करते भए भगवानके कोमल शय्या सिंहासन वस्त्र आभूषण सुगंधादिकका लेपन भोजन वाहन सव देवोपुनीत ही होता भया देवता ही नाना प्रकारकी सामग्री ल्यावैं ॥ ५ ॥ भक्तिकरि कुवेरकूं इंद्रने आज्ञा करी सो इंद्रकी आज्ञा प्रमाण कुवेर देव जिनवरकी निरंतर ही सेवा करता भया, प्रभुकी वयके अनुसार अर छै ऋतुके अनुसार नानाप्रकारकी वस्तु ल्यावैं जैसी वय है ताही प्रमाण वस्त्राभूषण भोजन विलेपनादि अर ऋतु ऋतुविषै जे वस्तु चाहिए ते सब आवैं, जैसी सामग्री जिनवरकूं मौसर वैसी सुर नर खग नाग इत्यादि जगतके जीवनिकूं मौसर नाहीं। अपने जो निर्मल दिव्यकला गुण तिन सहित आप वृद्धिकूं प्राप्त भए मानों वे कला गुण जन्महीके साथी हैं, भगवान संपूर्ण यौवन करि पूर्ण चंद्र सोहते भए कहिवे मात्र पूर्ण चंद्रमाका दृष्टांत है अर कोटि चंद्र सूर्यादिक जिनेंद्रके चरणनखकी ज्योतिकूं न पावैं॥७॥ जाके महाभुजा महाप्रवल वृत्त कहिए गोल अर गोडों तक लांवे अंगद कहिए भुजाशिखर आभरण ता करि संयुक्त महाउत्तंग त्रैलोक्येश्वरकी त्रैलोक्यलक्ष्मी ताके मिलापके अर्थ पूर्ण हैं ॥ ८ ॥ प्रभुका उरस्थल श्रीवत्सलक्षणकरि शोभता भया, कैसा है श्रीवत्सलक्षण जैसे त्रैलोक्यके राज्यकी लक्ष्मी आलिंगन कर सोहै जाका उरस्थलरूप मंदिर ताके स्तंभ समान महासुंदर चरण जंघा नितंब अर दोऊ गोडे तिनकी अत्यंत शोभा होती भई ॥ १० ॥ अर केशनिका समूह महाश्याम सुंदर कैसा सोहता भया जैसा हेमाचलके शिखरविषैं महानील इंद्रनीलमणिका

जिनराजकूं माताके समीप स्थापित कर इन्द्रपै आई फिर इन्द्राणी दोऊ माता पिताकूं प्रणामकरि पूजा करते भए अर अद्भुत वस्त्राभूषण माता पिताकूं पहिराए बहुरि माता पिताके निकट इंद्रताण्डव कहिए नृत्य ताका आरंभकरि नृत्य करता भया, देवमाया करि भुजानिके समूह बनाए तिन पर देवांगना नृत्य करती हुई सोहै हैं चिरकाल माता पिताके आगे आनन्द नाटक करि इन्द्र देवनि सहित अपने स्थानक गया ॥ ३३ ॥ कैसे हैं माता पिता नृत्यका देखनहारा अर संगीत शास्त्रका जाननहारा जिनके समान दूजा नाहीं अर इन्द्र समान नृत्यका कर्ता नाहीं ॥ ३४ ॥ साढे तीन कोटि अद्भुत रत्न प्रतिदिन त्रय संध्या पिताके घरविषैं पंद्रह मास वरषे गिरींद्र कहिए सुमेरु ताविषै सुरेन्द्रने जिनेंद्रका अभिषेक किया जो जिनेन्द्र जगत्का ईश्वर तिनका पुत्र तिनके भाग्य समान अन्यका भाग्य नाहीं, नाभिराजा अर मरुदेवी राणी दोऊ अति उदार ता समय अति आनंदकूं प्राप्त भए हर्षमें अति भीग गए, स्वाधीन भया है सुख जिनके सो जैसा सुमेरुविषैं उत्सव भया तैसा ही उत्सव जन्मकल्याणकका अयोध्याविषै करते भए सर्वलोक आनंदरूप भए यह वृषभेश्वरका गर्भावतार अर जन्माभिषेक कल्याणकका वर्णन जो भव्यजन भक्तिकरि सदा पढैं अर सुनैं सो जिनसूर्यके प्रकाशतैं मोहतिमिरकूं हर कल्याणकूं प्राप्त होंय । कल्याणके नाथका चरित्र जगत्कूं कल्याणकारी है ॥ ३७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभनाथ जन्माभिषेक वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

अथानंतर—इन्द्रने करके अंगुष्ठ विषै थाप्या जो अमृत ताहि पीवता हुवा जिनेश्वर माता पिताके नेत्रनिकूं आनन्द उपजावता हुवा वृद्धिकूं प्राप्त भया जैसे बालचन्द्र जो द्वितीयाका चन्द्र ताके दर्शनतैं अर प्रतिदिन चंद्रकी वृद्धितैं समुद्र बढै है। कैसा है चन्द्र उज्ज्वल है किरण जाकी वैसे जिनेंद्ररूप बालचन्द्रके दर्शनतैं

तातैं जे कल्याणके अर्थी हैं तिनकूं तुम ही नमस्कार करवे योग्य हो अर तुमही स्तुति करवे योग्य हो अर हे नाथ ! तुमही सकल यत्ननि करि आराधवे योग्य हो निरंतर स्मरण करवे योग्य हो,जगतके उपकारी हो तिहारे नमस्कार-करि काया कृतार्थ होय है अर तिहारे गुण स्तवनकरि प्राणीनिकी वाणी गुणवंत होय है अर तिहारे गुणनिके चिंत-वनकरि प्राणीनिका मन शुद्ध होय है सब दुखःनितैं रहित गुणवंत होय है,हे देव ! मृत्युरूप मल्लके दहनहारे तिहारे तांई नमस्कार होहु,हे जन्मजराके अन्त करणहारे आदि पुरुषोत्तम तिहारे ताईं नमस्कार होहु ॥२०॥ हे कर्मनिके नाशक जगत विभाकर तिहारे ताईं नमस्कार होहु,हे जिनेश्वर अनंत बोधके धारक तिहारे तांई नमस्कार होहु, अर हे अनं-तदर्शी तिहारे तांईं नमस्कार होहु, हे अनंतवीर्यके धारक अनंत सुखके स्वामी तिहारे ताईं नमस्कार, हे त्रैलोक्यनाथ तिहारे ताईं नमस्कार । हे जगत बांधव तिहारे ताईं नमस्कार । हे लोकवीर ! जगत विषै अद्वितीय योधा महाभट तिहारे ताईं नमस्कार । हे धर्मके विधाता त्रैलोक्यके ईश्वर तिहारे ताईं नमस्कार ॥ २६ ॥ हे जिनसूर्य तिहारे तांईं नमस्कार हे,सर्वव्यापी जिनराज तिहारे तांईं नमस्कार । हे जगतके रक्षक जिनेंद्र तिहारे ताईं नमस्कार ॥२७॥ या भांति सैकडानि स्तुति करि इन्द्रादिकदेव आदिपुरुषकी स्तुति करि बारंबार नमस्कारकरि यह प्रार्थना करते भए जो हे आदीश्वर ! तुमविषै हमारी अचल भक्ति होहु या भांति समान अर प्रशंसायोग्य नाहीं बारंबार प्रभुकी भक्ति ही इंद्रादिक याचते भए ॥ २८ ॥ बहुरि इन्द देवनिके समूह सहित शीघ्र ही जिनेंद्रकूं लेयकरि गिरीन्द्रतैं चाले ॥ २९ ॥ अर रूपाचल जो वैताढ्य समान उज्ज्वल चलता जो पर्वत ऐसा यहां ऐरावत तापर चढाय जिनराजकूं ले चाले । कैसे हैं जिनराज सुवर्णके कमलनिकी राशि समान पीतवर्ण है शरीर जिनका ॥३०॥ सो प्रभुकूं अयो-ध्यापुरविषै लेगए । कैसी है अयोध्या काहू करि जीती न जाय बहुरि ध्वजानिकी पंक्तिकरि शोभित है अर वादित्रनि-की ध्वनि करि महा गंभीर है मानों यह अयोध्या देवनिकी सेना ही है देवनिकी सेनाहू काहू करि जीती न जाय अर ध्वजानिकी पंक्तिकर शोभित है अर वादित्रनिकी ध्वनिकरि पूर्ण है ॥ ३१ ॥ अयोध्याविषै जाकर इन्द्राणी

कहना कहा, अर भरतक्षेत्र हू जगतविषै आय गया तातैं जगत् जन भरतक्षेत्रके अधिपति हू कहैं तो कहो ॥१२॥ तुम विधाता स्वयंबुद्ध महा दुर्द्धर तपके उपदेश अज्ञानीनिकूं ज्ञानके दाता महा यशके कर्ता सर्व अतिशयनिके कर्ता सर्वोत्कृष्ट हो ॥ १३ ॥ तुम या पृथ्वीविषै आप मुनिव्रत धर निर्मल पात्रदान दिखावोगे. हे धीर ! धर्मध्यानका कर्ता जो श्रेयांस ताका कल्याण करोगे, कल्याणके अर्थ प्राणीनिकूं व्रतदानका उपदेश करोगे तुम कामरूप भुजंगको वश करवेकूं महामंत्र हो अर द्वेषरूप गजकी वश करनेकूं अंकुशरूप हो अर मोहरूप मेघ पटल उडायवेकूं पवनरूप हो ।

श्लोकः—प्रशस्तस्तमित ध्यान सुसमीन महाह्रद । बंधानन्तर सन्धानघातीधन हुताशन ॥ १६॥

अर तुम प्रशस्त ध्यान कर महानिश्चल रूप हो जैसा महा समुद्र, सूते मच्छनि करि निर्व्याकुल होय है तैंसे निर्व्याकुल शुक्लध्यानरूप अग्नि करि घातिया कर्मरूप ईंधनकूं भस्म करोगे ॥ १६ ॥ तुम स्नेह रहित केवलज्ञानरूप दीपक करि सकल पदार्थनिका उद्योत करणहारे या पृथ्वीविषै स्वतःस्वभाव मोक्षमार्गके उपदेशक होहुगे, या भरत क्षेत्रविषै अठारह कोडाकोडी सागरतैं धर्मका नामही निर्मूल भया है भोगभूमिविषै भोगनिकी ही मुख्यता हुती यति श्रावकका धर्म नाहीं हुता सो अब तुम कर्मभूमिकी आदि विषै या क्षेत्रमें धर्मका प्रकाश करोगे, तुम धर्मके स्रष्टा कहिए कर्ता हो ॥ १८ ॥ हे जगत गुरु ! भव्य जीवनिकूं तुम जगतके उपदेशक प्रगट भए हो, कैसे हैं भव्यजीव अनादिकालतैं दिग्मोह करि आंधी है बुद्धि जिनकी जैसे दिग्मोह कहिए दिशा भूल चाला चाहै पूर्वको अर गमन करै पश्चिमकी ओर, तैसे ये जीव अधर्मकूं धर्म जान सेवैं हैं तिहारे उपदेशकरि इनका भ्रम मिटेगा मार्ग पिछानेंगे ॥१९॥ हे नाथ ! तिहारे उपदेशकरि भव्यनिके समूह या पृथ्वीविषै अभ्युदय कहिए प्रतापरूप इंद्रनरेंद्रादिककी विभूतिके स्वामी होवेगें, अर कैयक महाभाग तद्भव मोक्षगामी तिहारे उपदेशतैं अध्यात्मविद्याकूं पायकरि अविनाशी लक्ष्मी करि युक्त होवेंगे ॥२०॥ तिहारा उपदेश प्रमाण नयके मार्गकरि जगत्के प्राणी परम पदकूं पावेंगें

शक्ति तीजी उत्साहशक्ति सो ये तीन शक्तिहू नृपतिनिमें पूर्ण नाहीं किंचित मात्र होय है अर तिहारे अद्भुत अनंत शक्ति है पूर्ण तिहारासा राज्य काहूके नाहीं अर तुमसे राजा जगत्त्रयमें नाहीं।

श्लोकः—पौरुषादिक्रमानीतं त्वया नापिजगत्त्रयम्। कथमेकपदेश्चित्रं विधिमेवविधीयतां ॥ २ ॥

हे नाथ! कहां तुम्हारी कुमारता जाके समान त्रिभुवनमें सुकुमारता नाहीं अर कहां यह कठोरता जो यह गिरिकूं चूर्ण कर डारे काहूतैं जीती न जाय तातैं यह परस्पर विरुद्धार्थ शक्ति तुमहीविषै देखिये है अन्यत्र नाहीं ॥ ३ ॥ अर तिहारारूप एक हजार आठ लक्षण व्यंजनानिकरि युक्त महासुंदर सोहै है ऐसा रूप सुर असुरनिकूं दुर्लभ है, हे देव तुम्हारा विग्रह कहिये शरीर सो विग्रह विन ही सकल विश्वकूं नम्रीभूत करता भया तिहारा शरीर रूपकी सुंदरताकरि पूर्ण अनेक अतिशयकूं धरै महाप्रबल या लोकविषै प्रथम कहिये मुख्य जा समान जगमें नाहीं अर चरम कहिये हद्द जाके परे और नाहीं ॥ ५ ॥ जब तुम माता मरुदेवीके गर्भविषै आये तो पहिले ही छै महीनातैं हिरण्य कहिये रत्न स्वर्णकी वर्षा होती भई तातैं तुमकूं गीर्वाण कहिये देव हिरण्यगर्भ ऐसा नाम कर गावै हैं ॥ ६ ॥ अर तुम आप ही अपने अतिशय करि तीन ज्ञान सहित उपजे या भवके पहिले तीजे भवविषै षोडशकारण भावना भाय तीर्थेश्वरपद उपार्ज्या अर सर्वार्थसिद्धिविषै अहमिंद्र होय आदीश्वर भये तातैं तुमकूं सुरनर स्वयंभू नाम करि गावैं हैं, तुम स्वयंसिद्ध अद्भुत स्वयंभू हो अर तुम नाना प्रकारकी धर्मरीतिके कर्ता तातैं तिहारा नाम सत्यार्थ विधाता बुधजन कहै हैं अर तुम अपूर्व कहिये आश्चर्यकारी राजा, ऐसा राजा दूजा नाहीं है, हे प्रभु! सकल प्रजाके पति अर सकलकी सर्वथा प्रकार रक्षा करते प्रकट भये हो तातैं तुमको पंडित प्रजापति कहते हैं अर तिहारे राजविषै प्रजा प्रीति करि इक्षुरसकूं आस्वादती तृप्त होयगी तातैं तुम इक्ष्वाकुवंशी कहावोगे अर तुम सब पुराणनिकी आदि महा महिमाके धारक महंत तातैं तुमकूं पुरुष देव कहिये तुम अनंत

स्वभाव जिनका अर वे नाभिनंदन आपही नंदनबनरूप भासते भये जगतकूं आनंद उपजावनहारे अर वेही निर्मल निःकपट मनके धरणहारे आपही सौमनस वनरूप भासते भये। अर वे जगतगुरु अखंड यशकरि आपही पांडुक-बनरूप राजते भये ॥ ९२ ॥ अर वे तीन लोकके एक तिलक तिलककरि मंडित सोहते भये आप तो सदा शोभा रूपही हैं जगत्के आभूषणही हैं उनको आभूषण कहा शोभित करें सब आभूषण उनके अंगके संगकरि सोहते भये ॥ ९३ ॥ अर वे भगवान् निरंजन सकल अंजनसे रहित उनके अंजन कहा परंतु इंद्राणीका नियोग है सो जन्म कल्याणक करते समय जिनपतिके लोचन विषै अंजन करै सोई इंद्राणीने अंजन किया सो अति सोहता भया, कैसे हैं प्रभु जीती है चंद्र सूर्यादिककी ज्योति जिनने प्रभु कीसी दीप्ति अर प्रभुकीसी कांति प्रभुहीमें है ॥ ९४ ॥ शची इंद्राणी अर श्रीदेवी अर कीर्ति लक्ष्मी इत्यादि सुरांगना तिनि अपने हस्तनिकरि जगत्मंडनके मंडन किये सो जिनेंद्र इंद्रादिक देवोंका मन हरता भया बहुरि इंद्रादिक देव पुराणपुरुषका ऋषभ नाम धरते भये, कैसे हैं पुराणपुरुष अनंत हैं नाम जिनके अर युगमें आदि कहिये मुख्य हैं उनकरि 'ऋषभ' नाम धर कर स्तोत्र करवेकूं उद्यमी भये ॥९६॥ इंद्रादिक स्तुति करै हैं हे वृषभ ! तुमने मति श्रुति अवधिज्ञानरूप श्रेष्ठ नेत्रकरि मंडित या भरतक्षेत्रविषै जन्म धर तीन लोकमें उद्योत किया, तुम अद्भुत तीर्थंकर नामकर्म करि मनुष्यभवकूं सन्मुख होय जगत्कूं कृतार्थ किया जिनकरि यह जगत् सो है तिनका यह जन्म कल्याणकका आश्चर्य कहा ? ऊंचा है शिखर जाका जगतविषै महागुरु कहिये गरिष्ठ ऐसा सुमेरुगिरि तुम अपने चरणनिके नीचे धरया तातैं तुम गुरु-निके महा गुरु ईश्वर, बाल्यावस्थाविषै बाल चेष्टा रहित गुणनिकर अति वृद्ध जगत्के बड़े सबके पितामह सबके स्वामी हैं ॥ ९९ ॥ यह सुरगिरि अपने शिरपर तिहारे चरणनिकूं धारै है, कैसे है गिरिनिके शिखर सिरारूप मुकुटकरि ऊंचे हैं अर सुरगिरि अपने चरणनिकरि सर्व भूमि स्पर्शे हैं पृथ्वी जिनके चरणनिमें लग रही है सो तिहारे चरणनिकूं शिर पर धारते सोहे है ॥ १०० ॥ राजानिमें तीन शक्ति होय है एक मन्त्र शक्ति दूजी प्रभाव-

वान्‌का वक्षस्थल मुक्ताफलनिके मनोहर हारनिकर कैसा शोभता भया जैसे पर्वतका तट जलके नीझरने करि सोहै अर दैदीप्यमान रत्नमय प्रालंबसूत्र करि प्रभु कैसे सोहते भये जैसा कल्पवेलतैं बेढ्या कल्पवृक्ष ही सोहै, प्रालंबसूत्र नाम यज्ञोपवीतका है सो यहां कोई प्रश्न करै जो यज्ञोपवीतका ग्रहण अष्टवर्ष उपरांत है ताका उत्तर सूत्रमई यज्ञोपवीत श्रावकके व्रत संबंधी अष्टवर्ष उपरांत ही है यह यज्ञोपवीत रत्नमई आभरणरूप है ॥ ८१ ॥ अर जगदीशकी कटिमें मेखला कैसी सोहती भई जैसी पर्वतकी तलहटी विजुरीके उद्योत करि युक्त जो मेघपटल ताकरि सोहै है। अर जगत्पतिके शब्द करते चरण मणिमई भूषणनि करि मंडित ऐसे सोहते भये मानों दोऊ पांव परस्पर आलाप ही करै हैं ॥८५॥ अर जगत्‌के स्वामीकी अंगुरी रत्न जडित मुद्रकानि करि ऐसी सोहती भई मानों ये मुद्रिका रक्षमुद्रिका ही हैं। भावार्थ—प्रभुकीसी रूप लावण्यता त्रैलोक्यविषै नाहीं सो मति काहूकी दीठि लागै यह जान करि सुरपतिने रक्षक मुद्रिका करी है, प्रभु तो जगतके रक्षक हैं उनकी रक्षा कौन करै परंतु यह इंद्रकी भक्ति है अर केसर अर चंदनके पंक कर लिप्त किये त्रैलोक्यनाथके अंग सो कैसे सोहते भये जैसा स्फटिकमणिका पर्वत संध्याके बादलनिके संसर्गतैं सोहै ॥ ८७ ॥ अर हंसनिकी पंक्ति समान उज्ज्वल दुपट्टा प्रभुके कांधे डारचा सो शुभ आकार कैसा सोहता भया जैसा निर्मल शरदका मेघ सोहै अर संतान जातिके कल्पवृक्ष अर पारिजातके कल्पवृक्ष देवलोकके वृक्षनिकरि उपजे नाना भांतिके पुष्प अर जलकरि उपजे कमलादिक अर स्थल कर उपजे स्थलकमलादि नानाप्रकारके पुष्प महा सुगंध महा मनोहर ॥ ८९ ॥ अर भद्रशालवनके अर नंदनबनके अर सौमनसबनके अर पांडुकबनके उपजे नाना प्रकारके नाना वर्णके जे अनेक पुष्प तिनकी माला शची आदि देवीनिने गूंथी, वे देवी मालाके गूंथवेविषै प्रवीण हैं सो उनकी गूंथी मालानिकी अतिसुंदरताकरि मंडित ऋषभदेव अति सोहते भये, कैसे हैं आदीश्वर सीसविषै जो माला ताके अग्रभागकरि सुमेरुके मंडन कहिये आभरण ही हैं ॥९१॥ वे भव्यवत्सल आपही भद्रशालरूप सोहते भए, भद्र कहिये कल्याणकारी है

कर अत्यंत परोक्ष है विद्याधरनिका गमन नाहीं अढाई द्वीपविषे भूचरका संचार है। मानुषोत्तर परे मनुष्य नाहीं जाय सकै हैं सो जिनपतिके जन्माभिषेकविषै देवनि सुमेरुविषै पयोदधि प्रगट किया ॥ ६९ ॥ ऐसा स्नान भगवान्हीका होय जहां स्नानके करणहारे आप अर स्नानका आसन सुमेरु अर स्नानकी कूंडी क्षीरसागर अर स्नान करावनहारे इंद्रादिक देव ऐसी सामग्री औरनिकूं कहां होय ॥ ७० ॥ इंद्र अर अनेक सामानिक लोकपालादिक देव अनुक्रम करि भगवानका अभिषेक करते भए ॥ ७१ ॥ अत्यंत सुकुमार प्रभुका शरीर ताहि शची आदि सुरांगना पल्लवहूतैं अति कोमल जे कर तिनकरि अंगोछती भई अर दिव्य सुगंध जापर भ्रमर गुंजार करै हैं ताका लेप करतीं आदीश्वरके अत्यंत बालअवस्थाका शरीर ताका स्पर्श करती अद्भुत सुखकूं प्राप्त भई ऐसा सुख अरके स्पर्शतैं नाहीं, जैसा कोमल तनु कमलनयन भगवानका है तैसा तीन लोकमें काहूका नाहीं, बहुरि गंधोदकके कलशनिकरि भगवान्का अभिषेक भया सुगंध जलकरि भरे कलश जगत्के शिरोमणिके शिर पर ऐसे बर्षे जैसैं गिरि पर वर्षा होवे॥७४॥जिनेश्वरका समचतुरसंस्थान अर वज्रवृषभनाराच संहनन महाप्रबल ॥७५॥ अछेद्य अभेद्य है काया जाकी सो दोऊ कान वज्रवत् अखंड हैं तथापि नियोगमात्र वज्रसूचीके अग्रभागतैं छिद्र प्रगट करि काननिमें कुण्डल पहराये, सो कुण्डल काननिके प्रभावकरि ऐसे सोहते भए मानों जंबूद्वीपके दोऊ भानु ही महासेवक स्वामीकी सेवाके अर्थ आये हैं ॥ ७७ ॥ अर चूडा कहिये प्रभुकी चोटी अति स्निग्ध अर अति श्याम ताविषै पद्मरागमणिका आभूषण पहराया सो कैसा सोहता भया जैसा इन्द्रनीलमणिमें पद्मरागमणि सोहै ॥७८॥ अर प्रभुके ललाटपट्टविषै रचा श्वेत चंदनका तिलक कैसा शोभता भया जैसे अष्टमीके चंद्रमाकी रेखा संध्या समय पीत बादलनिके समूह विषै सोहै है। प्रभुके भुज महा मृदु सो रत्नमई केयूर कहिये भुजाशिखराभरण (वाजूबंद) तिनकर मंडित कैसे शोभते भए जैसे बाल भुजंग रत्नावाली फणनिकरि शोभै है अर हाथनिमें कडे अद्भुत मणीनिकरि जडे सो कैसे शोभते भये मानों रत्नाचलके तट ही देवनिकरि मंडित सोहे हैं ॥ ८१ ॥ अर भग-

भए, इनका भेद ऊपरके श्लोकनिमें लिखा है अर जन्माभिषेक समय अप्सरानिका शुभ महा रमणीक नृत्य होता भया वह नृत्य हावभाव विलास विभ्रमादि करि अति सुंदर है शृंगारादि रसनिकरि अद्भुत है रचना जिनकी अर अंग हार कहिए अंगका मोडना ता करि किये हैं अनेक कोतूहल जहां ॥ ६० ॥ या भांति देवनिका समूह महा आनंदरूप प्रवर्त्यां अर देवनिके शब्द समूह करि सुमेरुकी गुफा गुंजाररूप भई ॥ ६१ ॥ जब सौधर्म इंद्रने अभिषेकके अर्थि आरम्भ किया तब हाथमें अष्ट मंगलद्रव्य लिये महा मनोहर देवांगना खड़ी हैं अर कंचनके कलशनि सहित देवनिके समूह सर्व दिशातैं क्षीरसागरकूं आये सो देवनिके समूह करि क्षीरसागर सोहता भया। कैसे हैं कंचनके कलश महावेग कहिये महाशीघ्रता करि निकसै है प्रवाह जिनका अर महा घने कहिए अति पुष्ट हैं अर क्षीरसागरके जलतैं भरे स्वर्णके कलश देवनिके हाथनिहाथ करि आवते कैसे शोभते भये जैसे चांद अर सूर्य सुमेरुकी ओर आवते सोहैं।

भावार्थ—कनक कलश तो सूर्य समान भए अर क्षीरोदधिका जल चंद्रमा समान भासता भया बहुरि हजारों देव क्षीरसागरके जल करि भरे कलशनि करि जिनेंद्रका जन्माभिषेक करते भये, कैसे हैं कलश ढलती बेर सुंदर है शब्द जिनका ॥ ६५ ॥ इंद्रादिक देवनिके हाथ कर कुम्भरूप महा मेघ क्षीरोदधिके जलकरि भरे, तत्कालका जाया जो जिनराज महागिर ताके शिर पर वर्षते जिनरूप गिरकूं खेदका कारण न भये ॥ ६६ ॥ क्षीरसागरके जलका प्रवाह सुमेरु पर विस्तरा ता समय अनेक देव देवाधिदेवके मुखकी उच्छ्वासकी वायुतैं बारम्बार जलके समूहविषै मक्षकानिके समूहकी न्याईं जाय पडें। भावार्थ—भगवान्‌के मुखकी वायु अति प्रवल ताकरि देवहू चलायमान होय जांय अर काऊ ही जीवके भगवान्‌के कल्याणविषै अकल्याण नाहीं सबहीकूं सुख उपजै है॥६७॥ देवनिने सुमेरुगिरि अनेक बार देख्या है सो सदा रत्नमई पीतवर्ण देख्या है सो सुमेरु जिनराजके जन्मोत्सवविषै दुग्धोदधिके समूहकरि धवल रूप देख्या है, क्षीरसागर सुमेरुतैं अति दूर है, अर विद्याधरनिके समूह

वन वापी तिनकरि शोभित है अर ता पुरविषैं रत्नमई बड़े बड़े मंदिर हैं इंद्रनीलमणिमई महा श्याम अर बज्र कहिये हीरा वैडूर्यमणि तिनकी है भीति जाविषैं अर पद्मराग मणीनिकी प्रभाकरि पूर्ण सोहै है ॥४०॥ सुर असुरनिके मन पुरुषोत्तमके पुरकी विभूति देख स्वर्गपातालकी लक्ष्मीकी अभिलाषातैं रहित भये, ऐसी विभूति जगत्रयमें नाहीं। अयोध्याका नाम साकेतपुर भी कहै हैं साकेतका अर्थ क्या जा नगरके विषैं साक कहिये एक साथ सबही देव इत कहिए प्राप्त भए तातैं साकेतपुर कहिये सो पुर कीर्तिकरि भर्‌या है ॥ ५० ॥ अथानंतर—सब देवनि सहित पुरंदर कहिए इंद्र अयोध्यापुरीकी तीन प्रदक्षिणा दे नगरमें प्रवेश करते भए, नाभि राजाके आंगनमें जायकरि भगवानके लायवेके अर्थ शचीकूं इंद्रने आज्ञा करी, कैसे हैं भगवान् महा पवित्र है शरीर जिनका ॥ ५१ ॥ इंद्रकी आज्ञा पाय इंद्राणी प्रसूतिगृहविषैं गई जननीकूं सुखनिद्रा अनायकरि अर मायामई बालक माताके निकट मेले ॥ ५२ ॥ भगवान्कूं नमस्कारकरि उठाय लाई बाहर लाय इंद्रके हाथ सौंपे सो सुरपति श्रीपतिके रूपका अतिशय हजार नेत्रनिकरि निरखता संता तृप्त न भया, भगवान्कूं अपनी गोदमें लेकरि ऐरावत गजपर आरूढ भया सो अपनी गोदमें लेकर आदीश्वरकूं सुरेश्वर कैसा सोहता भया जैसे अपने शिखरपर सूर्यकूं धरै निषधाचल सोहै ॥ ५४ ॥ देवनिके समूह सहित देवनिके नायककूं सुमेरुके शिखर ले गए, कैसे हैं जिनपति छत्रकी छायाके पटकरि शोभित हैं सीस जिनका अर चमरनिके समूह जिनपर ढुरे हैं गिरींद्रनिकी तीन प्रदक्षिणा दे सुरेंद्र पांडुकशिलाविषै जिनेंद्रकूं सिंहासन पर पधरावता भया, सब देवनिका चक्र कहिये समूह ताकरि संयुक्त जो सुरपति जिनपतिके अभिषेकका आरंभ करावता भया। ता समय देवनिने अनेक वादित्र बजाए, गाजता समुद्र समान गंभीर भेरी ढोल मादल मृदंग इत्यादि वादित्र देवनि बजाए अर शंख पूरे अर स्त्रीनि सहित किन्नर गंधर्व तुम्बार नारद इत्यादि देवनिकी जाति हैं सो सुंदर गान करते भए तिनके गीत कानिकूं मनोहर नानाप्रकारके रसकरि पूर्ण हैं तत १ बितत २ घन ३ सुषिर ४ ये चार प्रकार वादित्र मनके हरणहारे देव बजावते

निकायके देव चाले ॥ ३४ ॥ अर असुरकुमारादिक दश प्रकार भवनवासी उनकी अनुक्रमकरि सप्त सप्त सेना तिनकरि व्याप्त भया आकाश अत्यंत सोहता भया ॥ ३५ ॥ कैयक देव विमाननिमें बैठे हैं कैयक रथनिमें आरूढ हैं कैयक वृषभनिपर चढे हैं कैयक रोझनिपर कैयक अश्वनिपर कैयक अष्टापदनिपर कैयक शार्दूलनिपर कैयक मच्छनिपर कैयक सूरनिपर कैयक आरणे भैंसनिपर कैयक सिंहनिपर कैयक नानाप्रकारके गजनिपर कैयक चमरी मृगनिपर कैयक हिरणनिपर कैयक मींढ़निपर कैयक गरुडनिपर कैयक कोकिलानिपर, कैयक क्रौंचनिपर कयक मोरनिपर कैयक कूकडनिपर कैयक कबूतरनिपर कैयक हंसनिपर कैयक कारंडनिपर, कैयक सारसनिपर ॥ ३९ ॥ कैयक चक्रवाकनिपर कैयक बगुलनिपर इत्यादि अनेक वाहननिपर चढे चले ॥ ४० ॥ ये चतुरनिकायके देव श्वेत छत्रनिकरि अर ध्वजानिकरि अर नानाप्रकारके फेन समान उज्ज्वल चमरनिकरि सकल आकाशकूं व्याप्त करते गमन करते भये ॥ ४१ ॥ यह देवनिका आगमन अद्भुत गीत नृत्य वादित्रनिकरि संयुक्त शोभता भया भेरी शंख वादित्र इत्यादि नाना प्रकारके जे दुंदुभि तिनकरि पूरित किया है लोक जिनने ॥४२॥ ता समय सब गजनिकी सेनाका अधिपति ऐरावत तापर चढ्या सौधर्म इंद्र अति सोहता भया, कैसा है ऐरावत विक्रियाकरि विस्ताररूप किया है शरीर जानै ॥४३॥ अर आकाश समान है निर्मल उतंग है अंग जाका सो गज मानूं आकाश समान सोहै है कानोंपर श्वेत चमर सोई है शशिमंडल जाविषैं अर गलेकी जो सांकल सोई है नक्षत्रमाला जाविषैं, अर श्वेत ध्वजानिका जो समूह सोई है हंसनकी पंक्ति जाविषैं ॥ ४४ ॥

श्लोकः—सदंतांतरविस्तारी करास्फारितपुष्करः । प्रोद्वंशांकुररुमध्योधन् नागेंद्रइवभूधरः ॥

पहिले स्वर्गका इंद्र सकल इंद्रनिके समूहकरि गजेंद्र पर चढ्या देवनिकरि मण्डित भगवान्का पवित्र जो जन्मक्षेत्र तहां जाय प्राप्त भया सुर अर असुरनिकी पंक्ति आकाशतैं उतरती हुई, कुवेरकरि करी सुरपुर समान अद्भुत जो अयोध्यापुरी ताहि देखते भए, कैसी है नगरी कोट खाई परकोटा तिनकरि वेष्टित महा मनोहर है अर बन उप-

मेरा अचल सिंहासन ताहि कौन कंपायवेकूं समर्थ है देव दानवनिका समूह महा पराक्रमी जो कोई मोसूं विमुख होय ताहि मैं दंड देनेकूं समर्थ ॥ २५ ॥ ऐसा कौन जो मेरा पराभव करै जो अतिबाल अति मुग्ध स्वेच्छाचारी अज्ञानी होय सो निशंक निर्भय भया विना विचारे करै सो ऐसा लोकमें कोई नाहीं जो मेरी अवज्ञा करै सो मेरा यह सिंहासन किनने कंपाया अर मेरा मुकुट किनने नवाया, तीन भवनविषैं तीर्थंकर देव टारि ऐसा प्रबल पराक्रम औरका न देखूं हूं ऐसा जानकरि अवधि विचारी ॥ २६ ॥ तब दैदीप्यमान अवधिज्ञान नेत्रकरि जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रविषैं आदि तीर्थंकर उपजे जाने ॥ २७ ॥ तब आसनतैं उतरि सात पैंड जायकरि हाथ जोड नमस्कार किया अर हे जिनेश ! तुम जयवंत होवहु ऐसा शब्द किया ॥ २८ ॥ बहुरि जाय सिंहासन पर बैठि विचार करते मात्रही अपने समीप आया जो सेनापति ताहि आज्ञा करता भया अर्थात् विचार करते ही प्रमाण तत्काल इंद्रकूं नमस्कारकरि सेनापति जो आया हुता ताहि सुरपति कहता भया इस अवसर्पिणीकालविषैं भरतक्षेत्रविषैं आदि जिन उपजे तातैं सब देवनिसहित मोहि भरतक्षेत्रमें जाना है इसलिये मेरी आज्ञाप्रमाण तुम सर्व देवनिकूं खबर करहु ॥ ३० ॥ तब स्वामीके आदेशकरि सेनापतिने सबकूं आज्ञा करी सौधर्म स्वर्गके निवासी सब ही देव इंद्रके लार चाले अर अच्युतस्वर्ग पर्यंत सोलह स्वर्गनिके सब ही देव अपने अपने इंद्रनिकी लार चाले सोलह स्वर्गके बारह इंद्र अर बारह प्रत्येंद्र सबही बडे विवेकी विना सिखाये स्वयमेव है बोध जिनके सो जिनेश्वरका जन्म कल्याणक करनेकूं चले, अर ज्योतिषी भवनवासी व्यंतर सब ही देव अपने अपने इंद्रके साथ चले ॥ ३२ ॥ गज अश्व रथ इनके समूह अर पयादेनिके समूह अर वृषभ गंधर्व नृत्यकारिणी ये सप्त देवनिकी सेना ताकरि आकाश व्याप्त होय गया ॥ ३३ ॥ देवनिके गज अश्व वृषभ महिषादिक तिर्यंच नाहीं देव ही विक्रियाकरि नानारूप धरै हैं कैयक देव महिषनि पर चढे हैं कैयक देव गैंडानि पर चढे हैं कैयक पालकीनिपर कैयक तुरंगनिपर कैयक गजनिपर कैयक ऊंटनिपर कैयक मगरमच्छनिपर कैयक हंसनिपर इत्यादिक अनेक बाहननिपर चढे चतुर-

लिये खडी हैं, अति चपल काननिके जे कुंडल तिनके प्रकाशकरि दैदीप्यमान हैं कपोल जिनके ॥ ७ ॥ अर स्वच्छता, प्रतिधान्या, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीमती, कीर्तिमती, वसुंधरा, चित्रा, ये आठ देवी विचित्र आभरणकी धरणहारी हाथमें दर्पण लिये खडी हैं ॥ ९ ॥ इला, सुरा, पृथ्वी, पद्मावती, कांचना, सीता, नवमिका, ह्रीकांता (भद्रिका) ये आठ हर्षकी भरी उत्कृष्ट अंगकी प्रभाकरि दिशानिकूं उद्योत करणहारी प्रभुका जन्मोत्सव देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भई, हाथविषैं उज्वल छत्रनिकूं धरैं खडी हैं ॥ ११ ॥ श्री, ह्री, धृति, वारुणी, पुंडरीकिणी, अलंवुसा, अंवुजा, मित्रकेशी, ये आठ दिक्कुमारियें कमलवदनी दैदीप्यमान हैं मणिमई कुण्डल जिनके वे हाथविषैं चमर लिये खडी हैं, कैसे हैं चमर स्वर्णकी है डंडी जिनकी ॥ १२ ॥ अर चित्रा, कनकचित्रा, सूत्रामणि, त्रिसरा, ये चार देवी विजुली समान हैं प्रभा जिनकी सो आंगनविषैं उद्योत करती भई, ये विद्युत्कुमारी हैं ॥१३॥ अर विजया, वैजयन्ती, जयन्ती अपराजिता ये चार विद्युतकुमारी, अर रुचिका, रुचिकोज्वला, रुचिकाभा, रुचकप्रभा, ये चार ते आठ विद्युतकुमारी देवी जातकर्मविषै प्रवीण हैं सबही तीर्थंकरनिके जन्मविषै गीत गानादि करि उत्सव करैं जासमय जिनेंद्रका जन्म भया ता समय पहिले ग्रैवेयक लेकरि सर्वार्थसिद्धि तक तेईससौ विमाननिके अहमिंद्र अवधिज्ञानकरि जिनराजका जन्म जानि अपने अपने सिंहासनतैं उतरि सात पैंड जाय प्रणाम करते भए अर अपने अपने स्थानक तिष्ठते ही तीर्थेश्वरका ध्यान करते भये, निज स्थानक छोडकरि अहमिंद्रनिका अर स्थानकमें गमन नाहीं, चतुरनिकायके देवनिके मुकुट नय गये अर जिनराजके जन्मके प्रभावतैं सब इंद्रनिके आसन चलायमान भये अर भवनवासी देवनिके लोकनिविषै अकस्मात् शंखध्वनि भई अर व्यंतरनिके भेरी नाद भया अर ज्योतिषीनिके सिंहनाद भया अर स्वर्गवासीनिके घंटाका शब्द भया, ये शब्द अकस्मात् भये। अर तीन लोकविषैं सब जीवनिके सुख उपज्या ॥ १२१ ॥ आसन कंपायमान होनेकर पहिले स्वर्गका सौधर्म इंद्र अति आश्चर्यकूं प्राप्त भई है बुद्धि जाकी सो चित्तमें चितवता भया कि मैं इंद्र पुरंदर शक्र ऐसा कौन जो मुझे न गिण

दिक्कुमारी देवी सेवा करै हैं सो यह वार्ता तो जगतविषैं प्रसिद्ध है सो जिनराजका जन्म इनके होवेगा सो आज अपना मनोरथ सिद्ध भया। हे प्रिये! सर्व कल्याणका भाजन जो तेरा पुत्र ताके जन्मकरि तू सर्वथा जगतकूं आनंदकी कर्ता होवेगी ॥ ९५ ॥ याभांति स्वप्नका फल सुनकरि अपने गर्भविषैं जिनेश्वरकूं उपज्या जान मरुदेवी दीप्ति अर कांतिकूं धरती संती अति हर्षकूं प्राप्त भई ॥ ९६ ॥ तीजेकालमें चौरासीलाख पूर्व अर तीन वर्ष अर साढे आठ महीना जब बाकी रहे तब आप सर्वार्थसिद्धितैं चयकरि माताके गर्भविषैं आए, अषाढबदी दोयज उत्तराषाढ नक्षत्रविषैं जननी जगतपूज्यकूं गर्भमें धारती भई ॥ ९७ ॥ अनुक्रमतैं गर्भके बढते संते माताके शरीरकी कांति बढी। अर उदर न बध्या त्रिवलीका भंग न भया ॥ ९८ ॥ वह माता तीन जगतके गुरुकूं गर्भविषै धारती अर गुरुताके अतिशयकूं धारती हुई देहविषै लावण्यता भावकूं धारती भई यह अद्भुत है। भावार्थ—तीन लोकमें अधिक भार जाका ऐसे भगवंतकूं गर्भविषैं धारती लाघवताके भावकूं देहविषैं धारती भई यह अद्भुत बात है बडा आश्चर्य वे प्रभु जगतके सूर्य माताके गर्भविषैं ऐसे तिष्ठे जैसैं जलविषैं सूर्यका प्रतिबिंब आय प्राप्त होय, जो कदाचित माताकूं गर्भका खेद होय ऐसा जानि जगदीश्वर अलिप्त विराजे ॥ १०० ॥ दिक्कुमारीनिकरि सोध्या जो माताका गर्भ ताविषैं मति श्रुति अवधि जे तीनज्ञान तिनकरि विश्वकूं विलोकते त्रिलोकनाथ सुखतैं विराजे छह महीना तो पहिले रत्न वर्षे अर नौ महीने गर्भमें तिष्ठे तब बर्षे या भांति पंद्रह मास पिताके घर रत्नवर्षा भई नव महीने पूर्ण भये तब उत्तराषाढ नक्षत्रविषैं माताके गर्भमेंतैं जिनराजका जन्म भया, जैसैं मेघके उदयतैं निकस्या सूर्य सोहै वैसे जननीके गर्भतैं निकसे जिनराज शोभते भये, भगवान् तो तीन भुवनके सूर्य हैं अर माता पूर्वदिशा समान पवित्र है अर माताका गर्भ स्फटिकमणि समान निर्मल है जब जिनवरका जन्म भया तब देवी दिक्कुमारी जातकर्मके कर्तव्यविषैं शीघ्रही प्रवर्ती ॥ ५ ॥ विजया वैजयंती, जयंती, अपराजिता, नंदा, नंदोत्तरा, आनंदा, नंदवर्द्धना, ये आठों देवी दिक्कुमारी झारी हाथमें

सोहै वैसे पूर्वदिशा सोहै है अर अब दीर्घका कहिए सरोवरी तिनविषैं चकवी दीर्घनिशा पूर्णकरि इन कहिये सूर्य ताके दर्शनकरि हर्षित भई सुंदर शब्द करै है ॥ ८४ ॥ अर कलहंसनिका कुल कहिए समूह सो मिष्ट शब्द करता संता तोहि जगावै है तिहारे दर्शनकी है अभिलाषा जाके मानों तिहारे दर्शनकरि तिहारे चरणनिकी चाल सीख्या चाहै है, अर ये वृक्ष मंद पवनकरि हालते संते प्रगटे हैं मूर्ति जिनकी सो मानों तुमकूं अपने नृत्यका आरंभ दिखावै हैं अर ये दशोंदिशा अत्र निर्मल होयगई हैं सो मानों तिहारी निर्मल चेष्टा ही इनविषैं विस्तरी है सो हे मात ! अब प्रभात भया तुम शय्या तजहु याभांति वंदीजननिने माताकी स्तुति करी तब माता सेजकूं तजती भई जैसे हंसिनी नदीनके पुलनिकूं तजै । कैसा है नदीका पुल जलकी तरंगनिका है समूह जहां अर कैसी है सेज पुष्परूप तरंगनिका है समूह जहां वह माता उज्वलवस्त्र पहिरकरि उज्वलमहलतैं निकसी थकी कैसी सोहती भई जैसी शरदऋतुके वादलनितैं निकसी चंद्रकला सोहै । है कैसी है चंद्रकला अर कैसी है माता धौत कहिए उज्वल है, छाया कहिए कांति जाकी ॥ ८९ ॥ श्रीदेवी आदि दिक्कुमारीनिने कीये हैं शृंगार जाके अर पहिरे हैं नवीन आभूषण जानै अर गर्भके मध्य विराजे हैं आदि पुरुष जाके ऐसी वह माता नाभिराजाके निकट गई जैसैं मेघमाला पर्वतके निकट जाय । भूभृत नाम राजाका है अर भूभृत नाम पर्वतका है, कैसी है माता धनश्री कहिए अत्यंत है शोभा जाकी अर धनश्री नाम मेघमालाकाहू है ॥ ९० ॥ राजा सिंहासनपर विराजे हुते तिनके तांई प्रणामकरि तिनके निकट बैठी राजाने वहुत विनय किया एक सिंहासनपर दोऊ विराजे, राणी करकमल जोडि लक्ष्मीकी न्याईं लक्ष्मीपतितैं सोलह स्वप्न देखे हुते तिनका वृत्तांत कहती भई ॥ ९१ ॥ वह जगतका पिता राजा नाभि स्वप्ननिका वृत्तांत चित्तविषैं अवधारकरि कहता भया । हे प्राणप्रिये ! तीन लोकका नाथ आदि तीर्थंकर तेरे गर्भविषैं आय प्राप्त भया, इन स्वप्ननिका फल दूर नाहीं नजदीक ही है अर फल अल्प नाहीं महाफल है तातैं तू मेरे वचनकी प्रतीतिकरि तेरे गर्भविषैं भगवान हिरण्यगर्भ आए, छे महीनेतक रत्ननिकी वर्षा होती भई । अर

स्वामिनी आनन्दरूप शुभ स्वप्नके दर्शनकूं प्राप्त भई सो मैं कृतार्थ भई सेवकका यही धर्म है जो स्वामीकूं आनन्द उपजावै याकरि सेवककूं कृतार्थता है ॥ ७६ ॥ माता तो आप ही जाग्रतरूप है परंतु दिक्कुमारी जगायबेके अर्थ माताकूं ऐसे शुभ शब्द कहती भई सो वे शब्द केवल मंगल हीके अर्थ हैं अर माता तो जाग्रतरूप ही है देवी कहा शब्द कहै है सो सुनहु हे विबुधार्थ कहिये हे माता! तू कैसी है जाना है पदार्थनिका रहस्य जाने सो तू विबुधस्व कहिये जाग, हे विवर्धने कहिये वृद्धिरूपिणी! अब तू सबको आनंद बढा अर हे देवी! विजयलक्ष्मीकी स्वामिनी देवी पूर्ण हैं मनोरथ जाके सो तू विजयके भावकूं प्राप्त होहु ॥७९॥ हे माता! अब यह चंद्रमा तिहारे मुखरूप चंद्रकूं देखकरि लज्जावंत होय प्रभारहित होय गया है तिहारा मुख निष्कंलक अर गुणाकर कहिये गुणनिकी खान अर चंद्रमा दोषा कहिये रात्रि ताका करणहारा है तातैं दोषाकर अर कलंकी है ॥ ७९ ॥ अर दीपनिकी ज्योति मंद भासै है सो मानों ये दीपक अपने प्रकाशकूं हंसे हैं जो यह जिनेन्द्रके माता पिताका गृह नखनिके उद्योतसमान चांद सूर्यका प्रकाश नाहीं यहां हम प्रकाश करैं या समान मूढता कहां ॥८०॥ अब संध्या दुष्टकी मित्रतासमान निष्फल डिगती भासै है, कैसी है दुष्टकी मित्रता? अत्यंत सुखविषै है राग जाके अर क्षणमात्रमें राग मिट जाय है अर यह सांझहू प्रथम तो राग कहिए आरक्तरूप भासै हैं अर क्षणमात्रमें आरक्तता मिट जाय है। भावार्थ—अब संध्याकी भी ललाई मिटै है ॥ ८१ ॥ अब सूर्यकी प्रभा सज्जनकी मित्रता समान बढै है, कैसी है सज्जनकी मित्रता? अबन्ध्य कहिये सफल है अर्थ जाविषैं अर कैसी है सूर्यकी प्रभा सफल हैं सकल कार्य जाविषैं ॥८२॥ अर वे देवी कहैं हैं हे माता यह पूर्वदिशा स्त्रीकी न्याईं तुमारे मंगलके अर्थ उद्यमी भई है, कैसी है पूर्वदिशा प्रकाशरूप जो अंबर कहिए आकाश सोई है अंबर कहिए वस्त्र जाके अर देदीप्यमान जो सूर्य सोई है तिलक जाके अर कैसी है स्त्री, प्रकाशमान अंबर कहिए वस्त्र आभूषण तिनकरि सोहै है अर ज्योतिरूप तिलककूं धरै है जैसी वस्त्राभूषण भूषित आभरण तिलक संयुक्त सौभाग्यवती स्त्री मंगलके अर्थ

हैं ॥ ४९ ॥ कैयक सेज सवारें हैं कैयक माताकूं तांबूल देवें हैं कैयक गृहके कार्यविषै तत्पर हैं कैयक अंगकी सेवाविषैं सावधान हैं ॥ ५० ॥ कैयक दर्पण लिए खडी है कैयक चवर ढारें हैं कैयक छत्रलिए ऊभी हैं कैयक पंखा करें हैं ॥ ५१ ॥ कैयक देवी माताके अंगकी रक्षाविषैं तत्पर खड्गकरि संयुक्त हैं करके अग्रभाग जिनके ग्रह राक्षसभूत पिशाचादितैं रक्षा करैं हैं सदा सावधान हैं ॥ ५२ ॥ कैयक बाहरले आंगनमें खडी हैं खड्ग चक्र गदा शक्ति अर सुवर्णकी लाठी हैं हाथमें जिनके ॥५३॥ या भांति रात्रि अर दिन देवीनिकरि माता सेवनीक होती भई सो या लोकविषैं आपकासा प्रकास औरनिका न जानती भई गर्भतैं पहिले छह महीना तक रत्नधारा नाभिराजाके मन्दिरमें वर्षी ताकरि आदि तीर्थंकरकी उत्पत्ति माता पिताने निश्चय जानी ॥ ५५ ॥

अथानतंर—जैसे तारोंकरि सब ओर चंद्रकला सेवनीय होय तैसे मरुदेवी देवनिकरि सेवनीय भई ॥५६॥ एक दिन शरदके बादरनि समान उज्ज्वल मंदिर अगरकी धूपकरि सुगंध ताविषैं महासुंदर सेज जो कि—महामनोहर वस्त्रनिकरि शोभित ताके ऊपर शयन करती हुती रात्रिके पिछले पहर महाशुभरूप सोलह सुपने निधिसमान दुर्लभ जिनका दर्शन सो देखती भई प्रथम ही सफेद हाथी देख्या मानों वह हस्ती बडा राजा है अर दानके अर्थि जो भ्रमर तिनकरि गाइये है यश जाका अति प्रचुर दान कहिए मद ताकी धाराकरि भीज रहे हैं सूंड अर कपोल जाके ॥

भावार्थ—जैसैं दानेश्वर नरेश्वरके निकट दानके अर्थ याचक आय यश गावैं तैसे मदोन्मत्त जो गजराज तापरि भ्रमर गुंजार करै हैं ॥ ५९ ॥ दूजे स्वप्नमें वृषभ देख्या सुंदर है आकार जाका मानों यह वृषभ अति उज्वल महा उन्नत सुंदराकार वृष कहिये धर्महीका स्वरूप है सो वृषभ गर्जता देख्या सो अपने नादकरि दबाया है प्रति पक्षीनिका नाद जाने ॥६०॥ तीजे स्वप्नमें उछलता नाहर देख्या नख दाढ अर केशावली तिनकरि शोभित महा तेजरूप देख्या मानों पहिले माते हाथीका कथन किया सो वाके मदकूं रोधन अर्थ मानों नाहर ढूंढवे ही आया

है ॥ ६१ ॥ चौथे स्वप्नमें नानाप्रकारके रत्ननिकरि जडित सो स्वर्णके कलश-कमल जिनकरि आच्छादित हैं मुख जिनका महा पवित्र जलके भरे तिनकरि लक्ष्मीका अभिषेक देख्या वे कलश महा शब्द करते लक्ष्मीके सिरपर परे हैं जैसें गर्जते मेघनिकी घटा टोपकरि पृथिवीका अभिषेक देख्या तैसें लक्ष्मीकूं देख्या ॥ ६२ ॥ अर पांचवें स्वप्नमें दो माला आकाशविषै लटकती देखीं सो नानाप्रकारके पुष्पनिकरि गूथी हैं अर लंबी हैं अर महा सुगंध सर्व दिशानिकूं सुगंध करनेवारी हैं मानों सर्वऋतुकी शोभा भेली होयकरि प्रभुकी सेवाके अर्थ आई हैं ॥ ६३ ॥ अर छठे स्वप्नमें चंद्रमंडल देख्या मानों यह चन्द्रमंडल ही श्यामा कहिए रात्रि सोई भई श्यामा कहिए नायिका तानें प्रभुकूं छत्र चढाया है छत्रके नीचे दंड होय है अर चंद्रके नीचे किरणनिका समूह है सो ही दंड जानहु कैसा है निशारूप नायिका तारारूप हैं आभरण जाके ॥ ६४ ॥ सातवें स्वप्नमें ऊगता सूर्य देख्या सो मानों पूर्व दिशारूप स्त्रीने मंगलके अर्थ कलशही थाप्या है, कलश सिंदूरकरि आरक्त होय है अर सूर्य संध्याकी ललाईकरि लाल वर्णकूं धरैं है ॥ ६५ ॥ आठवें स्वप्नमें जलक्रीडा करते दो मीन देखे सो मानों वे मीन माताके नेत्रकूं उलाहना देने आये हैं, कैंसे हैं माताके नेत्र अपनी चपलताकरि जीती है मीननिके नेत्रनिकी चपलता जानें ॥ ६६ ॥ अर नवमें स्वप्नमें दो स्वर्णके कलश देखे मानों वे स्वर्णके कलश माताके जो दोनों स्तन तिनकूं देखने आये हैं कुचनिकूं कलशकी उपमा है सो माताके कुचनि समान कलश कहे। कैंसे हैं कलश, मनके हरणहारे हैं जलकरि पूर्ण हैं अर विस्तीर्ण हैं घन हैं कठोर हैं अर कुच भी पय कहिये दुग्धकरि भरे हैं ॥ ६७ ॥ अर दसवें स्वप्नमें सरोवर देख्या, कैसा है सरोवर उदंड कहिये प्रफुल्लित पुंडरीक कहिये सफेद कमल तिनका है समूह जाविषै अर राजहंसनिकरि युक्त मनोहर है अर रथपाद कहिये चकवा तिनकूं आदि दे नाना प्रकारके जो पक्षी तिनके नादकरि पूर्ण है सो माताने सरोवर देख्या मानों अपनी प्रबल सेनाही निरखी, कैसी है सेना उदंड कहिये महा प्रचंड प्रबल सामंत तिनमें पुंडरीक कहिये श्रेष्ठ तिनका ओघ कहिये समूह जाविषैं अर राजहंस जे बडे राजा इन

करि मनोहर हैं अर रथ पयादे गज अश्वादिकके शब्दकरि शोभित हैं ॥६८॥ अर ग्यारहवें स्वप्नमें कल्लोलनिकरि वढता समुद्र देख्या, कैसा है समुद्र प्रचुर जे मीन तिनके मिथुन कहिये युगल अर उनमेष कहिये उद्घाटित है दृष्टि जिनकी ऐसे मकर कहिये मगरमच्छ तिनकूं आदि दे जे जलचर जीव तिनकी राशिकरि पूर्ण है मानों समुद्र आकाश समानही है, आकाशहू नीलवर्ण भासै समुद्रहू नीलवर्ण भासै अर आकाशविषैं नवग्रह मीन मेष मिथुन मकरादि राशिकरि पूर्ण अर यह भी मकरादि मीन राशिकरि पूर्ण ॥ ६९ ॥ बारहवें स्वप्नमें सिंहरूप है पाये जाके ऐसा सिंहासन देख्या, कैसा है सिंहासन चारों पायनिके सिंह महा प्रबल हैं भुजरूप स्तंभ जिनके अर ओट है उद्घाटित दृष्टि जिनकी वे सिंह सिंहासनकूं कैसे धरै हैं जैसे कर्मभूमिकी आदिविषैं मनुराज कहिये कुलकर जगत् कहिये प्रजाकूं धरै हैं ॥ ७० ॥ तेरहवें स्वप्नमें देवतानिका विमान देख्या मानूं वह विमान स्वर्गहीकी सुंदरताका समूह मनुष्यनिकूं दिखायवेकूं आया है, सुंदर है गीत जिनके ऐसी देवांगनानिकरि मानों आन्या है ॥ ७१ ॥ चौदहवें स्वप्नमें नागेंद्रका भवन देख्या मानूं वह अपनी शोभाकरि नागलोककूं जीतकरि समस्त लोककूं जीतिवेकी इच्छाकरि आया है नागकुमारी देवनिकरि उपजी है शोभा जाके ॥ ७२ ॥ पंद्रहवें स्वप्नमें महारत्ननिकी राशि देखी सो रत्नराशि अपनी दैदीप्यमान किरणनिकरि मेघ रहित आकाशविषैं मानूं विजुरी अर इंद्रधनुषकी शोभाकूं विस्तारै है कैसी है रत्नराशि अभ्र कहिये आकाश ताकूं स्पर्शै है ॥ ७३ ॥ सोलहवें स्वप्नमें निर्धूम अग्नि देखी मानूं हर्षकरि फूल गया जो आकाश तातैं केसुवोंके पुष्पोंका समूह ही पडा है सो अग्नि अति निर्मल अर भ्रमजालकी निवृत करणहारी सोहै है ॥ ये शुभ सोलह स्वप्न देखे अर इनके पीछे मुखके मार्ग होय अपने उदरविषैं वृषभ प्रवेश करता देख्या मानूं वृषभदेव ही वृषभके रूपकरि माताके उदरमें आये ॥ ७५ ॥ ये सोलह स्वप्न देखकरि माता अति आनंदकूं प्राप्त भई तब निद्रारूपी सखी जाती रही ॥

भावार्थ—माता तो स्वामिनी है अर निद्रा ही सखी है सो या निद्रा सखीने ऐसी जानी जो मोहकरि मेरी

भावार्थ—आभूषणनिकरि माता शोभित नाहीं माताके अंगकरि आभूषण सोहते भए ॥३५॥ ता मरुदेवी सहित नाभिराजा स्वर्गलोकसमान भोग भोगवै हैं ताके भोगका वर्णन करिवेकूं बृहस्पति अर शुक्रकी भी शक्ति नाहीं ॥३६॥

अथानंतर—सर्वार्थसिद्धिसूं चयकरि आदि तीर्थंकरके मरुदेवीके गर्भमें आनेके छैमास रहे तबहीतैं राजाके घर आंगनविषै इंद्रकी आज्ञासूं धनपति निरंतर रत्ननिकी धारा आकाशसूं वर्षावता भया ॥ ३७ ॥ अर दिशा अर विदिशासे हर्षकी भरी दिक्कुमारी श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी आदि निन्यानवै आईं, वे देवी भगवानके माता पिताकूं प्रणामकरि इंद्रकी आज्ञातैं मरुदेवीकी सेवा करती भईं अर ऐसी वाणी माताकूं कहती भईं हे मात ! तुम नादो विरधो फूलो फलो चिरकाल जीवो हमको आज्ञा देवो जो तुम्हारी आज्ञा होय सो करैं ॥ ४१ ॥ कैयक देवी तो परम आश्चर्यकूं प्राप्त भईं, मातारूप जो लावण्य सौभाग्यादिक गुण रूप समुद्रका वर्णन करैं अर कैयक माताकी शास्त्रविद्या, लिखनविद्या गंधर्व विद्या, गणितविद्या इत्यादि आगम पूर्वक अनेक विद्या अर अनेक कलाकी जो प्रवीणता माताविषै ताकी प्रशंसा करैं माता समान सर्व कलाविषैं कुशल जगतमें कोई नाहीं अर कैयक देवी अपनी तंत्री वीणादिककी प्रवीणता माताकूं दिखावती भईं अर कैयक नानाप्रकारके वादित्र बजावै हैं अर कैयक कानिकूं रसायन तुल्य मधुर गीत गावैं हैं कैयक देवांगना हाव भावविलासकी भरी नेत्रनिकूं अमृत तुल्य अद्भुत नृत्य करै हैं कैसा नृत्य शृंगारादिक नवरसकी है उत्कृष्टता जाविषै अर सुंदर है अभिनय कहिये नृत्यकला जाविषै ॥४५॥ अर कैयक देवी सुंदर है करपल्लव जिनके सो माताके पांव पलोटती भईं अर कैयक हाथ दाबती भईं अर कैयक अंग दाबती भईं ॥४६॥ कैयक तैलाभ्यंग करती भईं कैयक उद्वर्तन कहिए उबटना लगावती भईं अर कैयक माताकूं स्नान करावती भईं । कैयक स्नान वस्त्र धोवती भईं ॥४७॥ कैयक माताके सुगंध लगावती भईं । कैयक नानाप्रकारके बकुचा लिए खडी हैं कैयक वस्त्र पहिरावै हैं कैयक आभूषण पहिरावें हैं कैयक फूलनिकी माला गूंथें हैं कैयक माताकी देहकूं शृंगार करैं हैं अर कैयक भोजन करावैं हैं कैयक नानाप्रकारकी सामग्री ल्यावैं

बहुरि कैसा है शिर सम कहिए न ऊंचा है न नीचा है जैसा चाहिए तैसा है अर जाके मुखमंडलकी शोभाकरि पूर्णमासीका चंद्रमंडल हारिके भावकूं प्राप्त भया सो मानूं आधि कहिए मनकी व्यथाकरि पांडु कहिए धूसरा होय गया है। भावार्थ—जो चिंताकरि ग्रसा गया होय सो पांडुरोगकूं प्राप्त होय यह माता मरुदेवी तो वहत्तर कला करि युक्त अर चंद्रमाकी मूर्ति सोलह कलाकी धारणहारी अर मरुदेवी निष्कलंक अर चंद्रकला कलंककरि युक्त सो मरुदेवीके मुखकी शोभा चंद्रमा कैसे पावै ॥ २९ ॥ अर स्त्रीकूं पृथिवीकी उपमा दीजै है सो पृथिवी तो कठोर अर स्पर्श गंध वर्ण इन चार गुणनिकी धारक अर माता मरुदेवी स्त्रीनिकी सृष्टिमें उत्कृष्ट चौसठ जे गुण तिन करि युक्त अति कोमल सो मरुदेवीकी उपमा पृथ्वीकूं कैसे वनै ॥ ३० ॥ अर मरुदेवी पतिसूं प्रीतिकी भरी अति सचिक्कण शुद्ध है चित्त आत्मा जाका सो जल याकी उपमा कैसे पावै, जल तो जडात्मा है अर यह ज्ञानात्मा अर जल तो किंचित स्निग्ध अर यह महास्निग्ध अर जलका नाम विष है अर अमृत भी है यह केवल अमृत ही है अर जलकी धोरी अग्रणेया कहिए परकी प्रेरी चालै है अर यह स्वतःस्वभाव धर्ममार्गविषैं चालै है सो याकूं जलकी उपमा कहां अर याकी मूर्तिकूं अग्निकी उपमा कहां ? अग्नि तो दहन स्वभाव अर यह शांति स्वभाव है यद्यपि अग्नि दैदीप्यमान है प्रकाशरूप है अर तेजोमय मूर्ति है तथापि या समान अग्निमें तेज नाहीं अर या समान दैदीप्यमान प्रकाशमान अग्नि नाहीं अर याकी समानता समीर कहिए पवन सो कैसैं पावै पवनमें तो एक स्पर्श गुण सो कभी तो पवनका स्पर्श सुखका कर्ता अर कभी सुखका हर्ता अर यह मरुदेवी दर्शनकरि नाभिराजाकूं सदा अति सुख कर्ता ॥ ३३ ॥ अर आकाश संबंधी शक्ति यद्यपि शुद्ध कहिये निर्मल है तथापि मरुदेवीकी समानता कैसैं पावै ? आकाशशक्ति निर्मल है परन्तु जड अर यह विचक्षण है अर आकाशशक्ति तो स्पर्शकरि रहित है काहूकरि स्पर्शा न जाय अर यह मरुदेवी कैसी है भरतारके हृदयकूं पूर्ण स्पर्शे है अर चौदह प्रकार आभूषण कल्पवृक्षकरि रचे जाके अंगके संगकरि शोभाकूं प्राप्त भये ॥ ३५ ॥

कांधेनिसहित शोभती भई आरक्त हैं हथेली जिनकी मानों ये भुजा कामकी पाश ही हैं ॥ १८ ॥ अर मानों यह माता समुद्रकी लहर ही है समुद्रकी लहर तो शंख मूंगा मोतीनिकरि सुंदर हैं । अर कैसी है माता शंखावर्त समान है ग्रीवा जाकी अर मूंगा समान हैं अधरपल्लव जाके मुक्ताफल समान दांतनिकी उद्योत तिनकरि महामनोहर है अर मरुदेवीका अंतरमुख शोभता भया आरक्त है तालवा जिह्वाका अग्रभाग जाका अर कोयलतैंहू अति सुंदर हैं शब्द जाके ॥ २० ॥ अर जाके कपोल मणिके दर्पणसमान निर्मल शोभते भए मानूं प्रीतम जो राजा नाभिराजा सो प्रियाके मुखविषैं काचकी न्याईं अपना मुख देखा चाहै है. ताके ये दोऊ कपोल सुंदर आरसे ही सन्मुख है ॥ २१ ॥ अर मरुदेवीकी समीचीन नासिका अति मध्यस्थ शोभती भई समा कहिए समान है अधिकी ऊंची नाहीं अर संपुटा कहिए समान है दोनों पुट जाके मानों यह नासिका मध्य तिष्ठती संती दोऊ ही नेत्रनिका परस्पर उलंघन निवारै है, कैसे हैं दोऊ नेत्र बढिवेकी बढी है स्पर्धा जिनके ॥ २२ ॥ अर जाके नेत्र दीर्घदर्शी श्वेत श्याम आरक्त त्रिवर्ण कमल समान शोभते भए सो कर्ण समीपतक हैं विस्तीर्णता जिनकी, दोऊ नेत्र दीर्घताकरि कानोंतक कटाक्षकूं धरै हैं सो मानूं दोऊ कर्ण दोऊ नेत्रनिके मित्र हैं सो अपनेअपने मित्रनिकूं नेत्र मंत्र करै हैं ॥ २३ ॥ अर जाकी भौंहैं सूक्ष्म हैं रेखा जिनकी अर दोऊ परस्पर घने दूर न घने मिले चढाए धनुष समान सुंदर शोभते भए ॥ २४ ॥ अर जाके ललाटकी शोभाकूं अष्टमीका चंद्रमा न पावता भया सो ललाट तो अति ऊंचा है न अति नीचा है जैसा चहिये तैसा है सो अष्टमीका चंद्र अनेक उपायकरि भी ललाटकी मनोग्यता न लहता भया ॥ २५ ॥ कुंडलनिकरि उज्वल है कपोल जाके ऐसी मरुदेवी ताके कर्णयुगलकी उपमा देयवेकूं कोई पदार्थ नाहीं कर्णयुगल अतिमनोहर कोमल हैं अर दोऊ समान हैं अर मनोहर हैं जिनवाणीके श्रवण करणहारे हैं अर जाके शिरकी शोभा वचनके मार्गतैं अगोचर है, कैसा है शिर नील कहिए श्याम कुंचित कहिए टेढे, स्निग्ध कहिए चिकने, सूक्ष्म कहिए वारीक अर घने कहिए अति सघन दीर्घ ऐसे हैं केस जिनके

अति सुंदर पांवनिके अंगुष्ठ दैदीप्यमान नखमंडलनिकरि मंडित मरुदेवीके शोभते भए मानों अपनी कांतिकरि ललाटके देखवेकी है वांछा जाके ।

भावार्थ—नखनिकी ज्योतिमें ललाटका प्रतिबिंब आय परै है ॥ ७ ॥ अर मरुदेवीके दोऊ चरण शोभाकूं धरते भये उन्नत है अग्रभाग जिनका अर सचिक्कण हैं सुंदर हैं आरक्त नखनिकी किरणनिकरि कमलनिकी शोभाकूं जीतते भए। अर जाके चरणकमल कूर्म सारिखे उन्नत शोभते भए, कैसे हैं चरणकमल सुंदर हैं अंगुरीरूप पत्र जिनके अर गूढ हैं गुलफ कहिए कूण्या जिनके ॥ ८ ॥ अर कांतिरूप जलके समूहविषै गमन अर दोऊ समान अति शोभाकूं धारते भए ॥ ९ ॥ जाके चरण सुन्दर मच्छ शंखादि लक्षणनिकरि अति शोभते भए मानूं क्रीडाविषैं प्रियके स्पर्शतैं स्वेदका संबंधही धरै है अर जाकी जंघा गोल ऊपरतैं नीची अर उतरती आई अर रोमनितैं रहित अर शिरा कहिए नस तिनकरि रहित लावण्यरसकी भरी मानों कामरूप धनुषधारीके तरकस ही हैं ॥ १० ॥ अर जाके दोऊ जंघा कहिए गोडा महामृदु अर गूढ हैं संधि जिनमें सो प्रीतमके गात्रकूं कोमलस्पर्शका सुख देते भए ॥ ११ ॥ सो संसारविषैं कोइक कवि कदलीके थंभकी उपमा जंघानिकूं दे हैं सो कदलीके थंभ गोल अर दीर्घतारूप गुणकूं धरैं हैं तथापि माता मरुदेवीकी जंघा समान सुंदर नाहीं, कैसे हैं कदली थंभ जिनमें सार नाहीं अर कठोर हैं अर हाथीकी सुंड समान लम्बी हैं ॥ १२ ॥

उरुसंधिर्नितंबश्च कुकंदरमनोहरे। गुरुर्जघनभारश्च यस्याः सादृश्यमध्यगा ॥ १ ॥

अर जाकी नाभिमंडल गंभीर महामनोहर अर दक्षिणावर्त गोल अर रोमराजी कहिए रोमनिकी पंक्ति तिनकरि महा मनोहर नाभिराजाकूं हर्षका कारण होती भई अर जाकी कटि रोमरहित गोल अर क्षीण ऐसी मनोहर सोहै मानों कुचके भारकरि डिग न जाय अर जाके स्तन दोऊ कठिन अर महामृदु तिनकी शोभा कहिबेमें न आवै वेई भए चकवा तिनके युगल करि उरःस्थल सरिताकी न्याईं शोभता भया ॥ १७ ॥ अर जाकी दोऊ भुजा सुंदर

नाशक श्रीऋषभदेवका चरित्र सुनि, ऋषभकी उत्पत्ति अर जन्माभिषेक अर राज्याभिषेक अर राजनीति अर बैराग्यउत्पत्ति केवलज्ञानकी प्राप्ति निर्वाणगमनपर्यंत ये सर्व कथा तोहि कहूं हूं सो एकाग्र चित्तकरि सुनहु ॥७७॥ यह लोक समस्त षट द्रव्यनिकरि पूर्ण है ये षट् द्रव्य अकृत्रिम हैं जिनका कोई उपजावनहारा नाहीं सो पदार्थनिकूं केवलज्ञानहीके उपदेशतैं ऋशीश्वर भलीभांति जानै जा कारणतैं कालादिक पदार्थनिके ज्ञानविषै जीवनिके अत्यंत अज्ञान है सो भगवान्रूप सूर्यका प्रकाश अज्ञानतिमिरकूं दूर करै है अर पदार्थनिका प्रतिभास करै है, कैसा है जिनसूर्यका प्रकाश सदा स्थिर है शोभायमान है उदय जाका कबहू अस्त नाहीं ॥ १७८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कालकुलकरोत्पत्तिवर्णनं नाम सप्तम सर्गः ॥

अथानंतर—यह चौदह कुलकर मनु कहाए, सो मनुका अर्थ कहिये मनुजार्थ कहिए पुरुषार्थ ताका मनन कहिये ज्ञान ताकरि इनकी मनुसंज्ञा भई, सत्पुरुषनिके योग्य जे परिमाण तिनकूं प्राप्त भए हैं मनु समान मनुष्यनिके परिणाम नाहीं ॥ १ ॥ जासमय दक्षिण भरतक्षेत्रके मध्य कल्पवृक्ष क्षीण भए तासमय नाभिराजाका मंदिर पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध होता भया ॥ २ ॥ सुवर्णमई हैं स्तंभ जाके नानाप्रकार रत्नमई हैं भीति जिनकी अर पुष्पनिकी माला मोतीनिकी माला मूगानिकी मालानिकरि शोभित है मंदिर ताका नाम सर्वतोभद्र सो मंदिर इक्यासीखणा कोट खाई वापी उपवनादिकरि मंडित ॥ ४ ॥ सो नाभिराजाके प्रभावतैं वह एक सर्वतोभद्र अनेक कल्पवृक्षनिकरि मंडित पृथ्वीविषैं शोभता भया। भावार्थ—सब पृथ्वीविषै कल्पवृक्ष जाते रहे अर नाभिराजाका मंदिर कल्पवृक्षनिकरि शोभता भया।

अथानंतर—राजा नाभिके राणी मरुदेवी अतिवल्लभा होती भई जैसी सौधर्मइंद्रके शची इंद्राणी वल्लभा वैसी नाभिके मरुदेवी होती भई। वह मरुदेवी बडे वंशकी शिखामणि बडे वंशविषैं उपजी है ॥ ६ ॥ किंचित् उन्नत

अभाव भया अर संतान भये पीछे माता पिता बहुत वर्ष जीवते भये, अर पुत्र जानते भये जो ये हमारे माता पिता हैं यह अमुकको पुत्र ऐसैं कहावत पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध भई, सो मरुदेव कुलकर आयुपूर्णकरि देवलोककूं गये ॥ ६१ ॥ ता पीछे फिर तेरहवां कुलकर प्रसेनजित अकेलाही जन्म्या यहांतैं युगलसृष्टिकी रीति निवृत्त भई, प्रसेनजितके कछुक पसेवका लेश शरीरविषैं होता भया, अर इनका पिता इनकूं विवाहकी विधिकरि बड़े कुलकी कन्या परिणावता भया, प्रसेनजितका आयु पल्यके दशलाखकोडिवें भाग सो आयुपूर्णकरि स्वर्गलोक गये। पीछे फिर चौदहवें कुलकर नाभिराजा भये जिनकी आयु कोडिपूर्व अर जिनके राज्यमें बालकनिके जन्मसमय नाभि नाल होते भये तिनके छेदनिकी विधिकरि नाभिराजा कहाये ॥ ७० ॥ यह चौदह कुलकर कहे तिनकी आयु तो कहते ही आये अर काय पहिले कुलकरकी १८०० धनुषकी अर दूजेकी १३०० धनुषकी तीजेकी ८०० धनुषकी अर चौथेकी ७७५ धनुषकी अर पांचवेंकी ७५० धनुष अर छठेकी ७२५ धनुष अर सातवेंकी ७०० धनुष अर आठवेंकी ६७५ धनुष, अर नौवेंकी ६५० धनुष अर दसवेंकी ६२५ धनुष, ग्यारहवेंकी ६०० धनुष अर बारहवेंकी ५७५ धनुष अर तेरहवेंकी ५५० धनुष अर चौदहवेंकी ५२५ धनुष ॥७२॥ ये चौदह कुलकर समचतुरसंस्थान अर वज्रबृषभनाराचसंहननके धारक अर गंभीर अर उदार है मूर्ति तिनकी अर पूर्वभवका है ज्ञान जिनकूं वे चौदह मनु कहिये कुलकर, मनुष्यनिमें वडे हैं अर कर्मभूमिकी रीतिके वक्ता हैं ॥ ७३ ॥ इनमें चक्षुष्मान यशस्वी प्रसेनजित ये तीन कुलकर तो प्रियंगुमणि सारिखे श्याम सुंदर हैं ॥ ७४ ॥ अर चन्द्राभ चंद्रमा समान गौरकांति विस्तीर्ण है प्रभा जाकी ये चार कुलकर तो श्याम अर गौर कहे अर बाकी दश ताये स्वर्ण समान प्रभाके धारक हैं ॥ ७५ ॥ ये चौदह ही कुलकर मर्यादाके रक्षक सर्व उपायके वेत्ता कामधिकार दंडके कर्त्ता नीतिके कर्त्ता प्रजाके पिता समान होते भये अधिक है बुद्धि जिनकी ॥ ७६ ॥ गोतम स्वामी कहै हैं–हे श्रेणिक ! या भांति सकल कुलकरनिकी उत्पत्ति तोहि कही, अब समस्त पापनिका

दस हजारवें भाग ताके समय सिंहव्याघ्रादिक अत्यंत क्रूर भये तब तिनके भय निवारण अर्थ कुलकरने लोकनिकूं कहि लट्ठ रखाये ॥ ५३ ॥ काल पाय क्षेमंधरहू देवलोककूं गया ता समय पीछे पांचवां कुलकर सीमंकर भया ताकी आयु पल्यके लाखवें भाग ताके समय प्रजा कल्पवृक्षनिके लोभी परस्पर विसंवाद करते भये तब कुलकर वृक्षनिकी सीमा कहिये मर्यादाकरि तिनका झगड़ा मेटता भया, सीमंकरहू स्वर्गकूं गया ताके पीछे बहुरि छठे कुलकर सीमंधर भये तिनकी आयु पल्यके दस लाखवें भाग ॥ ५५ ॥ सो आयु पूर्णकरि स्वर्गकूं गया तिनके पीछे सातवां कुलकर विपुलवाहन भया सो हाथिनिकी असवारीकरि क्रीडा करता भया ॥ ५६ ॥ ताकी आयु पल्यके दस कोड़िवें भाग सोहू आयु पूर्णकरि देव भया ताके पीछे आठवां कुलकर चक्षुष्मान भया ताकी आयु पल्यके दस कोड़िवें भाग ताके समय लोक पुत्रनिका मुख देखते भये अब तक यह रीति हुती कि जासमय पुत्रका जन्म ताही समय माता पिताका मरण सो अष्टम कुलकरके समय माता पिता पुत्रनिका मुख देखते भये तातैं याका नाम चक्षुष्मान लोगनिने कह्या । हे चिरंजीव! तिहारे राजमें हम संतानका मुख देख्या तातैं चक्षुष्मान ऐसैं लोक स्तुति करते भये ॥ ५८ ॥ सो कुलकर आयुपूर्णकरि देव भये ता पीछे नवमां कुलकर यशस्वी भया ताकी आयु पल्यके सौ करोड़वां भाग ताके समय प्रजापुत्रनिका नाम धरते भये अबतक नाम न हुता यशस्वीका विस्तीर्ण यश लोक करते भये ॥ ६० ॥ सो यशस्वी अपना यश पृथ्वीविषैं विस्तीर्णकरि स्वर्गलोक गये ता पीछे बहुरि दसवें कुलकर अभिचंद्र भया ताकी आयु पल्यके हजार कोडिवें भाग ताके समय प्रजा पुत्रकूं गोदमें उठाय चांदके सन्मुख रमावते भये अर भाजनमें जल डारि चंद्रमाका प्रतिबिंब दिखाय बालकनिकूं रमावते भये तातैं याका नाम अभिचंद्र कहाया सो अभिचंद्र चंद्रमा समान उज्वल यश जगतमें प्रगटकरि ऊर्द्धलोक गये ॥ ६३ ॥ ताके पीछे ग्यारहवें कुलकर चंद्राभ भये तिनका आयु पल्यके दसहजार कोडिवें भाग सो आयु पूर्णकरि देवलोककूं गये ताके पीछे बारहवें कुलकर मरुदेव भये तिनकी आयु पल्यके लाख कोडिवें भाग तिनके राज्यमें युगलके नियमका

सूर्यकी कांतिकरि चंद्रमा अस्त समान भासै है अर ग्रह तारा नक्षत्र ये दिवसकूं न भासेंगे रात ही भासेंगे ॥ ३७ ॥ अब तुम कही हम ये अपूर्व देखे सो पूर्व जन्मविषैं तुम विदेहक्षेत्रमें कईबार देखे हैं तातैं अपूर्व दर्शन नाहीं। देखि सुनि अनुभई वस्तुका जो दर्शन होय तो उत्पाद काहेका तातैं तुम निर्भय होवो काल स्वभावके भेदकरि वस्तूनिका स्वभाव नानारूप भासै है द्रव्य क्षेत्र अर प्रजाका आचरण अरका अर रूप होय जाय है ॥ ४० ॥ अब तक प्रजाके लोक निरपराध हुते तातैं दंड योग्य न हुते अब कछुइक दोषनिके सद्भावतैं दंड योग्य होंहिगे, सो महा धिक्कार, इन तीन दंडनिकरि कुलकरि प्रजाकूं मार्गमें चलावेंगे राजानिके भयकरि प्रजा दोषनितैं रहित होयगी प्रजाकूं अनर्थके बचानेके अर्थ अर अर्थकी सिद्धिके निमित्त शास्त्रविषैं दंडनीति कही है, दंड कहिये दुष्टनिका निग्रह अर नीति कहिये शिष्टनिका प्रतिपालन, कुलकर लोकनिकूं कहता भया मेरी आज्ञा सुन हृदयविषैं धारकरि तुम स्त्री पुरुष सुखतैं अपने स्थानकेविषैं तिष्ठो ये बचन प्रजापतिके प्रजा उरमें धारि अपने अपने स्थानकूं गये उपज्या है आनंद जिनकूं, ताके बचन कर्मभूमिके लोकनिने प्रथम ही सुने अर धारे जैसै गुरुके बचन शिष्य सुनके धारै इससे पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध इनका नाम प्रतिश्रुत भया ॥ ४७ ॥ यह प्रतिश्रुत पल्यके दसवें भाग अपनी आयु पूर्णकरि देवलोक गया ताके पीछे फिर दूजा कुलकर सन्मति भया सो पहिले कुलकरकीसी मर्यादा राखता हुवा लोकनिकूं भली मति देता भया अर दुःख निवारता भया तातैं याका नाम सन्मति कहा गया, समस्त कलानिका कुलग्रह होता भया ॥ ४९ ॥ पल्यके सौवें भाग याकी आयु होती भयी सो अपनी आयु पूर्णकरि देवलोककूं गया ॥ ५० ॥ याके पीछे फिर तीजा कुलकर क्षेमंकर भया तासमय सिंह व्याघ्र आदि क्रूरतारूप भये तिनका भय क्षेमंकर मेटता भया जो तुम इनका विश्वास मत करो अब ये कर्मभूमिके योगतैं विकारकूं प्राप्त भये हैं ॥ ५१ ॥ लोकनिकूं क्षेम कहिये कुशलका कर्ता तातैं क्षेमंकर नाम पाया ॥ ५२ ॥ सो पल्यके हजारवें भाग अपनी आयु पूर्णकरि स्वर्गलोककूं गया ताके पीछे फिर चौथा कुलकर क्षेमंधर भया सो क्षेमंधरका आयु पल्यके

जो दो महानदी तिनके मध्य यह दक्षिण भरत ताविषैं अनुक्रमकरि चौदह कुलकर उपजे ॥ २४ ॥ तिनमें आदि प्रतिश्रुत कुलकर उपज्या महाप्रभाकरि संयुक्त जाके पूर्वभवका स्मरण है ॥ २५ ॥ ताके समय प्रजा पूर्णमासीके दिन चांद सूर्यकूं विलोकिती भई, सूर्य तो अस्त होता देख्या अर चंद्र उदय होता, देख्या मानो ये रवि शशिके मंडल आकाशरूप घंटा समान सोहै हैं ॥ २६ ॥ अबतक तो भोगभूमिमें दोऊ दृष्टि न पडे सो इनकूं अकस्मात् देखकरि प्रजाके लोक भयमान भेले होय कुलकरनिके शरण गये अर पूछते भए ॥ २७ ॥ हे नराधिपति ! दोऊ गगनके अंतविषैं देखिवेमें आवै हैं अबतक कभी देखे नाहीं आजही देखनेमें आए अर एक ओर तो एक उगताही दीखै है अर एकओर अस्त होताही दीखै है अर दोऊ मण्डलाकार कहिये गोल हैं सो उनकूं देखकरि हमारे भय उपज्या है ये कहा है, अहो स्वामी ! हमकूं अकस्मात् भय उपज्या है। कहा सब प्रजाकूं प्रलयकालही आया है, कैसा है प्रलयकाल दुस्तर कहिये दुर्निवार है ॥ २९ ॥ या भांति लोकनि पूछी तब कुलकर कहते भये, हे लोक हो ! तुम भय न करहु तुमकूं यह बाधाकारी नाहीं तुम शोक तजि निश्चिन्त होहु ॥ ३० ॥ ये दोऊ प्रभावके मंडल मंडित हैं यह तो पश्चिमकी ओर अस्त होता आदित्य दीखै है यह पूर्वकी ओर उदय होता चंद्र दीखै है ॥ ३१ ॥ ये दोऊ सूर्य चंद्र ज्योतिषी देवनिके अधिपति हैं सदा मेरुकी प्रदक्षिणा करै हैं सदा भ्रमते रहे हैं. देवनिके चार भेद हैं तिनमें ज्योतिषी देवनिके समूह आकाशविषैं सदा भ्रमण करै हैं तिनके यह स्वामी हैं ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षनिकी प्रभाकरि यहां न दीखते हुते अर महाविदेहनिमें तो सदाही दृष्टिगोचर हैं, अब यहां ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षनिकी प्रभाके मंद होयवेकरि ये दृष्टिगोचर भए हैं जैसे कोई सबल शत्रुकी प्रभा घटती देख वाहि जीतवेकी इच्छाकरि प्रगट होय है तैसे ये कल्पवृक्षनिकी प्रभा मंद भई जानि मानूं उनकूं जीतिवेकूं प्रगट भए हैं अब या भरतक्षेत्रविषैं सूर्यके उदय अस्तथकी रात दिवसका विभाग होयगा अर चंद्रमाकी कलाके घटने बढ़नेसे कृष्ण अर शुक्लपक्ष प्रगट होवेंगे। दिनमें

१३७

मंदिर वन जांय, कैसे हैं मंदिर अनेक हैं स्वर्ण जिनके अर उपवन सहित नाना प्रकारकी शोभाकूं धरैं अति सुखकारी हैं भूमि जिनकी ॥८२॥ दीपांगजातिके कल्पवृक्ष ते अपनी विस्तीर्ण दीर्घ शाखाकरि कमल समान मनोहर कोंपलनिकूं धरैं हैं वे कोंपल दीपक समान अरुण अर उद्योतकारी हैं ॥८३॥ अर तूर्यांग जातिके जे कल्पवृक्ष ते चार प्रकारके अनेक जातिके वादित्रनिकूं उपजावें हैं। वादित्रनिके नाम—तत १ वितत २ घन ३ शुषिर ४। तत कहिए तारका बाजा वीणा तमूरा रवाब आदि अर वितत कहिए चर्मका मढा मृदंग ढोल नगारा डफ इत्यादि अर घन कहिए झालर झांझ मजीरा इत्यादि कांसीका बाजा अर शुषिर कहिए शंख बांसुरी करनाल तुरई इत्यादिकनिका बाजा इन वादित्रनिकूं निपजावै है सो तूर्यांग जातिका कल्पवृक्ष कहिए ॥८४॥ अर भोजनांग जातिका कल्पवृक्ष अतिमिष्ट षट्रसमय चार प्रकारके भोजन उपजावै है। भोजनोंके नाम—अशन कहिए दाल भात रोटी तरकारी आदि १ अर पान कहिए जल दुग्ध तक्र शरवत इत्यादि २, अर खाद्य काहए मेवा मिष्टान्न ३, अर स्वाद्य कहिए लवंग इलायची दालचीनी आदि ॥८५॥ अर भाजन जातिके कल्पवृक्ष थाल कटोरा रकेवी इत्यादि बासन नाना प्रकारके मणि सुवर्णमई देवैं हैं ॥ ८६ ॥ अर वस्त्रांग जातिके कल्पवृक्ष महासुंदर वस्त्र देवैं नाना प्रकारके वस्त्र रेशमी पशमीना सूतके तथा चीनके इत्यादि नाना प्रकारके वस्त्र इनकी शाखानिविषै लूमते रहें जो चाहो सो लेहु ॥८७॥ अर मालांग जातिके कल्पवृक्ष नाना प्रकारके पुष्पनिकी माला धरै सोहै हैं मालती मालिका इत्यादि प्रशंसा योग्य जे पुष्प तिनकरि गूंथी जो माला भोगभूमियां इनकूं देहैं ॥ ८८ ॥ अर भूषणांग जातिके कल्पवृक्ष हार कुण्डल केयूर कटिमेखला इत्यादि आभूषणनिकरि शोभित महान भासै हैं स्त्री अर पुरुषनिकूं उचित जो आभूषण देवे हैं ॥ ८९ ॥ अर मद्यांग जातिके कल्पवृक्ष स्त्री अर पुरुषनिकूं महा मनोहर कामोत्पात वस्तु देहैं जा करि मनकी प्रसन्नता होय अर मदनकी वृद्धि होय ॥ ९० ॥ ये कल्पवृक्ष दस प्रकार तिनकरि उपजे भोगभूमियां भोगवै हैं वे भोग चक्रवर्तिके दशांगनितैं अति अधिक हैं ॥ ९१ ॥ जहां गर्भविषै स्त्री पुरुष युगलही रहे हैं

गौ अर वृषभ, कहींइक महिष अर महिषी इत्यादि तिर्यंचनिके युगल मदनके मदकरि उन्मत्त भये परस्पर सुखतैं रमैं हैं जितनी मनुष्यकी आयु तेतीही तिर्यंचकी आयु अर कोई जीव मांसाहारी दुराचारी नाहीं जहां परस्पर बैरभाव नाहीं अपनी इच्छाकरि नानाप्रकारके भोग भोगवैं हैं जहां नारी नरकूं 'आर्य' ऐसा नाम कहै हैं अर नारीकूं नर 'आर्ये' कहै हैं भोगभूमिमें यही नाम है अर नाम नाहीं अर जहां सबही उत्तम एक जाति अर चार वर्णका भेद नाहीं अर षट्कर्म नाहीं जहां कोई स्वामी अर सेवक नाहीं अर जहां भेषधारी नाहीं अर कोई राजा नाहीं सब समान हैं अर कोई जहां शत्रु मित्र नाहीं सबही मध्यस्थ हैं अर सहजही सब मंदकषायके योगतैं आयुके क्षयविषैं देवही होवैं और गति उनकूं नाहीं अर मरणसमय दुःख नाहीं सुखतैं प्राण छूटैं पुरुषनिकूं तो मरणसमय छींक आवै अर स्त्रीनिकूं जंभाई आवै अर स्त्री पुरुषनिका मरण एकही काल होय लारै जन्म अर लारै ही मरण अर जन्मतक परस्पर प्रेम होय ॥ १०० ॥

अथानंतर—गौतम गणधर राजा श्रेणिकका अभिप्राय जानकरि भोगभूमिमें उपजनेके कारण कहते भये, वे कर्मभूमिके मनुष्य स्वभावहीकरि मंदकषाय हैं अर उत्तम पात्रनिकूं दान करै हैं ते पात्रदानके प्रभावकरि भोगभूमिमें जावें सो पात्रके भेद तीन उत्कृष्टपात्र मुनि सो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र, सम्यक् तप, तिनकी शुद्धताकरि महा पवित्र हैं अर शत्रु मित्रविषैं समान है बुद्धि जिनकी अर मध्यमपात्र पंचम गुणस्थानवर्ती आर्या अर श्रावक श्राविका, अर जघन्यपात्र चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अव्रतसम्यग्दृष्टी ये त्रिविध तिनकूं विनयसंयुक्त विधिपूर्वक दान देयकरि कर्मभूमिका मनुष्य भोगभूमिके दिव्य सुख भोगे हैं तीनप्रकारके ही पात्र तीनप्रकारकी ही भोगभूमि ॥ १० ॥ जैसे भले क्षेत्रविषैं विधिपूर्वक बोया बीज अल्पहू वृद्धिकूं प्राप्त होवै तैसैं पात्रनिविषैं विधिपूर्वक दिया आहारादि दान विशेष फलकूं फलै जैसे शालि अर सांठेके खेतविषैं प्राप्त भया जल मिष्टताके भावकूं भजै है अर गायने पीया जो नीर सो दूध होय परिणमै है तैसे अल्प है रसास्वाद जिसका ऐसा अन्न पान औष-

अर गर्भतैं युगलही जन्मै हैं सो जन्मके दिनतैं सात दिन तक अपने अंगुष्ठ चूसै हैं इनकी माता तो इनके जन्म होते ही मरण पावै अर सात दिन पीछे तक धरतीमें लोटते चले अर पीछे सातवें दिन वैठनेकी शक्ति होय अर दिन सातवें पांवनितैं चलवेकी शक्ति होय वहुरि दिन सातवें सर्वकलाविषै निपुण होंय अर सकल गुणमें प्रवीण होंय अर दिन सातवें यौवन प्राप्त होय अर पीछे सात दिनमें सम्यक्त्व ग्रहणकी योग्यता होय अर जो काहूकूं सम्यक्त उपजै तो योवन पीछे सात दिन उपजै, जहां सवही मनुष्य रोग रहित आनंदतैं रमै हैं सवही कलाधरी महा गुणवंत चतुर स्त्री अर पुरुष सवही लक्षणनिकरि संपूर्ण कोईही नारी परपुरुष गामिनी नाहीं अर कोई ही नर परनारी रत नाहीं, शील स्वभावी भद्र परणामी महा सरल सौम्यमूर्ति अर मल मूत्रादि रहित हैं अंग जिनका अर निर्मल कपट रहित है वुद्धि जिनकी अर तीव्र है इन्द्रियनिका ज्ञान जिनके जहां नर देवनि समान नारी देवांगना तुल्य सुन्दर वर्ण, सुन्दर गंध, सुन्दर रस, सुन्दर स्पर्श, सुन्दर शव्द, सुन्दर भेष सवही वातनिकी मनोज्ञता भोग भूमिमें है, जहां स्त्री पुरुष परस्पर अति अनुरागी पुरुषनिके कान स्त्रीनिके गीतनिके शव्दविषै अर स्त्रीनिके कान पुरुषनिके शव्द श्रवणविषै अर पुरुषनिके नेत्र स्त्रीनिके रूप निरखवेविषैं अर पुरुषनिके रूप विलोकनिविषैं स्त्रीनिके नेत्र अर नरनिकी नासिका नारीनिकी सुगंधताविषै अर नारीनिकी नासिका नरनिकी सुगंधताविषै अर नरनिकी जिह्वा नारीनिके मुखरसास्वादनविषैं अर नारीनिकी जिह्वा नरनिके मुखरसास्वादविषैं नरोंके स्तन नारीनिके स्तनस्पर्शविषै अर नारीनिका स्तन नरनिके स्तन स्पर्शविषैं या भांति परस्पर नर नारीनिका चित्त अति आसक्त है जहां देवनि कैसे भोग हैं तथापि भोगनिकी अति आसक्तता करि जिनका मन तृप्त न होय जिनका मन सदा इंद्रीनिके विषयविषै अनुरागी है ॥ ९८ ॥ ते विषय अभिलाषी हैं तिनके रंचक मात्र हू तृप्ति नाहीं, जैसे मनुष्यनिके युगल प्रेमके भरे परस्पर रमै हैं तैसेही तिर्यंचनिके युगल परस्पर सुखसूं रमै हैं, कहींइक सिंह सिंहनी कहींइक हाथी अर हथनी कहींइक वराह अर वराहिनी कहींइक अश्व अर अश्विनी कहींइक

मंदिर बन जांय, कैसे हैं मंदिर अनेक हैं स्वर्ण जिनके अर उपवन सहित नाना प्रकारकी शोभाकूं धरैं अति सुखकारी हैं भूमि जिनकी ॥८२॥ दीपांगजातिके कल्पवृक्ष ते अपनी विस्तीर्ण दीर्घ शाखाकरि कमल समान मनोहर कोंपलनिकूं धरैं हैं वे कोंपल दीपक समान अरुण अर उद्योतकारी हैं ॥८३॥ अर तूर्यांग जातिके जे कल्पवृक्ष ते चार प्रकारके अनेक जातिके वादित्रनिकूं उपजावें हैं। वादित्रनिके नाम–तत १ वितत २ घन ३ शुषिर ४। तत कहिए तारका बाजा वीणा तमूरा रबाब आदि अर वितत कहिए चर्मका मढा मृदंग ढोल नगारा डफ इत्यादि अर घन कहिए झालर झांझ मजीरा इत्यादि कांसीका बाजा अर शुषिर कहिए शंख बांसुरी करनाल तुरई इत्यादिकनिका बाजा इन बादित्रनिकूं निपजावै है सो तूर्यांग जातिका कल्पवृक्ष कहिए ॥८४॥ अर भोजनांग जातिका कल्पवृक्ष अतिमिष्ट षट्रसमय चार प्रकारके भोजन उपजावै है। भोजनोंके नाम–अशन कहिए दाल भात रोटी तरकारी आदि १ अर पान कहिए जल दुग्ध तक्र शरवत इत्यादि २, अर स्वाद्य काहए मेवा मिष्टान्न ३, अर स्वाद्य कहिए लवंग इलायची दालचीनी आदि ॥८५॥ अर भाजन जातिके कल्पवृक्ष थाल कटोरा रकेवी इत्यादि बासन नाना प्रकारके मणि सुवर्णमई देवैं हैं ॥ ८६ ॥ अर वस्त्रांग जातिके कल्पवृक्ष महासुंदर वस्त्र देवैं नाना प्रकारके वस्त्र रेशमी पशमीना सूतके तथा चीनके इत्यादि नाना प्रकारके वस्त्र इनकी शाखानिविषै लूमते रहैं जो चाहो सो लेहु ॥८७॥ अर मालांग जातिके कल्पवृक्ष नाना प्रकारके पुष्पनिकी माला धरै सोहै हैं मालती मालिका इत्यादि प्रशंसा योग्य जे पुष्प तिनकरि गूंथी जो माला भोगभूमियां इनकूं देहैं ॥ ८८ ॥ अर भूषणांग जातिके कल्पवृक्ष हार कुण्डल केयूर कटिमेखला इत्यादि आभूषणनिकरि शोभित महान भासै हैं स्त्री अर पुरुषनिकूं उचित जो आभूषण देवे हैं ॥८९॥ अर मद्यांग जातिके कल्पवृक्ष स्त्री अर पुरुषनिकूं महा मनोहर कामोत्पात वस्तु दे हैं जा करि मनकी प्रसन्नता होय अर मदनकी वृद्धि होय ॥ ९० ॥ ये कल्पवृक्ष दस प्रकार तिनकरि उपजे भोगभूमियां भोगवै हैं वे भोग चक्रवर्तिके दशांगनितैं अति अधिक हैं ॥ ९१ ॥ जहां गर्भविषै स्त्री पुरुष युगलही रहे हैं

हैं चारों दिशाविषै ता समान मंदिर हैं अर ताके आगे चारों तरफ दूसरे मंडलमें वैसे ही रत्नमई महल हैं ताके आगें तीसरे मंडलमें पूर्व प्रमाण मंदिर हैं अर चौथे मंडलमें चारों दिशाविषै तीसरे मंडल प्रमाण मंदिर हैं ॥ ७ ॥ अर पांचवें मंडलमें चौथे मंडलके प्रमाणतैं अर्द्ध प्रमाण मंदिर हैं। अर छठे मंडलविषै पांचवें मंडल प्रमाण हैं अर उपजनेके मंदिरकी वेदिका तुल्य दोय मंडलविषै वेदी है अर तीसरे चौथे मंडलकी वेदी उनतैं आधी है अर पांचवे छठे मंडलविषै उनतैं आधी है अर विजयदेवके मंदिरविषै उज्ज्वल चमरछत्र सहित तीन सिंहासन हैं अर मंदिरका पूर्वकी ओर मुख है ॥१०॥ अर उत्तरदिशामें छहहजार सामान्यक देव हैं अर विदिशानिमें छह पटरानीनिके आसन हैं ॥ ११ ॥ अर पूर्वदिशामें अर दक्षिण दिशामें आठ हजार माहिली सभाके देव बसै हैं अर मध्यकी दक्षिण दिशाकी सभाके दस हजार देव बसै हैं अर बारली सभाके बारह हजार देव तिनके निवास पश्चिम अर दक्षिणमें हैं अर पश्चिम दिशातैं सातों सेनाके महत्तर बसै हैं। अर चारों दिशामें अठारह हजार अंगरक्षक जातिके देव बसै हैं अर तिनके अठारह हजार आसन हैं अर अठारह हजार देवी विजयदेवके छह पटराणी सिवाय हैं अर विजयदेवका एक पल्य कछुयक अधिक आयु है ॥ १७ ॥ अर विजयदेवके मंदिरतैं उत्तर दिशाविषैं सुधर्मानामा सभा है सो छह योजन लंबी अर तीन योजन चौडी अर नव योजन ऊंची अर ताकी एक योजनकी औंडी नीव है। बहुरि उत्तर दिशाविषै सुधर्मा सभा समान जिनमंदिर है अर पश्चिम उत्तरविषै उत्पाद सभा है ॥ १९ ॥ अर अभिषेक सभा है अर अलंकार सभा है अर व्यवसाय सभा है यह सब सभा सुधर्मा सभाके समान जानहु ॥२०॥ अर विजयदेवके मन्दिरविषै पांच हजार चार सौ साठ मन्दिर हैं अर विजयके पुरतैं चारों दिशाविषै पच्चीस योजन गए चार वन हैं ॥४२२॥ तिनमें पहला अशोकवन दूजा सप्तपर्ण तीजा चंपक चौथा आम्रवन ॥२३॥ सो ये वन बारह बारह हजार योजन लंबे अर पांच पांच सौ योजन चौडे हैं ॥ २४ ॥ तिनके मध्य मूलवृक्ष अशोक सप्तपर्ण अर चंपक अर आम्र यह चार प्रधान तरु हैं तिनके नायक यह चार वन हैं अर जंबूवृक्षके पीठतैं आधा इनका पीठ है

आसन देवनिके विराजवेके सोहै हैं तिन आसनिके नाम—हंसासन क्रौंचासन मुण्डासन मकरासन सिंहासन गरुडासन दीर्घासन इत्यादि देवनिके मनहरणहारे रत्नमई रमणीक सिंहासन सोहै हैं ॥ ९०॥ अर जंबूद्वीपकी जगतीके चारों दिशा चार दरवाजे हैं तिनके नाम विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित ये चार ॥३९१॥ सो एक एक दरवाजा आठ आठ योजन ऊंचा है अर चार योजन चौड़ा नाना प्रकारके रत्ननि करि देदीप्यमान सोहै है जिनके देदाप्यमान वज्रमई युगल कपाट हैं ॥ ९२ ॥ तिन विजयादि दरवाजनिकी माहिली फिडच प्रत्येक प्रत्येक ऐती ऐती जानहु ७०७१० योजन अर तीन कोस १४२४ धनुषकी तीन हाथ इकतीस अंगुल है अर इस फिडचका धुनुपृष्ठ ७९०५६ योजन ३ कोष १५३२ धनुष अर सात अंगुल ॥९६॥ अर चारों दरवाजनिमें परस्पर अंतर जितना धनुपृष्ठका कहा ताही प्रमाण चार योजन घाटि जानहु, यह दरवाजनिका अंतर अंतर्यामीने कह्या ॥ ९७ ॥ अर या विजय नाम द्वारका द्वारपाल विजय नामा देव ताका नगर या जंबूद्वीपतैं संख्यात द्वीप समुद्रनिके परे दूजा जम्बूद्वीप है ताका पूर्वदिशाविषै सोहै है सो वह पुरुवेदिका कहिए, कोटकी भीति ताकरि मंडित बारहहजार योजनके विस्तार सोहै है नगर महा मनोहर अति अद्भुत सर्व उर सुन्दर चार तोरणनिकरि संयुक्त है ता नगरके कोटकी भीति आठ योजनका तीजा भाग अग्र विषै चौडी है अर तातैं चौगुणी मूलविषै चौडी है अर ऊंची साढे सैंतीस योजन है। अर ताकी नींव आध योजन उंडी है अर ता नगरके एक एक दिशाप्रति पचीस पचीस दरवाजे हैं सो दरवाजे सवाइकतीस योजन चौडे हैं अर साढे बासठ योजन ऊंचे हैं अर दरवाजेके ऊपर सतरह खणा महल है सो महल सुवर्णमय है, सर्व रत्नमय है अर दरवाजेनिके मध्य देवनिके उपजनेका स्थानक है सो स्थानक १२०० योजनका चौडा है अर एककोसका मोटा है ताके चौगिरद भीति दो कोसकी ऊंची अर पांचसौ धनुष चौडी है चार तोरणादिकर संयुक्त है ॥ ४०३ ॥ अर दरवाजे प्रमाण नगरके मध्य हैं ताका द्वार आठ योजन ऊंचा अर चार योजन चौडा है ताका स्वामी विजयनामा देव है सो दरवाजा वज्रमणिमई है अर ताके मणि स्वर्णके कपाट

मन्दिर, शैलराज, वसंतप्रिय, दर्शन ॥ ७५ ॥ रत्नोच्चय, दशांग आदि लोकनाभि, मनोरम लोकमध्य दिशांग अति दिशमुत्तर, सूर्याचरण, सूर्यावर्त्त, स्वयंप्रभ या भांति विवेकी वर्णवें हैं ॥ ७६ ॥ या सुमेरुकरि शोभित जो जंबूद्वीप ताकी चौगिरद जगती कहिये कोटकी भीति सोहै है सो जगती आठ योजन ऊंची अर मूलविषै बारह योजन चौड़ी अर मध्यविषै आठ योजन चौड़ी उर्द्धविषै चार योजन चौड़ी है अर आठ योजनकी है ऊण्डी नींव जाकी ॥ ७९ ॥ सो जम्बूद्वीपकी जगती मूलविषै तो सर्वरत्न मई है अर मध्यविषै वैडूर्यमणि मई है अर मूलविषै वज्र मणिमई है सो सब दिशाविषै उद्योत करती सोहे है अर ता जगतीके आगे दूजी कोटकी भीति जाहि वेदिका कहिए सो वह वेदिका जगतीको वेढे सोहै है सो दो कोस ऊंची अर ५०० धनुष आद्योपान्त चौडी सोहे है ॥ ८१ ॥ सो जगती बाहर अर वेदिकाके अभ्यन्तर देवारण्यनामा वन है सो सुंदर सुवर्णकी शिला अर वापिका अर जो महल उन कर अति सोहे है जा विषै न्यून वापिका तो १०० योजन चौड़ी है अर दश धनुष ऊडी है अर मध्य वापिका १५० धनुष चौड़ी है अर १५ धनुष ऊंडी है अर उत्कृष्ट वापिका २०० धनुष चौडी अर २० धनुष ऊंडी है अर ता वनविषै छोटे मंदिर पचास धनुष चौडे अर सौ धनुष लम्बे अर ७५ धनुष ऊंचे हैं ॥८४॥ अर तिन छोटे मन्दिरनिके दरवाजे छह धनुष चौडे अर बारह धनुष ऊंचे हैं अर जिनकी नींव चार धनुष ऊंडी है ॥ ८५ ॥ यह लघु मन्दिर कहे तिनतैं द्विगुण वा त्रिगुण मध्य मंदिरनिकी लंबाई चौडाई ऊंचाई जानहु अर मध्य मंदिरनितैं उत्कृष्ट मंदिरनिकी द्विगुणी ही जानहु अर दरवाजेनिका विस्तार हू याही रीति है अर दरवाजेनिकी नींवकी ऊंडाई दूनी ही जानहु। इन गृहोंमें मालवोंकी पंक्ति अर कदली आदि बृक्ष अर प्रक्षागृह १ भोजनगृह २ सभागृह ३ वीणागृह ४ गर्भगृह ५ लतागृह ६ चित्रगृह ७ आभारणगृह ८ यह महारमणीय गृह हैं ॥ ८७ ॥ अर मोहनस्थान नामा महारमणीक रत्नमई गृह सोहै हैं, इन मन्दिरनिमें किन्नर किंपुरुष आदि व्यंतर देव क्रीड़ा करै हैं अर मन्दिरनिमें स्फटिकमणिमई अर मूंगा मणिमई अर नानाप्रकार मणिमई अनेक प्रकारके मनोहर

इत्यादि चित्रनिकर मंडित हैं ॥ ६२ ॥ अर तिनके चैत्यालयनिमें रत्नमई पांचसौ धनुष ऊंची एकसौ आठ प्रतिमा हैं ॥ ६३ ॥ अर नागकुमार देवनिके युगल अर यक्षनिके युगल तिनकी मूर्ति है तिनके हाथनिमें चमर हैं अर सनत्कुमार माहेंद्रकी मूर्ति है तिनके हाथानिमें चमर हैं ॥ ६४ ॥ अर झारी कलश दर्पन ध्वजा शंख ताडवीजना आरती धूपदान यह अष्टमंगल द्रव्य प्रत्येक प्रत्येक एकसौआठ २ प्रतिमा संबंधी है अर झालरि झांझ मजीरा नगारा ढोल आदि वादित्र एक एक प्रतिमा संबंधी एकसौ आठ एकसौ आठ हैं अर अकृत्रिम चैत्यालयनिके झरोखा गृह जाली शोभायमान हैं अर मूंगा मोतीनिकी झालरी नानाप्रकारके रत्न अर स्वर्णके कलश अर क्षुद्र घंटिका अदभुत सोहै हैं अर चैत्यालयनिके रत्न स्वर्णमई कोट सोहै हैं सो चार योजन ऊंचा अर मूलविषैं छै योजन चौडा अर मध्यविषैं चार योजन चौडा अर ऊर्ध्वविषैं दो योजन चौडा अर जाकी दो कोसकी नींव है अर आठ योजन ऊंचे अर चार योजन चौंडे चार दिशानिमें चार तोरण हैं अर चैत्यालयनिके कोटका द्वार पचास योजन ऊंचा है। अर उन अकृत्रिम चैत्यालयनिमें दसप्रकारकी ध्वजा हैं ॥६६॥ उनमें सिंह, हंस, गज, कमल वस्त्र वृषभ मयूर गरुड चक्र अर माला इनके चिन्ह हैं एक एक जातिकी ध्वजा एकसौ आठ २ ध्वजा सो दस जातिकी १०८० ध्वजा एक एक दिशामें है। जहां भगवानकी अकृत्रिम प्रतिमा विराजैं हैं सो गंधकुटी है अर गंधकुटीके आगैं सभामंडप है अर तिनके आगे नृत्यमंडप है अर ताके आगैं रत्ननिके स्तूप हैं अर रत्न स्तूपनिके आगैं चैत्यवृक्ष हैं अर चैत्यवृक्षनिके नीचे एक एक जिनप्रतिमा है यह सुमेरुके चैत्यालयनिका वर्णन किया सो जिनगृहतैं पूर्वदिशाविषैं नन्दी नाम द्रह है जिसका जल अति निर्मल है जामें मच्छ कच्छादिक जलचर नाहीं ॥ ७३ ॥ अर यह सुमेरु नाना प्रकारके आश्चर्य करि भरया है मूलविषैं तो वज्र मणिमई है अर चूलिकाविषै वैडूर्यमणि मई है। अर मध्यविषै स्वर्णमणिमई हैं अर देवनिका निवास है या मेरुकी शोभा कहिवेमें न आवै ॥ ७४ ॥ या मेरुको एते नामनिकरि ग्रन्थनिमें ज्ञानवान् वर्णन करै हैं, मेरु, महामेरु, सुमेरु, सुदर्शन,

सूची मेरु अन्तरालविषै ६७४८४२ योजनकी है अर या सूचीकी प्रदक्षिणा २१३४०३० योजनकी है अर क्षेत्रका विस्तार ९६०३ योजन अर एक योजनके आठ भाग करिए तिनमें भाग तीन लेने अर बिदेहक्षेत्र अर वक्षारगिरि विभंगा नदी अर देवरण्या वन इनकी लम्बाई आदि मध्य अंतके भेदतैं तीन प्रकार है ॥ ४६ ॥ अर कक्षा नामा विदेहकी आदि लम्बाई ५९५०७० योजन अर १२९ योजनके २१२ भाग करिए तिनिमें २०० भाग लेने ॥ ४७ ॥ विजय कहिए क्षेत्र ताका आदिकी लम्बाई मध्यतैं मिलाइए तब मध्यकी अधिक होय, अर मध्यकी लम्बाई अन्तमें मिलाइए तब अन्तकी अधिक होय। पर्वतकी नदीनिकी अन्तकी लम्बाई तो देशकी आदि लम्बाई है देशकी लम्बाईकी वृद्धि ४५८४ योजनकी है अर वक्षारगिरिकी लंबाईकी वृद्धि ४७७ योजन अर ६० कलाकी है कलाका कथन ऊपर लिखा ही है अर विभंगा नदीनिकी वृद्धि ११९ योजन अर वावन कला जानहु, यह सब चरचा सर्वज्ञ वीतराग देवने कही है। अर देवरण्यकी लंबाई वृद्धि २७८९ योजन अर ९२ कला ॥ ५३ ॥ अर पद्म नाम देशकी लंवाई २९४६२३ योजन अर १९६ कला ॥ ५४ ॥ अर जो पहले भागमें वृद्धि हीनता सो मध्य, जो मध्य वृद्धि सो अंत मध्य सो ऐसे वक्षारगिरि अर विदेहक्षेत्र अर विभंगा नदी इनकी लंबाई या भांति कही ॥५५॥ यह विदेहक्षेत्र अर वक्षारगिरि अर विभंगा नदी अर सीता शीतोदा दोऊ नदीनिके तटविषैं परस्पर सन्मुख हैं अर समान है लंबाई जिनकी ॥५६॥ अर पूर्व मेरुतैं पूर्व विदेह अर पश्चिम मेरुतैं पश्चिम विदेह हैं ये सब समान हैं ॥५७॥ जो या जंबूद्वीप समान १४४ खण्ड होय हैं तेता धातकीखंडका फैलाव है॥५९८॥ सो ११३८४१ कोडि अर ९९५७६६१ योजनका फैलाव है ॥६०॥ या धातकीखंडकूं कालोदधि समुद्र बेढै है सो कालोदधि आठ लाख योजन चौडा है सो धातकी खंडतैं दूना चौडा है सो कालोदधिकी प्रदक्षिणा इक्यानवैं लाख सत्तरहजार छहसौ पांच योजन अधिक है ॥६२॥ अर जंबूद्वीप सारिखे छहसौ बहत्तर खंड भेले करिए एते भेले करिए तो उतना विस्तार कालोदधिका है ॥ ६३ ॥ कालोदधिका समस्त फैलाव ५३१२६२ कोडि

२९५६७ योजनकी है अर नन्दनबनतैं परे सुमेरुकी चौडाई ८३५० योजनकी अर नन्दन बनकी माहिली प्रदक्षिणा २६४०५ योजनकी है अर सौमनस बनविषै सुमेरुकी बाह्य चौडाई ३८०० योजनकी है अर माहिली चौडाई २८०० योजनकी है अर सौमनस बनविषै सुमेरुकी बाहरली प्रदक्षिणा १२०१६ योजनकी है अर माहिली ८८५४ योजनकी है ॥ २५॥ अर पांडुक बनविषै सुमेरुकी प्रदक्षिणा ३१६२ योजन अर एक कोस कछुयक अधिक है ॥ २६ ॥ अर भूमितैं दस हजार योजन तो सुमेरुकी चौडाई है अर ऊपर १०००० योजन परे दशमे भाग चौडाई घटी तब शिरोभागविषै हजार योजनकी चौडाई है॥ २८॥ अर पांचों मेरुके चैत्यालय अर चूलिका अर वापिका सरोवरी तथा पांडुकशिला आदि अर कूट अर मंदिर तिनकी चौडाई अर ऊंचाई अर ऊंडाई समान है अर धातकीखण्डके मेरुके भद्रशाल बनका विस्तार १२२५ योजनका है ॥ ३० ॥ अर भद्रशालकी दीर्घता धातकीखण्ड द्वीपविषै १०७८७९ योजन है अर गन्धमाधन पर्वतकी लम्बाई ३५६२२७ योजन है अर इतनी ही विद्युतकी है ॥ ३२ ॥ ५६९२५९ योजनकी लम्बाई माल्यवान अर सौमनसकी है इन दोऊ गजदन्तनिकी समान जानहु ॥ ३३ ॥ अर देवकुरुकी चौडाई कुलाचलनिके समीप २२३१५८ योजनकी है ॥ ३४ ॥ अर सुमेरुतैं लेकर कुलाचलनि लग देवकुरुकी वक्र लम्बाई ३९७८९७ योजन अर बानवै कला है एक सौ गुणतीस योजनके दो सौ बारह भाग करिए तिनमें बानवें भाग लेने धातकी खंड द्वीपविषैं दो मेरु हैं सो पूर्वार्द्ध अर पश्चिमार्द्धविषैं यह वर्णन जानना । अर देवकुरुकी सूची लंबाई ३६६६८० योजनकी है ॥ ५३७ ॥ अर एक एक मेरु सम्बंधी बत्तीस बत्तीस विदेह तिनमें १६ पूर्व विदेह पश्चिमविदेह हैं ॥ ३८ ॥ तिनमें पूर्व मंदिर मेरु संबंधी कक्षा नामा पूर्व विदेह है, पश्चिम मेरु सम्बन्धी गन्धमालिनी नामा पश्चिम विदेह है ॥ ३९ ॥ इन दोऊका विस्तार समान है सो इनकी सूची कहिये सूधी डोरी, ग्यारह लाख पच्चीस हजार एक सौ अठावन योजनकी जानहु अर इनकी प्रदक्षिणा ३५५८०६२ योजनकी है अर पद्मनामा विदेह अर मंगलावती पश्चिम विदेह इनकी

उनतीस योजनके दोसौ बारह भाग करिए तिनमें १९ भाग अधिक एती चौडाई कुलाचलके समीप है अर मध्य विस्तार १२५८१ योजन अर ३६ कला जानहु अर अंतकी चौडाई १८५४७ योजन अर एकसौ उनतालीसोंके दो सौ चार भाग करिए तिनमें १५५ भाग लेने अर भरततैं चौगुणा हैमवत् पर्वत अर हैमवततैं चौगुणा विस्तारसहित हरि अर हरितैं चौगुणा विस्तार विदेह अर हरि प्रमाण रम्यक्र अर हैमवत् प्रमाण हैरण्यवत अर भरत प्रमाण ऐरावत्का विस्तार जानहु ॥५०३॥ अर जो कुलाचलनिका विस्तार जंबूद्वीपविषैं कहा तातैं दूना धातकीखंड विषैं जानहु तहां बारहकुलाचल हैं अर पुष्करार्द्धद्वीपविषैं भी बारह कुलाचल जानहु अर इन अढाईद्वीपनिविषैं जंबू वृक्षादि वृक्ष अर वक्षारपर्वत अर कोटकी भीति तिनकी ऊंचाई ऊंचाईतैं चौथाई जानहु अर पंचमेरुकी उंचाई हजार हजारयोजनकी है अर ऊंचाई विशेष अर धातकीखंडके कुण्डकी चौडाई जंबूद्वीपके कुण्डकीचौडाईतैं छे गुणी है अर तहांकी नदी अर द्रहनिकी चौडाई यहांके नदी द्रहनिकी ऊंचाईतैं पचास गुनी है अर जंबूवृक्ष आदि दश महावृक्ष समान हैं अर नदी सरोवर बनकुंड कमल पर्वत द्रहनिकी ऊंडाई जंबूद्वीप समान है ॥ ८ ॥ अर चैत्य चैत्यालय वृषभाचल नाभिगिरि चित्रकूट कांचनगिरि दिग्गज पर्वतकूट वेदिका इनकी चौड़ाई ऊंचाई सर्व अढाई द्वीपमें समान है। अर सर्व कूटनिके आधे योजन ऊंचे अर पांचसौ धनुष चौड़े सर्व कूटनिके रत्नमय तोरण जानहु अर धातकीखंड अर पुष्करार्द्धविषैं चार मेरु तो चौरासी २ हजार योजन ऊंचे हैं अर हजार २ योजन ऊंडे हैं अर पिंचानवे सौ पिचानवें योजन मूलविषैं चौंडे हैं, अर मूलविषैं प्रदक्षिणा ३०४२ योजनकी है अर १००० योजन भूमिविषै कन्द है तहां ९४०० योजन की चौडाई है अर भूमि मांहि प्रदक्षिणा २९७२५ योजनकी है अर पांच सौ योजन ऊंचे चढिए तहां उनके नन्दन बन हैं अर नन्दनबनतैं ५५५०० योजन ऊंचे चढिए तहां सौमनस बन है ॥ १७ ॥ अर सौमनस बनतैं २८००० योजन ऊंचे चढिए तहां पांडुक बन है अर नन्दनबनविषै सुमेरुकी चौडाई ९३५० योजन की है ॥ १९ ॥ अर नन्दनबनकी वाह्य प्रदक्षिणा

तब बारहलाख योजन भया ताहि दोऊ लाख समुद्रकी चौड़ाईतैं गुनिए तब चौबीस लाख योजन होय ऐसे लाख लाख योजन जंबूद्वीप प्रमाण लवणसमुद्रमें चौवीस खंड समावैं हैं अर धातकीखंडमें जंबूद्वीप समान एकसौ चवालीस खँड समावैं हैं ॥ ८८ ॥ अर कालोदधिमें छहसौ बहत्तर खंड समावैं हैं अर पुष्करार्द्ध द्वीपविषैं दो हजार आठसौ अस्सी जंबूद्वीप प्रमाण खंड समावैं हैं ॥८९॥ जैसैं जंबूद्वीपकूं लवणसमुद्र बेढै है तैसे लवणसमुद्रकूं धातकीखंड बेढै है सो धातकीखंड द्वीप चार लाख योजनका चौडा है गोल आकृति है ताकी आभ्यंतरकी सूची पाचलाख योजनकी है अर मध्यसूची नौ लाख योजनकी है अर बाह्यकी सूची तेरह लाख योजनकी है ॥९०॥ अर धातकीखंडकी प्रदक्षिणा पंद्रहलाख इक्यासी हजार एकसौ उनतालीस योजनकी है ॥ ९१ ॥ यह तो आभ्यंतरके सूचीकी प्रदक्षिणा कही अर मध्यसूचीकी प्रदक्षिणा अठाईस लाख छ्यालीस हजार पचास योजनकी है अर बाह्यसूचीकी प्रदक्षिणा इकतालीसलाख दसहजार नौसो इकसठ योजनकी है ॥९३॥ अर धातकीखंड द्वीपविषै दो महामेरु हैं एक पश्चिमकी ओर अर एक पूरबकी ओर दोऊहू इष्वाकार पर्वत हैं एक दक्षिण ओर है एक उत्तरकी ओर है ते दोऊ हजार हजार योजन चौडे हैं अर चार चार लाख योजन लंबे हैं अर चार चारसौ योजन ऊंचे हैं अर सौ सौ योजनकी उनकी नीव है ॥ ९५ ॥ अर जंबूद्वीपविषैं भरतादि सप्तक्षेत्र अर षट् कुलाचल पर्वत हैं सो धातकीखंड विषै भरतादि दो उनके चौदह क्षेत्र अर कुलाचल दो दो उनके बारह कुलाचल एक मेरु संबंधी सात सात क्षेत्र अर छहछह कुलाचल हैं सो दो मेरु संबंधी दूने जानहु ॥ ४९६ ॥ अर जे जंबूद्वीपविषै पहिली पर्वत नदी द्रह तिनके नाम कहे तेही नाम तिनके जानहु। यहां एक वहां दो अर ऊंचाईमें अर चौडाईमें तो वहांके पर्वतादि यहांके समान अर चौढाईमें द्विगुण विस्तार जानहु, ते पर्वत अर क्षेत्र मध्यकी तरफ तो पैयेके आराके आकार हैं अर बाहरली तरफ खुरपेके आकार हैं ॥ ९८ ॥ सो धातकीखंड द्वीप एक लाख अठहत्तर हजार आठसौ ४२ योजन तो भरतादिक्षेत्र पर्वतकर रुक्या है ॥ ९९ ॥ अर धातकीखंडके भरतक्षेत्रका विस्तार ६६१४ योजन अर एकसौ

द्वीप अर नंदीश्वरसमुद्र ८ अर अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र ९ अर अरुणोद्भासनामाद्वीप अर अरुणोद्भासनामा समुद्र १० अर कुंडलवरद्वीप अर कुंडलवरसमुद्र ११ अर शंखवरद्वीप अर शंखवरसमुद्र १२ अर रुचकवरद्वीप अर रुचकवरसमुद्र १३ अर चौदवां भुजंगवरद्वीप भुजंगवरसमुद्र १४ अर पद्रहवां कुसमवरद्वीप कुसमवरसमुद्र १५ अर सोलवां क्रौंचवरद्वीप अर क्रौंचवरसमुद्र १६ ये सोलह ही द्वीप समुद्रनिके नाम कहे, याहीभांति असंख्यात द्वीप अर असंख्यातसमुद्र हैं, सो द्वीपकूं वेढै समुद्र अर समुद्रकूं वेढै द्वीप ऐसे दूने २ विस्तार जानहु। अर सोलह आदिके द्वीप समुद्र कहे याही भांति अंतके सोलह कहे तिनमें पहिला मनशिल १ दूजा हरिताल २ तीजा सिंदूर ३ चौथा श्यामक ४ पांचवां अञ्जन ५ छठा हिंगुल ६ सातवां रूपवरं ७ आठवां सुवर्णवर ८ नवमा वज्रवर ९ दसवां वैडूर्यवर १० ग्यारहवां नागवर ११ बारहवां भूतवर १२ तेरहवां यक्षवर १३ चौदहवां देववर १४ पंद्रवां इन्दुवर१५ सोलवां स्वयंभूरमण १६ ये जो अंतके द्वीपनिके नाम कहे तेही नाम समुद्रनिके जानहु। जंबूद्वीपादिक सोलह प्रथम राशि अर मनशिल आदिक अंतकी राशि इन दोऊ राशीनके मध्य असंख्यात द्वीपसमुद्र अनादिकालके हैं तिनके मनोहर शुभनाम हैं ॥ २३ ॥ असंख्यात जो समुद्र कहे तिनमें लवणोदधि तो लवणसमान क्षार जल है अर वारुणीवर समुद्रका वारुणी कहिए मदिरा ता समान है जलका स्वाद जाका अर घृतवरका घृतसमान अर क्षीरसागरका दुग्धसमान अर दूजा कालोदधि अर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र इनका जल मिष्ट जल समान है अर पुष्करोदधिका जल मधु कैसा स्वाद है अर सर्व असंख्यात समुद्रनिका जल इक्षुरस समान है अर पहिला लवणोदधि दूसरा कालोदधि अर अंतका स्वयंभूरमण इन तीनों ही समुद्रनिमें जलचर जीव हैं अर सबनिमें जलचर जीव नाहीं केवल जलकाय स्थावर ही हैं। अर लवणसमुद्रविषै तीरां सम्मूर्छन महामच्छ नौ योजन दीर्घ है अर मध्यविषै लवणोदधिमें अठारह योजन दीर्घ है सम्मूर्छन मच्छ हैं॥ २६ ॥ अर कालोदधिविषै सम्मूर्छन मच्छनिके संगमविषै अठारह योजन दीर्घ हैं अर मध्यविषै छत्तीस योजन लंबा मच्छ है। यह तो सम्पूर्ण मच्छोंकी दीर्घता

निमें मनोग्य स्थलविषे अठारह शिखरी हैं ते शिखर ५०० योजन ऊंचे हैं अर मूलविषै ५०० योजन चौडे हैं अर उर्द्धविषै अढाईसौ योजन चौडे हैं ॥९८॥ चार दिशानिमें अर चार विदिशानिमें तीन तीन कूट हैं ईशान दिशामें बज्र कहिये हीरामई कूट हैं अर आग्नेय दिशामें तपनीय कहिये ताया सोना समान कूट है अर पूर्व दिशामें वैडूर्य नामा कूट जाका यशस्वान् नामा देव स्वामी है अर अगर्भनामा कूटविषै यशकांतनामा गरुडकुमारदेव स्वामी है अर सुगंधि कूटविषै यशोधरनामा देव स्वामी है। अर दक्षिणदिशामें रुचक नामा कूट तहां नंदननामा देव स्वामी है अर लोहितकूटविषैं नंदोत्तर देव स्वामी है ॥ ६०० ॥ अर ताही दिशामें अंजन कूटविषैं असनिघोस देव बसै है अर पश्चिम दिशामें अञ्जनमूलविषैं सिद्धदेव बसै है, अर कनक कूटविषैं क्रमण नामा देव बसै है, अर रजत-कूटविषैं मनुष्यदेव बसै है अर उत्तर दिशामें स्फटिक कूटविषै सुदर्शन नामा देव बसै है। अर अंकनामा कूटविषैं मोघ नामा देव बसै है अर प्रवाल कूटविषैं सुप्रबुद्ध देव है। अर तपनीय कूटविषैं सुरस्वति है अर वज्रकूटविषैं हनूमान नामा देव है अर दक्षिण अर पूर्वके कोणविषैं निषध नामा कूट तामें वेणुनामा नागकुमारदेव बसै है अर नीलाचलके पिछले भागविषै पूर्व उत्तर दिशामें सर्वरत्न नामा कूट ता विषैं वैणुरी नामा गरुणकुमारदेव बसै है अर निषधाचलके पिछले भागविषैं दक्षिण पश्चिम दिशाविषै भाग विलंब नामा कूटविषै अति विलंब बरुणदेव बसै है ॥ ७॥ अर नीलाचलके पिछले भागविषै पश्चिम उत्तर दिशामें प्रभंज नामा देव पवनकुमार बसै है, ऐसा अनेक आश्चर्य करि संयुक्त सुवर्ण मय महामानुषोत्तर नामा ये पर्वत मनुष्यक्षेत्रके कोटकी न्याई चौगिर्द सोहै है। या पर्वतके परली ओर मनुष्य विद्याधर तथा ऋद्धिधारी मुनि भी न जा सकै हैं, बिना समुदघात मनुष्यका प्रदेश भी मानुषोत्तर परे न जा सकै है, अर जैसे जम्बूद्वीपके चौगिरद लवणसमुद्र १ अर धातकीखण्डके कालो-दधि २ अर पुष्करद्वीपके चौगिरद पुष्कर समुद्र है ३ याही भांति वारुणीवरद्वीप अर वारुणीवर समुद्र ४ अर क्षीर वरद्वीप अर क्षीरवरसमुद्र ५ अर घृतवरद्वीप घृतवरसमुद्र ६ अर इक्षुवरद्वीप अर इक्षुवरसमुद्र ७ अर नंदीश्वर

ममेरु सो जैसे धातकीखण्डके दोय मेरुका विस्तार कह्या ताही प्रमाण पुष्करार्द्धके मेरुका विस्तार जानहु ॥ ७४ ॥ अर धातकीखण्डकीसी न्याई क्षेत्र नदी पर्वत आदि सब रचना जानहु ॥ ७५ ॥ इकतालीस हजार पांचसौ उनासी योजन अर एक सौ तिहत्तर अंश तहांके भरतक्षेत्रका मध्यवर्ती आदि विस्तार है। अर मध्य विस्तार ५३५१२ योजन अर १९९ अंश है अर बाहरला विस्तार तहांके भरत क्षेत्रकी ६५४४६ योजन अर १३ अंश है ॥७८॥ अर भरत क्षेत्रतैं लेकर विदेहक्षेत्र पर्यंत क्षेत्र चौगुणा है अर पर्वततैं पर्वत चौगुणा सर्वज्ञदेवने कहा है, अर ये अंश जो कहे सो एक योजनके दो सौ बारह अंश तामें एक ठौर १७३ लिये अर एक ठौर १९९ लिये अर एक ठौर १३ लिये अर १४२३०२४९ योजन पुष्करार्द्धकी बाहरली प्रदक्षिणा कही अर ३९५६८४ योजन क्षेत्र पर्वतनिसूं रुक्या है अर विजयार्द्ध तथा नाभिगिरि अर कुलाचल इनकी ऊंचाई अर ऊंडापन जम्बूद्वीपकेनिकी कही ता समान जानहु अर चौड़ाई धातकीखंडकेनितैं द्विगुणी जानहु, अर दो मेरु पुष्करार्द्धविषै समान हैं अर इष्वाकार भी दोऊ समान हैं ॥८७॥ अर मनुष्य क्षेत्रका विस्तार पैंताळीस लाख योजन है तामें अढाई द्वीप अर दो समुद्र आगये अर मानुषोत्तर पर्वत १७२१ योजन ऊंचा है अर ४३० योजन अर एक कोसका तीसरा भाग भूमिविषै ऊंडा है मूलविषै १०२२ योजन चौडा है अर मध्यविषै ७२३ योजन चौडा है अर ऊर्द्धविषै ४२४ योजन चौडा है अर एक कोटि बयालीस लाख छत्तीस हजार सात सौ तेरह योजन मानुषोत्तर पर्वतकी प्रदक्षिणा है, मध्यभागविषैं समान है बाहिर क्रम करि तिरछा ऊंचा है अर अभ्यन्तर मुख कर बैठे सिंहके आकार है, भीति इनकी सूधी ऊंची हैं ऐसा आकार है ॥ ९३ ॥ अर मानुषोत्तर पर्वत विषै चौदह गुफा हैं यह पर्वत पूर्व पश्चिम दिशाकी जे नदी तेई भई स्त्री तिनिकूं पुष्करार्द्ध समुद्रविषै जायवेकूं मार्ग देवे हैं, जा दरवाजे होय नदी जाय हैं, सो दरवाजा पचास योजन लम्बा पचीस योजन चौडा अर साढा सैंतीस योजनका ऊंचा है अर मानुषोत्तर पर्वत पर चारों दिशा चार चैत्यालय हैं अर गुफानिके द्वार आठ योजनके ऊंचे अर चार योजन चौडे हैं अर ता पर्वतके चारों दिशा-

६४६९०८० एते योजनका फैलाव है ॥ ६४ ॥ अर कालोदधिकी पश्चिमदिशाविषै कुभोगभूमिया मनुष्य उदक मुख हैं अर दक्षिणदिशाविषैं अश्वकर्ण हैं अर पश्चिमदिशाविषैं पक्षीनिके मुखवाले कुमानुष हैं अर उत्तरदिशाविषैं गजकर्ण हैं अर विदिशाविषैं सूकरमुख उष्ट्रकर्ण गोकर्ण अर मन्दारमुख अर मंजारमुखतैं गजकर्ण अर अश्वकर्णके दोऊ पसवारे हैं अर जे पक्षीनिके मुख तिनके समीप गजमुख हैं अर कर्ण प्रावरण कहिए एककान विछावैं एक कान ओढें ॥ ६८ ॥ शिशुमार जातिका जो जलचर ता समान है मुख जिनके ऐसे जे कुमानुष ते कालोदधिविषै विजयार्द्धके दोऊ छेहरा जिनपर जे अंतरद्वीप तिनविषै तिष्ठै हैं ॥६९॥ अर हिमवान् पर्वतके अग्रभागविषै कालोदधिमें व्याला कैसे मुख अर व्याघ्र मुख तिष्ठै हैं अर स्यालमुख अथवा पासा सारिखामुखतैं शिखरी पर्वतके अग्रभागविषै तिष्ठै हैं ॥ ७० ॥ अर चीता सारिखे मुख अर झारी सारिखे मुख ऐसे कुभोगभूमियां रूपाचलके अग्रभागविषै तिष्ठै हैं अर द्वीपकी जगती कहिए कोटकी भीति अर समुद्रकी भीति इनके मध्य एक मनुष्य है जगतीके समीप चीतामुखी हैं ॥ ७१ ॥ यह सब कुमानुष एक पल्यके आयुके धारक एक दिनके अन्तर मीठी गारि अर पुष्प फलके भक्षक गुफाके मध्य अर तरुके तले रहणहारे व्यन्तर अर भवनबासी देवनिकी गतिमें गमन करणहारे, लवणोदधि ही समान कालोदधिमें जानहु। पांच सौ कछु इक अधिक कालोदधिमें अन्तर द्वीप हैं, ते लवणोदधितैं द्विगुण द्विगुण विस्तार जानहु। अर यह समुद्रमें द्वीप हजार योजन ऊंचे हैं समुद्रके तट पर्यन्त हैं कुभोगभूमिके चौबीस द्वीप तो अंतर विषैं तिष्ठै हैं चौबीस ही बाहर तिष्ठै हैं, कालोदधिके अर लवणोदधिके भेले किए तो सकल छानवै हैं ॥ ७२ ॥ अर कालोदधिकूं बेढैं पुष्करद्वीप है सो पुष्करद्वीप वटके वृक्ष कर शोभित है कालोदधितैं दूना चौडा है याके मध्यमें मनुष्यक्षेत्रकी मर्यादाका करणहारा मानुषोत्तर पर्वत है ताकर पुष्करार्द्ध कहावै है, द्वीपके मध्यविषै यह गिरि है तहांतक मनुष्यका गमन है आगे मनुष्यका गमन नाहीं, ता पुष्करार्द्धविषै दोय मेरु हैं एक पूर्वमेरु एक पश्चिममेरु अर दक्षिण उत्तरकी ओर इष्वाकार पर्वत हैं एक पूर्वमेरु एक पश्चि-

दधिमुख अर वत्तीस रतिकर हैं यह चार दिशाविषै बावन बावन पर्वत हैं एक एक दिशाविषै तेरह २ पर्वत हैं इन बावन पर्वतनिविषै भगवानके बावन चैत्यालय हैं एक एक गिरिविषै एक एक चैत्यालय है तिन चैत्यालयनिकरि ते पर्वत महापवित्र हैं गिरिनिके शिखर पर चैत्यालय हैं तिनके पूर्वकी ओर मुख हैं अर १०० योजन लंबे अर ५० योजन चौडे हैं अर ७५ योजन ऊंचे हैं अर चैत्यालयनिके द्वार आठ योजन ऊंचे हैं अर चार योजन चौडे हैं अर चारही योजनकी नींव है एक एक देवलके तीन २ द्वार हैं ते नंदीश्वरद्वीपके बावन चैत्यालय देवनिकरि पूज्य हैं तिनविषै रत्नमई पांचसौ धनुषकी प्रभुकी प्रतिमा विराजै है तिन चैत्यालयनिविषै फाल्गुन आषाढ़ और कार्तिककी अठाईविषै नितप्रति इंद्रादिक देव उत्साहसहित पूजा करै हैं अर सोलह बापिकानिके बन ६४ तिनमें नागकुमार देवनिके चौसठ मंदिर हैं जो वनका नाम सोई देवनिका नाम अर देवनिके मंदिर बासठ योजन ऊंचे अर इकतीस योजन लंबे अर एते ही चौडे अर तिनके द्वारनिका प्रमाण पूर्व कह्या ता प्रमाण जानहु ॥ ८० ॥ अर नंदीश्वरद्वीपके परे अरुणद्वीप अर अरुण समुद्र है, सो महाअंधकार युक्त है सो ब्रह्म स्वर्गपर्यंत अंधकार है वा समुद्रके बाह्य आठ मृदंगाकार श्याम पंक्ति घनाकार हैं वा समुद्रके पार अल्पऋद्धिके धारक देव गैल भूलि जाय हैं तातैं महाऋद्धिवान् देवनिके साथ जाय हैं ॥ ८१ ॥ अर कुण्डलगिरि द्वीपविषै कुंडलगिरि पर्वत है सो गोल है पर्वतकी राशिके तुल्य है ता पर्वतकी हजार योजनकी नींव है अर बियालीसहजार योजन ऊंचा है मणीनिके समूहकरि दैदीप्यमान है सो पर्वत मूलविषै १०२२० योजन चौडा है अर मध्यविषै ७१६१ योजन चौडा है अर अग्रभागविषैं ४०९६ योजन चौडा है ता पर्वतपर चारों दिशामें चार २ कूट हैं सो समस्त सोलह कूट हैं तिनमें सोलह देव हैं पूर्वदिशाविषै वज्रकूट है ताविषै त्रिशिरानामा देव है अर दूजा वज्रप्रभ नामा कूट है ताविषै पंचसिरप्रभनामा देव बसै है अर तीजा कनककूट ताविषै महासिरानामा देव बसै है अर चौथा कनकप्रभ नामाकूट है ताविषै महाभुज नामा देव बसै है यह चार तो पूर्व दिशाके कहे अर दक्षिण दिशाविषै

दूजा इंद्र वैरोचन क्रीडा करै है ॥ ५५ ॥ अर दक्षिण दिशाके अंजनगिरि संबंधी विजया १ वैजयंती २ जयंती ३ अपराजिता ४ ये चार वापिका जो पूर्व नंदा आदि प्रमाण कही उनही प्रमाण जानहु तिनविषै इंद्रके चार लोकपाल क्रीडा करै हैं, विजयाविषै सोम वैजयंतीविषै वरुण जयंतीविषै यम अपराजिताविषै कुवेर ये चारों लोकपाल इनविषै लीला करै हैं ॥ ६५६ ॥ अर पश्चिम दिशाकी अंजनगिरि संबंधी यह चार वापिका तिनके नाम अशोका १ प्रबुद्धा २ कुमुदा ३ पुंडरीकनी ४ ये चार चारों ओर हैं तिनमें पहिलीविषै वेणुनामा देव, दूजीविषै नागकुमारनिका स्वामी धरणींद्र अर तीजीविषै नागकुमारनिका इंद्र रूपानंद क्रीडा करै है, अर चौथीविषै नागकुमारनिका स्वामी भूतानंद क्रीडा करै है अर उत्तर दिशाके अंजनगिरि संबंधी यह वापिका चार तिनके नाम प्रभंकरा १ सुमना २ आनंदा ३ सुदर्शना ४ ये चार तिनमें ईशान इंद्रके चार लोकपाल लीला करै हैं प्रभंकराविषै वरुण सुमनाविषै यम आनंदाविषै सोम सुदर्शनाविषै कुवेर ॥ ६० ॥ यह चारही अंजनगिरि संबंधी सोलह वापिका कहीं इन वापिकानिमें ६५०४५ योजन भीतरका परस्पर अंतर है अर मध्यका अंतर १०४६०२ योजन है अर बारिला अंतराल २२३६६१ योजन है ॥ ६३ ॥ अर चार अंजनगिरि संबंधी यह सोलह वापिका कहीं तिनके मध्य सुवर्णमई सोलह दधिमुख पर्वत हैं तिनके शिखर रूपामई हैं तिन पर्वतनिका हजार हजार योजनका कंद है अर दश दश हजार योजन ऊंचे अर इतने ही चौडे ढोलके आकार दधिमुखगिरि हैं अर वापिकानिकी चारों ओर चार बन हैं ते लाख लाख योजन लंबे हैं अर पचास २ हजार योजन चौडे हैं पूर्व दिशाकी ओर अशोक बन है अर दक्षिणकी ओर सप्तपर्ण वन पश्चिमकी ओर चंपकबन अर उत्तरकी ओर आम्रबन है ॥ ६८ ॥ अर इन वापिकानिके कोणके समीप रतिकर पर्वत हैं वे ताया स्वर्ण समान ढोलके आकार हैं तिनकी २५० योजनकी नीव है अर हजार हजार योजन लंबे हैं अर एते ही चौडे हैं एते ही ऊंचे हैं ते सब बत्तीस हैं एक एक अंजनगिरि संबंधी चार चार दधिमुख अर आठ आठ रतिकर हैं सो चार अंजनगिरि संबंधी सोलह

इक्षुवर समुद्रके स्वामी गंध अर महागंध अर नंदीश्वर द्वीपके पति नंदीश्वर अर नन्दप्रभ अर नंदीश्वर समुद्रके धनी सुभद्र अर भद्र अर अरुणद्वीपके रक्षक अरुण अर अरुणप्रभ ॥४१॥ अर अरुणवर समुद्रके स्वामी सुगंध अर सर्वगंध नामा दो देव जानहु । याही भांति द्वीपनिके अर समुद्रनिके दो दो अधिष्ठाता देव कहे हैं एक दक्षिणका अधिपति एक उत्तरका अधिपति है ॥ ४२ ॥ अर आठवां नंदीश्वरद्वीप ताका विस्तार एकसौ तरेसठ कोट चौरासीलाख योजन जानहु जगतका दीपक जो सर्वज्ञ वीतराग देव ताने यह सर्व द्वीप समुद्रनिका विस्तार कहा है । अर नंदीश्वर द्वीपके भीतरकी प्रदक्षिणा एक हजार छत्तीस कोटि वारहलाख दोहजार सातसौ तिरेपन योजन जिनवरदेवने कही अर वाहरली प्रदक्षिणा नंदीश्वरद्वीपकी दोहजार बहत्तर कोटि तैतीसलाख चौवन हजार एकसौ नव्वै योजन है ॥ ४७ ॥ ता नंदीश्वरद्वीपके मध्य चारों दिशानिविषैं चार अंजनगिरि हैं ते प्रत्येक प्रत्येक चौरासी हजार योजन ऊंचे अर इतने ही चौडे हैं अर हजार योजन तिनकी जड़ पृथिवीविषैं है ते चारों ढोलके आकार हैं अर विचित्रताकूं धरैं हैं वज्रमणिका है मूल जिनका अर प्रभाकर देदीप्यमान हैं ते चारों अंजनगिरि महामनोहर हैं ॥४९॥ ते पर्वत सुवर्णमूर्ति अर श्याम शिखरनिके धारक हैं तिनकी कांति दशों दिशाविषैं विस्तर रही है अर इन पर्वतनिथकी लाख योजन जाइए तव चारोंकोणविषैं चोकुटी चार वापिका हैं ते अनादिनिधन हैं ॥५१॥ सहस्रदल कमलसहित महामनोहर हैं स्फटिकमणि समान है उज्वल जल जिनका अर नाना प्रकार मणिमई हैं सिवान जिनके अर जिनमें जलचर जीव नाहीं केवल स्थावरकाय हैं अर वापीनिकी चौगिरद भीति हैं अर ते वापिका हजार २ योजन ऊंडी हैं अर लाख योजन लंबी है अर लाख योजनकी चौडी हैं एक २ वापिका जंबूद्वीप समान जानहु ॥५३॥ तिनके नाम नंदा १ नंदवती २ नदोत्तरा ३ नंदघोषा ४ यह चार वापिका पूर्व दिशाके अंजनगिरि संवंधी कही ॥ ५४ ॥ तिनमें नंदविषै तो सौधर्म इंद्र क्रीडा करै है अर नंदवतीविषै ईशान इंद्र क्रीडा करै है अर नंदोत्तराविषै असुरकुमारनिका इंद्र चमरेंद्र क्रीडा करै है अर नंदघोषाविषै असुरकुमारनिका

कही अर गर्भज इनतैं आधे लंबे जानहु अर अंतका जो स्वयंभूरमण समुद्र ताके आदिविषै सम्मूर्छन मच्छ पांचसौ योजन दीर्घ राघवमच्छ है अर मध्यविषै एक हजार योजन दीर्घताके धारक हैं ॥ २९ ॥ इन तीन समुद्रनिमें जलचर हैं अर काहूमें नाहीं अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइंद्री ये विकलत्रयके जीव अढाई द्वीपविषै कर्मभूमि हैं अर मानुषोत्तरतैं परे असंख्यात द्वीपसमुद्रनिमें विकलत्रय नाहीं अर अंतका द्वीप स्वयंभूरमण ताके मध्य नागेन्द्र पर्वत पड़ा है ताहि स्वयंप्रभाचल भी कहै हैं ताकी वरली ओर लग, सब असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें भोगभूमि हैं तीसरे काल कैसी रीति सदा प्रवर्तै है जहां देव हैं तहां नभचर थलचर पंचेंद्री जीव हैं, जलचर नाहीं विकलत्रय नाहीं स्थावर सर्वत्र हैं अर तहांके पंचेंद्री तिर्यंच एक पल्य आयुके धारक देवगतिमें जाते हारे हैं तहां कर्मभूमि नाहीं अर नागेंद्र पर्वतके परली ओर आधा स्वयंभूरमणद्वीप अर सारा स्वयंभूरमण समुद्र तहां कर्मभूमि है, पञ्चमकाल कैसी रीति सदा प्रवर्तै है। द्वीप अथवा समुद्र पिछलेसूं अगिला दुगुना २ अधिक विस्तार है, एक राजूमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं ॥ ३१ ॥ मेरुके अर्द्धभाग थकी स्वयम्भूरमण समुद्रके मध्य पचहत्तर हजार योजन जाइए तहां आध राजूका अर्द्ध विस्तार होय है याही भांति सर्वत्र जानहु, वाकी पाव राजूमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं।

अथानंतर—द्वीपनिके अर समुद्रनिके जे रक्षपाल देव हैं तिनके नाम कहे हैं—जंबूद्वीपका रक्षक अनाव्रत नामा देव लवणसमुद्रका अधिपति स्वस्तिक नामा देव अर धातकीखंडके नाथ दोय एक प्रभास दूजा प्रियदर्शन अर कालोदधिके अधिपति दोय एककाल दूजा महाकाल अर पुष्कर द्वीपके नायक पद्म अर पुण्डरीक अर मानुषोत्तरके नाथ चक्षुष्मान्, अर वसुचक्षु ॥ ३६ ॥ अर पुष्करोदधिके अधिपति श्रीप्रभ अर श्रीवर, अर वारुणीवरद्वीपके पति वरुण अर वरुणप्रभ अर वारुणीवर समुद्रके स्वामी मध्य अर मध्यांग अर क्षीरवरद्वीपके पति पांडुर अर पुष्पदंत ॥ ३७ ॥ अर क्षीरोदधिके ईश विमल अर विमलप्रभु अर घृतवरद्वीपके अधिष्ठाता सुप्रभ महाप्रभ ॥ ३८ ॥ अर घृतवरसमुद्रके नायक कनक, कनकप्रभ अर इक्षुवरद्वीपके पति पूर्ण अर पूर्णप्रभ अर

त्रसूं तो जगत ही भरया है अर कैयक जीव तहां अव्रतसम्यग्दृष्टी भी हैं, परन्तु श्रावकके व्रत नाहीं पंचम गुणस्थान नाहीं अढाई द्वीप बाहर असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें यही रचना है, अर अंतके द्वीपके मध्य स्वयंप्रभाचल ताकी पहिली तरफ आगे आधे स्वयंभूरमण द्वीप हैं अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रमें कर्मभूमिकी रचना है यहां सदा पंचमकालकीसी रीति है स्थावर तो सर्वत्र ही हैं अर तहां विकलत्रय हैं पंचेंद्री सैनी असैनी गर्भज संमूर्च्छन थलचर नभचर सबही जीव हैं एक मनुष्य नाहीं जलचर मच्छादिक पंचेंद्री अर विकलत्रय, ये जीव पहिले द्वीप समुद्रमें अर दूजे द्वीप समुद्रनिमें अर आधे तीजे द्वीपमें अर अंतहीकेमें जानहु अर द्वीप समुद्रमें नाहीं अंतके आधे द्वीप अर सारे समुद्रमें कर्मभूमिकी रचना है पहिले गुणस्थानसूं लेयकरि देशव्रतलग पांचगुणस्थान हैं छठेसूं लेकरि ऊपरले नाहीं, मिथ्यात्वमय तो सर्व जगत ही है अर अंतके द्वीप समुद्रमें स्वयंप्रभाचलके परे कैयक पंचेंद्री तिर्यंच श्रावकव्रतके धारक पंचमगुणस्थानवर्ती भी हैं ते हू सर्वज्ञदेवने असंख्यात कहे हैं, ये अति मनोहर द्वीप समुद्र कहे अर महा सुंदर पर्वत कहे तिनमें किन्नरादि अष्टप्रकार व्यंतरदेव अर नागकुमारादि भवनवासी देव बसैं हैं, देवयोनिमें श्रावकव्रत अर मुनिव्रत नाहीं पहिले गुणस्थानसूं लेय चौथे लग ही हैं ॥ २८ ॥ गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहैं हैं हे श्रेणिक ! यह असंख्यात द्वीप समुद्रनिकी रचना तोहि कही अब ज्योतिषीदेवनिकी अर स्वर्गलोककी रचना सुनहु ॥२९॥ जंबूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवणसमुद्र आदि असंख्यात जे समुद्र तिनकी रचना भगवद्भाषित जो भव्यजीव श्रवण करैं ताका संदेह शीघ्र ही दूर होय अर जो सकल त्रैलोक्यकी रचना सुनै ताका संदेह तो दूर होय ही होय। श्रीजिनरूप सूर्यका जब उदय होय तब अज्ञानरूप अंधकारका समूह कहां तिष्ठै सर्वथा संदेहरूप अंधकारका नाश होय ॥ ७३० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वीपसागरवर्णनं नाम पंचमः सर्गः ॥

रुचिकोज्वलादेवी ॥ १७ ॥ अर दक्षिण अर पश्चिमकी कोणविषैं मणिप्रभानामाकूट ताविषैं रुचकाभादेवी अर पश्चिम अर उत्तरकी कोणविषै रुचिकोत्तमनामाकूट ताविषैं रुचिकोत्तमानामा देवी ॥ १८ ॥ ये दिक्कुमारीनिमें शिरोभाग हैं वे जिनराजकी माताकी सेवा करै हैं बहुरि विदिशानिविषै और चार कूट हैं पूर्वोत्तरविषै रत्नकूट ताविषैं विजयादेवी अर दक्षिणपूर्वविषैं रत्नप्रभनामाकूट ताविषैं वैजयंतीदेवी कही है अर दक्षिणपश्चिममें सर्वरत्ननामाकूट ताविषैं जयंतीनामादेवी कही अर उत्तरपश्चिमविषैं रत्नोच्चयनामाकूट ताविषैं अपराजितानामा देवी कही ॥ २१ ॥ चार वे अर चार ये यह आठ देवियें दिक्कुमारीनिमें अर विद्युतकुमारीनिमें महत्तर हैं सो तीर्थंकरदेवके जन्मोत्सवविषैं तीर्थंकरकी माताकी सेवा करैं हैं अर जन्मकल्याणकका उत्सव करैं हैं ॥ ७२२ ॥ यह रुचकगिरिनामा पर्वत तेरहवां है ताके उर्ध्वभागविषैं चारों दिशानिमें चार चैत्यालय हैं तिनका अंजनगिरिके चैत्यालयसूं समान विस्तार जानहु पूर्वकी उर है मुख जाका ॥ ७२३ ॥ यह रुचकगिरि पर्वत भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालयनिकरि अति सोहै है अर ये भवनवासिनी देवियें विद्युतकुमारी दिक्कुमारी कहावें हैं तिनके निवासके कूट उद्योतरूप तिनकरि पर्वत प्रकाशरूप है ॥ २४ ॥ अर अंतका स्वयंभूरमणनामा द्वीप है ताके मध्य स्वयंप्रभनामा पर्वत है ताहि नागेंद्रपर्वत भी कहैं हैं सो वलयाकार गोल अति सोहै है ॥ २५ ॥ अर पुष्करद्वीपके मध्य मानुषोत्तर पर्वत कह्या ताकी परली ओरसूं स्वयंप्रभाचलकी परली ओर तक असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें जघन्य भोगभूमि है तहां देव हैं अर थलचर अर नभचर पंचेंद्री तिर्यंच सैनी गर्भज ही हैं तिनकी एक पल्यकी आयु है अर मरकरि भवनत्रिक देव होय हैं तहां असंख्यात द्वीप समुद्रमें तीजेकालजैसी रचना है जघन्य भोगभूमि है तिन तिर्यंचनिमें जलचर असैनी विकलत्रय नाहीं अर पंचप्रकारके स्थावर सर्वत्र हैं अर पंचेंद्रीमें देव तथा थलचर नभचर तिर्यंच हैं अर अढाई द्वीपपर मनुष्य नाहीं, भोगभूमिमें पहिला गुणस्थान मिथ्यात्व तासूं लेयकरि चौथा जो अव्रतसम्यक्त्व गुणस्थान, तहांलग चार गुणस्थान हैं पंचम गुणस्थानसूं लेकरि ऊपरले गुणस्थान नाहीं, मिथ्या-

विषैं नंदा अर स्वास्तिकनंदन कूटविषैं नंदोत्तरा अर अंजनविषैं आनंदा अर अंजनमूलकविषैं नांदीवर्द्धना ये आठ दिक्कुमारी देवी तीर्थंकरकी उत्पत्तिविषैं पूजा द्रव्य सहित जिनमाताके निकट झारी लिए तिष्ठैं हैं ॥ ९९ ॥ अर दक्षिण दिशाविषैं अमोघकूट तामें स्वस्तिता देवी अर सुप्रबुद्धकूटविषैं सुपूर्वका देवी अर मंदिरकूटविषैं प्रणिधिनामा देवी सो महा प्रतिबुद्ध अर विमलकूटविषैं यशोधरनामा देवी अर रुचककूटविषैं लक्ष्मीनामा देवी अर ताका नाम कीर्तिमती भी है ॥ ७०४ ॥ अर चंद्रकूटविषैं रुचकनामा देवी अर सुप्रतिष्ठकूटविषैं वसुन्धरानामा देवी तिष्ठै है, ये आठ दिक्कुमारी तीर्थंकरनिकी उत्पत्तिके समय मणिमई दर्पण हाथमें लिये माताकी सेवा करैं हैं अर पश्चिम दिशाविषै लोहितनामा कूट ताविषैं इलादेवी अर जगतकुसुम कूटविषै सुरादेवी अर नलिन कूटविषै पृथ्वीदेवी अर पद्मकूटविषै पद्मावतीदेवी अर कुमुदकूटविषैं कांचनादेवी अर सौमनसकूटविषैं नवमिकादेवी अर यशःकूटविषैं सीतादेवी अर भद्रकूटविषैं भद्रकादेवी, ये आठ दिक्कुमारी महा उज्वल माताके शिरपर छत्र धारती भई सोहैं हैं अर उत्तर दिशाविषै जो स्फटिककूट ताविषै लंबुसादेवी अर अंककूटविषैं मिश्रकेशीदेवी अर अंजन-कूटविषैं पुण्डरीकनी देवी ॥ १० ॥ अर कांचनकूटविषैं वारुणीदेवी रजतकूटविषैं आशादेवी अर कुण्डलकूटविषैं ह्रीदेवी अर रुचककूटविषैं श्रीदेवी अर सुदर्शन कूटविषैं धृतिदेवी, ये आठ दिक्कुमारी चमर हाथमें लिये श्रीजिन-राजकी माताकूं सेवैं हैं ॥ १२ ॥ बहुरि चारों दिशाविषैं ताही रुचकगिरिपर चार और कूट हैं ते दीप्तिकरि महा देदीप्यमान हैं तिनविषैं पूर्व दिशाकी विमलकूटविषैं चित्रादेवी अर दक्षिण दिशाविषैं नित्यालोककूट ताविषैं कनक-चित्रादेवी तिष्ठै है अर पश्चिम दिशाविषैं स्वयंप्रभनामाकूट ताविषैं त्रिसरादेवी अर उत्तर दिशाविषैं निद्योतनामा कूट ताविषैं सूत्रामणि देवी बसै है ॥ १५ ॥ ये चार विद्युत्कुमारी देवी जिनराजकी माताके निकट रहैं हैं अर महा सुन्दर वार्ता करैं हैं सूर्यकी किरण समान उद्योत करणहारी हैं, अब चार दिशानिविषैं कथन करैं हैं। पूर्व अर उत्तरकी कोणविषैं वैडूर्यनामा कूट ताविषै रुचकादेवी अर दक्षिण पूर्वकी कोणविषैं रुचकनामाकूट ताविषैं

रजतनामा कूट है ताविषैं पद्मनामा देव बसै है अर रजतप्रभनामा कूट ताविषै पद्मोत्तरनामा देव बसै है अर सुप्रभनामा कूटविषैं महापद्मनामा देव बसै है, महाप्रभनामा कूटविषैं वासुकी देव है, यह चार दक्षिण दिशाके कहे अर पश्चिम दिशामें अंकनामा कूट ताविषै हृदयांकनामा देव है अर जो अनन्तप्रभनामा कूट ताविषैं महास्थिर देव है अर मणिकूटविषैं श्रीवृक्ष देव है अर मणिप्रभविषैं स्वस्तिक देव है यह पश्चिम दिशाके कहे, अर उत्तर दिशाविषैं स्फटिकनामा कूट है ताविषैं सुंदर देव है अर जो स्फटिकनामा कूट है ताविषैं विशालाक्ष है अर माहेन्द्रप्रभनामा जो कूट ताविषैं पांडुकनामा देव है अर हिमवान् कूटविषैं पांडुरनामा देव है ये उत्तरदिशाके कहे। ये सकल १६ नागकुमार जो देव हैं तिनकी एक पल्यकी आयु है ते अपने कूटनिके महलनिमें विराजे हैं अर या कुण्डलाचलके मस्तकविषैं पूर्व पश्चिमदिशामें कुण्डल द्वीपके दो देव अधिपति तिष्ठैं हैं अर कूटकी ऊंचाई योजन एकहजारकी है अर मूलविषैं चौड़ाईहू १००० योजनकी है अर मध्यविषैं चौड़ाई ७५० योजनकी है अर ऊर्ध्वविषैं चौडाई ५०० योजनकी है ता पर्वतपर चारों दिशामें चार जिनमंदिर हैं ते अंजनगिरिके समान हैं॥ ९३ ॥ अर तेरहवां रुचिकवरद्वीप ताके मध्य रुचिकगिरिनामा पर्वत है सो वलयाकार गोल है ॥ ९४ ॥ सो रुचिकगिरि हजार योजन पृथवीविषैं ऊंडा है अर चौरासी हजार योजन ऊंचा है अर व्यालीस हजार योजन चौडा है ॥ ९५ ॥ अर ता पर्वतविषैं चारों दिशाविषैं चार कूट हैं, ते कूट हजार योजन चौडे हैं अर पांचसौ योजन ऊंचे हैं तिन कूटनिके नाम—पूर्व दिशाविषैं नंद्यावर्तनामा कूट ताविषैं पद्मोत्तरनामा देव बसै है अर दक्षिणदिशाविषैं स्वस्तिकनामा कूट ताविषैं स्वहस्तीनामा देव है अर पश्चिम दिशाविषैं श्रीवृक्षनामा कूट ताविषैं नीलकनामा देव है अर उत्तर दिशाविषैं वर्द्धमान कूट ताविषैं अंजनागिरिनामा देव है ये चार दिग्पाल देव हैं इनका पल्योपम आयु है ॥ ९६-९८ ॥ अर ताही पर्वतविषै आठ कूट हैं ते अगले कूट प्रमाण हैं तिनमें दिक्कुमारी देवी बसैं हैं अर वैडूर्यकूटविषैं विजयादेवी है अर कांचनविषैं वैजयंती अर कनकविषैं जयंती, अरिष्टविषैं अपराजिता अर दिक्कूट

बारहवें देवलोकतक भी उपजै परंतु विना वीतरागदेवकी श्रद्धा इंद्रादिक ऊंचा देव न होय छोटे देवमें उपजै अर बारहवें स्वर्ग ऊपर पर दर्शनी न जाय, आजीवी कहिए जिसने जन्मपर्यंत विषय ग्रामादिक गमन तज्या अर मौनावलंबी है मंदकषाय क्षुधा तृषादि बाधा भी सहै है अर चौथा गुणस्थानवर्ती अव्रतसम्यग्दृष्टी भी बारहवें स्वर्ग तक जाय आगे व्रत विना न जाय अर श्रावक श्राविका आर्यिका ये पंचम गुणस्थानवर्ती प्रथम स्वर्गतैं लेकर सोलहवें स्वर्गतक जाय अर अहमिंद्रलोकमें न जाय । अर द्रव्यचारित्री मुनिका भेष धरै सो प्रथम स्वर्गतैं ले नव ग्रैवेयकतक जाय आगे चौदह अनुत्तरविषै भावलिंगी मुनि ही जाय अर द्रव्यलिंगी न जाय अर द्रव्यलिंग अभव्य जीव भी धरे उग्रतपकरि नवग्रैवेयक पर्यंत जाय आगे न जाय, मुक्तिविषैं अर चौदह अनुत्तर विमाननिविषैं भावलिंगी मुनिही जाय औरकी गम्यता नाहीं ॥ १०५ ॥ अर ज्योतिषी देवन पर्यंत कृष्ण नील कापोत ये तीन अशुभ लेश्या तो द्रव्यरूप अर भावरूप हैं अर पीतलेश्या भवनत्रिकके देवनिके जघन्यरूप है अर पहिले दूजे स्वर्ग पीतलेश्या मध्यम है, अर तीजे चौथे स्वर्ग पीतलेश्या उत्कृष्ट है अर पद्मलेश्या जघन्यरूप है, अर पांचवें स्वर्गतैं लेकरि अर दशमें स्वर्गपर्यंत पद्मलेश्या मध्यम अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषैं पद्मलेश्या उत्कृष्ट है अर शुक्ललेश्या जघन्य है अर तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें इन चार स्वर्गनिविषैं अर नव ग्रैवेयकविषैं शुक्ललेश्या मध्यम है अर नव अनुदिशविषैं पंच अनुत्तरविषैं शुक्ललेश्या उत्कृष्ट है, अहमिंद्रदेव संक्लेशता रहित हैं यह देवनिकी लेश्या कही अब देवनिकी अवधि सुनहु । पहिले दूजे स्वर्गके अवधि पहिले नरक पर्यंत है अवधिकरि वहां तक देखै जाने है अर तीजे चौथे स्वर्गनिके देवनिकी अवधि दूजे नरक पर्यंत है अर पांचवें स्वर्गतैं ले आठवें पर्यंत देवनिकी अवधि चौथे नरक पर्यंत है अर आठवें नवमें दसमें ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गके देवनिकी अवधि पांचवें नरक पर्यंत है ॥ १६ ॥ अर नवग्रैवेयक वारेनिकी अवधि छठे पर्यंत है अर नव अनुदिशि वालोंकी अवधि सातवें नरक पर्यंत है अर पांच अनुत्तरवालोंकी अवधि लोकनाली पर्यंत है ११४ यह तो नीचली

पचास योजन ऊंचाईमें घटे है अर तहां परे ऊंचाईमें योजन पचीस पचीस घटे अर पांचवें छठे ४५० योजन हैं अर सातवें आठवें मंदिरनिकी उच्चता योजन ४०० अर नवमें दसमें योजन ३५० अर ग्यारहवें बारहवें योजन ३०० अर तेरहवें चौदहवें योजन २५० अर पंद्रहवें सोलहवें योजन २२५ मंदिरनिकी ऊंचाई है, अर आगे पचीस पचीस योजन घटती जानहु। अर मंदिरकी नींव पहिले दूजे स्वर्गविषैं योजन ६० अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं मंदिरनिकी नींव योजन ५० आगे युगल युगल पर्यंत पांच पांच योजन घटती है तब सोलहवें स्वर्ग २० योजन मंदिरनिकी नींव है अर नव ग्रैवेयकविषैं पहिली त्रिकमें १५ दूजी त्रिकमें १० तीजी त्रिकमें ५ अर नव अनुत्तर पंचानुत्तर विषैं इन १४ विमाननिकी मंदिरनिकी नींव योजन अढाई ॥९५॥ अर पहिले दूजे स्वर्गविषैं मंदिर पंचवर्ण रत्नमई कृष्ण नील रक्त पीत श्वेत ये पांच वर्ण सो सब जातिके रत्न पहिले दूजे स्वर्गविषैं हैं अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं कृष्णवर्ण नाहीं अर चार वर्ण रत्नमई मंदिर हैं अर पांचवें छठे सातवें आठवें इन चार स्वर्गनिमें कृष्ण अर नील ये दो वर्ण नाहीं श्वेत रक्त पीत ये तीन वर्ण हैं अर नवमें दसमें ग्यारहवें बारहवें पीत अर श्वेत ये दो वर्ण हैं और वर्ण नाहीं अर तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें अर अहमिंद्रलोकमें मंदिरनिके श्वेतवर्ण ही रत्न हैं अर चार वर्ण नाहीं वे स्वर्गलोकके मंदिर महा सुंदर हैं ॥ ९८ ॥ स्वर्गके दो युगल घनोदधिके आधार हैं अर दो युगल घनवात बलयके आधार हैं अर ऊपर आकाशके आधार हैं ॥ ९९ ॥ छै युगलनिमें इंद्रक विमानमें बारह इंद्र बसे हैं अर श्रेणीवद्धविषैं देव बसै हैं बारह इंद्रकनिमें इंद्र छै दक्षिणश्रेणीके तो एकाभवतारी हैं अर उत्तरके इंद्रकका निश्चय नाहीं अल्पसंसारी है दीर्घसंसारी नाहीं ॥ १०० ॥ अर पंचाग्निके साधक तपस्वी परमती भवनत्रिकके देव तक उपजै हैं जो उनसे महातप करै सो व्यंतर भवनवासी ज्योतिषी तक उपजे स्वर्गविषैं न जाय देव होय तो भवनत्रिकका होय अर मनुष्य होय तो मिथ्यादृष्टि राजादिक होय अर परिव्राजक कहिए दंडी सन्यासी सो पांचवें स्वर्गतक जाय ताके अग्नि जलका आरम्भ नाहीं अर परमतियोंमें आजीवका कहिए अत्यंत मंदकषायी सो

विस्तार विमान हैं ॥ ८५ ॥ अर नव ग्रैवेयकविषैं इंद्रक विमान तो संख्यात योजनके विस्तार हैं अर श्रेणीबद्ध असंख्यात योजनके विस्तार हैं अर प्रकीर्णक कैयक तो असंख्यात योजननिके विस्तार हैं अर कैयक संख्यात योजनके विस्तार हैं सब विमाननिमें ६७९७६४३ विमान तो असंख्यात योजनके विस्तार हैं अर १६११३८० संख्यात योजनके विस्तार हैं ॥ ८६ ॥ सर्वत्र संख्यात योजनके विस्तार विमाननितैं असंख्यात योजनके विस्तार विमान चौगुने जानहु। अर अढाईद्वीप अर पहिला स्वर्गका ऋजुविमान अर पहिले नरकका सीमंतक नाम विला अर मुक्तिशिला सिद्धक्षेत्र ये पांच ४५०००००० योजनके प्रमाण हैं अर मेरुकी चूलिकाके अर पहले स्वर्गके ऋजु विमान कैयक बालमात्र अंतराल है अर जंबूद्वीप अर सातवें नरकका अप्रतिष्ठ नाम विला अर सर्वार्थसिद्धि ये तीनों नौ लाख योजनके प्रमाण जानहु ॥ ८८ ॥ अर स्वर्गलोकके श्रेणीवद्ध विमानके आधे तो स्वयंभूरमण समुद्र ऊपर हैं अर बाकी आधे विमान अन्य समुद्रनिके ऊपर हैं असंख्यात योजनके विमान सर्वत्र चौगुने हैं अर संख्यात योजनके विस्तार विमान उनतैं चतुर्थ भाग हैं ॥ ९० ॥ अर पहिले दूजे स्वर्गके मंदिरनिके पीठकी बाहुल्यता ११२१ योजन अर ऊपरले स्वर्गविषैं दो दो स्वर्गनिमें निन्याणवे निन्याणवै योजन बाहुल्यता घटती गई है ॥ ९१ ॥ अर मंदिरनिकी चौडाई आदिके स्वर्गमें १२० योजन अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं १०० योजन आगे दश दश योजन चौडाई घटी तब पांचवें छठे स्वर्गविषैं चौडाई योजन नव्वे अर सातवें आठवें स्वर्गमें चौडाई योजन अस्सी अर नवमें दसमें स्वर्गविषैं चौडाई योजन सत्तर अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषैं चौडाई योजन साठ तेरहवें अर चौदहवेंविषैं योजन पचास अर पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन चालीस अर नवग्रैवेयकविषैं पहिली त्रिकमें तीस, दूजीमें बीस, तीजी त्रिकमें दश अर नव अनुत्तरविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन पचास ॥ ९३ ॥ अर पंच अनुत्तरविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन पांच अर मंदिरनिकी उच्चता पहिले दूजे स्वर्गविषैं योजन छैसौ है अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं मंदिरनिकी उच्चता योजन ५०० अर आगे युगल पांच पर्यंत पचास

अर्चिमालिनी, तीजा वज्र चौथा वैरोचन, पांचवां सौम्य, छठा सौम्यरूप, सातवां अंक, आठवां स्फटिक, नववां आदित्य ये नव तिनमें कैयक इन्द्रक आठ श्रेणीवद्ध जो इंद्रक हैं सो मध्य हैं अर श्रेणीवद्ध आठ चार दिशा अर चार विदिशाविषैं हैं अर पंचानुत्तरके विमान पांच, पहिला विजय दूजा वैजयंत तीजा जयंत चौथा अपराजित पांचवां सर्वार्थसिद्धि इनमें ४ दिशानिमें श्रेणीबद्ध हैं अर सर्वार्थसिद्धि मध्यविषैं इंद्रक हैं सो त्रेसठ पटलनिविषैं सब बिमान ८४९७०२३ हैं तिनमें त्रेसठ इंद्रकके सहित सौ पटलनिके मध्यभागविषैं हैं अर जो दिशा विदिशा श्रेणीबद्ध होय वे श्रेणीगत कहिए, ते सकल आठहजार एकसौ सत्ताईस बाकी सब विमान प्रकीर्णक कहिए त्रिखरवां है ६२ श्रेणीवद्ध ८१२७ कहे तिनमेंतैं चारहजार चारसौ पचानवे तो पहिले स्वर्गविषैं कहे अर १४८८ दूजेस्वर्गविषै कहे तीजे स्वर्गविषैं ६१६ चौथे स्वर्गविषैं २०३ अर पांचवें स्वर्गविषैं २८६ छठे स्वर्गविषैं ९४ अर सातवें स्वर्गविषैं १२५ आंठवेंविषैं ३१ अर नवमें स्वर्गविषैं ५८ दसवें स्वर्गविषैं १९ अर ग्यारहवें स्वर्गविषैं ५५ बारहवें स्वर्गविषैं १८ तेरहवें स्वर्गविषैं १४ अर चौंदहवें स्वर्गविषैं ४८ पंद्रहवें स्वर्गविषैं १२० सोलहवें स्वर्गविषैं उनतालीस ॥ ७३ ॥ अर अधोग्रैवेयक पहिले त्रिकविषैं विमान एकसौ तेईस तिनमें पहिले ग्रैवेयकविषैं ४५ दूजे स्वर्गविषैं ४१ तीजेस्वर्गविषैं ३७ ये सब १२३ भये अर चौथे ग्रैवेयकविषैं ३३ पांचवें ग्रैवेयकमें २९ छठे ग्रैवेयकमें २५ ये श्रेणीबद्ध विमान कहे अर ऊर्द्ध त्रिकविषैं सातवें ग्रैवेयक विषैं २१ अर आठवेंमें १७ नवमेंमें १३ ये श्रेणीबद्ध कहे अर नव अनुत्तरके नव अर पंचानुत्तरके पांच तिनमें एक इंद्रक सहित ८१२७ बाकी सब विमान प्रकीर्णक जानहु ॥ ७७ ॥ तिन विमाननिमें प्रथम स्वर्गविषैं संख्यात योजनके विस्तार ६४०००० हैं अर दूजे स्वर्गविषैं विमान संख्यात योजनके विस्तार ५६०००० तीजे स्वर्गविषैं २४०००० अर चौथे स्वर्गविषैं १६०००० अर पांचवें छठेविषैं ८०००७ अर सातवें आठवेंविषैं १०००० अर नवमें दसवेंमें ४००४ अर ग्यारहवें बारहवेंविषैं ३९७६ तेरहवें चौदहवें स्वर्गविषैं ८८ अर पंद्रहवें सोलहवेंविषैं ५२ स्वर्गनमें ये संख्यात योजनके

कार्य्य उपजै तो स्वतःस्वभाव खरके सींग भी क्यों न उपजै? जैसा कारण होय वैसाही कार्य्य उपजै। जौके बीजतैं शालि न उपजै ऐसे अन्य द्रव्यकी उत्पत्ति नाहीं तातैं मुख्य उपादान कारण तो सबको अपना अपना हैं अर दूजे द्रव्यका दूजे द्रव्यकूं जो कारण कहिये है सो सहकारी कारण है मुख्य कारण नाहीं, सब द्रव्यनिको वर्तना सहाई काल कहा सो सहकारी कारण है समयादिक व्यवहारकाल कालाणुका पर्याय है, सो पुद्गल परमाणुके गमनकरि जाना जाय है ॥ १५ ॥ पुद्गल परमाणु मन्द चाल चले तो एक समयमें आकाशके एक प्रदेश गमन करै अर शीघ्र गमन करै तो एक समयमें चौदह राजू जाय ॥१६॥ अर समय आवली उच्छ्वास प्राण स्तोक इत्यादिक व्यवहार कालके भेद हैं, जिस कालका एक भागसे दूजा भाग न होय सो समय कहिये। अर जो असख्यात समय व्यतीत होय सो एक आवली कहिए अर संख्यात आवलनिका एक उच्छ्वास कहिये। उच्छ्वास अर निश्वास इन दोऊको प्राण कहिये। अर सप्त प्राणनिका एक स्तोक कहिये। अर सप्त स्तोकनिका एक लव कहिये। अर सतहत्तर लवका एक मुहूर्त कहिये। अर तीस मुहूर्तका एक अहोरात्र कहिये अर पंद्रह अहोरात्रका एक पक्ष कहिये अर दो पक्षका एक मास कहिए। अर दो मासका एक ऋतु कहिए। अर तीन ऋतुनिका एक अयन कहिए। अर दो अयनोंका एक वर्ष कहिए। अर दश वर्षनिकूं दशगुणे करिए तो वर्ष १०० होय सौको दशगुणे करिए तव वर्ष १००० होय अर हजारकूं सौ गुणे करिए तव एकलाख वर्ष होय। अर एक लाखकूं चौरासी गुणे करिए तव चौरासीलाख वर्ष होय सो एक पूर्वांग कहिए अर चौरासी लाख पूर्वांग व्यतीत होवे तब एक पूर्व कहिए। अर पूर्वको चौरासीलाख गुणा करिए तव एक पूर्वांग होय। अर चौरासीलाख पूर्वांगका एक पर्व होय। अर चौरासीलाख पर्वका एक नयुतांग होय ॥ ५ ॥ अर चौरासीलाख नयुतांगका एक नयुत होय ॥ ६ ॥ अर चौरासीलाख नयुतका एक कुमुदांग होय ॥ ७ ॥ अर चौरासी लाख कुमुदांगका एक कुमुद होय। ८।१६। अर चौरासीलाख कुमुदका एक पद्मांग होय ॥ ९ ॥ अर चौरासीलाख पद्मांगका एक पद्म होय ॥ १० ॥ अर

कालचक्रका वर्णन ।

अथानन्तर—सातवें अध्यायका आरम्भ करें हैं। कालद्रव्य दो प्रकार है—एक मुख्य कहिये निश्चयकाल अर दूजा गौणकाल कहिये व्यवहारकाल सो कालद्रव्य वर्तना लक्षण है अर वर्ण गंध रस स्पर्श इनकरि रहित है अर अगुरुलघु कहिये गुरुता अरु लघुता तिनकरि रहित है ॥ १ ॥ जैसे धर्मद्रव्य गति सहाई अर अधर्मद्रव्य स्थिति सहाई आकाश अवकाश देबेकूं सहाई तैसे काल वर्तना सहाई है। जैसे ज्ञानी जन आगमकी दृष्टिकर धर्म अधर्म आकाशका निश्चय करैं तैसे कालका भी निश्चय करना ॥ ३ ॥ जीव अर पुद्गलका परिणमन अनेक प्रकार है, सो परिणमनका सहाई कालद्रव्य है, अर गौण काल कहिये समय आवली घटिकादिरूप व्यवहारकाल ताकी प्रवृत्ति मुख्यकाल जो कालाणुरूप निश्चय कालद्रव्य ताके आधीन है ॥ ४ ॥ सबही द्रव्यनिके परिणामादि वृत्तियें अंतरंग अर बहिरंग कारणतैं होय हैं ॥ ५ ॥ अंतरंग कारण तो वस्तुका स्वभाव है सो जीवका जीवमें है अर पुद्गलका पुद्गलमें है अर सबनिका सबनिमें है, अंतरंग कारण तो आपका आपहीमें है सो सबही द्रव्य अपने स्वभाव परिणमें हैं ॥६॥ अर बहिरंगकारण सबनिके परिणमनको निश्चयकालका सर्वज्ञदेवने दिखाया है सो निश्चय करना। लोकाकाशके एक एक प्रदेशविषैं एक एक कालाणु तिष्ठै है कोई प्रदेश कालाणु विना नाहीं अर सर्व कालाणु परस्पर जुदा हैं कोऊ काहुसूं न मिलै लोकके असंख्यात प्रदेशनिमें असंख्यात कालाणु हैं, द्रव्यार्थिकनयकरि सब ही द्रव्य निर्विकार हैं अर जन्म मरणतैं रहित हैं नित्य हैं अपने स्वरूपविषै तिष्ठै हैं ॥९॥ अर पर्यायार्थिकनयकरि अगुरुलघु गुणकरि समय २ परिणमन सबके हैं सो सबही द्रव्य समयवर्ती अर्थपर्यायकरि क्षणवर्ती हैं अनित्य हैं नित्यता अर अनित्यता द्रव्यविषैं दोऊ हैं निश्चयकालका पर्याय समयादिरूप व्यवहारकाल अतीत अनागत वर्त्तमानके भेदकरि तीन प्रकार है। अर अनन्त समयके उपजावने थकी कालाणुको अनंत समय कहिये, कारणरूप कालाणु द्रव्यथकी समयरूप पर्यायकी उत्पत्ति है कारण विना कार्यकी उत्पत्ति कदाचित् न होय ॥ १२ ॥ जो कारणबिनाही

चास योजन है अर तीन वातवलय पहिले कहे हुते, तिनमें दोय वातवलयका वाहुल्यता तो तहां तीन कोसकी है अर तीजा तनुवातवलय ताकी वाहुल्यता तहां पंद्रहसौ पिचहत्तर धनुष है ॥ ३३ ॥ सो तनुवातवलयके अंतविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं तिनकी उत्कृष्ट अवगाहना धनुष ५२५ जघन्य अवगाहना साढे तीन हाथ यह जिनागमविषैं कह्या है। सिद्ध भया है प्रयोजन जिनका ऐसे भगवान जहां एक विराजे हैं तहां अनंत विराज रहे हैं एक ठौर अनंत समाये हैं ऐसी अवगाहना शक्ति है ॥ ३४ ॥ वे भगवान शरीररहित सुख पिंड सिद्धपरमेष्ठी विघ्नरहित ज्ञानोपयोग अर दर्शनोपयोगकरि युक्त हैं ॥ ३५ ॥ वे सदा सुखी सर्व लोक अर अलोकको निरंतर अनंत पर्याय सहित जानै हैं अर देखे हैं अपने स्वभावमें तिष्ठै हैं ॥ ३६ ॥ वे सिद्ध महा शुद्ध सर्व वस्तुके वेत्ता जन्म जरा मरण रहित अविनाशी भए अविनाशी धामविषैं बंधनरहित शाश्वते तिष्ठै हैं ॥ ३७ ॥ यहां गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक! तुझे जोतिषी देवलोकनिके पटलका प्रगट व्याख्यान कह्या अर मोक्ष पर्यंत स्वर्गलोकका व्याख्यान तुझे कहा, हे नरपति! मैंने संक्षेपमें त्रैलोक्य प्रज्ञप्तिका व्याख्यान किया यह व्याख्यान काननिकूं सुखदाई है सो कल्याणके अर्थ तुझे कह सुनाया। अब हे चिरंजीव! जो उपक्षेत्रका व्याख्यान कर कालका व्याख्यान मैं तोहि कहूं हूं सो तू एकाग्र चित्तकरि सुनि ॥ ३८ ॥ यह धर्मध्यान महा उज्ज्वल उदयरूप मोक्षका कारण जिनेंद्रदेवने कह्या ताके चार पाये। आज्ञाविचय १ अपायविचय २ अर विपाकविचय ३ अर संस्थानविचय ४ ये चारों पाये चित्तवृत्तिके निरोधके कारण हैं, यह लोकके आकार चिंतवन जितेंद्री पुरुषनिकूं निरंतर करना या संस्थानविचयकरि धर्मध्यान पूर्ण होय है मन अर इंद्रियरूप माते हाथी बश करनेका यह धर्म बडा उपाय है तातैं जो विवेकी मन इंद्रिय वश किया चाहैं सो संस्थानविचयका चिंतवनकरि समस्त लोककूं हेय जान शुद्ध आत्माकूं उपादेय मान आत्माका ध्यान करै ॥ १३९ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ज्योतिर्लोकोर्द्धलोकवर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

अवधि कही अर ऊपरली अवधि समस्त ही देवनिके अपने अपने विमानकी ध्वजा पर्यंत जानहु आगे नाहीं ऐसा निश्चय सर्वज्ञदेवने कह्या है। अर ऊपरले सब ही देवनिकी देवी पहिले दूजे स्वर्ग उपजे हैं आगे देवीनिकी उत्पत्ति नाहीं, दक्षिण दिशाके देवनिकी नियोगिनी देवी सौधर्मस्वर्गविषैं उपजे हैं अर उत्तर दिशाके देवनिकी देवी ईशान स्वर्गविषैं उपजे हैं सो अपनी अपनी नियोगिनी जान ऊपरले देव इन दो स्वर्गनितैं लेजाय हैं अर पहिला तीजा पांचवां सातवां ग्यारहवां पंद्रहवां यह दक्षिण श्रेणीके हैं अर इनकी देवी पहिले स्वर्गविषैं उपजै हैं सो अपनी २ लेजाय हैं दूजा चौथा छठा आठवां बारहवां सोलहवां उत्तरश्रेणीके हैं सो इनकी देवी दूजे स्वर्गविषैं उपजै है सो भी लेजाय हैं सौधर्म स्वर्गविषैं केवल देवांगनानिके निवासके विमान छैलाख हैं अर ईशान स्वर्गविषैं चार लाख विमान हैं तिनविषैं देवी उपजे हैं। कैसी है देवी सुंदर वस्त्र आभरणकरि मन अर नेत्रनिकी हरणहारी हैं महासुन्दर रूपकरि संयुक्त हैं अनेक विक्रियाके धारक जो हाव भाव विभ्रमविलास तिनकरि मंडित महा मनोज्ञ हैं स्वभावहीकरि प्रेमकी भरी अनेक पल्यकी आयुकी धरणहारी महासुखकरि युक्त हैं तिन देवीनिसहित इंद्र तथा सामानिक त्रायस्त्रिंशत आदि देव सोलह स्वर्ग पर्यन्त सागरनिकी आयुके धरणहारे दीर्घकाल जीवैं महा सुख भोगवें हैं ११५ अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर अहमिंद्र हैं वे इंद्रनितैं अनंत गुणा सुख भोगवें हैं तिनके साता-वेदनीका पूरण उदय है स्त्रीरहित शांतभावरूप परम सुख भोगवें हैं अर सर्वार्थसिद्धिके परे बारह योजन सिद्ध-निका स्थानक है सो तीनलोकके अग्रभागमें है वह अष्टमी धरा त्रैलोक्यविषै प्रसिद्ध है सुप्रभानामा पृथ्वी सात राजू लम्बी एक राजू चौडी आठ योजन जड ताके मध्यविषैं आठ योजन नाडी है अर अनुक्रमकरि घटती गई है सो अंतविषैं अंगुलके असंख्यातवें भाग स्थूलता धरै है ऊंचा वर्तुलाकार श्वेत छत्र ताके समान उज्ज्वल है ॥ २७ ॥ पैंतालीस लाख योजनके विस्तारकूं धरै है ऐसी मोक्ष शिला है वह अष्टम धरा ताके समान अर धरा नाहीं ऐसी भगवंतदेवने भाषी है। अर मुक्तिशिलाकी प्रदक्षिणा एक कोडि बयालीस लाख ३० हजार दो सौ उनं-

चौरासीलाख पद्मका एक नलिनांग होय ॥ ११ ॥ अर चौरासीलाख नलिनांगका एक नलिन होय ॥ १२ ॥ अर चौरासीलाख नलिनोंका एक कमलांग ॥ १३ ॥ अर चौरासी लाख कमलांगका एक कमल होय ॥ १४ ॥ अर चौरासीलाख कमलका एक टुट्यांग ॥ १५ ॥ अर चौरासीलाख टुट्यांगका एक टुटयु ॥ १६ ॥ अर चौरासी लाख टुटयुका एक अटटांग ॥ १७ ॥ अर चौरासीलाख अटटांगका एक अटट ॥ १८ ॥ अर चौरासीलाख अटटका एक अमुमांग ॥ १९ ॥ चौरासीलाख अमुमांगका एक अमम ॥ २० ॥ अर चौरासीलाख अममका एक उहांग ॥ २१ ॥ अर चौरासीलाख उहांगका एक उह ॥ २२ ॥ अर चौरासीलाख उहका एक लतांग ॥ २३ ॥ अर चौरासीलाख लतांगका एक लता ॥ २४ ॥ अर चौरासीलाख लताका एक महालतांग ॥ २५ ॥ अर चौरासीलाख महालतांगकी एक महालता ॥ २६ ॥ अर चौरासीलाख महालताका एक सिर प्रकंपित ॥ २७ ॥ अर चौरासीलाख सिरप्रकंपितका एक हस्त प्रहेलिका ॥ २८ ॥ अर चौरासीलाख हस्तप्रहेलिकाका एक चर्चिक ॥ २९ ॥ यहांतक मध्य संख्यात वर्षकालकी मर्यादा कही अर अंकनिकी संख्याकूं उलंघै सो उत्कृष्ट संख्यात वर्ष वा असंख्यात अनंतकाल ताके पल्यसागर कल्पादि अनंत भेद हैं ॥३१॥ पुद्गल परमाणु आदि मध्य अंततै रहित अविभागी हैं इंद्रियगोचर नाहीं मूर्तिक हैं तोहू इंद्रियनितैं अगम्य हैं महासूक्ष्म हैं एक प्रदेशी हैं ॥ ३२ ॥ अर एक रस, एक वर्ण, एक गंध, दो स्पर्श ये पांचगुण एक कालमें धारै हैं अर शब्दतैं रहित हैं अर स्कंधके योगकरि शब्दकी उत्पत्तिका कारण है ॥ ३३ ॥ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श इन गुणनिकरि परमाणु गले पूरे तथा रूक्ष स्निग्ध गुणके घटने वढनेतैं उनके स्कंध परस्पर मिलैं अर विछुरैं तातैं पुद्गल कहिये स्कंधकी न्याईं परमाणुहीकूं पुद्गल कहिये वर्णादिक गुण मिलैं अर विछुरैं ॥ ३६ ॥ अनंतानंत परमाणूनिके समूहका अब संज्ञादिकका नाम स्कंध कहिये अर आठ संज्ञादिक एक संज्ञा संज्ञादिक कहिये, अर आठ संज्ञा संज्ञादिकका एक त्रसरेणु कहिये, आगे सनासन ततरेणु त्रसरेणु रथरेणु उत्तम मध्यम जघन्य भोगभूमि वा कर्मभूमिके बालका अग्रभाग क्रमतैं अब

१२९

यनिकी संख्या कहिये अर असंख्यात कोडि वर्षके जितने समय होंय तेते व्यवहारपल्य जावें तब एक उद्धारपल्य कहिये ॥५१॥ अर असंख्यात कोटि वर्षके जेते समय होंय तेते ही उद्धारपल्य जावें तब एक अद्धापल्य कहिये अर अद्धापल्य दश कोडाकोडी जांय तब एक सागर कहिये ऐसी दस कोडाकोडी सागरकी एक अवसर्पिणी अर दस कोडाकोडी सागरकी एक उत्सर्पिणी सो इनके प्रत्येक प्रत्येक छै छै काल हैं वस्तुनिकी शक्ति अर आयु काय सब जाविषै घटती जावै सो अवसर्पिणी अर जाविषै वढती जाय सो उत्सर्पिणी तिनमें अवसर्पिणीके छै काल, पहिला सुखमासुखमा, दूजा सुखमा, तीजा सुखमादुखमा, चौथा दुखमासुखमा, पांचवां दुखमा, छठा दुखमादुखमा, ये तो अवसर्पिणीके कहे अर उत्सर्पिणी कालका पहिला दुःखमादुःखमा दूजा दुखमा तीजा दुखमासुखमा, चौथा सुखमा दुखमा, पांचवां सुखमा, छठा सुखमासुखमा ॥५९॥ तिनमें अवसर्पिणी कालका पहिला सुखमासुखमा सागर कोडाकोडी चार अर दूजा सागर कोडाकोडी तीन अर तीजा सागर कोडाकोडी दोय अर चौथा वयालीस हजार वर्ष घाटि सागर एक कोडाकोडी अर पांचवां वर्ष हजार इक्कीस अर छठा वन हजार इक्कीस या भांति अवसर्पिणीके छह काल कहे ये अवसार्पिणी अर उत्सर्पिणी दोऊ भरत अर ऐरावतक्षेत्रविषैं प्रवर्ते और क्षेत्रनिमें नांहीं, इन दोऊ ही क्षेत्रनिमें आयुकायादिककी हानि वृद्धि है अर सर्वत्र सदा एक रीति है। पांच मेरुनिके पांच भरत अर पांच ही ऐरावत इन दस क्षेत्रनिमें पहिले दूजे तीजे कालविषै कल्पवृक्षनिकरि शोभित भोगभूमि हुती सो युगल ही उपजे। पहिले कालविषै शरीर ऊंचा कोस तीन आयु पल्य तीन। अर दूजे कालमें शरीर कोस दोय आयु पल्य दोय। अर तीजे कालमें काय कोस एक अर आयु पल्य एक पहिले कालमें देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमि समान रीति। अर दूजे कालमें हरिक्षेत्र रम्यक्क्षेत्र कैसी रीति है अर तीजे कालमें हैमवत अर हैरण्यवतक्षेत्र कैसी रीति है ॥६६॥ अर पहिले कालमें मनुष्यनिकी उगते सूर्यकीसी प्रभा अर दूजे कालमें पूर्ण चन्द्रमाकीसी प्रभा अर तीजेमें प्रियंगुमणि जैसी प्रभा स्त्री पुरुष सब ही सुन्दर अर पहिले कालमें तीन दिन पीछे बदरीफल समान आहार अर

सनासनसूं लगाय आठ आठ गुणा मोटा जानना अर आठ कर्मभूमियाका बालाग्रकी एक लीख कहिये अर आठ लीखनिकी एक जूं कहिये अर आठ जूंवानिका एक यव कहिये अर आठ यवनिकी एक उत्सेधांगुल कहिये सो या उत्सेधांगुल करि अल्प वस्तूनिका प्रमाण है अर जीवके देहकी उच्चताका प्रमाण है अर पांचसौ उत्सेधांगुलकी एक प्रमाणांगुल कहिये अर प्रमाणांगुल अवसर्पिणी कालका प्रथम चक्रवर्त्ती पांचसौ धनुषके शरीरका धारक होय है ताकी जानहु सो अकृत्रिम वस्तूनिकी ऊंचाई अर चौंडाई द्वीप अर सागर अर सुमेरु आदि पर्वतनिका प्रमाण या प्रमाणांगुलतैं जानना अर अजितनाथ स्वामीतैं लेकरि पार्श्वनाथ पर्यंत जा समयमें जेता शरीर भया तेता शरीरकी जो अंगुल सो आत्मांगुल कहिये सो उन अंगुलनिका प्रमाण उस समयके नगरादिक ग्रहादिक अर छत्र चामरादिकका प्रमाण जानहु । भावार्थ–अंगुल तीन प्रकार है एक उत्सेधांगुल दूजा प्रमाणांगुल तीजा आत्मांगुल, सो अकृत्रिम वस्तूनिका विस्तार तो प्रमाणांगुलतैं है अर समय समय नगरादिकका प्रमाण आत्मांगुलतैं है अर आठ जौंकी एक उत्सेधांगुल ताकरि अल्प वस्तूनिका प्रमाण जानहु । अर जीवनिके शरीरकी ऊंचाई पांचसौ धनुष अर साढे तीन हाथ अर तीन कोस यह सव उत्सेधांगुलतैं गिनिये सो छै उत्सेधांगुलका पाव हाथ होय अर वारह अंगुलकी एक विलस्त होय दोय विलस्तका एक हाथ अर दो हाथका एक किष्कु अर दो किष्कुका एक धनुष सो धनुषका नाम दंडहू कहिये अर २००० धनुषका एक कोस कहिये अर चार कोसका एक योजन कहिये अथवा आठ हजार धनुषनिका एक योजन कहिये ॥ ४६ ॥ क्षेत्रनिकी चौडाई लंबाई अर पर्वतनिकी ऊंचाई ये सव वडे योजनतैं कहे सो वडे योजन प्रमाणांगुलतैं है अर क्षेत्रकी जेती चौडाई तातैं तिगुनी प्रदक्षिणा जानहु ॥४७॥

अथानंतर–पल्यका विचार कहै हैं । एक गोल खाडा एक योजन चौडा अर एक योजन लंबा अर एक योजन ऊंडा सो उत्तम भोगभूमिके सात दिनके उर्णाके रोमनिके अग्रभागकरि गाढा वज्रतैं गदातैं कूट कूट भरिये अर सौ वर्ष जांय तव एक रोम काढिये सो या विधि काढते काढते जो खांडा रीता हो जाय सो व्यवहारपल्यके सम-

चौरासीलाख पद्मका एक नलिनांग होय ॥ ११ ॥ अर चौरासीलाख नलिनांगका एक नलिन होय ॥ १२ ॥ अर चौरासीलाख नलिनोंका एक कमलांग ॥ १३ ॥ अर चौरासी लाख कमलांगका एक कमल होय ॥ १४ ॥ अर चौरासीलाख कमलका एक तुट्यांग ॥ १५ ॥ अर चौरासीलाख तुट्यांगका एक तुट्यु ॥ १६ ॥ अर चौरासी लाख तुट्युका एक अटटांग ॥ १७ ॥ अर चौरासीलाख अटटांगका एक अटट ॥ १८ ॥ अर चौरासीलाख अटटका एक अमुमांग ॥ १९ ॥ चौरासीलाख अमुमांगका एक अमम ॥ २० ॥ अर चौरासीलाख अममका एक उहांग ॥ २१ ॥ अर चौरासीलाख उहांगका एक उह ॥ २२ ॥ अर चौरासीलाख उहका एक लतांग ॥ २३ ॥ अर चौरासीलाख लतांगका एक लता ॥ २४ ॥ अर चौरासीलाख लताका एक महालतांग ॥ २५ ॥ अर चौरासीलाख महालतांगकी एक महालता ॥ २६ ॥ अर चौरासीलाख महालताका एक सिर प्रकंपित ॥ २७ ॥ अर चौरासीलाख सिरप्रकंपितका एक हस्त प्रहेलिका ॥ २८ ॥ अर चौरासीलाख हस्तप्रहेलिकाका एक चर्चिक ॥ २९॥ यहांतक मध्य संख्यात वर्षकालकी मर्यादा कही अर अंकनिकी संख्याकूं उलंघे सो उत्कृष्ट संख्यात वर्ष वा असंख्यात अनंतकाल ताके पल्यसागर कल्पादि अनंत भेद हैं ॥३१॥ पुद्गल परमाणु आदि मध्य अंततैं रहित अविभागी हैं इंद्रियगोचर नाहीं मूर्तिक हैं तोहू इंद्रियनितैं अगम्य हैं महासूक्ष्म हैं एक प्रदेशी हैं ॥ ३२ ॥ अर एक रस, एक वर्ण, एक गंध, दो स्पर्श ये पांचगुण एक कालमें धारै हैं अर शब्दतैं रहित हैं अर स्कंधके योगकरि शब्दकी उत्पत्तिका कारण है ॥ ३३ ॥ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श इन गुणनिकरि परमाणु गले पूरे तथा रूक्ष स्निग्ध गुणके घटने वढनेतैं उनके स्कंध परस्पर मिलैं अर बिछुरैं तातैं पुद्गल कहिये स्कंधकी न्याईं परमाणुहीकूं पुद्गल कहिये वर्णादिक गुण मिलैं अर बिछुरैं ॥ ३६ ॥ अनंतानंत परमाणूनिके समूहका अब संज्ञादिकका नाम स्कंध कहिये अर आठ संज्ञादिक एक संज्ञा संज्ञादिक कहिये, अर आठ संज्ञा संज्ञादिकका एक त्रसरेणु कहिये, आगे सनासन ततरेणु त्रसरेणु रथरेणु उत्तम मध्यम जघन्य भोगभूमि वा कर्मभूमिके बालका अग्रभाग क्रमतैं अब

सींगवारे हैं अर पश्चिम दिशाविषै पूंछवाले हैं। अर उत्तरदिशाविषै वचन रहित हैं अर चारों विदिशानिविषै सूस्या कैसे कानवाले हैं अर उत्तर अर दक्षिणकी कोणविषै अश्वमुख अर सिंहमुख हैं ॥ ७३ ॥ अर आगे दोऊ तरफ मूसाके कानवाले अर सींगवाले हैं अर श्वानमुख अर वंदरमुख पूछवाले हैं इनमें विजयार्द्धकी दोऊ तरफ गूंगा अर सूसाके कानवाले अर गोमुख अर मींढाके मुखवाले हैं ॥ ७५ ॥ अर हिमवान् पर्वतकी पूर्व दिशामें विजुली समान मुखवाले अर पश्चिम दिशामें श्यामसुख हैं अर शिखरी पर्वतकी पूर्व दिशामें मेघमुख हैं अर पश्चिम दिशाविषै विजुली समान मुख है अर विजयार्द्धके दोऊ अंतविषै दर्पणमुख है अर गजमुख है ये चौबीस अंतरद्वीप हैं तिनमें कुभोगभूमिया हैं ॥ ७८ ॥ अर दिशामें पांचसौ योजन जाय अर विदिशामेंहू पांचसौ योजन परे जाय तहां अंतर दिशामें पचास द्वीप हैं ते छहसौ योजन चौडे तिनमें पर्वत हैं सो दिशामें पर्वत सौ योजनका विस्तीर्ण है अर पर्वत सम्बन्धी पचीस योजन दिशा विदिशाके बीच विदिशामें पचास योजनका चौड़ा द्वीप है सो पर्वत पचानवे भाग तो जलविषै ऊंडा है अर जलथकी एकयोजन ऊंचा है अर वेदीकरि संयुक्त है अर वाही भागकूं सोलहगुणा करिए तब ऊपर जलवेष्टित नीचला क्षेत्र अर ऊपरला क्षेत्र जल संयुक्त है ॥ ४८१ ॥ लवण-समुद्रके मध्य जेते जंवूद्वीपके निकटवर्ती द्वीप हैं तेते ही धातुकीखंडके निकटवर्ती लवणोदधि संबंधी द्वीपके निकट जानहु तिनमें अष्टादशकुल कुभोगभूमियाके हैं तिन सबनिका एक पल्य आयु है तिनमें एकटंगे तो गुफामें वसैं हैं अर मीठी माटीका भोजन करैं हैं अर सब वृक्षनिके मूलविषै बसैं हैं अर फल पुष्पके आहारी हैं अर एक दिनके अंतर है भोजन जिनका अर ते मरकर व्यंतर अर भवनवासी देव होय हैं ॥ ८४ ॥ अर जंबूद्वीप समान समुद्रका कोट है ताके अभ्यंतर शिलापट्ट है अर वाहर बनकी पंक्ति है ॥ ८५ ॥ जंबूद्वीपके विस्तारतैं लवण-समुद्रका विस्तार चौगुणा है तामें तीनयोजन घाट अंतरमंडलकी सूची है अर द्वीपसमुद्रकी पांचलाख योजनकी सूची है तामें समुद्रकी सूची दोलाख योजनकी चौड़ी सो घटाइए तब तीनलाख योजन रहा ताकूं चौगुना करिए

योजन चौडे अर मूलविषै अर मुखविषैं १०० योजन चौंडे हैं अर इन छोटे कलशनिका अंतराल परस्पर १२५ योजनका है अर बड़े कलशनितैं अन्तराल ७९८ योजन अर एक कोस कछुइक अधिक है अर यह क्षुद्रकलश अर बडे कलश यथायोग्य जलके प्रवाह करि संयुक्त हैं अर समुद्रके तटतैं ४२००० योजन परे जाइए तहां चारों दिशामें दोय दोय पर्वत हैं ते हजार हजार योजन ऊंचे हैं ॥ ६० ॥ तिनिमें पहिला पूर्व दिशाका जो पाताल कलश ताकी दोऊ तरफ दो पर्वत हैं एकका नाम कौस्तुभ दूजेका कौस्तभभास, ये रूपामई हैं अर आधे घड़के आकार हैं अर इनके अधिष्ठाता दो देव हैं तिनके नाम उदंग अर उदवास तिन देवनिकी विभूति विजयदेवकी विभूति समान जानहु ॥ ६१ ॥ अर दक्षिण दिशाकी तरफ कदंवक नामा कलशके दोऊ तरफ उदंक अर उद्वास नामा पर्वत हैं तिनके अधिपति शिव अर शिवदेव हैं ॥ ६२ ॥ अर पश्चिमकी उर बडवामुख कलशके दोऊ तरफ शंख अर महाशंख नामा पर्वत है ते शंख समान उज्वल है तिनके अधिपति जो देव तिनके नाम उदंक अर उद्वास हैं ॥ ६३ ॥ अर चौथा उत्तर दिशाकी उर यूपकेसर नामा कलश ताके दोऊ तरफ दोय पर्वत हैं तिनके नाम उदंक अर उद्वास तिनके स्वामी लोहित अर लोहितांक नामा देव हैं तिन देवनिकी विभूति विजयदेव समान जानहु। अर इन पर्वतनिका पातालकलशसूं अन्तर ११६००० योजनका है ॥ ४६६ ॥ अर इन पर्वतनिके शिखरविषैं नागकुमार देव लवणसमुद्रके वेलंधर तिनमें देवनिका निवास है ॥ ६७ ॥ लवणसमुद्रकी अभ्यंतरकी तरफ तरंगनिके धरण हारे ४२००० देव हैं तिनका नियोग है अर ७२००० नागकुमार देव जलकी वाह्य तरंगणीकूं धारैं हैं अर जलक्रीडाविषैं है अति आदर जिनका ॥ ६८ ॥ अर २८००० नागकुमार देवजलके अग्रकी शिखाकूं धारैं हैं ॥ ६९ ॥ अर समुद्रकी पश्चिम दिशामें १२००० योजन जाइए तहां एक गौतम नामा द्वीप १२००० योजनके विस्तार है तामैं गौतम नामा गिरि है ताका गौतमनामा देव अधिपति है सो विभूतिकरि कौस्तुभनामा देवसमान है अर या गौतमनामा द्वीपविषै कुभोगभूमियां मनुष्य हैं तिनमें पूर्वदिशामें तो इकटंगे हैं अर दक्षिण दिशाविषै

पक्षविषै दिनदिन वृद्धि अर कृष्णपक्षविषै दिनदिन हानि वेदिकाके अंत विषै है ॥ ४१ ॥ अर अधोभागविषै समुद्र द्रोणीके आकार है अर आकाशविषै विस्तीर्ण है अथवा जुडी हुई दो नावके आकार है अथवा यवकी राशि तुल्य है ॥ ४२ ॥ अर जगती कहिये वेदी तातैं ९५००० योजन गये समुद्रके बीच चार दिशामें चार पाताल-कलश हैं तिनके नाम—पूर्वदिशामें पाताल कलश १ पश्चिम दिशामें बडवामुख २ दक्षिण दिशामें कदंबक ३ उत्तर दिशामें यूपकेसर ४ ये पातालकलश मूलविषै अर अंतविषै १०००० योजन चौडे हैं अर मध्यविषै लाख योजन चौडे हैं अर लाख योजन उंडे हैं अर ये जलसमान पाताल तिनकी मोटाई ५०० योजनकी है अर तेतीस हजार तीनसौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीसराभाग इतना इतना एक २ कलशका एक २ भाग है ऐसे तीन २ भाग एक एक कलशविषै हैं सो ऊपरले भागमें जल है अर मध्यविषै जल पवन दोऊ हैं अर मूलविषै केवल पवन है, पवनका ऊचा नीचा स्वभाव है सो पवन ऊंचा आवै तव जल ऊंचा चढै अर नीचा पवन होय तब जल नीचा आवै शुक्लपक्षमें जल ऊंचा जाय अर कृष्णपक्षमें जल नीचा आवै अर इन पाताल कलशनिमें अन्तराल परस्पर दोय लाख सत्ताइस हजार एक सौ पौने इकहत्तर योजन है। शुक्लपक्षविषै पूर्णमासीके दिन जलकी पूर्ण बढ़वारी है अर अमावसके दिन सर्वथा जलकी घटवारी है यह तो चार दिशानिके पातालकलश कहे ॥४५१॥ अर चार दिशानिमें छोटे पाताल कलश चार मुख्य अर मूलविषै १००० योजन चौडे अर १००० योजन लंबे मध्यमें दस हजार योजन चौडे हैं अर ऐते ही ऊंडे हैं अर ५० योजनकी इनकी मुटाई है अर एक एकमें तीन तीन भाग हैं अर वाही तरफ जल पवन पाइए है ॥ ५३ ॥ अर एक एक भाग ३३३३ $\frac{1}{3}$ योजन अर एक योजनका तीजा भाग है ऐसे तीन भाग हैं अर इन दिशानिमें कलशनिका अन्तराल ११३०८५ योजन अर एक योजनके आठवें भाग दिशाके कलशनितैं विदिशानिके अन्तराल है अर इन आठों कलशनिके अन्तरालविषै मोतिनिकी पंक्तिकी नाई बीचमें हजार छोटे कलश हैं ते हजार छोटे कलश हजार योजन ऊंडे अर मध्यविषै हजार

तिनकी चारो दिशामें रत्नमई जिनप्रतिमा हैं ते अशोकादि देवनि करि पूज्य हैं ॥ २५ ॥ अशोक वनकी उत्तर पूर्व दिशामें अशोकपुर नगर है तहां अशोकदेवका मंदिर है सो विजयदेवके मंदिर प्रमाण है अर सप्तपर्ण वनतैं पूर्वकी उर सप्तपर्ण नामा पुर है तहांका स्वामी सप्तपर्ण नामा देव है ताका मंदिर अशोकके मंदिर समान है अर चंपकवनतैं दक्षिण पश्चिम दिशा विषैं चंपकपुर है ताका स्वामी चंपकनामा देव है ताका मंदिर तिनही प्रमाण जानहु । अर आम्रवनतैं पश्चिम उत्तरकी उर आम्रपुर है ताका अधिपति आम्र नामा देव है ताका मंदिर तिनही प्रमाण जानहु ॥ ३० ॥ यह जंबूद्वीपके पूर्वदिशाके विजयनाम द्वारपालका वर्णन किया याही भांति वैजयंत जयंत अपराजित तीनों देवनिका वर्णन जानहु । आयु, काय, नगर विभूति, परिवार,. चारों द्वारपालनिका समान जानहु ॥३१॥ यह जंबूद्वीपका संक्षेप वर्णन किया या जंबूद्वीपकूं बेढकर लवणसमुद्र तिष्ठ्या है सो दोयलाख योजन चौडा है, जंबूद्वीपके कोटके खाई समान लवणसमुद्र है सो वेदिका संयुक्त है ॥ ३२ ता लवण समुद्रकी प्रदक्षिणा पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ उनतालीस योजन कछु ऊन है अर अठारह हजार नौ सौ तिहत्तर कोटि छयासठ लाख उनसठ हजार छै सौ योजन प्रमाण लवणसमुद्र विषै प्रकीर्णक जानने ॥ ४३४ ॥ अर दश हजार योजन नीचे ऊपर विस्तार चौडा है अर हजार योजन औंडा है अर ग्यारह हजार योजन शास्वता पृथ्वीतैं ऊंचा रहै है ॥ ३५ ॥ अर तटसूं पंचानवें हाथ गये एक हाथ ऊंचा है अर पंचानवें योजन गये एक योजन ऊंडा है अर आगे पचानवें स्थानक जाय तहां सोलह योजन सोलह हाथ अर सोलह अंगुल ऊंचा है ॥ ४३७ ॥ शुक्लपक्षके पंद्रह दिननिमें पांच हजार योजन समुद्रका जल बधै है अर कृष्णपक्षमें घटै है तब ग्यारह योजन रह जाय है ॥ ३८ ॥ तीन सौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग शुक्लपक्षमें प्रति दिन बधै है अर कृष्णपक्षमें प्रति दिन इतनाही घटै है अर वेदिकाके निकट अंतविषैं मक्खीके पंख समान है तहां आध योजन ऊंचा बधै है, दो सौ छ्यासठ धनुष दो हाथ सोलह अंगुल शुक्ल-

४० योजन उंचा सुमेरुकी चूलिका वैडूर्य मणिमई सो मूलविषैं १२ योजन चौडी अर मध्यविषैं ८ योजन चौडी अर शिखरविषैं ४ योजन चौडी है ॥ ३ ॥ अर चूलिकाकी प्रदक्षिणा मूलविषैं ३७ योजन मध्यविषैं २५ योजन अर अंतविषैं १२ योजन कछुयक अधिक जाननी अर लोहिताक्षमय आदि सुमेरुके चूलिका पर्यंत छह विभाग हैं अर सातवां भाग वनकरि किया सो ११ प्रकार है । पहिला विभाग लोहताक्षमय अर दूजा पद्मराग मय तीजा वज्रमय चौथा सर्वरत्नमय पांचवां वैडूर्य मय छठा हरितालमय सो ये छै भाग कहे सो एक एक भाग १६५०० योजनका है ताके छै विभागनिके ९९००० योजन भये अर सातवां वनकृत भाग ७ ताके ग्यारह भाग भूमिविषै पहिला भद्रशालवन दूजा मानुषोत्तर तीजा देवरमण चौथा नागरमण पांचवां भूतारमण छठा नंदन सातवां उपनंदन आठवां सौमनस नवमां उपसौमनस दसवां पांडुक ग्यारहवां उपपांडुक यह गणधर देवने ग्यारह भाग कहे यह ग्यारह स्थानक कहे तिनविषै ऊंचा चढे तो पर्वतकी चौडाई घटै है, मेरुकी जडसूं ग्यारह योजन ऊंचा चढे एक योजन चौडाई घटै है अर ग्यारह हाथ ऊंचा चढिये तो एक योजन चौडाई घटै है अर नन्दनवनतैं ऊंचा ग्यारह हजार योजन है अर ताही समान चौडाई है, ऐसी ही सौमनसवनकी है । अर पांचवां प्रदेश चूलिकाविषै पांच योजन ऊंचा चढिए तव एक योजन चौडाई घटै अर पांच हाथ ऊंचा चढिये तव एक हाथ चौडाई घटै ऐसे चूलिकाविषै चौडाई घटै ॥ ३।४ ॥ अर सुमेरुकी दोऊ तरफ पार्श्व भुजा प्रत्येक प्रत्येक एक लाख एक सौ योजन अर एक योजनके ग्यारह भाग तिनमें दोय भाग हैं अर नन्दनवनकी पूर्व दिशाविषै पण्य नामा भवन है । अर दक्षिण दिशाविषै वारुणनामा भुवन है अर पश्चिमदिशाविषै गंधर्वनामा भुवन है अर उत्तरदिशाविषै विचित्रक नामा भुवन है सो यह नन्दन वनके चार भुवनतैं ५० योजन ऊंचे हैं अर तीस योजन चौडे हैं अर ९० योजनकी प्रदक्षिणा है ॥ १७ ॥ यह चार भुवन कहे तिनमें पण्यविषै तो सौमनस नामा लोकपाल रमै है । अर वारुणविषै यम नामा लोकपाल रमै है अर गंधर्वविषै वारुण नामा लोकपाल रमै हैं अर चित्रविषै कुवेर नामा लोकपाल रमै हैं यह चारों

थाके दोऊ तरफ दो सिंहासन हैं सो जो दक्षिणकी ओर सिंहासन है तापर सौधर्म इंद्र खडा रहे प्रभुका अभिषेक करै है अर उत्तरकी ओरका सिंहासन पर ईशान इंद्र दूजे स्वर्गका खडा रहे प्रभुका अभिषेक करै है, तीनों सिंहासननिके मुख पूर्वकी ओर हैं तिनपर भरतक्षेत्र अर ऐरावतक्षेत्र अर पूर्व पश्चिम विदेह जम्बूद्वीपके तीर्थंकरनिका जन्मकल्याणकविषै जन्माभिषेक होय है ॥

भावार्थ—चारों दिशाकी चार पांडुकशिला तिनपर चार सिंहासन तिनपर जंबूद्वीपके तीर्थंकरनिका अभिषेक होय है अर पांडुकवनविषै चारों दिशाविषै चार जिनमंदिर हैं ते सब रतनमई महा मनोहर शास्वते अकृत्रिम हैं ॥५५॥ ते पांडुकवनके मंदिर चारो पचीस योजन लंबे अर पौना उन्नीस योजन ऊंचे अर साढे बारह योजन चौडे हैं अर तिनकी आधकोस ऊंडी नीव है ॥५६॥ अर तिन चैत्यालयनिके द्वारकी ऊंचाई चार योजनकी है अर चौडाई दो योजनकी है अर दोय छोटे दरवाजे हैं ते दो योजन ऊंचे अर एक योजन चौडे हैं ॥५७॥ यह तो पांडुकवनके चैत्यालयनिका विस्तार कह्या अर पांडुकवनके घणा नीचे सौमनस बन ताविषै चार जिनमंदिर हैं तिनकी ऊंचाई साढे सैंतीस योजन अर लंबाई पचास योजन अर चौडाई पचीस योजन है अर नींव कोस एक ऊंडी जानहु। जो वर्णन सौमनसवनके चैत्यालयनिका किया ताही प्रमाणकरि कुलाचल अर वक्षार गिरनिके चैत्यालयनिका जानहु। अर नंदनवन भद्रशालवन इनविषै चार चार चैत्यालय हैं तिनकी लंबाई १०० योजन अर चौडाई पचास योजन अर ऊंचाई ७५ योजन जानहु अर तिनकी नींव दोयकोस उंडी है अर सकल विजयार्द्ध पर्वतनिविषै सिद्धायतन चैत्यालय हैं तिनका वर्णन पांडुकवनके चैत्यालयनिके प्रमाण जानहु। अर सकल विजयार्द्धका प्रमाण भरतक्षेत्रके विजयार्द्ध प्रमाण जानहु। अर विजयार्द्धविषै देवछन्दनामा गर्भगृह है सो आठयोजन लम्बा अर चारयोजन ऊंचा अर दो योजन चौडा अर नींव कोस एक ऊंडी ॥३६१॥ अर भगवानका अकृत्रिम चैत्यालय देदीप्यमान रतनमय थंभनिकरि शोभित है अर सुवर्णमई है भीति जिनकी तिन भीतिनिविषै चंद्र सूर्य उडते पक्षी अर मृगनिके युगल

मिले ऐसे चार वन हैं ॥ ७८ ॥ दो देवारण्य दो भरतारण्य ये चार वन हैं अर इन वननिका वेदीका विस्तार भद्र शाल वनकी वेदीकी न्याई विस्तार है ॥ २७९॥ अर विदेह क्षेत्रके बीच ९९००० योजन ऊंचा मेरु है दोऊ भोग भूमि हैं मर्यादा जाकी ॥८०॥ तीन कटनीकरि संयुक्त ९९००० योजन ऊंचा सुमेरु सो पृथिवीविषै प्रसिद्ध है अर मेरु ऊपर चूलिका ४० योजन ऊंची है ताकरि मेरु अति शोभायमान है अर मेरुकी नीव १ हजार योजनकी है अर मूलविषै चौडाई १० हजार योजन अर एकयोजनके भाग ११ तिनमेंसे दस भाग लेने ॥ ८३ ॥ अर याकी परिधि कहिए तो ३१९१० योजन है अर एक योजनके ग्यारह भागनिमें अढाई भाग अर पृथिवीतलतैं एः हजार योजन ऊंचे चढिए तो तहां सुमेरुकी चौडाई दस हजार १०००० योजन है अर तहांकी परिधि ३१६२ योजन है तीनकोस दो सौ वारह धनुप तीनहाथ तेरह अंगुल कछुयक अधिक यह परिधि सुमेरुका जहां भद्रशाल वन है तहां है ॥२८८॥ वहुरि भद्रशाल वनतैं पांच सौ योजन ऊंचे चढिए तहां ५०० योजनका चौडा नंदन वन है ॥८९॥ तहां सुमेरुकी विस्तीर्णता ९९५४ योजन अर ६ कला है सो यह तो व्यास कहा ॥२९०॥ अर तहांका प्रदक्षिणा ३१४७९ योजन है ॥ ९३ ॥ सो यह तो वाह्यप्रदक्षिणा है अर नंदनवनका भीतरका विस्तार ८९५४ योजनका है अर तहांका प्रदक्षिणा २८३१६ योजन अर आठ कलाकी है अर नंदनवनतैं ६२५०० ऊपर चढिए तहां तीजा सौमनसनामा वन है ॥ २९६ ॥ तहां ४२७२ योजन अर आठकलाका वाह्य विस्तार है अर तहांकी वाह्य प्रदक्षिणा १३५११ योजन अर छह कलाकी है अर जो बाहरला विस्तार तातैं हजार योजन घाट माहिला विस्तार मुनि कहे हैं सो ३२७२ योजन अर आठ कला जानहु ॥ २९९ ॥ अर सोमनसवनकी बीचकी परिधि १०३४९ योजन अर तीन कला यहां सुमरुके विस्तार विषै एक योजनका ग्यारह कला लेनी कला कहो अथवा भाग कहो ॥ ३००॥ अर सौमनस वनतैं ३६००० योजन ऊंचा चढिये तहां चौथा पाण्डुक नामा वन है सो पांडुक वनका विस्तार ४९४ योजनका है, तहां मेरुकी परिधि ३१६२ योजन अर एक कोस है ॥ २ ॥ अर

सदा एकरीति है क्षेत्रकी रीति पलटै नाहीं अर नीलाचलके जड़ निकट कुंड हैं तिनमेंतैं निकसी कछादिक देशनिमैं गंगा अर सिंधक्षेत्र प्रति दो दो नदी हैं, विजयार्द्धगिरिकी गुफाकूं उलंघि सीता नदीमें प्रवेश करै हैं, पर्वतकी चौडाई समान गुफाकी लंबाई है अर आठ योजन ऊंची है अर बारह योजन चौडी है अर पचास योजन लंबी है अर एक एक गिरि प्रति दोय दोय गुफा हैं ॥६८॥ अर गंगाकूं आदिले सोलह नदी भरतक्षेत्रकी गंगा समान हैं अर रक्ता रक्तवती आदि ये सोलह नदी निषधाचलतैं निकसीं अर सीतामैं प्रवेश करती भईं यह गंगादि सोलह प्रमाण सो यह बत्ती-ससों नदी पूर्व विदेह विषैं हैं अर पश्चिम विदेहविषैहू वैसीही उसीप्रमाण वेही नाम ये बत्तीस नदी निषधाचल वा नीलाचलतैं निकसी अर शीतोदा नदीमें प्रवेश करती भईं ये चौंसठ नदियें प्रत्येक प्रत्येक चौदह हजार नदीनिके परिवारकरि मंडित हैं अर देवकुरु उत्तरकुरु दो भोगभूमिविषै सीता अर शीतोदा महानदी हैं सो प्रत्येक प्रत्येक चोरासी हजार नदीनिकरि संयुक्त हैं सो दोऊ नदिनिके तटविषैं वियालीस वियालीस हजार नदी प्रवेश करैं हैं अर सीता शीतोदा नदी दोऊनिकरि समुद्रपर्यंत एक एक प्रति पांच पांच लाख बत्तीस हजार अडतीस नदीनिका सब परिवार है, पूर्व पश्चिम विदेहनिमें सब नदीनिका प्रमाण चौदह लाख चोसठ हजार अठत्तर हैं अर भरत क्षेत्रविषैं गंगा अर सिंधु यह दोनों नदी हैं अर इनका परिवार चौदह चौदह हजार नदी हैं अर ऐरावत क्षेत्रविषै रक्ता रक्तोदा नदी हैं तिनका परिवार इनही प्रमाण है अर रोहिता अर रोहितास्या सुवर्णकूला अर रूप्यकूला यह चारों नदी प्रत्येक प्रत्येक अठाईस हजार परिवार संयुक्त हैं। अर हरिता हरिकांता अर नारी नरकांता इन चार नदीनिका परिवार एक एक प्रति छप्पन २ हजार नदी हैं। गंगा सिंधु आदि ये बारह नदी तिनका परिवार सर्व तीन लाख बानवे हजार १२ नदी हैं सब जंबूद्वीपकी नदियें एकत्र करिए तो सत्रहलाख बानवे हजार नब्बे होय हैं। सो लवण समुद्रमें इनका प्रवेश है अर या जंबूद्वीप विषैं बत्तीस महाविदेह अर एक ऐरावत एक भरत यह चौतीस क्षेत्र हैं तिनविषैं चौंतीसवृष-भाचल पर्वत हैं ॥ ७७ ॥ अर सीता शीतोदा दोऊ नदीनके तट पूर्व पश्चिम विदेह पर्यंत लंबे ते समुद्रके तटतैं

भरत ऐरावतके विजयार्द्धकी दोय श्रेणी तिनमें दक्षिण श्रेणीकी नगरी पचास अर उत्तरश्रेणीकी साठ अर विदेहके विजयार्द्धकी श्रेणीनिमें पचपन नगरी हैं एक तो यह विशेष अर दूजा यह विशेष जो विदेहका विजयार्द्धनिविषै तो सदा चौथे कालकी आदिकी रीति अर दोऊ क्षेत्रनिके विजयार्द्धविषै ऋषभदेवके समय तो चौथेकालकी रीति अर वर्द्धमान स्वामीके समय चौथेकालके अंतकी रीति यातैं घटै वधै नाहीं अर विदेहनिमें सदा एक रीति है सो ही एकरीति तहांके विजयार्द्धनिमें है। अर यहांके विजयार्द्धमें महावीर स्वामीतैं लेय महापद्म स्वामीके समयतक आयुवर्ष १२० अर शरीर हाथ ७ ऊंचा अर महापद्म स्वामीके समयतैं बधेगा सो चौबीसवें तीर्थंकरके समय कोटि पूर्व आयु अर शरीर पांचसौ धनुष ऊंचा याके सिवाय विद्याधरनिमें घाट बाढ नाहीं सो विदेहके विजयार्द्धनिमें प्रत्येक प्रत्येक एकसौ दस नगरी हैं अर वत्तीस जो विदेह कहे हैं तिनमें कक्षादि आठ यहां त्रेसठशलाका पुरुष उपजै हैं तिनकी राजधानीनिके नाम—क्षेमा क्षेमपुरी अरिष्टा अरिष्टापुरी खडगा मंजूषा मोषधी पुंडरीकिनी इन पुरीनिमें शलाका पुरुष उपजैं हैं यह इंद्रपुरीके समान पुरी है यह तो आठ कक्षादिके विदेहनिका कही। अर सुसीमा, कुंडला, अपराजिता प्रभंकरा अंकावती पदमावती शुभा रत्नसंचया यह आठ राजधानी वक्षादिक आठ विदेहनिमें अनुक्रमतैं कही हैं ॥६१॥ अर अश्वपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयापुरी, अरजा, विरजा, अशोका, वीतशोका, यह आठ राजधानियें पदमादिक अर विदेहनिकी हैं ॥६३॥ अर विजया वैजयंती जयंती अपराजिता, चक्रा खड्गा, वप्रा अयोध्या यह आठ वप्रादिक आठ विदेहनिकी कही हैं ॥ ६४ ॥ यह सब ही पुरी दक्षिण उत्तरकी ओर लंबी बारह योजन अर पूर्व पश्चिमकी ओर चौडी योजन नव सुवर्णमई हैं कोट अर तोरण जिनके अर इन पुरीनिके हजार हजार बडे दरवाजे अर पांच पांच सौ छोटे दरवाजे अर सात सौ खिरकी अर नानाप्रकार रत्नजडित महा मनोहर हैं कपाट जिनके अर हजार चौहटे अर बारा २ हजार गली, ऐसा इन पुरीनिका विस्तार है ॥६७॥ ये नगरियें अनादि निधन हैं विदेह क्षेत्रविषै प्रलय नाहीं अपना अपना आयु पूर्णकर प्राणी मरै हैं परन्तु क्षेत्रकी

उत्तर विदेहविषैं पश्चिमा गंधमादिनी एक फेनमालिनी एक उर्णमालिनी ये नीलाचलतैं निकसी ये विभंगा नदीके प्रमाण करि रोहिता नदी समान ये विभंगा महानदीतैं मिली ॥

भावार्थ—ये बारह विभंगानदी नीलाचल अर निषधाचलके जडविषै जे कुण्ड हैं तिनमेंसूं निकसी हैं अर सीता अर शीतोदा महानदीविषै जाय मिली हैं तहां रत्ननिके तोरण हैं तिनविषै दिक्कुमारी देवी बसै हैं अर वक्षारगिरि पर्वतनिके मध्य सीता अर शीतोदा दोनों नदीनके तटविषै पूर्व अर पश्चिमके मध्य बत्तीस विदेह हैं ॥ ४४ ॥ तिनके नाम कक्षा सुकक्षा महाकक्षा कक्षकावती आवर्ता लांगलावर्ता पुष्पकला पुष्पकलावती यह आठ विदेह सीता नदी अर नीलाचलके अंतरालविषैं दक्षिण उत्तर लंबे हैं। अर वच्छा सुवच्छा महावच्छा वच्छिकावती रम्या सुरम्या रमणीय मंगलावती ये आठ पूर्व विदेहा सीता नदी निषधाचलके मध्य हैं दक्षिण उत्तर लंबे हैं एक एक क्षेत्र छह खंडनिकरि युक्त है जो चक्रवर्तीका देश है अर पद्मा सुपद्मा महापद्मा पद्मकावती संख्या नलिना कुमदा सरिता ॥ २४९ ॥ यह आठ पूर्व विदेह शीतोदा अर निषधाचलके मध्य हैं दक्षिण अर उत्तर लंबे हैं अर वप्रा सुवप्रा महावप्रा वप्राकावती गंधा सुगंधा गंधला गंधमालिनी यह आठ पश्चिम विदेह नीलाचल शीतोदाके मध्य तिष्ठे हैं नीलाचलतैं शीतोदा पर्यंत लंबे हैं अर एक एक विदेहके छहछह खण्ड सो छहखंडका राज्य चक्रवर्ती करैं अर वासुदेव तीनखंडका राज्य करैं अर एकएक क्षेत्रका २२१३ योजन एक योजनके अष्टभाग घाटि यह पूर्वापर विस्तार चौडा है अर सकल विदेहका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला है तामें सीतानदीका विस्तार योजन ५०० घटार्या तब विदेहका विस्तार ३३१८४ योजन अर चार कला रहा ताका आधा १६५९२ योजन अर दोय कला सो क्षेत्रकी लंबाई सो जो वक्षार पर्वत अर विभंगानदी तिनकी लंबाई जानहु। अर बत्तीस विदहनिमे बत्तीसविजयार्द्धतैं एक विदेहकी जेती चौडाई तेतीही विजयार्द्ध गिरिकी लम्बाई सो जैसा भरतक्षेत्र अर ऐरावत क्षेत्रके विजयार्द्धका वर्णन किया वैसा ही बत्तीस विजयार्द्धका वर्णन जानहु सबके नव शिखर पच्चीस २ योजन ऊंचे वही सकल वर्णन है इतना विशेष जो

सवा चारसै अर चारके पचीससै तिनिमें एक एकके सवा छैसै ॥४६॥ इनमें चौदह पूर्वके पाठी तीनसै ३०० अर विक्रिया ऋद्धिके धारी ९०० अर अवधिज्ञानके तेरासै १३०० अर केवलज्ञानीके सात से ७०० श्रीवर्द्धमान केवल कल्याणकतैं लेय निर्वाण कल्याणक पर्यंत सब सात सौ होहिं। अर विपुलमनःपर्ययके धारी पांच से ५०० अर परवादीनिके जीतनहारे वादित्र ऋद्धिके धारक चारसौ ४०० अर सामान्य मुनि करि नव हजार नवसै ९९०० ये सकल गणधरनि सहित चौदह हजार ऊपर ग्यारह होहिं यह जिनेश्वर मुनीश्वरके संघ करि जिनेश्वरका समवसरण ऐसा सोभता भया जैसा नदीनिके समूहकरि समुद्र सोहै ॥५०॥ सब संघ करि युक्त तीर्थेश्वर राजगृह नगरके निकट आये, कैसा है नगर लक्ष्मीका गृह कहिये भंडार है सोहै है स्वर्णमय रत्नगृह जाविषैं ॥५१॥ अर राजगृह नगरका दूसरा नाम पंचशैलपुर है यह नगर मुनिसुव्रतनाथके जन्म करि परम पवित्र है अर पांच पर्वतनि करि वेष्टित है अर पर सेनाकरि जीत्या न जाय अर महा विषम है ॥ ५२ ॥ पञ्च पर्वतानिके नाम—पहिला ऋषिगिरि पूर्व दिशाकी ओर चौकोर जिनके चहुं ओर नीझरने झरै हैं मानों यह गिरि इंद्रके दिग्गजनिकी न्याई अतिशय कर सब दिशानिकूं शोभित करै है ॥५३। दूजा दक्षिण दिशाकी ओर वैभार नामा पर्वत त्रिकोणाकार सोहै है १ अर तीजा दक्षिण पश्चिमके मध्य विपुलाचल सो त्रिकोणाकार ही सोहै है ॥५४॥ चौथा बलाहक नामा पर्वत चढे धनुषके आकार तीनों दिशानिकूं व्याप्त कर सोहै है ४ अर पांचमा पांडुक पर्वत गोलाकार पूर्व उत्तरके मध्य शोभता भया। ये पांचों पर्वत फल पुष्पनिके समूहकरि नम्रीभूत जो लता अर वृक्ष तिनकरि शोभित हैं अर झरते नीझरानिके समूहकरि मनोहर हैं ॥ ५६ ॥ इन पर्वतनितैं वन एक वासुपूज्यके समवसरण टार सर्व तीर्थंकरनिके समवसरणके आयवे कर महा पवित्र हैं। भावार्थ—सबनिके समवसरण यहां आये हैं। वासुपूज्य स्वामीका न आया ॥ ५७ ॥ वे वन सिद्धक्षेत्रनिकरि शोभित हैं, कैसे हैं सिद्धक्षेत्र तीर्थयात्राकूं आवते जो भव्यनिके अनेक समूह तिनकरि सेवित हैं, अर नाना प्रकारके अतिशयकरि संयुक्त हैं ॥ ५८ ॥ तहां भगवान् विपुलाचलविषै विराजे इंद्रने करी है प्रभुके समवसरणकी समस्त रचना जहां ॥ ५९ ॥ समवसरणविषै तो सौधर्म इंद्रादिक समस्तदेव अर श्रेणिकादिक मनुष्य आये

बरसाई आकाशतैं पहुपनिकी वृष्टि तिन पुष्पनि करि आशा कहिये दिशा अर विश्वंभरा कहिये पृथ्वी सो शोभती भई ॥ ३२ ॥ अर चहुंदिशा चौसठ चमर देवनिने ढारे तिनकरि जिनवर ऐसा शोभता भया जैसी बढती गंगाकी तरंगनि करि हिमवान् गिरि पर्वत शोभै है ॥ ३३ ॥ अर सर्व जगत्के ईश्वर जिनेश्वर तिनिका प्रभामंडल अपने तेजकरि सूर्यके तेजकूं आच्छादित करता शोभता भया दूर किया है रात्रि दिनका भेद जाने ॥ ३४ ॥ अर देवनिके वजाये जे दुंदुभी तिनकी धीर ध्वनि आकाशविषै विस्तरी मानूं लोकविषै जिनराजके कर्मशत्रुके जीतवेका यश ही गावैं हैं ॥ ३५ ॥ अर या पृथ्वीविषै जीवन्मुक्त जो श्री अरहंतदेव तिनके तीन छत्र शोभते भये मानों तीन भुवनमें भगवानका इष्ट छत्र राज्य ही प्रकट दिखावै हैं। भावार्थ—तीन छत्र त्रैलोक्यनाथ ही पर फिरैं। ॥ ३६ ॥ वहुरि जिनपतिका सिंहासन सुरेंद्रनिकरि वेष्टित शोभता भया कैसे हैं जिनपति तज्या है राजानिकरि वेष्टित सिंहासन जिनि। भावार्थ—जिन जब राजानि वेष्टित सिंहासन तज्या तब इंद्रनिकरि वेष्टित सर्वोत्कृष्ट सिंहासन विराजे ॥ ३७ ॥ वहुरि जिनेंद्रकी दिव्यध्वनि धर्मके व्याख्यानविषै जगत्त्रयकूं पवित्र करती भई, कैसी है दिव्यध्वनि एक योजन तक सुनवेमें आवै है श्रवण करणहारनिके चित्त अर काननिकूं अमृत तुल्य है ॥ ३८ ॥ भगवान् देवन करि आर्चित मानों अष्ट प्रातिहार्य विभव करि मंडित अनेक देशनिविषै विहारकरि मगधदेशविषै आये ॥ ३९ ॥ पाई है सप्त ऋद्धिरूप संपदा जिनि ऐसे ग्यारह गणधर समस्त श्रुतके पारगामी इंद्रभूत्यादिक तिनकरि मंडित महावीर, जीवनिकूं जगत्तैं पार करते भये ग्यारह गणधरनिके नाम इंद्रभूत १ अग्निभूत २ वायुभूत ३ शुचिदत्त ४ पांचमा सुधर्म ५ छट्टा मांडव ६ सातवां मौर्यपुत्र ७ आठमां अकम्पन ८ नवमा अचल ९ दशमा मेदार्यक १० ग्यारमा प्रभास ११ यह ग्यारह सकल मुनिनके गुरु होते भये ॥४३॥ तिनकी सप्त ऋद्धीनिके नाम—प्रथम तप ऋद्धि १ जाके तप्त दीप्तादि सात भेद हैं अर २ बुद्धि ऋद्धि ३ विक्रियाऋद्धि ४ अर अक्षीणऋद्धि ५ वलऋद्धि ६ औषधऋद्धि ७ रस ऋद्धि ये सात ऋद्धि ७ तीन गणधरनिके शिष्य मुनि चौदह हजार तिनकी विगति पांचोंके दश हजार साढ़े छैसौ तिनविषै एक एकके २१ सौ तीस अर दोके साढ़े आठसौ तीन एक एकके

पादपद्मंजिनेन्द्रस्य सप्तपद्मैः प्रदे प्रदे । भुवेव नभसागच्छदिन्द्रादिभिः सुपूजितम् ॥ १ ॥

अर्थ—अर जिनेन्द्रके चरणकमलकूं देव पदपदविषैं सप्त सप्त कमलनिकरि पूजे हैं जिनेन्द्र आकाश विषे गमन करे हैं सो मानों पृथिवी ही कमलनिकरि प्रभुकी पूजा करे है कमल आकाशविषे फूल रहे हैं मानों चरण कमलनिका संगपाय विकासकूं प्राप्त भए हैं। ९ ॥२४॥ अर मेदिनी कहिए पृथ्वी वह शालि आदि समस्त अन्नके समूह स्वतेसुभाव फल तिनकरि शोभती भई मानो ये धान नाहीं हैं जिनेश्वरके दर्शनके आनंदतैं पृथ्वीके रोमांच भए हैं। १० ॥२५॥ अर आकाश मेघादिक आवरण करि रहित भया शोभता भया मानूं आकाश जिनराजके केवलज्ञानकी विमलताकी शिक्षा ही आचरै है। ११ ॥ २६ ॥ अर सर्व दिशा निर्मलताकूं धरती भई सो मानों निर्मल होय भगवानकूं सेवै हैं सो जिनदेव निर्मल जीवनही करि सेयवे योग्य हैं, कैसी हैं निर्मल भई दिशा नीरज कहिए रज रहित हैं यहां एक व्यंग है नीरज नाम कमलका है सो कमल रात्रीविषै नाहीं प्रफुल्लित होय है अर ए दिशा अहोरात्र सदा ही नीरज हैं समवसरणमें रात्रि दिनका भेद नाहीं है। १२ ॥ २७ ॥ अर देवेन्द्रकी आज्ञातैं देवीनिका आवनेका शब्द करते भए जो आवो जिनेंद्र धर्मका दान करै हैं सो लेहु याभांति सब ओर देवनिके शब्द होय रहे हैं देव आवैं हैं। १३ ॥ २८ ॥ अर जिनेन्द्रके आगे धर्मचक्र चला जाय है हजार आरा जाके सो अपनी दीप्ति करि सूर्यकी दीप्तिकूं जीते है। १४ ॥ २९ ॥ ये देवकृत चौदह अतिशय अद्भुत तिन करि संयुक्त जिनपति पृथ्वीविषै विहार करते भये, अष्ट मंगल द्रव्यनिकरि मंडित अर ध्वजानिकरि शोभित ॥ ३० ॥ ये चौंतीस अतिशय कहे हैं। अब अष्ट प्रातिहार्य कहै हैं—

अशोक नगमाभासी दशोकान्नोकुहश्रया । नमद्भुवनमाकाशं महत्वं किमतः परं ॥ ३१ ॥

अर्थ—अशोक नाम वृक्ष शोककूं हरै है ऐसी अपनी पत्र पुष्पादिक जो विभूति ता करि शोभता भया आकाशकूं उद्योतरूप करता भया या उपरांत और महत्व क्या? अशोकवृक्ष अपनी उच्चताकरि मानों आकाशकूं स्पर्शै है आकाश मानो नय गया है ॥ ३१ ॥ बहुरि नम्रीभूत भये हैं सिरके केश जिनके ऐसे जो देव तिनके हाथनि करि

होना अर उन्मेष कहिए उघडना, तिनसे रहित शांत हैं सुन्दर लोचन जिनके ॥ ११ ॥ अर नख केश बधै नांहीं ॥ १२ ॥ अर भोजनका अभाव ॥ १३ अर जराका अभाव ॥ १४ ॥ छायाका अभाव ॥ १५ ॥ अर अपार कांति ॥ १६ ॥ अर एक ही मुख महा मनोहर चतुर्मुख भासै ॥ १७ अर सन्मुख दो दिशानिकी तरफ दोय सै योजन दुर्भिक्षका अभाव अर उपसर्गका अभाव अर कोई जीव काहू जीवकूं उपसर्ग पीडा न कर सकै ॥ ८ ॥ अर गगन गमन । १९ । १४ । सबही विद्याविषै प्रवीणता ॥ १० ॥ घातिया कर्मनिके क्षयतैं ये दश अद्भुत अतिशय प्रकट भए सो जिनराजका शरीर देख्या अर यश सुन्या जगत्कूं सुख उपजै ॥ १५ ॥ अथानंतर—देवकृत चतुर्दश अतिशय तिनका कथन करै है–जिनराजकी सर्वार्थ मागधीभाषा अमृतकी धाराकी नाईं कर्णपुटकर पीवते जे तीन जगतके प्राणी तिनकी तृप्ति करै है ॥ १६ ॥ वहुरि पृथ्वीविषै सर्व प्राणीनिके मित्रता होय है जे जाति विरोधी प्राणी हैं ते परस्पर वासना न सूंघ सके हैं ऐसे सिंह, गजादिक अर गरुड सर्पादिक तिनका दोष मिट जाय ॥ १७ ॥ अर छै ऋतुके फल फूले एकैलार फले फूले सर्वऋतु एकैलार भेली भईथकी भगवानकूं सेवे हैं सो कैसी हैं षट्ऋतु फलफूलनिकरि नम्रीभूत भए जे वृक्ष तिनकरि मानों प्रभुकूं नमस्कार करै हैं ॥ १८ ॥ जिन विषै वह जानै मैं आगे जाऊं वह जानै मैं आगे जाऊं ऐसी श्रद्धाकरि मानों सबऋतु एक ही काल आयकरि प्रभुकूं सेवैं हैं । प्रभुकी सेवा आराधनाकूं आई हैं अर पृथ्वीरूप स्त्री मानों अपने अन्तःकरणकी शुद्धता जिनेश्वरकूं दिखावती संती शुद्ध आरसी समान उज्वल भासै है, कैसी है पृथ्वीरूप बधू सर्वरत्नमई शोभै है अंग जाका । ४ ॥ १९ ॥ अर जो पवन है सो प्रभूके अनुगामिनी भई विचरै है सन्मुख नाहीं आवै है जैसे सेवक स्वामीके पीछे ही चलै हैं तैसैं पवन पीछे लागी आवै है कैसी है पवन स्पर्शकरि उपजाया है जीवनके अंगकूं सुख जाने ॥ ५ ॥ २० ॥ अर जब भगवान जगत्के बांधव जीवनके उपकार निमित्त विहार करें तब सब जगतकूं आनंद होय किसीके दुःख न रहै । ६ । ॥२१॥ अर पवनकुमार देव एक योजन तक पृथ्वीकूं कंटक पाषाण कंटकादि रहित करैं । ७ ॥२२॥ वहुरि सनत्कुमार कहिए मेघकुमारदेव शब्द करते संते शुभ सुगंध जलकी वर्षा करै । ८ ॥२३॥

उनकरि उससमय विपुलाचल देवमनुष्यनिकरि पूज्य भया ॥६०॥ मुनीनिके चार संघ तिनमें पाई है ऋद्धि जिनि ऐसे जे ऋषि सो भगवान्के समीप तिष्ठे हैं अर यति कहिए कषायनिके अंतकरणहारे श्रेणिधारक अर मुनि कहिये प्रत्यक्षज्ञानी अर अनागार कहिये मुनि ये गणधरनिसहित ग्यारह अधिक चौदह सहस्र साधु होते भये, अर आर्यकानिकै संघविषै चंदना आदि पैंतीस हजार आर्यिका अर श्रावक एक लक्ष अर श्राविका तीन लक्ष ॥ ६३ ॥ ये चतुर्विध संघ अपने अपने स्थानकविषै तिष्ठते भये अर देवदेवी चतुर्निकायके असंख्यात अर अनेक तिर्यंच तिनकरि मंडित वह धीर महावीर बारहसभाकरि शोभता भया ॥ ६४ ॥ तहां समवसरणविषै देव मनुष्य तिर्यंच तीन भवनके प्राणी धर्म श्रवणकी इच्छाकरि तिष्ठते भये तब गौतम गणधरके प्रश्नतैं भगवान् व्याख्यान करते भये ॥६५॥ जीवके भेद दोय एक सिद्ध एक संसारी अर जीवका लक्षण उपयोग जीवनमें सिद्ध अनंत अर संसारी अनंतानंत ॥६६॥ तिन दोनों भेदनिमें सिद्धक्षेत्रविषै विराजे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके उपायकरि करी है आत्माकी सिद्धि जिनि ते सिद्ध कहिये ॥६७॥ ते सिद्ध अष्ट कर्मनिके क्षयतैं होय हैं सो विशेषताकरि कहै हैं ज्ञानावरणीके पांच भेद तिनके क्षयतैं अर दर्शनावरणीके नव भेद तिनके क्षयतैं ॥ ६९ ॥ वेदनीयके दोय भेद साता असाता तिनके उडावनेतैं अर मोहनीके अठाईस भेद तिनके हनैतैं अर आयु कर्म चार प्रकार ताके भस्म करवेतैं अर बयालीस प्रकार नामकर्म तथा त्रानवें प्रकार ताके नाशतैं अर दोय भेद गोत्रकर्म ताके नाशवेतैं अर पंच भेद अंतरायकर्म ताके विध्वंसतैं अर वेदनीयकर्म दोय प्रकारके नाशतैं साधु महा पुरुष सिद्ध होय हैं, त्रैलोक्यके शिखर सिद्ध तिष्ठे हैं एक एक सिद्धक्षेत्रविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं वे सिद्ध क्षायकसम्यक्त, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य परमसूक्ष्मताकरि संयुक्त हैं अर महा गहन अवगाहन गुणकरि मंडित हैं अर अव्याबाध कहिये बाधारहित अनंतसुख ताकरि संयुक्त हैं अर अगुरुलघु हैं ॥७३॥ गुरुता अरु लघुता जिनमें नाहीं, ये प्रसिद्ध जे अष्टगुण तिनकूं आदि दे सिद्धनिके अनंत गुण हैं वे सिद्ध असंख्यातप्रदेशी हैं अर वर्णादि पुद्गलके बीस गुण तिनके नाशतैं अमूर्तिताकरि संयुक्त तिष्ठे हैं ॥ ७४ ॥ अर जो शरीरतैं मुक्त भये हैं तातैं किंचित्मात्र ऊन पुरुषाकार विराजे हैं जैसैं

मुनिकूं होय है अर ग्यारवें उपशांतकषाय तहां भी यथायोग्य यथाख्यात चारित्र है सो बारवेंतैं उतरता सुख कहिए अर आठमें नवमें दशमें क्षपकश्रेणीवारिनिके ऊपरले गुणस्थाननितैं उतरता सुख कहिए॥ ८७॥ दशमेंतैं उतरता नववेंमें नवमेंतैं उतरता आठवेंमें, अर आठवेंतैं उतरता सातवेंमें अप्रमत्तसंयमीके सुख हैं। जहां चार कषाय चार विकथा, पांच इंद्रिय, निद्रा अर स्नेह ये पंद्रह प्रमाद नाहीं सो प्रमादके अभावतैं परमशांततारूप अप्रमत्तसंयमीके सुख हैं॥ ८८॥ अर सातवेंतैं उतरता छठे गुणस्थान प्रमत्तसंयमीमुनिके यद्यपि प्रमाद है तथापि हिंसा, मृषा, अदत्तादान, कुशील, परिग्रह इन पांच पापनिके त्यागतैं पंचमहाव्रतकी सिद्धि है तातैं प्रमत्तमुनिके भी शांततारूप सुख है॥ ८९॥ अर मुनितैं उतरता पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावकके महातृष्णाके जीतवेतैं सुख है कैसे हैं श्रावक हिंसादिक पंच पाप तिनका यथाशक्ति अणुव्रतरूप किया है त्याग जिनि॥ ९०॥ अर अणुव्रती श्रावकतैं उतरता अव्रतसम्यग्दृष्टी चतुर्थगुणस्थानवर्ती तत्वश्रद्धानिकरि उपज्या सुख अनुभवै है यद्यपि अव्रतसम्यग्दृष्टि अणुव्रती श्रावककी अपेक्षा आरंभी है परिग्रही है अर हिंसा आदि तृष्णा पर्यंत पांच पापनिका त्यागकरि व्रत नाहीं धरै है तथापि विषयकषायतैं महाविरक्त है अर सप्तव्यसनका त्यागी है अर जिनके विश्वासघातादि मोटे पाप नाहीं किंचित् कदाचित् युद्धादिकका योग बनै तो न्यायरूप हिंसा है अर निज स्त्रीका सेवन है। मिथ्यादृष्टीनि सारिखे विषयासक्त नाहीं मोक्षाभिलाषी हैं तातैं इनहूंके ज्ञानरूप सुख है। ये चतुर्थ गुणस्थानादिकके धारक सम्यग्दृष्टि तो सुखीही हैं अर तीजे गुणस्थानका नाम मिश्र जहां सम्यक्त अर मिथ्यात्व दोऊ हैं ये दोऊ परस्पर विरुद्धरूप हैं। तातैं तीजे गुणस्थानवारिनके सुख दुख दोऊ मिश्रित हैं सम्यक्तकी धारणाकरि तो सुख है अर मिथ्यात्वकरि दुख है जैसैं शी(फि)रणीका स्वाद मिष्ट अर अम्ल दोऊरूप हैं तैसैं तीजे गुणस्थानवारेनिके भाव मिश्रधारारूप हैं। यहां सुख दुख दोनों कहिए॥ ९२॥ अर सम्यक्तकूं नाशकरि भाव नीचे पडे सो जौलग मिथ्यात्वभूमिकूं नाहीं स्पर्शै है तौलग अंतरालवर्ती सासादन गुणस्थान कहिए जैसैं फल वृक्षकी शाखासूं टूटै अर भूमि नाहीं छूही अंतरालवर्ती है परन्तु भूमि स्पर्शैगा, सो सम्यक्तरूप शाखातैं

मूसिमें मैन गलि जाय अर आकाश तथा पुरुषाकार रह जांय तैसैं पुरुषाकार बिराजे हैं ॥ ७५ ॥ अर मृत्यु जन्म जरा अनिष्टसंयोग क्षुधा तृषा इत्यादि जे आधि व्याधि उनकरि उपजे जे समस्त दुःख उनकरि वे सिद्ध अबाधित हैं जिनके कोऊ बाधा नाहीं ॥७६॥ अर वे सिद्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव ये पांच भेदके परावर्तनकरि रहित परम आनंदरूप हैं ॥ ७७ ॥ अर जे ज्ञानी परम मोक्षके उद्यमी जे अंतरात्मा तिनके भेद तीन। चौथा अव्रतसम्यक्त गुणस्थान ताके धारक अव्रतसम्यग्दृष्टि सो प्रथम भेद अर दूजा भेद देशव्रत पंचमगुणस्थान ताकरि युक्त ग्यारह प्रतिमाके धारक अणुव्रती श्रावक अर तीजा भेद महामुनि छठे गुणस्थानतैं लेय चौदहवें गुणस्थानक लग नव प्रकार है ॥७८॥ यह जीव पारणामिकभाव धारक मोहके उदयतैं तथा क्षयोपशमतैं गुणस्थानविषै प्रवर्ते हैं ॥७९॥ वहां चौदह गुणस्थानोंके नाम पहिला मिथ्यादृष्टि १ दूजा सासादन २ तीजा सम्यक्मिथ्या कहिए मिश्र ३ चौथा अव्रतसम्यक्दृष्टि ४ ॥ ८० ॥ पाचवां संयतासंयत कहिये देशव्रत सत्यार्थ है नाम जाका ५ छठा प्रमत्त संयमी ६ सातवां अप्रमत्तसंयमी ७ आठवां अपूर्वकरण ८ नवमां अनिवृतकरण ९ दशमां सूक्ष्मसांपराय १० सो आठवें नवमें दशमेंविषै उपशमक्षायकश्रेणी दोय अर ग्यारवेंमें क्षपकश्रेणीवाला न जाय, उपशमवालाही जाय, ग्यारवेंका नाम उपशांत कषाय ११ बारवेंका क्षीण कषाय १२ तेरवां सयोगकेवली १३ चौदहवां अयोगकेवली १४ ये चौदह गुणस्थान कहे हैं तिनमें चौथे गुणस्थानक ताई सम्यक्ती अर पंचम गुणस्थानके गृहस्थ अर छठेसे चौदहवें तक मुनि, सो सारे निर्ग्रंथ वाह्यरूपमें तो मुनिनमें भेद नांहीं सब ही दिगंबर अर अध्यात्म कहिए भाव तिनमें नाना भेद हैं सर्व मुनिनमें उतरते भाव छट्ठे गुणस्थानवारिनके हैं अर ऊपरके गुणस्थाननिमें चढते चढते भाव बारहवें गुणस्थान उत्कृष्ट अंतरात्मा अर तेरहवें चौदहवें गुणस्थान मुनीश्वर परमात्मा भए ॥ ८४ ॥ संयतासंयत पांचवां गुणस्थान वहांतक गृहस्थ तिनिमें वाह्यरूपका भी भेद अर भावनिमें भी भेद अर ऊपरले नव गुणस्थान निर्ग्रंथनिके हैं तिनमें वाह्यरूप भेद नाहीं अर अंतरंग भेद हैं ॥ ८५ ॥ मुनीनिमें सर्व उत्कृष्ट केवली तेरवें चौदहवें गुणस्थान हैं तिनके अतेंद्रीसुख अनंत है। कैसे हैं केवली पाई है नवक्षायकलब्धि जिनि अर केवलीसे उतरता सुख बारवें क्षीणकषाय गुणस्थाने

उनकरि उससमय विपुलाचल देवमनुष्यनिकरि पूज्य भया ॥६०॥ मुनीनिके चार संघ तिनमें पाई है ऋद्धि जिनि ऐसे जे ऋषि सो भगवान्के समीप तिष्ठे हैं अर यति कहिए कषायनिके अंतकरणहारे श्रेणिधारक अर मुनि कहिये प्रत्यक्षज्ञानी अर अनागार कहिये मुनि ये गणधरनिसहित ग्यारह अधिक चौदह सहस्र साधु होते भये, अर आर्यकानिके संघविषै चंदना आदि पैंतीस हजार आर्यिका अर श्रावक एक लक्ष अर श्राविका तीन लक्ष ॥ ६३ ॥ ये चतुर्विध संघ अपने अपने स्थानकविषै तिष्ठते भये अर देवदेवी चतुर्निकायके असंख्यात अर अनेक तिर्यंच तिनकरि मंडित वह धीर महावीर बारहसभाकरि शोभता भया ॥ ६४ ॥ तहां समवसरणविषै देव मनुष्य तिर्यंच तीन भवनके प्राणी धर्म श्रवणकी इच्छाकरि तिष्ठते भये तब गौतम गणधरके प्रश्नतैं भगवान् व्याख्यान करते भये ॥६५॥ जीवके भेद दोय एक सिद्ध एक संसारी अर जीवका लक्षण उपयोग जीवनमें सिद्ध अनंत अर संसारी अनंतानंत ॥६६॥ तिन दोनों भेदनिमें सिद्धक्षेत्रविषै विराजे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके उपायकरि करी है आत्माकी सिद्धि जिनि ते सिद्ध कहिये ॥६७॥ ते सिद्ध अष्ट कर्मनिके क्षयतैं होय हैं सो विशेषताकरि कहै हैं ज्ञानावरणीके पांच भेद तिनके क्षयतैं अर दर्शनावरणीके नव भेद तिनके क्षयतैं ॥ ६९ ॥ वेदनीयके दोय भेद साता असाता तिनके उडावनेतैं अर मोहनीके अठाईस भेद तिनके हनेतैं अर आयु कर्म चार प्रकार ताके भस्म करवेतैं अर बयालीस प्रकार नामकर्म तथा त्रानवें प्रकार ताके नाशतैं अर दोय भेद गोत्रकर्म ताके नाशवेतैं अर पंच भेद अतंरायकर्म ताके विध्वंसतैं अर वेदनीयकर्म दोय प्रकारके नाशतैं साधु महा पुरुष सिद्ध होय हैं, त्रैलोक्यके शिखर सिद्ध तिष्ठे हैं एक एक सिद्धक्षेत्रविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं वे सिद्ध क्षायकसम्यक्त, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य परमसूक्ष्मताकरि संयुक्त हैं अर महा गहन अवगाहन गुणकरि मंडित हैं अर अव्याबाध कहिये बाधारहित अनंतसुख ताकरि संयुक्त हैं अर अगुरुलघु हैं ॥७३॥ गुरुता अरु लघुता जिनमें नाहीं, ये प्रसिद्ध जे अष्टगुण तिनकूं आदि दे सिद्धनिके अनंत गुण हैं वे सिद्ध असंख्यातप्रदेशी हैं अर वर्णादि पुद्गलके बीस गुण तिनके नाशतैं अमूर्तिताकरि संयुक्त तिष्ठे हैं ॥ ७४ ॥ अर जो शरीरतैं मुक्त भये हैं तातैं किंचित्मात्र ऊन पुरुषाकार विराजे हैं जैसें

है सो सुख सम्यग्दृष्टिनिके होय उन सम्यग्दृष्टि जीवनिका मनुष्यभव सफल है अर अज्ञानी जीवनिका मनुष्य-भव दीर्घ संसारका ही कारण है। कैसे हैं अज्ञानी मूढ है चित्त जिनका सो उनकूं मनुष्यभव दीर्घ संसार ही का कारण है। अभव्य अर दूरभव्य ये तो अज्ञानी ही हैं अर ज्ञानभाव निकट भव्यहीके आवै निकट-भव्यता ही निर्वाणका कारण है ॥ ३१ ॥ ? कर्मभूमिविषै अर सबही भोगभूमिविषै तिर्यंचकी न्याईं मनुष्यनिकी आयु जानो। कर्मभूमिविषै उत्कृष्ट कोटिपूर्व अर जघन्य अंतमुहूर्त अर भोगभूमिविषैं जघन्य एक समय अधिक कोटिपूर्व भरत ऐरावतकी अपेक्षा, उत्कृष्ट तीन पल्य ही है, अर मध्यभोगभूमिविषैं पल्य दोय अर जघन्य-भोगभूमिविषैं एक पल्य है ॥ ३३ ॥ परमती बालनपके धारक कायक्लेशविषैं तत्पर मिथ्यादृष्टि तिनमें कैयक निरा-हारी, कैयक पवनाहारी, कैयक कंदमूल भक्षी, कैयक पत्र फूलके आहारी शांत होगई है बुद्धि जिनकी, अर जीती हैं कषाय अर क्रिया है इंद्रियनिका निग्रह जिनि ऐसे परिव्राजक अकाम निर्जराकरि युक्त अथवा यिर्यंच व्रत नेमके धारक मिथ्यादृष्टि ॥ ३४ ॥ मिथ्यात्वकरि मलिन है चित्त जिनका, सो भवनवासी व्यंतर जोतिषी इन देवनिमें उपजें अथवा अल्पऋद्धिके धारक स्वर्गवासी भी होय हैं, कैसे हैं वे देव कंदर्प कहिये कामकी है तीव्रता जिनके, ऐसे गवैया वजैया नचैया, अभियोग कहिये दासकर्मके करणहारे अर किल्विषादि कहिये सबतैं उतरते हैं महा नीच निकृष्ट देव होवें ॥ ३६ ॥ ते वडे देवनिकी ऋद्धिका ऐश्वर्य अर महा उदय देखकरि मानसिक दुःखकरि पीडे सदा क्लेशरूपही रहैं देव दुर्गति कहिये देवनिमें नीच दशा ताके दुःखकरि सदा पीड़ित हैं ॥ ३७ ॥ सम्य-ग्दर्शनके अलाभतैं अभव्यनिकी न्याईं भव्यहू भवसागरविषैं डूबे हैं सदा दुःखही है ॥ ३८ ॥ देवनिमें भवन-वासी देव जो असुरकुमार जातिनका उत्कृष्ट आयु एक सागर किंचित् अधिक अर व्यंतरनिका उत्कृष्ट एक पल्य अर जघन्य आयु दशहजारवर्ष अर भवनवासीनिका जघन्य दश हजार वर्ष, अर ज्योतिषी देवनिका उत्कृष्ट एक पल्य कछु इक अधिक अर जघन्य आयु ज्योतिषीनिका पल्यके आठवां भाग ॥ अर स्वर्गवासीनिका उत्कृष्ट तेतीस सागर अर जघन्य एक पल्य कछु इक अधिक ॥ ४० ॥ अर जीवनिकैं लब्धि पांच क्षयोपशम १ विशुद्धि २

ऐसे तिर्यंच मनुष्य देव नारकी यह चारोंही गतिके मिथ्यादृष्टि मरकरि तिर्यंचगति पावैं, त्रस थावर अनेक भेद हैं जामें ॥ २० ॥ पृथ्वीकाय १ अपकाय २ तेजकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ इनविषै बारंबार जन्म धरै हैं अर दुख भोगे हैं ॥ २१ ॥ अर कृमि आदि बेइंद्री २ अर जूं आदि तेइंद्री ३ अर भ्रमरादि चौइंद्री ४ तिन विषैं भ्रमै हैं ॥ २२ ॥ अर पंचेंद्रीके अनेक भेद पक्षी मच्छी मृगादि अनेकप्रकार तिनविषै ये प्राणी चिरकाल तिर्यंचगतिके दुःख भोगे हैं ॥ २३ ॥ तिर्यंचकी अल्प आयु अन्तर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट आयु भोगभूमिविषै तीन पल्य अर कर्मभूमिविषै कोटिपूर्व अर नरक तिर्यंचगतिका स्वरूप कह्या। तिर्यंच चारोंही गतिविषै जाय अर चारोंही गतिका आया तिर्यंच होय एता भेद है जो नरकका आया नर होय अथवा पंचेंद्री तिर्यंच ही होय अर स्थावर विकलत्रय न होय। अर देवगतिका आया मनुष्य होय अथवा पंचेंद्री तिर्यंच ही होय अथवा पृथ्वीकाय जलकाय वनस्पतिकायमें आय उपजे ॥ २ ॥ नरक तिर्यंच दोय गति तो दुःखरूपही हैं अर ऐसे जीव ऐसे कर्म-करि उत्तम मनुष्य होंय। जे स्वभावहीकरि निःकपट होंय अर स्वभावही थकी कोमल होंहिं अर भद्रपरिणामी होंहिं अर स्वभावथकी पापनितैं डरै हैं अर सहजही मद्य मांस मधु उदंवरादि अयोग वस्तुके सहज ही त्यागी होंहिं ऐसे जीव मनुष्यायु बांधैं। कुभावनिकरि कुमानुष होय ॥२६॥ भले भावनिकरि भले मनुष्य होंहिं रागसूं कैयक तिर्यंच भी मनुष्यगति पावैं। अर कैयक नारकी भी शुभ परिणामनितैं मनुष्यगति पावैं अर देव भी शुभ कर्मनिकरि मनुष्यगति पावैं अर मनुष्य भी शुभ परिणामनिकरि मनुष्यगति पावैं ॥२७॥ सो मनुष्य भवविषै भी ये प्राणी इष्टके अलाभतैं अर अनिष्टके संयोग दुःखही भोगवे हैं आर्य म्लेच्छखंड अर नीच ऊंच कुल तिनविषै ये जीव उपजे हैं अर मरै हैं। नरक तिर्यंच गति तो प्रत्यक्ष दुःखरूपही हैं अर मनुष्य गतिविषै भी अनेक दुःखनिकरि दुःखही है ॥ २८ ॥ अर जिनका अनिष्टका संयोग नाहीं अर इष्टका वियोग नाहीं ऐसे भी मनुष्य हैं तिनिके भी विषयरूपी ईंधनकरि प्रज्ज्वलित है इच्छारूप अग्नि जिनकी उनके सुख कहांतैं होय ॥ २९ ॥ कोई एक मनुष्यके अधिकारनिकरि निकट संसारी तिनके सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके सेवनतैं सुख होय संतोषका ही नाम सुख

मलिन हैं ॥ ८ ॥ ये प्राणी निरंतर पाप कर्मकूं बांधे हैं ताकरि चतुर्गतिविषै दुखी भए भ्रमै हैं। कैसे हैं पापकर्म दुःखतैं छूटे हैं बंधन जिनके ॥ ९ ॥ कई एक पापी जैसैं पापनिकरि नरकआयु बांधै हैं तिनका कथन सुनहु जो रौद्रध्यानकरि दुष्टपरिणामी आरंभी परिग्रहकेधारी महामिथ्यादृष्टि अनंतानुबंधीके धारक जिनकूं जड अर चेतनका विवेक नाहीं अष्ट मदकरि उन्मत्त अनिष्ट कहिए खोटी है दृष्टि जिनकी जिनके विचार नाहीं ॥१०॥ परनिंदाके करनहारे अर परनिंदाके श्रवणहारे परदोष सुनकरि हर्ष पावैं अर अपनी प्रसंसाके करणहारे महानिंद्य जो पराया धन ताके लोभी अधिक हैं भोगनिकी तृष्णा जिनके ॥ ११ ॥ मद्य मांस अर शहतके आहारी दुराचारी कर्मभूमिके दुष्ट मनुष्य अर सिंह व्याघ्र मगरमच्छादि दुष्ट तिर्यंच नरकायु बांधै हैं ॥ १२ ॥ सो नरकगति महा उष्ण अर महा शीततताकरि पीडित है शरीर जिनका ऐसे नारकी जीव नपुंसकवेदी नरकके महाविषम विलानिविषै उपजे हैं ॥ १३ ॥ यहां ऐसी कोई वस्तु नाहीं अर ऐसा कोई क्षेत्र नाहीं अर ऐसी कोई कालकी कला नाहीं अर ऐसा कोई स्वभाव नाहीं जाकरि नारकीनिकूं दुःखका विश्राम होय। भावार्थ—सब सामग्री सब क्षेत्र सब समय सब स्वभाव दुःखमई है सब नारकीनिकूं सदा दुःखका भोगना अर विना आयु पूर्ण भए मरण नाही सदा मार खायवो ही करैं परंतु प्राण न निकसैं वहुत जीवना सबकूं वल्लभ अर नारकीनिकूं वल्लभ नाहीं ॥ १५ ॥ नारकी मरण चाहैं, पहिले नरकका नाम १ रत्नप्रभा २ शर्कराप्रभा ३ बालुकाप्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूमप्रभा ६ तमप्रभा ७ महातमप्रभा इन सातोंही पृथ्वीविषै आयुका प्रमाण सुनहु पहिले नरकमें उत्कृष्टआयु सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १० पांचवें १७ छठें २२ सातवें ३३ यह उत्कृष्ट स्थिति कही। अर जो पहिला उत्कृष्ट सो दूजा एक समय अधिक जघन्य अर जो उत्कृष्ट सो तीजा एक समय अधिक जघन्य या भांति सर्वत्र जानहु अर पहिले नरकके पाथडेतैं एक समय अधिक जघन्य दशहजार वर्ष आयु है जा समान अल्प आयु नरकविषै नाहीं, नरकविषै कर्मभूमिका मनुष्य अर तिर्यंच ही जाय अर नरकतैं आया कर्मभूमिका मनुष्य अर तिर्यंच ही पंचेंद्रिय होय अर प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ इनके जो वश हैं अर महा चिंतावान आर्त्तध्यानरूप भवनविषै निरंतर भ्रमै है मन जिनका ॥१९॥

अर भव्यके चौदह ॥ १०० ॥ जे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकी शुद्धताकरि मोक्ष पायवेकूं समर्थ हैं वे भव्य हैं अर मोक्षसे विमुख अभव्य हैं, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकी निर्मलतातैं निकटभव्य जाण्या जाय रत्नत्रयकी प्राप्तिके योग्य भव्य ही हैं अर इनके प्राप्त भए निकटभव्य कहिए सो यह भव्यता केवलपदका कारण है जौलग केवल उपजै तौलग जीव परोक्ष ज्ञानी हैं अर प्रत्यक्षज्ञानी भगवान ही हैं सो निकटभव्यके तो परोक्ष ज्ञानी ही जानैं अर प्रत्यक्षज्ञानी तो सर्वज्ञही हैं तासूं कोऊ छिप्या नाहीं सर्वही जानैं अर निकटभव्य तो सबकरि जाण्या जाय ॥ २ ॥ अर जीवनिके अभव्यता तथा दूरभव्यता केवलज्ञानगम्यही है तातैं केवलीके वचनहीतैं अभव्य अर दूरभव्य जाण्या पडै परोक्षज्ञानीनिकरि अभव्य अर दूरभव्य जाण्या न पडै ॥ ३ ॥ अभव्यकूं अर दूरभव्यकूं न जान सकै काहेतैं जो अनंतकालका ज्ञान केवली विना न होय जीवका यह भव्यत्व अर अभव्यत्व लक्षण स्वतःस्वभाव है काहूका किया अभव्य न होय अर भव्य न होय । जैसैं एक भाजनविषै उडद रांधिवेकूं चढाए तिनमें जो घोरड होय सो अनेक यत्न करै तोहू न सीझै तैसैं अभव्य कदाचित् भी न सीझै अर दूरभव्य हाल न सीझै काल पाय सीझैगा अर निकटभव्य शीघ्र ही सीझै ॥ ४ ॥ भव्यके तो भवसागर अनादिसांत कहिए आदि नाहीं पर अंत है भ्रमे तो अनादिके हैं परंतु समय पाय सीझैगा अर अनंत भव्य ऐसे हू हैं संसारका अंत कदे ही नाहीं जो सबही भव्य सीझैंगे तो भव्यराशिका अभाव हो जाय सो अनंतभव्य संसारविषै सदा रहेंगे अर तिनमेंतैं सदा सीझवो करेंगे, सो भव्यनिके तो भवसागर अनादिसांत कहिए अर अनादि अनंतहू कहिए अर अभव्यनिके सर्वथाप्रकार संसार अनादि अनंत ही है अर अभव्यराशिमें सो कदेहू कोई न सीझै सदा भवसागरमें कष्ट भोगता रुलवोही करै ॥ ६ ॥ संसारविषै दोय राशि एक भव्यराशि दूसरी अभव्यराशि सो अभव्य अनंत अर तिनतैं अनंतगुणे सिद्ध अर सिद्धनतैं अनंतगुणे भव्य सो भव्य अभव्य मिथ्यात्वके योगतैं संसारके दुःख भोगवै हैं ये सकल जीव द्रव्यकी न्याईं अविनाशी हैं जैसैं कालका नाश नाहीं तैसैं सकल द्रव्यार्थिक नयकरि नित्य हैं अर पर्यायार्थिक नयकरि अनित्य हैं अर अनादिके मिथ्यात्व अव्रत कषायनितैं

अनुत्तर मुख समान है। अर सिद्धक्षेत्र कहिए सिद्धशिला सो ललाट समान है। अर जहां सिद्ध विराजें सो वे आकाशके प्रदेश लोकका शिखर कहिए मस्तक है ॥३०॥ कैसा है यह लोक अपने उदरविषै धरे हैं समस्त जीवादि पदार्थनिकूं जाने। अर यह लोक पुरुषाकार है परंतु अकृत्रिम है, किसी पुरुषकरि किया नाहीं। सो यह लोक तीन वातवलयनिकरि बेढ्या है। पहिले वातवलयका नाम घनोदधि सो या लोककूं वेढै है अर घनोदधिके सब ओर घनवातवलय बेढै है अर घनावतकूं तनवात बेढै है। याभांति बेढकरि तीनों वातवलय तिष्ठै हैं ॥३२॥ तिनमें पहिला घनोदधि सो तो गोमूत्र सारिखा पीत वर्ण है अर दूजा घनवात मूंगके वर्ण है अर तीजा तनवातवलय अनेक वर्णका कह्या है ।३३। यह वातवलय दंडाकार है अर घनीभूत कहिए पुष्ट है अर दंडाकार कहिए लवाईरूप है अर ऊर्द्धभाग अधोभागविषै सर्वत्रलोककूं वेढै है पातालविषै तो अति जड हैं अर ऊर्द्धविषै लोकपर्यंत ये पवन मंडल चढ़ रहे हैं अर चंचल हैं लोकके अंतलग हैं अधोलोकके अंतविषै तो इन तीनों वातवलयनिका विस्तार प्रत्येक प्रत्येक बीस हजार योजन है अर लोकके शिखर तीनों वातवलयनिका विस्तार किंचित् ऊन एक योजनका है ॥ ३५ ॥ अर दण्डाकारके परित्यागविषै अनुक्रमतैं ये तीनों या भांति हैं। घनोदधि योजन सात, घनवात योजन पांच, अर तनवात योजन चार या भांति अधोलोकविषै विस्तार है। अर प्रदेशनिकी हानितैं मध्यलोककी बाहुल्यता योजन पांच घनवातकी योजन चार तनवातकी योजन तीन ॥३७॥ अर प्रदेशनिकी वृद्धितैं ब्रह्मतैं ब्रह्मोत्तरके अंत घनोदधिका विस्तार सात योजन है, अर घनवातका योजन पांच तनवातका योजन चार है ॥ ३८ ॥ बहुरि ब्रह्मोत्तरके ऊपर प्रदेशनिकी हानिकरि घनोदधिका विस्तार योजन पांच, घनवातका योजन चार, तनवातका योजन तीन है या भांति वातवलयनिका विस्तार है ॥ ३९ ॥ यह लोकके शिखरविषै घनोदधिकी बाहुल्यता कहिए मुटाई योजन आध अर घनवातकी मुटाई योजन पांच अर तनवातकी मुटाई घनवाततैं कछु ऊन है ॥९॥ यह लोक सब ओर तीन वातवलयनिकरि वेढ्या ऐसा सोहै है जैसा बखतरनिकरि सामन्त सोहै है मानों यह लोकरूप योधा तीन वातवलयरूप बखतरनिकरि वेढ्या अलोककूं जीत्या चाहै है ॥४०॥ अर इन नरकनिविषै पहिली पृथ्वी रत्नप्रभा १

भाग दो हैं ॥ १८ ॥ अर सातवें नरकका अंत चित्रातैं छे राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार राजू छे अर एक राजूके सातभाग करिए तिनमें भाग १ अर पाताललोकका अंत चित्रापृथिवीतैं सात राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार सातराजू अर ऊर्ध्वलोकविषै चित्रा पृथिवीके अधोभागतैं दूजा ईशान स्वर्ग ताका शिखर डेढ राजू है तहां लोकका विस्तार राजू दोय है अर एक राजूके सात भागनिमें भाग पांच हैं ॥ २० ॥ अर ईशानस्वर्गके शिखरतैं डेढ राजू ऊंचा चौथा माहेंद्र स्वर्गका जो शिखर है तहां लोकका विस्तार राजू चार अर एक राजूके सात भागनिमें तीन भाग है ॥२१॥ अर चौथ स्वर्गके शिखरतैं ब्रह्मोत्तर छठा स्वर्ग ताका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार पांच राजू है ॥२२॥ अर छठे शिखरतैं आंठवें कापिष्ट स्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार चार राजू अर एक राजूके सात भागनिमें भाग तीन हैं ॥२३॥ अर आठवेंके शिखरतैं दशमां स्वर्ग महाशुक्र ताका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार तीन राजू है अर १ राजूके ७ भागनिमें ६ भाग है। अर दशवेंके शिखरतैं बारहवें सहस्रारका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू तीन है। अर एक राजूके सात भागमें भाग दोय है ॥ २५ ॥ अर बारहवें सहस्रारके शिखरतैं चौदहवें प्राणत स्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है, तहां लोकका विस्तार दोय राजू अर एक राजूके सात भागनिमें पांच भाग है। ऐमा कथन श्रीवीतराग देवने प्रकाश्या ॥२६॥ अर चौदहवें शिखरतैं सोलहवें अच्युतस्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू दोय अर एक राजूके सात भागनिमें भाग एक, अर अच्युतस्वर्गके शिखरतैं लोकका शिखर सिद्धक्षेत्र सो एक राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू एक याभांति सकल लोकका पूर्व पश्चिम बिस्तार कह्या है। अर दक्षिण उत्तर तो सर्वत्र सात राजू है ॥२७॥ यह लोक पुरुषाकार है ताका स्वरूप सुनहु। अधोलोक तो या लोक रूप पुरुषके नितंब अर जंघा चरण इन समान है अर मध्यलोक कटि समान है। अर चौथे स्वर्गके अंत नाभि समान है। अर पांचवें छठे देवलोक हृदय समान है। अर तेरहवां चौदहवां स्वर्ग भुजा समान है अर पंद्रहवां सोलहवां स्वर्ग दोऊ कांधे समान हैं। अर नवग्रैवेयक ग्रीवा समान है अर नव अनुदिश ठोडी समान है। अर पंच

तो बैतके आसनसमान है अर मध्यविषै झालरीके आकार गोल है अर ऊर्ध्वविषै मृदंगके आकार है एता विशेष जो लोक यह चौकोर है कटिपर धरे हैं करयुगल जाने अर पसारी हैं दोनों जंघा जाने ऐसा पुरुषका जैसा आकार होय है तैसा आकार लोकका है। ऐसा लोक है अचल है स्थिति जाकी । दक्षिण उत्तर तो यहलोक सर्वत्र सात राजू है ॥९॥ अर ऊपर प्रदेशनिकी वृद्धिकरि पंचमा छठा स्वर्ग ब्रह्म ब्रह्मोत्तर ताके निकटविषै पांचराजू है बहुरि प्रदेशनिकी हानिकरि लोकके अंतविषै एक राजूका विस्तार है । अर तीनलोककी ऊंचाई चौदह राजू है । सुमेरुतैं सात राजू नीचे अर सातही ऊपर इसप्रकार चौदह राजू है ॥११॥ चित्रा पृथिवीके अधोभागतैं दूजे नरकके अंततक एक राजू है अर तीसरे तक दोय राजू है अर चौथेके अंत तक तीन राजू हैं पांचवें तक चार राजू है अर छठेके अंत तक पांच राजू है अर सातवेंके अंत तक छै राजू है अर पाताललोकके अंततक सात राजू है, यह तो चित्रा पृथिवीसे अधोभागविषै पाताललोककी प्ररूपणा करी है । अर चित्रा पृथिवीतैं ऊपर दूजे ईशान स्वर्गके अंततक डेढ राजू है अर चौथा महेंद्र स्वर्ग ताके अंततक डेढ राजू है अर कापिष्ट कहिए आठवां स्वर्ग तहांलग एक राजू अर सहस्रार कहिए बारहवां स्वर्ग ताके अंततक एकराजू अर आरण पंद्रहवां अच्युत सोलहवां ताके अंततक एकराजू अर लोकके अंततक एक राजू याभांति चौदहराजू उच्च है अर दक्षिण उत्तर सर्वत्र सात राजूके विस्तार है अर पूर्व पश्चिम लोककी विस्तीर्णता याभांति है सो अधोलोकका विस्तार लोकके ज्ञाता भगवानने याभांति कह्या ॥ १६ ॥ दूजे नरकका अंत चित्रा पृथिवीतैं एक राजू नीचा है तहां लोकका पूर्व पश्चिम विस्तार राजू एक अर एक राजूके सातभाग करिए तिनमें भाग छै है । अर तीजे नरकका अंत चित्रापृथिवीके अधोभागतैं दोयराजू नीचा है तहां लोकका विस्तार दोय राजू है अर एक राजूके सात भागनिमैं भाग पांच अर चौथे नरकका अंत चित्रा पृथिवीतैं तीन राजू है तहां लोकका विस्तार राजू तीन है अर एक राजूके सात भागमें भाग चार । अर पंचम नरकका अंत चित्रातैं चार राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार राजू चार, अर राजूके सात भागनिमें भाग तीन है । अर छठे नरकका अंत चित्रातैं राजू पांच नीचा है । तहां लोकका विस्तार राजू पांच अर एक राजूके सात भागनिमें

सुखदुख भोगनेका स्थानक है अर प्रवाहरूप सदा स्थिर है याका सकल आकार विस्तार सुनिवे योग्य है सो कहकरि नानाप्रकारके वंशनिका उपजना अर हरिवंशकी उत्पत्ति अर या वंशविषै बडे बडे राजा भए तिनके चरित्र तुझे कहूंगा, हे श्रेणिक ! तेरी सुनिवेकी इच्छा है सो तू सुनि ॥९५॥ जबतक यालोकविषै जिनरूप रविके ज्ञानरूप अति विस्तीर्ण देदीप्यमान किरण उद्योत न करै तौलग ही या जगतविषै पदार्थनिके श्रद्धानविषै विवेकनिकूं मोहकरि भ्रम होय है। भावार्थ—जौलग जिनवाणीका श्रवण न होय तौलग विवेकनिका संदेह न जाय जैसैं सूर्यके उदय विना नेत्रवाले हू न देख सकैं ये जीव भव्यभावके योगतैं वीतरागके उपदेशथकी द्रव्य क्षेत्रकालभावकूं जानकरि विधिपूर्वक पदार्थनिका निश्चय करै है, कैसे हैं पदार्थ अतिसूक्ष्म हैं अर अति दूरवर्ती हैं चेतन अचेतन मूर्ति सूक्ष्म स्थूल सबनिका निश्चय भव्यनिकूं भगवानके वचनतैं होय है, कैसा है भगवानका वचन निश्चय है सकल पदार्थनिका जाविषै ॥ ९१ ॥

इति श्री अरिष्ट नेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ श्रेणिक प्रश्न वर्णनो नाम तृतीय सर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथानंतर—अनंत अलोकाकाशविषै लोकका वर्णन करै हैं। कैसा है, अलोकाकाश सर्व अर अनंत है विस्तार जाका, अरूप अनंत हैं प्रदेश जाके अर अकेला है जाविषै द्रव्य नाहीं ऐसा शून्यरूप अनंत अलोकाकाश है ॥ १ ॥ जाविषै जीव अजीव और पदार्थ नाहीं देखिए हैं तातैं अलोकाकाश कहिए ॥ २ ॥ जाविषै जीव अर पुद्गल दोऊनिकी गति और स्थिति नाहीं, गति स्थितिके कारण धर्मास्तिकाय अर अधर्मास्तिकायके अभावतैं अलोकविषै जीव पुद्गलकी गति स्थिति नाहीं ॥ ३ ॥ अर अलोकताके अनंत बिभाग मध्यप्रदेशविषै अनादिनिधन लोकाकाश तिष्ठया है सो असंख्यात प्रदेशरूप है सर्व द्रव्यनिकरि भरया है ॥ ४ ॥ पंचास्तिकाय कहिए जीव १ पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश ५ ये पांच बहु प्रदेशी पंचास्तिकाय कहिए अर छट्टा कालद्रव्य एक प्रदेशी सो पंचास्तिकायमें नाहीं जहां ये षद्‌ द्रव्य सकल विलोकिए सो लोकाकाश कहिए, सो लोक पातालविषै

पुष्पवृष्टि करते संते सर्वज्ञकी स्तुति करते भये तहां विपुलाचलके वनविषै एक महामुनि दिव्यध्वनि अर दुंदुभी नाद सुनकरि ध्यानविषैं मगन होय केवलज्ञानकूं प्राप्त भये ताकी वार्ता सुनकरि राजा श्रेणिकने गौतमस्वामीकूं नमस्कारकरि पूछ्या कैसे हैं गौतमस्वामी सब मुनिनिमें श्रेष्ठ हैं अर इन्द्रनिकरि पूज्य हैं अर कैसा है राजा महा भक्तिकरि उपज्या है अति आश्चर्य जाकूं ॥ ८० ॥ राजा पूछे है, हे भगवन् ! उस मुनिका क्या नाम है यह देवनिके समूहकरि पूज्य हैं याका वंश कौन है अर तत्काल ऐसे अद्भुत अतिशयकूं कैसैं प्राप्त भया ॥ ८२ ॥ तब गौतमस्वामी श्रुतकेवली महानिगर्व आगमज्ञानके वेत्ता राजाके तांईं सकलवार्ता कहते भये कैसा है राजा उपज्या है आश्चर्य जाकूं ॥ ८३ ॥ गणधर कहै हैं हे राजन् ! भली है बुद्धि तेरी सो मैं तेरे तांईं या मुनिका नाम अर वंशमाहात्म्य कहता हूं सो तू सुनि—या श्री मुनिका नाम जितशत्रु है पृथिवीविषै प्रसिद्ध महाराज हुता सो तेरे श्रवणमें आया ही होयगा ॥८५॥ यह हरिवंशरूप आकाशविषै भानुसमान सब राजानिकी विभूतिकूं जीते, ऐसी हुती विभूति जाके सो राजलक्ष्मी तजकरि श्रीवर्द्धमानके निकट मुनि भया ॥८६॥ महा दुर्द्धर तप मांहिले और वाहिरले सकल वारहप्रकार जैसैं औरनिसूं न बनै तैसैं तपकरि आज घातिया कर्मनिका नाशकरि अद्भुत केवलज्ञानकूं प्राप्त भया ॥८७॥ ताकारणकरि जिनमार्गकी प्रभावनाके करणहारे देवनिने उनका केवलकल्याणक किया भक्ति थकी पूजे सम्यग्ज्ञानकी प्राप्तिके अर्थ ॥ ८८ ॥ बहुरि राजा श्रेणिक उपज्या है कौतूहल जाके सो गौतम स्वामीकूं प्रणामकरि याभांति पूछता भया—हे गणधराधीश ! यह हरिवंश जो आपने कह्या सो यह वंश कहां है कब प्रवर्त्या अर जिनकरि उपज्या सो वे पुरुष कौन थे ॥९०॥ अर इस वंशविषै केते राजा प्रजाके रक्षक महा प्रवीण धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक भए सो कहो ॥ ९१ ॥ अर या भरतक्षेत्रविषै जे जिनेश्वर, चक्रेश्वर, हरि, प्रतिहरि, हलधर भए उनके सकल चरित्र अर सकल वंशनिकी उत्पत्ति कहो अर लोकालोकका विभाग मैं सुण्या चाहूं हूं सो कहो यह सर्व कथा मोहि कहो ॥ ९३ ॥ तब गौतमस्वामी समवशरणविषै कहते भए हे श्रेणिक ! तैंनैं जो प्रश्न किया सो आगमप्रमाण तुझे कहता हूं तू सुनि ॥९४॥ प्रथम तो तोकूं त्रैलोक्यका कथन कहूंहूं सो त्रैलोक्य

स्वर्गपर्यंत देवनिके परक्षेत्र गमन है अर अहमिंद्रनिके परक्षेत्र गमन नाहीं निज क्षेत्रविषै ही विहार करैं ॥६८॥ अर मोक्षका मूल महा अमोलक अद्भुत रत्नत्रयरूप रत्न सहज साध्य है अन्यकरि सहज सिद्ध न होय ध्यानके आधीन है सो वीतराग रत्नत्रयके प्रसादतैं मोक्ष ही होय अर सराग रत्नत्रयकरि उत्कृष्ट देवनिके उत्कृष्ट सुख भोगकरि ॥ ६९ ॥ स्वर्गतैं चय विदेह क्षेत्र तथा भरत ऐरावत विषै कर्मभूमिमें बडे बडे मनुष्य होंय। कैयक तो चक्रवर्ती होंय ॥ ७०॥ जिनके षट्खंड पृथ्वीका राज्य नव निधि चौदह रत्न हैं सो चक्रवर्तीनिमें कैयक तो चरमशरीरी राज तजकरि निर्वाण सुखके साधनविषै समर्थ होंय॥७१॥अर कैयक अल्प भव लेय सिद्ध होंय। अर कैयक बडे पुरुष बलभद्र होंय ते तद्भव मुक्ति जांय अथवा इनमें कोई स्वर्ग जाय बहुरि अल्पभवमें मुक्ति पावैं अर कैयक निदानके योगतैं नारायण प्रतिनारायण होंय ॥७२॥ अर कैयक पूर्वभवविषै अभ्यास किया है सोलहकारण जिनि ते तीर्थंकर होयकरि तीनलोकके गुरु होंय, ये सुर असुर नर सबही तिनकी कीर्ति करैं हैं, यह जिनशासन मोटा वृक्ष है सम्यक्तरूप थिर है जड जाकी अर ज्ञानरूप है पेड जाके अर चारित्ररूप है डाली जाके अर नय उपनय वह ही है शाखा अर उपशाखा जाके ॥ ७४ ॥ अर राजविभूति देवविभूति सोई है पुष्प जाके ऐसे जिनशासनरूप वृक्षकूं जो निकटभव्य सेवै सो निर्वाण फल पावै ॥ ७५ ॥ निर्वाणफलकरि उपज्या जो सारभूत आनंदरस ताहि पानकरि महापुरुष चारोंगतिसूं निवृत्त भए संते सिद्धलोकविषै सदा काल तिष्ठै हैं ॥ ७६ ॥ याभांति श्रीवर्द्धमान भगवान् तेई भये भानु तिनके वचनरूप किरणनिके प्रकाशसूं तीनभवनरूप कमलिनी धर्म श्रवणकरि अति विकाशकूं प्राप्त भई सोहती भई, कैसे हैं जिनसूर्य, मोक्षमार्गके प्रकाशक हैं ॥ ७७ ॥ प्रथमही प्रशंसा योग्य जो धर्मानुराग ताके भरे जो भव्यजीव ते धर्मश्रवण करते भए, त्रैलोक्यके जीव सुर असुर नर तिर्यंचनिकी सभा जैसा निर्मल जातिवंत रत्न अग्निमें शुद्ध भया शोभाके समूहकूं पावै तैसी सकल सभा शोभती भई, जिनराजकी वाणी धर्मोपदेशरूप तीनों लोकनिके जीवनिकी समस्त भ्रांति दूर करती भई, जैसे मेघमाला समस्त रजकूं दबावै ॥ ७८ ॥ अथानंतर—भगवानकी दिव्यध्वनिके पीछे देवदुंदुभी नाद करते भये ॥ ७९ ॥ बहुरि देव हर्षित भये

आयु बाईस सागर ॥ ५५ ॥ अर नव ग्रैवेयकनिविषै एक एक सागर बध्या सो पहिले ग्रैवेयकविषै तेईस अर नवमें ग्रैवेयकविषै उत्कृष्ट इकतीस । अर अनुत्तरविषै उत्कृष्ट आयु सागर बत्तीस अर जघन्य सागर इकतीस अर पंच पंचोत्तरनिमें सर्वार्थसिद्धमें तो सागर तेतीस, अर विजयादिक चारमें उत्कृष्ट तेतीस, अर जघन्य सागर बत्तीस अर सर्वही देवलोकमें जे नीचले स्वर्गकी आयु उत्कृष्ट सो ऊपरलेकी जघन्य एक समय अधिक है, यह रीति सर्वत्र जानो ॥ ५८ ॥ अर देवनिकी उत्कृष्ट आयु सौधर्मस्वर्गविषै पल्य पांच अर बारवें स्वर्गपर्यंत दोय दोय पल्य बढती जाय तब बारवें स्वर्ग पल्य सत्ताईस अर तेरवें स्वर्ग चौतीस चौदहवें इकतालीस पंद्रहवें अडतालीस सोहलवें पचपन यह देवनिकी उत्कृष्ट आयु स्वर्गनिमें कही ॥५९॥ अर अहमिंद्रलोकमें देवी नाहीं केवल पुरुष देवही हैं ॥ ६० ॥ अर कर्मनिकी शक्तिके योगतैं सकल कल्पवासिनी देवीनिकी उत्पत्ति पहिले दूजे स्वर्गमें होय है । ऊपरले देव अपनी नियोगिनी सौधर्म ईशानविषै उपजी जानि ले जाय हैं ॥ ६१ ॥ अर ज्योतिषी भवनवासी व्यंतर तथा पहिले दूजे स्वर्गके जो देव हैं तिनके मनुष्य तिर्यंचनिकी न्याईं तीव्रमोहके उदयतैं कायाकरि संभोग है ॥ ६२ ॥ अर तीजे चौथे स्वर्ग देवनिके मध्य मोहके उदयतैं स्पर्शका संभोग है ॥ ६३ ॥ अर पांचवें छठे सातवें आठवें स्वर्गवासीनिके रूपहीका विषय है अर नवमें दशवें ग्यारवें बारवें स्वर्गमें देवनिके शब्दही का संभोग है अर तेरहमें चौदहवें पंद्रहवें सोलमें स्वर्गमें मनहीका संभोग है ॥६४॥ इनके मोहका मंद उदय है अर अहमिंद्रनिके पहिले ग्रैवेयकतैं लेय सर्वार्थसिद्धिपर्यंत शांतभावनिकी प्रधानता है सुखकरि पूर्ण है जिनके मोहका उदय प्रगट नाहीं तातैं संभोगतैं रहित हैं जहां देवांगना नाहीं ॥६५॥ पहिले स्वर्गतैं लेय सोलहवें स्वर्ग पर्यंत इतनी बातनिकरि देव चढते चढते हैं, स्थिति कहिये आयु, प्रभाव कहिये अतिशय, सुख कहिये निर्विकल्पता, अर विशुद्धि कहिये निर्मलता, अर लेश्या कहिये शुभलेश्या इंद्रियनिका क्षयोपशम अर अवधिज्ञान ॥६७॥ इतनी बातनिकरि ऊपरले देव बढते बढते हैं। अर गति कहिए गमन, अर शरीरकी उच्चता अर अभिमान कहिये गर्व अर परिग्रह कहिये संघ इनकरि ऊपरले देव घटते घटते हैं। सोलहवें

देशना ३ प्रायोग्य ४ अर करण ५ तिनमें चार तो बहुत वेर भई अर पांचवीं करणलब्धि निकटभव्यहीकै होय। यह क्षयोपशमादि सकल करणलब्धिकरि सफल हैं। करणलब्धिके भेद ३ अधोकरण १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिकरण ३ ॥ ४२ ॥ जब या करणलब्धिकरि दर्शनमोहका उपशम करें तब उपशम सम्यक्त होय फिर दर्शनमोहका क्षयोपशम करें अर भावनिकी शुद्धतातैं दर्शन मोहका क्षय होय ॥ ४३ ॥ सम्यक्तके तीन भेद हैं प्रथम उपशम १ क्षयोपशम २ अर क्षायक ३ ये त्रेधा सम्यक्त सो जब करणलब्धिकरि सम्यक्त उपजै तब भव्यजीव आनंदकूं भोगै हैं ॥ ४४ ॥ अर चारित्रमोहके क्षयोपशमकी लब्धितैं ये भव्यजीव चारित्रकूं पायकरि कर्मनिका क्षय करै हैं ताकरि अनंतदर्शन १ अनंतज्ञान २ अनंतसुख ३ अनंतवीर्यकूं पावै हैं ४ संसारसे निवृति भये निर्वाणविषै तिष्ठै हैं ॥ ४६ ॥ अर जिनके चारित्रमोहका उदय है ताकी अत्यंत प्रबलता है तिनके सम्यक्तहीका बल है ते अव्रतसम्यग्दृष्टी दृढ सम्यक्तके प्रभावतैं देवायुका बंध करैं ॥ ४७ ॥ अर जे अणुव्रती पंचम गुणस्थानवर्ती हैं ते सौधर्मादि अच्युतस्वर्गपर्यंत सोलह स्वर्गनिविषैं उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देव होंहिं ॥ ४८ ॥ अर सरागसंयमके धारक जे प्रमत्तसंयमी तथा अप्रमत्तसंयमी निःपाप मुनिराज ते प्रथमस्वर्गतैं लेय सोलहस्वर्ग अर कल्पातीत कहिये नव ग्रैवेयक अर नव अनुदिश पंच पंचोत्तर ये तेईस सोलह स्वर्गनिके ऊपर अहमिंद्र लोक है तहां मुनि जांय, स्वर्गविषैं तो इंद्रादिक स्वर्गवासी देव अर परै अहमिंद्र सो भावनिकरि किया जो तप ताका फल देवगतिका सुख साधु सो मुनि पावै हैं अर परंपराय मोक्ष जावै हैं ॥४९॥ पहिलास्वर्ग सौधर्म १ दूजा ईशान २ तिनविषै उत्कृष्ट आयु दोयसागर किंचित् अधिक अर तीजा सनत्कुमार ३ चौथा माहेंद्र ४ तिनविषै उत्कृष्ट आयु सागर सात, अर पांचवां ब्रह्म ५ छठा ब्रह्मोत्तर ६ तहां आयु दशसागर है अर सातवां लांतव ७ अर आठवां कापिष्ट ८ तिनविषै आयु चौदह सागर। अर शुक्र कहिए नवमां ९ महाशुक्र कहिए दशवां तिनविषै आयु सोलह सागर, ग्यारहवां सतार ११ बारहवां सहस्रार १२ तिनविषै अठारासागर, अर तेरवां आनत १३ चौदहवां प्राणत १४ तिनविषै सागर बीस। अर आरण पंद्रहवां १५ सोलहवां अच्युतस्वर्ग १६ तिनविषै उत्कृष्ट

भए। अर तीजा पाथडा रौरक ताविषै दिशानिके एकसौ अठ्यासी। अर विदिसानिके एकसौचौरासी सब मिलि तीनसौ बहत्तरि ॥ ९० ॥ अर चौथा पाथडा भ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौ चौरासी अर अर विदिशानिके एकसौअस्सी सब मिलि तीनसौचौसठि। अर पांचवां उद्भ्रांत ताविषै दिशानिके एकसौअस्सी विदिशानिके एकसौछिहत्तरि सबमिलि तीनसौछप्पन ॥ ९२ ॥ अर छठे संभ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौ छिहत्तरि अर विदिशानिके एकसौबहत्तरि सब मिलि तीनसौअडतालीस अर सातवां असंभ्रात ताविषै दिशानिके एकसौबहत्तरि अर विदिशानिके एकसौअडसठ सबमिलि ३४०॥९४॥ अर आठवां विभ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौअडसठ अर विदिशानिके एकसौचौसठि सब मिलि तीनसौबत्तीस ॥९५॥ बहुरि नवमां त्रस्त ताविषैं दिशानिके एकसौ चौसठ अर विदिशानिके एकसौसाठ सबमिलि ३२४॥९६॥अर दसवां त्रसित ताविषै दिशानिके एकसौसाठ विदिशानिके १५६ सबमिलि ३१६ ॥९७॥ अरग्यारहवां वक्रांत ताविषै दिशानिके १५६ विदिशानिके १५२ सबमिलि ३०८ ॥९८॥ अर बारहवां अवक्रांत ताविषै दिशानिके १५२ अर विदिशानिके १४८ सबमिलि ३०० ॥ ९९ ॥ अर तेरहवां विक्रांत ताविषै दिशानिके १४८ अर विदिशानिके १४४ सबमिलि दोयसैबाणबै। ये सब तेरह पाथडनिमें इंद्रक बिला एक एक पाथडेमें एक एक इंद्रक विला सो तेरह पाथडानिमें इंद्रक तेरा अर श्रेणीवद्ध चवालीससैबीस सो इंद्रक ये सब मिलि चालीससै तेतीस भए ॥२॥ इंद्रक विला तो पाथडानिके मध्य है अर श्रेणीबद्ध दिशानिमें पंकति रूप है अर प्रकीर्णक कहिए बिखरवां सर्वत्र है । ते सकल गुणतीसलाख पिच्याणवेहजार पांचसौ सडसठि सब मिलि पहले नरक तेरा पाथडानिविषैं तीस लाख पाथडे हैं ॥ ३ ॥ अथानंतर दूजे नरकके पाथडे ग्यारा तिनके विला कहै हैं। दूजेका पहिला पाथडा तरक ताविषै दिशानिके एकसौ चवालीस अर विदिशानिके १४० सबमिलि २८४। अर दूजा स्तनक ताविषै दिशानिके १४० अर विदिशानिके १३६ सब मिलि २७६ ॥ ५ ॥ अर तीजा मनक ताविषैं दिशानिके एकसौ छत्तीस अर विदिशानिके १३२ सब मिलि २६८ ॥ ६ ॥ अर चौथा वनक ताविषैं दिशानिके १३२ अर विदिशानिके १२८ सब मिलि २६० ॥ ७ ॥ अर पांचवां घाट ताविषै दिशानिके एक-

लाख अर दूजेमें पचीसलाख तीजेमें पंद्रहलाख चौथेमें दशलाख पांचवेंमें तीनलाख छठेमें पांचघाट एक लाख ९९९९५, सातवें नरकमें पांच ये सब जोडिए तब सब चौरासी लाख होयहैं ॥ ७६ ॥ अर सातों नरकनिके पाथडे कहे हैं तिनमें पहिले तेरह, दूजे ग्यारह, तीजे नव, चौथे सात, पांचवें पांच छठे तीन, सातवें एक ॥ ७३ ॥ पहिले नरकके तेरह पाथडे तिनके नाम। पहिला सीमंतक १ नारक २ रौरव ३ भ्रांति ४ उद्भ्रांति ५ संभ्रांति ६ असंभ्रांति ७ विभ्रांति ८ त्रस ९ त्रसित १० वक्रांत ११ अवक्रांत १२ विक्रांत १३ ये पहिले नरकं धम्माविषै तेरह हैं। अर दूजे नरकविषै स्तरक १ स्तनक २ मनक ३ वनक ४ घाट ५ संघाट ६ जिह्व ७ जिह्वक ८ लोल ९ लोलुप १० अर स्तनलोलुप ११ ये ग्यारह दूजे नरक वंशाविषै हैं। बहुरि तप्त १ तापित २ अन्यस्तपन ३ तापन ४ निदाघ ५ प्रज्वलित ६ उज्ज्वलित ७ संज्वलित ८ संप्रज्वलित ९ ये नवपाथडे तीजे मेघानरक ताविषै हैं ॥ ७९ ॥ बहुरि आर

१	धम्मा	३०००००००
२	वंशा	२५००००००
३	मेघा	१५००००००
४	अंजना	१००००००
५	अरिष्ट	३०००००
६	मघवी	९९९९५
७	माघवी	५

१ तार २ चमार ३ वर्चक ४ स्तमक ५ खड ६ खडखड ७ ये सात पाथडे चौथे अंजना नरकविषै हैं ॥ ८१ ॥ तम १ भ्रम २ झष ३ अंध ४ अर तमिस्त्र ५ ये पांच पाथडे पांचवें अरिष्ट नरकके हैं। अर हिम १, मर्दल २ वल्लक ३ ये तीन पाथडे छठे मघवीनरकके हैं। अर अप्रतिष्ठानं एक पाथडा सातवें नरक महातमका है ॥ ८३ ॥ ये सब उणचास पाथडे सात नरकनिके कहे हैं सातवें तैं पहिलेतक दोय दोय पाथडे बधे। पहिले तेरह कहे तिनमें पहिला सीमंतक पाथडा ताविषै एक एक दिशमें श्रेणीबद्ध बिले उनचास, बडा है अंतर जिनविषै ॥ ॥८५॥ अर च्यारि विदिशा तिनविषै अडतालीस अडतालीस बिले सो च्यारि विदिशाके एकसौ बानवे अर चार दिशाके एकसौछ्यानवे दिशा विदिशाके सब मिलि तीनसौ अठ्यासी श्रेणीबद्ध बिला भए ॥८८॥ अर दूजा पाथडा नारक तामें चारों दिशानिके एकसौबाणवे अर विदिशानिके एकसौअठासी ये सब मिलि श्रेणीबद्ध तीनसौअस्सी

अर सातवेंतैं नीचे एकराजू नीचा पातालका अंत है अर छे भूमिनिकी मुटाई टारि, सो मुटाईके तीजे दूजे नरककी मुटाई बत्तीसहजार योजन है, अर तीजी पृथ्वीकी मुटाई अट्ठाईसहजार योजन है, अर चौथीकी चौवीसहजार योजन, अर पांचवेंकी मुटाई बीसहजार योजन, अर छठेकी मुटाई सोलहहजार योजन, अर सातवेंकी मुटाई आठहजार योजन है ॥ ५७ ॥ दश प्रकारके भवनवासी जे असुर कुमारादिक तिनके विमाननिकी संख्या कहै हैं अर असुरकुमारनिके चौसठ लाख विमान अर नागकुमारनिके चौरासीलाख विमान, अर गरुडकुमारनिके बहत्तर लाख विमान अर द्वीपकुमार, उदधिकुमार, मेघकुमार, दिक्कुमार अग्निकुमार, विद्युतकुमार इनके विमान प्रत्येकके छिहत्तर छिहत्तर लाख हैं ॥ ५८ ॥ अर वायुकुमारनिके विमान छ्यानवेलाख हैं। ये भवनवासीनिके विमान सात कोटि बहत्तरलाख कहे हैं सो एकएकमें एकएक चैत्यालय ॥५९॥ अर अधोलोकविषै भूतनिके विमान चौदहहजार अर राक्षसनिके सोलहहजार ये पाताललोक संबंधी कहे हैं। पाताललोकविषै भवनवासी तथा व्यंतर दोयही जाति हैं। अर असुरकुमारनिकी उत्कृष्ट आयु एक सागर कछुइक अधिक अर नागकुमारनिकी तीन पल्य, अर गरुड़कुमारनिकी आयु अढाई पल्य अर द्वीपकुमारनिकी दोय पल्य अर उदधिकुमार, मेघकुमार, विद्युत्कुमार अग्नि कुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार इन सबकी उत्कृष्ट आयु डेढ़ पल्य है अर जघन्य आयु दश हजार वर्ष पहिले कहा ही था अर मध्यके भेद जघन्यसूं लेकरि उत्कृष्ट पर्यंत नानाप्रकारके हैं ॥ ६५ ॥ अर असुर कुमारनिका शरीर ऊंचा पच्चीस धनुष है अर नव जाति भवनवासी अर आठजाति व्यंतरनिका शरीर दश धनुष ऊंचा है अर ज्योतिषी देवनिका सात धनुष यह शरीरकी ऊंचाई कही। अर पहिले दूजे देवलोकका शरीर सात हाथ ऊंचा अर तीजे चौथे स्वर्गमें छे हाथ अर पांचवें छठे सातवें आठवेंमें पांच हाथ अर नववेंतैं बारहवेंतक चार हाथ अर तेरहवें चौदहवेंमें साढेतीन हाथ अर पंद्रहवेंमें सोलहवेंमें हाथ तीन अर नव ग्रैवेयकमें पहिली त्रिकमें हाथ अढाई, दूजी त्रिकमें हाथ दोय २, तीजी त्रिकमें हाथ डेढ अर नव अनुत्तरविषै हाथ सवा अर पंच अनुत्तरविषै हाथ एक ॥६७॥ अथानंतर हे श्रेणिक! सातही नरकनिके अनुक्रमणकरि संक्षेपतैं बिला कहूं हूं सो तू सुनि। पहिले नरकविषै बिला तीस

दूजी शर्कराप्रभा २ तीजी बालुका प्रभा ३ चौथी पंकप्रभा ४ पांचवीं धूमप्रभा ५ छठी तमप्रभा ६ सातवीं महातमप्रभा ७ ये सातों पृथ्वी घनोदधि वातवलयनिके मध्य तिष्ठै है। अर पहिली पृथ्वीतैं लेकरि सातवींतक नीचे नीचे तिष्ठै है, वे पहिले तो नरकनिकी पृथ्वीके प्रभाके नाम कहै हैं बहुरि नरकोंके नाम कहैं हैं पहिला धम्मा १ दूजा वंशा २ तीजा मेघा ३ चौथा अंजना ४ पांचवां अरिष्टा ५ छठा मघवी ६ सातवां माघवी ७ ॥ ४४ ॥ पहिली रत्नप्रभा पृथिवी ताके तीन भागनिके नाम खरभाग १ पंकभाग २ बहुलभाग ३ ये तीनोंभाग एक लाख अस्सीहजार योजन प्रमाण हैं। तिनमें पहिला खरभाग सोलहहजार योजन है, अर दूजा पंकभाग चौरासीहजार योजन है अर तीजा बहुलभाग अस्सीहजार योजन है। याभांति तीनोंकी मुटाई कही है। तिनमें पहिला खरभाग सोलह हजार योजन है ताविषै सोलहभागमें नवप्रकार भवनवासी हैं दश जातिमें एक असुरकुमार भवनवासी नाहीं, नीचले सातवें भागमें सात जातिके व्यन्तरनिके निवास अर आठ जातिमें एक राक्षसजाति इनमें नाहीं अर सब हैं। अर दूजा पंकभाग तामें दोय भाग हैं एक भागमें राक्षसजाति एकमें असुरनिके निवास रत्ननिकरि देदीप्यमान हैं ॥ ४८ ॥ खरभागविषै सोलहभाग कहिये तिनके नाम। पहिला चित्रानाम पटल १ दूजा वज्रा २ तीजा वैडूर्य ३ चौथा लोहितांक ४ पांचवां मसारगल्व ५ छठा गोमेद ६ सातवां प्रवालपटल ७ आठवां ज्योति ८ नवमां रसपटल ९ दशमां अंजन १० ग्यारहवां अंजनमूल ११ बारहवां अंग १२ तेरहवां स्फटिक १३ चौदहवां चंद्रभाष्य १४ पंद्रहवां वर्चक १५ सोलहवां बहुशिलामय १६ यह सब ही पटल नवप्रकार भवनवासीनिके अर सप्तप्रकारके व्यंतरनिके निवास रत्नमई महा प्रभावकूं धरै हैं एक पटलकी मुटाई हजार हजार योजन है रत्नप्रभाविषै पहिला खरभाग अर दूजा पंकभाग ये तो कहे हैं अर बहुलभागविषै पहिला नरक अर नीचे छै नरक अर सोलह नरकनिकी भूमि अपनी अपनी जेती मुटाई धारै है सो ता मुटाईकूं टारकरि एक एक राजूका लम्बा नरकनिमें अंतर है। भावार्थ—चित्रा पृथ्वीके अधोभागमें एक राजू तो दूजा नरक है; अर दूजेके एक राजूके परे तीजा है अर तीजेतैं एक राजू चौथा है, चौथेतैं एक राजू पांचवां, तातैं एक राजू छठा अर छठेतैं एक राजू सातवां, याभांति छै राजूमें सात नरक हैं

सगुहकूट ३ मणिभद्रकूट ४ विजयार्द्धकुमारकूट ५ पूर्णभद्रकूट ६ खण्डप्रपातकूट ७ दक्षिणार्द्धकूट ८ वैश्रवणकूट ९ यह नव शिखर भरतक्षेत्रके विजयार्ध समान जानहु ॥१२॥ अर जे षट् कुलाचल कहे हैं ते सातों क्षेत्रनिकूं धरे हैं तातैं इनकूं वर्षधर कहिए वर्ष नाम क्षेत्रका है। षट् कुलाचलनिके दोनों ओर अनादिसिद्ध अकृत्रिम बन हैं ते बन छहों ऋतुके फल फूलनिकरि भरे जे नम्रीभूत वृक्ष तिनकरि भरे महा मनोहर हैं अर पक्षीनिके समूह अर भ्रमरनिके जे समूह तिनके मधुर शब्दकरि महा रमणीक है एक एक कुलाचलके दो दो बन हैं सो लम्बे तो पर्वतकी लंबाई समान पूर्व पश्चिमके समुद्र पर्यंत हैं अर चौडे योजन आध, नानाप्रकारकी मणिके हैं कोट जिनके एक एक पर्वतके दोनों तीर बनखण्ड सोहै हैं, अर बनोंका कोट आध योजन ऊंचा अर पांचसौ धनुष चौडा ॥११६॥ अर नानावर्णके भले भले जो रत्न तिनके कोटकी भित्ति हैं सो कोटकी भित्तिके उचित रत्ननिके तोरण सोहै हैं अर पहाडनिके ऊपर सर्व ओर मणिमई महामनोज्ञ दो कोस ऊंची पदमवेदी है ॥ १८ ॥ या मध्यलोकविषै द्वीप समुद्र अर पृथ्वी नदी द्रह पर्वत नगर अर तिनके कोटनिकी ऊंचाई अर चौडाईका यह ही प्रमाण जानहु ऊंचाई योजन आधा, चौडाई धनुष पांचसौ ॥ ११९ ॥ अर इन छहों कुलाचलनिके मध्य छह द्रह हैं पूर्व पश्चिम समान है लंबाई जिनिकी ॥ २० ॥ द्रहनिके नाम—पद्म १ महापद्म २ तिगिंछ ३ केसरी ४ महा पुंडरीक ५ पुंडरीक ६ ॥२१॥ इन छहों द्रहनिके मध्यतैं चौदह नदी निकसीं तिनमें सात तो पूर्व दिशाकी ओरके समुद्रमें गईं, अर सात पश्चिम ओरके समुद्रमें गईं। नदियनिके नाम—गंगा १ सिंधु २ रोहित ३ रोहितास्या ४ हरित ५ हरिकांता ६ सीता ७ सीतोदा ८ नारी ९ नरकांता १० सुवर्णकूला ११ रूप्यकूला १२ रक्ता १३ रक्तोदा १४ ये चौदह महानदियां हजारनि नदीनि सहित समुद्रमें मिलीं ॥ २५ ॥ पहिला पद्मद्रह तो हजार योजन लंबा अर पांचसौ योजन चौडा अर दशयोजन ओंडा ताकी चौगिरद वेदी कहिए कोटकी भित्ति है सो जितनी हिमवानकी भित्ति है तेती ही याकी है महाशुभ शीतल सुगंध जलकरि यह द्रह सर्वत्र भर्या है अर या पद्मद्रहविषैं जलतैं ऊंचा एक योजनके विस्तार

लाख योजन अर धनुपृष्ठ १५८११३ योजन अर १६ कला अर याका वाण ५०००० योजन अर या विदेहक्षेत्रकी चूलिका २९२१ योजन अर १८ कला अर याके भुज दोय १६८८३ योजन अर सवातेरहकला यह जम्बूद्वीपके दक्षिणार्द्धका वर्णन कीया सो ही उत्तरार्द्धका वर्णन जानना, जो वर्णन भारतका सो ऐरावतका अर जो वर्णन हिमवान्‌का सो शिखरीका अर जो वर्णन हैमवतक्षेत्रका सोही हैरण्यवत्‌का अर जो वर्णन महा हिमवानका सो ही रुक्मीका है अर जो वर्णन निषधका सो ही नीलका विदेहतक तो दूने दूने अर विदेहतैं आधा नील नीलतैं आधा रम्यक अर रम्यकतैं आधा रुक्मी अर रुक्मीतैं आधा हैरण्यवत् अर हैरण्यवत्‌तैं आधा शिखरी अर शिखरीतैं आधा ऐरावत याभांति आधेआधे घटते आए. जीवा धनुपृष्ठ पार्श्वभुजा अर चूलिका ये सबविस्तार विदेह तक तो दूने दूने बढते गए अर विदेहतैं आधे आधे घटते गए ॥ ९७ ॥ नीलाचल वैडूर्य मणिमयी ताके शिखर नव, तिनके नाम—सिद्धायतन १ नीलकूट २ पूर्वविदहकूट ३ सीताकूट ४ कीर्तिकूट ५ नरकांतकूट ६ पश्चिम विदेह कूट ७ रम्यककूट ८ अपदर्शनकूट ९ ये नव शिखर नीलाचलके (निषधाचल) शिखरसमान ऊंचे अर मूलमध्य ऊर्द्धविषै शिखरनिकी चौडाई निपधाचलके शिखरनिके समान जानहु ॥ ९९ ॥ अर रूपामई रुक्मीपर्वत ताके शिखर आठ हैं ताके नाम सिद्धायतनकूट १ रुक्मीकूट २ रम्यकूट ३ नारीकूट ४ बुद्धिकूट ५ रूपकूट ६ हैरण्यवतकूट ७ मणिकांचनकूट ८ या पर्वतकी ऊंचाई अर विस्तार कूटनिका मूलमध्य ऊर्द्धविषै महाहिमवान समान जानहु ॥१००॥ अर शिखर नामा-पर्वतके शिखर ग्यारह ताके नाम सिद्धायतन १ शिखिरीकूट २ हैरण्यवतकूट ३ सुरदेवीकूट ४ रक्ताकूट ५ लक्ष्मीकूट ६ सुवर्णकूट ७ रक्तवतीकूट ८ गंगदेव्याकूट ९ ऐरावतकूट १० मणिकांचनकूट ११ ये ग्यारहकूट हिमवानके शिखरसमान शोभाकरि संयुक्त जानहु। अर आदिमध्य अंतविषै विस्तार शिखरनिका अर ऊंचाई शिखरनिकी अर सुंदरता हिमवान् समान जानहु अर जैसा वर्णन विजयार्द्ध भरतक्षेत्रका कह्या तैसा ही ऐरावतक्षेत्रका है ताके शिखर नव पंचप्रकार रत्नमई महा देदीप्यमान शोभै हैं। ९ शिखरनिके नाम—सिद्धायतन कूट १ उत्तरार्द्ध कूट २ तमि-

क्षेत्रतैं परे दूजा पर्वत महाहिमवान् सो ४२१० योजन अर १० कला चौंडा ॥ ६२ ॥ अर ऊंचा योजन २०० अर पृथिवीविषै जड योजन ५० अर याकी जीवा ५३९३१ योजन अर ६ कला ॥ ६३ ॥ अर याकी जीवा लघु धनुपृष्ठ ५७२९३ योजन अर १० कला ॥ ६५ ॥ अर याका वाण ७८९४ योजन अर १४ कला, अर या पर्वतकी चूलिका ८१२८ योजन अर ४॥ कला अर याकी भुजा ९२७६ योजन अर ९॥ कला अर या पर्वतके शिखर आठ रूपामयी रत्ननिकरि मंडित है तट जाका सदा सोहै है। अर अकृत्रिम हैं अविनश्वर हैं कूटनिके नाम—सिद्धायतन १ महाहिमवान् २ हैमवत् ३ रोहित ४ हीकूट ५ हरिकांत ६ हरिवर्ष ७ वैडूर्य ८ रत्नमयी ये अष्टशिखर ५० योजन ऊंचे अर शिखरनिकी चौडाई मूलविषै योजन ५० अर मध्यविषै ३७॥ अर ऊर्द्धविषै योजन २५ ॥७२॥ अर या पर्वततैं परे तीजा क्षेत्र हरि ताका विस्तार योजन ८४२१ अर १ कला ॥७३॥ अर याकी जीवा योजन ७३९०१ अर कला १७ अर याकी जीवाका धनुपृष्ठ ८४०१६ योजन अर कला ४ अर याका वाण १६३१५ योजन अर कला १५। अर याकी चूलिका ९९९५ योजन अर ५॥ कला अर याकी भुजा १३३६१ योजन अर ६॥ कला ॥७५॥ अर या क्षेत्रके परे तीजा निषधाचल सो ऊंचा ४०० योजन अर पृथिवीविषैं जड १०० योजन अर या पर्वतकी जीवा ९४१५६ योजन अर २ कला अर याका धनुपृष्ठ १२४३४६ योजन अर कला ९ अर याका वाण ३३१५७ योजन कला १७ अर चूलिका याकी १०१२७ योजन २ कला अर याकी भुजा २०१६५ योजन अर २॥ कला ॥८५॥ अर यह निषधाचल तत्कालके गले स्वर्णके वर्ण है ताके शिखर नव सर्व रंगरूप रत्नमयी किरणनिकरि दैदीप्यमान है ॥८६॥ शिखरनिके नाम सिद्धायतनकूट १ निषधकूट २ हरिवर्षकूट ३ पूर्व विदेहकूट ४ हीकूट ५ धृतिकूट ६ सीतोदाकूट ७ विदेहकूट ८ रुचककूट ९ ये नव शिखर सबही सौ सौ योजन ऊंचे अर शिखरनिकी मूलविषै चौडाई योजन १०० अर मध्यविषै ७५ योजन अर ऊर्द्धविषै शिखरनिकी चौडाई ५० योजन ॥८९॥ अर निषधाचलके परे विदेह नामा क्षेत्र ताका विस्तार तेतीसहजार छह सौ चौरासी योजन अर ४ कला ॥ ९० ॥ अर याकी जीवा

१७६६ योजन अर कला १ अर विजयार्धका माहिला वाण २३८ योजन अर कला ३ अर बारिला धनुपृष्ठ १०७२० योजन अर कला ११॥ भावार्थ—बीचकी जीवा तो १७६६ योजन अर कला १; अर वारली जीवा १०७४३ योजन अर कला १५ अर विजयार्धका बारला वाण योजन २८८ अर कला ३ अर विजयार्धकी चूलिकाका घनाकार योजन ४८६ किंचित् ऊन अर विजयार्ध पूर्व पश्चिम दोऊ तरफकी भुजाका प्रमाण योजन ४८८ अर कला १६॥ अर हिमवान् पर्वतकी दक्षिणदिशा विषै लघुजीवा १४४७१ योजन अर कला ६ अर हिमवानका लघु धनुपृष्ठ १४५२८ योजन अर कला ११ ॥४१॥ अर इसका वाण ५२६ योजन कला ६ ॥४२॥ अर हिमवानकी चूलिकाका विस्तार १८७५ योजन अर कला ६॥ ॥ ४३ ॥ अर हिमवानकी पूर्व पश्चिम भुजाका प्रमाण १८९२ योजन अर कला ७॥ अर हिमवान् पर्वत ऊंचा योजन १०० अर पृथिवीविषै जड योजन २५ अर चौडाई १०५२ योजन अर कला १२ हिमवानकी जीवा योजन २४००० अर कला १ अर बृहदनु पृष्ठ २५२३० योजन अर ४ कला अर याका वाण १५७८ योजन अर कला १८ अर इस गिरिकी चूलिकाका भाग ५२३० योजन अर ७ कला अर याकी भुजा ५३५० योजन अर १२॥ कला ॥ ५१ ॥ अर या हेममयी गिरिके ग्यारह शिखर तिनमें पहिलाशिखर सिद्धायतन ताविषै एक भगवानका अकृत्रिम चैत्यालय है, ग्यारह शिखरनिके नाम—सिद्धायतनकूट १ हिमवान् २ भरतकूट ३ इलाकूट ४ गंगाकूट ५ श्रीकूट ६ रोहित ७ सिन्धु ८ सुरादेवी ९ हैमवत १० वैश्रवण ११ ॥५४॥ ये सबही कूट पच्चीस योजन तो ऊंचे हैं अर मूलविषै चौडे योजन २५ अर मध्य विषै चौड़े योजन १८॥ अर अन्तविषै चौड़े योजन १२॥ ॥५६॥ अर हिमवान पर्वततैं परे दूजा क्षेत्र हैमवत सो चौडा २१०५ योजन अर कला ५ ताकी जीवा ३७६७४ योजन अर १६ कला ॥ ५८ ॥ अर इसका धनुपृष्ठ ३८७४० योजन अर १० कला अर या धनुषका वाण ३६८४ योजन अर ४ कला ॥ ५९ ॥ अर हैमवत क्षेत्रकी चूलिका ६३७१ योजन अर ७ कला ॥ ६० ॥ अर या क्षेत्रकी भुजा ६७९५ योजन अर तीन कला ॥ ६१ ॥ या

५०० योजन चौडे हैं ॥ ६४ ॥ सो रोहिता रोहितास्या आदि देकर जो दो नदी हैं ते पूर्व पश्चिमकी तरफ पर्वतसूं आध योजन उरे प्रदक्षिणा देय करि समुद्रकूं प्राप्त होय हैं जैसैं सीता सीतोदा नदी मेरुगिरिकी प्रदक्षिणा देयकरि समुद्रकूं प्राप्त होय हैं तैसैं इन पर्वतनिकी प्रदक्षिणादेयकरि नदी समुद्रमें प्रवेश करैं हैं। बहुरि इन पर्वतनिके शिखर पर मंदिर हैं तिनविषै स्वाति १ अरुण २ पद्म ३ प्रभास ४ नामक व्यंतर देव बसैं हैं ॥ ६५ ॥ बहुरि जंबूद्वीप विषै क्षेत्र पर्वत नदी आदि रचना पाइये हैं तिनतैं दूनी धातकीखंड वा पुष्करार्धविषै रचना पाइये हैं ॥ ६६ ॥ बहुरि संख्यातद्वीप जावैं तब एक और जम्बू नामा द्वीप है सो ता द्वीपविषै भी पर्व कहे जो व्यंतर तिनके नगर पाइये हैं ॥ ६७ ॥ बहुरि मेरु अर नील पर्वतके बीच तो उत्तरकुरु भोगभूमि है फिर मेरु अर निषध पर्वतके मध्य देवकुरु भोगभूमि है सो उन भोगभूमियनिकी चौडाईका प्रमाण ११८४२ योजन अर २ कला बहुरि उनकी जीवा ५३००० धनुष अर तिनका धनुपृष्ठ ४६०१८ योजन अर १२ कला ॥ ६९ ॥ अर भोगभूमिकी वृत्ति कहिए चौडाई ७१०४३ योजन अर ४ कला ॥ ७० ॥ यहां एक योजनकी नव कला लीनी तिनमें चार कला अर विदेहक्षेत्रका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला ॥७१॥ अर सुमेरुकी पूर्व अर उत्तर दिशाके मध्य भागविषै अर सीतानदीके पूर्वकी ओर नीलाचलके समीप जंबूवृक्षका स्थल है ॥ ७२ ॥ सो स्थलके ऊपर चौगिर्द महासुंदर रत्ननिकी वेदी है सो ५०० धनुष चौडी अर दोय कोस ऊंची ॥७३॥ ता स्थलका विस्तार अधोभागविषै ५०० कोस अर मध्यविषैं विस्तार कोस ८ अर अन्तविषै कोस दोय यह स्थलकी चौडाई कही ॥ ७४॥ सुवर्णमयी वह स्थल ताकी पाठिका कोस ऊंची आठ अर चोडी मूलविषै १२ कोस अर मध्यविषै आठ अर अग्रभाग विषै कोस ४ ॥ ७५ ॥ अर ताका चौगिर्द अधो कहिए नीचे नीचे छह मणि वेदी हैं अर तिनके ऊपर प्रत्येक प्रत्येक पद्मवेदी हैं ॥ ७६ ॥ सो जम्बूवृक्ष मूलविषै एक कोसके विस्तार है अर पेडकी ऊंचाई दो योजन है। अर पृथ्वीविषै ऊंचा दोय कोस है अर याकी शाखाका विस्तार ८ योजन है ॥ ७७ ॥ अर पाषाणमई

सीता, नारी, सुवर्णकूला, रक्ता ये सप्त नदी तो पूर्व गामिनी हैं अर सिंधु, रोहितास्या, हरिकांता, सीता नरकांता, रूप्यकूला, रक्तोदा यह सप्त नदी पश्चिम दिशाके समुद्रकी ओर प्रवेश करै हैं ॥ ५७ ॥ सकल विदेहक्षेत्रका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला है। सुमेरु पर्वतकी पूर्वोत्तर दिशा अर सीता नदी पूर्वदिशा अर नीलाचलके समीप जंबूवृक्षका स्थल है ॥५८॥ सो जंबूबृक्षके स्थलके ऊपर चौगिरद रत्ननिका कोट है सो कोट दो कोस ऊंचा है अर ५०० धनुष चौडा अर बृक्षका स्थल मूलविषै विस्तार कोस ५०० अर मध्यविषै कोस ८ अर ऊर्द्ध विषै कोस दोय ॥ १५९ ॥ जंबूनद कहिए स्वर्णमई यह वृक्ष ताकी पीठिका ऊंची कोस आठ अर मूलविषै विस्तार कोस १२ अर मध्यविषै कोस आठ अर ऊर्द्धविषै कोस ४ अर बृक्षका विस्तार मूलविषै कोस एक। अर पेड़की ऊंचाई योजन दोय अर पृथ्वी विषैं जड कोस दो अर शाखाका विस्तार योजन आठ ॥६०॥ यह बृक्ष रत्नमई पृथ्वीकाय है महा कहिये मोटा है पेट जाका अर वज्रमई शाखा है जाकी अर सोहै हैं रूपमई पत्र जाके अर मणिमई पुष्प अर फल ताकी किरणनि करि अंकूर फैल रहे हैं ॥६१॥ अर अत्यंत आरक्त जे पल्लव कहिए कौंपल तिनका संतान कहिए समूह ताकरि अति शोभायमान करी हैं सब दिशा जानै पहिली जो पीठिकाका वर्णन किया ताविषै जंबूबृक्षका प्रकाशरूप सोहै है पृथ्वीकायरूप स्वरूप जाका अर नानाप्रकारकी जे शाखा तिनकरि शोभित है ता बृक्षकी चारों दिशाकी तरफ चार बडेडाले हैं तिनमें उत्तरकी ओरके डालकेविषै भगवानका मंदिर है अर तीन डालोंमें देवीनिके निवास हैं ॥ ६१ ॥ यह वृक्ष पृथिवीकाय है रत्नमयी जड है अर हरित वर्ण मणिमई पेड है अर आरक्त कौंपल या वृक्षका सब रत्नमई ही विस्तार है अर जंबू वृक्षके नीचे तीस योजन चौडे अर पचास योजन ऊंचे आदर अर अनादरनामा दोय देवनिके मंदिर हैं वे देव या वृक्षके अधिष्ठाता हैं ॥३६२॥ बहुरि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत इन चार क्षेत्रनिके मध्य चार पर्वत हैं, श्रद्धावान १ विजयवान् २ पद्मवान् ३ गंधवान ४ ये चार पर्वत हैं॥६३॥ सो एक हजार योजन तो ऊंचे हैं अर मूलविषै १००० योजन चौडे हैं अर मध्यविषै ७५० योजन अर शिखरविषैं

ऊंचा है अर मूलविषै ४ योजन अर मध्यविषै २ योजन अर अंतविषै एक योजन चौडा है बहुरि ता पर्वतके शिखिरविषै एक वज्रमयी मंदिर सोहै है। सो वह मंदिर मूलविषै तो ३००० धनुष चौडा है अर मध्यविषै २००० धनुष चौडा है अर शिखिरविषै १००० धनुष चौडा है ताके ऊपर रत्नमई महाकांति संयुक्त एक गंगा नाम कूट है ताका विस्तार श्लोकमें कहै हैं—

अंते पंचशतायामं तदर्द्धंचापि विस्तरं। द्विसहस्रधनुस्तुंगं भितिवज्रमयं गृहम् ॥ ५७ ॥

अर शिखरविषै पांचसौ धनुष लंबा है अर अढाईसौ धनुषके विस्तार है अर दोहजार धनुष ऊंचा है ए ऐसा वज्रमई मंदिर सोहै है ॥१४७॥ फिर ता मंदिरके वज्रकपाट नामा वज्रमई द्वार सोहै है सो वह द्वार ८० धनुष ऊंचा है अर ४० धनुष चौडा है ॥ ४८ ॥ अर वह गंगा नदी या कुण्डकी दक्षिण ओर जायकरि विजयार्द्धकी गुफाविषैं अष्ट योजनके विस्तार होती भई सो विजयार्द्धगिरिकी गुफातैं निकसि चौदह हजार नदीनि सहित साढे बासठ योजनके पाटकूं धरे लवण समुद्रकी पूर्व दिशाकी ओर प्रवेश करती भई सो प्रवेश करनेके द्वार पौने चौरानवै योजन ऊंचा है अर आध योजन ओंडा है अर साढे बासठ योजन चौड़ा है अर तोरणनिकरि संयुक्त है ॥५०॥ या भांति सर्व प्रकार गंगाकी रचना समान सिंधु नदीकी रचना जाननी अर विदेह पर्यंत सब नदीनिकी चाड़ाई वा नीब तोरणतैं दूने २ जाननी अर औंड़ाई भी सब नदीनिकी दूनी दूनी जाननी अर उन नदीनिके स्थानकविषै दिक्कुमारी देवी हैं ते यथास्थानविषै वसै हैं ॥५२॥ बहुरि रोहितास्या नामा नदी है सो पर्वत पर दोयसौ छिहत्तर योजन जायकरि पर्वततैं श्री देवीके मंदिरविषै प्राप्त होनी भई ॥ ५३ ॥ तहां तैं निकसि १६०५ योजन सूधी जाय करि नाभिगिरिकी प्रदक्षिणा देयकरि पश्चिमके समुद्रमें प्रवेश करती भई ॥५४॥ फिर रोहिता नामा जो नदी है सो भी रोहितास्या समान प्रमाणकूं लिये पूर्वके समुद्रमें प्रवेश करती भई, जे छहूं उत्तर दिशाकी नदी हैं तिनकी रचना दक्षिणकी नदीनिकी समान जानहु, यथायोग्य परिवारादि रचना समान जाननी ॥ ५६ ॥ तहां गंगा, रोहित, हरि,

कमल है, सो आकाशविषै सोहै है अर जाके मध्य एक कोसकी कर्णिका है सो आध योजन निकसकरि सोहै है। सो पद्मद्रहतैं तीजे तिगिंछद्रहतक तो दूनी दूनी लम्बाई चौडाई जानहु अर तिगंछतैं केसरीविषै सब विस्तार आधा अर केसरीतैं महा पुंडरीकका आधा अर तातैं पुंडरीकका आधा सो इनमें देवीनिके निवासके मंदिर हैं। देवीनिके नाम—श्री १ ह्री २ धृति ३ कीर्ति ४ बुद्धि ५ लक्ष्मी ६ सो इनमें देवीनिकी आयु एक पल्य अर इनमें श्री ह्री धृति ये तीन तो सौधर्म इंद्रकी नियोगिनी अर कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी ये तीनों ईशानइंद्रकी नियोगिनी हैं इन देवीनिके तीन तीन सभा अर सामानिक देव इनके सेवक ॥ ३१ ॥ अर पद्मद्रहके पूर्व दिशाके द्वार गंगा निकसी, अर सिंधु पश्चिमके द्वार निकसी अर रोहित उत्तरके द्वार निकसी ॥ ३२ ॥ अर दूजा महापद्मद्रह तामैंतैं रोहितास्या अर हरिता निकसी अर तिगिंछतैं हरिकांता शीतोदा निकसीं, अर केसरीद्रहतैं शीता नरकांता निकसीं अर महापुंडरीकतैं नारी अर रुप्यकूला निकसीं ११, अर पुंडरीकतैं सुवर्णकूला रक्त रक्तोदा निकसीं जिन द्वारनि करि ये नदी निकसीं ते द्वार रत्ननिके तोरणनिकरि दैदीप्यमान हैं ॥ ३५ ॥ अर सवा छै योजन गंगाका प्रवाहका पाट अर ऊंडा कोस आध यह तो निकासविषै विस्तार जानहु अर द्वारनिके तोरण नानाप्रकारकी मणी-निकरि मनोहर ऊंचे नव योजनके आठ भाग करिए तामें भाग तीन लीजै। जब गंगा पद्मद्रहतैं निकसी तब हिमवान पर्वतपै ५०० योजन तो पूर्वकी ओर गई पीछे उलटकरि गंगाकूटतैं दक्षिण दिशाकी ओर भरतक्षेत्रविषै आई कछुइक अधिक १०० योजन तो आकाशकूं उलंघकरि पर्वततैं पूर्वके द्वार पडी तहां पूर्वका द्वार सवा छह योजनके विस्तार गोमुखाकार है ताविषै अर्द्ध योजन प्रमाण जिव्हा सो गोमुखी होय गंगागिर सो गायके सींगके आकार गिरि ॥ ४० ॥ श्रीदेवीके मंदिरके आगे होय निकसी सो भूमिविषैं दश योजनके विस्तार होती भई। पृथवीविषै ६० योजन चौडा अर १० योजन ऊंचा एक वज्रमुख नाम कुंड है ताके मध्य आठ योजन चौडा अर जलतैं दो कोस ऊंचा ऐसा एक द्वीप कहिए टापू है अर ता द्वीपके मध्य एक वज्रमई पर्वत है सो पर्वत१० योजन

अर चारों ही गजदंतनिमें मध्यके दो दो कूट सो चारनिके आठ भये तिनमें आठ दिक्कुमारी बसैं हैं तिनिके नाम—भोगंकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, वसुमित्रा, सुमित्रा, वारिषेणा, अचलावती, यह आठ दिक्कुमारी हैं ॥ २२६ ॥ अथानंतर—एक मेरु संबंधी सोला वक्षारगिरि तिनिके नाम कहै हैं—चित्रकूट, पद्मकूट, नलिनकूट, एकशैल ये चार नीलाचल अर सीता नदीके अंतरतक लम्बे हैं ॥ २२८ ॥ अर त्रिकूट, वैश्रवण, अंजन, अर आत्मांजन ये चार सीता अर निषधाचलकूं स्पर्शें ऐसे लाम्बे हैं ये तो पूर्व विदेहके कहे ॥ २९ ॥ अर श्रद्धावान विजयवान्, आशीविष, सुखावह ॥ ३० ॥ ये चार पश्चिम विदेहविषै अपनी लम्बाई कर शीतोदा अर निषधाचलकूं स्पर्शैं हैं ॥३१॥ चंद्रमाल, सूर्यमाल, नाममाल, अर मेघमाल, ये चार शीतोदा अर नीलाचलके मध्य तिष्ठे हैं ॥ ३२ ॥ नदीके तटविषै इन वक्षारगिरिकी ऊंचाई योजन पांचसौ अर सर्वत्र इनकी ऊंचाई चार सौ योजन जानहु ॥ ३३ ॥ एक मेरु संबंधी सोलह वक्षारगिरि सो पांच मेरु संबंधी अस्सी जानहु सो इन वक्षारगिरनिके मस्तकविषै शिखर हैं तिनमें कुलाचलनिके नामसे जो कूट हैं तिनविषै दिक्कुमारी देवी बसैं हैं। अर नदीनिके समीप शिखरविषै भगवानके अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर मध्यके कूटनिविषै व्यंतरनिके क्रीडा करनेके निवास हैं अर भद्रशाल नामा वन सुमेरुकी पूर्व दिशातैं पश्चिम दिशालग लंबा है अर नाना प्रकारके वृक्ष अर बेलनिकरि भर्या है नीलवर्ण सोहै है दोऊ भागनिविषै लंबाई बाईस हजार योजन है पूर्व पश्चिम तो एता लंबा है। अर दक्षिण उत्तर भद्रशालका विस्तार कहिये चौडाई ढाईसौ योजन ॥ २३७ ॥ भद्रशालाके पूर्व पश्चिम लंबी वेदिका कहिये भित्ति सो एक योजन ऊंची अर दो कोस चौडी है अर एक कोस ओंडी है अर नीलाचलतैं गृहवती नामा विभंगा नदी सीताविषै जाय मिली अर हृदयवती अर पंकवती भी, ये वक्षारगिरिके अंतरविषैं तिष्ठी हैं अर तप्तजला नदी निषधाचलतैं निकसी सोहू सीतामें जाय मिली अर मत्तजला अर उन्मत्तजला ये भी सीताविषै जाय मिली क्षीरोदा शीतोदा स्रोतवाहिनी ये तीन विभंगा निषधाचलतैं निकसीं अर शीतोदामें मिलीं ॥ ४१ ॥ अर

दक्षिण तटविषै कुमद नामा कूट अर सुमेरुतैं पश्चिम दिशाविषै पलाश कूट बहुरि सीताके पश्चिमतटविषैं अवतंम नामा कूट अर सुमेरुतैं उत्तर दिशाविषैं रोचननामा कूट अर एक कंचनगिरि एक सुमेरु सम्बन्धी २०० । सो पांच मेरु सम्बन्धी १००० जानहु इनविषैं देव दिग्गजेंद्र बसै हैं ॥ ९ ॥ अर सुमेरु पर्वततैं पश्चिम अर उत्तरके भागविषैं गन्धमादन नामा पर्वत है सो सुवर्णमई सब ओर सुंदर है अर मेरुके पूर्व अर उत्तरदिशाविषै माल्यवान पर्वत है सो वैडूर्यमणिमई महाज्योतिरूप अति सुंदर सोहै है ॥ ११ ॥ अर सुमेरुकी पूर्वकी अर दक्षिणकी उर सोमनसनामा पर्वत है अर पहिले कोणविषैं ताये सोनामय विद्युतप्रभ नामा पर्वत है अर जो गजदंत लम्बाई चौडाईमें कंचनगिरिके समान है ॥ २१२ ॥ वे नीलाचल अर निषधाचलके निकट तो ४०० योजन ऊंचे हैं अर सुमेरुके समीप पांचसौ योजन ऊंचे हैं ये जेते ऊंचे हैं तातैं चौथा भाग इनकी जड जानहु अर देवकुरु उत्तरकुरविषैं ये पाचस योजन चौडे हैं अर चारो ही गजदन्तनिकी दीर्घता योजन तीस हजार दोयसौ नव योजन अर छह कला हैं अर चारों समान हैं ॥ १४ ॥ अर एकके शिखर सात दूजेके नव तीजेके सात चौथेके नव, तिनमें पहिला गंधमादन तिनके शिखरनिके नाम कहैं हैं—सिद्धायतन, गन्धमादन, उत्तरकुरु, गंधमालिनी, लोहित, स्फटिक आनंद ये सातकूट गंधमादनके कहे । अर सिद्धायतन, माल्यवत् उत्तरकुरु, कक्षा, सागरक, रजत, पूर्णभद्र, सीताकूट, हरिसभ नामा कूट यह नव शिखर माल्यवानके जानहु ॥ १८ ॥ फिर सिद्धायतन सौमनस, देवकुरु मांगल, विमल, कांचन, वसिष्ट, यह सात शिखर तीजे सौमनस गजदंतके जानहु । अर चौथा विद्युतप्रभ ताके शिखर नव सिद्धायतन, विद्युतप्रभ, देवकुरु, पदमक, तपन, स्वस्तिक, सतोज्वल, सीतोदाकूट, हरिशब्द कूट ये नवकूट विद्युतप्रभके कहे इन नव कूटनिकी ऊंचाई गिरिकी जड समान जानहु । जो पांचसौ योजन गिरि ऊंचा सवासौ योजनकी जड एताही ऊंचा शिखर यह निश्चय जानहु ॥ २२ ॥ यह चार गजदंतनिके बत्तीस शिखर कहे तिनिमें चारोंके चार सिद्धायतनिमें भगवानके चार अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर कूटनिविषै देव क्रीडा करैं हैं

सीतोदा नदीके दोऊ तटनिमें यमकूट अर मेघकूट ये दोय पर्वत हैं ॥ ९२ ॥ ये नाभिगिरिके समान हैं । अर इनके शिखिरनिविषै देवनिके मंदिर हैं, जो कूटनिका नाम सोही देवनिका नाम । नीलाचलतैं पांचसौ योजन नीलवान् द्रह है, एक उत्तरकुरु कूट, दूजा चंद्रकूट, तीजा ऐरावत् कूट, चौथा माल्यवान् कूट, ये द्रह नदीनिके मध्य हैं, एकनैं दूसरेका अंतर ५०० योजन है ॥९३॥ वे दक्षिणके समुद्रतैं उत्तरके समुद्रतक लम्बे हैं पद्मद्रह समान इनकी दीर्घता है ॥ ९४ ॥ अर निषधाचलकी उत्तरकी उर नदीविषै निषध नाम द्रह है, दूजा देवकुरु तीजा सूर्य चौथा स्वलपस्थ अर पांचवां तड़ितप्रभ ॥ ९६ ॥ ये दस द्रह रत्ननिकरि चित्रित हैं तट जिनके अर ये सबही वज्रमूल कहिए हीरनिकी हैं जड़ जिनके ये महाद्रह उनविषै नागकुमार बसै हैं कमलनिके हैं मंदिर जिनके ॥ ९७ ॥ कैसे हैं कमल जलतैं दो कोस ऊंचे हैं अर एक योजनका है विस्तार जिनके अर एक एक द्रहविषैं एक एक कमल ताकी कर्णिका एक कोस विस्तारमें है, अर एक एक कमलके समीप प्रत्येक प्रत्येक एक लाख चालीस हजार एकसौ सतरह कमल अर एक एक द्रहके सन्मुख दस दस पर्वत सोहै हैं कांचन कूट हैं नाम जिनके ते सीता शीतोदा नदीनिके तटविषैं हैं ॥ २०० ॥ ये सब ही कंचनगिरि समान हैं । सौ योजन ऊंचे है, चौडाईमें अर मूलविषैं तो सौ योजन अर मध्यविषै पचहत्तर योजन चौडे हैं अर शिखिरविषैं पचास योजन चौडे हैं। तिनिके ऊपर एक एक भगवान्‌की अकृत्रिम प्रतिमा है देवल नाहीं, एक एक कंचनगिरि पर एक २ प्रतिमा निरालम्ब तिष्ठै है वे प्रतिमा मोक्षमार्गकी दीपिका हैं पांच सौ धनुष ऊंची मणिमई सो एक एक मेरु सम्बन्धी दो दो सौ कांचनगिरि सो पांच मेरु सम्बन्धी हजार कांचनगिरि भए, तिनिमें हजार प्रतिमा हैं अर इनके शिखरविषै देवनिके क्रीडागृह हैं तिनिमें कांचन नामा देव क्रीडा करै हैं ॥२०४॥ यह तो सीता नदीके उत्तर तटके कूट कहे अर अब दक्षिण दिशाके कूट सुनहु। तिनिके नाम—पद्मोत्तरकूट नीलावतकूट यह तो सुमेरु पर्वततैं पूर्व दिशाकी ओर अर शीतोदाके दक्षिण तटविषै स्वस्ति नामा कूट अंजनगिरि नामा कूट बहुरि सुमेरुके दक्षिण तटविषै अंजनगिरि नामाकूट अर शीतोदाके

है पेड जाका अर वज्र कहिए हीरा तिन मई तो शाखा तिन करि शोभित है अर सोहै हैं रूपामई पत्र जाके तिनकरि शोभित है अर मणिमई है पुष्प अर फल जाके ॥१७८॥ अर रक्त मणिमई पल्लवनिका जो समूह ताकरि आरक्त करी हैं दिशा जानैं, सो पहिली पीठिकाका वर्णन किया ताविषै यह जंबूवृक्ष प्रकाशरूप सोहै है ॥७९॥ सो यह वृक्ष पृथ्वीकाय है बनस्पतिकाय नाहीं नाना प्रकार शाखानिकरि शोभित यह वृक्ष है ताके चारों बडे डाहले हैं ॥ ८० ॥ तिनमें उत्तरके डाहलेविषै भगवानका अकृत्रिम अद्भुत चैत्यालय है अर ताके तीन डाहलेनिमें आदर अर अनादर नामा जो देव तिनके निवास हैं। जंबूवृक्षके अधोभाग तीस २ योजनके विस्तार अर पचास योजन ऊंचे इन दोऊ देवनिके दो मंदिर हैं ॥ १८२ ॥ अर वेदिकाके भीतर सात दिशानिविषै सात प्रधान वृक्ष हैं तिनके परिवारके एते वृक्ष जानहु। चार बहुरि एक सौ आठ बहुरि चारहजार बहुरि सोलह हजार बहुरि बत्तीसहजार बहुरि चालीस हजार बहुरि अडतालीसहजार जो सातप्रधान वृक्ष तिनका परिवार या अनुक्रमतैं ॥ ८४ ॥ एते वृक्ष भए सर्व वृक्ष एकत्र करिए तो एक लाख ४० हजार एक सौ उगनीस १४०११९ भए इनमें सात प्रधानवृक्ष आयगए ॥८६॥ बहुरि सुमेरुके दक्षिण अर पश्चिमके भागविषै अर शीतोदा नदीके पहिले तटविषै निषधाचलके समीप शालमली वृक्षका स्थल सोहै है ॥ ८७ ॥ जैसा जंबूवृक्षका स्थल है तैसा ही शालमली वृक्षका स्थल जानहु, ये दोऊ पृथ्वीकाय हैं। अर इनके परिवारके वृक्ष सर्वही पृथ्वीकाय हैं जैसा वर्णन जम्बूवृक्षका किया तैसाही शालमली वृक्षका जानहु ॥ ८८ ॥ ता शालमली वृक्षकी दक्षिण दिशाकी शाखाविषै भगवान्का अकृत्रिम चैत्यालय है। अर ताकी तीन शाखाविषै वेणु अर वेणुधारी नामा देवनिके निवास हैं जैसा वर्णन आगे आदर अर अनादरका किया है तैसा ही इन दोऊनिका जानहु ॥८९॥ जैसे उत्तरकुरुके अधिष्ठाता आदर अनादर हैं तैसे देवकुरुके अधिष्ठाता वेण अर वेणधारी जानहु ॥९०॥ अर नीलाचलतैं दक्षिणदिशाविषै एक हजार योजन सीता नदीके पूर्व तटविषै चित्रकूट अर विचित्रकूट नाम पर्वत हैं ॥ ९१ ॥ अर निषधाचलके उत्तर दिशाविषै

८१

महाउत्सवरूप तिनकूं पहले देखकरि अपने गर्भविषै जगतके ईश्वरकूं धारती भई ॥ २१ ॥ भगवान धरतीकी रक्षा निमित्त अनेक जीवनिके पालवेआर्थि ऊर्द्धलोकतैं मध्यलोकमें आए पिचत्तर वर्ष अर साढे आठ महीने चतुर्थकालके वाकी रहेहुते तव भगवान गर्भविषै आए। चौथेकालका नाम दुखमासुखमा है सो दुखमाके अंत अंतिम तीर्थंकर उपजे ॥ २२ ॥ आपाढ सुदि छठ उत्तराफाल्गुणी नामा नक्षत्रविषै वर्द्धमान माताके गर्भमें आए ॥ २३ ॥ दिक्कुमारादि कहिए छप्पनकुमारिका तिनकरि करी है सेवा जाकी ऐसी माता सुंदर हैं स्तन जाके ताके गर्भविषै आया, वह जातिरूप जिनराज जगतका सूर्य प्रछन्न है तौभी गर्भकूं देदीप्यमान करता भया जैसैं रवि मेघमालाविषै आच्छादित है तो भी मेघमालाकूं प्रकाशरूप करै है, मेघमंडलमें प्रगट दीखै है ॥२४॥ अर नौ महीना अर आठ दिन व्यतीत भए चैत्र सुदि चौदश उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै प्रभु जन्मे ॥ २५ ॥ तव प्रभूके माहात्म्यतैं इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए, तव इंद्रादिक देव अवधिज्ञानतैं अंतिम जिनेश्वरका जन्म जानकरि सिंहासनतैं उतरि प्रणाम करते भए ॥ २६ ॥ भवनवासी देवनिके शंख अर व्यंतरनिके भेरी अर जोतिपी देवनके सिंहनाद अर स्वर्गवासी देवनिके घंटाका शब्द महामनोहर होता भया। ये वादित्र विना बजाए स्वतःस्वभाव सुन्दर शब्द करते भए तिनकूं सुनकरि चतुरनिकायके देव अति हर्षित होय महा मंगलीक ध्वनि करते भए। जैसी समुद्रकी गर्जना होय तैसी देवनिकी ध्वनि भई ॥ २७ ॥ गज १ तुरंग २ रथ ३ पयादे ४ वृषभ ५ गंधर्व ६ नृत्यकारिणी ७। ये सप्त जो सेना तिनि सहित अर अपनी अपनी स्त्रीनि सहित चतुरनिकायके देव आभूषणनि करि मंडित इंद्र की लार कुंडलपुर नगरविषै आय प्राप्त भए ॥ २८ ॥ इंद्र है मुख्य जिनमें ऐसे समस्त देव नगरकी तीन प्रदक्षिणा देयकरि राजाके आंगनविषै आए, अनेक कोटि चन्द्रमाकी कांतिकूं जीतै है मुख जिनका ऐसे जो जिनराज तिनकूं नमस्कार करके माता पिताकी वंदनाकूं गए। सव इंद्र तो आंगनविषै खडे रहे अर इंद्राणी प्रसूतीगृहमें पठाई सो माताकूं मायामई निद्रा लाय अर माताके निकट मायामई वालक पधराय प्रभुकूं उठाय शची नामा इंद्राणी ल्याई सो अपना पति

है पेड जाका अर वज्र कहिए हीरा तिन मई तो शाखा तिन करि शोभित है अर सोहै हैं रूपामई पत्र जाके तिनकरि शोभित है अर मणिमई है पुष्प अर फल जाके ॥१७८॥ अर रक्त मणिमई पल्लवनिका जो समूह ताकरि आरक्त करी हैं दिशा जानें, सो पहिली पीठिकाका वर्णन किया ताविषै यह जंबूवृक्ष प्रकाशरूप सोहै है ॥७९॥ सो यह वृक्ष पृथ्वीकाय है बनस्पतिकाय नाहीं नाना प्रकार शाखानिकरि शोभित यह वृक्ष है ताके चारों बडे डाहले हैं ॥ ८० ॥ तिनमें उत्तरके डाहलेविषै भगवानका अकृत्रिम अद्भुत चैत्यालय है अर ताके तीन डाहलेनिमें आदर अर अनादर नामा जो देव तिनके निवास हैं। जंबूवृक्षके अधोभाग तीस २ योजनके विस्तार अर पचास योजन ऊंचे इन दोऊ देवनिके दो मंदिर हैं ॥ १८२ ॥ अर वेदिकाके भीतर सात दिशानिविषै सात प्रधान वृक्ष हैं तिनके परिवारके एते वृक्ष जानहु। चार बहुरि एक सौ आठ बहुरि चारहजार बहुरि सोलह हजार बहुरि बत्तीसहजार बहुरि चालीस हजार बहुरि अडतालीसहजार जो सातप्रधान वृक्ष तिनका परिवार या अनुक्रमतैं ॥ ८४ ॥ एते वृक्ष भए सर्व वृक्ष एकत्र करिए तो एक लाख ४० हजार एक सौ उगनीस १४०११९ भए इनमें सात प्रधानवृक्ष आयगए ॥८६॥ बहुरि सुमेरुके दक्षिण अर पश्चिमके भागविषै अर शीतोदा नदीके पहिले तटविषै निषधाचलके समीप शालमली वृक्षका स्थल सोहै है ॥ ८७ ॥ जैसा जंबूवृक्षका स्थल है तैसा ही शालमली वृक्षका स्थल जानहु, ये दोऊ पृथ्वीकाय हैं। अर इनके परिवारके वृक्ष सर्वही पृथ्वीकाय हैं जैसा वर्णन जम्बूवृक्षका किया तैसाही शालमली वृक्षका जानहु ॥ ८८ ॥ ता शालमली वृक्षकी दक्षिण दिशाकी शाखाविषैं भगवान्‌का अकृत्रिम चैत्यालय है। अर ताकी तीन शाखाविषै वेणु अर वेणुधारी नामा देवनिके निवास हैं जैसा वर्णन आगे आदर अर अनादरका किया है तैसा ही इन दोऊनिका जानहु ॥८९॥ जैसे उत्तरकुरुके अधिष्ठाता आदर अनादर हैं तैसे देवकुरुके अधिष्ठाता वेण अर वेणधारी जानहु ॥९०॥ अर नीलाचलतैं दक्षिणदिशाविषै एक हजार योजन सीता नदीके पूर्व तटविषै चित्रकूट अर विचित्रकूट नाम पर्वत हैं ॥ ९१ ॥ अर निषधाचलके उत्तर दिशाविषै

सारस्वत आदित्य प्रमुख अष्टप्रकारके लौकांतिकदेव नमस्कारकरि प्रभुकी स्तुति करते भए ॥ ४९ ॥ अर सौधर्म आदिक इंद्र देवनिसहित आयकरि अभिषेक करते भए अर पूजाकरि पालकीमें चढाये बहुरि वह पालकी इंद्रने उठाई ॥५०॥ मगशिर वदि दशमीके दिन उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै भगवान वनकूं गए ।५१। शरीरके सकल वस्त्र आभूषण माला उतारि पञ्चमुष्टनिकरि शिरके केशलोंचकरि मुनि भए ।५२। भगवानके केशनिके समूह जो भ्रमर सारिखे श्याम उनकूं इंद्रने उठायकरि क्षीरसागरविषै पधराए सो क्षीरसागर जिनेंद्रके केशनिके पुञ्जकरि मण्डित अति शोभता भया मानूं इंद्रने इंद्रनीलमणीनिके समूह समुद्रविषै डारे ॥ ५४ ॥ जिनराजका तपकल्याणक देख कर सकल सुरनर हर्षित भए, तीसरे कल्याणककी पूजाकरि अपने अपने स्थानकूं गए ॥५५॥ तप धरते ही जिनेश्वरकूं चौथा मनःपर्ययज्ञान उपज्या चार ज्ञान ही हैं नेत्र जाके सो धीर वीर बारह वर्ष द्वादश प्रकारका तप करता भया ॥ ५६ ॥ जिननाथके गुणनिके समूहका है ग्रहण जाके सो विहार करता हुवा ऋजुकूला नदीके तीर जृंभिक नामा ग्राम जाके वन विषै आवता भया ॥ ५७ ॥ तहां शालका जो वृक्ष ताके समीप शिलापर आतापन योगधरि तिष्ठ्या तादिन दूजा उपवास था, सो वैशाख सुदी दशमीके दिन उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै वह शुक्लध्यानी घातिया कर्मनिके समूहकूं घातकरि केवलज्ञानकूं प्राप्त होता भया ॥ ५९ ॥ तब समस्त सुरासुर केवलके प्रभावकरि तत्काल चलायमान भया आसन जिनका सो आयकरि ता प्रभुकी सेवा महिमा करते भए ॥ ६० ॥ सो गणधर विना वाणी न खिरी छियासठ दिन तक प्रभु मौन गहि विहार किया फिर राजगृह नगरके समीप महा विस्तीर्ण विपुलाचल पर्वत तापरि आय विराजे जैसैं लोकनिके उद्योत करिवेअर्थ सूर्य उदयाचलपर तिष्ठै ॥ ६१ ॥ तब सुर असुर सबही प्रभुकूं विपुलाचल पर्वतपर विराजते जानकरि इत उततैं आए जैसैं जिनेंद्रके गुण सकल एकत्र भेले होय ही हैं तैसैं सुरासुर सकल ही गिरिपर भेले भए ॥ ६२ ॥ सो पर्वत सौधर्मादिक इंद्रनिकरि अर देवनिकरि वेष्टित भया वर्द्धमानके विराजवेकरि विपुलाचल ऐसा शोभायमान भया जैसा कर्मभूमिकी रीति आदि ऋषभके विराजवेकरि कैलाशपर्वत शोभित भया हुता ॥ ६३ ॥ तहां देवनि तीनकोट रचे एकएक कोटके चारों

मान दीखै है ॥ ३९ ॥ ऐसे ऐरावत गजपर जिनेंद्रकूं चढायकरि देवनि सहित सौधर्म इंद्र सुमेरुपर्वतपर जाय प्राप्त भया, कैसा है जिनेंद्र ऐरावतका मंडन कहिये आभूषण है जिनकरि ऐरावत सोहै है ॥४०॥ ता जिनराजकूं सुरराज गजराजतैं उतारकरि गिरिराजके शिखर जो पांडुके वन ताविषै प्रसिद्ध जो पांडुकशिला तापरि जो सिंहासन ताविषै पधरायकर स्वर्णके कलशनिकरि देवनिकरि आन्या जो क्षीरसागरका जल ताकरि देवनसहित इंद्रप्रभुकूं सपरायकरि वस्त्र आंभूषण पुष्पमालादिकरि शृंगारकरि अतिस्तुति करता भया बहुरि सुमेरुतैं ल्याय माताकी गोदविषै पधरायकर करी है जन्मकल्याणककी उचित क्रिया जिनि ॥४३॥ बहुरि राजा सिद्धार्थ अर राणी प्रियकारिणीके समीप आनंदके दायक जो जिननाथ तिनका वर्द्धमान नाम कहि वहुत स्तुतिकर देवनिसहित देवेश्वर देवलोककूं गया ॥ ४४ ॥ गर्भके पहिले छह महीनातैं लेकरि जन्म पर्यंत पंद्रहमासकर जो रत्नधारा बरसी ताकरि समस्त याचकजन राजाने तृप्त किए ॥४५॥ वे भगवान वर्द्धमान देवनकरि सेव्य ज्यों ज्यों वृद्धिकूं प्राप्त भया त्यूं त्यूं माता पिता बंधु अर तीन लोकके जीव तिनके आनंद अर अनुराग वढावता भया ॥४६॥ वे भगवान सुर असुरनिके इंद्र तिनके मुकुटनि पर कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला ताकरि अर्चित हैं चरणकमल जिनके अर महाधीर सोदेवोपुनीत भोगनिकरि मंडित तीस वर्षके होते भए ॥ ४७ ॥ ता भगवानका चित्त व्रतरूप अथवा शुद्ध है आचरण जाका अर चिर कहिए क्षणवर्ती नाहीं अर स्थिर कहिए दृढ है सो भोगनिविषै आसक्त न भया, कैसे हैं भोग महाकुटिलतारूप हैं जैसैं महाकुटिल सिंहके नखरंध्रनिविषै मोती न परोए जांय॥ भावार्थ—मोती तो शुद्ध कहिए निर्मल अर व्रत कहिए गोल अर स्थिर कहिये अचल अर चिर कहिए जलके बुदबुदाकी न्याई क्षणभंगुर नाहीं सो सिंहके नखरंध्र कुटिल महावक्र उनविषै कैसैं परोए जांय। तैसैं भगवानवर्द्धमानका चित्त शुद्ध कहिए रागादि रहित अर व्रत कहिए संयमरूप अर स्थिर कहिए अचल अर चिर कहिए क्षणवरती नाहीं सो भोगनिविषै कैसैं आसक्त होय। कैसे हैं भोग महा अशुद्ध हैं अर अव्रतरूप हैं अर क्षणभंगुर हैं अर चपल हैं अर कुटिल कहिए वक्र हैं ॥ ४८ ॥ सो एक दिन वे जो भगवान शांतचित्त स्वयंबुद्ध तिनकूं संसारशरीरभोगतैं वैराग्य उपजा। तब

जो सौधर्म इंद्र ताके हाथविषै प्रभु पधराये ॥ ३० ॥ सो इन्द्र प्रभुकूं करकमलनितैं ग्रह करि पूजै चिरकाल अनुरागकी दृष्टि करि देखै हजार नेत्ररूप जो कमलनिके समूह ताकरि अरचै ॥ भावार्थ—सहस्र नेत्रकरि सहस्राक्ष जो इंद्र सो देखता तृप्त न भया ॥ ३१ ॥ बहुरि चंद्रमातैं अति निर्मल अति उत्तंग अंगके धरणहारे प्रभु तिनकूं इंद्र ऐरावत हस्तीके ऊपर आरोपण करता भया, सो कैसा है ऐरावत हस्ती हिमाचलके शिखरनिके समूह समान ऊंचा है । गिरिके तो अधोभाग नीझरने झरै हैं अर गजके अधोभाग मदकी धारा झरै है ॥ ३२ ॥ कुंभस्थलतैं झरता जो मद ताके सुगंधकरि भ्रमण करै हैं भ्रमरनके समूह जा पर सो कैसा सोहै है जैसी हेमाचलकी तलहटीकी भूमिविषै तमाल वृक्षनिके बन करि मंडित सोहै, यहां गज तो गिरि भया अर मदधारा नीझरना भए अर भ्रमरनिका मंडल तमालवृक्ष तिनके बन समान श्याम ॥३३॥ अर काननके निकट लग रही रक्त चामरनिकी पंक्ति सो कैसी सोहै है जैसे हिमाचलके तटकी भूमि रक्त अशोक वृक्षनिका महा बन कर सोहै है । भावार्थ—हिमाचल तो महारक्त अशोक वनकूं धरै है सो महा आरक्त है अर हस्ती रक्तचमरनिकी पंक्तिकूं धरै है ॥३४॥ बहुरि वह हस्ती महा मनोग्य स्वर्णकी सांकल क्षुद्र घंटानिकी पंक्ति कर मंडित है शरीर जाका सो कैसा सोहै है मानों दैदीप्यमान स्वर्णमई कटिमेखलानिकरि मंडित हिमाचल ही है ॥ ३५॥ अर अनेक हैं रद कहिये दांत जाके तिनपर देवांगना नृत्य करै हैं गान करै हैं संगीतशास्त्रके अनुसार, तिनकरि वह हस्ती सो हिमवत समान सोहै है जैसे हिमवन पर्वतके ऊंचे शिखरनि पर देवांगना नाचै हैं गावै हैं तैसै याके दंतनिपर गान करै हैं नृत्य करै हैं ॥ ३६ ॥ सुवृत कहिये गोल अर दीर्घ कहिए लांबी ऐसी हालती जो सूंड ताकरि रोकी हैं दस दिशा जाने मानूं वह सूंड अति दीर्घ अर स्थूल स्फुरायमान हैं सर्पके फणही हैं ॥३७॥ ता गजराजपर जिनराजकूं सौधर्म इन्द्र लेकरि तिष्ठ्या अर दूजे स्वर्गका ईशान इन्द्र महा मनोज्ञ उज्जल छत्र प्रभुके सिरपर धारता भया मानूं प्रभुकूं ऊंचे चढे जान पूर्णमासीका पूर्ण चंद्रमंडल ही निकट आय तिष्ठ्या है । अर असुरकुमारनिका इंद्र चमरेंद्र ताकी भुजानि करि हलाए जे चमर तिनकरि हाथी मनोहर भासै है जैसे चमरी कहिये सुरहगाय सो हालते केसनके चमरनिकरि शोभाय

महाउत्सवरूप तिनकूं पहले देखकरि अपने गर्भविषै जगतके ईश्वरकूं धारती भई ॥ २१ ॥ भगवान धरतीकी रक्षा निमित्त अनेक जीवनिके पालवेअर्थि ऊर्द्धलोकतैं मध्यलोकमें आए पिचत्तर वर्ष अर साढे आठ महीने चतुर्थकालके बाकी रहेहुते तब भगवान गर्भविषै आए। चौथेकालका नाम दुखमासुखमा है सो दुखमाके अंत अंतिम तीर्थंकर उपजे ॥ २२ ॥ आषाढ सुदि छठ उत्तराफाल्गुणी नामा नक्षत्रविषै वर्द्धमान माताके गर्भमें आए ॥ २३ ॥ दिक्कुमारादि कहिए छप्पनकुमारिका तिनकरि करी है सेवा जाकी ऐसी माता सुंदर हैं स्तन जाके ताके गर्भविषै आया, वह जातिरूप जिनराज जगतका सूर्य प्रछन्न है तौभी गर्भकूं देदीप्यमान करता भया जैसें रवि मेघमालाविषै आच्छादित है तो भी मेघमालाकूं प्रकाशरूप करै है, मेघमंडलमें प्रगट दीखै है ॥२४॥ अर नौ महीना अर आठ दिन व्यतीत भए चैत्र सुदि चौदश उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै प्रभु जन्मे ॥ २५ ॥ तब प्रभूके माहात्म्यतैं इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए, तब इंद्रादिक देव अवधिज्ञानतैं अंतिम जिनेश्वरका जन्म जानकरि सिंहासनतैं उतरि प्रणाम करते भए ॥ २६ ॥ भवनवासी देवनिके शंख अर व्यंतरनिके भेरी अर जोतिषी देवनके सिंहनाद अर स्वर्गवासी देवनिके घंटाका शब्द महामनोहर होता भया। ये वादित्र विना बजाए स्वतःस्वभाव सुन्दर शब्द करते भए तिनकूं सुनकरि चतुरनिकायके देव अति हर्षित होय महा मंगलीक ध्वनि करते भए। जैसी समुद्रकी गर्जना होय तैसी देवनिकी ध्वनि भई ॥ २७ ॥ गज १ तुरंग २ रथ ३ पयादे ४ वृषभ ५ गंधर्व ६ नृत्यकारिणी ७। ये सप्त जो सेना तिनि सहित अर अपनी अपनी स्त्रीनि सहित चतुरनिकायके देव आभूषणनि करि मंडित इंद्र की लार कुंडलपुर नगरविषै आय प्राप्त भए ॥ २८ ॥ इंद्र है मुख्य जिनमें ऐसे समस्त देव नगरकी तीन प्रदक्षिणा दयकरि राजाके आंगनविषै आए, अनेक कोटि चन्द्रमाकी कांतिकूं जीतैं है मुख जिनका ऐसे जो जिनराज तिनकूं नमस्कार करके माता पिताकी वंदनाकूं गए। सब इंद्र तो आंगनविषै खडे रहे अर इंद्राणी प्रसूतीगृहमें पठाई सो माताकूं मायामई निद्रा लाय अर माताके निकट मायामई बालक पधराय प्रभुकूं उठाय शची नामा इंद्राणी ल्याई सो अपना पति

वका अतिमुक्त मुनिसूं प्रश्न अर देवकीके अष्ट पुत्रनिके पूर्वभवका श्रवण अर पापका नाश करणहारा श्रीनेमिनाथके चरित्रका श्रवण ॥९०॥ बहुरि श्रीकृष्णकी उत्पत्ति अर गोकुलविषै बाललीला अर बलदेवके उपदेशतैं सर्व शास्त्रनिका ग्रहण ॥९१॥ बहुरि वसुदेवके धनुषरत्नका आरोपण अर यमुनाविषै नागकुमारका जीतना बहुरि कंसके हाथीकूं जीतना अर चाणूरमल्लका निपात अर कंसका विध्वंस ॥८२॥ अर उग्रसेनकूं राज अर हरिका सत्यभामासूं पाणिग्रहण अर तासूं अधिक प्रीति ॥९३॥ अर जीवद्यशाका जरासंधपै जाना अर विलाप करना अर जरासंधका यादवनिपर रोष होना अर बडी सेना भेजना रणविषै कालयवनका पराभव अर अपराजितका हरिके हाथकरि रणविषै मरण अर यादवनिकूं परम हर्षका उपजना काहूका भय नाहीं ॥९५॥ बहुरि शिवदेवीके श्रीनेमिनाथकी उत्पत्ति गर्भमें आये तब षोडश स्वप्नका देखना अर पतिसूं स्वप्नका फल पूछना, पति कही तिहारे श्रीनेमिनाथ पुत्र होंयगे ॥ ॥ ९६ ॥ बहुरि भगवान्‌का जन्म अर सुमेरुविषै जन्माभिषेक बहुरि बालक्रीडा अर जिनराजका प्रताप अर जरासंधका यादवनिपर आगमन, अर यादवनिका समुद्रकी ओर गमन ॥ ९७ ॥ अर मार्गविषै देवतानिने जो माया दिखाई ताकरि जरासंधका पीछे फिरना बहुरि श्रीकृष्णका समुद्रके तीर दाभकी सेजपर तिष्ठ तेला करना ॥ ॥ ९७ ॥ अर इंद्रके वचनतैं गौतम नामा देवकरि समुद्रका संकोचना अर कुवेरकरि द्वारिकापुरीका क्षणमात्रमें रचना बहुरि रुक्मिणीका विवाह अर सत्यभामाके दैदीप्यमान भानुकुमारका जन्म अर रुक्मिणीके प्रद्युम्नका जन्म अर पूर्वला वैरी जो धूमकेतु ताकरि प्रद्युम्नका हरण ॥ १०० ॥ विजयार्द्धविषै प्रद्युम्नकी स्थिति कालसंवर विद्याधरके मंदिर अर कृष्ण अर रुक्मिणीकूं प्रद्युम्नका खेद अर नारद विदेहक्षेत्रमें जायकरि सीमंधर स्वामीकूं पूछकर आया ताकरि खेदका निवारण, प्रद्युम्नकूं षोडश लाभकी प्राप्ति अर प्रज्ञप्तिविद्याकी प्राप्ति ॥ १ ॥ अर प्रद्युम्नका कालसंवरसूं संग्राम, अर नारदके आग्रहकरि मातापिताके निकट आगमन अर शंबुकुमारकी उत्पत्ति अर प्रद्युम्नकी बालक्रीडा अर पिताकापिता जो वसुदेव ताने प्रद्युम्नसूं प्रश्न किया ॥ २ ॥ अर प्रद्युम्नने अपने परिभ्रमणका सकल व्याख्यान किया। बहुरि यादवनिके सकल कुमारनिका वर्णन, बहुरि यादवनिकी वार्ताके

जिनशासनविषै उपदेश होय है तातैं अधिकारनिके विभाग कहिये हैं ॥७४॥ प्रथम ही बर्द्धमान जिनेश्वरका धर्मतीर्थ प्रवर्तन । बहुरि गणधरादि गणनिकी संख्या । बहुरि राजगृहविषै समवसरका आगमन । अर गौतम स्वामीसूं राजा श्रेणिकका प्रश्न । अर क्षेत्र कहिए त्रैलोक्य। अर काल कहिए षट्काल तिनका निरूपण। बहुरि कुलकरनिकी उत्पत्ति अर ऋषभकी उत्पत्ति। अर क्षत्रियादिकके वंशका वर्णन। बहुरि हरिवंशकी प्रवृत्ति। अर हरिवंशविषै मुनिसुव्रतनाथकी उत्पत्ति ॥ ७७ ॥ बहुरि दक्षप्रजापतिका चरित्र। बहुरि राजा वसुका वृत्तांत । बहुरि अंधकवृष्णिका अर ताके दशपुत्रनिका कथन। बहुरि सुप्रतिष्ठ मुनिकूं केवलज्ञानकी उत्पत्ति। बहुरि अंधकवृष्णिकूं दीक्षा। अर समुद्रविजयका राज। अर वसुदेवका सौभाग्य वर्णन। अर उपाय करि वसुदेवका घरतैं विदेशकूं निकसना ॥ ७९ ॥ अर वसुदेवके राणी सोमा अर विजयसेनाका लाभ बहुरि वनगजका वश करना अर विद्याधरकी पुत्री स्यामाका संयोग ॥ ८० ॥ बहुरि वसुदेवकूं अंगारक विद्याधरका ले उडना अर चंपापुरीविषै डारना अर गंधर्वसेनाका लाभ, विष्णकुमार मुनिका चरित्र बहुरि चारुदत्त सेठकी कथा अर ताके मुनिका दर्शन अर वसुदेवके सुंदर नीलंयशाराणीका लाभ अर सोमश्रीका लाभ ॥ ८२ ॥ अर वेदकी उत्पत्तिका कथन अर राजा सौदासका कथन। अर वासुदेवके कपिला राजकन्याका लाभ अर पद्मावतीका लाभ अर राणी चारुहासिनि अर रत्नावतीकी प्राप्ति अर राजा सोमदत्तकी पुत्री वेगवतीका संगम अर मदनवेगाका लाभ बालचंद्राका अवलोकन तथा प्रियंगुसुन्दरीका लाभ अर वंधुमतीका समागम, प्रभावती की प्राप्ति अर रोहिणीका स्वयंवर, ताके स्वयंवरविषै संग्राम अर संग्रामविषै वसुदेवकी जीत अर समुद्रविजयादि बडे भाइनिसूं मिलाप ॥ ८६ ॥ अर बलभद्रकी उत्पत्ति, कंसका व्याख्यान अर जरासंधकी आज्ञातैं राजा सिंहरथका बंधन ॥ ८७ ॥ अर कंसकूं जरासंधकी पुत्री जीवद्यशाका लाभ अर राज्यकी प्राप्ति उग्रसेन पिताका बंधन बहुरि वसुदेवसूं देवकीका विवाह ॥ ८८ ॥ बहुरि कंसका बडा भाई जो अतिमुक्त ताके आदेशकरि कंसकूं आकुलताका होना "जो देवकीके पुत्र कर मेरा मरण है" बहुरि वसुदेवसूं प्रार्थना करना जो देवकीकी प्रसूति हमारे घर होय ॥ ८९ ॥ सो वसुदेव प्रमाण करी बहुरि वसुदे-

केवली भए। यह तीन तो केवली भए अर विष्णु १, नन्दिमित्र २ अपराजित ३ गोवर्धन ४ भद्रबाहु ५ ये पांच चतुर्दश पूर्वके धारक श्रुतकेवली भए। बहुरि विशाखाचार्य १, प्रोष्ठलक्ष २, त्रिय ३, जय ४, नाग ५, सिद्धार्थ ६, धृतिषेण ७, विजय ८, बुद्धिल ९, गंगदेव १०, धर्मसेन ११, ये ग्यारहअंग अर दशपूर्वके पाठी भए ॥६३॥ अर नक्षत्र १, यशःपाल २, पांडु ३, ध्रुवसेन ४, अर कंसाचार्य ५ ये पांच मुनि ग्यारह अंगके पाठी भए ॥६४॥ अर सुभद्र १ यशोभद्र २ यशोबाहु ३ लोहाचार्य ४ ये चार मुनि एक आचारांगके धारक भए॥ ६५ ये पूर्वाचार्य और हू आचार्य तिनकरि विस्तरया यह एकदेश आगम ताका एकदेश व्याख्यान करिए है॥ ६६ ॥ यह हरिवंशपुराण अपूर्व कहिए आश्चर्यकारी अर्थथकी तो बहुत है शब्दथकी अल्प है तातैं शास्त्रके विस्तारके भयकरि अल्परूप सारवस्तुका संग्रह करिए है॥ ६७ ॥ मन वचन कायकी शुद्धताकूं धरैं जे भव्यजीव सदा जैनसूत्रका अभ्यास करैं तिनकूं वक्तापनेकरि अर श्रोतापनेकरि यह पुराणका अर्थ कल्याणका कर्ता होय है। बाह्य अर आभ्यंतरके भेदकरि जो तपकी विधि है सो दोय प्रकारकी है ताविषै स्वाध्यायनामा परम तप है, काहेतैं जो यह स्वाध्याय नामा तप है सो अज्ञानताकूं निवारै है॥ ६९ ॥ जातैं परम पुरुषार्थका करणहारा यह पुराणका अर्थ जे देश कालके जाननहारे पंडित तिन करि व्याख्यान करवे योग्य है। अर जे मत्सरभाव रहित श्रद्धावान पुरुष हैं तिनकरि सुनवे योग्य है, मत्सर कहिए अदेखसखाभाव सो सत्पुरुषनिकूं त्याज्य है॥ ७०॥

अथ अनुक्रमणिका (कथनोंकी सूची)

आगैं इस पुराणविषै ये आठ वडे अधिकार हैं सो अनुक्रमणतैं कहेंगे, इनविषै प्रथम ही त्रैलोक्यका कथन ॥ १ ॥ अर राजानिके वंशकी उत्पत्ति ॥ २ ॥ अर हरिवंशका निरूपण ॥ ३ ॥ अर वसुदेवका चरित्र ॥ ४ ॥ अर नेमिनाथका चरित्र ॥ ५ ॥ अर यादवनिका द्वारिकाविषै निवास ॥ ६ ॥ अर नारायण प्रतिनारायणके युद्धका वर्णन ॥ ७ ॥ बहुरि नेमिनाथके निर्वाणका निरूपण । ८ । यह आठ महा अधिकार पूर्वाचार्यनिने सूत्रनिके अनुसार प्ररूपे सो यह अवांतर अधिकारनि करि शोभित है॥ ७३ ॥ संग्रह करि त्रिभागकरि वस्तुके विस्तारकरि जाथकी

कल्पवृक्ष समान उत्कृष्ट है। कैसा है कल्पवृक्ष औंडी है जड़ जाकी। बहुरि कैसा है यह पुराण अति अगाध है जड़ जाकी महादृढ है, जाकी जड जिनशासन है। बहुरि कल्पवृक्ष अर पुराण दोऊ पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं अर कल्पवृक्ष तो बहुशाखा कहिए अनेक शाखा तिनकरि शोभित है अर यह पुराण बहुशाखा कहिए अनेक कथा तिनकरि शोभित है अर कल्पवृक्ष विस्तीर्ण फलका दाता है अर यह पुराण महापवित्र पुण्यफलका दाता है अर आप पवित्र है अर कल्पवृक्ष हू पवित्र है। यह हरिवंशपुराणं श्रीनेमिनाथके चरितकरि महा निर्मल है॥ ५१॥ जैसैं द्युमणि कहिए सूर्य ताकी ज्योतिकर प्रकाशे जे पदार्थ तिनकूं दीपक तथा मणि तथा खद्योत कहिए पटबीजना तथा विजुली यह लघुवस्तु हू अपनी शक्तिप्रमाण यथायोग्य प्रकाश करै है॥ ५२॥ तैसैं बडे पुरुष केवली श्रुतकेवली तिनकरि प्रकाश्या जो यह पुराण ताके प्रकाशविषै अपनी शक्तिप्रमाण हम सारिखे अल्पबुद्धि हू प्रवर्त्तैं हैं जैसैं सूर्यके प्रकाशे पदार्थनिकूं कहा दीपादिक न प्रकाशैं? तैसैं केवली श्रुतकेवलीके भाषे पुराणकूं कहा हम सारिखे न प्ररूपैं? अपनी शक्ति अनुसार निरूपण करैं॥५३॥ द्रव्यप्रच्छन्न १ क्षेत्रप्रच्छन्न २ कालप्रच्छन्न ३ भावप्रच्छन्न ४ द्रव्यप्रच्छन्न कहिए कालाणु, अर क्षेत्रप्रच्छन्न कहिए अलोकाकाश, अर कालप्रच्छन्न कहिये अनागत काल ३ अर भावप्रच्छन्न कहिए अर्थ पर्यायरूप षट्गुणी हानिवृद्धि ४ ऐसे जे अगम्य पदार्थ आचार्यरूप जो सूर्य तिनकरि किया है प्रकाश जिनका तिनकूं सुकुमारताकरि युक्त जो यह मन सो स्थूल पदार्थनिकूं जैसैं लोक वाह्यदृष्टि करनेतैं देखैं तैसैं देखै है। द्रव्य क्षेत्रादिकके भेदथकी पांच प्रकार है भेद जाका ऐसा यह आगम पुराणपुरुषनिकरि भाष्या तातैं प्रमाण है॥ ५५॥ या ग्रंथके मूलकर्ता आप श्रीतीर्थंकर देव बहुरि उत्तर ग्रंथकर्त्ता गौतम नामा गणधर देव अर उत्तरोत्तर ग्रंथकर्त्ता अनेक आचार्य ते सब ही सर्वज्ञदेवके अनुसार कथन करणहारे हमकूं प्रमाण हैं। ५७॥ तिन केवली अर पांच चतुर्दश पूर्वके धारी श्रुतकेवली अर ग्यारह अंग दश पूर्वके पाठी ग्यारह अर एकादश अंगके धारक पांच अर एक आचारांगके धारक चार अर पांचप्रकारके मुनि पंचमकालके आदिविषै होते भए तिनमें श्रीवर्द्धमानके पीछे तीन केवली भए। इंद्रभूत कहिए गौतम अर सुधर्माचार्य अर जंबूस्वामी अंतिम

सुनिवेथकी जरासंधका कोप अर यादवनिके निकट दूत पठावना ताका आगमन ताकरि यादवनिकी सभाविषै क्षोभ अर दोनों सेनानिका निकसना। अर विजयार्द्धविषै वसुदेवका गमन, विद्याधरनिका क्षोभ वसुदेवका पराक्रम ॥४॥ अर अक्षोहिणीका प्रमाण अर रथी अतिरथी अर्द्धरथी जे राजा महासमर्थ तिनका कथन ॥५॥ अर जरासंधने चक्रव्यूह रचा, ताके भेदिवे अर्थ कृष्णके कटकविषै गरुडव्यूहकी रचना अर कृष्णके गरुडवाहिनी विद्याकी प्राप्ति अर बलदेवकूं सिंहवाहिनी विद्याकी प्राप्ति। अर नेमिनाथके द्विमात भाई रथनेमि अर कृष्णके भाई अनावृष्टि अर अर्जुन इन चक्रव्यूह भेद्या, अर कृष्णकी सेनाविषै मुख्य पाण्डव अर जरासंधकी सेनाविषै मुख्य धृतराष्ट्रके पुत्र कौरव तिनमें परस्पर महायुद्ध वहुरि कृष्ण जरासंधका महायुद्ध ॥ ८ ॥ ता समय कृष्णके हाथविषै चक्रका आवना अर जरासंधका बध, वासुदेवकी विजय सो वसुदेवकूं विजयार्द्धविषै विद्याधरिनिकरि प्रगट भई अर कृष्णका कोटिशिलाका उठावना अर वसुदेवका विजयार्द्धतें आगमन अर बलदेव वासुदेवकी दिग्विजय अर देवोपुनीत रत्नकी प्राप्ति ॥ १० ॥ अर दोऊ भाइनिकूं राज्याभिषेक अर द्रोपदीका हरण बहुरि धातकीखंडमें कृष्णसहित पाण्डव जाय द्रौपदी ल्याए ॥ ११ ॥ वहुरि नेमिनाथके शरीरके बलका वर्णन वा नेमिनाथकी जलक्रीडा पंचायन शंखका पूरना अर नेमिनाथके विवाहका हर्ष ॥ १२ ॥ वहुरि जीवनिकूं बंधसे छुडावना अर नेमिनाथकी दीक्षा, अर केवलज्ञानका उपजना देवनिका आगमन, समवसरणकी विभूतिका वर्णन, राजमतीकूं तपकी प्राप्ति। अर यति श्रावकके धर्मका उपदेश अर भगवानका तीर्थविहार अर देवकीके षट्पुत्रनिका संयम ॥ १४ ॥ बहुरि भगवान्का गिरनारगिरिविषै आगम अर देवकीके प्रश्नका उत्तर अर रुक्मिणी सत्यभामा आदि आठों पटरानीनिके भवांतरका कथन ॥ १५ ॥ बहुरि गजकुमारका जन्म अर ताकरि दीक्षा ग्रहण अर वसुदेव टार नव भाईनिका वैराग्य अर त्रिषष्ठिशलाकाके पुरुषनिकी उत्पत्तिका वर्णन अर जिनराजके अन्तरालका कथन अर बलभद्रका प्रश्न प्रद्युम्नकी दीक्षा अर रुक्मिणी आदि श्रीकृष्णकी स्त्रीनिका अर पुत्रनिका संयम अर द्वीपायन मुनिके क्रोधतें द्वारावतीका नाश ॥१८॥ बलभद्र नारायणका द्वारिकातें निकसना अर कुटुंबका भस्म

ह ना अर दाऊ भा निका शोक सहित कौशांबी नगरीके वनविषै प्रवेश ॥१९॥ अर बलभद्रका जलके अर्थि जाना अर कृष्णका अकेला रहना अर विना जाने जरदकुमारके हाथकरि छूट्या जो वाण ताकरि दैवयोगतैं हरिका परभव गमन ॥२०॥ ताकरि जरदकुमारकूं शोक उपजना अर बलभद्रके अति दुस्तर दुःखका उपजना बहुरि सिद्धार्थदेवके उपदेशतैं बलभद्रकूं वैराग्य उपजना तप धरना अर पांचवें स्वर्ग जाना अर पांडवनिका वैराग्य होना अर गिरनार गिरिविषै नेमिनाथका मुक्त होना ॥२२॥ अर पांचों पांडव महापुरुषनिका उपसर्गका जीतना अर जरदकुमारकूं दीक्षा लेना अर जरदकुमारकी सन्तानतैं हरिवंशका रहना अर तिनके वंशके दीपक जे राजा जितशत्रु तिनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति अर जो राजा श्रेणिक हरिवंशके शिरोमणि तिनिका राजगृहविषै राज्य ॥२४॥ अर बर्द्धमान भगवानका दीपमालिकाके दिन निर्वाणगमन तातैं देवनिका वह दिन उत्सवरूप मानना तब दीप्यमान दीपमालिका प्रसिद्ध भई अर गणधरनिका निर्वाणगमन यह हरिवंशपुराणका विभाग संक्षेपकर कह्या है।

अथानंतर—भव्यजीव प्रसिद्धिके अर्थ विस्तार सहित व्याख्यान सुनहु ॥ २६ ॥ एक ही पुरुषका चरित्र सुनाथका पापका नाश करै अर जो सर्व तीर्थेश्वर चक्रेश्वर हलधर तिनका चरित्र भव्यजीव जे सुनें ताका क्या पूछना, वह तो जन्मजन्मके पाप निवारै ही जैसै महामेघकी एक बूंद ही महातापका विच्छेद करै तो समस्त लोकविषै व्याप रहे मेघमालाके समूह तिनको सहस्रधारा झरै तिनिकरि आताप क्यों न दूर होय सर्वथा दूरही होय ॥ २७ ॥ जे विवेकी जन हैं सो जिनमें वक्रमार्ग ऐसे लौकिक पुराण भ्रांतिरूप तिनकूं तज करि या जैनपुराणकी पदवी महासरल कल्याणकी करणहारी हितकारी ताहि ग्रहो मोहकी है बाहुल्यता जामें ऐसी दिग्मूढता कहिए दिशाभूलपना ताहि तजिकरि भव्यजीन शुद्धमार्ग लेवहु, जिन कहिये भगवान तेई भये भास्कर कहिये सूर्य तिनकरि प्रगट किया जो शुद्धमार्ग महाविस्तीर्ण ताके होतेसंते शुद्ध है दृष्टि जाकी ऐसा सम्यग्दृष्टि सो खाड़विषै काहेकूं परै ! भावार्थ—सूर्यके प्रकाश विना अन्धपुरुष संकीर्ण मार्गविषै खाडेमें परै अर सूर्यके उदयकरि प्रगट भया मार्ग विस्तीर्णताविषै दिव्य नेत्रनिका धारक काहेकूं खाडेमें परै ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ संग्रहविभागवर्णन नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीहरिवंशपुराण

होना अर दोऊ भाईनिका शोक सहित कौशांबी नगरीके वनविषै प्रवेश ॥१९॥ अर बलभद्रका जलके अर्थि जाना अर कृष्णका अकेला रहना अर विना जाने जरदकुमारके हाथकरि छूट्या जो बाण ताकरि दैवयोगतैं हरिका परभव गमन ॥२०॥ ताकरि जरदकुमारकूं शोक उपजना अर बलभद्रके अति दुस्तर दुःखका उपजना बहुरि सिद्धार्थदेवके उपदेशतैं बलभद्रकूं वैराग्य उपजना तप धरना अर पांचवें स्वर्ग जाना अर पांडवनिका वैराग्य होना अर गिरनार गिरिविषै नेमिनाथका मुक्त होना ॥२२॥ अर पांचों पांडव महापुरुषनिका उपसर्गका जीतना अर जरदकुमारकूं दीक्षा लेना अर जरदकुमारकी सन्तानतैं हरिवंशका रहना अर तिनके वंशके दीपक जे राजा जितशत्रु तिनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति अर जो राजा श्रेणिक हरिवंशके शिरोमणि तिनिका राजगृहविषै राज्य ॥२४॥ अर बर्द्धमान भगवानका दीपमालिकाके दिन निर्वाणगमन तातैं देवनिका वह दिन उत्सवरूप मानना तब दीप्यमान दीपमालिका प्रसिद्ध भई अर गणधरनिका निर्वाणगमन यह हरिवंशपुराणका विभाग संक्षेपकर कह्या है।

अथानंतर—भव्यजीव प्रसिद्धिके अर्थ विस्तार सहित व्याख्यान सुनहु ॥ २६ ॥ एक ही पुरुषका चरित्र सुनाथका पापका नाश करै अर जो सर्व तीर्थेश्वर चक्रेश्वर हलधर तिनका चरित्र भव्यजीव जे सुनें ताका क्या पूछना, वह तो जन्मजन्मके पाप निवारै ही जैसै महामेघकी एक बूंद ही महातापका विच्छेद करै तो समस्त लोकविषै व्याप रहे मेघमालाके समूह तिनकी सहस्रधारा झरै तिनिकरि आताप क्यों न दूर होय सर्वथा दूरही होय ॥ २७ ॥ जे विवेकी जन हैं सो जिनमें वक्रमार्ग ऐसे लौकिक पुराण भ्रांतिरूप तिनकूं तज करि या जैनपुराणकी पदवी महासरल कल्याणकी करणहारी हितकारी ताहि ग्रहो मोहकी है वाहुल्यता जामें ऐसी दिग्मूढता कहिए दिशाभूलपना ताहि तजिकरि भव्यजीन शुद्धमार्ग लेवहु, जिन कहिये भगवान तेई भये भास्कर कहिये सूर्य तिनकरि प्रगट किया जो शुद्धमार्ग महाविस्तीर्ण ताके होतेसंते शुद्ध है दृष्टि जाकी ऐसा सम्यग्दृष्टि सो खाड़ेविषै काहेकूं परै ! भावार्थ—सूर्यके प्रकाश विना अन्धपुरुष संकीर्ण मार्गविषै खाडेमें परै अर सूर्यके उदयकरि प्रगट भया मार्ग विस्तीर्णताविषै दिव्य नेत्रनिका धारक काहेकूं खाडेमें परै ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ संग्रहविभागवर्णन नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

प्रकाशक—

पन्नालाल बाकलीवाल

महामंत्री—भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था,

१२ विश्वकोषलैन, बाघबाजार, कलकत्ता।



मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ—

जैनसिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेस

१२ विश्वकोषलैन, बाघबाजार, कलकत्ता।



श्रीवीतरागाय नमः ।

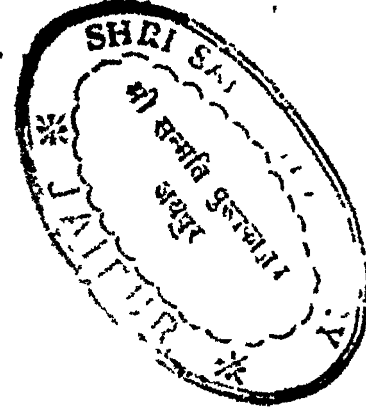
श्रीगांधी—हरीभाई देवकरण जैन ग्रंथमाला

१२

श्रीमद् जिनसेनाचार्य विरचित संस्कृतग्रंथकी

स्वर्गीय पंडितप्रवर दौलतरामजीकृत भाषानुवाद

श्रीहरिवंशपुराण



जिसको

भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था, कलकत्ताने

सोलापुरवासी गांधी—हरीभाई देवकरण एण्ड सन्सके प्रदत्त द्रव्यसे

अपने पवित्र प्रेसमें छपाकर प्रकाशित किया ।

वीरनिर्वाण संवत् २४५६ | अप्रैल १९३० | चैत्र सुदी ९ विक्रम संवत् १९८७

श्रीहरिवंशपुराण



॥ श्री जिनाय नमः ॥

निवेदन

श्रीदिगंबर जैनशास्त्रोंका सुप्रचार करनेके लिये इस संस्थाका जन्म हुआ था। तदनुसार अनेक ग्रन्थका मुद्रण और प्रकाशन हो चुका है। सर्व साधारणमें पुराण ग्रन्थोके प्रचारकी आवश्यकता देखकर संस्थाने श्रीपद्मपुराणजी और हरिवंश पुराणजीको अति सुलभ न्योछावरमें देनेका निश्चय किया था, हर्ष है कि लगातार लगभग सालभर तक परिश्रम और बहु व्यय करनेके बाद उक्त दोनों ग्रंथ शुद्धता पूर्वक छपकर पूर्ण होगये हैं। श्री आदिपुराणजी आजसे २-३ साल पहले ही छप चुके थे इस तरह सबसे उत्तम और बड़े तीनों पुराण ग्रन्थोंका अत्यल्प न्योछावरमें प्रत्येक धर्मबन्धु संग्रह कर लाभ उठा सक्ता है।

संस्थाके संरक्षक और परम संस्थापक दानवीर सेठ हरीभाई देवकरण 'फार्मके' मालिक सेठ हीराचंद रामचंदजी शोलापुरवासी और उनके स्वर्गीय भ्राता बालचंदजी तथा फूलचंदजी की जिनवाणी भक्तिका ही प्रसाद है कि संस्था इतने बड़े ग्रन्थोंको इस तरह सुलभ प्रचार करनेमें सक्षम हुई है, और आगे भी सदा रहेगी।

जिनवाणी माताका इस तरह उद्धार और प्रचारकर यश और पुण्य दोनोंका जो संग्रह करना चाहते हैं उन्हें इस संस्थाका दानी सहायक बनजाना चाहिये विशेष विवरण पत्र व्यवहार तथा नियमावली और रिपोर्ट से जाना जा सक्ता है। आशा है हमारे धर्मबन्धु इस तरफ अवश्य लक्ष्य देंगे।

जिनवाणी सेवक—

श्रीलाल काव्यतीर्थ

मंत्री-भा० जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था,

१२, विश्वकोष लेन, बाघबाजार, कलकता।

श्रीहरिवंशपुराणजी वचनिकाके सर्गोंकी विषयानुक्रमणिका

सर्ग सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१	प्रथम सर्ग—मंगलाचरणादि, संग्रह विभाग वर्णन	१
२	द्वितीय सर्ग—धर्मतीर्थ प्रवतन	१५
३	तृतीय सर्ग—श्रेणिकमहाराजका प्रश्न वर्णन	२८
४	चतुर्थ सर्ग—अधोलोकका वर्णन	४५
५	पांचवां सर्ग—द्वीप और सागरोंका वर्णन	७०
६	छठा सर्ग—ज्योतिर्लोक और ऊर्ध्वलोकका वर्णन	११७
७	सातवा सर्ग—कालद्रव्य और कुलकरोंकी उत्पत्तिका वर्णन	१२७
८	आठवां सर्ग—ऋषभदेव भगवानके गर्भ जन्म कल्याणकका वर्णन	१४२
९	नौवां सर्ग—ऋषभदेव भगवानकी केवलज्ञानकी उत्पत्तिका वर्णन	१६३
१०	दशवां सर्ग—भगवान ऋषभ द्वारा धर्मतीर्थकी प्रवृत्तिका वर्णन	१८६
११	ग्यारहवां सर्ग—चक्रवर्ती भरतका दिग्विजय वणन	२००
१२	बारहवां सर्ग—भगवान ऋषभदेवके निर्वाणकल्याणका वर्णन	२१२
१३	तेरहवां सर्ग—इक्ष्वाकुवंशका वर्णन	२१७
१४	चौदहवां सर्ग—सुमुख और वनमालाका सम्भोग वर्णन	२२०
१५	पन्द्रहवा सर्ग—हरिवंशकी उत्पत्तिका वर्णन	२३०
१६	सोलहवां सर्ग—भगवान मुनिसुव्रतनाथके पांचों कल्याणोंका वर्णन	२३७
१७	सत्तरहवां सर्ग—राजावसुके चरित्रमें नारद और पर्वतका विवाद वर्णन	२४६
१८	अठारहवां सर्ग—राजा समुद्रविजयका राज्य लाभ वर्णन	२६०
१९	उन्नीसवां सर्ग—वसुदेव और गंधर्वसेनाका विवाह वर्णन	२७५
२०	बीसवांसर्ग—विष्णुकुमारका माहात्म्य वर्णन	२८७
२१	इक्कीसवा सर्ग—चारुदत्तके चरित्रका वर्णन	२९२
२२	बाईसवां सर्ग—नीलंयशाका लाभ वर्णन	३०६
२३	तेईसवां सर्ग—सोमश्रीका लाभ वर्णन	३१६
२४	चौबीसवां सर्ग—वनमाला कपिला, पद्मावती, चारुहासिनी, रत्नवती, सोमश्री वेगवती मदनवेगाका लाभ वर्णन	३२८
२५	पच्चीसवा सर्ग—राजा त्रिशिखरका वर्णन	३३४
२६	छब्बीसवा सर्ग—बालचंद्राका दर्शन वर्णन	३३६
२७	सत्ताइसवां सर्ग—मुनिराज संजयंतका चरित्र वर्णन	३४३
२८	अट्ठाइसवां सर्ग—मुनिराज मृगध्वज, और महिसका चरित्र वर्णन	३५४
२९	उनतीसवा—बंधुमती, प्रियंगुसुंदरी लाभ वर्णन	३५८
३०	तीसवा सर्ग—प्रभावतीका लाभ वर्णन	३६२
३१	ईकतीसवा सर्ग—रोहिणीका स्वयंवर वसुदेवका समुद्रविजयादि भाइयोंसे मिलाप वर्णन	३६६
३२	बत्तीसवां सर्ग—सकलवधू, बंधुजन समागम वर्णन	३७६
३३	तेतीसवां सर्ग—कंस, बलदेव, बासुदेव, देवकी ओर उसके पुत्रोंका पूर्वभव वर्णन	३८०

सर्ग सं०	विषय	पृष्ठ सं०
३४	चौतीसवां सर्ग—महोपवास विधि वर्णन	३६१
३५	पैंतिसवां सर्ग-नारायण कृष्णका बालक्रीड़ा वणंन	३६४
३६	छत्तीसवां सर्ग—कंसका पराजयवर्णन	४०२
३७	सैंतीसवां सर्ग—भगवान नेमिनाथकी उत्पत्तिके कारण स्वप्न और उनका फल वर्णन	४१४
३८	अडतीसवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका जन्माभिषेक वर्णन	४२०
३९	उनतालीसवां सर्ग—जन्माभिषेकस्तवन वर्णन	४२८
४०	चालीसवां सर्ग-यादवोंका विदेशगमन वर्णन	४३४
४१	इकतालीसवां सर्ग—द्वारावतीनिवास वर्णन	४३८
४२	व्यालीसवां सर्ग-रुक्मिणी हरण	४४४
४३	तेतालीसवां सर्ग—शंबु और प्रद्युम्नके पूर्वभव का वर्णन	४५२
४४	चवालीसवां सर्ग—कृष्णको जांबुवती लाभ वर्णन	४६६
४५	पैंतालीसवां सर्ग—कुरुवंसकी उत्पत्ति, पांडव धृतराष्ट्र संयोग, द्रोपदीका लाभ वर्णन	४७३
४६	छयालीसवां सर्ग-कीचकके निर्वाणगमनका वर्णन	४८४
४७	सैंतालीसवाँ सर्ग-कुरुवंश निरूपण, प्रद्युम्न और उसके माता पिताका समागम वर्णन	४८६
४८	अडतालीसवां सर्ग—यादवोंके कुमारोंका वर्णन	५०१
४९	ऊनंचासवां सर्ग—धर्मोत्पत्ति वर्णन	५०६
५०	पचासवां सर्ग—चक्रव्यूह गरुड़व्यूहकी रचनाका वर्णन	५१४
५१	इक्यानवां सर्ग-यादवजरासिंधसेनासमागम, हिरण्यनाभ सेनापतिका वध वर्णन	५२३
५२	बावनवां सर्ग—जरासिंधका वध वर्णन	५२७
५३	बावनवां सर्ग—कृष्णका दिग्विजय वर्णन	५३४
५३	त्रेपनवां सर्ग-द्रोपदीका हरण, पांडवोंका दक्षिण मथुरामें निवेश वर्णन	५३७
५४	चौवनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका तपकल्याण वर्णन	५४३
५५	पचपनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका केवलज्ञान कल्याण वर्णन	५५७
५६	छप्पनवां सर्ग—समवशरणका वर्णन	५६६
५७	सतावनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका धर्मोपदेश वर्णन	५७६
५८	अट्ठावनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका विहार वर्णन	६१२
५९	उनसठवां सर्ग—वासुदेवकी आठ पटरानियों का भवांतर वर्णन	६२१
६०	साठवां सर्ग—त्रेसठ शलाका पुरुषोंका चरित्र, और तीर्थंकरोंका अंतर वर्णन	६३०
६१	इकसठवां सर्ग—द्वारावती विनाश वर्णन	६६३
६२	बासठवां सर्ग—कृष्णका परलोक गमन वर्णन	६७०
६३	त्रेसठवां सर्ग—बलदेवका तप वर्णन	६७५
६४	चौंसठवां सर्ग-युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों दीक्षणाका वर्णन	६९०
३५	पैंसठवां सर्ग—भगवान नेमिनाथका निर्वाण कल्याण वर्णन	७०१
६६	छयासठवां सर्ग-गुरुओंके चरणकमलका वर्णन	७०५





श्रीवीतरागाय नमः ।

पुन्नाटगणीय महाकवि श्रीमज्जिनसेनाचार्य विरचित संस्कृतग्रंथका

जयपुर निवासी स्वर्गीय पंडित दौलतरामजीकृत भाषानुवाद

श्रीहरिवंशपुराण ।

मंगलाचरण ।

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणाद्रव्यसाधनं ।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनम् ॥ १ ॥

अर्थ—प्रथम ही जैनशासन कहिये जैनसिद्धांत है सो जयवंत होहु, कैसा है जिनशासन उत्पात व्यय ध्रौव्यलक्षणरूप जो सत्ता सो है लक्षण जाका। ऐसा जो द्रव्य कहिये षट् द्रव्यनिका समूह ताका साधन कहिये कथन करणहारा है अर कैसा है जिनसूत्र सिद्धं कहिये स्वतःसिद्ध है, काहूकरि किया नाहीं अर द्रव्यार्थिकनयकरि अनादि है अर पर्यायार्थिक नयकरि आदि सहित है ॥

भावार्थ—प्रवाह रूप अनादिकालसे प्रवर्त्या है अर सदा प्रवर्त्तैगा तातैं अनादि अनन्त है अर जब प्रगट होय है तब केवलीनके मुखकरि प्रगटै है तातैं आदि सहित है अर जे षट् द्रव्य हैं ते स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकालकी स्वभावकी

अपेक्षा अस्तिरूप हैं अर परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परभावकी अपेक्षा नास्तिरूप हैं या भांति सब ही द्रव्य अस्तिनास्तिरूप हैं अर जिनशासन अस्तिनास्तिका प्रगट करणहारा है ॥ १ ॥ अर श्रीवर्द्धमान तीर्थंकर जिनेश्वरके तांईं नमस्कार होहु, कैसे हैं श्रीवर्द्धमान श्री कहिये अनंत चतुष्टय विभूति, सो जिनके वृद्धिकूं प्राप्त भई है। बहुरि कैसे हैं शुद्धज्ञानके प्रकाशक हैं रागादिक रहित जो शुद्धज्ञान सोई है प्रकाश जिनका अर लोकालोकके एक अद्वितीय सूर्य हैं ॥ २ ॥ बहुरि श्री ऋषभनाथ स्वामीके तांईं नमस्कार होहु। कैसे हैं ऋषभ सर्वके ज्ञायक हैं सर्वज्ञदेव हैं अर सर्व व्यवस्था कहिये सकल कर्मभूमिकी रीति, ताके उपदेशक हैं। असि, मसि, कृषि, बाणिज्य आदि सर्व रीतीनके निरूपण करणहारे हैं अर किया है आदि ही धर्मतीर्थका प्रवर्त्तन जिन्होंने।

भावार्थ—श्रावकके अणुव्रत अर यतिके महाव्रत तिन सबनिका मार्ग प्ररूपण हारे हैं अर स्वयंभू कहिये आप ही अपनी शक्ति करि प्रगट भये हैं अर तीर्थंकर पदकों प्राप्त भये हैं ॥ ३ ॥ बहुरि अजितनाथ स्वामीके तांईं नमस्कार होहु, कैसे हैं अजिनाथ जिनने दूजा तीर्थ प्रगट किया। प्रथम ही तीर्थ तो ऋषभनाथका समय अर दूजा तीर्थ इनका समय। कैसे हैं अजिनाथ गणधरादि समस्त मुनिनिके ईश्वर हैं अर जीते हैं कर्मशत्रु जिनि अर जिन अजितने धर्मरूप तीर्थकूं अजितताके भनकूं प्राप्त किया है। जिनका भाष्या धर्म कोई खंडित न कर सकै वीतरागका धर्म अपराजित है ॥ ४ ॥ बहुरि तीजे तीर्थंकर श्री संभवननाथके तांईं नमस्कार होहु। जिन संभवनाथजीके होतेसंते भगवानके भक्त जे भव्यजीव ते ऐसा विवेक भजते भये कि सुख संसार विषै है वा भुक्ति विषै है।

भावार्थ—अविवेकी जीवनके यह विचार नाहीं कि सुख कहां है। संभवनाथके उपदेशतैं भव्य जीव ऐसा विचार करते भये जो संसार तो चतुर्गति दुखरूप ही है वामें सुख नाहीं। सुखरूप एक निर्वाण ही है ऐसा विवेक जिनके उपदेशतैं भव्योंके होता भया तिनि श्रीसंभवनाथके तांईं सुखकी प्राप्तिके अर्थ बारंबार नमस्कार होहु ॥ ५ ॥ बहुरि अभिनंदन स्वामीके तांईं हमारा मन-वचन काय करि नमस्कार होहु। कैसे हैं अभिनंदन समस्त लोककूं आनंद उपजावन हारे हैं अर जिनेंद्र हैं गणधरादि मुनिनिके इन्द्र हैं सो अभिनन्दन स्वामी चौथा तीर्थ प्रगट करते भये।

भावार्थ—अभिनन्दनका समय चौथा तीर्थ है, तीर्थ कहिये जाकरि भव्यजीव भवसागरकूं तिरैं । कैसा है भगवानका तीर्थ अन्वर्थ कहिये सत्यार्थक है ॥६॥ बहुरि पांचवें तीर्थंकर श्रीसुमतिनाथ तिनिके ताईं सुबुद्धिकी प्राप्तिके अर्थ सदा नमस्कार होहु । जो भगवान सुमतिनाथ पांचवां तीर्थ प्रवर्त्तावते भए, कैसा है जिनका तीर्थ, विस्तार सहित है धर्मका अर्थ जाविषै ॥ ७ ॥ बहुरि छठे श्रीपद्मप्रभ तीर्थंकरके ताईं नमस्कार होहु । जिनकी प्रभा कहिये दीप्ति दशों दिशाकूं उद्योत करती भई, कैसी है पद्मप्रभकी प्रभा-जीती है कमलकी प्रभा जानें ।

भावार्थ-कमलकी प्रभा भी आरक्त है अर पद्मप्रभकी प्रभा भी आरक्त है परन्तु पद्मप्रभकी प्रभा समान कमलकी प्रभा नाहीं ॥ ८ ॥ बहुरि सप्तम तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं सुपार्श्वनाथ कृतार्थ है आत्मा जिनका सो सुपार्श्वनाथ सातवें तीर्थकूं भव्य जीवनके कल्याण निमित्त प्रवर्त्तावते भये, कैसे हैं भगवान सुपार्श्व स्वार्थ कहिये केवल आत्मार्थताकरि पूर्ण हैं ॥ ९ ॥ बहुरि अष्टम तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ जो अष्टम तीर्थके कर्ता हैं तिनके ताईं नमस्कार होहु । चंद्रमा समान है उज्ज्वल कीर्ति जिनकी कीर्तिके तुल्य चंद्रमा कहा परन्तु दृष्टान्त देखी वस्तु हीका देवेमें आवै है, कैसा है भगवानका तीर्थ इंद्रादिक देवनिकरि पूज्य है अर कैसे हैं भगवान सकलके रक्षक हैं चतुर्विध संघके स्वामी हैं ॥ १० ॥ बहुरि श्रीपुष्पदन्त नवमें तीर्थंकरके ताईं नमस्कार होहु कैसे हैं पुष्पदंत अपनी देहकी अर दांतनकी प्रभाकर जीती है कुन्दके पुष्पकी प्रभा जिनि ॥

भावार्थ-दांत तो सबनिहीके उज्ज्वल हैं परंतु पुष्पदंतकी देह भी कुंदके पुष्प समान उज्वल है चंद्रप्रभ अर पुष्पदंत ये दोऊ श्वेतवर्ण हैं यद्यपि कुंदका पुष्प उज्वल है तथापि कुंदके पुष्पकी प्रभा जिनेश्वरकी प्रभा समान उज्वल नाहीं ॥११॥बहुरि दशमा तीर्थंकर श्रीशीतलनाथ कुमार्गके नाश करणहारे धर्मतीर्थके कर्त्ता तिनके ताईं नमस्कार होहु । कैसा है जिनका तीर्थ जंतु कहिए प्राणी तिनके संतापका निवारणहारा है अर शुचि कहिए पवित्र है अर भव-आतापका मेटनहारा महा शीतल है ॥ १२ ॥ बहुरि ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथ अरहंत देव विच्छेद होगया जो धर्मतीर्थ ताहि प्रगट करि भव्यजीवनकी भवफांसीकूं शीघ्र ही छेदते भए तिनके ताईं नमस्कार होहु ।

भावार्थ—शीतलनाथ स्वामीकूं मुक्ति गए पीछे धर्मकी विछित्ति भई धर्मका लोप होयगया सो श्रेयांसनाथ स्वामी धर्मका उद्योतकर भव्यजीवनिकूं पारकरते भए ॥ १३ ॥ बहुरि बारवें वासुपूज्य स्वामी त्रैलोक्यके सूर्य तिनके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं वासुपूज्य कुतीर्थ कहिए कुमार्ग सोई भया अंधकार ताहि मेटकर बारहवां तीथ महा उज्ज्वल ताहि प्रगट करते भए । कैसे हैं वासुपूज्य सूर्य तीन लोकके स्वामी हैं जगतपति हैं ॥ १४ ॥ बहुरि तेरहवें तीर्थंकर श्रीविमलनाथ तिनके ताईं नमस्कार होहु । जो श्रीविमलनाथ कुमार्गरूपी मैल कर मलिन जो जगत, ताहि धर्मरूप तीर्थंकर निर्मल करते भए ॥ १५ ॥ बहुरि चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनंतनाथ तीथ कहिए धर्म, ताके कर्ता जिनराज, तिनके तांईं नमस्कार होहु । कुसिद्धांत कहिए मिथ्याशास्त्र सोई भया तम कहिए अंधकार ताके भेदनेकूं सूर्य समान है उपदेश जिनका ॥ १७ ॥ बहुरि पंदरहवें तीर्थंकर श्रीधर्मनाथ महामुनि तिनके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं धर्मनाथ धर्मतीर्थके कर्त्ता हैं कैसा है धर्मतीर्थ अधर्मका जो मार्ग सोई भया पाताल ताविषै पडते जे प्राणी तिनके उद्धार करवेकूं समर्थ है ।

भावार्थ—पुष्पदन्तकूं मुक्ति गये पीछे शीतलनाथके अन्तरालविषै पावपल्य धर्मकी विछित्ति भई । बहुरि शीतलनाथके मुक्ति गये पीछे श्रेयांसनाथके अंतरालविषै आध पल्य धर्मकी बिछित्ति भई बहुरि वासुपूज्यके अंतरालविषै पौण पल्य विछित्ति भई बहुरि विमलनाथके अन्तरालविषै एक पल्यकी विछित्ति भई अर अनन्तनाथके अन्तरालविषै पौण पल्य बहुरि धर्मनाथके अन्तरालविषै आध पल्य अर शांतिनाथके अन्तरालविषै पाव पल्य या भांति सात तीर्थंकरनिके अन्तरालविषै धर्मकी विछित्ति चार पल्य भई । जब तीर्थंकर प्रगटे तब धर्मका उद्योत भया ॥ १७ ॥ अर उपजाया है धर्मतीर्थ जाने ऐसे जो सोलहवें तीर्थंकर पांचवे चक्रवर्ति श्रीशान्तिनाथ तिनकूं भवदुखकी शांतिके अर्थ नमस्कार होहु । कैसे हैं शांतिनाथ करी है नानाप्रकारकी शान्ति जिनिने अर परम शान्त है स्वरूप जिनका । भावार्थ—संसारविषै सात प्रकारकी ईति है-अतिवृष्टि १ अनावृष्टि २ मूसक ३ टिड्डी ४ सूवा ५ आपका कटक ६ परका कटक ७ ये सप्त ईति हैं तिनके भगवान निवारक हैं ॥ १८ ॥ बहुरि सत-

रहवे श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्र छठे चक्रवर्ति तिनके ताईं नमस्कार होहु। तीनलोकविषै विस्तर रही है कीर्ति जिनकी
ऐसे भगवान कुंथुनाथ तिनकरि सतरहवां तीर्थ प्रवर्त्या ॥ १९ ॥ बहुरि अठारहवें भगवान सातवें चक्रवर्ति पापरूप
वैरीके नाश करणहारे श्रीअरनाथ तिनके ताईं नमस्कार होहु। कैसे हैं अरनाथ संसारके जो थावर जंगम सकल
प्राणी तिनकूं धर्मतीर्थंकर कल्यानके करणहारे हैं ॥२०॥ बहुरि उन्नीसवें तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथ मोहरूप महा मल्लके
मलवेकूं बडे मल्ल, तिनके ताईं नमस्कार होहु। कैसे हैं मल्लिनाथ धर्मतीर्थके प्रवर्तनकर थापी है संसारविषै अचलकीर्ति
जिनि ॥ २१ ॥ बहुरि बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत ईश्वर तिनक ताईं निरंतर नमस्कार होहु। जो भगवान
अपना वीसवां तीर्थ प्रगटकर भवसमुद्रथकी भव्यजीवनिकूं तारते भए ॥ २२ ॥ बहुरि इकीसवें तीर्थंकर धर्मतीर्थके
कर्त्ता श्रीनमिनाथ मुनिनिमें मुख्य तिनके ताईं नमस्कार होहु। कैसे हैं नमिनाथ नबाये हैं, वश किये हैं अन्तरंग
वहिरंगके शत्रु जिनि। भावार्थ—अन्तरंगके शत्रु तो रागादिक अर वहिरंगके शत्रु आरंभ परिग्रहादिक, ते सब
शत्रुवश किये हैं ऐसे इकीसवें तीर्थंकर, तिनके ताईं सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्ररूप जो तीर्थ ताकी सिद्धिके
अर्थ हुये, तीर्थके कर्त्ता हैं ॥२३॥ बहुरि हरिवंश रूप उदयाचल पर्वत ताके शोभायमान शिखामणि सकल जगत-
क सूर्य श्रीअरिष्टनेमि बाईसवें तीर्थंकर, तिनके ताईं नमस्कार होहु। कैसे हैं अरिष्टनेमि-तीर्थ कहिये तिरवेका
उपाय जो परम धर्मरूपरथ, ताके चक्र कहिये पहिये, तिनकी नेमि कहिये धुरा हैं। अथवा तीर्थ कहिये परमध्यान
सोई भया चक्ररूप आयुध ताकी धारा है ॥ २४ ॥ बहुरि तेईसवें तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथके समयविषै धर्मतीर्थके
कर्त्ता जो श्रीपार्श्वनाथ जिनेश्वर सो जयवन्त होहु। कैसे हैं श्रीपार्श्वनाथ जिनके पूर्वभवका शत्रु जो कमठका
जीव असुर महा प्रबल पर्वतनिका उठावनहारा सो तप कल्याणके समय पूर्वभवका वैर चितार उपसर्ग करता
भया, ताहि धरणेंद्र कहिये नागदेवनिका इंद्र पाताललोकका स्वामी भगवानका भक्त सो निवारता भया, ताके प्रता-
पकर सो कमठ भाग्या ऐसे श्रीपार्श्वनाथ जगतविषै जयबंत होहु ॥२५॥ बहुरि वीरनाथ अन्तिम तीर्थंकर तिनके
ताईं नमस्कार होहु। या भांति अवसर्पिणी कालके तीजे चौथे कालविषै किया है धर्मतीर्थका प्रवर्तन जिन, ते

जिनेश्वर देव हमकूं निर्वाणकी सिद्धिके अर्थ होहु ॥ २६ ॥ जो भगवान अतीतकालकी अपेक्षा अनन्त अर वर्तमान कालकी अपेक्षा संख्यात अर अनागतकालकी अपेक्षा अनन्तानन्त ते अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंच परमगुरु, सर्व ही सदा सर्वत्र हमकूं मंगलरूप होहु ॥

अथानंतर—कई एक आचार्यनिके नाम कहैं हैं—समन्तभद्र आचार्यके वचन श्रीमहावीर स्वामीके वचनकी नाईं प्रमाण करवे योग्य हैं। कैसे हैं महावीरके वचन ? या लोकविषै जीवकी सिद्धिके करणहारे हैं अर किये हैं नयप्रमाणकी युक्तिकरि अनेक शास्त्र जिनि। अर कैसे हैं समन्तभद्रके वचन जीवसिद्धि नामा ग्रन्थके कर्ता हैं नय प्रमाणकी युक्तिकरि किया है जिनशासनका व्याख्यान जिनि ॥ २९ ॥ बहुरि जगतविषै प्रसिद्ध है ज्ञान जिनका ऐसे श्रीरिषभदेव तिनकी निर्दोष वाणी सत्पुरुषनिकूं बुद्धिका बोध करै है तैसैं श्रीसिद्धिसेन आचार्यकी वाणी निर्दोष भले पुरुषनिकूं बुद्धिका बोध करै है। सम्यग्दर्शन ज्ञान उपजावै है। बहुरि देवसंघ नामा जो आचार्य, तिनकी वाणी क्यूं न बंदवेयोग्य होय सदा वंदवेयोग्य ही है। कैसे हैं देवसंघ पूज्यपाद हैं वंदनीक हैं चरण जिनके। बहुरि जिनेंद्र इंद्र चंद्र अर्क इत्यादि व्याकरण तिनका है अवलोकन जिनकै ॥ ३० ॥ ऐसे श्रीवज्रसूरि आचार्य तिनकी वाणी धर्मशास्त्रके वक्ता जे गणधर देव तिनकी वाणीकी नाईं प्रमाण है कैसी है, तिनकी वाणी—कर्म कहिये कर्मनिका बंध अर बंधके कारण रागादिक अर मोक्ष कहिये कर्मनिसे रहित होना, अर मोक्षके कारण रत्नत्रय तिनका है विचार जाविषै ॥३२॥ बहुरि महासेन आचार्यकी कथा कौन नाहीं वर्णवे सब ही वर्णवै। जैसे सुंदर लोचन हैं जाके ऐसी वनिता कहिये स्त्री ताका वर्णन सब ही करै। कैसी है सुंदर स्त्री अर कैसी है महासेनकी कथा ? मधुरा कहिये माधुर्य, ताकूं धरै है अर शीला कहिये स्त्री तो शीलवंती है अर कथा शीला कहिये स्वतत्वभावकूं धरै है। अथवा शीलवंत पुरुषनिका कथन है जाविषै ऐसी है अलंकारधारिणी कहिये कथा तो नानाप्रकारके अलंकारनिकूं धरै है अर स्त्री अनेक आभूषणनिकूं धरै है ॥३३॥ बहुरि रविषेणाचार्य जिनकी काव्यमयी मूर्ति या लोकविषै रवि कहिये सूर्य ताकी कांतिकी नाईं निरंतर प्रकाशकूं करै है। कैसी है सूर्यकी कांति उद्योतरूप है अर किया है पद्म कहिये कमल-

का प्रकाश जाने अर कैसी है रविषेणकी काव्यमयी मूर्ति-किया है पद्मपुराणका व्याख्यान जाने अर उद्योतरूप है। जैसैं वारांगना कहिये सुन्दर स्त्री अपने सब अंगन करि कौनके अत्यंत अनुराग न उपजावै ? अर्थात् सबोंके अनुराग उपजावै ॥३४-३५॥ अर बाहुबल नामा आचार्य महाशांत है तो भी तिनकी महारमणीक उत्प्रेक्षा अलंकार के लिए वक्रोक्ति महारमणीक अर्थकूं प्रकाशती थकी कौनके मनकूं अनुरागी न करै ? सबके मनकूं अनुरागी करै जैसैं सुन्दरस्त्रीके सुखकी वक्रोक्ति रमणीक महा उत्प्रेक्षांको लिये कौनके चित्तकूं मोहित न करै ? रमणीक अर्थके विकाशतैं शांत पुरुषनिके मनकूं भी अनुरागी करै ॥ ३६ ॥ बहुरि श्रीकुमारसेन गुरु तिनका यश निर्मल, जाकूं कोई जीत न सकै, सो या लोकविषै समुद्र पर्यंत विचरै है। प्रभाचंद्र नामा ग्रंथ ताका किया है प्रकाश जिनि कैसा है कुमारसेनका यश चंद्रमाके उदयकी प्रभा समान उज्वल है बहुरि कैसा है यश समस्त जो उक्ति तिनकेविषै तिलक समान है। पद्य कहिये छंदोबंध और गद्य कहिये छन्द रहित संस्कृत तिन दोउनकी जो उक्ति (वाणी) तिनके विशेषविषै तिनका यश तिलक समान है। शब्दागम १ युक्त्यागम २ परमागम ३ तीनोंका ही है विशेष ज्ञान जिनकूं ऐसे जो कुमारसेन तिनकी विशेषज्ञता सबनके शिरोभाग वर्तै हैं। अर कविनके चक्रवर्ती हैं जीत्या है परलोक जिनि, ऐसे जो वीरसेन गुरु तिनकी कीर्ति कलंकरहित ही है। बहुरि जिनसेनाचार्यने श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्रके अपार गुणनिकी स्तुति करी सो वह स्तुति पार्श्वाभ्युदय काव्य ही जिनसेन स्वामीकी कीर्तिकूं कहै है।

भावार्थ—जिनसेनकृत पार्श्वनाथ स्तवन जाके पढनेतैं जिनसेनके गुण विस्तरे हैं पृथ्वीविषै कीर्ति विस्तार होय रही है ॥४०॥ अर जो वर्द्धमानपुराण सोई भया ऊगता सूर्य ताका जो कथन तेई भई किरण सो पंडितनिके मन तेई भये स्फटिकमणिकी भांति ताविषै देदीप्यमान भासै हैं ॥४१॥ सत्पुरुषनिकर भाषी जो वाणी सो निर्गुण कहिये बन्धनसूं रहित है तथापि दया क्षमा सत्य सन्तोषादिक अनेक गुणनिकूं धारै हैं। जैसैं—आमकी मंजरी, निर्गुण कहिये तागानतैं रहित है तथापि स्त्रीके मुखविषै कर्णफूलके आकारकरती संती गुणनिकूं धरै है, महाशोभायमान दीखै है। जैसैं अग्नि स्वर्णकी कालिमाकूं दूर करै है तैसैं मेरे काव्यविषै कोई दोष होय तो साधुजन सोधिवे समर्थ हैं ते

शुद्ध कर लेहु ॥ ४२ ॥ सत्पुरुषनिकी सभा कविके काव्यविषै कदाचित् कोई दोष होय तो उस दोषकूं काढिनाखें काव्यमें कोई दोष रहना न देय जैसे समुद्रके मध्य कोई मल आय पऱ्या होय तो लहर मलकूं काढ डारै ॥ ४३ ॥ जैसैं समुद्रविषै निर्मल जो सीपी तिनविषै जलकी बूंद भी मोती होय जाय तैसैं जडात्मा मूर्ख भी निर्मूल पुरुष-करि प्रतिबोध्यासंता प्रतिबुद्ध होय जाय जैसे जलसूं मोती होय जाय, तैसैं जडबुद्धि पंडित होय जाय ॥४४-४५॥ बहुरि खल कहिये दुष्ट तेई भये व्याल कहिये सर्प तिनकूं वे विवेकी राजा हैं ते अपनी शक्तिकर निग्रह करैं तिनका अधिकार न होने देंय कैसे हैं वे सर्प समान दुष्ट दुर्वचनरूप जो विद्या विष तासूं भऱ्या जो मुख ताविषै स्फुराय-मान हैं जीभ जिनिकी ॥ ४६ ॥ जैसैं मेघ, दाहका उपजावनहारा जो ग्रीष्मसमय, ताहि शांत करै तैसैं। कैसा है ग्रीष्म समय बहुत उडै हैं रज जा विषै अर निपटरूपा है सरदीसूं रहित है अर आतापकारी है ऐसे ग्रीषमकूं वर्षा कालविषै मेघ शीतल करै है। कैसे हैं मेघ मिष्ट हैं शब्द जिनके तैसैं सत्पुरुष दुष्टनिकूं समय पाय शांतकरै हैं, कैसे हैं सन्त—सुंदर हैं शब्द जिनके अर कैसे हैं खल पापरूप रजकरि पूर्ण हैं अर महा रूखे हैं जिनमें सज्जनता नाहीं अर लोकनिकूं आताप उपजावै हैं ऐसे खलनिकूं शांतिताकूं प्राप्त करै हैं। या श्लोकविषै दुष्टनिकूं ग्रीष्मकी उपमा दई अर संतनकूं मेघ समान वर्णये ॥४७॥ जैसैं अंधकारकी राशिकूं चांद सूर्यकी किरण निवारै तैसैं अज्ञा-नीकूं ज्ञानी प्रतिवोधै, कैसा है अंधकार जाविषै भला बुरा दृष्टि नाहीं पडै है अर कैसा है मूढनिका अज्ञानभाव जाविषै दुराचार अर शुभाचार सब समान भासै हैं, हेयोपदेयकी सुधि भासै नाहीं ॥ ४८ ॥ याभांति सत्पुरुषनिका हू सहाय मेरे ऐसा जो मैं सो काव्यमय अपनी देहकूं यालोकविषै स्थिर करू हूं। कैसा है काव्यमय देह समस्त रोग अर समस्त जो कुभाव तिनकरि रहित है, उद्धतपनेतैं रहित है अर महाशांत है। भावार्थ—यह काया तो क्षणभंगुर है सो राखी न रहै अर कवितारूप काया बहुतकाल तक रहै है ॥ ४९ ॥

अथ ग्रंथकी उत्पत्ति।

अथानंतर—मैं हरिवंश नाम जो पुराण महा मनोहर ताहि प्रगट करूं हूं। कैसा है यह पुराण संसारविषै

द्वितीय सर्ग ।

(तीन लोकका कथन)

अथानंतर—जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै वडी विभूतिका भरचा विदेह नामा देश है सो देश लक्ष्मी करि स्वर्गलोक समान है ॥१॥ सो वह देश सर्व उपसर्गतैं रहित जहां प्रजा वहुत सुखसूं वसै सो देश महासुंदर जहां प्रतिवर्ष सर्व-धान्यकी भले प्रकार उत्पत्ति अर गाय भैंस वृषभादि गोधनसूं भरचा ।

भावार्थ—जहां धान्य अति सस्ता अर गोरसकी वाहुल्यता सो देश खेट कर्वट मटंब पुरभेदन द्रोणमुख अर अनेक धातुनिकी खानकी खान अर क्षेत्र ग्राम । अर घोपकहिए गायनके खरक तिनकरि शोभित है । ता देशका कहा वर्णन करैं ? जहां सुखका निवास अर धर्मका निवास अर धर्मका प्रकाश वडे वडे राजा इक्ष्वाकुवंश आदि क्षत्रियनिके वंशविषै स्वर्गतैं चयकरि उपजे हैं । ता देशविषै कुण्डलपुर नामा नगर मानों सुखरूप जलका कुण्ड ही सोहै है । सव सुखनिका समूह ही है अर अखंड कहिए इंद्र ताके नेत्रनिकी पंक्ति सोई भए भ्रमरनिके समूह तिनिकूं कमलनिका वन जो महा सरोवर ता समान मनोज्ञ भासै है ॥ ५ ॥ जा नगरविषै अति उज्ज्वल जे महलनिके समूह तिनकरि आकाश अति धवल होय रह्या है, कैसे हैं महलनिके समूह शरदऋतुके मेघ समान अति उन्नत अर महा निर्मल हैं ॥ ६ ॥ जा नगरविषै रात्रि समय चंद्रमाकी किरणनिके स्पर्शतैं घरनिकैं लगीं जे चंद्रकांतमणिकी शिला तातैं अमृत झरै है सो कैसी सोहै हैं जैसैं रतिसमय स्नेहकी भरी स्त्री सोहै है ॥७॥ अर जा पुरविषै घरनिके लगी सूर्यकांतिमणि ते सूर्यकी किरणनिके स्पर्शतैं दिनविषै महा प्रज्वलित दीखै हैं सो कैसी भासै है जैसैं धनीसूं कुपित भई स्त्री प्रज्वलित भासै है । अर जा नगरविषै मंदिरनिके शिखरविषै पद्मराग-मणि देदीप्यमान लगी है सो सूर्यकी किरणके स्पर्शतैं रागकी भरी रमणीकी नाईं शोभै है, देखनहारेनिके मनकूं अनुराग उपजावै है ॥९॥ अर वह नगर मुक्ता कहिए मोती अर मरकत कहिए हरितमणि वज्र कहिए हीरा अर मोरके कंठ समान रंगकूं धारै वैडूर्यमणि अर विद्रुम कहिए मूंगा इन सबके प्रकाशकरि कैसा सोहै है मानो समस्त

रत्ननिकी खानकी शोभा एकत्र भेली भई है ॥ १० ॥ अर वह नगर कोटरूप पर्वत अर खाई अर पड़कोटा उनकरि वेढ्या अतिशोभायमान भासै है जाकी ऊपर सूर्यका मंडल ही जाय है अर शत्रुमंडल न जाय सकै है ॥११॥ ता नगरके गुणनिका वर्णन पहिले ही कथन कर पूर्ण होहु अधिक क्या करैं जो नगर स्वर्गावतरणविषै महावीरका आधारके भावकूं प्राप्त भया । भावार्थ—जहां अंतिम तीर्थंकर ऊर्ध्वलोकसूं चयकरि माताके गर्भविषै आए ताका कहांतक वर्णन करैं ॥ १२ ॥ ता नगरविषै सूर्यकीसी प्रभाका धरणहारा राजा सिद्धार्थ होता भया, कैसा है राजा सिद्ध भए हैं पुरुषार्थ जाके अर जो सर्व अर्थका देखनहारा है । अर पिता सर्वार्थ अर माता श्रीमती ताकरि पाया है जन्म जाने ॥ १३ ॥ जाकूं धरतीकी रक्षा करतेसंते धरतीके सब दोष मिट गए, एक ही दोष दीखै है जो बा राजाकी प्रजा धर्मार्थिनी है तौ भी परलोकके भयतैं रहित है । भावार्थ—जो प्रजा धर्मार्थिनी होय है ताहि परलोकका भय होय है सो या राजाके राजमें परलोक कहिये शत्रुजन तिनका भय नाहीं ॥ १४ ॥ जहां कदे ही शत्रुकी बाधा नाहीं ता राजाके प्रशंसायोग्य गुण तिनकूं कौन नर तोल सकै । राजाके गुण अतुल हैं जिन गुणनिकरि वह नराधिपति त्रैलोक्यके गुरु जे वर्धमान तिनका गुरु कहिए पिता होता भया ताके गुणनिका कहां लग वर्णन करैं ॥१५॥ उस राजाके प्रियकारिणी नामा पटराणी पतिसूं अकृत्रिम स्नेहकी धरणहारी मानों साक्षात् समुद्रकी पटराणी जो गंगा ताके समान निर्मल है । कैसी है गंगा अर कैसी है प्रियकारिणी ? गंगा तो ऊंचा कुलाचल हिमवान् पर्वत तातैं उपजी है अर यह राणी ऊंचा जो कुल सोई भया पर्वत तातैं उपजी । अर गंगा तो जलकी भरी अर यह धनीसूं स्नेहकी भरी ॥ १६ ॥ पृथिवीविषै महाराजा चेटक ताके चित्तकूं अति हर्षकूं उपजावनहारी सप्तपुत्री तिनमें आदि यह प्रियकारिणी जाका दूजा नाम त्रिशला ताके गुण वर्णन कर कौन प्रशंसा कर सकै ? जो माता अपने पुण्यकरि महावीरके जन्मका कारण होती भई शुभ नामकर्मने जाकूं जिनेश्वरकी जननी करी ॥ १८ ॥ सर्व दिशातैं नमस्कार करतीसंती सर्वदेवनकी सेना जाके प्रभावतैं आकाशतैं वर्षती भई रत्नकी धारा ॥१९॥ अच्युत कहिए सोलहवां स्वर्ग ताका पुष्पोत्तर विमान तहांतै प्रभुकूं अवतरते संते वह माता प्रियकारिणी षोडश स्वप्न

ध्ययन ॥ ८ ॥ नवां कल्पव्यवहार ॥ ९ ॥ दसवां कल्याणकल्प ॥ १० ॥ ग्यारहवां महाकल्प ॥ ११ ॥ बारहवां पुण्डरीक ॥ १२ ॥ तेरहवां महा पुण्डरीक ॥१३॥ चौदहवां निषद्यक ॥१४॥ बाहुल्यता करि प्रायश्चित्तका है वर्णन जामें सो जगत्रयका गुरु सर्व जीवनके हितविषै उद्यमी कहता भया। कैसा है अंग प्रकीर्णकका व्याख्यान प्रतिपाद्य कहिए कथन करवे योग्य है ५ अर मतिज्ञानादि केवल पर्यंत पांचो ज्ञाननिका स्वरूप अर इनका जानपना तथा फल सव कहते भए। अर इन ज्ञाननिमें मति, श्रुत, परोक्ष, अर अवधि, मनःपर्यय ये एकोदेश प्रत्यक्ष अर केवल सकल प्रत्यक्ष सो सब भेद कहते भए, अर ज्ञानकी संख्या कहिए गणना सो सकल प्रकासी ६ बहुरि चौदह मार्गणाके भेद अर चौदह गुणस्थाननिके भेद अर चौदह जीवसमास तिनके भेदकरि जीवद्रव्यका व्याख्यान करतेभए ७ फिर सत्संख्या क्षेत्र स्पर्शन काल अंतर भाव अल्पबहुत्व कहिए आठ तिनकरि नाम स्थापना द्रव्य भाव इनकरि द्रव्यका लक्षण कहतेभए सो जीवपुद्गलादि षद्द्रव्य हैं ते अपने अपने लक्षणनिकर सबही भिन्न भिन्न हैं द्रव्यनिका सत्ता लक्षण है सो उत्पाद व्यय ध्रौव्यता करि संयुक्त है ८ अर कर्मका बन्ध दोय प्रकारका है एक शुभ एक अशुभ तिनके कारण भी दोय प्रकारके हैं एक शुभोपयोग एक अशुभोपयोग तिनिमें शुभ तो सुखका दाता अर अशुभ दुखका दाता अर बन्धतैं छूटना सो मोक्ष। अर मोक्षका कारण शुद्धोपयोगरूप शुक्लध्यान अर अष्ट गुणरूप फल तिन अष्टगुणनिके नाम—क्षायक सम्यक्त १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३ अंतवीर्य ४ सूक्ष्मत्व ५ अवगाहन ६ अगुरुलघु ७ अव्याबाध ८ ये आठ। अर वन्धका फल दुख मोक्षका फल आनंद जो लोकविषै भोगै हैं सो तीन लोकविषै अनेक अलोकके मध्य तिष्ठै हैं सो लोक अर अलोकका स्वरूप त्रैलोक्यनाथ कहते भए।

अथानंतर—गौतम गणधर सप्तऋद्धि कर संपन्न जो द्वादशांग अर उपांग जो चौदह प्रकीर्णक तिन सहित जिन भाषित अर्थकूं ग्रंथरूप प्रकट करता भया ॥११॥ बारह सभाविषै त्रैलोक्यके जीव तिष्ठते हुते जिनसूर्यकी वांणीरूप किरणनिकरि मानो सोते जागे, तजी है महामोहकी निद्रा जिनि ॥ १२ ॥ जिनेश्वरकी बाणी होठ

हारी जो दिव्यध्वनि ताकरि श्रावण वदी प्रतिपद पूर्वाह्न समय अभिजित नक्षत्रविषै द्वादशांगका निरूपण करते भये, कैसी है जिनकी दिव्यध्वनि दुन्दुभी बाजेनिकी जैसी गम्भीर ध्वनि होय तैसी गम्भीर है अर एक योजन तक श्रवणमें आवै है ॥९१॥ भगवान् वर्द्धमान पहिला जो आचारांग, अर दूजा सूत्रकृतांग, तीजा संस्थानांग, चौथा समवायांग, तिनका अर्थरूप व्याख्यान करतेभये, फिर पांचवां व्याख्यान प्रज्ञप्ति, छठा ज्ञातृधर्मकथा, सातवां उपासकाध्ययन आंठवां अंतकृतदशांग तिनका अर्थ कहते भए ॥ ९३ ॥ नवमां अनुत्तर अर दशवां प्रश्नव्याकरण ग्यारहवां विपाकः सूत्र इनका परम पवित्र अर्थ श्रोतानिकूं कहते भए ॥ ९४ ॥ बहुरि बारहवां दृष्टिवाद ताके भेद पांच तिनका अर्थ सर्वज्ञदेव सकल सभाकूं सुनावते भए, कैसा है दृष्टिवाद तीनसै त्रेसठ पाखण्डियनका है खण्डन जा विषै ॥९५॥ जगतके नाथ जिनेंद्र बारहवें अंगके पांच भेदनिमें प्रथम भेद परिकर्म कहते भए ॥ १ ॥ दूजा सूत्र ॥ २ ॥ तीसरा प्रथमानुयोग ॥ ३ ॥ चौथा पूर्वगत ॥ ४ पांचवां चूलिका ॥ ५ ॥ ये सकल भेद भासते भए ॥ ९६ ॥ चौथा पूर्वगत उसके भेद चौदह उनमें पहिला उत्पादपूर्व परम तत्वका है निरूपण जाविषै ॥१॥ दूजा अग्रायणी नामा पूर्व मुख्य है अध्यात्मचरचा जामैं तीजा वीर्यप्रवाद पूर्व ॥३॥ चौथा अस्तिनास्तिप्रवाद ॥४॥ पांचवां ज्ञानप्रमाद ॥५॥ छठा सत्यप्रवाद, तिनका अर्थ प्रभु प्ररूपते भए ॥६॥ सातवां आत्मप्रवाद ॥७॥ आठवां कर्मप्रवाद ॥ ८ ॥ नववां प्रत्याख्यान ॥९॥ दशवां विद्यानुवाद ॥१०॥ ग्यारहवां कल्याणपूर्व ॥११॥ बारहवां प्राणवायपूर्व ॥१२॥ अर तत्वका कथन है जा विषै ॥९९॥ तेरहवां क्रियाविशाल विस्तीर्ण है अर्थ जामें ॥१३॥ चौदहवां धर्मलोकविंदुसार ॥१४॥ यह चौदह पूर्व तिनका व्याख्यान भगवान समस्तके वेत्ता गौतमादि मुनिकूं कहते भए फिर चूलिकाके पांच भेद तिनकी कथा करते भए अनेक हैं वस्तु जिनमैं ॥१००॥ या भांति अंगप्रविष्ट जे पूर्व तिनका निर्णय कर जिनेश्वर देव अंगवाह्य जे चौदह प्रकीर्णक तिनका व्याख्यान करते भए। पहिला प्रकीर्णक सामायिक यथार्थ है नाम जाका जामें सामायिकका व्याख्यान है ॥१॥ दूजाप्रकीर्ण चतुर्विंशति स्तवन ॥२॥ तीजा वंदना नाम महा पवित्र ॥३॥ चौथा प्रतिक्रमण ॥४॥ पांचवां विनय ॥५॥ छठा कृतिकर्म तिनका स्वरूप भगवान् भव्यनकूं कहते भए ॥६॥ सातवां दशवैकालिक ॥७॥ आठवां उत्तरा

आदि सकल स्त्रीनि सहित शोभती भई जैसी देदीप्यमान बिजुरीनि करि संयुक्त शरदके बादरनिकी पंक्ति सोहै।
भावार्थ—आर्यकानिकी पंक्ति तो श्वेत वस्त्रकूं धरैं शरद ऋतुके बादरानिकी पंक्ती भई अर राणी आदि
और स्त्रीं आभर्णादिक करि मंडित विजुरीनिकी शोभा धारती भई ॥ ७८ ॥ अर चौथी सभाविषैं ज्योतिषी
देवनिकी स्त्री शोभती भई सुन्दर हैं मूर्ति जिनकी मानूं समवसरणरूप समुद्रविषै तारानिके प्रतिबिम्ब ही हैं
॥ ७९ ॥ अर पांचवीं सभाविषै व्यंतर देवनिकी देवांगना सोहती भई मानों वे साक्षात् वनलक्ष्मी ही हैं जिनके
करकमलनिकी शोभाकूं हरै हैं अर छठी सभाविषैं नगकुमारादि भवनवासीनकी देवांगना नागनके फणनिकरि
शोभित नागवेल समान शोभती भई ॥ ८१ ॥ बहुरि सातवीं सभाविषैं असुरकुमारादि दश प्रकारके भवनवासी-
देव शोभते भये मनोहर हैं सुंदर भेष जिनके ॥८२॥ अर आठवीं सभाविषै किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस
भूत पिशाच अष्ट प्रकारके व्यंतरदेव शोभते भये ॥ ८३ ॥ बहुरि नवमी सभाविषैं चंद्र सूर्य तारा ग्रहनक्षत्र ये पांच
प्रकारके जोतिषीदेव विस्तीर्ण है शरीरविषै ज्योति जिनके ते शोभते भये ॥ ८४ ॥ अर दशवीं सभाविषै कल्प-
वासीदेव कल्पवृक्षसमान मनके हरणहारे सब देवनिमें श्रेष्ठ शोभते भये मुकुट कुण्डलहार केयूर कटिमेखला-
निके धरणहारे । अर ग्यारहवीं सभाविषै मनुष्य विद्याधर अर भूमिगोचरी अपने पुत्र पौत्रादि सहित तिष्ठे शोभते
भये नानाप्रकारकी भाषाके भाषणहारे अर नानाप्रकारके भेषके धरणहारे भगवानकूं नमस्कार करते देवनसे दीखे
हैं अर अनेक भूमिगोचरी विद्याधर जिनकूं सेवैं ऐसे बडे २ राजा नम्रीभूत भये भगवान्‌के सन्मुख तिष्ठे हैं ॥८६॥
अर बारहवीं सभाविषै सिंह गज अश्व महिष वृषभ सर्प नकुल इत्यादि अनेक तिर्यंच शांत भये तिष्ठे हैं जिन-
राजके प्रभाव करि उपज्या है विश्वास जिनके ॥८७॥ ये बारह सभा प्रदक्षिणा दिये प्रथमही विनयरूप नमस्कारकरि
चौगिरद तिष्ठे हैं ॥८८॥ तहां गौतम गणधर जिनेंद्रकूं तीर्थ कहिये जो धर्म ताके अर्थ पापके नाशकरणहारे प्रश्न
पूछता भया, कैसे हैं जिनेंद्र प्रत्यक्ष देखैं हैं समस्त पदार्थनिका स्वरूप जिनि सर्वके ज्ञाता द्रष्टा हैं अर जन्म जरा
मरण अथवा रागद्वेष मोह ये जो दोष हैं तिनके क्षय करणहारे हैं ॥ ८९ ॥ सो भगवान् सर्व संदेहकी दूर करण-

ओर चार दरवाजे सो तीन कोटके द्वादश दरवाजे शोभते भए ॥६४॥ एकयोजनके विस्तार महावीरका समवसरण होता भया ताविषै बारह सभा आकाश तुल्य स्फटिकमणिकी है भित्ति जाके ॥ ६५ ॥ ता समवसरणविषै चौतीस अतिशय अर अष्ट प्रातिहार्य तिनकरि युक्त जिनचंद्र इंद्रादिककरि वेष्टित ऐसे शोभते भए जैसें नक्षत्रनिमें निशाकर सोहै ॥ ६६ ॥ तहां भगवानके समवशरणमें इंद्रकी प्रेरणाकरि इन्द्रभूत कहिए गौतम अर अग्निभूत वायुभूत हैं नाम जिनके ऐसे पंडित ब्राह्मण आए ॥ ६७ ॥ ये तीनों भाई तिनके प्रत्येक २ पांच पांच सौ शिष्य सो सर्व ही वस्त्रादिक परिग्रह तजकरि संयम अंगीकार करते भए ॥ ६८ ॥ राजा चेटककी पुत्री चंदना ब्रह्मचारिणी सो सकलपरिग्रह तजकरि एक श्वेतवस्त्र धार सकलआर्यानिमें मुख्य भई ॥७०॥ अर श्रेणिकमहाराज चतुरंग सेनाकरि संयुक्त विपुलाचलपर्वतके निकट जाय प्राप्त भए गिरि पर चढ करि सिंहासन पर तिष्ठते जिनेश्वर तिनकूं प्रणाम करते भए ॥ ७१ ॥ कैसे हैं प्रभु छत्र चमर झारी कलश ध्वजा दर्पण वीजना अर धारा प्रसिद्ध अष्टमंगल द्रव्य तिनकर युक्त हैं ॥७२॥ अर अष्ट प्रकारकी जो महाध्वजा तिनकरि संयुक्त है समवसरण जिनका अष्ट प्रकार ध्वजानिमें पुष्पमाला चक्र वस्त्र कमल गज सिंह वृषभ गरुड अष्ट प्रकारके आकार हैं ॥ ७३ ॥ अर मानस्तम्भ तथा रत्ननिके तूप कहिये पुञ्ज अर चार प्रकारके महावन अर वापी अर सरोवरी अर वल्ली वनलता मंडप ॥ ७४ ॥ इत्यादि और भी अनेक रचनानिकरि मंडित जिनराजका समवसरण शोभता भया, जा ठौर जे जे वस्तु चाहिए ते सकल समवसरणमें पूर्ण हैं ऐसा रमणीक त्रैलोक्यमें और स्थानक नाहीं ॥ ७५ ॥

बारह सभानिका वर्णन ।

अथानंतर—जिनराजके समीप प्रथम सभामें मुनिराज तिष्ठते थके सुवर्ण समान सुन्दर है शरीर जिनके ऐसे शोभते भये जैसे चंद्रमाके समीप शुक्रादिक ग्रह बृहस्पति सहित तिष्ठते सोहैं ॥ ७६ ॥ बहुरि दूजी सभामें कल्पवासिनीदेवी शोभती भई कल्पवेल समान सुन्दर हैं भुजा जिनकी जैसी सुमेरुके समीप भोगभूमि सोहै तैसी जिनवरके समीप स्वर्गवासी देवी शोभती भई ॥७७॥ अर तीजी सभामें आर्यकानिकी पंक्ति राजानिकी राणी

न हाले अर अधरनिके स्पर्शविना विस्तरी देव मनुष्य तिर्यंचनिके मिथ्यात्वका नाश करती भई अर जिनेश्वरका भाष्या तत्वार्थका मार्ग श्रद्धान है लक्षण जाका शंका, कांक्षा, 'भोगाभिलाषादि कलंकसे रहित महा निर्मल है ॥ १४ ॥ सम्यग्दर्शनरूप समीचीन ज्ञानरूप आभूषणनिका नायक अनेक भव्य जीवनिने अपने कर्ण अर हृदयविषै थाप्या ॥१५॥ षट्काय पंच इंद्रिय गुणस्थान जीवस्थान कुल जाति आयु इनके भेद भव्य जीवने मार्गणानि ऊपर अर गुणस्थानपरि मार्गणा ये परस्पर सकल भेद आगमकी दृष्टितैं भव्य जीवनिने अवलोक-करि निश्चय किए ॥ १६ ॥ गुणस्थानपूर्वक जे क्रिया तिनविषै षट्कायनिके जीवनिकी हिंसादिकका त्याग सो पहिला अहिंसा नाम महाव्रत कहिए ॥ १७ ॥ अर जो राग द्वेष मोहथकी परजीवनिकूं आताप-कारी वचन तजना सो दूजा सत्यमहाव्रत कहिए ॥१८॥ बहुरि अल्प अथवा बहुत पराया द्रव्य विना दिया ताका अंगीकार न करना सो तीजा अदत्तादान परित्याग महाव्रत है ॥ १९ ॥ अर मन वचन कायकरि तथा कृतका-रितअनुमोदनाकरि स्त्रीका अर स्त्रीके संगीनका त्याग सो चौथा ब्रह्मचर्य महाव्रत कहिए ॥ २० ॥ अर बाह्य आभ्यंतरके सकल परिग्रह दोषरूप तिनका त्याग करना सो परिग्रह त्याग नामा पांचवां महाव्रत कहिए ॥२१॥ अर निरखकरि चलना रात्रिकूं गमन न करना जीवनके समूहकूं टारकरि पग धरना जूडाप्रमाण धरती सोधकर चलना सो पहिली ईर्यासमिति कहिए यह ईर्यासमिति सर्व व्रतनिकी शुद्धता करणहारी है॥ २२ ॥ बहुरि कर्कश वचन कठोर वचन निर्दय वचन तजकरि मोक्षमार्गका है यत्न जाके ऐसा जो यति ताकूं सदा धर्मकार्यविषै हित मित वचन बोलना सो दूजी भाषासमिति कहिए॥ २३ ॥ अर यतिके शरीरकी थिरताके अर्थ अन्न जलकी शुद्धता देख विधिपूर्वक आहारका ग्रहण सो तीजी एषणा समिति कहिए॥ २४ ॥ अर योग्य वस्तु देख ग्रहण करना अर धरना सो चौथी आदाननिक्षेपण नाम समिति कहिए ॥२५॥ बहुरि जंतु रहित प्राशुक भूमिविषै शरी-रके मलनिका त्याग सो पंचमी प्रतिष्ठापना समिति कहिए ॥२६॥ याभांति ये पांच समित जे कहीं वे पालनी बहुरि मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ये तीन गुप्ति मुनिनिकूं धारणी, कैसी हैं ये गुप्ति मन वचन कायके योगनकी शुद्धरूप है

मनोप्रवृत्ति जिनमें अर मनकी सेना पांच इंद्रीनिका निरोध अर समता वंदन स्तुतिकरण प्रतिक्रमण स्वाध्याय कायोत्सर्ग ये षट् आवश्यक क्रिया अर केशनिका लोंच अर स्नानका त्याग अर एकबार भोजन अर बैठकर भोजन न करना, खडा ही करना, अर वस्त्रका त्याग ॥ २८ ॥ अर भूमिशय्या अर दंतधावन न करना, ये साधुके मूलगुण हैं अर बारह तप बारह संयम सराग बीतराग चारित्र अर बाईस परीषहका जीतना ॥ २९ ॥ अर द्वादशानुप्रेक्षा, तथा उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म, अर ज्ञानदर्शनतपचारित्रका विनय ॥ ३० ॥ यह यतिका धर्म कर्मबंधके काटनेका कारण भगवान कहते भए। जा समय जिनराजने व्याख्यान दिया ता समय समवशरणमें सुर असुर नर तिर्यंच सब ही हुते सो सबके समीप सर्वज्ञने मुनिधर्मका व्याख्यान किया, सो मुनि होनेकूं समर्थ जो मनुष्य तिनमें केईक नर संसारतैं भयभीत परिगृहका त्यागकरि मुनि भए, शुद्ध हैं जाति कहिए मातृपक्ष कुल कहिए पितृपक्ष जिनके ऐसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सेकडां साधु भए ॥३२॥ अर शुद्ध वंशकी उपजी सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध कहिए निर्मल श्वेतवर्णकी धरणहारी हजारां राणी आर्यिका भई अर कैयक मनुष्य चारों ही वर्णके पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत धार श्रावक भए। अर चारों वर्णकी कईएक स्त्री श्राविका भई ॥ ३५ ॥ अर सिंहादिक तिर्यंच बहुत श्रावकके व्रत धारते भए यथाशक्ति नेमविषै तिष्ठे। अर देव सम्यग्दर्शनके धारक अव्रतसम्यग्दृष्टी होय जिनपूजाविषैं अनुरागी भए ॥३६॥ अर राजा श्रेणिकने बहुत आरंभ परिग्रहके योगतैं पहिली दशाविषै नरककी उत्कृष्ट आयुके भाव किये हुते सो नरककी उत्कृष्ट आयु तेंतीस सागर सातवें नरकविषै है ॥३७॥ सो तीर्थंश्वरके निकट क्षायकसम्यक्तके प्रभावतैं नरककी उत्कृष्ट आयु छूटी। प्रथम नरकके प्रथम पाथडेविषै चौरासी हजार वर्षकी आयु धार उपजेंगे ॥ ३८ ॥ कहां तेंतीससागर सातवें नरककी आयु अर कहां प्रथम नरककी अल्प आयु, अहो क्षायकसम्यक्तका प्रभाव सर्वोत्कृष्ट है॥३९॥ अर राजा श्रेणिकके पुत्र अक्रूर वारिषेण अभयकुमार और भी सम्यक्त व्रतके धारक भए। अर इनकी माता राजलोककी धनी स्त्री ॥ ४० ॥ सम्यक्त व्रत शील दान प्रोषधोपवास जिनपूजाकूं अंगीकार करि जगत्रयका गुरु जो जिनेंद्र ताहि प्रणाम करती भई ॥४१॥

अर देवेंद्र जिनेंद्रकूं स्तोत्र पूर्वक प्रणामकरि अपने अपने वर्गनिसहित अपने अपने स्थानकूं गए अर राजा श्रेणिक
भी उच्चगुणरूप श्रेणी चढ्या अर भगवानकूं नमस्कारकरि स्तुतिकरि हर्षित होय नगरमें गया ॥४३॥ भगवानका
समवसरणरूप समुद्रतैं निकसे प्राणी तेई भए चंचललहर तिनकरि शोभता भया। जैसैं समुद्र नदीनिके प्रवाहकरि
सदा भर्‍या ही रहै है ॥ ४४ ॥ तैसैं भगवानका समवसरण देव मनुष्य तिर्यंच जो आते अर जाते तिनकरि पूर्ण
ही रहै कदे घटै नाहीं जैसैं सूर्यका मंडल किरणनिके समूहकरि पूर्ण ही दीखै है कबहूं किरणनिकी कमी न दीखै
एक निकसै एक पैठै ॥४५॥ भगवानके समवसरणमें सूर्यमंडलका उदय अस्त धर्मचक्र अर भामंडलकी कांति कर
न जान्या परै ॥ ४६ ॥ ता समवशरणविषै वर्द्धमान तीर्थंकर धर्मका उपदेश करै हैं, निरंतर सेवायोग्य जो सर्वज्ञ
तिनके उपदेशकरि श्रेणिकके ऐसी रुची बढी जो जिनवाणी सदा सुनबोई करूं। धर्म अर्थ काम ये तीन पदार्थ
राजाके परस्पर अविरोधके भावकूं प्राप्त भए ॥३७॥ तासमय गौतम गणधरकूं पायकरि सर्वज्ञके उपदेशतैं राजा
सर्व अनुयोगनिके मार्गविषैं प्रवीण भया। भावार्थ—प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग ये चार
अनुयोग जिनविषै राजाकूं परिपूर्ण ज्ञान भया ॥ ४९ ॥ राजा महाविवेकी सो राजगृही नगरीके भीतर अर बाहर
ऊंचे ऊंचे जिनमंदिर बनाए निरंतर जिनधर्मकी महिमा अर उत्सव है जिनविषै ऐसे जो जिनचैत्यालय तिनकरि
नगर शोभित किया अर समस्त मगध देशमें चैत्यालय कराए सामंतनिके समूह अर महामंत्री पुरोहित सेनापति
तिननें भी कराए अर प्रजाके लोकनिने भी कराए। सकल देश जिन देवालयनिकरि महामनोहर भासता भया
॥ ५१ ॥ श्रेणिकके राजमें नगर ग्राम अर घोष कहिए अहीरनिकी पल्ली जहां गाय भैंस महिषी बहुत गोरसकी
प्रचुरता उन स्थाननिकेविषै अर पर्वतनिके अग्रभागविषै नदीनिके तट अर वनके मध्य सब ठौर जिनमंदिर
निकी महिमा पंक्ति लोक देखते भए ॥ ५२ ॥ वे भगवान वर्द्धमान जगतके सूर्य ज्ञानरूपी प्रभामंडलकी दीप्ति-
करि मिथ्याज्ञानरूप हिम कहिए शीत ताका अंतकरणहारे मध्यान्हके सूर्य कैसी कांतिकूं धरते थके मगधदेशकी
प्रजाकूं प्रतिबुद्ध कर मध्यदेशकी ओर विहार करते भए क्या करते संते अज्ञानरूप शीतका अंतकरि महा कहिए

मोटा उदय कहिए प्रताप ताकरि पूर्ण प्रकाशरूप तिष्ठते संते मोहरूप अंधकार जो विस्तीर्ण ताकूं निवारते हुए पूर्वदेशकी प्रजाकूं प्रतिबोधि मध्यदेशकी ओर आए ॥ ५३ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ धर्मतीर्थप्रवर्तनो नाम द्वितीयसर्गः ॥ २ ॥

अथानंतर—जिनेश्वरके प्रभावकरि मध्यदेशविषै धर्मतीर्थकी प्रवृत्ति होते संते सब देशनिविषै धर्मतीर्थ प्रवर्त्या दर्शनमोह कहिए मिथ्यात्व ताकी निवृत्ति भई। जीवनके चित्त जिनेंद्रके उदयविषै निर्मल होय गए जैसै या लोकविषै अगस्तके उदयविषै जलके निवाण निर्मल होय जांय कालुष्यता न रहै। काशी कौशल कौशल्य कुसंधि अश्वष्ट साल्व सालवर्त गर्तपंचाल भद्रकार पट्टच्चर मौक मत्स्यकनीय सूरसेन वृकार्थक मध्यदेश अर कालिंग कुरुजांगल कैकेय आत्रेय कांबोज बाल्हीक प्रवन श्रुतिसिंधु गांधार सौवीर सूर भील दशरुक वाडवान भरद्वाज उत्तर तार्ण कार्ण प्रछाल इत्यादि अनेक देशनिविषै विहार करते संते वीतराग लोकनिकूं धर्मरूप करते भए। कैसे हैं भगवान विभव कहिए अंतर बाह्यविभूति ताकरि मंडित हैं। अर भव्य वत्सल कहिए भव्यनके तारक हैं जैसे भगवान ऋषभने चतुर्थकालके आदि जीवनकूं उपदेश दिया वैसा ही महावीर देते भए केवलज्ञानका है उद्योत जिनके ऐसे जो जिनसूर्य तिनके प्रकाशके होते संते मिथ्यात्वरूप अग्निका चमत्कार कहां जाता रहा सो हम न जानै ॥ ८ ॥ जिस समय सर्वज्ञ वीतरागके शरीरका दर्शन अर वचननका पाया है श्रवण जिन जीवोंने ता समय तिनके परशास्त्रके श्रवणविषै अभिलाष न होती भई ॥ ९ ॥ दश अतिशय तो प्रभु लिए ही उपजे नित्य कहिए सदा निर्मलता जिनके शरीरविषै मल मूत्रादि सर्व मल नाहीं ॥ १ ॥ अर पसेव मल नाहीं ॥ २ ॥ अर दूध समान उज्वल रुधिर ॥ ३ ॥ अर वज्रवृषभनाराच संहन ॥ ४ ॥ समचतुरस्रसंस्थान ॥ ५ ॥ अर अद्भुत रूप ॥ ६ ॥ महासुगंध ॥ ७ ॥ अर शुभ लक्षण कहिए शरीरमें एक हजार आठ लक्षण ॥ ८ ॥ अर अतुलबल जा समान त्रैलोक्यमें नाहीं ॥ ९ ॥ अर महामिष्ट वचन सबनिकूं हितकारी ॥ १० ॥ स्वतः स्वभाव पवित्र है शरीर जिनका सो दश अतिशय करि शोभते भए अर केवल उपजे दश अतिशय तिनका वर्णन—निमेष कहिए नेत्रनिका मुद्रित न

तीसवां मित्र, इकत्तीसवां प्रभाख्य ये इकतीस इंद्रक पहिले अर दूजे स्वर्गविषै हैं ॥४७॥ अर तीजे चौथे स्वर्गविषै सात पटल हैं तिनके नाम—पहिला अंजन दूजा वनमान तीजा नाग चौथा गरुड पांचवां लांगल छठा वलिभद्र सातवां चक्र ॥ ४८ ॥ अर पाचवें छठे स्वर्गविषै पटल चार तिनके नाम—पहिला अरिष्ट दूजा पुष्पंक (देवसमिति) तीजा ब्रह्मक चौथा ब्रह्मोत्तर ॥४९॥ अर सातवें आठवें स्वर्गविषै पटल दो हैं तिनके नाम—पहिला ब्रह्महृदय, दूजा लांतव ॥ ५० ॥ अर नौवें दशवें स्वर्गविषै एक है ताका नाम शुक्र अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषै पटल एक ताका नाम सतार अर तेरहवें चौदहवें विषै पटल तीन तिनके नाम पहिला आनत, दूजा पुष्पक, तीजा प्राणत, अर पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गविषै पटल तीन हैं तिनके नाम पहिला सानुकार, दूजा सौमनस, तीजा प्रीत्यंकर ॥ ५१ ॥ ये बावन पटल सोलह स्वर्गनिके कहे, अर नव ग्रैवेयकनिके तीन त्रिक तिनके पटल नव तिनमें नीचले त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला सुदर्शन, दूजा अमोघ, तीजा प्रबुद्ध, अर मध्यके त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला यशोधर, दूजा सुभद्र, तीजा सुविशाल ॥५२॥ ऊपरले त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला सुमत, दूजा सोमस, तीजा प्रीत्यंकर, ये नव पटल नव ग्रैवेयकनिके कहे अर नव अनुत्तरनिके नव वे अनुदिश कहिए तिनके इन्द्रक पटल एक ताका नाम आदित्य, अर पंचानुत्तरका पटल ताका नाम सर्वार्थसिद्धि ये ६३ पटल इन्द्रक विमान ऊर्ध्वलोकके कहे हैं ॥५४॥ पटलके मध्यभागविषै एक एक इन्द्रके श्रेणीवद्ध प्रकीर्णक हैं ये सब विमान केते हैं सो कहे हैं सौधर्म स्वर्गविषै विमान ३२००००० अर ईशानविषै २८००००० सनत्कुमारविषै १२००००० माहेन्द्रविषै ८००००० ब्रह्मविषै २९६००० ब्रह्मोत्तरविषै १०४००० लांतवविषै २५०४२ कापिष्टविषै २४९५८ अर शुक्रस्वर्गविषै २००२० अर महाशुक्रविषै १९९८० अर सतार स्वर्गविषै ३०१९ अर सहस्रार स्वर्गविषै २९८१ अर आनत प्रानतविषै ४४० अर आरण अच्युतविषै २६० अर नीचले त्रिकविषै १११ अर मध्यके त्रिकविषै १०७ अर ऊपरले त्रिकविषै ९१ ये नव-ग्रैवेयकविषै ३१५ विमान हैं ॥ ६२ ॥ अर नव अनुदिशिके विमान नव तिनके नाम तिनमें पहिला अर्चि, दूजा

संयुक्त रवि शशि किंचित् घाट चौगुने चौगुने द्वीप समुद्रमें द्वीप विमाननिकी संख्या पाइये है ॥ ३३ ॥ यह जोतिषलोकका संक्षेप वर्णन कह्या ॥ १ ॥

अथानंतर—स्वर्गलोकका संक्षेप वर्णन करै हैं—सुमेरुकी चूलिकाके ऊपर ऊर्ध्वलोक है सो मृंदगके आकार है। ऊपर ऊपर सोलह स्वर्ग हैं अर अहमिंद्रनिका लोक है नवग्रैवेयक नव अनुत्तर अर पंच पंचोत्तर ये तेइस अहमिंद्र लोक हैं ॥ ३५ ॥ पहिला स्वर्ग सौधर्म, दूजा ईशान, तीजा सनत्कुमार, चौथा माहेन्द्र, पांचवां ब्रह्म, छठा ब्रह्मोत्तर सातवां लांतव, आठवां कापिष्ट, नवमां शुक्र, दशवां महाशुक्र, ग्यारहवां सतार, बारहवां सहस्रार, तेरहवां आनत, चौदहवां प्राणत, पंद्रहवां आरण, सोलहवां अच्युत ये सोलह स्वर्ग कहे हैं ॥ ३७ ॥ अर नव ग्रैवेयककी तीन त्रिक हैं तिनमें पहिली अधोत्रिक, दूजी मध्यत्रिक, तीजी ऊर्ध्वत्रिक ॥ ३९ ॥ अर इनके ऊपर नव अनुदिश अर तिनके ऊपर पंच अनुत्तर अर तिनके ऊपर मुक्ति है सो ऊर्ध्वलोकका शिखर है ॥४०॥ सोलह स्वर्गनिके अर अहमिंद्रनिके बिमान ८४९७०२३ हैं अर पटल ६३ हैं सो ऊर्ध्वपंक्ति तिष्ठै हैं एक २ पटलमें एक २ इंद्रक विमान है सो पटलके मध्यभागविषैं है, सकल ६३ इंद्रक विमान हैं तिनमें पहिले इन्द्रकसंबंधी चार दिशामें श्रेणीबद्ध विमान प्रत्येक प्रत्येक ६३ हैं अर चार विदिशानिमें प्रत्येक प्रत्येक बासठ हैं अर दूजे इन्द्रकके दिशा दिशा प्रति बासठ अर विदिशा विदिशाप्रति ६१ या भांति सब दंडक संबंधी दिशा विदिशाविषै एक एक श्रेणीबद्ध घाट है अब सब इंद्रकनिके नाम कहे हैं उनमें ६३ इंद्रक विमान हैं तिनमें दिशा दिशा प्रति एक एक घाट है, प्रथम इंद्रक विमानका नाम ऋजु, दूजा विमल, तीजा चंद्रनायक, चौथा वल्गु, पांचवां वीर, छठा अरण, सातवां नंदन, आठवां नलिन, नववां कांचन, दशवां रोहितर, ग्यारहवां चंचक, बारहवां महत्, तेरहवां दीप्ति, चौदहवां वैडूर्य, पंद्रहवां रुचक, सोलहवां रुचिकभास, सत्रहवां अर्क, अठारहवां स्फटिक, उन्नीसवां पृथिवी (पथीक), बीसवां मरु, इक्कीसवां भद्र, बाइसवां हारिद्रक, तेइसवां पद्म, चौवीसवां लोहित, पचीसवां बज्र, छव्वीसवां नंद्यावर्त, सत्ताइसवां प्रभंकर, अट्ठाइसवां प्रष्ठक, उणतीसवां गज,

सातवां भाग है अर मध्य अंतर पचास कोस है अर उत्कृष्ट अंतर हजार योजन है अर सूर्यका विमान ताया सोना समान रक्त वर्ण आधे गोलेके आकार है अर चंद्रमाका विमान स्फटिकमणि समान श्वेत है तथा कमलतार समान श्वेत है अर राहु वा केतुका विमान लंवा एक योजन अर मोटा अढाईसौ धनुष है अर राहु केतुके विमान श्याम मणिमय चंद्र सूर्यके विमानके नीचे हैं अर शुक्रका विमान मालतीके पुष्प समान रूपामई उज्ज्वल है अर वृहस्पतिका विमान मुक्ताफल समान तथा स्फटिकमणि समान उज्ज्वल है अर बुद्धका विमान सुवर्ण समान है अर शनैश्चरका विमान ताये सुवर्ण समान है अर मंगलका विमान लाखके रंग समान लाल वर्ण है यह ज्योतिषी देवनिके विमाननिका वर्णन कहा ॥२०॥ अर अरुणद्वीप अर अरुणसमुद्रके ऊपर समस्त जोतिषी देवनिके विमान केवल श्यामवर्ण ही हैं अर तातैं तहां महा अंधकार है अर अढाई द्वीपविषैं ही सूर्यादिकका उदय अस्त होय आगे अढाई द्वीपके परे सव ज्योतिषी देवनिके विमान स्थिर ही हैं ॥ २३ ॥ अर असंख्यात ज्योतिषी देव हैं तिनके इंद्र सूर्य चंद्रमा हैं वे चंद्रसूर्य असंख्यात द्वीप समुद्रमें असंख्यात हैं ॥ २४ ॥ अर जंबूद्वीपमें चंद्र सूर्य सुमेरुसूं ११२१ योजन न्यारे रह कर प्रदक्षिणा करैं हैं ॥ २५ ॥ जम्बूद्वीपविषैं दो चंद्र दो सूर्य अर लवणोदधिविषैं चार चंद्र चार सूर्य अर धातकीखण्डविषैं वारह चंद्र बारह सूर्य अर कालोदधिविषैं ४२ चंद्र बयालीस सूर्य अर पुष्करार्द्धविषैं वहत्तर चंद्र बहत्तर सूर्य अर अढाई द्वीपविषैं १३२ चंद्र १३२ सूर्य हैं, ज्योतिषी देवनिका चंद्रमा इंद्र है अर सूर्य प्रत्येंद्र है। एक चंद्रमाका इतना परिवार सो कहै हैं एक चंद्रमाके साथ सूर्य एक अर २८ नक्षत्र अर ८८ ग्रह अर छ्यासठ हजार नौ सौ पिचहत्तर कोडाकोडी तारे ६६९७५००००००००००००० ॥ २९ ॥ अर मानुषोत्तरके उरै आधे पुष्करद्वीपमें ७२ चंद्रमा अर ७२ सूर्य अर मानुषोत्तरतैं परे पचास हजार योजन जाय तहां चंद्र सूर्यादिक चक्रवलय करि तिष्ठै हैं अर मानुषोत्तर पर्वततैं परे प्रथमवलय आगे लाख लाख योजन जाय तहां चार अधिक वलय हैं। तिनकी किरण परस्पर मिल रही हैं ॥३२॥ अर धातकीखण्डकूं आदि देयकरि द्वीपनिविषैं पिछलोकरि

अथानंतर—ज्योतिषचक्रका वर्णन करैं हैं। या पृथ्वीतलतैं सातसौ नव्वे योजन ऊंचा तारामंडल है सो यह जोतिषी देवनिके नीचे है। पृथ्वीतलतैं नवसौ योजनतक जोतिषचक्रकी हद्द है ॥ २ ॥ समस्त ज्योतिषचक्र सातसौ नव्वे योजनसूं लेयकरि नवसौ योजनतक ज्योतिषी देवनिका लोक है, सो एकसौ दश योजन जोतिषीदेवनिकी धराका दल है ॥ ३ ॥ यहांतैं सातसौ नव्वे योजन तो तारामंडल है अर तारामंडलतैं दश योजन ऊंचा सूर्यमंडल है सो यहांतैं आठसौ योजन है अर सूर्यमंडलसूं अस्सी योजन ऊंचा चंद्रमंडल है सो यहांसूं आठसौ अस्सी योजन है अर चंद्रमंडलसूं चार योजन ऊंचा नक्षत्रका विमान है सो यहांतैं आठसौ चौरासी योजन है अर नक्षत्रमंडलतैं चार योजन ऊंचा बुधका विमान है सो यहांतैं आठसौ अठ्यासी योजन है ॥५॥ अर बुधतैं ऊंचा तीन योजन शुक्रका विमान है, सो यहांतैं आठसौ इक्यानवे योजन है अर शुक्रनैं तीन योजन ऊंचा बृहस्पतिका विमान है सो यहांतैं आठसौ चौरानवे योजन है अर बृहस्पतितैं तीन योजन ऊंचा मंगलका विमान है सो यहांतैं आठसौ सत्तानवे योजन है अर मंगलतैं तीन योजन ऊंचा शनैश्चरका विमान है सो यहांतैं नवसौ योजन है, चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा ये पांचप्रकार जोतिषीदेव असंख्यात हैं तिनमें चंद्रकी आयु एक पल्य अर एक लाख वर्षकी है अर सूर्यकी आयु एक पल्य अर एक हजार वर्षकी है अर शुक्रकी आयु एक पल्य सौ वर्षकी है अर बृहस्पतिकी आयु पौन पल्य है अर मंगल बुध शनैश्चरकी आयु आध पल्य है अर तारानिकी आयु पाव पल्य है अर कैयक तारानिकी आयु आध पाव पल्य है, आध पाव पल्यतैं जोतिषीनिकी आयु घटती नाहीं ॥ ९ ॥ अर एक योजनके इकसठ भाग करिये तामें छप्पन भाग चंद्रमाका विमान है अर इकसठ भाग एक योजनके करिये तामें अड़तालीस भाग लीजिये सो सूर्यके विमानका विस्तार है अर एक कोस शुक्रका विमान है अर पौन कोस बृहस्पतिके विमानका विस्तार है अर आध कोस सकल ग्रहनिके विमाननिका विस्तार है उत्कृष्ट विस्तार आध कोस है अर तारानिका मध्य विस्तार पावकोसतैं कछुयक अधिक है अर जघन्य विस्तार पाव कोस ही का है अर तारनिका परस्पर जघन्य अंतर एक कोसका

अर रम्यकक्षेत्र सो ८४२१ योजन अर कला १। अर रुक्मी पर्वत ४२१० योजन अर कला १० अर हैमवतक्षेत्र २१०५ योजन अर कला ५ अर शिखरी पर्वत १०५२ योजन अर कला १२ अर ऐरावत ५२६ योजन अर कला ६ क्षेत्रतैं दूना पर्वत अर पर्वततैं दूना क्षेत्र सो यह गिनती तो विदेहक्षेत्रतक है अर विदेहतैं आधा नील अर नीलतैं आधा रम्यक तातैं आधा रुक्मी तातैं आधा हैरण्यवत् तातैं आधा शिखरी। अर शिखरीतैं आधा ऐरावत ॥१९॥ अब सप्त क्षेत्रनिका विस्तार लिखते हैं–या भारतक्षेत्रके मध्य एक विजयार्ध गिरि है सो ताकी लंबाई एक ओर तो पूर्वके समुद्र तक है अर एक ओर पश्चिमके समुद्रतक है सो विद्याधरनिके निवासकरि शोभै है ॥२०॥ विजयार्ध पृथिवीतैं पचीस योजन ऊंचा है। अर सवा छै योजन पृथिवीविषै ताकी जड है अर यह पर्वत रूपाके वर्ण सुपेद है योजन ५० चौडा है। अर पृथिवीतैं दस योजन ऊंचे चढिए तत्र दो विद्याधरनिकी श्रेणी हैं सो दोय श्रेणीका विस्तार दस दस योजन चौडा है अर लंबाई तो समुद्र पर्यंत है ॥ २१ ॥ श्रेणी दोय हैं तिन विषै एक दक्षिणश्रेणी एक उत्तरश्रेणी सो दक्षिणश्रेणीविषै नगर ५० अर उत्तरश्रेणीविषै नगर ६० ये सब ही नगर सुरपुर समान हैं अर इन दोऊ श्रेणीनतैं फिर दस योजन ऊंचे चढिए तहां आभियोग जातिके देवनिके क्रीडा योग्य दस दस योजन दोय श्रेणी हैं ताविषै अनेक नगर हैं। फिर पांच योजन ऊपर चढिए तहां दस योजनके विस्तार विजयार्ध देवकी पूर्णभद्रा नाम श्रेणी है ॥ २५ ॥ अर विजयार्धके ऊपर नव शिखर हैं तिनके नाम हैं–सिद्धायतन १ दक्षिणार्धक २ खण्डप्रताप ३ पूर्णचंद्र ४ विजयार्धकुमार ५ मणिभद्र ६ तमिस्रगुहक ७ उत्तरार्धक ८ अर नवमा वैश्रवण ये नवकूट गिरिके शिखर सोहै हैं शिखरनिकी ऊंचाई योजन ६। अर चौडाई मूल विषै तो योजन ६। अर मध्यविषै चौडाई योजन ५ किंचित ऊन अर ऊपरकी चौडाई ३ कछुइक अधिक ॥२९॥ पहिला सिद्धायतन कूट तामें पूर्व सन्मुख जिनेश्वरका अकृत्रिम चैत्यालय है, सो चैत्यालय पौन कोस ऊंचा है अर आधकोस चौडा है अर एक कोस लम्बा अविनाशी है ॥ ३१ ॥ भरतक्षेत्रके अर्धभागविषै विजयार्ध गिरि ताकूं प्रत्यंचा कहिए फिडच ताका विस्तार वीचका ९७४८ योजन अर कला १२ अर या फिडचका लघु धनु पृष्ट

क्षेत्र सातनिके नाम अर विस्तार आगे कहैं हैं। सुमेरु एक, देवकुरु, उत्तरकुरु दोय अर जम्बू तथा शालमली दोय बृक्ष अर कुलाचल छे तिनविषै द्रह छे अर तिन द्रहनिविषै चोदह महानदी अर विभंगा नदी बारह अर वक्षारगिरि बीस अर राजधानी चौंतीस अर वैताढ्य चौंतीस अर बृषभाचल चौंतीस अर चौंतीस वैताढ्यनिकी गुफा अरसठ अर नाभिगिरि चार अर एक २ वैताढ्यविषै विद्याधरनिकी पुरी प्रत्येक प्रत्येक ११० सो चौंतीसौंकी पुरी ३७४० ॥ ११ ॥ इन सवनि करि यह जम्बूद्वीप शोभै है यह जितने कहे इनसे दूने धातकीखण्ड दूजेद्वीपमें से है हैं अर जेते धातकीखण्डमें तेतेही पुष्करार्धमें जानहु ॥१२॥ यह अढाई द्वीपका संक्षेप व्याख्यान किया अब जम्बूद्वीपके सात क्षेत्रनिके नाम सुनहु। पहिला भरत दूजा हेमवत तीजा हरि चौथा विदेह पांचमा रम्यक छठा हैरण्यवत सातमा ऐरावत सो ऐरावत तो सुमेरुकी उत्तरकी ओर है। अर भरत क्षेत्र सुमेरुकी दक्षिण ओर है अर जो ये सात क्षेत्र कहे हैं सो इनमें भरतक्षेत्रके विस्तारतैं चौगुणा विस्तार हेमवतका है अर हेमवततैं चौगुणा हरिक्षेत्रका अर हरिक्षेत्रतैं चौगुणा विदेहका अर विदेहतैं चौथा भाग रम्यकका अर रम्यकतैं चौथा भाग हैरण्यवतका अर हैरण्यवततैं चौथा भाव ऐरावतका भरतका ऐरावतका विस्तार बरोबर है ॥ १४ ॥ अर छह कुलाचलनिके नाम— हिमवान् १ महाहिमवान २ निषध ३ नील ४ रुक्मी ५ शिखरी ६ सो हिमवानतैं चौगुणा महाहिमवानका है अर महाहिमवानतैं चौगुणा निषध अर निषधतैं नील बरोबर है अर नीलतैं चौथा भाग रुक्मी अर रुक्मीतैं चौथे भाग शिखरी हिमवान अर शिखरीका विस्तार बरावर है, दक्षिणके अर उत्तरके कैयकनिका विस्तार बराबर है ॥ १४ ॥ अर भरत क्षेत्रका विस्तार ५२६ योजन अर भाग छह अर योजनका जो उगनीसमा भाग सो कला कहिए सो यह क्षेत्र जम्बूद्वीपके विस्तारकूं १९० भाग करिए तिनमें एक भाग है अर भरतक्षेत्रतैं दूना हिमवान् पर्वत सो १०५२ योजन १२ कला अर हिमवान्‌तैं दूना हेमवतक्षेत्र सो २१०५ योजन अर कला ५ अर महा हिमवान् पर्वत ४२१० योजन अर कला १० अर हरिक्षेत्र ८४२१ योजन अर कला १ अर निषधाचल १६८४२ योजन अर कला २ अर विदेहक्षेत्र ३३६८४ योजन अर कला ४ अर नीलाचल १६८४२ योजन अर कला २

अव मध्यलोकका विस्तार संक्षेपता करि सुनहु ॥७६॥ बुध कहिए विवेकी भगवानके जे वचन वेई भए सर्वप्रकाशी दीपक तिनिकी कांतिकी ज्योतिकरि सदाकाल तत्तरूप होय हैं। कहा करि ऐसे होय हैं चांद सूर्य अगोचर जो अधोलोकका अन्धकार ताहि जिन वचनरूप दीपकके प्रकाशतैं दूरकरि पदार्थकूं देखै हैं। भावार्थ—अधोलोकविषै चांद सूर्यका प्रकाश नाहीं महा अन्धकार है सो जिनवचन दीपकके विना ऐसे अंधकारविषै वस्तु कैसैं भासै जिनेश्वररूप सूर्यके प्रकाशकरि लोकालोक सब ही भासैं तो अधोलोकके पदार्थनिके अवलोकनकरि आश्चर्य कहा, जिनसूर्यके उद्योगविषैं अज्ञान अंधकार कहां रहै है ॥ ३७७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ अधोलोक संस्थाननाम वर्णनो चतुर्थः सर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

मध्य-लोकका वर्णन

अथानंतर—मध्यलोकका वर्णन करै हैं, यह मध्यलोक भी मध्यतनु वातवलयके अंत पर्यंत तिष्ठा है, सुमेरु पर्वत लक्ष योजन है सो ताकी हजार योजन तो पृथ्वीविषै जड है। अर निन्यानवै हजार योजन ऊंचा है सो जेते सुमेरु ऊंचा है तेती मध्यलोककी ऊंचाई अर जेती सुमेरुकी जड़ है तेती मध्यलोककी निचाई ॥ १ ॥ अर मध्यलोकविषै असंख्यात द्वीप अर समुद्र हैं तिनके मध्य जम्बूद्वीप अर गोल है आकार जाका सब ही द्वीप समुद्र गोल वर्तुलाकार हैं द्वीपकूं वेढै हैं समुद्र, समुद्रकूं वेढैं अगला द्वीप ताहि वेढै अगला समुद्र या भांति असंख्यात द्वीप समुद्र हैं अर जंबूनामा द्वीप सबमें आदि सो जम्बू नामा वृक्षकरि शोभायमान है ॥ २ ॥ यह जम्बूद्वीप वज्रके कोट करि वेष्टित अपने विस्तारकरि लवण समुद्रकूं स्पर्शै है या भांति जम्बूद्वीपका विस्तार लक्ष योजनका है ॥ ३ ॥ अर सुमेरु गिरि या जम्बूद्वीपके नाभि समान मध्यविषै है ॥ ४ ॥ जम्बूद्वीपकी परिक्षेप कहिए प्रदक्षिणा सो योजन तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताइस अर कोस तीन धनुष एकसौ अठाईस अंगुल साढे तेरह है अर जम्बूद्वीपको एकत्र घनाकार करिए तो योजन सात सौ नव्वेकोटि छप्पन लाख चौरानवे हजार एकसौ पचास होय अर या जम्बूद्वीपविषैं

धारक निर्दय मृषावादी, परधन परदाराके हरणहारे महालोभी अनंतानुबंधी चौकड़ीका है उदय जिनके मांस आहारी मद्यपायी मधुभक्षक सात व्यसनोंके सेवनहारे अन्यायमार्गी अर लुटेरे विष देनहारे नरक जांय सो नरकगति दुष्ट मनुष्य तथा दुष्ट तिर्यंचगति पावैं। एकेंद्रीतैं ले चौइन्द्री पर्यंत तो नरकमें न जांय पंचेंद्री ही जांय तिनमें असैनी तो पहले तकही जावैं। आगैं न जावैं अर जलके सर्प दूजे नरक तक जावें। अर पक्षी तीजे नरक तक जावैं। अर भुजंग चौथे नरकतक जावैं। अर सिंह पांचवें नरकतक जावैं। अर स्त्री छठे नरक तक जांय। अर मनुष्यनिमें पुरुष तथा महामच्छ सातवें तक जाय ॥७०॥ सातवेंका निकस्या लगता ही सातवें जाय तो दुष्टतैं दुष्ट तिर्यंच होय दूजीबार सातवें नरक जाय अर और नरकमें जावे तो जावे। अर छठेका निकस्या लगताही जाय तो दुष्ट मनुष्य तिर्यंच होय दोयबार और लगता जाय। अर पाचवेंका निकस्या लगता ही पांचवें जाय तो दुष्ट नर तथा पशु होय अर तीनवार लगता ही जाय अर चौथेका निकस्या लगता वहां ही जाय तो चार बार फेर जाय अर तीसरेका निकस्या नर तिर्यंच होय तीजे ही जायवो करै तो पांचवार वहीं फेर जाय, अर दूजे नरकतैं लगता जाय तो दुष्ट मनुष्य पशु होय छै वार दूजेमें ही फेर जाय। अर पहले नरकका निकस्या तहां ही जाय तो दुष्ट मनुष्य तिर्यंच होय सात वार फेर लगता ही जाय अर नरकनिविषै जीव अनंतवार गए अर जांयगे ॥ ७२ ॥ अर यह नियम है कि सातवेंतैं निकस्या दुष्ट तिर्यंच होय एकबार नरकही जाय कोई नरक जाय अर छठेका निकस्या मनुष्य होय तो होवे परंतु संयमी न होय। अर पांचवेंतैं निकस्या तद्भव मोक्ष न जाय मुनिव्रत धरै तो धरै। चौथेका निकस्या चरम शरीरी होय तो होय ॥ ३७३ ॥ अर पहिले दूजे तीजे तें निकस्या तीर्थंकर भी होय तो होय यह तीर्थेश्वरकी आज्ञा है ॥ ७४ ॥ नरकतैं निकसे पंचेंद्री तिर्यंच अर मनुष्य होंय परन्तु बलदेव वासुदेव चक्रवर्ती न होंय ये स्वर्गहीके आए होंय। अर मिथ्यादृष्टि तो नरकतैं निकसे तिर्यंच ही होंय अर मनुष्य होंय तो हीन होंय अर सम्यग्दृष्टि पूर्वले पापतैं नरकविषै गए नरकतैं निकसि उत्तम मनुष्य होंय ॥ ७५ ॥ गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं। हे श्रेणिक! अधोलोकका विस्तार मैंने संक्षेपकरि तोहि कह्या

वैर चितराय परस्पर लडावैं हैं अर चोथे नरकते लेकरि सातवें पर्यंत असुरकुमारनिका गमन नाहीं, नारकी ही वैर चितारकरि परस्पर लडावें हैं ॥ ५८ ॥ अपने शरीरकरि उपजे नाना प्रकारके शस्त्र कुंत कहिये सेल अर चक्र कहिये करौत अर शला कहिए त्रिशूल इनकूं आदि दे खडग कुठारी कुहाडनि करि परस्पर खंड खंड करै हैं महा पीड़ा उपजावैं हैं ॥ ५९ ॥ जैसैं पारेकूं खंड खंड करिए अर तत्काल मिल जाय तैसे नारकीनिका शरीर खंड खंड होय मिल जाय है। जहां तक उनका आयुकर्म है तहां लग मारने करि मरें नाहीं, शरीर संबंधी अर मन संबंधी आधि व्याधिका दुःख पूर्वपापके विपाकतैं सदा सहै हैं वह याकूं दुखी करै है वह वाकूं दुखी करै है परस्पर मारना ताडना होयवो ही करै है। वे नारकी महाक्षार महा उष्ण महादुर्गंध वैतरणी नदीके जलथकी अर महा दुर्गंध मृत्तिकाथकी महा दुस्सह दुख भोगवैं हैं ॥ ३६२ ॥ एक आंखके निमिषमात्र हू नारकीनिकूं सुख नाहीं। वे नारकी निरंतर नरकविषै दुःख भोगवैं हैं नरकविषै जीवनके महा अशुभ परिणाम हैं अर नपुंसक सब ही हैं अर हुंडकसंस्थान हैं॥ ६३ ॥ छठे नरक तकके निकसे तो मनुष्य अर पंचेंद्री तिर्यंच दोय गति ही में आवैं हैं अर सातवेंतैं निकसे तिर्यंच ही होय अर केएक जीवनिने पहिले मिथ्यात्वविषै नरकका बंध किया हुता बहुरि सम्यक्तकूं पाय करि तीर्थंकर पदका बंध कीया, सो पूर्व बंधकरि सम्यक्ततैं च्युत होय तीजे नरकतक जाय तहांका निकस्या तीर्थंकर होय तो होय। अर चौथेका निकस्या तीर्थंकर न होय कदाचित् चरमशरीरी होय तो होय अर पांचवेंतैं निकस्या कदाचित् साधु होय तो होय जे जीव पहिले दूजे तीजेतैं निकस करि तीर्थंकर होवें तिन जीवनिका मरणतैं छै महीने पहिले उपसर्ग दूर होय ॥ ६५ ॥ पहिले नरकविषै नारकी मूवा अर याकी जगह दूजा जब ही उपजै अर अंतर पडै तो पहिले नरकविषै अड़तालीस घड़ीका अंतर पड़ै यह अंतर कथन अंत र्यामीने कह्या ॥ ३६६ ॥ अर दूजे नरक अंतर पडे तो दिन सात तीजे नरक दिन पंद्रह चौथे नरक मास १ पांचवें नरक मास २ छठे नरक मास ४ सातमें नरक अंतर मास छह ॥६७॥ भावार्थ—नरकमें जे नारकी हैं तिनमें घटे बढे नाहीं एक मरै एक उपजै जो अंतर पडै तो इतना पडै यह मिथ्याती महापापी बहुत आंरभी परिग्रहके

कैयक भैंसनिके आकार कैयक द्रोणीके आकार अर कैयक कमलपुटके आकार ॥ ३४४ ॥ अर छठे नरकविषै तथा सातवेंविषै नारकिनके उत्पत्तिके स्थान कैयक खेतके आकार कैयक झालरके आकार कैयक मल्लिकाके आकार कैयक मयूरिकाके आकर हैं ॥ ४५ ॥ ये उत्पत्ति स्थानक एक कोश चौडे कैयक दोय कोस चौडे कैयक तीन कोस चौडे कैयक एक वा दोय वा तीन योजन चौडे हैं। अर तिनमें सौ योजन चौडे हैं यह उत्कृष्ट वर्णन किया, सौ योजन सिवाय तिनकी चौडाई नाहीं। भावार्थ—क्रमतैं सातों नरकनिविषै एक दो वा तीन कोष एक दोय तीनसौ योजन चौडाई सब स्थान कहे हैं। अर जो चौडाई वर्णन करी ताथकी पांचगुनी ऊंचाई जानहु, नारकीनिके समस्त उत्पत्ति स्थानकनिकी ऊंचाई चौडाई समस्त वस्तु श्रीवीतरागदेवने बताई ॥ ४७ ॥ जे इंद्रक बिले हैं ते सब तिखूटे हैं तीन द्वारनिकूं धरे हैं अर इंद्रके तो दूजे श्रेणीवद्ध अर प्रकीर्णकतैं कैएक दोय द्वार अर दोय कोण अर कैएक तीन द्वार अर त्रिकोण अर कैएक एक द्वार एक कोण कैएक पंच द्वार पंच कोण अर कैएक सप्त द्वार सप्त कोण ॥ ४८ ॥ वे संख्यात योजनके विस्तार करि युक्त हैं तिनमें तो अल्प अंतर छह कोस अर उत्कृष्ट अंनर कोस बारह अर असंख्यात योजनरूप है प्रमाण जिनका तिनका अंतर उत्कृष्ट तो असंख्यात योजन अर जघन्य अंतर सात हजार योजन ॥ ५० ॥ अर नरकनिविषै नारकी उपजकरि भूमिमें पड़े हैं तहां पड़करि उछलते हैं सो पहिले नरक तो योजन सात अर कोस सवा तीन ऊंचे उछलते हैं, अर नीचले नरकविषै पहिलतैं दूना जानहु ॥ ५१ ॥ दूजे नरकविषै योजन १५ अर कोस २॥ नारकी ऊचे उछलते हैं। अर तीजे नरकविषै योजन ३१ अर कोस १ उपजतेही पृथ्वीमें पड़करि आकाशविषै उछलते हैं अर उछल करि पाछे पडे हैं ॥ ५३ ॥ अर चौथे नरकके नारकी योजन ६२ अर कोस दो उछलते हैं। अर पांचवें नरकके नारकी योजन १२५ महा दुःखके पीडे ऊंचे उछलते हैं। अर छठे नरकविषै नारकी योजन २५० ऊंचे उछल करि पाछे पडै हैं। अर सातमें नरकविषै योजन ५०० ऊंचे उछल करि पाछे पृथ्वीविषै पडै हैं ॥ ३५७ ॥ तीजे नरक तक तो अपना अपना पूर्वला वैर बिचारि नारकी परस्पर लडै हैं अर असुरकुमार देव हू इनकूं पूर्वला

धनुष पिचहत्तर अर दूजे पाथडेविषै धनुष सत्तासी हाथ २ ॥ ३० ॥ अर तीजे पाथडेविषै धनुष १०० अर चौथे पाथडेविषै धनुष ११२ हाथ दोय ॥३१॥ अर पांचवेंविषै धनुष १२५ ऊंचाई नारकीनिकी गणधरदेवने कही ॥३२॥ ये पंचम नरकके पांच पाथडेनिविषै शरीरकी ऊंचाई जानहु ॥ ३३ ॥ अर छठे नरकके पहिले पाथड़ेविषै धनुष १६६ हाथ २ अंगुल सोलह ॥ ३३ ॥ अर दूजेविषै धनुष २०८ हाथ १ अंगुल ८ अर तीजे पाथड़ेविषै धनुष २५० ॥३४॥ या भांति छठेके तीन पाथडेनिके नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई ज्ञाननेत्रके धारकनिने कही ॥ ३५ ॥ अर सातवें नरकविषै एक पथड़ा ताविषै धनुष ५०० नारकीनिके देहकी ऊंचाई कही। यह सब निश्चय केवलीनिके उपदेश करि भव्य जीवनिके भया ॥ अथानंतर—प्रथम नरकादि सातोंही नरकनिकी पृथ्वीविषै अवधि प्रमाण कहै हैं। पहले नरकके कोस ४ दूजे नरकके कोस ३॥, तीजे नरकके कोस तीन, चौथे नरकके २॥, पांचवें नरकके कोस दोय, छठे नरकके कोस १॥, सातवें नरकके कोस एक याभांति अवधिका प्रमाण जानना ॥३८॥ अर पहिले दूजे नरकविषै लेश्या कापोत अर तीजे नरकविषै ऊपरले पाथड़ेनिविषै कापोत अर नीचले पाथडनिविषै नील ॥३९॥ अर चौथे नरकविषै सब पाथड़ानिविषै नील लेश्या ही है। अर पांचवां नरकविषै ऊपरले पाथड़निमें नील लेश्या है अर नीचले पाथड़निविषै कृष्णलेश्या है अर छठे नरकविषै सब पाथडनिविषै कृष्णलेश्याही है अर सातवें नरकविषै परम कृष्णलेश्या है अति दुष्ट भावनिकरि तहां जाय है तहां दुष्ट भावही हैं। अर तहांके निकसे मनुष्य न होवैं दुष्ट तिर्यंच ही होंय एक वार फिर नरकमें जांय ॥३४१॥ अर चौथे नरकतक तो अति उष्णताकी बाधा है। अर पांचवें नरकविषैं ऊपरले विलानिविषै तो उष्णताकी बाधा है। अर नीचले विलानिविषै शीतताकी बाधा है अर छठे नरकविषै सर्वत्र शीत है अर सातवें नरकविषै महा शीत है ॥ ४२ ॥ अर नारकीनके उत्पत्तिके स्थानक तीजे नरक तक तो कैयक कडाहीके आकार हैं अर कैयक कुम्भीके आकार हैं अर कैयक मुद्गरके आकार हैं कैयक कुस्थलीके आकार हैं कैयक मृदंगके आकार अर कैयक नालीके आकार ॥ ४३ ॥ अर चौथे नरकविषै तथा पांचवें नरक विषै नारकीनिके उत्पत्तिके स्थानक कैयक गायके आकार कैयक गजके आकार हैं कैयक अश्वादिकके आकार

भाग पांच ॥१०॥ अर नवमें पाथडेमें धनुष चौदह अंगुल उनीस अर भाग ७ ॥ ११ ॥ अर दशवें पाथडेविषै धनुष चौदह हाथ तीन अंगुल पन्द्रह अर भाग नव ॥ १२ ॥ अर ग्यारहवें पाथडेमें धनुष पन्द्रह हाथ दो अंगुल बारह यह दूजे नरकके पाथडेनिका ग्यारहका कथन किया। यहांतें एक धनुष हाथ दोय बाईस अंगुल एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ये तीन अनुक्रम कर वृद्धि भई। तीजे नरकके पहिले पाथडेमें धनुष सतरह हाथ १ अंगुल दश अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय इतना ऊंचा शरीर नारकीनिका है ॥ १५ ॥ अर तीजेके दूजे पाथडेविषै धनुष उनीस नव अंगुल अर १ अंगुलका तीजा भाग सर्वदर्शीने दिखाया ॥ १६ ॥ अर तीजेके तीजे पाथडेविषैं धनुष बीस हाथ तीन अंगुल आठ शरीर ऊंचा है। अर चौथे पाथडेविषै धनुष बाईस हाथ दोय अंगुल छह अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ॥३१७॥ अर पांचवें पाथडविषैं धनुष चौवीस हाथ एक अंगुल पांच अर एक अंगुलका तीजाभाग ॥१८॥ अर छठेविषै धनुष छवीस अर अंगुल ४ शरीर ऊंचा है ॥ १॥ अर सातवें पाथडेविषै धनुष सत्ताईस हाथ तीन अंगुल दोय अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ २० ॥ अर आठवें पाथडेविषै धनुष उन्तीस हाथ दोय अर अंगुल एक अर अंगुलके तीन भागनिमें भाग एक ॥२०॥ अर नवमें पाथडेविषै धनुष एकतीस हाथ एक बतलाई है ॥ २१॥ यह तीजे नरकके नव पाथडेनिके नारकीनिकी ऊंचाई कही है ॥२२॥ अर चौथे नरकके पहिले पाथडेविषै धनुष पैंतीस हाथ दो अंगुल बीस अर एक अंगुलके सात भाग करिए तिनमें भाग चारि ॥ २३ ॥ अर दूजे पाथडेविषै धनुष चालीस अंगुल सत्रह अर एक अंगुलका सातवां भागमें एक भाग है ॥२४॥ अर तीजे पाथडेविषै धनुष चवालीस हाथ दो अंगुल तेरह अर सात भागनिमें भाग पांच हैं ॥२५॥ अर चौथे पाथडेविषैं धनुष उनचास अंगुल दश अर अंगुल एकके सातभागनिमें भाग दोय है ॥२६॥ अर पांचवें पाथडे विषै धनुष तिरेपन हाथ दो अंगुल छह अर एकके सातभागनिमें भाग छह ॥२७॥ अर छठेविषै धनुष ५८ अंगुल तीन अर अंगुलके सात भागनिमें भाग तीन ॥२८॥ अर सातवेंविषै धनुष बासठ अर हाथ २ की ऊंचाई है। या भांति चौथे नरकके सात पाथडेनिके नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई कही ॥ ३२९ ॥ अर पांचवें नरकके पहिले पाथडेविषै

अर सातवां नरक माघवी ताविषै पाथडा एक अप्रतिष्ठान ताविषै जघन्य आयुसागर २२ अर उत्कृष्ट आयु सागर तेतीस ॥ ९२ ॥ याभांति सातों नरककी आयुका वर्णन किया जो पहले उत्कृष्ट सो दूजे एक समय अधिक जघन्य आयु याही भांति सब पाथडनिमें जानहु ऐसैं नारकीनिकी आयु कही ।

अथानंतर—नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई कहे हैं । पहिले नरकके पहिले पाथडनिमें नारकोनिका शरीर हाथ तीन दूजे पाथडेमें धनुष १ हाथ १ अर साढे आठ अंगुल याभांति तेरह पाथडे तक पाथडे पाथडेविषै दोय दोय हाथ अर साढा आठ २ अंगुल बढता गया अर तीजेमें धनुष १ हाथ ३ अंगुल १७ ॥ ९३ ॥ अर चौथे पाथडेमें धनुष २ हाथ २ अंगुल १॥, अर पांचवें पाथडेमें धनुष ३ अंगुल १०, ॥ ९४ ॥ अर छठे पाथडेमें धनुष ३ हाथ २ अंगुल १८॥, ॥ ९५ ॥ अर सातवें पाथडेमें धनुष ४ हाथ १ अंगुल ३ अर आठवें पाथडेमें धनुष ४ हाथ ३ अंगुल ११॥ ॥ ९७ ॥ अर नवमें पाथडेमें धनुष ५ हाथ १ अंगुल वीस ॥ २९८ ॥ अर दशमें पाथडेमें धनुष ६ अर अंगुल साढे चार ॥ ९९ ॥ अर ग्यारहवें पाथडेमें धनुष ६ हाथ २ अंगुल तेरह ॥ ३०० ॥ ऐसा कथन सर्वज्ञ देवने किया जिनके भ्रम नाहीं वे महाप्रवीण हैं । अर बारहवें पाथडेमें धनुष ७ अंगुल २१॥ ॥१॥ तेरहवें पथडेमें धनुष ७ हाथ ३ अंगुल ६ या भांति पहिला नरक घम्मा ताके तेरा पाथडनिविषै पुराण पुरुषनि नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई कही ॥ २ ॥ अर दूजे नरकके पहिले पाथडेविषै धनुष ८ हाथ २ अंगुल २ अर एक अंगुलके ग्यारह भाग करिये तिनमें भाग दोय ॥ ३ ॥ दूजे नरकके दूजे पाथडेमें धनुष ९ अंगुल २२ एक अंगुलके ग्यारह भागनिमें भाग चार ॥ ४ ॥ अर तीजे पाथडेमें धनुष नौ हाथ तीन अंगुल अठारह अर ग्यारह भागनिमें भाग छह ॥ १०५ ॥ अर चौथे पाथडेमें धनुष दश हाथ दो अंगुल चौदह अर एक अंगुलके ग्यारह भागनिमें भाग आठ ॥६॥ अर पांचवें पाथडेमें धनुष ग्यारह हाथ १ अंगुल दश अर ग्यारह भागनिमें भाग दश ॥७॥ छठे पाथडेमें धनुष बारह अर अंगुल सात अर ग्यारह भागनिमें भाग १ ॥ ८ ॥ अर सातवें पाथडेमें धनुष बारह हाथ तीन अंगुल तीन अर ग्यारह भागनिमें भाग तीन ॥९॥ अर आठवें पाथडेमें धनुष तेरह हाथ १ अंगुल तेईस अर

सागरके सात भागनिमें भाग तीन ॥ ७८ ॥ अर दूजा पाथडा तार ताविषै जघन्य आयुसागर ७ अर सात भागनिमें भाग ३ अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ अर सात भागनिमें भाग छह ॥ ७९ ॥ अर तीजा पाथडा मार ताविषै जघन्य आयुसागर ७ अर सात भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट आयु सागर ८ अर भाग दो ॥ ८० ॥ चौथा वर्चस ताविषै जघन्य आयु सागर ८ अर सात भागनिमें भाग २ उत्कृष्ट सागर ८ अर भाग पांच ॥ ८१ ॥ अर पांचवां पाथडा तमक ताविषै जघन्य आयुसागर ८ अर एक सागरके सात भागनिमें भाग ५ उत्कृष्ट आयु सागर ९ अर एक सागरका सातवां भाग ॥ ८२ ॥ अर छठा पाथडा खड ताविषै जघन्य आयु सागर ९ अर एक सागरके सात भागनिमें भाग १ उत्कृष्ट आयु सागर ९ अर सात भागनिमें भाग चार ॥ ८ ॥ अर सातवां खडखड ताविषै जघन्य आयु सागर ९ अर भाग ४ अर उत्कृष्ट आयु सागर दस, यह चौथे नरकके सात पाथडेनिका वर्णन किया ॥ ८५ ॥ अर पांचवां नरक अरिष्टा ताका पहिला पाथडा तम ताविषै जघन्य आयु सागर दश अर उत्कृष्ट आयु सागर ११ अर एकसागरके पांचभागनिमें भाग दो अर दूजा पाथडा भ्रम ताविषै जघन्य आयु सागर दश अर पांच भागनिमें भाग दोय अर उत्कृष्ट आयु सागर बारह अर भाग चार ॥ ८६ ॥ अर तीजा पाथडा रिख ताविषै जघन्य आयु सागर बारह अर भाग चार उत्कृष्ट आयु सागर चौदह अर भाग एक ॥८७॥ अर चौथा पाथडा अंध ताविषै जघन्य आयु सागर चौदह अर एक सागरके पांच भागनिमें भाग एक अर उत्कृष्ट आयु सागर पंद्रह अर भाग तीन ॥ २८८ ॥ अर पांचवां पाथडा तमिस्र ताविषै जघन्य आयु सागर पंद्रह अर भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु सागर सतरह ऐसा कथन श्रीवीतराग देवने किया यह पंचम नरकके पाथडनिका व्याख्यान किया ॥ ८९ ॥ अर छठा नरक मघवी ताका पहिला पाथडा हिम ताविषै जघन्य आयु सागर सतरह अर उत्कृष्ट आयु सागर अठारह अर एकसागरके तीनभागनिमें भाग दोय ॥ ९० ॥ अर दूजा पाथडा वर्दल ताविषै जघन्य आयु सागर अठारह अर भाग दो अर उत्कृष्ट आयु सागर वीस अर तीजा भाग ॥ ९१ ॥ अर तीजा ललक ताविषै जघन्य आयु सागर वीस अर एकका तीजा भाग अर उत्कृष्ट सागर वाईस । या प्रकार छठे नरकके तीन पाथडनिका कथन किया

आठवां जिह्वक ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग पांच ॥ ६५ ॥ अर नवमां लोल ताविषै जघन्य आयुसागर २ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भाग पांच, उत्कृष्ट आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग सात ॥ ६६ ॥ अर दसवां लोलुप ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर ग्यारह भागनिमें भाग सात, अर उत्कृष्ट सागर २ अर सागर ग्यारह भागनिमें भाग नव ॥६७॥ ग्यारह तनलोलुप ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें आयुभाग नव अर उत्कृष्ट सागर तीन ॥ ६८ ॥ यह दूजा नरक जो वंशा ताके ग्यारह पाथडनिकी प्ररूपणा करी ।६९। अर तीजे नरकका पहिला पाथडा तप्त ताविषै जघन्यआयु सागर तीन अर उत्कृष्टआयु सागर तीन अर एक सागरके नवभाग करिए तिनिमें भाग चार अर तीजेका दूजापाथडा तपित ताविषै जघन्य आयु सागर ३ अर नव भागनिमें भाग चार अर उत्कृष्ट आयु सागर तीन अर एकके नव भागनिमें भाग आठ ॥ २७० ॥ अर तीजा पाथडा तपन ताविषै जघन्य आयु सागर ३ अर एकके नव भागनिमें भाग आठ उत्कृष्ट सागर ४ अर नव भागनिमें भाग तीन ॥७१॥ अर चौथा तापन ताविषै जघन्य आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ३ अर उत्कृष्ट आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ७ ॥७२ ॥ अर पांचवां निदाघ ताविषै जघन्य आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ७ अर उत्कृष्ट आयु सागर ५ अर नवमें भाग दो ॥७३॥ अर छठा प्रज्वलित ताविषै जघन्य आयु सागर ५ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग २ अर उत्कृष्ट सागर पांच अर नव भागनिमें भाग छह ॥७४॥ अर सातवां उज्वलित ताविषै जघन्य आयु सागर ५ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट सागर ६ अर नव भागनिमें भाग एक ॥२७५॥ अर आठवां संज्वलित ताविषै जघन्य आयुसागर ६ अर एकसागरके नवभागनिमें भाग १ उत्कृष्ट सागर ६ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग पांच ॥७६॥ अर नवमां संप्रज्वलित ताविषै जघन्य आयुसागर ६ अर नव भागनिमें भाग पांच अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ यह तीजे नरकके नव पाथडनिका निर्णय किया ॥७७॥ अर चौथा नरक अंजना ताका पहिला पाथडा आर ताविषै जघन्य आयु ७ सागर अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ अर एक

अर उत्कृष्ट आयु सागरके दश भागनिमें भाग तीन ॥५३॥ अर सातवां असंभ्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरके दश भागनिमें भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु एक समय अधिक सागरके दशभागनिमें भाग चार ॥ ५४ ॥ अर आठवां विभ्रांत ता विषै जघन्य आयु सागरके दस भागनिमें भाग ४ अर उत्कृष्ट आयु आध सागर अर नवमां त्रस्त ता विषैं जघन्य आयु सागर आध अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग सात ॥ ५५ ॥ अर दसमां त्रसित ता विषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दस भागनिमें भाग छे अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें सात भाग ॥ ५६ ॥ अर ग्यारवां वक्रांत ताविषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दस भागनिमें सात भाग अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग आठ ॥ २५७ ॥ अर बारवां अविक्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरके दस भागनिमें भाग आठ अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग नव ॥५८॥ अर तेरवां विक्रांत ताविषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दश भागनिमें भाग नौ अर उत्कृष्ट आयु सागर एक, यह प्रथम नरकके नारकीनिकी आयु कही। अर दूजे नरकका पाथडा पँहिला तर्क ताविषै जघन्य आयुसागर १ किंचित् अधिक अर उत्कृष्ट आयुसागर १ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भाग दोय ॥५९॥ अर दूजा पाथडा तनक ताविषै जघन्य आयु सागर १ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भागदोय अर उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग चार अर तीजा पाथडा मनक ताविषैं जघन्य आयु सागर १ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग ४, उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग ६ ॥६०॥ चौथा पाथडा वनक ताविषै जघन्य आयु सागर १, अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट आयु सागर १ अर ग्यारह भागनिमें भाग आठ ॥६१॥ अर पांचवां पाथडा घाट ताविषै जघन्यआयु सागर १ अर एकसागरके ग्यारह भागनिमें भाग ८ अर उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग दस ॥ ६२ ॥ अर छठा पाथडा संघात ताविषै जघन्य आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग १० अर उत्कृष्ट आयु सागर २, ग्यारह भागनिमें भाग एक ॥६३॥ अर सातवां जिह्व ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर भाग १, उत्कृष्ट आयु सागर २ अर ग्यारह भागनिमें भाग तीन ॥६४॥ अर

विलानिका अंतर ३२४९ योजन अर धनुष ३५०० ॥ ३२ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ३२४९ योजन अर धनुष २००० ॥ ३३ ॥ ऐसे भेद सर्वज्ञ देवने कहे हैं। अर प्रकीर्णकनिका अंतर ३२४८ योजन अर धनुष ५५०० ॥ २३४ ॥ अर चौथे नरकविषै इंद्रकनिका अंतर ३६६५ योजन अर धनुष ७५०० ॥ ३५ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ३६६५ योजन अर धनुष ५५५५ अर एक धनुषके नव भाग करिये तिनिमें भाग पांच लीजिये ॥ ३६ ॥ अर प्रकीर्णकनिका अंतर ३६६४ योजन अर धनुष ७७२२ सौ अर एक धनुष के नव भाग करिये तिनिमें भाग दोय लीजे ॥ ३७ ॥ अर पांचवें नरकविषै इंद्रक विलानिका अंतर ४४९९ योजन अर ५०० धनुष ॥ ३८ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ४४९८ योजन अर धनुष ६००० अर प्रकीर्णकनिका अंतर ४४९७ योजन अर धनुष ६५०० ॥ ४२ ॥ अर छठे नरकविषै इंद्रकनिका अंतर ५९९८ योजन अर धनुष ५५०० सौ ॥ ४३ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ६९९८ योजन अर धनुष २००० अर प्रकीर्णकनिका अंतर ६९९६ योजन अर धनुष ७५०० ॥ ४५ ॥ अर सप्तम नरकविषैं अर इंद्रक एक ही है अर श्रेणीवद्ध चार अर प्रकीर्णक हैं ही नाहीं सो इंद्रकनिका श्रेणीबद्धसूं अंतर ३९९९ योजन अर कोस २ अर श्रेणीवद्धनिमें परस्पर अंतर तीन हजार नौसै निन्यानवै योजन अर एक कोसका तीजा भाग ॥ ४७ ॥

अथानंतर—उनचास पाथड़निमें आयुका कथन करै हैं, प्रथम नरकविषै पहिला पाथडा सीमंतक तहां जघन्य आयु नारकीनकी दश हजार वर्ष अर उत्कृष्ट आयु नव्वे हजार वर्ष ॥ २४८ ॥ अर दूजा पाथडा तारक ताविषै जघन्य आयु ९०:० वर्ष किंचित् अधिक अर उत्कृष्ट आयु नव्वे लाख वर्ष ॥४९॥ अर तीजा पाथडा रौरव ताविषै जघन्य आयु नव्वे लाख वर्ष अर एक समय अधिक। अर उत्कृष्ट आयु असंख्यात कोडि पूर्व ॥ ५० ॥ अर चौथा पाथडा भ्रांत ताविषै जघन्य आयु असख्यात कोटिपूर्व एक समय अधिक अर उत्कृष्ट आयु सागरका दसवां भाग ॥२५१॥ अर पांचवां उद्भ्रांत ताविषैं जघन्य आयु सागरका दसवां भाग एक समय अधिक अर उत्कृष्ट आयु सागरका पांचवां भाग ॥५२॥ अर छठा संभ्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरका पांचवां भाग अर एक समय अधिक

है अर श्रेणीबद्ध विले तिनिकी भूमिकी मुटाई एक कोस अर कोसका तीजा भाग, अर जो प्रकीर्णक विले तिनिकी मुटाई भूमिविषै कोस एक अर कोसके तीन भागनिमें भाग एक ॥२१८॥ अर वंशा कहिये दूजा नरक ताविषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस डेढ। अर श्रेणीवद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस दोय। अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस साढे तीन अर तीजा नरक मेघा ता विषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस दोय अर श्रेणीबद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस दोय अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस चार अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ १९ ॥ अर चौथा नरक अंजना ताविषैं इंद्रकनिकी भूमिकी मुटाई कोस ढाई अर श्रेणीवद्ध भूमिकी मुटाई कोस ३ अर एक कोसका तीजा भाग अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस पांच। अर एक कोसके छै भाग करिये तिनिमें भाग पांच ॥ २२० ॥ अर अरिष्ठा पांचवां नरक ताविषैं इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस ३, अर श्रेणीवद्धनिकी कोस ४, अर प्रकीर्णकनिकी कोस ७ ॥ २१ ॥ अर छठा नरक मघवी ता विषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस साढे तीन अर श्रेणीवद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस ४ अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस आठ, एक कोसका छठा भाग ॥ २२२ ॥ सातवां नरक माघवी ताविषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस ४, श्रेणीवद्ध चार तिनकी भूमिकी मुटाई कोस पांच एक कोसका तीजा भाग, या भांति सब विलानिका विस्तार अर भूमिकी मुटाईका वर्णन कहा।

अथानंतर—विलानिका अंतर कहें हैं। प्रथम नरकविषै इंद्रक विलानिमें परस्पर अंतर ६४९९ योजन अर कोस दोय, अर एक कोसके भाग बारह करिये तिनिमें ग्यारह भाग लीजेये ॥ २५ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ६४९९ योजन अर दोय कोस अर कोसके नव भागनिविषै भाग पांच लीजै ॥ २६ ॥ अर प्रकीर्णका अंतर ६४९९ योजन कोस एक अर कोसके छत्तीस भाग करिये तिनिमें सतरह भाग लीजै ॥ २७ ॥ अर दूजे नरक विषै इंद्रक विला २९९९ योजन अर धनुष ४७०० ॥ २८ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर २९९९ योजन अर धनुष छत्तीस सौ ॥ २९ ॥ अर प्रकीर्णका अंतर २९९९ योजन अर धनुष तीनसौ ॥ ३१ ॥ अर तीजे नरकविषै इंद्रक

... छ्यानवे हजार छह
... अर सतीसवां वर्चस्क ताका विस्तार बारहला
... स्तार ग्यारह लाख आठ हजार तीनसे तेतीस योजन एक योजनके ती
... अर उणतालीसवां खड ताका विस्तार दश लाख सोलह हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर
तीन भागनिमें भाग दो ॥६॥ चालीसवां खडखड ताका विस्तार नव लाख पचीस हजार योजन ये चौथे नरकके सात इंद्रक कहे ॥ ७ ॥ अर पांचवें नरकका प्रहिला इंद्रक तम सो उनचासमें इकतालीसवां ताका विस्तार आठ लाख तेतीस हजार तीनसौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥२०८॥ अर बयालीसवां भ्रम ताका विस्तार सात लाख इकतालीस हजार छै सौ छ्यासठ योजन अर एक योजनके तीन भागनिमें भाग दो ॥ ९ ॥ अर तियालीसवां रिष ताका विस्तार छै लाख पंचास हजार योजन ॥ १० ॥ अर चवालीसवां अंध ताका विस्तार पांच लाख अठानवै हजार तीन सौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥११॥ अर पैंतालीसवां तमिस्र ताका विस्तार चार लाख छ्यासठ हजार छैसौ छ्यासठ योजन, योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ये पंचम नरकके पंच इंद्रक कहे ॥२१२॥ अर छठे नरकका पहिला इंद्रक हिम, सो उनंचासमें छ्यालीसवां ताका विस्तार तीन लाख पिचहत्तर हजार योजन केवलदर्शीने दिखाया ॥ १३ ॥ सैंतालीसवां वर्दल ताका विस्तार दोय लाख तियासी हजार तीन सौ तेतीस योजन, योजनका तीजा भाग ॥ १४ ॥ अडतालीसवां लल्लक ताका विस्तार एक लाख इक्यानवे हजार छैसौ छ्यासठ योजन अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ।१५। ये छठे नरकके तीन इंद्रक कहे। अर सातवें नरकका अप्रतिष्ठान नामा इंद्रक एक ताका विस्तार एक लाख योजन यह वस्तुनिका विस्तार समस्त विस्तार वेत्ता जो सर्वज्ञ देव तिनि कहा ॥२१६॥ ये सात नरकनिके उनचास पाथडे हैं, सो एक २ पाथडेविषैं एक २ इंद्रक बिला जो पाथडेका नाम सोई इंद्रक बिलेका नाम यह तो समस्त इंद्रकनिके विस्तारका वर्णन किया ॥२१७॥ अब इंद्रकनिकी भूमिकी मुटाई कहिये जाडापना सो सुनहु। धम्मा कहिये पहिला नरक ताविषैं इंद्रककी मुटाई एक कोसकी

भागनिमें भाग दोय अर उन्नीसवां संघाट ताका विस्तार अट्ठाईस लाख पचासहजार योजन ॥ ८८ ॥
अर वीसवां जिह्व ताका विस्तार सत्ताईसलाख अठावनहजार तीनसौ तेतीस योजन, एक योजनका तीजाभाग
॥ ८९ ॥ अर इक्कीसवां जिह्वक ताका विस्तार छब्बीसलाख छ्यासठ हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर एकयो-
जनके तीन भागनिमें दोयभाग ॥ ९० ॥ अर बाईसवां लोल ताका विस्तार पच्चीस लाख पिचहत्तर हजार योजन
अर तेईसवां लोलुप ताका विस्तार चौवीसलाख तिरासीहजार तीनसो तेतीस योजन अर योजनका तीजाभाग
॥ ९१ ॥ अर चौवीसवां तनुलोलुप ताका विस्तार तेईसलाख इकानवे हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर यो-
नके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ ९२ ॥ ये दूजे नरकके ग्यारह इंद्रक कहे अर तीजे नरकका पहिला इंद्रक तप्त
सो उनचासकी गिनतीमें पचीसवां ताका विस्तार तेईस लाख योजन ॥ ९३ ॥ छब्बीसवां तपित ताका विस्तार
बाईस लाख आठहजार तीनसौ तेतीस योजन अर योजनका तीन भागनिमें भाग एक ॥९४॥ अर सत्ताईसवां तपन
ताका विस्तार इक्कीसलाख सोलहहजार छहसौ छियासठ योजन, एकयोजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥९५॥
अर अट्ठाईसवां तापन ताका विस्तार बीसलाख पचीस हजार योजन एक योजनका तीजा भाग ॥ ९६ ॥ अर
उनतीसवां निदाघ ताका विस्तार उन्नीस लाख तैंतीसहजार तीनसौ सैंतीस योजन अर योजनका तीजा भाग
॥ ९७ ॥ तीसवां प्रज्वलित ताका विस्तार अठारह लाख इकतालीस हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर योजन
एकके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ १९८ ॥ इकतीसवां उज्वलित ताका विस्तार सतरह लाख पचासहजार योजन
॥९९॥ बत्तीसवां संज्वलित ताका विस्तार सोलह लाख अठावन हजार तीनसै तेतीस योजन अर योजनका तीजा
भाग ॥ २०० ॥ अर तेतीसवां संप्रज्वलित ताका विस्तार पंद्रहलाख छ्यासठ हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर
योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥१॥ या प्रकार तीजे नरकके नव पाथडे कहे यहांलग उनचासमें तेतीस भए।
अर चौथे नरकका पहिला इंद्रक आर सो उनचासमें चौंतीसवां ताका बिस्तार चौदह लाख पिचहत्तर हजार योजन
अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥३॥ पैंतीसवां तार ताका विस्तार तेरहलाख त्रियासी हजार तीनसौं तैंतीस

तिनिका विस्तार कहै हैं-पहला सीमंतक ताका विस्तार पैंतालीस लाख योजन अर दूजा नरक ताका विस्तार चवालीस लाख आठहजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनके तीन भाग करिए ताका एक भाग अर तीजा रौरव ताका विस्तार तैंतालीस लाख सोलहहजार छहसो छियासठ योजन अर एक योजनके तीन भाग करिये तामैं दोय भाग ॥ ७२ ॥ अर चौथा भ्रांत ताका विस्तार बयालीसलाख पचीसहजार योजन ॥ ७३ ॥ अर पांचवां उपभ्रांत ताका विस्तार इकतालीसलाख तैतीसहजार तीनसौतैतीस योजन एक योजनके तीन भागनिमें एक भाग ॥७५॥ अर छठा संभ्रांत ताका विस्तार चालीसलाख इकतालीसहजार छहसो छ्यासठ योजन अर योजनिके तीनभागनिमें भाग दोय अर सातवां असंभ्रांत ताका विस्तार गुणतालीसलाख पचासहजार योजन ॥७६॥ अर आठवां विभ्रांत ताका विस्तार अडतीलीसलाख अट्ठावनहजार तीनसोतेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥७७॥ अर नवमां त्रस्त ताका विस्तार तेतीसलाख छ्यासठि हजार छहसौछ्यासठ योजन अर एकयोजनके तीनभाग तिनमें दोय भाग ॥७८॥ अर दशवां त्रसित ताका विस्तारं छत्तीसलाख पिचत्तर हजार योजन ॥ ७९॥ अर ग्यारहवां वक्रांत ताका विस्तार पैंतीसलाख तियासी हजार तीनसौतेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग। अर बारहवां अवक्रांत ताका विस्तार चौतीस लाख इक्याणवें हजार छसै छासठि योजन। अर एक योजनके तीन भागनिमेंसे दोय भाग ॥ ८१ ॥ अर तेरवां विक्रांत ताका विस्तार चौतीसलाख योजनका है ॥ ८२ ॥ ये प्रथम नरकके तेरह इंद्रक कहे ॥ ८३ ॥ अब दूजे नरकका पहिला पाथडा इंद्रक तर्क सो उनचासकी गिनतीमें चौदह गिणिए ताका विस्तार तेतीसलाख आठहजार तीनसौतैतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥ ८४ ॥ अर पंद्रहवां तनक ताका विस्तार बत्तीसलाख सोलहजार छहसो छ्यासठ योजन अर एक योजनके तीनभागनिमें भाग दोय ॥ ८५ ॥ अर सोलवहां मनक ताका विस्तार इकतीसलाख पच्चीसहजार योजन ॥८६॥ सत्रहवां वनक ताका विस्तार तीसलाख तेतीसहजार तीनसै तेतीस योजन अर एकयोजनका तीसराभाग ॥ ८७ ॥ अर अठारहवां घाट ताका विस्तार गुणतीसलाख इकतालीसहजार छहसौ छ्यासठ योजन एक योजनके तीन

महाविंध्य ॥ ५२ ॥ अर तीजे नरकका पहला इंद्रक तप्त ताके श्रेणीवद्ध चारि तिनिके नाम–पूरब दिशाका दुःख पश्चिमका महादुःख दक्षिणका वेदना उत्तरका महावेदना ॥ ५३ ॥ अर चौथे नरकका पहला पाथड़ा अर ताके श्रेणीवद्ध च्यारि पूरब दिशाका निसृष्ट पश्चिमका अति निसृष्ट दक्षिणका निरोध उत्तरका महानिरोध ॥ ५४ ॥ अर पांचवें नरकका पहिला पाथड़ा तम ताके इंद्रकका भी नाम तम ताके समीपवर्ती च्यारि श्रेणीवद्ध तिनमें पूरब दिशाकी निरुद्ध पश्चिमका अतिनिरुद्ध दक्षिणका विमर्दन उत्तरका महाविमर्दन अर छठे नरकका पहला पाथडा हिम ताके इंद्रकका भी नाम हिम ताके श्रेणीवद्ध पूरब दिशाका नील पश्चिमका महानील दक्षिणका पंक उत्तरका महापंक अर सातवें नरकका एकही पाथडा अप्रतिष्ठान ताके श्रेणीवद्ध चारि पूर्वदिशानिका काल पश्चिमका महाकाल दक्षिणका रौरव उत्तरका महारौरव ॥ ५७ ॥ सब चौरासीलाख विले तिनमें तिरासी लाख नब्बेहजार तीनसै सैंतालीस प्रकीर्णक अर गुणचास पाथडे इंद्रक तिनसहित छ्यानबैसै तिरेपन श्रेणीवद्ध ए सब मिलि चौरासी लाख है तिनमें पहले नरकविषै विले तीस लाख तिनमें ६ लाख तौ संख्यात योजनका विस्तार अर चौबीस लाख असख्यात योजनके विस्तार ॥ अर दूजे नरके पांच लाख संख्यात योजन विस्तारि । अर वीस लाख असंख्यात योजनके विस्तार अर तीजे नरक तीनलाख संख्यात योजनके विस्तार अर वारहलाख असंख्यात योजनके विस्तार अर चौथे नर्क दोय लाख संख्यात योजनके विस्तारि अर आठ लाख असंख्यात योजनके विस्तारि ॥ ६३ ॥ अर पांचवें नर्क साठ हजार संख्यात योजनके विस्तारि अर दोयलाख चालीसहजार असंख्यात योजनके विस्तारि अर छठे नर्क उगणीसहजार नौसै निन्याणवै संख्यात योजनके विस्तारि ॥ ६५ ॥ अर गुण्यासी हजार नौसै छ्यानवै असंख्यातयोजनके विस्तार ॥ ६६ ॥ अर सातमें नरक एक संख्यात योजनके विस्तारि । अर चारि असंख्यात योजनके विस्तार ॥६७॥ विलानिके तीनभेद इंद्रक १ श्रेणीबद्ध २ प्रकीर्णक ३ अर तीनमें गुणचास इंद्रक सो तौ सब संख्यात योजनके विस्तार अर श्रेणीवद्ध सकल असंख्यात योजनके विस्तार अर प्रकीर्णकनिमें कैयक संख्यात योजनके विस्तार अर कैयक असंख्यात योजनके विस्तार ये दोयरूप॥६९॥अथानंतर-गुणचास इंद्रके

पांचवां तमक ताविषैं दिशानिके ४८ विदिशानिके ४४ सब मिलि ९२ ॥ ३२ ॥ अर छठा खंड ताविषै दिशानिके ४४ अर विदिशानिके ४० सब मिलि ८४ ॥३३॥ सातवां खडखड ताविषै दिशानिके ४० अर विदिशानिके ३६ कुल ७६ ॥ ३४ ॥ याभांति चौथे नरकके सात पाथडे तिनमें सात इन्द्रक विले तिन सहित श्रेणीबद्ध सातसैसात अर प्रकीर्णक ९९२९३ सब मिलि दशलाख। अर पांचवें नरकके पाथडे पांच तिनमें पहिला तम ताविषैं दिशानके ३६ अर विदिशानिके ३२ सब मिलि ६८ अर दूजा भ्रम ताविषैं दिशानिके ३२ अर विदिशानिके २८ सब मिलि ६० ॥ ३८ ॥ तीजा रिख ताविषैं दिशानिके २८ विदिशानिके २४ सबमिलि ५२ ॥३९॥ अर चौथा अंध ताविषैं दिशानिके २४ अर विदिशानिके २० सब मिलि चालीस ॥४०॥ पांचवां तमिश्र ताविषैं दिशानिके २० अर विदिशानिके १६ सब मिलि छत्तीस ॥४१॥ याभांति पांचवें नर्कके पांच पाथडानिमें इंद्रकविला पांच तिन सहित श्रेणीबद्ध दोयसै पैंसठ ॥४२॥ अर प्रकीर्णक २९९७३५ सब मिलि तीन लाख ॥४३॥ अर छठे नरकके पाथडे तीन तिनमें पहिला हिम ताविषैं दिशानिके १६ अर विदिशानिके १२ सबमिलि २८ ॥४४॥ दूजा वर्दल ताविषैं दिशानिके १२ अर विदिशानिके ८ सब मिलि २० ॥४५॥ अर तीजा लल्लक ताविषैं दिशानिके आठ अर विदिशानिके चार सब मिल बारह ॥४६॥ याभांति तीन पाथडानिमें ३ इंद्रक विला तिन सहित श्रेणीबद्ध ६३ अर प्रकीर्णक ९९९३२ सब मिलि ५ घाट १ लाख ॥४७॥ अर सातवें नरकविषैं पाथड़ा एक जाका नाम अप्रतिष्ठान ताविषैं विला पांच तिनमें इंद्रक एक अर चारों दिशानिविषै चार श्रेणीबद्ध अर विदशानिविषैं नाहीं ॥ ४९ ॥ अर पहले नरकका पहला पाथड़ा सीमंतक ताविषैं इंद्रकहूका नाम सीमंतक ताकी चारि दिशानिके जे श्रेणीबद्ध इंद्रकके समीप तिनके नाम; पूरव दिशाकी उर कांक्ष पच्छिमकी उर महाकांक्ष दक्षिणकी उर पिपास उत्तरकी उर अतिपिपास ए चार प्रथम नरकके प्रथम पाथड़ेके समीपवर्त्ती दिशानिके श्रेणीबद्ध कहे। कैसे हैं नरकनिके विले महाकुरूप नारकीनिकरि भरे हैं अर प्रसिद्ध हैं ॥ ५१ ॥ अर दूजे नरकका पहिला पाथड़ा तरक ताके इंद्रकहूका नाम तरक ताके समीपवर्ती दिशानिविषै च्यारि श्रेणीबद्धनिके नाम-पूरवदिशाका अनिच्छ पश्चिमका महाअनिच्छ दक्षिणका विंध्य उत्तरका

सौ अठाईस अर विदिशानिकें १२४ सबमिलि २५२॥८॥ अर छठे संघाट ताविषैं दिशानिके १२४ अर विदिशानिके १२० सब मिलि २४४ ॥ ९ ॥ सातवां जिह्व ताविषै दिशानिके १२० अर विदिशानिके ११६ सब मिलि २३६ ॥ १० ॥ आठवां जिह्वक ताविषैं दिशानिके ११६ अर विदिशानिके ११२ सब मिलि २२८ ॥ ११ ॥ अर नववां लोल ताविषैं दिशानिके ११२ विदिशानिके १०८ सब मिलि २२० हैं ॥ १२ ॥ अर दशवां लोलुप ताविषैं दिशानिके १०८ विदिशानिके १०४ सब मिलि २१२ ॥ १३ ॥ अर ग्यारहवां स्तनलोलप ताविषैं दिशानिके १०४ विदिशानिके १०० सब मिलि २०४ ॥ १४ ॥ दूजे नरकके ग्यारह पाथडे तिनमें इंद्रक ग्यारा तिनसहित श्रेणीवद्ध २६९५ ॥ १५ ॥ अर प्रकीर्णक चौवीसलाख सित्याणवेहजार तीनसौ पांच सबमिलि एकलाख पचीस ॥१६॥ अर तीजे नरकके नवपाथडे तिनमें पहला तप्त ताविषै दिशानिके सौ विदिशानिके छ्यानवे सबमिलि १९६॥१७॥ अर दूजा तपित ताविषैं दिशानिके छिनवै अर विदिशानिके ९२ सब मिल १८८ ॥१८॥ अर तीजा तपन ताविषैं दिशानिके बाणवे अर विदिशानिके ८८ सब मिलि १८० ॥१९॥ अर चौथा तापन ताविषै दिशानिके ८८ विदिशानिके ८४ सब मिलि १७२ ॥ २० ॥ अर पांचवां निदाघ ताविषैं दिशानिके ८४ विदिशानिके ८० सब मिलि १६४ ॥ ॥ २१ ॥ अर छठा प्रज्वलित ताविषै दिशानिके अस्सी विदिशानिके ७६ सब मिलि १५६ ॥ २२ ॥ अर सातवां उज्ज्वलित ताविषै दिशानिके छिहत्तरि विदशानिके वहत्तरि सब मिलि १४८ ॥ २३ ॥ अर आठवां संज्वलित ताविषै दिशानिके ७२ विदिशानिके ६८ सब मिलि १४० ॥ २४ ॥ अर नबमां संप्रज्वलित ताविषै दिशानिके ६८ विदिशानिके ६४ सब मिलि १३२ ॥ २५ ॥ या भांति तीजे नरकके पाथडे नव तिनिमें नव इन्द्रक विलानिसहित श्रेणीवद्ध १४८५ अर प्रकीर्णक १४९८५१५ ॥ २७ ॥ चौथे नरकके पाथडे सात तिनमें पहला अर ताविषैं दिशानिके ६४ विदिशानिके ६० सब मिलि १२४ ॥ २८ ॥ दूजा तार ताविषैं दिशानिके साठ अर विदिशानिके ५६ सब मिलि ११६ ॥ २९ ॥ अर तीजा मार ताविषैं दिशानिके ५६ विदिशानिके ५२ सब मिलि १०८ ॥ ३० ॥ चौथा चर्चक ताविषैं दिशानिके ५२ विदिशानिके ४८ सब मिलि १०० ॥ ३१ ॥ अर

आश्चर्यकरि युक्त भई अर प्रात:समय स्नानकरि वस्त्राभरण पहरि पतिके निकट जाय स्वप्नका फल पूछती भई तब वसुदेव महाविवेकी कहते भए हे प्रिये ! तेरे पुत्र सूर्यके देखिवेतैं महाप्रतापी अन्यायरूप तिमिरका हरणहारा जगतका सूर्य होयगा अर चंद्रमाके अवलोकनतैं महाकांतिका धारक परम सुंदर पुत्र होयगा अर लक्ष्मीके स्नानतैं देवनिकरि राज्याभिषेक योग्य होयगा अर विमान देखिवेतैं देवलोकतैं आवेगा अर अग्निके देखिवेतैं महा तेजवंत होयगा अर देवनिकी ध्वजा देखिवेतैं देवनिकरि प्रशंसा योग्य मनुष्यनिका पति होयगा अर रतनराशि देखिवेतैं गुणरूप रतननिके समूहका धारक होयगा महासुंदर जगतका वल्लभ धैर्यका धारक निर्भय पुरुष होयगा ये स्वप्नके फल भर्तारके मुखतैं देवकी सुनकरि अतिहर्षित भई गर्भकूं धारती भई। ज्यूं ज्यूं देवकीका गर्भ बढै त्यूं त्यूं जगतका आताप मिटता गया। ज्यूं ज्यूं गर्भकी वढवारी भई त्यूं त्यूं गौतम स्वामी कहै हैं। हे राजा श्रेणिक ! पृथ्वीविषैं सर्व जीवनिकूं सुख वढता भया। जीवनिके धर्मरूप मन होय गए ॥ १६ ॥ अर कंस जो है सो वहनके गर्भके दिन गिनता जाय परंतु नारायणके गुण न गिनै जो ऐसा पुरुष मोतैं हत्या जाय यह न विचारी। यह तो जानै नव महीने पुत्र होयगा अर वसुदेवका जन्म सातवैं मास ही भया। सो वाहि सुधि न रही। रात्रिसमय कृष्णनामा पुत्रका जन्म भया ॥ १८ ॥ शंख चक्र गदा आदि शुभ लक्षणनिका धारक अति दैदीप्यमान इंद्रनीलमणिसमान श्याम सुंदर देवकीके प्रसूतिगृहकूं अपनी दीप्तिकरि उद्योत करता भया ॥ १९ ॥ जासमय कृष्णका जन्म भया तासमय मित्र बांधवनिके कल्याणके कारण शुभ निमित्त होते भए अर शत्रुनिके घरमें भयके कारण अशुभनिमित्त होतेभए सो नरनिमें उत्तम जो नारायण ताके प्रभावतैं प्रकाश होयगया। सात दिनका अखंड कुंड भया हुता सो रात्रिसमय होते ही बालककूं वसुदेव बलभद्र ले निकसे। बलभद्रकी गोदमें वासुदेव अर वासुदेवके हाथमें छत्र याभांति ये दोऊ घरतैं निकसे। कंसके सुभट सूते हुते सो सूतेही रहे। तिनिमें एकहू न जाग्या अर नगरके द्वार आय पहुंचे तहां भी लोग सूते ही रहे अर द्वारके दृढ कपाट सो कृष्णके चरण

सेठानी रेवतीनामा धाय ताके घर ले गया अर वाके मृतकयुगल भया हुता सो देवकीके प्रसूतिगृहविषैं मेलि देव तो अपने स्थानक गया अर कंसकूं प्रसूतिकी खबर भई सो वह पापी प्रसूतिगृहमें आय निर्जीव पुत्रनिका युगल देखता भया तौहू कंस पापका ग्रस्या पांय पकरि अर शिलापरि पटके ॥ ६ ॥ बहुरि कैयक दिनमें देवकीके दूजा गर्भ रह्या ताविषैं अनिकदत्त अनिकपाल आये सो इनिका जन्म भया तब यह देव वाही भांति इनिकूं भद्रलपुरविषैं सुदृष्टिनामा सेठ ताकी अलकानामा स्त्रीके पहुंचाये अर वाके मृतक युगल भया हुता सो यहां ल्याये तेऊ पापी कंसने शिलापरि पटकि मारे बहुरि तीजे गर्भ शत्रुघ्न अर यतिशत्रु ये दोऊ पुत्र भए तिनहूंकूं वाही भांति देव लेय गया अर वाके मृतकपुत्र यहां ल्याय डारे । वसुदेवके छहों पुत्र निर्विघ्नपने भद्रलपुरमें अलका नामा सेठानीके पले जिनिका पुण्य रक्षक तिनिकूं विघ्न करिवे समर्थ नाहीं । वे छहों पुत्र अतिरूपवान सुखसूं लडाये थके वृद्धिकूं प्राप्त भए ॥ ८ ॥ ज्यूं ज्यूं ये कुमार श्रेष्ठी सुदृष्टिनामा श्रावकके घर अलका सेठानीके पले अर वृद्धिकूं प्राप्त भए त्यूं त्यूं सेठि सेठानीके अतुल्य लक्ष्मी वढती भई । जे अपूर्व वस्तु सेठिके घरमें न हुती तिनिका लाभ भया । सेठकी विभूति राजानिकी विभूतिकूं उलंघती भई । कैयक दिन देवकी पुत्रनिके वियोगतैं चिंतारूप भई । जब वसुदेव कही तेरे पुत्र तो भद्रलपुरविषैं आनंदसूं तिष्ठै है तू चिंतावान क्यूं है । तब यह पतिके वचनतैं इनिकी चंद्रमाकी कलाकी नाईं कांति करि वढती भई ॥ १० ॥ अथानंतर—एकांतमें देवकी अपने मंदिरविषैं पतिकी सेजपर शयन करती हुती सो रात्रिकूं पिछले पहर प्रशंसा योग्य यानैं सात स्वप्न देखे । तिनिके नाम, पहिले स्वप्नमें अंधकारका नाश करणहारा सूर्य देख्या । दूजे स्वप्नमें महा मनोहर पूर्ण चंद्रमा देख्या तीजे स्वप्नमें दिग्गज लक्ष्मीकूं स्नान करावते देख्या । चौथे स्वप्नमें आकाशमें पृथ्वीविषैं विमान आवता देख्या पांचवें स्वप्नमें दैदीप्यमान अग्नि देखी । छठे स्वप्न देवनिकी ध्वजा देखी अर सातवें स्वप्न कांतिकरियुक्त रतननिकी राशि देखी अर इन स्वप्ननिके पीछे सिंह मुखमें प्रवेश करता देख्या ॥ १३ ॥ ये अपूर्व स्वप्न देखिवेकरि देवकी

प्रीत्यंकरनामा पुत्रकूं राज देय आप संसार शरीर भोगतैं विरक्त होय प्रायोपगमननामा संन्यास धारि आराधना आराधि अच्युतनामा सोलहवां स्वर्ग ताविषैं वाईस सागरके आयुका धारक अच्युतेंद्र भया ॥ ४१ ॥ फिर वहांतैं चयकरि हस्तिनापुरविषैं परम जिनधर्मी राजा श्रीचंद्र ताके श्रीमतीनामा राणी ताके सुप्रतिष्ठनामा पुत्र भया ॥ ४२ ॥ कैयक दिनमें राजा श्रीचंद्र सुप्रतिष्ठकूं राज देय सुमंदिरनामा मुनिके निकट मुनि होय मोक्ष प्राप्त भए अर राजा सुप्रतिष्ठ मासोपवासी यशोधरनामा मुनि तिनकूं विधिपूर्वक आहार दिया सो राजाके पंचाश्चर्य भए ॥ ४४ ॥ एकदिन राजा कार्तिककी पून्यूंकी रात्रिविषैं आठसौ राणीनि सहित तिष्ठै हुता सो उलकापात देखकरि राजलक्ष्मीकूं विनश्वर जानि अपनी सुनंदानामा राणीका सुदृष्टिनामा पुत्र ताकूं राज देय सुमंदिरनामा मुनिके समीप चारहजार राजानिसहित महाव्रत धारता भया ॥ ४७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र तपवीर्यकी वृद्धि भई ग्यारह अंग चौदह पूर्व पढे ॥ ४८ ॥ अर सर्वतोभद्र आदि अनेक तपकरि अपना शरीर शोषित किया जेते सिंहनिःक्रीडतादि महा तप हैं वे सब सुप्रतिष्ठनामा मुनिनै किये ॥ ४९ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ महोपवासवर्णनोनाम चतुस्त्रिंशतःसर्गः ॥ ३४ ॥

अथानंतर—श्रीअरिष्टनेमिका चरित्र वसुदेव अतिमुक्तिक मुनिके मुख सुनिकरि परम हर्षित भया सो मुनिकूं नमस्कारकरि देवकी सहित अपने घर गया। जैसैं मथुरापुरीविषैं पहले रमते हुते ताही भांति निःशंक रमते भए अर शंकासहित जो कंस ताकरि अति सेवनीक कैयक दिनमें पहला गर्भ देवकीकूं रह्या तामें नृप अर देवपाल ये दोऊ पुत्र गर्भमें आए परंतु कंसका भय नाहीं अर शत्रुके योगतैं महा भय होय परंतु प्रबल सहाईके सहायतैं भयका नाश ही होय। वसुदेवके धर्मका सहाय अर इंद्रादिक देवनिका सहाय जा समे देवकीके युगलपुत्र भए ताही समय इंद्रकी आज्ञातैं एक नैगमनामा देव दोऊ पुत्रनिकूं भद्रलपुरविषैं अलकानामा

राजाने बुलाये तिनकूं राजा कहता भया हो समस्त विद्याधरो ! जो गमनविषैं मेरी पुत्रीकूं जीते ताहि मैं पुत्री परणाऊं अर वह सुमेरकी प्रदक्षिणा करके जिनवरकी पूजा करै अर दोऊमें पहले आय मुझे आशिका देवै सो जीतै जो कोई याहि जीतै सो परणै। यह वार्ता सुनि सब्र विद्याधर या राजाकी पुत्रीकूं विद्याविषैं अधिक जानि याकी विद्या देखिवेकूं खडे ता समय राजा सूर्यप्रभु अर धारणीनामा राणीके पुत्र चिंतागति आदि तीनों कमर बांध गमनकूं उद्यमी भये। अर सब देखें यह तीनों भाई कन्याकी लार दौडे। सो कोई केता दौडा कोई केता दौडा परन्तु कन्याकूं न पहुंचे। सो कन्या इनकूं उलंघकरि सुमेरुकी प्रदक्षिणा दे भद्रसाल वनविषैं जिनप्रतिमा पूजि शीघ्रही आय श्रमकरि उपजे स्वेदके पसेव तिनकी बूंद तेई भये मुक्ताफल तिनकरि शोभित पितापै आय नमस्कारकरि आशिका दीन्हीं। तब राजा सब राजनके मध्य अपनी पुत्रीकूं जीतका पत्र दिया अर पुत्रीकूं संसारके भोगनितैं विरक्त जानि तपकी आज्ञा करी। तब वह निवृतनामा आर्याके समीप व्रतनिके समूह धारि आर्या भई ॥ ३१ ॥ गमनविषैं जीते कन्याने चिंतागति आदि तीनों भाई सो दमवरस्वामीके समीप मुनि भये सो महा तपकरि माहेंद्रनामा चौथा स्वर्ग ताविषैं सातसागर आयुके धारक सामानिक जातिके देव भए तहांसे चयकरि मनोगति अर चपलगति दोऊ भाईनिके जीव गगनवल्लभनामा पुरविषैं राजा गगनचंद्र ताके राणी गगनसुंदरी तिनके मनोगतिका जीव तो अमितवेगनामा पुत्र भया। अर चपलगतिका जीव अमिततेजनामा पुत्र भया सो हम दोऊ भाई पुंडरीकणीनामा पुरीविषैं स्वयंप्रभ तीर्थंकरके समीप अपने पूर्वभव सुनि मुनि भए अर हम तिहारी वेई पूछी जो चिंतागति कहां उपज्या है तब केवली कही राजा अरहदासका पुत्र अपराजित भया है सो या भवतैं पांचवें भव भरतक्षेत्रविषैं हरिवंशका तिलक अरिष्टनेमि मुनि बाईसवां तीर्थंकर होयगा अर या भवविषैं अपराजितकी आयु एक महीनेकी है। सो अब आत्मकल्याण करना योग्य है यह वचनकहि चारण मुनि तो विहार करि गये अर राजा अपराजित चारणमुनिके वचन सुनि आठदिनतक तो भगवानकी पूजा करी बहुरि

यौवन अवस्थाविषैं परणाई ॥ ६ ॥ वहुरि दो हजार राजकन्या गुणरूप आभूषणकरि मंडित और परणाई। एकदिन राजा अरहदास मनोहरनामा उद्यानविषैं देवनिकरि बंदिवे योग्य बिमलवाहननामा तीर्थंकर तिनकी वंदनाके अर्थि पुत्र परिवारसहित गया ॥ ८ ॥ तहां जिनवानी सुनि पांचसौ राजानिसहित मुनि भया अर अपराजितकूं राज दिया सो अपराजित राज करै। एकदिन अपराजितने सुनी जो विमलबाहननामा तीर्थंकर अर राजा अरहदास मुनि गंधमादननामा पर्वततैं मुक्ति गये सो राजा अपराजित यह बात सुनिकरि तेला किया अर निर्वाण कल्याणककी भक्ति करी अर नगरविषैं जे चैत्यालय हैं तिनकी पूजाकरि अपने मंदिरमें गया। अपनी स्त्रीकूं धर्मोपदेश करै था ॥ ११ ॥ ता समय दो चारण मुनि आये तिनकूं राजाने उठकरि हाथजोड नमस्कार किया वे विराजे तव तिनकूं पूछ्या हे प्रभु ! जे जिनधर्मी हैं तिनकूं मुनिकूं देखकरि परमहर्ष उपजै है सो यह रीति तो अनादिकी है अर आपकूं देखकरि मेरे अपूर्व स्नेह उपज्या सो कछु पूर्व संबंध है। तब दोऊ मुनीनिमें बडे मुनि कहते भये हे राजन् । हमारे अर तेरे जे पूर्व संवध है सो सुनि अमृतरूप वाणीकरि मुनि कहै हैं अर अपराजित सुनै है। एक पुष्करावर्द्धनामा द्वीपविषैं पश्चिमविदेह तहां विजयार्द्धगिरिकी उत्तर श्रेणीविषैं एक गण्यपुरनामा नगर तहां सूर्यप्रभनामा राजा सूर्य समान है प्रभा जाकी ताके धरणी समान मनकी हरणहारी धारिणी नामा राणी ॥ १६ ॥ ताके पुत्र तीन भये। चिंतागति १ मनगति २ चपळगति ३ यह तीनों ही भाई महा स्नेहवंत अर महा पुरुषार्थके धारक ॥ १७ ॥ अर ताही उत्तरश्रेणीविषैं एक अरिंजयनामा नगर ताके अजीतसेनानामा राणी ताके प्रीतिमतीनामा पुत्री जाकूं अनेक विद्या सिद्ध भई सो पृथिवीविषैं प्रसिद्ध सो कहती भई हे पिता ! जो मांगूं सो मुझे वर देवो तब पिता ताका मन संसारतैं परांगमुख जानि कहता भया जो एक तपकी तो आज्ञा न दूं अर जो मांगे सो ही दूं ॥२०॥ तब कन्या कहती भई मेरे तो तपकी बांछा है अर जो तुम यह आज्ञा न देवो तो मुझे गमनविषैं जीतै सो मेरा वर। तब राजाने यह प्रमाण करी सो सब विद्याधरनिकूं

आज्ञातैं देव अलंकानामा सेठाणीके ले जावेंगे अर अलंकाके मृतक युगल यहां लावेंगे अर तेरे पुत्र भद्रलपुरविषैं सुद्रष्टीसेठके घर अलका सेठाणीके नवयौवन होवेंगे। वसुदेवतैं अतिमुक्तिक मुनि कहै हैं तेरे छहों पुत्रनिके नाम सुनि नृपदत्त १ देवपाल २ अनिकदत्त ३ अनिकपाल ४ शत्रुघन ५ यतिशत्रु ६ यह छहों रूपकरि समान तेरे पुत्र बाईसवें तीर्थंकर तीन जगतके नाथ हरिवंशरूप आकाशके चंद्र श्रीनेमिनाथ तिनके शिष्यहोय निर्वाणकूं प्राप्त होवेंगे अर इन छहोंके बाद देवकीके गर्भमें निर्नामिकमुनिका जीव सातवां पुत्र होयगा सो कृष्णनामा नवमां वासुदेव है ॥ ७२ ॥ या भांति वसुदेव अतिमुक्तिकमुनिके निकट कंसके पूर्व भव अर तपके प्रभावकरि कंसका उदय अर अपने बलदेव अर वासुदेव अर वे तीनों युगल यह आठ पुत्र अर देवकी स्त्रीके पूर्व भव अर या भवका प्रताप सुनि वसुदेव परमहर्षकूं प्राप्त भया जिनमार्गमें है परमश्रद्धा जाके निरंतर जिनवाणीकी प्रशंसा करणहारा वसुदेव मथुराविषैं सुखसूं तिष्ठता भया ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वलदेववासुदेवकीतनयअनागार चरित्रवर्णनोनाम त्रियस्त्रिशः सर्ग ॥ ३३ ॥



अथानंतर— गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! देवकीका बल्लभ वसुदेव अपने वंशमें जिनेंद्रका प्रगट होना सुनकरि अतिहर्षित भया अर अतिमुक्तिकस्वामीकूं पूछता भया हे नाथ ! हरिवंशका तिलक जिनेंद्र-देव होयगा ताका कुछ वृत्तांत सुनना चाहूं हूं। तब मुनिने कही याही जंबूद्वीपविषैं सीतोदानामा नदीके दक्षिण-तटविषैं पद्मानामा विदेहक्षेत्रमें एक सिंहपुरनामा नगर तहां अर्हदासनामा राजा होता भया ॥ ३ ॥ सो महा जिनधर्मी ताके जिनदत्तानामा स्त्री सो भगवानकी पूजाविषैं प्रवीण तानैं ये शुभ स्वप्न देखे तिनके नाम लक्ष्मी १ गज २ शेर ३ सूर्य ४ चंद ५ ताके शुभ नक्षत्रविषैं एक अपराजितनामा पुत्र भया सो काहूकरि जीता न जाय अर पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध है पराक्रम जाका ॥ ५ ॥ सो ताके मातापिताने चक्रवर्तीकी प्रीतिमतीनामा पुत्री महा गुणवंती

त्तरमें अपराजितनामा विमानविषैं वत्तीस सागर आयुके धारक अहमिंद्र देव भए ॥ ५५ ॥ अर रसोईदार सुवा सो मरकरि तीजे नरकमें गया तहां तीन सागर दुःख भोगे बहुरि वह अमृतरसायननामा रसोईदारका जीव तीजे नर्कतैं निकसि तिर्यंच गतिरूप वनविषैं बहुत भ्रमा फिर मलयनामा देशविषैं पलासनामा ग्राम ॥ ५७ ॥ ताविषैं यक्षदत्तनामा कुलंवी ताके यक्षलानामा स्त्री ताके यक्षलिकनामा पुत्र भया अर याही कलुंबीके एक दूजा पुत्र छोटा ताका नाम यक्षस्थावर सो एक दिन यह यक्षलिक गाडा भरे जाय थो अर मारगमें एक सर्पिणी हुती सो छोटे भाईने वहुत मनै किया तौहू वडे भाईने गाडा सर्पिणीपर चलाया सो सर्पिणीका फण टूट गया महा दुःखतैं मुई अकामनिर्जराके योगतैं मनुष्यगतिमें उपजी ॥ ६० ॥ सो सर्पिणी शरीर तजि स्वेतविकानामा पुरीविषैं एक वासवनामा राजा ताके वसुंदरीनामा राणी ताके गर्भविषैं नंदियशानामा पुत्री भई सो राजा गंगदेव परणी कैयक दिनमें यक्षकिलनामा कलुंवी मरकरि नंदियशाके निर्नामिकनामा पुत्र भया सो पूर्व भवके विरोधतैं नंदियशा निर्नामिकतं द्वेष राखै अर यह निर्नामिक अमृतरसायननामा रसोईदारका जीव है सो मुनिहत्याके योगतैं यानैं कुगतिविषैं महादुःख भोगे हैं। यह कथा राजा गंगदेव आदि सबने सुनी सो राजा संसारतैं विरक्त होय देवनंदिनामा पुत्रकूं राज देय दोयसौ नृपनिसहित मुनि भया अर वह छहों पुत्र अर निर्नामिक अर श्रेष्ठीके पुत्र शंख सेठ ये सकल मुनि होय संसारतैं मुक्ति होयवेके अर्थि निर्मल तप करते भए अर राणी नंदियशा अर रेवतीनामा धाय अर बंधुमती सेठानी यह तीनों सुव्रता आर्याके निकट व्रत धारती भई ॥६५॥ निर्नामिकनामा मुनि सिंघनिःक्रीडतादि तप करै सो नारायणपदका निदान करता भया अर यह सबही तपके प्रभावकरि देवलोक गये तहांतैं चयकरि रेवती धायका जीव भद्रलपुरविषैं सुद्रष्टीनामा सेठके अलंकानामा स्त्री हुई अर राणी नंदियशाका जीव यह देवकी भई ताके वे गंग आदि पूर्वले पुत्र स्वर्गतैं चयकरि या जन्मविषैं हू पुत्र होंहिंगे तद्भव मोक्षगामी गुणनिके समुद्र होंहिगे अर अलकानामा सेठाणीके मृतक पुत्र तीन युगल होवेंगे। सो इंद्रकी

भये तिनके नाम ॥ ४२ ॥ गंग १ गंगदत्त २ गंगरक्षक ३ नंद ४ सुनंद ५ नंदिषेण ६ ये सब ही अति सुंदर होते भए ॥ ४३ ॥

अथानंतर राणी नंदयशाके चौथे गर्भ सातवां पुत्र आया सो आगामी जन्मविषैं कृष्ण होनहार है अर या नंदयशाका पूर्वभवका विरोधी है सो याकूं गर्भमें आये पीछे राणी राजाके अभावनी होती भई सो जन्म होते ही पुत्रकूं तजि दिया तब रेवतीनामा धायने ताकूं पाल्या ॥ ४४ ॥ जब यह बडा हुआ तब सेठके शंखनामा पुत्रतैं याका स्नेह बढ्या वह बलभद्र होनहार यह नारायण होनहार एक दिन यह निर्नामिक शंखकी लार मनोहरनामा उद्यानमें गया वहां प्रजाके लोक भी गए हुते अर निर्नामिकके बडे भाई छहों भोजन करते हुते तिनकूं शंखने कही यह तुम्हारा छोटा भाई है याहि क्यों ना बुलावो तब तिनि निर्नामिककूं बुलाया सो निर्नामिक भी भोजन करै था सो नंदयशाने देख्या तब क्रोधकरि निर्नामिकके लात मारी। तब निर्नामिककूं अधिक दुःख उपज्या अर शंख भी खेदखिन्न भया अर निर्नामिककूं साथ लेय शंख द्रुमसेणिनामा मुनिके निकट जायकरि नमस्कार किया अर एकांतविषैं निर्नामिकके पूर्व भव पूछे तब द्रुमषेणनामा मुनि अवधिज्ञानी कहते भए एक गिरनगरनामा नगर तहां चित्ररथनामा राजा ताके कनकमालिनीनामा राणी सो महा गुणवंत राजा कुबुद्धियोंके संगमें मांसाहारी भया ताके अमृतरसायननामा रसोईदार सो मांसके बनावनेकी विधिविषैं प्रवीण सो राजाने रीझकरि ताहि दश गांव दिये, एक दिन राजा सुधर्मनामा मुनिके निकट धर्मश्रवणकरि मांसके दोष जानिकर आपकूं निंद्य तीनसौ राजानिसहित अपने मेघरथनामा पुत्रकूं राज देय मुनि भया अर मेघरथ श्रावकके व्रत धारै सो रसोईदारतैं कोप किया जो इस रसोईदारने हमारे पिताकूं अभक्षणका भक्षण कराया सो एक अकेला गांव याके राख्या अर गांव छीन लिये ॥ ५३ ॥ तब रसोईदारने मुनिसूं कोप बांध्या जो यानैं मेरी आजीविका हरी। सो वह प्रचंड रूप श्रावक होय कडवी तुंबी विषरूप ताका आहार दिया सो मुनिने गिरनारीनामा गिरपर देह तजी पंच पंचो-

उज्जयनी आये सो वज्रमुष्टिने देखे अर अपनी स्त्रीका वृत्तांत जानकरि इनका वैराग्य जानि वज्रमुष्ठि हू मुनि भया अर वह सातों भाईकी स्त्री अपनी मासुकी गुराणी जिनदत्ता आर्यिका ताके समीप आर्या भई। सो हू उज्जयनीविषैं आई तब मंगी इनका वृत्तांत सुनि संसारकूं निंद्य जानि अपने खोटे चारित्रकी निंदाकरि गृहत्याग आर्या भई ॥ २९ ॥ यह सब महा तपकरि प्रथमस्वर्गविषैं एकसागर आयुके धारक त्रायस्त्रिंशत जातिके देव भये ॥३०॥ तहांतैं चयकरि धातकीखंडविषैं पहले भरतक्षेत्रमें विजयार्द्धगिरिविषैं दक्षिणश्रेणीमें नित्यालोकनामा नगर ॥३१॥ ताविषैं चित्रचूलनामा राजाके मनोहरीनामा राणी तिनके सात भाईनिमें वडा भाई सुभानुका जीव प्रथमस्वर्गतैं चयकरि चित्रांगदनामा पुत्र भया अर छह भाई इन ही मातापिताके तीन युगल भये ॥३२॥ तिनके नाम गरुडकांत गरुडसेन गरुडध्वज, गरुडवाहन, मणिचूल, हेमचूल चित्रांगद यह सातों भाई सूधे यहां भी भेले भये ॥ ३३ ॥ सातों ही अति सुंदर रूप अर समस्त विद्याके पारगामी राजा चित्रचूलके पुत्र मनुष्यनिके शिरोमणि होते भये।

अथानंतर—मेघपुरनामा नगर तहां राजा धनंजय ताके राणी सर्वश्री ताकी पुत्री धनश्री सो अति रूपवान पृथिवीविषैं प्रसिद्ध ॥ ३५ ॥ ताके स्वयंवरविषैं समस्त विद्याधरनिके पुत्र आये तब तानैं अपने मामाके पुत्र हरवाहनके गलेमें वरमाला डाली ॥ ३६ ॥ तब सब राजा क्रोधमें भर गये जो हमकूं यानैं यूंही बुलाये याकी इच्छा तो हरिवाहनके देवेकूं हुती ॥३७॥ सो वे क्रोधवान होयकरि अर कन्याके अर्थि परस्पर युद्ध करते भये सो युद्धमें अनेक सामंतनिका नाश भया तब यह चित्रचूलके सातों पुत्र इन विषयनिकूं पापके कारण जानि भूतानंदनामा केवलीके निकट मुनिव्रत धारते भये ॥ ३९ ॥ सातों ही भाई आराधना आराधि माहेंद्रनामा चौथा स्वर्ग ताविषैं सात सागरकी आयुके धारक सामान्यक जातिके देव होयकर सुख भोगते भए। तहांतैं चयकरि चित्रांगदनामा वडा भाईका जीव या भरतक्षेत्रके हस्तिनागपुरविषैं श्रेष्टी स्वेतवाहन ताके स्त्री बंधुमती ताके शंखनामा पुत्र भया ॥ ४१ ॥ अर छोटे भाई छहों ताही नगरका गंगदेवनामा राजा ताके राणी नंदयशा ताके छहों पुत्र तीन युगल

यानें देखी वाकूं उठायकरि मुनिके निकट ले गया सो मुनिके चरणारविंदके प्रसादतैं मंगी निर्विष होयगई ॥१४॥ तब वज्रमुष्ठि मंगीकूं मुनिके पायनमें मेल्हि आप सुदर्शननामा सरोवरविषैं कमलनिके लेयवेकूं गया स्त्रीकूं कह गया जबतक मैं न आऊं तबतक तू यहांही रहियो मंगी तो मुनिके निकट तिष्ठी अर याका पति सरोवर गया सो सूरसेननामा चोर सातवां भाई सो वज्रमुष्ठिका ताकी स्त्रीतैं अधिक स्नेह देखि मनमें विचारी पतिकी प्रीतिमें तो कभी नाहीं देखूं हूं नारीकी प्रीति यातैं कैसी है तब वाकी परीक्षा लेयवेकूं ताकूं अपना रूप दिखाया सो यह सूरसेन महा रूपवान है अर अपने मिष्ट वचन याहि सुनाये सो यह पापिनी सूरसेनका रूप देखिकरि अर ताके मिष्टवचन सुनि कामकरि विह्वल भई अर यह कहती भई हे देव ! मोहि अंगीकार करो तब वानैं कही तेरे भर्तारके जीवते मैं कैसे अंगीकार करूं तेरा पती महा वलवान योधा तातैं मैं डरूं हूं तब वानैं कही हे नाथ! तुम भय मत करो मैं वाहि खड्गकरि मारूंगी तब सूरसेनने कही उसे मारेगी तो मैं अंगीकार करूं ऐसाकहि ताका कर्तव्य देखिवेकूं सूरसेन छिपकरि तिष्ठा ॥ १९ ॥ वहुरि वज्रमुष्टि आय मुनिकूं कमल चढाया अर नमस्कार करता हुता सो मंगीने ताहि मारना विचार्या तब सूरसेनने ताका हाथ पकडि वाहि बचाय लिया अर सूरसेन छिप गया सो यह वृत्तांत देखि सूरसेनका चित्त संसारतैं विरक्त भया अर मगी अपने दोष छिपायवेके अर्थि मूर्छा खाय धरतीपर पडी । तब भर्तारने वाकूं पूछी हे प्रिये ! काहूतैं तू डरी यहां भयका कारण कछु नाहीं या भांति धैर्य बंधाय वज्रमुष्टि मुनिकूं नमस्कार करि मंगीकूं लेयकरि अपने घर गया ॥ २३ ॥ पीछे सूरसेनके छहों बडे भाई चोरीकर वहुत धन लाये सो वरावरके सात वांटकर अर सूरसेनतैं कही एक वांट तू ले तब सूरसेनने वांट न लिया अर भाईनितैं कही यह संसारीजीव धन उपार्जै हैं सो स्त्रियनिकी चेष्टा तो मैं नीके देखी तब ताकूं भाइयनिने पूछी तैं क्या देखी तब वज्रमुष्टिका अर मंगीका सकल वृत्तांत कह्या तव सुनकरि यह सब भाई वरधर्ममुनिके निकट ही मुनि भये अर द्रव्य अपनी स्त्रियनिके पास भेज्या ॥ २७ ॥ कैयक दिनमें ये सातों मुनि गुरुके लार

सेन ७ तिनकी स्त्रियनिके नाम कालिंद्री १ तिलका २ कांता ३ श्रीकांता ४ सुंदरी ५ द्विति ६ चंद्रकांता ७ यह सातों पुत्रनिकी स्त्रीनिके नाम कहे ॥१००॥ कयक दिनमे भानुसेठ अभयनंदि गुरूके समीप दिगंवर भए अर यमुनानामा सेठानी जिनदत्ता आर्यिकाके निकट आर्या भई ॥१॥ अर यह सातों भाई द्यूतक्रीडा अर वेश्याके प्रसंगकरि सव द्रव्य खोय चोरीके अर्थि उज्जयनी नगरी गये ॥२॥ रात्रिसमय छोटा भाई सूरसेन ताहि महाकालनामा मसाणभूमिमें कुलकी संतानके अर्थ राखकरि छहों भाई नगरीमें चोरीकूं गये अर याहि कह गये जो हम मारे जांय अथवा पकडे जांय तो तू यहांतें भाग जाइयो अर जो हम द्रव्य लेकर आवें तो वरावरका वांट तोहि देंगे ॥ ३ ॥ यह वार्ता कहकरि वह छहों तो गये अर छोटे सूरसेन भाईकूं राख्या तहां वैठा तासमय उज्जैनका राजा वृषभध्वज ताके राणी कमला अर राजाके एक दृष्टिमुष्टिनामा वडा शेधा ताके वप्रश्रीनामा स्त्री ताके वज्रमुष्टनामा पुत्र ताकूं राजा विमलचंद्रकी मंगीनामा पुत्री परणाई मंगीकी माताका नाम विमला सो मंगी अपने भर्तार वज्रमुष्टिकूं अति वल्लभ सो सासूकी सेवाविषैं मंद प्रवर्तें सो सासूका चित्त याके ऊपर कलुषित रहै सो सासूके यह उपाय रहे जो काहूप्रकार मेरे पुत्रका चित्त यातैं विरक्त होय अथवा यह मरै ॥ ७ ॥ एकसमय वसंतके उच्छवविषैं वज्रमुष्टि तो वनमें रमने गया अर मंगीकी सासुने घडेमें सर्प रखाया अर मंगीतैं कपटकरि कही हे वधू यामैं ! मोतीनिकी माला है सो तू पहन तव यह घडेमें हाथ डारती भई ॥९॥ सो ता सर्पने डसी मंगी विषके वेगकरि मूर्छित होयगई सो सासूने सेवकनितैं कही याहि मसाणमें डाल आवो सो सासूकी आज्ञातैं महाकालमसानमें डाल आये ॥ १० ॥ पीछे रात्रिविषैं मंगीका पति वज्रमुष्टि आया सो यह वृत्तांत सुनकरि प्यारी जो प्रिया ताके ढूंढिवेकूं महास्नेहतैं महाकालनामा मसाणविषैं गया एक हाथमें खड्ग अर एक हाथमें दीपक सो रात्रिकूं प्रतिमायोग धरे एक वरधर्मनामा मुनि विराजे हुये थे तिनकी प्रदक्षिणा देय नमस्कारकरि वज्रमुष्टि कहता भया हे पूज्यपाद ! जो मैं अपनी स्त्रीकूं पाऊंगा तो मैं सहस्रदल कमलकरि तिहारी पूजा करूंगा ॥ १२ ॥ यह कहकरि ढूंढिवे आया सो मंगीकूं

यह वचन सुनकरि ऋषिकूं क्रोध उपज्या तब वह सातों देवांगना चितारीं सो शीघ्र ही आई तिनकूं कही पूर्वजन्ममें मेरा कार्य करियो ऐसा कहि नगर बाहिर गया ॥ ८८ ॥ अर उग्रसेनकूं क्लेश देनेके अर्थि निदान किया जो मैं याका पुत्र होय याहि पीड़ा उपजाऊं सो वह प्राण तजि उग्रसेनकी राणी पद्मावतीके गर्भविषैं आया ॥८९॥ जा दिनतैं गर्भमें आया ताही दिनतैं मातापिताकूं क्लेशकारी भया एकदिन राजा राणीका क्षीणशरीर देखकरि पूछ्या तुमकूं क्या दोहला उपज्या है ॥ ८६ ॥ तब राणीने कही हे नाथ ! या गर्भके दोषकरि जो दोहला उपज्या है सो न चिंतवनमें आवै न कहिवेमें आवै तब राजाने कही जो उपज्या है सो कहो तब राणी राजाके हठसूं आंसूभरि गदगद वचन कहती भई हे प्रभु या गर्भके दोषकरि मुझ पापिनीकूं दोहला उपज्या है कि तिहारा उदर विदारि रक्तपान करूं तब राजाने अपने शरीर समान मैदेका पुतला बनवाय रससूं भरि वाकी इच्छा पूरी करी तब नवमें मास पुत्रका जन्म भया सो वक्रमुख अर भ्रकुटी चढाये ॥९०॥ सो कांसेकी मंजूसमें डाल यमुनामें वहाया सो कौशांबी नगरीविषैं मंजोदरीनामा मद्यकरनीने पकड्या अर वामें जो बच्चा हुता ताका कंस नाम धर्‌या वाका सब वृत्तांत तुम जानो ही हो ॥ ९१ ॥ वह दुष्ट निदानके दोषकरि पिताका निग्रह करता भया सो अब तेरा पुत्र ताके पिता उग्रसेनकूं छुडावेगा यह कथा अतिमुक्तिक स्वामीने वसुदेवतैं कही बहुरि कहते भए तेरे पुत्रका संबंध मैं कहूं हूं सो सुनि ॥ ९३ ॥ या देवकीके सातवां पुत्र नवमां नारायण होवेगा। शंख, चक्र, गदा खड्गका धारक कंसादिक वैरीनिकूं हणिकरि तीनखंडका भोक्ता होवेगा ॥ ९४ ॥ अर यातैं बडे छह भाई तद्भव मोक्षगामी हैं तिनकी मृत्यु ही नाहीं यातैं तू चिंता तजि ॥ ९५ ॥ सात पुत्र तो देवकीके अर एक पुत्र रोहिणीका बलभद्र इन सबनिके पूर्वभव मैं तुमसूं कहूं हूं सो देवकीसहित तू सुनि इनके भव तेरे चित्तकूं आनंदकारी हैं याही मथुराविषैं राजा सूरसेन ताके राजविषैं एक भानुनामा सेठ सो बारहकोटि द्रव्यका स्वामी ताके यमुनानामा स्त्री ॥९७॥ ताके सातपुत्र तिनके नाम सुभानु १ भानुमित्र २ भानुषेण ३ सूर ४ सूरदेव ५ सूरदत्त ६ सूर-

सो तेरा संयमरहित तप मुक्तिके अर्थि कैसैं होय ॥ सो एक जैनमारग ही विषैं तप संयम ज्ञान दर्शन चारित्र है ॥ ६७ ॥ वीरभद्र आचार्य कहै हैं हे तापस ! तेरा पिता मरकरि सर्प भया सो या ईंधणविषैं बलै है यह तू निश्चय जानि यह मुनिके वचन सुनि तापसने कुल्हाडेतैं काष्ठ चीर्‌या सो वलता सर्प नजर पड्या ॥ ६९ ॥ तव तापस आपका तप अज्ञानरूप जाण्या अर अपने पिताकूं तपकरि स्वर्ग गया जानता हुता सो सर्पकी योनिविषैं देखि खेदखिन्न भया ॥ ६० ॥ अर जिनधर्मका स्वरूप ज्ञानमई जानि वह वशिष्ट तापस वीरभद्रनामा मुनिके निकट मुनि भया ॥ ७१ ॥ अर अनेक मुनि तप करते हुते तिनके मध्य यह भी तप करने लगा परंतु याके अंतरायके उदयतैं आहारके लाभमें अंतराय पडै मुनि भए पीछे वीरभद्र गुरूने याकूं शास्त्र पढिवेके अर्थ शिवगुप्तनामा मुनिकूं सौंप्या तिनके निकट छह मास रह्या वहुरि सुमतिनामा मुनि तिनके निकट रह्या ॥ ७५ ॥ यतिधर्मकी विधिका वेत्ता यह वशिष्टमुनि वाईसपरीषहका सहनहारा पृथिवीविषै प्रसिद्ध एकाविहारी भया कैयक दिनमें विहार करता मथुरा आया वाकूं राजा प्रजा सव गुरू जानि पूजते भए सो पर्वतके शिखरपर आतापन योगधरि तिष्ठ्या हुता ताके निकट सात देवांगना आयकर कहती भई हे देव हमकूं आज्ञा करो सोई हम करैं तब मुनिने कही या समय मोहि कछु कार्य नाहीं यातैं अपने स्थानक जावो तव वह अपने स्थानक गई अर वशिष्टमुनि मासोपवासी अति निस्पृह महा तपस्वी तिनकूं सव ही लोग आहार दिया चाहैं सो राजा उग्रसेनने लोगनिकूं मनै किया जो मुनिकूं मैं ही पारणा दूंगा और न देवे सो काहूने न दिया अर राजा प्रमादके योगतैं विस्मरण होयगया तीनवार पारणैं राजा भूला एकवेर तो जरासिंधुका दूत आया अर दूजीवार अग्निके उपद्रवकरि विस्मरण होय गया अर तीजी वेर हाथीका उपद्रव भया सो मुनि नगरविषैं भ्रमणकरि आहारके अलाभतैं खेदकरि पीडित भए संते बनकूं जाते हुते सो नगरके द्वार क्षणिक खडे रहे शरीर अति शिथिल होयगया हुता ॥ ८२ ॥ तव देखकर काहूने कही राजाने वडा अनर्थ किया जो आप मुनिकूं आहार न दिया अर औरनिकूं मनै किए

पनिहारी जावैं सो जिनदाससेठकी प्रियंगुतिलकानामा दासी सो भी जल भरने गई ताहि सब पनिहारी कहती भई तू या तापसकूं प्रणाम करि । तब प्रियंगुतिलकाने कही या ऊपर मेरी भक्ति नाहीं कैसें प्रणाम करूं । तब पनिहारिनिने हठकरि याकूं वा तापसके पायनमें डारी । तब यानैं कही मैं धीवरके पायन परी यह वचन मूढ तापस सुनकरि जायकरि राजापर पुकारचा जो जिनदास सेठने मोहि निंद्या विना कारण क्लेश उपजाया ॥ ५३ ॥ तब राजा जिनदत्त सेठकूं बुलायकर पूछ्या तैं तापसकूं क्यों दुखाया तब जिनदत्त सेठने कही मेरे अर याके मिलाप नाहीं रूसावनेका कारण कहा ॥५४॥ तब तापसने कही याकी दासी प्रियंगुतिलकाने मोहि दुखाया तब राजाने दासी बुलाई अर कही हे पापिनी ! तू तपस्वीकी निन्दा क्यों करी अर नमस्कार क्यों न किया ॥ ५५ ॥ तब वानैं कही यह तपस्वी नाहीं यह धीवरसमान कुबुद्धि है याकी जटाविषैं अनेक नन्हीं मच्छी भरी हुई हैं । जब राजाने वाकी जटा धुधवाई सो अनेक सूक्ष्म मच्छी मरी हुई निकसीं तब वह तापस लज्जावान भया । लोगनिने वाकी हास्य करी अर कही झूठा तापस है ॥ ५७ ॥ तब वह कोपकरि मथुरातैं वाराणसीपुरी गया सो वाराणसी पुरीके वाहिर गंगाके तीर तप करै ॥ ५९ ॥ तहां पांचसौ मुनियनिसहित स्वामी वीरभद्र आए तहां एक पुरुषने विना जाने तापसकी प्रशंसा करी कि यह वसिष्ठनामा तापस महाभयंकर तप करै है तब मुनिने उसे मनै किया जो अज्ञान तप प्रशंसा योग्य नाहीं तब उस तापसने पूछ्या मैं कैसैं अज्ञानी तब मुनि बोले तू छहकायके जीवनिकूं पीडा करै हैं यातैं अज्ञानी है । या पंचाग्नि तपविषैं अग्निके योगकरि पंचेंद्री जीव पर्यंत भस्म होय हैं तहां विकलत्रयकी कहा बात ॥ ६३ ॥ तेरे पृथ्वीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतीकाय, यह पांच स्थावर वेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री पंचेंद्री इन प्राणियनिकी हिंसा होय है यातैं प्राणसंयम कहां प्राणीनिकी दया सो ही संयम है ॥ ६४ ॥ सो तू विरक्त तो भया परंतु मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्रकरि अभिमानी है अर जहां अभिमान तहां ज्ञान नाहीं सो ज्ञान विना संयम कहां यातैं तू इंद्रीसंयम अर प्राणसंयम तिनतैं रहित केवल कायक्लेश ही करै है

थकी देवकीके रजस्वलापनेके वस्त्र स्वामीके निकट डारे अर कहती भई यह तिहारी बहनके आनंदके वस्त्र हैं सो देखहु या भांति ताके चंचलताके वचन सुनि मुनिवर संसार स्थितिके वेत्ता सो वचनगुप्तिकूं छोडि करि कहते भये ओह शोकके स्थानविषैं तू आनंदकूं प्राप्त भई सो यह तेरी महामूढ़ता है ॥ ३५ ॥ या देवकीके गर्भविषैं ऐसा पुत्र होयगा जो तेरे पति अर पिता दोऊकूं मारैगा ॥ ३६ ॥ तब यह जीवंयशा अश्रुपातकरि भरे हैं नेत्र जाके सो जायकरि पतिकूं मुनिके कहे वचन कहती भई तब कंस यह बचन सुनिकरि शंकावान होय तत्काल वसुदेवपै गया अर अपना वर मांग्या ॥ ३८ ॥ कही हे स्वामी ! मुझे यह वर दो जो देवकीके प्रसूति मेरे घर होय सो वसुदेव तो यह वृत्तांत जानै नाहीं सो विना जाने कही तिहारे घर प्रसूतिके समय वह रहै यामें क्या दोष है बहनका जापा भाईके घर होय यह तो उचित ही है या भांति वचन दिया ॥ ४० ॥ पीछे अतिमुक्तिक मुनिके वचनका वृत्तांत जाना तब पश्चात्ताप उपज्या देवकी रुदन करती संती पतितैं कहती भई. हे प्रभु ! तिहारे पुत्र घने ही हैं मैं क्या करूंगी । तव पति पत्नी सहकारनामा बनविषैं अति मुक्तिक स्वामीके निकट गये वह मुनि चारणऋद्धिके धारक अवधिज्ञानी उनकूं वसुदेव देवकीसहित नमस्कारकरि निकट वैठे तब मुनिने धर्मवृद्धि दई तब वसुदेव पूछते भए हे भगवन् ! यह कंस कैसे अपने पिताका वैरी भया सो कारण कहा याहीका कारण है या परभवका कारण है अर यानैं क्या तप किये जो राज विभूति पाई अर मेरा पुत्र याका घातक कैसैं होयगा सो मैं सुना चाहूं हूं । तब मुनि अवधिज्ञानी याका संशय निवारिवेके अर्थ कहते भये महापुरुषनिका यही स्वभाव है जो जीवनिका महा संदेह दूर करैं ॥ ४५ ॥ अतिमुक्तिकनामा मुनि वसुदेवतैं कहते भये हे देवनिके प्यारे ! परम सज्जन मैं तेरे प्रश्नका उत्तर कहूं हूं सो सुनि ॥ ४६ ॥ याही मथुराविषैं उग्रसेनके राजमें या कंसका जीव पहिले भववसिष्ट नामा तापस हुता सो पंचाग्नि तपविषैं प्रवीण ॥ ४७ ॥ एक पांवतैं खडा रहै अर ऊर्द्ध्वबाहु अर वडी है जटा जाके सो यह तापस ज्ञानभावतैं रहित यमुनाके तटविषैं तप करै सो यमुनाके तट जलके अर्थि लोगनिकी

वानै याका सब वृत्तांत कह्या कि हे प्रभु ! यमुनाके प्रवाहमेंतैं यह मंजूस पाई तामेंसे यह वालक निकस्या सो दयाकरि मैं पाल्या अर वडा किया सो नित्य सैकडों उलाहने लावै तव मैं उलाहनोंसे डरी ॥ १७ ॥ यह स्वभावहीकरि निर्दयी बालकनितैं क्रीडा करै सो उनके परस्पर सिर भिडावै अर वेश्यानिकी चोटी पकडि २ खेंचे तिनकूं व्याकुलकरि छोडै तव लोगनिके उलाहनेतैं याहि घरतैं निकाला सो यह भिक्षाके अर्थ विदेशमें गया काहूका शस्त्रविद्यामें शिष्य भया सो अव शस्त्रकलामें निपुण है ॥ २० ॥ याकी माता यह मंजूस है मैं नाहीं यातैं जो याके गुण दोष हाेंय तो मुझे न लागैं याके गुण दोष याहीकूं अथवा या मंजूसकूं ऐसा कहकरि वह मंजूस महीपतिकूं दिखाई तामैं राजा उग्रसेनके नामकी मुद्रिका सो जरासिंधने वांची ॥ २२ ॥ तामें यह लिखा हुता कि यह राजा उग्रसेन अर राणी पद्मावतीका पुत्र गर्भविषैं तिष्ठता ही मातापिताकूं क्लेशकारी भया अर अशुभ नक्षत्रमें उपज्या सो मंजूसमें घालकरि यमुनामें वहाया याके कर्मनिकरि याकी रक्षा होऊ ॥ २४ ॥ यह लेख वांचकरि राजाने जानी यह तो मेरा भाणजा है पद्मावती मेरी वहन ताका पुत्र है तव जरासिंध हर्षित होय कंसकूं अपनी कन्या जीवंयशा परणाई तव कंसने विचारी जो मुझे जन्म होते ही पिताने नदीमें वहाया सो पिता मेरा वैरी है यह जानि जरासिंधतैं मथुराका राज मांग्या अर वडी सेना लार लेय जीवंयशासहित मथुरा आया पिताकूं युद्धविषैं जीतकरि वांध्या अर मथुरापुरीके दरवाजेमें राख्या आप जीवंयशासहित मथुरामें सुखसूं तिष्ठै यह जीवंयशा जरासिंधकी कालिंदसेनानामा राणी ताकी पुत्री है ॥२७॥ कंसने मथुराका राज पाया तव विचारी यह सब उपकार वसुदेवका है सो मैं भी कुछ वाकी सेवा करूं तव प्रार्थनाकरि वसुदेवकूं महाभक्तितैं मथुरामें लाया अर अपनी वहन देवकी वसुदेवकूं परणाई सो कंसके स्नेहतैं वसुदेव मथुरामें रहे देवकीसहित देवनि समान रमै ॥ ३० ॥ उग्रसेन महाराजकी राजधानी कंसने पाई सो मथुराका राज करै यह जरासिंधका जंवाई सो ताके अतिवल्लभ एकदिन मुनिके आहारके समय कंसके वडे भाई अतिमुक्तिकनामा मुनि कंसके घर आहारकूं आये तव नमस्कारकरि जीवंयशा चंचलभावकरि हंसती

अथानंतर—सौर्यपुरविषैं वसुदेवतैं जे बुद्धिमान राजकुमार हुते वह बिनती करते भये कि हमकूं शस्त्रविद्या सिखाओ सो वसुदेव अनेक राजपुत्रनिकूं शस्त्रविद्या सिखावते भये एक समय वसुदेव अपने कंसादिक धनुषविद्याके जे शिष्य प्रवीण तिनसहित जरासिंधके देखिवेकूं राजगृहनामा नगर गये तहां जरासिंधकी आज्ञातैं घोषणा कहिये मुनादी फिरती हुती कि समस्त लोग सावधान होय सुनो एक सिंहपुरनामा नगर ताका निवासी राजा सिंहरथ महा उद्धत है अर ताके रथके सिंह जुते सिंहनिके रथपर चढ्या फिरै है सो प्रबल है पुरुषार्थ ताका ॥ ४ ॥ वाकूं जो कोई जीवता पकडकरि मोहि दिखावै वही पुरुष सामंतनिमें महा सामंत है वह शत्रूनिके यशरूप समुद्रका पीवनहारा ताहि मैं मानधन अर अपनी पुत्री जीवंयशा परणाऊंगा अर जो देश मांगै सो ही दूंगा ॥ ७ ॥ यह मुनादी वसुदेवने सुनी तब अपने सब शिष्यनिकूं आज्ञा करी कि या मुनादीका पता तुम लाओ सो पता लेतही वसुदेव सिंहरथपर चढ़करि गये जायकरि वासूं युद्ध आरंभा सो वह सिंहरथ तो जो सिंह तिर्यंच तिनके रथपर चढ्या अर वसुदेव विद्यामई जो सिंह तिनके रथपर चढ्या सो जब वसुदेवने अपने बाण तापर चलाये तब वह सिंह भागे अर सिंहरथ भागा तब वसुदेवने कंसकूं आज्ञा करी तू याकूं बांधि तब कंसने वसुदेवकी आज्ञातैं सिंहरथकूं बांध्या तब वसुदेवने प्रसन्न होयकरि कंसतैं कही तू वर मांग। तब वानै कही हे प्रभु ! तिहारा वचन भंडार रहै जब मोहि चाहियेगा मांग लूंगा तब वसुदेवने कही हमने प्रमाण किया कैयक दिनमें सिंहरथकूं लायकरि जरासिंधकूं सौंप्या तब जरासिंधने प्रसन्न होय वसुदेवतैं कही तुम मेरी पुत्री परणो तब वसुदेवने कही यह शत्रु कंसने पकड्या है ॥ १२ ॥ तब जरासिंधने कंसकूं बुलायकरि कही तेरा कुल क्या है सो तू कह तब कंसने कही कौसांबी नगरीविषैं मंदोदरी नामा मद्यकरनी मेरी माता है ॥ १३ ॥ यह कंसके बचन सुनिकरि जरासिंध चित्तमें चिंतवते कि याकी प्रकृति राजपुत्र कैसी है यह कलालीका पुत्र नाहीं ताही समय कौशांबी नगरीतैं मंदोदरी बुलाई तब वह मंजूस अर मुद्रिका ले आई ॥ १५ ॥ जरासिंधने पूछी क्या यह तेरा पुत्र है तब

सुंदरी अर सूरसेना अर अपने पुत्र सहित जरा अर जीवंयशा ॥ ३४ ॥ इनकूं लेयकरि और भी जहां जहां जे जे रानी हुतीं तिन सवकूं लेयकरि शीघ्रगामी जो विमान तामें वैठि सूर्यपुरनामा नगर आय प्राप्त भये कैसा है सूर्यपुर सूर्यके विमान समान देदीप्यमान है प्रभा जाकी अर सुंदर गीत नृत्य वादित्रनिकी ध्वनिकरि पूर्ण है ॥ ३६ ॥ सो विमान तो वसुदेवका नगरके वाहिर रहा अर वह धनवती देवी जो इनकूं विमानमें बैठायकरि लाई है सो पहले नगरमें आयकरि वसुदेवके राजलोकसहित आयवेकी समुद्रविजयकूं वधाई दी तव राजा सर्व नगरमें शोभा कराय नगर उछालि आप सव भाईनि सहित सन्मुख गया ॥ ३८ ॥ तव वसुदेव विमानतैं उतरि बड़े भाई समुद्रविजयकूं प्रणामकरि औरहू सव वडे भाईनिकूं प्रणाम करता भया अर वसुदेवकी सब राणी जिठानी-निकूं प्रणामकरि जिठानीनिके पांव लागती भई अर सव वसुदेव अर इनकी राणीनिकूं प्रणाम करते भये शिव-देवीकूं आदि देय वही जिठानी वसुदेवकी वधू जे नम्रीभूत भई तिनकूं उरतैं लगाय लोचन अश्रुनितैं पूर्ण किये अर अनेक आशीष दई ॥ ४० ॥ सवनिका यथायोग्य सन्मान किया अर सवनिके आदर है जाका ऐसा जो वसुदेव सो रोहिणीसहित रमता भया वंधुरूप सिंधु कहिये समुद्र तिनविषैं आनंदरूप जलका बढावनहारा वसु-देवरूप चंद्रमा सो रोहिणी समान राणी रोहिणी वासूं रमता जगतका आताप हरता भया वसुदेवकूं राणीनि-सहित सौर्यपुरमें पधराय देवी धनवती समुद्रविजयतैं अर वसुदेवतैं विदा होय अपने स्थानक गई ॥४२॥ सौर्य-पुरके समस्त ही लोग वसुदेवका विभव देखकरि परस्पर वतरावते भये जो पूर्वभवविषैं या वसुदेवने जिनधर्म आराध्या है ताका यह फल है वसुदेव शूरवीरताकरि प्रवल जीते हैं राजनिके समूह जानैं अति उदार महा मनो-हर है चरित्र जाका अनेक विद्याधरीनिका वल्लभ देवनि समान है प्रभा जाकी अर अद्भुत है विभूति जाकी यह सर्व पूर्वोपार्जित धर्मका फल है ॥ ४४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ सकलवधुवंधूजन समागमवर्णनोनाम द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

इति विद्याधरकाण्ड समाप्तम् ।

पुर जाय वेगवती देखी अर बालचंद्रा परणी सो पूर्णचंद्र समान है मुख जाका ॥ १६ ॥ नवीन वधू पूर्णचंद्रा अर वेगवती मनकी हरणहारी तिन सहित रमता कितनेक दिन सुखतैं तहां रहा ॥ १७ ॥ बहुरि उन दोऊ सहित सौर्यपुर जायवेकी आज्ञा मांगी तब बालचंद्राका पिता कांचनदंष्ट्र अर वेगवतीका बडाभाई मनोवेग इन्होंने बसुदेवकूं बहुत द्रव्य दिया अर पुत्रनिकूं बहुत सामग्री दीनी जब ससुरतैं सौर्यपुरकी सीख मांगी तब वह नागकुमारी ऐंणी पुत्रकी पूर्वभवकी माता रत्ननिकरि देदीप्यमान विमान रच्या तामैं बैठकरि वसुदेव बालचंद्रा वेगवती सहित ता विमानमें चढकरि अरिंजयपुर आये विद्युद्वेगतैं मिले। वह विमान ऐसा जहां मन करै तहां ही जाय ॥ २० ॥ विद्युद्वेगतैं मिलि राजलोकके मांही गये अर अपनी स्त्री मदनवेगा देखी ताहि लेयकरि विमानके मारग शीघ्रही गंधसमृद्धनामा नगर गये तहां राजा गंधारकी पुत्री प्रभावती देखी ॥ २२ ॥ प्रभावतीके पिताने बहुत धन दिया ॥ २३ ॥ बहुरि ताहि लेयकरि तत्काल असितपर्वतनगर गये तहां राजा सिंहदंष्ट्र ताकी पुत्री नीलंयशा अपनी वल्लभा ताके महलमें कितनेक दिन रहे ताके पिताने हू बहुत धन दिया बहुरि नीलंयशाकूं लेयकरि किन्नरोद्गीतनामा नगर गये तहां नीलकमल सारिखे सुंदर नेत्र जाके ऐसी श्यामा देखी उसे लेयकरि श्रावश्रीपुरी गये वहां प्रियंगुसुंदरी अर बंधुमती हुती तिनकूं लयकरि महापुरनामा नगर गये तहां सोमश्रीतैं मिले सो ताहि लेयकरि इलावर्द्धननामा पुर गये तहां रानी रत्नवतीतैं मिले वाहि लेयकरि भद्रलिपुर गये तहां चारुहासिनी ताहि लेयकरि जयपुरनामा नगर गये तहांसे अश्वसेनानामा राणीकूं लेयकरि शालगुहा नामा पुर गये तहांतैं पद्मावती राणीकूं लेयकरि वेदशांपुरनामा नगर गये तहां कपिलानामा स्त्रीतैं मिलै अर कपिलनामा पुत्र ताका अभिषेक कराया अर उनकूं लेयकरि अचलग्राम गये ॥ ३० ॥ तहां मित्रश्रीनामा रानी ताकूं लेयकरि तिलवस्तुकनामा नगर गये तहां पांचसौ रानी हुतीं उनकूं लेयकरि गिरतटनामा नगर गये तहां सोमश्रीकरि युक्त होय चंपापुरी गये तहां रानी गंधर्वसैना हुती ताहि लेयकरि विजयखेटनामा नगर गये तहां रानी विजयसेना ताके पुत्र अक्रूरदृष्टि वाकूं लेयकरि कुल्यपुरनामा नगर गये ॥ ३३ ॥ तहां पद्मश्री अर अवंति

लहर जाविषैं ऐसा शब्द करता समुद्र देख्या अर तीजे स्वप्नमें वह चंद्रमुखी पूर्ण हैं मनोरथ जाके सो संपूर्ण चंद्रमाकूं देखती भई अर चौथे स्वप्नमें कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल मृगराज अपने मुखमें प्रवेश करता देख्या ॥ ३ ॥ प्रभातसमय वह कमलनयनी जागी अर स्नानादि क्रियाकरि पतिके समीप जाय स्वप्नका फल पूछती भई तब पतिने कहा हे प्रिये ! तेरे महा पुरुष पुत्र होयगा गजेंद्रके देखिवेकरि सबमें वडा अर समुद्रके देखिवेकरि महा गंभीर सर्वजगतका वल्लभ अर चंद्रके देखिवेकरि अनेककलाका धारक महाकांतिवान चंद्रमातैं हू अधिक है प्रभा जाकी सर्वजगतका वल्लभ अर सिंहके देखिवेकरि महाधीरवीर पृथ्वीका पति जासमान योधा जगतमें नाहीं ॥५॥ याभांति पतिके मुखतैं रोहिणी स्वप्नके शुभफल सुनकरि अति हर्षित भई चंद्रकलातैं हू अधिक सोहती भई ॥

अथानंतर—महाशुक्र स्वर्गविषैं संखनामा मुनिका जीव सामानिक देव भया हुता सो चयकरि रोहिणीके गर्भमें आया यह माता रोहिणी रत्ननिकी खानि है अर वलभद्र महामणि है जब नव महीने पूर्ण भये तब माता शुभ नक्षत्रविषैं सुखसूं पुत्र जनती भई चंद्रमा समान है वदन जाका ऐसा पुत्र वसुदेवके घर प्रगट भया । ताका जन्मोत्सव देखिकरि जरासिंध आदि सब राजा अपने अपने स्थानक गये वह पुत्र महासुंदर अपना नाम राम कहायकरि पृथिवीविषैं वृद्धिकूं प्राप्त भया वढाई है मातापिता आदि कुटंबीनितैं प्रीति जानै । एक दिन राजा रुधिरके मंदिरविषै श्रीमंडपमें समुद्रविजय आदि वसुदेवके हितू सबही बैठे हुते अर बसुदेव भी उनके समीप हुता सो एक विद्याधरी महा दिव्यमूर्ति आकाशतैं उतरी अर वसुदेवकूं कहती भई ॥ ११ ॥ हे देव ! तिहारी राणी वेगवती अर मेरी पुत्री बालचंद्रा तिहारे चरणारविंदका दर्शन चाहै है और तो तुम परण आये वह बालचंद्रा कुमारी है सो विवाहकी आसकरि तिष्ठै है सो शीघ्रही चलो ताहि परणकरि सुखी करो यह वार्ता विद्याधरीकी सुनिकरि बडे भाईकी तरफ दृष्टि धरी तब समुद्रविजय सब अभिप्राय जानि याहि शीघ्रही पठाया सो विद्याधरीकी लार तत्काल गगनवल्लभपुर गया अर समुद्रविजयादिक सब भाई सौर्यपुर गये ॥ १५ ॥ वसुदेवने गगनवल्लभ-

श्वसुर पुत्र भ्रातृसहित आए हते वह सब ही मिले स्नेहके अश्रुपातकरि भरे हैं नेत्र जिनके ॥ ३० ॥ अर जरासिंध आदि सब ही प्रसन्न भए अर रोहिणीका पिता राजा रुधिर अर भाई हिरण्यनाभ अर सब कुटुंबके रोहिणीकी अति प्रशंसा करते भये कि धन्य है या वाईका भाग्य जो ऐसा वर पाया सांझ समय सब ही अपने स्थानक गए रातदिन सबके वसुदेव हीकी कथा वहुरि भली तिथि भला नक्षत्र देखि रोहिणीविषैं चंद्रमाका समागम ता दिन समुद्रविजयने लघुवीरकूं रोहिणी परणाई इनका विवाह देखि सब ही राजा हर्षित भए । जरासिंघ समुद्रविजय आदि सबही राजा एक वर्षतक राजा रुधिरके नगर रहे ॥ ३३ ॥ युद्धविषैं करी है सहाय जानें ऐसा दधिमुखनामा विद्यावर ताकी वसुदेवने बहुत प्रशंसा करी अति सन्मान किया वह बहुत प्रसन्न होय इनकी आज्ञा पाय अपने स्थानक गया ॥ ३४ ॥ अर वसुदेवकुमार नई बधू जो रोहिणी ताका मनोहर मुखरूप कमल तापर भँवर समान अनुरागी होय पहली परणी जो प्रिया तिनकूं भूलि गया जैसे भंवर नवीन पुष्पका रस पायकरि पूर्वमें भोगी जे वेलि तिनकूं विसरि जाय ॥ ३५ ॥ भुजाही है सहाई जाके ऐसा वसुदेव शूरवीर ताका मानरूप पर्वत रणसंग्रामविषैं अनेक शत्रूनिके बाणरूप वज्रकरि न चूर्‌या गया भेले भये हैं समस्त पृथिवीके भूपाल जहां तिनविषैं वसुदेवके पराक्रमका विशेष यश होता भया आश्चर्यकारी है पराक्रम जाका वे शत्रु अति लोभी याके प्राणनिके ग्राहक याका कछु भी न करि सके सो यह सब जिनभाषित तपका प्रभाव है पूर्वभवविषैं वसुदेवने महातप किये हैं ऐसे तप औरनितैं न बनैं ॥ ३६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ रोहिणीस्वयंवर वसुदेवस्य भ्रातृसमागमवर्णनोनाम एकत्रिंशतिमो सर्गः ॥ ३१ ॥

अथानंतर—रोहिणी राणी भरतारसहित सुंदर सेजपर शयन करती हुती सो चार शुभ स्वप्न देखे ॥ १ ॥ पहला स्वप्न चंद्रमा समान उज्ज्वल वर्ण मदोन्मत्त गाजता हुवा गजेंद्र देख्या अर दूसरे स्वप्न उठे हैं पर्वतसमान ऊंची

दिव्यास्त्र हाथ लिए राजाने अग्निबाण चलाया सो कुमारने वरुणनामा बाणकरि बुझाया बहुरि राजाने वरुण बाण कहिए जलबाण चलाया सो कुमारने वायुबाणकरि निवास्या इत्यादिक अनेक बाणनिकरि दोऊ वीर भिडे दोऊ ही दिव्यास्त्रविषैं प्रवीण सो महा युद्ध करते भए। जिनकी आकाशविषैं देवस्तुति करैं हैं॥ १८ ॥ बहुत कहांलग कहिए जे जे बाण बडे भाईने चलाये ते सब छोटे भाईने बीचहीमें काटे जैसे गरुड सर्पकूं हतै तैसैं समुद्रविजयके बाण वसुदेवने छेदे सो कैयक बार कई बाण बडे भाईके वसुदेवने निराकरण किए॥ १९ ॥ तब राजाने क्षुद्रप्रनामा बाण चलाया सो वसुदेवने बीचही काट्या अर अपने बाणनिकरि राजाका रथ अर सारथी अर घोडे घायल करे अर बडे भाईके अंगका बचाव किया तब राजा या योधाकी प्रवीणता देखि अति प्रसन्न भया अर सब ही राजा सिर हिलायकरि तथा चुटकी बजायकरि कुमारकी प्रशंसा करते भए॥ २१ ॥ एतीवेर तक राजाने भाईकूं न पिछाण्या परसेनाका सामंत जानि दिव्यास्त्रनिमें महाप्रबल जो रौद्रास्त्र सो चलाया तब वसुदेवने ब्रह्मशस्त्र करि उडाया॥ २२ ॥ शस्त्रविद्याविषैं महाप्रवीण जो वसुदेव तानैं रणविषैं समुद्रविजयके अनेक शस्त्र छेदे अर बडे भाईका शरीर बचाया। या भांति बहुत देरतक रणक्रीडा करि उपजा है अधिक स्नेह जाके सो अपने नामकी पत्री बाणके बांधि बडे वीरपै पठाई सो बाण राजाके पांवनिमें जाय पड्या तब राजा बाणके जो पत्र बंधाहुता सो वांच्या तामें यह समाचार हुते हे महाराज! मैं तिहारा सेवक छोटा भाई वसुदेव जो छिपकर घरतैं निकस्या हुता सो सौवर्ष व्यतीत भए आपके पांयन आया अर अब आपके चरणारविंदकूं प्रणाम करूं हूं॥२६॥ यह पत्रके समाचार वांचिकरि राजा भाईके स्नेहकरि पूर्ण है हृदय जाका सो हाथतैं धनुष डारि रथतैं उतरि भाईके सन्मुख चाल्या॥२७॥ तब छोटा भाई वसुदेव रथतैं उतरि दूरहीतैं प्रणामकरि पिता समान जो बडा भाई ताके पांयन पड्या तब राजाने भाईकूं उठाय उरतैं लगाया॥२८॥ दोऊ भाई उरतैं उर लगाय अश्रुपातसहित नेत्रनिकूं धारते भए बहुरि अक्षोभ आदि आठ भाई समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं बडे सो सबही बसुदेवतैं मिले॥२९॥ ता रणविषैं वसुवदेवके जित

युद्ध करना है ॥३॥ दधिमुखने कही जो आप आज्ञा करोगे सोई होयगा सो बडे भाईकी तरफ धीरे २ रथ चलाया अर समुद्रविजय अपने सारथीतैं कहता भया जो या योधाकूं देखि मेरे हिरदेविषैं स्नेह उपजै है सो कारण कहा अर मेरो दहिनी भुजा अर नेत्र फरकै हैं सो प्यारा भाई मिला चाहिए। अर यह मारिवे योग्य शत्रु ताहि देखि ऐसा अनुराग भाव क्यों उपजै है यह चिन्ह तो बंधुके मिलापके हैं अर योग मिला शत्रुतैं रणका सो यह बात कैसैं वनै देशविरुद्ध कालविरुद्ध यह वात वनती दीखै नाहीं तव सारथीने कही हे प्रभु! शत्रुकूं जीते पीछै बंधुका अवश्य मिलाप होयगा ॥ ८ ॥ अर हे राजन! यह शत्रु अगाध योधा है अर अनेक राजानिकरि जीत्या न जाय तातैं सव राजानिके समीप ऐसे शत्रुकूं जीतिवेतैं सवनिमैं तिहारी प्रशंसा होयगी अर जरासिंधतैं पूजा पावोगे वह घना सन्मान करेंगे यह वचन जव मारथीने कहे तव राजाने वहुत प्रसन्न होय वसुदेवपर रथ चलाया। कैसा है समुद्रविजय धनुष चढाया है अर वाण साध्या है अर वसुदेव हू धनुष चढाय बाण साध्या है समुद्रविजय वसुदेवकूं भाई न जानै है सो परपक्षका योधा जानि कहै है हे धीर! औरनितैं रणविषैं तेरी धनुषबाणकी प्रवीणता हमने वहुत देखी तैसीही हमकूं दिखाव तेरा शूरवीरतारूप पर्वत ऊंचा है तापर मानका शिखर सोहै है पर मैं राजा समुद्रविजय हूं सो अपने वाणरूप मेघकी वृष्टिकरि तेरा मानशिखर आच्छादित करूंगा ॥ १२ ॥ बड़े भाईके यह वचन सुनि वसुदेवकुमार अपने शब्द पलटि अर रूपपलटकरि यह वचन कहता भया हे राजेंद्र! वहुतकहिवेकरि क्या रणविषैं हमारा तिहारा पराक्रम प्रगट होवैगा ॥ १३ ॥ तुम समुद्रविजय हो अर मैं संग्रामविजय हूं अर अगर तुमकूं प्रतीत न आवै तो शीघ्र ही वाण चलावो जव कुमारने यह वचन कहे तव समुद्रविजय वडे योधा विना जाणे लघुवीर पर वाण चलावते भए ॥१५॥ सो योधाने जो बडे भाईके वाण आए सो वीचहीमें काटे आपतक आवने न दिए ॥ १६ ॥ अर आप जे वाण चलाए सो भाईका अंग बचायकरि चलाए वहुत वेर सामान्य शस्त्रनितैं युद्ध भया तव समुद्रविजयने विचारी. जो यह योधा सामान्य शस्त्रनितैं न जीत्या जाय तव

पौंड्रका धनुष तोड्या अर हिरण्यनाभकूं अपने रथमें चढाया अर अपने बाणरूप मेघकी वृष्टिकरि पौंड्रकूं आच्छादित किया तब पौंड्रकी पक्ष अनेक योधा वसुदेव पर आये ॥ ९० ॥ सो वसुदेवने अपने तीक्ष्ण बाणनिकरि सब योधानिके वाण भेदे अर पैंड पैंडविषैं शत्रूनिकी सेनाकरि धन्य धन्य कहावता भया सो सबने कही ऐसा सुभट अबतक न देख्या एक तरफ अकेला वसुदेव अर एक तरफ अनेक योधा तब न्यायवंत जे राजा हैं वे कहते भए अबतक यह अन्याय न देख्या जो एकतैं अनेक लडैं एकतैं एकहीका युद्ध योग्य है ॥ ९२ ॥ तब जरासिंधने धर्मयुद्ध देखिवेकी इच्छाकरि राजानिकूं आज्ञा करी । जो या कन्याके अर्थि एक एक नृप युद्ध करो जो याकूं जीतै सोई कन्याका पति । तब और तो खडे खडे देखे तब राजा शत्रुंजय वसुदेवतैं युद्ध करने लग्या सो शत्रुंजयने वाण चलाये ते सब वसुदेवने दूरहीतैं काटे अर ताका रथ तोड्या अर बखतर काट्या अर बहुत विह्वलकरि याकूं जीवदान दिया ॥ ९५ ॥ बहुरि बसुदेवतैं राजा दंतवक्रने युद्ध आरंभा सो दंतवक्र महा उद्धत चिरकाल युद्ध करता भया ताकूं भी बसुदेवने रथ रहित किया अर ताका सब पुरुषार्थ हरि ताहिहू जीवता छोड्या ॥ ९६ ॥ बहुरि काल समान उद्धत राजा कालमुख सो वसुदेवतैं युद्ध करिवे आया सो वसुदेवने वाकूं हू जीत्या अर जीवता छोड्या बहुरि राजा शल्य युद्धकूं आया ताहि वसुदेवने जूंभ्रणी शस्त्रकरि बांध्या तब जरासिंधने राजा समुद्रविजयतैं कही हे नृप ! तुम शस्त्रविद्याविषैं प्रवीण हो रणविषै या मानीका मान हरो ॥ ९९ ॥ तब जरासिंधकी आज्ञाकरि महान्यायके वेत्ता राजा समुद्रविजय युद्धकूं उद्यमी भए जो न्यायवंत राजा हैं तिनकी यही रीति है जो रणविषैं स्वामीकी आज्ञा प्रमाण करें ॥ १०० ॥ जरासिंध सबका स्वामी है ताकी आज्ञा प्रमाण समुद्रविजयने अपने सारथीतैं कह्या जो तू अपना रथ याके रथपर चलाव सो वानैं चलाया तब वसुदेव अपना पिता समान ज्येष्ठ भ्राताका रथ अपने ऊपर आवता देखि दधिमुख विद्याधर जो अपना सारथी ताहि कही जो समुद्रविजय मेरा बडा भाई है यातैं इनकी तरफ अपना रथ धीरे २ चलाव यह मेरे गुरुजन हैं सो इनतैं एक रीतिसे

नेत्रनिकूं आह्लादकारी ऐसा सूर्य देख्या। अर आठवें स्वप्न सरोवर रूप सुंदर स्त्री ताके दीर्घ चंचल लोचन समान मीन युगल देखे परस्पर स्नेहके भरे अदेखसका भावतैं रहित जलविषै केलि करते देखे। अर नवमैं स्वप्न वह कमलनैनी सुगंध जलके भरे दोय कंचनके कलश जिनके मुख कमलतैं ढके सो देखती भई मानूं वह कलश माता अपने कुचकुंभ समान ही देखे ॥ १४ ॥ अर दशवें स्वप्न वह जगज्जननी महा मनोहर सरोवर देखती भई मानूं वह निर्मल सरोवर पवित्र जलका भरा माताका मन ही है कैसा है, सरोवर सिवाणसहित स्वच्छ जलतैं भरया अर कमलनिकरि शोभित अर राजहंसादि पक्षीनिकरि संयुक्त है ॥ १५ ॥ अर ग्यारहवें स्वप्न माताने मोटा समुद्र देख्या कैसा है समुद्र घूमती उछलती जो ऊंची तरंग तिनकरि सुंदर है। अर मूंगा मोती मणि तिन करि पूरित है अर जामें झाग उठै हैं महा उद्धत महा भयानक गिराहनिके समूह जामें भ्रमै हैं॥ १६ ॥ अर बारहवें स्वप्न लक्ष्मीका स्थानक महा मनोहर सिंहासन देख्या सो कैसा है सिंहासन जाके चारोंपाए मृगेंद्रके आकार महा मनोहर हैं, कैसे हैं मृगेंद्रनिके आकार तीक्ष्ण नख अर तीक्ष्ण डाढ अर दृढ दृष्टि अर दैदीप्यमान अतिसुंदर केशावली ताकरि शोभित है अर सिंहासन मणीनिकी जो प्रभा ताकरि दशोंदिशा रूप जे वधू तिनके मुखकूं उद्योत करणहारा है। अर तेरहवें स्वप्ने यह जगतमाता आकाशविषैं देव विमान देखती भई, कैसा है विमान नानाप्रकारके भेदनिकूं लिए जे ध्वजा तिनकी जो अणी सो ही भई भुजा ताहि हिलावता मणीनिकी माला अर मोतीनिके हार तिनकरि दैदीप्यमान है ॥ १७ ॥ अर चौदहवें स्वप्ने यह जिनजननी पातालनिसैं निकसता नागेंद्रका भवन देखती भई कैसा है फणेंद्रका भवन फणनिपर मणीनिका उद्योत ताकरि भेद्या है पृथिवीका तिमिर जानैं अर नागकुमारीके मधुरगीत तिनकरि मनोहर है अर मानूं वह नागभवन भूमिकी शिखामणि ही है ॥१९॥ अर पंद्रहवें स्वप्ने यह पतिव्रता आकाशकूं स्पर्शे शिखा जाकी ऐसी रत्ननिकी राशि देखती भई, कैसी है रत्नराशि अरुण जे पद्मराग मणि अर उज्वल जे वज्रमणि अर हरित जे मरकतमणि अर श्याम इंद्रनीलमणि

प्रीतिकरि अति हर्षित है मन जाका सो महा प्रशंसा योग्य यह स्वप्न देखकरि आनंदसूं भर गई ॥ ५ ॥ पहिले स्वप्न श्वेत गजराज देखा सब ओर झरै हैं मदके नीझरने जाके अर दिग्गजनितक प्राप्त भई है गर्जना जाकी अर तमालवृक्षके पत्रनिसमान श्याम भंवर जिनपर गुंजार करै हैं अर कैलाश पर्वत समान है वर्ण जाका ऐसा चलते पर्वत समान सुर हस्ती देख्या अर दूजे स्वप्न धवल वृषभ देख्या ऊंचे हैं सींगनिके अर अपने खुरजकरि भूमिकूं खोदता महा टांडता सब दिशानिकूं शब्दायमान करता लंबी हैं पूंछ जाकी अर दीर्घ है कांधा जाका शरदके मेघ समान शुक्ल वर्ण महाधीर नेत्रनिकूं प्रिय महा भारके चलावनेकूं समर्थ शिवदेवी देखती भई ॥ ७ ॥ अर तीजे स्वप्न सिंह देख्या, उलंघ्या है पर्वतका शिखर जानें अर चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल है दाढ जाकी अर लंबा अर सब दिशमें व्याप रहा है शब्द जाका शरदके बादलनि समान श्वेत महा सुंदर मृगराज (शेर) देख्या। अर चौथे स्वप्न हाथीनिकरि होय है अभिषेक जाका अर गजराजके कुंभस्थल समान कुचरूप कलश जाके ऐसी लक्ष्मी देखी सुंगध जलके भरे कलश तिनकरि जाहि गजराज स्नान करावैं हैं गजकी सूंडकरि उठाये हैं कलश अर कलशनिके मुख पर कमलके पत्र हैं अर कमला स्नान करती कमलनिके सिंहासन बैठी है ॥ ९ ॥ अर पाचवें स्वप्न निर्मल आकाशविषैं दो माला लटकती देखी सो माला महाश्रेष्ठ जिनके मकरंदकरि तृप्त होय रहे हैं भंवरके नमूह माला महा । फुल्लित महा कोमल हैं पुष्प जाविषैं मानूं वह दोऊ माला माताने अपनी भुजा ही समान देखी। अर छठे स्वप्न चंद्रमा देख्या जो चंद्रमा रात्रिविषै अपनी किरणनिकरि अंधकारकूं दूरकरि मेघपटलरहित आकाशविषैं प्रकाश कररह्या है मानूं वह निशाकर निशिरूप सुंदर नारीका मनोहर हास्य ही है हास्य भी उज्ज्वल अर चंद्रमा भी उज्ज्वल । अर सातवें स्वप्न माता शिवदेवी दिवाकरकूं देखती भई कैसा सूर्य देख्या दृष्टि सुख कहिए नेत्रनिकूं सुखकारी अर आले सिंदूर समान है अरुण वरण जाका मानूं वह सूर्य दिशा रूप स्त्रीका पुत्र ही है दिन २ देखिवे योग्य है मुख जाका अर सूर्य नेत्रनिकूं आताप उपजावे है अर माताने

धरका अखंड प्रताप जाके गर्वकरि हती है रिपुकी शंका जिनि अर यदुवंशी राजा नानाप्रकार क्रीडाकरि रमते भये ॥ ७३ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं। हे श्रेणिक ! जिनधर्मरूप मेघ जाके जलकी धाराकरि या पृथिवीविषैं नानाप्रकारके फल निपजै यह जिन धर्मरूप जलकीधारा लक्ष्मी अर कीर्तिकी उपजावनहारी है महा भयंकर जो रिपुरूप दावानल ताके दाहरूप दुःखकूं बुझावै है अर यह जिनमतरूप मेघमाला जगतके बांधवरूप जो सज्जन तिनकूं हर्ष उपजावै है ॥ ७४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कंसापराजितवर्णनोनाम षडत्रिंशः सर्ग ॥ ३६ ॥



५—पांचवां अधिकार।

श्रीनेमिनाथस्वामीका चरित्र।

अथानंतर—गौतमस्वामी कहै हैं। हे श्रेणिक ! या लोकविषैं हर्षका कारण जो प्रगट भया सो तू सुनि पहले तोहि कहा ही हुता जो समुद्रविजयके घर नमिनाथ अवतरैंगे तिनका अद्भुत चरित्र म कहूं हूं सो सुनि हे राजा ! अंधकवृष्टिके दशपुत्र ते दशार्ह कहिये तिनमें मुख्य शौर्यपुरका स्वामी राजा समुद्रविजय ताके रानी शिवदेवी ताके गर्भविषैं नेमिनाथ अवतरैंगे। ताके छै महीने पहले इंद्रकी आज्ञातैं पिताके घर कुवेर रत्ननिकी वृष्टि करता भया। सो दिनप्रति साढे तीन कोडि रत्न बर्षे सो अर्थीजन तृप्त भये। सब ही लोक अमोलक रत्न राजाके द्वारतैं ले गये जो उदारचित्त मेह समान दानधारा वर्षै तिनके पात्र अपात्रका भेद कहा वह सब ही आर्थियोंको तृप्त करै ॥ ३ ॥ सब दिशानितैं दिक्कुमारी माताकी सेवाकूं आईं तीन जगतविषैं सब दिशाके जीतिवेका यश जिनेश्वरका प्रगट करतीं भईं ॥ ४ ॥ एकदिन माता शिवदेवी रात्रिके पिछले पहर महा सुंदर सोलह स्वप्न देखती भई। कैसी है शिवदेवी समस्त अतिशयका दिखावनहारा समुद्रविजय अपना पति ताकी

कर्म सोइ प्रबल हैं। काहूका किया कछु होय नाहीं। जा समय जो भवितव्य होय सो ही होय। काहूका बल भवितव्य आगे न चलै ॥ ६६ ॥ अर यादवनिका बुरा होनहार है। वे पशु देहतैं मूर्ख हैं। जो पशु आधा हू होय सोहू मरिवेकी शंका राखै। खेतमें चरिवेकूं पैठे तब निकसिवेका उपाय विचारै अर ऐसे वे मूर्ख पशुहूतैं, अति अविवेकी हैं यह विचार न किया जो हम याहि मारै हैं पर याके पीछे जरासिंधु है ॥ ६७ ॥ तेरे ही चरणका उनकूं शरण हुता अर तेरेही कंटक भये तौ अब वे श्रवण अगोचरही रहैंगे अर उनके कुलरूप शाखाका बल बहुत भया है तौ हू हे पुत्री ! मेरे क्रोधरूप दावानलकरि भस्म भया देखि ॥ ६८ ॥ ऐसे प्रिय वचनरूप जलकरि पुत्रीकी क्रोधरूप अग्नि बुझाई। अर कालयवननामा अपना पुत्र साक्षात काल तुल्य महा विकराल ताहि यादवनिके नाशके अर्थि आज्ञा करता भया ॥६९॥ सो पिताकी आज्ञा पाय हाथी घोडे रथ पयादेनिकरि पूर्ण चालते समुद्र समान कटक ताकरि युक्त शत्रु जे यादव तिनिपरि चाल्या। सो शीघ्रही जायकरि यादवनिसूं युद्ध करता भया। सतरह वेर युद्ध तानैं यादवनिसूं किया। परंतु इनकूं जीत न सक्या। सो अतुल मालावर्तनामा पर्वत तहांतैं भागि गया ॥ ७० ॥ बहुरि जरासिंधु अपने भाई अपराजितकूं यादवनिपरि विदा करता भया। कैसा है भाई जीते हैं अनेक प्रबल वैरी जानैं अर जरासिंधुके प्राण समान प्यारा है सो शीघ्र ही यादवनिपरि गमन किया। वैरीनिका समूह ताके ग्रसिवेका लोलुपी सो प्रबल कालकी अग्निकी शिखाकी पंक्ति समान प्रज्वलित अपना कटकरूप वन ताका प्रेर्या चाल्या। सो तीनसै छियालीस प्रबल युद्ध अपराजितने यादवनिसूं किये। सो महायोद्धा यशका उपार्जनहारा हरिके वाणकरि हर्या है प्राण रूप सार जाका सो मानूं खेद निवारिवे अर्थि वीरशय्यापरि शयन करता भया।

भावार्थ–जरासिंधुका छोटा भाई अपराजित तीनसै छ्यालीस वेर युद्धकरि हरिके वाणतैं मूवा ॥ ७२ ॥ अर हरिकी पुरी जो मथुरा ताविषैं नगरके लोक हर्षकूं धरते अर सुखकूं करते बसते भये कैसे हैं लोक हरि अर हल-

नामा पुत्री वलभद्रकूं विवाही, अर सुकेतुने अपनी सत्यभामानामा पुत्री केशवकूं परणाई। वह सत्यभामा प्रभानामा राणीकी पुत्री है ॥६०॥ इनके विवाहविषैं अनेक विद्याधरी पवित्र हैं भेष जिनके सो नृत्य करती भई। वे विद्याधरी अपने कुचरूप कलश तिनके भारकरि खेदखिन्न भया है अंग जिनका। भावार्थ अति नाजुक बदन है अर नृत्यविषैं शिथिल होय गये हैं वस्त्र अर कांचिदाम अर केशनिके वंधन जिनके अर मनोहर है नूपुरनिका शब्द जिनिका ॥ ६१ ॥ नीलांवर कहिये हलधर अर पीतांवर कहिये हरि इन दोऊ भाईनिके प्रथम विवाह भये। कैसे हैं दोऊ वीर नानाप्रकारके मणीनिके आभूषण तिनिकी ज्योतिकरि प्रकाशरूप है अंग जिनके। समस्त यादव इनि दोऊ भाईनिकूं देखिकरि अति प्रसन्न भये इनिकूं सब वंशके शिरोमणि जानते भये। बडे २ राजा तिनिकरि सेवनीक ये पुत्र तिनकूं देखकरि रोहिणी वलभद्रकी माता अर देवकी श्रीकृष्णकी माता अति हर्षित भई अर शिवदेवी आदि सवही वहुत हर्षित भई। प्रथमही मदनकी रंगभूमिविषैं सत्यभामा मोहनका मन हरती भई। अर रेवती हलधरका मन मोहती भई। सीखी हैं अनेक कला अर धारे हैं अनेक गुण तिनके योगकरि उन दोऊ भाईनिके वे दोऊ मन हरती भई। जे चतुर हैं ते समय न चूकें। जिहि जिहि समय जे जे उचित कर्तव्य हैं तिनि तिनिकरि वे इनकूं प्रसन्न करती भई। अथानंतर—वह जरासिंधुकी पुत्री जीवंयशा कलुष है भावनाके रोगकरि, मन जाका समुद्रसमान राजा जरासिंधु ताहि क्षोभ उपजावती भई। जैसैं वेला कहिये तरंग अति चंचलतारूप सो समुद्रकूं क्षोभ उपजावै, तमालके पत्र समान अति श्याम विखर रहे हैं केश जाके सो पिताके निकट अति रुदन किया। यादवनिकरि किया जो दोष सो पिताकूं कहती भई हे तात! सर्व पृथ्वीके पति तुम, अर तुम बैठे मेरा धनी मार्या जाय अर मैं विधवा भई। सो यह वारता सहारी न परै। अब यादवनिका रुधिर सोई भया जल अर उनके सिर तेई भये सरोज कहिये कमल तिनिकरि पतिकूं पाणी द्यूं तौहू मेरा क्रोध न बुझै ॥६५॥ पुत्रीके ये विलापके वचन सुनिकरि पृथिवीका पति कहता भया। हे पुत्री! तू शोक तजि देवके ये पूर्वोपार्जित

सरोवरका निवासी हंस गंगाके तीर आवै। तैसैं वह विद्याधर हंस रथनूपुर चक्रवालनामा नगरतैं मथुरा आया कैसी है मथुरा दिशि दिशि गलिनमें विचरै हैं राजहंस जहां ॥५४॥ सो दूत आयकरि द्वारै खड्या। तब द्वारपाल वाहि राजसभामें ल्याये। सो वह राजसभा यादवनिकरि शोभित तहां दूत आय नमस्कारकरि यादवनिका इंद्र जो समुद्रविजय तासूं कहता भया हे नरेंद्र! मेरी विज्ञप्ति सुनहु। विजयार्द्धगिरिविषैं दक्षिणश्रेणी ताविषैं रथनूपुर चक्रवालनामा नगर ताका अधिपति राजा सुकेतनामा विद्याधर नमि विनमिके कुलकी ध्वजा ॥ ५५ ॥ सो सब विद्याधरनिका स्वामी है तानैं कृष्णके पराक्रम सुनि जो देवोपुनीत धनुष चढाया अर शंख वजाया अर नागशय्यापर आरोहण किया। यह वार्ता सुनि राजा सुकेतके कृष्णसूं अति प्रेम उपज्या सो मोहि पठाया है। ताकी पुत्री सत्यभामाकूं कृष्ण वरहु। सर्वकल्याणका मूल जो कृष्ण सो विद्याधरनिकूं विभूतिके अर्थ होहु ॥५६॥ यह दूतका वचन सकल यादवनिके मनका हरणहारा ताहि सुनिकरि समुद्रविजय कृष्णकूं आज्ञा करी। जो तुम सुकेतुकी पुत्री सत्यभामासूं विवाह करहु तब कृष्ण अति प्रसन्न होय दूतसूं कही। सत्यभामारूप रत्नकी धारा सुकेतरूप कुवेरकी वरषाई रतनाचलरूप जो मैं सो मोपर शीघ्रही परौ। भावार्थ—सुकेतु तौ कुवेर समान अर सत्यभामा रत्नकी दृष्टि समान अर मैं रत्नाचल समान सो वह रत्नधारा मोपरि परौ। सुकेतुकी दई मेरे गृहमैं प्रवेश करै ॥ ५७ ॥ ऐसे प्रीतिके वचन कहि दूतका बहुत सन्मान किया। अर दूतकूं विदा किया। अर वह दूत अतिहर्षित भया अपने स्वामीपै जायकरि नमस्कारपूर्वक सब यादवनिके गुण वर्णन किये। अर वाके बहुत गुण गाये। यह दूत आप तौ हर्षित होय आया हुता। अर सत्यभामाके मातापिताकूं अति हर्षित किये अर कार्यकी सिद्धि कही ॥ ५८ ॥ विद्याधरनिका इंद्र राजा सुकेत अपने दूतके मुख बलदेव वासुदेवके गुण सुनिकरि अति अनुरागी भया। दूत कही या पृथिवीविषैं बलदेव वासुदेव दोऊ भाई प्रकाशरूप हैं। हत्या है औरनिका तेज जिनि रूपकांति प्रताप धर्मज्ञता उनकी सब जानकरि सुकेत अर सुकेतका भाई रतिमाल ये दोऊ पुत्री लेकरि मथुरा आये। सो रतिमालने रति समान अपनी रेवती-

सावंत उठे। समस्त सेना कंसके कार्यविषैं सावधान सो बलदेव वासुदेवके प्रतापतैं सकल सेना भागि गई ॥ ४७ ॥ अथानंतर—च्यारि घोडे जुपे हैं जा रथके ताविषैं बलदेव वासुदेव वडे भाई सहित रथपर वैठि मल्लका भेष धरे अनेक आभरणकरि युक्त माता पिताके मंदिर आए। कैसा है मंदिर समुद्रविजयादिक सब भाईनिकरि पूर्ण है ॥ ४८ ॥ हलधर अर हरि अनुक्रमतैं वडेनिके पायनि पडे। पहले समुद्रविजयके बहुरि समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं बडे आठ भाई तिनिके पायन परे। बहुरि वसुदेव तथा मातानिके पायनि परे। सबनि आशीष दई। चिरकालके विरहका उपज्या जो अंतरंगका आताप ताहि मिलवेरूप जलकी धाराकरि बुझावते भए ॥४९॥ देवनि समान वसुदेव अर देवीनि समान देवकी सो अपने पुत्रका मुख देखि अतुलसुखकूं प्राप्त भई कैसा है पुत्र बुझाई है शत्रुरूप अग्नि जानैं। अर,सदा प्रफुल्लित है वदन जाका ऐसे पुत्रका संयोग सुखका कारण क्यों न होय या समान अर सुख कहा। अर वह यशोदाकी पुत्री वसुदेव ले आए हुते जाका नाक कंसने चिपटा किया सो हू कृष्णकूं देखि आनंदरूप भई ॥५०॥ जासमय कृष्ण घर आए ताही समय उग्रसेनकूं निर्बंधन किया। चिरकाल वंदीगृहके योगतैं क्षीण है शरीर जाका कंसकी शंकातैं रहित सकल नगर उछाहरूप भया ॥ ५१ ॥ कंसके सकल सज्जन अर ताकी बहू अत्यंत रुदन करती भई। अर कंसकूं शीघ्र ही दागकूं लेगए। कंसका संस्कार करि जरासिंधकी पुत्री जीवंयशा अपने पिताके पास गई रुदनकरि रुकगए हैं कंठ जाके ॥५२॥ जीवंयशा तो जरासिंधुपै गई अर यादव अपनी सभासहित विराजे हैं तासमय आकाशरूप समुद्रविषैं एक विद्याधर मीनकीसी लीला धरता मथुराके समस्त लोकनि देख्या कैसे हैं मथुराके लोक ऊपरकी ओर हैं मुखकमल जिनके। अर वह विद्याधर अति शीघ्रगामी मीनसमान चपलगति सुकेत नामा विद्याधरका दूत आकाशरूप समुद्रविषैं सबनिकी दृष्टि पर्‌या। कैसा है आकाशरूप समुद्र अंभोद कहिए मेघ तेई हैं चपल तरंग जाविषैं मीनके तो नेत्र चमकें अर दूतके देदीप्यमान आभूषण भापते भए ॥५३॥ शरीरविषैं उज्वल निर्मल वस्त्र पहिरे, अर चंदनादि सुगंध लगाये वह विद्याधर प्रगट कलहंस समान मथुरापुरी आया। जैसें मान-

सैनकरि बुलाया सोहू आया। भावार्थ—दोऊ भेले होय भूधरकूं मारो सो दोऊ महामल्ल माधवपै आए। कैसे हैं दोऊ मल्ल महा कठोर महा तीक्ष्ण विकराल हैं नख जिनके अर दोऊ मुष्टि बांधे प्रगट सिंह समान भयंकर है आकार जिनका अर स्थिर हैं चरण जिनके। भावार्थ-जिनके पग अतिदृढ हैं सो कृष्ण तो चाडूर मल्लके सन्मुख आया, परस्पर मुष्टिकरि युद्ध होने लाग्या अर मुष्टी नामा मल्लपरि बलभद्र पधारे। कैसा है मुष्टी वज्रपात समान है कठोर मुष्टि जाकी वाहि आवतेकूं देखकरि बलदेव बोले तिष्ठि तिष्ठि ऐसा कहि एक थपेड दीन्हीं सो वाके तत्काल प्राण निकसि गए। मनुष्यकी कहा शक्ति जो शलाका पुरुषनिसूं लरैं। इनिसूं देव न लरि सकैं अर कृष्णने चाडूरकूं पकरया अर भुजजंत्रमें पेलि डाल्या रुधिरकी धारा वाके मुखतैं निकसी तत्काल जीव निकसि गया। यद्यपि वह चाडूर अति समर्थ हुता अर अति बलवान महा गर्ववान जासूं कोई मनुष्य जीति न सकै परंतु हरिपै वाका जोर कहा चालै। कैसे हैं हरि कहिए इंद्र अथवा हरि कहिए मृगेंद्र ता समान महा वीर्यके धारक हैं ॥४०॥ वे दोऊ मल्ल एक हजार सिंह अर एकहजार माते हस्ती तिनतैं अधिक बलके धारक हुते सो तत्काल दोऊ मल्ल हरि हलधरने मारे। उन दोऊनिकूं मूवे देखिकरि कंस आप चलायकरि आया तीक्ष्ण शस्त्र हैं जाके करविषैं तब तमस्त रंगभूमि चलायमान होयगई। जैसा समुद्र गाजै तैसा गाजता कृष्णपर आया तब कृष्ण महाबली वाके हाथतैं खड्ग खोसि लई अर म्यानमें घाल दई अर वाहि गाढा पकरया क्रोधकरि वाके पग पकरि चहुं ओर फिराय अर शिलापर पटकि मारया अर हंसे अर कही याही बलपरि गर्व करै हुता ॥ ४५॥ जब कंसकूं केशवने पछारया तब कंसकी समस्त सैना क्रोधकरि युद्धकूं उद्यमी भई तब अकेले बलिभद्र कुटिल हैं भ्रकुटी जिनकी महलका थंभ उपारि योद्धानिपरि दौरे। वज्रपातसमान थंभका घात ताकरि कैयक मारे तब सब योद्धा भागे बलदेव वासुदेवसूं कौन लरि सकै। जब कंसके सामंत सब भागि गए। तब जरासिंधुकी बडी सेना कंसके तावे हुती तामैं बडे बडे राजा युद्धकूं उद्यमी भए। यादवनिपरि विषम है दृष्टि जिनकी जैसैं समुद्र गाजै तैसा शब्द करते भए सब औरतैं

दर गए। सो लीलामात्र दोऊ गजनिसूं युद्ध किया। सो कठिन चोट लगावैं तौ वे मरि ही जांय पर इनकूं न मारना सो लीलामात्रमें दोऊभाई इन दोऊगजनिके दांत उखार लिए। जैसैं सांपनिकरि वैठे बांसके अंकुरे उखारैं तैसैं वंधनकरि वेष्टित हस्तीनके दांत उखारि लिए ॥ ३४॥ मूलतैं उखरि गए हैं दांत जिनके ऐसे वे हस्ती विरस शब्द करते भागिकरि नगरमें पैठे अर ये दोऊ वीर अपने गोपीनिसहित नगरमें आए ॥ ३५॥ अपने कांधेनिकरि महा मल्लनिकूं ठेलते ये दोऊ मल्ल रंगभूमिमें आए। कैसी है रंगभूमि कमलनिकी कूपलनिकरि मंडित शोभित है द्वार जाका अर वडे २ राजा जहां कौतुक देखै हैं कमलनिपर भंवर गुंजार करै हैं ॥३६॥ सो रंगभूमिविषै हरि अर हलधरका लीलामात्र गर्जना खमका ठोंकना अर अपने चरण अर भुजदंड तिनकी चेष्टाका करना अर नाना प्रकारकी मल्लविद्याकी कला अर दृढ दृष्टि अर दृढ मुष्टि तिनकरि वह रंगभूमि सोहती भई। जैसैं वस्त्रका छेहरा लता थकी सुंदर भासै तैसैं इनकी सुंदर चेष्टा सुंदर भासती भई। तासमय वसुदेवकूं वलदेव सैनकरि सब दिशा वताता भया हे हरि! यह तेरा वैरी कंस है अर वे याके निकट जरासिंधुके लोग हैं अर ये समुद्रविजयादिक तेरे बाबा हैं अर ये काका बाबानिके वेटा हैं। कृष्ण तो उनकी ओर देखि रह्या। अर वे सब भाई काका बाबाके इन दोऊ भाईनिकी ओर देखि रहे ॥ ३८ ॥ अर कंस मल्लनिकूं आज्ञा करी जो तुम परस्पर मल्लयुद्ध करहु। सो सब ही अपनी अपनी जोडीतैं युद्ध करते भए। जहां अनेक देशनिके राजा देखै हैं अर अनेक लोग भेले होय रहे हैं तिनिका अति क्षोभ होय रह्या है अर अनेक मल्ल गर्जना करै हैं अर खम ठोकै हैं तिनकरि रंगभूमि रमणीक होय रही है। जैसैं आरणे भैंसे क्रोधके भरे परस्पर लरैं तैसैं मल्ल परस्पर लडै हैं ॥ ३९ ॥ अथानंतर—दुष्ट कंस कृष्णपरि चाडूरनामा मल्लकूं आज्ञा करी। कैसा है चाडूर पर्वतकी भारी भीति समान विस्तीर्ण है वक्षस्थल जाका अर प्रगट महा दृढ वाणी समान है भुज जंभ जाके जामें पेलि डाले हैं अनेक मल्ल जानैं। सो स्वामीकी आज्ञाप्रमाण सवके सन्मुख आया अर कंसने विपसमान विषम दृष्टिकरि दूजा मुष्टीनामा मल्ल ताहूकूं

राजानिका इंद्र है ॥ २५ ॥ दोऊ भाईनिके जन्मांतरका स्नेह ताकरि भिलिगये हैं मन जिनके सो यमुनामें स्नान करि गोपनके समूह सहित अपने घर आए । दोऊ भाई जलक्रीडाविषैं निपुण अर देवनिकरि नृपनिकरि सेवनीक ॥ २६ ॥ सो आयकरि भोजन किया बलभद्रने तो इनके लेयवे योग्य वस्तु हुती सो लई अर हरिने महा सुगंध महास्वाद गायनिका घीव अर दधि दुग्ध मिष्टान्न आदि अनेक रस अर नानाप्रकारके व्यंजन अर खीर आदि अनेक भोजन चौकेमें सुवर्णके पात्रमें भली भांति भोजन किए । अति नरम अति सुंदर अति मिष्ट अति उज्ज्वल तंदुल आरोगिकरि कृष्ण उठे । दोऊ भाई महा सुगंध चंदन अर गजा अतर अति सुगंध लगायकरि नाना प्रकारके पुष्पनिकूं धरे अति सुगंध है शरीर जिनके । पान सुपारी लवंग इलायची दालचीनी चाबते अरुण हैं अधर जिनके अर देदीप्यमान है मुख जिनका ॥२८॥ नानाप्रकारके मल्लविद्याके करणहारे तिनमें प्रवीण समस्त विद्यानिमें प्रवीण किए है सुंदर भेष जिनि । बडा भाई नीलांबर छोटा भाई पीतांबर उरविषैं लगाया है सिंदूरिका रंग जिनि अर नवीन पुष्पनिकी वनमाला तिनके हैं सेहुरे जिनके मालती आदि अनेक पुष्पनिकरि शोभित ॥ २९ ॥ अपने मनविषैं कंसका विध्वंस विचारकरि चले । अपने चरणनिके घातकरि पृथ्वीकूं क्षोभ उपजावते महा भयंकर मल्लका भेष धरि अपने गोपनिके समूह सहित मथुरापुरीकी ओर चाले मारगमें कंसके पक्षके असुर इनपर आए एक नागरूप होय आया । एक गर्द्दव होयकरि आया एक खोटा तुरंग होयकरि आया फाड्या है मुख जिनि कृष्णके विनाशिवेकूं चलायकरि सन्मुख आया । ये कृष्णने सब भगाए अर एक केसीनामा असुर आया सोहू केशवने भगाया । सबनिकूं जीतिकरि नगरमें प्रवेश करते हुते सो नगरके द्वार दोय गजराज आए । मदके झरिवेकरि भीजि रहे हैं कपोल जिनके सो एकैलार दोऊ गज कंसकी आज्ञातैं इनपरि ल्याए । तिनकूं जानिकरि दोऊ भाई हर्षित भए । दोऊ युद्धकी रंगभूमिविषैं महा मल्ल हैं इन दोऊ हाथीनिमें एक चंपकनामा हाथी ताके सन्मुख तौ राम कहिए बलदेव गए, अर दूजे हाथीका नाम पाटाभर तापरि फणिरिपु कहिए नागके दमनहारे दामो

युक्त देख्या ताका कारण कहूं हूं। तुम मेरे शास्त्र पढावनेके गुरु अर महा पंडित अर या लोककी सकल रीतिके ज्ञाता औरनिकूं मारग बतावोहो सो तुम सारिखे विवेकी मेरी माता पूज्य ताहि तिरस्कारके वचन कहौ। यह तुम कूं योग्य है ?॥ २१ ॥ ये वचन वासुदेव उलाहनारूप कहे तब बलदेव भाईकूं छातीसूं लगाय रोमांच होय गदगद वाणीकरि हर्षके आंसू नांखता प्रगट करी है अंतःकरणकी विमल वृत्ति जानैं सो सब वृत्तांत केशवसूं कहता भया हे धीर जरासिंधुकी पुत्री जीवंयशा कंस परन्या है ताके घर कंसके बडे भाई अतिमुक्तिकनामा मुनि आहारकूं आये सो वा पापिनीने मुनिके निकट तेरी माता देवकीके रतिके वस्त्र डारे तब मुनि कही या देवकीके नवमां नारायण पुत्र होयगा सो पहिले तेरे पतिकूं मारैगा अर पीछे तेरे पिताकूं मारैगा। सो वानैं ये मुनिके वचन कंससूं कहे। सो पहिले तेरे छह भाई तीन युगल भए वे तौ तद्भव मोक्षगामी हैं सो भद्रलपुरविषैं अलकानामा सेठानीके घर हैं अर अलकाके छह पुत्र तीन युगल मृतक भए सो देवनि देवकीकी प्रसूतिगृहमें लाय डारे सो मूवेहू कंसने शिला-पर पछार मारे अर चौथे गर्भ सातवां पुत्र तू भया सो सातवें महीने ही जन्म्या। शत्रु न जानि सक्या सो तोहि होते ही नंदके घर आय राख्या है ये वचन बलदेवके सुनि वासुदेवकूं बडे भाईनिके मारिवेकरि कंसपर क्रोध उपज्या अर बडे भाई कही तेरे मारिवेके उपाय वानैं बहुत किए जन्महीतैं उपाय करै है अर अब मल्लयुद्धका उपाय रच्या है। ये वचन हलधरके मुरलीधर सुनिकरि कंसके मारिवेविषैं चित्त धरता भया ॥२४॥ अबतक हरिके जीवमें यह हुती जो मोसारिखा सामंत अहीरनके कुलमें क्यूं उपजा अब रोहिणीका पुत्र बलदेव ताके मुख आपकूं हरिवंशी जान्या जो हमारा क्षत्रीनिका कुल है। जा वंशविषैं श्रीमुनिसुव्रत नाथ भए अर नेमिनाथ होहिंगे। मैं देवकीका पुत्र हूं अर मेरा पिता वसुदेव है अर यह बलदेव मेरी बडी माताका पुत्र वसुदेवका नंदन मेरा बडा भाई है अर समुद्रविजयादि वसुदेवके बडे भाई सब मेरे बाबा हैं मैं बडे कुलविषैं उपज्या हूं अर नंद यशोदाके पल्या हूं सो ये मेरे धर्मके माता पिता हैं ऐसा सब वृत्तांत जानि कृष्णका मुख कमल फूलि गया हरि कहिए इंद्र ता समान यह हरि कहिए वासुदेव

विछुरा है छोटा भाई वसुदेव ताके देखिवेके मिसकरि बडे भाई मथुरा आये कंसकूं यह जताया जो छोटे भाइसूं मिलिवे आए हैं। जब यादवनिका इंद्र समुद्रविजय सब भाईनि सहित आया तब वसुदेव सन्मुख गये। अर कंसहू शंकाका भर्या सन्मुख जाय इनिकूं पुरीमें ल्याया। नगरकी मंदिरनिकी शोभा देखकरि यादवनिके नेत्र तृप्त भये। कंसने सबनिकूं डेरे दिवाये अर बहुत आदर किया। भांति भांतिकी इनके सामग्री पठाई। जैसैं कोऊ स्नेही स्नेह दिखावै तैसैं कंसने कपटसूं दिखाया। दिन प्रति तिनकी सेवा दान मान प्रणामकरि पाहुनगतिकरि मानूं स्नेह दिखावै है। कैयक दिन यादवनिसहित यादवनिका ईश्वर समुद्रविजय भाईके निकट रह्या अंतरमें है दाह जिनके। अर गोकुलमें है गोप जिनकूं मल्लयुद्धके अर्थि कंस पत्र पठाया तब बलभद्र सब अर्थ जान्या अर सब गोपनिकूं युद्धाभिलाषी करते भये अर कृष्णके निकट महा प्रवीण बलभद्र यशोदाकूं तेजकरि कठोर वचन कहते भये। हे यशोदे! तू कृष्णकूं स्नान क्यूं न करावै है एती ढील क्यूं करै है। तोहि तनहूकी सुधि नाहीं एक वेर कहौ वा बहुत वेर कहौ तू अपना स्वभाव नाहीं तजै है जैसैं सीप महा उज्ज्वल पवित्र मुक्ताफलकूं निपजावै है परंतु समुद्रविषैं उपजी तातैं समुद्रकी लहरिका स्वभाव चंचल सीप हू धरै है। तैसैं तू कृष्णसारिखे पुत्ररत्नकी उपजावनहारी है परंतु गोपिनके स्वभावकूं नाहीं तजै है ये वचन हलधरने कहे तब यसोदाके नेत्र आंसूनिकरि भरि आये अर कछु उत्तर न दिया। शीघ्रही न्हायवेकूं जल कीया। अर भोजनकी तयारी करी ॥ १८ ॥ तब दोऊ भाई बोले स्नान तो हम नदीविषैं करैंगे अर भोजनकी तयारी कर लेह सो दोऊ वीर महाधीर नदीके तीर गये। तहां एकांतविषैं हलधर चक्रधरसूं कहता भया। हे कृष्ण! तू आज उदास चित्त क्यूं है। तेरे मुखतैं लांबे उष्ण स्वास निकसै हैं अर तेरे नेत्र आंसुनिकरि सजल हैं। अर तेरा मुख दाह करि मुरझाए कमलसमान भासै है कांतिरहित दीखै है यह कहा कारण है सो मोहि कहो ॥ २० ॥ विकसित बदन बलभद्र तानैं स्नेह सहित माधवसूं पूछ्या तब माधव कहते भए हे आर्य! मेरे वचन सुनो। मेरा चित्त दुःखकरि

महा भयंकर फणानिकरि मणिनकी किरण तिनका समूह तिनतैं निकसै हैं अग्निके स्फूलिंगके समूह तिनकरि हरिके जरायवेकी है इच्छा जाके। तब माधव उछलिकरि वाके सिर परि जाय परे अर नागकूं नारायणने पांवसूं खूंध्या अर सहस्रदल कमल ले बाहिर आये। सब गोप अर गोपी द्रहके तट वृक्षनिके तले चिंतारूप खडे हुते अर हलधरहू खडे हुते सो हरिकूं देखिकरि सबही हर्षित भए अर गोप गोपी गान करते भए अर बलभद्र अति प्रसन्न धन्य धन्य यह शब्द उच्चार करते भए। भुजंगकूं भुजनितैं जीतकरि कमलकूं लय पवनकी नाईं शीघ्र ही मुकुंद आय सो देखकरि सब सखा फूल गए। लहलहाट करते अति दैदीप्यमान पीतांबर तिनकरि शोभित आनंदके भरे अति उल्लासरूप श्यामसुंदर कारी नागपर परते कैसे सोहते भए जैसैं श्यामशिलापर वरषता विजुरीसहित मेघ सोहै माधव तो मेघ भए अर बिजुरी अर कारीनाग शिला समान जानहु। नागकूं जीति भुजानितैं उपारि सहस्रदल कमलकूं केशव ल्याए अर और अनेक कमल गोप ल्याए तिनिके भारे वंधायके सबने कंसपै पठाए सो पापी पराए गुणनिका न सहि सकनहारा क्रोधकरि तप्तायमान भया अर अति उष्ण उस्वास वाके मुखतैं निकसे अर आज्ञा करी नंदके नंदन आदि सबही ग्वाल मलयुद्धकूं यहां आवैं यह आज्ञा करि मल्लयुद्धके अर्थि अपने सब मल्ल भेले किए। जघन्य मध्यम अर उत्कृष्ट सबही मल्ल एकत्र भए कैसा है कंस करोत सारिखा है तीक्ष्ण चित्त जाका तत्काल माधवकूं मार्या चाहै है। यह शत्रुका चरित्र वसुदेवने जान्या जो याके विलम्ब नाहीं शीघ्र ही हरिकूं हत्या चाहै है। तब वसुदेव अपने अनावृष्टि पुत्रकूं मंत्रकरि बडे भाई समुद्रविजयके निकट समाचार पठाए जो यहां यह चरित्र है। यह वार्ता सुनि शत्रुकी दुष्टता जानि समुद्रविजय आदि वसुदेवके बडे भाई अर और यदुवंशी रथ तुरंग हाथी पयादे समस्त अपनी सेन्या सहित शीघ्र ही वसुदेवके समीप आए। पृथिवीकूं शोभित करते शस्त्रनिके धारक सामंत वसुदेवके निकट आए। उपज्या है गर्व जाकूं अर दुष्ट है हृदय जाका ऐसा कंस ताके विदारिवेकी है इच्छा जिनकी ॥ ९ ॥ चिरकालका

तातैं कंसका मदन सोहता भया ॥ २ ॥ अर शरदऋतुविषैं मेघमालाके अभावतैं चंद्रमाकी किरण आकाशविषैं प्रगट भासती भई। आकाश तौ चंद्रकलाकरि दैदीप्यमान भासता भया अर पृथ्वीविषैं कर्दम विघटि गया पृथ्वी निर्मल होय गई। अब कैयक दिनमें कंसके घातकरि बढैगा हरिका प्रताप ताकूं प्रगट करती शरदऋतु सोहै है ॥ ३ ॥ शरदऋतुविषैं विस्तीर्ण जे नदीनिके पुलनि तिनपर आय परे हैं जलके फैन अर निर्मल होय गई है नदी अर निर्मल होय गये हैं सरोवर अर सरोवरनिमैं फूले हैं स्वेत कमल तिनके मिसतैं यह ऋतु मानूं हरिका उज्ज्वल यशही विस्तारती थकी सोहै है सो शरदऋतुविषैं पृथ्वी सब दिशि हर्षकी भरी नारीसमान सोहती भई कैसी है वसुंधरारूप नव वधू नवा वर जो नवल नागर नारायण ताके कंठसूं लागिवेकी है इच्छा जाके। भावार्थ—धरित्रीरूप स्त्री धरिणीधरकूं वरा चाहै है। कैसी है धरित्रीरूप स्त्री वृक्षनिके फलरूप कुच तिनके भारकरि नम्रीभूत हैं अर नाना प्रकारके काचे धान विकसि रहे हैं। तेई मानूं कंचुकी समान सोहै हैं अर स्त्रीहू पहिले गर्भ ग्रहै है पीछे जणै है अर भूमिहू पहिले वीजकूं ग्रहै है पीछे अंकुरा काढै है अर नानाप्रकारके तृण अर काचे धान तिनकूं चरकरि हर्षित भये गाय बलध शब्द करै हैं तेई शब्द जाके। भावार्थ—स्त्री तो हर्षित होय गावैं हैं अर गाय बलध हर्षित होय दहाडे हैं सो उनका दहाडना सोई धरारूप नारीका शब्द है शरदऋतुविषैं भूमिरूप भार्या कृष्णकूं हर्ष उपजावती भई अर रिपुनिका नाश दिखावती भई ॥ ५ ॥ अथानंतर—जानी है हरिकी सकल क्रीडा जानैं ऐसा कंस सो बहुरि भी कृष्णके नाशके अर्थि नागेंद्र द्रहविषैं सहस्रदल कमल ताके ल्यायवेकू गोकुलके गोपीनिकूं आज्ञा करी। सो वा सरोवरविषैं महा विकराल नागकुमार देव रहै ताविषैं कोऊ स्नान करिवेकूं जाय न सकै। सो वह जमुनाका द्रह नागनिकरि महाविषम तहांतैं कमल कौन ल्याय सकै। कंस जानी वह मेरा शत्रु नागथकी नाशकूं प्राप्त होयगा जब कंसका आज्ञापत्र गोकुलमें आया तव सवनिकूं चिंता उपजी यह कमल कौन ल्यावै। तब महाबली वासुदेव अपनी भुजाका है बल जाके सो लीलामात्र द्रहविषैं प्रवेशकरि समस्त द्रहकूं अवगाह्या। सो महा कोपकरि उठ्या काली नाग

मांगै सो देऊं। सो या घोषणाकूं सुनिवेकरि अनेक राजकुमार आये सो काहूहीतैं यह कार्य न भया। तब विलखे होय उठि गए अथानंतर—जरासिंधुका पोता भानु गोकुलमें आय उतरथा। सो कृष्णकूं पराक्रमी जानि याकी सामर्थ्य प्रत्यक्ष देखि कार्यके अर्थि याहि मथुरा ल्याया ॥ ७४ ॥ सो कृष्ण भानुकी लार आयकरि नागशय्या देखी महाभयंकर जे सर्प तिनके फणनिकरि डरावनी सो वा नागशय्यापर आरूढ होता भया अर मायामई भुजंगम तिनके मुखकरि निकसै है धूम ताकरि भयंकर अग्निकी ज्वालाकरि प्रज्वलित जो देख्या न जाय सो धनुष माधवने तत्काल चढाया। अर शंख फूंक्या ताका शब्द दशूं दिशामें भया। जे कार्य कृष्ण किए ते भानुकुमारके किए जनाये। तब सब लोक ताके महात्म्यकी प्रशंसा करते भए। सो शंख ऐसा बाज्या मानूं समुद्र ही गाज्या। कैयक तो कहै हैं यह कार्य भानुकुमारने किया अर कैयक कहै हैं एक सांवरा लरिका हुता तानैं किये। तब भानुकुमारने कंसकी शंकाकरि कृष्णके लार अपने चाकर देय गोकुलमें पठाय दिया ॥ ७८ ॥ अर आप शय्या अर धनुष शंखके समीप ठाडा जे भानुके सेवक कृष्णकी लार गये हुते ते कृष्णके गुणनिकरि अति अनुरागी भये ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहै हैं ॥ हे श्रेणिक! कृष्ण गर्भमें न आया हुता ता पहिले ही बांध्या है वैर जानें ऐसे कंस महा दुष्ट सो कहा करि सकै। कृष्णने पूर्वभवविषैं जिनधर्म आराध्या सो सहाई तब शत्रुका क्रिया कहा होय ॥ ७९ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णबालक्रीडावर्णनोनाम पंचविंशः सर्गः ॥ ३५ ॥



अथानंतर—शरदऋतु प्रगट भई। वाणासनजातिके वृक्ष तेई भये धनुष तिनके भ्रमररूप फिडिचि चढी। अर कल हंसिनीके मनोहर शब्द तेई शंखनिके शब्द सो रिपुका मद सोई भया मोरनिका शब्द ताहि तिरस्कार करते भये। भावार्थ—शरदविषैं मयूरनिका शब्द नाहीं सोहै है। तैसैं कृष्णकी नवीन लक्ष्मी सोई भई शरदऋतु

देवकीने सब वृत्तांत अपने स्वामीसूं कह्या सो अति प्रसन्न भया ॥६२॥ वलभद्र केशवकूं नितप्रति जायकरि कला गुण सिखावै सो बुद्धिमान तुरंत सीख ले। गुरुका वचन जो शिष्य विनयवान होय ताहीके लागै। या भांति हलधर अर हरि विद्याभ्यासकरि काल व्यतीत करैं। सो कृष्ण वाल्यावस्थाकूं उलंघकरि कुमारावस्थाकू प्राप्त भया, परंतु वह महानुभाव निर्विकार परदाराका परित्याग जाके सो विषयानुरागी न होता भया। जो वडे पुरुष हैं तिनतैं अयोग्य क्रिया न होय। अर जगतका वल्लभ जो इनकूं देखिके स्त्रीनिका मन मोहित न होय। वे गोपवधू इनके निकट रास विलास करती भई। अर ये देवनिसमान नृत्य अर गान करते भए अर कछूही विकार नाहीं। जैसैं सुवर्णकी मुद्रिकामें मणि सोहै तैसैं कृष्ण गोपिनमें सोहते भए ॥ ६५ ॥ या हरिविषैं जीवनिका अनुराग वृद्धिकूं प्राप्त होता भया अर याहि न देखें तव सवनिके विरह उपजै। एकदिन कंस अपने शत्रुकूं ढूंढिवेकूं व्रजमंडलमें विहार करता भया। तव कंसकूं वाहिर निकस्या जानि नंद अरु यशोदा पुत्रकूं वनविषैं लेगए। तहां एक राक्षसनी अट्टहास करती रूक्ष हैं नेत्र जाके अर विकराल है मुख जाका सो कृष्णकूं देखिकरि अपनी काया वढाई अर खायवेकूं दौडी। तव हरि अपने पराक्रमकरि वाहि दूर भगाय दई ॥ ६८ ॥ अर कृष्ण मातापिताकी लार आगे जाय था सो मारगमें शाल्मली वृक्षके खंडका एक थंभ वना हुता तहां थंभनिकी पंक्ति अति भारी सो अनेक मनुष्यनितैं न उचै। ताहि कृष्ण उठायकरि मंडपपरि धरता भया। ये पुत्रके पराक्रम देखि मातापिता निशंक भए। जो याहि मारिवे समर्थ कोऊ नाहीं ॥ ६९ ॥ तव अपने स्थानक जाय सुखसूं वैठे। अर कंस व्रजविषैं विहारकरि मथुरापुरी आया। सो मथुरापुरीमें देवालयविषैं तीन रत्न अकस्मात् उपजे। नागशय्या, सिंहके आकारके हैं पाये जाके। अर पंचायन संख, अर धनुप, सो निमित्तज्ञानीने कंससूं कही। जो नागशय्यापरि आरोहण करै अर धनुप चढावै अर संख वजावै सो तेरा शत्रु है। सो कंसने शत्रुके निश्चयकरिवे अर्थि नगरमें घोषणा फेरी। जो पुरुप नागशय्यापरि आरूढ होय अर धनुप चढावै अर शंखका शब्द करै ताहि मेरी पुत्री अपराजिता परणाऊं। अर जो

अद्भुत है हीस जिनकी अर ऐसे उछले हैं मानों आकाशकूं उलंघेंगे अर आवर्त रूप करे हैं मानों गगनरूप समुद्रकी तरंग ही उठे हैं सो यह सेना वर्तुलाकार है अर स्वतः स्वभाव है पुरुषार्थ जिनमें अर दूजी बृषभनिकी सेना सुन्दर है मुख अर रोम जिनके कमल समान हैं नेत्र जिनके, अर महा मनोहर हैं ककुध जिनके अर सुन्दर है पूछ जिनकी अर मनोज्ञ हैं गात्र जिनके अर स्वर्णमई खुर अर सींग तिनकरि महा रमणीक अर विस्तीर्ण है कांति जिनकी अर चन्द्रमा समान है प्रभा जिनकी ॥ २४ ॥ ज्यों तुरंगकी सेना सप्त प्रकार त्योंही वृषभोंकी सप्त प्रकार सेना है अर सप्त प्रकारही भिन्न भिन्न रथोंकी सेना सो रथ पर्वत कर अभेद्य आकाशरूप समुद्र विषैं जहाज समान जिनकी प्रभा देखते सूर्यके रथकी कहा प्रभा ऐसी रथोंकी सेना अति मनोहर वर्तुलाकार शोभती भई ॥ २५ ॥ अर चौथी गजोंकी सेना सोई सप्त प्रकार भांति २ के गज अपनी मदधाराकरि वर्षते मानों मेघ समान ही है। ऊंची करी हैं सूंड जिन अर महा गर्जना करे हैं जैसे मेघ गाजे तैसेही यह गाजें हैं वडे वडे देव जिनपर चढे हैं यह गजनिकी सेना अनेक रचनाकूं धरे वर्षा ऋतुकी शोभाकूं विस्तारै है। ये गज तुरंग वृषभ सब देवही हैं तिर्यंच नाहीं मायारूप रचे हैं ॥ २६ ॥ अर पांचमी गंधर्वोंकी सेना सात प्रकार सो सप्त प्रकार महा कोमल सुर तिनकरि गानकी रचना करै हैं अर बीन, बांसुरी, ताल, मजीरा इत्यादि अनेक वादित्रोंके मिले हुए शब्द तिनकर पूर्ण किया है त्रिभुवनका उदर जिन अर देव देवांगना तिनके कानोंको रमणीक ऐसे गीत गंधर्व अपनी स्त्रियों सहित गावते भए ॥ २७ ॥ अर छठी नृत्यकारिणी सेना सो भी सात प्रकार ताविषैं देवांगना नृत्य करै हैं समस्त रसको पुष्ट करनहारी महा मनोहर गात्रोंकी चेष्टा तिनकरि देवोंके मन सोई भए कल्पवृक्ष तिनके आनंदरूप पुष्पोंकी मंजरी प्रफुल्लित करती संती आगे २ नृत्य करती संती जाय हैं यह नृत्यकारिणीनिकी सेना नितम्बके भारकर मंद मंद चलती अति शोभै है यह षट् सेना कही अर सातमी पियादेनिकी सेना सो भी सात प्रकार ते सबही नानाप्रकार आभूषण पहरे स्वतः स्वभाव पुरुषार्थको धरे अनेक प्रकार

प्रकारके भवनवासी महादेदीप्यमान इनके इंद्र २० अर प्रत्येंद्र २० तिनके साथ यह दशोंदिशाकूं प्रकाश करते गमन करते भए ॥ १६ ॥ अर व्यंतरोंके भेद ८ किन्नर १ किंपुरुष २ महोरग ३ गंधर्व ४ यक्ष ५ भूत ६ राक्षस ७ पिशाच ८ तिनके इंद्र सोलह अर प्रत्येंद्र भी सोलह तिनके पीछ सब सोलह तिनके पीछे सब चले अर देवनिकी देवी मनकी हरनहारी गीत, नृत्य. वादित्रविषै निपुण ते जिनराजका जन्म कल्याणकका उत्सव देखिवेकूं चाले भवनवासी व्यंतर इनके निवास अधोलोकविषैं भी हैं अर मध्यलोकमें भी हैं ॥ १९ ॥ अर ज्योतिषी देवनिके भेद ५ चंद्र, सूर्य, ग्रह, तारा, नक्षत्र तिनमें चंद्रमा इनका इंद्र अर सूर्य्य प्रत्येंद्र सो यह सब ही ज्योतिषी देव अपनी कांतिकरि पृथिवीविषै प्रकाश करते शोभते भए। सब देवनिके साथ अधिक शोभा विस्तारते सौर्यपुर आए ॥ १८॥ अर स्वर्ग सोलह तिनके इंद्र १२ अर प्रत्येंद्र भी १२ प्रथम स्वर्गका नाथ सौधर्म ताकूं आदि दे अच्युत पर्यंत सब ही इंद्र अपने देवनि सहित देवाधिदेवके दर्शनकूं आय एक एक इन्द्रकी साथ सप्तांग सेना सो सोलह ही स्वर्गनिके देव अति आनन्दके भरे इंद्रोंके साथ जिनेंद्रकी जन्मपुरी आये ॥ १९ ॥ सौधर्म्म इन्द्र अपनी इन्द्राणी आदि देवीनि सहित ऐरावत गजेंद्र पर आरूढ़ अति शोभता भया, कैसा है ऐरावत अनेक हैं मुख अर दांत जाके अर दान्तों पर सरोवर अर सरोवरोंमें कमलोंके समूह अर कमलोंमें पत्रावली अर कमलोंके पत्र पत्रमें महास्वरूप सुर सुन्दरी नृत्य करै हैं मानों वह ऐरावत गजेन्द्र चलता हिमाचल पर्वतही है यह ऐरावत तिर्यंच नाहीं देव है, देवमाया करि गजका रूप धरा है ॥ २० अर इन्द्रके साथ सप्त प्रकार सेना एक एक सेना सात सात प्रकारकी सो इंद्रको बेढ कर सब सेना चाली। कुलिश कहिये वज्र सो है मुख्य जिनमें ऐसे शस्त्र तिनकूं धरे मानों यह देवोंकी सेना शस्त्रनिकी बनी है तिनके मध्य कुलिशायुध कहिये इन्द्र सो अति सोहै है ॥ २१ ॥ सात सेनामें सात प्रकारकी तिसका व्याख्यान करे हैं वे तुरंग तिर्यंच नाहीं देवमाया कर अश्वरूप हैं अपनी शीघ्रता कर पवनको जीतैं ऐसी है चाल जिनकी अर

अथवा त्रैलोक्यरूपी पुरुष ही मानूं आनंदकरि नृत्य करै हैं कैसा है त्रैलोक्यरूपी पुरुष शिवपद जो मोक्ष सोई है शीस जाके अर पंचानुत्तर है मुख जाके अर नवअणुत्तर है ठोडी जाके अर नवग्रीव है ग्रीवा जाके अर षोडश स्वर्ग हैं शरीर जाके अर मध्यलोक हैं कटि जाकी अर अधोलोक है पांव जाके ऐसा त्रैलोक्यरूपी नटवा मानूं श्रीभगवानके जन्मविषैं नृत्य ही करै है नृत्यका करणहाराहू कटिपर कर धरिकरि नाचै है अर लोकहीका आकार ऐसा है जैसा कटिपर हाथ धरे पुरुषका होय ॥ भावार्थ–जिनराजके जन्मविषैं सब लोक हर्षकरि नाच उठ्या सब हीके आनंद भया ॥ १२ ॥ जा समय जिनेंद्रका जन्म भया ताही समय भवनवासीनिके शंखका शब्द बिना वजाया अकस्मात् होता भया अर व्यंतर देवनिके अकस्मात ढोलका शब्द भया अर ज्योतिषी देवनिके सिंहनाद वाजि उठे अर कल्पवासी देवनिके स्वयमेव घंटाका नाद भया अर जिनवरके जन्मके प्रभावतैं चतुरनिकायके देवनिके विना वजाए वादित्र शब्द करते भए अर देवनिके अधिपति सौधर्म इंद्रादि अर असुरनिके अधिपति चमरेंद्रादिक जिनके सिंहासन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए तब वे अवधिविचारि भगवानका जन्म कल्याणक जानि अति आनंदके भरे चतुरनिकायके देवनिसहित भरतक्षेत्रकी ओर चले अर सोलह स्वर्गके ऊपर नवग्रैवेयिक नव अणुत्तर पंचानुत्तर तिनके अहमिंद्र विशुद्ध है दृष्टि जाकी ते प्रभुका जन्म जानि सिंहासनतैं उठि सात पैंड जायकरि जिनराजके चरणारविंदकूं नमस्कार करते भए अहमिंद्रनिका यही नियोग है सो निज स्थान तजि कर क्षत्र विषैं विहार न करैं पांचों कल्याणकविषैं वहां तिष्ठे ही वंदना करैं, कैसैं हैं अहमिंद्र मुकुटकी अणी ताके संघट्टकरि अर दैदीप्यमान आभरणके रत्ननिकी किरणनिकरि किया है सकलदिशामें प्रकाश जिनि भगवानके महाभक्त हैं सदा प्रभुका ध्यान ही करै हैं अर तहां तिष्ठे ही अढाईद्वीपविषै जिनेंद्र अर मुनींद्र तिनिकी वंदना करै हैं अर चतुरनिकायके देव तिनमें भवनवासी दशप्रकारके असुरकुमार १ नागकुमार २ विद्युतकुमार ३ पवनकुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ सुवर्णकुमार ७ उदधिकुमार ८ मेघकुमार ९ दिक्कुमार १० ये दश

कनककूं जीतै प्रभा जाकी ऐसे अपने शरीरकी प्रभाकरि दशों दिशाविषैं विजुरीकी न्याईं उद्योत करती भई।

भावार्थ—विजुरी हू ठौर ठौर चमके अर यह हू महल महलमें भासै ॥६॥ भगवानके गर्भावतारविषैं राजा समुद्रविजय महासमुद्रकी लीलाकूं धारता गाजता भया। कैसा है समुद्रविजय रूप समुद्र बड़े बडे गजराज सोई हैं मगरमच्छ जाविषैं अर उछलती ऊंचे तरंग सोई हैं मीनोंकी पंक्ति जा विषैं अर महासुंदर रथ तेई हैं जहाज जाविषैं अर अति आज्ञाकारी भये हैं राजा तिनकी सेना सन्मुख चली आवै है सोई है नदियांनिका आगम जाविषैं नदीनिमें तरंग उछलै हैं अर सेनानिमें तुरंग उछलै हैं जिनेश्वरके माता पिता सुखतैं नव मास पूर्ण करते भये कैसे हैं माता पिता सुर नर विद्याधर सबनिकरि पूज्य हैं अर परस्पर बन्ध्या है परम स्नेह जिनके राजा तो राणीकूं अति चाहै अर रानी राजाकूं अति चाहै। अर कैसे हैं माता पिता इंद्रकी आज्ञाकरि सेवाविषैं तत्पर जे देवदेवी तिनकरि किया प्रचुर विभव ताकरि मंडित हैं ॥ ८ ॥ नव महीने व्यतीत भये तब शुभ तिथिविषैं चित्रा नक्षत्रमें रात्रिसमय शुभ वेला सबही ग्रह जासमय शुभ हुते तासमय वह जगज्जननी शिवदेवी शिवलोकका देनहारा जो बुद्ध परब्रह्म जगतविषैं उद्योत करणहारा जगतके जीवनिका मन हरणहारा जगदीश ताहि जनती भई। वे भगवान नेमिनाथ हरिवंशके आभूषण तीनज्ञानरूप नेत्रके धारक एकहजार आठ लक्षणनिकरि शोभित है शरीर जाका नीलकमल समान श्यामसुंदर शरीरके धारक अपनी कांतिकरि पृथ्वीविषैं किया है प्रकाश जिनि, दशोंदिशा ज्योतिरूप होयगई रात्रि समय प्रसूतिगृहविषैं मणीनिके महादीपक तिनकी कांतितैं बहुत गुणी कांति आपके तनकी फैल गई मानूं कोटिक सूर्य उगे ॥९॥ जिनेंद्रचंद्रके उदयविषैं जगतमें हर्षरूप समुद्र वृद्धिकूं प्राप्त भया। जंबूद्वीप संबंधी पृथिवी अर समुद्रका तट सोही हैं वस्त्र जाके अर जंबूद्वीपकी वेदिका सोई है कटिमेखला जाके अर गिरिराज जो सुमेरु सोई है नाभि जाके अर षट् कुलाचल वेई हैं कंठ जाके अर कुलाचलनितैं निकसी गंगादिक नदी सोइ हैं हार जाके ऐसी धरतीरूप स्त्री प्रमोदकरि चलायमान भई सो मानूं नृत्य ही करै है ॥ ११ ॥

सुनकरि अतिहर्षित चित्त भई पुत्र गोदहीमें आया ऐसा जानकरि जिनपूजादिक प्रशंसा योग्य शुभ क्रिया करती भई कैसी हैं वह शुभ क्रिया सब जीवनिके मनकी हरनहारी कल्याणकी दायक हैं ॥४६॥ यह जिनराजकी माताके स्वप्न फलका व्याख्यान पवित्र स्तोत्र जो प्रभात संध्याविषैं निरंतर पढे स्मरण करे सो जिनराजकी लक्ष्मीकूं प्राप्त होय ॥४७॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ स्वप्नकथनवर्णनोनाम सप्तत्रिंशः सर्गः ॥ ३७ ॥

अथानंतर—इंद्रकी आज्ञाकरि कुवेर जिनेंद्रके मातापिताकूं महाभक्तिके समूहतैं तीर्थनिके जलकरि अभिषेक कराय सुगंध द्रव्यसूं चर्चकरि अद्भुत वस्त्राभूषण पृथिवीमें दुर्लभ तिनकरि पूजता भया। माताका गर्भ दिक्कुमारीनिने पहिले ही सोधा हुता ताविषैं शिवदेवी प्रभुकूं धरती भई, कैसा है जिनरूप चंद्र बधुजनरूप समुद्र ताकी वृद्धिका करणहारा अस्त किया है आतापका उदय जानै, ताहि माता शिवदेवी जगत्के कल्याणके अर्थ उदरविषैं धारती भई जैसैं पूर्वदिशा चंद्रमाकूं धारै ॥ २ ॥ जब प्रभू गर्भमें पधारे तब गर्भकी और ही प्रभा होय गई माताके गर्भके योगतैं त्रिवली भंग न भई अर उष्ण स्वास निकसै अर अधरपल्लवका रंग न घट्या आलस्य न उपज्या मातारूप वेल ऐसी नाजुक कुचरूप गुच्छनिका भार न सम्हारि सकै तो गर्भका भार कैसैं सम्हारे तातैं कृपानिधि जो भगवान् सो फलरूप या वेलके लागे। परंतु याकूं भाराक्रांत न करी।

भावार्थ—यह पद्मनी रूप सुंदर बेल पुष्पहीका भार न सम्हारै तो फलका कैसे सम्हारै। तातैं प्रभु याके गर्भमें अलिप्त रहे। याहि गर्भका भार न भया. जा दिनतैं जिनेश्वर उदरमें आये वाही दिनतैं माताका मन सकल जीवनिकी दयाविषैं अति प्रवर्त्या अर मनविषैं निरंतर तत्वहीका विचार रहै अर बचन सब जीवनिके हित भाषणविषैं अर संदेह विवारणविषैं प्रवर्तें। अर शरीर व्रतरूप आभूषणविषैं अर विनयके पोषणविषैं प्रवर्त्तें। जिनराजके अतिशयतैं माता शिवदेवीके सब उचित ही उचित रीति होती भई ॥ ५ ॥ वह माता

रत्ननिके सिंहासन देखवेकरि द्रेव अर दानव तिनके समूहकरि जे दैदीप्यमान जे मणि तिनके उद्योतकरि युक्त जो मुकुट तापर लगाए है कर युगल जिनि। भावार्थ–सीसके मुकुट नवाए हैं माथा अर हाथ जोडि वारंवार नमस्कार करेंगे सबतैं ऊंचा, सब करि पूज्य जो सिंहासन तापर तेरा पुत्र विराजेगा अर हे कमलवदनी! तैंने देव विमान आवते देखे सो विमाननिमें मुख्य जो पंचोत्तर विमान तिनमें जयंत नामा विमानतैं प्रभू तेरे उदरमें आए हैं विमानोंके नाथ जे सुरनाथ ते जाकी सदा सेवा करै हैं अर सुरनर मुनि सबनिकरि सेवनीक हैं चरण जाके महा उदयका धारक त्रैलोक्यमें गरिष्ठ ऐसा जिनचंद्र तेरे पुत्र होयगा ॥३९॥ अर हे हंसगामिनी! तैंने जो नागेंद्रका भवन भूमिभेदकरि निकसता देख्या सो तेरा पुत्र भवपिंजरका भेत्ता मतिश्रुति अवधि तीन ज्ञानका धारक सकल विधिका वेत्ता होयगा ॥ ४० ॥ अर हे देवी! तैंने नाना प्रकार दैदीप्यमान किरणनिके समूहकरि दिव्य रत्ननिकरि राशि देखी जाके अवलोकनतं तेरा पुत्र गुणरूप रत्ननिकी राशि होयगा अर जे शरणार्थी हैं तिनका आश्रय होयगा ॥ ४१ ॥ अर हे वल्लभे! निर्धूम अग्निकी ज्वाला आकाशविषैं लग रही है शिखा जाकी ऐसी प्रदक्षिणा करती देखी ताका यह फल है तेरा पुत्र शुक्लध्यानरूप अग्निकरि सकल कर्मरूप बनकूं भस्म करेगा ॥ ४२ ॥ हे सौभाग्यवती! तेरे पुत्रके प्रभावतैं ये सुरेश्वर सामान्य राजाकी नाईं तेरी आज्ञा सिरपर धारेंगे, कैसे हैं सुरेश्वर किरीट कहिए मुकुट अर कुंडल तिनकूं आदि देय अद्भुत हैं आभूपण जिनके जो अपने आज्ञाकारी सेवक हैं ॥ ४३ ॥ हे सुंदरी! तेरे पुत्रतैं सुरेंद्रकी सुंदरी सची आदि तेरी सेवाविषैं उद्यमी हैं ढीले होय गये हैं केशनिके बंधन जिनके पुत्रके अर लहलहाट करै हैं माला जिनकी कटिमेखला अर नूपुरनके रमणीक हैं शब्द जिनके ॥ ४४ ॥ हे शशिमुखी! तू यह प्रतीत कर पवित्र हैं चरित्र जिनका ऐसे जिनेन्द्र सूर्यके जानिने करि तू अपने वंशकूं अर आपकूं अर मुझकूं अर या जगतकूं पवित्र करैगी, शोभित करैगी ॥ ४५ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक तैं कहै हैं हे श्रेणिक! वह शिवदेवी सौभाग्वती अपने पतिके मुख यह स्वप्नके फल

रूप रथका धोरी वृषभ समान है स्कंध जाके सो मोक्ष मार्गका चलावनहारा होयगा अर हे केहरिकटिनी ! सिंहके देखनेसे अत्यंत वीर्यका धारी महा मदोन्मत्त हस्तीसमान जे मिथ्यादृष्टि तिनके मदका हरनहारा महा धीर एक अद्वितीय वीर तपोधनका ईश्वर होयगा ॥ २९ ॥ अर लक्ष्मी अभिषेक करती देखी सो जन्म समय ही सुरेंद्र गजेंद्र पर आरूढ कर गिरेंद्रके मस्तक विषै क्षीर सागरके जलकर जाहि न्हवावेंगे अर आप सुमेरु सारखा स्थिर होयगा अर हे प्राणप्रिये ! पुष्पोंकी दो सुगंध माला अम्बर विषैं लटकती देखी जिसका यह फल है तेरा सुत सुगंध शरीरका धारक होयगा अर अनंत दर्शन ज्ञानका धारक लोक अर अलोका ज्ञाता दृष्टा होयगा अर हे चन्द्रवदनी ! तैंने स्वप्नमें चन्द्र देखा सो तेरा पुत्र जिनेंद्र चंद्र जगतका तिमिर हरनहारा निरंतर आल्हाद करता दर्शन योग्य होयगा अर हे सुदर्शन कहिए सम्यक् दर्शनकी धरनहारी अथवा सुन्दर है अवलोकन जाका ऐसी तू सो तेरे सूर्यके देखनेसे जगतका सूर्य पुत्र होगया तेरा पुत्र अपने प्रचंड तेज करि समस्त तेजस्वियोंका तेज जीत करि जगतविषैं तेजोनिधि होयगा अर अन्त वाह्य तिमिरको हरेगा ॥३३॥ अर हे मृगनेत्रे ! तैंने दो मच्छ जलविषैं केलि करते देखे तिनके देखवेसे तेरा नंदन इंद्रियोंके भोग अर उपभोग त्यागकर सिद्धलोकविषैं अनंत सुख रसका भोगता होयगा ॥ ३४ ॥ अर हे प्रियभाषिणी ! तैंने दो पूर्ण कुम्भ देखे सो तेरा घर नव निधि करि पूर्ण होयगा नवनिधिका नाथ तेरे नंदन होयगा पूर्ण हैं मनोरथ जाके ऐसा तेरा अंगज कहिए पुत्र उसके प्रभावसे सब जगत् आनंद रूप होयगा तेरे संपूर्ण मनोरथ सिद्ध भए अर हे पतिव्रते ! अनेक कमलके समूह कर भरा सरोवर तैंने देखा सो समस्त लक्षणनिकरि मंडित तेरा पुत्र महा ज्ञानी तृष्णा रहित अनेक भव्य जीवोंकी तृष्णा दूर कर निर्वाण प्राप्त करेगा अर हे विशालनेत्रे ! तैंने अमृत मई महा गंभीर समुद्र देखा तिसका यह फल है तेरा पुत्र समुद्र समान गंभीर बुद्धि होयगा नीति रूप महा नदियोंसे भरा जो सुखरूपसमुद्र जिसका अमृत रस अनेक भव्य जीवोंको प्यावेगा तेरा पुत्र जगत गुरु धर्मका उपदेशक भव्यनिकूं भवसागरतैं तारेगा अर हे सुंदरवदनी !

अर पीत जे पुष्पराग मणि इत्यादि अति श्रेष्ठ मणि तिनकी महा शिखा तिनकरि प्रकाशरूप हैं जिनके नाना-प्रकार रंगका अकाशविषैं इंद्रधनुष होय रह्या है। अर सोलहवें स्वप्ने वह शिवदेवी राजा समुद्रविजयकी रानी निर्धूम अग्नि देखती भई कैसी है अग्नि विकराल है शिखा जाकी अर दशों दिशा विषै प्रकाश है जाका अर महा पवित्र है कांति जाकी अर सौम्य है स्वरूप जाका मानूं शरीर धरे साक्षात् लक्ष्मी ही आनन्दकी बढावन-हारी है ॥ २१ ॥

यह सोलह स्वप्ने माता-जाके पीछे एक श्वेत हस्ती मुखमें प्रवेश करते देख्या मानूं भगवान नेमिनाथ ही इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान करते जयंतनामा विमानतैं चयकरि माताके गर्भमें आए। कार्तिक शुदि छठके दिन गर्भावतार भया सो मानूं यह तिथि ही त्रैलोक्यविषै प्रसिद्ध करी ॥ २२ ॥ यह माता पुनः पुनः जागरणके अंतर ये सोलह स्वप्ने देखकरि जय जय शब्द करती अर गीतगान मंगल तिनकरि जाग्रत होय आलस्यरहित सेजकूं तजती भई ॥२३॥ प्रभातसमय देहकृत्यकरि मंगलरूप वस्त्राभरण पहरे हर्षकी भरी पतिके निकट जाय प्रणाम करती भई राजा बहुत आदर किया राजाके समीप यह जगतकी माता सोलह स्वप्ने देखे हुते तिनका फल पूछती भई ॥२४॥ सो राजा स्वप्नका फल कहै है। हे प्रिये ! आज छै महीने भये तेरे घर रत्ननिकी वृष्टि होय है अर दिक्कुमारी देवी जिनकी आर्थि तोहि सेवैं हैं वह त्रिभुवनका स्वामी तीर्थका कर्त्ता तेरे पुत्र होयगा स्वपननिका फल कहा कहै हैं ? गजगामिनी तू तीर्थंकरकी जननी तेरे भगवान पुत्र होंयगे वह महंतोंका महंत जगत्रयका गुरु तेरा बालक होयगा तेरे भागकी कहा प्रशंसा करिए सो हे तनूंदरी महा सुकुमार है अंग जाका ऐसा शुक्लवर्ण हस्ती देखा सो तेरा पुत्र सबमैं श्रेष्ठ सबका एक अधिपति गजराजकी चालका जीतन-हारा सर्वोत्कृष्ट होयगा अर श्वेत बृषभके देखवेकरि कलंकरहित है बुद्धि जाकी सो यह जगत्का गुरु अपने गुणों कर अपने कुलको अर तीन लोकको शोभित करेगा जैसे गायोंके कुलको धोरी बृषभ शोभित करै। तेरा पुत्र धर्म

अद्भुत रसका प्रवाह बहै है अर नानाप्रकारके आभूषण पहिरे अति सुंदर हैं अंग जिनके ऐसी देवांगनानिके समूह नानाप्रकारकी नृत्य कलाकरि नृत्यकी रचना करै हैं।

भावार्थ—याभांति सुरगिरिपर जगत्‌गुरुका अभिषेक भया अर देवनिने स्तुतिकी नृत्य भये जन्मकल्याणकका उत्सवकरि सौधर्मस्वर्गका अधिपति आनंदके साथ जिनेंद्रकूं ऐरावतके ऊपर चढायकरि सौर्यपुरकी ओर चाले जिनेंद्र महाधीर हैं जिनके सिरपर छत्र फिरै हैं अर चमर ढुरै हैं जाकी कीर्ति देव देवी गावै हैं ऐसे जिनेंद्रकूं गिरेंद्रतैं सुरेंद्र गजेंद्रपरि आरूढकरि सौर्यपुरकूं ले चाले सो सौर्यपुर मृगेंद्र समान जे यादवनिके इंद्र तिनकरि भरचा है आनंदके भरे चतुर्निकायके देव बारंबार प्रणाम करते स्तुति करते गीतगान करते जगतविषैं आनंद बिस्तारते भगवानके चरण कमलकी सेवाविषैं सावधान तिनसहित सुरेंद्र ऐसे शब्द करते प्रभुकूं लावै हैं हे प्रभु! समस्त लोककूं उलंघे ऐसे हैं अतिशय तिहारे अद्भुत ऐश्वर्यके धारक जे शिवदेवीके नंदन तुम नांदो विरधो फूलो फलो चिरकाल जीवो इत्यादि पवित्र वचननिकरि स्तुति करिवे योग्य भगवान तिनका स्तवन करते सुर असुर सौर्यपुरकी ओर चले आवै हैं अर कुलाचलनितैं उपजी जे नदी तिनका निर्मल जल ताकी लहरकरि शीतल अर भोगभूमिके कल्पवृक्ष तिनके नानाप्रकारके पुष्पनकरि महा सुगंध अर मंद मंद विचरती ऐसी शीतल मंद सुगंध पवन बाजै है जाकरि प्राणीनिके खेद दूर होय सो पवन प्रभुके साथ साथ अनुकूल चली आवै है॥ भावार्थ—पवन पीछे पीछे चली आवै है सामने नहीं आवै है प्रभुका कोमल अंग ताहि आलिंगकरि पवन महा मनोहर भई है भगवान तत्कालके बालक योग्य वस्त्र पहिरे अर आभूषणनिकरि मंडित अति सुंदर है माला उरविषै ऐसे अद्भुत बालक कल्पवृक्ष अपनी परम शोभाकरि सबकी शोभा जीतनहारे श्याममूर्ति महासुगंध कर्पूर चंदनका लेप किए कैसे शोभै हैं जैसा चांदनीकरि संयुक्त नीलाचल शोभै है॥

भावार्थ—आप तो नीलाचल समान हैं अर कर्पूर चंदनका लेप चांदनी समान है वे भगवान लक्ष्मीधर

योग्य हो या पृथिवीविषैं सबतैं ऊंचा ऊर्द्धलोक है सो उर्द्धलोकके निवासी देव तिहारे किंकर हैं उर्द्धलोककूं तजकरि या मध्यलोकविषैं तिहारे पायन आवै हैं तुम तत्कालके जन्मे तोहू त्रैलोक्यतैं अधिक है बल तिहारा हे जीवनिके हितू तीन भवनके गुरू सबकरि स्तुति करिवे योग्य नेमि जिनेंद्र हम इंद्रादिक देव भक्तिके भारकरि तुमकूं नमस्कार करै हैं सो हमकूं तुम अविनाशी सुख देवहु ॥ १० ॥ हे कामरूप गजेंद्रकूं मृगेंद्रसमान तिहारे तांई नमस्कार अर हे क्रोधरूप फणेंद्रकूं पक्षीनिके इंद्र गरुडसमान तुमकूं नमस्कार अर हे मानरूपगिरिकूं वज्रसमान तुमकूं नमस्कार अर हे लोभरूप महावनकूं दावानलसमान तिहारे तांई नमस्कार । हे ईश्वरताके धरणहारे धीर ! तिहारे तांई नमस्कार, अर हे सर्वव्यापक विष्णु तिहारे तांई नमस्कार हे अनंतशक्तिकरि युक्त देव ! तिहारे तांई नमस्कार है, हे अरिहंतदेव ! हे वीतराग ! हे सर्वके वेत्ता सर्वज्ञ ! अर हे आचिंत्यपदके स्वामी ! तिहारे तांई नमस्कार हे ब्रह्मपदके कारण परब्रह्म तिहारे तांई नमस्कार । याभांति सत्यवचनके समूहनिकरि देवनिके समूह जिनराजकी स्तुति करि प्रणामकरि महाविकराल जो भवसागर ताके तारक जे नेमि तीर्थेश्वर तिनतैं यही वर मांगते भए जो हमकूं भवभवविषैं तिहारा भक्ति देवो यह तिहारी भक्ति ही भवसागरतैं तारणहारी है ॥ १२ ॥ अर पूर्णज्ञानकी देनहारी है सो या भक्तिके प्रसादकरि हमकूं केवलबोधकी प्राप्ति होवहु ।

अथानंतर—खेदरहित जे देव विशेष है बुद्धि जिनकी तिनने मथ्या है महा अमृतरूप क्षीरसमुद्र समान अमृतका अति पान किया सो यातैं उद्गीरण भया मेरुके खंडखंडविषैं क्षीरसागरका जल विस्तर्‍या है अर अतिशयपनेकरि बाजै हैं अनेकप्रकारके वादित्र मृदंग बीन भेरी आदि अनेक तिनका गंभीर शब्द ताकरि पूर रहा है सुमेरुका सकल स्थल वादित्रनिके शब्दकरि सब दिशा पूर्ण होयगई ऐसा जिनेंद्रका जन्माभिषेक ताका उत्सव ताकी घोषणाहीके अर्थि मानूं सब दिशानिमें वादित्रनिका शब्द विस्तर्‍या है सब दिशा गुंजार कर रही हैं अर नृत्य करै हैं देव देवांगना अर विद्याधरनिके समूह उतंग सो संगीत ताके नादकरि अति मनोहर शृंगार हास्य

अर अभव्य जननिकरि यह सुख अलभ्य है जो निर्वाणपदका सुख है सोई सुख है अर सुख नाहीं वह सुख अतींद्रिय है अर अखंड है अविनश्वर है जे भगवान केवली जगतके ईश्वर महाप्रभु तिनकरि वह सुख सेवने योग्य है देवेंद्र नागेंद्र नरेंद्र आदि देव मनुष्यनिका सुख ता सुखके अनंतवें भाग नाहीं ॥ ४ ॥ हे प्रभु ! उत्पाद व्यय ध्रौव्य वही है स्वभाव जिनका ऐसे सकल पदार्थ तिनका निरूपण करणहारा एक तिहारा ही मार्ग है अर तिहारे ही मार्गके सेवनतैं ये प्राणी परमपद पावै हैं अन्यमतके आश्रयतैं परमपद नाहीं मिलै है तातैं तिहारा शासन ही सेवने योग्य है ऐसा निश्चयकरि या जगतविषैं जे जीवनिके समूह तिहारी भक्तिविषैं, स्तुतिविषैं निरंतर सावधान होय हैं तेई कृतार्थताकूं प्राप्त होय हैं । हे जिनेंद्र ! जीवनिके कृतार्थ करणहारे तुमही हो । हे प्रभु ! तुम जन्महीतैं दश अतिशय धरै हो सब ही जीवनिकूं हितकारी परमप्रिय हैं वचन जिनके ऐसे तुम अर दशों दिशाकूं सुगंधकरणहारा महासुगंध है शरीर तिहारा । अर समचतुरसंस्थान ३ अर वज्रवृषभनाराचसंहनन ४ अर अद्भुत रूप ५ एकहजार आठ लक्षण तिहारे तनमें ६ अर दुग्ध समान रुधिर ७ अर पसेवरहित ८ अर अतुल बल ९ निर्मल शरीर जाके देहविषै मलमूत्र नाहीं १० हे स्वामी ! सब विभावनिकूं जीतनहारी जो तिहारी बुद्धि ताकरि तुम मदनके जीतनहारे हो अर सकल पूज्य हो अर तिहारे जन्मकरि यह क्षेत्र पूज्य भया । यह पृथिवी सुखरूप आंसुवनितैं भर गई ॥

भावार्थ—सकल भूमिमैं सुखकी वृद्धि भई अर छहों ऋतुके धान्य फल गए तुम अनंतगुणकरि पूर्ण हो तिहारे गुण सकल लोकमें न समावें । हम गुणनिकी वांछातैं तिहारी आराधना करै हैं हे नाथ ! यह अचलनाथ कहिए मेरु सो यद्यपि निन्याणवें हजार योजन पृथ्वीतैं ऊंचा है तथापि तुम समान उच्च नाहीं यह सुमेरु उच्च है अचल है तथापि तिहारे स्नानका आसन होता भया सो यह उचित ही है जे बुद्धिमान हैं ते बडेनिकी बराबरी न करै हैं ईश ऐसा अप्रमाण अनंत अतुल्य प्रभुत्व तिहारा मान ही है धन जिनके ऐसे देव अर मनुष्य तिनकरि आप मानिवे

सो ज्ञानदृष्टिकरि समस्त स्थावर जंगमरूप यह जगत ताकूं देखो हो अर दर्शन ज्ञान चरित्ररूप निर्मल रत्न तिन-करि विराजमान हो पूर्वभवविषैं उग्रतपकरि युक्त सोलहकारण भावना भाय तीर्थंकर प्रकृति उपार्जी सो तीर्थंकर नाम प्रकृतिरूप अति विशिष्ट अद्भुत पुण्यका महा उदय सोई भया तीव्र पतनका वेग ताकरि चलायमान यह देव-निके समूह सोई भये कुलाचल तिनकरि सेवित हैं चरण कमल तिहारे अर तुम युगविषैं मुख्य तिहारे मुखकम-लका दर्शन करते करते तृप्ति न होय है। भव्यजीवरूप भंवरनिकी यही अभिलाषा है कि आपके मुखरूप कमलका दर्शन करवोही करैं धीर पुरुषनिके स्तवनकी ध्वनि अर दुंदुभि वादित्रनिका नाद ताकरि प्रगट भया है शुद्ध यश तिहारा ताकरि पवित्र भया है भरतक्षेत्र हरिवंशरूप मोटा उदयाचलपर्वत ताकी शिखा मणि बालदिवाकर अपनी दीप्तिकरि जीती है अनेक सूर्यनिकी दीप्ति जिनि अर महाकांतिका धरणहारा शरीर ताकरि जीती है अनेक पूर्ण चंद्रमानिकी कांति जिनि इंद्रनील मणीनिकी ज्योतिका मंडल ताकरि मंडित करी हैं दशों दिशा ऐसा मुखमंडल तिहारा ऐसे नेमिजिनेंद्र सो तिहारे ताईं नमस्कार। तुम तीनभवनके गुरू परमेश्वर सब जीवनिपर दयालु अपने आत्मकल्याणके अर्थि अर परोपकारकी बुद्धिकरि या भवतैं तीन भव पहले जैसा जिन सूत्रविषैं गया है यतिका धर्म सो आदर्या जाकी बराबर तीनलोकमैं और वस्तु नाहीं, महा कल्याणका कारण मुक्तिका पंथ सो तुम विधि पूर्वक पालन किया जीवनिकूं उपदेश दिया नानाप्रकारके तप विधिपूर्वक करि कुकर्मरूप मल समस्त धोया अर निर्मल भावकरि तीर्थंकर पद उपार्ज्या सो पद सफल जगतकरि पूज्य है ॥ २ ॥ हे जगतवल्लभ! अब तुम अपार दुःखका भर्या जो भवसमुद्र ताहि उलंघकरि मोक्ष पधारोगे, कैसा है मोक्षपद समस्त जगतका शिखर है जाके अग्र-भाग अनंत गुणनिके आश्रय सिद्ध परमेष्ठी विराजै हैं ताकरि पाई है महा महिमा जानैं अर जा स्थानकूं महामुनि परम पद कहै हैं वह एक अविनश्वर आत्महित है अर वह महंत पुरुषनिकरि पूज्य है अर महंत पुरुषनिकरि ही पाइये है। अर निरंतर है उदय जाका अर अंततैं रहित है महा प्रबल बडे पराक्रमी धीर पुरुष तेई वासुखकूं पावैं हैं

ऐसे शोभै हैं मानूं गरुड अर हंसकी पंक्ति ही अनेकप्रकार चली आवै है गरुडके अर हंसके दोऊ ओर पर हैं अर कलशनिके दोऊ पसवारे हैं कलश तो पीतवर्ण है सोई गरुडका स्वरूप जानो अर क्षीरोदधिका जल अति उज्ज्वल हंसका स्वरूप है ॥ ४९ ॥ इंद्रकी भुजाकरि उठाये मेघसमान गाजते सहस्र है गणना जिनकी ऐसे पवित्र जलके भरे प्रभुके शिरपर अखंड वर्षते मानूं सुमेरुकूं धवल वर्णही करै हैं यद्यपि सुमेरुका वर्ण धवल नाहीं पीत है तथापि भगवानके आश्रयतैं धवल कहिए उज्वल भया है, जो शुद्धका आश्रय करै सो शुद्ध होय यह निश्चय है सो जिनराजके आश्रयतैं गिरिराज धवल भासै है ॥ ५० ॥ सौधर्म इंद्र जब जिनेंद्रका अभिषेक किया तब सबही निर्मल जलकरि जिनराजका अभिषेक करते भए। जिनशासनके राग करि उपज्या है प्रशस्त ज्ञान जिनके, सो वीतरागकी भक्तिविषैं सदा सावधान हैं अल्प रहा है संसार समुद्र जिनके जे भक्तनिके लक्षण सिद्धांतविषैं कहे हैं सो सुरेंद्रनिमें हैं ॥ ५१ ॥ अर शची आदि इंद्रानी भगवानके तनकूं अंगोछती भई अर सुगंध जलकरि अभिषेक किया मानूं वह कलश इंद्राणीनिके कुचकुंभ समान सुंदर हैं एक साथ सब इंद्रानी जिनेंद्रका अभिषेककरि सुगंधका लेप करती भई अर सुंदर वस्त्र अर मणीनिके आभूषण अर कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला प्रभुकूं पहराई कल्याणके पर्वत यदुपति तिनकूं शृंगार अरिष्टनेमि नाम धरि इंद्रादिक सुर असुरनि करि सहित प्रदक्षिणाकरि प्रभुकी स्तुतिकरते भए। कैसे हैं प्रभु तीन लोककी लक्ष्मी जिनके चरणारविंदविषैं आय प्राप्त भई है ॥ ५२ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ जन्माभिषेकवर्णनोनाम अष्टत्रिंशःसर्गः ॥ ३८ ॥

अथानंतर—सुरपति जिनपतिकी स्तुति करै है, हे त्रैलोक्यनाथ! तुम बिना पढाये सकल श्रुतके पारगामी मतिज्ञानके धारक अवधिके प्रकाशक निर्मल ज्योतिके धारक मोहनिद्राकरि रहित विशिष्ट है ज्ञानलोचन तिहारे

पांचसौ धनुषका ऊंचा सिंहासन है ताविषैं प्रभुकूं पधराय तहां ग्रहे है पूजाके उपकरण अर देवांगनाके समूह चौगिर्द गीत गान करै हैं अर नटवनिके समूह नृत्य करै हैं महा उत्कृष्ट रस हावभाव लय ताविषैं स्वर्गवासी अनुरागी होय रहे हैं ॥ ४३ ॥ जहां ढोल बाजे हैं शंखनिका शब्द होय रह्या है अर सिंहनाद अर भेरी तिनके शब्द होय रहे हैं सो वादित्रनिकी ध्वनिकरि गिरेंद्रकी गुफा नादरूप होय रही है मानूं जिनेश्वरके गुणनिकरि समस्त जगत्का उदर ही भर गया है। जिनेंद्रके गुण भव्यनिके श्रवणनिकूं महा सुखदाई है अर दशो दिशामें फैल रहे हैं ॥ ४४ ॥ अर समस्त आकाश सुगंधकरि आच्छादित भया नानाप्रकारके अबीर अर धूपके पटल अर पुष्पनिके समूह महा सुगंध महा मनोहर पांडुक वनमें विस्तरे सो पांडुकवनकी पवनकरि दशों दिशा सुगंध रूप होय गई ॥ ४५ ॥ ग्रहे हैं अनेक शरीर जाने। अर देवनिकी सेना जाकी ऐसा इंद्र सो भक्ति करि जिनवरका महा अभिषेक आरंभता भया देवनि करि लाये मणि स्वर्णमई कलश दुग्धरूप क्षीरसागरके शुभ सुगंध जलकरि पूर्ण तिनकरि शचीका पति जगतपतिकूं न्हावावता भया अर आनंदकरि भरी जो देवनिकी पंक्ति अर देदीप्यमान मणीनिके मनोहर कलश ते हैं तिनके करविषैं तिन कलशनिके जलके प्रवाहकरि सुमेरु सब ओर आच्छादित होय गया सो कैसा सोहै है मानूं पांचवां क्षीरसागर सुमेरुतैं अति दूर है ताहीकूं जिनराजके प्रभावकरि देव अपने वाहुरूप रससनिकरि ल्याये हैं ताहीविषैं सुमेरु तिष्ठता है ऐसा सोहै है ॥ ४७ ॥ देव कलशनिकूं हाथनि हाथ लावैं हैं वह वाहि पकडावै है वह वाहि पकडावै है अर परस्पर यह शब्द होय रहे हैं तूं कलशकूं ले तू कलशकूं ले मेरा सन्मुख छोड ऐसा काननिकूं मनोहर शब्द देवनिके होय हैं देवनिके समूहकरि वह कलशनिकी पंक्ति शोभासहित पांडुकवनमें आवै है जैसैं हंससिनकी पंक्ति आवै ॥४८॥ स्वर्ण अर मणिके कलश क्षीरोदधिके जलतैं भरे देवनिकी शीघ्र चालकरि चले आवैं हैं सो ऐसे शोभै हैं मानूं चंद्र सूर्यकी पंक्ति ही हैं।

भावार्थ—कलश तो सूर्यकी प्रभाकूं धरै उज्वल जल चंद्रमाकी प्रभाकूं धरै है अर वह कलश आकाशविषैं आवते

की हरण हारी जिन जननी रूप मेघमालाके समीप विजुरी समान चमकती सोहै है ॥ ३५ ॥ अर रुचिकप्रभा १ रुचिका २ रुचिकोज्वला ३ यह सम्पूर्ण विद्युतकुमारीनिमें मुख्य अर विजयादिक चार यह भगवानके जात: कर्मका उत्सव करती भई। अर चतुर्निकायके देव सब ही शीघ्र ही आयकरि सौर्यपुरका प्रदक्षिणा दे नगरमें आए कैसा है नगर कुवेरकरि निर्मापा अद्भुत शोभाकूं धरै है। मानूं वह नगर इंद्र लोककी शोभाके जीतवे हीकूं प्रगट भया है सो इंद्र सहित सब देव जिनके जन्मपुरकूं देखते भए ॥ ३७ ॥ अर इंद्र देवनि सहित नगरमें प्रवेशकरि राजमहलमें आय खडे रहे सब ही रीतिके वेत्ता इंद्रने भगवानके लायवेकूं शचीनामा इन्द्राणीकूं आज्ञा करी सो प्रभुके लायवेकूं प्रसूतिगृहमें गई ॥ ३८ ॥ तहां मायामई बालक माताके समीप पधराय माताकूं सुख निद्रा अणाय माता अर पुत्रकूं प्रणामकरि अपने कोमल करनितैं जिनेंद्रकूं बाहर लाय अपने पतिकूं सोंप्या तब इंद्र सीसनवाय दोऊ हाथनितैं प्रभुकूं लिए जिनेंद्रका मुखचंद्र कमलहूकूं जीतै ऐसा सुंदर अर कमल समान नेत्र जीती है नील कमलके वनकी प्रभा जानैं श्यामसुंदर शरीर अर कमलनितैं हू अति अरुण है कर चरण जाके ऐसे भगवान तिनका रूप हजार नेत्रनिकरि निरखता हू इंद्र तृप्त न भया ॥ ३९ ॥ स्फटिक मणीनिके गिरनितैं हू अति उज्ज्वल जो ऐरावत गजेंद्र ताके मस्तकविषैं जिनेन्द्रकूं पधराया सो कैसा शोभै है मानूं स्फटिक मणिमय गिरिका इंद्र नीलमणिमई शिखर ही है गजराजपर जिनराजकूं चढायकरि गिरिराजकी ओर चाले ढुरते चमर अर सिरपर ढुरता छत्र ताकरि कैसी शोभा वनी है मानूं चलती तरंगनिकरि फेनसंयुक्त समुद्र है ॥४०॥ ऐरावतपर प्रभु आरूढ भए सो ऐरावतका वर्णन करै हैं जाके बत्तीस बदन अर बदन २ प्रति अष्ट २ दंत अर दंत २ प्रति एक २ सरोवर अर सरोवरविषैं कमलिनी अर कमलिनीविषैं कमल अर कमल २ प्रति बत्तीस पत्र अर पत्र पत्र प्रति महा रसकी भरी अप्सरा नृत्य करै हैं यह विभूतिकरि देव सुमेरु पर्वत गए तहां जाय गिरेंद्रकी प्रदक्षिणा करी। अर गजेंद्रतैं जिनेंद्रकूं उतारि गिरेंद्रके शिखरपर पांडुकवन है तहां अति मनोहर पांडुकशिला तापर

के आयुध लिए मानों आयुधों की अटवी ही चली जाय है यह सातप्रकार सेना कही सो एक सेना सातसात प्रकार हैं प्रथम ही हाथीनिकी सेना जिसकी सात कक्षानिमें पहिली कक्षामें हाथी चौरासी हजार अर दूसरी कक्षामें हाथी एक लाख सडसठ हजार तीसरीमें यातैं दूनी चौथीमें यातैं दूनी पांचवीमें यातैं दूणी छठीमें यातैं दूणी अर सातवींमें तातैं दूनी याही भांति सातों सेनामें जानो। सबनिमें पहली कक्षामें चौरासी हजार अर आगे दूणे २ बढते सर्वत्र याही प्रकार संख्या जाननी सकल देव तो जन्मकल्याणकका उत्सव करिवेकूं आए अर दिक्कुमारी देवी पहिले ही आई हुतीं सो जन्मकल्याणकके गीत गावती भई ॥ ३० ॥ देवीनिके नाम विजया १ वैजयंती २ अपराजिता ३ जयंती ४ नंदा ५ अनंदा ६ नंदवर्द्धिनी ७ नंदोत्तरा ८ यह हृदयकूं आनंदकी उपजावनहारी माताकी सेवा करती भई ॥३१॥ यह देवी कुंडलादि आभूषणनिकरि शोभित हाथमें झारी लिए खडी हैं मानूं शृंगार रसके भरे अपने कुच कलश लियेही खडी हैं अर महा सुंदर निर्मल हार अर नानाप्रकारके मणिमई आभूषण लिए ठाढी हैं॥ ३२ ॥ बहुरि देवी यशोधर १ प्रबुद्धा २ स्वकीर्ति ३ सुस्थिता ४ लक्ष्मीमती ५ अर विचित्र गुणकी धरनहारी विचित्रा ६ अर चित्रा ७ वसुन्धरा ८ यह देवी मणीनिके दर्पण लिए खडी है मानूं यह देवी तो दिशा भई अर दर्पण चंद्र भए जैसैं चंद्रमा संयुक्त दिशा सोहै तैसैं दर्पण सहित ये देवी सोहै हैं अर इला १ नवमिका २ पद्मावती ३ पृथिवी ४ परा ५ प्रवरकांचना ६ चंद्रिका ७ ये देवी नानाप्रकारके आभूषणनि करि मंडित अपनी प्रभारूप तारा तिनकरि दैदीप्यमान चांदनी रात समान माताके निकट श्वेत छत्र लिए खडी हैं ॥३४॥ बहुरि श्री १ धृति २ दिशा ३ वरवारुणी ४ पुंडरीकणी ५ अलंबुसा ६ मिश्रकेशी ७ ही ८ यह देवी चमर हाथमें लिए माताके सिरपर ढारती कैसी सोहै हैं जैसैं मंद उज्ज्वल झागनिकरि युक्त जे तरंग तिनकरि संयुक्त कुलाचलनितैं निकसी नदी ही है।

भावार्थ—देवी तो नदी भई अर इनके कर तरंग भए अर चमर फेन भए अर दैदीप्यमान देवी कनकचित्रा १ अर चित्रा २ अर तीन लोकमें प्रसिद्ध त्रिशिरसा ३ सूत्रामणि ४ यह देवी नाना प्रकारके उपकरण लिए तिमिर

करि रोमांच होय आंइ ॥ ५१ ॥ जहां वछरानिसहित गायनकी ध्वनिके गंभीर शब्द अर गोपीनिके दही विलोवनेके शब्द हरिकी माता जो देवकी ताका मन हरते भए गंभीरशब्द कौनका मन न हरैं। नंद गोप देवकीकूं आई जान बहुत हर्षित भया यशोदासहित अपनी स्वामिनीकूं सब ग्वालनिकरि युक्त महाभक्तिकरि नमस्कार करता भया अर यशोदा अपना पुत्र जो कृष्ण ताहि लाय देवकीकूं नमस्कार करावती भई। कैसा है कृष्ण धोती अर दुपट्टा ये दोय पीतवर्ण हैं वस्त्र जाके अर मोरनिकी पांख ताका है मुकुट जाके अर प्रफुलित जे नीलकमल तिनिकी है माला जाके अर सुंदर कंठी ताकरि सोहै है शंख समान कंठ जाका अर सुवर्णके कर्णाभरण तिनकरि सोहैं हैं श्रवण जाके अर आरक्त पुष्पनिका है सेहरा जाके अर कर अर चरण सुवर्णके कडानिकरि शोभित है अर अनेक ग्वाल संग हैं अर वांसुरी वजावै हैं ऐसे कृष्णकूं यशोदा लायकरि देवकीकूं प्रणाम कराया। गोपका भेषधरि देवकीके निकट वैठे सो देवकी चिरकाल वासुदेवका मुख देखि रही अर हाथनिसूं पपोल्या ॥ ५६ ॥ देवकी यशोदाकूं कहती भई ये यशोदे तुम वनमें वसो हो परन्तु धन्य है भाग्य तिहारा जो तिहारे ऐसा पुत्र सो यशवंती हो, जगतविषैं ताहीका जन्म प्रशंसा योग्य है जो राज पाया तो कहा। ऐसे पुत्र समान कहा राज तव यशोदा कहती भई हे स्वामिनी ! तुम कहो हौ सो सत्य है मैं या पुत्रके संतोषकरि अति पोषी गई हूं मोहि कछु न चाहिए। यह तिहारा दास तिहारी आशीषतैं जीवहु ॥ ६९ ॥ तासमय पुत्रके दर्शनकरि देवकीके स्तन दूधसूं भरि आए सो मानूं माता पुत्रकू ऐसे कहै है हे पुत्र ! मैं तोहि रिपुके भयकरि न्यारा किया है कछु दुष्ट वुद्धिकरि न्यारा न किया है सो स्तनतैं दूध झरै है मानूं माता अपना निर्मलभाव पुत्रकूं दिखावती सोहै है ॥६०॥ माताके दूध झरता देखि वलभद्र विचारी मत कदापि शत्रु तक यह वार्ता प्रगट होय, ऐसा भयकरि दूधके घडानिकरि माताका अभिषेक कराया जे बुद्धिमान हैं ते उपायमें कदे न चूकैं, जासमय जो उचित होय सो ही करैं ॥ ६१ ॥ हरिके देखिवेकरि पाया है प्रमोद जानैं ऐसी देवकी पूर्ण भए हैं अर्थ जाके ताहि वलभद्र मथुरा ले आए

बिलोवनेके थंभके डोरिसूं मोहनकूं बांध्या सो महाबली थंभकूं उपाड़ि बाहर जाय था सो उन दोऊ वृक्षनिकूं दाहिने हाथसूं अर बांये हाथसूं उपारिकरि दूरि बगाय दिये तब वे दोऊ देवी जाती रहीं बहुरि न आईं सो नंद अर यशोदा दोऊ पुत्रके बाल्यावस्थाविषैं पराक्रम देखि अति अचरजकूं प्राप्त भये। अर मनमें जानी यह सामान्य मनुष्य नाहीं कोऊ महापुरुष हैं सो घरि घरि बालककी सबनिके प्रशंसा होती भई बारंबार देखिवेयोग्य केशव महारूपवान गोकुलविषैं वृद्धिकूं प्राप्त भया, बहुरि पांचवी देवी वृषभका रूपधरि वासुदेवकूं मारिवेकूं आई। सो वह वृषभ ऐसा शब्द करै मानूं समुद्र गाजै है अर इधर उधर याहि मारिवेकूं फिरै। तब कृष्णने वाकूं मायाचारी देव जानि वाका कंठ पकरि दूरि भगाय दिया। कैसे हैं कृष्ण सुकंठ कहिये सुंदर है कंठ जिनका। भावार्थ—ऐसा मनोहर कंठ अर मनुष्यनिका नाहीं। महा मधुर हैं वचन जाके ॥४६॥ बहुरि एक देव पाषाणमई अति वर्षाकरि गाय गोप अर गोपिनसहित गोपालके मारिवेकूं उद्यमी भया। तब गोपाल अपनी भुजाकरि गोवर्धन पर्वत उठाय लिया अर गिरिके तलै गाय अर गोप गोपी बचाय लिये। ये कृष्णके चरित्र मनुष्यनितैं अगोचर बलभद्रके मुख सुनिकरि माता देवकी अपने पुत्रके देखिवे अर्थ उपवासके मिसकरि गोकुलमें आई। सो कृष्णके सुकंठकरि गाये जे गीत सो देवकी सुनै अर गायनिके घंटानिकी ध्वनि सुनकरि देवकी परम संतोषकूं प्राप्त भई कृष्णके कंठके गीत सुनि देवनिका मन हर्या जाय तौ देवकीकी कहा बात ॥ ४९ ॥ अर देवकीने दोऊ भाईनिके योगकरि वन महामनोहर देख्या। कहुंयक वन महा सचिक्कण जो कृष्णका वर्ण ताकरि इंद्रनीलमणि समान श्याम भासै है अर कहुंयक बलभद्रके शुक्लवर्णकरि शुक्ल भासै है, अर गायनिके समूहकरि वन शब्दायमान होय रह्या है ऐसा वन देखकरि माता हर्षकूं प्राप्त भई पुत्रका दर्शन कौनकूं हर्ष न करै। माता देवकी गोकुलकी गायनिकूं देखकरि अतिप्रसन्न भई। कैसी है गाय महा सुंदर तृण अर जल तिनकरि तृप्त है अर जिनके स्तन बछरे चूखै हैं अर ग्वाले दोहैं हैं, कुंभसमान हैं आंचल जिनके दुग्धकरि पूर्ण है अर गायनके रोम अति मनोहर हैं यह गोकुलकी दशा अर गोपालकूं देखि माता हर्ष

अरुण है कर चरण जाके सो गो अर गोपिनका चित्त हरता भया महा सुंदर कहिए नीलकमल तासमान शोभायमान देह जाकी ताकूं अवलोकन करते गोपिन्के समूह तृप्त न भए दूधकर पूर्ण हैं स्तन जिनके सो वह कहै याहि मैं चुखाऊं वह कहै याहि मैं चुखाऊं यह जगत वल्लभ सब हीकूं सुहावणा लागै ॥३४॥ एकदिन वरुणानामा निमित्तज्ञानी कंसका तानैं कंससूं कही हे राजा ! तेरो रिपु काहूनगरीमें तथा वनविषैं तथा गांवविषैं वृद्धिकूं प्राप्त होय है सो ठीक करहु ॥ ३६ ॥ तब कंस रिपुके नाशकी वृद्धिके अर्थि तेला किया अर पूर्व भवविषैं देवी साधी हुतीं ते चितारीं। सो सातूं ही देवी कंसके निकट आयकरि कहती भई तैं तपकरिके हमकूं पूर्वभवविषैं साधी हुतीं सो अब हम तेरे कार्य करिवेविषैं तत्पर हैं। एक बलदेव अर वासुदेव विना कहो जाहि मारें। तब कंस कही मेरा प्रबल वैरी काहू स्थानकविषैं वृद्धिकूं प्राप्त होय है ताहि तुम हेरिकरि मारो। वाकी करुणा न करहु ॥ ३९ ॥ या भांति कंस कही तब वे आज्ञाप्रमाण शत्रुके ढूंढिवेकूं गई। तिनमें एक पूतनानामा देवी विकराल है मूर्ति जाकी सो विषके भरे आंचल तिनकूं धारे धायका रूपकरि कृष्णकूं चुखायवेकूं गई। सो बालक पालने झूलै हुता ताके मुखमैं आंचल दिया सो वे नारायण अनेक देवनिकरि जे सेवनीक कठोर है मुख जिनका सो याके आंचल ऐसे दावे जो पुकारकरि भागी ॥ ४१ ॥ अर आप सोवते बैठते डरकरि पसरते डिगते पायनि परते दौरते अनेक कला धारते दूध दही घृत भोजन करते दिनदिन वृद्धिकूं प्राप्त भए। वे मनुष्यनिके इंद्र कुलके चंद्र तिनकी उपमा काहू और मनुष्यनितैं न बनै। जो पूतना तौ भाजिकरि ऐसी गई जो फिरि न आई अर कंसहूतैं न मिली। अर दूजी देवी विकराल है शरीर जाका पांयनके घातकरि कृष्णके मारिवेकी है इच्छा जाकी सो विजुरीकी नाईं परी। वे अर्धचक्री नरनिके नायक अंजनगिरि समान है शोभा जिनकी अर विस्तीर्ण है हृदय जिनका बालक है तौऊ कोपकरि वाके पांव पकरि दूर बगाई अनेक देव हैं सहाय जिनिके ॥ ४३ ॥ सो वह दूजी देवी हू गई अर दोय देव याकूं दाविकरि मारिवेके अर्थ जमल अर अर्जुन वृक्षका रूप धारि दाहिणी वांई ओर ठाड़ी। अर यशोदानें

स्पर्शतैं उघरि गए अर मेहके जलकी बूंद बालकके कानमें गई सो छींकका शब्द भया सो दरवाजेकी ऊपरली भूमिविषैं राजा उग्रसेन तिष्ठता हुता तानैं छींकका शब्द सुनि आशीष दई। जो तू चिरकाल जीज्यो। तोहि काहू करि विघन मति होउ। तब वसुदेव बलिभद्र उग्रसेनकूं कहते भए। हे पूज्य! यह रहस्य गोप्य राखो या देवकीके पुत्रतैं तिहारा वंदीगृहतैं छूटना होयगा॥ २४॥ तब उग्रसेनने कही यह मेरे भाई देवसेनकी पुत्रीका पुत्र वैरीकी बिना जानिमें सुखसूं रहो। ये राजा उग्रसेनके शुभ वचन सुनि वसुदेव अर बलभद्र नगरतैं बाहिर गए॥ २५॥

जासमय कृष्णकूं लेय बाहिर निकसे तासमय नगरका रक्षक देव वृषभका रूपधरि सींगनपर दीपक धरि इनके आगे २ गमन करता मारग दिखावता भया। आगैं यमुनाप्रवाह तीव्र बहता हुता सो कृष्णके प्रतापतैं यमुनाके मध्य मारग होयगया। नदीका प्रवाह भी घटि गया। तब ये वृंदावनके घाट यमुना उतरकरि गोकुल गांव गए तहां नंदगोप ताके यशोदा स्त्री सो वे दोऊ आय इनके पांयनि परे इनि रात्रिविषैं वे देखे॥ २७॥ उनकूं बालक सौंप्या अर सब रहस्य जताया अर कही तुम याहि पुत्रकी बुद्धिकरि पालियो। यह बालक विशाल नेत्र देखिवे वालेनिकी दृष्टिकूं कांतिरूप अमृत वरषै है। याभांति उनकूं समुझाय कृष्णकूं वहां पधराया अर वाही समय यशोदाके पुत्री भई हुती ताहि विश्वासके अर्थ ल्यायकरि देवकीकूं सौंपी अर आप दोऊ अपने स्थानक बैठी काहूके लखिवेमें यह वारता न आई॥ २९॥ अथानंतर—देवकीके प्रसूति भई सुनिकरि निरदई प्रसूति गृहमें आया अर कन्या भई देखी तव मनमें विचारी यह कन्या तो मोहि मारिवे सकै नाहीं याका पति कोऊ राजकुमार मेरा शत्रु होय तो होय। यह विचारि मनमें शंकावान होय वह पापी अपने हाथकरि कन्याकी नासिका चपटी करता भया वह कंस देवकीके मनकूं आतापका करणहारा ये दुष्ट कार्यकरि कैयकदिन गृहमें सुखसूं तिष्ठ्या। अर गोकुलविषैं कृष्णका जातकर्म भया कृष्ण नाम धरया सो वडा पुण्याधिकारी नंद यशोदाकूं अद्भुत प्रीति बढावता वृद्धिकूं प्राप्त भया॥ ३३॥ सो बालक गदा खड्ग, चक्र, अंकुश, शंख, पद्म इत्यादि प्रशस्त लक्षणका धारक

होगी ॥५१॥ यह आज्ञाकरि वे तो गये बहुरि अपने घरमें काहूने कृष्णकी बातही न करी जैसैं कोई पूर्वजन्मकी कथा याद अणावै तैसैं नारदने याद दिवाई ॥ ५२ ॥ अर तेरा भाई रुक्मी शिशुपालकी पक्ष गया हुता सो तानैं अति हित जताया सो रुक्मी तेरी सगाई वा शिशुपालतैं कर आया सो विवाहके दिन नजदीक हैं कुछ दिनमें विवाह होनेवाला है वह शिशुपाल बडा राजा है यह वचन भूवाके सुनकरि रुक्मणी कहती भई क्या मुनिके वचन अन्यथा हों कदापि न हों मेरे तो एक पति वासुदेव ही हैं यातैं मेरा अभिप्राय शीघ्र ही द्वारकापतिकूं पहुंचा बहुरि वेई मेरे नाथ हैं यह कन्याका रहस्य भूवा जानकरि एकांतमें रुक्मणीके नामका एक पत्र लिख नारायणके पास भिजवाया जामैं यह समाचार हुते तिहारे नाम ग्रहणहीका है विश्राम जाकरि राखे हैं प्राण जानैं ऐसी रुक्मणी सो तिहारे दर्शनकूं चाहै है सो माघ शुदि अष्टमीका लग्न है या लग्नपर मोहि आयकरि ले जावहु अर जो कदाचित तुम न आये अर मेरा पिता अर बांधव जो शिशुपालकूं परणावेंगे तो मेरा मरण ही है तिहारे अलाभ विषैं मैं न जीऊंगी अर नगरके बाहिर नागदेवका मंदिर है तहां मैं लग्नके वक्त पहिले आऊंगी अर तुम मेरेतैं पहिले वहां आइयो कृपाकरि मेरा कर ग्रहणकरि लेजाइयो ॥६३॥ यह रुक्मणीके पत्रका रहस्य माधव जानकरि रुक्मणीके हरण प्रति सावधान हो तिष्ठे ॥६४॥ चंदेरी नामा नगरीका पति शिशुपाल कुंडलपुरके धनी राजा भीष्म विदर्भदेशके स्वामी तिनके वचनतैं विवाहके अर्थि बडी सेनातैं आया कुंडलपुरके चारों तरफ शिशुपालका कटक पड्या अर नारदने एकांतविषैं मोहनतैं कही यह अवसर है तब कृष्ण बलभद्र सहित प्रछन्न निकसे यह भेद कोई न जानैं जासमय कन्या नगरके बाहर नागदेवके मंदिर भूवा आदि अनेक स्त्रियनि सहित आई हुती तातैं पहले बलदेव वासुदेव जाय पहुंचे सो माधवने रुक्मिणी देखी ॥ ६८ ॥ पहिले नारदने रुक्मणीका रूप वर्णन किया हुता ताके श्रवणरूप ईंधनकरि केशवके रागरूप अग्नि उपजी हुती सो परस्पर दर्शनरूप पवनकरि दोऊके रागरूप अग्नि अतिवृद्धिकूं प्राप्त भई तहां रुक्मिणीकूं मोहन कही तेरे अर्थि हम आये हैं तू हमारे हृदय-

पुण्यकरि पूर्वोपार्जित कर्मने यह कन्या महा सुलक्ष महारूप महासौभाग्य एकत्रकरि बनाई है जगततैं अधिक है सौभाग्यता अर सुलक्षण जाके ॥ ३३ ॥ याके कर अर चरण अर मुखरूप कमल अर जंघा नितंब भुज नाभि कुच, उदर, भौंह, कर्ण, नेत्र, सिर, कंठ, नासिका, अधर यह समस्त अंग उपमाकूं जीतिकरि याके तनविषैं तिष्ठै हैं। संसारमें ऐसी कोई उपमा नाहीं जो रुक्मिणीके अंगकूं दीजे ऐसा रुक्मिणीका रूप देखि नारद आश्चर्यकूं प्राप्त भए मनमें विचारी मैं अनेक राजकन्या देखी परंतु या समान नाहीं यह अनुपम कन्या केशवकूं परणायकरि सत्यभामाके रूप अर सौभाग्यकरि मद है सो निवारूं ऐसा विचार करता जो नारद ताहि हाथ जोड प्रणाम करती भई जो रुक्मणी सहज स्वभाव विनयकी भूमि अर शब्द करै है आभूषण जाके जब रुक्मणीने नमस्कार किया तब नारदने आशीष दी। जो हे पुत्री ! तू द्वारिकापतिकी पटराणी हूज्यो जब रुक्मणीकी भूवा नारदतैं पूछी द्वारकापति कौन तब नारदने सब व्याख्यान किया सो सुनकरि रुक्मणी कृष्णविषैं अतिआसक्त भई नारद किंचितकाल तहां रह रुक्मणीके चित्तरूप भीतिविषैं कृष्णका चित्रामकरि अर रुक्मणीका वर्ण रूप वय विद्या चित्त विषैं लिखि बाहर गये ॥ ४३ ॥ एकांतविषैं रुक्मणीका रूप पटविषैं स्पष्ट लिखा अर जायकरि हरिकूं दिखाया कैसा है रूप चित्तकूं मोहका कारण ॥ ४४ ॥ सो चित्राममें लक्षण देखि कृष्ण नारदतैं पूछते भए। नारदतैं श्रीकृष्णका हित तो सदातैं है अर चित्रपट देखि दूना स्नेह उपज्या ॥ ४५ ॥ कृष्ण पूछै हैं हे भगवन् यह तुम कौन कन्याका रूप चित्रपटविषैं लिख्या है ऐसा अद्भुत रूप मनुष्यनिमें नाहीं अर देवीनिका नाहीं ॥४६॥ याभांति कृष्णने पूछी तब नारद कहते भए हे मित्र यह राजा भीष्मकी कन्या रुक्मिणीका रूप है सो सुनकरि कृष्णकूं करग्रहणकी चिंता उपजी ॥ ४७ ॥ एक समय एकांतविषै भूवा रुक्मणीतैं कहती भई हे बाले ! मैं कहूं हूं सो तू सुनि एक दिन अतिमुक्तिकनामा अवधिज्ञानी मुनि आए हुते सो तोहि देखकरि कही यह पुत्री लक्षणवती है सो वासुदेवके उरस्थलविषैं लक्ष्मीकी न्याईं निवास करैगी। केशवके सोलहहजार राणी तिनकी यह स्वामिनी

वंदना अर मुनिनिकी वंदना तिनविषैं है अनुराग जाका। महा जिनधर्मी निकट चतुर्विधसंघका अनुरागी धर्मप्रिय महा श्रद्धावान शास्त्रविषैं निपुण अर बडा चर्चावान सज्जन स्वभाव कौतूहली सदा अढाईद्वीपविषैं परिभ्रमण करै जहां याके आदर सत्कारमें कमी होय तहां ही अरुचिरूप होय। सो यह नारद यादवनिकी सभामें धर्मकी चर्चाकरि समुद्रविजय आदि बडेनिकूं पूछकरि राजलोकमें गया ॥ २५ ॥ तहां कृष्णकी पटरानी सत्यभामा कृष्णके प्राणहूतैं प्यारी महाशीलवंती स्नानकरि आभूषण पहिरे हुती अर मणियनिका दर्पण हाथविषैं हुता सो अपना रूप निरखती हुती सो नारद तो दूरतैं सत्यभामा देखी मानूं साक्षात् रति ही है ॥ २६ ॥ अर वह शृंगारमें लगी रही हुती सो नारदकूं न देखे उठकरि इनका आदर न किया सो तत्काल क्रोधकरि याके घरतैं निकसे ॥ २७ ॥ मनमें विचारी या लोकविषैं विद्याधर भूमिगोचरी मोहि देखि सबही उठिकरि नमस्कार करैं। अर सबही राजानिकी रानी नमस्कार करैं ॥ २८ ॥ यह सत्यभामा रूपके मदकरि गर्वित मेरी उर दृष्टि हू न करी यह विद्याधरकी पुत्री महा धीठ है ॥ २९ ॥ तातैं याके रूप सौभाग्यके गर्वरूप पर्वतकूं मैं याके शोकरूप वज्रपातके निपातकरि चूर्ण न करूं तो मैं नारद काहेका अर आगेकूं मेरी शंका कौन राखैं ॥ ३० ॥ याके रूप सौभाग्यकूं उलंघै ऐसी यापर सौत हरिके घरमें लाऊं बहुत रत्ननिकी भरी वसुंधरा समान राणी कन्हैयाके लाऊं अर याहि निस्वास नाखती मैं निरखूं तब मेरी क्रोधरूप अग्नि बुझै मुझ नारदकूं रुसाय निश्चिंत कौन रहै ॥ ३१ ॥ ऐसा विचारकरि नारद सब ठौर भ्रमै परंतु सत्यभामा सादृश्य रूप न देख्या तब कुंडनपुर आए जहां राजा महा भीष्म शत्रूनिकूं महा भयंकर बडा वंशका उपज्या ताके एक रुक्मनामा पुत्र महा बुद्धिमान महापराक्रमी अर रुक्मिणी नामा कन्या सो कलागुणविषैं प्रवीण ॥ ३४ ॥ सो नारद पहिले राजसभाविषैं आए अर राजाने अति सत्कार किया बहुरि राजलोकमें गए सो रणवासकी सबही स्त्री आय प्रणाम करती भई। अर रुक्मिणीनामा कन्या महा सुंदर भूवातैं है अनुराग जाका जैसी संध्यासमय सूर्यकी उदय लक्ष्मी सोहै तैसी रुक्मिणी शोभै है मानूं हरिके

गौतम गणधरतैं राजा श्रेणिकने पूछी। हे नाथ यह नारद कौन है अर याकी उत्पत्ति कौनतैं है? तब गौतम गणधरने कही हे भूप नारदकी संपूर्ण कथा तोहि कहूं हूं सो सुन ॥ १३ ॥ यही सौर्यपुर जहां यादवनिका राज ता नगरके समीप दक्षिणकी ओर तापसनिका आश्रम जहां अनेक तापस कंदमूलादि फलपत्रनिके भक्षणहारे रहैं ॥ १४ ॥ तिनमें एक सुमित्रनामा तापस ताके सोमयशानामा स्त्री वह तापस उञ्छवृत्ति कहिए नगरविषैं बणिक जन हाट उठाय घर जांय अर उनकी हाटतैं बाह्यस्थलविषैं अन्नके कण बिखर रहे होवें सो बीन लावै या वृत्तिकरि उदर पूर्ण करैं अर कभी कंदमूलादि भक्षण करैं सो इनके नारद पुत्र भए ॥१५॥ सो बालक चंद्रमा समान कीर्ति धारी सो बालककूं वृक्षके नीचे सूधा सुवायकरि मातापिता दोऊ क्षुधा तृषातैं पीडित उञ्छवृत्तिके अर्थि नगरमें गए ॥ १६ ॥ अर बालक वृक्षके नीचे क्रीडा करता हुता तहां एक जंभ्रक नामा देव आया सो बालककूं देखिकरि पूर्वस्नेहतैं वैताढ्य पर्वत ले गया ॥ १७ ॥ तहां एक मणिकांचननामा गुफा ताविषैं वह देव बालककूं रखकरि कल्पवृक्षनिकर उपज्या मनोज्ञ आहार ताकरि ताहि बढाया ॥ १८ ॥ जब यह बालक अष्टवर्ष ऊपर भया तब याहि जिनआगमका रहस्य समझाया अर देव याहि आकाशगामिनी विद्या देता भया ॥ १९ ॥ अर याका नाम नारद धरया सो यह नारद महाविद्यावान अनेक शास्त्रनिका पाठी मुनिराजनिके चरणारविंदकी सेवाकरि श्रावकके व्रत धारता भया ॥ २० ॥ यह नारद जन्महीतैं कामका जीतनहारा है अर कामदेव समान महा सुंदर है अर जो राजा कामी हैं तिनका अति वल्लभ है तिनकूं वनवांछित स्त्री परणाय दे अर आप महा शीलवान है लोभकरि रहित है अर सदा वदन प्रसन्न है हास्यरसविषैं है अनुराग जाका ॥२१॥ अर महा तेजस्वी है मान धन है अर विना सत्कार क्रोधकरि प्रज्वलित होय अर कोई स्तुति करै तो डरहू जाय अर रणके देखिवेविषैं है प्रेम जाका अर जे जलपाक कहिए वाचाल है तिनमें मुख्य है ॥ २२ ॥ अर अढाई द्वीपविषैं जिनराजके जन्म कल्याणक आदि पंचकल्याणक तिनके दर्शनका अभिलाषी है जाके अर चैत्यालयनिकी

अथानंतर—सब यादवनिकी सभा भरी है ताविषैं आकाशगामी नारद आकाशतैं आवते भये कैसे है नारद पीतवण जटाका है भार जिनके अर दाढ़ी मूंछ श्वेत हैं अर शरदके मेघ समान उज्ज्वल है वर्ण जिनका ॥ २ ॥ जैसा विजुरीका उद्योत होय तैसी प्रभाकूं धरे सभामें आये अर नानाप्रकारके वर्णकरि विस्तीर्ण जो योगपट्ट ताकरि शोभित हैं। जैसा प्रवेशकरि युक्त चंद्रमा शोभै तैसैं शोभै हैं ॥ ३ ॥ हल हलाट करते वस्त्र कोपीन अर दुपट्टा तिनकरि मंडित सभामें ऐसे आये जैसैं जगके अनुग्रहकी वृद्धिकरि कल्पवृक्ष आवै ॥ ४ ॥ कंठविषैं यज्ञोपवीतका सूत्र कैसा शोभै है मानूं रत्नत्रयहीकरि युक्त हैं मनवचनकायकी शुद्धताकरि धारा है ब्रह्मचर्य ताकरि उज्ज्वल हैं। जन्मतैं लेय बालब्रह्मचर्यरूप महापंडित ताकरि मंडित हैं। कैसा है ब्रह्मचर्य अद्वितीय है प्रभाव जाका अति बडाईका कारण है ॥ ६ ॥ कैसे हैं नारद मिथ्यात्व रहित पवित्र है प्रकृति जिनकी कामादि अंतरंगके बैरी छै तिनके जीतनहारे हैं जैसैं बलदेव वासुदेव राज्यके उदयकरि समस्त राजानिकरि पूजित है तैसैं यह विना ही राज विभूति सब राजानिकरि पूजनीक हैं ॥ ७ ॥ कामादिक पट् वैरीनिके नाम काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मद ५ मत्सर ६ जब नारद अंबरतैं उतरे तब सबही राजा सीस नवाय उठि खड़े रहे अर नमस्कारकरि आसन देते भये वहुत भक्तिकरि नारदके चरण पूजते भये कैसे हैं नारद सन्मानमात्रही है हर्ष जिनके अर काहूका कछु चाहिये नाहीं ॥९॥ वसुदेव वासुदेव अर समुद्रविजयादि सब ही राजा नारदका सन्मान करते भये नारद नेमिजिनेश्वरकूं नमस्कारकरि सभामें बैठा नेमिनाथके दर्शनकरि अर बचन श्रवणकरि उपज्या है अति आनंद जाकूं सो ताके यही अभिलाषा कि मैं प्रभुका दर्शन कर्‌या ही करूं अर इनके वचन सुना ही करूं तीर्थंकर देव बलदेव अर वासुदेव इनमें नारदका अधिक अनुराग है सो इनका अवलोकनकरि अर इनके वचनरूप अमृतकरि नारदके अति प्रीति बढी ॥ १० ॥ सभामें तिष्ठकरि नारद पूर्व विदेहके अर पश्चिम विदेहके तीर्थंकरनिकी कथारूप अमृतकरि अर सुमेरुकी वंदनाकर आए हुते सो वहांकी सब वार्ता कहि यादवनिका मन तृप्त करते भए। जब नारदका कथन आया तब

तिमिरका समूह जिनिने राम कहिये बलदेव दामोदर कहिये वासुदेव तिनकूं निरंतर आनंदकूं बढ़ावते श्रीनेमिनाथ बाल्यावस्थविषैं मनोहर क्रीड़ा करते भये जिनकी क्रीडा सुर नर विद्याधर सबनिके मनकूं हरे ॥ ५० ॥ समस्त यादवनिकी स्त्री तिनके करनिकूं शोभित करते श्रीभगवान सबनिके हाथनिमें विचरैं वह जाने मैं ल्यूं अर वह जाने मैं ल्यूं सबनिके प्यारे जगजीवन जिनेश्वर बाल्यावस्थातैं तरुण अवस्थाकूं प्राप्त भये महा रूपवान जिनके रूप समान त्रैलोक्यमैं काहूका रूप नाहीं प्रगट हैं सब लक्षण जिनमें ऐसे यौवनरूप जिनपर नीलकमल समान नेत्र जिनके सो प्रभुके रूपकूं देखकरि नर नारीनिके नेत्र और जगह विश्राम न करते भये ॥ ५२ ॥ जनताका हृदय कमलसमान उन भगवानका रूप भानुसमान सो प्रफुल्लित करता भया प्रभु ऐसे सुंदर जो सबके मन हरैं इनकूं देखि सकल जननिका मन मोहित होय परंतु इनका मन किसीकूं देखि मोहित न होय इन समान सुर-नरका रूप नाहीं ॥ ५३ ॥ तातैं जिनके रूपकी उपमा अरकूं नाहीं जिनेश्वर स्वरूप जिनेश्वरहीका है जगतविषैं कोई इन समान होय तो इनकूं उपमा दीजे हरि कहिये इंद्र अथवा हरि कहिये वासुदेव यह बडे बुद्धिमान हैं इनके जानिवेमें अनके उपमा हैं परंतु जिनराजकूं जाकी उपमा दीजे ऐसा कोई पदार्थ नाहीं तातैं मौन गहि बैठि रहे हैं ॥ ५४ ॥ श्रीनेमिनाथके निकट भाई बंधु निजजन जब शृंगाररसकी चर्चा करैं अथवा परणायवेकी बात चलावें तब आप लज्जाकरि नीचे होय जावैं ॥ ५५ ॥ तीनज्ञानरूप जल ताकरि धोया है मोहरूप कलंक जिनि सो नेमिजिनेश्वरका मन संसारकी मायारूप धूलिकरि धूसरा न होता भया ॥ ५६ ॥ अर वह द्वारिकापुरी सुंदर हैं द्वार जाके सो जैसें समुद्रकी लहर चंद्रमाकी किरणनिके समूहकरि वृद्धिकूं प्राप्त होय तैसें वह पुरी जिनराजके गुणनिके समूहकरि अत्यंत हर्षकूं प्राप्त भई लोकरूप तरंग तिनकरि उछलती हुई आनंदरूप प्रवर्तती शोभती भई ॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वारावती निवासवर्णनोनाम एकचत्वारिंशः सर्ग ॥ ४१ ॥

की भांति भांतिकी वस्तु कुवेर सदा ही ल्यावै हैं अर आप सदा देवलोकहीके वस्त्राभरणादि पहिरै हैं अर सब सामग्री देवलोकहीकी आवै है तिनका कहा वर्णन करिए जिनके लार जेते आए हुते ते सब ही देवनिने आराधे अर हरि हलधरकी विशेष पाहुनगति करी ॥ ३९ ॥ बहुरि कुवेरने यादवेंद्रसूं कही आप सब ही सरदार या पुरीविषैं प्रवेश करो। अर तिहारी प्रजाकूं वसाओ ऐसा कहि पूर्णभद्र यक्षकूं रखि कुवेर तौ अपने स्थानक गया अर सब यादव एकत्र हो समुद्रके तट जय जयकार शब्दकरि अति हर्षित होय हलधर अर हरिका अभिषेक करवाया कैसे हैं दोऊ वीर नरनायक हैं हल अर गदाका है आयुध जिनके बडाभाई तो हलधर है छोटा भाई गदाधर है ये दोऊ ही नरेश्वर जिनेश्वरदेवके उपासक हैं ॥ ४१ ॥ जैसैं स्वर्गविषैं सुर प्रवेश करै तैसैं यादव चतुरंग सेना सहित अर अपनी प्रजा सहित द्वारिकामें प्रवेश करते भये ॥ ४२ ॥ पूर्णभद्रनामा यक्षकूं कुवेर रख गया हुता तानैं सवनिकूं यथा योग्य स्थानविषैं राखे मंगलरूप वे सब ही मंदिर तिनविषैं यह यादवेश्वर सुखतैं तिष्ठे जे मथुरावासी हुते तिन्होंने तो द्वारिकाविषै अपने निवासका स्थानक मथुरा ठहराया अर जे शौर्यपुरके निवासी हते तिन द्वारिकाविषै अपने निवासका नाम शौर्यपुर ठहराया। अर जे वीरपुरके वासी हुते तिन्होंने अपने वासका नाम वीरपुर ठहराया याभांति संकेतकर वे यथायोग्य निवास करते भए अर ता नगरीविषैं कुवेरकी आज्ञाकरि यक्षदेव अढाई दिन सब ही घरविषै पूर्ण धन धान्य वर्षावते भए किसीके घरमें किसी वस्तुकी कमी न रही जहां विराजा कृष्ण सो ताके प्रतापकरि पश्चिमके सब राजा वश भए बलदेव वासुदेवकी आज्ञा सब मानते भए ॥ ४६ ॥ अनेक राजानिकी पुत्री हजारों व्याहकरि द्वारकापति सुरपतिकी न्याई यथेष्ट सुखसूं रमैं ॥ ४७ ॥

अथानंतर—श्रीनेमिनाथ कुमार द्वारिकाविषैं चंद्रमाकी न्याई वृद्धिकूं प्राप्त होता भया समस्त कलानिका स्थानक है शरीर जाका ॥४८॥ बहुरि श्रीनेमिनाथ ऊगते सूर्य समान शोभते भये दशार्ह कहिये समुद्रविजयादि दश भाई जिनके वदन सोई भये कमल तिनका प्रफुल्लित करणहारा है उदय जिनका अर अपनी ज्योतिकरि दूर किया है

जहां सर्व रत्नमई अति उतंग जिनेंद्रके चैत्यालय महा पवित्र जिनके चौगिरद कोट अर दरवाजे तिनकरि वह पुरी स्वर्गपुरी समान सोहै है अर अग्निकूण आदि चार विदिशा अर पूर्व आदि चार दिशा तिनविषैं समुद्रविजयादि दश भाईनिके महल अनुक्रमतैं होते भए अर वसुदेवके मंदिरके मध्य एक सर्वतोभद्रनामा महल कल्पवृक्ष अर कल्पलताकरि मंडित अठारह खणका केशवके रहनेका शोभता भया ॥ २७ ॥ अर सर्व राजलोकनिके अर पुत्रादिकनिके योग्य मंदिरनिकी पंक्ति कृष्णके मंदिरके चौगिर्द सोहती भई अर बलदेवका मंदिर अति सुंदर वन वापी सरोवरादिकरि संयुक्त शोभता भया ॥ २९ ॥ अर बलदेवके महलके आगे एक सभा मंडप सोहता भया वह रत्नमई सभा मंडप इंद्रके सभामंडप समान सोहता भया जाकी कांतिकरि सूर्यहूकी किरण मंद भासै अर उग्रसेनादि भूपतिके योग्य मंदिर सबही भाईनिके आठ आठ खणके सोहते भए नाहीं कर सकिये वर्णन जाका ऐसी द्वारावतीनामा पुरी महा मनोज्ञ रचकरि कुवेर वासुदेवकूं दिखावता भया ॥ ३२ ॥ अर इतनी वस्तु कुवेर कृष्णकूं देता भया मुकुट हार कौस्तु मणि पीतवस्त्र अर नक्षत्रमाला नामा आभूषण यह वस्तु लोकविषैं दुर्लभ है सो माधवकूं दई अर कुमुद्वतीनामा गदा अर शक्ति अर नंदकनामा खड्ग सारंगनामा धनुष अर दोय तरकस अर वज्रमई बाण ॥ ३४ ॥ अर सर्व आयुधनितैं पूर्ण दिव्य रथ जाके गरुडकी ध्वजा अर चमर अर सफेद छत्र केशवकूं कुवेरने दिए अर बलभद्रके ताईं दोय नील वस्त्र अर रत्नमाला मुकुट गदा अर हल मूशल अर धनुष वाण दोय तरकस अर दिव्यास्त्रनिकरि भर्‍या रथ ताके ताडपत्रके आकारकी ध्वजा अर छत्रादिसहित औरहू मनोहर वस्तु हलधरकूं दीनी ॥ ३७ ॥ अर नेमि जिनेंद्रके पिता समुद्रविजय अर माता शिवदेवो अर समुद्रविजयके सब भाई तिनकूं वस्त्राभरणादि नानाप्रकारकी वस्तु दई अर उग्रसेनादि भोजकवृष्टिके पुत्र तिनकूं वस्त्राभरणादि अनेक वस्तु दई ॥ ३८ ॥ अर भगवान श्रीनेमिनाथ ता निरंतर इंद्रादि देवनिकरि अर कुवेरकरि पूज्य ही हैं उनकूं तो उनकी अवस्था योग्य अनुपम वस्तु तिनकरि सदा ही सेवै हैं ऋतु ऋतु

४४१

उठ्या ही चाहिए। मानूं समुद्र बलभद्र नारायणका सत्कार ही करै है नेमिनाथ तीर्थंकर तो तीनलोकके प्रभु अर बलभद्र नारायण तीनखंडके अधिपति जिनपतिके महाभक्त सो मानों समुद्र इनका विनय ही करता भया अर वह समुद्र झागनिके मंडलकरि ऐसा शोभै है मानूं समुद्रविजय अक्षोभ आदि सब भाईनिका अर भोजवंशीनिका आदर ही करै है तुम भले ही पधारे।

भावार्थ—झाग हू उज्ज्वल अर हास्य हू उज्ज्वल सो फेन उठै है इनके आयवेकरि समुद्र हर्षित भया हंसै ही है। अर शुभ तिथि देखि स्थानककी इच्छाकरि बलभद्र सहित कृष्ण तीन उपवास धारते भए अर डाभकी सेंज पर तिष्ठकरि नमोकार मंत्र जप्या अर समुद्रके तीर तिष्ठे ॥ १६ ॥ तब सौधर्मइन्द्रकी आज्ञातैं गौतमनामा देव आयकरि इनका वहुत सन्मान करता भया अर कुवेरने इंद्रकी आज्ञातैं श्रीनेमिजिनेश्वरकी भक्ति अर बलदेव वासुदेवके पुण्यकरि द्वारावतीनामा परमपुरी निर्मापी सो नगरी बारह योजन लंबी अर नव योजन चौडी बसी वज्र कहिए हीरा तिनका है कोट जाके अर समुद्र ही है खाई जाके ॥ १९ ॥ अर रत्न स्वर्णकरि रचे बहुत स्वर्णनिके अनेक मंदिर तिनकरि वह नगरी आकाशकूं रोकती संती ऐसी शोभती भई मानूं इंद्रपुरी ही स्वर्गलोकतैं उतरी है ॥ २० ॥ जहां अनेक कूप अनेक वापी अनेक सरोवरी अनेक कुंड चौखूंटे तथा गोल अर अनेक द्रह जिनमें नाना प्रकारके कमल फूलि रहे हैं अर महामिष्ट स्वादिष्ट है जल जिनविषैं ॥ २१ ॥ अर अनेक हैं चारों ओर वन जहां कल्पवृक्ष अर कल्पलता समान बेल अर नागरबेलि, लौंग, सुपारी, इलाची, अगर, चंदन आदि अनेक वृक्ष तिनकरि शोभित वह वन नंदनवनकी शोभाकूं जीतते भए अर वा नगरीविषैं अनेक मंदिर ऐसे हैं जिनके स्वर्ण रत्नके कोट अर दरवाजे सर्व रतिके सुखके देनहारे वे मंदिर सुरमंदिर समान सोहते भये नाना प्रकारकी मणीनिके हैं शिखर जिनिके ॥ २३ ॥ अर अनेक सुंदर बाजार अर अनेक गली अर ठौर ठौर जलके निर्वाण तिनकरि महा मनोहर वह पुरी सब राजा अर प्रजानिके वासयोग्य शोभती भई ॥ २४ ॥ अर

मोती हाथी घूमै तैसा ही घूमै हैं जाविषै अनेक भँवर उठै हैं अर अनेक लहर उठै हैं अर बैठे हैं अर अनेक जलके मंडल ऊंचे उछले हैं सो मानूं आकाशकूं आच्छादित करै हैं ॥ ३ ॥ अर जाविषैं अनेक मगरमच्छ विचरै हैं अर ग्राहनिका ग्रह ऐसे रत्नाकरकूं यादव निरखते भए ॥ ४ ॥ जाका पार न पाइए ऐसा अपार है अर अति गंभीर है जे महा बुद्धिमान अनेक यत्न करैं तोहू समुद्रका थाह न पावैं जाहि कोई तिर न सकै गम्भीरताके योगतैं जाका तल अगम्य है ॥ ५ ॥ अर अति उतंग अति चंचल तरंगनिके प्रसंगकरि अलंध्य है जाविषैं चली आवै हैं अनेक नदी तिनकरि अति मनोहर है अर अमोलिक महा रत्न तिनकरि जगतका उपकार करै है अर अनादि कालका है अर निर्मलता अर विस्तीर्णताके योगतैं आकाशकी शोभाकूं अंगीकार करै है ॥ ७ ॥ अर अपने उदरविषैं धरै है अनेक जीव तिनकी रक्षाका है दृढ व्रत जाके मानूं यह समुद्र जिनशासनका स्वरूप ही है जिन मार्गहू जीवोंका रक्षक है अर यह समुद्र हु अनेक जीवनिका रक्षक है अर जिनमार्ग जे वादी जीतिकी इच्छा करैं तिनकरि अलंध्य है अर यह भी लोकनिकरि अलंध्य है ॥ ८ ॥ अर वाहूका भव्यजीव अनंतानुवंधी कषायनिके आताप निवारिवेकूं आश्रय करै है अर या समुद्रका आश्रय तापके अनुबंधकूं निवारै है। यह समुद्र अपने स्पर्शहीकरि आतापकूं निवारै तो अवगाह कर क्यों न निवारे ॥९॥ ऐसे समुद्रकूं यादवनिने देख्या देखकरि जानी मानू यह सूत्रार्णव ही है, अंबुधिकूं (समुद्र) विलोकिकरि राजानिके समूह बहुत राजी भए अर समुद्रकी लहरमें मूंगा मोती आदि अनेक रत्न तीरां आए सो मानूं नेमिनाथके आगम करि समुद्रने हर्षित होय पुष्पांजलि ही चढाई अर समुद्र ऊंचा उछल्या सो मानूं नृत्य ही करै है अर समुद्र गर्जा मानों जयजयकार शब्द ही करै है अपने तरंगरूप करि तिनमें नानाप्रकारके रत्ननिकरि मानूं अर्घ ही देय है अर मानूं वह सागर अपनी कल्लोल रूप भुजानिकरि हरि जे कृष्ण तिनसूं मिलाप ही करै है अर ध्वनिरूप वचनकरि हरिका सत्कार ही करै है अर वह समुद्र युगविषैं प्रधान जे बलभद्र तिनकूं देखकरि मानूं चलाचल होवेके मिसकरि उठै ही है बडेनिकूं देखकरि

दुखी भई रुदन करूं हूं मैं इतनी बडी भई तो हू उनके साथ जल न सकी अद्यापि जीवनकी आशा है ॥ ३८ ॥ अर यादव सब ही राजा अपनी प्रजा सहित अग्निमें जले ॥ ३९ ॥ अर मैं दुःखिनी स्वामिके वियोगतैं दुःखकी भरी विलाप करूं हूं ॥ ४० ॥ यह वचन वृद्ध रूपिणीके जरासिंध सुनकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भया अर अंधकवृष्टी अर भोजकवृष्टीनिके सन्तानका मरण जान ॥ ४१ ॥ पीछे फिरि अपने स्थानक भाईनि सहित आया अर जे यादवनिमें याके अंगी हैं तिनकूं पाणी देकर कृत्यकृत्य होय सुखसे तिष्ठा ॥ ४२ ॥ अर यादव अपनी इच्छासे पश्चिम समुद्रके वनविषैं आये सो ते बन लौंग, इलायची, दालचीनी आदि सुगन्ध द्रव्यनिकी सुगंधताकरि महा सुगंध है अर जहां शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजै है ॥ ४३ ॥ दूर देशसे आये यह यादव नृप सो पश्चिमके सागरके तट अपनी प्रजा सहित डेराकरि तिष्ठे ॥ ४४ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे राजन् ! वह जरासिंध करुणारहित यादवनिके पीछे लग गया अर उनके मारनेहीका है प्रयोजन जाके जवांई अर भाईनिके मारिवेकरि उपज्या है अधिक कोप जाकूं सो मार्गविषै देवनिने अग्निका प्रपंचकरि रोका सो पीछे फिर्या जिनके पुण्यका उदय है तिनका रिपु कहा करै ऐसा जान जे जिनधर्मी विवेकी जन हैं सो जिन भाषित धर्मकी स्थिति करो । जिनधर्मके प्रभावसे सकल विघ्न टरे हैं ॥ ४५ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यादवप्रस्थानवर्णनोनाम चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४० ॥



छठा अधिकार

(यादवनिका द्वारिकामें निवास करना)

अथानंतर—श्रीनेमिनाथ जिनके लार समुद्रविजय आदि दशार्ह अर भोजकवृष्टीके पुत्र अर बलभद्र नारायण सबही समुद्रकी शोभाकूं देखिवेकूं गये सो समुद्र अति अथाह देख्या याविषैं अनेक तरंग उठै हैं अर जैसा

उत्तरपुराण तथा नेमपुराणविषैं यह कथन है जो नेमनाथ स्वामीका जन्म शौर्यपुरका नाहीं द्वारिका गये पीछे प्रभुका जन्म भया अर नेमिनिर्वाणकाव्यविषैं ऐसा कथन-जो प्रभुका जन्म तो द्वारका ही है परन्तु द्वारकामें यह बामव बसै है जहां दशार्ह समुद्रविजयादि दश भाईनिके महल अर इनकी प्रजा बसै सो शौर्यपुर अर उग्रसेनका निवास सो मथुरा अर द्वारकाहीमें जहां पांडवनिका निवास सो हस्तिनापुर या भांति लिखा है ॥ २५ ॥ अर इनकूं निकसे सुन पीछेसे जरासिंध गया तब यादवनिने सुनी जो वह आया तब महा उत्सवकरि यादव युद्धकूं उद्यमी भये अल्प ही अंतर दोनों सेनाके रह्या तब तीनखंडके निवासी देव मायामई सामर्थ्यकरि विक्रिया रचते भये ठौर ठौर अग्निकी ज्वाला प्रज्वलित है अर यादवनिके अकाश अग्निमें जरै हैं अर सब कटक जरै है अर जगह जगह इनके आभूषण पडे हैं अर गज अश्व दौड़े २ फिरै हैं ऐसी विक्रिया जरासिंधने देखी अर अग्निकी ज्वालाकरि मार्ग भी चलता न देखा अर एक देवी वृद्ध मनुष्यनीका रूप धरे रोवती देखी तासूं जरासिंधने पूछा यह विस्तीर्ण कटक कौनका जरै है अर तू क्यों रोवै है अर कौन है या भांति पूछी तब वह देवी वृद्धरूपिणी कष्टकरि स्वास भरती नीठ नीठ कहती भई रुदनकरि रुक रहे हैं कंठ जाके ॥३२॥ वृद्धरूपणी कहै है हे तेजस्वी मैं कहूं हूं सो तू सुन, महत पुरुषके निकट अपना दुःख निवेदन करिये तो दुःखकी निवृत्ति होय उनके वचन ही सुनि साता उपजै है ॥ ३३ ॥ एक राजगृह नामा नगर है तहां राजा जरासिंध राज करै है सो पृथिवीविषैं प्रसिद्ध है अर समुद्रपर्यंत पृथिवीविषैं वाका राज है अर महा सत्यवादी है अर वाके प्रतापरूपी अग्नि बड़वानलका रूपकरि समुद्रविषैं भी मानों प्रज्वलित है वासूं बैर करि समर्थ कौन अर वानैं तो यादवनि पर कृपा करनमें कमी न करी परन्तु ये अपराधी भये सो अपने अपराधकी शल्यकरि वह किसी दिशा अपना जीव ले भाग जांय सो पृथिवीविषैं कोई शरण न देख्या चक्रवर्तीनिके कोपकरि कहा बचै तब उन अपना मरण ही शरण जाना अग्निविषैं प्रवेश कर भस्म भये अर मैं उनके बड़ोंकी दासी हूं सो अपने स्वामीकी दुर्बुद्धिकरि

उपजे हैं ॥ १४ ॥
यह जरासिंध प्रतिनारायण है अर याके नाश करनहारे अपने कुलमें यह बलभद्र नारायण
जातैं जौलग कृष्ण रूप अग्निविषैं वह प्रतिनारायणरूप पतंग अपनी पक्ष सहित आपही आयकरि भस्म न
होय तब तक कालक्षेप करना योग्य है जिससे कई एक दिन हम तुम शूरवीर कृष्णको यहांसे उठाय कर और
जगह रक्खें यह कृष्ण तीन खंण्डका जीतनहारा योधा इस समय जरासिंधसे लडवे सामर्थ्य नाहीं तिससे यह
स्थानक तज करि हम तुम कई एक दिन पश्चिम दिशाकी ओर निवास करें स्थानक पकडे कार्यकी सिद्धि निःसं-
देह होय ॥ १७ ॥ हम यह स्थानक तजे पश्चिमकी ओर चलें अर जो वहां जरासिंध आवै तो रण विषैं नीकी
पाहुणगति करें यह भी रणप्रिय है सो उसे रणविषैं प्रसन्न करैं ॥ १८ ॥ यह मंत्र करि अपने कटकमें सबोंको कही
आनन्द भेरीका नाद कर सबोंको चलनेका विचार जनाया तब सब ही लोक चलवेकूं उद्यमी भए आनंदभेरीका
नाद सुन सब ही प्रजा चारों वर्ण अपने कुटुम्ब सहित यादवोंके साथ चलवेकूं उद्यमी भए सब ही यदुवंशी अंधक-
वृष्टीके अर भोजकवृष्टीके चलवेकूं उद्यमी भए मथुराके अर शौर्यपुरके अर वीरपुरके सबही लोक प्रस्थान करते भए
जैसे कोई क्रीडाके अर्थ वन विषै जाय तैसे देश तज विदेशके उद्यमी भए अठारह कोड घर अर अप्रमाण धनके भरे
राजाके साथ निकसे यादवोंका राज्य ही प्रिय है जिनको ॥ २२ ॥ शुभ तिथि शुभ नक्षत्र शुभ योग देखकरि यह
यादव भूपाल प्रयाण करते भए। यद्यपि बलदेव वसुदेवके मनमें यह विचार आया जो जरासिंधसे अब ही लडें
परंतु बडोंकी अज्ञासे प्रयाण ही करते भए उन्होंने कही इस समय तुम्हारी अवस्था नाहीं तब यह
बडोंके आज्ञाकारी सो उनके कहेसे प्रयाण ही किया ॥ २३ ॥ सो अनेक देशनिकूं उलंघकरि ये पश्च-
मकी ओर गए सो विंध्याचलके समीप डेरा किया। सो विन्ध्याचल गजनिके बनकर रमणीक अर जहां
सिंह शार्दूल घने अर जाका शिखर आकाश लग रहा है सो वा गिरकी शोभा प्रजाके मनकूं हरती भई ॥ २४ ॥
यहां हरिवंशपुराणमें तो यह कथन है जो श्रीनेमिनाथका जन्म शौर्यपुरमें भया अर जन्म भये पीछे द्वारका गये अर

भावार्थ—जरासिंधको अपराजितका ऐसा शोक उपजा जो तत्काल प्राण जाते रहै परंतु याके मारवे कर यादवोंपर महाक्रोध उपजा तिसकर प्राण थंभे ॥ १ ॥ समस्त यादवोंके नाशके अर्थ अपने मित्रवर्गोंसे मंत्रकरि आज्ञा करता भया, कैसा है जरासिंध समस्त मय अर पुरुषार्थ तिनकरि पूर्ण है ॥ २ ॥ जरासिंधकी आज्ञासे नानादेशके राजा चतुरंग सेना करि मंडित स्वामीके आज्ञाकारी महा स्वामिभक्त स्वामीके निकट आए सेनारूप समुद्र तिसके मध्यवर्ती जरासिंध पृथिवीका पति यादवनिपर कूच ही करता भया तब यह खबर यादवोंको भई यादव महा चतुर हलकारेही हैं नेत्र जिनके ॥ ४ ॥ यह वार्ता सुनकरि जे वयोवृद्ध हैं अंधकवृष्टि अर भोजकवृष्टीके बंशके सो सब मिलकरि मंत्र करते भए धर्मका है निरूपण जिनके ॥ ५ ॥ यादव विचार करै हैं जरासिंध तीन खंडका स्वामी है अखंड है आज्ञा जाकी सो औरों कर जीता न जाय महा प्रचंड है अर चक्र खड्ग गदा दंड रत्नादि दिव्यास्त्रके बलकर उद्धत है ॥ ६ ॥ अर कृतज्ञ है जो कोई उसकी सेवा करै तिसका गुण मानै है कृतघ्न नाहीं अर कोई उससे द्वेष करै अर फिर प्रणाम करै तो उसे क्षमा भी करै है अबतक अपना बुरा उसने नाहीं किया पहले अनेक उपकारही किए हैं ॥ ७ ॥ अर आपां उसका जंवाई मारा अर भाई मारा सो उसका बडा अपमान भया सो वह अपना अपमान मल धोवनेकूं महा कोपवान अपने ऊपर आवै है ॥ ८ ॥ अर अपना दैवबल अर पुरुषार्थकी सामर्थ्य देखता भी नाहीं देखै है महा गर्ववान है ॥ ९ ॥ अर कृष्णके पुण्यकी सामर्थ्य अर पुरुषार्थ अर बलभद्रका पुरुषार्थ बाल्यावस्थाहीसे लेयकर जगतमें प्रसिद्ध है परंतु उसे नाहीं भासै है अर श्रीनेमिनाथका अपने जन्म भया इन्द्रादिक देवोंके आसन कंपायमान भए जिसका प्रभुत्व बाल्यावस्थाहीविषैं तीन लोकमें प्रगट है जिसकी सेवाविषैं सकल लोकपाल सदा सावधान तिसके कुलकूं ऐसा कौन मनुष्य जो विघ्न करै जिस कुल विषै तीर्थंकर देव प्रगट होय सो कुल अपराजित है किसीकर जीता न जाय ऐसा कौन है जो अग्निकूं हाथ करि स्पर्शै अग्नि तीव्र ज्वालाकरि युक्त है तैसे तीर्थंकर बलदेव वासुदेवके सन्मुख जीतकी इच्छाकरि कौन आवै ॥१३॥

आपकूं कृतार्थ मानता संता समस्त चतुर्निकायके देवनि सहित अर समस्त इंद्राणीनि सहित जन्मोत्सवका लाभ जानैं सो अपन स्थान गया सिद्ध भई है यात्रा जाकी अर दिक्कुमारी हू जन्मसमयका उत्सवकरि पुत्रसहित माता शिवदेवीकूं प्रणामकरि हर्षकी भरी अपने अपने स्थानक गई अपने शरीरकी प्रभाकरि दशों दिशाविषैं किया है उद्योत जिनि अर भगवान जगतके चंद्र अपने उज्ज्वल गुणनिकरि जगतकूं आह्लाद उपजावते लक्ष्मीकरि सोहते भये। कैसे हैं भगवान बाल्यावस्थाविषैं हू बालभावतें रहित है क्रिया जिनकी सो बंधुवर्ग अर देव तिनकरि लडाये वृद्धिकूं प्राप्त होते भये यह अरिष्टनेमिका जन्माभिषेकका स्तवन तीन लोककूं हर्षित करणहारा पापका नाशक पुण्यका मार्ग संसारमें सार मोक्षका कारण भव्य जीवनिकूं प्रमोदका कर्ता प्रमादका हर्ता धर्मका बढावनहारा जो कोई प्रीति करि सुने व्याख्यान करे पढे सदा चिंतवे सो पुरुष सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र संपदाका वर्णनहारा जो वीतरागका धर्म ताहि प्राप्त होय अर वह पुरुष पुण्यके आस्रवका कारण होय है कैसा है पुण्यका आस्रव शरीरके सुखका देनहारा शांतिका करणहारा पुष्टताका वढावनहारा संतोषका उपजावनहार संपतिका मूल यह लोक परलोक कल्याणकी प्राप्तिका प्रत्यक्ष उपाय सर्व पापाश्रवका निवारणहारा पूर्वभवविषैं अनेक दारुण कर्म किये तिनका नाश करणहारा है जे राग द्वेष मोहादि भावकरि उपाजे हैं अशुभकर्म तिनका मेटनहारा यह जिनेंद्रका मुख्य स्तोत्र हमारे भक्तिका समूह करो या स्तोत्रके प्रभावकरि हमारे परमेश्वरमें परमभक्ति होवो॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जन्माभिषेकास्तवनवर्णनो नाम एकोनचत्वरिंशः सर्गः॥ ३९॥

अथानंतर—जरासिंध सुनी जो भाई अपराजित युद्धविषैं परलोक गया यह वार्ता सुनकरि शोकरूप समुद्र विषैं डूबे था सो क्रोधरूप जहाज कर थंभा।

देवनिकी सेनाकरि मंडित शीघ्रही उत्तरादेशाकूं उल्लंघकरि अपना जन्मस्थान जो सौर्यपुर तहां पधारे कैसा है सौर्यपुर ऊंची ध्वजानिका समूह ताकरि शोभित है अर यादवनिके गंभीर नाद तिनकरि जहां दशों दिशा व्याप्त होय रही है अर महा मनोज्ञ सुगंधजलकी जहां वर्षा होय रही है अर पुष्पकी वृष्टि होय रही है ताकरि नगरकी गली रुक रही हैं। अर मानूं वह पुर लक्ष्मीका निधान ही है अनेक निधिनितैं भरा है अर महामंगलका है प्रसंग जाविषैं ऐसे सुंदर सौर्यपुरविषैं श्रीनेमिनाथ आय प्राप्त भये वह सौर्यपुर ऐश्वर्यका अर आश्चर्यका मूल है या पृथिवीविषै आनंदको प्रगट करते लोकनिको प्रमोद वढाते प्रभु आये वयकरि वालक अर गुणनिकरि वृद्ध जिनेश्वर सौर्यपुरकी प्रजा अर राजा समुद्रविजय सोई भये कमलनिके वन तिनके प्रफुल्लित करवेकूं ऊगते सूर्य समान है ताहि ऐरावत मतंगके सिरतैं उतारकरि माताकी गोदमें इंद्र पधरावता भया अर इंद्र आप विक्रियाशक्तिकरि देदीप्यमान हजारों भुजा वनाई सो शोभाकरि युक्त तिनपर हजारों देवी नचाई सो देवी सौंदर्यताके समूहकरि पूर्ण तिनका नृत्य हर्षकरि यादव देखे हैं समस्त पृथिवीके राज्यतैं प्रभुके जन्मोत्सवके लाभ मनमें अधिक जानते संते आनंदरूप हैं नेत्र जिनके सो इंद्रका रच्या आनंद नाटक ताहि निरखते भये जहां इंद्र नटवा ता नृत्यका कहा वर्णन करिये ऐसी ही शोभा ऐसे ही वादित्र ऐसा ही आप ऐसा ही सब समाज ऐसा ही अंगका मोडना ऐसा ही भौंहका चढावना ऐसी ही लीला ताकरि महाप्रवीण इंद्र नटवा आनंद नाटक करता भया प्रगट किये हैं नानाप्रकार रस जानैं अर देवनिका राजा जगतके राजाकूं अर तिनके मातापिताकूं प्रणामकरि पूजाकरि अमोलक वस्त्राभरण पहिराय भगवानके दाहने अंगूठेमें अमृतका स्थापन करि अर अनेक देवकुमार प्रभुकी सेवाकूं राखे। तिनकूं यह आज्ञा करी जो प्रभुकी वय होय ताही प्रमाण तुम वय धारकरि नाना ऋतुविषैं नानाप्रकार सेवा करहु अर सेवाविषै अति तत्पर जो कुवेर ताहि सुरपतिने आज्ञा करी हे धनपति! तू जिनपतिकी वय प्रमाण छहों ऋतु योग्य सकल सामग्री पहुंचाय जो वस्तु न होय सो लावो अर उनकी रक्षा करहु

रानीकूं गूढ गर्भ हुता काहूने न जाण्या सो मार्गमें पुत्र भया यह वार्ता कहि राजा अति उत्सव किया नगरमें सत्रनिके आनंद भया विद्याधरनिके समूह या पुण्याधिकारीके जन्मोत्सवविषैं नूपुरनिका नाद करते नृत्य करते भये ॥ ६० ॥ प्रद्युम्न नाम स्वर्णका है सो यह कुमार स्वर्णकी कांतिकूं जीतै तातैं याका नाम प्रद्युम्न ठहराया यह कुमार सैकडों कुमारनिकरि सेवित राजा कालसंवरके घर वृद्धिकूं प्राप्त होय ॥ ६१ ॥ अथानंतर—रुक्मिणी जागी देखे तो पुत्र नाहीं तव वृद्धा धायतैं कही देखो बालक कहां है सो सगरे मंदिरमें ढूंढ्या अर न पाया तब माता विलाप करती भई हाय पुत्र तोहि काहू वैरीने हर्‍या पूर्वोपार्जित पुण्यने मोहि निधि दिखाय अर पाछी लई, मैं परभवविषैं काहू स्त्रीका पुत्र हर्‍या ताका यह फल है ॥ ६४ ॥ या भांति रुक्मिणी विलाप किया जाकरि सबकूं करुणा उपजै याके रुदनकी ऐसी ध्वनि भई जो सबनिके काननि पडी ॥ ६५ ॥ तब वासुदेव यह वृत्तांत जानि बलदेवसहित रुक्मिणीके मंदिर आय। अर अन्य हू राजलोककी रानी बांधव जन आय भेले भये। रुक्मिणीका अर सब रानीनिका रुदन सुनि नारायण अपने भुजवीर्यकूं अर अपनी सावधानीकूं निंद्यते भये। सुनंदानामा खड्गके स्वामी कृष्ण सो कहते भये जगतविषैं दोय ही पदार्थ हैं दैव अर पुरषार्थ सो दैव ही प्रवल है जे पुरषार्थका गर्व करै हैं तिनकूं धिक्कार ॥ ६८ ॥ जो पुरषार्थही प्रबल होय तो मैं वासुदेव उघडी खड्ग समान तेजस्वी मेरे पुत्रकूं शत्रु कैसे ले जाय इत्यादि विचार करि माधव रुक्मिणीतैं कहते भये हे प्रिये! तू शोक मत करि धैर्य धरहु ॥ ७० ॥ वह पुत्र स्वर्गलोकतैं चया है अर पुण्याधिकारी है सो अल्प आयु न होय मो मारखे पिताके अर तुझ सारखी माताके हीनपुण्यका धनी अर अल्प आयु न होय यह कोई भवितव्य ऐसा ही हुता सो भया या भांति अनेक जाय हैं अर पीछे आवैं हैं। तेरा पुत्र लोकनिके नेत्रनिकूं उत्सवका कर्ता ताहि मैं हेरूंगा जैसें सूक्ष्मदृष्टि वाले द्वितीयाके चंद्रमाकूं आकाशविषैं हेरैं। या भांति रुक्मिणीतें राम कहिये बलभद्र ताका भाई वासुदेव धैर्य बंधाय ताका मुख धुवाया अर पुत्रके ढूंढिवेकूं माधव उपाय करते भये ॥ ७२ ॥ ताही समय नारद

माहात्म्य देखैं ऐसी विचारि यह दोऊ अभिमानी मुनिनपर गए ॥ ७ ॥ सो एक सात्विकनामा मुनि गुरुतैं परै विराजे हुते इन दोऊ विप्र पुत्रनिकूं देखि मनमें विचाऱ्या यह अभिमानी हैं अर क्रोधरूप हैं मत कदाचित गुरुपै जाय विवाद करैं ये दोऊ महिषसमान हैं सो सभाविषैं क्षोभ उपजावेंगे । मुनीनिकी सभा सागर समान है अर श्रीगुरु धर्मका उपदेश करै हैं तातैं इनकूं यहां ही थांभिए यह विचारि अवधि है नेत्र जिनके ऐसे सात्विकनामा साधु द्विजपुत्रनिकूं कहते भए हे विप्रो ! यहां आवहु तव यह सात्विकमुनिपर गए अर उनके निकट बैठे तव इनकूं वादरूप अर गर्वसहित देखि मुनिके निकट अनेक लोग आय भेले भए जैसैं वर्षाविषैं गृहमें पानी आय भरै । मुनिने विप्रनितैं पूछ्या हे विप्रो ! तुम कहांतैं आए तव वे बोले हम गांवतैं आए हैं ॥ १२ ॥ तब मुनि कही यह तो हम जानै हैं शालिग्राम गांवके तुम वासी हो परंतु हमने यह पूछ्या है या संसारविषैं भ्रमण करते तुम कौन गतितैं आए । तव विप्र बोले यह ज्ञान तो काहूकूं नाहीं तव यति कही तुम जहांतैं आए हो सो हम कहै हैं ॥ १४ ॥ तुम पूर्वभवविषैं या ग्रामके निकट श्याल हुते । तुममें पूर्वभवविषैंहू प्रीति हुती ॥ १५ ॥ सो याही गांवमें प्रवरकनामा ब्राह्मण किसान सो सातदिनकी महा वर्षा भई अर प्रबल पवन वाजी अर उल्कापात भए वह किसान कंपायमान है शरीर जाका सो एक बडे वृक्ष तलैं गया अर सात दिनकी वर्षाकरि किसानके चर्म उपकरण नाडी चडस इत्यादि भीजि गए सो दोऊ श्याल क्षुधाकी वेदनाकरि भखते भए ताकरि उदरविषैं वायुशूल उपज्या सो सही न जांय ऐसी वेदना पाय श्याल मूवे अकामनिर्जराके योगतैं तुम मनुष्य भए ॥ १९ ॥ सो एक सोमदेवनामा ब्राह्मण ताकी अग्निलानामा स्त्री ताके तुम दोऊ अग्निभूति वायुभूतिनामा पुत्र भए कुलके गर्वकरि गर्वित ॥२०॥ सो यह कुलमद झूठा है पापके उदयतैं दुर्गति अर पुण्यके उदयतैं सुगति जीवनिकूं होय है कुलजातिके गर्वकरि कहा सो गर्व करना वृथा है ॥ २१ ॥ श्यालनिके मरे पीछे वह प्रवरकनामा किसान खेतमें गया सो श्यालनिको मरे देखि उनकी खालकी भाथडी बनाई सो आजहू वाके घरमें वह दोऊ भाथडी हैं अर प्रवरक मरकरि अपने

है परंतु चांदनीकरि युक्त अत्यंत शोभै है तैसें यद्यपि मोहि परदाराके हरणकरि कलंक तो लागैगा परंतु यह चंद्रमाकरि शोभा ही है ॥ ५८ ॥ चंद्रकांतिके योगकरि पाया है विकाश जानै ऐसा जो कुमुदिनीका वन सो यद्यपि ताहि तोडिवेकी बाधा है तथापि प्रफुल्लित ताके योगकरि बाधाकूं नाहीं देखै है ऐसा चिंतवनकरि यह रागकरि अंध चंद्राभाके हरिवेविषैं मन धारता भया बुद्धिवान अर मानवान हुता तथापि मंदबुद्धि होय गया तब राजाके मनमें प्रधान बुद्धिवान हुता तानैं कही या समय राजा भीमकूं वश करना है सो और उपद्रव न उठावना तब राजाके मनमें आगई सो पहले भीमके ऊपर गये ताहि वशकरि अयोध्या आये चंद्राभाविषैं आशक्त है मन जाका सो वसंतकी क्रीडा रची सब राजा स्त्री सहित बुलाये सो याके आज्ञाकारी सभी राजा राजलोकसहित आये अर राजा वीरसेन हू अपनी स्त्रीसहित आये सबनिकूं वस्त्राभरण देय विदा किये सो प्रसन्न होय सबही अपने अपने स्थानक गये अर वीरसेनका सबनितैं अधिक सन्मानकरि वटपुरकूं विदा किया अर चंद्राभा बेई कही जो इन योग्य आभूषण होय हैं सो थोडे ही दिनमें हो चुकेंगे तब राणी इनकूं विदा करेंगी सो वीरसेन तो भोला सो याके मनमें आय गई सो वह तो अपने स्थानक गया अर ताके पीछे मधुने चंद्राभाकूं घरमें राखी अर सब राणीनिके ऊपर शिरोभाग करी अर पटराणीका पद दिया या सहित यथेष्ट क्रीडा करै ॥ ७६ ॥ अर याका पति वीरसेन याके वियोगरूप अग्नि-करि दाहकूं प्राप्त भया संता वैंडा बावला होगया सो पृथिवीविषैं परिभ्रमण करै हाय चंद्राभा ! हाय चंद्राभा ! ऐसे प्रलाप करता गांव गांवकी गलीमें भ्रमै सो भ्रमता भ्रमता अयोध्या आय निकस्या । चंद्राभा अपने महलके झरोखे बैठी हुती सो अपने पतिकूं देखिकरि दयावान होय राजातैं कहती भई । हे नाथ ! मेरे पूर्वले पतिकूं देखो यह प्रलाप करता भ्रमै है सो राजाने कुछ जवाब न दिया ताही समय कोतवाल एक परदारारतकूं पकडकरि पृथवी-पति पर लाये अर कही हे देव ! यह महापापी है बडा अपराध किया है परदाराके सेवनका जो दंड होय सो याहि दीजिये ॥ ८१ ॥ तब राजाने कही परदारासेवनका दंड हाथ पांव अर सिरका छेद करना है सो योग्य जानो

आहारका त्यागकरि समाधिमरण किया सो नंदीश्वरद्वीपका देव भया चांडालकी पर्यायतैं देवपर्याय भई अर वह कुत्ती श्रावकके व्रत पाल समाधिमरणकरि अयोध्याके राजाके घर पुत्री भई सो यौवनप्राप्त भई तब याका स्वयंवर रच्या सो वरमाला हाथमें अर वरकी ओर निरखे हुती ता समय वह नंदीश्वरद्वीपका देव यहां आय निकस्या सो याहि देखि कानमें कही हे अग्निज्वाला! तूं वे नर्कके दुःख भूल गई अर अब विवाह करै है सो धिक्कार तुझकूं ॥ ५६ ॥ ऐसें देवके वचन सुनि यह राजपुत्री संसारकूं असार जानि सम्यक्तकूं अंगीकारकरि आर्याके व्रत धार एक श्वेत साडी धारी अर सब परिग्रह तजे ॥ ५७ ॥ नवयौवनमें व्रत धारे अर वह दोऊ भाई श्रावकके व्रत पालि समाधिमरणकरि सौधर्म स्वर्गविषैं देव भये अर स्वर्गतैं चयकरि अयोध्याका राजा हेमनाभ ताके धरावतीनामा राणी ताके यह दोऊ मधु कैटभनामा पुत्र भये जब यह बडे भये तब राजा हेमनाभ मधुकूं राज्य अर कैटभकूं युवराज पद देय मुनिव्रत धारते भये ॥ ६० ॥ अर मधु कैटभ दोऊ भाई अति सुखतैं राज करैं इन समान पृथिवीमें अर योधा नाहीं अर अद्भुत है तेज जिनका सो चंद्र सूर्यकी न्याईं उद्योत करते भये ॥ ६१ ॥ तासमय एक भीमकनामा राजा ताके क्षुद्र सामंत अर एक पहाडपर गढ ताहि गहकरि मधुकी आज्ञा न मानै अर याके देशमें बाधा करै सो ताके वश करिवेके अर्थि मधु चाल्या सो मार्गमें एक बटपुरनामा नगर तहां राजा वीरसेन सो राजा मधुका अति भक्त तहां डेरा किया सो वीरसेनने मधुकी अति भक्ति करी अर राजलोकसहित मधुकी पाहुणगति करी अर अति सन्मान किया सो राजा वीरसेनके रानी चंद्राभा सो साक्षात चंद्रकला अर महा रूपवती अर मधुभाषिणी सो वह राजा मधुका मन हरती भई ॥ ६५ ॥ यद्यपि राजा मधुकी बुद्धि शास्त्रविषैं दृढ हुती तथापि चंद्राभाके देखिवेकरि रागरूप होय गई। जैसैं चंद्रकांतिमणिकी शिला दृढ है परंतु चंद्रमाके देखिवेकरि आर्द्र होय जाय ॥ ६६ ॥ राजा मधु मनमें विचारै है यह रूप सौभाग्यकरि युक्त या सहित मैं राज करूं तो वह राज सुखके अर्थि अर या विना मेरे राज विष तुल्य है ॥ ६७ ॥ जैसैं चंद्रमा कलंकी

चित्तमें चिंतवते भए मुनीनिका वडा प्रभाव है हम विनयाचार उलंघ्या हुता सो कीले गए जिनधर्मका इम फल प्रत्यक्ष देख्या अब जो वंधनतैं छूटैं तो जिनधर्मका आराधन करैं यह विचारकरि यह दोऊ खडे अर इनके माता पिताने सुनी जो तिहारे पुत्र मुनिके मारिवेकूं गए हुते सो देवनिने कीला तव यह दोऊ माता पिता आय मुनिके पांव लागे मुनिके प्रसन्न करिवेकूं उद्यमी भए मुनि महा दयावान ध्यानपूर्णकरि तिष्ठे हुते यह सकल कार्य क्षेत्रपालका किया जानि ताहि कही वह महा विनयवान निकट खड्या है ॥ ४१ ॥ सो मुनि कहै हैं हे यक्ष ! इन पुत्रनिका दोष क्षमा करहु कर्मनिकी प्रेरणाकरि जीवनितैं शुभ अशुभ कार्य निपजै है तातैं तुम करुणा करहु यह मुनि आज्ञा करी तब वह कहता भया जो आप आज्ञा करोगे सो ही होयगा यह कह उनकूं अकीले ॥ ४४ ॥ सो यह दोऊ मुनिके मुख यति अर श्रावकका धर्म श्रवणकरि अणुव्रत ले श्रावक भये ॥ ४५ ॥ चिरकाल सम्यक सहित श्रावकके व्रतपाल कालकरि पहिले स्वर्ग देवलोक गये अर इनके माता पिता जिनधर्मकी अश्रद्धाकरि मूवे सो मिथ्यात्वके प्रभावकरि कुगति गये ॥४७॥ अर वे देव देवलोकके सुख भोगि चये सो अयोध्यापुरीविषैं समुद्रदत्तनामा सेठके धारणीनामा सेठानी ताके पूर्णभद्र मणिभद्रनामा दोऊ पुत्र भये नाहीं विरोध्या है सम्यक्त जिनि सो महा जिनधर्मी भए ॥ ४८ ॥ एक दिन महेंद्रसेननामा मुनिके मुख धर्म श्रवणकरि इनका पिता मुनि भया अर नगरका राजा मुनि भया और हू मुनि भये ॥ ५० ॥ अर एक समय यह दोऊ भाई पूर्णभद्र अर मणिभद्र रथ चढे मुनिके दर्शनकूं जाय थे सो मार्गमें एक चांडाल अर कुत्तीकूं देखकरि अति अनुराग उपज्या ॥ ५१ ॥ तब गुरुपै जाय वंदनाकरि भक्तितैं पूछते भए हे प्रभो ! चांडाल अर कुत्तीतैं स्नेहका कारण कहा तब मुनि अवधिज्ञानी त्रैलोक्यकी स्थितिके ज्ञाता कहते भए विप्रके जन्मविषैं तिहारे यह माता पिता हुते सो पापके उदयतैं नरकमें जाय तहांके दुख भोगि यह चांडाल अर कूकरी भए हैं ॥ श्रीगुरुके वचन सुन पूर्णभद्र मणिभद्र उनके पास जाय पूर्वभवकी कथा कहि धर्मोपदेश देते भए सो वे दोऊ ही उपदेश सुनि शांतचित्त भए चांडालकी आयु १ मासमात्र हुती सो श्रावकके व्रतधारि चतुर्विध

पुत्रके पुत्र भया ताहि जातिस्मरण उपज्या सो जानता ही गूंगा होय रह्या है अर अपने भाईनिमें वैठ्या है अर मेरी ओर निरखै है ऐसा कहिकरि गूंगेकूं मुनिने बुलाया अर कह्या तू प्रवरकनामा ब्राह्मण है सो पुत्रका पुत्र भया है अब शोककूं तजि अर गूंगापनाहू तजि अमृतरूप वचन बोलि या संसारविषैं यह जीव नटकी न्याईं नृत्य करै है सो स्वामीतैं सेवक होय अर सेवकतैं स्वामी होय पितातैं पुत्र होय अर पुत्रतैं पिता होय, मातातैं स्त्री होय अर स्त्रीतैं माता होय। संसारका स्वरूप ही विपर्यय है जैसै अरहटविषै ऊपरकी घटी तलैं अर तलेकी ऊपर या भांति होय हैं तैसैं या संसारविषैं उपरांतली होय है यह जीव अनादिकालतैं भ्रमण करै है॥ २७ ॥ यह संसारका चरित्र असार अर महा भयंकर जानि हे पुत्र ! तू सारवस्तुका संग्रह करि दया है मूल जिनका ऐसे पंचमहाव्रत धारि सोई सार हैं याभांति प्रवरकनामा किसान ब्राह्मणकूं मुनिनें प्रतिबोध्या तब वह प्रदक्षिणा देयकरि मुनिके पांव पड्या ॥२९॥ आनंदके अश्रुपातकरि भर गए हैं नेत्र जाके बहुरि उठि गदगद वाणी बोलता हाथ जोड मुनिकूं नमस्कारकरि विप्र कहता भया हे ईश्वर ! तुम सर्वज्ञ तुल्य हो वस्तुका स्वरूप प्रत्यक्ष देखो हो त्रैलक्यकी रचना तुमसूं छिपी नाहीं ॥ ३१ ॥ हे श्रीगुरु मेरा मनरूप नेत्र अज्ञानरूप पटलकरि आच्छादित हुता सो तुम ज्ञानरूप अंजनकी सींककरि पटल दूर किया यह अनादि भववनविषैं मोहरूप अंधकार विस्तर रह्या है अर मैं भववनविषैं अनादिका भ्रमण करूं हूं सो तुम मुक्तिका मार्ग दिखाया ॥ ३२ ॥ हे भगवन् ! तुम प्रसन्न होय मोहि दिगंबरी दीक्षा देवहु यह विनतीकरि प्रवरक किसानब्राह्मण मुनि भया ॥ ३४ ॥ यह विप्रका चरित्र सुनिकरि देखकरि कई मुनि भए अर कई श्रावक भए ॥ ३५ ॥ अर यह दोऊ भाई अग्निभूति वायुभूति विलखे होय घर गए इनके माता पिताने इनकूं बहुत निंदे ॥ ३६ ॥ रात्रिविषैं यह पापी मुनिकूं मारिवे गए वे सात्विकमुनि एकांतविषैं कायोत्सर्ग धरि ठाढे हुते सो इन दोऊने खडग चलाई सो बनका अधिष्ठाता यक्ष देवतानें इनकूं कीले ॥ ३७ ॥ प्रभात भए लोक इनकी निंदा करी अर यह दोऊ भाई हू अपने दुराचारकी मनमें निंदा करते भए ॥ ३८ ॥ यह दोऊ

विषैं पक्षीनिकूं खवाय दूं ॥ ४४ ॥ अथवा मगरमच्छनिके समूहकरि भर्‍या जो समुद्र ताविषैं डाल दूं ॥ ४५ ॥ अथवा यह तत्कालका जाया मांसका पिंड है याके मारवेकरि कहा विना रक्षा आपही मर जायगा ऐसा विचारि करि असुर आकाशतैं उतर्‍या मानूं बालकके पुण्यने उतार्‍या पृथिवीविषैं आय एक खंदरा अटवी देखी तहां वडी भारी शिलाके तले बालककूं दाबिकरि वह धूमकेतुनामा असुर अदृश्य होयगया ॥ ४८ ॥ ताही समय एक मेघकूटनामा नगर ताका अधिपति कालसंवरनामा विद्याधर अपनी कनकमालानामा राणी सहित विमानमें बैठा जाय था सो बालकके पुण्यकरि ताका विमान अटक्या तब वाने विचारी यह कहा कारण है ॥ ५० ॥ तत्काल पृथिवीविषैं उतर्‍या अर बालकके स्वासतैं शिला हालती देखी तब विद्याके बलकरि शिलाकूं उठाय अर बालक देख्या अर अखंडित है अंग जाका अर स्वर्ण समान है प्रभा जाकी साक्षात् कामदेव ॥ ५२ ॥ ताकूं वह विद्याधर दयावान लेयकरि अपनी रानी कनकमाला ताहि देवेकूं उद्यमी भया अर कही तेरे पुत्र नाहीं सो यह तू ले तब वाने पहिले तो हाथ पसारे बहुरि संकोच लिये मानूं नाहीं इच्छे है विद्याधरी दीर्घदर्शिनी जाके विचार गंभीर ॥ ५४ ॥ तब राजा कही हे प्रिये ! ऐसा सुंदर बालक तू क्यों न ग्रहै है। तब वाने कही आगे तिहारे पांचसौ पुत्र हैं अर जिनके नानेरेके बडे २ राजा हैं अर यह बालक पड्या पाया जाका कुल कोऊ जानैं नाहीं सो उन आगे याकी गिनती कहा यह मार्‍या मार्‍या फिरै अर हर कोऊ याके सिरमें दे तब मोपै देख्या न जाय तातैं मैं अपुत्रवंती ही रहूंगी या क्लेशतैं अपुत्रपना ही भला है ॥ ५६ ॥ या भांति कनकमाला कही तब राजा कालसंबरने वाहि धैर्य बंधाया अर वाके कानमेंतैं कर्णपत्र लेयकरि बालकके पट्ट बांध्या अर कही मो जीवते यह युवराज अर मेरे पीछे यह राजा ॥ ५७ ॥ तब कनकमाला बालककूं उरतैं लगाय लिया यह कनकमाला राजविद्याविषैं प्रवीण है यह राजा राणी दोऊ पुत्रसहित मेघकूटनगर गये ॥ ५८ ॥ बालक हू एकदिनहीका हुता अर तासमय रात्रिविषैं यह बालक पाया तासमय राजा रानी ही हुते अर कोई न हुता सो नगरमें जायकरि राजा कही

भई प्रभात पतिसूं स्वप्नके फल पूछे तब पतिने कही तेरे पुत्र महापुरुष आकाशगामी होयगा ॥ ३० ॥ यह पतिके बचन सुनि प्रिया हर्षकूं प्राप्त भई जैसें दिवसके आदिविषैं कमलिनी सूर्यके तेजकरि स्पर्शी हुई प्रफुल्लित होय, तैसी प्रफुल्लित भई ॥ ३१ ॥

अथानंतर—सोलहवें स्वर्गका अच्युतेंद्र उपेंद्र कहिये कृष्ण तिनकूं आनंद बढावता संता रुक्मिणीके गर्भमें आया ॥ ३२ ॥ अर वाही दिन सत्यभामाकूं शुभ स्वप्न आये अर गर्भ रह्या ॥ ३३ ॥ इन दोऊनिके गर्भ बढे सो माता पिताकूं परम सुख होय ॥ ३४ ॥ जब नव महीने पूर्ण भये तब रुक्मिणीके पुत्र भया सर्व लक्षणकरि पूर्ण अर वाही समय सत्यभामाके पुत्र भया ॥ ३५ ॥ सो दोऊनिके बधाईवाले रात्रिसमय एक साथ हरिपर आये हरि पौढे हुते सो सत्यभामाके बधाई वारे गर्वकरि सिराहनेकी ओर खडे रहे अर जे रुक्मिणीके बधाई वारे हुते तिनने जानी जो हम पांयन तरफ ठाडे रहेंगे तो पहले दृष्टि हम पर आवेगी। इतनेहीमें हरि जागे सो पहले रुक्मिणी वालेनिकी तरफ दृष्टि पडी अर उनही बधाई दीनी अर पीछे सत्यभामाके बधाई देते भये सो प्रथम पुत्र रुक्मिणीका ठहरया अर वह दूजा ठहरया हरि हर्षित होय दोऊकूं अंगके आभूषण दिये बडा हर्ष भया ॥ ३८ ॥ अर वाही वेला एक धूमकेतुनामा असुर महा बलवान धूमकेतु कहिये अग्नि समान प्रज्वलित सो ताका विमान रुक्मिणीके मंदिरपर अटक्या सो कुअवधिकरि तानैं रुक्मिणीका पुत्र अपना शत्रु जाण्या सो क्रोधकरि अरुण भये हैं नेत्र जाके विमानतैं नीचा आय प्रछन्नरूप रुक्मिणीके प्रसूतिगृहमें प्रवेश किया, बालकके दर्शनरूप ईंधनकरि प्रज्वलित भई है पूर्व वैररूप अग्नि जाके ॥४१॥ यद्यपि रुक्मिणीके महलकी महा रक्षा है अर काहूका संचार नाहीं तथापि यह आसुरी मायाकरि रुक्मिणीकूं महा निद्रा अनाय बालककूं अपनी बाहुकरि उठाया। बालक पुण्यके भारकरि पर्वत समान है परंतु असुर मलिन बुद्धि लेयकरि आकाशमें चाल्या ॥ ४३ ॥ सो ऊपर लेजाय विचार कीया यह मेरा शत्रु स्त्रीका हरणहारा है याहि हाथनिकरि मसल डारूं या नखनकरि विदारि आकाश-

ईर्षारूप शल्यकरि पीडित है चित्त जाका सत्यभामा जानै यह वनदेवी है ता समय हरि आयकरि सत्यभामासूं हंसते भये जो तुमकूं तिहारी वहनका अपूर्व दर्शन भया परन्तु भलीभांति भया सुनकरि सत्यभामा यह रहस्य जानि कृष्णतैं कोपकरि कहती भई हम तो आपसमें मिल ही रही हैं तुम कहा मिलावोगे तब रुक्मिणी कृष्णके बचन सुनिकरि सत्यभामाकूं जानकरि विनयपूर्वक नमस्कार करती भई जे वडे कुलके उपजे हैं तिनमें विनय लक्षण सहज ही होय है ॥१७॥ वृक्ष अर लतानिके मंडपकरि मंडित वह वन ताविषैं दोऊ राणीनिसहित चिरकाल विहार करि कृष्ण अपने महल पधारे ॥ १८ ॥ वे कृष्ण महाशूरवीर सुखके सागरमें मग्न तिनके एक दिनकी न्याईं वहुत दिन व्यतीत भये ॥ १९ ॥ एकदिन हस्तिनापुरका अधिपति राजा दुर्योधन तानें स्नेहपूर्वक हरिके निकट दूत भेज्या अर पत्रमें यह समाचार लिखे कि तुम्हारी रुक्मिणी अर सत्यभामा दोनों रानीके गर्भ है सो जाके पहिले पुत्र होवेगा सो मेरी पुत्रीका वर यह दूतके वचन सुनि हरिने ताका वहुत सम्मान कर विदा किया सो जायकरि अपने पतिके कार्यकी सिद्धि करता भया ॥ २२ ॥ अर यह वार्ता सत्यभामा सुनकरि रुक्मिणीके निकट अपनी दासी पठवाई सो नमस्कारकरि कहती भई ॥ २३ ॥ हे देवी ! हमारी स्वामिनीने हमारे मुख कितनेक समाचार कहाये हैं सो तुम कणफूलनिकी न्याईं काननिमें धारहु तुम महा बुद्धिमान हो ॥ २४ ॥ सत्यभामा यह कही है जो हम तुम दोऊमें जाके पुत्र होय सो दुर्योधननकी पुत्री परणेगा सो तिहारे जो पहले पुत्र होय तो वह वरैगा। अर जो मेरे होय तो वह वरैगा सो तिहारे पुत्र परणैं तो मेरे शिरके केश मुंडाय तिनपर पांव धरि परणिवे जाय अर मेरा परणें तो तिहारे केशनिपर पांव धरि परणिवेकूं जाय यह अपने वचन हैं। हे यशकी धरणहारी सौभाग्यवती ! यह वचन हमारी स्वामिनी कहे सो हम तुमतैं कहे सो अब तुम कहो सो उनतैं कहें तब रुक्मिणी प्रमाण करी वह पीछे जाय सत्यभामातैं कहती भई ॥२८॥ एकदिन रुक्मिणी रात्रिविषैं सेजपर शयन करती हुती सो स्वप्नविषैं हंस विमान पर चढी आपकूं अंबर विषैं विहार करती देखी ॥ २९ ॥ तब जागी अति प्रसन्न

सामग्री दी। सब राणीनिके शिरोभाग करी सो रुक्मिणी पतिकी प्रीतिकरि अर मान्यकरि अति संतुष्ट भई अबतक सत्यभामाका अर रुक्मिणीका मिलाप न भया है रुक्मिणी अति चतुर सो मनमें जाने सत्यभामा ही हरिके मन भावती है अर महासुंदर है सो काहूभांति मो पर अधिक कृपा रहै तो भली। सो सत्यभामातैं ईर्षा राखै रतिक्रीडाविषैं पतिकूं अति रमावती भई कृष्णके रुक्मिणीतैं अति राग सो एकदिन रुक्मिणीके मुखके तांबूलका उगाल पीतांबरके पल्ले वांध छिपाय अर सत्यभामाके घर गये वाकी सेजपर जागते ही सोय गये अर वह पीतांबरके पल्ले बंधा हुआ उगाल सो सहज ही सुगंध अर रुक्मिणीके मुखकी सुगंध तातैं अति सुगंध तापर भंवरनिके समूह गुंजार करते हुते सो सत्यभामा जानी यह कोई अद्भुत सुगंधित वस्तु है सो पीतांबरके पल्लेतैं खोलि वह महासुगंध सुंदर ताहि पीसकरि अंगके लगावती भई। तब माधव मुलके अर वह ईर्षाकरि कोप करती भई अर कही रुक्मिणी तो मेरी बहिन है तुम क्यों हसो हो ॥ ६ ॥ हरिकी चेष्टाकरि सत्यभामा सौतका सौभाग्य अति जानिकरि ताके रूप लावण्य देखिवेकूं अभिलाषिनी भई अर पतिकूं कहती भई हे नाथ! मोहि रुक्मिणी दिखाओ मेरे कान तो ताके गुण श्रवणकरि हर्षित भये अब नेत्रहू हर्षित करहु ॥ ८ ॥ तब कृष्ण कही भली बात तुमकूं मिलावेंगे यह कहकरि आप मणिवापिकाके तट सत्यभामाकूं ले गये अर कही तुम यहां तिष्ठो मैं रुक्मिणीको लाऊं हूं सो आप आयके रुक्मिणीकूं ले गये अर कही हे प्रिये! तुम वनविषै प्रवेश करहु। मैं भी आऊं हूं सो आप तो वृक्षनिके आसरे होय रहे अर रुक्मिणी वनके मध्य होय गई सो सत्यभामा रुक्मिणीकूं दूरतैं देखि जानी यह कोई वनदेवी है अद्भुत आभूषण पहिरे आम्रके वृक्षकी डाली हाथतैं पकडे खडी, ढीले होय रहे हैं चोटीके केश जाके तिनकूं वायें करते संवारती स्तनके भारकरि नम्रीभूत है अंग जाका जैसे अद्भुत लता फलके भारकरि नम्रीभूत होय है तैसी शोभै है ॥ १२ ॥ ऐसी रुक्मिणीकूं देखिकरि सत्यभामा जानी यह कोऊ वनदेवी है। तब पुष्पांजलि चढाय रुक्मिणीके पांयनिपर पडी अपना सौभाग्य अर सौतका दुर्भाग्य यांचती भई

अर मुरारि कहिए कृष्ण सो हू रुक्मणीका शरीर सोई भई बेल अर वाका मुख सोई सुगंध फूल ताका भंवर भया निशविषैं रमता भया सो अति क्रीडाकरि कोमल सेजविषैं दोऊ लगकरि सूते सो परस्पर भुजानिके स्पर्शतैं सुखनिद्रा आयगई। अर प्रभातका समय आया कूकडे बोलने लगे मानूं वे कुर्कट रात्रिका अंतही निवेदन करैं हैं पहले तो वह कुर्कुट ऊंचे स्वर बोलै हैं बहुरि नीचे स्वर बोलैं सो मानूं सुख सेज सूनी जे यादवनिकी रानी तिनके भयकरि धीरे बोलै हैं जो मत कदाचित हमारे उच्चशब्दकरि यह रानी दुःख पावै। रात्रि थोडी सी ही रहै तब कूकडे बोलै हैं सो कूकडानिका बोलना कामिनीनिकूं रुचै नाहीं प्रभातसमय प्रथमसंध्याकी न्याईं रुक्मिणी कृष्णके पहिले जागी। यह पतिव्रतानिका धर्म है पतिके शयन किएपीछे आप शयन करै अर पतिके जागनेतैं पहिले वह जागै। अर पतिकूं भोजन कराए पीछे आप भोजन करै सो रुक्मिणी कृष्णतैं पहिले जागकरि सेजतैं उतर बैठी अर पतिके पांव दाबै सो कृष्ण प्रियाके हाथका स्पर्श जानिकरि जागे देखैं तो साक्षात लक्ष्मी पांव पलोटै है अर रतिक्रीडाकरि दैदीप्यमान है मुखकमल जाका अर लज्जाकरि नीची होय रही है ॥ ८ ॥ सो कृष्ण नवीन कामिनीकूं देखकरि अति अनुरागरूप भए ऐसी सुंदर स्त्री काहूके नाहीं बहुरि प्रभातके वादित्र वाजे संगीतकी ऐसी ध्वनि भई जैसी मेहकी ध्वनि होय द्वारकामें घर घर लोग जागे सब प्रजा अपने अपने कार्यविषैं प्रवर्ती अर सूर्यका उदय भया, जो तिमिर निशाकरतैं न गया हुता सो सूर्यके उदयतैं गया अर पदार्थ प्रगट भासने लगे सूर्य दुर्निवार तिमिरके हरिवेकूं समर्थ है अर जगतका नेत्र है निर्मल है सो प्रगट भया जैसैं जिनवचन मिथ्यातरूप तिमिरकूं हरिकरि विधिमार्गविषैं प्रवर्तें तैसैं रवि रात्रिकूं हरकरि आकाशविषैं चढ्या ॥ ११० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ रुक्मणीहरणवर्णनोनाम द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥

अथानंतर—कृष्णने सत्यभामा घरविषैं शिरोभाग रुक्मिणीकूं महल दिया सो महल सकल संपदाकरि भरया रुक्मिणीकूं कृष्णने पटराणीका पद दिया प्रधान अर द्वारपाल अर सेवक हाथी, घोडे, रथ, पालकी आदि सब

राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! जब वासुदेवने शिशुपाल मारचा अर अनेक रथनिके समूह चूर्ण करि डारे तब मानूं सूर्यहू अपनी किरण संकोचकरि अस्ताचलके आश्रय आय गया सूर्यने मनमें विचारी यह माधव तेजस्वीनिका तेज नाहीं देख सकै है। मति कदाचित मोहि तेजवान जानिकरि पकड ले ऐसी शंकाकरि दिवाकर अस्त भया ॥ १०० ॥ जब सूर्यका उदय भया हुता तब याके अनुरागकरि संध्या आरक्त भई हुती अर जब सूर्य अस्त भया तब भी संध्या आरक्त होती भई सो मानूं आद्योपांत अपना अनुराग यानैं दिखाया।

भावार्थ—जैसा उदयविषैं तैसा ही अस्तविषैं अनुराग ऐसा ही चाहिये ॥ १०१ ॥ जब सूर्य अस्त भया अर संध्याहू याके पीछे चलीगई तब समस्तजगत तिमिरके पटलकरि आच्छादित भया सो तिमिरपटलकरि कज्जलसमान श्याम है अर मोहकूं उपजावै है अर कामकूं वढावै है ऐसी जो रात्रि संबंधी पवनकरि तिमिरकी पताका फरावै है जैसैं राजाका वियोग भए दुष्ट जन चौगिरद दौडें तैसैं दिनकरके अस्त होते तिमिर सर्वत्र विस्तरचा ॥२॥ बहुरि केतीक रात्रि गए चंद्रमाका उदय भया सो चंद्रमा अपनी किरणनिकरि निशा संबंधी अंधकारकूं हरता संता पृथिवीविषैं प्रकाश करता भया जैसैं तृषातुर अंजुलिकरि जल पीवै तैसैं मनुष्यनिके लोचन तेई भई अंजुलि तिनकरि पीया संता निशाकर जननीके मनका आताप मेटता भया अर मदनकी बुद्धि करता भया वह चंद्रमा जे सुखी जन कहिए संयोगी जन हैं तिनिका तो सखा कहिये मित्र है तिनकूं तो प्रमोद उपजावै है। अर जे विरही हैं तिनकूं आताप उपजावै है चंद्रमाकी किरणकूं स्पर्शतीथकी कमोदिनी विकाशकूं प्राप्तभई जैसैं प्रिया प्रीतमके समीप विकाशकूं प्राप्त होय। अर चंद्रमाके उदयतैं कमलिनी मुद्रित भई अर चकवा चकवी वियोगकरि दुखी भए जे हर्षके कारण हैं तेहू दुखीनिकूं सुख न उपजाय सकै ॥ ४ ॥ जब रात्रिका समय आया तब मानी नायकानिके मान मिटे वह रात्रिका समय स्त्री पुरुषनिकूं हर्षका उपजावनहारा है तासमय फटिकमणीनिके महल अर हीरा मोतीनिके महल चांदनीनिकरि अति शोभित तिनविषैं मनोहर स्त्रीनिकरि संयुक्त यादवनृप सुखतैं रमते भए

कैसैं विजय होय यह मेरे मनमें संदेह है सो मैं ही मंदभागिनी हूं अर तुम तो वीराधिवीर हो सो तिहारे युद्धकी चिंता कहा यह वचन रुक्मिणीने कहे तब कृष्णने कही हे कोमलचित्तकी धरणहारी ! तुम भय मत करहु यह बहुत भए तो क्या मैं पराक्रमी एकही घना मेरे होते यह क्या करि सकैं ॥८७॥ तब रुक्मिणीने कही अतिमुक्तिक नामा मुनिने यह कही हुती जो एकवाणकरि सात तालके वृक्ष छेदै सो वासुदेव है यामें संदेह नाहीं । ये वचन रुक्मिणीके सुनकरि कृष्णने एक वाणकरि तालवृक्षनिकी पंक्ति छेदी यह वासुदेव सामान्यास्त्र अर दिव्यास्त्रनिके वेत्ता इनकी शस्त्रविद्याका कहा कहना अर रुक्मिणीकी अंगुलीविषैं वज्रमणिकी मुद्रिका हुती सो माधवने अपने हाथकरि चूर्णकरी तब रुक्मिणीका यह संदेह तो गया जो या युद्धविषैं दोऊ भाई तो मारे न जांय तब हाथ जोड बहुत विनती करी हे नाथ ! मेरे भाईकी रक्षा करो युद्धविषैं यह न मारा जाय ॥९२॥ तब हरिने कही तेरे भाईकूं न मारें कृष्ण अर रुक्मिणी तो रथमें विराजे हैं अर बलभद्र सारथी हैं सो बलभद्रने शत्रूनिकी ओर रथ चलाया दोऊभाई क्रोधकरि वैरीनिपर वाणनिकी वृष्टि करते भए सो शिशुपालका सब कटक भाग्या अर वह दोऊ रुक्मी अर शिशुपाल खडे सो शिशुपालकूं तो हरिने कहा जो तू हमतैं युद्ध करि यह शिशुपाल राजा मदघोषका पुत्र है अर महा उन्मत्त है परंतु कृष्णतैं कहा करि सकै कृष्ण तो हरि कहिए साक्षात् सिंह ही है अर वह गज है अर बलभद्रने रुक्मीतैं कही तू हमतैं लडि सो उन दोऊनितैं यह युद्ध करते भए सो शीघ्र ही शिशुपालका सिर कृष्णने वाणकरि वेध्या सो भूमिमें पड्या ताके सावंतपनेका अति मद हुता अर पृथिवीविषैं अतिशय हुता सो यश सहित वाकूं मार्‌या अर बलदेव रुक्मीकूं घायल किया अर रथ चूर्ण किया रुक्मिणीका भाई जानि कृष्णने जीवदान दिया अर दोऊ भाई विजयकरि रुक्मिणीकूं लेय गिरनार गए तहां कृष्णतैं रुक्मिणीका विवाह भया । कुंदनपुरके राजाकी पुत्री परणकरि हलधरसहित हरि द्वारावती आया ॥ ९८ ॥ बलभद्र तो रेवतीके मंदिर गए रेवतीतैं अधिक है प्रीति जिनकी अर कृष्ण नव वधू जो रुक्मिणी तासहित परम प्रेमतैं रमते भए ॥ ९९ ॥ गौतमगणधर

विषें तिष्ठे है जो तेरा हमतें सच्चा स्नेह है तो हमारे रथमें आय वैठ अर हमारे मनोरथ पूर्ण कर ॥ ७० ॥ यह
वचन माधवने कहे तव भूवा रुक्मिणीतें कहती भई हे कल्याणरूपणी ! जो अतिमुक्तिक स्वामीने कहा हुता
सो तेरा वर तेरे पुण्यके उदयतें यहां आया अर पुत्रीके देनहारे शास्त्र में मातापिता कहे हैं सो माता पिता हू
विध कहिये कर्म ताके अनुसार दे हैं। सो पूर्वोपार्जित कर्मही गुरु है ॥ ७३ ॥ ये वचन भूवा कहे अर रुक्मिणी
कृष्णविषें अति अनुरागिणी परंतु लज्जाकरि युक्त सो रथ पर कैसे चढै। तव माधव अपने दोऊ हाथनिकरि याहि
उठाय अर रथमें धरी स्नेहकरि लग गए हैं नेत्र जाके ॥ ७४ ॥ यह दोऊ मदनकरि आतुर सो इन दोऊका पर-
स्पर अंगस्पर्श तो होय गया सो दोऊकूं अतिसुख उपज्या ॥ ७५ ॥ कृष्णहू अद्भुतरूप अर रुक्मणीहू अद्भुत
रूप अर दोऊके सुगंध शरीर मुखके सुगंध स्वास सो परस्पर दोऊके सुगंधमें भर गए प्रियाका रूप तो प्रीतमके
मनकूं वशीकर होता भया अर प्रीतमकारूप प्रियाके मनका वशीकरण होता भया पूर्वोपार्जित कर्मने रुक्मणीकूं
शिशुपालतें विमुख करी अर कृष्णकूं सन्मुख करी विधिने इनका संयोग किया ॥ ७७ ॥ कृष्णने रुक्मिणी रथमें
चढाय मनमें विचारी ऐसा तो मैं निर्वल नाहीं जो चोरकी न्याईं छानें ले जाऊं। तव पंचायननामा शंख मोहनने
वजाया तव ताका शब्द दशोंदिशानिमें भया सो शब्द सुनि शत्रुकी सेना क्षोभकूं प्राप्त भई रुक्मी अर शिशुपाल
यह वृत्तांत जानकरि युद्धकूं चढे तिनके साथ साठहजार रथ अर दस हजार हाथी अर तीसलाख घोडे सो
पवनतेंहू शीघ्रगामी ॥ ८१ ॥ अर वहुत लक्ष्य पयादे जिनके हाथनिमें खड्ग चक्र धनुष इतनी सेनासहित
रुक्मी अर शिशुपाल दशोंदिशाकूं ग्रसते हरि हलधरके निकट आए ॥ ८२ ॥ तव माधव रुक्मिणीकूं शत्रुओंकी
सेना दिखावते भए रुक्मिणी हरिके वांये अंग वैठी है सो रुक्मिणी मृगनेनी वैरीका प्रवल वल देखि उपजी
है पतिरमणकी शंका जाके सो पतितें कहती भई ॥ ८४ ॥ हे नाथ ! यह मेरा भाई रुक्मी कोपित भया अर
यह शिशुपाल सो इनके अपार सेना है अर आप दोऊ भाई ॥ ८५ ॥ सो तिहारी दोऊ भाईनिकी सेनातें रणविषें

वैरानुभावतैं वालककूं मातातैं जुदा करता भया धिक्कार या वैरकूं यह वैर पापका बढावनहारा है ॥ २२ ॥ अर प्रद्युम्न पूर्वभवके पुन्यतैं बचा सो कष्टविषै रक्षा करै यह सामर्थ्य पुण्यहीकी है ॥ २३ ॥ सीमंधर जिनेंद्रने यह कथा कही सो पद्मरथ चक्रवर्ती सुनिकरि प्रमोदरूप भया प्रणाम करता भया ॥ २४ ॥ अर नारद हू यह कथा सुनि जिनेश्वरकूं प्रणामकरि हर्षित होय चाल्या सो आकाशके मार्ग होय तत्काल मेघकूटनामा नगर गया ॥ २५ ॥ कालसंवरने नारदका बहुत विनय किया अर नारदहू पुत्रलाभके उत्सवकरि वाहि आनंद उपजायकरि कनकमाला रानीके मंदिर गया वानैं बहुत विनयकी वह पुत्रवती सो बारंबार वाकी प्रशंसा करै पुत्रकूं नारदने देख्या जाकी सैकडों कुमार सेवा करै हैं सो प्रद्युम्नकुमारकूं देखकरि प्रमोदके योगतैं नारदके रोमांच होय आए परंतु काहूकूं भेद न जताया ॥ २७ ॥ राजा राणी कुंवर सबने प्रणाम किया सो इन आशीष देयकरि आकाशके मार्ग विमानमें बैठे शीघ्र ही द्वारिका आए प्रद्युम्नकी कथा पूर्व भव संबंधी जिनेन्द्रके मुख सुनी हुती सो यादवनिने कही अर आप मेघकूटनामा नगरविषैं प्रत्यक्ष प्रद्युम्नकूं देखि आए सो सब वार्ता यादवनितैं कहि करि सबकूं हर्ष उपजाया ॥ २९ ॥ बहुरि नारद प्रफुल्लित है मुख कमल जिनका सो रुक्मिणीकूं देखकरि सीमंधर जिनेश्वरकी भाषी सकल कथा कहकरि बहुरि कहते भए। हे रुक्मिणी! तेरा पुत्र मेघकूटपुरविषैं कालसंवर राजाके घरमें अनेक राजकुमारनि सहित क्रीडा करता देख्या सो मानूं साक्षात् देवकुमार ही है ऐसा रूपवान और नाहीं ॥ ३१ ॥ सो तेरा पुत्र सोलहवें वर्ष सोलहलाभ संयुक्त प्रज्ञप्ती विद्याकूं धरिकरि आनंदरूप आवैगा जो दिन वह आवैगा ता दिन तेरे मंदिरके उपवनविषैं विना समय मयूर ध्वनि करैंगे ॥ ३३ ॥ अर तेरे उपवनविषैं एक मणिवापिका सूखी है सो पुत्रका आगमन होयगा ताही समय वह वापिका जलतैं पूर्ण होयगी अर कमल फूल जांयगे ॥ ३४ ॥ अर तेरा शोक दूर करिवेके अर्थि बिना ही समय अशोकवृक्ष प्रफुलित होयगा अर मूक कहिये गूंगा ते वचनालाप करने लगेंगे अर कुब्ज कहिये कुबडे ते कुब्जपनतैं रहित होंयगे ये कारण

तिष्ठे धैर्यरूप बख्तरकूं पहिरे बाण नदीधारा समान जो मेहकी धारा ताहि धैर्यसूं सहते भए ॥ ९ ॥ अर शीतकालकी रात्रिविषैं वे दोऊ बुद्धिमान नदी सरोवरनिके तीर तिष्ठे हैं देहकी कांतिरूप कमलकूं क्लेशकी उपजावनहारी जो हिमऋतुका शीत पवन ताहि दोऊ मुनि कायोत्सर्ग धरि सहते भए ॥ १० ॥ अर इनके निरंतर बाहर भावनाका चिंतवन वे बारह भावना चारित्र धर्मकी शुद्धता करणहारी तिनकरि इनका हृदय पवित्र होता भया अर बाईसपरीषहकूं जीतिकरि योगीश्वर संवरकूं करते भए ॥११॥ वे दोऊ ध्यान अर अध्ययनविषैं सावधान वैयावृतकी क्रियाविषैं उद्यमी रत्नत्रयकी शुद्धताकरि और मुनीनिकूं दृष्टांतरूप होते भये जो कोऊ मुनिव्रत धारो तो ऐसे तप करो ॥ १२ ॥ यह मधुकैटभ तपोधन महा मुनीश्वर हजारोंवर्ष तपकरि ॥ १३ ॥ अंतसमय सम्मेदशिखर आयकरि प्रायोपगमननामा सन्यास धारण किया । कैसे हैं दोऊ यतीश्वर माया मिथ्या निदान यह तीन शल्य तिनतैं वार्जित हैं एक महीनेका सन्यास धरिकरि शरीर तजि सोलहवें स्वर्ग मधु तो इंद्र भया अर कैटभ सामानिक जातिका देव भया हजारों देव देवनिका नायक भया ॥ १५ ॥ बाईस सागर दोऊनिकी आयु भयी दोऊ सम्यक्दृष्टि स्वर्गविषैं सुख भोगते भए ॥ १६ ॥ तिनमें मधुका जीव पहले चया सो रुक्मिणीकी कुक्षिरूप रत्नकी खानविषैं भरतक्षेत्रका कृष्णनामा नवमा नारायण ताके प्रद्युम्ननामा पुत्र होयगा अर दूसरा भाई कैटभ सोहू देवलोकतैं चयकरि याहीका भाई दूसरी जांबुवतीनामा माता ताके गर्भविषैं पुत्र होयगा अर याका नाम शंबुकुमार होयगा सो रूपकरि पराक्रमकरि कृष्ण समान होयगा ॥१८॥ ये दोऊ भाई जन्मांतरकी प्रीतिकरि परस्पर हितविषैं उद्यमी महाधीर चरमशरीरी प्रद्युम्न अर शंबुकुमार महासुंदर याही भवतैं सिद्धलोक सिधारेंगे अर वह राजा वीरसेन वटपुरका स्वामी चंद्राभाका धनी स्त्रीके विरहके संतापतैं आर्तध्यानविषैं गमन होय मूवा सो संसारवनविषै चिरकाल भ्रमणकरि मनुष्य भया अर अज्ञान तपकरि धूम्रकेतु कहिए अग्निके समान प्रज्वलित सो धूम्रकेतु नामा असुर भया ॥ २१ ॥ सो पूर्वभवकी स्त्रीका हरण विभंगा अवधितैं जानिकरि

करि वश न करै तौलग चढनेवालेनिकूं भयही है कुशल नाहीं ॥ ९५ ॥ जो यह मनरूप दंती साधुरूप महाव्रतके योगकरि वश होय तो तपरूप रणभूमिविषैं पापरूप सेनाकूं हणै यह पंचेंद्रीरूप मृगनिके समूह परस्पर सुगंधरूप शब्दके अभिलाषी मनरूप पवनके प्रेरे विषयरूप बनमें चरै हैं तिनकूं धैर्यरूप पाशमें बांधि-करि चिरकालके उपार्जे पाप तिनका मैं क्षय करूं हूं ॥ ९८ ॥ ऐसे कहिकरि राजा मधुने मनका वेग रोक्या अर ज्ञानरूप जलकरि बुद्धि निर्मल करी भवतापकी शांतिके अर्थि मुनिव्रत धरिवेका उद्यमी भया ॥ ९९ ॥ ताही समय एक विमलवाहननामा मुनि अयोध्याके सहस्राम्रनामा बनविषैं सहस्र मुनि सहित आए। सो मुनिका आगमन सुनिकरि राजा मधु कैटभ दोऊभाई परिजन कहिए परिवारके लोक अर पुरजन कहिए नगरके लोग अर बंधुजन कहिए राजलोक तिन सहित साधुके समीप गया अर विधिपूर्वक मुनिकी पूजाकरि धर्म श्रवण किया संसार शरीर अर इनसूं उपज्या है वैराग्य जाके सो राजा मधु कैटभ सहित मुनि भया ॥ २ ॥ अर औरहू वडे बडे वंशके उपजे हजारों राजा मधुके लार तप धारते भए अर चंद्राभा आदि अनेक राणी आर्यिका भई ॥ ३ ॥ अर राजा मधुका माधवनामा पुत्र राज्य करै सो कुलकी वृद्धिका करनेवाला दिन दिन बढता जो पुरुषार्थ अर विजय तिनकरि युक्त बहुत दिन राज्य करता भया अर दोऊ भाई मधु कैटभ पंचमहाव्रत अर पंच समिति तीन गुप्तिकरि मंडित सकल परिग्रह रहित निस्पृह निर्ग्रंथनके गुरु महातप करते बाहरके अर भीतरके सब परिग्रह तजे एक शरीर मात्रही है परिग्रह जिनके काहूतैं ममत्व नाहीं षष्ट कहिए बेला अष्टम कहिए तेला पक्ष कहिए पंद्रह उपवास मासोपवास अर षट्मास पर्यंत यह धीर उपवासही करते भए जेते सिद्धांतविषैं तपके विधान कहे हैं अर उपवासनकी विधि कही है सो कर्म निर्जराके अर्थि सब करे ॥ ७ ॥ अर ग्रीषमऋतुविषैं ऊंचे गिरिके शिखर अतापन योग धरि तिष्ठे सो पसेवकी बूंद इनके परती भई सो मानूं कर्मही झरै हैं ॥ ८ ॥ अर वर्षा ऋतुविषैं वे धीर भगवान जीवदयाके प्रतिपालक वृक्षके मूल दोऊ मुनि

जसा करो तब चंद्राभा राजाकूं कही हे प्रभु ! ऐसा क्या यानैं अपराध किया जो ऐसा दंड याहि दीजै तब राजा कही परदारा समान अर पाप कहा तब चंद्राभा कही या पापका दंड प्रजाहीकूं है या राजानिकूं भी दंड है तब राजाने कही सबनिकूं है तब वह हंसी अर नीची होय गई।

भावार्थ—तुम भी परदारारत पापी हो। तब राजा मनमें समझि मुर्झाय गया जैसैं दाहका मार्‍या कमल मुर्झाय जाय राजा मनमें चिंतवै है यानैं मेरे कल्याणके अर्थि सच्ची वार्त्ता कही परस्त्रीका हरण दुर्गतिका कारण है राजाकूं वैराग्य उपज्या अर यह हू वैराग्यरूप भई राजाकूं विरक्त जानि चंद्राभा कहती भई हे प्रभु ! ऐसे अन्यायरूप भोगनिकरि कहा यह परस्त्रीके विषय किंपाक फलसमान दुःखदाई हैं वाह्य मनोज्ञ भासैं तो कहा ॥८५॥ भोग तो वही है जो आपकूं अर परकूं संताप उपजावै समस्त ही विषय शास्त्रतैं विरुद्ध हैं अर परदारासेवन अर परधनहरण अर मांसभक्षण यह तो महापाप हैं इन पापनिके करणहारे नरक निगोदविषैं जाय हैं या भांति चंद्राभाने मधुकूं संबोध्या तब राजा मधु प्रतिबोध होय मोहरूप मदिरा जो काम सो तज्या ॥ ८७ ॥ अर अति आदरतैं राजा ताहि कहता भया हे सत्यभामिनी ! तैनैं भली कही ॥ ८८ ॥ ऐसे कर्म भले पुरुषनिकूं योग्य नाहीं इन बातनिकरि आपकूं नरकादि पीडा उपजै है इन बातनिके करणहारे महापापी या भवविषैं हू दुखी होंय अपयश लहैं परभव नरककेविषैं पडै हैं ॥ ८९ ॥ जो मेरे सारिखे राजा हू ऐसे निंद्य कर्म करैं तो प्रजाका कौन-निवारे ॥ ९० ॥ निज स्त्रीविषैं हू जो अधिक राग करै तो वह हू कर्मबंधका कारण है निंद्य है तो परस्त्रीसेवनकी क्या बात परस्त्रीसेवन समान और पाप नाहीं ॥ ९१ ॥ यह मनरूप माता हाथी ज्ञानरूप अंकुशकरि रोक्या हू उवट मार्गविषैं ले जाय है ॥ ९२ ॥ यह मनरूप मतंग गज तीव्र तपरूप अंकुशकरि उवटमारगतैं पीछे लाय मारगविषैं चलावै है सोही धन्य है ॥ ९३ ॥ काम लोभकी वासनाकरि उन्मत्त भया यह मनरूप गज ताकूं तप संयमरूप दंडकरि जबलग पीछे न लावै तौलग मदका अभाव कहांतैं होय ॥ ९४ ॥ जबलग मनरूप माते मतंगकूं यत्न

होंय तब तू अपने पुत्रका आगमन जानियो। अर हे पुत्री! तू सीमंधरस्वामीके वचन अन्यथा मत जानियो ॥ ३७ ॥ यह नारदके मुखके हितरूप वचन सुनिकरि श्रद्धा करी अर नमस्कारकरि नारदतैं कहती भई पुत्रकी वार्ता सुनि झरे है दुग्ध जाके स्तनविषैं ॥ ३८ ॥ रुक्मिणी कहै है हे भगवन्! यह कार्य तुमत बांधवहीतैं बनै औरसूं न बनै हे साधूनिकी सेवाविषैं उद्यमी! तिहारे जिनधर्मीमात्रसूं परमस्नेह है अर मैं तो तिहारी बालिका ही हूं मैं पुत्रके शोकरूप अग्निकरि दग्ध हुती अर मेरे कोई अवलंब न हुता सो हे धीर! तुम हस्तावलंब देयकरि मोहि थांभी ॥ ४० ॥ जो सीमंधर सर्वज्ञने भाष्या है सो सत्य है मोहि जीवते पुत्रका दर्शन अवश्य होयगा मैं जिनेश्वरके वाक्यकरि जीऊं हूं अर दृढ है मन मेरा अर आप इच्छा होय जहां जाइये अर शीघ्र ही बहुरि तिहारे दर्शन हूज्यो ॥ ४२ ॥ नारदसूं रुक्मिणी मिष्टवचन कहि प्रणाम किया तब नारदहू याहि आशीष देयकरि गए अर रुक्मिणो हरिकी इच्छा पूरती संती सुखतैं तिष्ठी ॥ ४३ ॥ यह प्रद्युम्न अर संबुकुमारके पूर्वभवका चरित्र मनुष्य बहुरि देव-बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि प्रद्युम्न संबुकुमारके भवतैं दोऊ मुक्ति होंयगे यह चरित्र जो पढ़ै सुनै अर श्रद्धा करै सो जिनशासनविषैं भक्तिवंत थोरे ही भवमें निर्वाणपद पावै।

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ संबुप्रद्युम्नपूर्वभववर्णानोनाम त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४३ ॥



अथानंतर—सत्यभामाके भानुकुमारनामा पुत्र सो ऊगते सूर्यकी न्याईं वृद्धिकूं प्राप्त होता भया कैसा है भानुकुमार सूर्यकी किरणनिके समूह समान है ज्योति जाकी सो भानु कहिए सूर्य ताकी भानुकहिए दीप्ति तासमान है उद्योत जाका ऐसा भानुकुमारनामा पुत्र ताके वढिवेकरि सत्यभामाका मनरूप उदयाचल प्रकाशकूं प्राप्त होता भया ॥२॥ एकदिन नारद कृष्णपै आए तब कृष्ण प्रणामकरि पूछी हे भगवन्! अब आप कहांतैं यहां आए सो कहो तिहारे दर्शनकरि मोहि अति हर्ष होवै है जब जब आप आवोहो तब तब हर्षहीकी बात लावो हो ॥ ३ ॥

जसा करो तब चंद्राभा राजाकूं कही हे प्रभु ! ऐसा क्या यानैं अपराध किया जो ऐसा दंड याहि दीजै तब राजा कही परदारा समान अर पाप कहा तब चंद्राभा कही या पापका दंड प्रजाहीकूं है या राजानिकूं भी दंड है तब राजाने कही सबनिकूं हैं तब वह हंसी अर नीची होय गई ।

भावार्थ—तुम भी परदारारत पापी हो । तब राजा मनमें समझि मुझांय गया जैसैं दाहका मार्‍या कमल मुझाय जाय राजा मनमें चिंतवै है यानैं मेरे कल्याणके अर्थि सच्ची वार्त्ता कही परस्त्रीका हरण दुर्गतिका कारण है राजाकूं वैराग्य उपज्या अर यह हू वैराग्यरूप भई राजाकूं विरक्त जानि चंद्राभा कहती भई हे प्रभु ! ऐसे अन्यायरूप भोगनिकरि कहा यह परस्त्रीके विषय किंपाक फलसमान दुःखदाई हैं बाह्य मनोज्ञ भासैं तो कहा ॥८५॥ भोग तो वही है जो आपकूं अर परकूं संताप उपजावै समस्त ही विषय शास्त्रतैं विरुद्ध हैं अर परदारासेवन अर परधनहरण अर मांसभक्षण यह तो महापाप हैं इन पापनिके करणहारे नरक निगोदविषैं जाय हैं या भांति चंद्राभाने मधुकूं संबोध्या तब राजा मधु प्रतिबोध होय मोहरूप मदिरा जो काम सो तज्या ॥ ८७ ॥ अर अति आदरतैं राजा ताहि कहता भया हे सत्यभामिनी ! तैंनैं भली कही ॥ ८८ ॥ ऐसे कर्म भले पुरुषनिकूं योग्य नाहीं इन बातनिकरि आपकूं नरकादि पीडा उपजै है इन बातनिके करणहारे महापापी या भवविषैं हू दुखी होंय अपयश लहैं परभव नरकके विषैं पडै हैं ॥ ८९ ॥ जो मेरे सारिखे राजा हू ऐसे निंद्य कर्म करैं तो प्रजाका कौन-निवारे ॥ ९० ॥ निज स्त्रीविषैं हू जो अधिक राग करै तो वह हू कर्मबंधका कारण है निंद्य है तो परस्त्रीसेवनकी क्या बात परस्त्रीसेवन समान और पाप नाहीं ॥ ९१ ॥ यह मनरूप माता हाथी ज्ञानरूप अंकुशकरि रोक्या हू उबट मार्गविषैं ले जाय है ॥ ९२ ॥ यह मनरूप मतंग गज तीव्र तपरूप अंकुशकरि उबटमारगतैं पीछे लाय मारगविषैं चलावै है सोही धन्य है ॥ ९३ ॥ काम लोभकी वासनाकरि उन्मत्त भया यह मनरूप गज ताकूं तप संयमरूप दंडकरि जबलग पीछे न लावै तौलग मदका अभाव कहांतैं होय ॥ ९४ ॥ जबलग मनरूप माते मतंगकूं यत्न

मानूं इतिभीति रहित पृथिवी ही है ॥३३॥ तब माधवने राजा मेरुके निकट दूत भेज्या सो वानैं पहिले ही निमित्त ज्ञानीकूं पूछ्या हुता कि या पुत्रीका वर कौन होयगा तब वानैं कही कृष्ण नामा नारायण होयगा कृष्णका दूत गया ताही समय पुत्री वानैं पठाई मृग समान हैं नेत्र जाके ॥ ३४ ॥ मनकी हरणहारी जो गौरी ताहि मनमोहन परणकरि सुसीमाके मंदिरके समीप याहि ऊंचा मंदिर दिया ॥ ३५ ॥ बहुरि अरिष्टपुरका राजा हिरण्यनाभि सो बलभद्रका मामा ताके श्रीकांता नामक रानी अर पुत्री पद्मावती सो साक्षात लक्ष्मीही है ताका स्वयंबर मंडप सुनिकरि बलभद्र नारायण गए अर बडा भाई अनावृष्टि इनके साथ सो हिरण्यनाभिने प्रीतिकरि इनका बहुत सम्मान किया अर या हिरण्यनाभका पिता राजा सत्र ताहि वैराग्य भया तब हिरण्यनाभका रेवतनामा बडा भाई सोहू पिताके साथ मुनि भया हुता ॥३९॥ ताकी पुत्री चार रेवती १ वंधुमती २ सीता ३ राजीवनेत्रा ४ सो चारों पहिलेही बलभद्रकूं दीनी हुती सो उनका स्वयंवर काहेकूं होय उनकी तो सगाई पहिले ही बलभद्रतैं होगई हुती अर पद्मावतीका स्वयंवर हुता सो अनेक राजा आए हुते जिनकूं युद्धविषैं जीतिकरि कृष्ण पद्मावती परण्या यह दोऊ भाई परणकरि द्वारिका आए ॥ ४२ ॥ जैसैं इंद्र प्रतेंद्र देवनि सहित इन्द्रपुरीमें आवैं तैसैं यह दोऊ भाई अनेक भाईनि सहित द्वारावतीमें आए। पद्मावतीकूं परणिकरि गौरीके गृहके समीप हरिने याकूं मंदिर दिया ॥ ४३ ॥

अथानंतर——गंधारनामा देश ताविषैं पुष्कलावतीनामा नगरी तहां राजा इंद्रगिरि ताके मेरुमतीनामा रानी अर पुत्र हिमगिरि सो हिमाचल सारिखा स्थिर अर पुत्री गांधारी सो महा मनोहर गंधर्वादिकलाकी वेत्ता ॥४५॥ सो गांधारीकूं याके भाई हिमगिरिने हयपुरके राजा सुमुखसूं सगाई करी हुती सो नारदने आय यह वार्ता वासुदेवसूं कही सो हरि वहां जायकरि हिमगिरिकूं रणभूमिविषैं जीतिकरि गांधारीकूं लेय आए आनंदसूं विवाह किया ॥ ४७ ॥ अर पद्मावतीके मंदिरके समीप माधवने गांधारीकूं महल दिया अर देवनि कैसे भोग भोगकरि याहि रमावते भए ॥ ४८ ॥ यह कृष्णकी आठ पटराणी अर सोलह हजार राणी तिनकरि सेवनीक तिन सहित

अर जांबुवतीके अखंडित प्रीति होयगई ॥ १९ ॥ बहुरि एक सिंहलद्वीपका श्लक्ष्णरोमनामा राजा ताके लक्ष्मणानामा कन्या सो महा लक्षणवती सो राजा माधवसूं विमुख ताके निकट माधवने दूत पठाया सो जाय कहता भया तिहारी कन्या मुरारीकूं परणावो सो यानैं न मानी तब वलभद्रसहित मुरारी लक्ष्मणाके देखिवेकूं आए सो लक्ष्मणा समुद्रस्नानकूं आई हुती सो विशाल हैं नेत्र जाके ॥ २२ ॥ सो ताकी लार राजाका सेनापति द्रुमसेन हुता ताहि युद्धविषैं परास्तकरि मुरारी लक्ष्मणाकूं हर लाए अर विधितैं परणी अर कैसे हैं कृष्ण लक्ष्मण समान है प्रभा जाकी सो जांबुवतीके घरके निकट लक्ष्मणाकूं माधवने महल बताया ॥ २४ ॥ अर लक्ष्मणाका भाई महासेवक हरिपै आया अर नम्रीभूत भया सो हरि ताका अति सम्मानकरि सिंहलद्वीप पठाया सो कृष्णकी कृपातैं सुखसूं राज्य करता भया ॥२५॥ बहुरि एक राष्ट्रवर्द्धननामा राजा ताके विनयानामा रानी जाके नमिति नामा पुत्र महा पराक्रमी अर महा बुद्धिमान ताके सुसीमानामा बहिन वह सुसीमा वसुधाकी सीमा कहिए हद्द ही है वसुधामें ऐसी कोऊ और बनिता नाहीं सो राजा सुराष्ट्रने नमितिको युवराज पद दिया सो नमिति पृथिवी विषैं प्रसिद्ध महा पुरुषार्थका धारक महामानी सो बडे २ राजानिकूं न गिनै ॥ २८ ॥ सो नमितिकुमार अर सुसीमा यह दोऊ बहन भाई समुद्र स्नानकूं आए हुते सो नारदने नारायणतैं कही जो सुसीमा रूप गुणकी खान है, तब आप माधव वहां गए प्रभासनामा तीर्थके तीर अपनी सेना राखि वहां गए सो नमितिकूं युद्धविषैं जीति कन्याकूं द्वारावती लेआए ॥ ३० ॥ लक्ष्मणाके मंदिरके समीप मणि सुवर्णमयी मंदिर सुसीमाकूं दिया अर देवनिकी न्याईं वासुदेव सुसीमासहित रमता भया अर सुसीमाका पिता राष्ट्रवर्द्धन पुत्रीके अर्थि बहुत दायजा भेजता भया अर रथ हाथी घोडे पालकी आदि भली भली भेंट हरिपै पठाई ॥ ३२ ॥

अथानंतर–सिंधुदेशका राजा मेरु इक्ष्वाकुकुलका तिलक वीतभवनामा नगर तहां राज करै ताकी राणी चंद्रवती ताके उदरविषैं गौरीनामा पुत्री भई सो मानूं साक्षात गौरी कहिए पार्वतीही है अर मूर्तिवती विद्याही हैं अर

तव नारद बोले हे हरि ! विजयार्द्धपर्वतकी दक्षिणश्रेणी तहां जंबूपुरनामा नगर ताका राजा जांबवनामा विद्याधर ताके शिवचंद्रानामा चंद्रवदनी राणी ताके विश्वसेननामा पुत्र जाका विश्वविषैं यश अर ताके जांबुमतीनामा बहिन साक्षात् लक्ष्मी समान सो अपनी सखीनिसहित गंगास्नानकूं आई सो ऐसी सोहती हुती मानूं तारानिकरि युक्त चंद्रकांति ही सोहै है सो मैंने गंगामें प्रवेश करती देखी ऊंचे है, अर गोल हैं कठिन कुच जाके तेरे मन हरिवेकूं समर्थ मानूं राजा जांबवरूप हिमाचलतैं उपजी साक्षात् गंगाही गंगाद्वारविषैं प्रवेश करती देखी यह नारदके वचन स्नेहरूप सुनिवेकरि कृष्णके काम उद्दीप्त भया जैसैं घृतके सींचवेकरि अग्नि प्रज्वलित होय ताही समय वडा भाई अनावृष्टि तासहित मोहन वहां गए सो जांबुवतीकूं गंगाविषैं स्नानक्रीडा करती देखी अर कन्याने केशव देखे इंदीवर कमल समान है श्याम सुंदर शरीर जाका तब यह दोऊ कामके बाणकरि वेधे गए ॥ १० ॥ ताही समय कृष्ण दोऊ भुजानिकरि ताहि उठाय लई सुखतैं लगि गए हैं नेत्र जाके अर कृष्णके भी नेत्र लगि गए कैसी है वह तिरस्कार करी है लक्ष्मीकी शोभा जानैं अर अत्यंत है लज्जा जामैं ॥ ११ ॥ जब कन्हैया जांबुवती उठाई तब वाके लार हजारां सखी हुतीं सो विलाप करती भईं सो राजा सुनकरि जांबुवतीका पिता अति क्रोधरूप भया पुत्रीके हरिवेकरि विद्याधर खड्ग हाथमें लिए शीघ्रही कृष्णपर आया तीक्ष्ण शस्त्र हैं जाके कर विषैं ॥ १३ ॥ तव अनावृष्टिनामा कृष्णका वडा भाई विद्याधरपर गया सो वासूं युद्धकरि ताहि तत्काल बांध लिया अर वासुदेवकूं आय सौंप्या तव वह अपने पुत्र विश्वसेनकूं वासुदेवकूं सौंपि आप मुनि भया अर विश्वसेनने अपनी बहिन वासुदेवकूं परणाई ताहि परणि विश्वसेनकूं साथ लेय द्वारावतीनाथ द्वारका आए ॥ १६ ॥ रुक्मिणीके महलके निकट जांबुवतीकूं माधवने महल दिया ॥ १७ ॥ अर जांबुवतीके भाईका बहुत सन्मानकरि वासुदेवने विदा किया सो अपने स्थानकूं गया अर पृथिवीविषैं दुर्लभ जो भोग तिनकरि केशव जांबुवतिकूं रमावता भया ॥१८॥ रुक्मिणीका अर जांबुवतीका निकट महल सो परस्पर मिलाप हुवा ही करै आनेजानेसे रुक्मिणी

होंय तब तू अपने पुत्रका आगमन जानियो। अर हे पुत्री! तू सीमंधरस्वामीके वचन अन्यथा मत जानियो ॥ ३७ ॥ यह नारदके मुखके हितरूप वचन सुनिकरि श्रद्धा करी अर नमस्कारकरि नारदतैं कहती भई पुत्रकी वार्ता सुनि झरे है दुग्ध जाके स्तनविषैं ॥ ३८ ॥ रुक्मिणी कहै है हे भगवन्! यह कार्य तुमत बांधव-हीतैं बनै औरसूं न बनै हे साधूनिकी सेवाविषैं उद्यमी! तिहारे जिनधर्मीमात्रसूं परमस्नेह है अर मैं तो तिहारी बालिका ही हूं मैं पुत्रके शोकरूप अग्निकरि दग्ध हुती अर मेरे कोई अवलंब न हुंता सो हे धीर! तुम हस्तावलंब देयकरि मोहि थांभी ॥ ४० ॥ जो सीमंधर सर्वज्ञने भाष्या है सो सत्य है मोहि जीवते पुत्रका दर्शन अवश्य होयगा मैं जिनेश्वरके वाक्यकरि जीऊं हूं अर दृढ है मन मेरा अर आप इच्छा होय जहां जाइये अर शीघ्र ही बहुरि तिहारे दर्शन हूज्यो ॥ ४२ ॥ नारदसूं रुक्मिणी मिष्टवचन कहि प्रणाम किया तब नारदहू याहि आशीष देयकरि गए अर रुक्मिणो हरिकी इच्छा पूरती संती सुखतैं तिष्ठी ॥ ४३ ॥ यह प्रद्युम्न अर संबुकुमारके पूर्वभवका चरित्र मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि प्रद्युम्न संबुकुमारके भवतैं दोऊ मुक्ति होंयगे यह चरित्र जो पढै सुनै अर श्रद्धा करै सो जिनशासनविषैं भक्तिवंत थोरे ही भवमें निर्वाणपद पावै।

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ संबुप्रद्युम्नपूर्वभववर्णनोनाम त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४३ ॥



अथानंतर—सत्यभामाके भानुकुमारनामा पुत्र सो ऊगते सूर्यकी न्याई वृद्धिकूं प्राप्त होता भया कैसा है भानुकुमार सूर्यकी किरणनिके समूह समान है ज्योति जाकी सो भानु कहिए सूर्य ताकी भानुकहिए दीप्ति तासमान है उद्योत जाका ऐसा भानुकुमारनामा पुत्र ताके वढिवेकरि सत्यभामाका मनरूप उदयाचल प्रकाशकूं प्राप्त होता भया ॥२॥ एकदिन नारद कृष्णपै आए तब कृष्ण प्रणामकरि पूछी हे भगवन्! अब आप कहांतैं यहां आए सो कहो तिहारे दर्शनकरि मोहि अति हर्ष होवै है जब जब आप आवोहो तब तब हर्षहीकी बात लावो हो ॥ ३ ॥

शिष्य कौथुमी ताका अमरावर्त ताका सित अर सितका वामदेव, ताका कपिष्टल ताका जसस्थामा, ताका सरवर ताका सरासण ॥ ४६ ॥ अर ताका द्रावण ताका विद्राचल अर विद्रावनका पुत्र द्रौण सो द्रौणाचार्य सर्व भार्गव वंशविषैं श्रेष्ठ ॥ ४७ ॥ सो द्रौणके अश्विनीनामा स्त्री ताके अश्वत्थामा नामक पुत्र होता भया। बडा धनुषधारी जाके सन्मुख रणविषैं अर्जुन ही आय सकै ॥ ४८ ॥

अथानंतर–अर्जुनका प्रताप अर धनुष विद्याका ज्ञान यह दोऊ भाई दुर्योधनादि न सहि सके सो पहिले बट भया था अर संधि भई थी तामैं दूषण विचारते भये। सो यह तो बडी अयोग्य हम सौ अर वे पांच सो आधा बट कैसे संभवै है ॥ ५० ॥ यह वार्ता पांडवनिने सुनी तब युधिष्ठिर तो महा धीर सो उनको तो क्रोध न उपज्या अर छोटे भाई चारों समुद्र समान निर्मल अर गंभीर हुते परंतु पर पुरुषनिके मुखके वचन वेही भये पवन ताकरि क्षोभकूं प्राप्त भए ॥५१॥ प्रथम ही अर्जुन उठा सो मैं वाणोंकी धारा रूप मेघ वृष्टिकरि शत्रुरूप पर्वतनिकूं आच्छादितकरूं तब युधिष्ठिरने उसे मने किया जो क्षमा करहु तब बडे भाईके वचनरूप वायुकरि अर्जुनरूप मेघ शांत होय गया अर भीमरूपी भुजंगम यह कहता संता उद्यत भया था जो मैं दृष्टि ही करि सोऊ शत्रुनिकूं भस्म करूंगा सो वडे भाईके वचनरूप मंत्रकरि शांत भया ॥ ५३ ॥ अर नकुल हू शत्रुनिके समूहके नाश करवेकूं उद्यमी भया सो युधिष्ठिरने भुजानिकरि थांभ्या अर सहदेवरूप दावानल प्रज्वलित भया हुता जो मैं बनरूप वैरिनकूं शीघ्र ही भस्म करूंगा सो हू युधिष्ठिर रूप मेघने बुझाया यह चारोंही भाई युधिष्ठिरके प्राणसमान हैं सो युधिष्ठिरकी आज्ञाकरि क्षमारूप भये॥ ५५ ॥ अर वेऊ इनकूं प्रबल जानि संकि गये शांतचित्त होय घरमें रहे सो धृतराष्ट्रके पुत्र कपटी तिन यह घरमें सोते हुते सो रात्रिको घरमें अग्नि लगाई तब यह सचेत होय माता सहित सुरंगके मार्ग होय निकसे सो यह तो विदेश गये अर दुर्योधनका अपयश भया जो याने प्रपंच करि भाई मारे हस्तिनापुरके सब लोग दुर्योधनकी निंदा करते भये जो यह पापी है अर सब कुलके लोक पांडवनिकूं मूये जान इनकी क्रिया करते भये॥५१॥ अर यह पांचों

संतनिके पति योजनगंधा सो योजनगंधा राजाकी पुत्री अर कीरकैपैली ताके पुत्र संतनु अर संतनुके शांतन ताका दूजा नाम ब्यान्त हू कहै हैं ॥ ३१ ॥ ताका पुत्र धृतधर्मा अर ताका धृतोदय ताके धृतमान अर ताके धृत ॥३२॥ अर धृतके धृतराज ताके रानी तीन, अंविका १ अंवालिनका २ अंवा ३ यह तीनोंही वडे राजानिकी बेटी तिनमें अंविकाके धृतराष्ट्र नामा पुत्र भया। अंवालिकाके पांडु नामा पुत्र भया अर अंवाके विदुरनामा पुत्र भया ये तीनों ही महा ज्ञानवान होते भए अर राजा धृतराजका भाई रुक्म जाके रानी गंगासो वडे राजाकी पुत्री महा पवित्र ताके भीष्म नामा पुत्र होते भए ॥ ३५ ॥

अथानंतर—धृतराष्ट्रके रानी गंगा ताके दुर्योधन आदि सौ पुत्र भये तिनमें परस्पर अत्यंत प्रीति अर सब ही शास्त्रविद्याविषैं प्रवीण ॥ अर पांडुके रानी दोय एक कुन्ती दूजी माद्री कुंतीके कर्णनामा पुत्र तो पांडु थकी गांधर्व विवाह कर भए। वहुरि युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन ये तीन पुत्र भये अर माद्रीके नकुल अर सहदेव ये दोऊ पुत्र भए यह पांचों ही भाई पांडुके पुत्र महा जिनधर्मी पंचपरमेष्ठीके दास होते भए ॥ ३८ ॥ कुछुयक दिनमें पांडु तो मुनि भए अर माद्री आर्यिका भई सो जिनधर्मके प्रसादतैं दोऊ स्वर्गविषैं गए अर धृतराष्ट्रके सौ पुत्र अर पांडुके पांच पुत्र तिनमें राजके अर्थ विरोध होता भया तव भीष्म, विदुर, द्रोण यह वीच पडे अर दुर्योधनका मंत्री शकुनि ससुरोम येहू वीच परे अर इनके राजका विभाग कर दिया पांडुके पांच पुत्र तिनिकूं राज्य आधा अर धृतराष्ट्रके पुत्र सौ तिनकूं आधा राज दिया या भांति वांट किया परंतु वे सौ या वातमें प्रसन्न नाहीं ॥ ४१॥ अथानंतर—जरासिंधके अर दुर्योधनके अर कर्णके एकांतविषैं वचन भया ऐसी प्रीति भई सो किसीके टारे न टरै ॥ ४२ ॥ अर भार्गवाचार्य धनुर्विद्याके आचार्य तिनके वंशविषैं उपजे द्रोणाचार्य सो धनुषविद्याविषैं प्रवीण सो धृतराष्ट्रके अर पांडवनिके पुत्रनिकूं धनुषवेद सिखावैं सो द्रोणके मध्यस्थभाव सवनिकूं समान सिखावैं काहूमूं अंतर नाहीं द्रोणकी वार्ता सुनि राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछ्या हे प्रभो! भार्गवाचार्यके वंशमें द्रोण उपजे सो इनके वंशकी मोहि कथा कहो। तव गणधर देव कहैं हैं हे श्रेणिक! तू सुनि ॥४४॥ प्रथमही अत्रेय भया ताका पुत्र अर

अनेक राजा भये बहुरि धृतमित्र धृतिषेण सुव्रत शतमंदर श्रीचंद्र सुप्रतिष्ठ इत्यादि सैंकडां नृप व्यतीत भये बहुरि राजा धृतिपद्म धृतेंद्र धृतिवीर्य यह प्रसिद्ध भये। बहुरि धृतिदृष्टि धृतिद्रिति धृतिप्रीति इत्यादि अनेक कुरुवंशी भूपति भये बहुरि राजा अमरघोष, हरिघोष, हरिध्वज, सूर्यघोष सुतेज. पृथुइभवाहन इत्यादि पृथिवीपति व्यतीत भये बहुरि राजा विजय ताके जयराज बहुरि सनत्कुमार नामा चौथे चक्रवर्ती कुरुवंशहीमें भये ॥ १५ ॥ सो महा-रूपवान तिनके रूपकी पाशिके खैंचे स्वर्गके देव आये अर देवनिके वचन सुनि मुनि भये ॥ १६ ॥ बहुरि सन-त्कुमारका पुत्र सुकुमार ताके वरकुमार ताके विश्व ताके विश्वानर ताके विश्वकेत ताके बृहध्वज ॥ १७ ॥ ताके विश्वसेन ताके ऐरानामा रानी प्राणहूतैं अधिक वल्लभ ताके उदर भगवान शांतिनाथ सोलहवें तीर्थंकर पंचम चक्रवर्ती होते भये ॥ १८ ॥ तिनके नारायणनामा पुत्र ताके नरहरि ताके प्रशांति ताके शांतिवर्द्धन ताके शांति-चंद्र ताके शशांकांक ताके कुरु इत्यादि राजा कुरुवंशी भये इत्यादि अनेक भूप कालवश भये बहुरि राजा सूर्य भया ताके रानी श्रीमती ताके गर्भविषैं भगवान कुंथुनाथ सत्रहवें तीर्थंकर छठे चक्रवर्ती भये ॥ २० ॥ तिनपीछे अनेक राजा भये बहुरि सुदर्शननामा राजा भये तिनके रानी मित्रा ताके गर्भविषैं भगवान अरःनाथ अठारहवें तीर्थंकर सातवें चक्रवर्ती भये ॥ २२ ॥ बहुरि राजा सुचारु ताके चारु ताके चारुरूप महा बलवान ताके चारुपद इत्यादि अनेक राजा व्यतीत भये ॥ २३ ॥ बहुरि ताके राजा पद्ममाल ताके सुभूप ताके पद्मरथ ताके महापद्म नवमें चक्रवर्ती इनके विष्णु अर पदम यह दोनों पुत्र हुए ॥ २४ ॥ फिर राजा सुपद्म पद्मदेव कलकीर्ति कीर्ति सुकीर्ति वसुकीर्ति वीर्यवान ॥ २५ ॥ वासुकी, वासव, बसु, सुबसु, ये कुरुवंशीके नाथ होते भये। बहुरि श्रीबसु, वसुन्धर ॥ २६ ॥ वसुरथ इंद्रवीर्य चित्र विचित्रवीर्य यह महा बलवान होते भये ॥ २७ ॥ बहुरि राजा विचित्रवीर्य, चित्ररथ, महारथ, ब्रातरथ, वृषानंत, वृषध्वज, ॥ २८ ॥ श्रीवृत, ब्रतधर्मा, धृतधारण, महासर, प्रतिसर, सर, पारासर ॥ २९ ॥ सारद्वीप, द्वीप, द्वीपाइन, सुशांति, शांतिभद्र, शांतिषेण ॥ ३० ॥ सो वह राजा शांतिषैण अर

मनमोहन सुखतैं राज्य करै ॥ ४१ ॥ पुण्यरूप वृक्षकरि उपजे नारायणपदके भोगरूप फल तिनकूं भोगवता लोकनिके समूहकूं आनंद देता भया कृष्णके राज्यमें कोऊ हू पुरुष दुःखी नाहीं सबही आनंद करै हैं वह मुकुंद कहिए माधव जिनधर्मका करणहारा धोरीजे शत्रु सन्मुख आए अर लडे तिनकूं क्षणमात्रमें तृणकी न्याई उपारि डारे अर महाश्रेष्ठ देवांगनासारिखी बधू बरता भया अर विनाही यत्न जाके बहुत रत्न आय प्राप्त भये जो भव्यजन जिनधर्मका सेवन करैं सो मनमोहनकी न्याई मनवांछित सुख पावैं ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जाम्बुवत्यादिमहादेवीलाभवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशःसर्गः ॥ ४४ ॥

अथानंतर—दशार्ह कहिये समुद्रविजयादि दश भाई जिनके भाणजे प्रसिद्ध पांच पांडव तिनके नाम, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, अर सहदेव, सो यह द्वारावती नगरी आये ॥ २ ॥ यह वार्ता सुनिकरि राजा श्रेणिक गौतम गणधरसूं पूंछता भया हे प्रभो ! ये पांडव कौन हैं अर कौन वंशविषैं उपजे हैं ॥ ३ ॥ तब गणधर कहते भये सोमप्रभ श्रेयांसका वंश ताविषैं कुरुनामा राजा भये ताके वंशमें शांतिनाथ कुंथुनाथ अरःनाथ ये तीन तीर्थंकर भये ॥ ४ ॥ या वंशमें जेते राजा भये ते धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके साधक हुये सो कुरुवंशीनिकी महिमा तू आदितैं सुनि ॥ ५ ॥ या वंशविषैं बड़े बड़े राजा हुये जिनके नाम सुनि कुरुजांगलदेश भोगभूमि समान है शोभा जाकी ताविषैं हस्तिनापुर ताविषैं पृथिवीके आभूषण रिषभदेवके समय राजा सोमप्रभ अर श्रेयांस भये कुरुवंशके तिलक दानधर्मके नायक होते भये ॥ ७ ॥ सो राजा सोमप्रभके जयकुमार पुत्र भये तिनके नाम मेघेश्वरहू कहै हैं सो मेघेश्वर भरतके बडे उमराव तिनके कुरनामा पुत्र। ताके कुरुचंद्र ताके शुभंकर ताके धृतिकर या भांति अनेक कालके योगकरि अनेक कोटि राजा भये रिषभदेवके समयतैं नेमिनाथके समयपर्यंत कोटाकोटि सागरविषैं जो राजा भये तिनका कथन कौन करि सकै, बहुरि या वंशविषैं राजा धृतिदेव भये ताके धृतंकर ताके गंगदेव इत्यादि

युधिष्ठिरकूं विवाहनीं विचारी हुतीं सो उनकी और भांति बात सुनी। यह सब श्राविकाके व्रतरूप तिष्ठती हुतीं ॥ ९७ ॥ अर वाही नगरमें एक प्रियमित्रनामा महाजन वडा धनवान सो वाने सुनी हुती जो या समय पांडव वडे पुरुष हैं उन समान और नाहीं सो पांडवनिके देखवेकी तथा उनके यश सुनवेकी वाके अति अभिलाषा हुती ताके सामिनीनामा भामिनी अर नयनसुंदरीनामा कन्या सो अपने रूप सौंदर्यताकरि नेत्रनिकूं आनंदकी देण-हारी ॥ ९९ ॥ सो जब राजाने अपनी दश पुत्री युधिष्ठरकूं देनी विचारी तब याहूने अपनी पुत्री युधिष्ठरहीकूं देनी विचारी हुती सो तिनकी और वार्ता सुनि राजाकी दशों पुत्री अणुव्रत धरि तिष्ठी हुतीं त्यों ही श्रेष्ठीकी पुत्री भी उन सहित तिष्ठी राजा अर राजाकी रानी अर यह सेठ अर सेठिनी महा पुरुषनिके लक्षण जाननहारे इसलिये युधिष्ठिरकूं देनी विचारी हुती ॥ १०१ ॥ सो उनके परलोककी सुनि इन सबनिके यह विचार भया था कि जो वे परलोक गए तो कोई हू दूजा तो पति हमारे होनहार नाहीं पति वे ही हैं सो वे तो निश्चयरूप हैं अर ये पांचों भाई तहातैं आगे चले सो चंपापुरी गए तहां इनका भाई कर्ण राज करै सो दुर्योधनका अर जरासिंधका मित्र तहां एक भयंकर गजराज सो नगरके मध्य उपद्रव करै था अर महा प्रबल ताहि भीमने मद रहित किया अर प्रजाका उपद्रव मेट्या परंतु वहां आपकूं प्रकट न किया तहांतैं आगे गए एक सुरपुरसमान वैदिसिनामा नगर तहां राजा वृषध्वज ताके दृढायुधनामक वडा पुत्र सो युवराज ॥ ५ ॥ अर राजाके दिशावली नामा रानी ताके घसानन्दानामा पुत्री सो सब दिशाविषै प्रगट है यश जाका दिशा समान निर्मल ॥ ६ ॥ वा राजाके मंदिर भीम भिक्षाके अर्थि गए सो गम्भीर है शब्द जाके सो वह राजा भीमकूं महा रूपवान अर महा पुरुष जानि अपनी कन्या लेयकरि भीमके निकट आया अर मिष्ट वचन कहता भया ॥ ८ ॥ हे नरोत्तम! तुम योग्य भिक्षा यह मेरी कन्या है सो लेहु अर पाणिग्रहण करो ॥९॥ भीम कही यह अपूर्व भिक्षा है सो मैं स्वाधीन नाहीं जो याके अर्थि हाथ पसारूं यहां मेरी माता अर मेरा वडा भाई है वे करैं सो सही तब राजा कही तिनकूं पूछि

गुणव्रत चार शिक्षाव्रत अर यतिका धर्म पंच महाव्रत पंच समिति तीनगुप्ति रूप ॥ ८७ ॥ यह तेरहप्रकार चारित्र है या भांति इनके परस्पर आलाप भया अर मनविषैं प्रीति उपजी तब कन्या मनमें चिंतवती भई। राजलक्षणकरि युक्त कहा यह ही युधिष्ठिर है? जो मातासहित महादयाकरि मंडित मोहि उपदेश देय है अर धीरज बंधावै है। सर्वथा मेरें पुण्य करि वह मेरा पति सत्यवादी जीवो। वे पुरुष शत्रुनिके जीतनहारे हैं ॥ ८९ ॥ वा दिन वाके आश्रम रहे बहुरि प्रात ही चलिवेकूं उद्यमी भए तब युधिष्ठिरने वाहि कही तेरा दर्शन बहुरि हूज्यो वाका बहुत सन्मानकरि मिष्ठवचन कहि आगे चाले अर याके आशा बंधी जो यही हैं समय पाय मोहि परणेंगे। सो यह तो आशारूप यहां तिष्ठै है युधिष्ठिरके उपदेशकरि कुछ याकूं अणुव्रतका ग्रहण हुआ अर वनतैं निकसि तापसका भेष तजि विप्रका रूपधरि पांचों भाई माता कुंती सहित ईहापुरनामा नगर गए ॥ ९१ ॥ अर राजा समुद्रविजयने द्वारिकामें सुनी जो दुर्योधनने कुंती अर पांचों पांडव मायाचारकरि अग्निमें जलाये सो अपनी बहन अर भाणजे तिनके मरणकरि दुर्योधन पर अति क्रोध भए। कुरुवंशिनिके मारिवेकूं उद्यमी भए अर पांचों भाई ईहापुरमें कैयक दिन रहे तहां भृंग समान स्याम भृंगनामा राक्षस महा भयंकर मनुष्यनिका आहार करणहारा वासूं भीमसेनने युद्ध किया ताहि जीतिकरि ताड दिया बहुरि न आवै सो इनका नगरविषै बडा यश भया यह राक्षस मनुष्यनिके आहारी देवयोनि नाहीं राक्षसी विद्याके साधक दुष्ट मनुष्य हैं वा राक्षसके तिरस्कारकरि नगरके लोकनिका भय मिट्या प्रजा भयरहित भई तब इनकी बहुत पूजा करी अर यह माता सहित आगे चाले। सो एक नृभृंगनामा बडा नगर ॥ ९३ ॥ तहां राजा चंडवाहन जो पाप कर्मके करणहारे हैं तिनकूं भयंकर ताके रानी विमलप्रभा अति वल्लभा ताके पुत्री दश ते सर्व ही रूपके अतिशयकरि संपूर्ण शरदकी पूर्णमासीके चंद्रमाकेसमान सुंदर वदन जिनके अर वे सर्वही सर्व कलाविषैं प्रवीण ॥९५॥ तिनके नाम गुणप्रभा १ सुप्रभा २ ह्री ३ श्री ४ रति ५ पद्मा ६ इंदीवरा ७ विश्वा ८ चर्या ९ अशोका १० सो इनके माता पिताने यह सब

स्तनकाहू भार न सहारि सकै वह देवनिका मन हरणहारी तापसनी, तापस लोकनिकरि पूज्य चंद्रकला समान निर्मल संपूर्ण तपोबनकूं उज्वल करती हुती ॥७५॥ सो वाके आश्रम पांडव गए सो वानैं उचित वृत्तिकरि इनकी पाहुनगति करी अर वह मिष्ट वचन बोलनहारी इनके मार्गका खेद निवारती भई तब वाकूं माता कुन्तीने प्रेमकरि पूछी हे बाले ! हे कमल कोमले ! तू नवयोवनविषैं वैराग्यकूं कौन कारणतैं प्राप्त हुई है सो कहि तेरी बुद्धि निर्मल है या भांति कुंतीने पूछी तब वह राजपुत्री मृगनयनी मधुर वचन कहिकरि माताका मन हरती कहती भई ॥ ७८ ॥ हे पूज्ये ! तुम भली पूछी मेरे वैराग्यका कारण कहूं हूं सज्जनतैं मिले मनका दुख कहिवेमें आवै ॥ ७९ ॥ पहिले मेरे माता पिताने यह विचार किया हुता जो या कन्याकूं राजा पांडु अर रानी कुंतीका बडा पुत्र युधिष्ठिर ताहि परणावेंगे वह स्वतःस्वभाव ही उदार चेष्टाका धारक है बहुरि मेरे अभाग्यतैं उनकी माता अर भाईनिसहित ऐसी वार्ता लोकनिके मुखतैं सुनिवेमैं आई जो न कही जाय न धरी जाय ॥ ८१ ॥ सो योग्य तो यह हुता कि जैसैं मेरा पति अग्निदाहकरि मरया त्यों ही मैं हू अग्निप्रवेश करूं यह तो मोतैं न बनी मैं हीनशक्ति तातैं तापसीनिके मार्गविषैं प्रवर्ती हूं ॥८२॥ यह वचन राजपुत्रीके सुनकरि कुंतीने जानी यह मेरी ही पुत्रवधू होनहार है। तब वाहि कही हे भद्रे ! तैंनैं बहुत भली करी जो अग्निप्रवेश न किया अपने प्राण बचाए ॥ ८४ ॥ यह प्राणी अपने मित्रनिका कल्याण विचारे अर पूर्वोपार्जित कर्म कुछ और ही करि डारै तातैं दीर्घदर्शीपणा ही योग्य है। विना विचारे शीघ्र करना सो ही संतापका कारण है, हे कल्याणी ! यह प्राण कल्याणके कारण हैं सो मेरे वचनतैं तू यह प्राण राखि। जीवता थका प्राणी सैकडों कल्याण देखै है यातैं तू घरमें न रहै तो तपोवनविषैं रहि परंतु प्राणत्याग मत कर ॥ ८५ ॥ वाही समय युधिष्ठिर माताके निकट आय खडे रहे। कुंती अर वह राजकन्या दोउनिकी बात युधिष्ठरने सुनी सो माताके निकट धर्मका व्याख्यान करते रहे अर बाहिर सुनाते रहे जो वीतरागका प्ररूप्या हुता दोय प्रकार धर्म तामें गृहस्थधर्म तो बारह व्रतरूप पंच अणुव्रत तीन

भाई महा बुद्धिमान गंगा पार उतरकरि भेष पलट पूरबकी दिशि गये ॥६०॥ सो माता कुंती लार तातैं येऊ वाकी चाल परमाण धीरे २ जा रहे थे सो चले चले कोसिका नामा पुरी गए जहां राजा वर्ण ॥६१॥ ताके रानी पद्मावती अर पुत्री सुदर्शना पुष्पसमान कोमल है अंग जाका सो पहिले युधिष्ठिरकी प्रशंसा यानै सुनी हुती सो याके युधिष्ठिरपर अनुराग हुता सो युधिष्ठिरके दर्शनरूप चंद्रमाकरि वह सुदर्शनानामा कन्या कुमुदिनी समान विकाशकूं प्राप्त भई ॥६३॥ अर मनमें चिंतवती भई याजन्मविषैं मेरे यही भर्तार होवै वह राजा वर्णकी पुत्री राजा युधिष्ठिरके प्यारी स्त्री होनहार है ॥६४॥ सो ताका अभिप्राय जानि युधिष्ठिरकेहू प्रेम उपज्या सो वाहि सैनहीकरि करग्रहणकी आशा बंधाय आप आगे गए ॥ ६५ ॥ वाने जानी इनके वचन मिथ्या नाहीं यह मोहि वरेंगे यह प्रतीतिधरि राजाके संगमकी आशाकरि वह कन्या सखीजनमें उचित जो विनोद ताकरि काल व्यतीत करै ॥ ६६ ॥ अर वे पांचों भाई स्वभाव ही करि सुन्दराकार विप्रका भेष धरि आगैं गए पांचो ही भाई मनुष्यनिका मन हरणहारे ॥६७॥ इनका आसन शयन अर महा मनोहर भोजन सुखतैं होय ये पुण्याधिकारी सो इनकूं अचिंती वस्तु आय प्राप्त होय ॥ ६८ ॥ बहुरि यह तापसका भेषधरि श्लेष्मान्तक नामक बनविषैं गए तहां तापसीनिका आश्रम महा रमणीक ताविषैं यह तापसीनिकरि पूजित विश्राम करते भए ॥ ६९ ॥ यहां एक और कथा है वसुंधरपुरका राजा विंध्यसेन ताकी नर्मदानामा रानी ताकी पुत्री वसंतसुंदरी सो ताके माता पिताने युधिष्ठरकूं देनी विचारी हुती बहुरि उनके दग्ध भयेकी वार्ता सुनिकरि वह कन्या अपने पूर्वोपार्जित कर्मकूं निंदती संती तापसके आश्रमविषैं तप करिवेका उद्यम करै थी अर वाकी यह भावना हुती कि जो जन्मांतरविषैं भी मेरा पति युधिष्ठिर ही होय ॥ ७२ ॥ सो वह कन्या तापसीनिके आश्रमविषैं अति उत्कट रूप लावण्यताकी धरणहारी पाटंबरकी सारी ओढे शिरपर जटा धरे बटवृक्षकी शाखासमान शीतल सोहती हुती ॥ ७३ ॥ कर्ण पर्यंत है विशाल अर तीक्ष्ण नेत्र जाके अर किंदूरीसमान आरक्त हैं अधर जाके अर चंद्रमासमान है मुख जाका अर ऐसी नाजुक जो नितंब अर

॥ ५३ ॥ वह कथा करनी जामें वक्ता अर श्रोताके पापका बंध न होय अर कुगतिके फल न भोगैं सो धर्मकथा या लोक अर परलोकके कल्याणके अर्थि जानो ॥ ५४ ॥ जैसे पुण्यमई कथा वक्ता अर श्रोताकूं कल्याणके अर्थि होय है तैसें पापमयी कथा वक्ता अर श्रोताकूं विपरीत फलका कारण होय है ऐसा जानि अहो भव्य जीव हो मलके भरे असत्य वचन तिनकूं तजो अर निष्पाप दयामई जे सत्य वचन तिनकूं भजो। कैसे हैं निष्पाप सत्यवचन अपना निर्मल यश ताहि प्रगट करै हैं अर गुणनकूं बढावै हैं दोषनकूं जीतै हैं अर सर्वज्ञदेवकरि भया है प्रकाश जिनका ॥ ५६ ॥ इन जीवनके पूर्वभवके भले आचरणका फल भली बुद्धि अर महा पुरुषार्थ अर बुरे आचरणका फल कुबुद्धि अर हीन पराक्रम अर जहां जांय अपमान होय तातैं प्राणीनिके शुभाचरण ही शरण हैं ॥ ५७ ॥ या लोकविषैं यह जिनागम दुःखरूप अग्निकी शिखा तेही भया ज्येष्ठमासका आताप ताके निवारिवेकूं मेघ समान है या जिन आगमविषैं भाषी जे व्रतनकी विधि सो यह प्राणी करहु, कैसी है व्रतनकी विधि? नाना प्रकारके लाभरूप निधिकूं धरै है बहुरि कैसी है व्रतनकी विधि शास्त्रनिके वेत्तानिकरि करी है।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कुरुवंशोत्पत्ति पांडवघृतराष्ट्रसंयोग द्रोपदीलाभवर्णनो नाम पंचचत्वरिंशः सर्गः ॥ ४५ ॥

अथानंतर—हस्तिनापुरविषैं गिरिहूतैं स्थिर जो पांडव सबनिकरि मानिवेयोग्य भोगी पुरुष जिनका सुखसूं काल व्यतीत होय ॥ १ ॥ निरंतर परम विभूतिकरि वर्द्धमान जो यह पांचों भाई सो इनकी विभूति देखिकरि वह सौ बहुरि मर्यादा उलंघिवेकूं उद्यमी भये तब शकुनिनामा दुर्योधनका मंत्री वाने दुर्योधनतैं कही जो युधिष्ठिर भोला जीव है ताहि कपटके पाशनिकरि द्यूतक्रीडाविषैं जीतहु सो दुर्योधनने कपटके पाशनितैं द्यूतक्रीडा करि युधिष्ठरकूं जीत्या सो जीतिकरि दुर्योधन अपने भाईनिसहित इन पांचनिमें बडा जो युधिष्ठिर ताहि कहता

विदुरने वांच्या सो पत्र वांचकरि सर्व वृत्तांत जानि परम प्रमोदकूं प्राप्त भये द्रुपदके कुटुम्बमें द्रोणादिकके अति सुख भया शंख आदि वादित्रनिकी ध्वनि भई पांडवनिका द्रोण अर भीष्म अर विदुरसे मिलाप भया सबनिने दुर्योधनकूं लायकरि उनकूं अर इनकूं एकत्रित किया यह पांचों भाई अर वे दुर्योधनादि १०० द्रोपदीके विवाहमें मिले ॥ ४३ ॥ जैसें दीवट स्नेह कहिए तेल ताके भारकरि भरा अधिक उद्योत करै तैसें द्रोपदी परम स्नेहकी भरी पाणिग्रहणके योगकरि अर्जुनने वरी अधिक दीपती भई ॥ ४४ ॥ द्रोपदी अर अर्जुनका विवाहमंगल देखि करि सकल राजा अपने अपने नगर गए अर दुर्योधनादि भी पांडवनिकूं लेयकरि हस्तिनापुर आए ॥ ४५ ॥ आधे आधे राज्यके विभागकरि यह पूर्वरीति हस्तिनापुरमें तिष्ठे ॥ ४६ ॥ अपने नगर आये जो युधिष्ठरकी मांग हुती वह मगायकरि युधिष्ठिर परण्या अर भीमसेनकी मांग हुती वह मगाय करि भीमसेन परण्या सो दोऊ भाई परणकरि सुखसूं हस्तिनापुरमें तिष्ठे अर द्रोपदी अर्जुनकी स्त्री सो युधिष्ठर अर भीम ये दोऊ अर्जुनसूं वडे सो इनके छोटे भाईकी वहू पुत्रकी वधू समान जो पुत्री ही गिनिये। नकुल अर सहदेव यह अर्जुनतैं छोटे सो इनकी द्रोपदी भावज सो माता समान गिनिए ॥ ४८ ॥ इन चारों भाइयनिके तो द्रोपदी-विषैं पुत्री अर माताकी वुद्धि अर द्रोपदीके दो ज्येष्ठ जो स्वसुर समान अर पिता समान अर दो देवर सो पुत्र समान अर अर्जुन पति अर यह पतिव्रता नारी ॥ ४९ ॥ यह पांचों पांडव शुद्ध अर द्रोपदी शुद्ध जिनका यह विपरीत कथन करे हैं तिनके पाप निवारिवेकूं कौन समर्थ ॥ ५० ॥ जो परजीवमें सच्चा भी दूपण होय अर कोई प्रकाशै तो पापका कारण है अर जो वृथा परदोप भाषे है झूठा दूपण लगावै है ताके पापका कहा पूछना ॥५१॥ जो जीव छोटे हू मनुष्यनिका सांचहू दोप कहै है ते हू कुगतिगामी हैं अर लोकनिंद्य हैं भले पुरुप परदोष न भाषैं अर जो कोई स्त्रीकी सांची निंदा होती होय तोहू सत्पुरुप मौन गहैं अर औरनिकूं मनै करैं सो स्त्री चरित्रकी कहा चर्चा चुप रहो ॥ ५२ ॥ अर जो महापुरुपनिके झूठे दोप पापी कहै हैं तिनकी जिह्वाके सो खंड क्यों न होंय

ननामा विद्याधर ताने अपनी पुत्रीके वर ढूंढिवेके अर्थि गांडीवनामा धनुष मेल्या जो यह धनुष चढ़ावै सो मेरी पुत्रीका वर अर यह धनुष चढ़ाय राधा वेध वींधिवेकूं समर्थ होय सो द्रोपदीका पति ॥ २५ ॥ यह घोषणा सुनिकरि द्रोण कर्ण अर दुर्योधनादिक धनुषके निकट आये सो वह धनुष देवाधिष्ठित वाहि कोऊ देखि न सकैं स्पर्श न करि सकैं सो चढावना कहां द्रोपदीका पति तव होणहार जो अर्जुन तिन आयकरि धनुष देख्या अर स्पर्श किया जैसैं पतिव्रता पतिके वश होय तैसैं धनुषकी फिड़चि अर्जुनके वश भई ॥ २८ ॥ तब अर्जुन धनुष चढाया सो फिडचके चढ़ायवेका ऐसा शब्द भया जाकरि करण दुर्योधन द्रोणादिकनिके कान बधिर समान होय गये ता शब्द करि और शब्द सुननेमें न आया जा समय अर्जुनने गांडीवनामा धनुष चढाया ता समय द्रोण करण दुर्योधनादिकनिके मनमें यह शंका उपजी जो यह कहा अर्जुन ही है मरकरि बहुरि उपज्या, और धनुषधारीके यह विद्या कहां धन्य याकी दृष्टि धन्य याकी मुष्टि धन्य याकी सुष्टता ॥ ३१ ॥ धनुष चढाय वह कुंतीका पुत्र बेधविद्याविषैं प्रवीण निशाणा वेधता भया ॥३२॥ सब राजनि देख्या जो यह कार्य याहीसूं बनै जब यह कार्य भया तब द्रोपदी याके सुंदर कंठिविषैं अपने करकमलकरि वरमाला डारी ! सो वरमाला डालते समय मालाका तार टूट गया सो मालाके पुष्प चपल पवनकरि पांचू भाईनिपर आय पडे तब मूढ लोग कहते भये याने पांचों वरे वह महा सती अर्जुनकी स्त्री अर्जुनकूं वरकरि फूली वेलिसमान सोहती भई ॥३६॥ फिर अर्जुन सब राजानिके देखते द्रोपदीकूं माताके निकट लेय गया ॥ ३७ ॥ तब सब राजा युद्धके अभिलाषी भये सो द्रुपदने मनै किये तोहू न मानी अर युद्धकूं उद्यमी भये तब भीम अर्जुन अर धृष्टद्युम्न यह तीनों धनुषधारी तिन उनकूं आगे न आवने दिये ॥ ३९ ॥ अर धृष्टद्युम्न द्रोपदीका भाई अर्जुनसहित रथमें बैठा हुता अर्जुनकूं कही अब तुम भीष्म अर द्रोणसूं आपा प्रगट करो तब अर्जुनने अपने नामका पत्र लिखकरि बाणके बांधि द्रोणकी ओर भेजा सो वह बाण द्रोणकी गोदमें पडा पत्रमें अपना सब संबन्ध लिखा हुता सो वह पत्र ॥ ४० ॥ द्रोणकी गोदमेंसे उठाय अश्वत्थामा अर भीष्म अर

आवो तब भीम जायकरि मातासूं अर भाईसूं कही उनि आज्ञा दई तुम विवाह करो तब वृषभध्वजकी पुत्री वसानंदा ताहि परणिकरि वंदिसपुरमें डेढ महीना रहकरि नर्मदानामा नदीकूं तिरकरि विंध्याचल पर्वत गये, कैसे हैं पांचों भाई अनेकप्रकार राजक्रीडा तिनविषैं प्रवीण हैं ॥११॥ अथानंतर—संध्याकारनामा अंतरद्वीप ताविषैं संध्याकारनामा नगर ताविषैं राजा सिंहघोष राज करै सो राजा हिडंवके वंशविषैं उपजा है ॥ १२ ॥ ताकी सुदर्शनानामा रानी अर ताके हृदयसुंदरीनामा पुत्री ताहि त्रिकूटाचलका राजा मेघवेग याचता हुता सो सिंहघोपने न दई ॥१३॥ सिंहघोष निमित्तज्ञानीकूं पूछी कि मेरी पुत्रीका वर कौन होयगा। तब वानैं कही यह मेघवेग विंध्याचलविषैं गदानामा विद्या साधै है सो वाहि जो हनेगा सो तेरी पुत्रीकूं वरेगा ॥१४॥ यह वृत्तांत जानि भीमसैन वहां गया वाहि सावधानकरि वासूं युद्ध किया सो ताहि मारकरि गदाके स्वामी भये ॥ १५ ॥ अर सिंहघोपकी हृदयसुंदरीनामा पुत्री परनी ताका दूजा नाम हिडंवसुंदरी हू कहै हैं महा उच्छवसूं इनका विवाह भया ॥ १६ ॥ वहुरि अनेक देश विहार करते यह प्रतापके पुंज हस्तनापुरनामा नगर तहां जायवेकी है इच्छा जिनकी ते पांडुपुत्र मार्गके वसतैं एक माकंदीनामा नगरी तहां गये सो वह नगरी देवपुरीसमान अर तहांके मनुष्य देवनिसमान ॥ १८ ॥ तहां राजा द्रुपद ताके रानी भोगवती अर धृष्टद्युम्न आदि पुत्र तिनकी शक्ति अनेक वेर सावंतनिके देखिवेमें आई ॥ १९ ॥ अर राजा द्रुपदके द्रोपदीनामा पुत्री सो रूप लावण्य सौभाग्य कला तिनकरि शोभित है शरीर जाका ॥२०॥ जासमान और सुंदरी नाहीं वह द्रौपदी स्त्रीनिकी सृष्टिमें अनुपम है ताके आर्थि सकल राजानिके पुत्र मनोरथ करैं अर सवनिहीके दूत याकी यांचनाके आर्थि आवैं जैसैं क्रूरग्रह दान याचैं तैसैं सव याहि याचैं ॥ २१ ॥ तव राजा द्रुपद मनमें विचारी या कन्याकूं सवही याचैं मैं कौनकी प्रार्थना भंग करूं तव राजाने स्वयंवर रच्या अर सव राजपुत्र बुलाये अर सवनिकूं यह लिखी जो राजा वेध वींधै सो कन्याकूं वरै ॥ २२ ॥ यह वात सुनि द्रौपदीरूप ग्रहके वस भये कर्ण दुर्योधनादि सव ही राजा द्रुपदकी माकंदीनामा नगरी आये सो राजानिका समूह भेला भया एक सुरेंद्रवर्द्ध-

भया जो तुम बारह वर्षका राज्य हारें सो तुम सब भाई यहां मत रहो ॥ ३ ॥ जहां तिहारा नाम न सुनिये तहां जाओ । हे युधिष्ठिर ! जो तुम सत्यवादी हो तो बारहवर्ष प्रछन्न रहो ॥४॥ ऐसा दुर्योधनने कहा तब यह धर्मात्मा सकल सामग्री तजि चारों भाईनिसहित बारह वर्षकी अवधिकर नगरतैं निकले जब पांचो भाई निकले तब द्रोपदीहू प्रेमकी भरी अर्जुनके पीछे चली जैसैं चांदनी चंद्रमाके साथही रहै तैसैं यह हू अर्जुनके साथ चली पांडवनिने विचारी अपने कृष्णका आश्रय है सो उन्हींपै चलैं ॥ ६ ॥ यह पांचो भाई महा धीर नरकुंजर गमनकरि कालांजना नाम बनी तहां गए ॥ ७ ॥ सो असुरीद्वीपनामा नगरतैं आयकरि सुतारनामा विद्याधर कुसुमावली नामा अपनी स्त्री ताके सहित वनीमें रमैं है यह सुतारनामा विद्याधर प्रकीर्णक नामा विद्याधरका पुत्र अर याकी माताका नाम आसुरी सो वनमें सावरनामा विद्याकरि भीलका भेष किए कामिनी सहित क्रीडा करै । अर कामिनी हू भीलनिका भेष किए सो उस विद्याधरकूं अर्जुनने जानी यहहू महाधनुषधारी है अर वानैं अर्जुनकूं देखकरि जाना यह महा बाणबली है ॥ १० ॥ सो परस्पर तत्काल इन दोऊनिके महायुद्ध भया दिव्य जे बाण तिनकरि दशूं दिशा आच्छादित होय गई बहुरि वह दोऊ बाहुयुद्ध करिवेकूं उद्यमी भए सो महाबली अर्जुनने वा बलवान विद्याधरके उरस्थलविषैं एक मुष्टिप्रहार किया सो एक ही मूकीसूं वह भूमिमें गिर पड्या अर आप दयालुचित्तसे खडे होय रहे ॥ १२॥ वाकी कुसुमावलीनामा स्त्रीने पतिकी भीख मांगी तब वाहि सीख दई सो नमस्कारकरि विजयार्द्धगिरिकी दक्षिणश्रेणीविषै गया ॥ १३ ॥ अर यह धीर चले चलैं मेघदलनामा नगर गए तहां राजा सिंह ताके कनकमेखलानामा रानी ॥ १४ ॥ अर तिनके पुत्री कनकावती सो अत्यंत रूपवान महासुंदरी अर ताही नगरमें एक मेघनामा वणिक ताके अलका नामा स्त्री वाके लक्ष्मीकांता नामा पुत्री सो राजकन्या ॥ १५ ॥ अर सेठकी कन्या यह दोऊ कन्या निमित्तज्ञानीके कहिवेतैं इनकी माताने भीमसेनकूं देनी विचारी हुती सो भीमसेन भेष पलटि भिक्षाके अर्थ तिनके पास गया सो पुण्यके योगकरि भीखमें यह दोऊ कन्या

ही मिलीं ॥ १६ ॥ तहां कैयक दिन सुखतैं विश्राम करि यह पुरुष प्रधान कौशलनामा देश गए तहां हू सुखतैं कैयक दिन रहि रामगिरि नामा पर्वत गए तहां राम लक्ष्मणके कराए जिनेंद्रके चैत्यालय चांद सूर्य समान दैदीप्यमान सैकडों रतनमई अकृत्रिम चैत्यालय सारिखे सुंदर श्रीरामचंद्र कराए तिनकी शोभाका कहा कहना जहां निरंतर नानादेशके अनेक भव्यजन आवैं अर वंदना करैं सो पांडवके पुत्र तहां पूजाकरि प्रभुकी स्तुति करते भए। ता पर्वतविषैं लतामंडप महामनोज्ञ ताविषैं अर्जुन द्रोपदीसहित क्रीडा करता भया जैसैं श्री श्रीराम सीता सहित रमे ॥ २१ ॥ याभांति स्वइच्छा विहार करि यह पुरुषोत्तम सुखसूं ग्यारहवर्ष पूर्ण विहार करते भए काहूके जानिवेमें नहीं आये जो यह पांडव हैं अर इनके सुखमें अंतर न पड्या, कैसे हैं यह पांचो भाई धन्य है अर मान्य है चेष्टा जिनकी। अथानंतर—एक विराट नामा नगर तहां राजा विराट ताकी सुदर्शना नामा स्त्री ॥ २३ ॥ तहां यह पांडव अपना आपा छिपाय रहे युधिष्ठिर तो पंडित होयकरि रह्या अर भीम रसोईदार होयकरि रह्या अर अर्जुन नृत्यकारी होय रह्या अर नकुल सहदेव अश्वनिके शालिहोत्री होयकरि रहे अर द्रोपदी मलिन होय रही यह राजा बिराटके सन्मान योग्य होयकरि रहे ॥ २४ ॥ यथायोग्य अपने विनोदकरि यह सुखसूं काल व्यतीत करैं प्रमादरहित है मन जिनका ॥ २५ ॥

अथानंतर—एक चूलिकानामा नगरी तहां चूलिक नामा राजा ताके विकचा नामा रानी फूले कमल समान है मुख जाका ताके सौ पुत्र ॥ २६ ॥ तिनमें बडा कीचक सौ भाइनिमें बडा अर दुराचारिनिमें बडा जाके रूपमद यौवनमद चातुर्यता मद अर शूरवीरताका मद अर द्रव्यका मद ऐते मदनोंकरि उन्मत ॥ २७ ॥ सो राजा विराटकी रानी सुदर्शना कीचककी बहन सो यह बहनसूं मिलवेके अर्थि विराटपुर आया वाने द्रोपती देखी सो देख करि कामासक्त भया पापी यह न जाने जो यह महासती है ॥ २८ ॥ कैसी है द्रोपती महा सुगंधित है शरीर जाका ताके तनकी सुगंधताकरि दशूं दिशा सुगंधित होय रही। अर रूप लावण्य सौभाग्य गुणकरि पूरित है

शरीर जाका ॥ २९ ॥ ताके दर्शन मात्र ही कीचक महामानी हुता तौ हू वाका मन द्रौपदीसूं तन्मय भया दीनताके भावकूं प्राप्त भया वा पापीने अनेक उपायकरि लोभ दिखाया अर आपहू रागके वचन कहे अर औरनि हाथ कहाये सो याके मनमें कुछ हू न आई ॥ ३१ ॥ वह महासती जाके परपुरुष तृणसमान वा दुष्टके आग्रहविशेषतैं द्रोपती वाहि मिथ्या वार्ता करि विश्वास उपजाय आयकरि सब वृत्तांत अपने जेठ भीमसेनसूं कह्या ॥ ३२ ॥ तब वह महाधीर रात्रि समय द्रोपतीका भेषधरि वा पापीने जहां संकेत किया हुता तहां एकांतविषैं गया सो वह महा मदनातुर याहि द्रोपती जानै शीघ्र ही आया जैसे स्पर्श इंद्रीके विषकरि अंध गंधहस्ती खाडमें पडिवेकूं आवै तैसे द्रोपदी जानि भीमके निकिट आया सो भीमसेनने दोऊ भुजानिकरि वाका कंठ ही पकड्या ॥३४॥ अर वाहि भूमिविषैं पिछाडा अर पायनसूं मसल्या अर मुष्टि प्रहारकरि हन्या जैसैं गिरिपर वज्र परै तैसे कीचकपर भीमकी मुष्टि पडी वह परदारारत कामी कुशीलका अभिलाषी वाहि अन्यायका फल दिखाय छोड दिया जे दयावंत उज्ज्वल चित्त हैं वे ऐसे पापीकूं हू न मारैं सब जीवनिपर है दयालु चित्त जिनका ॥ ३६ ॥ वह कीचक पापका फल प्रत्यक्ष देखि विषयसूं विरक्त भया एक रतिवर्द्धननामा मुनि तिनके समीप जायकरि मुनिव्रत आदरे भावनकी शुद्धतातैं वह शास्त्रका श्रद्धानी भया अर बारह भावनाकर शुद्ध रत्नत्रयका आराधन करता भया ॥ ३८ ॥ अर कीचकके भाई सौ तिन कीचककूं न देख्या तब जाना या द्रोपतीके कारणतैं हमारा भाई मारा गया सो हम द्रोपतीकूं अग्निमें जलावेंगे सो याके जलावेकूं उन पापीनिने अग्नि प्रज्वलित करी सो भीमसेन यह वार्ता जानि वे सौ हू वाहि अग्निमें भस्म किए । ४०॥ वह सौ हू महा उद्धत महा बलवान महा सुभट हुते परंतु अकेले भीमने सब मारे जैसे एक सिंह अनेक गजनिका प्रहार करै ॥ ४१ ॥

अथानंतर—वह कीचक जो मुनिभया सो वनविषै पर्यंकासन धर ध्यानारूढ तिष्ठता हुता सो एक यक्षने देख्या ॥ ४२ ॥ तब यक्षनैं विचारी यह द्रोपतीपर आशिक भया हुता सो अब देख याके वैराग्यविषै कैसी दृढता है सो

मुनिके चित्तकी परखके अर्थ यक्षने अर्धरात्रिके समय द्रोपतीका रूप दिखाया मदन करि उन्मादरूप ॥ ४३ ॥ सो साधु वाके शब्द सुनिवेकूं बधिर समान होयगए अर वाकारूप देखवेकूं अंध समान होय गए रूप महा मनोहर अर विलासका भरा परंतु अंधा कहा देखै अर महा सुंदर शब्द शृंगार रसके भरे परंतु बधिर कहा सुनै ॥ ४४ ॥ कैसे हैं कीचकनामा मुनि वश किए हैं इंद्रियनिके समूह जिनने अर शुद्ध भया है मन जिनका। वाही समय कीचकनामा मुनिकूं केवलज्ञान उपज्या तब यक्षदेव मुनिकूं नमस्काकरि क्षमा कराय पूछता भया हे प्रभो! द्रोपतीसूं आपके मोहका कारण विना कारण ऐसा मोह न उपजै ॥ ४५ ॥ तब कैयक पूर्वभव आपके अर द्रोपदीके यक्षकूं कीचक यति कहते भए यक्ष नमस्कारकरि हाथ जोडि विनयवान हुवा सुनै है ॥ ४८ ॥ मुनि कहै हैं हे यक्ष! यह तरंगिनी नामा नदी जामें वेगवतीनदीका मिलापभया है सो तरंगिनीनामा नदीके तीरमें महा दुष्ट क्षुद्रनामा म्लेच्छ हुता सो महा पापी गरीब जीवनिका वैरी ॥ ४९ ॥ सो साधुके दर्शनसूं मैं शांत भया अर मरकरि उत्तम मनुष्य भया। तहां मेरा नाम कुमार देव भया। अर घनदेव नामा मेरा पिता अर सुकुमारिका नामा मेरी माता सो वह पापिनी आहार विषै मुनिकूं विष देय मारती भई सो मुनि हत्याके पापकरि नर्कविषैं महादुःख भोगि तिर्यंच भई बहुरि नर्ककूं गई बहुरि तिर्यंच भई या भांति अनेक जन्म नर्क अर तिर्यंचके लहे ॥५२॥ अर मैं कुमार देव ताका पुत्र सो म्लेक्षतैं मरिकरि उत्तमकुल तो पाया परंतु यतीके तथा श्रावकके व्रत न धारै सो अव्रतके योग तैं अनेक भवविषै भ्रमण किया ॥ ५३ ॥ बहुरि एक सित नामा तापस ताके मृगशृंगिनी नामा तापसनी ताके मैं मधुनामा पुत्र भया सो तापसीनिके आश्रमविषै वृद्धिकूं प्राप्त भया ॥ ५४ ॥ बहुरि एक विनयदत्त नामा मुनि जिनकूं काहू महाभाग पुरुषने आहार दान दिया ताके पंचाश्चर्यका अतिशय देखकरि मैं मुनि भया बहुरि स्वर्ग लोक गया तहांतैं चयकरि कीचक भया ॥५५॥ अर कुमारदेवकी पर्यायविषैं मेरी सुकुमारिकानामा माता चिरकाल संसार भ्रमण करि दुर्भगा दुर्गंधा अनुमतिकानामा मनुष्यणी भई अर महा दुःखकी भोक्ता सो आर्याके व्रतधारि

निदान सहित तप किया ताके प्रभावकरि देवयोनि पाय द्रोपती भई सो अनेक भवविषैं यासूं मेरे अनेक संबंध भये। काहू जन्ममें यह माता भई कबहू बहन भई कबहू पुत्री भई कभी प्रिया भई तातैं मेरा यातैं मोह भया यह कथा कीचक मुनिने यक्षकूं कही सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक! या संसारचक्रके परिभ्रमणविषैं संयोग अर वियोग अवश्य होय माता मरिकरि बहन होय बेटी होय अर स्त्री होय अर स्त्री मरि माता होय बहन होय बेटी होय यह संसार चक्रका चरित्र है ॥ ५९ ॥ ऐसी संसार चक्रकी विचित्रिता जानिकरि भव्यजीव वैराग्यकूं अंगीकार करि मोक्षहीके अर्थि महातप करिवेका यत्न करहु कैसे हैं भव्य संसारके कारणतैं निवृत्त भई है बुद्धि जिनकी ॥ ६० ॥ या संसारके इंद्रादिकपदके महासुख हू जिनकूं तुच्छ भासै है इत्यादि कीचक मुनिके वचन सुनि वह यक्षदेव अपनी देवनि सहित सम्यक्तरूप रत्नाभरणकरि आपकूं शोभित करता संता गुरूनिकूं नमस्कारकरि धीर्यकरि संयुक्त अपने धाम गया ॥ ६२ ॥ अर कीचकनामा मुनि देव मनुष्य अर विद्याधर तिनके समूहकरि पूजनीक हैं चरण जिनके सो अंतर वाह्य तपकरि महा धैर्यके धारी लोकविषैं जिनमार्गका प्रवल प्रकाश करि परमपदकूं प्राप्त भए। वह परमपद अविनश्वर है सो आत्मशुद्धताकरि पाइए है।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कीचकनिर्वाणगमनवर्णनोनाम षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४६ ॥

अथानंतर—कीचकके सौ भाईनिका वृत्तांत सुनिकरि दुर्योधन मनमें विचारता भया ऐसे कार्य पांडव विना न होवें बारहवर्षमें कैयक दिन घटै हैं सो जानिये है वे विराटपुरमें हैं सो नगरके गो महिषी आदि ग्रहण किये वे प्रगट होहिं यह क्षत्रीनिका विरद है कोऊ दुर्जन बालक तथा स्त्री तथा गऊ आदि पशुनिका ग्रहण करै तासूं युद्ध करै उनकूं छुड़ावै अथवा उनके अर्थि अपना जीव देय यह मनमें विचारिकरि हस्तिनापुरतैं दुर्योधनादि सौ भाई विराटपुर आय गौ ग्रहण करते भये तब पांचों भाई उनपर चढे बारहवर्ष की अवधिहू पूर्ण भई जैसैं भली

नय दुर्नयके निवारिवेकूं उद्यमी होय तैसैं पांडव तिनके जीतिवेकूं उद्यमी भये दुर्योधनसूं युद्धके अर्थि पांचों प्रयाण करते भये। जैसैं मुनि कर्मनिके समूहतैं लडिवेकूं सावधान होय जैसैं वर्षाविषै मेघजलकी धारा वरषै अर दशों दिशाकूं आच्छादित करैं तैसैं यह पांचों बाणवृष्टिकरि दिशानिकूं आच्छादित करते भये गाधांरीके सौ पुत्र दुर्योधनादिक इनका युद्ध देखिकरि अति प्रसन्न भये ऐसे योधा जगतमें नाहीं ॥ ५ ॥ तब दुर्योधन बहुरि एकता विचारता भया तब युधिष्ठर निर्मलबुद्धि महाधीर उनकी बात न मानी अर उनपर द्वेषहू न विचारता हुवा भीष्म द्रोण दुर्योधनादि सबनिसूं क्षमा कराय माता कुंतीसहित अर सकल भाईनि सहित दक्षिणकी दिशि चाले ॥ ७ ॥ सो मार्गमें विंध्याचलके वनविषैं विदुरनामा मुनि तप करते हुते-सो तिनकूं युधिष्ठर सब भाईनि सहित नमस्कारकरि स्तुति करता भया ॥ ८ ॥ हे पूज्य ! तिहारा जन्म कृतार्थ है जो सकल परिग्रह तजकरि जिनेश्वरके मार्गविषैं तिष्ठे महातप करो हो यह जिनभाषित मुनिका धर्म मोक्षका मार्ग है याजिनधर्मविषैं निर्मल सम्यग्दर्शन तत्वार्थश्रद्धानलक्षणरूप अर सर्व अर्थका प्रकाश करणहारा सम्यक्ज्ञान अर सब पापरहित सम्यक्चारित्र सोहै है पंचमहाव्रत तीन गुप्ति पांच समिति पंच इंद्रीनिका निरोध अर कषायनिका जीतना अर संयमका धारना या जैनमार्गविषैं है ताविषैं प्रवर्तैं तुम सारिखे साधु शीघ्रही सिद्धपद पावै हैं ॥११॥ या भांति जिनमार्गकी अर साधुनिकी स्तुतिकरि बहुरि मुनिकूं बंदि पांडुके पुत्र माता अर द्रोपदीसहित द्वारिका गये ॥ १२ ॥ सर्व भाईनि सहित राजा युधिष्ठरकूं आये जानि यादव सन्मुख गये अर नगरविषैं महा उछाह भया बहन अर भाणजेनिका आगमन भया अर चिरकालमें आये सो समुद्रविजयादि दशूं भाईनिके परम आनंद भया अर प्रथमही पांडव श्रीनेमिनाथका दर्शनकरि बहुरि समुद्रविजयादि अपने मामानिसूं मिले बलदेव वासुदेव आदि दशूं भाईनिके पुत्र महासुंदर तिनसूं मिले अर मांहि सब अंतःपुरकी रानी नानी मामी आदि तिनसूं मिले अर द्वारिका नगरीकी रचना देखि अति प्रसन्न भये ॥ १४ ॥ अर इनके दर्शनकरि सबनिकूं आनंद भया परस्पर सज्जननिका मिलाप सुखका कारण है ॥

अथानंतर—कृष्णने पांचों भाईनिकूं रत्नमयी पांच मंदिर रहिवेकूं दिये तिनविषैं सर्व भोग सामग्री तिनविषैं यह पांचों भाई निवास करते भये। अथानंतर—समुद्रविजयादि दशूं भाई इनकूं अपनी पांच पुत्री परणावते भए सो युधिष्टर लक्ष्मीमति परणे अर भीम सेखवती परणे अर अर्जुन सुभद्रा परणे अर नकुल विजया परणे अर सहदेव रति परणे ॥ १८ ॥ देवनि सारिखे वे पांचो भाई देवांगना समान यह इष्ट कन्या तिनकूं परणकरि इन सहित सुखसूं रमैं ॥ १९ ॥ यह पांडवनिकी कथा हे श्रेणिक! तोहि संक्षेपरूप कही अब कृष्णके पुत्र प्रद्युम्नका चरित्र तोहि कहूं हूं सो सुनि ॥ २० ॥ एक विजयार्द्धगिरिविषैं मेघकूटनामा नगरमें काल संवरनामा राजाके घर प्रद्युम्न सकल कला अर गुण तिनकरि वृद्धिकूं प्राप्त भया जैसे चंद्रमा वढता थका समुद्रकी वृद्धि करै है तैसे प्रद्युम्नकुमार वढताथका बंधुवर्गकी वृद्धि करताभया।२१। विद्याधरनिके उचित जे विद्या आकाशगमनादि सो विद्याधरनिके पुत्र सहित सीखता भया शीघ्रही या महा उद्यमीकूं सकलविद्या सिद्ध भई ॥ २२ ॥ वल्यावस्थाहीतैं लेयकरि याके रूप लावण्य सौभाग्य पुरुषार्थकी वृद्धि भई सो अपनेरूप लावण्यताकरि नर नारीनिका मन हरता भया वाके गुण छिपैं नाहीं। अथानंतर—कुमार यौवनकूं प्राप्त भया सर्व शास्त्र विद्याविषैं प्रवीण सो यह कुमार अपने गुणनिकरि नर नारिनिका मन हरता सबनिका वल्लभ भया भावार्थ—जो काहूका कछु हरे है सो अभावणा लागै है अर यह मन हरताहू वल्लभ भया ॥२४॥ एते नाम कहि लोक याका यश कहते भए मन्मथ, मदन, काम, कामदेव, मनोभव, अनंग सुंदर अंग इत्यादि अनेक नाम याके प्रसिद्ध भए ॥ २५ ॥

अथानंतर—एक सिंहरथनामा राजा सो राजा कालसंबरतैं परांगमुख तापर राजाने अपने पांचसौ पुत्र विदा किये हुते सो तिनकूं वानैं जीते तब राजाकूं वाके जीतवेकी चिंता भई तब प्रद्युम्न राजातैं विदा होय वा पर गये। सो वाहि पकडकरि कालसंबरपर ले आये, अर कालसंवरकूं दिखाया जो यह शत्रु तिहारे पांयन आया है यह पुत्रका पराक्रम राजा देखिकरि अति प्रसन्न भया अर मनमें जानी यह पुत्रके प्रतापकरि मैं दोऊ श्रेणीका

अधिपति होय चुक्या जो दोऊ श्रेणीमें गर्भवंत होयगा वाहि यह जीतिवे समर्थ है महा राज्यपद है उदार फल
जाका ऐसा पुहुप समान युवराजपद सो राजा याहि दिया अर याके सिर पट्ट वांध्या, सो प्रद्युम्नका प्रताप देखि
पांचसौ भाई कालसंवर राजाके पुत्र सर्वथाप्रकार याका नाश चिंतवते भये सो वह छल ढूंढिनविषैं तत्पर आसन-
विषैं शय्याविषै वस्त्रविषैं तांबूलविषैं अथवा खानपानविषैं घात किया चाहे सो काहू ठौर याहि छलि न सकै ॥ २९ ॥
वे मायाचारी अर यह निष्कपट महा विनयवान याके सबसूं हित सो वह याहि सिद्धायतननामा द्वार तहां ले गये
॥ ३० ॥ अर इन सबने कही जो शीघ्रही या द्वारपर चढ़ै सो यहांके निवासी देवतें विद्याका भंडार अर मुकुट पावै ।३१।
सो यह वहां गये अर ता देवने वही वस्तु भेंट करी वहुरि उनके कहेतें महाकालनामा गुफामें गये तहांके निवासी
देवने खडग, खेट, छत्र, चमर भेंट किये । वहुरि नागगुफामें गये तहांके देवने सिंहासन अर नागशय्या अर
विद्यारूप जे देवी तिनकूं प्रसन्न करणहारी वीणा भेंट करी ॥ ३३ ॥ वहुरि एक विषम वापिका तहां प्रद्युम्न गया ।
सो वहांके देवने युद्ध किया सो युद्धविषैं वाहि जीत्या सो वानैं मगरके चिन्हकी ध्वजा भेंट करी अर अनेक वस्तु
दई वहुरि अग्निकुंडविषैं प्रवेशकरि अग्निकूं मथी तहांका देव दास होय युगलवस्त्र भेंट करता भया ॥ ३४ ॥
वहुरि मींढाके आकार दोयगिर तिनविषै प्रद्युम्न प्रवेश किया सो दोनों कुंडल अर मुकुट अर अमृतवाला अति-
उज्ज्वल तहांके मर्कटनामा देव तानैं भेंट करी वहुरि कपित्थनामा वनमें गये सो वहांके देवने विद्यामयी हस्ती
दिया अर वाल्मीकनामा वनविषै गये तहांके देवन क्षुद्रघंटिका अर वस्तर अर मुद्रिकादि आभूषण दिये ॥ ३६ ॥
अर सरावनामा पर्वतविषैं वहांके देवने कटिसूत्र हार अर कडे अर केयूर अर कंठाभरण एती वस्तुकी प्राप्ति
भई ॥ ३७ ॥ वहुरि सूकरनामा असुर ताथकी दिव्य शंख अर धनुष इनकी प्राप्ति भई अर एक मनोवेगनामा
विद्याधर सो काहू शत्रुने कीलाहुता ताहि प्रद्युम्नकुमारने छुडाया ताथकी मोतिनिका हार अर इंद्रजालकी प्राप्ति
भई ॥ ३९ ॥ अर मनोवेगका शत्रु एक वसंतनामा विद्याधर ताथकी कन्या अर नरेंद्रजाल अर पुष्पधनुष इतनी

वस्तुकी प्राप्ति भई अर भवनाधिपनामा देवने प्रद्युम्नकूं पांच बाण दिये तिनके नाम उन्मादकर मोहकर संतापकर मदकर शोककर ॥ ४० ॥ बहुरि प्रद्युम्नकुमार एक नागगुफा है तहां गये सो ताका अधिष्ठाता पार्थिवनामा देव तानैं चंदनकी अर अगरकी माला अर पुष्पनिका छत्र अर पुष्पशय्या इतनी वस्तु भेंट करी ॥ ४१ ॥ बहुरि दूर्जयनामा बन जाविषैं एक जयंतनामा गिरि ताविषैं वायुनामा विद्याधर ताके सरस्वतीनामा स्त्री ताकी रतिनामा पुत्री सो प्रद्युम्न कामदेव परण्या ॥ ४२ ॥ यही सोलह स्थानक विघ्नके कारण तिनविषैं प्रद्युम्न अनेकलाभ लेयकरि निकस्या सो याके लाभ देखिकरि वह पांचसौ भाई अचरजकूं प्राप्त भये ते संवरादिक पांचसौ कालसंवरकेपुत्र प्रद्युम्नकुमारके पुण्यका माहात्म्य जानिकरि याकी अतिप्रशंसा करते भए अर याके साथ अपने नगर आए ॥ ४४ ॥ पाया है देवोपुनीत दिव्यरथ जानैं अर जुपे हैं महाउज्वल वृषभ जाके तापर आरूढ अर देवोपुनीत पुष्पनिका धनुष जाके हाथमें अर पांच बाण देवोपुनीत अर छत्र ध्वजा अर दिव्य आभरण यह सब देवोपुनीत तिनकूं धरे प्रद्युम्न कामके बाणकरि स्त्रियनिका मन वेधता अर सब नगरका मन हरता मेघकूटनगरमें आया सैकडों राजकुमार हैं संग जाके ॥ ४६ ॥ सो आयकरि कालसंवर पितासूं प्रणाम करता भया सो राजा देखिकरि अति हर्षित भया अर जानी याही छविसूं यह मातापै जाय तो वह हू अति प्रसन्न होय तब याहि आज्ञा करी हे पुत्र ! तू अपनी जननीके निकट जावहु । तब यह पिताकीआज्ञातैं उसी छविसूं मातापर आया ॥४७॥ सो नेत्रकूं पथ्य समान महामनोहर अद्भुत आभूषण पहिरे अनुपम है रूप जाका सो दूर हीतैं रथऊपर चढे प्रद्युम्नकुमारकूं देखिकरि कनकमालाके कुछ और ही भाव होय गए ॥ ४८ ॥ बहुरि यह महा विनयवान रथतैं उतरि कनकमालाके पांयन पड्या तब याकी अति प्रशंसाकरि गोदीमें लिया अर याका मस्तक चूम्या, अर अपने कोमल करपल्लवनिकरि याका अंग स्पर्श्या मुख स्पर्श्या ॥ ४९ ॥ बहुरि महामोहके उदय वाका मन परवस होय गया सो हृदयरूप भूमिकाविषै खोटे मनोरथ प्रवर्ते ॥ ५० ॥ ताका मन विकारने खैंच्या सो मनमें

चिंतवे है जो स्त्री एक बार सेजविषैं अपने अंगकरि याके अंग स्पर्शै है सो धन्य है अर वाहीका जन्म सफल है या संसारविषैं एक वही स्त्री है और स्त्री कहिवे मात्र हैं ॥ ५१ ॥ रूप लावण्य सौभाग्य चतुराई आदि अनेकगुण या प्रद्युम्नमें हैं, सो एक क्षणमात्रहू या कामदेवका मिलाप मोहि होय तो या समान दुर्लभ पदार्थ नाहीं या भांति प्रवर्त्या है असंभाव्य संकल्प जाके ताहि प्रणामकरि प्रद्युम्न अपने घर आया वह विद्याधरी प्रद्युम्नके मिलापके लाभका है मनोरथ जाके सब क्रिया भूल गई न खान न पान न स्नान न संस्कार सबही विसर गई तब वाके शरीरकी असमाधानी जानि प्रद्युम्न देखिवे गए सो ताका तन कमलिनीके पत्र समान कोमल मुरझाया देख्या अर वाके देहकी दाहकरि पुष्प अर पल्लवनिकी सेज कुम्हलाई देखी तब वाहि शरीरकी असमाधिका कारण पूछ्या। तब वाके अंगकी चेष्टाकरि मनकी विपरीतता जानी तब कर्मनिकी चेष्टाकूं निंद्यकरि वाहि माता अर पुत्रका संबंध कहिवेकूं तत्पर भए ॥५७॥ तब वानैं आदि मध्य अर अंततक सब कथा कही तोहि उद्यानविषैं पाया अर महारूपवान जानि बढाया सो याही अर्थि जो यह यौवनवान होयगा तब हमारे मनोरथ पूरेगा सो याकारण तेरे यत्न किए अर आकाशगामिनी विद्याका तोहि लाभ भया ॥५८॥ यह वार्ता वाके मुखकी सुनिकरि यह जिन मंदिरविषैं सागरचंद्रनामा मुनि हुते तिनपै गया तिनका दर्शनकरि प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछे तब स्वामी सब कहे अर कनकमाला पूर्वभवविषैं चंद्राभा हुती अर यह राजा मधु हुता सो सब वृत्तांत मुनिने प्रद्युम्नकुमारकूं कह्या ॥ ६० ॥ अर मुनि कही गौरी अर प्रज्ञप्ती विद्या भी वह तोहि देगी यह वार्ता सुनि यह धर्मात्मा शील ही है धन जाके सो वाके पास गया सो वह देखिकरि हर्षित भई अर यासूं कही हे मदन ! तू सुनि जो तेरी इच्छा है तो गौरी अर प्रज्ञप्ति विद्या लेहु ॥ ६२ ॥ तब यानैं कही मेरी इच्छा है कृपाकरि भिक्षा देवोगे तो मैं लूंगा यह कही तब वह दुराचारिणी विधिपूर्वक यह दोऊ विद्या प्रद्युम्नकुमारकूं देती भई। तब यानैं हाथ पसार विद्या ली अर वह हर्षित होय कुछ और भावना करती भई तब वाहि कही तुम मेरी प्राणदाता तातैं माता अर विद्याके दानतैं मेरी

गुरु ॥ ६४ ॥ या भांति कहि नमस्कार करि आगैं खडा अर नया है मुकुट जाका अर जोडी है आंजुली जानैं नमस्कारकरि अपने स्थानकूं गया ॥६५॥ तब वानैं जानी यानैं मोहि छली सो महा क्रोधके वशतैं वक्षस्थल अर कुच नखनिकरि विलूरे ॥६६॥ अर अपने धनीकूं अंग दिखाया अर कही प्रद्युम्नकी यह चेष्टा देखो मैं तो तुमको वाही दिन कही हुती जो यह पराया पूत अपना कैसे होयगा सो तुम न मानी अब यह चरित्र देखहु मेरा शील मैं नीठ राख्या है ॥ ६७ ॥ यह वार्ता त्रियाकी सुनिकरि वह विवेकहीन एकांतविषैं अपने पांचसौ पुत्रनिकूं आज्ञा करता भया जो यह प्रद्युम्न दुराचारी है याहि शीघ्र ही मारो। तब वे पापी पिताकी आज्ञा पाय प्रसन्न भए अर याहि आदरसहित कालांबुनामा वापिकामें लेगए ॥ ६९ ॥ वहां जायकरि प्रद्युम्नकुमारसूं कहते भए। जो आपां या वापी विषैं जलक्रीडा करैं। यह विचाऱ्या पहिले वापिकामें यह पडै पीछे आपां पांचसौ यापर पडैं अर मारिवेकी है इच्छा जिनके तब प्रज्ञप्तीविद्याने याके कानमें कही यह शत्रु हैं इनतैं सावधान रहना जैसी उनके मनमें हुती तैसी विद्यादेवीने कही। तब यह आप तो अंतर्ध्यान होय वापिकाके तीरपर बैठ्या अर अपना मायामई शरीर बनाय वापिकामें प्रवेश कराया वे जानैं वापिकामें प्रद्युम्न पड्या तब पांचसौ भाई निर्दई वज्रपातकी तरह याके ऊपर एक साथ पडे ॥ ७२ ॥ सो मारिवेकी है इच्छा जिनकी सो कुमार तो वापीके तीरही हुते इनकूं दुष्ट जानि सबके नीचे मुख अर ऊपर पांवकरि वापिकाविषैं लटकाए अर वापिका ऊपर एक अजूहशिला मेली जो वह निकलि न सकै अर चारसौ निन्यानवेकूं तौ या भांति टेरे अर एक पंचचूडनामा उनका भाई ताहि न लटकाया अर वाहि पिताके निकट पठाया सो वानैं जाय सब वृत्तांत कह्या सो सुनिकरि राजा अति क्रोधायमान हुवा अर आप बखतर पहरि सकल शस्त्र बांधि सेनासहित कालसंवर प्रद्युम्नकुमारपर आया तब प्रद्युम्नकुमारने विद्याके प्रभावकरि मायामई सेना रची सो महा युद्ध भया केतीक देरमें कालसंवर भाग्या वाकी इच्छा भंग भई तब घर जाय कनकमालापर गौरी अर प्रज्ञप्ती विद्या मांगी जो वे विद्या देहु जो शत्रुका निपात करैं तब

बह पापिनी कहती भई जो वे दोऊ विद्या तो मैं वा दुराचारीकूं बाल्यावस्थाहीमें दई ॥ ७६ ॥ तब वानैं जानी यह स्त्री दुराचारिणी है। यानैं पुत्र हू मोतैं खोया अर विद्याहू मोतैं खोई ऐसा जानि वह महामानी पाछा जाय कुमारसूं युद्ध करता भया तब कुमारने याकूं बांध्या ॥ ७७ ॥ ताही समय नारद आए सो महाप्रवीण तब प्रद्युम्न उठिकरि नमस्कार किया अर बहुत स्तुति करी नारदने सब संबंध कह्या अर कही घरकूं वेगि चालि यह वृत्तांत सुनि प्रद्युम्न नारदकी लारही द्वारिका जायवेकूं उद्यमी भया। ताही समय कालसंवरकूं बंधनतैं छोड्या अर क्षमा कराई अर पांयन पड्या वारंवार नमस्कारकरि कहता भया तुम मेरे पिता हो मैं तिहारा बालक हूं मेरा अपराध क्षमा करो बहुरि माता कनकमालापै जायकरि क्षमा कराई जो पूर्वकर्मके वशकरि जीवनके अनेक अपराध उपजै हैं सो मैं तिहारा पुत्र हूं मेरे दोष क्षमा करहु ॥ ७९ ॥ अर वे चारसौ निन्यानवै भाई वापिकामें गिरे हुते तिनके छुडावनेका उपाय कोऊ न जानता हुता सो कुमार सब उपायका वेत्ता उनकूं छोडकरि बहुत क्षमा कराई। उनसूं भाईपनेका बहुत स्नेह जनाया ॥ ८० ॥ बहुरि कालसंवरतैं आज्ञा मांगी जो पुत्र तो मैं तिहारा हूं परंतु कृष्ण अर रुक्मिणीके मेरे देखिवेकी बहुत अभिलाषा है सो तुम आज्ञा करो तो मैं मिलि आऊं ॥ ८१ ॥ अर याही भांति माता कनकमालासूं कही अर मातापिताकूं प्रसन्नकरि वारंवार प्रणामकरि उनकी आज्ञा पाय नारदके साथ विमान पर आरूढ होय आकाशके मार्ग द्वारकाकी ओर चाल्या ॥८२॥ सो मार्गमें नानाप्रकारके कथा करते चले जांय। हस्तिनापुरका राजा दुर्योधन ताकी पुत्रीकूं कृष्णके पुत्रकूं परणायवेके अर्थ लावते हुते सो वाके लार बडी सेन्या हुती सो मार्गविषैं बनीके मध्य वह सेन्या प्रद्युम्नने देखी तब नारदसूं पूछी हे पूज्य! यह सेन्या कौनकी पश्चिम दिशिकी ओर किस अर्थ जाय है, याभांति कामदेव पूछी तब नारदने कही हे प्रद्युम्न! यह कथा मैं तोहि संक्षेप मात्र कहूं हूं ॥ ८५ ॥ एक कुरुवंशका आभूषण राजा दुर्योधन युद्धविषैं शत्रुनिकरि न जीत्या जाय सो हस्तिनापुरविषैं राज्य करै है ॥ ८६ ॥ तानैं यह प्रतिज्ञा करी हुती जो रुक्मिणी अर सत्यभामा दोऊके गर्भ है सो कृष्णके

बडा पुत्र होय ताहि मैं अपनी पुत्री परणाऊं सो तुम दोऊ एक साथ भए सो तेरी बधाई कृष्णपै पहिले गई सो तोहि बडा ठहराया बहुरि सत्यभामाके बधाईवारे गए ॥ ८८ ॥ अर धूम्रकेतुनामा असुर जाय था सो रुक्मिणीके मंदिरपर ताका विमान अटक्या तब तोहि शत्रुजानि वह ले गया। तब रुक्मिणी खेदखिन्न भई अर सत्यभामा हर्षित भई ॥ ८९ ॥ सो तेरे आयवेकी वार्ता तो दुर्योधन जानै नाहीं यातैं अपनी उदधिकुमारीनामा पुत्री भानु-कुमारके अर्थि भेजी है अर यह मांग तो तेरी है बडा पुत्र तो तू है सो यह वडे राजाकी पुत्री है यातैं याकी रक्षाके निमित्त बडी सेना लार है॥ ९१ ॥ यह वार्ता सुनिकरि नारदकूं आकाशविषैं थापिकरि कुमार पृथिवीविषैं उतरचा सो महा विकराल भीलका रूपधरि मार्ग रोककरि सेनाके अधिकारीनिकूं कही जो कृष्णने या वनकी जगात हमकूं दी है सो तुम देयकरि जावो। तब कैयकनिने कही याहि घेर देहु अर कैयकनिने कही अपने कहा कमी है यह हू अर्थी है कुछ ले जाहु तब याकूं पूछी तुम कहा मांगो हो तब भील कही जो सेनाविषैं सारवस्तु है सो लूंगा। तब काहूने कही सबमें सार तो कन्या है तब यह बोला जो सार है सो देवो। तब इनने कहा तू कन्या मांगै सो तू कृष्णका पुत्र नाहीं। तब यानैं कही हम कृष्णहीके पुत्र हैं। तब सेनामें जे समझदार पुरुष हुते तिनने कही यह बैंडा है याहि घेर देहु। तब धनुषकी अणीकरि याहि सावंतनि डराया अर वे चलिवेकूं उद्यमी भये ॥ ९६ ॥ तब प्रद्युम्नने मायामई भीलनिकी सेना रची ताकरि दुर्योधनकी सेना जीती अर कन्याकूं लेय-करि नारदके निकट आय बैठे अर कन्याकूं अपना दिव्यरूप दिखाया सो कन्या कामदेवका रूप देखि मोहित भई अर भयरहित तिष्ठी अर नारदने कन्याकूं सर्व वृत्तांत कहे जो तू याकी मांग है। यह कृष्णका वडा पुत्र है तब वह महा प्रसन्न होय विश्रामकूं प्राप्त भई ॥ ९८ ॥

अथानंतर—महाशीघ्रगामी जो विमान तापरि चढे कुमार नारदसहित द्वारिका आये। कैसी है द्वारिका मनोहर है द्वार जाका ॥ ९९ ॥ सो प्रद्युम्न दूरहीतैं द्वारिकाकूं देखिकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भये समुद्र ही है कोट

जाके अर गोपुर कहिये दरवाजे अर बुरज तिनकरि शोभित है ॥१००॥ अर नगरके वाहर भानुकुमारकूं देख्या जो अश्वनिका अभ्यास करै अर नानाप्रकारके अश्व खरीदै सो विमान बैठे प्रद्युम्नने भानुकुमारकूं देख्या तब विमानतैं उतरि एक महामनोहर मायामई तुरंग रच्या अर आप वृद्धका रूपधरि अश्वनिके व्यापारी भये अर अश्वकूं भानुकुमारके निकट ले गये। सो वह अश्वपर आरूढ भया अर अश्व महा मनोहर ॥२॥ सो भानुकुमारने अश्वकूं दौडाया सो अश्व भानुकुमारके वश न रह्या अपनी इच्छाकरि पाछा वृद्धके निकट आया ॥३॥ तब भानुकुमार तुरंगतैं उतरि वृद्धकूं कह्या तुरंग वदलगाम है चढिवे योग्य नाहीं तब वृद्ध हंस्या अर कही तुम राजकुमार तुरंगहूकी असवारी न जानो देखहु मैं वृद्ध हूं जो कोई मोहि चढाय दे तो मैं तुमकूं अश्वके गुण दिखाऊं तब याहि अश्वपर चढाया सो अश्वकूं भलीभांति नचाया दौडाया अश्वके गुण दिखाये अर उतरिकरि कुंवरकी ताली देयकरि बहुत हास्य करी। कुंवर बहुत खिसाना पर्‍या वहुरि वृद्धका रूप दूरकरि मायामई मर्कट अर मायामई तुरंग बनाये तिनकरि सत्यभामाका उपवन विध्वंस किया। वहुरि सत्यभामाकी वापिका आए सो मायाकरि वापी निर्जल करी अर मांखी मांछर डांस तिनकरि विरूप करी अर नानाप्रकारकी क्रीडाकरि लोकनिकूं आश्चर्य उपजाया अर मीढानिके युद्धकरि कृष्णका पिता वसुदेव ताहूसूं कीडा करी ॥८॥ बहुरि सत्यभामाके घर नगरके लोग न्योते हुते सो मायाकरि लडाये। ऐसी माया करी जो वे परस्पर यष्टि मुष्टि आदि उपकरणनिकरि भिडे अर उठि गये वह आहार सब आप अकेला भोजन कर गया। वहुरि वमनकरि सत्यभामाका सब मंदिर मलीन किया ॥९॥ यह क्रीडाकरि वहुरि मायामई क्षुल्लकका भेषकरि माता रुक्मिणीके घर आया सो कृष्णके खायवेके सब लाडू खा गया अर माताकूं आश्चर्य उपजाया बहुरि माताके सिरके केश लेयवेकूं सत्यभामाकी नायण आई सो मायाकरि उनहीके सिरके केश मूंडे तब वे सत्यभामापर गई सो सत्यभामा उनका वृत्तांत देखि बलदेवपर पुकारी तब बलदेव रुक्मिणीके कृष्णकी हिमायत जानि याके तिरस्कार करिवेकूं आपही

रुक्मिणीके घर आये सो प्रद्युम्न वृद्धका रूपकरि रुक्मिणीकी पौलिमें पसरया सो बलभद्र टांग पकडि घसीटने लगे सो टांग वधती चली गई। तब बलदेव जानी यह देवमाया है तब वे उठि गए इत्यादि अनेक चरित्र लोकनिकूं अचरजके उपजावनहारे प्रद्युम्न उपजाए सो कहांतक कहें ॥ ११ ॥ अर प्रद्युम्नके आगमके चिन्ह जो सीमंधरस्वामी नारदकूं कहे हुते सो सब भए। रुक्मिणीके कुचकलश दूधसूं भरि गए अर झरने लगे अर जितने चिन्ह कहे हुते ते सब भये तब माताने जानी सोलह वर्ष होय चुके सो मेरा पुत्र यहां रूप पलटि आया है ॥ १३ ॥ ताही समय प्रद्युम्नकुमार संपूर्ण माया संकोचि अपना निजरूप प्रगट करि माताकूं प्रणाम करता भया ॥ १४ ॥ तब माता आनंदकी भरी पुत्रकूं उरतैं लगाय समस्त दुःख विस्मरण करती भई अर तत्काल माताके हर्षके आसूं पडे सो आंसूं न पडे मानूं सब दुःख शरीरके निकसि गये अर पुत्रके दर्शनरूप अमृत करि सींच्या रुक्मिणीका शरीर मानूं रोमांचके मिसकरि स्नेहके अंकुर ही धारता भया ॥ १६ ॥ वहुरि माताके अर पुत्रके परस्पर कुशलका पूछना भया अर माता पुत्रसूं चित्तकूं आनंदके दायक वचन गहती भई। हे पुत्र! धन्य है वह कनकमाला विद्याधरी जानैं तेरी बालक्रीडाके सुख देखे ॥ १८ ॥ तब पुत्र प्रणामकरि मातासूं कहता भया हे माता! मैं तोहि सर्व बालक्रीडा दिखाऊं हूं तू देखि यह वचन पुत्रने मातासूं कहे। कैसा है पुत्र जाहि देखि नेत्रनिकूं आनंद उपजै ॥१९॥ वाही समय तत्कालका जाया बालक होय गया वहुरि एक दिनका होय गया अर नानाप्रकारके विनोद दिखाए वहुरि अंगूठा चूखने लगा अर फूले हैं नेत्रकमल जाके ॥ २० ॥ वहुरि दूध चूंखणा होय माताके आंचल चूंखने लगा वहुरि उरकरि चालने लाग्या वहुरि थणी करने लाग्या वहुरि माताकी आंगुरी पकडि मणीनिके आंगनमें चलने लाग्या वहुरि रजमें लोटि माताके कंठविषैं लाग्या। वहुरि तोतला वोलने लग्या। जाके सुनैं आनंद उपजै वहुरि रोने लग्या हंसने लग्या। वारंवार मुलकै इत्यादि मनोहर बालक्रीडाकरि माताके मनोरथ पूर्ण किए अर कही जा समय तू कहै जैसा ही होय जांऊ तव

माता अति प्रसन्न भई बहुरि सोलहवर्षका कुमार होय गया अर माताकूं नमस्कारकरि कही मैं कहूं सो करहु माताकूं उठाय करि आकाशमें लेगया। यादवनिकी सभाके ऊपर जाय कहता भया। अहो यादव भूपति हो! तुम सर्व देखो हो अर तिहारे देखते मैं लक्ष्मीसमान कृष्णकी प्रिया रुक्मिणीकूं ले जाऊं हूं तुम राखिवे समर्थ हो तो राखो ऐसा कहि शंख बजाया। रुक्मिणीकूं नारद अर उदधिसुंदरीके निकट विमानमें थापि आप युद्धके अर्थि तिष्ठ्या तब सब यादव युद्धके अर्थि द्वारिकातैं निकले चतुरंग सेना सहित अर सर्व आयुध ही हैं आभूषण जिनके सो प्रद्युम्नने अपनी विद्याके बलकरि सर्व यादवनिकी सेना मूर्छित करी अर आप हरिसूं चिरकाल युद्ध किया सो कृष्णके सर्वशस्त्र पुत्रने विफल करि डारे तब कृष्ण बाहुयुद्ध करिवेकूं उद्यमी भए अर प्रद्युम्न हू उद्यमी भया ॥ ३० ॥ तब नारद विमानतैं नीचे उतरिकरि दोऊ योधानिकूं युद्धतैं निवार्‍या अर पिता पुत्रका संबंध प्रकट किया ॥ ३१ ॥ तब प्रद्युम्नने प्रणाम किया अर कृष्णने पुत्रकूं उरसूं लगाया आनंदके अश्रुपातकरि नेत्र भरि आए ॥ ३२ ॥ अर कृष्ण बहुत असीस दीनी प्रद्युम्नने मायाकरि यादवनिकी सेना मूर्छित करी हुती सो उठाई सब यादव प्रद्युम्नको देखिकरि अति प्रसन्न भए अर प्रद्युम्न सब बांधवलोकनि सहित द्वारावतीमें प्रवेश करता भया ॥३३॥ रुक्मिणी अर जामवन्ती यह दोऊ पुत्रके आगमनका अति उछाह करती भई इन दोऊका एक चित्त है प्रद्युम्नपर दोऊनिका विशेष हित है॥ ३४ ॥

अथानंतर—सबही काकी बडिया माईनिका है मान्य जाके ऐसा प्रद्युम्न सो श्रेष्ठ राजकन्यानिसूं विवाहके आरंभविषैं कृष्ण रुक्मिणीकूं कहिकरि कालसंवर अर कनकमालाकूं बुलावता भया सो याके विवाहविषैं मेघकूटपुरतैं कालसंवर अर कनकमाला दोऊ आए प्रद्युम्नका उदधिसुन्दरी आदि अनेक कन्यानितैं विवाह भया विवाहविषैं जे मातापिताके करिवेके कार्य हैं सो सब प्रद्युम्नके कहेतैं कृष्ण अर रुक्मिणीने कालसंवर कनकमालासूं कराए अर उनकूं कही या प्रद्युम्नके मातापिता तुमही हो अर तिहारा ही पुत्र है या भांति उनसूं बहुत हित जनाया

अर प्रद्युम्न अनेक राजकन्या परणीं पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावकरि अद्भुत सुख भोगता भया जिनेंद्रका उत्तम मार्ग ताकरि उपज्या है निर्मल भाव जाके ॥ ३६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कुरुवंशनिरूपण प्रद्युम्नमातापितासमागमवर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४७ ॥

अथानंतर—संबुकुमारकी अर सुभानुकुमारकी उत्पत्ति कही है सो सुनहु। गौतमस्वामी कहै हैं हे श्रेणिक! यह कथा चित्तकी हरणहारी है ॥ १ ॥ राजा मधुका छोटा भाई कैटभ सोलहवें स्वर्ग देव हुता ताकी आयु तहां व्यतीत भइ सो ताने केवलीकूं पूछ्या मैं कहां उपजूंगा तब केवली कही तू कृष्णका पुत्र होयगा अर तेरा बडा भाई भी तिनहीके उपज्या है सो वह देव कृष्णपै आय महा मनोहर हार देता भया, यह हार तुम जा रानीकूं दोगे वाके मेरा जन्म होयगा सो कृष्णके जीवमें यह, जो मैं यह हार सत्यभामाकूं दूं अर यह वाके पुत्र होय सो यह वार्ता रुक्मिणी सुनी अर पुत्रकूं कही जो यह पुत्र जांबुवतीके होय तब प्रद्युम्न मायाकरि जांबुवतीकूं सत्यभामाका रूपकरि कृष्णपै पठाई सो कृष्ण जांबुवतीकूं सत्यभामा जानि वह हार दिया सो वह सोलहवें स्वर्गका देव जांबुवतीके गर्भविषैं आया बहुरि सत्यभामा हू गई तब वाहूकूं निकट बुलाई ताके कोई और देव गर्भमें आया यह दोऊ रानी गर्भवती भई ज्यूं ज्यूं उनके गर्भ वढै त्यूं त्यूं माता पिता अर सब कुटुम्बकूं आनंद बढता भया जैसे चंद्रमाकी वृद्धिविषैं समुद्रकी कलोल वृद्धिकूं प्राप्त होय जब नव मास संपूर्ण भये तब जांबुवंतीके वह देव पुत्र भया ताका संबुकुमार नाम धर्‍या अर सत्यभामाके पुत्र भया ताका नाम सुभानुकुमार भानुकुमारसूं छोटा। रुक्मिणी अर जांबुवती यह दोनों प्रद्युम्नकुमार अर संबुकुमारकरि हर्षित भई अर सत्यभामा भानुकुमार अर सुभानुकुमार इन दोनों पुत्रनकरि अति प्रमोदरूप भई ॥ ८ ॥ अर हरिकी और हू स्त्रीनिविषैं पुत्र भये सो सर्व यादवनिके ५० हृदयकूं आनंदके करणहारे महा सत्यवादी पराक्रमी यशके धारी होते भये ॥ ९ ॥ संबुकुमार अर सुभानुकुमार ये

दोऊ समानवय नानाप्रकारकी क्रीडा करैं सो सब क्रीडानिमैं सुभानुकुमारकूं जीते । संबुकुमार महा पराक्रमी देवनकी न्याईं क्रीडा करैं ॥ ११ ॥ अथानंतर—रुक्मिणी प्रद्युम्नके अर्थि अपने भाई रुक्मकुंवरकी पुत्री जांची सो वाने न दई वह इनकूं न चाहै पूर्वला विरोध तब माताकी आज्ञातैं प्रद्युम्न अर संबुकुमार ये दोऊ भीलका भेष धरि तहां गये अर रुक्मकुंवरकी कन्या हरी वह छुडायवे आया तब वाहि जीति कन्याकूं ले आये सो वह कन्या साक्षात् लक्ष्मीसमान ताहि परणकरि कृष्णका पुत्र द्वारिकाविषैं अद्भुत भोगनकरि रमै ॥१४॥ अर संबुकुमार एक दिन सुभानुकुमारकूं द्यूतक्रीडामें जीता अर ताहीसमय जीतका सकल धन याचकनिकूं दिया बहुरि जो जो क्रीडा होय तामें संबुकुमार जीते, पंछीनकी क्रीडा मीढानिकी क्रीड़ा हिरणनिकी क्रीडा सुगंधकी परख रागकी परख अर तुरंग आदि सबकै क्रीड़ाविषैं संबुकुमार ही जीते । कृष्णकी सभाविषैं संबुकुमारकी जीतकी प्रशंसा होय एक दिन युगल वस्त्र संबुकुमारने आंगनमें धोयकर पहिने अर दिव्य अलंकारकी रचनाविषैं संबुकुमार जीत्या ॥ १७ ॥ संबुकुमारका बल देखि कृष्ण अति प्रसन्न भये संबुकुमारकूं कही तू वर मांगि तब वाने एक महीनेका राज मांगा हरिने दिया । सो एक महीनेका राज पाय संबुकुमार अन्यायमार्गविषैं प्रवर्त्या ॥ १८ ॥ तब केशवने पकडि याहि नगर बाहिर काढ्या सो प्रद्युम्नकी मायाकरि कन्याका भेष धरि बनविषै रहै अदभुत कन्या बनी अर सत्यभामा बनमैं गई हुती सो याका रूप देखि चकित होय गई याहि पूछी तू कौन है । तब याने कही मैं विद्याधरकी पुत्री हूं तब सत्यभामा याहि रथमें चढाय नगरमें लेय आई ॥ १९ ॥ सुभानुकुमारके परणायवेकी है इच्छा जाके सो संबुकुमार नगरमें आया सत्यभामा अपने पुत्रके अर्थि जे बड़े बड़े राजानिकी पुत्री आई हुती ते बलात्कार परन्या अर अपना रूप संबुकुमार प्रगट दिखाया एकही रात्रविषैं सैकड़ों कन्या परणकरि माताकूं सुख उपजाया ॥ २१ ॥ ता पीछे सत्यभामा आदि कृष्णकी सब राणीनिके सैकडां राजकुमार सैकडां राजपुत्री परने अर इंद्रसमान क्रीडा करते भये ॥ २२ ॥ एक दिन संबुकुमार कृष्णके पिता जो बसुदेव तिनके निकट

जाय विनोदकी वार्ता कहता भया। पितामहसे प्रणामकरि पोता कहता भया हे पूज्य! तुम तो चिरकाल वहुत परिभ्रमणकरि विद्याधरनिकी पुत्री परणी अर मैं तो बिना खेद ही अपने घरमें बैठे एक रात्रिमें सौ परनीं सो तुममें अर मोमें बड़ा अंतर ॥ २५ ॥ तब वसुदेव कही हे वत्स! तू तो बाणकी न्याई पराया प्रेर्या चाले है अर चलाया भी ग्रहमें आय पडे है। सो तोमें अर हममें बडा अंतर हम तो विजयार्द्ध गिरिरूप सागरके मगर मच्छ अर तू द्वारकारूप कूपका मींडक वृथा ही आपकूं पराक्रमी मानै है ॥२७॥ जे हम विद्याधरनके पुरविषैं देखी सुनी अर अनुभवी सो औरनिकूं दुर्लभ ऐसे वसुदेवने कह्या तब संवुकुमार कहता भया। हे पूज्य! जो जो चरित्र तुमने देखे अर किये अर अनुभवे ते सब सुनिवेकी मेरी इच्छा है आप कृपाकरि मोकूं कहो ॥ २९ ॥ तब वसुदेवने कही आनंदभेरी दिवाय अर सब भाईनिकूं भेलेकरि यादवनिके समीप मैं मेरा चरित्र कहूंगा तब संवुकुमारने सब यादव एकत्र किये तिनके समीप वसुदेव अपना सब वृत्तांत कहता भया ॥ ३१ ॥ प्रथम ही वसुदेवने लोक अर अलोकका स्वरूप कह्या बहुरि हरिवंशकी उत्पत्ति अर ताविषैं यदुवंशका प्रगट होना तामैं राजा अंधकवृष्टिके दश पुत्र दशार्ह तिनिमें वडे समुद्रविजय अर छोटा मैं सो सौर्यपुरके लोगनिके कहिवेतैं मेरा गमन भया। सो सौ बर्षमें बडे भाईसूं मिल्या विजयार्द्धगिरिके अपने सब चरित्र कहे अर वलदेव वासुदेवकी उत्पत्ति कही अर श्रीनेमिजिनका जन्म अर प्रद्युम्न संबुकुमारकी उत्पत्तिपर्यंत सव कथा कही ॥३३॥ जा समय वसुदेव निजकथा कही ता समय सबही यादव अर सबही रानी समुद्रविजयादि सब भाई अर सब भाईनिकी रानी अर वसुदेवकी सब रानी विद्याधरी सब सुनिकरि अति हर्षित भईं। सब विद्याधरीनिकूं अपने अपने सब चरित्र स्मरण भए ॥ ३४ ॥ सभामें बाल वृद्ध तरुण स्त्री पुरुष सब हुते। यदुवंशी, भोजवंशी अर पांडव यह सव कथारूप अमृतरसका पानकरि वसुदेवकी प्रशंसा करते भए माता शिवदेवी आदि सब ही रानी रुचिकरि वसुदेवकी कथा सुनि इनके सौभाग्यकी प्रशंसा करती भईं राजा तो अपने अपने स्थानकूं गए अर रानी अपने अपने स्थानकूं गईं बडे बडे विश्वासभाजन करैं हैं रक्षा जिनकी।

भावार्थ—राजलोककी रक्षा या भांति है बडी बडी समझदार स्त्री उनपर रहै हैं, अर बुद्धिवान खोजानिका प्रवेश है अर ड्योढीके दरोगा बडे इतबारी पुरुष हैं ॥ ३७ ॥ बसुदेवकी कथा पुरानी पडी हुती सो दिन दिन घर घरविषैं ऐसी प्रवर्ती मानूं नवीन कथा है। आश्चर्यमय वसुदेवकी कथा सवनिकूं अनुरागरूप होती भई ॥ ३८ ॥ बहुरि राजा श्रेणिक नमस्कारकरि गौतमस्वामीसूं पूछते भये हे प्रभो ! इन यादवनिके कुमारनिका कथन मोहि कहो द्वारकाविषैं कितने कुमार क्रीडा करते भये ॥ ३९ ॥ तब गौतम गणधर कहै हैं हे श्रेणिक ! तू सुनि राजा उग्रसैनके पुत्र घर अर गुणधर युक्तिक दुर्द्धर सागरचंद्र अर उग्रसैनका काका शांतनु ताके पुत्र महासेन, शित्री, अस्वस्त, विशद, अनंतमित्र ॥ ४१ ॥ अर महासेनका पुत्र सुखेणाहृदिक विषमित्र अर सिवीका पुत्र सत्यक अर हृदिकका पुत्र कृतिधर्मा द्रढधर्मा अर सत्यका पुत्र वज्रधर्म अर वज्रधर्मका पुत्र असंग ॥४२॥ अर समुद्रविजयके पुत्र महासत्य हृढनेमि अरिष्टनेमि रथनेमि सुनेमि जयसेन महीजय सुफल्गु तेजसैन मयमेघ सिवनंद चित्रक अर गौतमादिक ॥ ४५ ॥ अर समुद्रविजयतैं छोटा अक्षोभित ताका पुत्र उद्धदवच्छ क्षुभितवारिधि अम्भोधि जलधि कामदेव हृढव्रत ॥४६॥ अर तीजा भाई स्तिमितिसागर ताके पांच पुत्र उर्मिमान वसुमान वीर पाताल स्थिर ॥४७॥ अर चौथा भाई हिमवत ताके तीनपुत्र विद्युत्प्रभ माल्यवान गंधमादन। ये सबही सत्यवादी अर महा पराक्रमी ॥ ४८ ॥ अर पांचवां भाई विजय ताके छः पुत्र अकंपन बलियुगंत केसरी धीमान अलंबुष ॥ ४९ ॥ अर छठा भाई अचल ताके सात पुत्र महेंद्र मलय सय्यगिरि शैलनग अचल यह हैं नाम जिनके ॥ ५० ॥ अर सातवां भाई धारण ताके पांचपुत्र वासुकाय धनंजय कर्कोटिक शतमुख विश्वरूप ॥ ५१ ॥ अर आठवांभाई पूर्णचंद्र ताके चार पुत्र दुःक्रूर, दुर्दशी, दुर्द्धर, दुर्मुख,। यह चारों अति चतुर ॥५२॥ अर नवमा भाई अभिचंद्र ताके छः पुत्र चंद्रमा समान है उज्वल कीर्ति जिनकी तिनके नाम चंद्र, शशांक, चंद्राभ वा शशी, सोम, अमृत, प्रभ ॥ ५३ ॥ अर दशमां भाई वसुदेव ताके पुत्र बहुत अर सबही महा बलवान

तिनमें कैयकनिके नाम कहूं हूं सो हे श्रेणिक ! तू सुनि, रानी विजयसेना ताके पुत्र दो—अक्रूर अर क्रूर अर श्यामाके पुत्र दोय एक ज्वलन दूसरा अनिलवेग ॥ ५४ ॥ अर गंधर्वसेनाके पुत्र तीन, मानूं तीनलोक ही हैं। एक वायुवेग दूसरा अमितगति तीजा माहेंद्रगिरि अर पद्मावतीके पुत्र तीन—दारु वृधार्थ अर दारुक ॥ ५६ ॥ अर नीलंयशाके पुत्र दोय सो महाधीर, एक सिंह दूजा मतंगज। अर सोमश्रीके पुत्र दोय—एक नारद दूजा मरुदेव। अर मित्रश्रीके पुत्र सुमित्र कपिलात्मज अर दूजी पद्मावती ताके पुत्र दोय एक पद्म अर दूजा पद्मांक। अर अश्वसैनाका पुत्र एक—अश्वसैन अर प्रौढाका पुत्र पौंड्र अर रत्नावतीके पुत्र दोय एक रत्नगर्भ दूजा सुगर्भ ॥५९॥ अर सोमदत्तकी पुत्री ताके पुत्र दोय एक चंद्रकांत दूजा शशिप्रभ अर वेगवतीके पुत्र दोय एक वेगवान दूजा वायुतेज ॥ ६० ॥ अर मदनवेगके पुत्र तीन—दृढमुष्टि अनावृष्टि हिममुष्टि यह तीनों भाई कामदेव समान सुंदर ॥ ६१ ॥ अर बंधुमतीके पुत्र दोय बंधुषेण अर सिंहसेन अर प्रियंगुसुंदरीका पुत्र एक शीलायुध ॥ ६२ ॥ अर प्रभावतीके पुत्र दोय एक गांधार दूजा पिंगल अर जरानामा रानीके पुत्र दोय १ जरतकुमार दूजा वाहीक ॥ ६३ ॥ अर अवंतीनामा रानीके पुत्र तीन सुमुख दुर्मुख, महारथ अर रोहिणीनामा रानीके पुत्र तीन वलदेव सारण अर विदुरथ यह तीन पुत्र अर वालचंद्रा नामा रानीके पुत्र दोय एक वज्रदंष्ट्र दूजा अमितप्रभ अर देवकीका पुत्र कृष्ण इत्यादि वसुदेवके पुत्र कहे अर वलभद्रके पुत्र बहुत तिनमें कैयकनिके नाम उन्मुंड, निषध, प्रकृतिद्युति, चारुदत्त, ध्रुव पीठ, शक्रदमन, श्रीध्वज, नंदन, धीमान, दशरथ, देवनंद, निष्पात. विद्रुम, शंतनु ॥ ६७ ॥ पृथु सतधनु नरदेव महाधनु इत्यादि महावलवान वलदेवके पुत्र पृथिवीमें प्रसिद्ध होते भए ॥ ६८ ॥ अब कृष्णके पुत्रनिके नाम सुनिए—प्रथम भानु, सुभानु, भीम, महाभानु, सुभानुक, वृहद्रथ, अग्निशिख, विष्णुसंजय ॥ ६९ ॥ अकंपन, महासेन, धीर, गंभीर, उदधिगौतम, वसुधर्मा, प्रसेनजित ॥ ७० ॥ सूर्य, चंद्रवर्मा, चारुकृष्ण, विश्रुत, सुचार, देवदत्त, भरत, शंख ॥ ७१ ॥ प्रद्युम्न, संबु इत्यादि केशवके पुत्र शस्त्र शास्त्रविद्याके अभ्यासी युद्धविषैं प्रवीण

होते भए ॥ ७२ ॥ तिनके पुत्र पौत्र अर सब यादवनिके कुमार अर भानजे अर भूवाके पुत्र सब ही साढे तीन क्रोड गिनिवेमें आए ते सबही कुमार यशवंत महापराक्रमी अर कामदेव समान क्रीडा है प्रिय जिनकूं सो द्वारिकाविषैं नानाप्रकारकी क्रीडा करैं ॥ ७४ ॥ तिन कुमारनिकरि वह द्वारावती कैसी सोहै जैसी नागेंद्रकी पुरी नागकुमारनिकरि सोहै है, ये कुमार नानाप्रकारके भेष धरे सुंदर वस्त्राभूषण पहिरे सुगंधकरि मंडित प्रचंड हैं चरित्र जिनके सो हाथीनिपर चढे तुरंगनि चढे रथनि चढे अर नानाप्रकारके नर बाहन तिनपर चढे महा योधा प्रजाकूं प्रमोद उपजावनहारे नगरीमें प्रवेश करैं अर निकसैं तिनकरि वह पुरी देवपुरी समान सोहती भई ॥७५॥ बाहुल्यताकरि वह यादवनिके पुत्र स्वर्गलोकके चये वीतरागके मार्गके आचरणहारे उदार है पुन्यका उदय जिनके अर गावने योग्य है यश जिनके तिनका यह चरित्र या ग्रंथविषैं गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कह्या तिन उत्तम कुमारनिका चरित्र जे मनुष्य बुद्धिमान एकाग्रचित्तकरि सुनैं अर श्रद्धा करैं ते इह लोक परलोकविषैं सुखके भाजन होंय अर उनकी कुमारवय अर यौवनवय धर्ममें व्यतीत होय विषयवासना न उपजै ॥ ७६ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यदुकुलकुमारोदेशवर्णनोनाम अष्टचत्वारिंशःसर्गः ॥ ४८ ॥

अथानंतर—मधुसूदन कहिये कृष्ण तिनकी बहन यशोदाकी पुत्री जो इनकी एवज यशोदाके घरतैं ल्याये हुते अर देवकीके वृद्धि भई सो अब यौवन अवस्थाकूं प्राप्त भई ताका नख शिख वर्णन करैं हैं वह महाश्रेष्ठ चंद्रमा समान निर्मल यशकी धरणहारी विस्तर्या है नवयौवनका प्रचुर भार जाके ताहि धरे महा मनोहर गुणरूप आभूषणकरि शोभित ॥ १ ॥ कोमल हैं चरणकमल जाके बिनाही महावर आरक्त हैं पगथली जाकी अर समान है उन्नत भाग जाका अर नखरूप मणीनिके मंडल चंद्रमासमान प्रकाशरूप तिनिकरि सुंदर है अंगुलीरूप पल्लव जाके, जाके चरणनिकी उपमाकूं जगतमें वस्तु नाहीं अर लोक कमलनिकी उपमा चरणनिकूं

देहिं सो कमल कहा तातैं कमल लज्जाकरि मुद्रित होय हैं ॥२॥ अर जाके गूढ टकूणे अर मनोहर जानूं अर अत्यंत वर्तुलाकार रोमरहित अनुपम जंघा नितंबका भार सहिवेकूं असमर्थ जिनकी उपमा देवेकूं कोई वस्तु नाहीं ॥ ३ ॥ जाकी दोऊ जंघा अति कोमल वर्तुलाकार उज्वलकांति अर दीप्तिकूं धरे, शोभाकरि पूर्ण हाथीकी सूंड समान आकारकूं धरे लाठी समान गोल कदली समान कोमल लोक कहै हैं, सर्व उपमाकूं उलंघकरिके सोहती भई ॥४॥ बहुरि रसकरि सोहती पूर्ण वर्णरूप कुलाचलतैं उपजी आनंदकी उपजावनहारी पुण्य प्रकृतिरूप नदी ताके पुल-समान जघनस्थली जाकी अर तट समान नितंब जाके महा राजकुमाररूप जो राजहंस तिनकी है क्रीडा जहां ऐसी वह ॥ ५ ॥ सुंदर स्त्रीनिके मध्य अति सोहती भई तनुरूप वृक्ष ताके मध्य सूक्ष्म कोमल रोमनिकी पंक्ति सोई भई लता ताकरि वह अति सुंदर भासती भई मनोहर है छवि जाकी अर मनुष्यनिके नेत्रनिकूं सुंदर ऐसी निज नाभिकी गंभीरता ताकरि वह अति सोहती भई अर त्रिवलीकी. सुंदरताकरि वह सुंदर स्त्रीनिके मध्य विशेष सोहती भई अर उरविषैं दैदीप्यमान सोलावानीके सुवर्णके कलश समान जे कुच तिनकूं धारती सोहती भई, कैसे हैं कुच स्याम है बीटली जिनकी अर अति कठिन हैं गोल हैं पुष्ट हैं, कुंभ तो जलकरि पूर्ण अर कुच पय ताकरि पूर्ण वे अमृतरस जो जल ताकरि पूर्ण झरैं अर ये अमृतरस कहिये पय ताकरि झरैं अर कनकके कलस जलके भरे राजानिके पीवनेयोग्य तिनकरि मुहर होय है अर इनपर स्याम बीटली है सोई मुहर है ॥ ७ ॥ अर जाकी दोऊ भुजलता सिरसके पुष्पसमान मृदु अर मनोज्ञ है कांधे जाके अर करकमलकी प्रभाकूं धरे अति रमणीक पाटलके पल्लवसमान अरुण हथेली जाकी अर कंडीरके पुष्पसमान आरक्त है नखरूप पुष्प जाके ॥ ८ ॥ अर कठोरता रहित अति कोमल शंखसमान कंठ जाका अर अति सुंदर ठोडी अर किंदूरीके फलसमान अरुण हैं अधर जाके अर हंसतेमुख प्रसन्न है वदन जाका अर दैदीप्यमान कपोल कांतिकूं धरे अति निर्मल सोहते भए अर वक्र हैं भौंहैं जाकी अर मनोहर है ललाट जाका अर कमलदल समान विस्तीर्ण कर्णपर्यंत कटाक्षकूं धरै

उज्ज्वलता अर स्यामता अर अरुणताकूं धरै विशाल नेत्र महा तीक्ष्ण तिनकरि वह कन्या अति सोहती भई ॥ ९ ॥ जाके मुखकी उपमा न तो चन्द्रमाकूं न कमलकूं अर अति सुन्दर उज्वल महा सघन दाडिमके कण समान सब समान मनोहर है दांत जाके अर सिरविषैं भ्रमरकी स्यामताकूं उलंघै ऐसे स्याम दैदीप्यमान सुगंध सचिकण लंबायमान वक्र अद्भुत हैं केश जाके अर हाथनिमें पायनिमें है मुद्रिका जाके अर कंकण नूपुर आदि चतुरदश आभरण तिनकूं शोभित करै ऐसा है सुंदर तनु जाका दैदीप्यमान अंग जाका उद्योत अर कोमल वस्त्र अर महा सुंदर पुष्पमाला पहिरे कनकहूतैं अति सुंदर शरीर जाका सो सब यादवकुलके बाल वृद्ध तिनके चित्तकूं बालक्रीडा करि हरै सब ही याकूं लडावैं सब यादवनिकरि पाई है प्रतिष्ठा जानै सकल कला सकल गुणनिके समूह यामें बसते भए यह साक्षात् सरस्वतीसमान सोहती भई ॥ ११ ॥ या भांति या कन्याका सुखसे काल व्यतीत होय एक दिन यह दर्पणविषैं अपना मुखकमल देखती हुती सो चिपटी नासिका देखि लज्जावान होय संसारके भोगनितैं विरक्त भई ॥१२॥ एकदिन सुव्रतानामा आर्या नगरके बनविषैं आई जाके साथ आर्यिकानिका समूह सो यह कन्या वसुदेव अर देवकी आदि गुरुजननिकूं पूछकरि आर्यिकानिके दर्शनकूं गई सो नमस्कारकरि अपने पूर्वभव सुव्रतानामा आर्याकूं पूछती भई आर्यिका अवधिज्ञानकरि संयुक्त है सो याहि याके पूर्वभव कहें हे पुत्री! तू पूर्वभव विषैं सोरठनामा देशविषैं मूढबुद्धि पुरुष हुती जा देशविषैं काहूका भय नाहीं अर तू पुरुषके शरीरविषैं अति रूपवान अर धनकरि पूर्ण जाहि काहूका अंकुश न हुता मदका भर्या अंध था जाके हृदयका ज्ञान नेत्रनिका ज्ञान महा उन्मत्त हुता सो वह ही अंध एक दिन गाडा भरे जाय था अर मार्गविषैं वनमें कोई एक महा मुनि मृत्तिकासन धरे हुते सो या मूर्खने कुछ न देखा सो मुनिके समीप होय गाडा काढ्या सो गाडाकी रगडकरि मुनिकी नासिका मसली गई परंतु वे मुनि महाधीर सो धीरताके योगकरि उनके मनविषैं कुछ भी खेद न भया ॥ १५ ॥ जो कदाचित् किसी जीवका विना जाने भी घात होय तो जीवघातके पापतैं नर्कविषैं निपात होय अर मुनिके घातका

कहा कहना या जीवके उपार्जे कर्म याकूं दुःखरूप फलै हैं जो एक वारहू काहू एक जीवका घात करै तो याका घात परवश अनेक बार होय अर जो एक बार हू काहूके अवयव भंग करै तो अनेक वार याके अवयव भंग होंय यह जिनेश्वरकी आज्ञा है जैसा करै तैसा भोगै जो वचनकरि मनकरि कायकरि परजीवकूं पीडा करै सो भव भवमें पीडा पावै अर जो प्रभुताके मदकरि किसीप्रकार परजीवका अपमान करै अर कठोर वचन कहै ताका भव भवविषैं अपमान होय जो परजीवनिकूं दुःख देवेविषैं चतुर होय सो चतुर्गतिविषैं दुःखही भोगें ऐसा जनि जो विवेकी जीव हैं तिनकूं परवाधाकी निवृतिही करनी जो राज्य पावैं अर ऐश्वर्यता पावैं तौ हू काहूका पराभव न करना आपकूं अर परकूं हित होय सोही करना या संसार भ्रमणविषैं भ्रमते जे प्राणी तिनके सदा प्रवलताही नाहीं रहै है कबहुंक प्रबलसे निर्बल होय जाय हैं। अर कबहुंक निर्बलसे प्रबल होहि जाय हैं जो दुष्ट प्रबल होय निर्बलकूं पीडा करैं हैं जीवनिकूं दुःख दे हैं सो भव भवविषैं दुखी होय हैं ॥ १९ ॥ तातैं काहू हू प्राणीकूं दुःख न देना अर जो दुष्ट मुनिकूं उपद्रव करैं ताके पापका कहा पूछना वह महा पापी अनंतकाल कुगतिविषैं भ्रमण करैं हैं ते विना जाना प्रमादकरि गाडा चलाया फिर अति पश्चात्ताप किया अर मुनीसूं क्षमा कराई अर पापका प्रायश्चित्त किया तातैं नर्क न गया अर मनुष्यगति पाई परंतु पापके उदयकरि स्त्री जन्म पाया अर नासिका मसली गई. यह आर्याके वचन सुनि वह कन्या नमस्कारकरि वाही आर्याके समीप व्रत धारती भई। समस्त कुटुंबसूं मोह तजि घरका त्याग किया समस्त वस्त्र तजि एक श्वेत साडी राखी अर सिरके केशनिका लौंच किया आभूषण सब तजे अर अपने करकी आंगुलीनिकरि केश उखाडे सो मानूं सब पापही उखाडे पापहू श्याम केशहू श्याम सो यह आर्या परिग्रह तजती अर लौंच करती ऐसी सोही मानूं अशुभकी नाशक ही है। वह आर्या सफेद वस्त्र धरे ऐसी सोहती भई मानूं शरदकी नदीही है नदी तो कूल कहिये तट तिनकरि वेष्टित है अर यह दुकूल कहिये वस्त्र तिनकरि वेष्टित है अर नदी तो निर्मल जलकी भरी है अर यह निर्मल भावनिकी भरी

है ॥ २३ ॥ समस्त यादवनि करी है तपकी महिमा जाकी अर याके वयविषैं तपके भाव देखि सबही उत्तम जीवनिके यह भाव भये। जो नवयौवनविषैं तप धरै हैं सो धन्य हैं अर याहि देखि सब लोक ऐसी जानते भये जो यह रति है या धृति है या सरस्वती है ॥ २४ ॥ व्रत गुण संयम उपवासादि तपकरि वह दिन प्रति वढती भई अर बारह भावना कर भाया है भाव जानैं सो महा तपकी करणहारी आर्यकानिके संगमें गुणसंयुक्त वसै आगमविषैं लगाई है अपनी बुद्धि जानैं सकल आर्यकानिविषै है प्रशंसा जाकी ॥ २५ ॥ या भांति वहुत वर्ष तप करते व्यतीत भये। एक समय आर्यानि सहित यह विंध्याचल पर्वतके वनविषैं गई ॥ २६ ॥ अर अन्यहू संघ यात्राकूं जाय था सो रात्रिविषैं तीक्ष्ण हैं शस्त्र जिनके अर कठोर है चित्त जिनका ऐसे वनचर कहिये भील तिनि याकूं देखी यह प्रतिमा योगधरि बनविषैं तिष्ठती हुती सो भीलनि जानी यह कोई वनदेवी है। सो तापै वरदान मागते भये वे मूर्ख ऐसी प्रार्थना करते भये हे भगवती! हम तेरे प्रसादसे आजकी दौडमें धन पावैं तो तेरी सेवा करैं हम तेरे किंकर हैं। ऐसा मनोरथकरि वे पापी काहू पर दौडे सो मार्गविषैं माल लूट लिया। भीलनिके हाथ द्रव्य बहुत आया सो उन मूढनि जानी हमकूं देवीका वर भया। फिर बनमें आये सो प्रतिमा योग धरैं तिष्ठती हुती सो भीलनि देखी सो वह समाधि योगधरि तिष्टती हुती। बहुरि बनविषैं एक सिंह आया तानैं वह आर्या भखी सो समाधिमरणकरि स्वर्गलोककूं गई ॥ २९ ॥ जे सज्जन पुरुष हैं ते दुष्टके उपद्रवतैं साहस न तजैं वा सिंहके विकरार नख अर तीक्ष्ण डाढ अर विकट मुख तिनकी अणीकरि विदारा गया है शरीर जाका सो और अंग तो सिंह भख गया अर तीन आंगुली बची यह धर्मके प्रसादकरि स्वर्गलोक गई ॥ ३० ॥ अर सिंहके भखिवेकरि याके शरीरका रुधिर गिरया ताकरि पृथिवीतल आरक्त होय रहा था सो भीलनि जानी यह वरदाता देवता रुधिर प्रिय है अर याकी रुधिरसूं रुचि है ऐसा विचारि वे दुराचारी याकी तीन आंगुलीका त्रिशूल थापि याहि विंध्याचलवासिनी देवी जानि बनके महिष मारि वा स्थलकी पूजा करते भए। वह पापी किरात महाहिंसक रुधिर मांस

करि बलि देतेभए वह स्थानक इन दुष्टनि मलिनवस्तुकरि अपवित्र किया दुर्गंध किया जहां माखी भिणभिणाट करै नेत्रनिकूं विषसमान वह स्थानक किरातनि किया अर चहुंओर दुर्गंध महाअपवित्र दीखै वह तो महादयावान धर्मकी आराधन हारी तपकरि स्वर्ग गई सब अपराधरहित जामैं कुछ दोष नाहीं अर दुष्ट भीलनिने खोटा मार्ग प्रगट किया सो यह भीलनिका मार्ग जे नर्कके जानहारे मांस आहारी हैं तिन अंगीकार किया अर भैंसा आदि पशु तिनकूं हणे हैं रुधिर पान करै हैं वह बधिक खोटी गतिके जानहारे हैं जिनके हाथमैं त्रिशूल महा रुद्र-ध्यानी अभक्षके भक्षणहारे अयोग्य पान करणहारे वे ही कुगति न जांय तो अर कौन जांय। जे अनर्थी अवस्तु जो देवी ताहि देवत्व मानकरि हिंसा करै हैं भीतिमात्रविषैं त्रिशूलका आकार बनाय जो पशुकरि घात करै हैं वे नर्क निगोदमें पडे हैं जे सावंत परस्पर संग्रामकरि मरण मारण करै हैं तेहू शास्त्रके अनुसार शांतभाव-रूप नाहीं कषायरूप हैं तो दुर्बलके मारवेकी कहा वात जे पापी वृथा दीन जीवनकूं मारै हैं ते करुणारहित पारधी महा घोर नर्कमें पडैं हिंसासमान अर अपराध नाहीं अर दयासमान कोई धर्म नाहीं काहूका छता हू अपराध एकांतविषैं अथवा सभाविषैं कोई कहै सो पापका बंध करै अर जो काहूका अनहोता दोष प्रगट करै सो तो नर्कगमनका कारण है ही यामैं संदेह कहा। झूठहीकूं मूर्ख लोक सत्यकरि मानै हैं जो विकथाका कथन करैं मांसका भक्षण करैं महिषादिकनिका रुधिरपान करैं जिनके हाथमें त्रिशूल ते प्रत्यक्ष पापी हैं तिनमैं विवेक काहेका अर मद्य मांस रुधिरका आहार करैं या सामान विपरीत कहा यह भी मूर्खनिमैं ज्ञान नाहीं। जैसैं एक गाडरी कूपमैं पडे तो ताकी देखादेखी अनेक गाडरी कूपमैं पडैं तैसैं कोई मूढ कुदेवनका सेवनहारा अवस्तु रूप जे कुदेव तिनकी सेवा करैं तिनकी देखा देखी अनेक मूढजन कुदेवनकी आराधना करैं सो या समान विप-रीत कहा वीतरागदेवका मार्ग परजीवकी दयाविषैं तत्पर जो आराध्या थका जीवनकूं अविनश्वर पद देय। अर कहां परजीविकी घातका निरूपणहारा अधर्म साक्षात् नर्क निगोदका कारण दुष्ट कुकवीनिका प्ररूप्या सो या कलि

कालविषैं दुराचारी जीवनिने धर्मकरि मान्या है ॥ ३७॥ देखो या कलिकालके चरित्र प्रथम तो इस समय न्यायवान धर्मात्मा राजा ही नाहीं अर कदाचित कोऊ बडा राजा कबहूं प्रजाके भाग्यकरि न्यायवान होय दुष्टलोकनतैं प्रजाकी रक्षा करै सोऊ कुकवीनिका प्रेरा मिथ्या शास्त्रके योगतैं महिष अर मींडा आदि पशुजीवनिका घात कुदेवनके आराधननिमित्त करै क्षत्रीनिहूके कुलमें दीन जीवनिका निपात करै तो भीलादिक नीच कुलकी कहा कथा क्षत्रीनिका कुल तो दीनबंधु दीनानाथ है। अर देखहु मूढ लोकनिकी मूढता जो काहू प्रकार कबहुक पूर्वोपार्जित कर्मके योगतैं कार्यकी सिद्धि होय तो मूढजन ऐसे मानै जो देवताके वरतैं यह कार्य सिद्ध भया तातैं मैं उनका आराधन करूं यह विचारि आयुधनिकरि जीवनिकूं मारि उनका रुधिर देवतानिकूं बलि दे हैं सो भव भवविषै दुःख भोगवे हैं पापी जीवनिके करुणा कहां अर करुणा विना सुगति कहां जो पापी रुधिरही देवो तो अपने अंगका क्यों न देहु अर अपना शिर छेदि बलि क्यों न देहु अर देवता तो मनसा आहारी हैं मनके प्रदेशनि विषै अमृत स्रवे है ताका पान करि सागरां पर्यंत तृप्त होय हैं, मांस आहारी नाहीं देवनिके मनहीमें क्षुधा उपजै है अर मन तैंही विलाय जाय है ॥ ३९ ॥ जे निर्दई देवनिका छलकरि पशूनिका घात करै हैं ते पारधी समान हैं अर या जगतविषैं जो देवताही वरदाता होय तो पूज्या थका प्रणम्या थका प्रसन्न किया थका काहूकूं राज्य देय धन संतानादि देय तो सबही धनवान अर राजा हो जांय कोई निर्धन अर रंक न रहे सो जीवनिका भला अर बुरा होना तो कर्माधीन है अर काहूके आधीन नांहीं, वह कुदेव धनवन्तनिपै दीप तेल वालि पुष्प इत्यादि वस्तुवनिकी याचना करै हैं ते तोहि धन संपदा कहांसे देहिंगे वही दीन पराई आस करैं तो औरनिकी आस कैसे पूर्ण करैं देवता मोहि वर देगें यह अभिलाषा करना जगतविषैं बडी भूल है ॥ ४१ ॥ या संसारविषैं एक जिनप्रतिमा टारि अर प्रतिमा पूज्य नाहीं जो भव्यजीव द्रव्यकरि भावकरि परिणामनकी शुद्धतातैं जिनप्रतिमाकी पूजा करैं सो मनवांछित स्वर्ग मोक्ष फल पावैं यह जिन प्रतिमा कल्पबेलसमान मनवांछित फलकूं फलै है ॥ ४२ ॥ हिंसा करना

अर करावना अर हिंसाकी अनुमोदना करनी यह तीन अशुभ इनकरि पापका आस्रव होय है ताकरि दुर्गतिका बंध होय है अर हिंसा कुगतिका कारण है अर सर्व पापनिका मूल है अर वीतरागका भाख्या जीव दयारूप धर्म जो किया थका अर कराया थका अर करतेकूं भला जाना थका कल्याणकारी है ताकरि शुभका आस्रव होय है सो सुगतिका कारण है ॥४३॥ जो मन शुभ होय अर वचन सत्य होय अर काय कुचेष्टासे रहित होय सोही पुन्य कहिए अर मन अशुभ अर असत्य वचन अर कुचेष्टारूप काया यह ही अशुभ इनकरि महा पापका बंध होय है सो पाप ही दुर्गतिका कारण है ॥४४॥ अज्ञानरूप तिमिर अति सघन अतिदृढ सकल लोकविषै विस्तरचा है जो पवित्र बुद्धिरूप नेत्रनिकूं मुद्रित करै है जाकी कोई औषधी नहीं इसलिए जो प्राणी तत्वकूं देखा चाहैं सो अज्ञान-तिमिरकूं दूर करैं अर जो अतत्वविषै निरंतर व्याकुल बुद्धि है सो तत्वकूं कैसे विलोकि सकै ॥ ४५ ॥ जे अग्नि अर वायुकूं जलकूं भूमिकूं लताकूं वृक्षकूं देव मानै हैं सो भ्रमबुद्धि हैं तिनमें धर्म नाहीं अर अपने घरमें मृत्तिकादि करि देव कल्पैं हैं ते बुद्धिसे विमुख हैं अर चंद्रमा अर सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र यह गगनमें विचरै हैं अर नेत्रनिकरि दीखैं हैं तिनको जे देव मानै हैं ते तो सब मूढदृष्टि हैं देव तो परब्रह्म परमात्मा सिद्ध भगवान ही हैं अथवा निज आत्माही देव है अर कोई देव नाहीं वस्तुका स्वरूप सदा अस्तिरूप है नास्तिरूप है नित्य है अनित्य सामान्य है विशेष है निज परको अनेकांतरूप मानना सोही कार्यकी सिद्धि है द्रव्यमें अर गुणमें नाममात्र भेद है अर वस्तु अभेद है यह स्याद्वाद ज्ञानका मूल है अर जे मिथ्यादृष्टि दृढ मूढता करि एक ही नयका पक्षपात करैं हैं तिनकूं ज्ञानकी प्राप्ति नाहीं सो दीर्घसंसारी जानने ॥ ४७ ॥ यही नय परस्पर विवादकूं लिए मिथ्या हैं अर एही परस्पर विरोध रहित सत्य हैं जो दो नयका धारक सोई ज्ञानी अर एक नयका पक्षी सो अज्ञानी है । नैगम संग्रह व्यवहार यह सब नय प्रमाणका अंश है एक एक अंगका कथन सो नय अर सर्वांग कथन सो प्रमाण अर प्रमाणकरि निश्चयरूप जो वस्तु ता विषैं सब नय सधैं हैं ॥ ४८ ॥ मुनिपति जे भगवान तिनका जो मार्ग ताविषैं श्रद्धावन जे मोक्षाभि-

लाषी जीव पुरुषनके किए नवीन मार्ग तिनसे विमुख हैं तेई निर्वाणकूं पावैं हैं सिद्धनका जो अखंड अविनाशी सुख ताका है लाभ जहां वह परमधाम महा मनोहर है समस्त पदार्थ जहां भासै हैं उदार हैं चरित्र जिनके तिनिकूं वह धाम सुलभ है औरनिकूं नाहीं ॥ ४९ ॥ जे भव्यजीव सम्यक्तकी शुद्धताकरि युक्त हैं ते नाना प्रकार निरमल तपकूं अंगीकार करो सो तप, व्रत, गुण अर शील तिनकी राशि हैं। अर वे भव्यजीव जिनेंद्रके गुणोंके ग्रहणकूं अति अनुरागी हैं॥ ५० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ धर्मोत्पत्तिवर्णनोनाम एकोनपंचाशत् सर्गः ॥ ४९ ॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक यादवनिकी वृद्धि सुनकर गौतम स्वामीकूं नमस्कारकरि पूछता भया। कैसे हैं गौतम वृद्धिकूं प्राप्त भया है श्रुतज्ञानरूप नेत्र जिनके ॥ १ ॥ राजा श्रेणिक पूछै है हे प्रभो ! जैसे समुद्रविषैं मणिनिकी राशि होय सो मणीनिकी राशि क्रांतिकर संयुक्त होय तैसे यदुवंशीरूप समुद्रविषैं अनेक पुरुषरत्न-समान गुणरूप किरणनिके धारक होते भये ते सकल लोकविषैं प्रसिद्ध महा योधा भये अर कृष्ण वासुदेव अनेक युद्धविषैं प्रगट है पराक्रम जिनका सो पृथिवीविषैं अति प्रसिद्ध भये सो इनकी प्रसिद्धताविषै जरासिंधके कहा विचार भया ॥ ३ ॥ तब गणधर कहते भये हे श्रेणिक ! यह बलदेव अर वासुदेव दोऊ भाई मनुष्यनिमें मुख्य सो इनके पराक्रम जरासिंधके श्रवणमें आये तब जरासिंध अपने मुख्य मंत्री हैं तिनसे मंत्र करता भया अहो मंत्री हो ! तुम यह शत्रु अबतक क्यों ढीले छोडे यह शत्रु समुद्रविषैं क्षणभंगुर तरंगकी न्यांई वृद्धिकूं प्राप्त भये सो तुम मोहि क्यों न कही यह कारण कहो, मंत्री हैं सो राजाके नेत्र हैं सब ओरकी खबर मंत्री हलकारनिकरि मगाय करि राजासे कहैं अर मंत्री ही न कहैं तो और कौन कहे मंत्री जो हैं राज्यके रक्षकहैं ॥ ७ ॥ मैं तो ऐश्वर्यके मदकरि असावधान रहा मैं जानूं तो एते दिन शत्रु द्वारकामें कैसे रहैं तुम जानते हुये यह बात

प्रगट क्यों न करी अर जो तुम भी न जानी तो यह मंत्रीपद कैसा मैं तो तिहारे भरोसे, सेवकका यह धर्म नाहीं जो स्वामीकूं शत्रु मित्रनिकी बात न कहै जो महा उद्यमकरि राजा शत्रुनका उपाय न करै तो परिपाकविषैं अति ५०
दुखदाई होय जैसे रोग उपजा अर तत्काल यत्न न करै तो रोग वढा थका दुखकूं उपजावै प्रथम तो यादवनिने मेरा जवांई कंस मारचा बहुरि मेरा भाई अपराजितकूं मारचा ऐसे अपराधकरि समुद्रके शरण गये मेरे समुद्रके जीतवेके अनेक उपाय हैं जो मैं समुद्रमें प्रवेश न करूं अर देव विद्याधरनिकूं आज्ञा न करूं तो भी जाल डाल मच्छीकी तरह पकड लूं जेते मैं उपाय न करूं तबतक मेरा शत्रु चाहे जहां रहे अर जो मैं क्रोध करूं तो समुद्रमें कैसे रह सकै जौलग मेरे क्रोधरूप अग्नि प्रज्वलित न होय तौलग द्वारकामें निर्भय रहैं अर मैं उपाय कर मारचा चाहूं तब कैसे निर्भय रहैं एते दिन मैं न जाना तातैं कुटुम्ब सहित सुखसे रहैं अब मैं जानी तब कैसे मेरे वैरी निश्चिन्त रहैं यातैं अब तुम शम कहिये शान्तता अर दान कहिये देना यह दोऊ उपाय तो सर्वथा तजो अर भेद कहिये फोडा तोडी अर दंड कहिये मारना ये दोय उपाय निश्चय करो ये अपराधी साम अर दाम योग्य नाहीं भेद अर दंड योग्य ही हैं यह बचन स्वामीके सुनकरि मंत्री नमस्कारकरि धनी शांतता उपजाय हाथ जोड विज्ञप्ती करते भये। कैसा है स्वामी यादवके दंडके उपायका है उद्यम जाके मंत्री महीपतिसूं कहैं हैं हे नाथ ! हम शत्रूनिकी सुध न राखें ऐसे शठ तो नाहीं परंतु जानहीकरि आपसूं मालूम नाहीं किया यादवनके वंशमें तीन पुरुष ऐसे जन्मे हैं जिनकी देव सेवा करै हैं उनकूं जीतवे समर्थ देव अर मनुष्य कोई नाहीं प्रथम तो बाईसवें तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ राजा समुद्रविजय रानी शिवदेवीके गर्भविषैं उपजे हैं तिनकी तीन लोक सेवा करैं फिर वसुदेवके रोहिणी नामा रानीके उदरविषैं नवमें बलभद्र उपजे हैं जिनका नाम पद्म है अर अर वसुदेवहीके दूजी रानी देवकी सो ताके गर्भविषै नवमें नारायण कृष्ण उपजे हैं यह तीन पुरुष महा दुर्जय हैं जब श्रीनेमिनाथ गर्भविषैं आए तब छः महीने पहिलेसे समुद्रविजयके घर रत्नवृष्टि भई सो पंद्रह मास रत्न वर्षे अर उनका जन्म भया तब इन्द्रादिक

सुमेरुविषैं ले जाय अर जन्माभिषेक करते भये सो भगवान तीन लोकके नाथ जिनकी सब लोग सेवा करैं जिनके माता पिताकूं कोई कैसे जीते जो समस्त पृथिवीके राजा एकत्र होंय तो भी उनका कहा कर सकें अर बलभद्र नारायणकी सामर्थ कहा आपके श्रवणमें न आई जो शिशुपाल सरीखे योधा अनेक रणविषै जीते ॥ २० ॥ अर जिनकी पक्ष पांडवनसे प्रचण्ड योधा और विद्याधर हू उनमें हैं उनका पिता वे अर उनके पुत्र विद्याधरनके परने हैं अर साढ़े तीन क्रोड कुमार महायोधा रणधीर एक राजा सूरके वंशके हैं अर आप यह न जाने जो मेरे भयसे समुद्रमें छिप कर रहे हैं वह सब ही बहुत बुद्धिमान न्यायमार्गी हैं ॥ २३ ॥ दैवबल, समयबल, बुद्धिबल, सब उनमें है अर देव उनके सहाई हैं सो हम जानी सोते नाहरकूं न जगावैं ज्यों है त्यों ही रहो ॥ २४ ॥ ऐसा जान हम देश काल विचार धीरे रहे अपना अर पराया बल विचारना समय विचारना यह ही प्रशंसा योग्य है ॥ २५ ॥ यह विचार हम चुप होय रहे सेवक वही जो स्वामीके हितकी कहे अब आप भली जानो सो करो इत्यादि सत्य बचन पथ्यरूप मंत्रिन जरासिंधसूं कहे परंतु जरासिंधके मनमें न आई जब क्षय काल आवै तब हठग्राही हठ न छोडें ॥ २७ ॥ मंत्रीनिके बचन उलंघि जरासिंध यादवनके निकट द्वारकाकी ओर पतिसेन नामा दूत भेजा ॥२८॥ पूर्व पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सब देश राजनपै दूत भेजे अर पत्रमें लिखी जो चतुरंग सेना सहित शीघ्र ही तुम यहां आइओ ढील मत करियो ॥ ३० ॥ सो दूतके देखवे मात्र ही राजा करण अर दुर्योधनादि सब ही राजा जरासिंधके पक्षी सत्यवादी जरासिंधके हितकी है अभिलाषा जिनके ते सब ही जरासिंधपै आये जब महा बलवान सब राजा आये, तब उन सहित जरासिंध प्रयाणकरि शत्रुके जीतवेकी है इच्छा जाके सो राजगृही नगरीतैं कूंचकरि आधा आया अर प्रतिसेन नामा दूत द्वारका गया जैसे पुण्यवान स्वर्गपुरी जाय ॥ ३३ ॥ सो दूत अनेक आश्चर्यकरि भरी जो द्वारावतीपुरी ताविषैं प्रवेशिकरि राज्य द्वार आया अर समस्त यादवनि करि भरी जो सभा ताविषैं अंधकवृष्टि अर भोजकवृष्टिके वंशके सब अर पांडव सब ही बैठे हुते सो

द्वारपाल जाय विनती करी तब याहि सभामें बुलाया ॥ ३५ ॥ सो जाय प्रणामकरि आज्ञातें सन्मुख बैठा अर प्रतिहरिकी आज्ञा प्रमाण राजा समुद्रविजयसे स्वामीके बलके गर्भ करि कहता भया जो पृथिवीपतिने आज्ञा करी है सो चित्त लगायकरि सुनहु सकल यादवनिसहित चक्रेश्वरकी आज्ञा उरमें धारहु ॥३७॥ ऐसी आज्ञा करी है मैं तिहारा कहा अनिष्ट किया जो तुम भय मान समुद्रमें बसे हो ॥ ३८ ॥ जो अपराध उपजा है तो तुम हीसे उपजा है आपहीसे भय मान आश्रय पकडा है सो मोसे भय मत मानो तुम आयकरि मुझे नवो अर मेरी सेवा करहु ॥ ३९ ॥ अर कदाचित समुद्रके बलसे जो न आवोगे अर न नवोगे तो मैं ऐसा हूं समुद्रकूं पानकरि जाऊंगा अर तुमकूं पीडा करूंगा ॥ ४० ॥ जब तक मैंने तुमको न जाना हुता तब तक देश काल विचार आश्रय पकरि रहे अब मैं तुमको जान पाये तब कैसे रह सकोगे ॥ ४१ ॥ यह दूतके बचन सुनि समस्त ही राजा कोपरूप भये अर बलदेव वासुदेव भोहें टेढी करि बोले वाकी मृत्यु निकट आई है सो ऐसे गर्भके बचन कहै है सो अब समस्त सेना सहित हम पर आवहु हमहू संग्रामके अभिलाषी हैं तिहारी भलीभांति पाहुणगति करेंगे ऐसे बचन कहकरि दूतकूं बिदा किया सो कुवचनरूप वज्रका मारया स्वामीके पास जायकरि सब वार्ता कहता भया अर उनका सब रहस्य जताया जो वे महा मदोन्मत्त हैं अर युद्ध करवेकूं सन्मुख हैं ॥ ४४ ॥

अथानंतर—समुद्रविजयके बडे मंत्री विमल अमल अर शार्दूल ये तीनों मंत्रविषैं निपुण सो मंत्रकरि राजा समुद्रविजयकूं कहते भए हे नाथ ! साम, दाम दंड, भेद यह चार उपाय हैं तिनमें साम कहिए मृदुता सो अपनी अर पराई दोनों ओरकी शांतताके अर्थि हैं तातैं ये मगधदेशका राजा जरासिंध उससे सलाह करिए अर संग्राम न करिए तो बहुत भला है ॥ ४६ ॥ युद्धविषैं बहुतोंका नाश है कुशलका संदेह है अपने कुल ही कुलके सब कुमारनका समूह है सो एक हू डील युद्धविषैं नाशकूं पावै तो सहारा न जाय अर ज्यों अपने अमोघ बाणके बर्षावनहारे हैं त्यूं जरासिंधहूकी सेनामें बहुत हैं, कर्ण दुर्योधन द्रोण भीष्म आदि बडे २ योधा हैं

॥ ४९ ॥ इसलिए समस्त जीवनिके कल्याण निमित्त साम ही योग्य है जरासिंधके निकट दूत भेजो ॥ ५० ॥ यामें दोष नाहीं अर अपनी मृदुताकरि जो वह शांतता न होय तो जैसा उचित होयगा तैसा करेंगे यामें दोष नाहीं ॥ ५१ ॥ यह मंत्रकरि इन मंत्रीनिने राजासूं कही तव राजा कही कहा दोष है तव एक लोहजंघ नामा कुमार महा चतुर शूरवीर नीतिवान जरासिंधके निकट अपनी सेनातैं वहुत सन्मानकरि भेजा सो वह आज्ञा प्रमाण गया ॥५३॥ अर इन पहली जरासिंध कूचकरि मालव देशविषै देवावतार नामा तीर्थ है तहां आय डेरे करे हुते ॥ ५३ ॥ सो वह तीर्थ कैसे प्रसिद्ध भया दोय मुनि मासोपवासी एकका नाम तिलकानंद अर दूसरेका नाम नंदक सो उनके प्रतिज्ञा हुती जो वनहीमें भिक्षा पावें तो लेवें सो वनविषैं बडा संघ श्रावकोंका आय उतरा था। तहां मुनीनिकूं पारण भया सो मुनि ऋद्धिधारी तिनके प्रसादसे पंचाश्चर्य भए रत्नवृष्टि पुष्पवृष्टि सुगंधजलकी वृष्टि शीतल मंद सुगंध पवन अर जय जयकार शब्द ॥ ५५ ॥ यह पंचाश्चर्य कहिए या अतिशयतैं वह देवावतार नामा तीर्थ पृथिवीविषैं प्रसिद्ध भया अनेक जीवनके पाप हरणहारा तहां जरासिंधके कटकविषैं यादवनिका लोहजंघ नामा दूत गया ॥ ५६ ॥ सो दूत जाय जरासिंधसे मिला और एकांतविषैं जरासिन्धसे संधिकी वार्ता करी दूत महा पण्डित सो याके वचनकरि प्रतिहरि प्रसन्न भया अर छः महीनेकी सन्धि मानी छः महीनेमें तुम सरंजाम कर लेवो ॥ ५८ ॥ अर दूतका वहुत सन्मान किया बहुत वकसीस करी सो दूत पृथिवीपतिसे प्रसन्न होय द्वारका आया समुद्रविजयादिकसे सब वार्ता कही ॥५९॥ तव सव यादव सावधान होय एक वर्षमें संग्रामका सब सरंजाम किया ॥ ६० ॥ यादवनके मित्र सब यादवनमें आये अर जरासिंध सैन्य रूप समुद्रकरि वेष्टित कुरुक्षेत्रनामा स्थानकविषैं प्रधान पुरुषनिकरि युक्त आय प्राप्त भया अर द्वारकातैं दूजा सागर केशव भी तहां ही जाय प्राप्त भया । दोऊ सेना समुद्र समान सोहती भई ॥ ६२ ॥ तहां कैयक दक्षिण दिशिके अर कैयक उत्तर दिशिके बडे २ राजा अपने सकल कटककरि युक्त केशवसे आय मिले दशार्ह कहिए

अंधकवृष्टिके पुत्र समुद्र विजयादि दश भाई। अर भोजकवृष्टिके पुत्र अर पांडव अर और हू बडे २ शार्दूल नृप पृथिवीविषैं प्रसिद्ध हरके हितू सब आये सबनमें वे राजा समुद्रविजय श्रीनेमिनाथके पिता तिनके साथ अक्षोहिणीके पति अर राजा मेरु नामा इक्ष्वाकुवंशके अधिपति एक अक्षोहिणीदलका स्वामी ॥ ६६ ॥ राष्ट्रवर्द्धन नामा देशका राजा अर्द्ध अक्षोहिणीदलका स्वामी अर सिंघल देशका राजा पद्मरथ सो भी अर्द्ध अक्षोहिणी दलका स्वामी ॥६७॥ अर राजा सकुनका भाई चारुदत्त नामा महा पराक्रमी चौथाई अक्षोहिणी दलका स्वामी यह कृष्णके परमहितु ॥६८॥ अर चरवरदेशके स्वामी यमन देशके स्वामी अर आवीर देशके कांबोज देशके अर द्रविड देशके और भी अनेक देशनिके बहुत राजा शूरवीर हरिकी पक्ष आए ॥ ६९ ॥ अर अनेक अक्षोहिणी दलके धनी बहुत गुण करि पूर्ण अनेक राजा जरासिंधकी ओर आये, कैसा है जरासिंध चक्ररत्नके प्रभावकरि वश किये हैं भरतक्षेत्रके तीन खंड जानैं एक अक्षोहिणी दलका प्रमाण कितना कहा सो सुनिये।

नव हस्तिसहस्राणि नवलक्षरथा मताः। नवकोटितुरंगास्तु शतकोट्यो नराभव ॥ ७१ ॥

अर्थ—हाथी नव हजार अर रथ नव लक्ष अर तुरंग नवकोटि अर नव सौ कोड पयादे यह अक्षोहिणी दलका प्रमाण जानना ॥ ७१ ॥ यादवनके कटकमें समुद्रविजयका कुमार श्रीनेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि अर वलभद्र नारायण ये तीन तो अतिरथि कहिए सब योधानमें श्रेष्ठ सबनके शिरोभाग हैं इनके तुल्य भरतक्षेत्रमें और सुभट नाहीं ॥ ७२ ॥ अर राजा समुद्रविजय तथा वसुदेव अर युधिष्ठिर अर भीम अर अर्जुन अर रुक्म कहिए रुक्मिणीका भाई अर प्रद्युम्न कृष्णका पुत्र अर सत्यक ॥ ७३ ॥ अर धृष्टद्युम्न द्रोपदीका भाई अर अनावृष्टि कृष्णके बडे भाई अर राजा सल्य अर राजा भूरिश्रवा बहुरि राजा हिरण्यनाभि अर राजा सहदेव राजा सारण ॥ ७४ ॥ ये राजा सर्व शास्त्रविषैं निपुण अर पराङ्मुख कहिए जो कायर होय रणसे पाछे मुडैं अर लड न सकैं तापर महादयावान। जो सन्मुख होय लडैं अर आप समान होय अथवा आपतैं अधिक होय ताहीसूं

लडें आपसे हीन वली होय तासें न लडैं यह महा दयावान महा वलवान महारथी हैं। महारथी कौन कहिए जो अकेला ११ हजार माते हाथीसूं लडै सो महारथी जानिए ॥ ७५ ॥ अर समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं वडे अक्षोभि आदि आठ भाई अर जांबुवंतीका पुत्र संचु अर भोज नामा राजा तथा विदूरथ अर द्रोपदीका पिता द्रुपद अर स्यंघराज अर शल्य अर वज्र सुयोधन ॥ ७६ ॥ अर पौंडू, पद्मरथ. कपिल अर भगदत्त, मेघ क्षेम घूर्त इत्यादि सब राजा रणविषैं समानबली यह समरथी हैं ॥ ७७ ॥ अर राजा महानेमि घर अर कृष्णका भाई अक्रूर अर निषद उल्मुख अर दुर्मुख कृष्ण कृतिवर्मा अर राजा विराट अर चारुकृष्ण अर सकुनि, पवनभानु, दुःशामन, अर शिखंडी, वाहीक, सोमदत्त, देवशर्मा, वक्र वेणुदारी त्रिक्रांत इत्यादि सर्व राजा अर्धरथी हैं। यह सव ही नानाप्रकारके युद्धके करणहारे महाधीर संग्रामतैं कदे ही न टरैं ॥ ८० ॥ अर इन सिवाय और सब राजा कुलवंत मानवंत यशवंत पृथिवीविषैं प्रसिद्ध दोऊही सेनाविषैं रथी हैं ॥ ८१ ॥ यह दोऊ ही कटक समुद्रसमान पडे सो राजा कर्ण कुंतीका पुत्र जरासिंधकी सेनाविषैं दुर्योधनके शामिल है जब दोऊ कटक पडे अर कर्णके डेरे कृष्णतैं नीरे हैं तब कुंती कृष्णतैं मंत्रकरि राजा कर्णके समीप गई अति आकुलताकी भरी स्नेहके भारकरि पराधीन है शरीर जाका ॥ ८३ ॥ कर्णके कंठसूं लागि रुदन करती थकी माता पुत्रकूं आदि मध्य अवसानतैं सब संबंध कहती भई ॥ ८४ ॥ तब कर्ण माताके वचन सुनि अपना कुरुवंश विषैं जन्म अर माता कुंती अर पिता पांडु यह सब निश्चय करता भया ॥ ८५ ॥ अर अपने अंतःपुरमें निज वर्ण है तिनतैं सब निश्चय किया अर कुंतीकी अतिस्तुति करी बहुत सन्मान किया तब कुंती अपना बडा पुत्र जो कर्ण ताकूं आदरसहित कहती भई ॥८६॥ हे पुत्र ! उठ हमारे कटकमें आवो तेरे सब भाई तेरे दर्शनके अभिलाषी हैं। कृष्ण आदि सबही तेरे निज वर्ग तोहि बहुत चाहै हैं तेरे दर्शनकी सबके अभिलाषा है ॥ ८७ ॥ तू कुरुवंशीनिका ईश्वर है अर वलदेव वासुदेवके प्राणहूतैं प्यारा है ॥ ८८ ॥ तू कुरुवंशीनिका राजा है युधिष्ठिर तेरे शिरपर छत्र फिरावेगा अर भीम चमर

डध्वज कहिए कृष्ण तिनकूं कुवेरने गारुड नामा रथ दिया सो अनेक आयुधनिकरि पूर्ण जीतका स्वरूप ॥ १० ॥ अर सुभटनिका नायक महा शूरवीर कृष्णका बडा भाई अनावृष्टि अर अर्जुन इन दोऊकूं समुद्र विजयादिक सब राजा अगवानी करते भए ॥ १२ ॥ अर जरासिंधने राजा हिरण्यनाभ है तिसकूं सेनापति किया ताका अभिषेक भया वह भी महा बलवान् ॥ १३ ॥

अथानंतर—युद्धके वादित्र दोऊ सेनामें बाजे परस्पर दोऊ कटकमें चतुरंग सेना युद्धकूं उद्यमी भई ॥ १४ ॥ वह वाहि बुलावै अर वह वाहि बुलावै परस्पर राजा युद्ध करने लगे सो क्रोधके भारकरि वक्र भई है भौंह जिनकी ताकरि क्रूर है वदन जिनिके ॥ १५ ॥ हाथिनिके सवार तो हाथिनिके सवारनितैं लडन लगे अर रथनिके सवार रथवारेनिसूं अर घोरनिके सवार घोरनिसूं पयादे पयादनिसूं लडने लगे ॥ १६ ॥ या भांति योधा परस्पर युद्ध करने लगे धनुषनिकी फिडचनिका शब्द अर रथोंका शब्द अर गजनिकी गर्जना अर तुरंगनिका हींसना अर योधानिके सिंहनाद तिनकरि दशोंदिशा शब्दायमान भई ॥ १७ ॥

अथानंतर—जरासिंधके कटककूं प्रथम ही देख करि श्री नेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि अर्जुन अर कृष्णके भाई अनावृष्टि सो रथनेमिके तो बृषभकी ध्वजा अर अनावृष्टिके हाथीकी ध्वजा अर अर्जुनके मर्कटकी ध्वजा ॥ १८ ॥ अर कृष्णके अभिप्रायके वेत्ता यह तीनों भील महा उद्धत बखतर पहने शस्त्र बांधे जरासिंधकी सेनाके चक्रव्यूहकूं भेदने उद्यमी भए ॥ १९ ॥ अर नेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि इन्द्रका दिया संख पूरता भया। अर कुन्तीका पुत्र जो अर्जुन सो देवनिका दिया शंख पूरता भया अर अनावृष्टि वासुदेवका बड़ा भाई बलाहक जातिका शंख बजावता भया इन तीनोंके शंखनादिकरि दशोंदिशा व्याप्त भई अर यादवनिकी सेनाविषैं अति हर्ष भया अर शत्रुकी सेनाविषै अति भय उपजा जरासिंधकी सेनाका चक्रव्यूह ताका मध्य तो अनावृष्टिने भेदा अर रथनेमिने दाहनी ओर भेदी अर अर्जुनने पश्चिम अर उत्तर दोऊ दिशा सेनाकूं भेदी ॥ २२ ॥

ढारेगा अर अर्जुन तेरा मंत्री अर नकुल सहदेव ये दोऊ तेरे द्वारपाल अर मैं तेरी माता सदा तेरा हितही चाहूं यह माताके वचन सुनि भाईनिसूं है परमस्नेह जाका तथापि जरासिंध अपना स्वामी अर वाका आपपर उपकार अर दुर्योधनतैं सांचा मिलाप सो स्वामीकार्यकूं शिरपर धरि माताकूं कहता भया, माता पिता भाई बंधु या लोकविषै दुर्लभ है यह बात सत्य है तथापि अवार और ही प्रयोजन उपज्या है रणसंग्राम आय वन्या है सो मैं युद्धके समय स्वामीकार्यकूं तजकरि भाइनिमें आऊं तो यामें वडा अपयश है अर वडा हास्य है ॥ ९३ ॥ तातैं या समय मेरा आवना सर्वथा नाहीं अर मैं एक करूंगा इनके युद्धविषैं स्वामीकार्यके अर्थि भाईनि टारि अर योधानिसूं युद्ध करूंगा ॥ ९४ ॥ अर युद्धनिवृत्ति भए जो कदाचित आयुकर्मके वशतैं जीवूंगा अर वैराग्य न उपजेगा तो भाईनिसूं मिलाप होयगा ॥ ९५ ॥ तातैं तुम जाहु अर सब भाईनिसूं यहही कहो ऐसा कहि माता कुंतीकी प्रतिष्ठाकरि याहि सीख दई सो गई वलदेव वासुदेव आदि सबनिसूं कर्णके कहे समाचार कहे ॥ ९६ ॥

अथानंतर—जरासिंधने भला रणखेत देख्या जहां पृथिवी समभाग काहू ठौर ऊंची नीची नाहीं ऐसा स्थानक हेरि वैरीनिके जीतिवेके अर्थि प्रवीण राजा है तिनसूं मंत्रकरि चक्रव्यूह रच्या चक्रव्यूह कहिये चक्रसमान वर्तुलाकार सेनाका आकार रच्या अर चक्रके हजार आरे सो एक २ आरेके निकट एक एक राजा सो हजार आरेके निकट हजार राजा अर एक २ राजाके ढिंग सौ सौ हाथी अर दोय दोय हजार रथ अर पांच पांच हजार तुरंग, अर सोलह हजार पियादे अर यातैं चतुर्थभाग विभूतिसहित छः राजा नेमि कहिये चक्रकी धुरा ताके समीप तिष्ठे अर मध्यके स्थानविषैं जरासिंधके ढिंग कर्ण आदि पांचहजार राजा तिष्ठे ॥ १०१ ॥ तिनहीके मध्य राजा धृतराष्ट्रके अर गांधारीमाताके पुत्र दुर्योधनादि सौ भाई खडे अर मध्यविषैं और हू वडे २ राजा पूर्वभागविषैं तिष्ठे ॥ ३ ॥ कुलवंत मानके धरणहारे महाधीर महा वलवान वडे २ राजा पचास, चक्रकी धुराकी संधिविषैं तिष्ठे अर या चक्रव्यूहके बाहर अपनी अपनी सेनासहित नानाप्रकारके व्यूह रचि अनेक ठौर राजा खडे यह चक्रव्यूह

अथानंतर—यादवनिका सेनापति अनावृष्टि सो परसेनाका सेनापति हिरण्यनाभ युद्ध करता भया अर रथनेमि रुक्मीसे लडे अर अर्जुन दुर्योधनसे भिडे। कैसा है अर्जुन धैर्य है अग्रेसर जिनके ॥२३॥ इनके परस्पर महा युद्ध भया अर यह समानवली अनेक आयुधोंके धारक सो वाणनिकी वर्षा करते भए ॥२४॥ अर नारद आकाशविषैं तिष्ठ्या दूरसे देखै है अप्सरानिके समूह आकाशमें देखै हैं महायोधानिपर पुष्पनिकी वर्षा होय है अर कलह है प्रिय जाकूं ऐसा नारद सो अतिहर्षित भया हँसै है कितनीक देरमें रथनेमि वाणवर्षाकरि रुक्मीका निपात किया रुक्मी बहुत लडा अर रथनेमिने हजारों राजा युद्धविषैं जीते अर समुद्रविजयादिक दश भाई तिनमें वसुदेव विजयार्द्धकी ओर गए अर नवो भाई युद्धविषैं हुते तिन जे परसेनाके राजा सन्मुख आए सो सब मारे अर इनके पुत्र तिन वहुत शत्रु मारे ॥ २६ ॥ अर वलभद्र नारायणके पुत्र तिन युद्धविषैं शंकारहित बाणनिकी वर्षा करी जैसैं पर्वतविषैं मेघ वृष्टि करै तैसैं वैरिनिविषैं बलदेव वासुदेवके पुत्रनिने वाणनिकी वर्षा करी ॥ २७ ॥ अर धृतराष्ट्रके दुर्योधनादि सौपुत्र अर पांडुके पांचपुत्र तिनमें परस्पर महायुद्ध भया सो कहनेकूं कौन समर्थ ॥२८॥ राजा युधिष्ठर तो राजा शल्यसूं लडे अर भीम दुःशासनसूं लड़े अर सहदेव शकुनीसे लड़े अर नकुल राजा उलूकसैं लड़े ॥ २९ ॥ अर दुर्योधन अर अर्जुन दोऊ परस्पर युद्ध करते भए इनके महा युद्ध भया दोऊ ही खड्ग अर वाणविद्याविषैं प्रवीण केतीक वेरमें पांडुवनिने धृतराष्ट्रके पुत्र मारे अर कईएक मृतक समान किए अर राजा करण जरासिंधकी सेनामें है सो धनुषविषैं वाण बसाकरि कानपर्यंत खैंच अपने वाण चलाए सो कृष्णकी पक्षके योधा सन्मुख आए ते राजा करणतैं अनेक वींधे ॥ ३२ ॥ यह बरावरकेनमें महायुद्ध भया अनेक सामंत मारे गए बहुरि अनावृष्टि अर हिरण्यनाभि इन दोऊ सेनापतीनिके परस्पर महा रौद्र युद्ध भया अर नानाप्रकारके आयुधनिकरि सुभट लरे ॥ ३२ ॥ सो हिरण्यनाभने अनावृष्टिकूं युद्धविषैं सातसौ नव्वे वाणोंकरि भेद्या अर वाण सताइस और लगाए ॥ ३४ ॥ सो अनावृष्टि इतने वाणनिकरि घायल होय अर हिरण्यनाभकूं हजार वाणनिकरि

भेद्या यह अनावृष्टि युद्धक्रियाविषैं अति कुशल है ॥ ३५ ॥ बहुरि हिरण्यनाभ राजा युधिष्ठरका पुत्र महायोधा प्रतिहरिका सेनापति तानै अनावृष्टिकी ऊंचीध्वजा छेदी अर अनावृष्टिने हिरण्यनाभकी ध्वजा छेदी अर धनुष छेदा छत्र छेदा बहुरि सारथी छेदा बहुरि हिरण्यनाभ अर धनुष लेकर बाणवृष्टि करता भया तब अनावृष्टिने शत्रुपर परिघनाम शस्त्र चलाया हिरण्यनाभका रथ चूर्ण कर डारचा तब हिरण्यनाभ अनावृष्टिपर एक हाथमें खड्ग अर एक हाथमें खेटक लिए आया सो शत्रुकूं सन्मुख आवता देख अनावृष्टि भी खड्ग अर खेटक हाथमें लिए रथसे उतरकरि शत्रुके सन्मुख गया सो यह दोऊ ही शस्त्रविद्याविषैं अति प्रवीण सो वह उसका प्रहार टार जाय अर वह उसका प्रहार टार जाय अर दोऊ ही महा वीराधिवीर सेनापति सो इनके खड्ग युद्ध भयंकर भया ॥ ३९ ॥ अर कितनेक बेरमें अनावृष्टिने खड्ग घातकरि हिरण्यनाभके दोऊ भुज छेदे भुजनितैं रुधिरका प्रवाह निकला सो जरासिंधका सेनापति पृथिवीविषैं पड़ा ॥४०॥ जब प्रतिहरिका सेनापति हरिके सेनापतिने मारा तब प्रतिहरकी सेनाके अगवानी पीछे होय प्रतिहरिके निकट गए अर अनावृष्टि जीतपाय हर्षित होय रथ चढ अपनी सेना सहित बलदेव अर वासुदेवके निकट आया सो सब सेनाके लोग सेनापतिकी स्तुति करते भए अर बलभद्र नारायण यह दोऊ ही वृषभध्वज कहिए रथनेमि अर हस्तिध्वज कहिए अनावृष्टि अर कपिध्वज कहिए अर्जुन इन तीननिसूं अति स्नेहकर मिले अनावृष्टिने तो हिरण्यनाभि मारचा रथनेमि अर अर्जुनने चक्रव्यूह भेद्या यह तीनोंही महा परक्रमी हैं ॥४३॥ जब परसेनाका सेनापति मारा गया तब उनकी सब सेना विषादरूप विषकरि दूषित भई ता समय सूर्यहू अस्त भया। अर दोऊ सेनाके योधा अपने अपने डेरा गए अर यादवनिका कटक अरिके भंग थकी अति हर्षकरि पूर्ण घूमते समुद्र समान गरजता सोहता भया जिनराजके धर्मके प्रभावकरि कर्मनिकी सेनाको जीते तो औरनिकी कहा बात ॥ ४६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यादवजरासिंधसेनासमागमहिरण्यनाभसेनापतिवधवर्णनो नाम एकपंचाशत् सर्गः ॥ ५१ ॥

अथानंतर—सूर्यके उद्योत होते मागध कहिए मागध देशका राजा जरासिंध अर माधव कहिये कृष्ण इन दोऊके योधा आयुध सजकरि युद्धके अर्थि निकसे पूर्वरीति व्यूह रचकरि दोऊकटकके सावंत आय ठाढे भये अर अनेक राजा परस्पर लडकरि अनेक राजानिकूं मारते भए जा समय रथविषैं तिष्ठता जरासिंध सो अपना हंस नामा मंत्री निकट बैठा है ताहि पूछता भया यह यादव सब खडे हैं तिनके प्रत्येक प्रत्येक नाम अर चिन्ह मोहि कहो मेरे इनसे द्वेष है औरनिके मारिवेकरि कहा तब हंस नामा मंत्री कहता भया हे देव ! यह फेनके पुञ्ज समान श्वेत अश्व सांकल धरे जुपे हैं जा रथके अर गरुडकी ध्वजा है सो रथमें कृष्ण बैठा है ॥ १ ॥ अर यह सूवाकी पांख समान हरे घोडे जुपे जा रथके अर घोडोंके स्वर्णकी सांकल अर रथके वृषभकी ध्वजा या रणमें श्री अरिष्ट नेमिनाथ तीर्थंकरका दुमात भाई रथनेमि समुद्रविजयका पुत्र है ॥ २ ॥ अर यह कृष्णकी दाहिनी ओर राहूके वर्ण जुपे हुवे हैं तुरंग जाके अर तालकी हैं ध्वजा जाके ता रथके भीतर बलभद्र बैठा है अर केश समान श्याम वर्ण जिनके ऐसे घोडे अर घोडोंके स्वर्णके आभूषण वा रथमें राजा युधिष्ठर विराजा है अर चंद्रमा समान निर्मल तुरंग पवन समान है वेग जिनका सो तुरंग या रथके जुपे अर रथके गयंदकी ध्वजा या रथके मध्य अनावृष्टि बैठा है यह कृष्णका बडा भाई है अर इनके कटकका सेनापति है जाने अपना सेनापति हिरण्यनाभि मारा ॥ १० ॥ अर यह भीमका रथ है जाके नीलकमल समान रंगके धारक तुरंग जुपे हैं अर तुरंगनिके रत्न स्वर्णके आभूषण हैं ॥ ११ ॥ अर यह राजा समुद्रविजयका रथ है जाके सिंहकी ध्वजा अर चंद्रमा समान शुक्ल वर्ण तुरंग मणि स्वर्णकरि शोभित अश्व जुपे हैं सो सब यादवनिकी सेनाके मध्य सबनिका शिरोमणी रथमें विराजा है यह नेमि जिनेश्वरका पिता है अर कृष्णके पिताका बडा भाई है ॥ १२ ॥ अर यह अक्रूरका रथ है जाके केलिकी ध्वजा अर मिश्रवर्ण घोडे जुपे हैं सूर्य समान है, ज्योति जाकी ऐसा यह अक्रूर कृष्णका बडाभाई है इसका रथ रत्न स्वर्णमई देदीप्यमान है ॥ १३ ॥ अर तीतरके रंग जुपे हैं तुरंग जाके

ऐसा यह राजा सत्यकका रथ है अर यह कुमुदके पुष्प समान वर्णके धरणहारे जुपे हैं अश्व जाके सो महा नम्य-कुमारका रथ है ॥ १४ ॥ स्वर्णमई लांबा दण्ड ताके लगी है पताका तिनकरि शोभित है अर सूवाकी चोंचके रंग जुपे हैं अरुण तुरंग जाके ऐसा यह भोज नामा राजाका रथ है अर यह कनक वर्ण तुरंगनि करि युक्त मृगकी ध्वजा जाके सो जरतकुमार कृष्णका बडा भाई है ॥ १६ ॥ अर यह राजा मरुराजका रथ है लाल अवलष जुपे हैं घोडे जाके सो अश्व स्वर्णके आभूषणनिकरि मंडित है ॥ १८ ॥ अर यह पद्मरथका रथ है जाके कमलके रंग तुरंग जुपे हैं यह राजा पद्मरथ शूरवीरोंमें अग्रेश्वर शोभै है सो कटकके अग्रभाग खडा है अर यह राजा सारण जाके रथके परेवाके रंग घोडे जुपे हैं सो घोड़े तीन वर्षके नवयोवन हैं अर रथके कमलकी ध्वजा है ॥ २० ॥ अर यह राजा नग्नजित ताका पुत्र मेरुदत्त ताका रथ सोहै है जाके लाल अर सफेद रंगके घोड़े जुपे हैं सो घोड़े पांचवर्षके हैं अर यह विदुरतकुमारका रथ जाके कलशके आकार ध्वजा है अर पंचरंग घोरे जुपे हैं अर सूर्यके रथसमान रथ है यह विदुरतकुमार महायोवनवंत है अति तेजस्वी है यह यादव रणविषैं परम निपुण हैं तिनके घोडोंके सर्ववर्ण अर रथोंके वर्णन करिवेकूं कौन समर्थ है हजारों सैकड़ों ये यदुवंशी हैं ॥ २३ ॥ अव अपने राजा महायोधा अर राजानिके कुमार तिनके अनेकचिन्हनिके रथ देखहु ॥ २४ ॥ तिहारे कटकमें नाना देशके सुभट आये हैं। अनेक राजानिकरि युक्त सोहै हैं अर नानाप्रकारके रचे हैं व्यूह जाविषै सो शत्रूनिकी सेनाकूं भयकारी हैं यह वचन मंत्रीनिके सुनकरि जरासिंध अपने सारथीसूं कहता भया। जो तू यादवनिकी ओर रथ चलाय अर जरासिंधु अपने वाणनिकरि सब यादवनिकूं आच्छादता भया ॥२७॥ अर जरासिंधुके पुत्र कोपकरि यादवनिसूं रणक्रीडा करते भए रथों पर तिष्ठे बराबरवालनितैं बराबरवाले लडते भये ॥२८॥ अर जरासिंधका बडा पुत्र कालयवन सो साक्षात् काल समान मलय नामा गजपर चढा अधिक युद्ध करता भया तिसतैं सहदेव लडा अर द्रमसेन अर राजा द्रम अर राजा जलकेत अर चित्रकेतु अर धनुर्धर अर महीजय यह परस्पर भिड़े ॥ ३० ॥ अर राजा भानु अर कांचनरथ अर राजा

अर गंधमादन अर राजा सिंहक अर चित्रमाल अर राजा महीपाल अर वृहध्वज अर राजा सुवीर अर आदित्यनाभि अर राजा सत्य अर राजा सत्व दोऊही मनोहर अर राजा धनपाल अर सतानीक अर महाशुक्र अर महावसु ॥ ३१ ॥ अर राजा वीर अर राजा गंधदत्त अर राजा प्रवर अर पार्थिव, अर राजा चित्रांगद अर वसुगिर अर राजा श्रीमान् अर सिंहकटि राजा प्रगटपने परस्पर लडे ॥ ३२ ॥ अर मेघनादि, अर महानादि अर राजा सिंहनाद अर वसुध्वज अर राजा वज्रनाभ अर महाबाहु अर राजा जितशत्रु अर पुरंदर अर राजा अजित अर अजितशत्रु अर राजा देवानन्द अर शतद्रुत अर राजा मन्दर अर हिमवान अर राजा विद्युन्माली केतुमाली ॥ ३४ ॥ अर राजा कर्कोटक अर हृषीकेश अर राजा देवदत्त अर धनंजय अर राजा सगर अर स्वर्णबाहु अर राजा मघवान अर अच्युत यह राजा परस्पर संग्राम करते भये। अर राजा दुर्जय अर दुर्मुख अर राजा वासुकि अर कंवल अर राजा त्रिशिर अर धारण अर माल्यवान अर सम्भव ॥ ३६ ॥ अर महापद्म अर महानाग अर राजा महासेन अर महाजय अर राजा वासव अर वरुण अर सतानीक अर भास्कर ॥ ३७ ॥ अर गरुत्मान् अर वेणुदारी अर वासुवेग अर शशिप्रभ अर वरुण अर आदित्यधर्मा अर विष्णुस्वामी अर सहस्रदिक् अर केतुमाली अर महामाली अर चंद्रदेव अर वृहद्बलि अर सहस्ररश्मि अर अर्चिष्मान् इत्यादि परस्पर युद्ध करते भये. जरासिंधके पुत्र बहुत लडे ॥ ३९ ॥ युद्धविषैं मनुष्य हस्ती तुरंग बहुत चूर्ण भये अर प्रलयकाल समान युद्ध भया अर कालयवन बहुत लडा सो युद्धविषैं वसुदेवके पुत्रनिने उसे रोका। वसुदेवके पुत्रनिके अर प्रतिहरके पुत्रके परस्पर महायुद्ध भया अर ताके विवाद भी बहुत भया ॥ ४१ ॥ कालयवन महायोद्धा सो वसुदेवके पुत्र ताने बहुत मारे तिनके सिर अरुणकमल समान सो सामान्यचक्र अर बाण अर खडग तिन करि कालयवनने काटे सो पृथिवीविषैं पडे तिनकरि पृथिवी सोहती भई। जब कालयवनने वसुदेवके बहुत पुत्र मारे तब सारण नामा कुमारने क्रोधकरि खड्गके प्रहारकरि कालयवनकूं कालके मन्दिर पहुंचाया। सारणके अर

५२१

कालयवनके चिरकाल अति युद्ध भया सो वर्णनमें न आवै। कालयवनका मृत्यु आया सो मानो जरासिंधका सर्वस्व ही गया बहुरि जरासिंधके अर पुत्र तिन आयकरि कृष्णकूं घेरा सो प्रतिहरिके पुत्र सबही महा शूरवीर हरिसे बहुत लडे सो हरिने अर्द्ध चन्द्रवाणकरि उनके सिर छेदे अर मृत्युकूं प्राप्त किये ॥ ४४ ॥ तब राजा जरासिंध अपने पुत्रनिकूं रणभूमिपर पडे देख क्रोधकरि कृष्णपर आया धनुषकूं खैंचता बाणकूं लगावता फिणचकूं खेंच चढा-वता रथपर चढा प्रतिहरि हरिपर आया ॥ ४५ ॥ तिन दोऊके परस्पर महा भयंकर युद्ध भया दोऊही उद्धत परक्रमके धारक सो प्रथम तो सामान्य शस्त्र जे तीर तलवार सेल कटारी इत्यादि अनेक आयुध तिनकरि अति भयंकर युद्ध भया फिर दिव्यास्त्र जे देवोपुनीत शस्त्र तिनकरि दोऊ लडने लगे प्रतिहरिने हरिपर मारवे अर्थ नागबाण चलाया सो हजार नाग मायामई आये। तब माधवने मगधदेशका राजा जो जरासिंध तापर गरुडवाण चलाया ताकरि सब नाग नाशकूं प्राप्त भये ॥ ४८ ॥ बहुरि जरासिंधने जनार्दन जो कृष्ण तापरि मेघवाण चलाया सो कृष्णने पवनवाणकरि ताका निराकरण किया। अर जरासिंधने वायुवाण चलाया सो कृष्णने नागवाणकरि ताकूं निवारया अर प्रतिनारायणने नारायणपर अग्निबाण चलाया सो अग्निके समूह चले आवें तब केशवने वरुण नामा बाणकरि अग्निबाण निवारया वरुण जलका स्वामी है अर मगधदेशके इंद्रने उपेंद्र कहिये कृष्ण तापरि वैरोचननामा वाण चलाया सो हरिने माहेंद्रास्त्रकरि वह वाण निवारया अर जरासिंधने राक्षस वाण चलाया सो वासुदेवने नारायण अस्त्र कर निवारया ॥ ५३ ॥ अर जरासिंधने तामस नामा वाण चलाया सो माधवने सूर्य्यवाणकरि वह वाण भेद्या प्रतिवासुदेवने वासुदेव पर अश्वग्रीव नामा वाण चलाया सो मुरारिने ब्राह्मा-स्त्रकरि शीघ्रही निवारया यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकतैं कहैं हैं, हे श्रेणिक ! ये दोऊही नरेन्द्र शस्त्र शास्त्रके वेत्ता जेते दिव्यास्त्र हैं तेते सकल प्रतिहरिने हरिपर चलाये सो हरिने सब निराकरण किये ॥ ५५ ॥ तब वह राजनिका राजा वृथा भये हैं उद्यम जाके सो पृथिवीविषैं धनुष डार दिया चक्रकूं चितारा सो चक्रकी हजार

दिशा विषैंउद्योत करता प्रति-
यक्ष सेवा करै हैं ॥ ५६ ॥ सो चक्र चिंतवता प्रमाण सहस्र किरणनिकरि युक्त दशो दिशा विषैंउद्योत करता प्रति-
केशवके करविषैं आया ॥ ५७ ॥ सो वृथा भये हैं अनेक शस्त्र जाके तातैं महा क्रोधरूप जो जरासिंध तानै
चक्रकूं फिराय कर भौंहें टेढीकर कृष्ण पर चलाया ॥ ५८ ॥ सो चक्र आकाशमें चलाया जाके तेजकरि सूर्यका
तेज दब गया अर जरासिंधके पक्षके राजा हैं तिनिने एकलार समान चक्र चलाये सो चक्रकू आवता देख ताके टारने
अर्थि कृष्ण तो शक्ति अर गदा सम्हाली अर बलभद्रने हल मूसल सम्हाले अर भीमने गदा अर्जुनने धनुष आदि अनेक
शस्त्र अर अनावृष्टिने परिघ सम्हारया अर युधिष्ठिरने शक्ति संभाली यह सब कृष्णके पक्षी चक्रसूं भिरवेकूं उद्यमी भए
॥ ६१ ॥ समुद्रविजय आदि नौ भाई सावधान होय अत्यर्थपने चक्रकी उर अनेक शस्त्र चलावते भए अर कृष्ण
चक्रके सन्मुख खडे सो वह चक्र सामंतनिने अनेक प्रकार निवारया परन्तु चक्र पाछा न रह्या मित्रकी न्याईं शीघ्र
ही आया सो आयकरि प्रदक्षिणा देय हरिके दहिने करविषै तिष्ठ्या, कैसा है हरिका दाहिना कर, शंख चक्र अर
अंकुशका है चिन्ह जाविषैं ॥ ६६ ॥ जब चक्र कान्हाके करमें आया तब आकाशतैं पुष्पवृष्टि भई अर देवनिकी
यह ध्वनि भई जो यह कृष्ण नवमां वासुदेव है ॥ ६७ ॥ अर शीतल, मंद सुगंध पवन अनुकूल बाजी जाकरि
यादव योद्धानिके हृदय हर्षकूं प्राप्त भये जब चक्र कान्हाके करविषैं आया तब जरासिंध चित्तमें चिंतवता भया
जो चक्रहूका चलावना वृथा गया मैं विचारी कछु अर भई कछु और ॥ ६८ ॥ चक्रके पराक्रमकरि वशकरी हुती
मैं सब दिशा अर तीनखंडका अधिपति मैं प्रचण्ड पराक्रमी ॥ ६९ ॥ जाके पूर्ण सेना देव विद्याधर जाके आज्ञा-
कारी अर पुत्र महा पिताभक्त अर मित्र निःकपट अर पुरुषार्थ हू मेरा प्रबल सो ये सबही बात जबलग मेरे देव
बल हुता तबलग कार्यकारी हुते जब देवबल विलाय जाय तब पुरुषार्थ सबही वृथा यह बात ज्ञानवान कहै हैं
सो सत्य है यामैं संदेह नाहीं । मैं गर्भेश्वर गर्भमें आया जबहीतै सबनिका स्वामी मोहि कोई बडा पुरुष उलंघि न
सकै अर कहा यह क्षुद्र गोपि जाके गर्भविषैं क्लेश जन्मविषैं क्लेश अर ग्वालनिमें पल्या नन्हा मनुष्य अर सत-

मासा भया ॥७२॥ सो दैवयोगतैं मेरा जीतनहारा भया यातैं धिकार धिकार पूर्वोपार्जित कर्मकूं अर जो यह मुझ सारिखेनकूं जीतनहारा पूर्वोपार्जित कर्मने किया हुता तो ऐसा क्लेशरूप क्यों किया जो गर्भदुखी अर जन्मदुखी अर गोपनिमें पल्या तातैं दैवकी मूढता समान और मूढता कहां, दैव नाम पूर्वोपार्जित कर्मका है। धिकार या जगतकी मायाकूं यह माया लोककूं अंध करिवेकूं प्रवीण है अर धीर पुरुषनिके धैर्यकी लोप करनहारी है अर वेश्या समान अनेक पुरुषनिकी भोगनहारी है परघरगमन करनहारी है यातैं या राजलक्ष्मीकूं धिकार, धन्य वे पुरुष ते जगतकूं तजि जगदीशके मार्गमें लागे यह विचारकरि आई है मृत्यु निकट जाके सो ज्ञानको तो न प्राप्त भया अर क्रोध-करि कृष्णकूं कुवचन कहता भया। अरे गोप तू चक्रकूं क्यों न चलावै है कहा ढील कर रह्या है, हे मुग्ध! तू कहा समय हेरै है जो कार्य करना सो शीघ्र करना विलंब कहा अर जे दीर्घसूत्री हैं ते विनाशकूं प्राप्त होय हैं ऐसे कुवचन जरासिंध कृष्णतैं कहता भया। जरासिंध यद्यपि निश्चय जान चुका है जे मेरा मृत्युकाल आया यामें संदेह नाहीं परंतु जाकी प्रकृति ही निर्भय है यह त्रिषष्ठिशलाका पुरुष महा शूरवीर इनके मरणका भय कहा होय? जब कृष्णकूं जरा-सिंधने चक्र चलावनेकी प्रेरणा करी तब कृष्ण स्वभावहीकरि विनयवान स्नेहवान वातैं कहते भए मैं चक्रवर्ती उपज्या हूं सो चक्र मेरे हाथ आया तुम मेरी आज्ञामें तिष्ठो अर सुखसे राज करो यद्यपि तुम हमारे द्वेषविषैं निष्ठे प्रवर्त्तै हो तथापि हमारे द्वेष नाहीं प्रीति है हम प्रणाममात्रसूं प्रसन्न हैं काहूके मारिवेके अभिलाषी नाहीं ॥ ७८ ॥ यह बचन वासुदेव कहे तब प्रतिवासुदेव गर्भका भर्यो बोल्या जो यह चक्र मेरे अलात चक्र कहिए घेघली ता समान है तू याकरि गर्वकूं प्राप्त भया ॥ ७९ ॥ तैंनैं अबतक कभी भी कल्याण देखे नाहीं तू जन्म दरिद्री है जो नन्हा मनुष्य होय थोडी ही संपदाकरि गर्वकूं धरे अर जे महत्पुरुष हैं तिनके महा कल्याणहूकरि गर्व नाहीं जो लक्ष्मीनाथ हैं तिनके मद कहा ॥ ८० ॥ तू जानै है यह चक्र मेरे आया मैं चक्री होय चुक्या सो मैं तोहि या चक्र सहित अर तेरे बाबा समुद्रविजयादि दशार्ह तिनके चक्र कहिए समूह सहित तोहि समुद्रविषैं डुबोऊंगा ऐसे

कठोर वचन जरासिंध कृष्णकूं कहे तब चक्री चक्रकूं भ्रमायकरि प्रतिचक्रीपर डारया सो चक्र शीघ्र ही चाल्या अर प्रतिहरिकी वक्षस्थलरूप वज्रकी भीति ताहि भेदता भया प्रतिहरिकूं मारकरि तत्काल हरिके हाथविषैं आया सो यह उचित ही है कार्यसिद्ध भया तब कालक्षेप काहेका ॥ ८३ ॥ जब हरिकी विजय भई तब देवनिके हर्ष भया अर हरिने पंचायननामा शंख बजाया सो समस्त यादवनिके मनकूं हरता भया अर रथनेमि अनावृष्टि अर्जुन ये सेनाके अग्रेश्वर शंखध्वनि करते भये अर कृष्णके कटकमें वादित्रनिकी ध्वनि होती भई अर सर्वत्र अभयघोषणा फिरी जो कोई काहूकूं न मारि सकै अर सबनिका भय मिट गया अर परसेनाके सबही विनाही कहे वासुदेवकी आज्ञामें आए ॥ ८६ ॥ अर राजा दुर्योधन अर द्रोण अर दुःशासनादिक विरक्त होय विदुरमुनिके निकट जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए, ॥ ८७ ॥ अर सुदर्शननामा उद्यानविषैं राजा कर्ण दमवरनामा दिगंबरके निकट जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए कैसी है वह जिनदीक्षा निर्वाणके जे सुख तिनकी देनहारी है स्वर्णके हैं अक्षर जिनमें ऐसे राजा कर्णके कानमें कुंडल वा वनमें तजे तबतैं वह स्थानक कर्णस्वर्ण कहावै है ॥ ८९ ॥ जब हरि प्रतिहरिका संग्राम होय चुका तब धनपति तौ यदुपतिकूं पूछिकरि स्वर्गलोक गया अर यादवराजा अपने अपने डेरामें आए अर मधुसूदन कहिए कृष्ण सो महाभारथविषैं जरासिंधकूं पडा देखि अति सोचकरि व्याकुल भये जरासिंध कैसा देख्या मानो समुद्रविषैं सूर्य ही पडा है वाकी मरण दशा देखि मधुसूदन रुदन किया सो रुदनकरि नेत्र ऐसे अरुण होयगए मानों जयाके पुष्प ही हैं अर कृष्णके आंसू पडे सो मानों जरासिंधकूं जलही दिया ॥ ९१ ॥ गौतम-गणधर कहे हैं हे श्रेणिक ! यह प्राणी शुभके उदयविषैं संपदाकूं भोगवै है, वह संपदा प्रचंड पुरुषनिके प्रतापकूं उलंघनहारी है, अर जब सुखका क्षय होय तब आपदाकूं भजै है तातैं भव्यजन सम्पत्ति विपत्ति दोऊ समान जान मोक्षका कारण जो जिनभाषित निर्मल तप ताहि आदरतैं करहु ॥ ९२ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जरासिंधवधवर्णनोनाम द्विपंचाशःसर्गः ॥ ५२ ॥

अथानंतर—प्रभात ही सूर्यके उदय पहले हरि जाग सबकूं दर्शन देते भए अर सूर्य हू उदय भया कैसा है सूर्य हरिकी न्याई औरनि करि अलंघ है तेज जाका अर उद्योत किया है सब दिशाविषै जानै प्रभात ही कृष्ण जे घायल हैं दोऊ सेनाके मनुष्य तिनके यत्न कराये अर जे मृतक भए हैं जरासिंध आदि तिनकी दग्धक्रिया करी ॥ २ ॥ अर सभाविषैं समुद्रविजयादि सबही कृष्ण सहित तिष्ठे संते वसुदेवका आगम देखे हैं ॥ ३ ॥ परस्पर सब ही भाई बतलावैं वसुदेवके समाचार भी न आए सो कहा है अर कैयक पुत्र भी उनकी साथ गए हैं प्रद्युम्नकुमार अर संबुकुमार यह दोऊ पोते भी गए हैं तिनकी खबर भी न आई याभांति सब ही यादव परस्पर बातें करै हैं बाल अर वृद्ध सब ही बसुदेवकी बाट देखे हैं अर जैसे गाय बछडोंकी ओर देखे तैसे समुद्रविजयादि बडे वसुदेवकी बाट देखे हैं अर जैसे बछडे गायकी ओर देखे हैं तैसे बलदेव वासुदेव आदि वासुदेवकी बाट देखे हैं ताही समय आकाशविषैं उद्योत दृष्टि पडा अर वेगवतीनामा विद्याधरी आई अर ताके साथ एक नागकुमारी देवी आइ यह नागकुमारी वेगवतीकी दादीका जीव है, ऋषदत्ता तपस्विनी जिनधर्मकूं आराधि देवी भई सो सभाके मध्य आयकरि समुद्रविजयसूं कहती भई जो तुम कृतार्थ होवो वसुदेवने तो सब विद्याधर जीते अर वसुदेवके पुत्रने जरासिंध जीता वसुदेव बहुत नीके हैं वह कुशल रूप हैं अर तिहारी कुशल चाहे हैं सब बडोंसे प्रणाम किया है अर छोटोंसे असीस कही है यह वचन देवीके सुनकरि सबही यादव हर्षित भए अर रोमांच होय आये अर यह पूछतै भए जो उन विद्याधर कैसे जीते तब देवी कहती भई वसुदेवके संग्रामविषैं सामर्थके समाचार सुनो यहांसे वसुदेव विजयार्द्धगिरि जायकरि सब साले अर ससुरे विद्याधर भेलेकरि अर सब विद्याधर घेरे वह समस्त सेना सहित जरासिंधकी मदत आवते हुते मो उनकूं रोके अर दोऊ सेनानिमें महा युद्ध भया सो प्रजाकूं महाप्रलय कालकी शंका भई ॥ १५ ॥ सो दोऊ सेनानिके युद्धमें रथ हाथी मनुष्य तुरंग इत्यादि अनेक विध्वंस भए वसुदेव अर वसुदेवके पुत्र अर प्रद्युम्न अर संबुकुमार यह पौत्र तिनसहित विद्याधरनिसूं युद्ध किया तिनके समूह

रूप बनकूं भस्म करवे अर्थि दावानलका रूप आचरते भए बाण रूप है ज्वाला जिनके ॥ १७ ॥ सो युद्धके समय आकाशविषैं देव गम्भीर शब्द करते भये जो वसुदेवका पुत्र नवमा वासुदेव भया अर रणविषैं चक्रकरि जरासिंध मार्‍या ऐसा कहकरि वसुदेवके रथपर देवोंने नाना प्रकारके रत्नोंकी वृष्टिकरी यह देवनिकी वाणी सुनि रत्नवृष्टि देख सब ही बैरी विद्याधर भयमान इधर उधरतैं वसुदेवके शरणमें आए ॥२१॥ अर वसुदेवके पुत्रनिकूं अर प्रद्युम्न शंबुकुमारकूं विद्याधर पुत्री परणावते भए अर हम वसुदेवकी पठाई तुमपै आई हैं कुशल क्षेमकी वार्ता कहवे अर्थि हमारा आवना भया है अर अनेक विद्याधरनिके ईश्वर भांति भांतिकी भेंट लेय करि वसुदेवके लार नारायणकी भक्तिकूं आवैं हैं ॥ २४ ॥ या भांति वह नागकुमारी हर्षके समाचार कहै है ताही समय आकाशके मार्ग विमाननिके समूह करि विद्याधर वसुदेवके साथ आवते भये सो विमाननितैं उतरि वसुदेवके पीछे बलदेव वासुदेवकूं प्रणामकरि नानाप्रकारकी वस्तु भेंट करते भये ॥ २६ ॥ बलदेव अर वासुदेव पिताकूं देख उठकरि प्रणाम करते भये अर वसुदेवने दोनों छातीसे लगाए अर बहुत असीस दई अर वसुदेव सब बडे भाइनिकूं प्रणाम करते भए प्रद्युम्न अर संबुकुमार यथायोग्य सब बडोंको प्रणाम करते भए अर वह विद्याधर वसुदेवके साथ आएहुते तिनका बलभद्र अर वासुदेवने सन्मान किया व बलभद्र वासुदेवका दर्शनकरि अपना जन्म सफल बनाते भए ॥

अथानंतर—बलदेव वासुदेव दोऊ भाई पश्चिमकी दिशा प्रयाण करते भए। दोऊ भाई आनंदकरि पूर्ण सिद्ध भए हैं सब मनोरथ जिनके जिस क्षेत्रविषैं जरासिंध हत्या या क्षेत्रविषै सब यादवनिके आनंद भया सो वह स्थानक आनंदपुर कहाया तहां हरिने अनेक जिनमंदिर कराए ॥ ३२ ॥ फिर चक्रकी पूजाकरि सब रत्न करि मंडित मधुसूदन आय भरतक्षेत्रकूं जीतता भया तीन खण्डके देव अर दानव अर मानव सब जीते वर्ष आठतक दिग्वजय करी निरंतर इष्ट प्रदान करि सेव्यमान जो कृष्ण सो जीतवे योग्य है तिन सबनिकूं जीतकरि कोटिशिलाकी ओर आया कैसी है वह कोटिशिला मुक्त भये हैं कोटि मुनि जहांतैं इसलिये महातीर्थ है ॥ ३५ ॥ वह

पवित्र शिला ताहि प्रदक्षिणा देय प्रणामकरि सिद्धनिका ध्यान धरि कृष्ण दोऊ भुजानिकूं चार अंगुल उठावते भया वह शिला एक योजन ऊंची अर एक योजन चौडी अर एक योजनही लम्बी अर तीन खंडके सब देव वा शिलाकी रक्षा करैं वह शिला पहला वासुदेव त्रिपृष्ट ताने मस्तक ऊपर हाथ ऊंचे करिए इतनी उठाई अर दूजा द्विपृष्ट ताने मस्तक प्रमाण उठाई ॥ ३८ ॥ अर तीजा स्वयम्भू वाने कंठ पर्यंत उठाई अर चौथा पुरुषोत्तम वाने कुच पर्यंत उठाई अर पांचवां पुरुषसिंह वाने हृदय पर्यंत उठाई ॥ ३९ ॥ अर छठा पुण्डरीक वाने कटि पर्यंत उठाई अर अर सातवां दत्त वाने जंघोंतक उठाई अर आठवां लक्ष्मण वाने गोडा पर्यंत उठाई अर नवमां कृष्ण वाने चार अंगुल उठाई या भांति नव नारायण कोटिशिलाकूं उठावते भए सो कालका योग पाय बडे पुरुषनिका बल घटे है शिला उठावनेके बल करि सबोंने जानी यह महावली है या समान देवबल औरनिका नाहीं सो संपूर्ण दिग्विजय करि अर्द्ध चक्रवर्ती जो कृष्ण सो द्वारकाकी ओर चले सो कईएक दिनमें द्वारका जाय प्राप्त भए कैसी है द्वारका सुन्दर है द्वार जाके अर कैसे हैं कृष्ण उत्तम पुरुषनिकी असीसकरि बढा है आनंद जिनके जैसे स्वर्गविषैं इन्द्र प्रवेश करै तैसे महा शोभायमान जो द्वारावती ताविषैं नरेन्द्र प्रवेश करता भया जब द्वारिका आये तब सब ही विद्याधर साथ आये सो द्वारिका विषैं यथाविधि अपने अपने स्थान तिष्ठे दूसरे दिन सब भूचर खेचर देव भेले होयकरि बलभद्र नारायणका अभिषेक किया अर सबनिने कही यह आधे भरतक्षेत्रके प्रभु हैं यामें संदेह नाहीं यह बलभद्रनारायण प्रसिद्ध पुरुष हैं ॥ ४५ ॥ दोऊ भाई सिंहासन पर विराजकरि प्रथमही जरासिंधका पुत्र सिंहदेव ताका अभिषेक कराया राजगृहका राज्य दिया अति स्नेह किया अर अनेक देश दिये बहुरि राजा उग्रसेनके पुत्र दार ताहि अभिषेक कराय मथुरापुरीका राज्य दिया अर समुद्रविजयके पुत्र रथनेमि श्रीनेमिनाथके दुमात भाई तिनिकूं शौरीपुरका राज्य दिया महानेमि सुनेमि रथनेमि इत्यादि नेमिनाथके दुमात भाई हैं ॥ ४७ ॥ अर हस्तनापुरका राज्य पांडवनिकूं दिया इनसूं हरिका अधिक स्नेह है अर हिरण्यनाभ जरासिंधका

सेनापति सो तो युद्धविषैं अनावृष्टितैं लड परभव गया ताका छोटा भाई रुक्मनाभ राजा रुधिरका पुत्र तासूं अति स्नेहकरि कौशल देश दिया। अर जितने भूमिगोचरी तथा सब विद्याधर हैं तिनको वासुदेवने अपने अपने स्थानक दिए। अर सबनिकूं विदा किए सो पांडवादिक अपने अपने स्थानक गए अर द्वारकाविषै यादव ऐसे रमे जैसे देव स्वर्गविषैं रमै कृष्णके रत्न सात प्रथम सुदर्शननामा चक्र जाकरि शत्रुवर्गकूं सुख नाहीं अर सारंगनामा धनुष जाकी ध्वनि सुनि शत्रु कंपायमान होवें अर सुनदा नामा खड्ग ३ कौमुदीनामा गदा ४ अमोघमूलानामा शक्ति ५ पंचजन्यनामा शंख ६ अर कौस्तुभनामा मणि इत्यादि ७ रत्न वासुदेवके होंते भए तिनकरि अतुल प्रताप यह सात रत्न दिव्यमूर्ति हरिके हितकारी होते भए ॥ ५२ ॥ अर वलभद्रके अपराजितनामा हल सो महा दिव्य आयुध है अर शक्ति नामा मूसल दिव्य गदा अर रत्नमाला इत्यादि रत्न वलदेवके होते भए। कैसा है वलभद्र जीता है रिपुमंडलका पराक्रम जानै ॥ ५३ ॥ अर्धचक्री कहिए कृष्ण वासुदेव उसके सोलहहजार रानी अर आठहजार गणवद्ध देव शरीरके रक्षक ॥ ५४ ॥ तिनके सेवनीक सुखकूं भोगता भया। हरिके सोलह हजार रानी सो देवांगनानिके विभ्रमकी हरणहारी अर वलभद्रके आठ हजार रानी सुरांगनानितैं हू अधिक उन सहित देवनि कैसे सुख भोगता भया ॥ ५५ ॥ सभी यादव जिनमतके अधिकारी हिमऋतु शिशिरऋतु वसंतऋतु ग्रीष्मऋतु वर्षाऋतु शरदऋतु इन छहो ऋतूनिविषैं द्वारिकाके मध्य मणीनिके मंदिर तिनविषैं सुन्दर स्त्रीनिके सहित रमते भए ॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णविजयवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५३ ॥



अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछता भया हे प्रभो ! पांडवनिका विशेष चरित्र मोहि कहो तब संदेहके समूहकूं निवारणहारे गौतमगणधर कहते भये हे श्रेणिक ! हस्तिनापुरविषैं पांडव सुखतैं राज करें कृष्णकी

पवित्र शिला ताहि प्रदक्षिणा देय प्रणामकरि सिद्धनिका ध्यान धरि कृष्ण दोऊ भुजानिकूं चार अंगुल उठावते भया वह शिला एक योजन ऊंची अर एक योजन चौडी अर एक योजनही लम्बी अर तीन खंडके सब देव वा शिलाकी रक्षा करैं वह शिला पहला वासुदेव त्रिपृष्ट ताने मस्तक ऊपर हाथ ऊंचे करिए इतनी उठाई अर दूजा द्विपृष्ट ताने मस्तक प्रमाण उठाई ॥ ३८ ॥ अर तीजा स्वयम्भू वाने कंठ पर्यंत उठाई अर चौथा पुरुषोत्तम वाने कुच पर्यंत उठाई अर पांचवां पुरुषसिंह वाने हृदय पर्यंत उठाई ॥ ३९ ॥ अर छठा पुण्डरीक वाने कटि पर्यंत उठाई अर अर सातवां दत्त वाने जंघोंतक उठाई अर आठवां लक्ष्मण वाने गोडा पर्यंत उठाई अर नवमां कृष्ण वाने चार अंगुल उठाई या भांति नव नारायण कोटिशिलाकूं उठावते भए सो कालका योग पाय वडे पुरुषनिका वल घटे है शिला उठावनेके बल करि सबोंने जानी यह महावली है या समान देवबल औरनिका नाहीं सो संपूर्ण दिग्वि-जय करि अर्द्ध चक्रवर्ती जो कृष्ण सो द्वारकाकी ओर चले सो कईएक दिनमें द्वारका जाय प्राप्त भए कैसी है द्वारका सुन्दर है द्वार जाके अर कैसे हैं कृष्ण उत्तम पुरुषनिकी असीसकरि वढा है आनंद जिनके जैसे स्वर्गविषैं इन्द्र प्रवेश करै तैसे महा शोभायमान जो द्वारावती ताविषैं नरेन्द्र प्रवेश करता भया जब द्वारिका आये तब सब ही विद्याधर साथ आये सो द्वारिका विषैं यथाविधि अपने अपने स्थान तिष्ठे दूसरे दिन सब भूचर खेचर देव भेले होयकरि बलभद्र नारायणका अभिषेक किया अर सबनिने कही यह आधे भरतक्षेत्रके प्रभु हैं यामें संदेह नाहीं यह बलभद्रनारायण प्रसिद्ध पुरुष हैं ॥ ४५ ॥ दोऊ भाई सिंहासन पर विराजकरि प्रथमही जरासिंधका पुत्र सिंह-देव ताका अभिषेक कराया राजगृहका राज्य दिया अति स्नेह किया अर अनेक देश दिये बहुरि राजा उग्रसेनके पुत्र दार ताहि अभिषेक कराय मथुरापुरीका राज्य दिया अर समुद्रविजयके पुत्र रथनेमि श्रीनेमिनाथके दुमात भाई तिनिकूं शौरीपुरका राज्य दिया महानेमि सुनेमि रथनेमि इत्यादि नेमिनाथके दुमात भाई हैं ॥ ४७ ॥ अर हस्तनापुरका राज्य पांडवनिकूं दिया इनसूं हरिका अधिक स्नेह है अर हिरण्यनाभ जरासिंधका

सेनापति सो तो युद्धविषैं अनावृष्टितैं लड परभव गया ताका छोटा भाई रुक्मनाभ राजा रुधिरका पुत्र तासूं अति स्नेहकरि कौशल देश दिया। अर जितने भूमिगोचरी तथा सब विद्याधर हैं तिनकों वासुदेवने अपने अपने स्थानक दिए। अर सबनिकूं विदा किए सो पांडुवादिक अपने अपने स्थानक गए अर द्वारकाविषै यादव ऐसे रमे जैसे देव स्वर्गविषैं रमै कृष्णके रत्न सात प्रथम सुदर्शननामा चक्र जाकरि शत्रुवर्गकूं सुख नाहीं अर सारंगनामा धनुष जाकी ध्वनि सुनि शत्रु कंपायमान होवैं अर सुनंदा नामा खड्ग ३ कौसुदीनामा गदा ४ अमोघमूलानामा शक्ति ५ पंचजन्यनामा शंख ६ अर कौस्तुभनामा मणि इत्यादि ७ रत्न वासुदेवके होंते भए तिनकरि अतुल प्रताप यह सात रत्न दिव्यमूर्ति हरिके हितकारी होते भए ॥ ५२ ॥ अर वलभद्रके अपराजितनामा हल सो महा दिव्य आयुध है अर शक्ति नामा मूसल दिव्य गदा अर रत्नमाला इत्यादि रत्न वलदेवके होते भए। कैसा है वलभद्र जीता है रिपुमंडलका पराक्रम जानें ॥ ५३ ॥ अर्धचक्री कहिए कृष्ण वासुदेव उसके सोलहहजार रानी अर आठहजार गणवद्ध देव शरीरके रक्षक ॥ ५४ ॥ तिनके सेवनीक सुखकूं भोगता भया। हरिके सोलह हजार रानी सो देवांगनानिके विभ्रमकी हरणहारी अर वलभद्रके आठ हजार रानी सुरांगनानितैं हू अधिक उन सहित देवनि कैसे सुख भोगता भया॥ ५५ ॥ सभी यादव जिनमतके अधिकारी हिमऋतु शिशिरऋतु वसंतऋतु ग्रीष्मऋतु वर्षाऋतु शरदऋतु इन छहो ऋतूनिविषैं द्वारिकाके मध्य मणीनिके मंदिर तिनविषैं सुन्दर स्त्रीनिके सहित रमते भए॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णविजयवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५२ ॥



अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछता भया हे प्रभो! पांडवनिका विशेष चरित्र मोहि कहो तब संदेहके समूहकूं निवारणहारे गौतमगणधर कहते भये हे श्रेणिक! हस्तिनापुरविषैं पांडव सुखतैं राज करैं कृष्णकी

प्रबलता करि बढा है हर्ष जिनके ॥ २ ॥ जब हस्तिनापुरविषै पांडवनिका अखंड राज्य भया तब प्रजाकूं अति सुख उपजा सो सबही प्रजा दुर्योधनादिककूं भूल गई ॥३॥ एक समय पांडवनिकी सभाविषै नारद आया अढाई-द्वीपविषै अखंड है गति जाकी अर प्रचंड है चित्त जाका अर स्वभाव हीकरि कलहप्रिय है सो सबही भाईनिने आदर सहित नारदका विनय किया बहुरि नारद राजलोकमें गये सो सबनिने विनय किया अर द्रौपदी काहू कार्यकरि व्याकुल चित्त हुती सो निकसिवे पैसवेकरि नारदकूं न देख्या ॥ ५ ॥ सो अग्नि जैसे तेलके प्रसंगकरि प्रज्वलित होय तैसे नारद क्रोधकरि प्रज्वलित भया अनादरकरि दुखित प्राणी सज्जनका अवसर न जाने ॥ ६ ॥ द्रौपदीकूं दुख देनेका अभिप्राय जाके सो याके हरायवेका निश्चय करि धातकीखंडका पूर्वार्द्ध भरतक्षेत्र तहां अंगदेशविषैं अमरकंकानामा नगरी तामें प्रवेश किया तहां राजा पद्मनाभ सो अतिकामी स्त्रीनिका अति लोलुपी वासूं मिल्या ॥८॥ वाने जानी यह नारद अढाईं द्वीपमें फिरै है सो मेरीसी रानी भी काहूके है ऐसा विचार यह नारदके साथ अपने राजलोकमें गया सब स्त्री नारदकूं प्रणाम करती भई तब राजा नारद से पूछी हे प्रभो ! तुम मेरीसी राणी काहू और ठौर हू देखी तब नारद जानी याके स्त्रीनिका गर्व है अर यह विषयाभिलाषी है जब याके समीप द्रौपदीके रूपकी लावण्यता लोकातीत वर्णन करी वाके द्रौपदीकी अभिलाषारूप पिशाच लगाय-करि द्वीप क्षेत्र नगरोंकी वार्ता करि तत्काल आप विहार कर गया ॥ ११ ॥ अर राजा पद्मनाभ द्रौपदीके अर्थि संग्रामकनामा पातालवासी देव ताहि आराधता भया ॥ १२ ॥ सो वह देव याका आराध्या थका अर्जुनकी स्त्री द्रौपदी ताकूं सूतीकूं सेज सहित उठाय राजा पद्मनाभकी पुरी ले गया ॥ १३ ॥ अर देवने पद्मनाभसूं कही वाहि लाया हूं सो तेरे मन्दिरके उपवनविषै है तब यह जाय करि द्रौपदीकूं देखता भया मानों साक्षात् देवांगना ही है ॥१४॥ सो द्रौपदी सर्वतोभद्रनामा महलविषै सूती सो और ही स्थानक देखकरि जानी यह स्वप्न है सो स्वप्नकी शंका करि सेजविषै सोय गई ॥ १५ ॥ अर लग रही है आंख जाकी तब वाका अभिप्राय जानि यह राजा धीरे

धीरे वाके निकट जाय प्रिय वचन कहता भया, हे विशालनेत्रे ! घटस्तनी ! कहिये घट समान है स्तन जाका यह धातकीखंडद्वीप है मैं पद्मनाभनामा राजा हूं सो नारदने तेरा मनोहररूप वर्णन किया ताके अर्थि मैं देव आराध्या सो देव तोहि ले आया है सुनकरि यह महा सती चकितचित्त होय रही सो मनमें चितवती भई महा दुःख मेरे उदय आया सो अब यही प्रतिज्ञा है जौंलग मोहि अर्जुनका दर्शन न होय तौलग मेरे आहारका त्याग है अर शरीरके संस्कारका त्याग है ॥ २० ॥ कैसी है द्रौपदी अभेद्य है शील जाका सो शीलरूप वज्रके कोटमें बैठी राजा पद्मनाभकूं कहती भई कैसा है वह कामकरि पीडित है चित्त जाका द्रौपदी कहै है मेरे भाई तो बलभद्र नारायण हैं अर अर्जुन मेरा पति है अर मेरे दोय जेठ एक युधिष्ठर दूजा भीम सो महा योधा अर दोय देवर नकुल अर सहदेव सो यमराज समान हैं सो उनके मनोरथरूप रथ जल अर थलविषै विचरे हैं कोई निवारवे समर्थ नाहीं यातैं जो तू अपना कल्याण चाहै है अर कुटुम्बका भला चाहे है तो मोहि शीघ्रही मेरे स्थानकूं पहुंचा देय मैं कालकूटविष समान हूं ॥ २४ ॥ याभांति द्रौपदीने कही परन्तु यह आग्रह न तजै याका रूप देख और नारीनिसे इच्छा घट गई तब यह महासती एक बुद्धि उपाय वासूं कहती भई मेरे पीहर सासराके एक मासमें न आवें तो तेरी इच्छा होय सो करना तब वह सुनकरि चुप हो रहा अर अपने राजलोककी सर्व स्त्री याके लुभावनेके अर्थ रक्खीं अर यह महा सती निर्भय होय आहारका त्याग करती अश्रुपात डारती अपने पतिकी बाट देखै अर वहां हस्तिनापुरविषै प्रभात समय द्रौपदीकूं न देखिकरि पांडव व्याकुल भये कोई उपाय न जाना तब यह पांचों भाई हरिके निकट गये कैसे हैं हरि पराये दुःखकर दुःख है जाके सो सब भरतक्षेत्रविषै द्रौपदी हेरी सो काहू ठौर न पाई तब सब यादवनिने विचार किया जो या क्षेत्रतैं और क्षेत्रविषै कोई क्षुद्र ले गया तब सब यादव भेले होय मंत्र करै हैं ताही समय नारद आया समस्त यादवनिकरि भरी जो सभा ताविषै हरिसे कही मैं धातुकीखंडविषै द्रौपदी अति दुर्बल अमरकंका नामा नगरीविषै पद्मनाभ नामा राजाके मंदिरविषै देखी सो निरंतर आंसू डारै है । अर पद्मनाभके राजलोककी स्त्री ताहि आदरसे सेवै हैं अर शीलमात्रही है आधार जाके सो निस्वास डारै है यह द्रोपदीकी

वार्ता नारदके मुखतैं सुनकरि कृष्ण नारदकी प्रशंसा करते भये अर प्रसन्न भए। कैसा है नारद बुरा भी करै अर भला भी करै तब कृष्ण बोले वह दुष्ट द्रोपदीकूं हरिकर कहां जावेगा वह मृत्युकूं चाहै है सो वाहि कालके मंदिर पहुंचावेंगे याभांति कहकरि कृष्ण वैरीसे द्वेषरूप भए अर द्रोपदीके लायवेकूं उद्यमी भए वासुदेव दक्षिणके समुद्रके तट रथ चढि गए ॥३८॥ तहां लवण समुद्रके अधिष्ठाता देवकूं आराधिकरि पांचो पांडवनि सहित धातुकीखंडके भरतक्षेत्रमें गए अमरकंका नामा नगरीके उद्यानविषैं विराजे सो पद्मनाभकूं इनकी वार्ता हलकारोंने कही जो छह रथ हैं तिनमें कृष्ण अर पांच पांडव हैं अर उनके संग सैना कुछ भी नाहीं यह वार्ता सुनकरि राजा पद्मनाभ चतुरँग सेनासहित इनसे युद्ध करिवे अर्थि नगर बाहर निकस्या सो पांडवोंने युद्धकरि भगाया सो पीछे नगरमें पैठा अर नगरके द्वार जुड़ि गढपकरि बैठा सो गढ़ पांडवनिकरि अलंघ्या तब कृष्ण क्रोधकरि गढ़के लातकी दई सो गढका चूर होयगया कोट दरवाजे सब चकचूर भए अर नगरके मंदिर ढहने लगे लोक व्याकुल होय भाजे भाजे फिरैं पुरमें कोलाहल बहुत भया ॥ ४४ ॥ तब वह पद्मनाभ नगरके लोक अर राजलोक सहित कोई उपाय न जानि भयकरि व्याकुल द्रोपदीके शरण गया महा कंपायमान शीघ्रही द्रोपदी पर जाय कहता भया हे देवी ! हे दयावती ! हे सौम्य ! हे पतिव्रते ! क्षमा करो क्षमा करो मुझे अभयदान देवो मैं अपराधी तिहारी शरण आया हूं ॥ ४६ ॥ तब याहि शरण आया जानि यह महासती शीलवंती कृपावती कहती भई हे राजा ! तू स्त्रीका भेष धरि वासुदेव स्वामीके शरण जावहु वह नरोत्तम महा दयाल हैं जो अपराध भी करै अर उनके पांवों पड़े तो क्षमा करैं वह सबही पर दयावान हैं अर स्त्री तथा बालक पर अति दयावंत है जे शस्त्रसे डरैं अर युद्धसे डरैं तिनकूं कान्ह कबहूं न मारैं द्रोपदीके यह वचन सुनि वह राजा पद्मनाभ आप स्त्रीका भेष धरि अपनी स्त्रीनि सहित कृष्णके शरण आया वह शरणागत पालक पृथिवीपति वाकूं अभयदान देय विदा करते भए। कैसे हैं कृष्ण जो शरण आवै उसके भयके हर्ता हैं अर दुष्टनिकूं दंडके दाता हैं।

अथानंतर—द्रोपदी कृष्णकूं प्रणाम करि कुशलक्षेम पूछती भई अर कृष्णने ताकी कुशलक्षेम पूछी अर अर्जुन द्रोपदीकूं उरविषें लगाय बिरहविथा निवारी अर अपने प्रस्वेद सहित कर तिनकरि याकी चोटी खुल रही हुती सो बांधी अर याके प्रतिज्ञा हुती जादिन पतिकूं देखूं ताही दिन भोजन करूं अर पति न आवै जेते मेरे शरीरका संस्कार नाहीं सिरके विखरे बाल न सवारूं जब पति आवैगा तब ही वेणी वन्ध करेगा वेणी कहिए चोटी सो बांधेगा सो पतिहीने चोटी बांधी अर ताहीसमय स्नानकरि पांचो पांडवनि सहित कृष्ण भोजनकरि, द्रोपदीकूं भोजन कराया अर द्रोपदी अपना दुःख निवेदन कर आंसूनिसहित नाख्या। भावार्थ—आंखोंमें आंसू न पडे मानो दुःख ही गया ॥ ५३ ॥ हरि जो है सो द्रोपदीकूं रथमें चढाय ले चले समुद्रविषें आय अर शंख बजाया सो शंखके शब्दकरि दशों दिशा पूरित भई ता समय या भरतक्षेत्रका वासुदेव कपिल वहांके तीर्थेश्वरके दर्शन करने आया हुता तहांकी चंपापुरी ताके उद्यानविषें भगवानका समोशरण हुता सो कपिलने प्रभुकूं पूछी हे नाथ! यह शंख कौनने बजाया मेरे समान शक्तिका स्वामी दूसरा वासुदेव मेरे इस भरतक्षेत्रमें नाहीं याभांति कपिलने पूछी तब जिनेंद्रने कही यह जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रका कृष्ण नामा नोवां नारायण है सो अमरकंकापुरीके राजा पद्मनाभने द्रोपदी हरी ता कारण इनका आगमन भया तब कपिलने प्रभुसे कही हे नाथ! वहांका वासुदेव यहां आवे अर मैं न मिलूं और उनकी पाहुणगति न करूं यह योग्य नाहीं। उनसे मिलनेकी मेरी इच्छा है तब भगवानने कही किसी कालमें तीर्थेश्वरका तीर्थेश्वरसे अर चक्रेश्वरका चक्रेश्वरसे अर हरिसे हरिका अर प्रतिहरिका प्रतिहरिसे अर बलभद्रका बलभद्रसे मिलाप न भया अर न होयगा ॥५८॥ सो तू जायगा तो तेरा अर उसका मिलाप ध्वजानिकरि होयगा तू वाकी ध्वजा देखेगा अर वह तेरी देखेगा तेरे शंखका नाद वह सुनैगा अर उसके शंखका नाद तू सुनेगा मुखदर्शन कदाचित न होय सो यह गया जो प्रभुने कहा हुती सो भया, याके रथकी ध्वजा उसने देखी अर उसके रथकी ध्वजा वाने देखी अर शंखध्वनि सुनी बहुरि कपिल अपनी चंपा-

पुरी गया अर अन्यायमार्गका कर्ता अमरकंकापुरीका राजा पद्मनाभ ताका बहुत तिरस्कार किया जातैं आगेकूं ऐसे काम न करै ॥ ३१ ॥ ज्यों कृष्ण समुद्रकूं तिर गये हुते त्योंही शीघ्रही तिरि पीछे जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें आए समुद्रके तट केशव तो विश्राम किया। अर पांडव नावकरि गंगाकूं तिरि दक्षिण तटविषैं आय तिष्ठे भीमका स्वभाव कौतुकी तानैं कृष्णके निकट नाव पीछे न भेजी अर नाव छिपा दी अर कृष्ण ताही समय समुद्रके तटसे गंगाके दूसरे तट द्रोपदीसहित आए अर वहांहीसे पांडवोंको पूछी तुम गंगा कैसैं तिरे ॥ ६५॥ तब भीम कृष्णकी शक्ति देखिवेकूं झूठ बोले जो हम भुजानितैं तिरे तब कृष्ण जानी यह सत्य कहै है तब आप महाबली तुरंग अर सारथी सहित रथकूं एक हाथ पर उठायकरि एक भुज अर जंघानिकरि अथाह नदीकूं ऐसे उलंघी जैसैं कोई गोडा प्रमाण जलकूं उलंघे ॥ ६६ ॥ तब पांडव आश्रयकूं प्राप्त भए अर शीघ्रही सन्मुख जाय प्रणाम करते भए अर वासुदेवकी अतुल्य शक्ति ताकी स्तुति करते वासुदेवकूं उरसे लगावते भए ॥ ६७ ॥ अर भीमका हास्यरूप स्वभाव सो हंसकरि कृष्णतैं क्रीडाकी वार्ता कहता भया जो हमने तिहारी शक्ति देखवे अर्थ पाछी नाव न पठाई सो तिहारी शक्तिका कहा कहना तब कृष्ण इनतैं विरक्तचित्त भए प्रथम तो बडोंसे हास्य न करना अर जो उनके प्रसन्न होवे अर्थ हास्य करिए तो देश काल देखि रीतिप्रमाण उनका भाव देखि काम करिए सो इन विना समय हास्य करी ताकरि कृष्ण उदास होय पांडवनिसूं कहते भए हे कुपांडवो ! जो मनुष्यसे न बनै ऐसे अमानुषिक मेरे कर्म या जगतविषैं तुम अनेक बार देखे तौहू तिहारे संदेह न गया। या गंगाके उतरिवेविषैं मेरी शक्ति तुमने क्या देखी ॥६९॥ या भांति इनसे उलाहना देते मनमोहन इन सहित हस्तिनापुर आए अर अपनी बहन सुभद्रा उनका पोता परीक्षित अर्जुनके पुत्रका पुत्र ताहि हस्तिनापुरका राज देय पांडवनिकूं यहांसे काढे ॥ ७० ॥ अर आप समस्त सावंतनिसहित द्वारका गए अर सब यादव सन्मुख आगे कृष्णपुरीमें जाय आनंद उपजाया अर निज स्त्री हैं उनका बहुत सन्मान किया ॥७१॥ अर पांडव हस्तिनापुरसे निकल दक्षिण मथुराकी ओर स्वामीकी

आज्ञाप्रमाण चले स्वामीकी आज्ञा इनकूं ऐसी भई जैसें विना समय असणिपात पड़े सो यह जायकरि दक्षिण मथुराविषैं प्रवेश करते भए सो दक्षिण मथुरा अनेक प्रवीण जन तिनकरि भरी है अर पांडव भी महा निपुण हैं ॥ ७२ ॥ यहां समुद्रकी लहर महा मनोहर अर तटके वनविषैं लौंग इलायची अगर चंदन तिनकी सुगंध पवन-करि सब दिशा सुगंध रूप होय रही हैं ऐसे मलयागिरिके तट तिनविषैं पांचो भाई विहार करते भए ॥ ७३ ॥ यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! कहां लवण समुद्र जम्बूद्वीपके परे सो जम्बूद्वीप जंबू-वृक्षोंकरि मंडित है अर कहां धातकीखंडकी पृथिवी जहां यहांके मनुष्यकी अगम्य तहां वासुदेव गए अर कार्य कर आए सो जिनधर्मके प्रभावसे क्या क्या सिद्ध न होय जिन जीवोंने पूर्वभवविषैं जिनधर्मका आराधन किया है तिनकूं कुछ दुर्लभ नाहीं ॥ ७५ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्रौपदीहरणपांडवदक्षिणमथुरानिवेशवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५३ ॥

अथानंतर—श्रीनेमिकुमार तरुण अवस्था संयुक्त तिनकूं इन्द्रलोकतैं कुवेर नितप्रति वस्त्र आभूषण लावे अर कल्पवृक्षोंकी माला अर सुगंध द्रव्यका लेप निरंतर लावे आप बडे २ राजपुत्रोंकरि वेष्टित सब यादवनिकरि शोभित जो सभा ताविषैं विराजे हुते वह सभा वलभद्र वासुदेव आदि कोटिक यादवनिकरि पूरित जाविषैं अनेक राजा आवै हैं नमस्कार करै हैं सभाका नाम कुसमचक्रा ॥ २ ॥ तहां इंद्रका निर्मापा जो सिंहासन ता ऊपर श्रीतीर्थेश्वर विराजे अर वलभद्र वासुदेव दोऊ भाई सिंहासनके तले दोऊ ओर वैठे सभा अति सोहती भई मानूं जिनराजके समीप सौधर्म ईशान इन्द्र वैठे हैं सभाविषैं कृष्ण वासुदेव अमृतरूप कथा करते हुते कैसे हैं कृष्ण अनेक राजानिकरि सेवनीक हैं वासुदेवपद जिनका अर कैसे हैं राजा प्रगट है शूरवीरता अर शरीरकी दीप्ति जिनकी अर महा विभूतिकरि मंडित है ता समय सभाविषैं वलवंतनिके वलकी वार्ता चली तब काहूने अर्जुनकी प्रशंसा करी अर काहूने युधिष्ठरकी प्रशंसा करी काहूने भीमकी प्रशंसा करी अर काहूने नकुल सहदेवकी

प्रशंसा करी काहूने बलभद्रकी प्रशंसा करी काहूने हरिकी प्रशंसा करी जो पर्वत उठाय लिया अर कोटिशिला उठाई सो सबोंने देखी या भांति सभाविषैं अनेक राजानिकी प्रशंसा भई तब पद्मनाभ बलभद्र बोले तुम सब औरनिकी वृथा स्तुति करो हो श्रीभगवान नेमि जिनेन्द्रकासा बल तीन लोकमें नाहीं यह चाहें तो अपने करतल करि पृथिवीकूं उठाय लेंय अर समुद्रकूं दिशानिविषैं बखेर देवें यह जगनायक हैं इनकासा बल सुरनरमें नाहीं यह बचन बलभद्रके सुनकरि वासुदेव मुलककरि जिनदेवतैं कहते भये अद्भुत बलके धरणहारे आप हो सो मल्लयुद्धमें क्यों न परखिये तब भगवान जिनेश्वरदेव कही हमसे मल्लयुद्ध तो तुम कहा करोगे देखें हमारा चरण ही सिंहासनसे चलाओ तुम बडे भाई हो तुमतैं मल्लयुद्ध कहा करिये ॥ १० ॥ तब कृष्ण जिनराजके बलके परखिवे अर्थि उठकरि चरण चलायवेकूं उद्यमी भये सो चरणकी एक अंगुली हू चलाय न सके कैसे हैं जिनके चरण कोटिक चन्द्रमाकी ज्योतिकूं हरैं ऐसे हैं नख जिनके सो कृष्ण खेद खिन्न होय पसेवरूं भर गये अर स्वांस भर आये तब हाथ जोड विनती करते भये हे देव! तिहारा बल लोकोत्तर है तुम समान त्रैलोक्यमें अर कोई बलवान नाहीं तिहारा गर्भ अर जन्म देवनिकरि पूजनीक है हम मंद बुद्धि धरकरि यह अयुक्त कौतुक किया सो क्षमा करो अर चित्तमें बडा पश्चात्ताप भया जो मैं विना बिचारे अयुक्त किया ताका फल अपमान भया अर मनमें विचारी इनके बलका थाह नाहीं अथाह बात है बासुदेवके बलका गभ हुता सो गया अर साथमें इंद्रका आसन चलायमान भया सो इंद्र देवनि सहित आय प्रभुकी पूजाकरि स्तुतिकरि नमस्कारकरि अपने धाम गये ॥ १३ ॥ अर भगवान जिनचंद्र अनेक देव अर राजकुमारनि सहित अपने महल पधारे अर हरि हू निगर्व होय अपने धाम गये अर हरिके चित्तविषैं कछुएक शंका उपजी जो राजका अर्थी होय सो जिनराजतैं भी सकै विद्यावान बलवान पुरुषके बडे राजमें नाहीं ऐसा विचार कृष्णके होता भया अर जिनराज तो सदा प्रतापरूप इनके कुछ वितर्क नाहीं महा शांतरूप हैं ॥

अथानंतर—निरंतर जिनचंद्रकूं अपने सैकडों वल्लभ तिनसहित केशव सेवै स्नेहका भरचा दर्शन करै अर्चा करै ॥ १५ ॥ यहां एक और कथा चलै है विजयार्द्धविषै एक श्रुतशोणितनामा नगर तहां वाणनामा राजा पृथ्वीविषै प्रसिद्ध अर रणसंग्रामविषै महा शूरवीर ताके उषानामा पुत्री सो गुण कलारूप आभरण तिनकरि शोभित पृथ्वीमें प्रसिद्ध ताने प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्धके उदार गुण सुने सो ताके चित्तमें अनिरुद्ध वस्या ताका चित्त हू कोमल अर अनिरुद्ध हू कोमल तथापि अनिरुद्धके गुणनिका श्रवन ताके मनविषै अर तनविषै मदनरूप आताप उपजावता भया। यहां कोई प्रश्न करै कोमलकूं कोमल कैसैं आताप उपजावै, ताका समाधान। ताके भौंह वक्र अर इनकी वृत्ति वक्र सो ता वक्रवृत्तिने ताका मन अपने आधीन किया ॥ १८ ॥ सो याके चित्तकी व्याकुलता कोऊ जाने नाहीं तब वाहि जे हितकारी स्त्री हैं तिनि पूछ्या सो वाने अनिरुद्धका वृत्तांत कह्या जो मैं ताके गुण सुने हैं सो वाहि वरूंगी तब वाकी सखी विद्याधरी अनिरुद्धकूं रात्रिविषै विद्याधरनिके लोक ले गई ॥ १९ ॥ सो ले जायकरि उषाके सेजपर शयन कराया प्रभात ही उठिकरि अनिरुद्ध देखे तो कोई अर ही स्थानक अर ही रत्नमई मंदिर हैं तहां मृदुशय्याविषैं आप पौढ्या है अर उठकर देखे तो एक सुंदर कन्या बैठी है ॥ २० ॥ कैसी है कन्या? सुंदर हैं नितम्ब जाके अर कठिन हैं कुच जाके अर मनोज्ञ है तन जाका अर तनके मध्य मनोहर त्रिवली जाके सो वाहि देखकरि अनिरुद्ध चिंतवता भया यह मनकी हरणहारी कौन है शची है या पद्मावती है या यह कोऊ मनुष्य वधू है ऐसी अबतक देखिवेमें न आई अर स्थानक हू कोऊ अपूर्व नजर आवै है नेत्रनिका हरणहारा इंद्रलोक समान यह स्थानक है यह सत्य है या असत्य है जाग्रत है या स्वप्न है सोते मनुष्यका मन भ्रमै है सो यह मेरा मन ही न भ्रमै है ऐसी आसंका अनिरुद्धके मनमें उपजी तब चित्रलेखानामा सखी सब वृत्तांत कहती भई अर वाही समय सखी इन दोऊनिका एकांतविषै गंधर्वविवाह करावती भई सो अनिरुद्धकुमार उषाके महलहीमें विराजै निरंतर सुरतरूपी अमृतका पान करते ये दोऊ देव देवांगना समान वींद वींदनी तिनका सुखसूं काल

व्यतीत होय यह समाचार हरिने सुने तब बलभद्र अर प्रद्युम्न शंबुकुमार आदि कईएक यादवनि सहित तत्काल अनिरुद्धके लायवे अर्थि विमानके मार्ग राजा बाणके नगर गये ॥ २ ॥ अर यह विवाह उषाने सखीके समीप एकांतमें किया वाहि माता पिता न जानैं अर कृष्ण पुत्रकूं अर पुत्रबधूकूं लेवे अर्थि तहां गए सो वह राजा कृष्णसूं युद्ध करवेका उद्यमी भया, नर तुरंग रथ हाथी यह चतुरंग सेना सहित इनपर आया सो वाहि जीतिकरि वासुदेव उषासहित अनिरुद्धकूं लेयकरि द्वारिका आये ॥ २७ ॥ अनिरुद्धके विरहका दुःख सब यादवनिकूं हुता सो अनिरुद्धके आयवे करि सब ही आनंदरूप भए द्वारकाविषैं सब ही यादव देवनि समान क्रीडा करैं।

अथानंतर—वसंतऋतु आई सो नगरके नर नारि सब ही वनविषै क्रीडाकूं गये वनविषैं सब वृक्ष फूले सो कृष्ण हू अपनी सकल राणीनि सहित गिरनारके वनविषैं क्रीडाकूं गए सो विनतीकरि श्रीनेमिनाथकूं भी ले गए यद्यपि भगवानके किसी क्रीडाका अनुराग नाहीं तथापि भाई अर भौजाई तिनके आग्रहसूं गए अनेक अश्व अनेक रथ अनेक हस्ती अर अनेक योधानिकरि युक्त महा सुंदर वस्त्राभरण पहिरे जगतके ईश्वर नेमीश्वर अर तीनखंडके ईश्वर बलदेव अर वासुदेव यह तीनों ही भाई वनमें गए जिनेन्द्रके वृषभकी ध्वजा अर बलदेवके ताडकी ध्वजा अर वासुदेवके गरुडकी ध्वजा अर समुद्रविजयादिक दशों भाईनिके पुत्र सब ही तरुण वयवाले इनके साथ गए अर कृष्णका पुत्र प्रद्युम्न पुष्पनिके हैं बाण अर धनुष जाके अर मगरकी है ध्वजा जाके सो दशूं भाइनिके पुत्रनिके संग नेमिकुमारके पीछे चाले ॥ ३१ ॥ अर नगरके लोक अपने अपने वाहननिपर चढे यथायोग्य वस्त्राभरणकरि मंडित वनक्रीडाके वास्ते बनमें गए अर हरिकी राणी आदि अनेक राणी पालकी रथ इत्यादि अनेक वाहननिपर चढि बनमें गईं वह गिरनारनामा गिरि नर नारीनिकरि अति शोभता भया गिरिके बन ऐसे शोभते भए जैसे सुमेरुके वन देव देवांगनानिकरि सोहैं अर गिरिपर जायकरि सब नर नारी अपने अपने वाहनसूं उतरि वन विहार करते भए गिरिके तट अर बन तिनविषैं स्त्री पुरुष जलकेलि आदि अनेक केलि

करते भये सब जगह नर नारी फैलि गये वह वंसतका समय तामें सुगंध पुष्पनिका मकरंद विस्तर गया अर शीतल मंद सुगंध पवन दक्षिणकी बाजती भई ताकरि प्राणीके खेद विलय होते भये यद्यपि यादवनिके राजमें काहूकूं काहू प्रकारका खेद नाहीं तथापि जितनी विषयक्रीड़ा है उतना सब खेदरूप ही है सो क्रीडामात्र खेद दक्षिणकी पवनकर निवृत्त भया आमनिके मौर लागे हैं तिनपर कोयल मिष्ट शब्द करै हैं जिनके शब्द सुनकरि कामका उद्दीपन होय है ॥३५॥ अर भंवर पुष्पनिका मकरंद पीय मधुर शब्द करै हैं अर कुर्वकजातिके वृक्ष अर मौलसरी आदि सुगंध वृक्ष भंवरनिके समूहकरि सुंदर दीखै हैं अर द्विपद कहिये मनुष्य अथवा कोयल आदि मनोहर पक्षी अर षट्पद कहिये भ्रमर तिनके शब्दकरि गिरिके वन मनोज्ञ भासे हैं जैसे शरणागतकरि शरणागत प्रतिपाल सोहै तैसैं वह वन आश्रितनिकरि शोभता भया अर हस्तीनिके कुंभस्थलविषैं अर दोऊ काननिविषैं भंवर गुंजार करते हुते सो आमनि की मंजरीपर गये सो यह बात उचित ही है नई वस्तुविषैं रुचि विशेष होय ॥३८॥ पुष्पनिके भारकरि नय गये वृक्ष सो पुष्पनिके चूंटने अर्थि स्त्रीनिने हाथकरि हिलाये ॥ ३९ ॥ अर कुछएक ऊंची हुती शाखा जिनकी सो स्त्रीजननिने पुष्पनिके ताई नीची करी सो उनके करका स्पर्श पाय प्रफुल्लित होते भये जैसे प्रीतम प्रियाके करका स्पर्श पाय प्रसन्न होय ॥४०॥ ता वनविषैं तरुणजन अपनी तरुणीनिसहित वनभ्रमणका सुख भोगकरि पुष्पनिकी सेजपर ऋतुक्रीडा करते भए ॥ ४१ ॥ ता वसंतऋतुविषैं बन वनमें अर नानाप्रकारके गुलोंके लतागृहमें अर तरु तरु प्रति अर सरोवर प्रति अर वापिका प्रति यादव अर समस्त नगरके लोक क्रीडा करते भए। माधव कहिए कृष्ण सोई भया चंद्रमा तिनि षोडस सहस्र स्त्रीनि सहित चैत्रमास वनमें व्यतीत किया कैसा है चैत्रमास फैल रह्या है फूलनिका मकरंद जाविषैं ऐसे चैत्रमासमें माधवचंद्र महा सौभाग्यकूं धरे बनविषैं विहार करते भए। हरिकी सबही स्त्री मनकी हरणहारीं पतिकी आज्ञातैं वृक्ष अर वेलकरि रमणीक जो वह वन ताविषै श्रीनेमि जिनेंद्रकूं विहार करावती भई ॥ ४२ ॥ वे केशवकी कामिनी अपने मुखकी सुगंधताकरि

वाचाल जे मधुकर तिनकरि वेष्टित हैं अर बनकी लतानिके पुष्पनिकरि चूंटिवेविषैं तत्पर हैं अर मदनके मदकरि आलस्यरूप है मन अर नेत्र जिनके ॥४५॥ सो वह मुकुंदकी मनमोहिनी अपना देवर जो देवाधिदेव ताकूं नानाविधि पतिकी आज्ञाप्रमाण बनक्रीडा करावती भई अपनी इच्छासूं नाहीं कोई एक भावज करसूं कर ग्रहि बनविषै विहार करावै अर कैयक चंद्रवदनी प्रभूकूं बनकी शोभा दिखावै कैयक तालके तमालके बीजना तिनकरि वयार घालैं अर कैयक आशोकवृक्षके नवीन पल्लवकरि सेहरा बनावैं ॥ ४७ ॥ अर कैयक पुष्पमाला पहरावैं अर कैयक सिरपर फूल टांमें कैयक कंठविषैं पुष्पनिके आभूषण पहिरावैं ॥४८॥ या भांति वसंतकी ऋतुविषैं भगवान नवयौवन मधुसूदनकी प्रियानिकरि लडाया थका हर्षसूं क्रीडा करता भया। वह कृष्णकी कामिनी जिनसमान संसारमें कामिनी सुंदर नाहीं सो भक्तिसूं जैसैं सेवक प्रभुकी सेवा करै तैसैं यह नेमीश्वरकी सेवा करती भई दोय मास वसंतके हरिने बनक्रीडाकर पूर्ण किए बहुरि ग्रीष्मऋतु आई सो सूर्यकी किरण अति तीव्र भई तव हरिकी आज्ञातें हरिकी प्रिया जिनेंद्रसूं जलक्रीडाका आग्रह करती भई। गिरनार गिरि शीतल नीझरनानिकरि महा मनोहर तहां जलके निवाण पवित्र जलकरि पूरित तिनविषैं तीर्थेश्वर भोजाइनिके आग्रहसूं जलक्रीड़ा करते भये यद्यपि भगवान स्वतःस्वभाव रागरूप रजसूं पराङ्मुख हैं तथापि ता समय ॥ ५१ ॥ जलविषैं तिरना डुबकी लेना अर दूर जायकरि निकलना अर परस्पर पिचकारीनिकरि रमना याभांति यदुपति जलक्रीडा करते भए। वे भावज भगवानके मुखकमलपर जल डारती भई। वे षोडस सहस्र अर प्रभु अकेले परंतु अपने हाथनिके छांटनिकरि अर पिचकारीनिकी धारानिकरि सबनिकूं हराई सब पीछे होय गई वह जगदीशकी जलक्रीडा जगतके मनकूं हरती भई जगतके जीवनिनै ऐसी क्रीडा कबहुं न देखी अर भांति भांतिकी सुगंधकरि जलहू अति सुगंधरूप होय गया जापर भंवर गुंजार करैं सो जल मनुष्यनिके मनकूं हरता भया ॥ ५४ ॥ ता जलक्रीडाकरि तरुणीनिका ग्रीष्मका दाह मिट्या जैसे एक मोटा गजराज हथनियोंके समूहकूं जीते तैसैं अकेला जिनराज जलकेलिविषैं भौजाईनिके

समूहकूं जीतता भया वह संपूर्ण स्त्री वा जलकेलिविषैं तृप्त होती भई च्युत होय गए हैं करणाभरण जिनके अर तरल होयगई है दृष्टि जिनकी अर धूसरे होय गए हैं अधर जिनके अर शिथिल होय गई हैं कटिमेखला जिनकी विखर रहे हैं केश जिनके हरिकी प्रियानिकी सखीजन वस्त्राभूषण नवीन लाई सो स्नानकरि उन पहरे अर भगवान नेमिजिनेंद्र हू स्नान कर नवीन वस्त्राभरण पहरे जिन वस्त्रनिविषै जलकेलि करीहुती सो वस्त्र पखालवेके अर्थि नेत्रनिकी सैनकरि जामवंतीकूं जिनेंद्रने आज्ञा करी तव वह भौंह टेढीकरि कहती भई मेरा पति नागशय्यापर शयन करै है जाविषैं कोटिक भुजंगनिके फण तिनपर मणि तिनकी ज्योतिके मंडलकरि दुगुणित भई है मुकुटके मणीनिकी प्रभा जाकी अर मेघकी ध्वनिकूं जीते ऐसा जो शंख वाहि वजावै है जाकर धरती आकाश शब्दायमान होय है अर शारंग नामा धनुष जाहि कोऊ देखि न सकै ताहि चढावै है ॥ ६१ ॥ ऐसा मेरा भरतार सो मोहि कबहूं ऐसी आज्ञा न करै अर तुम देवर होयकरि मोसूं वस्त्र पखालवेकी आज्ञा करी सो उचित नाहीं ॥ ६२ ॥ मैं तो आपकी माता समान हूं यह वचन जामवंतीके सुनिकरि कोई कन्हैयाकी कामिनी वाहि कहती भई हे निर्लज्ज ! यह अनंतगुणके स्वामी त्रैलोक्यनाथ इनसूं पीछा जवाव कहना योग्य नाहीं तैंने यह वचन विना समझसूं कहे ॥ ६३ ॥ यह वार्ता उनके परस्पर भई तव भगवान जामवंतीसूं कहते भए तेरा पतिका अद्भुत पौरुष कहा जो औरनिसूं न वनै सो शंखका वजावना अर धनुषका चढावना अर नागशय्यापर शयन करना वताय सो यह कहा कठिन कार्य है ऐसा कहकरि आप शीघ्रही नगरमें आये राजमंदिरविषैं प्रवेश किया ॥ ६४ ॥ अर नागशय्यापर आरोहण किया वह शय्या चलायमान जे सर्प तिनके फणनिकरि भयंकर है अर धनुष चढाया अर शंख पूरा भगवान ईश्वर तिनकूं कठिन कहा ॥६५॥ वाचाल जो शंखका शब्द ताकरि सबदिशा शब्दायमान भई आकाश धरती अर समुद्र सवही शब्दायमान भये ॥ ६६ ॥ अर जे मदोन्मत्त हस्ती हुते सो बंधन तुडावते भये अर कोटिक तुरंग बंधन तुड़ाय हींसते हींसते भ्रमण करते भये ॥ ६७ ॥ अर महलके शिखर पडते भये। कृष्ण

सभामें बैठे हुते सो सब सभा क्षोभकूं प्राप्त भई अर नगरके लोक प्रलयकालके आगमकी शंकाकरि व्याकुल भये ॥ ६८ ॥ तब हरि अपने शंखका शब्द सुनकरि शीघ्रही जाय नेमिकुमारकूं नागशय्यापर आरूढ देख्या समस्त राजानि सहित वासुदेव जिनदेवका पराक्रम देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भया ॥ ६९ ॥ जामवंतीके कठोर वचनकरि प्रभुकूं रोस उपजाया यातैं यह कार्य किये ऐसा जानि जामवंतीकूं उलाहना दिया अर सब भाईनिसहित नेमिश्वरकी प्रशंसा करता भया मोटे पुरुषनिका विकार हू अति हर्षकारी होय है। कृष्ण वडे भाई प्रभुकूं उरसूं लगाय पूजाकरि अपने घर गया अर अपनी स्त्रीनिसूं जलकेलि वनकेलिकरि वीतरागकूं रागसहित किया यातैं हरि अधिक प्रसन्न भये ॥ ७१ ॥ वाही समय वासुदेव भोजवंशीनिकी राजमतीनामा सुता जिनपतिके ताईं यांची अर सब राजा कुटुंबसहित भेले किये सबनिका वहुत सन्मान किया ॥ ७२ ॥ सब स्त्री पुरुष परमरूपके धरणहारे अनेक आभूषणनिकरि मंडित नगरविषैं भाईनिके घर भोजनके ताईं पधारते भये ॥ ७३ ॥

अथानंतर—ग्रीष्मऋतु गई अर वर्षाऋतु आई आकाशविषैं मरुस्थलके पंथी तृषातुर मेघमाला देखते भये ॥ ७४ ॥ प्रथम तो मेघ गर्जता भया अर वहुरि शीतल जलके कण वर्षते भये जिनकरि पपीहानिकूं सुख होय सो वह मेघका वर्षना या पृथिवीविषैं जे नरनारी वियोगी हैं तिनकूं दूणा दुःसह आताप उपजावता भया ॥ भावार्थ—मेघके वर्षनेकरि औरनिका आताप दूर होय अर वियोगीनिके दूणा आताप वढै ॥ ७५ ॥ ग्रीष्मकी दाहकरि अर दिवाकरके किरणकरि दग्ध जो वनस्थली तिनविषैं प्रथमही मेघके वर्षनेकरि अंकुर ऊगते भये सो मानूं हर्षके रोमांच ही भये हैं पृथ्वीरूप प्रियाने मेघरूप प्रीतमके दर्शनकरि हर्षके रोमांचही धारे हैं ॥ ७६ ॥ चलायमान विजुरी अर चलायमान वादल अर वर्षैं हैं मेहकी बूंद अर इंद्रधनुष चढि रह्या है सो आकाश तो इनकरि व्याप्त है अर पृथिवी सावनकीटोकरनिकर भरी है सो पंथी चाले पंथीनिका मन सर्वथा गमनसूं विमुख भया है ॥ ७७ ॥ अर कुटिल जातिके वृक्ष अर कदंबजातिके वृक्ष अर वकुल जातिके वृक्ष फूलि रहे हैं तिन करि

तलहटी अर पहाडके शिखर हरियाली करि
सब दिशा सुगंधमई होय रही हैं वनके स्थान अर पहाडकी तलहटी अर पहाडके शिखर हरियाली करि
सोहै हैं ॥ ७८ ॥ लता मेघकी गर्जनाकरि भयकूं प्राप्त भई स्त्रीजनने चूडा अर कंकण तिनके शब्दकरि वाचाल
जो बाहुलता ताकरि प्रीतमका कंठ दृढ ग्रहणकरि भयरूप ग्रहका निग्रह करती भई ॥ ७९ ॥ अर त्रिकाल योगके
धारणहारे मुनि ग्रीष्मसमय गिरिके शिखरकी शिलापर आतापन योग धरि तिष्ठे हुते सो वर्षाकालविषैं
शीतलपवन मेघकी बूंद तिनकरि अति विषम जे वृक्षनिके तल तहां ध्यान धरते भये ॥ ८० ॥ ता समय श्रीनेमि-
जिनेश्वर चार घोडानिकरि युक्त जो रथ तापर चढकरि विवाहकूं चाले सो वह रथ सूर्यके रथकी प्रभाकूं जीतै है
तापर विराजे श्रीनेमिनाथ राजानिके तरुण पुत्रनिकरि संयुक्त गमन करते भये ॥ ८१ ॥ कैसे हैं प्रभु राजमतीके
पीहरकी स्त्री जननिने तृषित नेत्रनिकरि पिया है सुंदरतारूप जल जिनका ऐसे नेमिकुमार विस्तीर्ण राजमार्ग
होयकरि गये दयाकरि पूर्ण है चित्त जिनका अर मनोहर है दर्शन जिनका तासमय पवनके योगकरि समुद्र ऊंचा
उछल्या सो मानूं नटवेकी नाईं समुद्र नृत्य ही करै है नटवा नाचै है सोई मधुरध्वनि करै है अर समुद्रहू गर्जता
संता मधुरध्वनि करै है अर नटवा हाथनिकरि भाव दिखावै है अर समुद्र तरंगरूप हाथनिकरि भाव दिखावै है
अर उपवनमें होयकरि बनकी शोभा देखते ईश्वर जाय हैं सो नम्रीभूत है शाखा जिनकी ऐसे वन वृक्ष फूल डारै हैं
सो मानूं नम्रीभूत भये कुसुमांजलिही चढावै हैं ॥ ८२ ॥ सो बनविषैं भगवान नानाजातिके तृण आहारी मृगादि
पशु भयकरि कंपायमान तिनकूं नीचे पुरुष घेरे बैठे सो देखिकरि आप रथ थांभ्या अर सारथीसूं पूछया यह
नानाप्रकारके मृगजातिकूं रोके हैं यह नीचजन इनकूं क्यों घेरि रहे हैं तब सारथी हाथ जोडि नमस्कारकरि कही
हे नाथ ! यादव आदि अनेक राजा उत्तमवंशके उपजे सो तो सब जिनधर्मी हैं जिनके तो अन्नका ही आहार है
अभक्षका प्रयोजन नाहीं अर कैयक भील आदि नीचकुलके आये हैं ते मांसाहारी हैं तिन पापीनिने मांसके अर्थि
यह पशु रोके हैं ॥ ८७ ॥ यह वचन सुनिकरि भगवान दयानिधान सब ही जीवनकूं छुडावते भये अर राजपुत्रनिकूं

निरखिकरि कहते भये विस्तरया है अवधिज्ञान जिनके अर मेघकूं जीते ऐसी है ध्वनि जिनकी प्रभु कहे हैं ॥८८॥ अहो लोको! यह पशु, नाहीं हैं घर जिनिके अर वनके तृण जलका है भक्षण जिनके अर निरपराध ऐसे मृगनिके समूह इनकूं कोई मारे ता समान निर्दयी कौन? धिकार उन पापीनिकूं जे दुर्वल जीवनिकूं मारैं रणविषैं रणके जीतिवेकरि पाई है कीर्ति जिनि ऐसे योधा जो उनपर चलायकरि आवैं तापर प्रहार करैं और पर न करैं। हाथीका असवार तुरंगका सवार रथका सवार जो लडिवे आवे वासूं लडै और पर प्रहार न करैं ॥ ९० ॥ यह सामंतनिकी रीति है अर पापी जीवनिके विचार नाहीं जे वनके दुष्ट जीव अष्टापद सिंह अर वनगजकूं पकडकरि मारिवेकूं आवैं उनसूं दूर भागैं अर युद्धसूं दूर भागैं अर महादुर्वल मृग अर शूसा आदि उनकूं मारैं अर उनका मांस भखैं ते पापीनिकूं लाज न आवै ॥९४॥ अपने चरणनिमें कांटेनिके वेधके भयतैं पागरखी पहरैं अपने शरीरके अनेक यत्न करैं अर वापर कोमल मृग उनकूं मृगयाविषैं तीक्ष्ण शस्त्रनिकरि मारैं उनके करुणा कहां परजीवमें अर आपमें भेद कहा जे परजीवकूं मारै हैं सो भव भवमें मारे जाय हैं नरक निगोदके दुःखरूप फल तिनके फूलरूप यह हिंसादि पाप जे नीचजन आचरै हैं तिनके परभवविषैं सुख कहांसूं होय इन पापोंके उदयविषैं जीव दुःखही भोगवै है अर षट्कायके जीवनिका पीडन सोही पाप है ॥ ९५ ॥ देखो यह वडा आश्चर्य है यह प्राणी विस्तीर्ण राज्यकूं तो चाहै है अर जीवनिकी हिंसाविषैं तत्पर होय है सो हिंसाकरि पापका वंध होय है अर पापके वंधका फल कडुवा है प्रकृतिबंध प्रदेशबंध स्थितिबंध अनुभागबंध यह चार प्रकार वंध तिनके वश पडे यह प्राणी दुर्गतिविषैं नानाप्रकार दुःख भोगवैं हैं ॥ ९६ ॥ यह जीव नरभव पायकरहू विषयसुखकरि मोहित भया संसारके दुःखकी निर्वृतिका यत्न नाहीं करै है भवभवमें दुःखकी खान जो यह विषयरूप नीच सुख ताकरि अति आसक्त हैं सो इनकी भूल कहां लग कहिये यह वाह्यरूप विषयोत्पन्न सांसारिक सुख इंद्रादिक पदनिके भोगवैं तो तृप्तिके कारण नाहीं जैसे सैकडा नदी समुद्रकूं तृप्तिका कारण नाहीं ॥ ९७ ॥ देखो देखो मैं पूर्वभव विषैं विद्याधरनिका अधिपति

भया बहुरि देवोंके सुख भोगकरि महाराज भया बहुरि अच्युतेन्द्र भया फिर राजा सुप्रतिष्ठ भया फिर जयन्त नामा विमानविषैं अहमिंद्र भया जहां इन्द्रहूतैं असंख्य गुणा सुख है सो मैं भोगे यह तेतीस सागरका है उत्कृष्ट आयु जहां अर जघन्य बत्तीसका सो मैं उत्कृष्ट आयु भोगी खो हू मैं तृप्त न भया ॥ १८ ॥ तो यह मनुष्यभवका अत्यंत तुच्छ आयु सो मोहि कैसे तृप्तिका कारण होय यह संसारिक सुख सर्वथा असार है। यद्यपि तीर्थेश्वर पद सर्वोत्कृष्ट है तथापि विनश्वर है तातैं आतापका करणहारा क्षणभंगुर यह विषयसुख ताहि तजकरि अविनश्वर निराबाध आताप रहित जो आत्मीक मोक्षसुख ताहि मैं तप कर उपार्जूं या भांति ईश्वरने मनकर बचनकर वैराग्य चिंतवन किया वाही समय पंचम स्वर्गके निवासी महा उज्वल अष्ट प्रकारके लौकांतिक देव आए सारस्वत, आदित्य, वन्हि, अरुण, अर्क, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, यह अष्ट प्रकार हैं भेद जिनके ॥ ॥ ये सब ही शीघ्र आये नमस्कार करते भए नम्रीभूत भए हैं मुकुट जिनके अर जोडे हैं कर जिनि वह देवऋषि ब्रह्मचर्यके धारक प्रभुतैं कहते भए, हे प्रभो ! यह समय है। अब तुम या भरतक्षेत्रविषैं धर्मतीर्थ प्रगट करो, तुम धर्मके नायक हो ॥ २ ॥ या भांति लौकांतिक देव स्तुति करते भए, भगवान स्वयंभू स्वयमेव प्रतिबुद्ध हैं तिनकूं कोई कहा समझावै, स्वामी वचन कहै अर वाहीके अनुसार सेवक बोले सो वचन पुनरुक्त कहिए सो पुनरुक्त अवसर विषैं सफल हैं लौकांतिक देवोंका यही नियोग है तप कल्याणकविषैं आय स्तुति करैं अर वैराग्य वृद्धिके वचन कहे भगवान सब जीवनिके बांधव तत्काल मृगनिकूं छुडाय द्वारावती पुरीमें आए तहां सिंहासनपर विराजे इंद्रादिक तपकल्याणके अर्थि आए प्रभुने स्नान किया अर इंद्रने वस्त्राभूषण पहराय अर कल्पवृक्षनिके फूलनिकी माला पहराई अर सुगंधका लेप किया भगवान सिंहासन पर विराजे ता समय सब राजानिकरि संयुक्त हरि अर हलधर बैठे अर सुर असुर बैठे सो सबनिकरि मंडित प्रभु कैसे सोहैं जैसे सुदर्शन मेरु कुलाचलनिकरि सोहै ॥ ६ ॥ तब भगवान तपके अर्थि उठने लगे तब हरि अर हलधर आदि सबही यदुवंशी अर भोजवंशी अनेक राजा तिनि विविधि

वचनकरि प्रभुकूं राखवेका उद्यम किया परंतु न राख सके जैसे प्रबल सिंह पिंजरा तोड निकसा चाहे उसे कोऊ न राख सकै तैसे भगवान मायारूप पींजरा ताहि तोडकरि निकसे सो कोऊन राख सके ॥ ७ ॥ आप तीर्थेश्वर जगतकी स्थितिके वेत्ता माता पिता आदि सकल बंधुजन तिनकूं संबोधकरि कुवेरकी रची जो उत्तरकुरुनामा पालकी तापरि आरूढ भये ॥ ८ ॥ वह पालकी ध्वजा अर श्वेत छत्र तिनकरि मंडित है अर मणिमई है वाडि ताके अर नाना प्रकारके वर्णकूं धरै है जैसे उदयाचलके शिखरविषैं चन्द्र आरूढ होय तैसे जिनवर पालकी पर असवार भए ॥ ९ ॥ सो पालकी पहले तो बडे बडे राजानिने उठाई पीछे इंद्रादिक देव आकाशके मार्ग ले चाले ॥ १० ॥ आकाशविषैं उत्कृष्ट हर्षकरि देवनिका किया सुंदर शब्द होता भया वह शब्द कानोंको प्रिय सदा सुनने योग्य भाग्हीनोंको दुर्लभ अर पृथिवीविषैं भगवानके बनविषैं जावनेसे सोचकरि पृथ्वीके लोक विलाप करे हैं तिनके शब्दकरि दिशा शब्दायमान होय रही है ॥ ११ ॥ प्रभुके तपकल्याणकविषैं अप्सरा नवरस सहित शब्द करती भई नेमनाथकूं विलोककरि बनविषैं सब ही जीव हर्षरूप भए। कैसे हैं श्रीनेमनाथ दृढताकूं प्राप्त भया है शांत रस जिनके जैसे वर्षा व्यतीत भये शरद विषैं मेघ अति उज्ज्वल भासे तैसे विषय रसके व्यतीत भये प्रभु अति उज्ज्वल निर्मल शांतिरसरूप भासते भये ॥ १२ ॥

अथानंतर—श्रीनेमि जिनेश्वर देवनिकी सेना सहित गिरनार गिरि जाय प्राप्त भये, कैसा है गिरनारगिरि सुमेरु समान है शोभाजाकी जाका नाम ग्रंथनिमें ऊर्जयंत कहै हैं सो गिरि पापनिकी सेनाकूं जीतता संता ऊर्जयंत नाम कहावै है अर कैसे हैं नेमि जिनेश्वर अविनश्वर जो गुणनिकी सेना ताकरि संयुक्त हैं ॥ १३ ॥ सुमेरुके सब तर्फ दिनकर अर निशाकर विचरे है तो हू तिमिरका अभाव नाहीं होय है। अर या गिरनारके आस पास जिनवरके प्रभावतैं तिमिरका अभाव है सोहू गिरनारकी ऊंचाई करि सुमेरका दृष्टांत दीजिये है अर प्रकाशका समूह देखिये तो भगवानके विराजवे करि यह गिरि न्यून नाहीं।

वह गिरनारतैं जे वाचाल नीझरने तिन करि अर पंछिनिके शब्द करि अर सुखके रसके देनहारे जे सुंदर मिष्ट आम्रफल तिन करि अर सुगंध फूलनिके मनोहर वृक्ष तिन करि पूर्ण है अर खोटे फूलनि कर रहित अति सोहे है ॥ १५ ॥ मणि अर स्वर्ण करि महा सुंदर वह गिर नाना प्रकारकी धातु अर रस अर औषध तिनकी शोभाकूं धरे अति सोहे है जाके शिखर किन्नर देवों करि मंडित सोहे हैं अर जाके वन अति रमणीक राजानि करि सोहे हैं ॥ १६ ॥ ऐसे गिरनार निःपाप जो उपवन ता विषैं भगवान पालकीतैं उतरे वह पालकी जिनेश्वरके विराजवे करि अति सुंदर भासै है अर मह पवित्र है सकल विकारकूं हरे है, भगवान अपना मत जो आत्मज्ञान ताहि पाय करि वनमें गये सो वन सिंहादि दुष्ट जीवनिकरि रहित है तहां हरि कहिये इन्द्र अथवा हरि कहिये वासुदेव तिन पालकीसे उतारे, भगवान महा तपको सन्मुख होय पालकीसे उतर करि तप धारनकी शिला पर आये तहां शिला आसपास देवोंके समूह करि विकाशरूप है जैसे इकवीसमें जिनेश्वर नमिनाथ आये हुते तैसे नेमिनाथ भी वैराग्यके अर्थि आये। माया सहित जो पृथिवी ताके त्यागकी है अभिलाषा जिनके सो शिलापर आय वस्त्र आभूषण अर पुष्प मालादि सब तजे ॥१८॥ वह भगवान कृति कहिये कृतार्थ वस्त्राभरणादि तजकरि पद्मासन विषै धीरता धारकरि प्यारी स्त्री जो ज्ञानानन्द विभूति ता अर्थि राजमती अर राजलक्ष्मी तिन त्यागके विषै प्रवर्ती है इच्छा जिनकी ऐसे जिनेन्द्र कल्याणभावविषै तत्पर जो बुद्धि तामें रत सो अपने कोमल कर तिनकी अंगुलनि करि सिरके केश उपाड़े सो केश अति सघन अति श्याम अति सुन्दर अति सुगंध अति सच्चिकण कायर पुरुषनिकरि उखाड़े न जांय सो तत्काल पंचमुष्टिकरि उपाड़े ॥ १९ ॥ सो मानों केश न उपाड़े सब परिग्रह ही उपाड़े सो भगवान लौंचकरि सकल परिग्रह तज करि हजार राजानि सहित दिगम्बरी दीक्षा धारते भये ॥ २० ॥ सिरके केश उपाडे मानों तीनों शल्यही उपाडी सो केश इन्द्रने मणीनिके पिटारे में मेल करि क्षीरसागरके जलविषैं पधराए ॥ २१ ॥ जहां भगवान तप लिया सो तीर्थ भया अर जा समय जिनेश्वर तप आदर्या

ताही समय मनःपर्ययज्ञान उपजा भगवान कोटिक देव तिनकरि संयुक्त चन्द्रमा समान सोहते भए जैसे चार ग्रह तारानिकरि युक्त सोहैं तैसे भगवान मुनीनिकी मंडलीकरि सोहते भए, चार ज्ञानकरि विराजमान चार कषायके त्यागी चतुर्विध संघके नायक परिग्रह त्यागियोंके तारक श्रावण सुदी चौथके दिन दिगम्बर भये। वेला पारणा करना यह प्रतिज्ञा धारी जब भगवान तप कल्याणकके धारक भये तब नर अर सुर असुर शोभनीक अष्ट द्रव्यनिकरि पूजाकरते भये अर नमस्कार कर या भांति स्तुति करते भये हे देव ! तुम मदनके भंग करनहारे प्रभु हो अर संसारी जीवनिकूं शरण हो अर जीवोंके हितके वास्ते है चेष्टा जिनकी अर क्रोधका नाश करनहारे हो अर तृष्णासे रहित हो अर मुनीनिके नाथ हो अर निश्चय व्यवहार दोऊ नयके प्ररूपक हो या भांति स्तवन पूर्वक सुर असुर अर राजेश्वरने परमेश्वरकूं नमस्कार करि इनके गुण अपने हृदयमें धारते भये तपविषैं विराजमान भगवान कर्मरूप शत्रूनिके नाशको चक्रकी धारा समान तिनकूं भाव सहित नमस्कार करि सुर नर अपने स्थानक गये ॥२९॥ अर वेलाके पारणे अर्थि प्रभु द्वारकापुरीमें अहारकूं गये तहां वरदत्तनामा श्रावक भगवानकूं विधिपूर्वक निर्दोष आहार देता भया सो दानके प्रभावकरि पंचाश्चर्य भये रत्नवृष्टि १ पहुपवृष्टि २ सुगंधजलकीवृष्टि ३ शीतलमन्दसुगंधपवन ४ अर जयजयकारशब्द ५ जब भगवान साधुके मार्गमें आये तप धारा तब राजसुता जो राजमती सो अपने मनविषैं अति आतापकूं धारती भई। पतिके वियोगविषैं उपजा है चित्तमें खेद जाके। जैसे कुमुदिनी दिन विषैं मुरझाय जाय तैसे मुरझाय गई। स्थिल हो गए हैं भूषण अर केशनिके समूह जाके अपने समस्त परिवार सहित ॥ ३१ ॥ वरका हरणहारा जो पूर्वोपार्जित कर्म ताकूं उलाहना देती वह श्रेष्ठ महा सती गिरनार गिरपर आई शोकके समूह करि भरी गुरुजनोंके वचन करि हर्या गया है संताप जाका सो तपविषैं बुद्धि धरै पर्वत पर आई वह तप अविनश्वर पदका कारण है अर शांततारूप सुखका मूल है वह राजमती कर अर चरणनिकी कांतिकर कमलकी शोभाकूं उलंघती शरीरका अनुराग

तज वैराग्यकूं उद्यमी भई। राजमतीने स्त्रीपना महा निंद्य जाना कैसा है स्त्रीपना प्रथम तो पराधीन है बहुरि नानाप्रकार दुःखरूप है जो भर्तारका लाभ न होय तो दुःख अर भर्तारके अंगविषैं दुःख होय तो स्त्रीकूं महादुःख फिर शोकका बडा भारी दुःख अर पुष्पवती न होय तो दुःख अर बांझ होय तो बडा दुःख फिर विधवापनेका दुःख कहनेहीमें न आवै अर प्रसूतिका रोग वाकी महा बाधा अर सौभाग्य न होय दुर्भाग्य होय तो महादुःख अर पति भाग्यहीन होय तो महादुःख अर गर्भविषै बालक मरजाय तो महादुःख अर गर्भमें बालक आवे अर पतिका वियोग होय तो महादुःख अर गर्भपात होय तो महादुःख अर गर्भके भारविषैं महादुःख अर जीवते ही धनीका वियोग होय अर मर्मकी जगह रोग उपजे सो बडादुःख यां स्त्री पर्यायका कारण मिथ्यात है मिथ्यादृष्टि जीवही स्त्री पर्याय पावै है सम्यकदृष्टी जीवनिके स्त्री पर्यायका बंध न होय जैसैं वस्त्रका मूल तार तैसैं स्त्री पर्यायका कारण मिथ्यात्व जो कोई दुःखरूप स्त्री पर्यायका अंत किया चाहै सो सम्यक्तका सेवन करै यह जिनभाषित सम्यग्दृष्टि पूज्य पुरुषनिकरि सेवने योग्य है अर अभव्य जीवनिकूं सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति नाहीं।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवानतपकल्याणवर्णनो नाम चतुःपंचाशत् सर्गः ॥ ५४ ॥

अथानंतर—श्री नेमिजिनेंद्र रत्नत्रय अर तपव्रत गुप्तिसमितिनिके समूहकरि सोहते भए जीती है सकल परिषह जिन्होंने अर अप्रस्त कहिए महानिंद्य जे आर्त्त रौद्र कुध्यान तिनकूं तजकरि धर्मध्यान अर शुक्लध्यानकूं ध्यावते भए। इन समान अर प्रशंसा योग्य नाहीं चित्तका एकाग्र निरोध ताहि ध्यान कहिए सो वज्रवृषभ संहननवालोंके चित्तका निरोध अंतर्मुहूर्त तक रहै है और संहननवालोंके अल्प रहै जिनका मन थिर न होय उनकूं ध्यान नाहीं चिंतवनमात्र होय ॥ ३ ॥ अज्ञानी जीवोंके तो आर्त रौद्र ही है अर सम्यग्दृष्टियोंके धर्मध्यान अर शुक्लध्यान है प्रथम ही आर्त्तध्यानका स्वरूप कहे हैं आर्त्त कहिए अर्दन बाधा कहिए पीडा ता विषैं उपजा जो

कलेश सो आर्त्तध्यान कहिये यह आर्त्तध्यान कृष्ण नील कापोत लेश्याके बलकरि उपजै है ॥ ४ ॥ सो आर्त्तध्यानके लक्षण दो, एक वाह्य एक अभ्यंतर सो रुदनादिक अर विलापादिक यह तो वाह्य लक्षण हैं अर परस्त्री विषयादिकविषैं जो अनुरागभाव सो अंतरंग लक्षण है अर देवनिके तथा नृपनिके विषय देखिकरि सुनकरि अभिलाषा करना सो आर्त्तध्यान ताके लक्षण चार सो अपने भाव तो आप जान पाइए है अर औरनिके अनुमान कर जाने जाय हैं अनिष्टके संयोगविषैं वाके वियोगका चिंतवन सो अनिष्टसंयोगार्त्त कहिए ऐसी अभिलाषा करे जो मेरे अनिष्टका संयोग कदे ही मति हो अर कदाचित् अनिष्टका संयोग हुआ होय तो वाके वियोगके वास्ते विकल्प करवो करै सो पहिला आर्त्तध्यान कहिए अर दूसरा इष्टवियोगार्त्तध्यान ताका लक्षण कहै हैं मनोग्य वस्तुका वियोग होय तब जीवकूं खेद उपजै अर ऐसी विचारै मेरे इष्टका वियोग कबहूं मत होय ॥ ८ ॥ अर कदाचित हुआ होय तो अंतरंगकी चिंताकरि जलता ही रहै अर वाकी प्राप्तिका उपाय चिन्तवै यह दोय भेदके चार भेद भए अनिष्टका संयोग अर इष्टका वियोग इनके न होयवेका अभिलाष अर हुआ होय तो अत्यंत शोक मनको न भावै जे दुःख तिनका कारण अंतरंग तो विकारभाव है अर वहिरंग कारणविषैं शस्त्र अर दुष्ट जीव है अर वायु पित्त कफ आदि शरीरविषैं उपजैं अनेकप्रकार रोग कुक्षरोग नेत्ररोग दंत पीडा वायु शूलादि पीडा इत्यादि अति दुस्सह रोग तिनकरि उपजी पीडा ताविषैं अति कायर होय सो रोगार्त्तध्यान कहिए अर या जन्म संबंधी तथा परभव संबंधी भोगनिका अभिलाषी होय सो भोगार्त्त कहिए ॥११॥ शोक अरति भय उद्वेग विषाद जुगुप्सा यह ही भए विष तिनकरि दुःखित मानसिक दुःखका कारण समस्त दोषोंका मूल यह आर्त्तध्यान है मेरे अनिष्टकी उत्पत्ति कभी मत होवे ऐसी चिंता करना सो पहले पायेका लक्षण है अर जो अनिष्ट उपज्या ताके अभावहीका निरंतर चिंतवन करै सदा विकल्परूप ही रहे ॥ १३ ॥ अर वाह्यपदार्थ कैयक चेतन अर कैयक अचेतन तिनमें पशु पुत्रादि चेतन अर धन धान्यादि अचेतन तिनके संग्रहका अभिलाषी होय मनोज्ञविषैं प्रीति करै अर

अमनोग्यविषैं अप्रीति करै अर वायु पित्त कफ आदि अंगके रोग इनका सदा वियोग ही चाहै यह लक्षण आर्त्तध्यानके हैं अर शोक भय आदि मनके दुःख कठिन तिनकरि सदा पीडित ही रहै मेरे मनोज्ञ वस्तुका वियोग अर असुन्दर वस्तुका संयोग कभी भी न होय या लोकविषैं अर परलोकविषैं मेरे मन भावती वस्तुका संयोग सदा रहो अर अणभावतीका मिलाप कभी न होय मनोज्ञके वियोगविषैं अर अमनोज्ञके संयोगविषैं झुरै यह आर्त्तध्यानका लक्षण है अर रोगका नाश अर भोगको अभिलाष यह सब आर्त्तध्यानके लक्षण जानो। या आर्त्तध्यानका आधार प्रमाद है अर फल तिर्यंच गति है अर यह क्षयोपशम भाव है अर पहले गुणस्थानसे लेय छठे गुणस्थानतक याकी दौड़ है ॥ १८ ॥ यह आर्तध्यानका लक्षण कहा अब रौद्रध्यानका लक्षण कहै हैं जो प्राणी दुष्ट होय अर क्रूरचित्त होय उसका जो भाव सो रौद्रध्यान कहिये वाके भेद चार हिंसानन्द १ मृषानन्द २ चौर्यानन्द ३ परिग्रहानन्द। ४ हिंसाकूं आदि देय अपराध तिनविषै रुचि सो हिंसानंदादिक चार भेद हैं हिंसाविषैं आनन्द माने मृषावादविषैं आनन्द माने चोरी विषैं आनन्द माने परिग्रहकी वधवारी विषैं आनन्द माने या रौद्रध्यानके लक्षण दोय प्रकार हैं एक बाह्य एक अभ्यन्तर सो बाह्य लक्षण कठोरता अर क्रूर वचनादि कर जान पड़े जो यह रौद्र ध्यानी है शरीरकी चेष्टा करि भौंहोंको वक्रताकरि नेत्रनिकी अरुणता करि दुष्ट जाना पड़े सो यह बाह्य लक्षण हैं ॥ २१ ॥ अर माहिले लक्षण समरंभ कहिये जीवहिंसादि पापों विषै यत्नकी प्रवर्त्ति अर समारंभ कहिये हिंसादिकके उपकरण शस्त्रादिक तिनका अभ्यास करना अर आरंभ कहिये हिंसादिक पापोंका प्रथमारंभ ये अभ्यंतरके लक्षण हैं हिंसाविषै जो तीव्र अनुराग सो हिंसानंद कहिये ॥२२॥ अर अपनी बनाई युक्ति करि परलोकका साधन औरसे और कहना अर लोकोंको ठगना सो महानिन्द्य मृषानन्द कहिये ॥ २३ ॥

भावार्थ—स्वर्गका कारण जीवदया है अर हिंसाकूं स्वर्गका कारण कहना अर यह बात लोक माने तब आप आनंद मानना सो मृषानन्द है अर अज्ञानके योगकरि परधन हरवेकी अभिलाषा होय अर बलात्कारे पराया धन

हर आनन्द मानै अथवा काहू दुष्टने पराया धन हरा होय ताकी वार्ता सुन हर्षित होय सो चौर्यानन्द कहिये ॥ २४ ॥ अर आपके परिगृह बढता देख आनन्द मानै अर औरके परिगृहानन्द नामा रौद्रध्यान कहिये पशु पुत्र कलत्र यह चेतन परिग्रह हैं अर वस्र आभरणादि यह अचेतन परिगृह हैं इनकी आपके वृद्धि होय अर पराये हानि होय वामें पापी प्रमोद मानै अर आपके परिगृहकी वृद्धि कर आपको स्वामी मानै ॥ इत्यादि रौद्रध्यानके लक्षण हैं ॥ २५ ॥ यह रौद्रध्यान चारप्रकार अशुभ लेश्यानिके बलकरि जीवोंको पहले गुणस्थानसे लेय पांचवें गुणस्थान तक होय है कृष्ण नील कापोत यह तीन लेश्या अशुभ हैं अर पीत पद्म शुक्ल यह तीन शुभ हैं ॥२७॥ यह रौद्रध्यान जीवके अनादिकालका है अर जौलग मिथ्यात्व है तौलग रहेगा परन्तु एक भांतिका घणा रहे तो अंतर्मुहूर्त रहे पीछे और भांति रौद्रध्यान होय एक हिंसाके अनेक भेद अर एक मृषाके अनेक भेद एक चोरीके अनेक भेद एक परिगृहके अनेक भेद हैं सो उनमें परिणाम भ्रमण करवौ करै अंतर्मुहूर्त पीछे एक भावतें और रूप रौद्रध्यान होय जाय तातैं यद्यपि आर्त्त रौद्र अनादिकालके हैं अर अभव्योंके अनंतकाल रहेंगे तथापि और २ रूप होवौ करैं तातैं अंतर्मुहूर्त काल कह्या अर यह क्षयोपशमभाव है अर लेश्या कषायनिकी तीव्रतासे औदयिक भावहू कहिए अर रौद्रध्यानका फल नरकगति है ॥ २८ ॥ तातैं आर्त्त रौद्र इन दोऊ कुध्याननिकूं तजकरि जे मोक्षाभिलाषी हैं सो धर्मध्यान अर शुक्ल ध्यानविषैं अपनी बुद्धि धारो, कैसे हैं मोक्षाभिलाषो शुद्ध है आहार अर विहार जिनका ॥ २९ ॥

अथानंतर—धर्मध्यानकी सिद्धिके वास्ते योग्य द्रव्य योग्य काल अर योग्य भाव कहे हैं ॥ ३० ॥ योग्य द्रव्य तो उत्तम शरीर अर उत्तम संहनन अर योग्य क्षेत्र आर्यक्षेत्र ताविषैं एकांत अर प्राशुक कहिये निर्जन्तु भूमि जहां डांस मच्छर आदि क्षुद्र जीवींका उपद्रव नाहीं अर योग्य काल जाविषै अति उष्णता अति शीतता अर नेत्र निश्चल करि धर्मध्यान अर शुक्लध्यानकूं ध्यावे यह दो जीवके हितकारी हैं ज्ञानीजीव अपने मनकूं

इतनी जगहविषैं चाहे जहां रोके। नाभिके ऊपर अथवा हृदयके विषै अथवा मस्तकविषै अथवा अलकविषै रोक करि ध्यान करे वा नासिकाके अग्रभाग लग रही है दृष्टि जाकी ॥ ३४ ॥ धर्म कहिये यह वस्तुका स्वभाव ताथकी च्युत न होना सो धर्मध्यान कहिये ताके लक्षण दो एक बाह्य एक अभ्यन्तर जो सत्यार्थ शास्त्रका अवलोकन अर व्रत शील तपादिकका आचाण अर गुणनिका अनुराग अर छींक जंभाई डकार श्वासोश्वास इनकी मन्दता अर शरीरकी निश्चलता अर शुभक्रियाका धारण यह धर्मध्यानके बाह्य लक्षण हैं अर अध्यातमविषैं लीन होय। अर दश प्रकार धर्मध्यानका विचार सो निश्चय लक्षण है। धर्मध्यानके भेद दश प्रथम अपायविचय, अपाय कहिये कर्मनिका नाश ताका चिंतवन कर्मबन्धके कारण रागादिकनमें रुचि, निरंतर ऐसे भाव उपजे जो यह संसारके कारण मन वचन कायके योग तिनकी प्रवृत्तिका अभाव मेरे कैसे होय ॥ -८ ॥ ऐसी चिन्ता चित्तमें रहे अर पीत पद्म शुक्ल यह तीन शुभलेश्या जाके पाइये सो आपायविचयनामा पहिला धर्मध्यान कहा ॥ ३९ ॥ अर दूसरा अपायविचय कहिये है जितने मोक्षके उपाय पवित्र भाव हैं ज्ञान वैराग्यादि सो मेरे कैसे होवें शुद्धोपयोगका उपाय सदा चिन्तवे सो अपायविचयनामा धर्मध्यान कहिये अर तीसरा जीवविचय ताविषैं ऐसा चिन्तवन करै जो यह जीव पदार्थ द्रव्यार्थिक नयकरि अनादि निधन ध्रुव पदार्थ है। अर पर्यायार्थिक नयकरि उत्पाद व्ययरूप है उपजै विनशै है अर उपयोग लक्षण है असंख्यात प्रदेशी है अर अचेतनके संबंधतैं अपने कर्मके फल भोगवै है इत्यादि जीवका स्वरूप चिन्तवना सो जीवविचय धर्मध्यान कहिये ॥ ४२॥ अर चौथा अजीवविचय धर्मध्यान जाविषैं पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल इनके स्वभावका चिन्तवन ॥ ४३ ॥ अर आठ प्रकार कर्म्मका चार प्रकार बन्ध प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश तिनके उदयका चिंतवन सो विपाकविचयनामा पांचवां धर्मध्यान कहिये। अर छठा वैराग्यविचय कहिये हैं यह शरीर महा अशुचि अर संसार असार अर भोग इन्द्रायणके फल समान प्राणनिकूं हर्ता ॥ ४५ ॥ ऐसी वैराग्यबुद्धि सो विरागविचय जानों अर सातवां भवविचय

कहिये हैं इन जीवनिके इस भवसे दूसरा भव धरना सो भव कहिये सो सब ही भव दुःखरूप हैं। देवपर्याय, मनुष्यपर्याय, नर्कपर्याय तिर्यंचपर्याय सबही दुःखरूप हैं यह विचार करना सो भवविचय जानो। अर आठवां संस्थानविचय कहिये हैं ज्ञानी जीव ऐसा चितवन करैं जो अलोकाकाश अंनता है ताविषैं तीन वातवलय करि वेष्टित लोकाकाश है सो अनादिसिद्ध है काहूका किया नाहीं काहूके आधार नाहीं अपने आधार है। ताके आकारका चिंतवन सो संस्थानविचय कहिये ॥ ४७ ॥ अर नवमां आज्ञाविचय जो जिनेश्वरकी आज्ञा प्रमाण अलौकिक पदार्थनिका निश्चय करना। अर बन्ध मोक्षादिविषैं जिनभाषित श्रद्धा करनी सो आज्ञाविचय धर्म-ध्यान कहिये। अर दशवां हेतु विचय ताका लक्षण कहिये है स्याद्वाद कथनके आश्रयतैं युक्तिके अनुसार जो नित्यता अर अनित्यता अर अस्तिता अर नास्तिता इनका विचार सो हेतुविचय नामा दशमां धर्मध्यान कहिये ॥ ४९ ॥ ये दश प्रकार धर्मध्यान चतुर्थ गुण स्थानतैं लेयकरि सातवां अप्रमत्तगुणस्थान तहां लग होय है। यह धर्मध्यान प्रमादका नाशक है अर पीत पद्म लेश्याके बल करि उपजै है ॥ ५० ॥ अर क्षयोपशम भाव है अर अन्तर्मुहूर्त काल है अन्तर्मुहूर्त पीछे एक भेदतैं और भेदरूप धर्म ध्यान होय है यह धर्मध्यान स्वर्ग मोक्षका दायक है सो ध्यानी पुरुष ध्यायवे योग्य है ॥ ५१ ॥ धर्म ध्यानके चार भेद तो सकल ग्रन्थनिमें हैं। आज्ञाविचय अपायविचय विपाकविचय संस्थानविचय अर बडे ग्रन्थोंमें दश भेद भी कहे हैं अर शुक्लध्यान महा पवित्र है अर पवित्रताका कारण है समस्त दोष रहित हैं ताके दोय भेदे हैं एक शुक्ल दूसरा परम शुक्ल। सो शुक्लके भेद दोय अर परम शुक्लके भेद दोय पृथक्त्ववितर्कवीचार अर एकत्ववितर्कअवीचार यह दोय भेद तो शुक्लके हैं अर सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति अर समुछिन्नक्रियानिवर्त्तक यह दोय भेद परम शुक्लके हैं ॥ ५३ ॥ सो शुक्लध्यानके लक्षण दोय एक वाह्य एक अभ्यंतर। छींक जम्भाई खासी डकार आदि शरीरकी चेष्टाका अभाव अर श्वासोच्छ्वासकी अत्यंत मंदता सो यह लक्षण तो शुक्लध्यानके बाहरले हैं अर चित्तकी निश्चलता यह अंतरंगके लक्षण हैं यह लक्षण जिनके

होय सो तो ध्यानारूढही है अर औरनिके अनुमानकरि विवेकी जाने,वहिरंग लक्षण तो शरीरकी चेष्टाका अभाव अर अंतरंग लक्षण मनका निरोध ॥ अथानंतर—शुक्लध्यानके चार पायोंका लक्षण कहै हैं ॥ ५५ ॥ पहला पाया पृथक्त्ववितर्कवीचार ताका भेद सुनो पृथक्त्व नाम अनेकताका है अर वितर्क कहिये द्वादशांग निर्दोष सूत्र सो द्वादशांगके अनुसार तत्वकी अनेकताका विचार सो कौन भांति विचार करै अर्थसूं अर्थांतर अर शब्दसूं शब्दांतर अर योगसूं योगांतर परिणामका संचार होय ॥ ५६ ॥ अर्थ कहिए ध्यायवे योग्य निज द्रव्य निजगुण निज स्वभाव पर्याय तिनविषैं परिणाम विहार करै कभी आत्मद्रव्यमें लवलीन होय अर कब ही अपने निजगुण ज्ञान आनंदादि अनंत तिनमें मग्न होय कभी स्वभाव परणतिरूप अर्थपर्याय अथवा सिद्धपर्याय ताविषैं तल्लीन होय द्रव्यसे गुणमें गुणसे द्रव्यमें अथवा गुणसे गुणमें अथवा गुणसे परणतिमें या भांति निज विहार करै सो अर्थ संक्रम कहिए अर शब्द कहिऐ जिनसूत्रके शब्द तिनका रहस्य विचारता शब्दसे शब्दान्तर विहार करै सो व्यंजन संक्रम कहिये अर योग कहिये मन वचन कायके योगतैं योगांतर संचार सो यो संक्रम कहिये याभांति जिनश्रुतके अनुसार निज वस्तुकी अनंतताका ध्यान करै सो पहिला पाया पृथक्त्ववितर्कवीचार कहिये यह पहिला पाया उपशम अर क्षपक दोऊ श्रेणीवारे धारैं सो उपशमश्रेणीवारे तो मोहका उपशम करैं अर क्षपकवारे मोहका क्षय करैं क्षपकश्रेणीवारेनिके अत्यंत निर्जरा है ॥ ६० ॥ अर्थसूं अर्थांतर शब्दसे शब्दांतर योगतैं योगान्तर यह पहिले पायेका लक्षण कहा सो यह पाया आठमेंसे ले ग्यारहवें गुणठाणे लग है अर दूसरा पाया एकत्ववितर्क अवीचार सो बारमें गुणठाणे ही होय अर क्षपकश्रेणी वालेही धारें जहां एकीभावका अवलम्बन जो तत्वविषैं आरूढ भया तो वाही विषैं लीन भया अर जो गुणविषैं स्थिरीभूत भया तो तहांही भया एकवस्तुका है अवलम्बन जहां उपशम श्रेणीवालोंके तो शुक्लध्यानरूप शस्त्र अति तीक्ष्ण नाहीं इसलिए मोहका उपशम ही करे अर क्षपकश्रेणीवालोंके ध्यानरूप शस्त्र तीक्ष्ण है सो मोह शत्रुका नाश ही करे यह शुक्लध्यान शुक्ललेश्याहीके योगकरि होय है जिनके

पहिले पाएविषै उपशमश्रेणी है उनके उपशमभाव है अर क्षपकश्रेणी उनके क्षायकभाव ही है पहिले पायेमें दोऊ श्रेणी अर दोऊ भाव हैं अर स्वर्ग मोक्ष दोऊ फल हैं अर अंतर्मुहूर्त स्थिति है यह सम्पूर्ण प्रथम पाएका लक्षण कहा अर दूसरा पाया एकत्ववितर्क अवीचार ताका लक्षण कहिए है एकत्व कहिए द्रव्यगुणकी एकताका है चिंतवन जा विषै द्रव्य कहिए आत्मद्रव्य अर गुण कहिए चेतनत्व अमूर्तित्व आदि अनंत गुण तिनमें भेद नाहीं सो एक ही वस्तुविषै चित्त लग रह्या है जो गुणमें लग गया तो गुणहीमें लगा अर आत्मद्रव्यमें लगा तो वहांही लगा बहुरि परिणामका पलटना नाहीं सो एकत्व कहिये अर वितर्क कहिये द्वादशांग सूत्रकी श्रद्धा दोऊ पायेनिमें है दूसरे पायोंमें पृथकुता कहिये अनेकता नाहीं अर वीचार कहिये अर्थ व्यंजन योगका संक्रम नाहीं एकही अर्थविषै एकही शब्दविषै एकही योगविषै आरूढ है जिनवानीके अनुसार वस्तुकी अभेदताविषैं चित्तकी आरूढता है ॥६४॥ एक ही द्रव्य तथा एक ही गुण तथा तथा एकही शुद्ध परिणतिविषै गलतान भया है मोहका नाश तो पहलेही पाएकरि किया अर इस दूसरे पाएकरि ज्ञानावरण दर्शनावरण अर अन्तराय इन तीन घातियोंका नाश करे ॥ ६५ ॥ वह कृतार्थ बारहवें गुणठानेके अंत घातियोंका घात करे तेरहनें गुणठाणे केवलज्ञानकूं पावै तहां नव केवललब्धि प्रगट होय केवलज्ञान केवलदर्शन क्षायिकसम्यक्त क्षायिकचारित्र अनंतदान अनंतलाभ अनंतभोग अनंत उपभोग अनंत-वीर्य यह नव केवललब्धि तीर्थंकरके तथा और सामान्यकेवली तिन सबहीके तेरहवें गुणठाणे होय है ॥ ६६ ॥ सो भगवान केवली पूजने योग्य ध्यावने योग्य तीनं भवनके परमेश्वर किंचितऊन कोडिपूर्व केवलज्ञान युक्त विहार करे। महा विदेह क्षेत्रविषैं तो कोडिपूर्वका आयु ही है अर या भरतक्षेत्रविषै चौथे कालकी आदि कोडि पूर्वका आयु है सो काहू जीवकूं नवमें वर्ष केवल उपजा सो नव वर्ष घाट कोडिपूर्व केवल अवस्थामें विहार करे ॥ ६७ ॥ अर या केवलीके चारों अघातियोंकी थिति आयु समान होय सो तो समुद्घात न करे अर जाके आयु तो अन्तर्मुहूर्त रहे अर नाम गोत्र वेदनीयकी अधिक थिति होय सो केवलसमुद्घात करि नाम गोत्र वेदनीकी

थिति आयु प्रणामही करै सो तेरहवें गुणस्थानके अंतर्मुहूर्त सूक्ष्माक्रियाप्रतिपाति नामा तीसरा शुक्लध्यान होय जो केवल समुद्घात न करे समस्त अघातियानिकी बराबर ही स्थिति होय तो सहज ही यह तीसरा शुक्लध्यान होय ताका लक्षण कहे हैं। मनोयोग वचन योग ये बादर तिनकूं सूक्ष्मकरि काययोगमें आवे अर मनो वचन-योग सूक्ष्म है तिनका अभाव करे है यह सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति नामा तीसरा शुक्लध्यानका पाया परम शुक्लका पहिला भेद है। अर काहू केवलीकूं केवलसमुद्घात करना पडे अर आयु प्रमाण अघातियोंकीस्थिति करनी पडे तो अंतर्मुहूर्त आयु रहे तब समुद्घात करै सो वह भगवान् समस्त अघातियोंके क्षय करवे समर्थ्य पहिले समय दण्ड करे दण्ड कहिये दण्डके आकार आत्माके प्रदेश चौदह राजू दीर्घ होय जायं फिर कपाटके आकार जीवके प्रदेश दूसरे समय होय अर तीसरे समय पटलके आकार प्रदेश होय अर चौथे समय लोकपूर्ण होय तीन सौ तेतालीस राजू घनाकार जीवके प्रदेश विस्तरे ता समय लोकप्रमाण व्यक्तिरूप होय ज्यों चार समयमें प्रदेश विस्तरे ज्यों ही चार समयमें संकोचे। पांचवें समय पूर्ण संकोचे छठे समय प्रतर संकोचे सातवें समय कपाट संकोचे अर आठवें समय दंड संकोचे ॥ ७४ ॥ फिर शरीर प्रमाण होय करि या परम शुक्लध्यानकूं ध्यावे सो समुद्घातके सात ही समय है आठवें समय शरीर प्रमाण हैं, शरीरवाले प्रदेश नाहीं रहै है बहुरि चौदहवें गुण ठाणेके अंत शुक्लध्यानका चौथा पाया समुच्छिन्नक्रिया ताहि ध्यावे सो यह चौथे पाया परम शुक्लका दूसरा भेद है जहां प्रदेशोंकी चंचलता मिटी देह प्रमाण प्रदेश रहे अर योगीनिका अभाव भया सकल प्रकृतियोंका क्षय भया सो समुच्छिन्नक्रिया कहिये॥ ७६ ॥ या चौथे शुक्लविषैं सर्व बन्धका अभाव अर आस्रवका निरोध अर योगकेवलीके यथाख्यातचारित्र मोक्षका कारण है सो भगवान अयोग केवली आठों कर्मोंका नाशक भया घातिया कर्म तो मुनिपदमें खोये अर अघातिया जिनपदमें खोये चौदहवे गुण ठाणेके अन्त सोलह पानीके स्वर्ण समान चेतना शक्ति देदीप्यमान भई ॥ ७८ ॥ सिद्ध तो यहांही होय चुके परन्तु ऊर्द्धगमन स्वभावसे अर कर्मनिके संयोगके

वियोगसे अर बन्धके नाशसे कुम्हारके चक्रकी न्याईं पूर्वप्रसंगतैं अर आग्निकी शिखाकी न्याईं अर लेप रहित्त तूंबीकी न्याईं अर एरंडके बीजकी न्याईं एक समयमें ऊर्द्धगमन करे ॥ ८९ ॥ अर धर्मास्तिकायके अभावसे अलोकविषैं गमन न करै अर लोकके शिखरही तिष्ठै अनन्त सुखका पुंज तिष्ठै ॥ ८१ ॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चार पुरषार्थ हैं तिनमें मोक्ष पदार्थ सर्वोत्कृष्ट है अर जीवका हित है सो कर्मके क्षयतैं होय अर कर्मका क्षय शुक्लध्यानसे होय सकल कर्म प्रकृतिका अभाव सो मोक्ष अनन्त सुखरूप सो यत्नसाध्य भी है अर सहजसाध्य भी है जे तीर्थंकर देव अर तद्भव मोक्षगामी चरम शरीरी हैं तिनके तो सहज साध्य ही है अर जे तदुभव मोक्षगामी नाहीं जन्मान्तरमें मोक्ष जावेंगे तिनके यत्नसाध्य है प्रथमही चौथा अव्रत गुणस्थान तहांसे लेकर प्रकृतियोंका क्षय होय है अनन्तानुबन्धीकी चौकडी अर तीन मिथ्यात्व इन सातोंका क्षय तो चौथे गुणस्थानही होय है। जाके सातोंका क्षय होय सो क्षायिकसम्यकदृष्टि कहिये, अर जो मुनि क्षपकश्रेणी चढे सो सातवें गुणठाणेके अन्त नरकायु, तिर्यंचायु, देवायु इन तीन प्रकृतिका क्षय करे अर सातवें अप्रमत्तसे आठवें अपूर्वकरण गुणस्थान जायकरि पाप प्रकृतियोंकी स्थिति क्षीण करे। अर वह क्षायिकसम्यक्दृष्टि क्षपकश्रेणीका धारक नवमें गुणस्थानके नव भागमें प्रकृति छत्तीस खपवै तहां पहले भागमें शुक्लध्यान रूप अग्निकरि सोलह प्रकृति भस्म करै तिनके नाम निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ॥ ९० ॥ अर नरकगति नरकगत्यानुपूर्वी तिर्यंचगति तिर्यंचगत्यानुपूर्वी एकेन्द्री जाति वेइन्द्री जाति तेइन्द्री जाति, चौंइन्द्री जाति, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण यह सोलह प्रकृति पहिले भागविषै खपायकर दूसरे भागविषै अप्रत्याख्यानकी चौकडी अर प्रत्याख्यानकी चौकडी खपावे, अर तीजे भाग विषैं नपुंसक वेद खपावे, अर चौथे भागविषै स्त्री वेद खपावै अर पाचवें भागविषैं षट हास्यादि खपावे अर छठे भागविषै पुरुष वेद खपावे अर सातवें भागविषै संज्वलन क्रोध खपावे अर आठवे भागविषै संज्वजल मान खपावे अर नवमें भागविषै संज्वलन मायाको खपावे। या भांति अनिवृतिकरण नामा गुणस्थान ताके नव भागविषै

प्रकृति छत्तीसकूं खपावे ये सत्ताकी अपेक्षा कथन है बंध उदयकी अपेक्षा नाहीं है। अर दशवें गुणस्थानका नाम सूक्ष्मसांपराय तहां सूक्ष्मलोभका अभाव करे दशवेंके अंत सर्वथा मोह रहित होयकरि बारहवां क्षीणकषाय नामा गुणस्थान ताके अंतके दो समय सो पहिले समय तो निद्रा अर प्रचलाका अन्त करे अर दूसरे समय ज्ञानवर्णीकी प्रकृति पांच दर्शनावर्णीकी प्रकृति चार अर अंतरायकी प्रकृति पांच ये चौदह प्रकृति खपावै शुक्लध्यानके दूसरे पाएसे यह सोलह प्रकृति खपायकरि केवली होय ॥९६॥ अर असाता वेदनीय १ देवगति २ औदारिक शरीर ३ वैक्रयिक ४ आहारक ५ तैजस ६ कार्माण ७ यह पांच शरीर अर यही पांच बंधन अर यही पांचो संघात अर आंगोपांग तीन ही शरीरनिके तैजस कार्माणके नाहीं औदारिक आंगोपांग वैक्रियक आंगोपांग ॥ ९८ ॥ अर आहारक आंगोपांग अर संस्थान छह संहनन छह वर्ण पांच रस स्पर्श आठ गंध दो देवगत्यानुपूर्वी एक अर देवगति एक ॥ १०० ॥ अगुरुलघु एक उश्वास एक परघात एक उपघात एक प्रशस्तविहाय एक अर अप्रशस्तविहाय एक अर प्रत्येकशरीर अपर्याप्त स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ दुर्भग सुस्वर दुस्वर अनादेय अयशकीर्ति निर्माण, नीचगोत्र ये सब इकट्ठेकिए बहत्तर होंय सो तेरहवें गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थानमें जायकरि खपावे अर चौदहवां अयोगकेवली ताके अंतके समय तेरह प्रकृति खपावै तिनके नाम साता वेदनीय १ मनुष्यायु १ मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ पंचेन्द्री जाति १ त्रस १ वादर १ पर्याप्ति १ शुभग १ आदेय १ उच्चगोत्र १ यशस्कीर्ति १ तीर्थंकर १ यह तेरह प्रकृति अयोगकेवली अंतके समय खपावै ॥७॥ अ, इ, उ, ऋ, ऌ यह पांच ह्रस्व अक्षर तिनका उच्चार होय तेताकाल चौदहवें गुणस्थान तिष्ठ करि सिद्धलोककूं सिधारै सो सिद्धपर्याय आदिकूं लिये अनन्ती है जाकी आदि तो है अर अंत नांहीं अनंतगुणरूप सिद्ध पर्याय सादि अनंती कहिये याही भांति अनन्ते सिद्ध भये अर अनंत होवेंगे सो याही भांति गुणस्थानोंमें चढ कर्मप्रकृति खपाय सिद्ध भये अर याही भांत होवेंगे ॥८॥ सिद्धपदका कारण धर्मध्यान अर शुक्लध्यान है सो भगवान नेमिनाथ छप्पन दिन तो धर्मध्यान ध्याया अर

आसोज सुदी पडिवाके दिन प्रभात ही शुक्लध्यान रूप अग्निकरि चार घातिया कर्मरूप बन ताहि भस्म किया ॥ १० ॥ अर अनंत ज्ञान अनंत दर्शन अनंत सुख अनंत वीर्यरूप चतुष्टयकूं प्राप्त भये जब नेमिश्वरकूं केवलज्ञान उपज्या तब इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भये अर मुकुट नय गये ॥ ११ ॥ कल्पवासी देवनिके अकस्मात् घंटाका शब्द भया। अर ज्योतिषी देवोंके सिंहनाद बाजा। अर व्यंतरनिके ढोल बाजे। अर भवनवासी देवोंके शंखका शब्द भया अर या भांति अकस्मात् शब्द भए तब चतुर्निकायके देव भगवानकूं केवलज्ञान उपज्या जान अपने अपने इन्द्रोंके साथ केवलकल्याणककी पूजाके उद्यमी भए सबही इंद्र मुकुटोंके नयवेकरि अर सिंहासनके कंपायमान होयवे करि प्रभुका केवलकल्याणक जानकरि सब देवनि सहित अपने बाहनोंके समूह करि आकशरूप समुद्रकूं पूरकरि सप्तसेना सहित सुरपति गिरनारकी प्रदक्षिणाकरि समोसरणमें आए ॥ १३ ॥ भले प्रकार नमस्कार करि निगर्व भए। दूसरी वेर गिरनार आए पहिले तपकल्याणकविषैं तो आए ही हुते अर अब ज्ञानकल्याणकविषैं आए सुमेरगिर तो एक जन्म कल्याणकके स्नान मात्रहीसे पवित्र भया हुता अर यह गिरनार तप कल्याणकका स्थानक ज्ञानकल्याणकका स्थानक अर आप श्रीनेमिनाथ या गिरहीसे निर्वाण पधारेंगे यह गिरि सुमेरुकूं भी जीतता भया ॥ १४ ॥ जहां अष्ट प्रातिहारियों करि शोभित नेमिजिनेंन्द्र विराजे हैं जहां मन्दारजातिके कल्पवृक्ष आदि अनेक कल्पवृक्षोंके पुष्प तिनकी वर्षाकरि दशोदिशा सुगंध होयरही हैं अर देवांगनाओंके गीत करि गिर शब्दायमान होय रहा है अर दुन्दुभीबाजोंका नाद तिनकरि सब दिशानाद रूप होय रही हैं अर जहां शोकका हरणहारा जो अशोकवृक्ष फल फूलों कर मंडित सोहै है। अर तीन छत्र तीन भवनकी प्रभुताके चिह्नकूं धरे प्रभुके सिर पर फिरे हैं ॥ १६ ॥ अर हंसोंकी पंक्तिके पैरोंके समान महा मनोहर उज्ज्वल अनेक चमर प्रभुपर ढुरे हैं अर सूर्य मंडलीकी ज्योतिकूं जीते ऐसा प्रभुकी देहकी कांतिका मण्डल दिपै है अर हेममयी सिंहासन नानाप्रकार रत्ननिके समूहकरि जड्या इन्द्रधनुषकी शोभाकूं जीते तापरि जिनवर विराजे हैं अर नाना-

प्रकार भाषाके भेदकूं धरे सकल विकार रहित दिव्यध्वनि जिनराजके मुखसे खिरै है ॥ १७ ॥ यह अष्ट प्रातिहार्य
और चौवीस अतिशय तिनकरि मंडित नेमिजिनेश्वर हरिवंशके तिलक बाईसवें तीर्थंकर स्वभाव ही करि
धैर्यके धारक गुणके समूह बोधरूप दिनके कर्ता जिनरवि त्रैलोक्यके उद्धारके अर्थि गिरनारके शिखर पर विराजे
तहां सब देव आय सेवा करते भए ॥ १८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवाननेमिनाथकेवलज्ञानवर्णनोनाम पंचपंचाशत् सर्गः ॥ ५५ ॥

अथानंतर — इन्द्रकी आज्ञातैं देवोंने प्रभुका समोसरण रचा है वह समवसरण तीन जगतके प्राणियोंको
शरण है ॥ १ ॥ द्वारकाके सब लोक यदुवंशी अर भोजवंशी आदि गिरपरि बलभद्र नारायणके साथ चाले
॥ २ ॥ सो जिनेन्द्रका समवसरण बाहर भीतर देखकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भए ॥ ३ ॥ जैसी समवसरणकी भूमिकी
रचना तीर्थंश्वरके होय है तैसी श्रोतानिकूं संक्षेपता कर कहिये है ॥ ४ ॥ स्वभावरूप जो यह भूमि तातैं एक
हाथ प्रमाण ऊंची दिव्यभूमि फिर ताकै ऊपर एक हाथ ऊंची कल्पभूमि सो वह भूमि चौखूटी सुखकी देनहारी
अपनी शोभा करि स्वर्गकी शोभाकूं जीते सो उत्कृष्ट समवसरणका विस्तार बारह योजन होय है अर नेमिनाथ
बाईसवें जिन हैं इसलिये इनका डेढ योजन है ॥ ६ ॥ समवसरण तो कमल समान है अर गन्धकुटी कर्णिका
समान उच्च है समवसरणकी भूमि ऐसी सोहे है मानो लक्ष्मीकी परंपराय ही है । समवसरणकी भूमि इन्द्रनील
मणिमई काच समान निर्मल सोहे है अधिकसे अधिक सोभा धरै है ॥ ८ ॥ दूरहीतैं इन्द्रादिक देव जाहि नमस्कार
करे हैं वह मानस्थंभके आंगणकी भूमि तीन जगतकरि मानने योग्य है । चारों महा दिशानि विषै चारों दरवाजों-
की ओर दोय दोय कोसके विस्तार राजमार्ग है तिनके मध्य मानस्थंभोंके पीठ हैं तिनके ऊपर स्वर्ण रत्नमई
जिनप्रतिमा हैं तिनकूं सुर असुर मनुष्य माने हैं देव विद्याधर भूमिगोचरी मानस्थंभोंके समीप आय जिनप्रतिमा

पूजे हैं वह मानस्थंभोंकी भूमि देदीप्यमान पद्मरागमणिमई अरुण वर्ण है ॥ १२ ॥ चारों दरवाजोंके चारों ही राजमार्गविषै तीन तीन सुवर्णके पीठ तिन पर मानस्थंभ सोहे है बर्तुलाकार आध कोस चौडे अर दोय कोस ऊंचे पीठ हैं ॥ १३ ॥ अर पीठोंकी चौडाईतें एक धनुष घाट मानस्थंभोंकी चौडाई है अर एक योजन कुछयक अधिक मानस्थंभोंकी ऊंचाई है ॥ १४ ॥ अर यह मानस्थंभ मूलविषै वज्रमणि कहिये हीरा तिनके हैं अर मध्यविषै फटिक मणिके हैं अर अग्रभागविषै वैडूर्य मणिमई हैं अर जिनके चारों तरफ भगवानके बिंब विराजे हैं अर इन मानस्थंभोंके ऊपर ध्वजा है सो बारह योजनसे दृष्टि पडे है अर एक २ मानस्थंभके आश्रय दोय दोय हजार स्थंभ हैं ते नानाप्रकार रत्नोंकी किरणों करि देदीप्यमान हैं अर मानस्थंभोंका ऊपरला भाग बीस योजन प्रमाण आकाश विषै उद्योत करे है श्रीदेवीके मस्तकविषै चूडामणि रत्नोंसे भी अधिक आभा जिनकी ते मानस्थंभ देवोंका अर मनुष्योंका मान हरे है जिनके देखे महामानियोंका मान बिलाय जाय बहुरि मानस्थंभोंके आगे चार सरोवर हैं जिनमें कमलफूल रहे हैं अर हंस सारस चकवा मनोहर शब्द करे हैं तिनकरि सब दिशा शब्दायमान होय रही हैं ॥ १९ ॥ अर सरोवरोंके आगे वज्रमणिमई पडकोटा है सो मनुष्योंके वक्षस्थल पर्यंत ऊंचा है अधिक है कांति जाकी अर ऊंचाईसे द्विगुणी है चौडाई जाकी सो समवसरणके चौगिर्द प्रदक्षिणारूप तिष्ठे है ॥ २० ॥ या पडकोटाके भीतर जलकी भरी खाई है ताकी भूमि फटिकमणि समान उज्ज्वल है अर खाईमें गोडों प्रमाण ऊंडा जल है मानों यह खाई भूमिरूप नारीकी काली साडी है ॥ २१ ॥ अर खाईमें सुवर्णमई कमलोंके रजके पुंज करि जल पीतवर्ण होय रहा है मानों खाईका रूप धरि समुद्र ही चहूं ओर प्रदक्षिणा करे है ॥ २२ ॥ अर खाईके आगे बेलोंका बन है सो समवसरणके चारो ओर प्रदक्षिणा रूप सोहै है ताविषैं नानाप्रकारके सुगंध फल फूल रहे हैं तिनकी सुगंधताकरि दशोंदिशा सुगंधरूप होय रही हैं अर भंवर गुंजार करैं हैं अर नानाप्रकारके शुभ पक्षी सुंदर शब्द करै हैं ॥ २३ ॥ अर या बली वनके आगे पहला कनकमई कोट है सो अति देदीप्यमान है अर

जाके रूपामई चार दरवाजे हैं सो मानों विजयार्द्ध गिर ही हैं ॥ २४ ॥ या पहिले कोटमैं द्वारपाल व्यंतर देव हैं
ते कुंडल कटकादि आभूषणनिकर सोहै हैं । अर मुद्गर हैं जिन्होंके हाथमें ते दुष्ट जीवनिकूं तिरस्कार करै हैं
॥ २५ ॥ अर दरवाजोंके पसवाडे मणिमई तोरण है अर दरवाजे दरवाजे छत्र, चमर, कलश, झारी, दर्पण, ताड-
वीजना, स्वस्तिक ध्वजायें आठ मंगलद्रव्य धरे हैं एक एक मंगलद्रव्य एकसौ आठ आठ हैं अर दरवाजोंके आगे
नाट्यशाला है सो दरवाजोंमें धसते माहिली ओर दोऊ तरफ दो नाट्यशाला हैं अर एक एक नाट्यशालाके तीन
तीन खणे हैं तिनविषैं देवांगना नृत्य करै हैं अर नाट्यशालाके आगे चार वन हैं पूर्व दिशाविषै असोकवन है
अर दक्षिणदिशाविषै सप्तपर्ण नामा बन है । अर पश्चिमदिशाविषै चंपकनामा वन है अर उत्तरदिशाविषै आम्र-
बन है ॥ २८ ॥ यह चार बन तिनमैं चार चैत्यवृक्ष हैं अशोकवनविषै अशोक तरु अर सप्तछद वनविषैं सप्तछद
अर चंपक बनविषै चंपक अर आम्रवनविषै आम्र यह चार चैत्यवृक्ष जिन प्रतिमाकरि शोभित महा मनोहर है
॥ २९ ॥ अर इन वनविषैं मनोहर वापिका है कोई बापी त्रिकोण अर कोई वर्तुलाकार अर कोई चौखूंटी नाना
प्रकार रत्नोंके हैं तट जिनके अर फटिकमणि समान निर्मल है भूमि जिनकी ॥ ३० ॥ वे समस्त वापी तोरण
सहित अधिक सोहे हैं अति सुंदर भाषैं हैं तीर्थ हैं जिनमें हंस आदि मनोहर पक्षी सुंदर शब्द करै हैं तिन वापि-
योंके नाम नंदा, नंदोत्तरा, आनंदा, नंदवती, अभिनंदनी, नंदघोषा यह छै वापिका तो अशोक बनमें हैं ॥ ३२ ॥
फिर विजया, अभिजया, जयंती, वैजयंती, अपराजिता, जयोत्तरा, यह छह वापिका सप्तपर्ण नामा बनविषै हैं
॥३३॥ फिर कुमुदा, नलनी, पद्मा, पुष्करा, विकचोत्पला, कमला यह छह वापिका चंपक बनविषै है ॥३४॥ फिर
प्रभासा, भास्वती, भासा, सुप्रभा, भानुमालिनी, स्वयंप्रभा यह छह वापिका आम्रवनविषै हैं इन वापियोंमें स्नान
कर बनके पुष्प लेकर चैत्यवृक्षोंके विम्बोंकी पूजाकरि भव्यजीव मांही प्रवेश करै हैं ॥ ३६ ॥ अर इन बनोंके
विषै नाट्यशाला है तिनमें ज्योतिषी देवोंकी स्त्री हावभाव विलास विभ्रम सहित नृत्य करै है रसकी पुष्टता

सहित हर्षकी भरी देवी नाचै हैं अर इन वनोंके चौगिर्द वनदेवी हैं सो महा मनोज्ञ वज्रमणि मई हैं अर वनवेदीके आगे ध्वजानिकी पंक्ति हैं अर ध्वजानिके पीठ तीन धनुष चौडे हैं अर आधा योजन ऊंचे हैं तिनपर रत्नमई बांस तिन पर ध्वजा फरहरे हैं ते ध्वजा दश दश प्रकारकी हैं अर क्षुद्रघंटिकाकरि सोहै हैं विचित्र रूप हैं पट जिनके मयूर हंस गरुड पुष्पमाला सिंह हस्ती मगर वृषभ चक्र यह दश प्रकार चिह्न तिनकरि मंडित हैं एक एक चिह्नकी एक सौ आठ आठ ध्वजा हैं सो कमल, एक वनमें एक हजार अस्सी। जब चारो वनकी भेली करिए तब तेतालीस सौ बीस होवें अर इन ध्वजानिके आगे पचखणी नृत्यशाला हैं तिनमें भवनवासिनी देवी नृत्य करैं हैं ॥ ४८ ॥ बहुरि आगे दूसरा हेममई कोट है जा कोटकी पंच भूमिका हैं अर रत्नमई चार दरवाजे हैं अर दरवाजोंपर देदीप्यमान स्वर्णके पीठ हैं तिनपर कनकमई कलश है अर कलशनिके कण्ठ विषैं रत्नोंकी माला है अर वे कलश महा शुद्ध जलसे भरे हैं अर तिनके मुख कमलनिकरि आच्छादित हैं अर मंगलरूप हैं दर्शन जिनका ऐसे दो दो कलश सोहै हैं अर या दूसरे कोटिके द्वारोंके द्वारपाल भवनवासी देवोंके हाथमैं बेंतके दंड हैं अर या दरवाजेके भीतर दोय नाट्यशाला हैं॥५१॥ बहुरि आगे कल्पवृक्षोंका वन है जाके मध्य सिद्धार्थ वृक्ष है तिनके नीचे सिद्ध प्रतिमा विराजे है अर कल्पवृक्षोंके वनकी चौगिंद वनदेवी है बहुरि आगे मार्गविषैं नव नव रत्नोंके तूप हैं सो पद्मरागमणिमई महा सुंदर हैं तिनके आगे देवोंके क्रीडा करवेके मंदिर हैं सो स्वर्ण रत्नमई अनेक खणके हैं बहुरि आगे तीजा फटिकमणिमयी कोट है ताकी नानाप्रकार महा रत्नमई सात भूमि है अर ताके चार दरवाजे तिनमें पूर्वके द्वार आठ द्वारपाल हैं तिनके नाम विजय १ विश्रुत २ कीर्ति ३ विमल ४ उदय ५ विस्वधृक ६ वास ७ वीर्यवर ८ फिर दक्षिणके द्वारपाल आठ हैं तिनके नाम वैजयंत १ शिव २ ज्येष्ठ ३ वरिष्ट ४ अनंग ५ धारण ६ याम्य ७ अप्रतिव ८ यह दक्षिण दिशाके द्वारपाल जानो ॥ ५८ ॥ अर पश्चिमके द्वारके द्वारपाल आठ तिनके नाम जयंत १ अमित २ सार ३ सुधामा ४ अक्षोभ्य ५ सुप्रभ ६ वरुण ७ बदर ८ यह आठ पश्चिम दिशाके

द्वारपाल जानो ॥ ५९॥ अर उत्तरदिशाके द्वारपाल आठ तिनके नाम अपराजित १ अर्च २ अतुलार्थ ३ अमोघ ४ उदित ५ अक्षय ६ उदतकौवेर ७ पूर्णकाम ८ यह आठ उत्तर दिशाके द्वार जानो ॥ ६० ॥ ये चारों ही द्वारोंके द्वारपाल रत्ननिके आसन पर तिष्ठे हैं अर द्वारके दोऊ तर्फ मंगल दर्पण धरे हैं तिनमें जीवोंके भव दीखे हैं सो यह द्वारपाल द्वार द्वार दर्शन करनेवालोंको पूर्व भव दिखावे हैं जिन मंगल दर्पणोंकरि द्वार दैदीप्यमान भासै हैं यह चारों द्वारों विषैं विजयादिक बत्तीस द्वारपाल कल्पवासी देव हैं महा दैदीप्यमान वस्त्राभूषणोंकरि शोभित हैं अर जय जय शब्द करैं हैं ॥ ६३ ॥ अर इन तीनों कोटोंमें पहला कोट एक कोस ऊंचा दूजा कोट दोय कोस ऊंचा अर तीजा कोट तीन कोस ऊंचा अर कोटोंकी उंचाईसे चौडाई आधी आधी जानो अर तीजे कोटके भीतर नानाप्रकार वृक्ष अर बेलोंका भरा मनोहर वन तहां नाना प्रकारके मंदिर हैं ॥ ६६ ॥ अर वनके चौगिर्द वेदी है अर वनमें कदली आदि नानाप्रकारके वृक्ष हैं ॥ ६७ ॥ बहुरि वनके आगे नाट्यशाला है तामें लोकपाल देवतानिकी स्त्री निरंतर नृत्य करैं हैं अर आगे एक और पीठ है सो दैदीप्यमान रत्नोंके समूहकी किरणनि करि तिमिरकूं हरे है ता पर सिद्धार्थ वृक्ष है ताके तले सिद्ध प्रतिमा है अर सिद्धार्थ वृक्षके चौगिर्द अनेक वृक्ष हैं अर वापिका है अर रत्नोंके द्वादश स्तूप हैं सो पृथिवीके आभूषणही हैं रत्नमई हैं ॥ ७१ ॥ अर चारो दरवाजोंके भीतर वेदी करि मंडित चारों दिशाविषै चार वापिका हैं नन्दा १ भद्रा २ जया ३ पूर्णा ४ यह उनके नाम हैं ॥ ७२ ॥ तिनमें स्नान किए प्राणी अपने पूर्व जन्मकूं जानै सो वापिका पवित्र जलकरि भरी है अर सर्व पाप रोगकी हरणहारी है तिनविषै प्राणी सात भव देखे हैं तीन अगले तीन पीछले एक वर्तमान ॥ ७४ ॥

अथानंतर—कोस एक ऊंचा अर एक योजनसे कुछ एक अधिक चौडा कदलीकी है ध्वजा जा पर अर ऊंचा है तोरण जाकें, जिसमें तीन लोकके प्राणी निकसे हैं अर पैसे हैं जिसका यह अतिशय है जिसमें त्रैलोक्यके जीव माय जायं ऐसा त्रैलोक्यविजय नामा जयांगण सोहे है अर जहां मोतीनिकी झालरी बन रही हैं

अर मणि मोती मूंगाओं करि शोभित हैं रत्नोंके पुष्प अर स्वर्णके कमल तिन कर अर्चित है अर स्वर्णके रस कर लिप्त है भूमि सो मानों भूमिसे निकसे सूर्यही सोहे हैं अर जहां सुखके निवास अनेक मंदिर सोहे हैं सो सुर असुर अर नरों करि पूर्ण है अर नाना प्रकारके हैं कहीं एक चित्रामके मनोहर महल हैं तिनमें अद्भुत चित्राम है कहीं एक पुण्यके फलकी प्राप्ति कर जीवोंको स्वर्गादि सुख होय है तिनके चित्राम मंढे हैं कहीं एक पापके उदय करि नरकादिक दुःख होय हैं तिनके चित्राम मंढे हैं सो मानो वह चित्राम देखनहारेनिकूं साक्षात् धर्म अर अधर्म की गतिही दिखावै है ॥ ८१ ॥ अर कहीं एक यह मंदिर देव अर मनुष्य देखनहारोंको धर्मकी श्रद्धाही उपजावे है, दान शील तप अर पूजाका प्रारंभ अर इनके फल स्वर्ग मोक्ष अर जो इनसे रहित हैं तिनके विपरीति ऐसी प्रतीति प्रगट उपजावे है ॥ ८२ ॥ अर स्फुरायमान है मोतिओंकी झालरी जिनके अर देदीप्यमान मणि जडी हैं अर पताकाओंके क्षुद्रघंटिका लगी हैं तिनका पवनकी प्रेरणा करि रमणीक शब्द होय है ॥ ८३ ॥ अर दैदीप्यमान रत्नोंकी माला ऐसी भासे है मानो समुद्रविषें लहर ही है सो या सभामंडपकूं मुनींद्रादिक भक्तिकरि निरखे हैं अर वह मुनि पापसे डरे हैं धर्मविषैं है रुचि जिनकी ऐसा यह त्रैलोक्यविजय नामा जयांगण इन्द्रध्वज सोहै है ताके मध्य सुवर्णका पीठ है सो वह पीठ कैसा सोहे है मानों भगवानकी विजयलक्ष्मीकी मूर्तिवन्त देह है ॥ ८५ ॥ ता पर हजार थम्भका वडा मंडप है ताका नाम महोदय है जाविषैं जिनवानी मानों मूर्तिवन्ती विराजे है उस मंडप को दाहिना देकर महाधीर. बहुश्रुति विराजे हैं अर श्रुतिकेवली कहिये सकल श्रुतके पारगामी कल्याण रूप जो जिनश्रुत ताका व्याख्यान करे हैं ॥ ८७ ॥ अर उस मंडपके समीपी मंडप चार तातै आधा है प्रमाण जिनका तिनविषैं मंडित आक्षेपणी आदि चार कथा करे हैं ॥ ८८॥ आक्षेपणी कहिये जिनमार्गकी दृढ करनहारी अर विक्षेपणी कहिये मिथ्यामार्गकी खंडनहारी अर संवेगणी कहिये धर्मकी रुचि बढावनहारी अर निर्वेदनी कहिये संसार शरीर भोगसूं वैराग्य करणहारी यह चार कथा विवेकी करे हैं ॥ ८९॥ अर इन

मंडपोंके प्रकीर्णक वास नाना प्रकारके तिनविषैं मुनिजन श्रोतानिके समीप केवल ऋद्धि आदि ऋद्धियोंका व्याख्यान करै हैं ॥ ९० ॥ बहुरि नाना प्रकारकी लताओं करि मंडित तप्त सुवर्णमयी पीठ है जहां यथाकाल भव्यजीव सामग्री चढावे हैं बहुरि मार्ग मार्गमें एक या तर्फ एक वा तर्फ यह दोय दोय मंडप हैं तिनेंम नवनिधिके रक्षक देव तिष्ठे हैं सो मनवांछित दानके दायक हैं ॥ ९२ ॥ अर एक अति विस्तीर्ण प्रमद नामा प्रेक्ष्यागृह है तहां कल्पवासनी देवी सदा नृत्य करैं हैं ॥९३॥ अर वह विजयांगण ताकी कोणविषै लोक स्तूप है सो चार चार योजन ऊंचे हैं अर जिनपर ध्वजा फरहरे है ते स्तूप अधोभागविषैं वेतके आशनके आकार हैं अर मध्यभागविषैं झालरी समान हैं अर उर्द्धभागविषैं मृदंगके आकार हैं अर शिखरविषैं ताडवृक्षक आकार हैं ॥९५॥ सो स्तूप निर्मल फटिकमणि समान उज्ज्वल हैं जिनमें लोककी रचना प्रत्यक्ष दृष्टि पडे है जैसे निर्मल आरसीविषैं मुख दीखे मध्यलोक नामा स्तूप ताविषैं सम्पूर्ण मध्यलोकका स्वरूप भासै है ॥९७॥ बहुरि मंदिर नामा स्तूप मंदराचलके आकार देदीप्यमान सोहे है ताकी चारों दिशाविषैं प्रतिमा सोहे है ॥९८॥ अर कल्पवास नामा स्तूप जामें कल्पवासी देव सोहे हैं जाविषैं साक्षात् स्वर्गलोककी समस्त रचना देखनहारेकूं दृष्टि पडे है फिर ग्रैवेयकनामा स्तूप सो मनुष्योंको नवग्रीवकी रचना प्रत्यक्ष दिखावे है ॥ १०० ॥ फिर नव अनुदिश नामा स्तूप तिनमें प्राणी नव अनुत्तरकी रचना देखे हैं फिर विजियादि चतुष्क नामा स्तूप हैं ता विषैं विजियादिक विमानोंकी रचना भासै है अर सर्वार्थसिद्धि नामा स्तूप जामें सर्वार्थसिद्धिकी रचना प्रत्यक्ष भासै है ॥ १ ॥ अर फटकमणि समान निर्मल सिद्धिरूप स्तूप ताहि भव्यकूट नामा स्तूप भी कहै हैं देदीप्यमान है कूट जाके जा विषैं सिद्धोंके प्रतिविम्ब भासै हैं जैसे दर्पणविषै मुख भासे अर स्पर्शा न जाय सो यह भव्यकूट नामा स्तूप जाहि अभव्य न देख सकै अर प्रबोध नामा स्तूप जिनके देखवे करि ज्ञान उपजै चिरकालका अज्ञान मिटै सो यह स्तूप निकटभव्यही देखै जिसे पाय करि साध संसारसे छूटैं या भांति यह दश स्तूप ऊंचे विराजे हैं ॥ ६ ॥ यह तीसरा कोट नाना प्रकार रत्नमई चौगिर्द महा सुन्दर सोहे है जैसे सूर्यकी

चौगिर्द परवेष सोहे है तैसे यह तीजा कोट प्रभुके आस पास सोहे है जाका प्रभाव चार ज्ञानके धारी गणधर देव भी न जान सकै वह भगवान्‌का समोसरण देवनिकूं प्रिय तीनलोकविषै सार शोभा करि सुन्दर कल्याणका मंदिर सोहता भया जिसे श्रीपुर कहिये अर क्षेमपुर कहिये अर श्रेयपुर कहिये मंगलपुर कहिये उत्तमपुर कहिये शरणपुर कहिये जयपुर कहिये अपराजितपुर कहिये आदित्यपुर कहिये जयन्तपुर कहिये वह त्रैलोक्य सार अद्भुत पुर भगवानके प्रभावकरि आश्चर्यकारी होता भया जैसा समोसरणका निर्मापण है तैसा इन्द्रादिक देव काहु ठौर न रच सके यह प्रभुहीके प्रभाव करि यह आश्चर्यकारी है किसीकी शक्ति नाहीं जो ऐसा बनावे तीन पीठोंमें पहले पीठ पर चारों तर्फ धर्मचक्र अर दूजे पीठविषै मयूर हंस आदि अष्ट महाध्वजा चारों दिशा अर चार विदशाकी ओर है ॥ ३९ ॥ अर तीजे पीठविषै श्रीमंडप महा मंगलरूप ता विषै गंधकुटी तामें प्रभुका सिंहासन तापर जिनेंद्र विराजमान जाकी सुर असुर अर नरकोटिक हर्षित चित्त भये स्तुति करै हैं मुकुट विषै लगाये हैं कर कमल जिन सुर नर या भांति प्रभुकी स्तुति करे हैं, हे महादेव ! तुम विजयरूप हो, हे महेश्वर ! तुम महा मोहके जीतनहारे हो, हे महाबाहु तुम समान जीतका स्वरूप अर नाहीं, हे महेक्षण कहिये विशाल हैं नेत्र जिनके सर्वके देखनहारे सबके जाननहारे तुम समान तुमही हो इत्यादि महा स्तुति करे हैं ताही समय वरदत्त नामा राजा मुनिके व्रतधरि मुख्य गणधर भया ॥ ४३ ॥ अर छह हजार रानियों सहित राजीमति दीक्षा धरि आर्य्यकानिके गणकी गुराणी भई मुनियोंको आदि दे द्वादश सभा प्रभुके समोसरणमें होती भई सो नमस्कार कर अपने अपने स्थान तिष्ठै प्रभुको आराधे हैं गंधकुटीकी प्रदक्षिणा रूप वारह सभा सोहे हैं । तहां प्रथम सभाविषै वरदत्त गणधर आदि योगीन्द्र विराजे हैं सो प्रत्यक्ष धर्मका स्वरूप मानों निर्मल धर्मेश्वर जो भगवान् तिनके स्वरूप ही हैं ॥ ४७ ॥ फिर दूजी सभामें कल्पवासी देवनिकी देवी तिष्ठे हैं सो मानों भगवानकी वाह्य विभूतिही है ॥ ४८ ॥ अर तीजी सभामें राजमती आदि आर्य्यकानिके अर श्राविकानिके समूह तिष्ठे हैं सो लज्जा क्षमाशांति आदि गुणों करि शोभित

हैं मानों धर्मकी प्ररूपणा ही है धर्मका स्वरूप धरे विराजी हैं। अर चौथी सभामें जोतिषी देवोंकी देवी दिपै हैं मानों वह देवी प्रभाका स्वरूप ही हैं दैदीप्यमान है भगवानकी परम ज्योति ताकी प्रशंसारूप भक्तियुक्त हैं॥ ५० ॥ अर पांचमी सभामें व्यंतर देवोंकी देवांगना तिष्ठे हैं मानों वह मूर्तिवन्त वन लक्ष्मी ही हैं वनके पुष्पोंके आभूषण करि बेल की न्याईं नम्रीभूत होय रही हैं प्रभुके चरणोंको नवै हैं॥ ५१ ॥ अर छठी सभामें भवनवासी देवोंकी देवी हैं, भगवानकी महा भक्त भासे हैं मानों नागलोककी लक्ष्मी ही नेमनाथकी सेवाकूं आई हैं॥ ५२ ॥ अर सातवीं सभामें दश प्रकार भवनवासीदेव भगवानकी स्तुति करै हैं। भगवान समस्त पाप कर्मके नाशक हैं जिनकी भक्तिसे पाप पलाय जाय यह भवनवासी देव अपने फणोंमें हैं दैदीप्यमान रत्नोंकी प्रभाकरि मनोहर दीखे हैं ॥ ५३ ॥ अर आठवीं सभामें अष्ट प्रकारके व्यन्तर महासुन्दराकार तिष्ठे हैं प्रभुके गुण वर्णन करै हैं पुष्पोंकी माला पहरै हैं॥ ५४ ॥ अर नवमी सभामें चन्द्र सूर्यादि पंचप्रकार ज्योतिषी देव नम्रीभूत भये प्रभाकी वृद्धिको चाहे हैं प्रभुकी प्रभाके प्रभाव करि मंद होय गई है कांति जिनकी ॥ ५५ ॥ अर दशमी सभाविषैं सौधर्म इंद्र आदि सोलह स्वर्गनिके बारह इंद्र अर बारह प्रत्येंद्र आदि सवही स्वर्गवासी देव तिष्ठे हैं सो स्वर्गवासी सौंदर्यताके स्वामी महासुखी भगवानके महाभक्त सोहै हैं जिन समान अर देव नाहीं ॥ ५६ ॥ अर ग्यारहवीं सभाविषैं वलदेव वासुदेव आदि सबही राजा तिष्ठे हैं समस्त सिद्धिके देनहारे जिनवर तिनको सेवै हैं अर बडे बडे श्रावक सबही तिष्ठे हैं यह ग्यारहवीं सभा मनुष्योंकर मंडित है वह सम्यग्दृष्टी श्रावक मानों दान पूजादि धर्म मूर्ति ही हैं भगवानका है ध्यान जिनके ॥ ५७ ॥ अर बारहवीं सभामें सिंह, गज, मृग वृषभादि थलचर अर हंस गरुणादि नभचर अनेक जातिके तिर्यंच तिष्ठे। भगवानके अतिशयकरि दूर होय गई है अविद्या जिनकी अर मिट गए हैं वैर जिनके अर विलाय गए मायाचार आदि दोष जिनके इन दोषोंके अभावसे गुणरूप होय रहे हैं कैयक तिर्यंच सम्यक्त धारते भए अर कईएक श्रावकके व्रत धारते भये अर कईएक मनुष्य मुनि भये

५७७

अर कैयक देव सम्यक्त्वके धारक भए या भांति
अर कईएक स्त्री आर्यिका भई अर कैयक श्राविका भई। अर कैयक देव सम्यक्त्वके धारक भए या भांति
बारह सभाकरि मण्डित जिनेश्वर समोशरणविषैं विराजे मानों यह द्वादशसभा द्वादशांगरूप जो जैनशास्त्र
ताके गुण ही हैं तिनकरि प्रभु सेवने योग्य हैं ॥ ५९ ॥ वह भगवान नेमनाथ सिंहासनकी शोभा जगतका
ईश्वरपना प्रगट करै हैं यह ईशपना अर ठौर नाहीं और देवनिकरि ढारे चमर तिनकरि सब लोकका राजेंद्रपना
प्रगट दिखावै हैं ॥ ६० ॥ अर चंद्रमासमान उज्वल तीनछत्र तिनकरि त्रैलोक्यनाथपना प्रकाशै अर भामंडलकी
ज्योतिकी प्रभाकरि प्रभुका आधिक्यपना दिखावै हैं भामंडलकी प्रभा जीवोंका जन्मांतरका तिमिर दूर करै है
॥ ६१ ॥ अर अशोकनामा वृक्ष सवजीविका शोक दूर करै हैं वह अशोकवृक्ष सब ऋतुके पुष्पोंकर शोभित है अर
पुष्पवृष्टिकरि देव जिनेश्वरकूं पूजै हैं ॥६२॥ अर दुंदुभि वाजोंके मंडलशब्दकर जीतकी लक्ष्मी प्रगट करै हैं अर सब
जीवोंको अभयदानका देनहारा दिव्यध्वनि ताकर अपना सर्वज्ञपना प्रगट करै हैं वे भगवान महेश्वर अष्ट प्रातिहार्य-
करि शोभित सर्वेश्वरपना भव्योंको प्रकाशै हैं वह अष्ट प्रातिहार्य किसीकर न हरे जांय अपने गुणोंकर उपजे हैं
॥६४॥ लोकोंके आनंदके वास्ते अपनी सकल विभूति दिखावते नेमि जिनेश्वर केवलज्ञानसहित समोसरणमें विराजे
सर्वलोककूं उलंघै ऐसी विभूति जिनकी ॥ ६५ ॥ देव परस्पर देवोंको बुलावै हैं अर यह शब्द करै हैं यह
भगवान पूर्ण ब्रह्म परमातमा सकल गुणोंका पुंज सब जीवोंको कल्याण कारी है जो आत्मकल्याण
किया चाहे सो आयकर इसे भजो ॥ ६६ ॥ अनेक देव अर मनुष्य समोसरणमें बैठे हैं अर अनेक आवै हैं जहां
समोसरण दृष्ट पडा तहां तत्काल अपने अपने वाहननितैं उतरकरि मानस्थंभनिके समीप आयकरि हाथ जोड
सीस नवाय नमस्कार करै हैं ॥ ६८ ॥ वाहनादि परिग्रह तिनकूं वाहर तजकरि पूजाकी सामग्रीकरि युक्त मान-
स्थंभके पीठकूं प्रदक्षिणाकरि नमस्कार करै है बहुरि मानस्थंभके परे उत्तमजन प्रवेश करै हैं महाभक्तिकरि मंडित
भीतर पैठे हैं ॥ ७० ॥ अर जो कुकर्म करनहारे पापी हैं अर नीच हैं पाखंडी हैं अर जिनके अंग विकल हैं अर

जिनकी इंद्री भी विकल हैं सो बाहरहीतैं वंदना करै हैं अर छत्र, चमर, झारी, आदि सब उपकरण बाहर तजकरि जयांगणविषैं कितनेक निजवर्गनिसहित हाथ जोड नमस्कार करते देवेंद्र, नागेंद्र, नरेंद्र प्रवेश करै हैं विधिपूर्वक भीतर जायकरि अपने मणीनिके मुकुट नवाय नेमीश्वरकूं नमस्कार करै हैं अर पहली पीठपर धर्मचक्र है ताकरि पूजे हैं अपनी शक्तिप्रमाण अर विभवप्रमाण सुर असुर नरेंद्रादिक प्रभुकूं बारंबार नवै हैं बहुरि हर्षके भरे प्रगटै हैं रोमांच जिनके सो हाथ जोड शीश नवाय अपने स्थानक तिष्ठे हैं जैसे सूर्यके उदयकूं पायकरि कमलनिका समूह विकसै है तैसैं जिन रविकूं पायकरि गुणरूप कमल विकसै हैं ॥ ७६॥ सकल सुरोंकी सेना अर नरोंकी सेना समोसरणविषैं प्रवेश करती संती समोसरणकूं पूरिवे समर्थ न होती भई। जैसैं अनेक नदी प्रवेश करती संती समुद्रकूं पूर न सकैं। कईएक निकसैं हैं कईएक पैठे हैं कई प्रदक्षिणा करै हैं कईएक नमस्कार करै हैं कईएक स्तुति करै हैं कईएक ईश्वरका ध्यान धरै हैं या भांति संतोंके समूह तहां तिष्ठे हैं जहां भगवन्तके प्रभावकरि मोह नाहीं, भय नाहीं द्वेष नाहीं, विषयकी अभिलाषा नाहीं, रति नाहीं, अदेखसकाभाव नाहीं अर छींक, जम्भाई, खांसी, डकार, इत्यादि विकार नाहीं फिर निद्रा तंद्रा क्लेश, भूख, प्यास इत्यादि नाहीं जीवोंका अकल्याण नाहीं सबही विघ्न जिनके वचन हरै हैं॥ ८०॥ समोसरणकी भूमिविषैं त्रैलोक्यकी अद्भुत विभूति है यह भगवानकी बाह्य विभूति है सोई कथनमें न आवै तो अंतरंगकी विभूति कौन कहि सकै संपूर्ण विभूतिकी एक भूमि ऐसा जिनेश्वरका स्थान ताविषैं जिनेश्वर विराजे अंतरंगकी विभूतिकरि महापवित्र सो बारह सभाके भव्य जीवनिके समूह अभिलाषरूप जो नेत्र तिनकरि जिनेश्वरका रूप अमृतरूप समुद्र ताहि पीवते भए॥ १८१॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ समोसरणवर्णनोनाम षट्पंचाशत् सर्गः ॥ ५६॥

अथानंतर—कल्याणका एकनिवास जो वह स्थानक सदा उत्सवरूप ताविषैं भव्यलोक धर्मश्रवणकी इच्छा-

करि हाथ जोड तिष्ठे तहां वरदत्तनामा मुख्य गणधर वक्तानिमें श्रेष्ठ जे भगवान नेमिजिनेंद्र तिनकूं समस्त भव्य जीवनिके हितकी वार्ता पूछता भया ॥ १ ॥ तव गणधरके प्रश्नसे स्वामीके मुखसे दिव्यध्वनि खिरी। प्रभुका मुखकमल जिसका चहुं ओरसे दर्शन होय है अर प्रभुकी वाणी धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चार पुरुपार्थ तिनकूं प्रगट करे है अर चार वर्ण अर चार संघ तिनोंको मार्गकी दिखावनहारी है अर प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग इन चारोंकी माता है चारों अनुयोग जिनवाणीसे प्रगट होय हैं अर जिनेश्वरकी वाणी अक्षेपणी विक्षेपणी संवेगणी निर्वेगनी चतुर्विध कथाकी वृत्तिको धरैं हैं अर चतुर्गतिकी निवारण हारी हैं अर एक दोय तीन चार पांच छह सात आठ नव इत्यादि अनेक भेदोंको धरै हैं द्रव्यकी सत्ता स्वभाव पर्यायरूप है द्रव्य पर्यायवन्त है जैसें सत्ता पर्याय है एक है तथापि अनन्तभेदोंकी धरणहारी हैं तैसें जिनवाणी एकरूप है तथापि अनन्तनयरूप है ॥ ५ ॥ एक आत्मस्वरूपकी कथनहारी है इसलिये एकरूप कहिए अर यती श्रावक यह दोय प्रकार धर्म तिनकी निरूपणहारी अथवा निश्चय व्यवहार दोय नयकी प्रगट करणहारी इसलिये दोयरूप कहिये अर रत्नत्रयका अथवा द्रव्यगुण पर्यायकी प्रकाशनहारी इसलिये क्रिया कहिये अर चार अनुयोगकी कथनहारी चतुकषायकी नाशनहारी चतुर्गतिकी निवारणहारी चार रूप कहिए अर पंचास्तिकायकी प्ररूपणहारी पंचपरावर्तनके भेद दिखावनहारी पंचपरमेष्ठीकी भक्ति प्रकाशनहारी इसलिये पंचरूप कहिए अर षट्द्रव्योंकी दिखावनहारी षटकायके जीवकी रक्षा करणहारी इसलिये षटरूप कहिए अर सप्तभय निवारणहारी सप्तव्यसनकी निन्दनहारी सप्तभंग रूप इस लिए सप्त प्रकार कहिए अर अष्ट कर्मकी नाशन हारी अष्टगुणोंकी भाषणहारी इसलिए नवरूपभी कहिए अर दशलक्षण धर्मकी निरूपणहारी अर दशधा परि ग्रहकी छुडावनहारी इसलिए दशरूप भी कहिए इत्यादि कहांतक कहिए या जिनवाणीकी महिमा श्रीजिनेश्वर देव ही जानैं ऐसी यह जिनवाणी जगतके उद्धार करिवेकूं जिनेश्वरके मुखतैं प्रगट भई ॥ ६ ॥ वह जिनवाणी

जीवोंके अहितकूं निवारती संती अर हितको प्रगट करती संती अर प्राणियोंको यथायोग्य धर्मविषैं धारती संती अर अशुभका प्रहार करती संती अर शुभकूं थापती संती अर जीवोंके उपार्जे कर्मोंको स्थिर करती संती अर जीवोंकों शिवस्थानका संग करावती संती एक योजन अधिक विस्तरी महा मधुर स्निग्ध गम्भीर महा दिव्य अक्षरोंकी प्रगट करनहारी निरक्षरी महासाध्वी सरस्वती अनन्यवृति कहिए एक धर्मकी प्ररूपणा टार नहीं है अर वृति जाकी ऐसी भगवानकी वाणी भाव अर अभाव दोनोंकी दिखावनहारी निर्विकल्पभावकी बढावनहारी जगतकी स्थिति जतावनहारी अनादिसिद्ध शारदा सर्वज्ञके मुखसे प्रगट भई यह किसीकी करी नाहीं याका कोई कर्त्ता नाहीं अनादिकालकी प्रवर्ते है अर सदा प्रवर्तेगी केवलज्ञानियोंकरि इसका व्याख्यान होय है वह वक्ता हैं अर सर्व श्रोता हैं ॥ १० ॥ सो प्रभुकी ध्वनिमें यह आज्ञा भई जो आत्मा है अर परलोक है धर्म अधर्म है तिनके कर्त्ता जीव हैं अर तिनके फल सुख दुःख तिनका भोक्ता जीव है जो नास्तिक यह चरचा नहीं मानै हैं सो नरक निगोदके अधिकारी हैं अर तिनके फल आपही भोगवै हैं आपही अज्ञानकरि संसारविषै भ्रमै हैं अर आप ही ज्ञानकरि मुक्त होय हैं ॥ ११ ॥ जबतक यह मिथ्यादृष्टी है रागद्वेषादि भावकरि कलेशरूप है तब तक भवसागरविषैं भ्रमै है अर जब याके सम्यक्ज्ञान होय अर संसार शरीर भोगसे वैराग्य उपजे तब सिद्ध होय संसारसे छूटै। या जीवकी मूढदशा जाती रहे अर ज्ञानदशा होय तब मोक्ष पावै यह अध्यात्मज्ञान दीपिका समान मोक्षमार्गका दिखावनहारा है। वह श्रीभगवानकी वाणी अध्यात्मरूप यद्यपि एक स्वरूप है नानारूप नाहीं तथापि नानाप्रकार भासती भई सभाविषैं जितने श्रोता हुते सो सब अपनी अपनी भाषामें समझें जैसे स्वच्छजल एकरूप है परंतु पृथिवीविषैं नाना वृक्षनिके योगसे नानारूप होय है ॥१५॥ सब सभा सावधान होय सुनै है अर जिनेश्वर-रूप सूर्य उनके अंतरंगका अज्ञानरूप तिमिर दिव्यध्वनिरूप किरणकर हरते भए वे भगवान विश्वात्मा कहिये विश्वके हितू इत्यादि कथन कर जीवनिकूं उपदेश देते भये ॥ १६ ॥ या संसारविषैं जीवोंकी दोय राशि हैं एक

तो भव्यराशिं दूजी अभव्य राशि तिनमें अभव्य राशि तो मोक्षके अधिकारी नाहीं अर जे भव्य जीव हैं तिनमें निकटभव्य मोक्षके पात्र हैं मोक्षनामा पुरुषार्थ भव्य जीवनहीके होय है जे भवनवासी भव्यताके योगकर शुद्ध हैं तेई सिद्धपदकूं पावै हैं ॥ १७ ॥ मोक्षका उपाय आत्मध्यान अर सूत्रका अध्ययन है सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र इनकी एकता सो ध्यान कहिये ॥ १८ ॥ सो सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रका विशेष वर्णन करै हैं जो तत्त्वका निःसंदेह श्रद्धान सो सम्यक्दर्शन कहिये सो सम्यक्दर्शन संशय विमोह विभ्रमसे रहित है समस्त मलका है अभाव जहां जब तक संशय है तब तकही मन मलीन है सो सम्यक्दर्शन तीन प्रकार है एक उपशम दूजा क्षयोपशम तीजा क्षायिक जाके मोहकी सात प्रकृति उपशमें सो उपशम अर सातोंका क्षयोपशम होय सो क्षयोपशम उसे वेदक भी कहिये अर सातोंका क्षय होय सो क्षायिक यह तीन भेद कहे अर निःसर्ग तथा अधिगम इन दोय भेदनिकरि दोय प्रकार भी कहिये सो स्वतः स्वभाव होय सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशसे होय सो अधिगम कहिये ॥ २० ॥ जीव, अजीव आस्रव, बंध, संबर, निर्जरा, मोक्ष यह सप्त तत्व तिनकी श्रद्धा करनी इनके लक्षण जानै जो तत्वोंका श्रद्धान सो सम्यक्दर्शन कहिये। अथानंतर—सप्त तत्वोंमें जीवके लक्षण कहे हैं जीवका लक्षण उपयोग ताके भेद दो एक ज्ञानोपयोग एक दर्शनोपयोग सो ज्ञानोपयोगके भेद आठ अर दर्शनोपयोगके भेद चार मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, केवल, कुमति, कुश्रुति, कुअवधि यह आठ ज्ञानोपयोगके भेद हैं अर चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल यह चार दर्शनोपयोगके भेद हैं ॥ २४ ॥ आतमाका चिन्ह चैतन्य है सो संसार अवस्थाविषैं इच्छा, द्वेष, प्रलय, सुख, दुःख, इन चिन्होंकरि चेतना जानी जाय है अचेतनमें ये लक्षण नाहीं कई एक भूतवादी ऐसा कहै हैं जो पृथिवी अप तेज वायु इन चारोंका मिलाप सो ही जीव अर इनका विछुडना सोई मरण सो यह बात प्रमाण नाहीं इन चारोंका मिलाप सो शरीरका आकार है अर आतमा निराकार है इनके मिलापकरि चेतनाकी उत्पत्ति नाहीं इनके वियोगकरि चेतनाका मरण नाहीं चेतना जन्म मरणसे रहित है इनका संयोग सो शरीरकी उत्पत्ति अर इनका

वियोग सो शरीरका मरण भूतवादी कहे है पीसा अन्न अर जल इत्यादि वस्तूनिके मिलापकर मद्यकी उत्पत्ति होय है अथवा गुल अर बोरडीका आदि वस्तुओंके मिलापकर मद्यकी उत्पति होय है तैसे पृथिवी, जल, अग्नि, पवन इनके योगसे जीव होय है सो यह बात मिथ्या है वह मद्यकी सामग्री जुदी जुदी है तिनमें लेश मात्र मदशक्ति होय है इसिलिये वह भेली होय मद्यकी कर्त्ता होय है अर इन भूतचतुष्टयमें जीवत्वशक्ति नाहीं यह कायाके कारण तिनकूं जो चैतन्यताके कारण मानै हैं सो वालू रेत आदिकमें तेलकी उत्पत्ति चाहै हैं सो कैसे होय यह जीव अनादिनिधन है जाका आदि अन्त नाहीं अनादिकालका गत्यन्तरसे आवे है अर गत्यन्तरको जाय है या भवबनविषैं अपने कर्मोंके वश जीव भ्रमण करै है ॥ २७ ॥ अर कईएक प्रत्यक्षवादी कहै हैं जो प्रत्यक्ष दीखै सो ही प्रमाण अर जो न दीखै सो प्रमाण नाहीं यह शरीरही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर है इसलिये या सिवाय अर जीव नाहीं इत्यादि मिथ्या वार्त्ता जो नास्तिकवादी प्ररूपै हैं सो अपना अर परका अहित करै हैं या श्रद्धासे आप डूबै हैं अर औरोंको डुबोवै हैं ॥ २८ ॥ अर कईएक मिथ्यावादी ऐसा मानै हैं जो आत्मा है परन्तु नित्य नाहीं क्षणभंगुर है सो ऐसी श्रद्धा सत्य नाहीं आत्मा नित्य है अखंड अविनश्वर है जो क्षणभंगुर होय तो पूर्व जन्मका स्मरण कैसे होय कईएकको पूर्वभवका जातिस्मरण भी होय है अर क्षणभंगुर होय तो या जन्मकी वार्त्ताका स्मरण कैसे होय पिछले अनुसंधानकी बुद्धिका लोप होय तो सकल व्यवहारहीका लोप होय देना लेना आदि सब व्यहार मिट जाय ॥२९॥ अर कईएक वादी आत्माको ज्ञानमात्रही मानै हैं सो आत्मा ज्ञान आदि अनंत गुण मात्र है एक ज्ञानमात्रही कहिवेमें न आवै अनन्त गुणका अभाव होय है यह जीवद्रव्य आप, ज्ञाता है दृष्टा कर्त्ता है, भोक्ता है, अरक्ता कहिये कर्मोंका तजनहारा अर उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यकर युक्त है अर गुणवान है ॥ ३० ॥ अर असंख्यातप्रदेशी लोकप्रमाण है अर प्रदशोंका संकोच विस्तारकरि शरीर प्रमाण है अर वर्ण पांच रस पांच, गंध दोय, स्पर्श आठ यह पुद्गलके वीस गुण तिनिसे रहित है ॥ ३१ ॥ अर कईएक कहै हैं आत्मा

सोवाके जीवमात्र है अर कईएक कहे हैं अणुमात्र है अर कईएक कहै हैं अंगुष्टमात्र है अर कईएक कहै हैं पाचसौ योजन प्रमाण है सो यह सब ही असत्यवादी हैं जैसा ये कहै हैं तैसा नाहीं आतमा अमूर्तिस्वरूप चिद्रूप है ॥ ३२ ॥ देही देहीके विषैं भिन्न २ जीव पदार्थ सो सबही असंख्यातप्रदेशी हैं अर व्यवहार नयकर देहप्रमाण है जो देहीप्रमाण न होय तो अर्थकी सिद्धि न होय जो देहप्रमाणसे अधिक होय अर बहु योजन होय तो स्पर्शा भी जाय अर नेत्रोंकर देखा भी जाय अर देहप्रमाणसे न्यून आतमा होय तो शरीर जितना अधिक होय उतना मृतकसमान चेष्टारहित होय इसलिये ऐसे नाहीं आतमा अदृश्य है अर अस्पर्श है जैसा देह धारै है ताही प्रमाण प्रदेश विस्तरै हैं ॥ ३५ ॥ सो आतमा गति चार, इंद्री पांच, षट्काय, वेद तीन, योग पंद्रह, कषाय पचीस, ज्ञान आठ, संयम सात, सम्यक्त छह, लेश्या छह, दर्शन चार, सैनी असैनी दोय, भव्य अभव्य दोय, आहारक अनाहारक दोय, मार्गणा चौदह, तिनकरि लखिये है अर चौदह गुणस्थान तिनकर विलोकिये है सो जीव पदार्थ चेतन है ॥३६॥ अर प्रमाण दोय, एक प्रत्यक्ष दूजा परोक्ष अर नय द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक, नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत अर निपेक्ष चार नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव, अर सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, भाव, अन्तर, अल्पबहुत्व यह आठ इनकरि जीव जाना जाय; अर मुक्त जे सिद्ध ते निज गुणोंकरि जाने जाय हैं ॥ ३८ ॥ द्रव्य कहिये वस्तुका स्वरूप सो अनेकरूप है ताका एकरूप निरूपण सो नय कहिये जहां द्रव्यका नित्य स्वरूप वर्णन करिये सो द्रव्यार्थिक नय कहिये अर जहां अनित्य स्वरूप वर्णन करिये पर्यायकी मुख्यताकरि सो पर्यायार्थिक नय कहिये ॥३९॥ यह मूल नय दोय हैं सो परस्पर सापेक्ष हैं द्रव्य विना पर्याय नाहीं अर पर्याय विना द्रव्य नाहीं। दोऊ नयोंके भेद नैगमादिक नय हैं तिनमें नैगम, संग्रह, व्यवहार यह तीन तो द्रव्यार्थिकके भेद हैं अर ऋजुसूत्र शब्द अर समभिरूढ एवंभूत यह चार पर्यायार्थिक नयके भेद हैं। जो वस्तुकी एकता सोही द्रव्य अर जो अनेकता सो ही पर्याय एकताका नाम सामान्य कहिये अर अनेकताका नाम विशेष कहिये पदार्थके संकल्प विकल्प मात्रका

ग्राहक सो नैगमनय कहिये ताके भेद तीन अतीतविषैं वर्तमानका आरोपण सो भूतनैगम ऐसा कहना जो आज दीपिमालिकाके दिन वर्द्धमान स्वामी मोक्ष गये सो जा दिन मोक्ष गये वा दिनकूं व्यतीत भए अढाई हजार वर्ष ऊपर गये अर आजका दिन कहना सो भूतनैगम जानो अर होनहारविषै वर्तमान समान कहना सो भाविनैगम है जैसे अरहन्तोंको सिद्ध कहना अर वस्तु कछु निपजी कछु न निपजी ताहि निपजी समान कहिये सो वर्तमान-नैगम जानो ऐसा कहना जो भात रांधिये है सो भात नाम तो रंध चुके अर रांधतेको भात कहना सो वर्तमान नैगम है जब चावल चरवेमें डाले अर अग्निपर चढाये तब भातही कहिये तो दोष नाहीं अर वस्तुका भेद न करना समस्तका ग्रहण करना सो संग्रह नय कहिये सबही द्रव्य सत्तारूप हैं अस्तित्व गुण विना कोई द्रव्य नाहीं सब द्रव्योंको एकरूप जानना सो सामान्य संग्रह अर सब जीवोंको एकरूप जानना सो विशेष संग्रह कहिये यह संग्रहके दोय भेद हैं अर संग्रह नयकरि किया जो द्रव्योंका संग्रह ताविषैं ऐसा भेद करना जो द्रव्यके जीव अर अजीव यह दोय भेद हैं यह कथन करना सो सामान्य संग्रह भेदका व्यवहार है अर जीवमें भेद करना जो यह संसारी अर सिद्ध सो विशेष संग्रह भेदकरि व्यवहार है यह व्यवहारके दोय भेद जानो ॥ ४५ ॥ अर ऋजु-सूत्रका भेद सुनो भूत अर भविष्यत् यह दोनों वक्र सो इनको तजकरि वर्तमान अर्थपर्यायरूप द्रव्यका कथन करना सो ऋजुसूत्र कहिये जैसे सूत्र सूधा चला जाय सूत्रविषै वक्रता नाहीं तैसे ऋजुसूत्रविषैं वर्तमान परणति-कीही प्ररूपणा है ताके भेद दोय एक सूक्ष्म ऋजुसूत्र एक स्थूल ऋजुसूत्र जो एक समय अवस्थाही द्रव्यकी अर्थ-पर्याय सो सूक्ष्म ऋजुसूत्र कहिये अर मनुष्यादि पर्याय अपनी आयुप्रमाण तिष्ठै है ऐसा कहना सो स्थूल कहिये ऋजुसूत्र यह ऋजुसूत्रके दोय भेद कहे अर शब्द कहिये ध्वनि ॥ ४६ ॥ सो लिंग कहिये स्त्रीलिंग पुलिंग नपुंसक लिंग इन तीन लिंगरूप शब्दका उच्चार है अर शब्द है सो साधनेकरि सिद्ध होय है अर एकवचन, द्विवचन, बहुवचनरूप नानाप्रकार है अर काल कहिए अतीत अनागत वर्तमान तिनकरि शब्दका भेद होय है सो एक

५८५

यथार्थ शब्द एक रूढिक जिसका अर्थ सो यथार्थ अर जिसका अर्थ नाहीं सो रूढिक अर शब्द अनेक अर अर्थ एक जैसे दारा, भार्या, कलत्र ये सब स्त्रीपर्यायके नाम हैं यह शब्दनय कहिए ॥ ४७ ॥ अर समभिरूढ नयका भेद सुनो जो संसारमें प्रसिद्ध शब्द पड गया सो कहना गौ ऐसा शब्द सुहीको कहिए जहां अर्थका विचार नाहीं गौ शब्दका अर्थ तो यह है गच्छति जो गमन करै उसको गौ कहिए सो गमन तो सब ही करै हैं परन्तु गौ नाम गायहीका प्रसिद्ध जानहु अर कोई चक्षुहीन है अथवा प्रशंसा योग्य चक्षु नाहीं अर नाम ताका कमलनयन है सब ही कमलनयन ही कहैं यह समभिरूढ नय माननी अर जैसी चेष्टा होय तैसा ही कहिए इन्द्रतीति इन्द्र इसका अर्थ जो क्रीडा करै सो इंद्र जासमय क्रीडा करै तासमय इंद्र कहिए यह एवंभूतनामा नयोंका स्वरूप है जो कर्मशत्रुको जीतै सो जिन जेते वचनके मार्ग उतने ही नय यह संख्या नाहीं जो ऐते ही नय हैं नय असंख्य हैं ॥ ५२ ॥ यह जीव तत्वका व्याख्यान किया अर अजीवके भेद पांच—धर्म, अधर्म, आकाश काल अर पुद्गल इन तत्वोंकी श्रद्धा करै सो सम्यग्दर्शनका लक्षण है। धर्मका लक्षण गति अधर्मका लक्षण स्थिति आकाशका लक्षण अवकाशदान अर कालका लक्षण वर्तना अर पुद्गलका लक्षण मूर्तित्व मिले अर विछुडे इसलिए पुद्गल कहिए सो गति अर स्थिति जीव अर पुद्गल ही के हैं अर द्रव्यके नाहीं पुद्गल अनेकरूप है उसके मूलभेद दोय हैं एक अणु अर एक स्कंध, जो परमाणुओंका समूह एकत्र होना सो स्कंध अर अकेला परमाणु सो अणु कहिए अणु मिलै तब स्कंध होय अर स्कंध विछुडै तब अणुमात्र रहजाय अर कालकी पर्याय समय आदि अनेक हैं कलन स्वभाव कहिए वर्तमान लक्षण उसे धरै सो काल एक निश्चय काल एक व्यवहारकाल जो कालाणु द्रव्यरूप सो निश्चय काल अर जो समयादि पर्यायरूप सो व्यवहार काल यह व्यवहारकाल समयादि है सो पुद्गल परमाणुकी गति-कर जाना जाय है इसलिए परतंत्र कहिए अर निश्चयकाल स्वतःसिद्ध अविनाशी पदार्थ है इसलिए स्वतंत्र कहिए उस निश्चयकालकी यह व्यवहारकाल पर्याय है ॥ ५६ ॥ यह अजीव तत्वका व्याख्यान किया फिर आस्रवका

व्याख्यान करे हैं मन वचन कायके द्वारा कर्मका आगम सो आस्रव कहिए उसके दोय भेद जो पुण्य कर्मका आस्रव
सो शुभास्रव कहिए अर जो पापका आस्रव सो अशुभास्रव कहिए ॥ ५७ ॥ सो कषाय संयुक्त जीव अर कषाय रहित ५७
जीव यह आस्रवके दोय स्वामी तिनमें पहला मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ताहि आदि देय दशमा सूक्ष्मसाम्पराय तहांलग
सकषाय कहिए अर ग्यारहवां उपशांतमोह अर बारहवां क्षीणमोह तेरहवां सयोग जिन चौदहवां अयोग जिन यह
चार गुणस्थान अकषाय हैं तिनमें ग्यारहवें बारहवें उपशांतमोह तो एक वेर पाछे आवे है अर क्षीणमोह तथा सयोग
जिन अयोग जिन यह कृतार्थ होय ही चुके सो सकषायके तो कर्मोंका आश्रव सांपराय कहिए कछुयक काल रहाऊ
है अर अकषायके ईर्यापथ कहिए रहाऊ नाहीं गमनरूप ही है ॥५९॥ सकषायीके जो आश्रव है सो इंद्रियोंके विषय
अर कषाय अर हिंसादि पाप अर अव्रत असंयम प्रमाद इनकर होय है उसकी पच्चीस क्रिया हैं तिनमें प्रथम सम्य-
क्त्वपरिवर्धनी सम्यक्क्रिया है उसके लक्षण अरहंत देव निर्ग्रंथ गुरू जिनप्रतिमा जिनवचन इनकी पूजा ॥ ६१ ॥
अर अशुभके उदयसे कुगुरु कुदेव कुधर्म इनका स्तवन सो मिथ्यातपरिवर्धनी मिथ्यातक्रिया जानो अर तीजी
असंयमवर्द्धनी प्रयोगक्रिया ताके लक्षण जहां षट्कायकी दयाका यत्न नाहीं विना देखे गमनादिककी प्रवृत्ति ॥६३॥
अर चौथी प्रमादपरिवर्द्धनी प्रमादसहित क्रिया उसे समादानक्रिया भी कहिए उसके लक्षण संयम भी धारकर असं-
यमकी ओर सन्मुख होना अर पांचमो ईर्यापथ क्रिया कही, ईर्यासमिति सहित गमन करना सो संयमकी वृद्धिका
कारण है अर जो ईर्यासमिति विना गमन करना सो असंयमवर्द्धनी पापास्रवका कारण है यह क्रिया सरागीहीके
होय यह पांच सांपरायकी क्रिया कहिए ॥ ६५ ॥ अर छठी प्रद्वेषकी क्रिया सो क्रोधके आवेशके वशसे उपजे अर
सातमी कायकी किया उसका लक्षण दुष्ट जीवके दुष्टताका उद्यम होय ॥ ६६ ॥ आठमीं अधिकरणी क्रिया जो
हिंसाके उपकरणका ग्रहण अर नवमी पारितापिकी क्रिया जो स्वेच्छाचारपनेथकी परजीवको दुःखकी उत्पत्ति
करना ॥ ६७ ॥ अर दशमी प्राणातिपातकी क्रिया उसका लक्षण जीवनिके इन्द्री बल आयु श्वासोच्छ्वास प्राणोंका ६७

वियोग करै यह छठीसे लेय दशमी तक व्यापिका क्रिया कहीं अर ग्यारहवीं दर्शन क्रिया उसका लक्षण प्रमादी जीवके रागभावके योगसे मनोज्ञ रसरूपके अवलोकनका अभिप्राय होय ॥६९॥ अर बारहवीं स्पर्शन क्रिया कर्मके बंधका कारण जानना उसके लक्षण पल्लव पुष्प आदि सजीव वस्तु कोमल तिनके स्पर्शका अविवेकीके अभिलाष होय ॥७०॥ अर तेरहवीं पापाश्रवकी करणहारी प्रत्यायकीनामा क्रिया उसके लक्षण पापके उपकरण अपूर्व निपजावै ॥७१॥ अर चौदहवीं समंतानुपातिनीनामा क्रिया सो साधुजनोंको अयोग्यताके लक्षण स्त्री पुरुष अर पशु तिनके स्थानकविषैं मलमूत्रादि डारे ॥ ७२ ॥ अर पंद्रहवीं अनाभोगनामा क्रिया उसके लक्षण विना देखी विना पूंजी भूमिविषैं अंगादिकका स्थापन यह ग्यारहवींसे लेय पंद्रहवीं तक दुःक्रिया हैं ॥७३॥ अर सोलहवीं स्वहस्त क्रिया आस्रवकी वढावनहारी जाननी उसके लक्षण जो अयोग्य कार्य किसीसे न वने सो अपने हाथों करै ॥ ७४ ॥ अर सत्रहवीं निसर्गनामा क्रिया स्वतःस्वभाव आस्रवकी करणहारी उसके लक्षण पापके अंगीकारकी वृत्ति विना सिखाई आपही जान लेय अर अठारहवीं विदारणनामा क्रिया उसके लक्षण पराये औगुणका लोकोंके निकट प्रकाश करना यह क्रिया बुद्धिकी नाश करणहारी है ॥ ७६ ॥ अर उन्नीसवीं जिनआज्ञाउलंघनी क्रिया उसके लक्षण अज्ञानी जीव जिन आज्ञा यथार्थ पालनेकूं असमर्थ अर षट् आवश्यकादिविषै मिथ्यात्वके योगसे औरसे और प्ररूपण करैं ॥ ७७ ॥ अर बीसवीं अनादरनामा क्रिया उसके लक्षण शठताके योगसे अर आलसके वशसे शास्त्रोक्त विधिके करनेविषैं आदर नाहीं यह सोलहवींसे लेय बीसवीं पर्यंत अनाकांक्षनामा क्रिया कहीं अर इकीसवीं प्रारंभ नामा क्रिया उसके लक्षण और जीवन आरंभ किया जो आरंभ जहां हिंसा उसविषैं अज्ञानी हर्ष मानै आपके आरंभकी वांछा इसलिये पराये आरंभ अच्छे लागैं ॥ ७८ ॥ अर बाइसवीं पारिग्रहणीनामा क्रिया उसका लक्षण परिग्रहकी अति तृष्णा जो हाथ पडे सो ही उठाय लय अर तेईसवीं मायानामा क्रिया उसका लक्षण जो ज्ञानदर्शनादिविषैं मूढता अर परजीवोंका ठगना ॥ ७९ ॥ अर चौवीसवीं मिथ्यादर्शननामा क्रिया उसके लक्षण

मिथ्यादर्शनके आरंभका दृढ करना अर अन्य जीवोंको मिथ्यात्वविषैं अनुराग बढावना ॥ ८० ॥ अर पचीसवीं अप्रत्याख्याननामा क्रिया उसके लक्षण कर्मके उदयके वशसे पापथकी अनिवृत्ति किसी ही अयोग्य क्रियाका त्याग नाहीं सर्व पाप क्रियाकी प्रवृत्ति यह बीसवीं क्रियासे लेय पचीसवीं तक अनिवृत्ति क्रिया हैं यह पचीस आस्रवकी क्रिया कहीं ॥ ८१ ॥ जिस जीवके कषायपरिणाम मंद होवैं उसके आस्रव मन्द होय अर जिसके कषाय मध्य होय उसके आस्रव भी मध्यतारूप होय अर जिसके तीव्र कषाय होय उसके आस्रवकी तीव्रता जानो जैसा कारण तैसा कार्य कषाय तो कारण हैं अर आश्रव कार्य है ॥८२॥ सो आश्रवके भेद दोय एक जीवाधिकरण एक अजीवाधिकरण तिनमें जीवाधिकरणके भेद सुनो समरम्भ कहिए प्रमादी जीवके जीवहिंसादि पापोंके विषय यत्नका आवेश सो समरंभ अर जीवहिंसादि पापोंके उपकरणका अभ्यास करना सो समारंभ अर हिंसादिकका उद्यम सो आरंभ यह तीन मन वचन कायके योगकरि गुणिए तब नव भेद होवैं अर नवको कृत कारित अनुमोदनकरि गुणिए तब सत्ताइस भेद होवैं अर सत्ताइसको चार कषायोंकर गुणिए तब एक सौ आठ भेद होंय यह जीवाधिकरणके भेद कहे अर अजीवाधिकरणके भेद चार निवर्तना निक्षेप सयोग निसर्ग तिनमें वर्तनाओंके भेद दोय अर निक्षेपके भेद चार अर संयोगके भेद दोय अर निसर्गके भेद तीन ॥ ८५ ॥ इनका वर्णन करैं हैं तिनमें निवर्तनाके दोय भेद एक मूल निवर्तना दूजी उत्तर निर्वितना जो मूलसे रचना सो मूल निर्वर्तना अर जो कछुयक रचना सो उत्तर निर्वर्तना सो यह दोऊ रचना मन, वचन, कायकर होय हैं ॥८६॥ अर निक्षेपके भेद चार प्रथम सहसा निक्षेप उसका अर्थ तत्काल विना विचारे वस्तु डार देय यह न विचारै जो इसके डारे किसीको वाधा होयगी ॥ ८७ ॥ अर दूजी दुःप्रभृष्टनामा निक्षेप जो विना पूजै अथवा यथाविधि न पूजै वस्तु मेल देय अर तीजा अनाभोगनामा निक्षेप जो अयोग्य स्थलविषैं योग्य वस्तु मेल देय अर चौथा अप्रत्यवेक्षित नामा निक्षेप जो विना देखे वस्तु मेल देय दयाका विचार नाहीं ये चार निक्षेपके भेद कहे अर संयोगके भेद दोय एक भुक्तसंयोग

एक पानसंयोग जो भोजनके उपकरण अथवा पीनेके उपकरण तिनको विना देखे ग्रहे अथवा अयोग उपकरण-करि खानपान करै यह संयोगके दोय भेद भये कहे अर निसर्गके भेद तीन मन वचन काय ॥८९॥ यह संक्षेपता-करि आस्रवका भेद कहा। अथानंतर—आस्रवका विशेष भेद कहै हैं ज्ञान अर दर्शनका दूषण कहना अर ढांकना ज्ञानदर्शनविषैं विघ्न करना आसादना करनी यह दूषण ज्ञानावर्णीय और दर्शनावर्णीय कर्मके आस्रवके कारण हैं ॥ ९१ ॥ अर आप दुःखी होना औरोंको दुःखी करना आप शोकवंत रहना अर औरोंको शोकवंत करना आप क्लेशरूप रहना औरोंको क्लेश करना अर आप संतापरूप रहना अर औरोंको आताप करना आप रुदन करना अर औरोंको रुदन करावना यह सब असाता वेदनीयके आस्रवके कारण हैं ॥९२॥ अर सकल प्राणियोंविषैं दया अर वृत्तियोंविषै अति अनुराग अर सरागसंयम अर दान क्षमा अर अंतर्बाह्य शौच अर अरहंत देवकी पूजा अर बाल वृद्ध तपस्वियोंविषैं वैयावृत्य, यह सातावेदनीयके आस्रवके कारण हैं ॥९४॥ अर केवली श्रुतकेवली अर चतुर्विध संघ धर्म देवप्रतिमा इनका रूप औरसूं और कहना यह दर्शनमोहके आस्रवके कारण हैं ॥९५॥ अर कषायनिके उदयसे अति तीव्र परिणाम होय सो चारित्रमोहके आस्रवका कारण है ता चारित्रमोहके दोय भेद हैं एक कषायवेदनीय एक नोक-षायवेदनीय, आप कषाय करना औरनिकूं कषाय उपजावना सो कषायवदनीयके आस्रवका कारण है ॥ ९७ ॥ अर उपहास्यादिकरि धर्मकी हास्य करना हास्यवेदनीयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर नानाप्रकार क्रीडाविषैं आसक्तता अर व्रत शीलादिककी अरुचि सो रतिवेदनीय नामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर परजीवकूं अरति करना अर परकीर्तिका नाश करना सो अरति वेदनीयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर जो कुशीलका सेवना सो अरतिके आस्रवका कारण है ॥१००॥ जो आपकू शोक उपजावना अर औरनिके शोककी वृद्धि भयें आनन्द मानना सो शोक वेदनीय नामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर आप सदा भयरूप रहना अर औरनिकूं भय उपजावना सो भयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर भले आचरणके आचारविषैं

अपवाद करना अर घृणा करना सो जुगुप्सानामा नोकषायके आस्रवका कारण है अति ठगावद्या अति मिथ्या अर अति विषयानुराग यह स्त्रीवेदनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर निगर्वता अर अल्प क्रोध अर निज दाराविषैं सन्तोष यह पुरुषवेदनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर कषायकी प्रचुरता अर पराई गुह्य वार्त्ताका प्रकाशन अर स्त्रीविषैं आसक्तता यह नपुंसकवेदनामा नोकषायके आस्रवके कारण हैं ॥ ५ ॥ अर बहुत आरम्भ अर परिग्रह ये नर्कायुके आस्रवके कारण हैं अर मायाचार है सो तिर्यंचायुके आस्रवका कारण है अर अल्प अरम्भ अल्प परिग्रह निगर्व स्वभाव अर संतोषवृत्ति यह मनुष्यायुके आस्रवका कारण है ॥७॥ अर सम्यक्त्व तथा यती श्रावकके व्रत अर बालतप कहिये अन्य तापस सम्बन्धी अज्ञानतप अर अकामनिर्जरा ये देवायुके आस्रवके कारण हैं ॥ ८ ॥ अर मन वचन कायकी वक्रता अर पराया अपवाद यह अशुभ नामकर्मके आस्रवके कारण हैं अर दर्शनविशुद्धि विनयसम्पन्नता निरतिचार शीलव्रत निरन्तर ज्ञानोपयोग संवेग शक्तितस्त्याग शक्तितस्तप साधुसमाधि वैयाव्रत्यकरण अर्हतभक्ति आचार्यभक्ति बहुश्रुतभक्ति प्रववचनभक्ति आवश्कप्रभावना मार्गप्रभावना अर प्रवचनवात्सल्यता यह सोलह भावना तीर्थंकरप्रकृतिनामा नामकर्मके आस्रवके कारण हैं अर पराये छते गुणका ढाकना अर अपने छते औगुण ढाकना अर पराये अनहोते औगुन कहना अर अपने अनहोते गुन गावना, पराई निन्दा अर अपनी प्रशंसा यह नीच गोत्रके आस्रवके कारण हैं ॥ ११ ॥ अर आप सब काल लहूरा (छोटा) भाई हुआ रहना आपको सबसे लघु जानना अर गर्व न करना अर पराये गुणोंकी प्रशंसा करनी अर अपनी न करनी अपने औगुनकी निंदा करनी यह उच्च गोत्रके आस्रवका कारण है अर पराए काममें विघ्न करना सो अंतरायकर्मके आस्रवका कारण है उसके भेद पांच जो दानविषैं विघ्न करना सो दानान्तरायका कारण है, पराए लाभविषै अन्तराय करना सो अपने लाभान्तरायका कारण है अर पराए भोगविषैं अंतराय करना सो भोगान्तरायके आस्रवका कारण है अर पराए उपभोगविषै अंतराय करना सो अपने उपभोगांतरायके

आस्रवका कारण है अर पराए वीर्यविषै विघ्न करना सो अपने वीर्यान्तरायके आस्रवका कारण है अर कहांतक कहिए जो जो अशुभ कार्य हैं वे सब अशुभास्रवके कारण हैं अर जितने शुभकार्य हैं वे सब शुभास्रवके कारण हैं हिंसा, मृषा, चोरी, कुशील. परिग्रह यह पांच पाप इनथकी निवृत्ति होना सो व्रत कहिये सो इन पापोंका एकोदेश त्याग सो अणुव्रत अर सर्वथा त्याग सो महाव्रत कहिये इन व्रतोंके स्थितिकरणके कारण पांचो व्रतोंकी पच्चीस भावना कहै हैं प्रथम हम अहिंसा महाव्रतकी पांच भावना कहै हैं वचनगुप्ति १ मनोगुप्ति २ अर दिवसविषै निरखकर भोजन ३ अर इर्यासमिति ४ अर आदाननिक्षेपणसमिति ५ यह पांच ॥ १६ ॥ अर सत्य महाव्रतकी भावना पांच क्रोधका त्याग १ लोभका त्याग २ भयका त्याग ३ हास्यका त्याग ४ अर विना विचारे वचनका त्याग ५ यह पांच अर अचौर्यव्रतकी भावना पांच पराया सूना घर १ अर तजा घर २ अर जहां किसीका तालुक होय तहां साधु प्रवेश न करैं ३ अर अशुद्ध भिक्षा न लेवैं ४ अर किसीसे संवाद न करैं ५ यह पांच अर चौथा व्रत ब्रह्मचर्य ताकी भावना पांच कहै हैं स्त्रीके रागकी कथा न कहनी न सुननी १ अर स्त्रीका मनोहर अंग निरखना नहीं २ अर गरिष्ट भोजन न करना ३ अर शरीरका अंजन मंजन न करना ४ अर पूर्वले भोगोंको स्मरण न करना ५ यह पांच ब्रह्मचर्यकी भावना अर पांचमां परिग्रहका त्यागनामा महाव्रत ताकी भावना पांच जानो जो पांचो इंद्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषय तिनविषैं रागद्वेष न करना ॥ २० ॥ यह पांच महाव्रतकी पच्चीस भावना कहीं अर हिंसादिक पाप तिनमें सर्वथा दोष ही है इन पापोंसे इस भवविषैं अथवा परभवविषैं जीवका अकल्याण ही है व्रतोंके दृढ करनेके अर्थि बुद्धिमानोंको यह भावना निरंतर भावनीं ॥ २१ ॥ बहुरि जे विवेकी हैं तिनकूं सदा यह विचारना जो यह हिंसादि पाप सदा असाता वेदनीय कर्मके कारण हैं इसलिये दुःख ही हैं इन समान संसारमें दुःखका कारण अर दोष नाहीं अर सब जीवोंसे मित्रता अर गुणवंतोंविषैं प्रमोद अर दुःखी जीव की दया अर दुष्टोंसे मध्यस्थता यह चार भावना धर्मध्यानका मूल है सो विवेकियोंको सदा भावनीं अर जे संसारके भ्रमणसे सदा

भयभीत हैं तिनकूं संवेग अर वैराग्यके अर्थ जगत्का स्वभाव अर कायका स्वभाव भावने योग्य हैं कायका स्वभाव तो अशुचि अर जगतका स्वभाव अथिर यह भावना भव्यजीव निरन्तर करें पांच इन्द्री तीन वल आयु अर श्वासोश्वास यह प्राणियोंके दश प्राण तिनका प्रमादी होयकर निपात करना सो हिंसा कहिये प्रमादी जीवके परप्राणियोंका पीडन सो अधर्म है अनर्थ है अर जे सावधान हैं पंच समितके पालक हैं तिनके हिंसाके अभावसे बन्धका अभाव है ॥ २६ ॥ अर जो अविवेकी प्रमादी परप्राणको हरै हैं सो आपकर आपको हनै हैं जो परप्राणियोंका घात किया चाहे हैं सो पहिले अशुद्ध भावके योगसे आपको आप हणे हैं परका घात तो ताके आयुके अन्तसे होय है अर अपने भाव इसने हणे इसलिये आत्मघाती तो निश्चय भया ॥ २७ ॥ हिंसा समान पाप नाहीं अर दया समान धर्म नाहीं अर सत्य होहु अथवा असत्य होहु जिसमें परप्राणीकी पीडा है सो असत्यही है जो वचन जीवोंके हितका कर्ता है सो ही सत्य है ॥ २८ ॥ अर पराई वस्तु विना दई ग्रहण करना सो चोरी कहिये सो विना संक्लेश परिणाम न होय इसलिये चोरी है सो हिंसाका मूलही है ॥ २९ ॥ अर दया आदि गुणोंकी जाविषैं वृद्धि सो ब्रह्मचर्य कहिये जो ब्रह्मविषै चर्या ब्रह्मचर्य अर रतिके वास्ते पुरुषोंकी विकारचेष्टा सो अब्रह्म ॥ ३० ॥ सो अब्रह्म नाम कुशीलका है अर हाथी, घोडे, गाय, बलध, यह चेतन परिग्रह हैं अर मणि मुक्ताफल सुवर्ण रजतादि यह अचेतन परिग्रह यह वाह्य परिग्रह हैं अर मिथ्यात्व रागादिक अंतरंग परिग्रह हैं तिनविषैं ममत्व तजना सो परिग्रहत्यागनामा व्रत है इन हिंसादिक पापों का त्याग सो व्रत कहिये ताके भेद दोय एक महाव्रत दूजा अणुव्रत सो महाव्रत तो यतीका मार्ग है अर अणुव्रत श्रावकका मार्ग है सो दोऊही व्रती तिनका मुख्यधर्म शल्यका त्याग है सो जो शल्यवंत है सो व्रती नाहीं निःशल्यव्रती जो निःशल्य हैं सो ही व्रती हैं शल्यके भेद तीन माया कहिये कपट मिथ्या कहिये विपरीत श्रद्धान अर निदान कहिये भोगाभिलाष वह तीन शल्य हैं इनके गये व्रती नाम पावै है ॥ ३३ ॥ गृहस्थ तो घर संयुक्त है इसलिये अल्पव्रती हैं अर यति बनोवासी है सो महाव्रतका धारक है ॥ ३४ ॥

गृहस्थके कुछ राग भाव है अर बनोवासीके बीतरागता है अर जो यती होयकर राग भाव धारे है सो गृहस्थोंसे न्यून है अर जो श्रावक विरक्तचित्त है सो साधु समान है ॥ ३५ ॥ जो श्रावक महा दयावान है जिसके त्रस-हिंसाका त्याग है अर स्थावरकी हिंसा प्रयोजनमात्र ही है सो पहला अणुव्रत कहिये अर जो रागसे द्वेषसे मोहसे परजीवको पीडा न उपजावे अर अयोग्य वचन न कहे सो असत्यविरतिनामा दूसरा सत्य अणुव्रत कहिये अर पराया धन बढमोला अथव थुडमोला विना दिया कदाचित न ले किसीका धरा मेला विसरा गिरा पडा न ले थोडे मोलकर भोले जीवोंके पाससे बढमोली वस्तु न ले सर्वथा प्रकार परधनका परिहार सो तीजा अचौर्य-अणुव्रत कहिये अर जो सवर्था प्रकार परदाराका त्याग अर निजदाराविषैं सन्तोष सो चौथा ब्रह्मचर्य अणुव्रत कहिये ॥ ३९ ॥ अर सुवर्णादिक दासादिक अर ग्रह क्षेत्रादिक परिग्रह तिनका परिमाण सो पांचवां परिग्रहप्रमाणनामा अणुव्रत कहिए ॥ ४० ॥ अर इन पंचाअणुव्रतनिके धारियोंके तीन गुणव्रत अर शिक्षाव्रत चार हैं जो दिशाका प्रमाण प्रसिद्ध सो दिग्व्रतनामा पहला गुणव्रत कहिए जो मैं पूर्वदिशाविषैं इतनी दूर जाऊं अर ग्रामादिकका प्रमाण जो इस गांव तक जानो सो देशविरतनामा दूजा गुणव्रत कहिए अर अनर्थ-दंडका परिहार जो तीजा गुणव्रत कहिए अनर्थदंडके भेद पांच पापोपदेश १ अपध्यान २ प्रमादचर्या ३ हिंसादान ४ अर पापसूत्रका श्रवण ५। जो पाप कार्यका उपदेश, व्यापारका उपदेश, खेतीका उपदेश इत्यादि आरंभके उपदेश सो पापोपदेश कहिए। जिन कार्योंमें जीवोंकी हिंसा सो ही पाप ॥ ४६ ॥ अर दूजा अपध्यान कहिए जो पराई हार अर अपनी जीत विचारिवो करै किसीकूं मारना किसीकूं बांधना किसीके धन हरना चाहे, इसका अकाज कैसें होय ऐसा चिंतवन सो अपध्यान कहिए अर भूमि खोदना जल डोलना अग्नि जलावना वृक्षादि छेदना इत्यादि अनर्थकर्म करै सो प्रमादचर्या कहिए अर विष कंटक शस्त्र अग्नि रस्सा दंड चाबुक आदि बध बन्धनके उपकरण देने अथवा शस्त्रादिकका विक्रय करना हिंसक जीवोंका आदर सो हिंसाप्रदान कहिए ॥ ४९ ॥ अर जा

कथाके श्रवणसे हिंसादि पापोंके अनुरागकी वृद्धि होय सो कुकथा कहिए कुकथाका श्रवण अथवा कथन सो कुसूत्र-श्रवण कहिये जिसकरि पाप हीका बंध होय यह अनर्थदंडके पांच भेद कहे तिनका त्याग सो तीजा गुणव्रत कहिए ॥ ५० ॥ अब चार शिक्षाव्रत सुनो सुख दुःख शत्रुमित्रादिविषै समभाव अर सब जीवोंविषैं करुणाभाव अर पंचपरमेष्ठियोंविषैं भक्तिभाव सो सामायिक कहिए यह चार शिक्षाव्रतोंमें पहला शिक्षाव्रत है प्रभात मध्याह्न सायंकालविषैं सामायिक कर्तव्य है ॥ ५१ ॥ अर दोय अष्टमी अर दोय चतुर्दशी एक मासविषै यह चार पर्व इनविषैं चारों आहारका त्याग करना अर निरारम्भी होय प्रोषधोपवास करना सो दूजा शिक्षाव्रत है। इंद्रियोंको वशकर एकांतविषैं सोलह पहर मुनिकी न्याईं तिष्ठना सो पोसेकी रीति है ॥ ५२ ॥ अर गंध पुष्पमाला अन्न-पानादिरूप भोग अर वस्त्र आभूषण स्त्री बाहनादि उपभोग तिनका अपनी शक्तिके अनुसार प्रमाण करना सो तीजा भोगोपभोगपरिमाणनामा शिक्षाव्रत है ताका यह विचार जो निषिद्ध भोग उपभोग हैं तिनका तो सर्वथा त्यागही करना तिनका प्रमाण नाहीं अर जो न्यायरूप भोगोपभोग शुद्ध अन्नपानादिक अथवा निज-स्त्री सेवनादिक वस्त्राभूषणादिक इनका प्रमाण करै ॥ ५३ ॥ इतनी वस्तु तो विवेकियोंको सर्वथा तजनी। मद्य मांस मधु माखन अगालित जल वीधा अन्न रात्रिभोजन उदंवर आदि अशुद्ध फल अर कंदमूल आदि अनन्त-काय अर पेठा कोहला तरबूज वृन्ताक वैंगन बदरीफल इत्यादि जो शास्त्रवर्जित अभक्ष्य वस्तु हैं तिनका भक्षण कदापि न करना अर द्यूतक्रीडा चोरी शिकार वेश्यासेवन परस्त्रीसेवन यह महानिंद्य कर्म हैं सो कभी न करने ॥ ५४ ॥ अर संयमकी वृद्धिके वास्ते प्रवर्तें सो अतिथि कहिए उसे भक्तिकर भोजनादि देय सो अतिथिसंविभाग-नामा चौथा शिक्षाव्रत है ॥ ५५ ॥ साधुको इतनी वस्तु श्रावक देय शुद्ध भोजन देय अर भोजन हीविषैं शुद्ध औषध देवै पुस्तकादि उपकरण देवै अर बनविषैं साधुओंके विराजिवेके स्थानक वनावै जिनमें साधु आय विराजें यह चारप्रकार संविभाग साधुओंको श्रावक करै अर आर्यिकाओंको आहार, औषध, पुस्तक, वस्त्र, कमंडलु, पीछी

आदि देवे ग्रामके समीप आर्यिकानिके विराजिवेको स्थान करावें अर श्रावक श्राविकाओंको भक्तिकरि आहार औषध उपकरण पुस्तक वस्त्राभरणादि देय रहिवेकूं स्थानक देय उनके भय निवारै धर्म स्नेह अधिक राखै या भांति चतुर्विध संघकी अर सम्यक्दृष्टि जीवनिकी सेवा करे अर जगके जीव मनुष्य पशु तिन सबहीको अन्न जल तृण वस्त्र औषधादि देय जीवोंके दुख निवारे सो जिनधर्मका धारी श्रावक कहिए। यह बारह व्रत श्रावकके कहे पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत अर अन्त समय सल्लेखना करै, कषायनिका क्षीण करना सो अंतरंग सल्लेखणा है अर कायका क्षीण करना सो बहिरंग सल्लेखणा कहिए॥ ५७ ॥ जो रागादिकोंकी उत्पत्ति शास्त्रके मार्गकरि मेटे सो सल्लेखणा कहिए रागादिकका परिहार अज्ञानीजीव न कर सके ज्ञानीही करै ॥५८॥ सम्यक्तके निःशंकतादि अष्ट अंग तिनके विरोधी शंकादि पंच अतिचार सो अज्ञानी जीवोंको तजनेका कहिए जिनवचनविषै संदेह अर कांक्षा कहिये भोगोंकी अभिलापा अर विचिकित्सा कहिये व्रतियोंके रोगादिककी बाधा देख यत्न न करना सूग करना अर अन्यदृष्टिप्रशंसा कहिये मिथ्या परपूठि प्रशंसा करना अर संस्तव कहिये साक्षात मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करना यह सम्यक्त्वके पांच अतीचार हैं ॥ ५९ ॥ अर बारह व्रत अर अन्त सल्लेषणाके अनुक्रममें पांच अतीचार कहे हैं सो व्रतियोंको तजने। अतीचार तजे तब व्रत निर्मल होय प्रथम ही दया व्रतके अतीचार पांच, बंध कहिये रोकना उसे निज स्थानक न जाने देना अर वध कहिये लाठी मुक्की आदिकरि ताडना अर छेदन कहिये कर्ण नासिकादिक छेदना अर अतिभारारोपण कहिये पशु अर मनुष्यों-पर बहुत बोझ लादना अर अन्नपानादिनिरोध कहिये किसीकी आजीविका दूर करनी यह दयाव्रतके पांच अतीचार हैं ॥ ६२ ॥ अर झूठका उपदेश देना अति ठगविद्या करनी धर्मका उपदेश औरसे और कहना स्वर्ग मोक्षकी क्रिया औरसे और कहनी सो मिथ्योपदेशनामा दूजे व्रतका पहला अतीचार है अर दूजे व्रतका दूजा अतीचार किसीकी गुह्य वार्त्ता प्रकाशनी स्त्री पुरुषोंकी चेष्टा प्रकाशनी अर कूटलेखक्रिया कहिये कूडा लिखना

किसीके विना कहे उसके नामका पत्र किसीको लिखना ॥ ६४ ॥ अर न्यासापहार कहिये किसीने धरोहर धनी धरी अर वह भूल गया अर लेती वेर वह थोडा लेने लगा उसे ज्यों का त्यों न कहना सो न्यासापहार कहिये ॥ ६५ ॥ अर पांचमां साकारमन्त्रभेद ताका अर्थ कैयक ऐसे दुष्ट हैं जो भौंह नेत्र आदि पराई चेष्टा देखकरि पराया रहस्य जान जांय अर ईर्षाकरि उसका मंत्र प्रकाश करे सो साकारमंत्रभेद कहिये यह दूजे सत्यनामा अणुव्रतके पांच अतीचार कहे सो विवेकियोंको तजने ॥ ६७ ॥ चोरीका प्रयोग सो पहला अतीचार अर चोरोंकी हरी वस्तुका ग्रहण सो दूजा अतीचार अर राजाकी आज्ञासे विरुद्ध अयोग्य क्रियाका करना सो तीजा अतीचार अर बांट घाटकर दूसरेको देना अर बधते बाटोंसे पराई वस्तु लेना तोलनेमें घाट बाध करना सो चोरीका चौथा अतीचार है ॥ ६९ ॥ अर रूपेमें तथा सुवर्णमें और धातु मिलावना तथा मंहगी वस्तुमें सस्ती वस्तु मिलावनी सो प्रतिरूपकव्यवहारनामा पांचवा अतीचार कहिये यह तीजे अचौर्य अणुव्रतके पांच अतीचार कहे ॥ ७० ॥ अब कुशीलके अतीचार कहे हैं पराया विवाह करावना सो कुशीलका प्रथम अतीचार अर कुशीली स्त्रीको ग्रन्थोंमें इत्वरिका कहिये तिनमें जिसके सिरपर स्वामी सो परगृहीता अर जिसके स्वामी नाहीं सो अपरिगृहीता कहिये तिनके घरकी ओर गमन तिनसे व्यापारादिकका सम्बन्ध रखना सो अतिचार है अर अनंगक्रीडा कहिये स्पर्शन मर्दन आलिंगन चुम्बनादि चेष्टा अर काम तीव्राभिनिवेश कहिये कामके तीव्र परिणाम यह परदारा-परित्याग स्वदारासंतोषनामा चौथे अणुव्रतके पांच अतीचार कहे सो व्रतियोंको तजने ॥७२॥ अर पांचमां परिग्रह-प्रमाणनामा अणुव्रत ताके पांच अतीचार कहे हैं हिरण्य कहिये सुवर्ण रूप समुद्रा अर सुवर्ण कहिये सोना रूपादि आभरण अर वास्तु कहिये हवेली हाट नौहरा आदि अर क्षेत्र कहिये धरती अर धन कहिये चतुःपदादि अर धान्य कहिये अन्न अर दासी दास कहिये सेवकादि अर कुप्य कहिये वस्त्र सुगंधादि अर भांड कहिये भाजन यह दशधा परिग्रह तिनमें दोय दोयका एक एक जोडा हिरण्य अर सुवर्णका जोडा वास्तु अर क्षेत्रका जोडा धन अर

धान्यका जोडा, दासी अर दासका जोडा, कुप्य अर भांडका जोडा यह दशके पांच जोडे भये तिनके प्रमाणविषै व्यतिक्रम करना यह पांच अतीचार परिग्रह प्रमाणके तजने अर दिग्व्रतनामा गुणव्रतके पांच अतीचार कहे हैं तिनमें ऊर्ध्वव्यतिक्रम कहिये पर्वतादि ऊंचे क्षेत्र तिनके आरोहणविषै व्यतिक्रम कहिये उलंघन करना अर अधः कहिये नीची भूमि ताके उतरनेविषैं व्यतिक्रम करना अर तिर्यग् कहिये चार दिशा चार विदिशा तिनके प्रमाण-विषैं व्यतिक्रम करना, लोभके योगसे जो प्रमाण किया है उसे भूल जाना अर क्षेत्रवृद्धि कहिये प्रमाणक्षेत्रसे अधिक क्षेत्रविषैं गमन करना यह पहिले दिग्व्रतनामा गुणव्रतके पांच अतीचार कहे ॥ ७४ ॥ अर दूजा देशव्रत-नामा गुणव्रत ताके पांच अतीचार कहैं हैं प्रेष्यप्रयोम कहिये जहांतक गमन रखा है वहां तक ही सेवक भेजै अर वस्तु पठावै आगे नाहीं, अर जो पठावै तो पहला अतीचार है अर दूजा आनयन कहिए प्रमाणके क्षेत्रसे अगले क्षेत्रकी वस्तु न मंगावै अर पुद्‌गलक्षेप कहिए प्रमाणके क्षेत्र सिवाय पर-क्षेत्रविषैं कांकरी आदि बगायकरि अपना अर्थ न जनावै अर शब्दानुपात कहिये प्रमाणके क्षेत्रतैं परे काहूकूं अपना शब्द न सुनावै परक्षेत्रविषैं हेला (आवाज) करि काहूकूं अपना रहस्य न जनावै अर रूपानुपात कहिये अपने प्रमाणके क्षेत्रविषैं खडा रहै परक्षेत्रविषैं अपना रूप न दिखावै अपना रूप दिखाय किसीको अर्थ न जनावै जो अर्थ जतावै तो अतीचार है यह पांच अतीचार देशव्रतके कहे ॥७५॥ अर अनर्थदंडके पांच अतीचार कहे हैं कंदर्प कहिए जाकरि कामका विकार अति बढे सो सामग्री सेवै यह पहला अतीचार है अर कौत्कुच्य कहिये मुखकी वक्रता अर भौंहोंकी वक्रता अर नेत्रनिके कटाक्ष इनकरि अपना सविकाररूप दिखावै अर मौखर्य कहिये अधिक बकै अर असमीक्षाधिकरण कहिये विना देखे विना पूजे उपकरणादि उठावे मेले अर भोगानर्थक कहिये अनर्थभोग तिनकी अभिलाषा करै अर शक्ति नाहीं अर भोग सेवै वहुत द्रव्यखर्चकरि भोग सेवै यह सब भोगनार्थके अर्थ हैं ।७६। यह पांच अतीचार तीजे गुणव्रतके तजने । अब सामायिकके अतीचार कहे हैं मनकी दुष्टता वचनकी दुष्टता कायकी

दुष्टता यह तीन अर सामायिकका निरादर अर पाठविषैं भूलना यह पांच अतीचार सामायिकनामा पहिले शिक्षाव्रतके तजने ॥७७॥ अर प्रोषधोपवासके अतीचार पांच विना देखे विना पूजे क्षेत्रविषैं शरीरका मल डारना अर विना देखी विना पूजी वस्तुग्रहण अर विना देखे विना पूजे आसन विछावना अर पोसहका निरादर अर परवीका विस्मरण यह पांच अतीचार पोसहनामा दूजे शिक्षव्रतके कहे ॥७८॥ अर सचित्त वस्तुका ग्रहण तथा अचित्त वस्तुकूं सचित्तका संबंध अर अचित्तविषै सचित्तका मिलावना उष्ण जलविषैं शीतका मिलावना अर अभिषव कहिये वर्णकरि रसकरि गंधकरि चलते वस्तु ताका भक्षण अर भोगोपभोगका अति अनुराग अति सेवना अर दुःपक्काहार कहिए जो दुष्ट आहार दुःखसेती पचै ताका सेवन यह पांच भोगोपभोगप्रमाणनामा तीजे शिक्षाव्रतके अतीचार तजने अर जो अतिथिसंविभागनामा चौथा व्रत ताके पांच अतीचार कहै हैं सचित्त कहिये पातल दौना आदि तिनमें अन्नादिकका धरना अर पातल दौनाकरि अन्नपान ढाकना अर परव्यपदेश कहिए दानका कार्य औरनिकी भलाई और आप कार्यके वास्ते जाना अर मात्सर्य कहिए औरोंका दान न देख सकना किसी दातारका यश न देख सकना अर कालातिक्रम कहिए काल उलंघ आहार देना यह पांच अतीचार चौथे शिक्षाव्रतके तजने यह बारह व्रतके साठ अतीचार कहे अर पांच सम्यक्त्वके कहे अब सलेखनाके पांच अंतीचार कहै हैं जीवित आशंशा कहिए जीवनेकी अभिलाषा अर मरण आशंशा कहिए मरणकी अभिलाषा अर मित्रानुराग कहिये किसी मित्रसे अनुराग ताविषैं मन अर सुखानुबंध कहिये या शरीरमें सुख भोगे तिनका चिंतवन अर निदान कहिये परभवके भोगकी अभिलाषा यह पांच अतीचार अन्त सल्लेखनाके तजने ॥ ८१ ॥ सम्यक्त्व आदि सलेखनापर्यंत सत्तर अतीचार कहे सो सब तजने योग्य हैं ॥ ८२ ॥ अर सम्यज्ञानादिककी वृद्धिकर अपना अर परजीवोंका कल्याण होय है सो ज्ञानादिककी वृद्धिका अभिलाषी होय दान करै अर स्वर्गादिककी अभिलाषा न करै अपने धनका खर्चना सो दान कहिये सो मुनिराजको तथा आर्यकाओंको अथवा श्रावक श्राविकाओंको अर अव्रत-

सम्यक्दृष्टियोंको भक्तिकरि विनय पूर्वक देना अर सब जीवोंसे दयाभावकरि दान देना मुनिराजकूं अर आर्या-कूं तथा निरारंभी श्रावकोंको प्रासुक भोजन देना, मुनि तो उत्कृष्ट पात्र हैं अर आर्या श्रावक श्राविका यह मध्यम पात्र हैं अर अव्रतसम्यग्दृष्टि जघन्य पात्र हैं सो त्रिविध पात्रनिकूं विधिपूर्वक उत्तम वस्तु आहारादिक देनी, उत्तम श्रावक दाता अर उत्कृष्ट पात्र मुनि अर उत्तम ही सामग्री अर उत्तम विधिसे दान करै इन सबनिकी विशेषता होय तो उत्कृष्ट ही फल निपजै जैसे उत्तम ही भूमि होय उत्तम ही बीज होय अर उत्तम समयविषै विधिसे समझदार मनुष्य वाहै तो उत्तमही फल निपजै ॥८३॥ मुनिकूं जो आहारदान देय सो प्रतिग्रहादि नवधा भक्तिकरि देय, प्रतिग्रह कहिए अत्र तिष्ठ तिष्ठ अन्न जल शुद्ध है ऐसे शब्द कहै १ फिर मुनिको ऊंचे स्थानक खडा करे अर आप नीचा रहे २ फिर पग धोवै ३ प्रणाम करै ४ अर्चा करै ५ मनशुद्धि ६ वचनशुद्धि ७ कायशुद्धि ८ आहारशुद्धि ९ यह नवधा भक्ति मुनिराजके दानसमय श्रावक करै। सो उत्तम फलका कारण है नवधा भक्ति ही मुनिदानकी विधि है॥८४॥ अर देव कहिए देवे योग्य निर्दोष पवित्र वस्तु देय मुनिकूं कैसा आहार देना जाकरि तपकी वृद्धि होय अर स्वाध्यायकी वृद्धि होय सो आहार देना समताका करणहारा देना अर विषमताका करणहारा न देना ।८५। अर दाताके गुण सात श्रद्धा कहिए श्रद्धासहित देय अर शक्ति कहिए दानकी शक्ति लोपै नाहीं अर निर्लोभता कहिए दानके फलकरि स्वर्गादिककी अभिलाषा नाहीं अर दया कहिए दयाभाव राखै चित्तकी कोमलता सो दया अर क्षमा कहिए क्रोधका अभाव दानसमय स्त्री पुत्रादिकसे कषाय न करै अर अनुसूया कहिए पराई निंदा नहीं ईर्षा नहीं अविषाद कहिए शोक नहीं यह सप्त गुण धारै सो उत्तम दाता, मनकी गति विचित्र है सो दानका करणहारा उज्वलमन होय ॥८६॥ अर पात्र कहिए महा पुरुष मोक्षके कारणभूत जो गुण तिनकूं धारै अर दाताकूं भवसागरसे उधारै ॥ ८७ ॥ मुनि तो आहार ही ग्रहै अथवा आहारके समय विवेकी श्रावक मुनिकूं रोग जानि निर्दूषण औषधि भी देय अर पुस्त-कादि उपकरण देय अर बनविषै मुनियोंके निवास योग्य स्थानक करावै अर काहू वस्तुका मुनियोंके प्रयोजन

योग्य स्थानक करावै अर काहू वस्तुका मुनियोंके प्रयोजन नाहीं अर आर्याओंको आहार औषध शास्त्रादि अर वस्त्रादि भी देय अर निरारम्भी श्रावकोंको भी यही वस्तु देय अर गृहवासी श्रावक अर श्राविकाओंको तथा अव्रत-सम्यग्दृष्टियोंको आहार औषध वस्त्राभूषणादि सबही उत्तम वस्तु देय अर दुःखित भूखित जीवोंको आहारादि वस्त्रादि सबही देवै एक अभक्ष वस्तु अर वध बन्धनके उपाय शस्त्रादिक रससादिक चाबुकादिक किसीको कभी न देवै अभयदान सब जीवोंको देय ॥ ८७ ॥ दान, शील, तप, व्रतादिकर पुण्यका आस्रव होय है सो जीवोंको सुखका कारण है अर हिंसादि पापोंकरि अशुभका आस्रव होय है सो जीवोंको दुखका कारण है अर हिंसादि पापोंकरि नर्कका कारण भी होय है ॥ ८८ ॥ यह आस्रव तत्त्वका व्याख्यान किया अब बंधका कथन करै हैं मिथ्यादर्शन अर हिंसादि अविरत अर प्रमाद अर कषाय अर मन वचन कायके योग यह बंधके कारण हैं ॥ ८९ ॥ सो मिथ्या-दर्शनके भेद दोय एक निसर्ग कहिए स्वतः स्वभाव अर एक अन्योपदेशतः कहिए पराए उपदेशसे जो मिथ्यातकर्मके उदय जीवके तत्त्वकी श्रद्धा न होय विपरीत श्रद्धा होय सो निःसर्गमिथ्यादर्शन कहिए ॥ ९० ॥ और अज्ञानी जीवोंके उपदेशसे चार प्रकार मतभेद धारे सो अन्योपदेशनामा मिथ्यात्व कहिए, मतभेद चार—कईएक क्रियावादी, कईएक अक्रियावादी, कईएक विनयवादी, कईएक अज्ञानवादी यह चार वादी कहिए अर मिथ्यादर्शन पांच प्रकार कहिए है नित्य ही माने अथवा अनित्य ही माने नित्यानित्य न माने सो एकांतमिथ्याती कहिये अर विपरीतमिथ्याती अधर्मविषैं धर्म माने अर विनयमिथ्याती कुगुरु, कुदेव, सबोंका विनय करै अर संशयमिथ्याती जिनवचनविषै संशय राखै अर अज्ञानमिथ्याती पशु समान कुछ ही न समझै यह पांच प्रकार मिथ्यादर्शन तजै सो सम्यकदर्शन कहिये ॥ ९२ ॥ अर पांच थावर छठा त्रस इनका घात अर पांच इंद्री छठा मन इनकी चंचलता यह बारह अव्रत कहिये अर प्रमादके अनेक भेद हैं प्रमाद नाम असावधानीका है अर कषायके भेद पचीस सोलह कषाय नव ईषत् कषाय अर योगके भेद पंद्रह तिनमें मनोयोगके भेद चार अर

वचनयोगके भेद चार अर काययोगके भेद सात इनका विशेष जगह २ लिखा हैं ॥ ९४ ॥ मिथ्यादृष्टिके तो यह पांच बंधके कारण सब ही हैं अर सम्यकदृष्टि अव्रतीके एक मिथ्यात नाहीं अर चार हैं श्रावकके पांचमें गुणठाणे चार ही हैं परंतु बारह अव्रतमें एक त्रसघात नाहीं अर ग्यारह हैं अर छठे प्रमत्तगुणठाणे यतीकें मिथ्यात अर अव्रत नाहीं अर प्रमाद कषाय योग तीनों हैं ॥ ९६ ॥ अर सातवें अप्रमत्त गुणस्थानसे लेयकरि दशमें सूक्ष्मसांपरायतक कषाय अर योगही हैं ॥ ९७ ॥ अर ग्यारवां उपशांतकषाय अर बारहवां क्षीणकषाय अर तेरहवां सयोगकेवली इन तीनगुणठाणेविषैं योगही बंधका कारण है और नाहीं अर चौदहवांअयोग तहां वन्धका अभाव है ॥ ९८ ॥ कषायकरि कलंकी जो आत्मा सो कर्मवर्गणा योग पुद्गलको समय समय ग्रहें है सो बंध कहिये सो बन्ध अनेक प्रकार है ताके भेद चार प्रकृतिबंध १ स्थितबंध २ अनुभागबंध ३ प्रदेशबंध ४ यह चार प्रकार बन्ध जानो ॥ १०० ॥ अब इनके लक्षण कहें हैं प्रकृति कहिए स्वभाव जैसे नीमका स्वभाव कड़वा है अर नीबूका खट्टा है तैसें सब कर्मनिके स्वभाव न्यारे २ हैं ॥ १ ॥ ज्ञानावर्णी कर्मका स्वभाव अज्ञानरूप है अर दर्शनावर्णीका स्वभाव देखनेयोग्य पदार्थकूं न देखने देय अर साता असाता वेदनीयका स्वभाव सुख दुःख-का भोगना अर दर्शनमोहका स्वभाव तत्त्वकी अश्रद्धा अर चारित्रमोहका स्वभाव महा असंयम ॥ ४ ॥ अर आयु कर्मका स्वभाव भवधारण अर नामकर्मका स्वभाव देव नारकादि नाना प्रकारका नाम निपजावना ॥५॥ अर गोत्र कर्मका स्वभाव ऊंच नीच गोत्रमें निपजावना अर अंतरायका स्वभाव दानादिकविषैं विघ्नकरना जैसे इन कर्मोंके स्वभाव दुर्निवार हैं तैसे इनकी स्थिति भी दुर्निवार है विना भोग न छूटै जैसे अजा गाय भैंस आदि दूधका माधुर्यपना स्वभावथकी अच्युत है तैसे कर्मोंकी प्रकृतिकी स्थिति भी अच्युत है विना भुगते न छूटै। ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी वेदनीय अंतराय इन चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति प्रत्येक ३० कोडाकोडी सागर अर नाम गोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति बीस कोडाकोडी सागर अर आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर है अर दर्शनमोहकी

उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागर है अर चारित्रमोहकी उत्कृष्ट स्थिति चालीस कोडाकोडी सागर हैं यह उत्कृष्ट स्थिति कही अर जघन्यस्थिति वेदनीय कर्मकी मुहूर्त बारह अर नाम गोत्रकी जघन्यस्थिति मुहूर्त आठ अर अन्य सब कर्मनिकी जघन्य स्थिति मुहूर्त एक यह जघन्य स्थितिके रूप कहे अर जघन्य स्थितिसे एक समय अधिक लेकर उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय न्यून पर्यंत मध्य स्थितिके नाना भेद जानने ॥ ८ ॥ यह स्थिति-बंधका स्वरूप कहा अर जैसे अजाके दुग्धमें मिष्टता अर सचिक्कणता मंद है इसलिये अधिक मिष्टता अर सचिक्कणता गायके दुग्धविषैं सो मध्यके भेदकूं धरे है अर गायके दूधसे विशेष भैंसके दुग्धविषैं है सो भैंसका दूध मिष्टता अर सचिक्कणताकी तीव्रताकूं धरै है यह दूधविषैं रसकाविशेष कहा तैसे पुद्गलकर्मकी सामर्थ्यताके विशेषका विपाक सो अनुभागबन्ध कहिए तिनमें शुभका अनुभाग चार प्रकार है गुण खांड मिश्री अमृत इन चारोंकी मिष्टता बढती चढती है तैसे शुभका सुख भी चढता चढता अर उतरता उतरता है अरअशुभका अनु भाग भी चार प्रकार है जैसे नीम कांजी अर विष अर हलाहल इन चारोंकी कटुता चढती चढती है ऐसे अशुभका दुःख बढता चढता अर उतरता उतरता है ॥ ९ ॥ यह अनुभागबंधका स्वरूप कहा अर जो पुद्गलपरमाणुओंके समूह कर्मवर्गणारूप परणाये तासहित आत्माओंके प्रदेशका संश्लेश सो प्रदेशबंध कहिए ॥ १० ॥ प्रदेशसहित जो कर्मप्रकृति ताका जीवके प्रदेशोंको मिलाए सो प्रदेशबंध अर प्रकृतिबंध इन दोनों बंधनके कारण तो मन वचन कायके योग हैं अर स्थितिबंध अर अनुभागबंध यह दोय प्रकार बंध कषायोंके निमित्तसे होय हैं ॥ ११ ॥ यह बंधका स्वरूप कहा आगे आठों कर्मोंके कार्य कहिए हैं जाकरि ज्ञान आवऱ्या जाय अथवा जो ज्ञानको आवरे सो ज्ञानावर्णीका कार्य है अर जो दर्शनको आवरे अथवा जाकरि दर्शन आवऱ्या जाय सो दर्शनावर्णी कहिये ॥१२॥ अर जाकरि देहसंबंधी सुख दुःख भोगवै अथवा जो भोगवाये सो वेदनीय कर्म कहिए अर जो जीवोंको मोहैं अथवा जाकरि जीव मोहे जांय सो मोहनीय कर्म कहिए ॥ १३ ॥ अर जाकरि नारकादि भवोंको धरैं सो

आयु कर्म कहिये अर जाकरि यह जीव अनेक नाम धारै अथवा जो नाम धरावै सो नाम कर्म कहिये अर जो
ऊंच नीच गोत्रमें धरै अथवा जाके उदयकरि गोत्र धारिये सो गोत्रकर्म कहिये अर जो दानादिकके मध्य अन्तर
पाडे, जाके उदयकरि दान देय सके अर लाभ न होय सके सो अन्तरायकर्म कहिये ॥ १५ ॥ आत्माका एक
अशुद्ध परिणाम ताकरि ग्रहे जो पुद्गलके स्कंध सो नानाप्रकार कर्मरूप होय परणवै हैं जैसे एक प्रकार भोगिये
अन्न सात धातुरूप होय परणवै है मूल प्रकृति तो अष्ट प्रकार हैं अर उत्तर प्रकृतियोंका भेद कहिये हैं ज्ञानावर्णकी
प्रकृति पांच दर्शनावर्णकी प्रकृति नव, वेदनीयकी दोय, मोहनीयकी अठाईस आयुकी चार अर नामकी बयालीस
तिनमें चौदह पिंडप्रकृति तिनके भेद पैंसठ अर अठाईस अपिंड प्रकृति यह अर वह सब मिल त्यालीस तिनकी
तिराणवें भई अर गोत्रकर्मकी दोय अन्तरायकी पांच यह सब मिलि एक सौ अडतालीस भई ॥ १९ ॥ अब इनके नाम
निरूपण करै हैं मतिज्ञानावर्णी, श्रुतज्ञानावर्णी, अवधिज्ञानावर्णी, मनःपर्ययज्ञानावर्णी, केवलज्ञानावर्णी, यह पांच
प्रकृति ज्ञानावर्णीकी हैं ॥ २० ॥ द्रव्यार्थिकनयके कथनतैं मनःपर्ययज्ञान अर केवलज्ञान शक्तिरूप अभव्यविषै
भी हैं व्यक्तिरूप नाहीं ज्ञानावर्णी पांच प्रकृतिका उदय अभव्यविषै भी है अर मनःपर्यय केवलकी प्रगटता भव्य
ही विषै है ताहीतैं भव्य कहिए है अर जे केवलज्ञानकी व्यक्तिकूं योग्य नाहीं ते ही अभव्य ॥२२॥ अर चक्षुदर्श-
नावर्णी अचक्षुदर्शनावर्णी अवधिदर्शनावर्णी केवलदर्शनावर्णी चार तो यह अर निद्रा निद्रानिद्रा प्रचला प्रचला-
प्रचला स्त्यानगृद्धि यह नव प्रकृति दर्शनावर्णीकी हैं तिनमें पांच निद्राका निर्णय करै हैं निद्रा कहिए अल्प निद्रा
किंचित् शयन अर ऊपराऊपरी निद्रा सो निद्रानिद्रा कहिए ॥ २४ ॥ अर खेदकरि उपजी सो प्रचला आत्माको
अत्यर्थपने चलायमान करै अर पुनः पुनः निद्राका आवरण सो प्रचलाप्रचला कहिए ॥ २५ ॥ अर स्त्यानगृद्धि
कहिए स्वप्नताविषैं जाकर अतिगृद्ध होय अर जाके उदयसे आत्मा अति रौद्रकर्म बहुत करै सो स्त्यानगृद्धि
कहिए है यह नव प्रकृति दर्शनावर्णीकी कहीं अर वेदनीयकी प्रकृति दोय एक साता एक असाता जाके उदयतैं

तनका अर मनका सुख होय सो साता अर जाके उदयतैं तनमनका दुःख होय सो असाता यह दोय वेदनीयकी प्रकृति कहीं ॥ २७ ॥ अर मोहनीयकी अठाईस तिनमें दर्शन मोहनीयकी तीन मिथ्यात, मिश्रमिथ्यात अर सम्यक्त्वप्रकृति मिथ्यात तिनके लक्षण सुनो । जहां अतत्वकी श्रद्धा महा मूढता धर्म अधर्मकी परख नाहीं सो मिथ्यात्व कहिए अर जो आत्माका सम्यक्त्व अर मिथ्यात्व मिश्रधारारूप शुद्धाशुद्ध भाव अर तत्वातत्वकी मिश्र श्रद्धा सो मिश्रमिथ्यात्व तीजे गुणठाणेही होय अर पहिलामिथ्यात्व पहिले गुणठाणे ही होय सो तो केवल अशुद्ध भाव ही है अर दूजा मिथ्यात्वकी मिश्रधारा शिखरणीके रससमान खट्टामिट्ठा दोनों स्वाद लिए है जैसैं माचणेके द्रव्यविषैं मदशक्ति होय तैसैं याविषैं मिथ्यात्वशक्ति है अर तीजा सम्यक्त्वप्रकृति मिथ्यात्व सो सम्यक्त्व ही है सम्यक्त्वके तीन भेद तिनमें यह वैदिक सम्यक्त्वका स्वरूप है मोहकी छहप्रकृति तो इसमें उमशमी हैं अर सातमी प्रकृतिका उदय है आत्माके शुद्ध परिणाम ताकरि रोके हैं अशुद्ध भाव जाने अर आत्मरसविषैं तिष्ठ्या है परंतु सातवीं प्रकृतिके उदयकरि कुछ चपलता है कुछ मलिनता है कुछ शिथिलता है यह तीजे मिथ्यात्वका लक्षण है तीर्थंकरोंमें तथा तीर्थोंमें तथा देव स्थूलमें तथा शास्त्रमें कुछ एक न्यूनाधिक जाने यह याका लक्षण है यह तीन प्रकृति दर्शनमोहकी कही अर चारित्रमोहकी प्रकृति पचीस, चारित्रमोहके भेद दोय एक नोकषायवेदनीय एक कषायवेदनीय तिनमें नोकषायवेदनीयकी प्रकृति नव अर कषायवेदनीयकी प्रकृति सोलह ॥ ३१ ॥ जाके उदयतैं हास्यकी प्रगटता होय सो हास्यप्रकृति कहिए अर जाके उदयतैं रति उपजै सो रति अर जाके उदय अरति उपजै सो अरति ॥ ३२ ॥ अर जाके उदय सोच उपजै सो शोक अर जाके उदय उद्वेग उपजै सो भय अर जाके उदय अपने दोष छिपावै अर पराए गुण छिपावै सो जुगुप्सा यह षट् हास्यादि नोकषाय निन्द्य हैं ॥ ३३ ॥ अर जाके उदय स्त्रियोंकेसे कायर चंचल कुटिल भाव होवैं सो स्त्रीवेद कहिए सो महानिंद्य हैं अर जाके उदय निष्कपटता निश्चलता शूरवीरता उदारता ऐसे भाव होंय सो पुरुषवेद कहिए अर जाके उदय महामलीन महा आतुर

भाव होय सो नपुंसकवेद कहिए पुरुषवेदके उदयकरि स्त्री भोगिवेका भाव होय अर स्त्रीवेदके उदयतैं पुरुषभोगका भाव होय अर नपुंसकवेदके उदयतैं पुरुष स्त्री भोगिवेका एकही काल भाव होय ये तीन वेद कहिए नोकषायवेदनीयकी नव प्रकृति कहीं अब कषायवेदनीय कहै हैं ॥ ३४॥ क्रोध मान माया लोभ यह चार कषाय तिनमें जो सम्यक्त्वकूं अर व्रतकूं घातै सो अनंतानुबंधीकी चौकडी कहिए जाका क्रोध पाहणरेखा समान अर मान पाषाणके थंभ समान अर माया बांसकी जड समान लोभ लाखके रंग समान यह पहली चौकडी कही॥ ३६ ॥ जाके उदय न सम्यक्त्व न व्रत अर दूजी चौकडी अप्रत्याख्यान जाके उदय श्रावक व्रत न आदर सकै ताके लक्षण हलकी लीक समान क्रोध अर अस्थिके स्थंभसमान मान अर मीढाके सींगसमान माया अर मझीठके रंग समान लोभ यह दूजी चौकडी अव्रतरूप ताके लक्षण कहे ॥ ३७ ॥ अर तीजी चौकडी प्रत्याख्यान जाके उदय जीव श्रावकके व्रत तो ग्रहै परंतु यतिके व्रत न धरि सकै ताके लक्षण गाडीकी लीकसमान क्रोध अर काष्ठके थंभ समान मान अर गोमूत्र समान वक्रमाया अर कसूंभेके रंग समान लोभ अर चौथी चौकडी संज्वलन जाके उदय मुनिके व्रत तो धारै अर यथाख्यात चारित्र न होय ॥३९॥ ताके लक्षण जलरेखा समान क्रोध वैंतकी लता समान मान अर सुरह गायके केशनिकी वक्रता समान माया अर हरिद्राके रंग समान लोभ यह चार चौकडीका स्वरूप कह्या। चार चौकडीकी सोलह कषाय कहिये तिनमें अनंतानुबंधीका फल नर्कगति अर अप्रत्याख्यानका फल तिर्यंचगति अर प्रत्याख्यानका फल मनुष्यगति अर संज्वलनका फल देव गति, यह इनके फल है। यह मोहनीयकर्मकी अठाईस प्रकृति कहीं अर आयुकी प्रकृति चार नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु, देवायु इनके अपनी अपनी आयुपर्यंत आत्माको शरीरविषैं रोकि राखै शरीरमेंसूं निकसिवे न दे अर नामकर्मकी प्रकृति तिराणवें तिनके नाम कहै हैं जाके उदय ये जीव भवांतरकूं गमन करै सो गति ताके देव नारकादि चार भेद हैं जाके उदयकरि नरक तिर्यंच देव अर मनुष्यगतिमें जीव जाय सो चार गति कहिये अर सामान्यपने जातिनामा प्रकृति भेद पांच एकेंद्री जाति वेइंद्री

जाति तेइंद्री जाति चौइंद्री जाति पंचेंद्रिय जाति जाके उदय एकेंद्रियादि जन्म होय सो जाति कहिये अर जाके उदय औदारिक वैक्रियक आहारक तैजस कार्माण यह पांच शरीर सो शरीर नाम प्रकृति कहिये ॥४५॥ अर इन पांच शरीरोंमें तैजस कार्माणके आंगोपांग नाहीं तीन ही शरीरके आंगोपांग हैं औदारिक आंगोपांग, वैक्रियक आंगोपांग, आहारक आंगोपांग ये तीन आंगोपांग प्रकृतिके भेद कहे अर जाके उदय नेत्र आदि इंद्रियोंके स्थानक होंय सो निर्माणनामा नामकर्मकी प्रकृति कहिये ॥ ४७ ॥ अर कर्मके उदय वेवशतैं ग्रहे जे पुद्गल तिनका परस्पर शरीरविषैं बंधन सो बंधननामा प्रकृति कहिये ताके भेद पांच जे शरीरनिके नाम ते ही बंधनके नाम जानहु अर जाके उदय शरीरविषैं परमाणूनिका परस्पर छिद्ररहित मिलाप होय सो संघातनामा प्रकृति कहिये ताहूके वे ही पांच भेद जानहु जो शरीरनिके कहे ॥ ४९ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय प्राणीनिके शरीरके आकारकी रचना होय सो संस्थाननामा प्रकृति कहिये ताके भेद छह समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, हुडकसंस्थान, ॥ ५१ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय हाडनिके संधान सुश्लिष्ट होंय सो संहनननामा प्रकृति कहिये ताके भेद छह वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक, स्फटिक यह छह संहनन कहे ॥ ५३ ॥ अर जा प्रकितके उदय स्पर्श होय सो स्पर्शनामा प्रकृति ताके भेद आठ कर्कश, कोमल, गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, शीत, उष्ण ॥ ५५ ॥ अर जाके उदय रस होय सो रसनामाप्रकृति ताके भेद पांच कटु, तिक्त, कषाय, अम्ल, मधुर, ॥ ५६ ॥ अर जाके उदय गंध होय सो गंधनामा प्रकृति ताके भेद दोय एक सुगंध, एक दुर्गंध ॥ ५७ ॥ अर जाके उदय वर्ण होय सो वर्णनामा प्रकृति ताके भेद पांच कृष्ण श्वेत, हरित, रक्त, पीत ॥ ५८ ॥ अर जाके उदय पहले शरीरका क्षय होय अर नवे शरीरमें गमन करै, पूर्वशरीरका आकारमान काय जामें एक समयतैं लगाय तीन समयपर्यंत ज्योंका त्यों रहै सो आनुपूर्वी कहिये ताके भेद चार जो गतियोंके भेद सो ही अनुपूर्वीके भेद जानहु ॥ ५९ ॥ अर जाके उदय न तो गुरुताके

योगतैं नीचा डूबे न लघुताके योगतैं आकके तूलकी न्याईं ऊंचा उछले सो अगुरलघुनामा प्रकृति कहिये ॥ ६० ॥ अर जा प्रकृतिके उदय आपथकी आपका घात होय सो उपघातप्रकृति कहिये अर जाके उदय परथकी आपका घात होय सो परघात प्रकृति कहिये ॥ ६१ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय सूर्यकी न्याईं आतापका उदय होय सो आतापनामा प्रकृति कहिये सो सूर्यके विम्बके पृथ्वीकायके जीव ताके आताप प्रकृतिका उदय है और कोई जीवके नाहीं अर जा प्रकृतिके उदय चन्द्रमा अथवा आगियाकी न्याईं उद्योत होय सो उद्योतनामा प्रकृति कहिए ॥ ६३ ॥ अर जाके उदय श्वासोश्वास निपजे सो उश्वासनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय आकाशविषैं गमन सो विहायनामा प्रकृति कहिये जाके भेद दोय एक शुभविहाय एक अशुभ विहाय ॥ ६४ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय एक शरीरविषैं एक ही जीव पाजे सो प्रत्येक शरीर कहिये देवनिका शरीर नारकीनिका शरीर अर पृथिवी, अप, तेज, वायु इन चार थावरनिका शरीर अर केवलीका शरीर अर मुनिका आहारकशरीर यह तो प्रत्येकशरीर है इनमें निगोद नाहीं अर विकलत्रय अर पंचेंद्रिय तिर्यंच अर मनुष्य इनका शरीर निगोद सहित ही है अर वनस्पतिकायमें जे प्रत्येक हैं ते तो निगोद रहित हैं अर जो साधारण है सो निगोद सहित है अनंतकाय निगोद सो साधारण कहिये जा प्रकृतिके उदय साधारण शरीर धरै सो साधारण प्रकृति कहिये ॥ ६६ ॥ अर जाविषै प्रकृतिके उदय जीवका वेइंद्रियादिविषैं जन्म होय सो त्रस प्रकृति कहिये अर जाके उदय पंच थावरविषैं उपजै सो थावरनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय प्राणी सबकूं प्यारा लागे सो सुभगनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय प्राणी सबनिकूं अभावना लागै सो दुर्भगनामा प्रकृति कहिये ॥ ६८ ॥ अर जाप्रकृतिके उदय मनोज्ञ स्वरकी उत्पत्ति होय सो सुस्वरनामा प्रकृति कहिये अर जिसके उदय अनिष्ट स्वर मुखतैं निकसे सो दुःस्वरनामा प्रकृति कहिये अर जाथकी रमणीक होय सो शुभनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अति विरूप होय सो अशुभनामा असुंदर प्रकृति कहिये ॥ ७० ॥ अर जाके उदय

सूक्ष्म शरीर धारै सो सूक्ष्मनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय बादर शरीर धारै सो बादरनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय आहार, शरीर, इंद्रिय, श्वासोश्वास, भाषा, मन, यह छह पर्याप्ति होंय सो पर्याप्तिनामा शरीर कहिये अर जाके उदय पर्याप्ति पूरे न करि सके अर अपर्याप्त समय ही मरण होय सो अपर्याप्तिनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय स्थिर होय सो स्थिरनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अथिर भाव होंय सो अस्थिरनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय आदर होय सो आदेयनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अनादर होय सो अनादेयनामा प्रकृति कहिये ॥ ७४ ॥ अर जाके उदयकरि पवित्र गुण प्रसिद्ध होंय सो यशस्कीर्तिनामा प्रकृति कहिए अर जाके उदय निंदा होय सो अयशस्कीर्तिनामा प्रकृति कहिए ॥ ७५ ॥ जाके उदय तीर्थंकरपद पावै सो तीर्थंकरनामा प्रकृति कहिए ॥ ७६ ॥ यह नामकर्मकी तिराणवे प्रकृति कहीं अर गोत्रकर्मकी प्रकृति दोय एक उच्च गोत्र एक नीच गोत्र जाके उदय उत्तम कुलविषैं जन्म होय सो उच्च गोत्र अर जाके उदय नीच कुल-विषैं जन्म होय सो नीच गोत्र कहिए सो क्षत्रिय वैश्य ब्राह्मण ऊंचगोत्री हैं अर अवशेष शूद्र सर्व नीचगोत्री हैं अर देव सर्व ऊंचगोत्री हैं अर तिर्यंच नारकी नीचगोत्री हैं ॥ ७७ ॥ अर अंतरायकी प्रकृति पांच जा प्रकृतिके उदय दानकी शक्ति होतें दान न करि सकै सो दानांतराय अर जा प्रकृतिके उदय अनेक यत्न किए भी लाभ न होय सो लाभांतराय ॥७८॥ अर जाके उदय धन होते हू भोग न करि सकै सो भोगांतराय अर जा प्रकृतिके उदय उपभोग कहिए वस्त्राभरण स्त्री आदि तिनका विभूतिके होते हू उपभोग न होय सकै सो उपभोगांतरायनामा प्रकृति कहिए ॥ ७९ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय उछाह न करि सकै संपति होते हू जाके उछाह नाहीं अर खाते पीतेहू शरीरके विषैं वीर्य नाहीं सो वीर्यांतरायनामा प्रकृति कहिए। यह आठकर्मकी एकसौ अडतालीस प्रकृति कहीं ॥ ८० ॥ अर स्थितिबंधका भेद जघन्य मध्यम उत्कृष्ट आठही कर्मनिका ऊपर कहि आए सो जान लेना। कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका बंध पंचेंद्रिय सैनी पर्याप्तहीके होय है ॥८३॥ अर कषायनिकी तीव्रता मंदता मध्यताके

विशेषथकी कर्मनिका भोग होय है यह कषाय हैं सो भावास्रव अर भाववंध जानने जैसैं कषायभाव होय सो तैसैं ही कर्मनिकी स्थिति वंधै अर तैसा ही उदयविषैं अनुभाग होय, पुण्य प्रकृतिका उदय शुभरूप आवै तत्र सव सामिग्री शुभही मिलै तिनके संयोगविषैं हर्ष ही निपजै अर अशुभ प्रकृतिका उदय महा निकृष्ट है ताके अनुभवविषैं विषाद ही होय, अशुभ भावनिकरि अशुभ कर्म वंधे हैं तिनका फल क्लेशरूप ही है अर शुभके उदयतैं शुभ सामिग्री मिलै शुभ क्षेत्रविषैं ही जन्म होय अर शुभ समय ही रहै अर शुभ जन्म ही धरै अर शुभ ही भाव होंय ॥८८॥ अर अशुभके उदय सव खोटी सामिग्रीही मिलै अर नरकादि अशुभ क्षेत्रविषैं ही उपजै अर सदा अशुभ समयमें ही वर्तै अर अशुभ जन्म ही उपजै अर अशुभ भाव ही होंय यह द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव शुभके अर अशुभके सुन्दर अर असुन्दर जानने अर प्रदेशवंधका निर्णय ऊपर करि आए, आत्माके असंख्यात प्रदेश सो एक एक प्रदेशपर पुद्गलके अनंत अनंत प्रदेश एक क्षेत्रावगाही होंय सो प्रदेशवंध कहिए ॥ ९५ ॥ शुभ आयु, शुभ नाम अर शुभ गोत्र अर साता वेदनीय यह चार प्रकार शुभका वंध है अर यातैं उलटा सो पापका वंध है ॥ ९६ ॥ यह वंधका कथन पूर्ण भया अर आस्रवका निरोध सो संवर, जहां नए कर्म न आय सकैं सो संवर ताके भेद दोय एक द्रव्यसंवर एक भावसंवर संसारके कारण जे रागादिक तिनकी निवृत्ति सो भावसंवर कहिए अर जो द्रव्यकर्मका निरोध सो द्रव्यसंवर कहिए। तीन गुप्ति पांच समिति दशलक्षण धर्म, वारह अनुप्रेक्षा, पंच चारित्र, वाईस परीषहका जीतना यह संवरके सत्तावन भेद कहे अर तपकरि पूर्वोपार्जित कर्मकी निवृत्ति करना सो निर्जरा ताके भेद होय एक सविपाकनिर्जरा एक अविपाकनिर्जरा जो कर्म अपना रस देयकरि खिर जाय बहुरि नए और वंधै सो सविपाकनिर्जरा कहिए यह तो सव ही संसारी जीवनिके है जो कर्म वंधे हैं सो फल देयकरि खिरै ही हैं अर जो विवेकीनिके तपकरि संवरपूर्वक निर्जरा होय नवा न वंधे पुराणा झडें सो अविपाकनिर्जरा मोक्षका मूल कहिए।

भावार्थ—जो कर्म उदय आय झाडैं जैसे आम्रफल पककरि डालतैं गिरै यामें कुछ उपाय नाहीं अर जैसें आम्रफल कच्चा पालमें देयकरि पकावैं तैसे न उदय आया कर्म उदीरकरि उदयमें लाय तपकरि खपाइए सो अविपाकनिर्जरा कहिए। यह अविपाकनिर्जरा सम्यग्दृष्टिहीके होय यह निर्जराका व्याख्यान किया अर बंधके कारण मिथ्यात्व अव्रतादिक तिनके अभावतैं अर निर्जराके योगतैं समस्त कर्मका नाश होय सो मोक्ष कहिए वह मोक्ष निर्ग्रंथरूपके धारक महामुनि तिनहीके होय है औरके न होय ॥ २०१ ॥ इन जीवादि सप्त तत्वनिका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन अर इनका ज्ञान सो सम्यक्ज्ञान अर श्रद्धान ज्ञानकूं पायकरि अशुभकी निवृत्ति सो चारित्र ये तीन रत्न मोक्षके साधन हैं जिनके रत्नत्रय अभेदरूप है अर शुद्धोपयोगकी मुख्यता है ते तो वा ही भवतैं निर्वाणकूं प्राप्त होय हैं अर जिनके भेदरूप व्यवहार रत्नत्रय है शुभोपयोगकी मुख्यता है वे सात भव देवनिके अर आठ भव मनुष्यनिके धरैं। सुरनरके सुख भोगि सिद्धपदकूं प्राप्त होय हैं। भावार्थ—जिनके उत्कृष्ट आराधना है वे तो तद्भव ही मोक्ष होंय हैं अर जिनके मध्य आराधना होय ते तीन भवमें मोक्ष होंय अर जिनके जघन्य आराधना होय ते पंद्रह भवमें पार होवैं हैं, जे निकटभव्य हैं तिनके आत्मध्यानकरि सिद्धपदकी सिद्धि होय है ॥ ३ ॥ ऐसा जिनेन्द्र भगवानका भाख्या निःसंदेह मोक्षका मार्ग ताकूं सुनकरि बारह सभाके भव्य जीव भगवानकूं हाथ जोडि नमस्कार करते भए ॥ ४ ॥ कैयक देव मनुष्य तिर्यंच सम्यक्त्व धारते भए अर कैयक नर तिर्यंच श्रावकके व्रत धारते भए अर कैयक मनुष्य मुनिव्रत धारते भए जे संसारके भ्रमणसूं भयभीत हैं ते वीतरागका मार्ग आराधते भए ॥५॥ यह धर्मोपदेश सुनि दोय हजार राजा मुनि भए अर हजारां राजकन्या आर्यिका भईं अर बलभद्रकी माता रोहिणी अर कृष्णकी माता देवकी अर रुक्मिणी आदि कृष्णकी अनेक राणी श्राविकाके व्रत धारती भईं ॥७॥ अर अनेक यदुवंशी अर भोजवंशी राजा जिनमार्गके वेत्ता श्रावकके बारह व्रत धारते भए ॥८॥ भावार्थ—कैयक मुनि भए, कैयक आर्यिका भईं। अर कैयक श्रावक भए, कैयक श्राविका भईं ॥ ९ ॥ या भांति धर्मश्रवणकरि जिनेश्वरकूं

प्रणामकरि देवनि सहित इंद्र अपने अपने स्थानक गए अर बलभद्र नारायण आदि सब यादव अपने २ स्थानक गए अर जिनेश्वरके चरणारविंदकी भक्ति सो शरदऋतुकी न्याई लोककूं उज्ज्वल करती भई जैसे शरद ऋतु सब दिशानिकूं उज्वल करै तैसैं भगवंतकी भक्ति सब लोककूं उज्वल करती भई, जैसैं शरदऋतुविषैं नभोमंडल मनोज्ञ भासै है अर भक्तिविषै ध्यानरूप नभोमंडल रमणीक भासै है अर शरदऋतुविषै उज्ज्वल मेघपटलकरि नभोमंडल धोयाजाय है अर भक्तिविषैं भावरूप अंबर उज्ज्वल भया है अर शरदऋतुविषैं ग्रह अर तारे आकाशमें प्रगट भासै हैं अर भक्तिविषैं जीवनिमें अनेक शुभ लक्षण प्रगट भासै हैं शरदऋतुविषैं ग्रह तारे ऐसे सोहै हैं मानूं आकाश फूलि रहा है अर भक्तिविषैं हू शुभ भाव फूले हैं अर शरदऋतुविषैं वन्धूक कहिये मिझन्या फूले हैं। सप्तपर्ण जातिके वृक्ष फूले अर भक्तिविषैं भगवानके भक्त फूले हैं अर शरदऋतुविषैं भी वृक्षनिसूं फूल झडे हैं अर भक्तिविषै भगवानके भक्त हू पुष्पांजली क्षेपै हैं शरदऋतु उज्ज्वल अर भक्ति हू उज्ज्वल तातैं शरदका दृष्टांत दिया। गणधर देव कहै हैं हे श्रेणिक ! भगवान नेमिनाथके दर्शन जैसैं तीनलोकके प्रगट भक्त पुष्पांजली चढावते आवैं तैसैं शरदऋतु हू पुष्पांजलि बखेरती सब दिशानिकूं उज्ज्वल करती आई अर आकाशमंडलकूं उज्ज्वल मेघपटल करती आय प्रगट भये हैं ग्रह अर तारानिकरि नभोमंडल फूल्यासा दीखै है अर मिझन्या तथा सप्तपर्ण आदि वृक्षनिके नवीन पुष्प निकासती आई ऐसी शरदऋतुविषैं जिनेश्वरके विहारका उद्यम भया।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ श्रीनेमिनाथधर्मोपदेशवर्णनोनाम अष्टपंचाशत् सर्गः ॥ ५८ ॥



अथानंतर—भगवान विहारकूं सन्मुख गिरनारके शिखरतैं उतरे जैसैं अहमिंद्र लोकतैं जगत्के उद्धारके अर्थि मध्यलोकमें पधारे तैसैं जगतकूं भवोदधितैं उद्धारिवेके अर्थि गिरनारतैं नीचे उतरे। जब भगवान विहारकूं संन्मुख भये तब कुवेर यह घोषणा करता भया जाकी जो इच्छा होय सो लेवहु अर भगवानके विहारविषैं पृथिवी मणिरूप

होती भई अर मनोवांछित दान ठौर ठौर बंटे और ठौर ठौर मंगलाचार होते भये अर पृथिवी सब ऋतुके फल फूलनिकरि मंडित भई भगवानके विहारकी महिमा कहा कहनी। जब भगवान जीवनिके हितकूं उद्यमी भये तब पृथिवी आनंदरूप होय गई ॥ ४ ॥ जैसैं वर्षाविषैं जलकी धारा वर्षें तैसैं आकाशतैं रत्नधारा वसुधाविषैं बरसती भई ॥ ५ ॥ प्रभुके सन्मुख प्रणाम करते देव चले जाय हैं नम्रीभूत हैं मुकुट जिनके तिनकी कांतिकरि व्यापि रही हैं दशूं दिशा, वे सबही देव भगवानकी प्रभाके अनुरागी हैं अर सुवर्णमई कमल हजार २ पत्रके पावनिके तले क्षेपे हैं सो मानूं वे कमल पृथ्वीके आभूषणही हैं ॥ ७ ॥ अर नानाप्रकारके रत्ननिकी विचित्रताकरि पृथ्वी रत्नमई होय रही है इंद्र अर इंद्राणी तेई भये भंवर तिनकरि सेवित प्रभुके चरणकमल तिनपर सुर असुर अर नर भंवर भये गुंजार करै हैं अर भक्तिरूप मकरंदका पान करै हैं जब भगवान विहार करै हैं तब पृथ्वीविषैं वसु जातिके देव आगैं २ इंद्रकी आज्ञाकरि चले जाय हैं ॥ ११ ॥ अर ऐसे वचन उच्चारते जाय हैं हे प्रभो! तुम जयवंत होहु हमपर कृपा करहु लोकके हित करिवेका यह समय है तुम लोकके हितविषैं उद्यमी हो, हे ईश! याहीतैं तुमकूं सुर असुर नर आयकरि प्रणाम करै हैं तुम समस्त विधिके वक्ता हो ॥ १२ ॥ भगवान विश्वके कल्याणके अर्थि विहार करैं धर्मचक्र आगे २ चला जाय है पृथ्वीविषैं संपदा विस्तरै तीनलोकके जीव हर्षित होंय ॥ १४ ॥ अर विहारके वादित्रनिकी ध्वनि ऐसी होय है जैसी मेहकी ध्वनि होय ध्वनिमें यह शब्द होंय हैं भव्यनिकूं आनंद बढो ॥ १५ ॥ बीणा, वांसुरी, मृदंग, झालर, शंख, काहल इत्यादि अनेक वादित्र बाजै हैं कैयक गीत गावैहैं मंगल शब्द होय रहे हैं जैसैं समुद्र गाजे तैसैं शब्द होय हैं भव्यनिके प्रयाणके महाशब्द तिनकरि धरती आकाश शब्दायमान होय रहे हैं, कैयक गीत गावै हैं कैयक भगवत्कथा करै हैं कैयक आनंदरूप हास्य करै हैं कैयक गरजे हैं कैयक नानाप्रकार राग करै हैं अर कैयक किन्नरी देवियां नृत्य करै हैं अर स्वर्गलोककी अप्सरा नृत्य करै हैं अर गंधर्व-जातिके देव वादित्र बजावै हैं ॥ १८ ॥ अर कैयक मंगलस्तोत्रनिकरि स्तुति करै हैं अर कैयक जय २ शब्द करै

हैं जहां २ प्रभु पांव धरै हैं तहां तहां अति मंगलाचार हो रहे हैं। या भूतलविषै गीत नृत्य वादित्र नानाप्रकारके मनके हरणहारे देवनि अर मनुष्यनिने किए ॥ २० ॥ अर सब दिशानिकूं सब लोकपाल सावधानी सहित सेवा करते चले जाय हैं प्रभुकी सेवा ही सेवकनिकूं कल्याणके अर्थि है। अर जिनका जो अधिकार है ताही रीति सेवा करै हैं ॥ २१ ॥ अर कैयक देव महा दैदीप्यमान सब ओर दौडते फिरै हैं इंतजाम करै हैं रीतिमाफिक चलावै हैं ॥ २२ ॥ अर दैदीप्यमान हैं रत्नमई कडे जिनके ऐसे कर तिनकरि आंजुली जोडते प्रभुकूं शीश निवाय नमस्कार करै हैं देवनिके मुकुट भूमिकूं स्पर्शै हैं तिनके रत्ननिकी ज्योतिकरि पृथिवी ऐसी सोहै है मानों कोटिक कमलनिकरि पृथिवी प्रभुकी पूजा ही करती सोहै है ॥ २५ ॥ लोकपाल आग आगै चले जाय हैं वे लोकपाल लोकेश्वरके पायक हैं मानूं भगवानकी कांति ही मूर्ति धरि आगै आगै चली जाय है ॥ २६ ॥ अर पद्मनामा देवी तथा सरस्वतीनामा देवी अपने मंडलसहित मंगलद्रव्य हाथमें धरे आगे २ जाय है। भगवानकूं प्रदक्षिणा देय नमस्कारकरि मंगलद्रव्य लिए चली जाय हैं अर इंद्र नमस्कार करता हाथ जोडे चला जाय है अर यह शब्द कहै है, हे देव! कृपा करो जगतकूं भवबनतैं निकासो अर देश देशके राजा प्रणाम करते चले जाय हैं ॥२८॥ या भांति वे ईश्वर तीनलोकके परमेश्वर सुर नर असुर तिर्यंचनिकरि सेवित लोकनिके उद्धारिवे अर्थि आर्यक्षेत्रविषैं जहां जहां भगवान चरणकमल धारैं हैं तहां पद पदविषैं देव रत्न सुवर्णमई कमल रचै हैं अर यह शब्द वारंवार कहै हैं ॥ ३० ॥ हे नाथ! हे जगज्ज्येष्ठ! हे लोकके पितामह! तुम जयवंत होहु। हे स्वयंभू! हे अविनाशी! हे देव! हे अनंतगुणकेस्वामी! हे जीवनिके दयालु! तुम जयवंत होवो। हे सर्व जगत्के बांधव! हे धर्मके नायक! तुम जयवंत होहु। सबनिके शरणके देनहारे शरणागत प्रतिपाल! तुम जयवंत होहु। हे पवित्र! हे उत्तम! हे श्रीधर! तुम जयवंत होहु ॥ ३२ ॥ ऐसी घोषणा करते पृथिवी अर आकाशकूं शब्दायमान करते प्रभुके साथ विहार करते भये जैसा मेघका गंभीर शब्द होय तैसा जयजयकारका शब्द होता भया ॥ ३३ ॥ वह वीतराग देव सर्व इंद्रनिकरि पूज्य

मंगलरूप है दर्शन जाका इंद्रनिके मुकुटविषैं नील रत्न सोई भई भंवरनिकी पंक्ति ताका है भ्रमण जाके चरणकमलनि पर ॥ ३४ ॥ चरणकमलकी निवासिनी जो लक्ष्मी ताकरि जगतकूं आनंद उपजावता संता जिनवर जीवनिकी दयाकरि अद्भुत विभूतिसूं विहार करैं। देवमार्ग जो आकाश ताविषैं विहार करता रत्न कमलनिपर चरणकमल धरता धर्मका स्वामी विहार करै है ॥ ३६ ॥ लोकके कल्याणके अर्थि विहार करता विश्वेश्वर ताके आगै देश देशके राजा चले जाय हैं ॥ ३७ ॥ जैसे पतिव्रता स्त्री पतिकी अनुगामिनी होय सो प्रशंसा योग्य है तैसैं महाविभूतिरूप स्त्री सर्वज्ञकी अनुगामिनी सोहै है स्त्री भी सुवर्ण वर्ण है, अर मणीनिके आभूषणनिकरि मंडित है ॥ ३८ ॥ तैसैं समवसरणकी विभूति हू मणि सुवर्णमई है अर प्रभुकी अनुगामिनी है तातैं प्रशंसा योग्य है अर चौगिर्द पवनकुमार देव भूमि शुद्ध करते जाय हैं। अपनी सेवामें सावधान हैं जैसे साधु अपनी वृत्तिमें सावधान होय। देवनिकरि बुहारी भूमि दर्पण समान दिपै है ॥ ३९ ॥ अर मेघकुमारदेव गंधोदककी वृष्टि करते जांय हैं अर देदीप्यमान विजुरी चमकती जाय है ॥ ४० ॥ अर मंदारजातिके कल्पवृक्षनिके पुष्प तिनकी वर्षा होती जाय है तिनपर भंवर गुंजार करै हैं जिनमार्गके ईश्वर तिनका ऐसा विहार ताकी देवनिके समूह प्रशंसा करते भये ॥ ४१ ॥ सुवर्णकी रजका मंडल अर रत्ननिका चूर्ण ता करि पृथिवीतल कैसा सोहता भया जैसे ज्योतिषी देवनिके मंडलकरि आकाश सोहै है। देव नानाप्रकारके पत्रनिकूं कुंकुमके रसकरि युक्त करै हैं। सो मानूं अपना चित्रकारपना ही पृथिवीविषैं प्रसिद्ध करै हैं ॥४३॥ अर कदली, नारियल, ईख, कमरख, नारंगी आदि सब ही फल अर सब ही फूल छहों ऋतूनिके जगह जगह फलि रहे हैं फूलि रहे हैं। मार्गके समीप दोऊ ओर बाग लगि रहे हैं अर खेतनिमें सब धान्य फलि रहे हैं अर मार्गविषैं जगह जगह सुंदर मंदिर हैं तिनमें देव, देवी, नर, नारी गीत नृत्य करै हैं ॥ ४५ ॥ प्रभुके विहारकरि मार्ग ऐसा मनोज्ञ भया है मानूं यह कर्मभूमि मनवांछित सामग्रीकरि भोगभूमिकूं जीतै है सर्व सामग्री पृथ्वीविषैं पैंड पैंडविषैं परिपूर्ण है मार्गके अंत दोऊ ओर दो दो कोसके

विस्तार सीमा है ॥ ४६ ॥ वह मार्ग तोरणनिकरि शोभित है मानूं वे शोभाके कारण कल्पवासी देवनिने कल्पे हैं। ठौर ठौर मार्गविषैं मनवांछित दानकी देनहारी दानशाला हैं। तहां मनवांछित दान वटै है मानूं वे दानशाला साक्षात् दानशक्ति ही हैं ॥ ४८ ॥ अर तोरणनिके भीतर उतंग कदलीकी ध्वजाकरि मंडित महा सघन है छाया जाकी सूर्यकी कांतिकूं रोकै ऐसा वनदेवनिने वनके पुष्पनिकरि पुष्पमंडप रच्या है। पुष्पनिकी मंजरी तिनके पुंजकरि महासुगंध महा सुंदर मानूं पुण्यके समूहका आकार ही है ॥ ५० ॥ वह पुष्पमंडप रत्ननिकी बेल अर चित्रामरूप भीति तिनकरि मनोहर भासै है चन्द्रमा अर सूर्यकी प्रभाकूं जीतै ऐसी कांतिके मंडलकरि मंडित है घंटाके मनोहर शब्द अर ध्वजानिकी क्षुद्र घंटिकानिके मनोज्ञ शब्द तिनकरि सब दिशानिकूं शब्दरूप करै है वह पुष्पमंडप समीचीन सुगंधकरि खैंची है भंवरनिकी पंक्ति जानें। सो महासुगंध महा उज्ज्वल मानूं प्रभुका यशही मूर्तिवंत दीखै है ॥ ५३ ॥ ऊंचे हैं थंभ जाके स्थूल हैं मोतिनिकी झालरी जाके अर चार द्वारनिकरि सोहै है। ता मंडपके मध्य दयाकी मूर्ति रागादिक वैरीनिके दमनहारे संयमके स्वामी स्वयंभू सर्व लोकके हितके अर्थि गमन करै हैं ॥ ५५ ॥ अर प्रभुके पीछे भामंडल सोहै है अर तीन छत्र अति निर्मल ऊपरां-ऊपरि सोहै हैं मानूं प्रभुका त्रैलोक्यनाथपना प्रगट प्रकाशै हैं ॥ ५७ ॥ अर हजारां चंवर जिनेश्वरपर स्वयमेव ढुरै हैं जैसैं गिरेन्द्रपर हंसनिकी पंक्ति पडै अर हजारों मुनि प्रभुके साथ विहार करै हैं अर सब ओर देवनिकी सेना विस्तरि रही है अर इंद्र द्वारपाल हुआ देवनिसहित आगे २ जाय है। शची सहित इंद्र सर्वज्ञ देवकूं सेवै है। अर भगवानकी केवललक्ष्मी प्रगट भासै है अर मंगलनिका मंगल भगवान ताके साथ मंगलद्रव्य लिये देव चले जांय है अर शंख अर पद्मनामा दो निधि तिनकरि मनवांछित दान देते जाय हैं। सुवर्ण अर रत्ननिकी वर्षा होय है अर नागकुमार देव दैदीप्यमान हैं मणि जिनके फणविषैं दैदीप्यमान उद्योत करते जाय हैं मानूं वे ज्ञानरूप दीपकी दीप्ति ही हैं ॥ ३६ ॥ अर अग्निकुमार जातिके देव धूपके घट लिए जाय हैं तिनका

सुगंध ऊर्द्धकूं जाय है मानूं भगवानके अंग हीका सुगंध फैल रह्या है। अर भगवान्के भक्त चांद सूर्य प्रभाके मंडलकूं भरे दर्पणजातिके मंगल द्रव्य लिये जाय हैं अर आतापके निरोध करणहारे उज्ज्वल रत्नमई छत्र देव प्रभुके सिरपर फिरावैं हैं। अर देवनिके हाथमें ध्वजा फरहरै हैं सो मानूं मिथ्यावादीनिका तिरस्कारकरि वे जीतिवेका स्वरूप नृत्य ही करै हैं। मानूं वे ध्वजा जिनेश्वरकी दयाकी मूर्ति ही सोहै हैं अर वैभवीनामा देवी बहुरि विजया वैजयंती इत्यादि आगे आगे जाय हैं मानूं तीन जगतके नेत्ररूप कुमुद तिनकूं प्रफुल्लित करणहारी भगवान्की कांतिरूप चंद्रिका देवीनिका रूप धरे सोहै हैं अर स्वर्गलोकके निवासी कल्पवासी देव अर देवी अर मध्यलोकके ज्योतिषी भवनवासी व्यंतरदेव अर पातालके भवनवासी अर व्यंतरदेव ये सब ही चारप्रकारके देव देवी अनुरागके भरे आनंद नाटक करै हैं जाविषैं सब रस प्रगट शोभै हैं। अर गंभीर मधुर है ध्वनि जिनकी ऐसे दुंदुभी मेघकी ध्वनिकूं जीतनहारे वादित्र बाजै हैं तिनके नादकरि दशूं दिशा शब्दायमान होय रही हैं ॥ ७१ ॥ अर धर्मचक्र जीता है सूर्य जानैं, हजार हैं धारा जाकी, जाकी कांतिके समूहकरि आकाशविषैं उद्योत होय ताहि देव लिये चले जाय हैं। अर देव यह घोषणा करते जाय हैं यह तीनलोकका एक प्रभु पृथिवीविषैं विहार करै है सो आओ याकूं नमस्कार करो यह घोषणा होय रही है ॥ ७३ ॥ अर बडे बडे देव ध्यावते संते सब दिशामें जय जयकार शब्द करै हैं मांनू वे देव प्रभुके प्रभावके अंश ही हैं। यह परम अद्भुत भगवंतदेवका विहार ताहि पायकरि पृथ्वीविषैं अद्भुत शोभा होती भई, जीवनिके अद्भुत मंगल होते भये ॥ ७५ ॥ जा देशविषैं प्रभु विहार करैं ता देशविषैं जीवनिके मनकी चिंता न होय अर रोगकी बाधा न होय अर अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि सप्तप्रकार ईति भीति न होय ॥ ७६ ॥ अर अंधनिके आंख होंय रूपकूं निरखैं अर बधिरनिके कर्ण होंय सब बात नीके सुनैं अर गूंगा पुरुष प्रकट वचनालाप करै अर पंगुनिके पग होवें सो पर्वतकूं उलंघैं ॥ ७७ ॥ अर जहां प्रभु विहार करैं तहां अति उष्ण अर शीत न होय अर रातदिनका भेद न होय अर जेते अशुभ कर्म वे सब विलाय जांय शुभकी

वृद्धि होय ॥ ७८ ॥ अर वसुधारूप वधू सर्व धान्यकरि निष्पन्न भई धान्यके अंकुरेरूप रोमांच सो ही हैं कंचुकी जाके सो कमलरूप हस्तकरि प्रभुके चरण ग्रहे है अर जिनसूर्यके चरणरूप किरणनिके संयोगकरि प्रफुल्लित भई है भूतलके कमलनिकी पंक्ति सो आकाशविषैं सरोवरकी शोभाकूं विस्तारै है अर छहों ऋतु एकैलार जगत्पतिकूं सेवै हैं मानू प्रभुकी सम्यग्दृष्टिके प्रभावतैं ये उपशमरूप होय गई हैं। भगवान्के विहारकरि भूमि रत्ननिकी उपजावनहारी है यातैं रत्नजननी नाम पाया है। प्रभुके प्रसादकरि शीतकाल उष्णकाल हू अपनी विषमताकूं तजिकरि समरूप वरतै है अर काहू प्राणीकूं कोई प्राणी न हतै है ॥ ८४ ॥ त्रस अर थावर सब ही जीव सुखसूं समय पूर्ण करै हैं। यह पृथ्वीविषैं प्रभुकी प्रभुता वरतै है ॥ ८५ ॥ अर सर्प नकुलादिक तथा सिंह मृगादिक सबही जातिविरोधी जीव निर्वैर होय गये हैं। भगवंतके प्रभावकरि जीवनिकी दुर्बुद्धि दूर भई है ॥ ८६ ॥ अर शीतल मंद सुगंध पवन प्रचंडता रहित भई प्रभुकूं सेवै हैं मानूं सेवकनिकूं सेवाकी विधि मिखावै है सेवकका यही धर्म है जो स्वामीतैं अनुकूल होय प्रतिकूल न होय सो पीछे पीछे लार लगी आवै है ॥ ८८ ॥ अर दिक्कुमारी निर्मल आभरणकरि मंडित कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकरि जिनपतिकूं पूजै हैं, वे दिक्कुमारी प्रभारूप हैं, तिमिरकी हरणहारी हैं अर आकाश निर्मल होय गया है जाविषैं तारा प्रगट दीखै हैं सो कैसे सोहै हैं मानूं शरदऋतुविषैं सरोवरमें कुमुद ही फूलि रहे हैं। अहो ! त्रैलोक्यनाथका अद्भुत माहात्म्य है जो मंदबुद्धि तिर्यंचहू दूरतैं नमस्कार करै हैं। अर वह कहै हैं मैं पहिले जाऊं वह कहै मैं पहिले जाऊं या भांति दर्शनकी अभिलाषाके भरे सुर नर चले आवै हैं, जा दिशाविषैं त्रैलोक्यका ईश्वर पांव धरै है तहां २ सुरेश्वर आगै आगै दौडा जाय है अर दिश दिशके राजा पूजाके उपकरण लिये पूजिवेकूं आवै हैं। सब ही दिशके नरेश्वर जगदीश्वरके लारहैं अर कैयक चले आवै हैं। भगवान सारिखा सर्वेश्वर और नाहीं। सुरेश्वर, नरेश्वर, असुरेश्वर, खगेश्वर सबही जिनेश्वरके दास हैं भगवानके विहारसमय देवनिकी सैना तो आकाशविषैं चली जाय है अर मनुष्यनिकी सैना भूमिविषैं सब ओर चली जाय है। जहां भगवान विहार करैं तहां पृथिवी पवित्र होय है।

अथानंतर—प्रभुके शरीरकी जोतिका प्रतिबिंब मंडलरूप होय रह्या है ताहि भामंडल कहिए है ताका निरूपण करै हैं। वह ज्योतिका मंडल है ताके एक ऊंचा दंडके आकार प्रभाका दंड भासै है। ताके ऊपर महा अपूर्व कांतिकूं धरे अपनी कांतिकरि सूर्य आदि सब तेजस्वनिका तेज मंद करता भामंडल सोहै है। वह भामंडल अधिकसूं अधिक तेजकूं धरै है यह महा स्थूल है तेज जाका सो रूपी है अरूपी नाहीं भगवानका आत्मसंबंधी अरूप तेज तो अनंत अपार है अर यह शरीरके तेजका मंडल है सो ही कथनमें न आवै। भामंडलका तेज काहूकरि निवारचा न जाय अप्रतिघात है, अर दूर किया है समस्त तिमिर जानें अर ज्योतिके मंडलके मध्य एक पुरुषाकार तेजोमय सहस्ररश्मिरूप प्रभुके सब ओर सोहै है अद्भुत है उदय जाका। ता भामंडलका विस्तार तो एक कोस है अर ऊंचाई तीर्थंकरके शरीरकी ऊंचाईके अनुसार है ऋषभदेवका शरीर पांचसौ धनुषका हुता अर नेमीश्वरका शरीर धनुष दश ऊंचा है सो शरीरके अनुसार भामंडलकी ऊंचाई है ॥ ९९ ॥ वह भामंडल महा मनोहर दीखै है जाके देखिवेकरि नेत्रनिकूं सुख होय। वह भगवानके शरीरका भामंडल पुरुषाकार है अर जगत्-पूज्य है ॥ १०० ॥ जे हीनपुण्यी हैं पापी जीव हैं तिनकूं दर्शन नाहीं जैसें घूघू सूर्यकूं न विलोकै। वे प्रभु समस्त लोककूं धर्मका प्रकाश करते लोकनिकूं कल्याणके अर्थि जगत्के ईश्वर विहार करते भए। सब देवनिकी कांतिकूं उलंघै ऐसी है कांति जिनकी सो कैयक वर्ष विहारकरि आर्यखंडके जीव प्रतिबोधे अनेक मंद बुद्धि प्रवीण भए। हिंसक जीव हिंसातैं रहित भए। वीतरागदेवके विहार समय जीवनिकूं आर्ति चिंता आदि खेद न होते भए॥८॥ प्रभुने जगतके कल्याण निमित्त महा विभूतितैं विहार किया अनेक देश संबोधे देशनिके नाम—सोरठ, मत्स्य, लाटोरु, सूरसेन, पाटच्चर, कुरु, जांगल, पांचाल, कुशाग्र, मगध, अंजन, अंग, बंग, कलिंग आदि अनेक देश-निम विहारकरि लोकनिकूं जिनधर्मी किए। राजा प्रजा सब संबोधे। कैयक राजा मुनि भए, कैयक श्रावक भए कयक रानी आर्यिका भईं, कैयक श्राविका भईं, कैयक ब्राह्मण अर वणिक मुनि भए, कैयक श्रावक भए। अर

इन उच्चकुलकी स्त्री कैयक आर्यिका भई, कैयक श्राविका भई अर कैयक शूद्रलोक हू श्रावक भए अर उनकी स्त्री श्राविका भई। श्रावक श्राविकाके व्रत सबही कुलनिकूं होय है अर यति आर्यिकाके व्रत उच्चकुल बिना नाहीं। या भांति सकल जीव संबोधे अर श्रावकके व्रत सिंह, गज, मृगादि पशुओंने धारे अर हंस गरुडादि पक्षीनिने धारे अर अनेक देव सम्यक्त्वके धारक भए ॥१२॥ नेमीश्वर विहार करते मलयनामा देशविषैं आए ताविषैं भद्रिलपुरनामा नगर ताके सहस्राम्रनामा वनविषै प्रभु पधारे अर समवसरणकी रचना भई। चतुरनिकायके देव आदि बारह सभा प्रभुके प्रदक्षिणा रूप बैठे। तहां भद्रिलपुरका राजा पुंडू अपनी प्रजासहित परमेश्वरके दर्शनकूं आया सो हाथ जोडि शीश नवाय नमस्कारकरि मनुष्यनिकी सभामें बैठ्या तहां देवकीके पुत्र छह सुदृष्टिनामा सेठ अर ताकी अलकानामा सेठानीके पले हुते सो सकल मातापितासहित दर्शनकूं आए। इन छहों भाईनिके प्रत्येक प्रत्येकके बत्तीस बत्तीस स्त्री सो अपने रूपकरि शचीनामा इंद्राणीहूका रूप जीतैं ॥ १७ ॥ ते छहों भाई छहों रथनितैं उतरकरि समोशरणमें आए. जिनराजकूं नमस्कारकरि राजापुंडूके समीप आय बैठे अद्भुत है तेज जिनका ॥१८॥ तहां भगवान् सम्यग्दर्शन सहित यति अर श्रावकका धर्म दिव्यध्वनिकरि कहते भए यतिका धर्म साक्षात् निर्वाणका कारण है अर श्रावकका धर्म परंपराय मोक्षका कारण है। यह व्याख्यान सुनि यह छहों भाई तत्त्वके वेत्ता धर्मरूप अमृतके पानकरि तृप्ति भए, जाना है संसारका स्वरूप असार जिनि सो राजासूं अर माता पितासूं अर सकल कुटुंबसूं क्षमा कराय जिनेश्वरके चरणारविंदकूं नमस्कारकरि यह छहों भाई जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए। छहों भाई छह काय जीवके दयालु षद्द्रव्यके वेत्ता एकै साथ सर्वसंगके त्यागी भए। सो छहों द्वादशांगके पाठी श्रुतकेवली भए अर जिनकूं बीजबुद्ध्यादि अनेक ऋद्धि उपजीं अर महा दुर्द्धर तप करते भए ॥ २१ ॥ इन छहों मुनीनिके वेला आदि तप समान, धारणा पारणा सबनिका साथ अर शीत उष्ण वर्षाके तीनों योग साथ अर शय्या, आसन, स्थान, सबनिका साथ ॥ २२ ॥ यह छहों भाई तद्भव मोक्षगामी चरमशरीरी महातपके

करणहारे तिनके देहकी कांति गृहस्थ अवस्थातैं अधिक होती भई। इनकी उपमा देवेकूं येही छहों मुनि और इन समान नाहीं यह वाह्याभ्यंतर तपके करणहारे जिनेश्वरके परम भक्त होते भए ॥ २४ ॥ याभांति महा विभूति सहित विहारकरि तीन लोकका नायक अनेक मुनीनि सहित वहुरि गिरनार पधारे ॥ २५ ॥ तहां समवसरण-विषैं देवनिसहित सकल इंद्र आए। अर उपेंद्र कहिए वासुदेव वलदेव समस्त यादवनि सहित आए। भगवान सुर नर मुनीनिकरि सेवनीक तिनके संघका वर्णन करे हैं। वरदत्तस्वामीकूं आदि देय ग्यारह गणधर ते श्रुतज्ञानरूप समुद्रके पारगामी सोहते भए ॥ २७ ॥ अर चारसौ मुनि चौदह पूर्वके धारक अर ग्यारह हजारआठसौ मुनि शिष्य अर पंद्रहसौ अवधिज्ञानी अर पंद्रहसौ केवली ॥ २९ ॥ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी नवसौ अर वादि-ऋद्धिके धारक आठसौ अर ग्यारहसौ विक्रियाऋद्धिके धारक याभांति अठारह हजार अर ग्यारह गणधर ते मुनि जानो। अर राजमतो आदि चालीसहजार आर्यिका अर एकलाख उनहत्तरहजार श्रावक अर तीनलाख छत्तीसहजार श्राविका यह सबही चतुर्विध संघ सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध भगवंतके मुखथकी उपदेश सुनते भए। गिरनारी गिरिविषैं पूर्वली भांति धर्मोपदेश भया। धर्मरूप अमृतकी वर्षा भई ताकरि भव्यरूप पपीहा तृषित हुते सो तृप्त भए। भगवानकी दिव्यध्वनि सब जीवनिकूं तृप्त करती भई। याभांति अपार है उदय जाका ऐसा गिरनार सोई भया उदयाचल तापर जिनसूर्य विराजे। तब सकल सभाके लोकनिके हृदय तेई भए कमल सो विकाशकूं प्राप्त होते भये ॥ ३४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवानविहारवर्णनोनाम एकोनषष्ठि सर्गः ॥ ५९ ॥

अथानतर—धर्मोपदेशके भये पीछे देवकी कृष्णकी माता महाविनयवान जिनेश्वरसूं हाथ जोडि नमस्कारकरि पूछती भई। हे भगवन्! आज मेरे मंदिरमें दो मुनि दिगंबर महामनोहर आहारकूं आए बहुरि वेही आए

बहुरि वेही आए या भांति दोय मुनि तीन वेर आये सो एक दिनविषैं मुनि तीनवेर कैसैं आए। अर उनकूं देखि करि मेरे ऐसा मोह उपज्या मानूं मेरे पुत्र ही हैं यह प्रश्न दवकीने किया तव श्रीभगवान कहते भए वे छह तेरे पुत्र हैं तीन युगल तेरे भए सो देव होतेही कंसके भयसूं उनकूं लेगए सो भद्रिलपुरविषैं अलका नामा सेठानीके घर पले अर ताके मृतक पुत्र भए सो देवनिने तेरे निकट आय डारे ते तीनोंही मृतकयुगल कंसने सिलापर पटके अर तेरे तीनों युगल छहों पुत्र मेरे निकट मुनि भए ते छहों तेरे घर आहारकूं आए पहिले प्रथम युगल आया बहुरि दूसरा युगल आया बहुरि तीसरा युगल आया याभांति तीन वेर छहों साधु आये वे छहों समान रूप हैं तातैं तैं जाने वेही आगे साधु दूसरी वेर भोजन नाहीं करैं अर आवैं नाहीं वे कृष्णके वडे भाई छहों धर्मश्रवणकरि मेरे शिष्य भए हैं सो या भववनमें कर्म काटिकरि सिद्धलोककूं जावेंगे वे महा पुरुष हैं अर तेरे उनसूं पुत्रका स्नेह उपज्या सो सत्य है परंतु जगतका सकल स्नेह वृथा है तू जिनधर्मविषै स्नेहकरि जाकरि भवसागरकूं तिरै यह कथा जिनेश्वरके मुखसूं सुनिकरि देवकी मुनीनिकूं नमस्कार करती भई अर सकल यादव नमस्कार करते भए अर बलदेव वासुदेव नमस्कारकरि मुनीनिकी अति स्तुति करते भए ॥

अथानंतर—कृष्णकी पटरानी सत्यभामा प्रभुकूं प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछती भई तव भगवान कहते भए सत्यभामा सुन है अर सर्व सभा सुनै है या भरतक्षेत्रविषै भद्रिलपुरमें कपिलनामा ब्राह्मण ताके मरीचीनामा स्त्री ताके मुंडशालायननामा पुत्र भया सो विद्यामदकरि गार्वित आपकूं पंडित मानै। जा समयमें भगवान पुष्पदंत तौ परमधाम पधारे हुते अर शीतलनाथस्वामी प्रगटे हुते सो शीतलनाथके उपजने पहलें पावपल्य धर्मका विच्छेदभया ता समय जिनमार्गके ज्ञाता भव्यजीव भरतक्षेत्रमें न रहे अर अज्ञानकी प्रवृत्ति भई वा समय मुंडशालायननामा विप्रने राजा प्रजा मूढजन तिनकूं भ्रम उपजायकरि पापकी प्रवृत्ति करी अणछान्या जलकरि स्नान अर गौ कन्या गज तुरंगादि दशप्रकार दान यह प्ररूपणा करी। अर लोभकरि लोगनिकूं ठगे ता पापकरि सप्तम

नरकविषैं नारकी भया। बहुरि दुष्ट तिर्यंच होयकरि नरक ही गया कुयोनिविषैं बहुत भ्रमण करके कभी मनुष्य देह पाई परंतु नीचकुलविषै उपज्या ॥ १५ ॥ बहुरि गंधावतीनामा नदी ताके तीर गंधमादननामा पर्वत तहां यह एक पर्वतकनामा भील भया ताके वल्लरी नामा स्त्री ॥ १६ ॥ एक दिन ता पर्वतपर श्रीधर अर धर्म यह दोय चारणमुनि आए तिनका भीलकूं पुण्यके उदय दर्शन भया भील मुनिकूं नमस्कारकरि श्रावकके व्रत धारे ॥१७॥ कालपाय मरणकरि विजयार्द्धगिरिविषैं अलकापुरी तहां राजा महाबल विद्याधर ताके रानी योतिमाला अर वडा पुत्र सतबली वासूं छोटा यह हरिबाहननामा राजकुमार होता भया कैयक दिनमें इनका पिता महाबल श्रीधर मुनिके निकट मुनि भया अर इन दोऊ भाईनिके ताईं राज्य दिया आप मुनि होय मुक्ति पधारे ॥ १९ ॥

अथानंतर—बडे भाई सतबलने छोटे भाई हरिवाहनकूं देशसूं निकाल दिया सो हरिवाहन भगवाहन भगली नामा देशविषैं अंबुदावतनामा पर्वतपर श्रीधर्म अर अनंतवीर्यनामा चारण मुनीनिका दर्शनकरि मुनि भया, वीतरागका धर्म आराधिकरि दूसरे स्वर्ग देव भया तहां स्वर्गलोकके सुख भोगि मरण समय संक्लेशभावथकी शरीर छोडि स्त्रीपद उपार्ज्या सो तू विजयार्द्धगिरिविषै राजा सुकेतके स्वयंप्रभा रानीके गर्भविषै सत्यभामानामा पुत्री भई सो वासुदेवने परणी अब या जन्मविषैं आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय तहांसूं चय मनुष्य भव पाय सिद्धपद पावैगी ॥ २४ ॥ यह कथा सुनि सत्यभामा अति हर्षित भई संसारका क्षय जानि कौन हर्षित न होय। बहुरि रुक्मिणी देवाधिदेवकूं प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछती भई तब प्रभुकी आज्ञा भई, याही भरतक्षेत्रविषै मगधनामा देश ताविषैं लक्ष्मीग्राम तहां सोमदेवनामा ब्राह्मण ताके तू लक्ष्मीमतिनामा ब्राह्मणी हुती सो रूपके अभिमान करि महामूढ पूज्य पुरुषनिका अपमान करै एकदिन शृंगार करती हुती नानाप्रकारके वस्त्रा-भरण पंहरे चंद्रमासमान मणीनिके दर्पणविषै अपना मनोहर मुख निरखती हुती तासमय याके घर समाधिगुप्त नामा मुनि तपकरि महाक्षीण शरीर आहारकूं आए सो यानैं निन्दा करी ।। ३० ॥ सो मुनिकी निंदाके पापकरि

सातदिनके भीतर उदंबर कोढ उपज्या तब यह अग्निमें प्रवेशकरि मूई सो आर्तध्यानकरि गधी भई गधी होय करि लूणके लदनेमें आई सो लूणके लदिवेकरि मरी बहुरि पापके योगकरि राजगृहनामा नगरविषैं सूकरी भई सो सूकरी पापीनिके मारी मरी सो मरिकरि गौओंके बाडेविषैं कूकरी भई सो दौमें जल मरी। मरकरि मंडक नामा ग्राम तहां त्रिपदनामा धीवर ताके मंडकीनामा भार्या ताके पूतिगंधानामा पुत्री भई ॥ ३४ ॥ याके ऐसा पापका उदय जो माताने हू न पाली अर दादीने वृद्धिकूं प्राप्तकरी याका ऐसा दुर्गंध शरीर जो याही याके घरमें न राखैं सो कुटी बांधि नदीके तीर रहै एकदिन नदीके तीर समाधिगुप्तिनामा मुनि आय विराजे वे महा दयावान तिनि याही संबोधी अर याके पूर्वभव कहे अर धर्मका श्रवण कराय श्राविकाके व्रत दिये ॥३६॥ तब यह कीरकी कन्या उपारकनामा नगर गई तहां आर्यिकानिकी संगति भई तिनके साथ राजगृहीनामा नगरी गई अर याने आचाम्लवर्द्धननामा तप किया अर वहां मुनीनिके निर्वाणक्षेत्र हैं तहां सिद्धशिलाकूं वंदकरि नील गुफाविषैं सन्यास धारि यह महा सती प्राण त्यागि अच्युतेन्द्रके गगन वल्लभानामा महादेवी भइ तहां पचपन पल्यकी आयु भई तहांसूं चयकरि कुंडनपुरविषैं राजा भीष्म ताके रानी श्रीमती ताके तू रुक्मणीनामा पुत्री भई पीछे वासुदेवकी पटरानी अब या भवविषैं आर्यिकाके व्रतधरि स्त्रीलिंग छेद उत्कृष्ट देव होयगी तहांसूं चयकरि मनुष्य होय मुनिव्रत धरि मोक्ष पावैगी ॥ ४१ ॥ यह कथा भीष्मकी पुत्री सुनिकरि आपकूं शीघ्रही मुक्तिकी प्राप्ति जानि प्रभुकूं प्रणाम करती भई कैसी है भीष्मकी पुत्री भीष्म कहिये महा भयंकर जो संसार बन ताके भ्रमणसूं भयभीत है बहुरि जांबुवती वासुदेवकी तीसरी पटराणी जिनराजसूं अपने भव पूछती भई सो भगवान कहै हैं अर जांबुवती सुनै है अर सकल भव्य सुनै हैं वे भव्य संसारसूं विरक्त हैं या जंबूद्वीपविषैं पूर्वविदेह यहां पुष्यकलावती देशविषैं वीतशोकानामा नगरी ताविषैं देवलनामा एक बडा गृहस्थ ताके देवमतीनामा स्त्री ताके यशस्विनी नामा पुत्री ॥४४॥ सो सुमतिनामा गृहस्थकूं परणाई सो वह मूवा तब यह अति दुखरूप भई तब एक जिनदासनामा जिनधर्मी तानैं संबोधी परंतु अज्ञानके

उदय सम्यक्त न पाया दान अर उपवासको विधिकरि मरी सो नंदनवनविषैं अंतरनामा देवके मेरुनंदननामा देवी भई वाकी तीसहजार वर्षकी आयु भई देवपर्यायके सुख भोगि तहांसूं चयकरि संसारबनमें बहुत भ्रमी ॥ ४८ ॥ बहुरि या जंबूद्वीपके ऐरावतक्षेत्रविषै विजयपुरनामा नगर ता विषै राजा बंधुषेण ताके रानी बुद्धिमती तिनके बंधुयशानामा पुत्री भई सो कुमारीही श्रीमती नामा आर्यिकाके समीप जिनदेवका धर्म आराधि प्रोषधव्रतकरि देह तजि कुवेरके स्वयंप्रभानामा स्त्री भई सो तहांसूं चयकरि पुंडरीकणीनामा पुरीविषैं जंबूद्वीपके पूर्वविदेहमें बज्रमुष्टीके सुभद्रानामा स्त्री ताके सुमतिनामा पुत्री भई सो सुंदरीनामा आर्यिकाके निकट रत्नावली नामा तप किया ॥ ५२ ॥ अर समाधिमरणकरि पांचवें स्वर्ग ब्रह्मेंद्रके इंद्राणी भई । जाकी तेरह पल्यकी आयु भई तहांतैं चयकरि भरतक्षेत्रके विजयार्द्धकी दक्षिणश्रेणीविषैं जांबवनामा नगर ता विषैं जांबवनामा विद्याधर ताके रानी जांबवती तिनके तू जांबुवतीनामा पुत्री भई । नारायणकी पटरानी अब आर्यिकाके व्रत धरि कल्पवासी देव होयकरि बहुरि मध्यलोकविषै राजपुत्र होय तपकरि लोकशिखर जायगी ॥ ५५ ॥ यह कथा सुनि वह शीलरूप आभूषणकी धरणहारी परमेश्वरकूं प्रणामकरि बैठी आपका संसारसूं निस्तार जानि अति हर्षित भई ॥ ५६ ॥ बहुरि वासुदेवकी चौथी पटराणी सुसीमा विनयकरि सर्वज्ञदेवकूं अपने पूर्वभव पूछती भई सो प्रभु सकल सभाके प्राणीनिके मनकूं आल्हादकी उपजावनहारी जो दिव्यध्वनि ताकरि कहते भये । धातकीखण्डनामा द्वीप ता विषै दोय मेरु तिनमें पहले मेरु संबंधी पूर्व विदेह तहां मंगलावतीनामा देश ता विषैं रत्नसंचयनामा नगर ॥ ५८ ॥ तहां राजा विश्वसेन ताके अनुद्धरीनामा राणी अर राजाका मंत्री सुमति सो प्रसिद्ध परमश्रावक ॥ ५९ ॥ एकसमय यह राजा विश्वसेन अनुद्धरीका धनी युद्धविषैं अयोध्याके राजा पद्मसेनने मार्या सो रानी अनुद्धरी अति दुःखित भई सो सुमतिनामा मंत्रीने संबोधी ॥ ६० ॥ परंतु मिथ्यात्वके उदय सम्यक्त्व धारि न सकी बाह्य सुभक्रियाकरि जंबूद्वीपका विजयनामा द्वार ताका अधिष्ठाता विजयनामा देव ताके ज्वलनवेगानामा देवी भई ॥ ६१ ॥

ताकी दशहजार वर्षकी आयु भई बहुरि चिरकाल संसार भ्रमणकरि जंबूद्वीपके विदेहविषैं सीतानदीके दक्षिण तटविषैं एक शालिग्रामनामा रमणीक गांव जहां महा धनवान एक यक्षलनामा गृहस्थ ताके देवसेनानामा स्त्री ताके यज्ञदेवीनामा पुत्री भई यक्षनिके आराधनसूं याका यक्षदेवी नाम धर्‍या सो यह यक्षनिकी पूजाके अर्थ वनविषैं गईहुती सो धर्मसेननामा मुनिकें निकट धर्मका श्रवण किया ॥ ६५ ॥ अर जिनधर्मकी क्रिया आदरी अर मुनीनिकूं भक्तिकरि दान दिये । अर यह व्रत लिया जो मुनि आर्यिकानिकूं भोजन देयकरि मैं भोजन करूं ॥६६॥ सो दानके प्रभावकरि यानैं पुण्यका बंधकिया एकदिन यह अपनी सखीनि सहित विपुलाचलनामा पर्वत तहां क्रीडाकूं गई हुती सो अकालवृष्टि भई ताकरि पीडित होय यानैं गुफामें प्रवेश किया सो सिंहने भखी सो मरकरि हरिनामा वर्षक्षेत्र मध्यभोगभूमि तहां उपजी अर दोय पल्यकी आयु भई तहांसूं ज्योतिषी देवनिके देवी भई तहां एकपल्यकी आयु भई तहांसूं चयकरि जंबूद्वीपके विदेहविषै पुष्कलावती नामा देश तहां वीतशोकनामा नगरीके अशोकनामा राजा ताके श्रीमतीनामा राणी ताके श्रीकांतानामा पुत्री भई सो जिनदत्तानामा आर्यिकाके समीप कुंवारी आर्यिका भई अर रत्नावलीनामा तपकरि चौथे स्वर्ग माहेंद्रनामा इंद्रके इंद्राणी भई वाकी ग्यारह पल्य आयु भई तहां स्वर्ग सुख भोगे तहांसूं चई सो सराष्ट्र नामा देशविषैं राजा राष्ट्रवर्द्धन ताके रानी सुज्येष्ठा ताके तू सुसीमा नामा पुत्री भई अब तू अर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि देव होयगी तहांसूं चयकरि ॥ ७२ ॥ गिरनगरविषै मनुष्य होय मोक्ष जायगी यह अपने भव जिनस्वामीके मुख सुसीमा सुनिकरि आपकूं कृतार्थ मानती भई प्रभुकूं प्रणामकरि स्त्रीनिकी सभामें बैठी बहुरि कृष्णकी पाचवीं पटरानी लक्ष्मणा तीर्थेश्वरकूं नमस्कारकरि अपने भव पूछती भई तब भगवान सब जीवनिके हितू कहते भए या जम्बूद्वीपविषै विदेहक्षेत्र तहां कच्छकावती देशमें सीतानदीके उत्तर तट विषै अरिष्टपुरनामा नगर तहां राजा वासव सो वासव कहिए इंद्रसमान विभूतिका धारक ताके सुमित्रा नामा रानी सो पतिके लार सहस्राम्र नामा वनविषैं सागरसेन नामा मुनिके दर्शनकूं गई ॥ ७७ ॥ तहां राजा वासव

गुरुपर धर्मश्रवणकरि अपने वसुसेननामा पुत्रकूं राज्यदेय मुनि भया अर रानी सुमित्रा पुत्रके मोहसूं आर्यिका न भई घरमें रही ॥ ७८ ॥ बहुरि पुत्रका भी वियोग भया सो यह महा दुःख शोककरि मूई सो भीलनी भई तहां भीलनीकी पर्यायमें नन्दिभद्र नामा चारणमुनि अवधिज्ञानी तिनका दर्शन भया अपने पूर्वभव मुनिके मुख सुनि करि वाहि जातिस्मरण भया अर तीन दिनका अनशन धरि देहतजि व्यंतर देवनिसे गंधर्वजातिमें नारद तुंवरू इत्यादि भेद हैं तिनमें नारद जातिके देवनिविषै यह मेघमालिनीनामा देवी भई तहांसूं चयकरि या भरतक्षेत्र विषैं विजयार्द्धकी दक्षिणश्रेणीमें चंदनपुरनामा नगर तहां महेन्द्र नामा राजा ताके रानी अनुद्धरी ताके यह कनकमाला नामा पुत्री भई सो महेन्द्र नगरका राजा हरिवाहन विद्याधर याने स्वयंवरविषै वरया ताके यह अति वल्लभा भई एक दिन जिनपूजाके अर्थि यह सिद्धकूट चैत्यालय गई तहां चारणमुनिके मुख धर्म श्रवणकरि मुक्तावली नामा तप आदरया अर समाधिमरणकरि तीजे स्वर्ग सनत्कुमार इंद्रके इंद्राणी भई वाकी नव पल्यकी आयु भई स्वर्गके सुख भोगि तहांतैं चई ॥८५॥ सो तू राजा श्लक्षणरोमके रानी कुवेरमति ताके उदरसूं सुलक्षणानामा पुत्री भई अर कृष्ण वासुदेवके पटरानी भई अब आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होयगी तहां सूं चय मनुष्य होय मुक्ति जावेगी ॥८६॥ यह अपने भव लक्ष्मणा सुनिकरि प्रभुकूं प्रणाम करती भई वहुरि गांधारीनामा कृष्णकी छठी पटरानी अपने पूर्वभव जिनेंद्रकूं पूछती भई सो प्रभु दिव्यध्वनिकरि कहते भए कौशल देशविषैं अयोध्या नगरी तहां राजा रुद्रदत्त ताके पटरानी विनयश्री सो पति सहित सिद्धार्थ वनविषै श्रीधरमुनिकूं दान दिया सो दानके प्रभावकरि उत्तरकुरु भोगिभूमिविषैं उपजी तहांतैं चयकरि चंद्रमाके देवी भई ताकी आयु पल्यके आठवें भाग भयी ॥ ८९ ॥ तहांसूं चयकरि विजयार्द्धकी उत्तरश्रेणीविषैं गगनवल्लभनामा नगर तहां राजा विद्युद्वेगके रानी विद्युन्मति ताके महाक्रांतिकी धारक विनयश्रीनामा पुत्री भई सो नित्यालोकपुरका राजा महेंद्रविक्रम ताकूं परणाई ॥९१॥ कैयक दिनमें राजा महेन्द्रविक्रम चारणमुनीनिके मुख धर्म श्रवणकरि मंदराचल

परि मुनिव्रत धारे अर अपने हरिवाहनपुत्रकूं राज्य दिया ॥ ९२ ॥ अर रानी विनयश्री आर्यका होय सर्वतोभद्र नामा तप किया अर समाधिमरणकरि पहिले स्वर्ग सौधर्म इन्द्रके वल्लभा भई ताका आयु पांच पल्यकी भई ॥ ९३ ॥ तहांसूं चयकरि गांधारनामादेशविषैं पुष्पकलावतीनामा पुरी तहां राजा इंद्रगिरि ताके रानी मेरुमती ताके गांधारीनामा पुत्री भई ॥ ९४ ॥ सो कृष्णके पटराणी पद पाया अब आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय बहुरि नरभव पाय निरंजन पद पावैगी यह कथा सुनकरि गांधारी आनंदकूं प्राप्त भई बहुरि हरिकी सातवीं पटराणी गौरी भगवानसूं अपने भव पूछती भई सो प्रभु कहै हैं ॥ ९५ ॥ एक ईभ्यपुरनामा नगर तहां धनदेवनामा सेठ ताके यशस्विनीनामा कामिनी सो एक दिन अपने मंदिरमें तिष्ठती हुती सो आकाश विषै दोय चारण मुनिकूं देखकरि अपने पूर्वभव स्मरण करती भई जो मैं धातकीखंडनामा द्वीपविषैं पूर्वमेरुके पश्चिम विदेहविषै नंदशोकपुरमें आनंद श्रेष्ठीके स्त्रीहुती सो अमितसागर नामा मुनिकूं पति सहित मैं दान दिया हुता सो हमारे घरमें देवोंने पंचाश्चर्य किये बहुरि मैं भर्त्तार सहित वर्षाका जल पिया सो विषसहित हुता ताकरि प्राण तजि दानके प्रभावकरि देवकुरुभोगभूमिविषैं उपजा तहांसूं दूजे स्वर्ग ईशानइंद्रके देवी भई तहांसूं चयकरि मैं धनदेव सेठकी स्त्री यशस्विनी भंइ या भांति अपने पूर्वभव यशस्विनी जानकर संसारतैं विरक्त भई ॥ १०० ॥ सुभद्रनामा मुनिकूं नमस्कारकरि प्रोषधव्रत ग्रहे बहुरि कैयक दिनमें समाधिमरणकरि सौधर्मके इंद्राणी भई पांच पल्यकी आयु भई ॥ १ ॥ तहांतैं चयकरि कौसांबीनामा नगरीविषै सुभद्रनामा सेठके सुमित्रानामा स्त्री ताके धर्ममतिनामा पुत्री भई धर्मविषै है बुद्धि जाकी ॥ २ ॥ सो जिनमति आर्यिकाके निकट तपधरि जिनेंद्रगुण सम्पतिनामा व्रत करि दशवें स्वर्ग महाशुक्र नामा इंद्रके वल्लभा भई तहां इकीस पल्यकी आयुभोग चई सो राजा मेरुचन्द्रके रानी चन्द्रमती ताके तू गौरीनामा पुत्री भई सो नारायणके घर पटरानी पद पाया ॥ ४ ॥ अब आर्यकाके व्रतधारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषै देव होय बहुरि नरभव पाय सिद्धपद पावेगी यह कथा सुनिकरि गौरी हर्षित

भई बहुरि आठवीं पटरानी पद्मावती अपने भव परमेश्वरकूं पूछती भई सो कहैं हैं ॥ ५ ॥ याही भरतक्षेत्रविषैं उज्जयनी नगरीमें राजा अपराजित ताके रानी विजया ताके पुत्री विमलश्री सो हस्तिशीर्षनामा नगरके राजा हरिषेणकूं परणाई सो अपने पतिसहित वरदत्तनामा मुनिकूं आहारदान दिया एक समय यह पति सहित भीतरके घरमें पौढी हुती सो कृष्णागर धूपकी धूंवांकरि मूई सो दानके प्रभावतैं जघन्यभोगभूमि जो हिमवंतक्षेत्र है ता विषै उपजी एक पल्यकी आयु भई तहांतैं चंद्रमाके चन्द्रप्रभानामा देवी भई ताके आठवेंभाग आयु भई ॥ ९ ॥ तहांसूं चयकरि मगधदेशविषैं एक शाल्मली खंडनामा ग्राम तहां जयदेवनामा गृहस्थ ताके देवलानामा स्त्री ताके पद्मदेवीनामा पुत्री भई सो धर्मनामा आचार्यके मुख धर्म श्रवणकरि याने यह व्रतलिया जो मैं यावज्जीव अनजाना फल न भखूं ॥११॥ एक समय चंडबाणनामा भील ताने अकस्मात् गांव घेरया अर गांवके नर नारी सब बंदीमें पकडे ९ह पद्मदेवी अति रूपवान सो पापी भील याहि भार्या करना विचारया परंतु यह महा शीलवंती याके वश न भई अपने व्रतमें दृढ रही ॥ १३ ॥ काहू समय या भीलकूं राजगृह नगरके राजा सिंहरथने मारया सो याकी प्रजा वन विषैं भ्रमती भई अर ये बंदिके नर नारी हू भ्रमते भए मार्ग भूलि गए हैं सो क्षुधा तृषाकरि पीडित मूढजन विना जानें विषफल खायकरि मूवे अर यह पद्मदेवी व्रतवान यातैं अनजाणे फल न भखे अर अनशनकरि शरीर तज्या सो हेमवंत क्षेत्र जघन्य भोगभूमि तहां उपजी अर एक पल्यकी आयु भई सो आयु पूर्ण करि स्वयंभूरमण नामा अंतका द्वीप तामें सूर्यप्रभनामा गिरि ताका अधिपति स्वयंप्रभनामा देव ताके स्वयंप्रभा नामा देवी भई सो तहांसूं चयकरि या भरतक्षेत्रविषै जयंतनामा नगर ताका राजा श्रीधर ताके राणी श्रीमती तिनके विमलश्री नामा पुत्री भई सो भद्रिलपुरके राजा मेघनादकूं परणाई ताके मेघघोषनामा पुत्र भया सो पृथिवीविषै प्रसिद्ध कैयक दिनमें राजा मेघनाद स्वर्ग प्राप्त भया तब यह रानी विमलश्री पद्मावती नामा आर्यिकाके निकट व्रत धारि आचम्लवर्द्धन नामा तपकरि बारहवें स्वर्ग सहस्रार नामा इंद्रके इंद्राणी भई जाकी आयु सत्ताईस पल्य भई ॥ २१ ॥

सो स्वर्गके सुख भोगि तहांसूं चयी सो अरिष्टपुरनगरका, राजा स्वर्णनाभ ताके श्रीमतीनामा राणी तिनके तू पद्मावतीनामा पुत्री भई सो कृष्ण परण्या तोहि पटरानीका पद दिया ॥२२॥ अब आर्यिकाके व्रतधारि महातपकरि स्त्री लिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय बहुरि नरभव पाय मुनिव्रत धारि निराकारपद पावैगी यह कथा पद्मावती सुनि करि अति प्रसन्न भई मानूं मुक्तिही पाई ॥ २३ ॥ या भांति भूधरकी आठों पटरानीके भव भगवान कहे बहुरि बलभद्रकी माता रोहिणी अर केशवकी माता देवकी यह दोऊ अर अन्य यादव अपने २ भव भगवानकूं पूछिकरि धर्मविषे आरूढ भए संसारभ्रमणका उपज्या है भय जिनके ॥ २४ ॥ सुर असुर नर अर यादव राजेश्वर सब ही जिनेन्द्रकूं नमस्कार करि स्तुति करि अपने स्थानक जाय हैं अर पूजाके वास्ते बारंवार आवैं हैं ॥२५॥ बहुरि भगवान नेमीश्वर भव्यजीवनिके कल्याणके वास्ते गिरनारसूं देशान्तरकूं विहार किया सूर्यका विहार जगतके कल्याणके वास्ते है तैसे जिनराजका विहार जगत जीवनिके कल्याणके वास्ते है ॥ २६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वासुदेवअष्टपटराणीभावांतरवर्णनो नाम नवपंचाशत् सर्गः ॥ ५९ ॥

अथानंतर—कृष्णकी माता देवकीके गजकुमार नामा पुत्र भए सो गजकुमार वसुदेव समान रूपवान अर वासुदेवके मनके प्रिय ॥ २७ ॥ सो बाल्यअवस्थातैं योवनअवस्थाकूं प्राप्त भए सो स्त्रीजनोंके मनकूं हरणहारी है कांति जिनकी जब राजकुमार तरुण भए तब वासुदेव या भाईके परणायवे वास्ते अनेक राजानिकी पुत्री याचीं अर एक सोमशर्मानामा विप्र ताके क्षत्रियानामा स्त्री ताके सोमानामा पुत्री सो अति रूपवान सो वासूं गिरधारीने गजकुमारका विवाह आरंभ्या सो सबही यादव हर्षित भए वाहीसमय जगतके स्वामी जिनराज बहुरि गिरनारपर पधारे तब सबही यादव महामंगलसहित जिनेश्वरके दर्शनकूं चाले ॥ ३१ ॥ तब गजकुमार इनकूं जाते देखकरि किसी खोजेकूं पूछी यह उत्साह किसका है तब खोजेकूं आदिसूं लेयकरि नेमिजिनेश्वरकी सब वार्ता

कही खोजा महा जिनधर्मी विवेकी ताके कहेतैं गजकुमार जानी जो श्रीनेमिकुमार बाईसवें तीर्थंकर जगतके तारक हमारे वंशरूप आकाशविषै सूर्यसमान प्रगटे हैं तिनके दर्शनकूं सब जाय हैं वे मेरे बाबाके पुत्र हैं अर जगतके नाथ हैं ऐसा जानि गजकुमारहू जिनवरकी वंदनाकूं गया सूर्यके रथके समान रथ तापर चढ्या हर्षके रोमांच धरे समवसरणमें गया तहां भगवान अरहंतदेव महालक्ष्मीकरि मंडित बारह सभासहित विराजे हुते तिनकूं नमस्कारकरि गजकुमार चक्रपाणिके समीप मनुष्यनिकी सभामें बैठ्या तहां भगवान सुरनरअसुर तिनकूं संसारके तिरिवेका उपाय रत्नत्रयरूपधर्म ताका निरूपण करते हुते ॥ ३५ ॥ तासमय जिनेंद्रकूं प्रणामकरि कृष्ण अति विनयसंयुक्त अपने अर और भव्य जीवनिके कल्याणके वास्ते पूछे हैं, हे ईश ! हे नाथ ! हे कृपानिधे ! या भरतक्षेत्रके वर्तमान कालके सबही तीर्थेश्वर अर चक्रेश्वर अर अर्द्धचक्रेश्वर अर बलभद्र अर प्रतिनारायण तिन सबनिकी कथा विशेषताकरि मोहि कहो यह प्रश्न केशवने किया तब जिनेश्वर सबनिकी उत्पत्ति कृष्णकूं कहते भए हे भव्योत्तम ! त्रिषष्ठिशलाकाके पुण्य पुरुषनिकी उत्पत्ति मैं तोहि कहूं हूं सो तू सुनि। पहले तीर्थनाथ ऋषभनाथ १ अजित २ संभव ३ अभिनंदन ४ सुमति ५ पद्मप्रभु ६ सुपार्श्व ७ चंद्रप्रभ ८ पुष्पदंत ९ शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमलनाथ १३, अनंत १४, धर्म १५, शांति १६, कुंथु १७, अरः १८, मल्लि १९, तीन शल्यके नाशकरणहारे अर मुनीनिके इंद्र मुनिसुव्रत ॥ २० ॥ अर नमिनाथ २१, इक्कीस तीर्थंकर तौ मुक्ति होय चुके अर बाईसवां मैं नेमिनाथ २२, अर तेइसवां पार्श्वनाथ २३ अर चौबीसवां महावीर यह दोय होनहार हैं यह चौबीस तीर्थंकरनिके नाम कहे सो इन चौबीसमें आठ तो पूर्वभवविषैं जम्बूद्वीपके विदेहके अर पांच पूर्वभवविषैं भरतक्षेत्रके अर सात धातकीखंडद्वीपके अर चार पुष्करार्द्धद्वीपके ॥ ४३ ॥ अर पूर्वभवकी इनकी नगरीके नाम कहे हैं ऋषभनाथ अर शांतिनाथ इनकी पूर्वजन्मकी पुंडरीकणीनामा पुरी अर अजितनाथकी पूर्वजन्मकी सुसीमानामा पुरी बहुरि अरःनाथकी पूर्वजन्मकी क्षेमपुरी अर कुंथुनाथ संभवनाथ अभिनंदन इनकी पूर्वजन्मकी

रत्नसंचयनामा पुरी अर मल्लिनाथकी पूर्वजन्मकी बीतशोका नामा पुरी इन आठ तीर्थंकरनिकी पूर्वभवकी पुरी जंबूद्वीपके विदेहकी जानो अर मुनिसुव्रतनाथकी पूर्वभवकी यह भरतक्षेत्रकी चंपा नामा नगरी और नमिनाथके पूर्वभवकी कौशांबी नामा पुरी अर नेमिनाथके पूर्वभवकी पुरी हस्तिनापुरी अर पार्श्वनाथकी पूर्वजन्मकी अयोध्यानामा पुरी अर महावीरकी पूर्वजन्मकी छत्राकारनामा पुरी यह पांच पुरी भरतक्षेत्रके पुर जानो ॥४६॥ अर सुमतिनाथकी पूर्वभवकी धातकीखंडद्वीपकी पुंडरीकणीनामा पुरी अर पद्मप्रभकी पूर्वभवकी धातकीखंडनामा द्वीपकी सुसीमानामा नगरी अखंड है लक्ष्मी जाविषैं अर सुपार्श्वनाथकी पूर्वभवकी क्षेमपुरी धातकीखंड द्वीपविषै प्रसिद्ध अर चंद्रप्रभकी पूर्वभवकी रत्नसंचयनामा पुरी सोहू धातकीखंडविषैं है यह तो धातकीखंडके प्रथम मेरुकी विदेह संबंधी जानो अर पुष्पदंतकी तथा शीतलनाथकी अर श्रेयांसनाथकी अर वासुपूज्य इन चारोंकी नगरीनिके वेही नाम पुंडरीकणी सुसीमा क्षेमपुरी अर रत्नसंचय ॥ ४८ ॥ परंतु वे चार धातकीखंड द्वीपकी अर यह चार पुष्कराद्धं द्वीपकी बहुरि धातकीखंडद्वीपविषैं दोय मेरु तिनमैं दूजे मेरु संबंधी दूजा ऐरावतक्षेत्र ताविषैं अरिष्टपुरनामा नगर सो अनंतनाथके पूर्वभवका पुर जानो ॥ ५० ॥ अर धातकीखंडविषै पहला मेरु ता संबंधी तहांका भरतक्षेत्र तहां महापुरनामा नगर सो विमलनाथके पूर्वभवका पुर है अर वाही द्वीपमें अर वाही क्षेत्रमें भद्रिलपुर नामा नगर सो धर्मनाथका पूर्वभवका पुर जानो ॥ ५१ ॥ यह चौबीसों तीर्थंकरके पूर्वभव जन्मके—परजन्मके पुर जानो अर चौवीसों जिनराजके पूर्वभवके नाम कहै हैं। वज्रनाभ १, विमल २, विपुलवाहन ३, महाबल ४ अतिबल ५ अपराजित ६, नंदिषेण ७, पद्म ८, महापद्म ९, अर पद्मगुल्म १०, नलिनगुल्म ११, पद्मोत्तर १२, पद्मासन १३, पद्म १४ दशरथ १५ मेघरथ १६ सिंहरथ १७ धनपति १८ वैश्रवण १९ श्रीधर्मा २०, सिद्धार्थ २१, सुप्रतिष्ठ २२, आनंद २३ नंदन २४ यह चौबीस पूर्व जन्मके नाम कहे तिनमें सुप्रतिष्ठ मेरा नाम हुता मैं सुप्रतिष्ठके भवतैं चयकरि जयंतनामा विमाणविषैं गया तहांसूं चयकरि नेमिनाथ भया ॥ ५६ ॥ अर पहिला जिनवर ऋषभ सो तो

पूर्वभवविषैं महा मंडलेश्वर राजा हुते अर ग्यारह अंगके पाठी हुते अर पूर्वनिविषै हू प्रबोध हुता अर कनक समान प्रभाके धारक हुते अर सबही पूर्वभवविषैं सिंहनिःक्रीडतादि तपोंके करणहारे अर एक मास मात्र प्रायोपगमन सन्यासके धरणहारे अर सबही यथायोग्य स्वर्गलोक गए तहांसूं चयकरि तीर्थेश्वर भए ॥ ५८ ॥ अर इनके पूर्व भवनिके दीक्षादायक गुरु तिनके नाम सुनो । वज्रसेन १, अरिंदम २ स्वयंप्रभ ३, विमलवाहन ४, सीमंधर ५, पिहताश्रव ६, आरिंदव ७, युगंधर ९, सर्वजनानंद ९, उभयानंद १०, वज्रदत्त ११, वज्रनाभि १२, सर्वगुप्त १३, त्रिगुप्त १४ चिंत्तारक्ष १५ विमलवाहन १६ धनरथ १७ संवर १८ वरधर्म १९ सुनंद २० आनंद २१ वीतशोक २२ दामर २३ प्रोष्ठल २४ ये चौवीस पूर्वभवके इनके दीक्षागुरु ये सबही वंदिवे योग्य स्तुति करिवे योग्य निर्मल आचारके धारक संवरकरि शोभित मोक्षके मूल जानहु ॥ ६४ ॥

अथानन्तर—चौबीसों तीर्थंकर जिस जिस धामसूं आये सो सुनो आदिनाथ धर्मनाथ शांतिनाथ कुंथुनाथ ये चार जिनराज तो सर्वार्थसिद्धिसूं आये अर अभिनंदन स्वामी विजयनामा विमाणसे आये ॥ ६५ ॥ अर चंद्रप्रभ अर सुमतिनाथ यह दोऊ वैजयंत विमाणसूं आये, अर नमिनाथ अर मल्लिनाथ यह दोऊ अपराजितनामा विमाणसूं आये यह पंचानुत्तरके आये कहे । अर पुष्पदंत पंद्रहवें आरणनामा स्वर्ग तहांतैं आये अर शीतलनाथ अच्युतनामा सोलहवां स्वर्ग तहांके पुष्पोत्तरनामा विमाणतैं आये अर श्रेयांसनाथ अर अनंतनाथ अर महावीर यह बारहवें सहस्रारनामा स्वर्ग तहांतैं आये ॥ ६७ ॥ अर विमलनाथ अर पार्श्वनाथ अर मुनिसुव्रत अर संभवनाथ सुपार्श्वनाथ पद्मप्रभु यह ग्रैवेयकतैं आये हैं तिनमें अधोग्रीव मध्यग्रीव उपरिमग्रीव जाननी अर वासुपूज्यस्वामी महाशुक्रनामा दसवां देवलोक तहांतैं आये ॥ ६९ ॥ ये तीर्थंकरनिके आवनेके स्वर्ग बताये अब चौवीस तीर्थंकरोंके जन्मके दिवस कहै हैं ऋषभदेवका जन्म चैत्रवदी नवमी अर अजितका माघ सुदी दशमी अर संभवनाथका मार्गशीर्षसुदी पूर्णमासी अर अभिनंदनका माघसुदी बारस अर सुमतिनाथका श्रावणसुदी ग्यारस अर पद्मप्रभका कार्तिकबदी

तेरस अर सुपार्श्वनाथका जेठ सुदी बारस अर चंद्रप्रभका पोषबदी ग्यारस अर पुष्पदंतका मार्गशीर्ष सुदी पडवा अर शीतलनाथका माह बदी तेरस ॥ ७४ ॥ अर श्रेयांसनाथका फागुणबदी ग्यारस अर वासपूज्यका फागुणवदी चौदश अर विमलनाथका माह सुदी चौदस अर अनंतनाथका जेठबदी बारस अर धर्मनाथका माह सुदी तेरस अर शांतिनाथका जेठबदी चौदश अर कुंथुनाथका वैशाखसुदी पडवा अर अरनाथका मार्गशीर्षसुदी चौदश अर मल्लि-नाथका मार्गशीर्षसुदी ग्यारस अर मुनिसुव्रतका आसोजसुदी बारस ॥ ७९ ॥ अर नमिनाथका आषाढबदी दशमी अर नेमिनाथका वैशाखसुदी तेरस अर पार्श्वनाथका पौषवदी ग्यारस अर महावीरका चैत्रसुदी तेरस ॥८१॥ ये सब ही तीर्थेश्वर धर्मतीर्थके नायक अर अनंतवीर्यके धारक हैं अर महा निर्मल स्वरूप हैं शांतिके कर्त्ता हैं आतापके हर्त्ता हैं इनकी महिमा केवलज्ञान ही गम्य है ये सब समान हैं कालके योगकरि आयुकी अर कायकी लघुता अर दीर्घता है अर किसी प्रकार लघुता दीर्घता नाहीं है यह तीर्थंकरोंके जन्मके दिन कहे अर आगे इनके माता पिताके नाम अर जन्मक्षेत्र अर जन्मभूमि अर जिनवृक्षोंके नीचे दीक्षा धारी ते वृक्ष अर निर्वाणभूमि कहैं हैं सो तू सुनि याभांति केशवकूं नेमिजिनेंद्र कहते भए अर राजा श्रेणिकतैं गौतमस्वामी कहते भए ऋषभदेवके पिता नाभि माता मरु-देवी अर जन्मनक्षत्र उत्तराषाढ अर जन्मभूमि अयोध्या अर दीक्षा धरिवेका वृक्ष बड अर निर्वाणभूमि कैलाश अर अजितका पिता राजा जितशत्रु माता विजया जन्मनक्षत्र रोहिणी जन्मभूमि अयोध्या अर दीक्षाव्रत सप्त-च्छद अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ॥ ८४ ॥ अर संभवनाथका पिता राजा जितारि अर माता सेनाराणी अर जन्मका ज्येष्ठा नक्षत्र अर जन्मपुरी श्रावस्ती अर दीक्षाका सालवृक्ष अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ये तीर्थंकरोंके माता पितादिक तिहारी रक्षा करो अर तुमको आनंदके अर्थी होहु अर अभिनंदनका पिता राजा संवर अर माता सिद्धार्था पुरी अयोध्या अर जन्मका पुनर्वसु नक्षत्र अर सरल जातिका दीक्षावृक्ष अर निर्वाणभूमि सम्मेद-शिखर अर सुमतिनाथका पिता राजा मेघप्रभ अर सुमंगला नामा जननी अर जन्मनक्षत्र मघा अर जन्मपुरी

अयोध्या अर दीक्षावृक्ष प्रियंगु अर निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर। वे भगवान सुमतिनाथ तोहि सुमति देहु अर पद्मप्रभका पिता राजा धरण माता राणी सुसीमा अर जन्म नक्षत्र चित्रा अर जन्मपुरी कौशांवी अर दीक्षावृक्ष प्रियंगु अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥८८॥ भगवान पद्मप्रभु तुझे मंगलके दाता होवो अर सुपार्श्वनाथका पिता राजा सुप्रतिष्ठ माता राणी पृथिवी अर जन्मनक्षत्र विशाखा अर जन्मपुरी काशी अर दीक्षावृक्ष सिरीष अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ॥ ८९ ॥ अर चन्द्रप्रभका पिता राजा महासेन अर माता लक्ष्मणा जन्मभूमि चंद्रपुरी जन्मनक्षत्र अनुराधा अर दीक्षातरु नागवृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥९०॥ अर पुष्पदंतका पिता राजा सुग्रीव अर माता रानीरामा अर जन्मनक्षत्र मूल जन्मपुरी काकंदी अर दीक्षातरु शालिवृक्ष अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ऐसे पुष्पदंत तुझे परमपदके दाता होहु ॥ ९१ ॥ अर शीतलनाथका पिता राजा दृढरथ अर माता रानी सुनन्दा अर जन्मपुरी भद्रला जन्मनक्षत्र पूर्वाषाढ अर दीक्षाका पलासवृक्ष अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥ ९२ ॥ अर श्रेयांसका पिता राजा विष्णु अर माता विष्णुश्री अर जन्मनक्षत्र श्रवण अर जन्मभूमि सिंहनादपुर अर दीक्षावृक्ष तिन्दुक अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह श्रेयांसनाथ तुझे कल्याणके कर्त्ता होवो ॥ ९३ ॥ अर वासुपूज्यका पिता राजा वसुपूज्य अर माता राणी पटला अर जन्मनक्षत्र सतभिषा अर जन्मपुरी चंपापुर अर दीक्षा वृक्ष जयांभ्रीप अर निर्वाणभूमि चंपापुरीही जानो ॥ ९४ ॥ अर विमलनाथका पिता राजा कृतवर्मा अर माता राणी शर्मा अर जन्मनक्षत्र उत्तरा भाद्रपद अर जन्मपुरी कांपिल्य अर दीक्षाका जम्बूवृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह भगवान विमल तुझे निर्मल करो अर तेरी शल्य हरो ॥ ९५ ॥ अर अनन्तनाथका पिता राजा सिंहसेन अर जननी सर्वयशा अर जन्मपुरी अयोध्या अर जन्म नक्षत्र रेवती अर दीक्षावृक्ष पीपल अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर वह भगवान अनन्त तुम भव्यजीवोंको अन्तरहित करो ॥ ९६ ॥ अर धर्मनाथका पिता राजा भानु अर माता राणीसुव्रता अर जन्मनक्षत्र पुष्य अर जन्मभूमि रत्नपुर अर दीक्षावृक्ष दधिपर्ण अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेद-

शिखर ऐसे धर्मनाथ तुम भव्यजीवोंको धर्मके दाता होवो ॥ ९७ ॥ अर शान्तिनाथका पिता राजा विश्वसेन अर माता राणी ऐरा अर जन्म नक्षत्र भरणी अर जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष नन्दी अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ते शांतिजिनेश्वर तुमकूं परमशांतिके कर्ता होवो ॥ ९८ ॥ अर कुंथुनाथका पिता राजा सूर्य अर माता श्रीमति अर जन्मनक्षत्र कृतिका अर जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष तिलकतरु अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ते कुंथुजिनेश्वर तिहारे दोष निवारो बहुरि अरनाथका पिता सुदर्शन अर माता सुमित्रा अर जन्म नक्षत्र रोहिणी जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष आम्र अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह अरनाथ स्वामी तिहारे अशुभकर्म निवारो ॥ १०० ॥ अर मल्लिनाथका पिता राजा कुंभ अर माता रानी रक्षिता अर जन्म नक्षत्र अश्विनी अर जन्मभूमि मिथिलापुरी दीक्षावृक्ष अशोक अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर वे भगवान मल्लि तिहारे रागादिक मल हरो अर मुनिसुव्रतनाथका पिता सुमित्र अर माता राणी पद्मावती अर जन्म-नक्षत्र श्रवण अर जन्मभूमि कुशाग्रपुर अर दीक्षावृक्ष चंपक अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर वह भगवान मुनि-सुव्रत तुमकूं परम आनंदके दायक होवो अर नेमिनाथका पिता राजा विजय अर माता राणी वप्रा अर जन्म नक्षत्र अश्वनी अर जन्मपुरी मिथिला अर दीक्षावृक्ष मौलसरी अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर वे भगवान नेमिनाथ तिहारे अशुद्धभाव हरो, क्रोध मान माया लोभकी निवृति करो ॥ ३ ॥ अर नेमिनाथका पिता राजा समुद्रविजय माता शिवदेवी जन्मनक्षत्र चित्रा जन्मभूमि सौर्यपुर अर दीक्षावृक्ष मेषश्रणी अर निर्वाणभूमि गिरनारगिर ॥ ४ ॥ अर पार्श्वनाथका पिता राजा अश्वसेन अर माता राणी वर्मा अर जन्म नक्षत्र विशाखा अर जन्मपुरी बानारसी जाका नाम काशी भी कहै हैं अर दीक्षावृक्ष धव अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर अर महावीरका पिता राजा सिद्धार्थ अर माता प्रियकारिणी अर जन्मनक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी अर जन्मभूमि कुण्डलपुर अर दीक्षाका साल वृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र पावापुर वे भगवान अंतिम तीर्थंकर तिहारे कर्म निवारो अर आनन्द

के कर्ता होवो ॥ ६ ॥ दीक्षा धरनेके वृक्ष हैं तिनको चैतवृक्ष भी कहे हैं सो महावीरके तो यह बत्तीस धनुष ऊंचा है अर अन्य सबोंके देहकी उच्चतासे द्वादश गुणा है ॥७॥ अर निर्वाण गमनके नक्षत्र कहे हैं सुपार्श्वनाथका निर्वाण नक्षत्र अनुराधा अर चंद्रप्रभुका निर्वाणनक्षत्र ज्येष्ठा अर श्रेयांसका धनिष्ठा नक्षत्र अर वासुपुज्यका नक्षत्र अश्विनी विमलनाथका भरणी अर महावीरका स्वाति नक्षत्र अर अन्य सबोंके जन्मनक्षत्रही निर्वाणनक्षत्र जानो यह निर्वाण कल्याणके नक्षत्र कहे अर शांति, कुन्थ, अरह यह तीन तीर्थंकर तो चक्रेश्वरही भए अर अन्य सब तीर्थेश्वर महा मंडलेश्वर भए ॥ १० ॥ अर चन्द्रप्रभ पुष्पदंत यह दोय शुक्लवर्ण भए अर मुनिसुव्रत अर नेमिनाथ यह दोनों अंजनगिरसमान श्याम सुन्दर भए अर पद्मप्रभु कमलके रंग समान अरुण भए अर वासुपुज्य केसलाके पुष्प समान अरुण वर्ण भए अर सुपार्श्वनाथ प्रियंगुमणि समान हरित वर्ण भए अर पार्श्वनाथ मेघघटा समान सुंदर वर्ण भए अर अन्य सोलह सोलह पानीके ताए स्वर्ण समान जानो अर मुनिसुव्रत अर नेमिनाथ ये दोऊ पहले कृष्ण वर्ण कहे तिनमें मुनिसुव्रत तो अंजनगिरि समान श्याम जानो अर नेमनाथ नीलकंठ जो मयूर ताके कंठ समान वर्ण जानो ॥ १४ ॥ अर वासुपुज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर यह पांच तो कुमार कालविषैं मुनि भए इन्होंने विवाह न किया अर राज भी न किया अर अन्य सब राजाभए अर विवाहकिए अर राज तज वैराग्य भए ॥ १५ ॥ अर ऋषभका तप कल्याणक द्वारिकाविषै अर अन्य सबोंका जन्मभूमिविषैं तपकल्याणक जानों ॥ १६ ॥ अर मल्लिनाथ पार्श्वनाथ यह तो दीक्षा लिए पीछे तेले पारनेका नेम करते भए अर वासुपुज्य स्वामी इकन्तरा उपवास धारते भए अर सब वेले पारणे करते भए अर ऋषभ देव प्रथम छै महीने उपवास धारते भए वहुरि छै महीनेका अंतराय भया अर ता पीछे बेले पारणा ही किया अर श्रेयांसनाथ सुमतिनाथ अर मल्लिनाथ यह तीनों पूर्वानुसमय दीक्षा धारते भए अर और सब अपरान्ह कालविषै तप धारते भए ऋषभदेव तो सिद्धार्थ बनविषैं मुनि भए अर महावीर ज्ञातृवनविषैं जिनदीक्षा धारी अर वासुपुज्य क्रीडोद्यान नामा

वनविषै वैराग्य धारा अर धर्मनाथ वप्रका नामा वनविषै विरक्त भए अर पार्श्वनाथ मनोरमा नामा उद्यानविषैं यती भए अर मुनिसुव्रतनाथ नील गुफाके निकट निर्ग्रंथ भए अर और सब तीर्थंकर नगरके निकट सहस्राम्र नामा वनविषैं वीतरागता धारते भए ॥ २१ ॥ अब चौवीसों जिनराजोंको तपकल्याणकी पालकियोंके नाम कहै हैं— सुदर्शना १ सुप्रभा २ सिद्धार्था ३ अर्थसिद्धा ४ अभयंकरी ५ निवृत्तिकरी ६ मनोरमा ७ मनोहरा ८ सूर्यप्रभा ९ शुक्रप्रभा १० विमलप्रभा ११ पुष्पप्रभा १२ देवदत्ता १३ सागरदत्तिका १४ नागदत्ता १५ सिद्धार्थतिथिका १६ विजया १७ वैजयंती १८ जयंती १९ अपराजिता २० उत्तरकुरु २१ देवकुरु २२ विमलाभा २३ चन्द्राभा २४ यह चौवीस जिनवरोंका अनुक्रमतैं चौवीस पालकी जाननी ॥२६॥ अब चौवीसोंकी दीक्षातिथि कहै हैं ऋषभदेवकी चैत्रवदी नवमी अर मुनिसुव्रतका बैशाख बदी नवमी अर कुंथुनाथका वैशाख सुदी पडवा अर सुमतिनाथकी वैशाख सुदी नवमी अर अनंतनाथकी ज्येष्ठवदी बारस अर शांतिनाथकी जेठवदी तेरस अर सुपार्श्वनाथकी ज्येष्ठ सुदी बारस अर नमिनाथकी आषाढ वदी दशमी अर नेमनाथकी सावण सुदी चौथ अर पद्मप्रभकी कार्तिक बदी तेरस अर महावीरकी मार्गशिर बदी दशमी अर पुष्पदंतकी मार्गशिर सुदी पडवा ॥ ३२ ॥ अर अरनाथकी मार्गशिर सुदी दशमी अर सम्भवनाथकी मार्गशिर सुदी पूर्णमासी अर मल्लिनाथकी मार्गशिर सुदी एकादशी अर चन्द्रप्रभ अर पार्श्वनाथ इन दोऊकी पौष वदी एकादशी ॥ ३४ ॥ अर शीतलनाथकी माहवदी द्वादशी अर विमलनाथकी माह सुदी चतुर्थी अर अजितनाथकी माहसुदी नवमी अर अभिनन्दनकी माह सुदी द्वादसी अर धर्मनाथकी माह सुदी त्रयोदशी ॥ ३६ ॥ अर श्रेयांसनाथकी फागुण बदी तेरस अर वासुपूज्य फागुण बदी चौदस ॥ ३७ ॥ ये सबोंकी दीक्षातिथि जानो अर आदिनाथ स्वामी तो दीक्षाधरे पीछे वरसवें दिन पारणाकिया ॥३८॥ अर औरोंने तीजे दिन पारणा किया अर मल्लिनाथ पार्श्वनाथ इन दोऊने तेलापरणा किया अर वासुपूज्य एकन्तरे पारणा किया ऋषभ देव तो पारणाविषै पवित्र इक्षु रस लिया औरनि गायके दूधकी खीरका पारणा किया।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके प्रथम पारणेके पुरोंके अनुक्रतैं नाम कहे हैं इस्तिनापुर १ अयोध्यापुरी २ श्रावस्ती ३ विनीता ४ विजयपुर ५ मंगलपुर ६ पाटलीखंड ७ पद्मखंड ८ श्वेतपुर ९ अरिष्टपुर १० इष्टपुर ११ सिद्धार्थपुर १२ महापुर १३ धान्यपुर १४ वर्द्धमानपुर १५ सौमनसपुर १६ मन्दपुर १७ हस्तिनापुर १८ चक्रपुर १९ मिथलापुर २० राजग्रहपुर २१ द्वारावतीपुर २२ काम्यकृतपुर २३ कुण्डलपुर २४ यह चौबीसों जिनराजके प्रथम पारणाके पुर कहे अब प्रथम पारणा देनहारोंके अनुक्रमतैं नाम कहे हैं सो तुम सुनो राजा श्रेयांस १ बृह्मदत्त २ सुरेंद्रदत्त ३ इन्द्रदत्त ४ पद्मक ५ सोमदत्त ६ महादत्त ७ सोमदेव ८ पुष्पक ९ पुनर्वसु १० सुनंद ११ जय १२ विशाख १३ धर्मसिंघ १४ सुमित्र १५ धर्ममित्र १६ अपराजित १७ नंदिषेण १८ वृषभदत्त १९ दत्त २० सन्मय २१ बरदत्त २२ धन्य २३ वकुल २४ यह चौबीसों प्रथम पारणा देन हारोंके नाम कहे हैं ते महा भव्य हैं इन सबोंके पंचाश्चर्य भये ॥५१॥ सो साढे बारह कोडि अर इतनेही हजार रतन वर्षे ॥५२॥ अर इन चौबीसों प्रथम पारणा देनहारोंमें आदिके दोय तो श्यामसुन्दर अर सब ताये हुये सुवर्ण समान ॥ ५३ ॥ इनमें कईएक तो तद्भव मुक्ति गये अर कईएक तीजे भव मुक्ति गये ऋषभ मल्लि पार्श्वनाथकूं तो तेला व्यतीत भये केवल उपजा अर वासुपूज्यकूं एक उवासके दूजे दिन केवल उपज्या अर और सबनिकूं बेला व्यतीत भये केवल उपज्या ॥ ५५ ॥ अब चौबीसों जिनराजोंके केवलकल्याणकके क्षेत्र कहे है ऋषभदेवका केवल कल्याणक तौ पुरमित्तालनामा नगर ताके निकट सकटासुख नामा बनविषैं अर नेमिनाथका गिरनारगिरविषै अर पार्श्वनाथका काशीके निकट ॥५६॥ अर महावीरका ऋजुकूटा नामा नदीके तट और तीर्थकरोंका केवलकल्याणक महामनोहर बनविषैं होता भया ॥ ५७ ॥ अर ऋषभदेव श्रेयांसनाथ मल्लिनाथ अर नेमनाथ पार्श्वनाथ इनकूं तो केवलज्ञानकी उत्पत्ति प्रभातसमय भई अर औरनिकूं केवलोत्पत्ति दिनके पिछले पहर भई ॥ ५८ ॥ अर ऋषभदेवके केवल उपजनेकी तिथि फागुण बदी एकादशी अर मल्लिनाथकी फागुण बदी द्वादशी अर मुनिसुब्रतकी फागुन बदी छठ अर सुपार्श्वनाथ

चन्द्रप्रभ इन दोऊकी फागुण बदी सप्तमी अर पार्श्वनाथ चैत बदी चतुर्थी ॥ ६० ॥ अर अनंतनाथकी चैतवदी अमावस्या अर नमिनाथ चैतसुदी तृतीया कुंथुनाथकी चैतसुदी दशमी अर सुमतिनाथ अर पद्मप्रभुकी चैतसुदी दशमी अर महावीरकी बैसाख सुदी दशमी अर नेमिनाथ आसोज सुदी एकम अर सम्भवनाथकी कार्तिक बदी पंचमी अर पुष्पदंतकी कार्तिक सुदी तृतीया बहुरि अरनाथकी कार्तिक सुदी द्वादशी ॥६३॥ अर शीतलनाथकी पौष वदी चौदश अर विमलनाथकी पौष सुदी दशमी अर शांतिनाथकी पौष सुदी ग्यारस अर अजिनाथकी पौषसुदी चतुर्दशी अर अभिनंदन अर धर्मनाथकी पौषसुदी पूर्णमासी ॥६५॥ अर श्रेयांसनाथकी माह बदी अमावस्या अर वासुपूज्यकी माह सुदी दोज॥ ६६ ॥ ये चौवीसों तीर्थंकरनिका केवल उपजनेकी तिथि कही।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंका निर्वाणतिथि कहे हैं ऋषभदेवका निर्वाणतिथि माह वदी चतुर्दशी अर पद्म प्रभकी फाल्गुण वदी चौथ अर सुपार्श्वनाथका फागुणबदी छठ अर मुनिसुव्रतकी फागुण वदी बारस, मल्लिनाथ अर वासुपूज्य इनकी फागुण सुदी पंचमी ॥ ६८ ॥ अर अनन्तनाथ बहुरि अरनाथ इन दोऊनिकी चैतवदी अमावस्या अर अजितनाथकी चैत सुदी पंचमी अर संभवनाथकी चैत सुदी छठ अर सुमतिनाथकी चैत सुदी दशमी अर नमिनाथका बैशाख बदी चतुर्दशी अर कुंथुनथका वैसाख सुदी प्रतिपद अर अभिनंदनकी वैशाख सुदी सप्तमी अर शांतिनाथकी जेठ बदी चतुर्दशी अर धर्मनाथका जेठ सुदी चौथ अर विमलनाथकी आषाढबदी अष्टमी अर नेमिनाथकी आषाढ सुदी अष्टमी अर पार्श्वनाथकी श्रावण सुदी सप्तमी अर श्रेयांसनाथकी श्रावण सुदी पूर्णमासी अर चंद्रप्रभकी भादवा सुदी सप्तमी पुष्पदंतकी भादवा सुदी अष्टमी अर शीतलनाथकी आसोज सुदी पंचमी अर महाबीरकी कार्तिक बदी चतुर्दशी यह चौवीसों तीर्थेंश्वरोंकी निर्वाण तिथि कही ॥ ७६ ॥ अर ऋषभ अजित श्रेयांस शीतल अभिनंदन सुमति सुपार्श्व चंद्रप्रभ यह प्रभु तो पूर्वाह्ण कहिए दिनके पहिले पहर मुक्त भए अर संभव पद्मप्रभ पुष्पदंत वासुपूज्य यह दिनके पिछलेपहर मुक्त भए अर विमल अनंत

नाथ शांतिनाथ कुंथुनाथ मल्लिनाथ मुनिसुव्रत नेमिनाथ पार्श्वनाथ इनकी मुक्ति रात्रिसमय भई अर धर्मनाथ अरहनाथ नमिनाथ अर महावीर इनकी मुक्ति अरुणोदय बेला भई यह तीर्थंकरनिका मुक्ति होनेका समय कहा यह सबही तीर्थंकर धर्मके कर्ता अर कर्मके हर्ता हैं ॥ ८० ॥ अर ऋषभ वासुपूज्य अर नमिनाथ तो पद्मासनतैं मुक्ति भए और सब कायोत्सर्ग आसनतैं मुक्त भए अर आदि तीर्थंकर अंतिम तीर्थंकर इनके दोयके तो चौदह दिन पहले समोसरन विघटा अर दिव्यध्वनि खिरनेतैं रही अर अर सवोंके समोसरण एक महीने पहिले विघटा अर दिव्यध्वनि खिरनेसे रही ॥ ८२ ॥

अथानंतर—चौवीसों जिनेंद्रनिकी लार जेते मुक्त गए तिनकी संख्या कहै हैं महावीरके साथ छब्बीस मुनि मुक्त भए अर पार्श्वनाथके साथ पांचसौ छत्तीस अर उतने ही नेमनाथ अर मल्लिनाथके साथ पांचसौ मुनि अर शांतिनाथके साथ नवसौ मुनि अर धर्मनाथके साथ आठसौ एक मुनि अर विमलनाथके साथ छैहजार सातसौ वारह ॥८५॥ अर अनंतनाथके साथ सात हजार पांचसौ सात अर पद्मप्रभुके साथ तीन हजार आठसौ अर ऋषभदेवके साथ दस हजार अर बाकी और तीर्थंकरनिके साथ एक एक हजार जानों यह चौवीसोंके साथ मुनि मुक्त भए तिनका कथन किया ॥ ८६ ॥ अब बारह चक्रवर्तीके नाम सुनो—भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शांति, कुंथु, अरनाथ, ॥ ८७ ॥ सुभूमि महापद्म हरिषेण जयसेन ब्रह्मदत्त यह बारह चक्रवर्ती षट् खंडनिके नायक हैं अब नव नारायण तिनके नाम कहैं हैं—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट २ स्वयंभू ३ पुरुषोत्तम ४ पुरुषसिंह ५ पुंडरीक ६ दत्त ७ लक्ष्मण ८ कृष्ण ९ यह नव वासुदेव तीनखंडके स्वामी अर्द्धचक्री शत्रूनिके प्रतापकूं खंडित करणहारे हैं ॥ ९० ॥ अर इनके बडे भाई बलभद्र तिनके नाम सुनो—विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नंदीमित्र, राम, पद्म यह नव बलभद्र कहे ॥ ९१ ॥ अर नारायणके शत्रु प्रतिनारायण नव तिनके नाम सुनो—अश्वग्रीव, तारक, मेरुक, निशंभु, मधुकैटभ बली प्रहरण रावण जरासिंधु यह नव प्रतिवासुदेव कहे तिनमें आठ तो विद्याधर अर एक जरासिंध

भूमिगोचरी ॥ ९३ ॥ यह नारायण प्रतिनारायण बलिभद्र नव नव कहे तिनमें बलिदेव तो ऊर्द्धगामी हैं इन पूर्व भवविषै भोगाभिलाष रहित तप किया है अर अर्द्धचक्री हरि प्रतिहरि इन निदान सहित महातप किया है यातैं वैराग्यके अधिकारी नाहीं ॥ ९५ ॥ अब यह चक्रवर्त्यादि जासमय भये सो समय कहे हैं पहला भरत चक्रवर्ती तो ऋषभ देवके समय भया अर दूजा सगर अजितनाथके समय भया अर तीजा मघवा अर चौथा सनत्कुमार यह धर्मनाथकूं मुक्त भए पीछे शांतिनाथके पहले भए अर शांति, कुंथु, अरनाथ यह तीन चक्रवर्ती तीर्थंकर ही भए सो इनका वही समय अर आठवां सुभौम अरनाथ स्वामीकूं मुक्त भए पीछे मल्लि-नाथ पहले भए ॥ ९६ ॥ अर मल्लिनाथकूं मुक्ति भए पीछे मुनिसुव्रतनाथ पहली भवमें महापद्म चक्रवर्ती भए अर मुनिसुव्रत पीछे अर नमिनाथ पहले दशवें चक्रवर्ती हरिषेण भए अर नमिनाथ पीछे नेमिनाथ पहिले ग्यारहवें चक्रवर्ती जयसेन भये अर नेमनाथ पीछे अर पार्श्वनाथ पहले बारहवें चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त यह बारह चक्रवर्ती तिनमें आठवां सुभौम सप्तमी धरागये अर बारहवां ब्रह्मदत्त भी उसी जगह अर तीजा मघवा अर चौथा सनत्कुमार यह दोऊ तीजे स्वर्गदेव भये बाकी आठों आठ कर्म हण निर्वाण गये अर जो स्वर्गादि विषै गये हैं सोहू थोडेही भवमें सिद्धपद पावेंगे यह महापुरुष मुक्तिहीके अधिकारी हैं ॥ ९९ ॥ अब नव नारायण कौन समय भये सो सुनो पहला नारायण तो श्रेयांसनाथके समय भया अर दूजा वासुपूज्यके समय भया अर तीजा विमलनाथके समय भया अर चौथा अनंतनाथके समय भया अर पांचवां धर्मनाथके समय भया यह पांच तो श्रेयांसनाथसे लेकर धर्मनाथके समय पर्यंत भये पहले नारायण त्रिपृष्ट ताहि आदि देय पुरुषसिंह पर्यंत यह पांच नारायण तो पांच तीर्थंकरनिके समय भये अर छठा पुण्डरीक नामा नारायण अरनाथ पीछे अर मल्लिनाथ पहले भया अर मल्लिनाथ पीछे अर मुनिसुव्रत पहले सातवां दत्त नामा नारायण भया ॥ १०० ॥ अर मुनिसुव्रतके पीछे अर नमिनाथके पहले आठवां नारायण लक्ष्मण भया अर नवां नारायण कृष्ण नेमनाथके समय है सो

प्रत्यक्ष नेमनाथकूं पद्म नामा बलिभद्र सहित धर्मके प्रश्न करे है ॥ १ ॥ इनमें पहला त्रिपृष्ट तो माघवी पधारे अर दूजा द्विपृष्ट तीजा स्वयंभू चौथा पुरुषोत्तम पांचवां पुरुषसिंह अर छठा पुण्डरीक यह पांच मघवी पधारे अर सातवां दत्त अरिष्ट पधारे आठवां और नवमां मेघा यह सब निर्वाणके अधिकारी हैं ॥ २ ॥ और बलिभद्र नव तिनमें विजय, अचल, स्वधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नन्दीमित्र, रामचन्द्र यह आठ तो आठों कर्म खपाय परमधाम पधारे अर नवमां पद्मनामा बलदेव कृष्णका ज्येष्ठ भ्राता मुनिव्रतधरि पांचवां ब्रह्मस्वर्ग तहां देव होवेंगे अर कृष्ण तीर्थेश्वर पद धारेंगे तिनके समय बलिभद्र सिद्धपद पावेंगे यह सब शलाका पुरुष सिद्धक्षेत्रके पात्र हैं।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके शरीरकी उच्चता कहे हैं ऋषभदेवका शरीर ऊंचा धनुष पांच सौ और अजितनाथका साढे चार सौ अर सम्भवनाथका चार सौ अभिनंदनका साढे तीन सौ अर सुमतिनाथका तीनसौ पद्मनाथका अढाई सौ अर सुपार्श्वनाथका दोय सौ चद्रप्रभका डेढ सौ पुष्पदंतका सौ धनुष यहांतक पचास पचास धनुष घटे शीतलनाथका शरीर धनुष नव्वे श्रेयांसका धनुष अस्सी वासुपूज्य सत्तर, विमलका साठ अनन्तनाथका पचास यहां तक दश दश धनुष घटे धर्मनाथका शरीर धनुष पैंतालीस शान्तिनाथका चालीस कुन्थुनाथका पैंतीस अरनाथका तीस मल्लिनाथका पच्चीस मुनिसुव्रतका वीस, नमिनाथका पंद्रह, नेमनाथका दश धनुष यहां तक पांच पांच धनुष घटे अर पार्श्वनाथका शरीर नव हाथ अर वर्द्धमानका हाथ सात यह तीर्थंकरनिकी देहकी ऊंचाई कही अर चक्रवर्तीनिके देहकी उच्चता कहे हैं पहले चक्रवर्तिका देह धनुष पांच सौ ऊंचा दूसरेका साढे चार सौ तीसरेका धनुष साढे बियालीस चौथेका साढे इकतालीस पांचवेंका चालीस छठेका पैंतीस सातवेंका तीस आठवेंका अठाईस नवमेंका बाईस दशवेंका बीस ग्यारहवेंका चौदह बारहवेंका धनुष सात यह चक्रवर्तीनिके शरीरकी ऊंचाई कही ॥१॥ अब नव नारायण अर नव प्रतिनारायण अर नव बलभद्र इनके शरीरकी ऊंचाई कहे हैं धनुष अस्सी, सत्तर, साठ पचास चालीस छब्बीस बाईस सोलह अर दश धनुष यह ऊंचाई नारायण प्रतिनारायण और बलिभद्रोंके

शरीरकी कही। नारायण प्रतिनारायण बलिभद्र यह तीन पदवीके धारक एक समयमें होवें इसलिये कायकी ऊंचाई तो तीनोंका समान है अर आयुमें किंचित भेद है सो आगे कहै हैं अब चौबीसों तीर्थंकरोंकी आयु कहै हैं ऋषभदेवकी आयु चौरासीलाख पूर्व और अजितनाथकी बहत्तर लाख पूर्व सम्भवनाथकी साठ लाख पूर्व अभिनंदनकी पचास लाख पूर्व सुमतिनाथकी चालीस लाख पूर्व पद्मप्रभकी तीस लाख पूर्व सुपार्श्वनाथकी बीस लाखपूर्व चंद्रप्रभकी दश लाख पूर्व पुष्पदन्तकी दोय लाख पूर्व और शीतलनाथकी एक लाख पूर्व यहां तक तो पूर्वकी आयु भई अर श्रेयांसकी चौरासी लाख वर्ष वासुपूज्यकी बहत्तर लाख वर्ष विमलनाथकी साठ लाख वर्ष अनन्तनाथकी तीसलाख वर्ष धर्मनाथकी दशलाख वर्ष शांतिनाथकी एकलाख वर्ष ॥ १३ ॥ अर कुंथुनाथकी पिचाणवें हजार वर्ष अरनाथकी चौरासी हजार वर्ष अर मल्लिनाथकी पचपन हजार वर्ष मुनिसुव्रतकी तीसहजार वर्ष नमिनाथकी दश हजार वर्ष नेमिनाथकी एक हजार वर्ष पार्श्वनाथकी सौ वर्ष महावीरकी बहत्तर वर्ष यह तीर्थंकरनिकी आयु कही वे तीर्थंकर तोहि मंगलके कर्त्ता होओ ॥ १५ ॥ अर बारह चक्रवर्तीनिकी आयु कहे हैं पहला भरत ताकी आयु चौरासी लाख पूर्व अर दूसरेकी बहत्तर लाख पूर्व तीसरकी पांच लाख वर्ष चौथेकी तीन लाख वर्ष पांचवेंकी एक लाख वर्ष छठेकी पिचानवें हजार वर्ष सातवेंकी चौरासी हजार वर्ष आठवेंकी साठ हजार वर्ष, नवमेंकी तीस हजार वर्ष, दशवेंकी छब्बीस हजार वर्ष, ग्यारहवेंकी तीन हजार वर्ष, बारहवेंकी सात सौ वर्ष, यह चक्रवर्तीकी आयु कही। अब नव नारायणोंकी आयु सुनो पहलेकी चौरासी लाख वर्ष, अर दूसरेकी बहत्तर लाख वर्ष तीसरकी साठ लाख वर्ष चौथेकी तीस लाख वर्ष पांचवेंकी दश लाख वर्ष छठेकी साठ हजार बर्ष सातवेंकी तीस हजार बर्ष आठवेंकी बारह हजार वर्ष नवमेंकी एक हजार वर्ष यह नारायणकी आयु कही। अर प्रतिनारायणोंकी भी याही प्रकार जाननी अर बलिभद्रोंकी आयु कछु अधिक है ॥ २१ ॥ सो कहे हैं पहले बलभद्रकी आयु सत्तासी लाख वर्ष, अर दूसरेकी सत्तर लाख वर्ष, तीसरेकी पैंसठ लाख वर्ष, चौथेकी

बत्तीस लाख वर्ष, पांचवेंकी कुछ एक अधिक दश लाख वर्ष, छेठेकी पैंसठ हजार वर्ष सातवेकी बत्तीस हजार वर्ष, आठवेंकी सतरह हजार वष नवमेंकी बारह सौ वर्ष ॥ २२ ॥ अर भगवान आदिनाथसे लेय अर धर्मनाथ पर्यंत पन्द्रह तीर्थंकरोंमें ऋषभ अर अजितके समय पहला अर दूसरा चक्रवर्ति भया अर अंतरालविषे कोई पदवी घर न भया अर श्रेयांसनाथसूं ले अर धर्मनाथ पर्यंत पांच तीर्थंकरोंके समय पांच नारायण भये सो तीर्थंकरोंके समय ही भये अंतरालविषैं न भये अर धर्मनाथ पीछे तीजा चक्रवर्ती अर चौथा चक्रवर्ती भया तापीछे शान्ति कुन्थु अरनाथ यह तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती हू भये बहुरि ता पीछे छठा नारायण भया तापीछे आठवां चक्रवर्ती भया ॥२३॥ ता पीछे मल्लिनाथ भये अर मल्लिनाथ पीछे नवमें चक्रवर्ती महापद्म भया ता पीछे सातवां नारायण भया बहुरि मुनिसुव्रतनाथ भये अर ता पीछे दशवां हरिषेण चक्रवर्ती भया ता पीछे आठवां नारायण भया अर नमिनाथ पीछे ग्यारवां चक्रवर्ती भया ता पीछे नेमनाथ भये तिनेक समय नवमें बलिभद्र अर नारायण भये अर नेमनाथ पीछे बारहवां चक्रवर्ती भया ता पीछे पार्श्वनाथ अर महावीर भये या भांति शलाका पुरुष भये। अब तीर्थंकरनिके दाहिने पगके लक्षण कहिये हैं वृषभ हस्ती घोडे वंदर चकवा कमल सांथिया चंद्रमा मगरमच्छ श्रीवच्छ गैंडा भैंसा सूर सेह वज्र मृग छेला मीन कलश कच्छप नीलकमल सर्प सिंह। अथानंतर—तीर्थंकरोंकी आयुकी विगति करे हैं ऋषभदेवका कुमार काल वीस लाख पूर्व अर राज त्रेसठ लाख पूर्व अर तप हजार वर्ष अर केवलकल्याणकविषैं हजार वर्ष घाट लाख पूर्व यह चौरासी लाख पूर्वका विस्तार कहा अर अजितनाथका कुमारकाल अठारह लाख पूर्व अर राज्यावस्था त्रेपन लाख पूर्व अर एक पूर्वांग अधिक चौरासी लाख वर्षका एक पूर्वांग कहिये है अर संयमकाल बारह वर्ष अर एक पूर्वांग और बारह वर्ष एक पूर्वांग घाट एक लाख पूर्व केवल कल्याणकविषैं समोसरणमें विराजे यह बहत्तर लाख पूर्वका विस्तार कहा। अर सम्भवनाथका आयु साठ लाख पूर्व तामें कुमारकाल पन्द्रह लाख पूर्व अर राज्य अवस्था चवालीस लाख पूर्व अर चार पूर्वांग अर संयमकाल चौदह वर्ष अर केवल कल्याणक विषैं

चार पूर्वांग अर चौदह वर्ष घाट लाख पूर्व या भांति साठ लाख पूर्वका विस्तार कहा अर अभिनन्दनका आयु पचास लाख पूर्व तिनमें कुमारकाल साढे बारह लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे छत्तीस लाख पूर्व अर आठ पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष अठारह अर केवल कल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें आठ पूर्वांग अर वर्ष अठारह घटावने यह पचास लाख पूर्वका विस्तार कहा अर सुमतिनाथका आयु चालीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल दश लाख पूर्व अर राज्य समय उणतीस लाख पूर्व अर बारह पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष बीस अर केवल कल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें बारह पूर्वांग अर वर्ष बीस घटावने यह चालीस लाख पूर्वका विगतवार विस्तार कहा अर पद्मप्रभका आयु तीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल साढे सात लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे इक्कीस लाख पूर्व अर सोलह पूर्वांग अर संयमकाल छह महीना अर केवलकल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें सोलह पूर्वांग अर मास छह घटावना यह तीस लाख पूर्वका विस्तार कहा अर सुपार्श्वनाथका आयु बीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल पांच लाख पूर्व अर राज्य अवस्था चौदह लाख पूर्व अर बीस पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष नव अर केवल कल्याणकविषै बीस पूर्वांग अर नव वर्ष घाठ लाख पूर्व यह बीस लाख पूर्वका विस्तार कहा अर चंद्रप्रभका आयु दश लाख पूर्व तामें कुमारकाल अढाई लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे छह लाख पूर्व अर चौवीस पूर्वांग अर संयम काल महीना तीन अर केवलकल्याणक विषैं चौबीस पूर्वांग अर तीन मास घाट लाख पूर्व अर पुष्पदंतका आयु दोय लाख पूर्व तामें कुमारकाल पचास हजार पूर्व अर राज्य अवस्था भी पचास हजार पूर्व अर अठाईस पूर्वांग अर संयमकाल मास चार अर केवल कल्याणकविषै लाख पूर्व तामें अठाईस पूर्वांग अर मास चार घटावने यह दोय लाख पूर्वका विस्तार कहा अर शीतलनाथका आयु लाख पूर्व तामें कुमारकाल पचीस हजार पूर्व अर राज्य अवस्था पचास हजार पूर्व अर संयमकाल तीन महीना अर केवल कल्याणक पचीस हजार पूर्व तीन मास घाट अर श्रेयांसनाथका आयु वर्ष चौरासी लाख तामें कुमारकाल

इकीस लाख वर्ष अर राज्य अवस्था ब्यालीस लाख वर्ष अर संयमकाल दोय मास अर केवल कल्याणकविषैं इकीस लाख वर्ष दोय महीने घाट अर वासुपुज्य स्वामीका आयु बहत्तर लाख वर्ष तामें कुमारकाल अठारह लाख वर्ष अर इन विवाह न किया राज्य भी न किया वर्ष अठारह लाखके भए तबही वैराग्य धारा। अर संयम काल मास एक अर केवल कल्याणकमें एक मास घाट चौवन लाख वर्ष विराजे, अर विमलनाथका आयु वर्ष साठ लाख तामें कुमारकाल वर्ष पंद्रह लाख वर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष लाख तीस अर संयम काल मास तीन अर केवल कल्याणक तीन मास घाट पंद्रह लाख वर्ष अर अनंतनाथका आयुवर्ष लाख तीस तामें कुमार काल साढे सात लाख वर्ष अर राज्य अवस्था पंन्द्रह लाख वर्ष अर संयमकाल मास दोय अर केवल कल्याणकविषै दोय मास घाट साढेसात लाख वर्ष अर धर्मनाथका आयु दश लाख वर्ष तामें कुमार काल वर्ष लाख अढाई अर राज्य अवस्था पांच लाख वर्ष अर संयम काल मास एक अर केवलकल्याणकमें एक मास घाट अढाई लाख वर्ष अर शांतिनाथका आयुएक लाख वर्ष तामें कुमारकाल पचीस हजार वर्ष अर राज्य अवस्था पचास हजार वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल कल्याणकमें सोलह वर्ष घाट वर्ष हजार पचीस अर कुंथुनाथका आयु पच्चाणवें हजार वर्ष तामें कुमारकाल पौणा चौबीसहजार वर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष हजार साढे सैंतीस अर संयमकाल वर्ष सोलह अर केवल कल्याणकमें सोलह वर्ष घाट वर्ष हजार पौणा चौवीस अर अरनाथका आयु वर्ष हजार चौरासी तामें कुमारकाल इक्कीस हजारवर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष हजार बियालीस अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल कल्याणकमें तप-काल सोलह वर्ष घाट इक्कीसहजार वर्ष अर मल्लिनाथका आयुवर्ष पचात्रनहजार तामें कुमारकाल वर्ष सौ अर इन राज्य न किया विवाह न किया सौ वर्षके होय मुनिव्रत धारे अर संयमकाल दिन छह बाकी वर्ष चौवनहजार नव सौ तामें छह दिन घाट केवल कल्याणकमें रहे अर मुनिसुव्रतका आयु तीसहजार वर्ष तामें कुमारकाल साढे सात हजार वर्ष अर राज्य अवस्था पंद्रह हजार वर्ष अर संयमकाल मास ग्यारह अर ग्यारह महीना घाट साढे सात हजार वर्ष

केवल कल्याणकमें तिष्ठे अर नमिनाथका आयु दशहजार वर्ष तामें कुमार काल अढाई हजार वर्ष अर राज्यावस्था पांच हजार वर्ष अर संयमकाल नव वर्ष अर नव वर्ष घाट अढाई हजार वर्ष केवल कल्याणकमें विराजे अर नेमिनाथका आयु एक हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष तीनसौ अर इन विवाह न किया अर न राज्य किया तीनसौ वर्षके होय मुनि भए सो संयमकाल दिन छप्पन अर सातसौ वर्ष छप्पन दिन घाट केवल कल्याणकविषैं विराजे अर पार्श्वनाथका आयु वर्ष सौ तामें कुमारकाल वर्ष तीस अर इन राज न किया अर विवाह भी न किया तीस वर्षके होय मुनिव्रत धारे सो संयमकाल मास चार अर वर्ष सत्तर चार मास घाट केवल कल्याणकमें विराजे अर महावीरका आयु वर्ष बहत्तर तामें कुमारकाल वर्ष तीस अर इन विवाह न किया अर राज्य न किया अर तीस वर्षके यती भये सो वर्ष बारह संयमकाल बाकी तीस वर्ष केवल कल्याणकमें विराजे यह सबोंकी आयुका विस्तार कहा अब चौवीसों तीर्थंकरोंके संघका निरूपण करे हैं ऋषभके गणधर चौरासी अर अजितके नव्वे सम्भवके एक सौ पांच अभिनन्दनके एकसौ तीन अर सुमतिके एकसौ सोलह पद्मप्रभके एकसौग्यारह सुपार्श्वके पिच्चाणवें चन्द्रप्रभके तिराणवें अर पुष्पदंतके अठासी अर शीतलके इक्यासी श्रेयांसके सतहत्तर अर वासुपूज्यके छ्यासठ विमलके पचावन अनंतके पचास धर्मके तैंतालीस अर शांतिके छत्तीस अर कुंथुके पैंतीस अर अरहनाथके तीस अर मल्लिनाथके अठाईस अर मुनिसुव्रतके अठारह अर नमिके सतरह अर नेमिके ग्यारह अर पार्श्वनाथके दश अर महावीरके ग्यारह यह सबोंके गणधर कहे इनमें एक एक मुख्य तिनके नाम कहे हैं ऋषभके वृषभसेन अर अजितके सिंहसेन अर सम्भवके चारुदत्त अभिनन्दनके वज्र सुमतिके चमर पद्मप्रभके वज्रबलि अर सुपार्श्वके चमरवलि अर चंद्रप्रभके दंडिका पुष्पदन्तके वैदर्भ अर शीतलके अनागार श्रेयांसके कुंथु वासुपूज्यके सुधर्म अर विमलके नन्दिराय अनन्तके जय, धर्मके अरिष्ट, शांतिके चक्रायुध कुन्थुके स्वयंभू अरहनाथके कुन्थु मल्लिनाथके विशाखाचार्य अर मुनिसुव्रतके मल्लि अर नेमिके सोमक नेमिके वरदत्त अर पार्श्वनाथके स्वयंभू महावीरके इन्द्रभूति

जाहि गौतम हू कहे हैं यह गणधर सप्त ऋद्धि करि युक्त अर सर्व श्रुतके पारगामी हैं ॥ अथानंतर—तीर्थंकरोंके साथ जितनें राजा वैरागी भये तिनका निरूपण करैं हैं महावीरके साथ तीन सौ अर पार्श्वनाथके साथ छै सौ अर इतने ही मल्लिनाथके साथ अर वासुपूज्यके साथ छै सौ ॥ ४९ ॥ अर ऋषभदेवके साथ राजा चार हजार अर और सबोंके साथ एक एक हजार राजा जानों ॥ ५० ॥ ऋषभदेवके सकल यति चोरासी हजार अर अजितके एक लाख अर सम्भवनाथके दोय लाख अर अभिनन्दनके तीन लाख अर सुमतिके तीन लाख बीस हजार अर पद्मके तीन लाख तीस हजार अर सुपार्श्वनाथके तीन लाख चंद्रप्रभके अढाई लाख पुष्पदन्तके तीन लाख शीतलनाथके एक लाख श्रेयांसके चौरासी हजार वासुपूज्यके बहत्तर हजार विमलनाथके अडसठ हजार अनन्तनाथके छयासठ हजार धर्मनाथके चौसठ हजार शांतिनाथके बासठ हजार कुन्थुनाथके साठ हजार अरहनाथके पचास हजार मल्लिनाथके चालीस हजार मुनिसुव्रतके तीस हजार नमिनाथके बीस हजार नेमनाथके अठारह हजार अर पार्श्वनाथके सोलह हजार अर महावीरके चौदह हजार यह चौवीसोंके मुनि कहे सो मुनियोंका संघ सात प्रकार है ताका वर्णन सुनो ऋषभदेवके चौदह पूर्वके पाठी मुनि सैंतालीस सौ पचास अर सूत्रके अभ्यासी शिष्य इकतीस सौ पचास अर अवधिज्ञानी नव हजार केवली बीस हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारी बीस हजार छै सौ अर विपुलमति मनःपर्यके धारी बारह हजार साढे सात सौ अर वादिऋद्धिके धारी बारह हजार सवा सात सौ यह चौरासी हजार भये अजितनाथके चौदह पूर्वके पाठी सैंतीस सौ पचास अर आचारंग सूत्रके अभ्यासी शिष्य इक्कीस हजार छै सौ अर अवधिज्ञानी चौराणवें सौ अर केवली बीस हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक बीस हजार चार सौ पचास अर विपुलमति मनःपर्ययवाले बारह हजार चार सौ वादिऋद्धिके धारक बारह हजार चार सौ यह सब मुनि लाख भये अर सम्भवनाथके चौदह पूर्वके पाठी इक्कीस सौ पचास अर शिष्य एक लाख गुणतीस हजार तीन सौ एक सब सूत्राभ्यास करें हैं अर नव हजार छः सौ अवधिज्ञानी अर पन्द्रह

हजार केवली अर उन्नीस हजार साढे आठ सौ विक्रिया ऋद्धिके धारक अर बारह हजार विपुलमति मनःपर्यय-ज्ञानके धारक अर बारह हजार अर एक सौ वादि ऋद्धिके धारक यह दोय लाखका विस्तार कहा अर अभिनंदनके मुनि तीनलाख तिनमें चौदह पूर्वके पाठी पच्चीस सौ अर सूत्रके अभ्यासी शिष्य दोयलाख तीस हजार पचास अर अवधिज्ञानी नव हजार आठ सौ अर केवली सोलह हजार अर विक्रिया ऋद्धिके धारक उणतीस हजार अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी ग्यारह हजार छे सौ पचास अर वादिऋद्धिके धारक ग्यारह हजार यह अभिनन्दनके तीनलाख साधु कहे अर सुमतिनाथके चौदह पूर्वके पाठी चौबीस सौ अर आगमके अभ्यासी शिष्य दोय लाख चव्वन हजार तीनसौ पचास अर निर्मल अवधिज्ञानके धारक ग्यारह हजार अर केवलज्ञानके धारक तेरह हजार विक्रियाऋद्धिके धारक अठारह हजार चार सौ अर विपुलमति मनःपर्ययके धारक दश हजार चार सौ अर वादि ऋद्धिके धारक दश हजार चार सौ पचास यह सब तीनलाख बीस हजार भए ॥ ७६ ॥ अर पद्मप्रभके चौदह पूर्वके पाठी तेईस सौ अर शिष्य दोय लाख उणहत्तर हजार अर अवधिज्ञानी दशहजार अर केवली बारह हजार आठसौ और विक्रियाऋद्धिके धारक सोलहहजार तीनसौ अर वादिऋद्धिके धारी नव हजार अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके धारक दश हजार छे सौ यह सब तीनलाख तीसहजार भए। अर सुपार्श्वनाथके चौदह पूर्वके पाठी तेईस सौ अर शिष्य दोय लाख चवालीसहजार नवसौ बीस अर अवधिज्ञानी नवहजार अर केवली ग्यारह हजार तीनसौ अर विक्रियाऋद्धिके धारक पंद्रहहजार डेढसौ अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके धारक नवहजार छेसौ अर वादित्त ऋद्धिके धारक हजार आठ यह सब मुनि तीनलाख भए अर चंद्रप्रभके चौदह पूर्वके पाठी दोय हजार अर शिष्य दोय लाख दश हजार चारसौ अर अवधिज्ञानके धारक आठ हजार अर विपुलमति पनःपर्ययके धारक भी आठ हजार अर केवल ज्ञानी दशहजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक चार हजार अर वादित्तऋद्धिके धारक सात हजार छेसो यह सब

अढाई लाख भए अर पुष्पदंतके चौदह पूर्वके पाठी पंद्रह सौ अर शिष्य एक लाख पचावनहजार पांचसौ अर अवधि
ज्ञानके धारक आठ हजार चारसौ अर केवली साढे सातहजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक तेरा सौ अर विपुलमति
मनःपर्ययज्ञानके धारक पैंसठसौ अर वादित्तऋद्धिके धारक छिहत्तरसौ अर शीतलनाथके चौदह पूर्वके पाठी चौदहसौ
अर शिष्य गुणसठहजार दोयसौ अर अवधिज्ञानी बहत्तरसौ अर केवली सातहजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक
बारहहजार, साढे सातहजार विपुलमति, मनपर्ययके धारक अर वादित्तऋद्धिके धारक सतावनसौ ॥ १४ ॥ अर
श्रेयांसनाथके चौदह पूर्वके पाठी तेरहसौ अर शिष्य अडतालीसहजार दोयसौ अर अवधिज्ञानके धारक छहहजार
अर केवलज्ञानी पैंसठसौ अर विक्रियाऋद्धिके धारक ग्यारह हजार अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके धारक छह
हजार अर वादित्तऋद्धिके धारी पांचहजार अर बासुपूज्यके चौदह पूर्वके पाठी बारहसौ अर शिष्य उन्तालीस हजार
दोयसौ अर अवधिज्ञानके धारक चौवनसौ अर केवलज्ञानके धारक छहहजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक दशहजार
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानके धारक छहहजार अर वादित्तऋद्धिके धारक बयालीससौ अर विमलनाथके चौदह पूर्वके
पाठी ग्यारहसौ अर शिष्य अडतीसहजार पांचसौ अर अवधिज्ञानके धारक अडतालीससौ अर केवलज्ञानके धारक
पचपनसौ अर विक्रियाऋद्धिके धारक नव हजार अर मनःपर्ययज्ञानके धारक पचावनसौ अर छत्तीससौ वादित्रऋद्धिके
धारक ॥२॥ अर अनन्तनाथके चौदह पूर्वके पाठी एक हजार अर शिष्य उन्तालीस हजार पांचसौ अर अवधिज्ञानी
तैंतालीससौ अर केवलज्ञानके धारक पांच हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक आठहजार मनःपर्ययज्ञानी पांचहजार
अर वादित्तऋद्धिके धारक बत्तीससौ अर धर्मनाथके चौदह पूर्वके पाठी नवसौ अर शिष्य चालीसहजार सातसौ अर
अवधिज्ञानी छत्तीससौ अर केवलज्ञानी पैंतालीससौ अर विक्रियाऋद्धिकेधारी सात हजार अर विपुलमति मनःपर्यय-
ज्ञानी पैंतालीससौ अर वादित्तऋद्धिके धारक अठाईससौ अर शांतिनाथके चौदह पूर्वके पाठी आठसौ अर शिष्य
इकतालीसहजार आठसौ अर अवधिज्ञानी तीनहजार अर केवलज्ञानी चारहजार अर विक्रियाऋद्धिकेधारी छहहजार

अर मनःपर्ययज्ञानी चार हजार अर वादित्तऋद्धिके धारी चोबीससौ अर कुंथुनाथके चौदह पूर्वके पाठी सात सौ अर शिष्य तैंतालीस हजार डेढ सौ अर अवधिज्ञानके धारी पचीससौ अर केवलज्ञानी वत्तीससौ अर विक्रिया ऋद्धिवाले इक्यावनसौ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानवाले तैंतीनसौ पचास अर वादित्त ऋद्धिवाले दोय हजार बहुरि अरनाथके चौदह पूर्वके पाठी छहसौ दश अर शिष्य पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस अर अवधिज्ञानी अठाईस सौ अर केवली भी अठाईस सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी तैंतालीस सौ अर मनःपर्ययज्ञानी वीस सौ पचावन वादित्त ऋद्धिके धारी सोलह सौ अर मल्लिनाथके चौदह पूर्वके पाठी पांचसौ पचास अर शिष्य गुणतीस हजार अवधिज्ञानी वाईस सौ अर छब्बीससौ पचास केवलज्ञानी चौदह सौ विक्रिया ऋद्धिवाले अर विपुलमति मनःपर्ययवाले बाईस सौ अर वादित्त ऋद्धिवाले भी वाईस सौ अर मुनि सुव्रतनाथके चौदह पूर्वके पाठी पांच सौ अर शिष्य इक्कीस हजार अर अवधिज्ञानी अठारह सौ अर केवली अठारह सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी बाईस सौ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी पंद्रह सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी वारह सौ अर नमिनाथके चौदह पूर्वके पाठी साढे चार सौ अर शिष्य बारह हजार छह सौ अर अवधिज्ञानी सोलह सौ अर केवली भी सोलह सौ अर विक्रिया ऋद्धिवाले पंद्रह सौ अर मनपर्ययज्ञानी वारह सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी हजार अर नेमनाथके चौदह पूर्वके पाठी चार सौ अर शिष्य ग्यारह हजार आठ सौ अवधिज्ञानी पंद्रहसौ अर केवली पंद्रह सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी ग्यारह सौ अर मनपर्यय ज्ञानी नव सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी आठ सौ ॥ २८ ॥ अर पार्श्वनाथके चौदह पूर्वके पाठी साढे तीन सौ अर शिष्य दश हजार नव सौ अर अवधिज्ञानी चौदह सौ अर केवलज्ञानी एक हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारी हजार अर मनःपर्यय ज्ञानी साढे सात सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी छै सौ ॥ २९ ॥ अर वर्द्धमान जिनेन्द्रके चौदह पूर्वके पाठी तीन सौ अर शिष्य नव हजार नव सौ अवधिज्ञानी तेरह सौ अर केवली सात सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी नव सौ अर मनःपर्ययज्ञानी पांच

सौ अर वादि ऋद्धिके धारी चार सौ ॥३१॥ यह चौवीस तीर्थंकरोंके सात प्रकारके मुनि प्रत्येकके कहे। अथानंतर—चौवीसो जिनराजोंके आर्यकानिका व्याख्यान करे हैं ऋषभदेवके समोसरणमें आर्यका तीन लाख पचास हजार अर अजितनाथके तीन लाख बीस हजार ॥२॥ अर संभवनाथके अर अभिनन्दनके अर सुमतिनाथके प्रत्येक २ तीन तीन लाख अर तीस २ हजार ॥३२॥ पद्मप्रभके चार लाख अर बीस हजार अर सुपार्श्वके तीन लाख तीस हजार अर चन्द्रप्रभ अर पुष्पदंत अर शीतलनाथ इन तीनोंके प्रत्येक प्रत्येक तीनलाख अस्सी २ हजार अर श्रेयांसनाथके एक सौ बीस हजार अर वासुपूज्यके एक लाख छै हजार अर विमलनाथके एक लाख तीन हजार अर अनंतनाथके एक लाख आठ हजार अर धर्मनाथके बासठ हजार चार सौ अर शांतिनाथके साठ हजार तीन सौ ॥ ३७ ॥ अर कुंथुनाथके साठ हजार साढे तीन सौ अरनाथके साठ हजार अर मल्लिनाथके पचंपन हजार। मुनिसुव्रतके पचास हजार अर नमिनाथके पैंतालीस हजार अर नेमनाथके चालीस हजार अर पार्श्वनाथके अड-तीस हजार अर वर्द्धमानके चौबीस हजार यह चौवीसों तीर्थंकरनिकी आर्यका कहीं।

अथानंतर—श्रावक अर श्राविकानिकी गिणती कहे हैं ऋषभदेवकूं आदि लेय अर चंद्रप्रभ पर्यंत प्रत्येक तीन तीन लाख श्रावक अर पुष्पदंतसे लेय अर शांतिनाथ पर्यंत दोय दोय लाख श्रावक अर कुन्थुनाथसे लेय अर वर्द्धमान पर्यंत प्रत्येक लाख लाख श्रावक जानो यह श्रावकनिकी गिनती कही अर श्राविका ऋषभसे लेय चंद्रप्रभ तक पांच पांच लाख अर पुष्पदंतसे लेय शांतिनाथ पर्यंत चार चार लाख अर कुंथुनाथसे लेय वर्द्धमान पर्यंत तीन तीन तीन लाख जाननीं यह चतुर्विध संघका व्याख्यान किया। अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके शिष्य जितने सिद्ध भए तिनका कथन कहे हैं॥ ४३ ॥ ऋषभदेवके शिष्य साठ हजार नव सौ सिद्ध भए अर अजितके सतत्तर हजार एक सौ अर सम्भवनाथके एक लाख सत्तर हजार एक सौ अर अभिनंदनके दोय लाख अस्सी हजार एक सौ अर सुमनिनाथके शिष्य तीन लाख सोलह हजार एक सौ अर पद्मप्रभके तीन लाख तेरह हजार

छे सौ अर सुपार्श्वनाथके दोय लाख पिचासी हजार छे सौ अर चंद्रप्रभके दोयंलाख चौंतीस हजार अर पुष्पदंतके एक लाख गुणासी हजार छे सौ अर शीतलनाथके अस्सी हजार छे सौ अर श्रेयांसनाथके पैंसठ हजार छे सौ अर वासुपुज्यके चव्वन हजार छे सौ अर विमलनाथके इक्यावन हजार तीन सौ अर अनंतनाथके इक्यावन हजार अर धर्मनाथके गुणचास हजार सात सौ अर शांतिनाथके अडतालीस हजार चार सौ अर कुंथुनाथके छियालीस हजार आठ सौ वहुरि अरनाथके सैंतीस हजार दोय सौ अर मल्लिनाथके अठाईस हजार आठसौ अर मुनिसुव्रतके उन्नीस हजार दो सौ अर नमिनाथके नव हजार छे सौ अर नेमनाथके आठ हजार अर पार्श्वनाथके बासठ सौ अर महावीरके बहत्तर सौ यह चौबीसों तीर्थंकरोंके शिष्य सिद्ध भए अर पहिले तीर्थंकरसे लेय सोलहवें तीर्थंकर तक तो जा समय तीर्थंकरोंको केवल उपजा ताही समय कईएक शिष्योंकी सिद्धि भई अर कईएकोंकी पीछे भई अर सोलह सिवाय औरोंके शिष्योंकी मुक्ति, कईएक तीर्थंकरोंको केवल उपजा ता पीछे एक महीने कई एककी दोय महीने पीछे कई एककी तीन महीने पीछे कई एककी छह महीने पीछे सिद्धि भई अर कईएक तीर्थंकरोंको केवल उपजे पीछे एक वर्ष दोय वर्ष तथा तीन वर्ष पीछे चार वर्ष पीछे या भांति सिद्धपदकूं प्राप्त भए ॥ ६५ ॥

अथानन्तर—चौबीसों तीर्थंकरोंका अन्तराल कहे हैं। ऋषभ पीछे अजितनाथ पचास लाख कोडि सागर बीते भये अर अजितनाथ पीछे सम्भवनाथ तीस लाख कोडि सागर अर सम्भवसे अभिनन्दनका दश लाख कोडि सागर अभिनन्दनसे सुमतिका नव लाख कोडि सागर अर सुमतिनाथसे पद्मप्रभका नव्बे हजार कोडि सागर अर पद्मसे सुपार्श्वका नव हजार कोटि सागर अर सुपार्श्वसे चन्द्रप्रभका नव सौ कोडि सागर अर चन्द्रप्रभसे पुष्पदन्तका नव्वे कोडि सागर अर पुष्पदन्तसे शीतलनाथका नव कोडि सागर अर शीतलनाथसे श्रेयांसनाथका अन्तर कोडि सागर तामें सागर सौ अर वर्ष छियासठ लाख छब्बीस हजार घटावने अर श्रेयांसनाथ पीछे वासु-

पूज्यका अन्तर चव्वन सागर अर वासुपूज्य पीछे विमलनाथका अन्तर तीस सागर अर विमल पीछे अनन्तनाथका अन्तर नव सागर अर अनन्तनाथ पीछे धर्मनाथका अन्तर चार सागर अर धर्मनाथ पीछे शान्तिनाथका अन्तर सागर तीन तामें पौण पल्य घाट अर शांतिनाथ पीछे कुन्थुनाथका अन्तर आधा पल्य अर कुन्थुनाथ पीछे अरनाथका अन्तर हजार कोडि वर्ष घाट पाव पल्य बहुरि अरनाथ पीछे मल्लिनाथका अन्तर हजार कोडि वर्ष अर मल्लि पीछे मुनिसुव्रतका अन्तर चौवन लाख वर्ष अर मुनिसुव्रत पीछे नमिका अन्तराल छह लाख वर्ष अर नमि पीछे नेमनाथका अन्तराल पांच लाख वर्ष अर नेमिनाथ पीछे पार्श्वनाथका अन्तर पौणा चौरासी हजार वर्ष अर पार्श्वनाथ पीछे महाबीरका अन्तराल वर्ष अढाई सो जब महावीर स्वामी निर्वाण पधारे तब चौथा कालके वर्ष तीन अर साढे आठ मास हुते अर चौथा काल बियालीस हजार वर्ष घाट कोडाकोडि सागरका है अर बियालीस हजार वर्षमें इक्कीस हजार वर्षका पांचवां काल है अर इक्कीस हजार वर्षहीका छठा काल है यह बियालीस हजार वर्ष भये तिनमें पंचम कालके अन्त तक महावीर स्वामीका धर्म है अर छठे कालमें धर्मका अभाव है अर छठेके अन्त पांच भरत पांच ऐरावत इन दश क्षेत्रोंमें प्रलय होय है छठेके अन्त तक अवसर्पिणी काल है आगे उत्सर्पिणी काल लगेगा अर ऋषभदेवसे लेकर पुष्पदन्त तक तो धर्म अखंड चला अर पुष्पदन्त पीछे धर्मका पाव पल्य विच्छेद भया बहुरि शीतलनाथ पीछे आध पल्य अर श्रेयांसके पीछे पौण पल्य अर वासुपूज्यके अन्तरविषैं एक पल्य अर विमलनाथके अन्तरविषैं पौण पल्य अर अनन्तनाथके अन्तरविषैं आध पल्य अर धर्मनाथके अन्तरविषैं पाव पल्य या भांति सात तीर्थंकरनिके अन्तरविषैं चार पल्य धर्मका विच्छेद भया बहुरि अन्तके आठ तिनके अन्तरविषैं धर्म निरन्तर रहा अर पहले तीर्थंकरसे लेय अर सात तीर्थंकरनिके तीर्थविषैं तो केवललक्ष्मी निरन्तर रही अर चंद्रप्रभ अर पुष्पदन्तके तीर्थविषै उन पीछे केवलीनिविषै भये अर शीतलनाथके तीर्थविषै चौरासी अर श्रेयांसनाथके तीर्थविषै बहत्तर अर वासुपूज्यके तीर्थविषै उन

पीछे चवालीस केवली अर विमलनाथके तीर्थविषैं उन पीछे केवली चालीस अर अनन्तनाथके पीछे छत्तीस अर धर्मनाथके पीछे केवली बत्तीस शान्तिनाथके पीछे अठाईस अर कुन्थुनाथके पीछे चौबीस अर अरनाथके पीछे बीस अर मल्लिनाथके पीछे सोलह अर मुनिसुव्रतके पीछे बारह अर नमिनाथ पीछे आठ अर नेमिनाथ पीछे चार अर पार्श्वनाथ पीछे तीन अर वर्द्धमान पीछे तीन भये यह चौबीसों तीर्थंकरोंके तीर्थविषैं उनकूं मुक्ति गये पीछे केवली भये तिनका कथन किया जहां लग दूसरा तीर्थंकर न उपजे तहां लग पहलेका तीर्थ कहिये याही भांति सर्वत्र जनना। महावीर पीछे वासठ वर्षमें तीन केवली भये गौतम सुधर्मा अर जम्बूस्वामी अर इन तीन केवलियों पीछे सौ वर्षमें पांच ग्यारह अंग अर चौदह पूर्वके पाठी भये ॥ ७९ ॥ अर तिन पीछे एक सो तियासी वर्ष पर्यन्त ग्यारह मुनि ग्यारह अंग अर दश पूर्वके पाठी भये अर तिन पीछे दोयसै बीस वर्ष पर्यंत पांच मुनि ग्यारह अंग के पाठी भये अर तिन पीछे एक सौ अठारह वर्ष पर्यंत चार मुनि एक आचारांगके पाठी भये अर महावीरके गणधर ग्यारह तिनकी आयु सुनो। प्रथम गणधरकी आयु वर्ष बाणवें दूसरकी चौबीस तीसरेकी वर्ष सत्तर चौथेकी वर्ष अस्सी पांचवेंकी वर्ष सौ छठेकी वर्ष त्रियासी सातवेंकी पिचाणवे वर्षकी आठवेंकी अठहत्तर वर्ष नवेंकी बहत्तर वर्ष दशवेंकी साठ वर्ष ग्यारहवेंकी चालीस वर्ष ॥ ८३ ॥ यह ग्यारह गणधरोंकी आयु कही अर तीसरे कालमें पल्यका आठवां भाग बाकी रहा तब कुलकर उपजे सो पल्यके आठवें भागमें चौदह भये अर जब तीजेमें तीन वर्ष अर साढे आठ महीना बाकी हुते तब ऋषभदेव मुक्ति पधारे अर चौथे कालके तीन वर्ष अर साढे आठ महीने बाकी रहे तब वर्द्धमान स्वामी मुक्ति पधारे अर भगवानकूं मुक्ति गये पीछे इक्कीस हजार वर्षके पंचमकालमें इक्कीस कलंकी अर इक्कीस अर्द्धकलंकी होंयगे सो पापी धर्मका विघ्न करेंगे अर कुगति जावेंगे ॥

अथानंतर—बारह चक्रवर्तियोंके आयुका विगतवार वर्णन करै हैं प्रथम भरत चक्रवर्तिकी आयु पूर्व चौरासी लाख तामें कुमारकाल सतहत्तर लाख पूर्व अर महा मंडलीक पंद्रह हजार वर्ष अर दिग्विजय साठ हजार वर्ष

अर राज्य एक पूर्व घाट छै लाख पूर्व अर संयमकाल अंतमुहूर्त अर केवल अवस्थामें एक लाख पूर्व अर त्रियासी लाख निन्यानवै हजार नव सौ निन्याणवे पुर्वांग अर त्रियासी लाख नव हजार तीस इतने वर्ष विराजे फिर जगतके शिखर पधारे चौरासीलाख वर्षका एक पूर्वांग अर चौरासी पूर्वांगका एक पूर्व ॥९७॥ अर दूसरा सगर चक्रवर्तिका आयु बहत्तरलाख पूर्व तामें कुमारकाल अर मंडलेश्वरपना पचासहजार पूर्व अर दिग्विजयका काल साठ हजार वर्ष अर राज्यसमय उणहत्तरलाखसत्तरिहजार पूर्व अर सित्यानवैहजार नौसौ निन्याणवें पूर्वांग अर वर्ष त्रियासीलाख अर लाख पूर्व संयमकाल तामें जितने वर्ष तप किया उतने घाट लाख पूर्व केवल अवस्थाके जानो ॥१००॥ अर तीजा चक्रवर्ति मघवा ताका आयु पांच लाख वर्ष तामें कुमारकाल पच्चीसहजार वर्ष अर मंडलेश्वरपना पच्चीसहजार वर्ष अर दिग्विजय दशहजार वर्ष अर राज्य तीनलाख नव्वेहजार वर्ष यह स्वर्गलोक गए॥ २ ॥ अर चौथा चक्रवर्ती सनत्कुमार आयु तीनलाख वर्ष तामें कुमारकाल पचास हजार वर्ष अर मंडलेश्वरपना भी पचास हजार वर्ष अर दिग्विजय दशहजार वर्ष अर राज्यअवस्था नव्वेहजार वर्ष अर संयम एकलाख वर्ष यह स्वर्गलोक गए। पांचवां चक्रवर्ति शांतिनाथ ताका आयु एक लाख वर्ष तामें कुमारकाल पच्चीसहजारवर्ष अर दिग्विजय आठसौ वर्ष अर चक्रवर्तिपद चौबीसहजार दोयसौ वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर समोसरणमें विराजे सोलहवर्ष घाट पच्चीस हजार वर्ष फिर निर्वाण पधारे छठे चक्रवर्ति कुंथुनाथ तिनका आयु पचाणवें हजार वर्ष तामें कुमारकाल पौणा चौवीस हजार वर्ष अर मंडलीकपना हू चौबीस हजार वर्ष अर दिग्विजय छै सौ वर्ष अर चक्रवर्ति पद तेईस हजार डेढसौ अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल अवस्थामें सोलह वर्ष घाट पौणा चौवीस हजार वर्ष ॥६॥ अरनाथ सातवें चक्रवर्ति तिनका आयु वर्ष हजार चौरासी तामें कुमारकाल हजार इक्कीस अर मंडलीकपना भी इक्कीस हजार वर्ष अर दिग्विजय चारसौ वर्ष अर चक्रवर्ति पद बीसहजार छै सौ वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल अवस्थामें सोलह वर्ष घाट इक्कीसहजार वर्ष अर आठवां चक्रवर्ति सुभूम ताका आयु अडसठ हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष हजार

पाच अर दिग्विजय वर्ष पांचसौ अर चक्रवर्ति पद बासठ हजार पांचसौ अर यह बाल्यावस्थामें परशरामके भयसे सन्यासियोंके आश्रममें गोप्य रहे इन्होंने वैराग्य न धारा इसलिए महातमनामा सप्तम पृथिवीविषैं गए ॥ ९ ॥ अर नवमां चक्रवर्ति महापद्म ताका आयु वर्ष हजार तीस तामें कुमारकाल वर्ष पांचसौ अर मंडलीकपना वर्ष पांचसौ अर दिग्विजय वर्ष तीनसौ अर चक्रवर्ति पद अठारह हजार सातसौ वर्ष अर संयमवर्ष हजार दश तामें मुनिपद अर केवलपद आयगया ये मुनिव्रत धर मोक्ष गए अर दशवें चक्रवर्ति हरिषेण ताका आयु छव्वीसहजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष सवा तीनसौ अर दिग्विजय डेढसौ वर्ष अर चक्रवर्ति पदवी पचीसहजार एकसौ पिचहत्तर वर्ष अर संयमकाल वर्ष साढे तीनसौ यामें मुनिपद अर केवलपद आय गया यह मुनि होय मोक्ष पधारे ॥ १३ ॥ अर ग्यारहवां चक्रवर्ति जयसेन ताका आयु वर्ष तीनहजार तामें कुमारकाल अर मंडलेश्वरपना तीनसौ वर्षका जानो अर दिग्विजय वर्ष सौ अर चक्रवर्ति पदवी उन्नीससौ वर्ष अर संयमकाल वर्ष चारसौ यह भी मुनि होय मोक्ष गए अर बारहवां चक्रवर्ति ब्रह्मदत्त ताका आयु वर्ष सातसौ यह श्रीनेमिनाथके पीछे अर पार्श्वनाथ पहले भए इसलिए कुमार काल वर्ष अठाईस अर मंडलीकपना वर्ष छप्पन अर दिग्विजय वर्ष सोलह अर चक्रवर्ति पद छहसौ यह सातसौ वर्ष भए इन जिनदीक्षा न धारी अर राजहीमें मरकरि सुभूमकी जगह सातमी धरा पधारे ॥१५॥ यह बारह चक्रवर्तियोंका बर्णन किया इनमें आठ मोक्ष गए सिद्ध भए अर दोय स्वर्ग गए अर दोय अधोलोक गए सो भी कई एक भवधर शिवपुर पधारेंगे ॥

अथानंतर—अर्द्ध चार्क्रियोंका कथन करे हैं पहला वासुदेव त्रिपृष्ट अर पहिला बलिभद्र विजय यह दोनों परमस्नेही वासुदेवका आयुवर्ष लाख चौरासी तामें कुमारकाल वर्ष हजार पच्चीस अर दिग्विजय वर्ष हजार अर राज्य त्रियासीलाख चौहत्तर हजार वर्ष ॥ १८ ॥ अर दूसरा वासुदेव द्विपृष्ट ताका आयु बहत्तर लाख वर्ष सो अचल नामा बलभद्रका भाई परम स्नेही तामें पच्चीसहजार वर्ष कुमारकाल अर इतने ही मंडलीक पदके अर

दिग्विजयके वर्ष सौ अर वासुदेव पद इकहत्तर लाख उणचास हजार नवसौ वर्ष अर तीजा वासुदेव स्वयंभू ताका आयूवर्ष सांठ लाख कछू घाट सौ वर्ष धर्म नामा बलिभद्रका छोटा भाई परम स्नेही ताका कुमारकाल पच्चीससौ वर्ष अर इतने ही वर्ष मण्डलीकपना अर दिग्विजय वर्ष नव्वे अर राज्यपद उणसठलाख चौहत्तरहजार नवसौ दश वर्ष ॥ २२ ॥ अर चौथा वासुदेव पुरुषोत्तम सुप्रभनामा बलिदेवका छोटा भाई ताका आयु तीसलाख वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष सातसौ अर मण्डलीक पद तेरह सौ वर्ष अर दिग्विजय वर्ष अस्सी अर राज्यपद उणतीसलाख सत्याणवें हजार नवसौ बीस वर्ष अर पांचवां वासुदेव पुरुषसिंह सुदर्शन नामा वलिदेवका छोटाभाई ताका आयु वर्ष लाख दश तामें कुमारकाल वर्ष तीनसौ अर मंडलीक पद वर्ष एक सौ पच्चीस अर दिग्विजय वर्ष सत्तर अर राज्य अवस्था नवलाख निन्याणवें हजार पांचसौ तीस वर्ष ॥ २६ ॥ अर छठा पुण्डरीकनामा वासुदेव नंदी नामा बलदेवका लघुवीर महाधीर ताका आयु वर्ष हजार पैंसठ तामें कुमारकाल वर्ष अढाई सौ अर मंडलीकपद अढाई सौ वर्ष अर दिग्विजय वर्ष साठ अर तीन खंडका राज चौंसठ हजार चारसौ चालीस वर्ष अर दत्त नामा सातवां वासुदेव छोटा भाई नन्दिषेण बलदेव ताकी आयु बत्तीस हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष दोयसौ अर मंडलीकपद वर्ष पचास अर दिग्विजय भी वर्ष पचास अर ताका राज्यपद इकतीस हजार सातसौ वर्ष अर आठवां वासुदेव लक्ष्मण सो राम वलदेवका छोटाभाई ताकी आयु वर्ष हजार वारह तामें कुमारकाल वर्ष सौ अर दिग्विजय वर्ष चालीस अर राज्यपद ग्यारहहजारआठसौ साठ वर्ष ॥ ३१ ॥ अर नवमा कृष्णनामा वासुदेव पद्मनामा बलदेवका छोटाभाई ताका आयु वर्ष हजारएक तामें कुमारकाल वर्ष सोलह अर मंडलीकपद वर्ष छप्पन अर दिग्विजय वर्ष आठ अर वासुदेव पदका राज्य वर्ष नवसौ वीस ॥ ३२ ॥ यह वासुदेवोंका वर्णन किया ॥

अथानन्तर—एकादश रुद्र तिनकी आयु काय और समय कहे हैं पहला भीमावली नाम रुद्र श्रीऋषभदेवके समय भया ताका आयु त्रियासी लाख पूर्व अर शरीर पांच सौ धनुष ऊंचा भया ॥ १ ॥ अर दूसरा यतिशत्रु

नामा रुद्र दूसरे तीर्थंकर अजितनाथके समय भया ताकी आयु इकहत्तर लाख पूर्व अर शरीर साढे चार सौ धनुष ऊंचा था ॥ २ ॥ अर तीसरा रुद्र नामा रुद्रनिमें तीर्थंकर पुष्पदंतके समय भया ताका आयु दोय लाख वर्ष अर शरीर सौ धनुष ऊंचा है ॥ ३ ॥ अर चौथा विश्वानल नामा रुद्र श्री शीतलनाथके समय भया ताका आयु लाख पूर्व अर शरीर नव्वे धनुष ऊंचा अर पांचवां सुप्रतिष्ठित नामा रुद्र श्रेयांसके समय भया ताका आयु चौरासी लाख वर्ष अर शरीर अस्सी धनुष ऊंचा अर छठा अचल नामा रुद्र श्री वासुपूज्यके समय भया ताका आयु साठ लाख वर्ष अर शरीर सत्तर धनुष ऊंचा अर सातवां पुण्डरीक नामा रुद्र श्रीविमलनाथ स्वामीके समय भया ताका आयु पचास लाख वर्ष अर शरीर साठ धनुष ऊंचा ॥ २५ ॥ अर आठवां अजितधर नामा रुद्र श्रीअनन्तनाथ स्वामीके समय भया ताका आयु वर्ष लाख चालीस अर शरीर अठाईस धनुष ऊंचा अर नवमां अजितनाथ नामा रुद्र श्रीधर्मनाथके समय भया ताका आयु वर्ष लाख पचीस अर शरीर तेतालीस धनुष अर दशवां पीठ नामा रुद्र श्रीशांतिनाथके समय भया ताका आयु वर्ष लाख एक अर शरीर चौवीस धनुष ऊंचा अर ग्यारवां सात्विकी तनय नामा रुद्र श्रीमहावीर स्वामीके समय भया ताका आयु उनहत्तर वर्ष अर शरीर सात हाथ ऊंचा सबही एकादश रुद्र ग्यारह अंग अर दश पूर्वके पाठी हैं अर क्रोधरूप हैं स्वभाव जिनका इन ग्यारहके तीन समय एक कुमारकाल अर एक संयम काल ॥ ४२ ॥ तामें चार रुद्रोंका संयमकाल अधिक अर दोयका संयमकाल अर कुमारकाल समान अर सातवें आठवे नवमें रुद्रका कुमारकाल अधिक अर संयमकाल न्यून अर दशवेंका संयमकाल अधिक अर ग्यारहवेंके वर्ष उणहतर तामें कुमारकाल बरस सात अर संयमकाल वर्ष अठाईस अर संयम से च्युत हुवे पीछे असंयमकाल वर्ष चौंतीस ॥ ४५ ॥

अथानन्तर-नव नारद ते ब्रह्मचर्यके धारक बलिभद्र नारायणके परम मित्र वासुदेव समान है आयु अर काय जिनकी तिनके नाम कहे हैं पहला नारद भीम, दूसरा महाभीम, तीसरा रुद्र, चौथा महारुद्र, पांचवां

काल, छठा महाकाल, सातवां चतुर्मुख, आठवां नरवक्र, नवमां उन्मुख। यह नव नारदोंके नाम कहे सो बलदेवके समय ही होय हैं अर भगवान महावीर स्वामीकूं मुक्ति गये पीछे छह सौ पांच वर्ष भये तब राजा वीर विक्रमादित्य भया ॥ ५० ॥ अर भगवान पीछे हजार वर्ष गये कलंकी भया या भांति पंचमकालमें कलंकी अर अर्द्धकलंकी ब्यालीस होंवेगे यह सब अव सर्पिणीकालका कथन किया।

अथानन्तर—उत्सर्पिणीकालके तीर्थंकरोंका व्याख्यान करे हैं इस पंचमकाल पीछे छठा दुखमादुखमा काल होयगा ताके अन्त प्रलयकाल होयगा सो छठा कालके अन्त अवसर्पिणी तो पूर्ण होयगा अर आगे उत्सर्पिणी लगेगी सो प्रथम ही फिर छठा काल सो उत्सर्पिणीका पहला काल है ताकी रीत छठेकालकीसी परन्तु इस छठे कालमें आयु कायकी घटती अर तामें बढती इकीस हजारका यह फिर छठाकाल भी व्यतीत होयगा ता पीछे उत्सर्पिणीका दूसरा काल सो फिर पंचमा कहिये सो भी इकीस हजार वर्षका होयगा ताके बीस हजार वर्ष तक तो महा पुरुष न उपजेंगे अर जब वा पंचमें कालके एक हजार वर्ष रहेंगे तब उत्सर्पिणी कालके कुलकर चौदह, हजार वर्षमें होवेंगे तिनके नाम पहला कनक, दूजा कनकप्रभ, तीजा कनकराज, चौथा कनकध्वज, पांचवा कनकपुंगव, यह पांच तो सोलह पानीके स्वर्णके समान वर्णके धारक होवेंगें अर नलिन अर नलिनप्रभ, नलिनराज, नलिनध्वज, नलिनपुंगव यह पांच कमलदल समान वर्णके धारक होंवेंगे अर ग्यारहवां पद्मप्रभ, वरहवां पद्मराज, तेरहवां, पद्मध्वज, चौदहवां पद्मपुंगव। यह चौदह कुलकर पुनः पांचवेके अन्त ही होवेंगे वहुरि चौथाकाल लगेगा सो ब्यालीस हजार वर्ष घाट कोडाकोडी सागरका तामें चौवीस तीर्थंकर होवेंगे तिनके नाम--महापद्म १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वात्मभूत ५, देवदेव ६, प्रभोदय ७, उदंक ८, प्रश्नकीर्ति ९, जयकीर्ति १०, सुव्रत ११, अरनाथ १२, पुण्यमूर्ति १३, निःकषाय १४, विपुल १५, निर्मल १६, चित्रगुप्त १७, समाधिगुप्त १८, स्वयंभू १९, अनिवर्तक २०, जय २१, विमल २२, दिव्यवाद २३, अनंतवीर्य २४ यह चौवीस तीर्थेश्वर महा धैर्यादि गुणके धारक होवेंगे।

अथानंतर—आगामी बारह चक्रवर्तियोंके नाम सुनो—भरत १, दीर्घदत्त २, जयदत्त ३, गूढ़दत्त ४, श्रीषेण ५, श्रीभूत ६, श्रीकांत ७, पद्म ८, महापद्म ९, चित्रावाहन १०, विमलवाहन ११, अरिष्टसेन १२, यह बारह चक्रवर्ती कहे।

अथानन्तर—आगामी नव नारायण होवेंगे तिनके नाम सुनो। नन्दी १, नन्दीमित्र २, नंदिन ३, नंदिभूत ४, महाबल ५, अतिवल ६, भद्रवल ७, द्विपृष्ट ८, त्रिपृष्ट ९। यह नव नारायण होवेंगे अर नव बलभद्र होंहिंगे तिनके नाम कहै हैं ॥ ६६ ॥ चंद्र १, महाचंद्र २, चंद्रधर ३, सिंहचद्र ४, हरिश्चंद्र ५, श्रीचंद्र ६, पूर्णचंद्र ७, सुचंद्र ८, वालचंद्र ९। यह नवों बलभद्र चंद्रमा समान कांतिके धारक होवेंगे।

अथानंतर—आगामी नव प्रतिनारायण होवेंगे तिनके नाम कहै हैं श्रीकंठ १ हरिकंठ २ नीलकंठ ३ अश्वकंठ ४ सुकंठ ५ सिषिकंठ ६ अश्वग्रीव ७ हयग्रीव ८ मयूरग्रीव ९ यह नव प्रतिहरि होवेंगे।

अथानंतर—आगामी ग्यारह रुद्र होवेंगे तिनके नाम कहै हैं—प्रमद १, संमद २, हर्ष ३, प्रकाश ४, कामद ५, भव ६ हर ७ मनोभव ८ मारण ९ काम १० अंगज ११ यह आगामी ग्यारह रुद्र कहे यह सब ही पुरुष निर्वाणके पात्र हैं तीर्थंकर कामदेवादि तो तद्भव मोक्षगामी ही हैं अर बलभद्र मोक्षगामी होहैं अर कईएक देवलोकके सुख भोग शीघ्र ही शिवपुर पावेंगे और अन्य यह सब ही भव्य कई एक भवका पार पावे हैं यह सबही जिनभाषित तपधर सिद्धपद पावेंगे यह शलाका पुरुष पुरुषनिमें उत्तम हैं अर रत्नत्रयकरि पवित्र हैं अंग जिनके ॥ ७१ ॥ एक अंतर्मुहूर्त भी सम्यक्तकूं पाय जो सम्यक्त्वसे च्युत होय हैं सो भी शीघ्र मुक्तिका कारण है अर जिनका जन्म ही रत्नत्रयकी प्राप्ति करि पवित्र भया है तिनकूं क्या कहना वह तो मुक्तिके पात्र हैं। रत्नत्रय मोक्षका कारण है ॥ ७५ ॥ याभांति तीनकालका है निरूपण जिनमें अर सकल महा पुरुषोंकी है कथा जिनमें ऐसे नेमनाथ प्रभुके वचन कानोंको सुखदाई तिनकूं एकाग्रचित सुनकरि वलदेव अर वासुदेव आदि समस्त यादव नरेंद्र अर इन्द्र, चन्द्र सूर्यादि सकल देव भगवानकूं नमस्कारकरि तत्वबोध हृदयमें धारि अपने अपने स्थानक गये ॥ ७२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ त्रिशष्टिपुरुषजिनांतरवर्णनोनाम पष्टितमः सर्गः ॥ ६० ॥

अथानंतर—राजा श्रेणिकका अभिप्राय जानकर गौतम गणधर गजकुमारका चरित्र जगतकरि नमस्कार करने योग्य कहते भए। हे राजा श्रेणिक! गजकुमार श्रीनेमनाथके मुख सकल जिनेश्वर चक्रेश्वर अर बलिदेव वासुदेव आदि सब महा पुरुषनिका चरित्र सुनकरि तत्काल सकल मातृपितृ भ्रातृवर्गोंको तजकरि जिनेंद्रके चरणका शरण धारते भए। कैसे हैं वह गजकुमार संसारतैं भयभीत हैं भाव जिनके अर प्रभुके महा भक्त हैं प्रभुकी आज्ञा पाय दिगम्बरी दीक्षा धार महातप करते भए अर राजानिकी पुत्री जिनसे इनकी सगाई भई हुती सो सब पतिका वैराग सुन आर्यकाके व्रत धारती भईं और एक सोमशर्मानामा ब्राह्मण ताकी पुत्री गजकुमार परणे हुते सो विप्र क्रोधरूप अग्निकरि प्रज्वलित भया आधी रात जहां गजकुमार स्वामी अकेले प्रतिमा योगधर तिष्ठे हुते सकल परीषहके सहनहारे तहां वह ब्राह्मण गया अर स्वामीके सिरपर अग्नि प्रजाली ताही समय स्वामीने क्षपकश्रेणीका प्रारंभ किया सो शुक्लध्यानधरि कर्मनिका अंतकरि तत्काल केवल पाय मोक्ष गए श्रीनेमनाथके तीर्थविषैं अंतकृत-केवली भए ॥७॥ इनकी निर्वाण पूजा अर केवल यह दोनों कल्याणक एकही साथ देव करते भए सुर असुर यक्ष किन्नर गंधर्व महोरग आदि सब जातिके देव गजकुमारका कल्याणक करते भए ॥ ८ ॥ अर सब यादव गजकुमारका मरण सुनि अत्यंत दुखकूं प्राप्त भए ताही समय समुद्रविजयकूं आदि देय दश भाई तिनमें वसुदेव बिना नवों भाई मोक्षके अभिलाषी जिनदीक्षा धारते भए अर नवों भाईनिकी सबही रानीमाता शिवदेवीकूं आदि देय आर्यका भई अर देवकी अर रोहिणीके सिवाय बाकी वसुदेवकी सब राणी आर्यका भईं अर कृष्णकी पुत्री हू आर्यका भईं ॥१०॥ बहुरि सुर नर सबनिकरि पूजिवे योग्य भगवान नेमजिनेंद्र अनेक देशोंविषैं विहार करते भए अर उत्तर दिशिके अर दक्षिण दिशिके अर पूर्व पश्चिम दिशाके अनेक नृप शार्दूल संबोधे अर मध्यदेशके अनेक राजा संबोधे बहुरि विहारकरि गिरनार गिर आए अर समोशरणविषैं विराजे ता समय जिनेंद्रके दर्शनकूं सकल देवोंके इंद्र आए अर स्तुतिकरि नमस्कारकरि अपने अपने स्थानक बैठे अर वसुदेव बलिदेव

वासुदेव अर प्रद्युम्न आदिके कृष्णके पुत्र अर देवकी रोहिणी आदि वसुदेवकी राणी अर वलदेव वासुदेवकी राणी सब यादवनिकी राणी सबही दर्शनकूं आईं अर द्वारकाकी वस्तीके लोक आए ॥ १५ ॥ इत्यादि सब ही भाव सहित शिवदेवीके नन्दनकी बन्दनाकूं आये सो अपने अपने स्थानक वैठे तहां भगवान् धर्मका निरूपण करते भये ता समय अवसर पाय भगवान्कूं नमस्कारकरि पद्मनामा वलिभद्र हलका है आयुध जिनके सो हाथ जोड सीस नवाय नमस्कार कर पूछते भये हे नाथ ! यह द्वारिकापुरी कुवेरने निर्मापी है सो अव ताकी कितने वर्ष स्थिति है जो वस्तु कृत्रिम होय सो विनशे यह पुरी काल पाय सहज ही विलय होवेगी या किसीके निमित्तसे विनशेगी अर वासुदेवका परलोक कौन कारण कर होयगा महा पुरुष है तिन्होंका यह शरीर रहे नाहीं । हे प्रभो ! मेरे संयमकी प्राप्ति कव होयगी मेरे अर जगतका ममत्व तो अल्प है एक भाईके स्नेहकरि बंधा है या भांति हलधर ने जिनवरकूं पूछा तव भगवान् सर्वज्ञ हलधरकूं कहते भये । हे महाभव्य ! हे राम ! यह पुरी वारहवें वर्ष द्वीपायननामा मुनिकरि भस्म होयगी उन्मत्तताके योगकरि यादवनिके कुमार द्वीपायनकूं क्रोध उपजावेंगे ॥ ३३ ॥ अर महाभाग जो कृष्ण तिनका कौसांवीनामा वनविषैं सूतेका जरत्कुमारके वाणकरि परलोक होयगा जन्म मरणके निश्चयका कारण तो जगतविषैं रागद्वेषादि भाव हैं अर जव प्रतापका क्षय होय है तव बाह्य कारण भी अनेक मिले हैं ॥ २५ ॥ इसलिये जो ज्ञानी वस्तुका स्वभाव जानै हैं सो प्रतापविषैं हर्ष न करैं अर नाशविषैं विषाद न करैं यह विवेकीनिकी रीति है अर तुमकूं वासुदेवके वियोगका अति संताप होयगा बहुरि प्रतिबुद्ध होय भगवति दीक्षा धारोगे सो महा तपकरि पांचवें ब्रह्मस्वर्ग देव होवोगे । बहुरि नरभव पाय निरंजन पद पावोगे यह वार्त्ता सुनि द्वीपायन रोहिणीका भाई वलभद्रका मामा तत्काल जिनदीक्षा धारता भया अर विहार कर गया बारह वर्ष पूर्वकी दिश रहा तपकरि शरीर क्षीण किया अर कषाय भी मंद पडी ॥ २९ ॥ अर जरत्कुमार अपने वाणकरि हरिका परलोक जान अति दुखी भया अर सब कुटुम्बकूं तजकरि ऐसा दूर गया

जहां हरिका दर्शन न होय जरत्कुमार हरिके स्नेह करि अति व्याकुल होय अकेला दूर वनमें गया सो वनके जीवनिकी न्याईं बन विषै विचरै हरि ही है प्राण जिसके सो यह दोनों तो दिशांतर गये अर सब यादव भगवानकूं नमस्कारकरि द्वारावतीमें गये। होनहार जो दुःख ताकी चिन्ताकरि संतप्त है मन जिनके ॥ ३३ ॥ अर द्वारावती जिन धर्मियोंकी पुरी महा दयाधर्मकी भरी तहां मद्यमांसका प्रयोजन कहां तहां बलदेव वासुदेवका राज वहां कुवस्तुकी चर्चा कहां परन्तु कर्मभूमि है कोई एक पापी गोप्य करता होय यह विचार बलदेव वासुदेवने पुरीविषैं घोषणा करी जो मद्य अर मांसकी सामग्री कोई न राख सके जाके यह सामग्री होय सो शीघ्र ही नगर बाहर जाय डाल आवो जो राखेगा सो दंड योग्य होयगा यह आज्ञा सुनि जिनके घरमें छुपा मद्य हुता अथवा मद्यकी सामग्री हुती सो नगर बाहर कदम्ब नामा बन विषै डारी सो सूक करि पाषाण समान होय गई ॥ ३६ ॥ वहुरि वासुदेव द्वारकाविषै नर नारियोंको सब हीको वैराग्यकी आज्ञा कही यह घोषणा पुरीमें फिरी जो कृष्णकी यह आज्ञा है मेरा पिता अर माता अर भ्रात बंधु पुत्र स्त्री पुत्री जो वैराग्य धरे सो शीघ्र धरो मेरे राज लोक अथवा भाईनिके राजलोक अर नगरके लोक नर नारी जो जिनदीक्षा लेय अर तप आचरे सो शीघ्र आचरो मैं किसीको मने न करूं यह आज्ञा हरिकी सुनि करि हरिके पुत्र प्रद्युम्न भानुकुमार आदि चरमशरीरी अर अन्य हू बहुत परिग्रह तज मुनि होते भए अर हरिकी रुक्मिणी सत्यभामा जांबवंती आदि आठोंही पटराणी अर राजोंकी राणी सहित अर सोलह हजार हरिकी राणी इनकी सौत तिनमें कईएक सहित हरिकी आज्ञातैं जिनदीक्षा धारती भई द्वारिकाके पुरुष तो मुनि भए अर स्त्री बहुत आर्यका भई माधवने सबोंको यही कही जो संसार समान और समुद्र नाहीं अति गंभीर है अर वीतरागके मार्ग समान अर कोई जहाज नाहीं अर श्रीनेमनाथ समान अर कोई सार्थवाह नाहीं इसलिए संसारकूं असार जान श्रीनेमिनाथका शरण लेवो अर मेरे वैराग्यका उदय नाहीं है अर बलदेवके भी मेरे मोह करि मुनिव्रत नाहीं यह मेरे पीछे मुनिव्रत धारेंगे इसलिए मेरे सबही भाई यादव अर अन्य

वंशके राजा हमारे संगा अर सबही प्रजा जगतका संबंध छोड जिनराजका धर्म आराधो अर श्रावकके व्रत धारो या भांति वासुदेवने आज्ञा करी सो बहुत वैराग्य धारते भए अर कई श्रावक भए अर सिद्धार्थनामा सार्थी ताने बलदेवसे आज्ञा मांगी तब वलदेवने उससे यह प्रार्थना करी जो तुम वैराग्य धारोगे परन्तु जब मुझे कृष्णके वियोगका संताप उपजै तब तुम देवलोकसे आयकर मुझे संबोधियो सो वचन उसने प्रमाण किया अर अनेकनरनारी नेमनाथके निकट व्रत धारते भए ॥

अथानन्तर—महा संघ सहित भगवान पल्लव नामा देशकी ओर विहार किया भव्यरूप कमलनिकों प्रफुल्लित करणहारे जिनरवि धर्मका उद्योत करते भये ॥ ४२ ॥ अर द्वारकाके लोक नगरकी वस्ती छोड बन विषैं जाय वसे हुते अर व्रत उपवास पूजा दानविषैं तत्पर हुते सो बारह वर्षकी गणना भूल गये अर बारह वर्ष बीते जान पहले ही नगर भीतर आय बसे अर द्वीपायन रोहिणीका भाई मुनि होय विदेशविषैं विहारकर गया हुता सो भ्रांतिसे बारह वर्ष बीते जान पहले ही द्वारका आया सो मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मनमें ऐसी जानता भया जो भगवान भवितव्य कहा हुता सो निवृत्त भया। यह विचार द्वारकाके बाहर गिरिके निकट आतापन योगधरि कायोत्सर्ग मांड्या ॥४७॥ अर कृष्णका पुत्र संबुकुमार ताहि आदि देय कईएक यदुकुमार वनक्रीडाकूं गएहुते सो खेदखिन्न भए अर जलकी तृषा अधिक उपजी सो ता बनविषैं कदंबनामा कुंडविषै जो मदिरा पहिले गिरी हुती सो सूक गइ वा वामें जल वर्षा हुता अर कुंडके तट महुवाके वृक्ष हुते तिनके फल उस कुंडके जलमें गिरे अर ग्रीष्मकी उष्णकरि जलमें उष्ण भए सो वह जल सब मदिरा समान होय गया सो तृषाकरि पीडित यादवकुमार तिन्होंने छाणकर पीया वह कदंबवनका जल सो ही भया कादंबरी कहिए मदिरा ताहि पीयकरि यदुकुमार विकारकूं प्राप्त भए ॥ ४९ ॥ वह मदिरा जो पूर्वे कुंडमें डारी सो यद्यपि पुराणी हुती तथापि परिपाकके वशसे नवीन नारीकी न्याई उनकूं उन्मत्त करती भई इनके नेत्र अरुण होयगए अर बावरे भए कुछका कुछ बकैं भंड-

गीत गावैं अर नाचैं जिनके चरण डिगे सिरके केश विखर रहे अर कंठविषैं बनमाला हुती सो विखर गई ॥६१॥ याभांति बेंडे भए नगरीमें आवते हुते सो मार्गमें द्वीपायनकूं देखकरि घूर्णमान है नेत्र जिनके ऐसे ये यदुकुमार परस्पर बतलाए यह द्वीपायन जिनकरि द्वारकांका अंत होनहार हुता सो अब यह देखें हमसे बचकर कहां जायगा ऐसा कहकरि सबही निर्दई पाषाणोंकरि तपस्वीकूं मारते भए सो बहुत मारा ऐसा किया जो तपस्वी पृथिवीमें पडा अर तपसीकूं अधिक क्रोध उपज्या भौंह चढाई अर होंठ डसे अर यादवनिके प्रलयके वास्ते उद्यम किया तब यह यदुकुमार भागकरि द्वारावतीमें आए चलाचल हैं चित्त जिनके सो यह समाचार किसीने बलदेव अर वासुदेवकूं कहे जो कुमारोंने यह विपरीत करी तब दोनों भाई सुनकरि मुनिसे क्षमा करावनेकूं शीघ्र ही मुनि पै गए। छत्र चवंर सिंहासन सर्व सेना तजकरि उसपर गए वह क्रोधरूप अग्निकरि प्रज्वलित हुता क्लेशरूप है बुद्धि जिसकी वक्र है भ्रकुटी जिसकी विषम है मुख जाका अर निरखैं न जाय हैं नेत्र जाके अर कंठगत हैं प्राण जाके महा भयंकर दीपायन दोऊ भाईनिने देख्या अर हाथ जोड नमस्कारकरि नगरीका अभयदान मांगा। हे साधु! रक्षा करो रक्षा करो इस तपका मूल क्षमा है अर क्रोधरूप अग्निकरि तपका नाश होय है यह क्रोध धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थोंका शत्रु है अर आपका अर परका नाशक है मोक्षका साधन जो तप ताहि क्षण-मात्रमें भस्म करै है यातैं इन मूढ प्राणियोंकी मूढ चेष्टा क्षमा करहु अर हम पर प्रसन्न होवो याभांति प्रिय वचनों करि दोऊ भाईनिकरि संयुक्त जो द्वारिका ताके दाहविषैं निश्चय किया ॥६४॥ अर वानैं दोय आंगुली ऊंची करी जो तुम दोय भाई बचोगे और नाहीं ॥६०॥ तब इन दोऊ भाईनिने जानी सबका नाश आय लगा यह खेद खिन्न होय द्वारिकापुरी आए अर अब क्या करिए या चिंताविषैं तत्पर भये ॥६६॥ ताही समय संबुकुमार आदि अनेक यादव कुमार चरमशरीरी अर स्वर्गके जानहारे नगरीसे निकस गिरोंकी गुफाविषैं गए अर द्वीपायन मिथ्यादृष्टि क्रोधरूप अग्निकरि साक्षात् अग्निकुमार स्वरूप होय पुरीकूं भस्म करता भया रौद्रध्यानकरि वानैं विचारी मैं तपसी निरपराध

मुझे इन्होंने मारा सो इन हिंसकोंको पुरी सहित भस्म करूं ऐसा विचार वानैं किया जब द्वारिकाविषैं क्षयका कारण उत्पात भए घर घर सबनिके रोमांच होय आये अर पहली रात्रि अति भयंकर स्वप्न लोकनिने देखे वह पापी क्रोधी तिर्यंच मनुष्योंकरि भरी जो द्वारकापुरी ताकूं दग्ध करता आरम्भता भया सो प्राणियोंके समूह अग्निविषै जले सो जलते प्राणी विलाप करते भये तिनका विपरीत शब्द ऐसा भया जैसा कभी न भया ॥७४॥ अग्निकी ज्वालाविषैं बाल बृद्ध स्त्री पशु पक्षी सब भस्म होने लगे। यहां कोई प्रश्न करै यह महापुरी देवोंने रची अर जाके अनेक देव सहाई सो कहां गये ताका समाधान भवितव्यता दुर्निवार है जब यह होनहार भया तब देव परे गये जो देव न जाय अर उनकी रक्षा होय तो पुरी कैसे जले सो जलनेका समय आया तब देव उठ गये अर सब लोक बैरीके भय करि बलभद्र नारायण पर आये अति व्याकुल भये यह कहते भये जो हमारी रक्षा करहु जब बलभद्र नारायण कोटकूं भेदकरि समुद्रका जल बुझाने विषै लाने लगे सो जल तैलके भावकूं प्राप्त भया ता करि अग्नि अधिक प्रज्वलित भई बलभद्र महा बलवान समुद्रका जल हलकीय अणीसे खैंचा अर पुरमें लाये सो उलटा अग्निकूं प्रज्वलित करता भया तब दोऊ भाई असाध्य जान मातापिताकूं काढवेके उद्यमी भये सो रथमें बैठाये अर रथके घोडे जोये सो न चाले अर हाथी भी न चाले पृथवीविषै रथके पाये ऐसे फसे जैसे कीचमें फंसे तब आप दोऊ भाई हाथी घोडोंसे रथ न चाले देख दोऊ भाई जूपे अर लेकर चले तो भी रथ चाल न सक्या मानों बज्रकरि कीला है जब बलदेव जोर करने लगे तब द्वारके कपाट स्वयमेव जुड गये तब दोऊ भाईयोंने लातोंकी घातकरि कपाट तोडे ता समय आकाशमें देवबाणी भई जो द्वारका ते दोऊ ही निकसेंगे और नाहीं ॥ ८४ ॥ अर मातापिताओंने कही तुम जावो हमारा मरण निश्चय है, पुत्र हो ! तुम वंशके तिलक हो तुम जीवोगे तो सब होवेगा अर गमन यहांसे एक पेंड न होय सकै ॥ ८ ॥ तब यह दोऊ भाई माता पिताओंके पांयन पड उनकूं प्रणामकरि उनकी आज्ञा पाय चाले पुरी ते निकस बाहर गये सो कैसा देख रत्नमयी नगरी जले है घर घर

आग लग रही है तब दोऊ भाई कंठतैं कंठ लगाय रुदन करते भये अर दक्षिण दिशिकूं निकले अर तहां वसुदेव आदि अनेक यादव अर उनकी राणी प्रायोपगमन सन्यासधारी देवलोककूं गये अर केयक वलदेवके पुत्रादिक तद्भव मोक्षगामी हुते अर संयम धरनेके जिनके भाव भये तिनकूं देव नेमनाथके निकट ले गये अर अनेक यादव अर उनकी राणी जो धर्मध्यानके धारक हुते अर सम्यग्दृष्टि हुते जिनका अंतरंग शुद्ध हुता तिनि प्रायोपगमन संन्यास धारें सो उनको अग्निका उपसर्ग आर्त्त रौद्रका कारण न भया अर वह धर्मध्यानतैं देह तजि देवलोक गये। चार प्रकारका उपसर्ग है देवकृत, मनुष्यकृत, तिर्यंचकृत अर स्वयमेव उपजा यह चार प्रकारके उपसर्ग मिथ्यादृष्टि जीवनिकूं तो आर्त्तध्यान अर रौद्रध्यानके कारण हैं अर सम्यग्दृष्टि जीवोंको कदापि कुभावके कारण नाहीं, जो सांचे जिनधर्मी हैं तिनका मन मरण आये कायर न होय किसी भांति मरण होय अर किसी समय होय उनके दृढता ही है अर अज्ञानी जीवनिके मरण समय क्लेश सबोंके होय है तातें कुमरणकर कुगति जाय हैं अर जो सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध हैं अर महा पवित्र है मन जिनके सो समाधिमरणकर स्वर्ग पावैं बहुरि परंपराय मोक्ष पावैं जो जिनधर्मी हैं तिनके यही भावना है संसारविषैं उपजा है सो अवश्य मरेगा यह निश्चय है तातैं हमारे समाधिमरण हूजियो। जो उपसर्ग भी आय बने तो भी हमारे कायरता न हूजियो यह भावना सम्यग्दृष्टियोंके सदा रहै है ॥ ९४ ॥ धन्य है वह पुरुष जो अग्निकी शिखाके समूहकरि भस्म होते हुये भी समाधिकूं नाहीं तजै हैं अर कलेवरकूं तजे हैं जो तप करना तो निज परके सुखके अर्थि अर सत्पुरुषनिका जीवना है सोऊ निज परके कल्याणकके अर्थि है अर मरण समय भी किसीपर द्वेष न चिंतवें क्षमाभावतैं देह तजैं यह संतनिकी रीति है अर द्वीपायन तैंने तप भी बिगाडा अर मरण भी बिगाडा अपना नाश किया अर अनेक जीवनिका प्रलय किया सो दुष्ट निज परकूं दुःखदायी भया जो पापी पराया बध करै है सो जन्म जन्मविषैं अपना घात करै है ॥ ९७ ॥ कषायोंके वश भया तब आत्मघाती होय चुका पराया घात कर

सकै अथवा न कर सकै उनका घात तो उनके प्रारब्धके अनुसार है अर याने उनका घात विचारा तब यह आत्मघाती होय चुका अर जीवहिंसाका पाप इसे लग चुक्या। दूसरेकूं हतूं ऐसे भाव करना सो जलते लोहेके गोलेकूं उठाय दूसरेकूं मारना है सो वह तो मरे अथवा न मरे यह तो जल ही चुका सो जो कषायोंके वश भया सो आत्मघाती है। काहूकूं तो तप निर्वाणका कारण होय है अर द्वीपायनकूं तप दीर्घ संसारका कारण भया यह जीव अनादि कालका कर्मनिके वश है सो याके अपराध कहां तक कहिये संसारी जीव तो अपराधी ही है परंतु जो विवेकी हैं तिनकूं मोह वैरी मोहित करै है कोई क्रोधका भरा अपना बुरा भी करे उसका भी सत्पुरुष भला ही करै वह लोक परलोक दोनों सुधारै जो कोई पर जीवकूं दुःख करै है सो आप दुःखकी परंपराय भोगवे है जो परजीवकूं दुःखी करै है ताके दुःख अवश्य उपजै यातैं क्षमा ही करना ॥ ३ ॥ क्रोधकरि अंध जो द्वीपायन तापस ताने भवतव्यताके वशकरि द्वारावती भस्म करी जहां बाल वृद्ध स्त्री अर पशु बहुत भस्म भए वह पुरी जीवनितैं भरी हुती सो छै महीने तक जलती रही यातैं धिकार या क्रोधकूं यह क्रोध आप अर परका नाश करनहारा है अर संसारका बढावन हारा है द्वीपायनने जिनवाणीश्रद्धा उल्लंघि ऐसा तीव्र क्रोध किया सो धिकार या क्रोधकूं अर अज्ञानी जीवनिकूं जो क्रोध मान, माया, लोभ, मद, मनोज इनके वश परि नरक निगोदविषैं महा दुःख भोगे है ॥ १०५ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वारावतीविनाशवर्णनो नाम एकषष्ठितमः सर्गः ॥ ६१ ॥

अथानन्तर — गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं। हे श्रेणिक ! यह बलदेव वासुदेव बडे पुरुष मनुष्योंके वचनसे अगोचर है महिमा जिनकी सो पुण्यके योगतैं परम उच्चताकूं प्राप्त भये हुते अर सुदर्शनचक्र आदि अनेक महा रत्न इनके हुते सो भरतक्षेत्रके भूपति पुण्यके क्षयतैं रत्नोंसे रहित भये बन्धुवर्गतैं वर्जित भये प्राण-

मात्रही है परिवार जिनके सो दोऊ वीर महाधीर शोकके भारकरि पीडित जीनेकी आशा धरि दक्षिणकी ओर चाले। पांडवोंको दक्षिण मथुरा जान उनहींके पास दोऊ भाई चाले ॥ ३ ॥ मार्गमें एक हस्तवप्रनामा नगर तहां आये सो हरि तो नगरके बनमें विराजे अर हलधर भोजनके अर्थि सामग्री लेवेकूं नगरमें गये वस्त्रसे लपेटा है सर्व अंग जाने तहां राजा अछदन्त धृतराष्ट्रके वंशमें है सो पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध महा धनुषधारी है और दुर्जन पराया छिद्र हेरे अर इनका महा शत्रु ॥ ६ ॥ बलदेवने अपना रूप घणा ही छिपाया परि चांद सूर्य कैसे छिपे बलभद्रके रूपकी पासकरि खैंचे थके नगरके लोकनिके समूह इनके आस पास भेले होय गये बलदेव नगरमें प्रवेश किया लोग इनका रूप देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भये सबनि जानी यह बलदेव स्वामी हैं आप एक वणिककी हाटमें बैठे अर कुंडल धरिकरि अन्नादिक लिये अर नगरतैं निकसि बाहर जाते हुते सो द्वारपालने देख करि राजातैं कही बलदेव जाय हैं तब राजा मूर्ख इनके मारवे अर्थि सब सेना पठाई सो इनकू दरवाजे रोके तब बलभद्र अन्न-पान सामग्री तो सब डाल दी अर आप हाथी बांधनेका थंभ उपार्‌या अर कृष्णकूं हेला दीया सो कृष्ण हू शीघ्र ही आये सो कृष्णने परिघ कहिये दरवाजेकी आगल हाथ ली अर बलदेवने गजथंभ लिया दोऊ वीर महाधीर शत्रुनितैं लडे राजा अछदन्त सकल सेना सहित इनपै आया हुता सो सकल सेना हू भागी अर राजा हू भागा मनुष्य की क्या शक्ति जो इन पुरुषनितैं लडैं दोऊ वीर महाधीर अन्नपानादि सामग्री लेयकरि नगरतैं निकसि विजयनामा वनमें गये तहां एक मनोहर सरोवर देख्या ॥ १३ ॥ तहां दोऊ भाईनिने जल छान स्नान करि अपने घटविषैं जो श्रीभगवान नेमनाथ विराज रहे हैं तिनकूं नमस्कारकरि तिनका ध्यान किया अर शीतल जल पीया पवित्र भोजन किया ॥ १४ ॥ ता बनमें क्षणएक विश्रामकरि दक्षिणकी दिश चाले सो कोशाम्बीनामा महा भीम-बन अति दुर्गम ता विषैं पैठे ॥ १५ ॥ कैसा है वह वन खग कहिये महा दुष्ट पक्षी तिनके हैं अशुभ शब्द जहां अर सिंहादिकके हैं भयंकर शब्द जहां अर सुनिये हैं शृगालों (गीदडों) के खोटे शब्द जहां अर तृषाके मारे मृगनिके

समूह जहां दौड़े दौंडे फिरे हैं जहां मृगतृष्णा वहुत दीसे है अर जल दुर्लभ है ॥ १६ ॥ ग्रीष्मका उग्र ताप ताकरि बाजे है विषम पवन जहां सो सही न जाय है अर दावानलकर जल रहे हैं वृक्ष अर वेलोंके समूह जहां तिनकरि महा भयानक बन भासे है जहां नीर अति दूर सो वनके जीव तृषाकरि आतुर, महा व्याकुल भये भ्रमै हैं अर बनचर कहिये भील तिनि हाथीनिके कुंभस्थलविषैं बाण लगाये हैं सो गजमोती विखिर रहे हैं ऐसे भयंकर बनविषैं दोऊ भाई जाय प्राप्त भये ग्रीष्मकी ऋतु है मध्यान्हका समय है अर सूर्य्य मध्यभागविषैं है ता समय कृष्ण बलदेवतैं कहते भये उपजा है तृषाका अति खेद जिनकूं हे आर्य कहिये हे निष्कपट ! मैं प्यासकरि अति पीडित हूं मेरे होठ अर तालवा सूके है अब एक पग हू धरवेकूं मैं समर्थ नाहीं तातैं मोहि शीतल जल शीघ्र पिलावहु जाकरि मेरी तृषा मिटै जैसे अनादि सार रहित संसारविषैं सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति भये भवआताप मिटै ॥ २१ ॥ या भांति कृष्णने बलदेवतैं कही, कैसे हैं कृष्ण स्नेहके भारकरि कोमल है मन जिनका अर तृषाके दाहकरि उष्ण निकसै हैं स्वास जिनके ऐसे हरि तिनकूं हलधर कहते भये हे भ्रात ! हे तीन खंडके तात ! मैं शीतल जल तोहि ल्यायकरि प्याऊंगा इतने तुम जिनस्मरण रूप जलकरि तृषाकूं बुझाओ तुम तो जिनवाणीरूप अमृतके पानकरि सदा तृप्त ही हो अर यह जल तो तृषाकूं अल्प कालही मिटावे है बहुरि तृषा उपजे है अर श्रीजिनराजका स्मरणरूप जल तृषाकूं मूलसे मिटावै है यातैं जिनस्मरण करि हे हरि ! तू जिनशासनका वेत्ता यह शीतल वृक्षकी सघन छाया तहां तू तिष्ठ मैं तेरे आर्थि शीतल जल लाऊं हूं । हे हरि ! शीतलचित्त तू अपने शांत भावरूप भववनविषैं भगवान जिनेश्वरकूं थापि ॥ २५ ॥ ऐसा छोटे भाईकूं बडा भाई उपदेश देयकरि जलके लायवे अर्थि बहुत दूर गया कृष्णके दुःखकरि दुखी है चित्त जाका सो अपना खेद न विचार्या हरिका खेद हरिवेकूं हलधर गया कैसा है हलधर जाके हृदयविषैं हरिही बस रहे हैं ॥ २६ ॥ सो भाई तो जलकूं गया अर जंगतका सुखदाई वासुदेव जगदीशका ध्यान करै सघन वृक्षकी छाया कोमल पृथ्वीविषैं पीतांबर ओढे पोढा (लेटगया) अपने

वायें गोडे पर दाहिना चरण धरि हरिने खेद दूर करिवेके अर्थि क्षणएक विश्राम किया ॥ २८ ॥ ताही समय दैवयोगसे जरत्कुमार तहां आय निकस्या वह पापी मृगयाके अर्थि वनविषैं अकेला भ्रमता हुता हरिहीके प्राणकी रक्षाके अर्थि स्नेहके भारकरि भरा द्वारकातैं निकसि दूर वनविषैं आया हुता अर वनचरोंकी न्याईं वनमें वसता हुता सो भवितव्यके योगकरि तहां आया धनुष है जाके हाथमें सो दूरहीतैं देखता भया वह न जानैं वासुदेव है केशव पौढे हुते सो इनका पीतांबर पवनकर हालता हुता सो वानैं जानी यह सूते मृगका कर्ण हालै है यह विचारि पापी पारधीने धनुषके बाण लगायकरि चलाया सो हरिके चरणविषैं आय लाग्या पगथळी भेदी गई। तब आप शीघ्र ही उठे अर सब दिशा निरखी सो वृक्षके आसरे नजर न पडा तब केशव कहते भए। या वनविषैं हमारा अब कौन है जानैं हमारा पांव वींध्या सो अपना नाम कहो अर कुल कहो मेरे यह विरद है जो विना नाम अर कुल जाने घात न करूं यातैं कहो तू कौन है? तेरा कुल अर नाम क्या अर या वनविषैं मेरा अंत करता भया सो वैर कहो या भांति केशव कही तब जरत्कुमार बोला या पृथिवीविषैं हरिवंशविषैं उपज्या राजा वसुदेव अति प्रसिद्ध बलदेवका पिता ताका मैं जरत्कुमारनामा पुत्र हूं पिताके अति वल्लभ सो कायरनिकरि अगम्य जो यह वन ताविषैं अकेला भ्रमूं हूं ॥३९॥ मैं श्रीनेमिनाथकी आज्ञा सुनी जो जरत्कुमारके वाणकरि वासुदेवका वियोग है यातैं वस्ती छोडि वनविषैं वसूं हूं मोहि वनमें वसते वारह वर्ष बीत गए सो मैंनें उत्तम पुरुषनिका वचन अब तक यहां न सुण्या तुम कौन हो सो कहो यह वचन जरत्कुमारके सुनकरि मनमें जानी यह भाई जरत्कुमार है यानैं पूर्वकर्मके उदयतैं जिनधर्म न जाना यातै पारधीकी न्याईं भ्रमै है तब केशव बोले हे भाई! यहां आवो याहि अति आदरसूं बुलाया सो जरत्कुमार हू वासुदेवकूं जानकरि हाय! धिकार धिकार मोकूं ऐसा शब्द करता धनुष वाण डारि हरिके पांयनि पड्या ॥ ४३ ॥ तब हरिने याकूं उठायकरि उरसूं लगाया वह महा शोकरूप याहि कही हे ज्येष्ठ भ्राता! तू शोक मत करै भवितव्यता दुर्लंघ्य है तुम मेरे प्राणके अर्थि सुख सम्पदा तजी अर प्रमाद तज्या अर चिरकाल वनका

निवास किया भवितव्यके निवारनेका तलाश बहुत ही किया परन्तु भवितव्य न टरै जब दैव परान्मुख होय तब कोई कहा यत्न करि सकै यातैं तुम अब शोक तजो अर पापका त्याग करो अब श्रावकके व्रत धारो ॥ ४६ ॥ तब यानैं हरिसूं बनके आगमनका वृत्तांत पूछा तब हरि सब कथा आद्योपांत कहते भए जो द्वारिकाका दाह भया जे वैराग्य भये तेही बचे अर सब भस्म भए तब यह गोत्रका नाश सुनिकरि अतिविलाप करने लग्या अर कही सब गोत्रकी यह भई अर तुमसे मैं यह करी। अब मैं कहा करूं अर कहां जाऊं। कैसै चित्त समाधान होय मेरा अपयशहू बहुत भया अर मैंने मोटा पाप उपार्ज्या अर महा दुखी भया ॥ ५९ ॥ इत्यादि विलापका कर्त्ता जो जरत्कुमार ताहि वासुदेव स्वामी कही हे राजेंन्द्र ! प्रलाप तजहु यह जगतके सकल जीव अपने उपार्जे कर्मका फल भोगवै हैं। या संसारविषैं सुख अर दुखका दाता कोई शत्रु अर मित्र नाहीं निश्चयथकी विचारिए तो कर्म ही सुख दुखका दाता है। मोहि जल प्यावनेके अर्थि बलदेव जल ल्यावनै गए हैं सो वे न आवैं ता पहले तुम शीघ्र जाओ। कदापि तुमपर उनका क्रोध होय अर वे तुमकूं मारैं तो अपना वंश ही न रहै अर वंशमें तुम रहे हो तातैं तुम श्रावकके व्रत धारो अर पांडवनिपर जाओ। उनकूं सब वार्ता कहो वे अपने परम हितू हैं हमारे कुलकी रक्षाके अर्थि तुमकूं राज देवेंगे। ऐसा कहि केशवने जरत्कुमारकूं कौस्तुभमणि दी अर कही या सहनानी (चिन्ह) तैं पांडव तिहारा आदर करेंगे। अर या मणिकूं तुम मार्गमें छिपायकरि लेजाइयो। ऐसा कहि याकूं मणि देय विदा किया अर क्षमा कराई। वानैं कही हे देव ! मेरी क्षमा है आप क्षमा करियो अर कौस्तुभमणि लेय वह चल्या अर यतनसूं इनके पांवका बाण काढि वह तो गया। अर हरिके बाणके घावकी अति वदना भई। तब आप उत्तरकी ओर मुख करि पल्लव देशविषैं श्रीनेमिनाथ विराजे हैं तिनकूं नमस्कार किया अर पंच णमोकार मंत्रका स्मरण किया भगवान नेमिजिनेंद्र यादवनिके ईश्वर वर्तमान तीर्थेश्वर तिनके अनन्त गुण स्मरणकरि हाथ जोडि बारंबार नमस्कार किया। अर भूत भविष्यत वर्तमान तीनोंकालके सब तीर्थेश्वर तिनकूं अर सकल सिद्ध-

निकूं साधुनिकूं जिनधर्मकूं प्रणामकरि चौशरण लेय पृथिवीके नाथ पृथिवीपर पौढे उत्तरकी ओर सिर किया अर दक्षिणकी ओर पांव किए ॥ ५६ ॥ अर वस्त्रसूं ढक्या है सर्व अंग जिनका। अर संसारकी मायासूं निवृत्त है बुद्धि जिनकी सब जीवनिविषैं मैत्री भावके धारक मनमें ऐसा शुभ विचार करते भए। मेरे पुत्र पौत्र स्त्री भ्रातृ गुरुजन बांधव जे अग्निके उपद्रव पहले ही संसारका त्यागकरि सर्वज्ञ वीतरागका मार्ग आराधते भए अर तपविषैं प्रवर्त्ते ते धन्य हैं। अर जे अग्निके उपद्रव भए मेरी हजारां रानी अर वंधुवर्ग परम समाधियोगकरि देवलोक गए अग्निके उपद्रवकर हू जिनके कायर भाव न भया ते धन्य हैं अर मेरे अप्रत्याख्यान कषायका उदय ताकरि महाव्रत न पले अर श्रावकके व्रतहू न पले केवल सम्यक्त्वहीका धारण भया सो ही मेरे हस्तावलंब है। देव वीतराग गुरु निर्ग्रंथ साध धर्म जीवदया मेरे यह श्रद्धा दृढ है ॥ ६० ॥ इत्यादि शुभ चिंतवन करते होणहार तीर्थेश्वर परंतु पीछे अंत समय परिणाम संक्लेश तीव्र कषायरूप भये सो कषायकरि अशुभका बंध भया मेघाभूमि सामिग्री मेलि ताहीविषे वासुदेव परलोक पधारे। वे महा प्रवीण तीनखंडके स्वामी नारायण अर्द्ध भरतका राज्यकरि प्रजाकूं भी आनन्द उपजाय वहुत दिन सुख किया यादव बंशरूप समुद्रके बढावनेकूं चन्द्रमा एकहजार वर्षका आयु पूर्णकरि कौशांबीनामा वनतैं परभव पधारे उन पुरुषों हीका शरीर स्थिर नाहीं तो औरकी कहा बात ॥ ६२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ हरिगत्यन्तरवर्णनोनाम द्विषष्ठिमः सर्गः ॥ ६२ ॥



अथानतर बलदेव स्वामी बासुदेवके अर्थि जल लेवेकूं दूर गए हुते जिनके चित्तमें कृष्णही बसे हैं अर मार्गमें इनकूं अनेक अपशकुन भये पर पाछे न आये। वनमें जल दुर्लभ अर ठौर ठौर मृगतृष्णा सो जानें जल ही भरा है। सो बनके मध्य मृग दौडे दौडे तैसैं यह भी दौडे दौडे फिरैं बहुत दूर दौडे तब हलधरने एक सरोवरी देखी जहां चकवा और कलहंस सारस सुंदर शब्द करै हैं। कमल फूल रहे हैं अर भंवर गुंजार करै हैं ताहि देखि

हलधर प्रसन्न भये अर इनकूं स्वांस अर शीतल मंद सुगंध पवन सन्मुख आई जाकरि खेद निवृत्त भया ॥ ४ ॥ वा सरोवरीमें अनेक जीव जल पीवनेकूं आवे हैं सो इनकूं देखकरि डरे सो इधर उधर होय गये। ये महादयालु इनकरि काहू जीवकूं भय नाहीं यह जल भरने वा सरोवरीमें गये सो जल वनके गंधहस्तीनकी सुगंध ताकरि सुगंधित होय रहा है। सरोवरीमें जाय जल छाणकरि आप पीया तृषा बुझाई अर भाई अर्थि कमलपत्रनिका भाजन शीतल जलसूं भर वस्त्रतैं लपेट ले चाले ॥ ५ ॥ सो दौडे चले आवें चित्तमें भाईका सोच जो मैं भाईकूं अकेला ही छोड आया हूं अर वनमें विघ्न वहुत हैं अर भाई भोला है सदा आनंदरूप है वह दुखसुखकी कहा जाने। या शंकाकरि कंपायमान है हृदय जाका सो दौडा चला आवे। पगनकरि उठी रज ताकरि धूसेर होय गये हैं सुंदर सिरके केस जिनके ॥ ७ ॥ आयकरि दूरतैं देखैं तो आप पीताम्वर ओढे पडे हैं। वस्त्रकरि आच्छादित है सर्व अंग जाका सो दूरतैं वलदेवने देखकरि विचारी जो वृक्ष तले मैं छोड गया हुता तहां ही तिष्ठे हैं। ये राजा सूरके वंशका सूर्य ॥ ८ ॥ पृथिवीका नाथ सुख निद्रा सोवै है सो आपही सुखतैं जागेगा मैं जगाऊं तो खेद होय यह विचार वलदेव बैठा वासुदेवका मुख जोवे। वह जाने आप ही जागेंगे जब वहुत देर भई अर गिरधर न जागे तब हलधर ऐसे वचन कहि जगायवेका उद्यम करते भये। वलदेव कहैं हैं हे वीर! वहुत कहा सोवो अब शयन तजकरि उठो जल पीवो, ऐसे मधुर शब्दकरि वलदेव जगावे सो सुखनिद्रा सोते होंय तो जागैं हरि तो दीर्घ निद्रा सोते हुते दो चार बार जगाये। जब न जागे तब वलभद्र मौन गहि विराजे बहुरि वलदेवने हरिके चरणके घावकी गंधतैं चींटी वस्त्रके भीतर पैठती देखीं सो पैठ तो गई अर वस्त्रके आवरणतैं निकल न सकीं सो चींटी आकुलतारूप बडे भाईने देखी तब हरिके मुखका वस्त्र उघाडा सो देख करि जाना याकी तो और ही दशा है यह जगतका प्यारा क्या परलोक चला गया! यह कृष्ण तो तृषाकरि परभव पधारा यह विचार वलदेव वासुदेवके उरसूं लग गया अर याहि मूर्च्छा आई सो मूर्छित होय गया सो मूर्च्छा न आई याहि जिवाया यद्यपि यह मूर्च्छा अनिष्ट है

तौ भी उनकूं उपकारकी कर्त्ता भई जो मूर्च्छा न आवती तो तत्काल बलभद्र प्राण तजते हरिके स्नेहकी पासिकरि हलधर दृढ बंधे हैं, इन जैसा स्नेह जगत्में नाहीं क्षणिकमें बलभद्र सचेत होय वासुदेवका अंग अपने हाथकरि स्पर्शते भये। अर चरणके घाव लगा है सो बलभद्रने देखा हरिकी पगथली तो सदा अरुण ही है अर रुधिरके जोगकरि अति अरुण देखा अर कछुइक रुधिरकी गंध भी असुंदर जानी तब मनमें विचारा जो मेरा भाई तो सूता हुता सो काहू शत्रुने हणा विषम वाणकरि याका चरण बींधा सो वह हरिका मारणहारा कौन है ऐसे कह-करि महाबली बलभद्र सिंहनाद करता भया। सिंहनादकरि बन शब्दायमान होय गया अर माते हाथीनिके मद उतर गये अर सिंह हू गुफामें घुस गये बलदेव बनमें शब्द करै है जा निःकारण वैरीने मेरा छोटा भाई सूता अविधितैं मारा है सो शीघ्र मोहि दिखाई देय। जो क्षत्री शूरवीर हैं ते सूतेकूं अथवा शस्त्ररहितकूं अर असाव-धानकूं अर नम्रीभूतकूं अर जो मान तजे वाकूं अर जो भागे वाकूं अर स्त्रीकूं वालककूं वृद्धकूं अर रोगीकूं न मारैं कैसे हैं क्षत्री यशही है धन जिनके ॥ १८ ॥ या भांति ऊंचे शब्द करता महाबली कितनी दूर वनमें दौडा जब कोई न देखा तब पाछा आय कृष्णकूं उरतैं लगाय रुदन करने लगा, बलभद्र विलाप करै है हा जगत्पति! हा शरणागत प्रतिपाल! हा जनार्दन! हा लोकमित्र! हा जगत्के आश्रय! तू मोहि छोड गया। हे लघुवीर! तू शीघ्र ही आय मोहि दर्शन देहु। या भांति विलाप करै है ॥ २० ॥ अर मनोहर शीतल जल तापका हरणहारा हरिकूं प्यावै। सो हरिके गले कैसे उतरै जैसे अभव्यके अर दूरभव्यके उरविषैं सम्यग्दर्शन न आवै ॥ २१ ॥ तैसैं जल कंठविषैं न उतरा बलदेव अपने हाथनिकरि वासुदेवका अंग पूंछे पपोलै अर साम्हने बैठा मुख निरखै अर मुख चूमे, सूंघे, स्पर्शे, मूढ होय गई है बुद्धि जाकी सो हरिके मुखके वचन सुना चाहै है ॥ २२ ॥ कान्हको ऐसे वचन कहै है हे धीर! वैरीनिकरि चोरनिकरि अब समस्त पृथिवी ऊजड होय है। द्वारका तो भस्म भई पर पृथिवीकूं क्यों न सम्भालहु पृथिवी तो अब तक सूबस बसे है तुम सम्भालहु अब तू ऐसा सोच क्यों करै है। जो यदुवंश

अर भोजवंश सबही क्षय भया मेरे कोई भाई न रहा ऐसा सोच मत करहु जो हम अर तू हैं तो सब ही हैं अर तू मेरे अनेक जन्मका भाई है सो मैं तोहि देखता देखता अब तक तृप्त न भया तो अब तृप्त कैसे होंउ ॥ २५ ॥ अर मेरी हू भूल जो तेरे ताईं या गहन बनविषैं अकेला छोड मैं जलकूं गया। हे रत्नोंमें रत्न! हे गुणभूषण! जो लोकविषैं सारवस्तु हुती सो मेरी हरी गई। जो मैं तेरे पास होता तो मेरे होते ऐसा कौंन है जो तेरा घात करै। कंसका मद सोई भया पर्वत ताके चूरिवेकूं वज्रसमान तू अर भूमिगोचरी अर विद्याधर तिनका नायक अर गरुड विमान है वाहन जाका अर देवनकूं जीतनहारा यशका सागर जल थल विषै है आज्ञा जाकी, अर समुद्र तरणहारा सो तू कहा गौके खुरविषैं डूब गया मागध आदि समुद्रके देव तिनका स्वामी साक्षात् सूर्य्य अब कहा अस्त होय है। जैसैं सूर्य्य तिमिरकूं हरकरि जगत् विषैं उद्योत करै तैसैं तैं अन्यायरूप तिमिरकूं हरकरि जगत्विषैं धर्मका प्रकाश किया कोऊ शत्रु तेरे सन्मुख न आया तू जगत्कूं जीतकरि जगविषैं यश उपार्जता भया। हे विष्टरश्रव! हे माधव! अब तिहारे सोचकरि सूर्य्य अस्त होय है सो देखहु अर सायंकालकी संध्या करहु तेरे सोयवेकरि सबनकूं सोच उपजा है। तेरी दीर्घनिद्रा देख सूर्य्य हू अपने किरणरूप कर तिनकरि अस्ताचलकूं स्पर्शता संता नीचा उतरै है। तेरे सोवनेका सोच कौनकूं न होय। जैसे तू अपने तेजकरि सकल शत्रूनकूं जीति पृथवीविषै प्रकाश करता भया तैसे तेरी तरह दिन-कर तिमरकूं निवारि सर्व दिशाविषैं उद्योतकरि अब छिपै है सो तू याकी ओर तो देखि यह तेरे सोचकरि व्याकुल भया अस्त होय है ॥ २९ ॥ यह सूर्य्य वारुणी कहिये पश्चिम दिशा ता ओर आय करि अस्त होय है अर नीचा पडै है जैसे कोई वारुणी कहिये मदिराका प्रसंग करै सो नीचा ही पडै है अधोलोक जाय तैसे सूर्य्य वारुणी कहिये पश्चिदिशा ताका संग किया। तातैं मानो नीचा ही पडै है चकवा चकईनिके समूह विलाप करै हैं। यह सूर्य्य चकवा चकईनिकरि चाहा थका हू जैसे कोइ समुद्रमें डूबै तैसे अस्ताचलके आश्रय आया है सो सूर्य्य आकाश

रूप उदधिविषै चुभकी लेयता थका मानो जल ही दे हैं। जो कोई समयका वेत्ता होय सो समय विचारकरि कार्य करै ॥ ३१ ॥ अर संध्याकी आरक्तताके पटल करि दिशा लाल हो गई हैं सो मानों सकल तिर्यंच अर नर तेरी दीर्घनिद्राकरि रुदन करै हैं तिनके नेत्रनिकी मानो अरुणता ही विस्तरी है। हे देवभक्त! वीतराग देवविषै है भक्ति जाकी सो तू संध्या वंदनाकरि यह सामायिक पडकूणेंकी १ वेला है। हे देव! अब बहुत निद्रा मत करहु पहिले सूर्य्य गया हुता अब यह साझहू गई रात्रिका समय भया। जैसे खोटे कालविषैं महा दुष्ट कालकी वृत्ति सबनकूं एक वर्ण करै है तैसैं यह तिमिररूप दिशा जगतकूं श्याम वर्ण करै है। सम्यग्दर्शन विना मिथ्यात्वरूप तिमिर फैले तैसे सूर्य्य बिना तिमिर जगतविषैं विस्तरा है। हे भ्रात! यह वन तिहारे विराजवे लायक नाहीं। यहां अनेक पापी जीव विचारै हैं अर कुशब्द होय रहे हैं। तातै यहांतै उठो कोऊ नीका गढ होय तहां चलकरि निशा व्यतीत करैं तुम मणिमयी महलनिके सोयवे बारे या बनविषैं कहां सूते? कैसे हैं वे महल नाना प्रकारके पुष्पनके हैं मंडप जहां अर महा कोमल सेज महा मनोहर विछे हैं वस्त्र जहां महा लक्ष्मीकरि मंडित परम शोभाकरि संयुक्त ऐसे मंडपविषैं सुन्दर स्त्रीनिसहित पोढते अर हजारों राजा दर्शनके अभिलाषी रहते जों ओसर पावैं तो हरिके दर्शन करैं तो तुम या कुभूमिविषैं पौढे हो। हे पृथिवीपति! यह ठौर तिहारे रहवेका नाहीं यहां बनके दुष्ट जीव गृद्ध काक जम्बुक कहिये स्याल इत्यादि मांसपक्षी जीव विचरै हैं तुम महा चतुर जे तिहारी स्त्री मानवती होती तिनकूं प्रसन्नकरि आप प्रसन्न होते। अर सपूर्ण निशा विलासमें व्यतीत करते सो अव कहा दशा भई ॥ ३८ ॥ सुन्दर स्त्री गान करती अर बंदीजन मनोहर पाठ करते तब तुम जागते सो अब कहा स्यालनीनके शब्द सुनो हो तुम कूं पौढे देख पहले तो सूर्य अस्त भया फिर सांझ होय गई अर तुम सोये हो अब तो शयन तजो या भांति चार पहर निशा गई। बलदेव विलाप करबो करै बहुर प्रभात भया कमल फूले सूर्य उदयकूं सन्मुख भया तब बलदेव वासुदेवतें कहा विनती करै हैं। हे प्रधान पुरुष! अब सूर्य उदयाचल पर उदय भया है मानों तुमकूं अर्घ ही दिया

चाहे है यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! बलदेवने वासुदेवतैं अधिक मोह किया यह दोऊ भाई प्राण वल्लभ हैं सो जेती बात बलदेवने कही तेती सब बिफल गई जैसे अति बालक भर्तारविषैं अबलाकी विकार चेष्टा विफल जाय तैसे सब चेष्टा विफल गई आप भाईकूं भुजपंजरमें लिये फिरैं जैसे कंसकी शंकाकरि जन्मतेही कान्हकूं उरतैं लगाय ले गये तैसे बनमें लिये फिरैं या भांति अनेक दिन अर अनेक रात्रि बलदेवकूं विलाप करते भये न खान न पान न निद्रा, मन वचन काय तीनों कृष्णरूप निरन्तर हरिके शरीरकूं लिये भ्रमते हलधर बनविषैं विश्राम न पावते भये।

अथानंतर—गीष्मऋतु गइ अर वर्षाऋतु आई मेघ गर्जने लगे अर बर्षने लगे अर कारी घटानिमें विजुरी चमकने लगी ता समय वासुदेवकी आज्ञा प्रमाण जरत्कुमार पांडवनके समीप भीलका भेष धरे दक्षिण मथुरा गया सो राजद्वार जाय पहुंचा युधिष्ठिरादिकसे द्वारपाल कही जो हरिका दूत आया है तब राजाने अति आदरतैं बुलाया अर अति आदरतैं निकटि बैठाया अर स्वामीकी कुशल पूछी तब जरत्कुमार शोकका भरा गद्‌गद् बाणी करि द्वारकका दाह अर अपने प्रमादके योगतैं हरिका परलोक गमन कहता भया अर प्रतीतके अर्थ हरिकी दो कौस्तुभ मणि राजा युधिष्ठरकूं देता भया सो कौस्तुभमणि देख हरिका वियोग जान युधिष्ठिर आदि पांचों भाई अति विलाप करते भये। हरिसे है अधिक स्नेह जिनका सो परम स्नेही उच्चस्वरका रुदन करते भये अर ताही समय पांडवनके राजलोकमें कुन्ती माता अर पांचों भाईनिकी स्त्री महा प्रलाप करती भई जैसे समुद्रकी ध्वनि होय तैसी उनके रुदनकी ध्वनि भई। पांडवनके घरके नर नारी सब ही महा विलाप करे हैं। हा प्रधान पुरुष ! महा धीर ! हा संसारके कष्ट दूर करनहारे ! तुम सरीखे पुरुषनिकी यह क्या दशा भई। या भांति सब रुदन करने लगे कितनीक वेर रुदनिकरि बहुरि यह पांडव समस्त रीतिके वेत्ता श्रीकृष्णकूं जल देते भये अर जरत्कुमार भीलका वेष धरे सो भेष दूर कराया अर उसकूं बहुत उलाहना दिया।

जो तुम पारधीनिके कर्म करो यह उचित नाहीं तातैं श्रावकके व्रत धारहु । या भांति याकूं उपदेश देय अग्रेसर-करि पाण्डव महा आर्तके भरे हलधरकूं देखने चाले । सो कईएक दिनमें माता अर पुत्र अर द्रोपदी आदि राजलोक अर अपनी सेना सहित बलदेवके देखवेकूं बनमें आये सो बलदेवकूं कैसा देखा भाईके मृतक शरीरकूं उबटना लगावै है अर स्नान करावै है अर आभूषण पहरावै है तब यह पांचों भाई बलभद्रकूं उरतैं लगाय बहुत रुदन करते भये । बहुरि कुन्ती अति अधीर होय हलधरतैं हरिके दाहके अर्थि वीनती करती भई तब मुंह फर लिया अर कही तू मर तेरे पांचों पुत्र मरें मेरा भाई क्यों मरै यह बात कह परान्मुख होय गये जैसे बालक विषफलकूं गाढ़ा पकडे अर मांगेतैं काहूकूं न देय तैसे बलदेव वासुदेवकूं गाढा गाढा छातीतैं लगावे अर काहूकूं न सौंपे ॥ ५६ ॥ पांडवनिकूं देखकरि बलदेव कहते भये । हे पांडवो ! प्रभु बहुत देरके तिसाये हैं सो उठकर पानी पीवेंगे अर कुछ भोजन करेंगे तातैं शीघ्रही सब तय्यारी करहु स्वामीकूं स्नान करावो बहुरि अन्नपान करावो तब पांडवनिने कही जो प्रभु आज्ञा करोगे सोही होवेगा तब तत्काल इन्होंने भोजनकी तैयारी कराई अर स्नानकी सामग्री ले आये सो बलदेव वासुदेवकूं स्नान करावै हैं । अर पानीका कटोरा भर प्यावें अर भोजन करावें सो वह भोजन कहा करैं जब वे अन्नपान न करें तब ये भी न करें । यह दशा बलदेवकी पांडवनिने देखी तब इनकी कृतार्थता वृथा मानते भये परन्तु कहा करें वडेनसे कुछ कहा न जाय तब बलदेव भोजन न करते तो पांडव भी भोजन न करें । पांडव इनके आज्ञाकारी हैं बलदेवके लार लार फिरैं या भांति चातुर्मास पूर्ण करते भये ।

अथानन्तर—शरद ऋतु आई मानों यह शरद ऋतु बलभद्रका मोहरूप मेघ पटल दूर करवेकूं आई । सप्तवर्ण जातिके वृक्षनके पुष्पनिकी सुगंधता फैली अर महा सुगंध गिरधारीका शरीर सो हू दुर्गंध भया ताकी दुर्गंधता दूर तक फैली सुगंध अर दुर्गंध ये दोनोंही एकत्र नाहीं जहां सुगन्ध तहां दुर्गन्ध नाहीं अर जहां दुर्गन्ध तहां सुगन्ध नाहीं इन दोऊकी एक ठौर स्थिति न हो ॥ ६० ॥ अर बलभद्रका प्रतिबुद्ध होयवेका समय आया सो वह

सिद्धार्थ नामा सारथी भाई जो देव हुआ हुता अर जिससे वचन हुआ हुता सो वलदेवके निकट आया अर वाने वलभद्रकूं यह दृष्टान्त दिखाया, वह मनुष्यका रूप धरि मायामई रथमें चढा आया हुता सो पर्वतके विषम तट पर रथकूं नीके लिये आया अर सूधे मार्गमें रथ नाख दिया सो संधि जुदी होय गईं वहुरि बलभद्रकूं दिखाय संधि संवारने लगा। तब वलभद्र पूछी तेरा रथ विषम मार्गमें तो चला आया अर सूधे मार्गमें क्यों पडा अर अब तू इसकूं संवारे है सो यह तो विखर गया संधि संधि जुदी होय गईं तू कैसे करेगा तब वह बोला जो कृष्ण महाराज महाभारथरूप समुद्रकूं उलंघनहारे जरत्कुमारके वाण करि कैसे मूये अर अब कैसे जीवेंगे यह उत्तर दिया तब बलदेव चुपके होय रहे। बहुरि वह जल रहित पर्वतकी सिला पर कमल रोपने लगा तब वलदेव कही कभी सिलापर भी कमल ऊगें हैं तब वाने कही कभी मृतक भी अन्न पानी ग्रहे हैं तब हलधर मौन गहि रहे बहुरि वह सूखे वृक्षकूं सींचता भया तब वलभद्र पूछी कहीं सूखा वृक्ष भी हरा होय है तब वाने कही कभी परलोक गया हुआ भी आवै है तब बलदेव नीचे होय रहे। बहुरि मृतक गायके कलेवरके पास तृण डारता भया अर वाका मुंह फाडकरि जल पिवावे सो वह कैसे पीवे। तब बलदेव कही तू कहा करै है तब वाने कही तुम कहा करो हो बडे पुरुष अपनी भूल न विचारें अर औरनिकी विचारें यह वचन सिद्धार्थनामा सारथी जो देव है ताके ऐसे वचन सुन बलदेव प्रतिबुद्ध भये जानी वासुदेव परलोक गये। जो यह कहै है सो सत्य है जो बीतरागी देवने भाख्या हुता सो भया॥ ६७॥ देखो मेरी भूल मैं भवस्थितिका वेत्ता जिनबाणीका श्रद्धानी छः महीने केशवके कलेवरकूं वृथा लिये फिरा यह सब मोहका कारण है। अर मैं ऐसा भ्रम धारा जो मैं न हुआ तो याके बाण लागा सो यह विचार वृथा है या प्राणीका न कोई रक्षक है न कोई नाशक है आयु कर्मही सबनिका रक्षक है अर आयुके क्षय भये सर्वथा शरीरका क्षय है॥ ६९॥ अर यह राज्यसंपदा हाथीके कान समान चंचल है। अर सुजन संयोग है तहां वियोग है संयोग होय तिसका वियोग होय ही होय अर यह जीवना है सो मरणके

दुःख करि नीरस है तातैं ज्ञानवन्त मोक्षहीका यत्न करै हैं। मैं मन मोहनके मोह करि इतने दिन गृहस्थ अवस्थामें रहा। अब बीतरागका मार्ग धार मुनि होय संसाररूप समुद्रकूं तिरूंगा। या भांति बलदेव स्वामी जगतकी झूंठी माया जानकरि निर्मोह होय जगदीशके मार्गकूं उद्यमी भये मोहके पटलविषैं आय गए हुते सो मोहपटलकूं दूरकरि चंद्रमातैं अधिक दीप्तिमान भए। पाया है आत्मज्ञान जिसने जैसा बलदेवका आगैं रूप हुता तातैं भी अधिक रूप भासता भया॥ ७१॥ अर पांडव अर जरत्कुमार इन सहित तुंगीगिरिके शिखरपर हरिके देहका दाह किया अर जरत्कुमारकूं राज्य दिया॥ ७२॥ अर तुंगीगिरिके शिखर ही पर पांडवनिने अर जरत्कुमारने अनुराग तजि क्षमाभावकरि बलदेवने जैनेश्वरी दीक्षाका निश्चय किया यह संसारका संबंध क्षणभंगुर जाना जा समय बलदेवकूं वैराग्य उपज्या ता समय गिरिपर महा मुनि नाहीं हुते जिनसे दीक्षा लेते सो पल्लव नामा देशविषै श्रीनेमिनाथ विराजे हुते सो बलदेव पल्लवदेशकी तरफ मुखकरि ठाढे रहे अर यह शब्द मुखतैं कहा जो मैं श्रीनेमिनाथका शिष्य हूं अर उनहीका मेरे स्मरण है अर वे ही मेरे घटमें विराजे हैं 'श्रीनेमिनाथाय नमः' यह शब्द उच्चारकरि अपने सिरके केश अपने हाथनि उपारे। अर अठाईस मूलगुणका धारणकरि महाव्रती भए॥ ७४॥ बहुरि कईएक दिनमें बलदेव स्वामी पारणाके अर्थि नगरमें आए सो नगरके नरनारी इनका अद्भुत रूप देखि मोहित होय गए अर स्त्री ऐसी विह्वल भई जो घडेकी ठौर पुत्रनकूं कूपमें उरासने लगीं तब आप यह विपरीत देख आहार ते पाछे फिरे बनचर्याहीकी प्रतिज्ञा करी जो कोई श्रावक दैवयोगतैं बनमें आवै तो उनके आहार करना अर नगरमें न आवना, कैसे हैं बलदेव जिनराज समान है मुनिराज अवस्था जिनकी यह एकाविहारी जिनकल्पी मुनि हैं बलदेवके वैराग्य भए पीछे पांडवनिने जरत्कुमारकूं बहुत राजकन्या परनाईं। अर पांचों भाई पल्लवनामा देश जहां श्रीनेमिनाथ हैं तहां गए अर माता कुन्ती हू द्रोपदी सहित प्रभुके दर्शनकूं गई। संयम धारनेकी है इच्छा जिनके सो यह तो सब प्रभुके दर्शनकूं गए अर

बलदेव मुनि होय महातप करते भए अर १२ भावनाका विचार करै हैं इन बारह भावनाओंके विचारतैं वैरागविषैं अति निश्चल होते भये बलभद्र मनमें विचारे हैं। तन, धन, कुटुंब संसारके सुख अर घर यह सब क्षणभंगुर हैं इनकूं जो नित्य माने हैं सो अज्ञान है यह आत्मस्वरूप चिद्रूप नित्य है अर सब राज्य संपदा विनश्वर है संयोग सम्बन्धमें कोई नित्य नाहीं यह अनित्य भावनाका चिंतवन किया बहुरि विचारे हैं जैसे बनमें मृगके बालककूं ब्याधने पकडा ताहि कौनका शरण तैसे कालरूप केसरीने पकडा यह जीवरूप मृग ताहि शरण कौनका यह धन अर बांधवादि जीवकूं शरण नाहीं दुखतैं कोई बचाय न सकै एक धर्महीका शरण है। या भांति अशरणानुप्रेक्षाका चिंतवन किया बहुर विचारैं हैं यह संसाररूप चक्र अनादिकालका भ्रमण करै है ताके योगकरि यह जीव अनेक योनि अर कुलकोडिमें भ्रमण करै है कर्मरूपयंत्रीका प्रेरा स्वामीतैं सेवक होय है अर सेवकतैं स्वामी होय है पितातैं पुत्र होय है अर पुत्रतैं पिता होय है। यह संसार भावनाका चिंतवन किया। बहुरि बलदेव विचारैं हैं यह प्राणी अकेलाही जन्मे अर अकेलाही मरे है, चतुर्गतिमें भ्रमै है तो अकेला अर निर्वाण जाय तो अकेला याका सहाई और कोई नाहिं यह एकत्व भावनाका चिंतवन किया ॥ ८२ ॥ बहुरि विचारे है मैं जीव पदार्थ नित्य अर यह शरीर अनित्य अर मैं चेतन यह अचेतन तातैं मेरे अर शरीरके कहा सम्बन्ध सर्वथा यह शरीर ही मोतैं भिन्न है तो और पुत्र कलत्र धन धान्यादिकी कहा बात यह अनित्य भावनाका चिंतवन किया ॥ ८३ ॥ बहुरि विचारे है यह देह वीर्य अर रक्त करि उपजा है मलीन है मूल जाका अर सप्तधातुमई है। अर त्रिदोषकूं लिये है सो या शरीरविषै शुचि कहांसे होय यह महा अपवित्र है अर आत्मा पवित्र है तातैं अपने शरीरविषैं अर स्त्री पुत्रादिकके शरीरविषैं राग करना वृथा है ॥ ८४ ॥ यह अशुचि भावनाका चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारै है मन वचन कायके योग्य पुण्यपापके आस्रवके कारण हैं। अर यह जीव कर्मबन्धरूप दृढ सांकलसे बंधा चिरकाल संसाररूप वनविषैं भ्रमण करै है यह आस्रवानुप्रेक्षाका

चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारे हैं मिथ्यात्वरागादि यह भावास्रव अर ज्ञानावरणादि कर्मका आगम सो द्रव्यास्रव यह दोय प्रकारका आस्रव तिनका निरोध सो संवर, समिति गुप्ति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहका जीतना सो चारित्र तिनकरि होय है सो निर्जराका कारण है यह संवरानुप्रेक्षाका चिंतवन किया। बहुरि बलदेव विचारे हैं अपने उपार्जे पूर्व कर्म तिनका क्षय सो निर्जरा दोय प्रकार है एक सविपाक दूजी अविपाक सो सविपाक तो सबही जीवोंके होय है पूर्वकर्म बंधे हुये सो अपना फल देय खिरजाय हैं सो यह निर्जरा तो कल्याणकारिणी नाहीं अर अविपाकनिर्जरा संवरपूर्वक होय है विना विपाक दीये सत्ताका सत्ताहीमें स्थिति अनुभाग घाटि खिरै है जहां नवीन कर्म रुके हैं अर प्राचीन कर्म तपकर खिपै हैं सो यह निर्जरा कल्याणकारिणी मुक्तिका मूल ज्ञानी जननि हीके होय है यह निर्जरानुप्रेक्षाका चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारे हैं यह लोक अनादिनिधन है काहूका किया नाहीं अर याका कभी अंत नाहीं अर यह लोक महादुःखका भरा है अर या लोकके शिखर सिद्ध विराजे हैं, ते अनन्त सुख भोगवें हैं अर या लोकविषैं यह षट्कायके जीव सबही दुखित हैं कोई सुखी नाहीं या भांति दशमी लोकानुभावनाका चिंतवन किया ॥ ८६ ॥ बहुरि बलदेव विचारे हैं यह जीव अनादिकालका भ्रमण करै है सो अनन्तकाल थावर योनिमें व्यतीत किये सो थावरते निकल विकलत्रय होना दुर्लभ अर विकलत्रयतैं असैनी पंचेंद्रिय होना दुर्लभ अर असैनीतैं सैनी पंचेंद्रिय तिर्यंच होना दुर्लभ अर पशुतैं मनुष्य होना दुर्लभ तिसमें आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल, दीर्घायु सत्बुद्धि, सत्संगति शास्त्रश्रवण, धर्मकी प्राप्ति अर आत्मज्ञान अति दुर्लभ हैं अर समाधिमरण दुर्लभ है यह ग्यारमी दुर्लभानुपेक्षाका चिंतवन किया बहुरि बारहवीं धर्मानुप्रेक्षाका चिंतवन करैं हैं जिनभाषित धर्मही शिव कहिये कल्याण ताकी प्राप्तिका कारण है सो जिनधर्मके लक्षण जीवदया सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य परिग्रहत्याग, क्षमा, निगर्वता, निष्कपटता, पवित्रता, तप, संयम, ज्ञान, वैराग्य आदि अपार है या रूप जिनधर्म है ताका अंगीकार सो निर्वाणका कारण है अर धर्मका त्याग या जीवकूं अनन्त दुःखका

कारण है ऐसा चिन्तवन करना सो धर्माऽनुप्रेक्षा कहिये। यह बारह अनुप्रेक्षानिका चिंतवन बलदेवने बारंबार सूत्रके अनुसार किया भाईका मोह हुता सो अनुप्रेक्षानिके चिंतवनकरि निवारया अर बाईस परीषह जीतीं ॥ ९१ ॥ वे महापुरुष जिनसूत्रकी आज्ञाके अनुसार तपके करणहारे जठराग्नि जो क्षुधादि ताहि जीतकरि संयम-विषैं आरूढ भये अनेक प्रकार व्रतपरिसंख्या तपके भेद धारे ग्राम नगरादिकमें तो आहारकूं आवना तज्या ही हुआ था अर वनचर्या है तामें हू यह विचार करें वनविषैं श्रावक आये हैं सो उनके या भांति मिलैगा तो लेंगे अन्नका अवग्रह करैं जो यह अन्न मिलेगा तो लेंगे अर दिशिका अवग्रह करैं जो या दिशिमें मिलेगा तो लेंगे अर कुलका अवग्रह करैं तीन कुलके श्रावकहीके यतीका आहार है शूद्रनिके नाहीं सो इन तीन कुलनिमें ऐसा अवग्रह करैं आज विप्रकुलहीके श्रावकनिके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे अथवा आज क्षत्री कुलहीके श्रावक-निके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे तथा वैश्यकुलके श्रावकनिके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे ऐसे अवग्रह करैं अथवा आज पुरुषहीके हाथका भोजन करैंगे नारीके हाथका नाहीं इत्यादि अनेक विषम आग्रह धार अर जेती भूख है तातैं आधा आहार करैं मोक्षके साधनके अर्थि प्रथम क्षुधा परीषह जीती बहुरि दावानल समान जो तृषा ताकरि देहके सब अंग जरै हैं अर स्वामीके कुछ बाधा ही नाहीं शीतक्रियाका उपचार नाहीं शांतभावरूप मेघकी घटाकरि सींच्या है हृदयरूप क्षेत्र जिनका ॥ ९३ ॥ ताकरि तृषाका ताप न होता भया यह दूजी परीषह जीती बहुरि शीतकालविषैं विषमभूमि नदी सरोवरके तट निशा पूर्ण करी महा तीव्र पवन महाशीत तामैं जलकी वृत्ति सो तरुके तले व्यतीत करी। रात अर दिन वे योगेन्द्र योग हीमें निश्चल भए नग्न शरीर निराधार निरा-श्रय निरद्वन्द निर्ग्रंथ निरंजनके उपासक याभांति तीसरी शीत परिषह सहते भए अर ग्रीष्ममें पर्वतके शिखर पर तिष्ठते संते उष्ण परीषह सहते भए पर्वतकी शिला तपै है अर सब ओरसूं दावानलकी धूम संयुक्त लूह चली आवै है सो ध्यानरूप छत्रकी छायाकरि ग्रीष्मका आताप निवारते भए। चौथी परीषह जीती अर पांचमी दंश-

मशकादि परीषह सहते भए। डांस आदि नन्हे जीव दृष्टि थोडे पडें अर गूढवृत्तिकरि शरीरका रुधिर पीवैं ताकरि बलदेव स्वामी कंपायमान न भए। दंशमसकादि परीषह दृढतासूं सहते भये ॥ ९६ ॥ अर छठी नग्न परीषह अपने वश सहते भए। नग्नशरीरकूं शीतकी घामकी दंशमसकादिककी सबकी बाधा होय सो रंचमात्र हू बाधा न गिनी जैसें उत्तम स्त्री लज्जा लिये तिष्टै तैसें नग्न मुद्रा धरे विराजते भये अर सातवीं अरतिपरीषह सही अर अरति खेद न मान्या ध्यान योग जे विषमगिरि तिनके शिखरपर विराजे एकाविहारी जिनकल्पी मनका है निग्रह जिनके अर धर्मसाधनविषै है रुचि जिनकी। जैसें गृहस्थाश्रमविषैं रनभूमिमें रिपुनिसूं पीछे नाहीं फिरते तैसें परीषहसूं पाछे न भए। जो शरीरकूं अरति उपजी सो सही अर आठवीं स्त्री परीषह जीती कामरूप योधा स्त्रियनिके भौंहरूप धनुष चढाय अर तिनके कटाक्षरूप बाणनिकी वर्षा करता भया विवेकरूप मित्रके बलकरि कामरूप शत्रुकूं जीत्या अर नवमीं चर्या परीषह सहते भए साधुकूं चौमासा टारि एक स्थानक रहना नाहीं तीर्थ भूमिमें विहार करना यह साधुके आवश्यक है सो विहार करते कंटक कंकर आदि चुभैं अर फांस चुभैं तथा शीत अर उष्णमें मार्गकी धूरि आदि अति शीत होय अर उष्ण होय सो बाधक है राजपदमें गज तुरंग रथ पालकी आदि अनेक बाहन हुते तिनकूं चितारै नाहीं अर चर्या परीषहका खेद न मानै अर दशवीं निषिद्यापरीषह सहते भए जे बलदेवस्वामी ध्यानकरि धोई है बुद्धि जिनने सो पवित्र प्रासुक भूमिविषैं जहां स्त्री नपुंसक बालक मूढ जनका संसर्ग नाहीं तहां स्थान करते भए सो विषमभूमिकी बाधा अर कंकर पत्थरादिककी बाधाकरि खेदखिन्न न होते भए अति दृढतासूं निषिद्या परीषह सहते भए। बहुरि ग्यारवीं शय्या परीषह सहते भए। ध्यानथकी अथवा सूत्रके अध्ययन थकी रात्रि व्यतीत करते भए। अलपकाल अल्प है निद्रा जिनके सो भूमिशय्याविषैं एक करवट रह दूजी करवट न लई अर गृहस्थ अवस्थाके सेज विछौना विसरण होय गए सो कबहूं न चितारे जाभूमिविषैं कंकर पत्थर तहां शयन करें। या भांति ग्यारहवीं शय्यापरीषह सहते भये अर बारहवीं कुवचनपरीषह

क्षमाभावकरि सही धीर है बुद्धि जिनकी अर शांत है स्वभाव जिनका दुर्जननके कठोर वचन शस्त्र हुते अति तीक्ष्ण हृदयके भेदनहारे अति दुःसह सो स्वामी सहते भये नाहीं है काहूसूं कषाय जाकें अर तैरहवीं वध बंध-परीषह सहते भये। मनमें यह विचारैं जो अग्नि बाणादि दिव्यास्त्र अर खड्गादि सामान्य शस्त्र इनकरि शरीर हत्यां जाय है परंतु आत्मा नाहीं हत्या जाय है। अर नागपासि आदि देवोपुनीत बंधन अर वैरी सांकल आदि सामान्य बंधन इनकरि शरीर बांध्या जाय है आत्मा नाहीं बंधे है। आत्मा अमूर्तिक है ऐसा विचारि वधबंधन-परीषह मुनिवर सहैं। मुनीनिके शत्रु मित्र सब समान हैं ताकरि परीषह जीतैं ॥ ४ ॥ बहुरि चौदहवीं अयाचना-परीषह बलदेव स्वामी सहते भये मुनिकूं काहूसूं कुछ हू याचना न करनी बाह्य अर अभ्यंतर बारह तपके करणहारे स्वामी अस्थिमात्र रह्या है शरीर जिनका अर जिनसूत्रके अनुसार है आचरण जिनका अर अजाची है वृत्ति जिनकी सो कदेहू काहूपै कोई वस्तु नाहीं जांची जे जिनेश्वर सारिखे दातापर मोक्षसारिखा पदार्थ न जांचैं ते औरनपै अर वस्तु कहा जांचैं यह चौदहवीं याचनापरीषह कही अर पंद्रहवीं अलाभपरीषह कहै हैं वे भगवान आत्माराम मौनव्रतके धारक शरीरविषैं हू नाहीं है ममत्व जिनका निर्मलव्रतके आचरणहारे जैसैं चंद्रमा बडे मंदिरमें हू प्रकाश करै अर छोटे घरमें हू प्रकाश करै तैसैं मुनिराज तीनकुलमें धनवान अर निर्धन सबनिके आहारकूं जांय जैसा आहार मिले तैसा ही लेवैं अर अंतराय होय तो पाछे आवैं अलाभविषैं खेद न मानैं। यह पंद्रहवीं अलाभपरीषह हलधर मुनिवर सहते भये ॥ ६ ॥ अर सोलहवीं रोगपरीषह बलभद्र जीती वे मनुष्यनिके इंद्र राजानिके स्वामी राज्यअवस्थामें महामनोहर भोजन करते सो मुनींद्रपदमें जैसा मिले तैसा लेंय कबहूं खारा कबहूं अलूणा कबहूं रूखा कबहूं चिकणा कबहूं उष्ण कबहूं पहर डेढपहरका शीत या भांति प्रकृतिविरुद्ध आहारके लेयवेकरि वात, पित्त, कफ आदि अनेक रोग उपजे सो स्वामीके रोगका जतन नाहीं, एक निर्वाण हीका यत्न है। या भांति रोगपरीषह सही बहुरि सत्रहवीं तृणस्पर्शपरीषह सहते भये दावानलकरि जले तृण तिनकी

सूई समान अणी अर लाखके टूक अर कंकर पत्थर तिनकरि कर्कस जो स्थान ताविषैं शयन अर आसन करते उपजी है अंगविषैं पीडा तोऊ खेद न मानते भये याभांति सत्रहवीं परीषह जीती अर अठारहवीं मलपरीषह सहते भये वे राजेंद्र गृहस्थपनेमें नित्य स्नान अर सुगंधादिका लेप करते सो अब मुनिपदमें स्नान अर विलेपनका त्याग भया तो शरीरविषैं पसेव अर रजके योगकरि मलीनता भासै अर करके नखहूकरि नाहीं है तनका स्पर्श जिनके सो महा धवल कैसे सोहै हैं जैसैं धवलाचलके ऊंचे शिखरपर मेघकी कारी घटाकरि वेढ्या चंद्रमा सोहै है शरीरका नाहीं है संस्कार जिनके या भांति अठारहवीं मलपरीषह जीती। अर उन्नीसवीं सत्कारपुरस्कार परीषह सहते भये जो कोई आदर करै स्तुति करै सत्कार करै तो वासूं राग नाहीं अर जो कोई निरादर करै तिरस्कार करै तो वासूं अरुचि नाहीं विकाररहित शुद्ध है बुद्धि जिनकी शत्रुमित्रविषैं समान भाव हैं जिनके सो उन्नीसवीं परीषह सहते भये। अर बीसवीं प्रज्ञा परीषह जीती। आप महा बुद्धिमान सकल शास्त्रके वेत्ता वादित्वऋद्धिके धारक जिनसूं वादकरि कोई न जीति सकै अर वाग्मी कहिये महावक्ता अर गम कहिये ग्रन्थनिकी टीकाके कर्त्ता अर महाकवि कहिये ग्रन्थनिके कर्ता परंतु जिनके बुद्धिका गर्व नाहीं। जो मैं ऐसा हूं मो समान अन्य नाहीं अर जो कोई मूढजन कहैं जो यह तो बुद्धिहीन है, ऐसे वचन सुनि मनमें खेद न आनैं या भांति प्रज्ञापरीषह सही अर इक्कीसवीं अज्ञानपरीषह जीतते भये जो कोई अविवेकी मिथ्यादृष्टि ऐसे वचन अवज्ञाके कहै जो यह अज्ञानी हैं मनुष्य नाहीं पशु है कुछ समझ नाहीं वृथा मौन गहि राख्या है ऐसे निन्दा वचन सहते भये इक्कीसवीं परीषह जीती अर बाईसवीं अदर्शनपरीषह सहते भये महापुरुष ऐसा भ्रम मनमें न आनैं। जो उग्रतपका फल महाऋद्धि है आगैं यह बात सुनते सो अब तो नाहीं तातैं यह वचन सत्य है या असत्य है शुद्ध सम्यक्त्वके धारक या भांति संदेह न करैं तपका फल अष्ट सिद्धिका है यह निःसंदेह है अर हमारे काहू वस्तुकी कामना नाहीं शुद्धि होहु अथवा मत होहु हम आत्मस्वरूप चिद्रूप हैं ऐसा विचारिकरि बलदेव स्वामीने अदर्शनपरीषह जीती ॥ १३ ॥ यह बाईस

परीषह तिनके जीतनहारे हलधर स्वामी विषयकषाय दोषनिके हरणहारे अति दुर्द्धर तप करते भए महा जिनधर्मके आराधक तीर्थंविषैं है विहार जिनका सो तीर्थेश्वरका मार्ग मन वचन कायकरि सेवते भए॥ १४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ बलदेवतपोवर्णनोनाम त्रिषष्ठितमः सर्गः ॥ ६३ ॥

अथानंतर——ते पांडव महा पराक्रमी संसारसूं भयभीत पल्लव देशविषै जहां श्रीभगवान नेमिनाथ विहार करै हैं तहां गये चतुर्निकायके देवनिकरि मंडित समवसरणविषैं परमेश्वर विराजे हैं तहां जाय जिनेंद्रकूं प्रदक्षिणा देय भावसहित नमस्कार करते भये भगवानरूप मेघ तिनि ज्ञानरूप अमृतकी वृष्टि करी सो पीयकरि जिनेश्वरकूं अपने पूर्वजन्म पूछते भये सो प्रभु दिव्यध्वनिकरि कहै हैं। या भरतक्षेत्रविषैं चंपापुरीमें राजा मेघबाहन कुरवंशका आभूषण ताके समय नगरीमें विप्र सोमदेव जाके ब्राह्मणी सोमिला ताके पुत्र तीन तिनके नाम सोमदत्त सोमिल सोमभूति तिनका मामा अग्निभूति ताकी स्त्री अग्निला ताके पुत्री तीन——धनश्री, मित्रश्री, नागश्री सो यह तीनों भाई परने यह ब्राह्मण माता पिता अर तीनों भाई अर बहू दोय इतने जीव तो महा जिनधर्मी संसार शरीरतैं उदास शास्त्रके वेत्ता अर तीजे भाईकी स्त्री नागश्री सो अविवेकिनी कैयक दिनमें माता सोमिला तो आर्यिका भई अर पिता सोमदेव दिगंबर भये अर तीनों भाई श्रावक अणुव्रती अर दोऊ बहू श्राविका यह धर्मका साधन करते भये अर नागश्री धर्मसूं विमुख एकदिन धर्मरुचिनामा मुनि आहारके समय इनके घर आये मानूं वे मुनि अखंड धर्मके पिंड ही हैं चांद्रीचर्याके धारक महाव्रती, अणुव्रती श्रावकका घर जानि आये चंद्रमा घर पर उद्योत करै तैसे यह हू धनी अर निर्धनी सबके आवैं। उत्तमकुलका आचारी श्रावक होय ताके घर आहार करैं जब साधु आये तब सोमदत्त बडे भाईपर गये अर कोई कायकी ब्याकुलता भई तब सोमदत्त तीजे भाईकी स्त्री नागश्री ताहि दानकी आज्ञाकरि गया हुता। सो पापिनी निःकारण वैरिणी मुनिकूं विषसंयुक्त आहार दिया

सो महामुनि समाधिमरणकरि सर्वार्थसिद्धि गये अर वे तीनों ही भाई नागश्रीका यह कर्तव्य जानि वरणनामा मुनिके निकट मुनि भये अर धनश्री अर मित्रश्री यह दोऊ भाईनकी बहू गुणवती आर्याके समीप आर्यिका भई संसारके बाससूं विरक्त भई सो वे तीनों मुनि अर दोऊ आर्यिका रत्नत्रयकूं शुद्धताके अर्थि तपश्चरणविषैं उद्यमी भये सो सब जीवनविषैं समभाव सो सामायिकचारित्र कहिये तहां सकल पापक्रियाका त्याग अर अखंडित संयम अर जहां प्रमादके योगसूं संयमका लोप होय अर पाछा संयम थापै सो छेदोपस्थापना चारित्र कहिये। जहां असंयमके परिहारकरि अर संयमके धारणकरि उत्कृष्ट शुद्धता होय सो परिहारविशुद्धिचारित्र कहिये ॥ १७ ॥ अर जहां सांपराय कहिये कषाय तिनमें क्रोध मान माया यह तीन तो नवमें गुणस्थानके अंत जाते रहे अर दशवें गुणस्थानके सूक्ष्म लोभ रहै सो सूक्ष्मसांपरायनामाचारित्र कहिये समस्त पापका है अभाव जहां ॥ १८ ॥ अर यथाख्यात कहिये जैसा सिद्धांतविषैं कहा है तैसा होय चुक्या सो उपशांतमोह तथा क्षीणमोह मुनिके होय है सो चारित्र साक्षात् मोक्षका मूल है ॥ १९ ॥ अर तप बारह जिनमें छः अभ्यन्तर अर छह वाह्य, तप प्रायश्चित्तादि ध्यान पर्यंत छः अर वाह्य तप अनशन आदि कायक्लेश पर्यंत छह तिनमें प्रथम वाह्य तप कहै हैं संयमादिककी वृद्धिके अर्थ अर ध्यानकी सिद्धिके अर्थ रागभावकी हानिके अर्थ अनेक उपवास करते सो अनशननामा तप कहिये ॥२१॥ अर दोषनिकी शांतता अर संतोषकी वृद्धि अर ध्यान तथा अध्ययनकी सिद्धिके अर्थ अर संयमकी दृढताके अर्थि जागरणका कारण जो अल्प आहार सो करना ताका नाम अवमौदर्य तप कहिये ॥२३॥ अर महामुनि आहारके अर्थि ऐसा विचार करैं जो आज हमकूं एक घर आहार मिलैगा तो लेंगे दूजे घर नाहीं जावेंगे अथवा ऐसा आहार मिलेगा तो लेंगे नातर न लेंगे इत्यादि आशाकी निवृत्तिके अर्थ अवग्रह करना सो वृत्तिपरसंख्यान नामा तप कहिए। अर घृत दधि दुग्ध खीर मिष्टान्नादि गरिष्ट आहारका त्याग सो इंद्रीनिके जीतिवे अर्थि रसपरित्यागनामा तप कहिए ॥ २४ ॥ अर बालक तथा स्त्री अथवा नपुंसक अथवा मूढ मिथ्यादृष्टि इनसूं रहित

प्रासुकस्थानविषैं आसन सो विविक्तशय्यासननामा तप कहिए अर शीतकाल नदी सरोवरके तीर अर उष्णकाल गिरिके शिखर अर वर्षाकाल वृक्षके तले यह त्रिकाल योग अर कायोत्सर्ग अर मासोपवास पक्षोपवास चतुर्मासोपवास इत्यादि तपका धारण शरीरके सुखका त्याग सो कायक्लेशनामा तप कहिए। यह छै प्रकार बाह्यतप कहे सो मोक्षके मार्ग हैं ॥ २६ ॥ यह शरीरादि परद्रव्यकी अपेक्षा लिए अर परवस्तुके निमित्ततैं होय है तातैं यह बाह्यतप कहिये अर मनके निश्चलकरिवे आर्थि माहिले तप छै अभ्यन्तरविषै अशुभकी निवृत्ति अर शुभकी प्रवृत्ति सो प्रायश्चित्तनामा तप कहिये सो प्रायश्चित नवप्रकार है—आलोचना १, प्रतिक्रमण२, आलोचनप्रतिक्रमण दोऊ इकट्ठे ३, विवेक ४, कायोत्सर्ग ५, तप ६, छेद ७, परिहार ८, उपस्थापना ९, अर दूजा विनयनामा तप ताके भेद चार—दर्शनविनय, चारित्रविनय, ज्ञानविनय, उपचारविनय, अर वैयावृत्यके भेद दस—आचार्य १, उपाध्याय, [illegible], तपस्वी ३, शैक्ष ४, ग्लान ५, गण ६, कुल ७, संघ ८, साधु ९, मनोज्ञ १०। यह दसप्रकार मुनि तिनके वैयावृत्य करनें अर स्वाध्यायके भेद पांच पढना १, पृछना २, अनुप्रेक्षा ३, आम्नाय ४, धर्मोपदेश ५, अर संकल्पविकल्पका त्याग सो कायोत्सर्ग ताके भेद दोय ममताका त्याग सो निश्चय अर कायोत्सर्ग आसन सो व्यवहार अर चित्तकी निश्चलता सो ध्यान ताके भेद चार सो कहै हैं तिनमें आर्त्त रौद्र दोय खोटे सो दुर्ध्यान कहिये अर धर्म शुक्ल यह दोऊ नीके सो उत्तम ध्यान कहिये ॥ ३१ ॥ यह बारह प्रकार तप कहे अब इनका विशेष व्याख्यान करैं हैं। प्रायश्चित्तके भेद नव तिनमें प्रथम आलोचना कहिये प्रमादकरि जो आपके दोष उपज्या होय सो गुरुके निकट प्रकट करना अर प्रतिक्रमण कहिये मिथ्या हूजियो मेरे दुराचार इत्यादि शुभ भावनिकरि दोषनिका निराकरण अर तीजा भेद आलोचनाप्रतिक्रमण यह दोऊ केतेक दोष आलोचनाकरि दूर करने अर केतेक प्रतिक्रमणकरि मिटावने सो आलोचनाप्रतिक्रमण शुद्धताका कारण है। अर चौथा विवेक कहिये आपकूं दोषनिसूं न्यारा करना दोऊके मार्ग न चलना अर पांचवा व्युत्सर्ग कहिये शरीरका

राग तजि कायोत्सर्गादि करना ॥ ३५ ॥ अर छठा भेद तप सो अनसनादि जानहु अर सातवां भेद कहिये कैयकदिन कैयकमास दीक्षाका छेद होय अर आठवां भेद परिहार कहिये कैयकदिन कैयकमास मुनियनिके मंडलसूं दूर मुनियोंकी पंक्तिमें न रहे वाहि कोई प्रणाम न करे। नवमां भेद उपास्थान जो पाछी दीक्षा ले यह नव भेद कहे। अब विनयके भेद कहैं हैं शब्दशुद्धि अर्थशुद्धि शब्दोभयशुद्धि समयपाठ अर उपधान स्मृद्धि कहिये बारबार चिंतवन अर बहुमान कहिये जिनधर्म अर जिनधर्मिनिका बहुत सन्मान अर विनयोनमुद्रित कहिये विनयवान होय सम्यग्यज्ञानका आराधन अर गुरुवादि अनिन्हव कहिये गुरुका नाम न छिपावना यह आठप्रकार ज्ञानाचार तिनका विनय ज्ञानविनय कहिये अर अष्टप्रकार दर्शनाचार निःशांकित निःकांक्षित निर्विचकित्सा अमूढदृष्टि उपगूहन स्थितिकरण वात्सल्य प्रभावनाअंग यह आठ तिनका दर्शनविनय कहिये ॥ ३९ ॥ अर तेरहप्रकार चारित्र पंचमहाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति तिनका जो विनय सो चारित्रविनय कहिये ॥ ४० ॥ अर रत्नत्रयके धारक महामुनि श्रीगुरु तिनका प्रत्यक्ष अर परोक्ष विनय करना सन्मुख जाना उठना पहूंचावने जाना उनका नाम सुनि प्रणाम करना स्तुति करनी यथायोग्य सो उपचारविनय कहिये ॥ ४१ ॥ यह चारप्रकार विनयतप कहे आगे दशप्रकार वैयावत्यका वर्णन करे हैं। आचार्य कहिये शिक्षादीक्षाके दायक १ अर उपाध्याय कहिये जिनसूत्रके पाठी पाठक २, अर तपस्वी कहिये महातपके धारक ३, अर शिक्षा कहिये नव दीक्षित आचारांगसूत्रके अभ्यासी ४, अर ग्लान कहिये रोगकरि पीडित ५, अर गण कहिये वृद्ध ६, कुल कहिये एक गुरुके शिष्य ७, अर संघ कहिये ऋषि मुनि यती अनागार ८, अर साधु कहिये घने वर्षनके मुनिराज अर मनोज्ञ कहिये जगतके प्यारे जिनके वचन सर्वोंकूं रुचे १० ये दस प्रकारके दिगम्बर तिनको रोग व्याधि अर दुर्जन कृत संताप अथवा परीषहके उदय अथवा मिथ्यातका संसर्ग जानकरि वैयावृत करैं अर विचिकित्सा कहिए घृणा न करैं जाकरि महापुरुषनिकूं स्थिरता होय सो करैं यह वैयावृत्यका

व्याख्यान किया अर स्वाध्यायके भेद पांच वांचना कहिए ग्रंथनके अर्थ करमे १, अर प्रच्छना कहिए प्रश्न करने जो संदेह होय सो गुरुकूं पूछकरि निवृत्त करना २, अर ज्ञानका निरंतर मननकरि अभ्यास सो अनुप्रेक्षा ३, अर शास्त्रकी आज्ञा प्रमाण चलना सो आम्नाय ४, अर औरनिकूं उपदेश देयकरि धर्ममें चलावना सो धर्मोपदेश यह स्वाध्यायके भेद कहे अर रागादिक क्रोधादिक मांहिले परिग्रह अर वस्त्राभरणादि वाहरले परिग्रह तिनका त्याग अर कायकूं असार जानि ममत्व तजना सो कायोत्सर्ग कहिए ॥ ४९ ॥ निसर्गता और निर्भयताके अर्थ अर धन जीवनकी आज्ञाकी निवृत्तिके अर्थ जो वाहिरके अर भीतरके संगका त्याग सो कायोत्सर्ग ॥ ५० ॥ अर मनकी एकाग्रता सो ध्यान यह वारह तप निर्जराके कारण हैं ॥ ५१ ॥ जे संयमके धारक संयमी हैं तिनके तपकरि निर्जरा होय है सो परिणामनके भेदकरि सम्यग्दृष्टिके चतुर्थगुणस्थानतैं लेयकरि वारहवें गुणस्थानपर्यंत वढती निर्जरा है प्रथम तो मिथ्यादृष्टितैं अव्रती सम्यक्तीके असंख्यगुणी निर्जरा है भव्यजीव पंचेंद्री मन संयुक्त पर्याप्त जो सम्यक्त्व योग्य होये ताके अंतरंग शुद्धताकी वृद्धिकरि निर्जराकी वृद्धि होय है अर अव्रती सम्यक्त्वीतैं पंचम गुणस्थानवाले श्रावकके असंख्यगुणी अधिक निर्जरा हैं अर श्रावकसे छठे गुणस्थान मुनिके असंख्यगुणी अधिक अनंतानुबंधीके क्षयवारेके हैं अर वातैं असंख्यातगुणी अधिक उपशम श्रेणीका धारक जो क्षायकसम्यक्ती मुनि ताके हैं तिनमें आठवें गुणस्थानतैं नवमेंतैं दशवें असंख्यात गुणी वढती २ है। अर दशवें गुणस्थानतैं ग्यारहवें गुणठाने असंख्यात गुणी अधिक है अर ग्यारहवें अष्टमगुण ठाणे क्षपकश्रेणीवारेके असंख्यगुणी अधिक है अर अष्टमसे नवमें अर नवमेंसे दसवें क्षपकश्रेणीवारेके असंख्यगुणी है अर दशवेंसे वारहवें असंख्यातगुणी निर्जरा अधिक जानहु अर वारहवेंसे अनंतगुणी केवलीके है जिनके अनंतज्ञानदर्शन है ॥५७॥ यह सब सूत्रकी चरचा तीनूं विप्र मुनि अर दोऊ ब्राह्मणी आर्यका तिनि निःसंदेह धारी अर मुनियनिके भेद पांच पुलाक १, वकुस २, कुशील ३, निर्ग्रंथ ४, स्नातक ५ यह पांचोंही प्रकारके साधु निर्ग्रंथ हैं अर व्रतशीलके धारक हैं तिनके लक्षण

कहे हैं जिनके चौरासी लाख उत्तरगुणका तो अभाव है। अर काहू कालहू क्षेत्रविषैं मूलगुण अठाईस तिनहूकी न्यूनता नजर आवै। जैसे अन्नका पुला तूप अर कणसंयुक्त हैं तैसैं ताका आचरण गुण दोष संयुक्त है। यह पुलाकका लक्षण कहा ॥ ५९ ॥ अब बकुसका लक्षण कहै हैं मूलगुण विषैं तो अखंडित है अर शरीरका तथा पुस्तकादि उपकरणादिकका किंचित अनुराग है अर जाके शिक्षमन चलचित है अति निश्चल नाहीं अर आप तेजस्वी प्रकृति है यह वकुसके लक्षण जानो अब कुशीलके लक्षण कहे हैं। जाके मूलगुण अर उत्तरगुण परिपूर्ण हैं कदाचित् उत्तरगुणोंमें भंग होय सो कुशील हैं ताके भेद दोय एक प्रतिसेवन कुशील दूजा कषायकुशील जो दशवें गुणठाणे है जहां सूक्ष्म लोभका उदय है अर सब कषाय गए ॥ ६२ ॥ कषायही अभ्यंतरके परिग्रह हैं अर प्रसिसेवना कुशीलके कुछइक शरीरका वैयाव्रत्य करावना है अर शिष्यादिकसे अनुराग है इनमें पुलाक वकुस अर प्रतिसेवना कुशील ये तो छठे अर सातवें गुणठाणे ही होय है अर कषाय कुशील दशवें गुणठाणे ही होय है अर निर्ग्रंथ यह चौथा भेद बारहवें गुणठाणे ही होय है जहां केवलज्ञान उपजनेमें एक मुहूर्त ही रहा है क्षीण कषाय गुणठाणे ही निर्ग्रंथ कहिए जैसैं जलविषैं दण्डकी लीक प्रगट नाहीं दीखै तैसैं क्षीणकषाय संयमीके कर्मका उदय प्रगट न भासै ॥६३॥ अर जिनके च्यार घातिया कर्मका क्षय भया केवली भए ते स्नातक कहिए यह पांचो ही मुनि भावलिंगी हैं नैगमनयकी अपेक्षा सबही निर्ग्रंथ हैं परिग्रहधारी नाहीं।

अथानन्तर—इनके संयमका व्याख्यान करै हैं निर्ग्रन्थ अर स्नातक इनके तो यथाख्यात संयम ही है अर कषायकुशीलके सूक्ष्मसांपराय संयम ही है अर पुलाक वकुस अर प्रतिसेवनाकुशीलके सामायिक अर छदोपस्थापना दोय संयम हैं अर पुलाक वकुस अर प्रतिसेवना कुशील यह उत्कृष्टपन ग्यारह अंग अर दश पूर्व लग भणे अर कषायकुशील अर निर्ग्रन्थ यह ग्यारह अंग चौदह पूर्व सकलश्रुतके पाठी होय हैं अर स्नातक केवली है सर्वज्ञ हैं सो श्रुतज्ञानके पार हैं अर पुलाक मधिपने आचारांगसूत्र भने अर जघन्य-

पने निर्ग्रन्थ पर्यंत सब ही यतीनके पांच समित तीन गुप्ति अष्ट प्रवचन माता तिनहीका ज्ञान है अर पराये आग्रहतैं कबहुक कोई काहू देशकालविषैं प्रमादके योगतैं मूलगुणविषैं अतीचार लगावैं सो पुलाकका लक्षण है अर बकुसके भेद दोय एक शरीर बकुस दूजा उपकरण बकुस जाके शरीरका संस्कार सो शरीर बकुस अर जाके उपकरणनिका बहु अनुराग सो उपकरण बकुस अर प्रतिसेवानुकुशीलके कदाचित् उत्तरगुणमें विराधना होय परन्तु मूलगुणमें न होय अर कषायकुशीलके अर निग्रन्थके मूलगुण उत्तरगुण पूर्ण हैं अर स्नातक परमात्मा ही हैं यह पांच प्रकार ऋषि तीर्थंकरादिके सयय भी होवें अर अंतरालविषैं भी होवें अर यह पांच प्रकार साधु सब ही भावचारित्री अर द्रव्यचारित्री हैं बाहरले परिग्रह दस सो तो काहू मुनिके नाहीं भीतरके चौदह ते निर्ग्रन्थ अर स्नातकके तो सर्वथा नाहीं अर कषायकुशीलके एक सूक्ष्मलोभ है अर नाहीं अर पुलाक बकुस अर प्रतिसेवना कुशीलके नव नो कषाय अर संज्वलनकी चौक है अर निर्ग्रंथ है अर स्नातकके एक शुक्ललेश्या ही है। चौदहवें गुणस्थान लेश्या नाहीं अर कषायकुशील हूके शुक्ल ही है अर पुलाक बकुस अर प्रतिसेवना कुशीलके पीत पद्मशुक्ल यह तीन लेश्या हैं ॥ ७९ ॥ अर पुलाकका उत्पात बारहमें सहस्रार स्वर्ग लग है तहां उत्कृष्ट आयु सागर अठारह है अर बकुस अर प्रतिसेवना उत्पात आरण अच्युत स्वर्ग जो पन्द्रहमां सोलहमें तहां तक है अर कषायकुशील अर निर्ग्रन्थ यह दोनों उपशमश्रेणीवारे क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिनका उत्पात सर्वार्थसिद्धि लग है अर स्नातक मोक्ष ही पावें अर जघन्यपने पुलाकादिकका उत्पात पहिले सौधर्म स्वर्ग है तहां उत्कृष्ट आयु दोय सागरका है ॥८१॥ अर स्नातकका एक निर्वाणही स्थानक है सो ऊर्द्ध गमनकर लोकके शिखर जाय है अनंतगुण ऋद्धिमई विराजे हैं किधा है कर्मका अन्त जाने ऐसा स्नातक सो ही सिद्ध होय है। इन पांच प्रकार मुनियोंके कषायनके अभावनके निमित्ततैं संयम स्थानके भेद असंख्य होय हैं। अर अनंतगुण संयमलब्धि स्थानिक होय हैं तिनमें पुलाकके अर कषायके सर्व जघन्य लब्धि स्थानक होय है। पुलाक अर कषाय कुशील

यह दोनों एक समयविषैं असंख्य लब्धि थानकविषैं गमन करैं तिनमें पुलाक तो पाछा आवै अर कषाय कुशील पाछा न आवैं असंख्यस्थानके लब्धिविषैं गमन करैं तिनमें बकुस तो पाछा आवै अर प्रतिसेवना कुशील पाछा न आवैं असंख्यात तक गमन करै अर निर्ग्रंथ अर स्नातककी महिमा कहनेमें न आवै वे ईश्वर ही हैं।

अथानंतर—क्षेत्र कालादि बारह भेदनकरि सिद्धनिका कथन करै हैं ॥ ८८ ॥ सिद्धक्षेत्र ही विषय निर्मल सिद्ध है आकाशके प्रदर्शनविषैं लोकके शिखर सिद्ध अलिप्त विराजै हैं ॥ ८९ ॥ अपने स्वरूपमें तिष्ठै हैं अर जन्मकी अपेक्षा तो कर्मभूमिहीतैं मुक्त हैं अर कोई देव विद्याधर पूर्वभवका विरोधी ले आवै ताकी अपेक्षा सकल मनुष्यक्षेत्रतैं मुक्त हैं ॥९०॥ अर कालकी अपेक्षा वर्तमान नयकरि एक समयविषैंमुक्ति है अर उत्सर्पिणीकालकी अपेक्षा चौथे कालहीमें मुक्ति है अर अवसर्पिणीकालकी अपेक्षा अवसर्पिणीके तीसरेके अंतमें अर चौथेकालमें मुक्ति है अर चौथेकालका उपजा पांचवें कालमें मुक्ति जाय अर पांचमेंका उपजा न जाय यह तो जन्मकी अपेक्षा कही अर कोई हर ल्यावै उडाय ल्यावै ताकी अपेक्षा सर्वकालमें सर्व मनुष्यक्षेत्रतैं मुक्ति जानो ॥ ९३ ॥ अर सिद्धगति हीविषैं सिद्ध हैं तथा मनुष्यगतिसे सिद्ध हैं और गतितैं नाहीं अर तीनों वेद वारेनकूं नवमें गुणस्थान स्त्री नपुंसक पुरुषवेदका नाश भए मुक्ति होय है वेद भावनकरि है सो अशुद्धभाव मिटैं मुक्ति होय है अर लिंग शरीरका है सो पुरुषलिंग हीतैं मुक्ति है स्त्रीलिंग अर नपुंसकलिंगतैं नाहीं अर निर्ग्रंथलिंग हीकरि मुक्ति है। सग्रंथ लिंगकरि नाहीं अर तीर्थ कहिए तीर्थंकरोंके समयहू मुक्ति अर अन्तरालविषैं हू मुक्ति अर चारित्र कहिए सामान्य नयकरि एक यथाख्यातचारित्रकर मुक्ति अर विशेपताकरि सामायिक छेदोस्थापना सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात इन चारोंकर मुक्ति है अथवा परिहारविशुद्धिचारित्रवालोंकी अपेक्षा पांचोंही चारित्र मोक्षके कारण हैं ॥ ९७ ॥ अर प्रत्येकबुद्ध कहिए स्वयंबुद्ध अर बोधितबुद्ध कहिए गुरुके उपदेशतैं प्रतिबुद्ध इन दोनों हीकूं मुक्ति होय है अर ज्ञान कहिए सम्यग्ज्ञान सो मुक्तिका कारण है ज्ञानके भेद पांच तिनमें केवलज्ञान तो

मुक्तिस्वरूप ही है अर किसीके मतिश्रुतिही होय केवल उपजै अर किसीके मति श्रुत अवधि होय केवल उपजे अर किसीके मति श्रुति अवधि मनःपर्यय होय केवल उपजे तातैं सवही ज्ञान मुक्तिके कारण हैं दोय तीन चार अंत केवल अकेला एकही है केवल उपजे औरनिका अभाव है ॥ ९८ ॥ अर अवगाह कहिए शरीरकी अवगाहना उत्कृष्ट धनुष पांचसौ पचीस अर जघन्य हाथ साढा तीन अर मध्यके भेद अनेक हैं हाथ साडातीनसै अधिक पांचसै पचीस धनुषसे न्यून यह सव मध्य अवगाहनाके भेद जानहु ॥ १०० ॥ उन अवगाहनामें सिद्ध होय है कोई सादा तीन हाथसे कोई पांचसै पचीस धनुषसे अर कोई मध्य अवगाहनासे मुक्ति होय है ॥ १ ॥ अर अंतर कहिए अंतराल जघन्य एक समय उत्कृष्ट विरहकालकी अपेक्षा मास छह अर मध्यके भेद अनेक दोय समयसे लेकर एक समय घाट छह मास पर्यंत जानहु अर संख्या कहिए गणना जघन्य एक समय एक अर उत्कृष्ट एक समयमें एक सौ आठ ॥ ३ ॥ अर अल्पवहुत्व कहिए क्षेत्रादिकरि अल्पवहुत्वका भेद कहे हैं अर सिद्धक्षेत्रविषै कोई सिद्ध तो न्यूनाधिक्य नाहीं अतीतकालके सिद्धनितै अनागतकालके सिद्ध वहुत्व जानहु अर क्षेत्र कहिए नरक्षेत्र अर नरक्षेत्रसे ही मुक्तिका कारण तामें दोय प्रकार आर्यक्षेत्रोंमें जन्म सिद्ध भए ते वहुत अर परक्षेत्रसे परक्षेत्रविषै देव विद्याधरोंके हरे आए अर मुक्त भए ते अल्प यह सर्वज्ञके मार्गविषै कहा है ॥ ६ ॥ परक्षेत्रके हरे आए तिनतैं स्वक्षेत्रके जन्म संख्यातगुने जानहु अर कैयक मुनि दुष्टनके हरे उन आकाशसे डारे सो भूमिमें न पडे आकाशहीतैं मुक्त भए ते अल्प अर कैयकनकूं डारे अर वैरानी भूमिमें जाय पडे ते उनतैं संख्यातगुणे अधिक अर समभूमितैं सिद्ध भए संते उनसे असंख्यातगुण अधिक ॥ ८ ॥ अर परक्षेत्रोंके हरे समुद्रोंसे सिद्ध होय हैं सो सबमें लवणसमुद्रके अल्प अर उनतैं संख्यातगुने कालोदधिके जानों अर उनतैं जम्बूद्वीपके संख्यातगुणे अधिक जानो यह सब भेदसर्वज्ञ देवने दिखाया है। अर जम्बूद्वीपतैं संख्यातगुणे धातकीखंडद्वीपके अर उनतैं संख्यात गुणे पुष्करार्द्धद्वीपके ॥ १० ॥ यह क्षेत्रके विभागकरि अल्पबहुत्व कहा अर कालादिकके विभागकरि सूत्रके अनु-

सार अल्पबहुत्व जान लेना ॥ ११ ॥ इत्यादि श्रीगुरुके मुखदर्शन ज्ञान चारित्रके भेद धारकरि सोमदत्तादि तीनों मुनि अर वे दोऊ आर्यका आराधना आराधि आरण अच्युत स्वर्गविषैं पांचों जीव बाईस सागर आयुके धारक देव भए ते महासम्यग्दृष्टि स्वर्गके अद्भुत सुख भोगते भए ॥१३॥ अर तीजे भाईकी स्त्री नागश्री जानैं ज़तीकूं आहारमैं विष दिया सो मरकरि पांचवें नरक गई तहां सत्तरह सागर महादुःख भोगे ॥ १४ ॥ तहांतैं निकसकरि अन्तके स्वयंप्रभनामा द्वीपविषैं दृष्टिविष जातिका सर्प होयकरि तीजे नरक गया तहां तीन सागर दुःख भोगे ॥ १५ ॥ तहांतैं निकस तिर्यंच भया बहुरि सागर दोय त्रस अर थावर योनिमें पूर्ण किए ॥१६॥ बहुरि चंपापुरीविषैं चांडालकी पुत्री भई। तहां समाधिगुप्तनामा मुनिके निकट मद्यमांस मधुका त्याग किया बहुरि मरकरि वाही चंपापुरीविषैं सुबंधनामा सेठ ताके धनवती नामा स्त्रीके सुकुमारिका नामा पुत्री भई ॥ १८ ॥ सो पूर्वले पापके उदयकरि महा दुर्गंध शरीर भई यद्यपि रूपवती है तथापि दुर्गंधके योगकरि कोई न परणै ॥ १९ ॥ अर ताही नगरमें एक धनदेव वणिक ताके अशोकदत्ता स्त्रीके दोयपुत्र एकका नाम जिनदेव अर दूजा जिनदत्त सो बडेकी सगाई दुर्गंधासे भई सो सुव्रतस्वामीके समीप मुनि होय गया। अर कुटुम्बके आग्रहतैं छोटे जिनदत्तने परनी सो हू याहि तजकरि देशांतर उठ गया ॥ २२ ॥ तब यह दुर्गंधा आपको निन्दती सन्ती उपवासादि तप करै एक दिन या दुर्गंधाने क्षाता नामा आर्यकाकूं आहार दिया ताके साथ दोय नवयौवन आर्यका उनकूं देख दुर्गंधा गुराणीकूं पूछती भई हे मात! यह दोनों आर्यका अतिरूपवान नवयौवनमें कौन कारणतैं वैराग भई। तब गुरानी महा दयावान इनके वैराग्यका कारण याके प्रतिबोधवे अर्थ कहती भई ॥ २० ॥ हे सुकुमारी! जा कारणकरि यह वैराग्य भई सो तू सुन यह पूर्वभवविषैं सौधर्म इन्द्रके देवी हुती एकका नाम विमला दूजी सुप्रभा सो यह प्रसिद्ध थी ॥२६॥ एक दिन यह नंदीश्वर द्वीपविषैं जिनपूजाके अर्थ गई हुतीं सो इनकूं वैराग्य उपजा तब इतने यह प्रतिज्ञा करी जो या देवगतिविषैं तो तप नाहीं हम मनुष्यभव पाय महातप करैंगी। जाकरि स्त्रीपर्याय मिटै

फिर भवभ्रमण न होय ॥ २९ ॥ यह प्रतिज्ञाकरि यह तिष्ठी सो तहांतैं चयकरि साकेतपुरीविषैं राजा श्रीषेणके रानी श्रीकांता तिनके यह पुत्री भई। एक हरिषेणा दूजी श्रीषेणा जब यह यौवनवन्त भई तब पिताने इनका स्वयम्बर रचा सो पूर्वजन्मकी प्रतिज्ञा चितार कुटुम्बकूं तज आर्यका भई। यह वचन गुराणीके सुनकरि दुर्गंधाहू आर्यका भई तत्काल संसारका त्याग किया ॥ ३३ ॥ यह संसार असार है तामें उत्तम जीव न रमें यह महा तपस्विनी आर्यकानिके साथ तप करती काल व्यतीत करती भई तपकर सोख्या है सर्व गात्र जाने ॥३५॥ एकदिन बनविषैं बसन्तसेना वेश्या क्रीडाबिषैं तत्पर सो पंच पुरुषनिसहित आई ताहि देख याके ऐसे भाव भये जो यह सौभाग्यवती है, इन परिणामनकरि याके अजसप्रकृतिका बंध भया तातैं अबुधलोक पंच भरतारी द्रोपदीकूं कहते भये ॥ ३६ ॥ कैयंक दिनमें वह तपस्विनी समाधिमरणकरि नागश्रीके भवका भरतार जो सोमभूतिका जीव देव ताके देवी भई। पचावन पल्यका आयु भया तहांतैं चयकरि सोमदत्त सोमदेव सोमभूति यह तीनों भाई तो राजा पाण्डवके रानी कुन्ती ताके तीन पुत्र भये तिनके नाम युधिष्ठर भीम अर्जुन अर धनश्री मित्रश्री इन दोऊनके जीव राजा पांडवके दूजी रानी माद्री ताके नकुल अर सहदेवनामा पुत्र भये ॥ ३९ ॥ अर नागश्रीका जीव राजा द्रुपदके रानी दृढरथा तिनके द्रोपदीनामा पुत्री भई ॥ ४० ॥ सो पूर्वभवके योगकरि अर्जुनसे स्नेह बढा राधा बंधकरि अर्जुनने परनी ॥ ४१ ॥ यह पूर्वभवका वृत्तांत श्रीनेमजिनेंद्रने पांडवनसे कहा अर आज्ञा करी युधिष्ठर भीम अर्जुन तीनभाई तो इसी जन्मतैं सिद्ध होवेंगे अर नकुल सहदेव सर्वार्थसिद्धि जावेंगे सो एक भव धर सिद्ध होवेंगे ॥ ४२ ॥ अर द्रोपदी सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध सो तपके प्रभावकरि अच्युत स्वर्गविषैं देव होय नरभव पाय निरंजनके धाम जायगी याभांति पांडव प्रभुके भूतपूर्व भव सुनकरि संसारतैं विरक्त भये अर तत्काल तीर्थेश्वरके निकट संयम अंगीकार किया ॥ ४३ ॥ अर माता कुन्ती तथा द्रोपदी सुभद्रा आदि अनेक रानी राजमतीके समीप आर्यका भई ॥ ४४ ॥ ते पांचों भाई पांडव रत्नत्रयके धारक पंचमहाव्रत पंचसमिति तीनगुप्तिके

पालनहारे आत्मस्वरूपका ध्यान करते विहार करते भये महा उग्र तप किये ॥ ४५ ॥ इनकैसे तप इनहीसे बनें भीमने वृत्तिपरिसंख्या तपविषैं अति दुर्द्धर अवग्रह किए सो छः महीने तक आहारका योग न भया शरीर अति क्षीण होय गया अर युधिष्ठरादिक बेला तेला पक्षोपवास मासोपवासादि महा तपकरि युक्त जिन आगमरूप समुद्रके पारगामी संयमी तीर्थ विहार करते भये ॥ ४६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ युधिष्ठरादिपंचपांडवप्रवर्ज्यावर्णनो नाम चतुःषष्ठितमः सर्गः ॥ ६४ ॥

आठवां अधिकार।

श्रीनेमनाथका निर्वाणगमन।

अथांनतर—सर्व देवनके देव तीर्थके कर्त्ता धर्मोपदेश कर भव्यनकूं कृतार्थकरि उत्तर दिशातैं सोरठकी ओर गमन किया ॥ १ ॥ जब जिन रवि उत्तरायणतैं दक्षिणायन आये तब या तरफ पूर्वतैं उद्योत भयो ॥ २ ॥ अरहंत पदकी विभूतिकरि मंडित महेश्वर जब दक्षिणकूं विहार किया तब वे दक्षिणके सर्व देश स्वर्गकी शोभाकूं धारते भये ॥ ३ ॥ भगवान भूतेश्वर निर्वाण कल्याणक आया है निकट जिनके सुर असुर नरनकरि अर्चित गिरनार आय विराजे ॥ ४ ॥ पूर्ववत समवसरणकी रचना तहां भई देव दानव मानव तथा तिर्यंच सब ही प्रभुकी दिव्यध्वनि सुनते भये ॥ ५ ॥ श्रीभगवान सम्यदर्शन ज्ञान चारित्ररूप जो महा पवित्र जिनेश्वर धर्म ताका व्याख्यान करते भये सो धर्म स्वर्ग मोक्षके सुखका साधन है अर साधुनकूं प्रिय है॥ ६ ॥ जैसा केवलज्ञानके उदयविषैं पहले धर्मका उपदेश दिया हुता तैसा ही विस्तार सहित निर्वाण कल्याणकका एक मास रहा तब लग दिया ॥ ७ ॥ जैसे अग्निका गुण ऊष्ण अर ऊर्धजलन अर जलका गुण शीत अर पवनका गुण शीघ्रगमन अर तिरछा गमन अर सूर्यका गुण प्रकाशपना अर आकाशका गुण अमूर्तत्व अर पृथिवीका गुण अनेक वस्तुनका धारण अर सहन-

शीलपना तैसे कृतार्थ जे जिनेंद्र तिनका गुण धर्मोपदेश है ॥९॥ जैसे ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहनीय अंतराय यह चार घातिया कर्म क्षय किये हुते तैसे योगका निरोधकरि नाम गोत्र आयु अर वेदनीय इन चार घातियानिकाहू अंतकरि अनेक मुनिवरों सहित जिनवर सिद्ध लोककूं सिधारे॥१०॥ तब इनकूं आदि देय चतुर्निकायनिके देव निर्वाण कल्याणककी पूजा करते भये ॥ ११ ॥ जब भगवान मुक्त होंय तब देहबंध रूपबंध परमाण होय जांय अनादि कालकी यह रीति है जैसे बिजुरी विलाय तैसे जिनेश्वरका देह विलाय गया अर मायामई शरीर रचकरि इद्रादिक दाहक्रिया करते भये ॥ १२ ॥ अग्निकुमार भवनवासी देव तिनके इन्द्रके मुकुटतैं प्रगट भई अग्नि ताकरि जिनेंद्रकी देहका दाह भया ॥१३॥ गंधपुष्पादि मनोहर द्रव्यनकरि प्रभुकी पूजा करि देव अपने २ स्थान गये इन्द्र वज्रकर गिरनार गिरविषैं सिद्धसिला उकीर गयां वरदत्तादि मुनिकूं वंदनाकरि इंद्रादिक अर नरेंद्रादिक अपेन अपने स्थान गये ॥ १५ ॥ अर समुद्रविजयादि नव भाई अर देवकीके छे पुत्र अर प्रद्युम्न शंभु श्रीकृष्णके पुत्र अर अनिरुद्ध प्रद्युम्नका पुत्र यह गिरनार गिरतैं जगतके शिखर गये सो भव्य जीवनकरि वंदनीक है गिरनार वडा तीर्थ है जहां अनेक भव्य जीव यात्राकूं आवै हैं ॥ १७ ॥

अथानन्तर—पांडव महाधीर प्रभुका सिद्धलोकगमन सुनकरि शत्रुंजय गिरविषैं कायोत्सर्ग धर तिष्ठे ॥ १८ ॥ तहां दुर्योधनके वशका यवरोधन पापी आयकरि वैरके जोगतैं महा दुस्सह उपसर्ग करता भया ॥ १९ ॥ लोहेके मुकुट अति प्रज्वलित इनके सिर पर धरे अर लोहेके कडे अर कटि सूत्रादि लोहेके आभरण अग्निमई इनकूं पहराये ॥ २० ॥ तिनकरि दाहका उपसर्ग अति रौद्र होता भया परन्तु वे महावीर मुनिधीर कर्मके विपाकके जाननहारे कर्मके क्षय करनेकूं समर्थ दाहका उपसर्ग हिमसमान शीतल मानते भये ॥ २१ ॥ तिनमें युधिष्ठर भीम अर्जुन यह तीनों साधु क्षपकश्रेणीविषैं आरूढ होय शुक्लध्यानकरि अष्ट कर्मका क्षयकरि अष्टम भूमि जो निर्वाण तहां पधारे अन्तकृतकेवली अविनाशी भये ॥ २२ ॥ अर नकुल सहदेवने उपशमश्रेणी मांडी हुती

सो ग्यारहवां गुणठाणतैं फिर गिर चौथे गुणठाणे आय देह तजि सर्वार्थसिद्धि पधारे। तहांतैं चय मनुष्य होय जगतके मुकुटमणि होहिंगे ॥ २३ ॥ बडे भाईनके आताप देख इनका चित्त कुछयक अथिर भया अर अन्य हू भव्य जीव कैयक तद्भव मोक्षगामी शुद्ध रत्नत्रयके धारक मोक्ष प्राप्त भये अर कैयक स्वर्गवासी देव भये सो भव धर अभयपद पावेंगे ॥ २४ ॥ अर नारद भी आय पूर्णकरि परभव पधारे। भवांतरमें भवरहित होहिंगे ॥ २५ ॥

अथानन्तर—बलदेव स्वामी तुंगीगिर शिखरपर नाना प्रकारके दुर्द्धर तप किय एक उपवास दोय उपवास तीन उपवास पक्ष उपवास मासोपवास छः मासोपवास कर शरीर बहुत सोख्या अर कषाय सोखे अर धैर्य पोख्या ॥ २७ ॥ नगर ग्रमादिविषैं तो गमन निवारा ही हुता आहारके अर्थ कांतारचर्या धारी हुती सो वनविषैं विहार करते लोकोंने देखे मानों साक्षात चंद्रमा ही है ॥ २८ ॥ इनकी वार्ता पुरग्रामादि विषैं प्रसिद्ध भई सो दुर्जन भूपति बलदेवके समाचार सुनकरि शंका मान नाना प्रकारके आयुध धरि उपसर्ग करिवेकूं आये तब सिद्धार्थ देव उनकूं ऐसी माया दिखाई वे जहां देखे तहां सिंह ही सिंह दीखें ॥ ३० ॥ मुनिके चरणनके समीप सिंहनकूं देख दुष्ट राजा मुनिकी सामर्थ्य जान प्रणाम कर शांत रूप होय गये ॥ ३१ ॥ तबसे बलदेवकूं लोग नरसिंह मानते भये दुष्टनिकूं नरसिंहरूप भासै वे महा मुनि सौ वर्ष तपकरि चार प्रकार आराधना आराधि पांचमा ब्रह्म-नामा स्वर्ग तहां पद्मोत्तर विमाणविषैं ब्रह्मेंद्र भये ॥ ३३ ॥ वह विमान रतनमयी दैदीप्यमान महा मनोहर देव देवियोंके समूहकरि मंडित सुन्दर हैं मन्दिर अर उपवन जाविषैं ॥ ३४ ॥ ऐसे रमणीक विमानविषैं महा कोमल उत्पादक शय्या ताविषैं हलधर मुनिवरका जीव ब्रह्मेंद्र भया। जैसे समुद्रविषैं महा मणि उपजै तैसे स्वामी स्वर्ग-विषैं उपजे ॥ ३५ ॥ आहार कहिये कर्मवर्गणाका आकर्षण अर वैक्रियक शरीर अर पांच इन्द्री अर श्वासोश्वास अर भाषा अर मन इन षट् पर्याप्त तत्काल पूरें कर वस्त्राभरण मंडित सेजपर विराजे नवयौवन महा सुन्दर देवनके राजा वह स्वर्ग संपदा देख अर देवांगनाके गीत सुन अर सब देवनकूं नम्रीभूत देख मनमें विचारी यह

सब लोग मेरा मुख निलोकैं हैं मोविषैं अनुरागी हैं। अर या लोकके सकलही चन्द्र सूर्य हुते अधिक ज्योतिवन्त हैं ॥ ३८ ॥ यह कौन मनोहर देश है यहांके सब लोक हर्षित हैं। अर मैं कौन हूं जो यहांका अधिपति भया हूं अर मैं कौन धर्म उपार्ज्या जो ऐसा उत्तम भव पाया है ॥ ३९ ॥ तब यहांके जो मुख्य देव हैं तिन बिनती करी जो यह पांचवां ब्रह्मनामा स्वर्ग है। अर आप ब्रह्मेंद्र होय यहां सबनके स्वामी भये हो महा तपकरि यहां आय उपजे हो तब आप अवधकरि सब वृत्तान्त जान्या ॥ ४१ ॥ पूर्वभवका सब चरित्र प्रत्यक्ष जाना अर देव इनका अभिषेक करावते भये अर इन्द्रपदकी विभूति दृष्टिगोचर करी ॥ ४२ ॥ अर वासुदेवसे अधिक है प्रेम जिनका सो जाय करि भाईसे मिले परस्पर अवलोकनकरि दोऊके हर्ष उपज्या वासुदेव कही आपां दोऊं मनुष्यभव पाय वीतरागका धर्म आराध केवल प्रगटकर मोक्ष पावेंगे। अर द्वारिकाके दाहकरि अर यदुवंशके क्षयकरि लोकापवाद भया सो तुम ऐसा करहु जो भरतक्षेत्रविषै मेरा मूर्त्ति शंख चक्र गदा पद्मादिकर शोभित लोग पूजें यह बचन वासुदेवके उरुमें धार बलदेव याही भांति करते भये देवनका किया कहा न होय ॥ ४६ ॥ ठौर ठौर पुरग्रामादिविषै वासुदेवके मन्दिर कराये तिनकी सेवाकी विधि बताय बलदेव स्वर्गविषै जाय जिनेश्वरकी सेवा करते भये ॥ ४७ ॥ अनेक देव अर देवी तिनकरि मंडित स्वर्गके अधिपति सुख भोगते भये। यह कथा गौतम स्वामीनें राजा श्रेणिकसे कही फिर कहैं हैं हे श्रेणिक! यह स्नेही जगतके जीवनकूं जगतविषै भ्रमण करावै है स्नेहके योगकरि जहां मित्र होय तहां जायकरि स्नेहकी अधिक्यतासे आपकूं सुख प्राप्त भये हैं ते न भोगवे अर दुखका उद्यमी होय तातें यह संसारका स्नेह ही मोक्षके सुखका विघ्नकरन हारा है ॥ ४९ ॥ श्रीनेमिनाथ जिनेंद्रका तीर्थ महा मोहका विच्छेद करनहारा ताविषैं वरदत्तनामा मुनि केवली भये हरिवंशविषैं जरत्कुमार राजा राजकी धुराके धारी भये ॥ ५० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवन्निर्वाणवर्णनो नाम पंचषष्टितमः सर्गः ॥ ६५ ॥

अथानन्तर—राजा जरत्कुमार राज्य करै ताके राज्यमें प्रजा आनन्दकूं प्राप्त होती भई राजा महा प्रतापी जिनधर्मी ताके राजकूं लोग अति चाहैं ॥१॥ सो जरत्कुमारने राजा कलिंगकी पुत्री परनी ताके राजवंशकी ध्वजा समान वसुध्वज नामा पुत्र भया ॥२॥ ताहि राजका भार सौंप जरत्कुमार मुनि भये सत्पुरुषनके कुलकी यही रीति है पुत्रकूं राज देय आप चारित्र धारे ॥३॥ फिर वसुध्वजके सुवसु नामा पुत्र भया सो चन्द्रमा समान प्रजाकूं प्रिय राजा वसु सारिखा प्रतापी होता भया ॥४॥ अर वसुके भीम वर्मा भया कलिंग देशका पालक अर ताके वंशमें अनेक राजा भये ॥५॥ फिर ताही वंशमें हरिवंशका आभूषण राजा कपिष्ट भया अर ताके अजातशत्रु भया ताके शत्रुकेन भया। अर ताके जितार नामा पुत्र भया ॥६॥ ताके जितशत्रु भया सो हे श्रेणिक! ताहि तू कहा न जानै है जो राजा सिद्धार्थ महावीर स्वामीके पिताकी छोटी बहन परना महा प्रतापवान शत्रु मंडलका जीतन हारा जगत विषै प्रसिद्ध भया। श्रीभगवान महावीरका फूफा सो प्रभुका जन्म भया तब कुण्डलपुर आया सो राजा सिद्धार्थने बहुत सन्मान किया ॥८॥ राजा जितशत्रु महा जिनधर्मी इन्द्र समान पराक्रमी ताके यशोदा नाम रानी ताके अशोकवतीनामा पुत्री सो यश अर दयाकरि महा पवित्र ताका अनेक राजकन्या सहित श्रीमहावीरसे विवाह मंगल वांछता भया यह हर्ष देखनेके मनोरथरूप रथविषैं आरूढहुती सो भगवान वीतराग कहा विवाह करे जे स्वात्मानुभूतिसिद्धि रूपके करनहारे तिनके स्त्रीका कहा प्रयोजन? जब तीर्थेश्वर तप कल्याणकूं प्राप्त भये तब वे राजकन्या आर्यिका होय गईं अर भगवान स्वयंभू जब केवलकल्याण विषैं जगतके तारवे अर्थ विहार किया तब राजा जितशत्रु राज तज मुनिराज भया महातपविषैं प्रवर्त्ता ॥१०॥ सो तपके प्रभावकरि जितशत्रुके केवलज्ञान प्रगट भया मनुष्यभवका यही फल है जो केवल पाय मुक्ति जांय ॥११॥ हे श्रेणिक! यह हरिवंशकी कथा तोहि संक्षेपसे कही यह कही लोकविषै प्रसिद्ध है अर चौबीस तीर्थेश्वर अर बारह चक्रेश्वर अर नव बलदेव नव वासुदेव यह त्रिषष्ठ शलाकाके महा पुरुष तिनका चारित्र तोहि कहा सो यह पुराणपद्धति तोहि कल्याणके अर्थि होहु ॥१२॥ ७०५

यह परमेश्वरी कथा गौतमस्वामीके मुख अनेक राजानि सहित राजा श्रेणिक सुनकरि नगरमें गया बारंबार नमस्कार करता भक्तिरूप है बुद्धि जाकी सो चितविषैं धर्महीकूं धारता भया। अर चतुर्निकायके देव अर विद्याधर प्रभुकूं प्रणामकरि अपने २ स्थानक गये धर्मकथा अनुरागी धर्मकूं सार जानते भये ॥ १४ ॥ निर्वाणकी है इच्छा जिनके अर जितशत्रु केवली जगत पूज्य आर्यक्षेत्रविषैं विहारकरि अघातिया कर्म हु क्षपाय अक्षयधामकूं प्राप्त भये अनंत सुखका है अनुभव जहां जाके अर्थ यती यतन करैं हैं सो पद पाया ॥ १५ ॥ अर वीर जिनेन्द्र हू भव्य जीवनके समूहकूं संबोध करि पावापुरीके मनोहर नामा उद्यानतैं कार्तिक वदी अमावस प्रभात समय स्वाति नक्षत्रविषैं योगनका निरोधकरि अघातिया कर्महु खपाये जैसे घातिया कर्मनका घात किया हुता तैंसे अघातियानहूका घातकरि बन्धतैं रहित जो अपवर्ग स्थानक सिद्धक्षेत्र तहां सिधारे निरन्तर है अनन्तसुखका संबंध जहां ॥ १७ ॥ जिनेश्वर शंकर सुगत सदाशिव परम विष्णु बुद्ध महेश्वर पंचकल्याणकके नायक चतुर्निकाय देवनके देव निर्वाण प्राप्त भये तब इद्रादिक देवोंने निर्वाण कल्याण किया प्रभुके मायामई शरीरकी पूजा करि दाहक्रिया करी ॥ १८ ॥ प्रभु परमधाम पधारे ता दिन चतुर्थकालके वर्ष तीन अर मास साढा आठ बाकी हुते दीपोत्सवके दिन जिनवर जगतके शिखर पधारे ता दिन देवोंने दीपनके समूहकरि वह पुरी प्रकाशरूप करी आकाश धरतीविषैं दीपनकी माला प्रज्वलित भई ॥ १९ ॥ इन्द्रादिक सब देव और श्रेणिकादि सकल भूप श्रीमहावीर स्वामीका निर्वाण कल्याणक देख प्रभुतैं ज्ञानकी प्राप्तिकी प्रार्थना कर अपने अपने स्थान गये ॥ २० ॥ ता दिनतैं या भरतक्षेत्रविषैं दीपमालिका प्रसिद्ध भई प्रतिवर्ष भव्यजीव निर्वाणकी पूजा कर अर लोक दीपोत्सव करैं ॥ २१ ॥ अर भगवानकूं मुक्ति गये पीछे वासठ वर्षमें तीन केवली भये गौतम सुधर्म और जबूस्वामी सो यह तीनों चतुर्थकालके उपजे पंचमकालमें पंचम गति जो निर्वाण तहां पधारे अर इन पीछे सौ वर्षमें पांच श्रुतकेवली भये ॥ २२ ॥ अर तिन पीछे वर्ष एकसौ तीयासीमें ग्यारह अंग अर

दशपूर्वके पाठी मुनि दस भये और तिन पीछे बरस दो सौ वीसमें पांच मुनि ग्यारह अंगके पाठी भये और तिन पीछे वर्ष एक सौ अठारहमें चार मुनि एक अचारांगके पाठी भये तिनके नाम सुभद्र जयभद्र यशोवाहु लोहाचार्य यहां तक अंग रहे ॥ २३ ॥ बहुरि इन पीछे अंगनके पाठी तो न भये परन्तु महा विद्यावान व्रतनके धारक भये तिनमें कई एकनके नाम कहैं हैं महा तपकी है वृद्धि जिनके ऐसे नयंधर ऋषि, श्रुतिऋषि, गुप्ति, शिवगुप्त, अर्हद्वलि, मंदराचार्य, मित्रवीर, बलदेव, वलमित्र, सिंहवल, वीरवित ॥ २५ ॥ पद्मसेन, गुणपद्म, गुणागुणी, जितदण्ड, नन्दीसेन, तप ही है धन जिनके ऐसे श्रीधरसेन, धर्मसेन, सिंहसेन, सुनन्दसेन, सूरसेन, अभयसेन, ॥ २७ ॥ सुसिधसेन, अभयसेन, भीमसेन, जिनसेन, शांतिसेन, समस्त सिद्धान्तके वेत्ता षट् भाषानमें गुणवान षट्खंडके अखण्ड नाथ ही हैं जिनसे शब्द अर्थ अगोचर नाहीं ॥ २८ ॥ फिर जयसेन नाम सदगुरु होते भये कर्म प्रकृति नामा श्रुति ताके पारगामी इन्द्रीनके जेता प्रसिद्ध वैयाकरणी महा पंडित प्रभावान समस्तसमुद्रके पारगामी ॥ २९ ॥ तिनके शिष्य अमितेज नामा सदगुर पवित्र पुन्नाटगणके अग्रणी जिनशासनकी है वात्सल्यता जिनके महा तपस्वी सौ वर्ष ऊपर है अवस्था जिनकी शास्त्रदानके बडे दाता पण्डितोंमें मुख जिनके गुण पृथवीमें प्रसिद्ध तिनका बडा भाई धर्मका सहोदर महा शांत संपूर्ण बुद्धि धर्ममूर्ति जिनकी तपोमयी कीर्ति जगत्में विस्तर रही ऐसे कीर्तिसेन तिनका मुख्य शिष्य श्रीनेमिनाथका परम भक्त जिनसेन ताने अपनी शक्तिके अनुसार अल्पबुद्धितैं प्राचीन ग्रंथके अनुक्रमें हरिवंशकी पद्धति कही सो यातैं प्रमादके शब्दमें तथा अर्थमें कहीं भूल होय तो पुराणके पाठी पण्डित सुधार लीजो एक केवली भगवान ही कथनमें न चूके और समस्त चूके ताका अचरज नाहीं। कहां यश प्रशंसा योग्य हरिवंशपुराणरूप पर्वत अर कहां मेरी अल्पसे अल्प बुद्धिकी शक्ति ॥ ३४ ॥ जो काहू ठोर अखाढै तो कहा अचरज है या पुराणविषै जिनेन्द्रके वंशके स्तवन करि पुण्यकी उत्पति है यही वांछा करि मैंने वर्णन किया और काव्य वन्धके प्रवन्धकरि कीर्तिकी

कामना राख कथन न किया ॥ ३५ ॥ काव्य रचनाके गर्वकरि तथा अन्य पण्डितनिके इर्षा कर मेंने यह आरम्भ न किया केवल जिनराजकी भक्ति ही करि यह कथन किया। चौवीस तीर्थंकर और द्वादश चक्रधर अर नव हलधर नव हरि अर नव प्रतिहरि इनका वर्णन किया अर अन्य अनेक राजानके चारित्र कहे। भूमिगोचरी अर विद्याधर सवनके वंशका वर्णन याविषैं है ॥ ३७ ॥ जो धर्म अर्थ काम मोक्षका साधन हरे पुरुषार्थके धारक धीर पुरुष कीर्तिके पुंज तिनकी स्तुतिकर मैं पूर्ण पुण्य उपार्ज्या गुण संचय किया ताका यही फल हूजियो जो या मनुष्य लोकके भव्यजीव जिनशासनविषैं श्रद्धा करि अशुभ कर्मको हरैं ॥ ३८ ॥ यह नेमिजिनेश्वरका चारित्र सकल जीवादि पदार्थका प्रकाशक है यामें षट् द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय की प्ररूपणा है ॥ ३९ ॥ जे महा पण्डित हैं ते याका सभाविषै व्याख्यान करियो अर सभाविषै आवैं जे भव्य, जीवतैं कानरूप हस्तांजलीकरि हरिवंश कथारूप अमृतका पान करियो ॥ ४० ॥ जिनेन्द्रके नाम ग्रहणकरि नवग्रहकी पीडा दुर होय है। यह समस्त पुराण आद्योपांत वांचे अथवा सुने तो पापका नाश होय इसलिये एकाग्र चित्तकरि पण्डित जन याका व्याख्यान अपने अर पराये कृतार्थके अर्थ करहु यह व्याख्यान निज परका तारक है॥ ४२ ॥ यह पुराण मंगलके अर्थीनिकूं महा मंगलका कारण है अर जो धनके अर्थी हैं तिनकूं धनकी प्राप्तिका कारण है। अर निमित्तज्ञानियोंको निमितज्ञानका कारण है अर महा उपसर्गविषैं शरण है शांतिका कर्त्ता है अर जैनका बडा शकुन शास्त्र है शुभसूचक है ज्ञानार्थीनिकूं ज्ञान, ध्यानर्थीनिकूं ध्यान, योगार्थीनिकूं योग, भोगार्थीनिकूं भोग, राजर्थीनिकूं राज्य, पुत्रर्थीनिकूं पुत्र, विजयार्थीनिकूं विजय, सव वस्तुका दाता यह सर्वज्ञ वीतरागका पुराण है। जो चौवीसों तीर्थेश्वरनिकी महा भक्ति चौवीसों शासन देवता चक्रेश्वरी पद्मावति अम्बिका ज्वालामालिनी आदि सम्यग्दृष्टिनी सव इस पुराणके आश्रित हैं, कैसे हैं यह शासनदेवता सदा जिनधर्म अर जिनधर्मीनके समीप ही हैं ॥ ४५ ॥ अर गिरनारगिरिविषैं श्रीनेमिनाथका मंदिर ताकी

उपासक सिंहवाहिनी चक्रकी धरनहारी जाके आगे क्षुद्रदेवता न टिकैं ऐसी अम्बिका कल्याणके अर्थ जिनशासननकी सेवक हैं तहां परचक्रका विघ्न कैसैं होय ॥ ४५ ॥ नवग्रह अर असुर नाग भूत पिशाच राक्षस यह लोगनिकूं हितकी प्रवृत्तिविषैं विघ्न करै हैं तातैं बुधजन जिनशासनके देवतानके जे गण तिनकरि क्षुद्र देवनकूं शांत करै हैं ॥ ४६ ॥ जे भक्तिकरि यह हरिवंशपुराण पढैं तिनके विना खेद मनवांछित कामकी सिद्धि होय अर धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्राप्ति होय ॥४७॥ तातैं जे निःकपट आर्य पुरुष हैं ते पूजा सहित या पुराणकूं पृथिवीविषैं विस्तारहु कहा करि याकूं विस्तारहु मात्सर्य कहिए पराई उच्चताका न सहना ऐसा अदेखसका भाव ताहि धैर्यके बलकरि प्रबलतारूप जो बुद्धि ताके प्रभावतैं निवारकरि अर जेते मायाचारके आचरण हैं तिन सबनकूं तज करि याका रहस्य विचारहु ॥ ४८ ॥ अथवा भव्य जीवनितैं यह प्रार्थना है कौन अर्थ वे स्वतःस्वभाव ही याही पढैंगे वांचेंगे सुनैंगे विस्तारेंगे जैसैं पर्वत मेहकी धाराकूं सिरपर धारे अर पृथिवीविषैं विस्तारे ॥ ४९ ॥ यह श्रेष्ठ पुराण प्राचीन पुराणके गम्भीर शब्द तेई भये जल तिनकरि पूर्ण सो मुनि मण्डली रूप नदी दोय नयन रूप ढायनेकी धरणहारी तिनकरि पूर्ण चारों दिशि समुद्रान्त विस्तरेगा ॥ ५० ॥ वे जिनेश्वर देव तत्वके द्रष्टा देवनके समूहकरि सेवनेयोग्य जयवन्त होहु प्रजाकूं अति शांतिके देनहारे शान्त है मार्ग जिनका अर निर्मल हैं निद्रारहित केवल नेत्र जिनके ॥ ५१ ॥ अर जिनधर्मकी परम्पराय जयवन्त होहु जो अनादिकालसे काहू करि जीती न जाय। अर प्रजाविषैं कुशल होहु। कबहु दुर्भिक्ष मति होहु मरी मति होहु पापी राजा मति होहु। अर सुखके अर्थ प्रति वर्ष भली वर्षा होहु अर अतिबृष्टि अनाबृष्टि मति होहु। पृथ्वी अन्न जल तृण कर सदा शोभित रहो। प्राणीनकूं काहू प्रकारकी पीडा मति होहु ॥५२॥ अर विक्रमादित्यकूं सात सौ पांच वर्ष व्यतीत भये तव यह ग्रन्थ भया। ता समय उत्तर दिशाका राजा इन्द्रायुध कृष्णराजका पुत्र हुता। अर दक्षिण दिशाका राजा श्रीवल्लभ हुता अर पूर्व दिशाका राजा अवंति हुता।

कहैं। नेत्र तो सुंदर अर नाम कमलनयन, सो लोक कमलनयन ही कहैं। अर दूजा रूपसत्य जो काहू चित्रामका पुरुष मांड्या काहूने गज लिख्या। सो अचेतन है उनमें कछु शक्ति नाहीं परन्तु जगतमें जैसा रूप देखें तैसा ही कहैं सो रूपसत्य कहिये ॥ ९८ ॥ अर तीजा स्थापना सत्य, जो जो व्यवहारके अर्थ छती वस्तुकी अथवा अछती वस्तुकी स्थापना करनी जैसा जिसका आकार हुता वैसा ही वनाया अर मंदिरादिकविषैं प्रतिमा पधराई सो स्थापनासत्य कहिये। ऋषभदेवकी प्रतिमाकूं ऋषभदेव ही कहिये ॥ १०० ॥ चौथा प्रतीतसत्य, जो उपशमिक आदि पंच भाव तिनकूं आगमप्रमाण प्रतीति करि व्याख्यान करिये ताका नाम प्रतीतसत्य कहिये।

भावार्थ — शास्त्रकी प्रतीतिकरि न देखी वस्तुका भी वर्णन करिये सो प्रतीतिसत्य कहिये। अर पांचवीं स्मृतिसत्य, जो भेरी आदि अनेक वादित्रनिके शब्द मेले भये तिन्हें वाचक एकोदेश रूप कहे जो उच्चस्वरका वादित्र होय ताका नाम लेय तामें सबके शब्द मिले हैं परंतु मुख्यका नाम कहिये सो स्मृतिसत्य। अर छठा संयोजनानाम सत्य जामें चेतन अचेतन द्रव्यनिकी रचनाका विभाग नाहीं, युद्धसमय दोनों सेनानिमें नानाप्रकारके व्यूह रचे हैं। चक्रव्यूह गरुडव्यूह क्रौंचव्यूह इत्यादि सो संयोजनासत्य कहिये। सेना तो चेतन अचेतन सब द्रव्यनिकरि पूरित है ताहि चक्रव्यूह कहना सो चक्र तो अचेतन है अर गरुडव्यूह कहना गरुड चेतन है सेनाको इनरूप कहिये परंतु चक्रके गरुडके आकार रची तातें जैसी व्यूह रची होय तैसा कहिये तो मिथ्या नाहीं यह संयोजनासत्य है। सातवीं जनपदनाम देशका है जा देशमें जिस वस्तुका जो नाम होय सोही सत्य यह जनपदसत्य कहिये। देशनिमें कोई आर्यदेश है कोई म्लेच्छदेश है, तिनमें धर्म अर्थ काम मोक्षका करणहारा जो वचन है सो जनपदसत्य जानहु. अर आठमा उपदेशसत्य जो ग्राम नगरकी रीति है अर राजधर्मकी रीति अर आचार्यपद साधुपदका उपदेश जे पुरुष जिन वातनिमें प्रवीण हैं तिनका वचन उन वातनिमें प्रमाण करणा ग्रामाचारमें अर नगराचारमें लोकाचारमें जो इन वातनिमें प्रवीण होय ताका वचन प्रमाण अर राजनीतिमें

योगद्वार कहे। इनमें अल्पबहुत्वका विशेष वर्णन अर भी पूर्वोंकी वस्तूनिविषैं पाहुड हैं। तिनके भेद सिद्धांततैं जानने ॥८७॥ अर तीजा पूर्व वीर्यानुप्रवाद है नाम जाका। ताके पद सत्तर लाख तिनमें वीर्यवंत जे संत तिनके वीर्यका वर्णन है ॥८८॥ अर चौथा अस्तिनास्तिप्रवादनाम पूर्व ताके पद साठलाख तिनमें जीवादिक पदार्थनिके अस्तिनास्तित्वका निरूपण, स्वभावकर सारे ही अस्तिरूप अर परभावकर सारे ही नास्तिरूप हैं, पर भाव काहूमें न पाइये। अर पंचमा ज्ञानप्रवाद नाम पूर्व ताके एक कोटि पद तामें ज्ञानके पांच भेदनिका निरूपण है ॥९०॥ अर छठा सत्यप्रवादनाम पूर्व ताके कोटिपद तिनमें बारह प्रकारकी भाषाका कथन। अर दशप्रकारके सत्यका निरूपण ॥९१॥ सो बारहप्रकार भाषाका कथन करै हैं—प्रथम अभ्याख्यान कहिये कोऊ एक हिंसादिकका अकर्त्ता है अर कोऊ कर्त्ता है। तिनके समीप कोऊ मूर्ख ऐसे कहे जो हिंसा कर्त्तव्य है। ऐसे दुर्वचनका नाम अभ्याख्यान कहिये। अर दूजा वाक्कलह ताका अर्थ। जो कलह कर्त्ता ही बोलै। अर तीजा पैशून्य जे दुष्ट जीवपर ये दोष प्रगट करै अर काहूके ढिंग चुगली करै। अर चौथा अवध्यप्रलाप कहिये जो प्रलापका अंत नाहीं सो प्रलाप करवो ही करै, जाके वचनमें धर्म अर्थ काम मोक्षका उपदेश नाहीं। अर पांचमा रति उत्पादक वचन जो जीवनिकूं राग उपजावै। अर छठा अरति उत्पादक, जो जीवनिकूं क्रोध उपजावै। अर सातवां वंचनाप्रवरण जाके सुनिवेतैं अर अयथार्थ वस्तुविषैं श्रोतानिकी बुद्धि आसक्त होय ॥९४॥ अर आठवां निकृतिवचन निःकृति नाम कपटका है सो कपट लिये वात करै, अर नवमां अप्रणतिवाक् जो आपतैं अधिक है तिनकूं नमस्कार न करै अर विनयका वचन न कहै ॥ ९५ ॥ अर दशमां मोघ वचन जाकरि लोक चोरीविषैं प्रवर्तैं। अर ग्यारहवां सम्यग्दर्शन वचन जाकरि जीव सम्यक्तका ग्रहण करै ॥ ९६ ॥ अर बारहवां मिथ्यादर्शन वचन जाके श्रवणतैं मिथ्यात्वमार्गकी प्रवृत्ति होय. ये बारहप्रकार वचन स्थावरकायविषैं नाहीं। वेइंद्री आदि त्रस जीवनिविषैं हैं तिनमें पंचेंद्रीके सब पाइये ॥९७॥ अर दशप्रकारके सत्य कहे। तिनमें पहिला नामसत्य जो उसका नाम होय सो लोक

जीवनिके समूहके भेद हैं। षट् द्रव्यनिका जाविषैं समस्त विस्तार है, परिकर्मके ए पांच भेद कहे। अर दूजा भेद सूत्र ताके अट्ठासीलाख पद हैं तिनिमें प्रथम भेदविषैं बंधके अभावका कथन अर दूजे भेदविषैं श्रुति स्मृति पुराणके अर्थ श्रुति कहिये केवलीकी दिव्यध्वनि अर स्मृति कहिये गणधरनिकी वाणी अर पुराण कहिये मुनीनिके वचन ॥ ६९ ॥ अर सूत्रके तीजे भेदविषैं नियति कहिये निश्चयका कथन अर चौथे भेदविषैं दर्शनके भेद सम्यक्त अर मिथ्यात्वका निरूपण ये नाना भेद सूत्रमें हैं ॥७०॥ अर बारहवें अंगका तीजा भेद अनुयोग ताके पांच हजार पद तिनमें तिरेसठ शलाकाके पुरुषनिका कथन ॥७१॥ अर बारहवें अंगका चौथा भेद पूर्वगति ताके भेद चौदहसौ चौदह पूर्वमें एकसौ पंचानवे वस्तु अर एक एक वस्तुमें बीस बीस पाहुड सो सकल पाहुड गुणतालीससौ हैं, चौदह पूर्वविषैं एकसौ पंचानवे वस्तु तिनकी प्रत्येक संख्या सुनहु। पहिले पूर्वविषै वस्तु दश, दूजेमें चौदह, तीजेमें आठ, चौथेमें अठारह, पांचवेमें बारह, छठेमें बारह, सातवेमें सोलह, आठवेमें बीस, नववेंमें तीस, दशवेंमें पंद्रह ग्यारहवेमें दश, बारहवेमें दश, तेरहवेमें दश, चौदहवेमें भी दश ये सब मिल एकसौ पंचानवें हैं ॥७४॥ पहिले पूर्व का नाम उत्पाद ताके एक कोटि पद तिनमें द्रव्यके उत्पाद व्यय ध्रौव्यका वर्णन ॥ ७५ ॥ दूजा अग्रणी नाम पूर्व ताके छ्यानवे लाख पद तामें चौदह वस्तुनिके अनुक्रमतैं ये नाम जानहु। पूर्वांत १ अपरांत २ ध्रुव ३ अध्रुव ४ अच्यवनलब्धि ५ अध्रुव सम्प्रणयव्यात ६ कल्प ७ अर्थ ८ भौमावय ९ सर्वार्थक कल्प १० निर्वाण ११ अतीतानागत १२ सिद्ध १३ उपाध्याय १४ ये चौदह दूजे पूर्वमें वस्तु हैं तिनमें पांचवीं वस्तु अच्यवनलब्धि ताके पाहुडवीस २० तिनमें चौथा पाहुड कर्मप्रकृति ताविषैं इतने ही योगद्वार तिनके नाम ॥ ८९ ॥ वेदना १ स्पर्श २ कर्म ३ प्रकृति ४ बंधन ५ निबंधन ६ प्रक्रम ७ उपक्रम ८ उदय ९ मोक्ष १० संक्रमण ११ लेश्या १२ लेश्याकर्म १३ लेश्या परिणाम १४ सातासात १५ दीर्घ १६ ह्रस्व १७ भवधारण १८ पुद्गल आत्मा १९ निधताधत २० सनिकाचित् २१ अग्निकाचित् २२ कर्मस्थितिक २३ स्कंध २४ ये दूजे पूर्वके पांचमी वस्तुके चौथे पाहुडविषै चौबीस

जीवादि पदार्थ परभावकी अपेक्षा नाहीं परंतु नास्ति ही कहिये तौ अस्तिका अभाव तातैं अस्तिका अवक्तव्य है। अर अस्तिनास्ति अवक्तव्य कहिये जीवादि पदार्थ अस्तिनास्ति ही हैं परंतु कहिवेमैं अनुक्रमसूं आवै एकै लार कहा न जाय आगै पीछे ही कहा जाय तातैं अस्तिनास्ति अवक्तव्य है। विज्ञानवादीके त्रेसठि भेद तौ ये कहे। अर कोइयक सद्‌भावका पक्षी कोइक असद्‌भावका पक्षी कोइक सत्यासत्यका पक्षी। अर कोइक अवक्तव्यका पक्षी वे तरेसठि भेद इनि चारिसूं मिलाय सड़सठि भेद होंइ, एक एक नयका छल पकरि एक एक अंशका ग्रहण करै तत्वका यथार्थ ज्ञान न होइ सो अज्ञानवादी कहिये ॥ ५८ ॥ अर विनयवादीके भेद बत्तीस कहिये हैं। विनयवादी कहै हैं—मन वचन काय अर दान इनि चारि करि आठका विनय करना तब विनय भेद बत्तीस होय। आठवें माता १, पिता २, देव ३, नृप ४, जाति ५, बाल ६, बृद्ध ७ अर तपस्वी ८। ए आठ इनिका मन वचन काय दानकरि सत्कार करना याभांति विनयवादी कहे। भावार्थ—विनय तौ योग्य है जिनधर्मका मूल है, परंतु विनयवादी विनयका स्वरूप यथार्थ न जानै, मूर्तिमात्रकूं देव जानै, भेषमात्रकूं साधु जानै, पत्रमात्रकूं शास्त्र जानै, जलमात्रकूं तीर्थ जानै, एक नयका छल पकरि एक अंगका ग्रहण करि वृथावाद करै इत्यादि वादीनिका है कथन जाविषैं ऐसा दृष्टिवाद नामा बारहवां अंग ताके भेद पांच—परिकर्म १, सूत्र २, अनुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिका ५। तिनिमें परिकर्मके भेद पांच—चंद्रप्रज्ञप्ति १, सूर्यप्रज्ञप्ति २, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ३, द्वीपसमुद्रप्रज्ञप्ति ४, व्याख्याप्रज्ञप्ति ५, तिनिमैं चंद्रप्रज्ञप्तिके छत्तीसलाख पांचहजार पद हैं तिनमें चंद्रमाके भोगादिक संपदाका वर्णन है। अर सूर्य प्रज्ञप्तिके पांचलाख तीनहजार पद हैं। तिनिमें सूर्यके विभवका अर उदयका अर सूर्यकी स्त्रीनिका वर्णन है। अर जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिके तीनलाख पचीसहजार पद हैं, तिनिमें जंबूद्वीपका संपूर्ण वर्णन है। अर सर्व द्वीप समुद्र प्रज्ञप्तिके बावनलाख छत्तीसहजार पद हैं, जिनिमें असंख्यात द्वीप समुद्रका वर्णन है। अर व्याख्याप्रज्ञप्तिके चौरासीलाख छत्तीसहजार पद हैं, तिनिमें रूपी द्रव्य पुद्गल अर अजीवादि पांच अरूपी यह कथन है। अर भव्य अभव्य

कुवादीनिके मूल भेद चारि तिनके विशेष भेद तीनसै तरेसठि हैं। चारिमें प्रथम क्रियावादी तिनके भेद एकसौ अस्सी अर दूजे अक्रियावादी तिनके भेद चौरासी। अर तीजे अज्ञानवादी तिनके भेद सडसठि अर चौथे विनयवादी तिनके भेद वत्तीस ए तीनसै तरेसठ भये तिनका वर्णन सुनहु। प्रथम एक सौ अस्सी क्रियावादी तिनिका व्याख्यान करिये हैं नीति कहिये निश्चय अर स्वभाव कहिये वस्तुका स्वभाव अर काल कहिये समय अर दैव कहिये पूर्वकर्मका उदय अर पौरुष कहिये उद्यम ए पांचसो स्व कहिये आप अर पर कहिये दूजा नित्य कहिये थिर अनित्य कहिये अथिर ए चारि तिनसूं पांच गुनिए तव वीस होइ अर वीसकूं नव पदार्थनिमूं गुनिए तब एक सौ अस्सी भेद होय ये क्रियावादीनिके भेद कहे, एक एक अंसका छल कपट करि वाद करै ॥ ५० ॥ अक्रियावादीनिके भेद चौरासी सो सुनहु जीवादिक सप्त तत्व स्वतः कहिये आपनैं अर परतः कहिये परतैं गुनिए तव चौदह भेद होंइ अर चौदहकूं नियति स्वभाव काल दैव पौरुष इन पांचनिसूं गुणिए तव सत्तरि भेद होंइ। अर नियति काल ये दोय भेद आपही करि सप्त तत्वनिकूं गुणिए तव चौदह भेद भये। वे सत्तरि अर ये चौदह मिलि करि चौरासी भये एक एक भेदका छल कपट करि वाद करै मोक्षके उपायतैं विमुख होय सो अक्रियावादी उदयकूं मानै उद्यम न ठानै ए अक्रियावादीके भेद कहे ॥ अव अज्ञानवादीके सड़सठि भेद सुनहु नव पदार्थ तिनिकूं सप्त भंगकरि गुणिए तव तरेसठ होंय। सप्त भंगनिके नाम—स्यात् अस्ति कहिये कंथचित् प्रकार स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभावकी अपेक्षा जीवादि द्रव्य है अर स्यात् नास्ति कहिये परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परभाव इनिकी अपेक्षा नाहीं अर स्यात् अस्तिनास्ति कहिये एक ही समै अस्तिनास्ति है, जा समै स्वभावकी अस्ति है ताही समै परभावकी नास्ति है, जातैं अस्तिनास्ति उभयरूप हैं। अर स्यात् अवक्तव्य कहिये वचनतैं अगोचर है। अस्ति कहिये तौ नास्तिका अभाव अर नास्ति कहिये तौ अस्तिका अभाव तातैं अवक्तव्य है। अर अस्ति अवक्तव्य कहिये स्वभाव
करि है परगोचर नाहीं, अस्ति कहिये तौ नास्तिका अभाव तातैं अवक्तव्य है। अर नास्ति अवक्तव्य कहिये ११

उतसर्पिणी दशहीकी अवसर्पिणी यह कालकी समानता कही । अर ज्ञानकी अनंतता अर दर्शनकी अनंतता यह भावकी तुलना कही । याभांति समवायांगमें निरूपण किया अर पांचवां अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति ताके पद दोय लाख अट्ठाइस हजार तामें शिष्यने विनय करि गुरुसूं प्रश्न किए तिनके विस्तारका वर्णन है । कैसा है शिष्य कुमारगतैं अति उदास है ॥३५॥ अर छठा अंग ज्ञातृधर्मकथा ताके पांच लाख छप्पन हजार पद तामें जिनधर्मकी अमृत कथाका कथन है अर सातवां उपासकाध्ययन अंग ताके पद ग्यारह लाख सत्तर हजार यामें सम्पूर्ण श्रावकके व्रतका व्याख्यान है। अर आठवां अंतकृतदशांग ताके पद तेईस लाख अठाईस हजार तामें उपसर्गके जीतनहारे महा मुनि एक एक तीर्थंकरके वारेमें दश दश अन्तःकृतकेवली होंहि तिनिका कथन है। अंतकृतकेवली ते कहिए जिनका केवल कल्याणक अर निर्माण कल्याणक लार ही होइ । आयुके अंत ही केवल उपजै ॥ ३९ ॥ अर नववां अनुत्तरोपपादकदशांग ताके पद बानवै लाख चवालीस हजार तामैं एक २ तीर्थंकरके समै दस दस मुनि उपसर्ग जीति नव अनुत्तर तथा पांचनुत्तर इनिविषै जाहि तिनका कथन है। संसारविषै उपसर्ग दश प्रकार है । तीन प्रकारके मनुष्य स्त्री पुरुष नपुंसक अर तीन प्रकार ही तिर्यंच स्त्री पुरुष नपुंसक अर देवनिमें नपुंसक नाहीं स्त्री पुरुष दोय ही भेद हैं । तब आठ तो ए चेतन उपसर्ग भए अर एक अपने ही शरीर करि आपकूं उपसर्ग होय । अर एक अचेतन उपसर्ग होय भीत पत्थर इत्यादि आप ऊपर आ परै ये दस प्रकार उपसर्ग कहे । इनकूं संत ही जीतैं । अर दशवां प्रश्नव्याकरण नामा अंग ताके तिराणवे लाख सोला हजार पद तामें चारि प्रकार धर्मकथा आक्षेपणी कहिये धर्मकी स्थापक अर विक्षेपणी कहिए अधर्मकी उत्थापक अर संवेगनी कहिए जिनधर्म अर जिनधर्मका फल तासूं अनुरागकी उपजावनहारी अर निर्वेदनी कहिए वैराग्यकी वढावन हारी है अर विपाकसूत्र नामा ग्यारवां अंग ताके एक कोडि चौरासी लाख पद तामें कर्मनिके विपाक कहिये उदय तिनिका वर्णन है ॥४४॥ अर बारहवां दृष्टिवाद नामा अंग ताके पद एकसौ आठ कोडि अर साठि लाख छप्पन हजार पांच तामें तीनसै तरेसठि कुवादीनिका कथन है सो

बधैं पद कहिए सो पद समासकी मर्यादा कहिए सो अक्षरसमास कहिए अर पीछे एक एक अक्षर बधे पद कहिये ताके ऊपर एक एक अक्षरकी वृद्धि करि पदके भेद तीन अर्थपद, प्रमाणपद, मध्यमपद, ये तीन प्रकार पद तिनमें एक, दोय, तीन, चारि, पांच, छह, सात, आठ, अक्षर लग अर्थपद कहिए सो वे अक्षर अथ संयुक्त हैं। अर दूजा प्रमाण पद सो आठ आंक हीका होय ॥ २३ ॥ अर तीजा मध्यमपद सोलासै चौंतीस कोडि तियासी लाख सात हजार आठ सै अठासी अक्षरनिका कहिए ॥ २५ ॥ सो एक अक्षर की वृद्धि करि पद समासतैं लेय पूर्ण समास पर्यंत द्वादशांगका प्रमाण है। ऐसे अठारह हजार मध्यमपदनिकरि आचारांग सूत्रका व्याख्यान है, सो द्वादशांगके आदि है, तामें यतीके आचारका वर्णन है। अर दूजा सूत्रकृतांग ताके पद छत्तीस हजार तामें सुसमयपर समयका विशेष वर्णन है। अर तीजा स्थानांग ताके पद वियालीस हजार तामें एक आदि दश पर्यंत गिणितीका व्याख्यान है। एक केवलज्ञान एक मोक्ष आकाश एक धर्म एक अधर्म इत्यादि अर दोय दर्शन ज्ञान अथवा राग द्वेष इत्यादि हैं। तीन रत्नत्रय तीन शल्य त्रिदोष इत्यादि चार गति अनंत चतुष्टय चारि कषाय इत्यादि, पंच महाव्रत पंचास्तिकाय पंचभेद ज्ञान इत्यादि, षटद्रव्य छह लेश्या इत्यादि, सप्ततत्व सप्तभय सप्तविसन सप्तनरक इत्यादि, अष्ट कर्म अष्ट मद अष्टगुण अष्टरिद्ध इत्यादि नव पदार्थ नव नय नवधा शील इत्यादि अर दशलक्षण धर्म दशधा परिग्रह दशदिशा इत्यादि अनेक गणितकी चरचा तीजे स्थानांगमें है ॥ २९ ॥ अर चौथा समवायांग ताके चौसठि हजार पद तामें द्रव्यादिककी तुल्यता कही। कोऊ द्रव्य काहू तैं न्यून नाहीं सबही द्रव्य सत्ता लक्षण करि समान हैं ॥ ३० ॥ धर्म अधर्म अर एक जीव लोकाकाश ये प्रदशनिकरि समान हैं। ये असंख्यात प्रदेशी हैं। यह तौ द्रव्यनिकी तुल्यता कही ॥ ३१ ॥ अर क्षेत्रमें अढाई द्वीप अर पहले स्वर्गका ऋजु विमान अर पहले नरकके पहले पाथडेका नाम सीमन्तक नाम इन्द्रकविला अर मुक्ति शिला अर सिद्धक्षेत्र ये पांच स्थानक पैंतालीस लाख योजनके हैं। यह क्षेत्रकी समानता कही अर दश कोडा कोडी सागरकी

संघातसमास ८ प्रतिपत्ति ९ अर प्रतिपत्ति समास १० अनुयोग ११ अर अनुयोगसमास १२ प्राभृत १३ अर प्राभृतप्राभृतसमास १४ प्राभृत १५ प्राभृतसमास १६ वस्तु १७ अर वस्तुसमास १८ पूर्व १९ अर पूर्वसमास २० ये श्रुतज्ञान ज्ञानके भेद कहे, सो अक्षर ही रूप कहिये अर अनंतानंत पुद्‌गुल परपाणु तिनिके खंधनिका समूह ताका कथन हू श्रुतविषैं ही है। श्रुतके अनंतानंत विभाग तिनिमें एक भागका नाम पर्याय कहिये, श्रुतके भेद अपार हैं ॥१५॥ जीवनिमें सूक्ष्म निगोदिया अलब्धपर्याप्त ता समान अर कोई तुच्छ नाहीं सो वाके अंशमात्र ज्ञान है सबनिमें अल्प ज्ञानावास मानना ही सो श्रुतज्ञानके आवर्णका अभाव वाहूके है। अक्षरके अनंतवें भाग सूक्ष्म निगोदियामें ज्ञान है, एतेहू ज्ञानका अभाव जीवके कदे ही न होय। संसार अवस्थाविषैं जीव अनादिकालका अज्ञानी है परंतु निश्चय नयकरि ज्ञानरूप ही है। जो उपयोगका वियोग होय तौ जीव न कहावै। जीव है सो उपयोग लक्षणका धारक है। जैसैं चंद्र सूर्य अति मेघपटलके तलै आय गये हैं तौहू तिनकी प्रभाका अभाव न होय किंचित उद्योत रहै तैसैं कर्मके आवर्णतैं जीवके किंचित् ज्ञान है। निगोदहू विषैं अचक्षुदर्शन अर कुमति कुश्रुतिज्ञान ये तीन उपयोग हैं ॥१८॥ जो एक अक्षर सो श्रुतका पर्याय अर अक्षरका अनंतवां भाग सो पर्याय समास ये आवर्ण सहित श्रुतके भेद हैं॥ १९ ॥ अर अक्षरका अनंतवां भाग असंख्यातवां भाग संख्यातवां भाग यह तो अनुक्रमकरि हाणि कही। अर संख्यातगुणी वृद्धि असंख्यातगुणी वृद्धि अनंतगुणी वृद्धि यह अनुक्रमकरि वृद्धि कही ॥ २० ॥ याही भांति एक भागतैं जौलग अक्षरकी पूर्णता होय तौलग पर्यायसमास कहिए भावार्थ—एक अक्षरके अनन्त भाग करिए तिनमें सूक्ष्मनिगोद अलब्धपर्याप्तके अक्षरका अनंतवां भाग है सो एक भाग है अर काहू जीवके एक भागतैं दोय भाग है तब ज्ञान बढ्या कहिए याही प्रकार अंश अंश बढते जब एक अक्षरकी पूर्णता होय तहां लग पर्याय समास कहिए सो याके असंख्यात लोकमात्र भेद हैं ताका विशेष कथन गोम्मटसारकी ज्ञानमार्गणातैं जानना। बहुरि एक एक अक्षरकी अनुक्रमतैं वृद्धि होय ताके ऊपर एक अक्षर

स्वरूप विवेक दृष्टि करि देखते भये। कैसा है धर्मतीर्थ गंभीर है अर्थ जाका अर सर्वथा प्रकार प्रगट है । जब जिनेंद्ररूप दिनकर वचनरूप किरणनिके उद्योत करि अर्थका प्रकाश करै तब मिथ्यात्वरूप अंधकार कहां रहै ? कोई ही निकटभव्य जीव जिनवरके होते हुये मिथ्यात्वरूप तिमरको न ग्रहै ॥ ३ ॥ जगतगुरु जिनेश्वर यह आज्ञा करते भये। सर्व सुखका करणहारा धर्म ही जीवनिकूं सर्व यत्न करि कर्त्तव्य है । यह धर्म प्राणीनिकूं हितके अर्थ है ॥ ४ ॥ चतुरनिकायके देवनिविषैं अर मनुष्यनिविषैं जो इंद्रियजनित सुख देखिये है सो सर्व सुखका करणहारा धर्म ही जीवनिकूं सर्व जतनकरि कर्तव्य है । यह धर्म प्राणीनके क्षयकरि उपज्या जो आत्माधीन निरवाणका सुख सो हू धर्म थकी उपजै है ॥ ६ ॥ ता धर्मके भेद सुनहु—दया, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रह त्याग यह पंच महाव्रतरूप यतीका धर्म है । जहां रंचमात्र हू हिंसादिक अपराध नाहीं सो यतीका धर्म सर्वथा अव्रतका त्यागी है ॥ ७ ॥ अर गृहस्थका धर्म किंचित् त्यागी है। तातैं श्रावक अणुव्रती है अर साधु महाव्रती है। अर दान पूजा तप शील यह चार प्रकार गृहस्थका धर्म है सम्यक्दर्शन है मूल जाका ऐसा अणुव्रत रूप श्रावकका धर्म है, वडी ऋद्धिके धारी स्वर्गके देव तिनकी विभूतिकूं दे है। अर यतिका धर्म सैयाथका मोक्षका सुखका दाता है ॥ ९ ॥ स्वर्ग मोक्षका मूल जो धर्म ताका लक्षण श्रुतज्ञानथकी मोक्षाभिलाषीनिकूं निश्चय करना ॥ भावार्थ—जे परोक्षज्ञानी कल्याणके अर्थी हैं तिनकूं गुरुके मुख श्रुतज्ञानथकी धर्मके लक्षणका निश्चय करना। सुरपुर—शिवपुरका वीज वीतरागका भाष्या धर्म ही है। अर धर्मका कथन करनहारा सर्वज्ञदेवका द्वादशांग सूत्र है। ताकूं द्रव्यश्रुति कहिये अर भावसूत्र आतमबोध है केवलीका प्ररूप्या सूत्र ही प्रमाण है, काहेतैं जो केवली निर्दोष हैं अर आवरणतैं रहित हैं। जाके आवरण होय सो यथार्थ न जानै अर जाके दोष होय सो यथार्थ न कहै ॥ ११ ॥ सर्वज्ञ वीतराग ही यथार्थ कहै। सर्वज्ञके भाषे सूत्र तिनमें ये भेद पर्याय १ अर पर्यायसमास २ अक्षर ३ अक्षरसमास ४ पद ५ अर पदसमास ६ संघात ७ अर

नाईं शरीरकेविषैं हू ममत्व न रहा, जैसैं केश उपाडे तैसैं देहका नेह हू तज्या, तिनके केश अति स्निग्ध अति श्याम अति सघन अति कोमल सो तत्काल उपाड डारे ॥ २१ ॥ भगवान्‌के समवसरणमें चतुर्निकायके देव अर चतुर्विधिसंघ सबही धर्मश्रवणके अभिलाषी भये। ऋषभका समवसरण बारह योजन विस्तार भया ॥ २२ ॥ जहां जिनशासनके अधिष्ठाता देवता महा प्रभावके धारी धर्मचक्रवर्ती जे भगवान आदिनाथ तिनकूं नमस्कार करते भये ॥ २३ ॥ अप्रतिचक्रा है नाम जाका ऐसी जिनशासनकी सेवक देवी जिनेश्वर अर मुनिनिका दर्शन पाय अति हर्षित भई ॥ २५ ॥ भगवान्‌की दाहिनी ओर प्रथम सभामें मुनि, दूजी सभामें कल्पवासी देवनिकी देवी, तीजी सभामें आर्यिका अर श्राविका अनेक नारी, अर चौथी सभामें ज्योतिषी देवनिकी देवी. पांचवीं सभामें व्यंतरनी, छठी सभामें भवनवासिनी, सातवीं सभामें भवनवासी देव, आठवीं सभामें व्यंतर अर नवमी सभामें ज्योतिषी स्त्री, दशवीं सभामें स्वर्गवासी, ग्यारहवीं सभामें नरेंद्रादिक मनुष्य अर बारहवीं सभामें तिर्यंच यह बारह सभानिका वर्णन किया ॥ २६ ॥ तीनलोकके जीव जिनशासनके श्रवणकी इच्छा कर तिष्ठे । जहां प्रथम गणधर वृषभसेन जिन ऋषभदेवकूं पूछ्या तब जिनरूप सूर्य अपनी भाषारूप किरणनिकरि मोहरूप अंधकारकूं दूर करते भव्यनिकूं प्रतिबोधते भये। अधरनिका मिलाप न होय अर रंचमात्र खेद न होय। या भांति दिव्यध्वनि कर सकल भेद धर्मके विस्तार कर कहते भये ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभनाथकेवलोत्पत्तिवर्णनं नाम नवमः सर्गः समाप्तः ॥

अथानंतर—धर्मका व्याख्यान करणहारे आदि पुरुषने उन त्रैलोक्य जीवनिके निकट धर्मका उद्योत किया। मुनिपदविषैं सहस्र वर्ष मौन धारी हूते सो जिनपदविषैं केवल अवस्थामें अनिच्छा पूर्वक दिव्यध्वनि कर तत्त्वका निर्णय किया ॥१॥ संसारके तरनेका उपाय जो तीर्थ ताका स्वरूप तीर्थनाथने दिखाया। सो जगत्‌के जीव तीर्थका

राजकूं सेनासहित निपात किया। वहुरि ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अर अंतराय ये चार एकही साथ हने तब चार घातियनिके क्षयतैं केवलज्ञान उपज्या समस्त द्रव्य गुणपर्यायसहित विलोके लोकालोकका अवलोकन भया तब चतुरनिकायके देव इंद्रनि सहित आये जैसैं गर्भजन्मतपविषैं आये हुते तैसैं केवलकल्याणकमें सब आये, भगवानके कर्मनिके जीतवेका यश गावते भये। भगवान् चौतीस अतिशय, अष्टप्रातिहार्य अर अनंतचतुष्टय तिनकरि संयुक्त सोहते भये ॥ १३ ॥ अर भरत चक्रवर्तीकूं एकसमय तीन वधाई लोकनिने दीनी, एक कहै प्रभुकूं केवलज्ञान उपज्या। अर एक कहै तिहारी आयुधशालाविषैं चक्र उपज्या। एक कहै तिहारे पुत्र उपज्या तब भरत अति हर्षित होय पहिले प्रभुके दर्शन आया। इक्ष्वाकुवंशी, कुरुवंशी, भोजवंशी, उग्रवंशी इत्यादि बड़े बड़े राजानि सहित चतुरंग सेनाकरि शोभित समवसरणविषैं जाय केवल अतिशयकरि मंडित परमेश्वरकी पूजाकरि प्रणाम करता भया। ता समय भरतका छोटा भाई वृषभसेन अनेक राजानि सहित मुनि भया, संयम अंगीकारकरि पहिला गणधर भया ॥ १६ ॥ अर राजा सोमप्रभ अर श्रेयांस दोऊ भाई जयकुमारकूं राज देय मुनि भये। अर रानी लक्ष्मीमती जयकुमारकी माता आर्या भई अर जयकुमार अपने भाईनि सहित सुखसूं राज्य करै। अर श्री ऋषभदेवकी पुत्री ब्राह्मी अर सुंदरी दोऊ महाधीरकी धरणहारी अनेक रानीनि सहित आर्या भई। सब आर्यानिकी ये दोऊ स्वामिनी भई। श्रीऋषभदेवकी केवलविभूति आश्चर्यकारी देख अनेक धीर सम्यक्त सहित व्रत आदरते भये, कईयक मुनि भये कईयक आर्या भई कई श्रावक भये कई श्राविका भई अर कई व्रत नियम आखडी ताकूं धारते भये अर कईयक चतुर्थगुण स्थानकूं धारक अव्रतसम्यग्दृष्टि भये। जाकी जैसी सामर्थ्य भई ताही प्रमाण व्रत तप शील आदरे। अनेक स्त्री पुरुष पद्मरागमणि समान हैं हथेली जिनकी। अर इंद्रनीलमणि समान हैं केश जिनके सो अपने हाथनिकरि केश उपाडते अति सोहते भये। प्रथम अवस्था रागरूप हुते सो वीतरागभावका प्रसंग पाय विरागी भये ॥ २० ॥ वैराग्यके धरणहारे वे भव्यजीव महा विवेकी तिनके केशनिकी

१८५

ताकूं स्नान कराय देवनिने पूज्या ॥ ९६ ॥ अर जगतविषैं यश भया यह समाचार अयोध्याकेविषैं भरतने सुने। जो दानपतिकूं देवपति पूजते भये। तब भरत आदि भूपति भी आयकरि कुरुवंशकूं पूजते भये ॥ १९७ ॥ देखा है प्रत्यक्ष दानका फल जिन्होंने ऐसे नृप दानकी विधि पूछते भये। अति श्रद्धाकरि युक्त भरतादिक पूछै हैं। तिनकूं दानपति श्रेयांस दानकीविधि कहै हैं। मुनिराज गृहके निकट आवैं। तब श्रावक ऐसे कहै हैं। हे स्वामिंस्त्वमत्र तिष्ठ तिष्ठ ये वचन कहिकरि मुनिकूं पडगाहै हैं। फिर उच्चस्थानक खडा राखै, दाता मुनिके पांव धोवै, पूजाकरै, प्रणामकरै, मनशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि आहारशुद्धि ये नव प्रकार दानकी विधि है ॥२००॥ यह पुण्य प्रथम तो अभ्युदय कहिये इंद्रादिपद तिनका कारण है। पश्चात् मुक्तिका कारण है। यह दान दाताकूं स्वर्ग मुक्ति दे है ॥ १ ॥ या भांति सुना है यथार्थ दानका स्वरूम जिन्होंने ऐसे भरतादिक भूप श्रेयांसकी बारंवार प्रशंसाकरि दानधर्मविषैं भया है अंतःकरण जिनका ॥ वे सकल अपने अपने स्थानकूं गये ॥ २ ॥ अर ऋषभदेव चार ज्ञानके धारक हजारवर्ष पर्यंत मोक्षके अर्थि नानाप्रकारके तप करते भये। कैसे हैं भगवान्? ज्ञानहीका है प्रयोजन जिनके भगवानके शिरपर केशनिरूप मणियनिका समूह कैसा सोहै है। जैसैं वटवृक्षके जटाका भार सोहै है। भगवान जिष्णु कहिये प्रकाशरूप सो सुंदर केशनिकरि अति सोहते भये। कंचन वर्णविषैं श्यामवर्ण अति सोहै ॥ ५ ॥ एक दिन विहार करते पुरमिताल नामा नगरके निकट प्राप्त भये। जहां राजा वृषभसेन भरतका छोटा भाई आपका पुत्र सो राज करै ॥ ६ ॥ ता नगरका संकटनामा वन तहां वटके वृक्ष तले ध्यानधरि योगींद्र विराजे। महामनोहर शिला तापर पद्मासनधरि शुक्लध्यानरूप खड्गकी धाराकरि मोहशत्रुकूं मारते भये। कैसे हैं मुनींद्र वश किये हैं मन इंद्रिय जिनि अर क्षपकश्रेणीविषैं आरूढ हैं। वह क्षपकश्रेणी रणभूमि समान है जैसैं रणभूमिमें शूरवीर शत्रुका नाश करै। तैसैं क्षपकश्रेणीविषैं महामुनि मोहका नाश करै; भगवान आदीश्वर महा उत्साहरूप गजपर चढे। रागादिक परसेनाका नाश करते भये ॥ ८ ॥ पहिले तो प्रभुने मोह-

अर दानधर्म विधिका वेत्ता आहारकी शुद्धता जानता भया । श्रद्धा आदि गुणनिका भर्या पात्रके संपूर्ण हैं लक्षण जाविषैं ऐसा जो मुनींद्र ताहि ईक्षुरसकरि पूर्ण जो कुंभ ताहि उठायकरि कहता भया । हे प्रभो ! प्रासुकरस लेवहु यह आहार छ्यालीस दोष रहित है । छयालीस दोषनिमें सोलह उद्गम । अर सोलह उत्पाददोष ॥ ८८ ॥ दश एषणादोष अर धूम्र अंगार प्रमाण अर संयोजन ये छ्यालीस दोष तिनकरि रहित । यह प्रासुकरस ऋषियनिके लेयवे योग्य है ॥ ८९ ॥ तब भगवान शुद्धात्मा व्रतकी वृद्धिके अर्थि पाणिपात्रकरि वर्षेंदिन पारणा करते भये । दोऊ पांव बराबर राखिकरि खडे खडे आहार करते भये । मुनिराजके आहारकी क्रियाकी विधि लोकनिकूं दिखावते भये । राजा श्रेयांसने परमपात्रकूं विधिपूर्वक पारणा कराया कोई अंतराय आहारमें न पड्या । तब प्रभुके आहारके लिये पीछे पंचाश्चर्य भये । रत्नवर्षा ये कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वर्षा । सुगंध जलकी वर्षा । शीतल मंद सुगंध पवन अर धन्य धन्य वचन ॥ ९० ॥ आकाशविषैं देवकृत ऐसे शब्द होते भये । जो धन्य यह दान अर धन्य यह पात्र अर धन्य यह दाता अर धन्य यह मुनिके दानकी विधि ऐसे धन्य धन्य शब्द होते भये अर आकाशविषैं देवदुंदुभी बाजै । तिनके शब्द मेघकी ध्वनिकूं जीतैं ॥ ९१ ॥ श्रेयांसके दानके यशकी राशिकरि तीनलोक पूर्ण भये । तीनलोकमें श्रेयांसका यश विस्तर्या, यशके समूहकरि दिशारूप नारियनिके मुख उज्ज्वल भये । अर शीतल मंद सुगंध पवन ऐसी बाजी मानूं दिशारूप आंगना तेई भई देवांगना तिनके मुखतैं निकसे ये सुगंध श्वास ही हैं अर फूलनिकी वर्षा आकाशतैं भई सो मानूं श्रेयांसके सुमनकी वृत्ति अंतःकरणमें न समाई सो सृष्टिविषैं वरषी सुमन नाम पुष्पका है । अर सुमन नाम सत्पुरुषनिके मनका है । सो मानूं यह पुष्पवृष्टि ही भई कुरुवंशियनिके सुमनकी वृष्टि ही वर्षी ॥ ९४ ॥ अर श्रेयांसने योगींद्रके करपात्रविषैं इक्षुरसकी धारा डारी । ताकी स्पर्धा हीकरि मानूं देवनिने आकाशसूं रत्नधारा वर्षाई । जिननाथकूं पूजे बहुरि तपकी वृद्धिके अर्थि धर्म तीर्थके कर्त्ता ऋषभ सो तो वनमें गये अर दानतीर्थका कर्ता सोमप्रभका लघु वीर श्रेयांस

अकस्मात् आज आपके पाहुना आया। क्षमा अर सब जीवनिसूं सुमित्रता। अर तपोलक्ष्मी है संग जाके ॥ ७२ ॥ सो उत्तरकी ओरसूं नगरीमें प्रवेश किया है। जूडाप्रमाण धरती देखता चल्या आवै है ईर्यासमितिका पालक महा दयालु चांद्रीचर्या कहिये महानिर्मल आचारकी प्रवृत्ति ताहि गहकरि विहार करै है अर नगरके लोक ता लोकेश्वरकूं देखकरि अति हर्षसूं भेले भये हैं। अर चरणारविंदकूं अर्घ देवैं हैं। अर स्तुति वंदनादिकरि सेवैं हैं जैसैं चंद्रमा घर घर प्रति उद्योत करता ऊंचा चढै है। तैसैं जिनचंद्र गृहनिकी पंक्तिकूं प्रकाशता अपने गृहके निकट आया है ॥ ७५ ॥ ये सिद्धार्थके वचन सुनिकरि दोऊ भाई अति आदरसूं उठे। ईश्वरके सन्मुख गये ललाटविषैं दोऊ हाथ लगाय नमस्कार किया। अर जैसैं चांद सूर्य सुमेरकी प्रदक्षिणा करैं। तैसैं ये दोऊ भाई प्रभुकी प्रदक्षिणा करते भये। अर पांयनिपर पडकरि समाधान पूछते भये। अर कहते भये हे प्रभो! आगैं पधारो हमकूं आज्ञा देवहु सो करैं हम तुम्हारे सेवक आज्ञाकारी हैं, आप मौनावलंवी इनकूं कुछ उत्तर न देवैं सो ये सन्मुख ठाढे मौनका कारण विचारैं हैं ॥७८॥ अर राजा सोमप्रभकी राणी लक्ष्मीमती सो भी चंद्रमाकी कलाकी न्याईं जिनेंद्ररूप गिरींद्रकी प्रद्रक्षिणा करती भई ॥८१॥ अर श्रेयांस राजाका छोटाभाई नहिं लगै हैं पलक जाके सो नेत्रनिकरि निरंतर ऋषभका रूप निरखता ऐसा विचार करता भया। जो मैंने पूर्वभवविषैं ऐसे निर्ग्रंथ रूपके धारक मुनि देखे थे। प्रभुका महा दैदीप्यमान शरीर महाशांतिरूप ताकरि प्रतिबोधकूं पाया, श्रेयांस अपने अर प्रभुके दश भवजानकरि पांयनिपर गिरि मूर्छित होय गया। मूर्छित भया तोहू प्रभुके पांव अपने सिरके कोमल केशनिसूं पूछकरि मार्गका खेद निवारणे अर्थि आनंदकी अश्रुधारारूप उष्णजलकरि प्रभुके चरण प्रक्षाले, पूर्वजन्मविषैं प्रभु तो वज्रजंघ राजा हुते। अर श्रेयांसका जीव राणी श्रीमती था सो राजा राणीने चारण मुनिकूं आहार दिया हुता। सो जिनराजके दर्शनसूं सब विधि याद आई तब ये शब्द कहे। हे भगवन् तिष्ठो तिष्ठो ऐसे कहि मंदिरमें लीने। अर उच्चासनविषैं पधरायकरि पांव धोये ॥ ८५ ॥ अर चरणनिकी पूजाकरि मन, वचन, कायकरि प्रणाम कीया

खंडनिका बंधु चंद्रमा कुमुदबनकूं प्रफुल्लित करै। तैसें जगतको प्रफुल्लित करणहारा जगतका बांधव सबनिकूं आनंद उपजावै। यह तो चंद्रमाके देखिवेका फल है अर इंद्रकी ध्वजाके देखिवेतैं यशरूप ध्वजाका धारी अर सुमेरुके देखिवेतैं कल्याण कहिये सोनेका पर्वत। अर प्रभु कल्याणका पर्वत। अर जैसैं विजुरी क्षणएक प्रगट होयकरि छिप जाय तैसें मुनिराज एक क्षण पुरमें आय वनकूं जाते रहे। सो विजुरीके देखिवेतैं मुनींद्रका आगम जाण्या जाय अर रत्नद्वीपके देखिवेतैं धर्मरूप रत्नका महाद्वीप अर विमानके देखिवेतैं सर्वार्थसिद्धिका चया। ये सात स्वप्न तो अनुमानकरि ऋषभका आगमन सूचै हैं। अर आठवें स्वप्नमें ऋषभदेव देखे सो आज ऋषभका प्रत्यक्ष दर्शन होगा यह पंडितनिने निश्चय किया अर नगरकी तथा राजमंदिरकी आज कछु और ही शोभा दीखै है। ऐसी अब तक देखी नाहीं। अर आज सर्व दिशा निर्मल भासै है सो कल्याणकूं सूचै है ॥ ६४ ॥ यह स्वप्नका फल वे दोऊ भाई जानकरि भीतर अर बाहिर सब ठौर समझदार मनुष्य मेलकरि जिननाथकी कथा विषैं आसक्त तिष्ठे हुते सो दुपहरके समय शंखनाद भया मानूं वहां शंखनाद ऋषभके आगमनके निवेदनतैं दोऊ भाइयनिकूं बधाई देता भया। अर परिवारने रच्या है दोऊ भाइयनिके अर्थि महामनोहर दिव्य आहार सो भोजनकी सब सामग्री तैयार है अर दोऊ भाई भोजनके अर्थि मणीनिके चौकविषैं बैठे हैं ताही समय सिद्धार्थनामा द्वारपाल शीघ्र ही आयकरि दोऊ भाइयनिकूं मंगलरूप बधाई देता भया ॥ ६५ ॥ हे प्रभो! जगतका पति श्री-आदिनाथस्वामी जाने समुद्रपर्यंत पृथिवी वैराग्यके अर्थि तजी। अर घरतैं बनकी ओर पालकीपर बैठि पधास्या। तब इंद्रादिक देव पालकीके कहार भये। अर कच्छ महाकच्छादि राजा जाकी लार यति भये थे, सो परीषह जीत न सके। तपोभ्रष्ट होगये। अर यह योगेंद्र महादुर्द्धर तपका धारी अकेला धारै है। या ऋषभके समान जगमें योगी नाहीं ॥ ७० ॥ जाकी कथारूप अमृतकरि तृप्त न भये। तुमकूं आदि देय सत्पुरुषनिके आहार बुद्धि विषैं भी अभिलाषा नाहीं होय है। सदा पंडितनिकी गोष्ठीविषैं वाहीकी चर्चा है ॥ ७१ ॥ सो वह जगतका पति

सो इनकी भांतिभां तिकी सेवा करिये। सो कैयक लोक नानाप्रकारके वस्त्र ल्यावैं। कैयक गहना ल्यावें। कैयक दिव्य सुगंध पुष्प प्रभु प्रभुके आगैं धरैं हैं। अर कैयक असमझ वडे वडे तुरंग लावें। अर उतंग मातंग लावें। कैयक रथ पालकी लवें। सो ये सब वस्तु प्रभुके काम नाहीं अर लोकनिने पूर्वें भोगभूमिविषैं यतिका धर्म सुण्या नाहीं यति देखे नाहीं। यतिके आहारकी विधिकूं कोऊ समझे नाहीं, सो विधिपूर्वक योग्य आहार काहू ठौर न बण्या अर लोकनि अनेक विकल्परूप अवधि करी ॥ ५४ ॥ लोकके प्रतिबोधनेके अर्थ उदयरूप भया है जिनवररूपी दिनकर सो अहारके अलाभविषै हूं प्रभुकूं खेद न भया जैसैं दिनपतिकूं दिनविषैं जगद्भ्रमणका खेद न उपजै तैसैं जिनपतिकूं प्रतिदिन आहारके अर्थि पृथिविषैं विहारका खेद न उपज्या ॥ ५५ ॥ जैसैं षट्मास उपवासविषैं खेदरहित ध्यानारूढ तिष्ठे। तैसैं ही षट्मास आहारका अन्तराय भया। आहारके अर्थि नगर ग्रामादिकमें गये। परंतु विधिपूर्वक आहारका लाभ न भया लोकनिने नानाप्रकार पूजे वंदे भांति भांतिकी वस्तु भेंट ल्यायें। परंतु प्रभुके कामकी नाहीं सो पाछे ही फिरैं। छै महीने पृथिवीविषैं विहार किया वर्षएक निराहार भये। परंतु शरीर-विषैं रंचकमात्रहू खेद न उपज्या। अर मनविषैं आर्ति न उपजी ॥ ५६ ॥

अथानंतर—जगतका स्वामी हस्तिनागपुरके निकट गया। जा नगरविषैं सदा मदोन्मत्त हाथी विचरैं हैं तातैं ताका नाम हस्तिनागपुर प्रसिद्ध है। दान कहिये गजनिका मद ताकी प्रवृत्ति विशेष है। सो मानूं दानकी प्रवृत्ति ही दिखावे है ॥ भावार्थ—हस्तिनागपुरविषैं प्रभुका आहार होगा ॥ ५७ ॥ तहां राजा सोमप्रभु अर श्रेयांस दोऊ भाई, प्रभु पधारे ता दिनकी पहिली रात्रिविषैं यह स्वप्न देखते भये ॥ ५८ ॥ चंद्र अर इंद्रकी ध्वजा मेरु विजुरी कल्पवृक्ष, रत्नद्वीप, विमान। अर भगवान ऋषभ ये आठ स्वप्न पुरुषोत्तमके पधारिवेके कारण देखे ॥ ५९ ॥ प्रभात दोनों भाई सभाविषैं विराजे तहां आश्चर्यके भरे पंडितनिके समूहके निकट स्वप्नफलकी कथा करते भये ॥ ६० ॥ सो यह निश्चय भया कोऊ पूज्य पूर्णप्रभाका धारी जगतका बांधव आज ही आवै। जैसैं कुमुदिनीके

भावार्थ—प्रभुके पायनिकी पगथली पद्मरागमणि समान अति आरक्त है ॥ सो पायनिके धरिवेकरि पृथिवी कोंपलसमान आरक्त भासै है। वह जिनेश्वर केवलज्ञानपर्यंत मौनी लंबी हैं भुजा जाकी सो मार्गविषैं विहार करता अति सावधान जीवदयामें तत्पर इर्यासमितिकूं पालता पृथ्वीकूं देखि देखि पांव धरता भया, न अति शीघ्र न अति धीरे ॥ ४३ ॥ मध्यान्हसमय पुरग्रामविषैं गृहपंक्ति अवलोकता चांद्रीचर्या कहिये महाउज्ज्वल आचरता पृथिवीविषैं भव्य जीवनिकूं दर्शन देता भया ॥ ४४ ॥ अनेक देशनिविषैं घूमते भगवान जगतके नाथ सौम्य है शरीर जिनका ताहि जगतके लोक ऊंचा मुखकरि देखते तृप्त न भये। जैसैं लोक नये चांदकूं देखते २ तृप्त न होवें। लोक प्रभुकूं देखि देखि ऐसा विचार करै हैं यह श्वेतभ नु कहिये चंद्रमा है। राहुका संसर्गतजि भूमंडलमें आया है। तजे हैं तारा ग्रह नक्षत्र जाने ॥ ४६ ॥ अथवा यह अपूर्व कहिये दूजा सूर्य पृथ्वीविषैं आया है। भूभृत् कहिये पहाड प्रसाद कहिये मंदिर भूरुह कहिये वृक्ष तिनकी छायारूप जो तम कहिये अंधकार ताके दूर करिवेकूं प्रगट्या है ॥ भावार्थ—सूर्य तिमिरकूं हरै है परंतु गिरिमंदिर अर वृक्ष तिनकी छायारूप तिमिर दिनकरसूं न मिटै। यह सब तिमिरका हर्ता दूजा सूर्य अद्भुत दिनकर है अहो लोक यह कांतिका परम स्थानक है अर दीप्तिका परम पद है अर शीलका शैल कहिये पर्वत है अर महा गुणनिकी राशि है ॥ ४८ ॥ यह पुरुषोतम मनोहररूपकी परम हद्द है। अर सुजनताकी खान। माधुर्यताकी अवस्था है यह धीर्यताकी अवधि है। आहारके अर्थि नगर ग्रामादिकविषैं जाय हैं तहां लोक देखकरि परस्पर ऐसी वार्ता करै हैं यह भगवान आदिनाथ अति रमणीकताकी मानूं खान है। ताकी परम हद्द है अर धीर्यताकी सीमा है या समान धीरवीर अर नाहीं ॥४९॥ हे लोक! आवो या जिनवरकी दिगंबर दिशाविषैं परम रमणीयता देखहु देखहु याके दर्शनसूं दृग सफल होवें हैं॥५०॥ या भांति परस्पर किया है आलाप जिनि ऐसे लोकनिके समूह नर नारी आश्चर्यके भरे आदीश्वरकूं अवलोकते भये ॥५१॥ चतुर्थकालके आदि लोक सरल (जड) चित्तके सूधे। परंतु असमझ मुनिका अर गृहस्थका धर्म जानै नाहीं। यह जानैं वे बडे राजा हैं।

श्रेणियनिविषैं अपने कुटंबसहित तिष्ठे ॥ ३३ ॥ विजयार्द्धके विद्याधर महाधीर इन दोऊ भाइयनिकूं अपने शिरोमणि जानकरि सब लोकसूं उत्कृष्ट आपकूं मानते भये ॥३४॥

अथानंतर—वह भगवान पुरुषोत्तम प्रतिमासमान निश्चल योग धरे अडिग ऊभे परीषहरूपी अग्निके बुझावनहारे ध्यानरूप समुद्रविषैं स्थिर जिनकूं कोऊ बाधा नाहीं। सो छै महीना तो कायोत्सर्ग धरि उपवास किये बहुरि ऐसा विचारकरि आहारग्रहणकूं गमन किया, मनमें यह विचारी कि मैं तो तीर्थंकरपदका धारक हूं मेरी शक्ति विशेष। अर और मनुष्य अल्पशक्तिके धारक प्रवर्तै हैं अर आगामी कालविषै होंयगे जो मोक्षके अर्थि कर्मशत्रुअनिकूं जीत्या चाहै हैं। तिनकूं भोजनके अभावविषैं मुनिव्रतका साधन कैसे होय। मैं तो तीर्थंकर प्रकृतिके प्रभावकरि महा शक्तिवंत। बहुत दिनभी अनशनरूप रहूं तो खेद नाहीं परंतु अल्पशक्तिके धारी बहुत नर आहार विना न रहि सकैं। तातैं मुनिके आहारकी विधि मेरे आहारकी प्रवृत्ति विना प्रगट न होय। तातैं आचारांगसूत्रकी आज्ञा प्रमाण मोहि श्रावकके घर आहार लेना ॥३३॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ तिनमैं उत्तमक्षमादि हैं लक्षण जाके। ऐसा धर्म सो वडा पुरुषार्थ है। मोक्षका अर अर्थ कामका साधन एक धर्म ही है ॥ ३७ ॥ सो धर्मका साधन शरीर है। अर शरीर प्राणनिके आधार है। प्राणनिकरि यह प्राणी आयुपर्यंत शरीरमें रहै है सो प्राण अन्नके आधार हैं। अन्नविना प्राण न रहै तातैं परंपरायकरि यह अन्न ही धर्मका साधन है अल्प बलके धारक जो मनुष्य तिनकूं अन्नही स्थिरताका कारण है ॥३९॥ तातैं निर्दोष आहारके लेनेकी विधि धर्मके अर्थीनिकूं मैं या भरतक्षेत्रविषैं मार्गके चलायवे अर्थि दिखाऊं ॥ ४० ॥ ऐसा विचारकरि वह ईश्वर सब बातनिमें समर्थ क्षुधा आदि सकल परीषहका जीतनहारा जो जन्म पर्यंत आहार न करै तो ताहि बाधा नाहीं परंतु परमार्थविषैं है बुद्धि जाकी सो साधुके आहारकी शास्त्रोक्तविधि दिखावने अर्थि विहारकूं उद्यमी भया। छै महीने तो एक आसन एक स्थानकमें खडे रहे बहुरि पृथिवीकूं अपने चरणनिके धरनेकरि कोंपलरूप करते गमन करते भये।

आताप ही हैं। अर प्रभुकी छायाविषैं फल न होय तो आताप भी नाहीं ॥२२॥ जो हम प्रभुका आचरण आचारिवेकूं समर्थ नाहीं तो वनविषैं तो रहैं यह वनविषैं रहना ही प्रभुके आचरणके पीछे लगना है। ऐसा निश्चयकरि वे चार हजार फलाहारी भये। वृक्षनिके पत्र अर फल भखे। अर वृक्षनिके वल्कल पहिरे जटाधारी बनवासी तापस भये अर प्रभुका पोता मारीच तपकरि तप्त है तन जाका। सो जैसैं कोई मरुस्थलविषैं मरीचिका कहिये भाडली ताविषैं तृषाकरि पीडै भ्रमकरि जल देखै। वैसैं मारीच सांख्यसूत्ररूप मरीचिकाविषैं तत्वके ज्ञानजलकूं हेरता भया सो कहां पावै। भावार्थ—मारीचने सांख्य पातंजल दो शास्त्र प्रगट करे जैसैं दाहकरि पीडित जो गज ताके जलका अवगाह दाहका हर्ता नाहीं। तैसैं मारीचके परसूत्रका अभ्यास शांतभावका कर्ता न भया। यह मान कषायका धारक भगवानका भेषकरि सन्यासमतका पोषक भया। एक दंडका है धारण जाके। मुंडित स्नानादिक शुचिका करणहारा ऐसा परिव्राजकका भेष प्रगट करता भया ॥ २७ ॥

अथानंतर—नमि विनमि कुमार कच्छ महाकच्छके पुत्र भोगनिकी याचनाकरि आतुर भए। प्रभुके पायनि लगिकरि ऊभे भोगाभिलाषकरि चिंतावान है चित्त जिनका। जब वे प्रभुके पास आय ठाडे भये। अर प्रभु ध्यानारूढ तब नागेंद्रका आसन कंपायमान भया। सो अवधिज्ञानकरि प्रभुके निकट उनका आगमन जानि आप धरणेंद्र आया। भक्तिकरि प्रभुकूं प्रणाम करता भया ॥ २९ ॥ ज्यों अपने भाइयनिकूं कोई विश्वास उपजावे। त्यों इन दोनों भाइयनिकूं विश्वास उपजायकरि महाविद्या देता भया गुरुकी सेवाके प्रसादतैं इनकूं विद्याका लाभ भया ॥ ३० ॥ अर विद्याधरनिका आधार जो विजयार्ध पर्वत वहां इनकी लार जाय इनकूं वहांका राज्य देता भया। जगतगुरुकी सेवाकरि क्या न होय ॥ ३२ ॥ दक्षिणश्रेणीके पचास नगर उनका स्वामी तो नमि भया। अर उत्तरश्रेणीके साठ नगर तिनका स्वामी विनमि भया। नमि तो दक्षिणश्रेणीविषैं रथनूपुर पुष्पनगर वहां तिष्ठता भया। अर विनमि उत्तरश्रेणीविषैं नभांस्तिलकनामा मुख्य नगर तहां तिष्ठता भया ये दोऊ भाई दोऊ

तिनकी बुद्धि जिनने धारी है जैसैं बौद्ध आत्माकूं क्षणभंगुर मानै हैं अतीत अनागत अनंत पर्यायका ज्ञान नाहीं वर्त्तमान पर्यायरूप क्षणभंगुररूप मानै हैं। तैसैं ये अपूर्व परिपाटीरूप मुनिव्रत तैं भ्रष्ट भये वर्तमान आतुर बुद्धि-करि खान पानके अभिलाषी भये हैं ॥ १० ॥ या भांति वे चार हजार राजा क्षुधातृषादिकरि अति व्याकुल भये। कायोत्सर्गकूं तजकरि धीरे धीरे गमन करते भये स्वामीकी सेवा अर बडे कुलके पुत्रनिकूं मर्यादा तबहीलग है जबलग शरीर न डिगै। अर जब क्षुधातृषाकरि शरीर डिगै तब मर्यादा न रहै। ये सब ही फलादिका भक्षण अर सरोवरादिविषैं जलका पान करने लगे। तब आकाशतैं देवनिकी वाणी भई, हे नर! मंदबुद्धि हो! या रूपकरि यह क्रिया योग्य नाहीं। यह दिगंबररूप महापुरुषनिका है। सो तुम यतिके भेषकरि यह आचरण न करहु, ये डरे दशोंदिशाकी ओर देखकरि यह शब्द देवनिका जानि दिगंबरका भेष तज्या। डाभ वल्कलादि इनकूं ग्रहणकरि भेष पलट्या। ये भेष पलटि जल फलका आहारकरि चित्तविषैं विचार करते भये। अर जब तक उदर-पूर्ण न होय तबतक चित्तकी स्थिरता नाहीं, अर चित्तकी स्थिरता बिना बुद्धि न उपजै। जब विश्राम पाया तब इन्होंने यह विचार किया जो कि भगवान् ऋषभ जगत्के प्रभु इनका क्या अभिप्राय है। जो ये सब भोग तजि दुर्द्धर योगकूं धरि विराजै हैं। सो या लोकका फल तो ऐसा कार्यकरि कुछ दीखै नाहीं ॥ १७ ॥ प्रभुने सकल संपदा तो आपदाकरि जानी है अर रागद्वेषकूं घातकरि समस्त विषय विषसमान गिने हैं। अर सब आभरण तजे। जैसैं कोई कुव्यसनकूं तजै है तैसैं वसन कहिये वस्त्र तजे हैं. अर जैसैं कोई शत्रूनिकूं निर्मूल उखाडे तैसैं अपने हाथसूं सिरके केश उखाडे हैं। अर सकल आहारकी वस्तूनिके त्यागकरि शरीरहू तज्या है। तिनकूं शरी-रका ममत्व नाहीं। सो जानिये है कि यह कछु परलोकका साधन है। इन बातनिमें तो या लोकका फल दीखै नाहीं। परलोकका फल कछु होगा अपना स्वामी तो यह चेष्टा धरि वैराग्यरूप विराज्या है। अब अपने ताईं क्या कर्तव्य है सो हम न जानैं। हम स्वामीके लार निकसे सो अब घरकूं जाना तो उचित नाहीं। उलटे जायवेमें तो

हमारे पुत्र कलत्र चाकर अन्न जल लेकर आवेंगे हम सांझ सवेरे क्षुधा तृषाकरि व्याकुल हैं। दो महीनेके ऊपर अर तीजे महीनेके भीतर कच्छ महाकच्छ प्रभुके साले, अर मारीच प्रभुका पोता भरतका बेटा ये तीन सबनिमें, अग्रसर सो क्षुधादि तीव्र परीषहकरि चारित्रभ्रष्ट भये, क्षुधाकरि अति दुर्बल हैं अंग जिनके उनकी दृष्टि अति अस्थिर भई सो भ्रमै मानूं अति क्षुधाकरि खेदकूं प्राप्त भई उनकी दृष्टि भ्रमै नाहीं है जे भ्रांतदृष्टि आगे होवेंगे तिनके आदि ही यह पहिले अखाडेमें भ्रमेंका नाटक करै हैं, यद्यपि अन्नजलके अभावतैं उनकी चक्षु चंद्रमा समान श्वेत होय गई है तथापि क्षुधाकी बाधाकरि नेत्रनिमें ऐसा अंधकार होय गया जो दशों दिशा तिमिरही रूप भासै अर भ्रमरूप होय-गये जो दो नेत्रनिकरि आकाशविषैं जिनकूं एक चंद्रके अनेक चंद्र भासैं। अर अनेक चंद्र भासै तो हू आकाश अंध-काररूप दीखै। जैसें वेदांतमार्गविषैं एकही आत्मा अनेकरूप भासै। चंद्रमाका विंब एक ताके अनेक प्रतिबिंव जलके भरे अनेक घटोंमें भासैं। अर कैयक समस्त शास्त्रका शब्दरूप भावते संते आप हू शब्दरूप प्रवर्तें। भावार्थ—मौन छोडि वार्ता करने लगे। आत्माका स्वरूप आकाशतुल्य अमूर्तिक है। आत्मा तो चिदाकाश अर अंबर जडाकाश। सो नैयायिक वैशेषिक शास्त्रके पाठी आकाशकूं शब्दगुणवाला मानै हैं। तैसें ये चिद्रूपकूं शब्दरूप मान परस्पर वचनोच्चारण करते भये, अर कैयक मारे भूखके भूमिमें गिर पडे जिनमें रचमात्र ज्ञान न रह्या। मानूं कैयक अविवेकी आत्माकूं अचेतन स्वभाव मानै हैं तिनहीका पंथ इनने पकड्या। अर कैयक चिंतवैं हैं। अर स्वइच्छा चार व्रतकरि फलादि भख्या चाहै हैं। अर जलादि पीया चाहै हैं, परंतु अवांछिकव्रत लोका-पवादके भयकरि जल फल नाहीं ग्रहै हैं। सो मानो सांख्यमतके पुरुष ऊभे हैं जो सांख्यमतविषैं पुरुष कहिये आत्मा अकर्ता है अर प्रकृति ही कर्ता है। सो ये प्रकृति कहिये कुबुद्धि ताके प्रेरे उद्यमी भये हैं। परंतु संख्यातैं नाहीं हिले हैं। सांख्यकैसे पुरुष होय रहे हैं। अर कैयक अन्वय कहिये परंपराय यतिका मार्गादि जाके जानने-विषैं अस्त है बुद्धि जिनकी, सो पूर्वापर नाहीं जानै हैं क्षुधाकी मूर्छाकरि पीडित भये। क्षणभंगुरवर्ती जो बौद्ध

हो प्रजा! तुम शोक तजहु ॥ सब संयोग वियोगकूं धरै हैं ॥ या जीवका देहतैं संयोग है सोई वियोग होगया। तो और संयोगकी क्या बात ॥ ९६ ॥ अर मैंनें तुम्हारी रक्षाके अर्थि राजा भरत थाप्या है ॥ सो तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम धर्म वृत्तिकरि सुखसूं रहो ॥ या भांति प्रजापतिने प्रजासूं कही ॥ तब वे नमस्कारकरि पीछे गये जा ठौर ऋषभने योग धर्‍या सो स्थान प्रयाग कहाया ॥ ९७ ॥ आप जगतके पति माता पिताकूं पूछि सकल कुटुंबसूं क्षमाकरि नम्रीभूत जे राजानिके समूह तिनकूं विदाकरि माहिले परिग्रह रागादिक अर वाहिरले परिग्रह वस्त्राभरणादिक सब तजकरि संयम आदर्‍या, जो मुनिका व्रत अनादिकाल जिनेंद्र आदि महापुरुष लेते आये हैं सोई आदीश्वरने आदर्‍या।

भावार्थ—यह जिनधर्म अनादि निधन है काहूका किया नाहीं। अर कबहू जायगा नाहीं अनादि अनंत है सदासूं सत्पुरुष जिनधर्मकूं जानि योगीश्वरनिका मार्ग अंगीकारकरि लोकशिखर जाय हैं। अर सदाही योगीश्वर जिनधर्मका आराधनकरि निर्वाणपुर पावेंगे। सो अनादिसिद्धि यतिका धर्म ऋषभने धार्‍या। पंचमुष्टि करि अपने केश आप उपाडे। तव इंद्रने इन केशनिकी पूजाकरि क्षीरसागरविषैं जाय डारे। वह पवित्र सागर ही इन केशनिके पधरायवे योग्य है ॥ ९९ ॥ जब जिनराजका तप कल्याणक होय चुक्या तब सुर असुर अर मानव सब ही नमस्कारकरि अपने अपने स्थानक गये ॥ १०० ॥ अर, च्यारहजार राजा कच्छ महाकच्छादि उग्रवंशी भोजवंशी सोमवंशी इक्ष्वाकुवंशी आदि अनेक वंशनिके धारक मुनिव्रतकी रीतिमें तो न समझें पर केवल स्वामिभक्तिकरि नग्नमुद्राके धारक भये ॥ अर आप आदिनाथ कायोत्सर्ग धरि छै महीनेके उपवासधरि परीषह सहते खडे रहे, कैसे हैं प्रभु महातपके धारक चार ज्ञानकरि युक्त गिरि सारिखे स्थिरि मौनधरि ठाडे वे राजा स्वामीके छांदे चलनहारे जैसें कायोत्सर्ग नाथ निश्चल ऊभे तैसे ये हू नग्न होय निश्चल ठाडे। योगीश्वरनिके मार्गका ये रहस्य जाने नांहीं। यह भोले जीव भगवानका मत न जान्या। सो मनमें ऐसा विचार करें। जो

दाता है ॥ ८४ ॥ अर आकाश तो केशनि समान श्याम मेघ ताकूं धरे है ॥ अर देवांगना घन कहिये अत्यंत सघन श्याम केशनिकूं धरे हैं अर पालकी महा सुंदर बहुत नीलमणिकरि जडित है, वे नीलमणि केशनितैं हू अतिश्याम हैं तब इंद्रने अति हर्षित होय जिननाथसूं विनती करी कि पालकी तय्यार है ॥ तब आप माता पिता पुत्र परिवारकूं पूंछकरि पालकी चढिवेकूं उद्यमी भये ॥ सब परिवार प्रभुके निकटही है ॥ ८६ ॥ ग्रहे हैं चमर अर छत्र जिनने ऐसे सुर असुरनिकरि सेवनीय ॥ ऋषभदेव वत्तीस् पैंड तो पैदल ही चाले ॥ ८७ ॥ सब लोकनिने हाथ जोड वंदना करी ॥ अर आशीर्वाद दिया प्रभु पालकीविषैं आरूढ भये ॥ पहिले वह पालकी पृथ्वीतैं पृथ्वीपति जे राजा तिनने उठाई बहुरि आकाशविषै इंद्र पालकीकूं ले चाले ॥ मानों इंद्रने पालकी कांधे न धरी है शिरपर ईश्वरकी आज्ञाही धरी है सबही इंद्र जिनेंद्रकी आज्ञाविषैं सावधान हैं ॥ ८८ ॥ जब प्रभु पालकी पर आरूढ भये ता समय अनेक वादित्रनिके शब्द भये शंख अर भेरी ऐसी बाजीं जिनका दशोंदिशाविषै नाद भया ॥ अर बांसुरी, तथा वीणा अर ढोल इत्यादि अनेक वादित्र बाजे ॥ ८९ ॥ आकाशविषै तो नानाप्रकारकी सुरनिकी सेना चली जाय है अर पृथ्वीविषै बडे बडे राजा इक्ष्वाकुवंशी, कुरुवंशी, उग्रवंशी इत्यादि अनेक वंशविषै उपजे चले जाय हैं ॥ पृथ्वीमंडल राजानिकरि मंडित मनोहर भासै है ॥ आकाशविषै तो नृत्यकरतीं अप्सरा तिनकरि नवरस प्रगट भये हैं ॥ अर पृथ्वीविषैं ऋषभने तजी राणी तिनकूं आदि देय सब राजलोक रुदन करते जांय हैं ॥ तिनकर शोकरस प्रगट भया है ॥९१॥ भगवान ऋषभ सुर नर नागनिके ईश्वर जगतके सेवने योग्य सिद्धार्थबन जाय पहुंचे सो वन अशोक, चंपक, सप्तच्छद, अर आम्र, बट इत्यादि अनेक वृक्षनिकरि मंडित है॥ ९२ ॥ तहां भगवान वीतराग भावके अर्थि पालकीतैं उतरे ॥ जैसैं सर्वार्थसिद्धिनैं उतरि मध्यलोकविषैं आये हुते तैसैं पालकीतैं उतरि वनमें आये । कैसी है सर्वार्थसिद्धि सब देवलोकके शिखर तिष्ठै है । अर कैसी है पालकी सब देवलोक कहिये देवनिके समूह तिनके शिर तिष्ठी है ॥ अर वनविषैं आय जिनवर सकल प्रजासूं कहते भये

बुदबुदों समान उज्वल चंद्रकिरणनिकूं धारै है अर देवांगना जलके बुदबुदों समान निर्मल कपोलोंकूं धारै है अर चंद्रसमान है मुख शोभा जिनकी अर पालकी जल बुदबुद समान है दोनों हद्द जिसकी अर चंद्रकला समान उज्वल सोहै है, अर आकाश तो सांझके अरुण अभ्रनिकी रक्तताकरि सोहै है, अर देवांगना सांझके बादलों समान अरुण विद्रुम (मूंगा) के समान अधरनिकूं धारै है अर पालकी सांझके वादलों समान रक्त अनेक विद्रुमादि मणीनिकूं धरै है अर आकाश तो वर्षते जलकी बूंदनिसूं निर्मल शोभित है अर देवांगना जलकी बूंद समान जे मोती तिन समान दांतनिकरि शोभित है अर पालकी जलवत् निर्मल मोतीनिकी झालरनिकरि सोहै है अर आकाश तो शुभ राहु केतु आदि ग्रह तिनके विमानकी ध्वजानि करि शोभै है अर देवांगना ध्वजों कैसी कला धरे अति चंचल भुजोंकरि मनोहर है अर पालकी सुंदर जे ध्वजा पताका तिनकी लीलाकरि शोभित है ॥ ८२ ॥

श्लोक—दिग्नागनासिकाजंघा, रंभास्तंभोरुशोभिनी । चित्रस्त्रीतारकालोका, जगती जघनस्थला ॥ ८३ ॥

अर आकाश तो जलकी धाराकरि पूर्ण जे पयोधर कहिये मेघ तेई भये कलश तिनकूं धरै है अर देवांगना दैदीप्यमान पयोधर कहिये कुच तेई भये कलश तिनकूं धारें अर यह पालकी जलकी धारा समान शीघ्र है गमन जाका ॥ अर दैदीप्यमान कलश कुचनिकरि मंडित है । अर आकाश तो तारारूप पुष्पनिकरि शोभित है अर देवांगना तारनि समान दैदीप्यमान पुष्पनिकी कांतिकूं धरै है नानाप्रकार पुष्पनिकूं धारैं महारमणीक हैं अर पालकी तारारूप कांतिकूं धरै नानाप्रकार पुष्पनिकरि शोभित है । अर आकाश तो सुनक्षत्र कहिये शोभायमान नक्षत्रकूं धारै है, अर देवांगना नक्षत्रमाला नामा हार ताकर शोभित है ॥ अर पालकी शुभनक्षत्रमें रची है । अर आकाश तो वृहत्फला कहिये विस्तीर्ण है विस्तार जाका अर फलावटि नाम विस्तारका है अर देवांगना शुभकर्मका विस्तीर्णफल भोगवैं है अर यह पालकी तपकल्याणकरूप महाफलकूं धरै है ॥ अर मोक्षरूप महाफलकी

॥ ७३ ॥ अथानंतर—आपके जे शत १०० पुत्र तिनकूं धरा बांट दई अर बडे पुत्र भरतकूं राज्य दिया जैसा सहस्रकिरणनिकरि सूर्य सोहै तैसैं आप तपकल्याणकसूं सोहते भये। देवनि क्षीरसागर आदि अनेक तीर्थनिके जलकरि जिनराजका अभिषेक किया। अर सुगंधका लेप किया वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी जे माला तिनकरि जगतभूषणकूं सुशोभित किया ॥ ७५ ॥ जैसा सुमेरुपर्वत कुलाचल पर्वतकरि सोहै है। तैसैं जगतगुरु राजानिकरि अर देवनिकरि वेढ्या सोहता भया। पहिरे हैं मणियोंके आभूषण जिन्होंने ॥ ७६ ॥ अथानंतर—वैश्रवण कहिये कुवेर सुदर्शनानामा नई पालकीकूं निर्मापिता भया सो पालकी महादिव्य अर अत्यंत शोभाकरि सुंदर है दर्शन जाका कुवेरने वह सुदर्शना नामा पालकी आकाश समान निर्मल निर्मापी। अर स्वर्गकी सुंदर स्त्री समान महारमणीक इंद्रके तांई दिखाई, कैसी है पालकी कैयक उपमा आकाशकी धरै है। अर कैयक देवांगनाकी धारै है आकाश तो तारनिकरि दैदीप्यमान है। अर देवांगना तारा कहिए नेत्रनिकी जो कांतियें तिनकरि शोभित हैं। अर पालकी तारानिके समान नानाप्रकारके रत्ननिकरि प्रकाशरूप हैं। आकाश तो मंडलाकार उज्वल धवल जे अभ्रपटल तिन समान उज्वल शोभै है। अर आतापके निवारणहारे हैं कैसी हैं देवांगना मंडलाकार जे अभ्रपटल तिनके समान निर्मल हैं अर आतापकी निवारणहारी हैं अर पालकी मंडलाकार कहिये गोल शुभ्र कहिये उज्वल जो शरदका मेघ तासमान धवल जो आताप निवारण कहिये छत्र तिनकरि शोभित है ॥ ७९ ॥ अर आकाश तो उज्वल हंसनिकी पंक्तिकरि सोहै है अर देवांगना हंसनिकी पंक्तिसमान उज्वल वस्त्रनिकरि सोहै है। अर पालकी हंसनिकी पंक्तिसमान उज्वल ढुरते चमरनिके जो समूह तिनकरि सोहै है अर आकाश तो आदर्श मंडल कहिये सूर्य ताकी अखंड दीप्तिकरि दिशामंडलके मुखविषैं उद्योत करै है। अर देवांगना आदर्शमंडल कहिये दर्पण समान जो अपने मुखकी अखंड दीप्ति ताकरि दिगमंडलविषैं प्रकाश करै है अर पालकी दर्पणनिके मंडलनिकी अखंडदीप्तिकर मंडलमें उद्योत करै है अर आकाश तो जलके

भलीभांति जानो हो सो सब जीवनिकूं उपदेश दे संसारसूं पार करहु । अब तिहारे धर्मतीर्थके प्रवर्तनका समय वर्तै है ॥६५॥ हे ईश्वर ! यह लोग चतुर्गतिरूप महावनविषैं दिशाभूल होय रहे हैं, सो इनकूं मोक्ष स्थानकके प्रवेशका मार्ग दिखावहु । जैसैं मंत्रकी संप्रदाय चिरकालतैं विनष्ट होय जाय तैसैं या क्षेत्रमें मोक्षमार्गकी प्रवृत्ति विनष्ट होयगई सो तुम उदयकूं प्राप्त होय उद्योत करहु ॥ ६७ ॥ हे प्रभो ! या संसारसमुद्रविषैं तुम भ्रमते प्राणीनिकूं कर्णधार कहिये खेवटिया हो, कैसा है संसारसमुद्र दुखत्रय कहिए जन्म, जरा, मरण तीनप्रकारके दुख तेही हैं मोटे भंवर जाविषैं अर दोषत्रय कहिए राग, द्वेष, मोह तेही हैं महामच्छ जाविषैं । अर तुम कैसे हो भवभर्ता कहिए सकल लोकके स्वामी हो ॥ ६८ ॥ हे प्रभो ! तुम या संसार महाचक्रके भ्रमणतैं उपदेशरूप हाथनिकरि जगत्कूं उधारो, कैसा है संसारचक्र अति शीघ्र है भ्रमण जाविषैं ॥ ६९ ॥ जे संत हैं ते तिहारे दिखाये मार्गकरि संसारका खेद मेटि विश्रामकूं पायकरि अब त्रैलोक्यके शिखर पहुंचेंगे । कैसा है त्रैलोक्यका शिखर अखंड है आनंद जहां । ये लोकांतिक देवनिने कीर्तिकरि स्तुतिके वचन कहे । सो भगवान स्वयंबुद्धके ऐसे ये वचन पूजाके अर्थ होते भए जैसैं कोई समुद्रकूं जलकरि अर्घ देय सो समुद्रकूं जलकी कमी नाहीं परंतु अर्घ देनहारेकी भक्ति है, तैसैं भगवान तो ज्ञानके समुद्र हैं तिनकूं लौकांतिक कहा ज्ञान बतावैं । परंतु उनका यह नियोग है जो वैराग्यकी प्रशंसारूप स्तुतिके वचन कहें ॥ ७१ ॥ वहुरि इंद्रादिक सकल चतुर्निकायनिके देव नमस्कारकरि पूजाकरि तपकल्याणकका प्रारंभ करते भए । जाविषैं लोकांतिक देवनि प्रणामकरि विज्ञप्ति करी ताही विधि सव देव वारंवार स्तुति करते भये । भगवान ऋषभ स्वयंबुद्ध लोकांतिक देवनिकरि आराधे कैसे सोहते भये जैसैं सूर्यकी किरणनिकरि पद्मसागर सोहै । कैसा है पद्मसागर फूल रहे हैं कमल जाविषैं जैसैं सरोवरमें सूर्यकी किरणनिकरि सरोज कहिये कमल विकसै । अर कमलनिकरि सरोवर सोहै तैसैं ज्ञानरूप भानुकरि वैराग्यरूप किरणनिकरि स्वयंबुद्ध भगवानके भावरूप कमल फूले हैं तिनकरि आप अद्भुत सरोवर सोहते भये

न रहै तब स्वाधीनता कहिये तातैं कर्मनिके योगतैं भोगासक्त हूं अर विषय तृष्णाकरि व्याकुल हूं तहांतक पराधीनपनके योगकरि दुखी ही हूं, जे मुनि आत्माधीन हैं पराधीनतातैं रहित भये हैं तिनहीके आत्माधीन अव्याकुल अतेंद्री सुख होय है अर जे कर्मनिकरि पराधीन हैं तिनके इंद्रियजनित पराधीन सुख ही है, स्वाधीन अव्याकुल सुख नाहीं ॥ ५६ ॥ या जीवने अनंतकाल सुर असुर नरनिके सुख भोगे परंतु संसारविषैं जीवनिकूं तृप्ति न भई जैसैं नदीनिके समूहकरि समुद्रकूं तृप्ति न होय ॥ ५७ ॥ मैं महाबलके भवविषैं विद्याधरनिका अधिपति भया बहुरि दूजे स्वर्ग ललितांग देव भया बहुरि तीजे भव वज्रजंघ राजा अर चौथेभव उत्तरकुरु भोगभूमिविषैं भोगभूमियां बहुरि पांचवें भव दूजे स्वर्ग श्रीधरदेव बहुरि छठे भव राजा सुविधि बहुरि सातवेंभव अच्युत स्वर्गविषैं इंद्र बहुरि आठवेंभव विदेहक्षेत्रविषैं वज्रनाभचक्रवर्ती अर नवमेंभव सर्वार्थसिद्धिविषैं अहमिंद्र ॥ ५९ ॥ बहुरि वहांतैं चयकरि यहां, सो चिरकालतक दिव्यसुख देवनिकैसे भोगे तिनकरि मेरे रंच मात्रहू तृप्ति न भई, अब तीर्थंकरपदके विस्तीर्ण विषय पाये हैं अब सब बात मोहि सुलभ हैं जो चाहूं सो मौसरै तथापि इन भोगनिकरि तृप्ति नाहीं भोगाभिलाषरूप व्याकुलता ही है ॥ ६० ॥ तातैं यह संसारके सुख सदा दुःखकरि दूषित तिनकूं तजकरि मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ तपोवनविषैं प्रवेश करूं हूं । मैं गर्भहीतैं तीनज्ञानका धारक अर सामान्य जनकी न्याईं ही राज्यविषैं तिष्ठा, इंद्रियानिके भोग भोगूं हूं या समान और भूल कहा ? एते दिनतक मेरा ऐसा ही उदय हुता । जो कार्य है सो कालके आधीन है अर काल काहूसूं हू उलंध्या न जाय । जाने हैं पूर्वभव जाने ऐसा जिनराज जब वैराग्यविषैं चिंतवन करता भया, तब पंचम स्वर्गके निवासी लोकांतिकदेव प्रभुके अंतःकरणविषैं वैराग्य उपजा जान तत्काल प्रभुके समीप आए सारस्वत आदित्य आदि आठ जातिके लोकांतिकदेव चंद्र सूर्यतैं अधिक है कांति जिनकी सो आकाशविषैं उद्योत करते संते भगवंतके समीप आए नमस्कारकरि ऐसे शब्द कहते भए ॥ ६४ ॥ हे नाथ ! जैसा निजपरका हित तुम विचारया है तैसा ही करहु, जैसा जिनसूत्रविषैं कल्याणका मार्ग है तैसा तुम

अनेक राजा प्रजाके पालक होते भये। सोमप्रभ श्रेयांस आदि कुरुपुत्र तिनकरि पृथ्वी सोहती भई ॥ ४५ ॥ दिव्य भोग देवोपुनीत भोगते भगवान्‌के जन्मके दिनतैं लेय तिरासीलाख पूर्व व्यतीत भये ॥ ४६ ॥ एक दिन भगवान नृत्य देखते विराजे हुते सो एक नीलंयशा नामा नृत्यकारिणी सो नृत्य करते करते विलाय गई ताकूं देखि भगवान्‌कूं वैराग्य उपज्या ॥ ४७ ॥ जे वाह्य राग पहिले प्रभुकूं राज्यके कारण हुते सो अंतरंगका अनुराग मिटनेतैं सब ही भाव शांतताका कारण भये, जे मनोग्य विषय पहिले मतिविभ्रमके कारण भये ते विरक्तता के उपजिवेतैं शांतताके कारण भये सो भगवान् स्वयंबुद्ध व्यतीत भई है विषयकी स्पृहा जिनके अर चिरकाल भोगनिकी आसक्तताकरि उपजी है लज्जा आपकूं सो अति लज्जावान होय चित्तविषैं विचारते भये, अहो या संसारकी परम विचित्रता देखहु जो विचारिये कछु अर ही अर होय जाय कछु अर ही ॥५१॥ यह नृत्यकारिणी अनेक रस अनेक भाव दिखावती भई हुती हाव भावकी वाहुल्यताकरि विचित्रता रूप हुये भाव नृत्यके अंग जाके जो मैं भगवान्‌कूं नृत्यकरि प्रसन्न करूं सो इंद्र घना प्रसन्न होय अर इंद्रकी प्रसन्नतातैं मैं सुखी मेरी प्रशंसा होय या मोहके योगतैं ऐसा मानती सो क्षणमात्रमें क्षय गई ॥ ५३ ॥ पराधीन प्राणीके जो सुखके अनुभवकी वांछा उपजै सो धिक्कार है वाकी समझकूं जे परके आराधनविषैं तत्पर हैं तिनका मन निरंतर व्याकुल ही रहै है जहां व्याकुलता वहां सुख काहेका, अर जे आपकूं स्वाधीन मानै हैं अर सुखी कहावैं हैं तिनमें क्या सुख, वे अपने उपार्जे कर्मनिके आधीन हैं ताके स्वाधीन नाहीं पराधीनही हैं, जे कर्माधीन अर भोग तृष्णाकरि व्याकुल तिनके सुख काहेका ?

भावार्थ—कर्माधीन तो सब जगत् ही है कोई हू कर्माधीनपनेसूं रहित नाहीं अर यह नीलंयशा कर्माधीनपनेतैं इंद्रके आधीन अर इंद्र मेरे आधीन सो जो आराधना है सो वे सब पराधीन ही हैं अर मुझे स्वाधीन जानै सो मैं हू कर्मनिके आधीन तातैं भोग तृष्णांकरि व्याकुल पराधीन ही हूं, जब मेरे कर्म जाते रहें अर भोग तृष्णा

लग लग क्रीडा करते हुते सो अब हमकूं उद्वेग उपजावै हैं, जैसैं खोटे पुत्र पिताकूं खेद उपजावै तातैं अब हम क्षुधाकरि पीडित सो अब हमकूं अजीविकाका उपाय वतावहु अर भय थकी रक्षा करहु तब करुणाके सिंधु पुरुषोत्तम सकल प्रजाके प्रतिपालक प्रजाकूं क्षुधाकरि पीडित देखि तिनकी आर्ति हरते भये, आजीविकाकी सिद्धिके अर्थ सर्व उपाय वतावते भये, धर्म अर्थ कामका साधन लोकनिकूं बताया असि कहिये खड्ग, मसि कहिये स्याही कृषि कहिये खेती, विद्या कहिये पठनपाठन, अर वाणिज्य कहिये व्यापार, अर शिल्प कहिये सुवर्णकारादि अनेक धंधा ये षट्कर्म आजीविकाकी सिद्धिके अर्थ जगत्गुरु वतावते भये, अर गौ महिषी अश्व ऊंट आदि पशूनिका पालना अर सिंह आदि दुष्ट जीवनिका वर्जना या भांति कर्मभूमिकी रीति वताई तब सकल पुत्रनिने अर प्रजाके लोकनिने समस्त कलाके शास्त्र सीखे अर लोकनिने अनेक भांतिकी शिल्पविद्या सीखी अर जे शिल्पीजन हैं तिन नगर गांवनिमें स्थानक वनाये अर भरतक्षेत्रविषैं सर्वत्र खेट कर्वटादि सब थापे अर तीन वर्ण थापे जे पीड़ाथकी रक्षा करें ते क्षत्री अर जे वाणिज्यके योगथकी धन उपार्जें ते वैश्य कहाये अर शिल्प आदि जे अनेक धंधे तिनके प्रबंधतैं शूद्र कहाये तीन वर्ण कर्मभूमिके आदिविषैं आदीश्वरने रचे ॥ ३९ ॥ षट् कर्मनिकरि प्रजाकूं सुख अवस्था उपजाय, सकल दुख निवारण किये, प्रभुका किया जो युग तातैं प्रजाके लोग हर्षित होय कृतयुग कहते भये ॥ ४० ॥ वहुरि इंद्रसहित सकल देव आय ऋषभका राज्याभिषेक करि प्रजाकूं आनंदरूप करते भये॥ ४१ ॥ योधानितैं न जीता जाय तातैं अयोध्या, अर विनयवान जीवनिकरि भरी तातैं अयोध्या विनीत कहाई अर सुंदर मंदिरनिकरि मंडितपुरी तातैं साकेता हू कहिये सो पुरी अधिक शोभती भई, सर्व लोकनिके बांधव त्रिलोकीनाथने प्रजाकी रक्षाके अर्थ क्षत्रीनिके वंश थापे जे सकल क्षत्रीनिमें वडे ऋषभके बांधव ते इक्ष्वाकुवंशी कहाये ॥ ४३ ॥ अर कुरुजांगलदेशके अधिपति तिनकूं प्रभुने कुरुवंशी किये अर उग्र है आज्ञा जिनकी ऐसे उग्रदेशके अधिपति ते जिनपतिने उग्रवंशी किये अर प्रजाकूं न्यायकरि पालनेथकी प्रभुके थापे भोजवंशी भये ॥ ४४ ॥ तथा

है अर उन दोऊ राणीनिविषै है वैसी त्रैलोक्यविषैं नाहीं सो उनके सुखकी महिमा त्रैलोक्यविषैं कैसैं कथनमें आवै अपितु न आवै ।

भावार्थ—तीर्थेश्वरके तुल्य नर त्रिभुवनमें नाहीं अर तीर्थेश्वरकी राणी समान जगत्रयमें नारी नाहीं ॥ २० ॥ कैयक दिनमें राणी नंदा भरतनामा पुत्रकूं जनती भई, कैसे हैं भरत? समस्त भरतक्षेत्रकूं आनंदके कर्ता आदि चक्रवर्ती हैं, बहुरि ब्राह्मीनामा पुत्रीकूं जनती भई ॥ २१ ॥ अर दूजी राणी सुनंदा महा बलवंत बाहुबलीनामा पुत्रकूं जनती भई अर महा सुंदर सुंदरीनामा पुत्रीकूं जनती भई ॥ २२ ॥ अर फिर भरतकी माता नंदाके वृषभसेनादिक अठानवै पुत्र और होते भये, ऋषभके पुत्र सब चरमशरीरी जिनकूं अर शरीर धरना नाहीं याही देहतैं केवल पाय निर्वाण होंहिगे ॥ २३ ॥ एक दिन ऋषभदेव दोऊ पुत्रियनिकूं अक्षरविद्या अर गणितविद्या अर गंधर्वादिक अनेक कला सिखावते भये, दोऊ पुत्री महा बुद्धिमान हैं जगतगुरुकूं गुरु पाय वे दोऊ कन्या श्रुतरूप सागरके पार होती भईं ।

अथानंतर—सकल प्रजा नाभिराजाके साथ नाभिनंदनके समीप आई स्तुतिपूर्वक प्रणामकरि महा आर्तिके भरे सब लोक प्रभुसूं वीनती करते भये, हे नाथ! पहिली भोगभूमिविषै प्रजाके जीवनके कारण कल्पवृक्ष हुते तिनके गये पीछे स्वयमेव सांठे उपजे हुते जिनमेंतैं रस झरिवौ करै ॥ २७ ॥ सो तिहारे प्रतापकरि हम अब तक इक्षुरससूं उदर पूर्ण करे हैं हे नाथ! हम तिहारे पाले कल्पवृक्षनिकूं भूलि गये अब कालके प्रभावकरि वे इक्षु महारस देते मृदु हुते ते अति कठोर होय गये, पहिले उनमें स्वयमेव रस झरता सो अब छेदे भेदे भी रस नाहीं निकसै है ॥ २९ ॥ अर अब कैयक तृण जाति फलनिके भारकरि नम्रीभूत दीखै हैं परि हम न जानैं ये क्या हैं अर इनके खायवेकी विधि कहा है अर घट समान है थन जिनके ऐसी जे गाय भैंस तिनके थननितैं रस झरै है सो रस भक्ष्य है कि अभक्ष्य है सो कहो अर आगे सिंह व्याघ्र ल्याली इत्यादि नखवारे जीव पहिले हमारे गलेसूं

समूह सोहै, प्रभुका शरीर तो हेमाचल समान है अर चोटीके केशनिका समूह छत्रके आकार सोहै सोई इंद्रनील-मणीनिका समूह है ॥ ११ ॥ प्रभुका सुंदर ललाट अर सुंदर नासिका अर महा मनोहर कर्ण तिनकी उपमा वचनतैं अगोचर होती भई अर चढे धनुष समान दोऊ भौंह, तिनकी महिमा कथनमें न आवे चंद्रमा तो चांदनीकरि रात्रिविषै हर्षका कारण होय है अर दिवाकर अपनी दीप्तिकरि दिवसविषै हर्षका कारण होय है अर जिनचंद्रमाका मुख निशदिन तीन भुवनकूं आनंदका कारण होय है तातैं भगवानके मुखकी उपमा समान कोई पदार्थ नाहीं । शशिकी चंद्रिका निशाविषैं दिनकरकी दीप्ति दिन ही विषैं सोहू सर्वत्र नाहीं अल्प क्षेत्रविषैं है अर प्रभुकी दीप्ति अर कांति सर्वत्र विस्तर रही है अर सबकूं आनंदकारिणी है ॥ १३ ॥ अर कमलदल समान नाभिकुमारके नेत्र दोऊ समान अर कर्णांत पर्यंत अर हथेली अर पगथली अर अधर अशोकके पल्लव समान आरक्त तिनकी अरुणता प्रवालमें नाहीं विद्रुममें नाहीं किंदूरीमें नाहीं ॥ १४ ॥ अर जिनेश्वरके दांतनिकी पंक्ति महा उज्वल सोहती भई मानों शुद्ध मुक्ताफलनिके समूहकरि अर कुन्दपुष्प समान है द्युति (कांति) जाकी, कैसी है दांतनिकी पंक्ति जो कि अदंतुरा कहिये अधिक ऊंची नाहीं सब दांत समान हैं अर महा शोभाकूं धरै हैं ॥ १५ ॥ अर ऋषभकी देह धनुष ५०० ऊंची अर हेमाचलसमान पीतवर्ण नवसै व्यंजन अर एकसौ आठ लक्षण उनकरि मंडित ॥ १६ ॥ ऋषभके रूपकी पूर्ण शोभा कौन कहि सकै, सौ कोटि इंद्र कथन करैं तौहू लेशमात्र न कहि सकैं, ऋषभकासा रूप त्रैलोक्यमें औरका नाहीं ॥ १७ ॥ जब आप यौवनकूं प्राप्त भये तब पिताने दोनों राणी विवाहकी विधिकरि ऋषभदेवकूं परणाई जो उन समान त्रैलोक्यमें रूपवंती नाहीं महायौवनवंती एकका नाम नंदा दूजीका नाम सुनंदा वे दोनों गौरी श्यामा कल्पलता समान तिनकरि वह जगतका कल्पवृक्ष शोभता भया, कैसी हैं दोनों फूलनिकी गेंद समान हैं कुच जिनके जैसैं कल्पलता कल्पवृक्षसूं लिपटी सोहै तैसैं वे दोऊ महा भागवंती भगवानसूं बेढी सोहती भई ॥ १९ ॥ जैसी कांति दीप्ति संपदा कला प्रभुविषैं

अर प्रतिदिन वृद्धितैं जगतका आनंदरूप समुद्र वढता भया, आप जिननायक बालक्रीडारूप अमृतरसकूं पीवता हुवा हू निरंतर लोकनिकूं जाका दर्शन सुलभ है तोहू समस्त लोकनिके लोचननिकूं अति अनुराग वधावता भया लोक निरखते तृप्त न भए ॥ भावर्थ—यद्यपि वाल अवस्थाविषैं प्रभु बारंबार बाहर निकसै हैं अर समस्त लोक देखै हैं तोहू लोकनिकी लालसा न मिटै अर्थात् त्रिलोकीनाथकूं देखाही करैं ॥ ३ ॥ वे प्रभु नाभिकुमार इंद्रने राखे जो देव तिनके सहित मनोहर क्रीडा करैं। जो अवस्था आपकी सोई विक्रियाकरि देव करिलेंहिं मानों प्रभुके प्रतिबिंब ही हैं तिन सहित मनोहर क्रीडा करते भए भगवानके कोमल शय्या सिंहासन वस्त्र आभूषण सुगंधादिकका लेपन भोजन वाहन सव देवोपुनीत ही होता भया देवता ही नाना प्रकारकी सामग्री ल्यावैं ॥ ५ ॥ भक्तिकरि कुवेरकूं इंद्रने आज्ञा करी सो इंद्रकी आज्ञा प्रमाण कुवेर देव जिनवरकी निरंतर ही सेवा करता भया, प्रभुकी वयके अनुसार अर छै ऋतुके अनुसार नानाप्रकारकी वस्तु ल्यावैं जैसी वय है ताही प्रमाण वस्त्राभूपण भोजन विलेपनादि अर ऋतु ऋतुविषै जे वस्तु चाहिए ते सब आवै, जैसी सामग्री जिनवरकूं मौसर वैसी सुर नर खग नाग इत्यादि जगतके जीवनिकूं मौसर नाहीं। अपने जो निर्मल दिव्यकला गुण तिन सहित आप वृद्धिकूं प्राप्त भए मानों वे कला गुण जन्महीके साथी हैं, भगवान संपूर्ण यौवन करि पूर्ण चंद्र सोहते भए कहिवे मात्र पूर्ण चंद्रमाका दृष्टांत है अर कोटि चंद्र सूर्यादिक जिनेंद्रके चरणनखकी ज्योतिकूं न पावैं ॥७॥ जाके महाभुजा महाप्रवल वृत्त कहिए गोल अर गोडों तक लांवे अंगद कहिए भुजाशिखर आभरण ता करि संयुक्त महाउत्तंग त्रैलोक्येश्वरकी त्रैलोक्यलक्ष्मी ताके मिलापके अर्थ पूर्ण हैं ॥ ८ ॥ प्रभुका उरस्थल श्रीवत्सलक्षणकरि शोभता भया, कैसा है श्रीवत्सलक्षण जैसे त्रैलोक्यके राज्यकी लक्ष्मी आलिंगन कर सोहै जाका उरस्थलरूप मंदिर ताके स्तंभ समान महासुंदर चरण जंघा नितंब अर दोऊ गोडे तिनकी अत्यंत शोभा होती भई ॥ १० ॥ अर केशनिका समूह महाश्याम सुंदर कैसा सोहता भया जैसा हेमाचलके शिखरविषैं महानील इंद्रनीलमणिका

जिनराजकूं माताके समीप स्थापित कर इन्द्रपै आई फिर इन्द्राणी दोऊ माता पिताकूं प्रणामकरि पूजा करते भए अर अद्भुत वस्त्राभूषण माता पिताकूं पहिराए बहुरि माता पिताके निकट इंद्रताण्डव कहिए नृत्य ताका आरंभकरि नृत्य करता भया, देवमाया करि भुजानिके समूह बनाए तिन पर देवांगना नृत्य करती हुई सोहै हैं चिरकाल माता पिताके आगे आनन्द नाटक करि इन्द्र देवनि सहित अपने स्थानक गया ॥ ३३ ॥ कैसे हैं माता पिता नृत्यका देखनहारा अर संगीत शास्त्रका जाननहारा जिनके समान दूजा नाहीं अर इन्द्र समान नृत्यका कर्ता नाहीं ॥ ३४ ॥ साढे तीन कोटि अद्भुत रत्न प्रतिदिन त्रय संध्या पिताके घरविषैं पंद्रह मास वरषे गिरींद्र कहिए सुमेरु ताविषै सुरेन्द्रने जिनेंद्रका अभिषेक किया जो जिनेन्द्र जगत्का ईश्वर तिनका पुत्र तिनके भाग्य समान अन्यका भाग्य नाहीं, नाभिराजा अर मरुदेवी राणी दोऊ अति उदार ता समय अति आनंदकूं प्राप्त भए हर्षमें अति भीग गए, स्वाधीन भया है सुख जिनके सो जैसा सुमेरुविषैं उत्सव भया तैसा ही उत्सव जन्मकल्याणकका अयोध्याविषै करते भए सर्वलोक आनंदरूप भए यह वृषभेश्वरका गर्भावतार अर जन्माभिषेक कल्याणकका वर्णन जो भव्यजन भक्तिकरि सदा पढैं अर सुनैं सो जिनसूर्यके प्रकाशतैं मोहतिमिरकूं हर कल्याणकूं प्राप्त होंय। कल्याणके नाथका चरित्र जगत्कूं कल्याणकारी है ॥ ३७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ऋषभनाथ जन्माभिषेक वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

अथानंतर—इन्द्रने करके अंगुष्ठ विषै थाप्या जो अमृत ताहि पीवता हुवा जिनेश्वर माता पिताके नेत्रनिकूं आनन्द उपजावता हुवा वृद्धिकूं प्राप्त भया जैसे बालचन्द्र जो द्वितीयाका चन्द्र ताके दर्शनतैं अर प्रतिदिन चंद्रकी वृद्धितैं समुद्र बढ़ै है। कैसा है चन्द्र उज्ज्वल है किरण जाकी वैसे जिनेंद्ररूप बालचन्द्रके दर्शनतैं

तातैं जे कल्याणके अर्थी हैं तिनकूं तुम ही नमस्कार करवे योग्य हो अर तुमही स्तुति करवे योग्य हो अर हे नाथ! तुमही सकल यत्ननि करि आराधवे योग्य हो निरंतर स्मरण करवे योग्य हो,जगतके उपकारी हो तिहारे नमस्कारकरि काया कृतार्थ होय है अर तिहारे गुण स्तवनकरि प्राणीनिकी वाणी गुणवंत होय है अर तिहारे गुणनिके चिंतवनकरि प्राणीनिका मन शुद्ध होय है सब दुखःनितैं रहित गुणवंत होय है,हे देव! मृत्युरूप मल्लके दहनहारे तिहारे तांई नमस्कार होहु,हे जन्मजराके अन्त करणहारे आदि पुरुषोत्तम तिहारे ताईं नमस्कार होहु ॥२०॥ हे कर्मनिके नाशक जगत विभाकर तिहारे ताईं नमस्कार होहु,हे जिनेश्वर अनंत बोधके धारक तिहारे तांई नमस्कार होहु, अर हे अनंतदर्शी तिहारे तांईं नमस्कार होहु, हे अनंतवीर्यके धारक अनंत सुखके स्वामी तिहारे ताईं नमस्कार, हे त्रैलोक्यनाथ तिहारे ताईं नमस्कार। हे जगत बांधव तिहारे ताईं नमस्कार। हे लोकवीर! जगत विषै अद्वितीय योधा महाभट तिहारे ताईं नमस्कार। हे धर्मके विधाता त्रैलोक्यके ईश्वर तिहारे ताईं नमस्कार ॥ २६ ॥ हे जिनसूर्य तिहारे तांईं नमस्कार हे,सर्वव्यापी जिनराज तिहारे तांईं नमस्कार। हे जगतके रक्षक जिनेंद्र तिहारे ताईं नमस्कार ॥२७॥ या भांति सैकडानि स्तुति करि इन्द्रादिकदेव आदिपुरुषकी स्तुति करि बारंबार नमस्कारकरि यह प्रार्थना करते भए जो हे आदीश्वर! तुमविषै हमारी अचल भक्ति होहु या भांति समान अर प्रशंसायोग्य नाहीं बारंबार प्रभुकी भक्ति ही इंद्रादिक याचते भए ॥ २८ ॥ बहुरि इन्द देवनिके समूह सहित शीघ्र ही जिनेंद्रकूं लेयकरि गिरीन्द्रतैं चाले ॥ २९ ॥ अर रूपाचल जो वैताढ्य समान उज्ज्वल चलता जो पर्वत ऐसा यहां ऐरावत तापर चढाय जिनराजकूं ले चाले। कैसे हैं जिनराज सुवर्णके कमलनिकी राशि समान पीतवर्ण है शरीर जिनका ॥३०॥ सो प्रभुकूं अयोध्यापुरविषै लेगए। कैसी है अयोध्या काहू करि जीती न जाय बहुरि ध्वजानिकी पंक्तिकरि शोभित है अर वादित्रनिकी ध्वनि करि महा गंभीर है मानों यह अयोध्या देवनिकी सेना ही है देवनिकी सेनाहू काहू करि जीती न जाय अर ध्वजानिकी पंक्तिकर शोभित है अर वादित्रनिकी ध्वनिकरि पूर्ण है ॥ ३१ ॥ अयोध्याविषै जाकर इन्द्राणी

कहना कहा, अर भरतक्षेत्र हू जगतविषै आय गया तातैं जगत् जन भरतक्षेत्रके अधिपति हू कहैं तो कहो ॥१२॥ तुम विधाता स्वयंबुद्ध महा दुर्द्धर तपके उपदेश अज्ञानीनिकूं ज्ञानके दाता महा यशके कर्ता सर्व अतिशयनिके कर्ता सर्वोत्कृष्ट हो ॥ १३ ॥ तुम या पृथ्वीविषै आप मुनिव्रत धर निर्मल पात्रदान दिखावोगे. हे धीर ! धर्मध्यानका कर्ता जो श्रेयांस ताका कल्याण करोगे, कल्याणके अर्थ प्राणीनिकूं व्रतदानका उपदेश करोगे तुम कामरूप भुजंगको वश करवेकूं महामंत्र हो अर द्वेषरूप गजकी वश करनेकूं अंकुशरूप हो अर मोहरूप मेघ पटल उडायवेकूं पवनरूप हो ।

श्लोकः—प्रशस्तस्तमित ध्यान सुप्तमीन महाहृद । बंधानन्तर सन्धानघातीधन हुताशन ॥ १६॥

अर तुम प्रशस्त ध्यान कर महानिश्चल रूप हो जैसा महा समुद्र, सूते मच्छनि करि निर्व्याकुल होय है तैसे निर्व्याकुल शुक्लध्यानरूप अग्नि करि घातिया कर्मरूप ईंधनकूं भस्म करोगे ॥ १६ ॥ तुम स्नेह रहित केवलज्ञानरूप दीपक करि सकल पदार्थनिका उद्योत करणहारे या पृथ्वीविषै स्वतःस्वभाव मोक्षमार्गके उपदेशक होहुगे, या भरत क्षेत्रविषै अठारह कोडाकोडी सागरतैं धर्मका नामही निर्मूल भया है भोगभूमिविषै भोगनिकी ही मुख्यता हुती यति श्रावकका धर्म नाहीं हुता सो अब तुम कर्मभूमिकी आदि विषै या क्षेत्रमें धर्मका प्रकाश करोगे, तुम धर्मके स्रष्टा कहिए कर्ता हो ॥ १८ ॥ हे जगत गुरु ! भव्य जीवनिकूं तुम जगतके उपदेशक प्रगट भए हो, कैसे हैं भव्यजीव अनादिकालतैं दिग्मोह करि आंधी है बुद्धि जिनकी जैसे दिग्मोह कहिए दिशा भूल चाला चाहै पूर्वको अर गमन करै पश्चिमकी ओर, तैसे ये जीव अधर्मकूं धर्म जान सेवैं हैं तिहारे उपदेशकरि इनका भ्रम मिटेगा मार्ग पिछानेंगे ॥१९॥ हे नाथ ! तिहारे उपदेशकरि भव्यनिके समूह या पृथ्वीविषै अभ्युदय कहिए प्रतापरूप इंद्रनरेंद्रादिककी विभूतिके स्वामी होवेगें, अर कैयक महाभाग तद्भव मोक्षगामी तिहारे उपदेशतैं अध्यात्मविद्याकूं पायकरि अविनाशी लक्ष्मी करि युक्त होवेंगे ॥२०॥ तिहारा उपदेश प्रमाण नयके मार्गकरि जगतके प्राणी परम पदकूं पावेंगें

शक्ति तीजी उत्साहशक्ति सो ये तीन शक्तिहू नृपतिनिमें पूर्ण नाहीं किंचित मात्र होय है अर तिहारे अद्भुत अनंत शक्ति है पूर्ण तिहारासा राज्य काहूके नाहीं अर तुमसे राजा जगत्त्रयमें नाहीं।

श्लोकः—पौरुषादिकमानीतं त्वया नापिजगत्त्रयम्। कथमेकपदेश्चित्रं विधिमेवविधीयतां ॥ २ ॥

हे नाथ! कहां तुम्हारी कुमारता जाके समान त्रिभुवनमें सुकुमारता नाहीं अर कहां यह कठोरता जो यह गिरिकूं चूर्ण कर डारे काहूतैं जीती न जाय तातैं यह परस्पर विरुद्धार्थ शक्ति तुमहीविषै देखिये है अन्यत्र नाहीं ॥ ३ ॥ अर तिहारारूप एक हजार आठ लक्षण व्यंजनानिकरि युक्त महासुंदर सोहै है ऐसा रूप सुर असुरनिकूं दुर्लभ है, हे देव तुम्हारा विग्रह कहिये शरीर सो विग्रह विन ही सकल विश्वकूं नम्रीभूत करता भया तिहारा शरीर रूपकी सुंदरताकरि पूर्ण अनेक अतिशयकूं धरै महाप्रबल या लोकविषै प्रथम कहिये मुख्य जा समान जगमें नाहीं अर चरम कहिये हद्द जाके परे और नाहीं ॥ ५ ॥ जब तुम माता मरुदेवीके गर्भविषै आये तो पहिले ही छै महीनातैं हिरण्य कहिये रत्न स्वर्णकी वर्षा होती भई तातैं तुमकूं गीर्वाण कहिये देव हिरण्यगर्भ ऐसा नाम कर गावै हैं ॥ ६ ॥ अर तुम आप ही अपने अतिशय करि तीन ज्ञान सहित उपजे या भवके पहिले तीजे भवविषै षोडशकारण भावना भाय तीर्थंश्वरपद उपार्ज्या अर सर्वार्थसिद्धिविषै अहमिंद्र होय आदीश्वर भये तातैं तुमकूं सुरनर स्वयंभू नाम करि गावैं हैं, तुम स्वयंसिद्ध अद्भुत स्वयंभू हो अर तुम नाना प्रकारकी धर्मरीतिके कर्ता तातैं तिहारा नाम सत्यार्थ विधाता बुधजन कहै हैं अर तुम अपूर्व कहिये आश्चर्यकारी राजा, ऐसा राजा दूजा नाहीं है, हे प्रभु! सकल प्रजाके पति अर सकलकी सर्वथा प्रकार रक्षा करते प्रकट भये हो तातैं तुमको पंडित प्रजापति कहते हैं अर तिहारे राजविषै प्रजा प्रीति करि इक्षुरसकूं आस्वादती तृप्त होयगी तातैं तुम इक्ष्वाकुवंशी कहावोगे अर तुम सब पुराणनिकी आदि महा महिमाके धारक महंत तातैं तुमकूं पुरुष देव कहिये तुम अनंत

स्वभाव जिनका अर वे नाभिनंदन आपही नंदनबनरूप भासते भये जगतकूं आनंद उपजावनहारे अर वेही निर्मल निःकपट मनके धरणहारे आपही सौमनस वनरूप भासते भये। अर वे जगतगुरु अखंड यशकरि आपही पांडुक-बनरूप राजते भये ॥ ९२ ॥ अर वे तीन लोकके एक तिलक तिलककरि मंडित सोहते भये आप तो सदा शोभा रूपही हैं जगत्के आभूषणही हैं उनको आभूषण कहा शोभित करैं सब आभूषण उनके अंगके संगकरि सोहते भये ॥ ९३ ॥ अर वे भगवान् निरंजन सकल अंजनसे रहित उनके अंजन कहा परंतु इंद्राणीका नियोग है सो जन्म कल्याणक करते समय जिनपतिके लोचन विषै अंजन करै सोई इंद्राणीने अंजन किया सो अति सोहता भया, कैसे हैं प्रभु जीती है चंद्र सूर्यादिककी ज्योति जिनने प्रभुकीसी दीप्ति अर प्रभुकीसी कांति प्रभुहीमें है ॥ ९४ ॥ शची इंद्राणी अर श्रीदेवी अर कीर्ति लक्ष्मी इत्यादि सुरांगना तिनि अपने हस्तनिकरि जगत्मंडनके मंडन किये सो जिनेंद्र इंद्रादिक देवोंका मन हरता भया बहुरि इंद्रादिक देव पुराणपुरुषका ऋषभ नाम धरते भये, कैसे हैं पुराणपुरुष अनंत हैं नाम जिनके अर युगमें आदि कहिये मुख्य हैं उनकरि 'ऋषभ' नाम धर कर स्तोत्र करवेकूं उद्यमी भये ॥९६॥ इंद्रादिक स्तुति करै हैं हे वृषभ ! तुमने मति श्रुति अवधिज्ञानरूप श्रेष्ठ नेत्रकरि मंडित या भरतक्षेत्रविषै जन्म धर तीन लोकमें उद्योत किया, तुम अद्भुत तीर्थंकर नामकर्म करि मनुष्यभवकूं सन्मुख होय जगत्कूं कृतार्थ किया जिनकरि यह जगत् सो है तिनका यह जन्म कल्याणकका आश्चर्य कहा ? ऊंचा है शिखर जाका जगतविषै महागुरु कहिये गरिष्ठ ऐसा सुमेरुगिरि तुम अपने चरणनिके नीचे धर्या तातैं तुम गुरु-निके महा गुरु ईश्वर, वाल्यावस्थाविषै बाल चेष्टा रहित गुणनिकर अति वृद्ध जगत्के बड़े सबके पितामह सबके स्वामी हैं ॥ ९९ ॥ यह सुरगिरि अपने शिरपर तिहारे चरणनिकूं धारै है, कैसे है गिरिनिके शिखर सिरारूप मुकुटकरि ऊंचे हैं अर सुरगिरि अपने चरणनिकरि सर्व भूमि स्पर्शैं हैं पृथ्वी जिनके चरणनिमें लग रही है सो तिहारे चरणनिकूं शिर पर धारते सोहे है ॥ १०० ॥ राजानिमें तीन शक्ति होय है एक मन्त्र शक्ति दूजी प्रभाव-

वान्का वक्षस्थल मुक्ताफलनिके मनोहर हारनिकर कैसा शोभता भया जैसे पर्वतका तट जलके नीझरने करि सोहै अर देदीप्यमान रत्नमय प्रालंवसूत्र करि प्रभु कैसे सोहते भये जैसा कल्पवेलतैं वेढ्या कल्पवृक्ष ही सोहै, प्रालंवसूत्र नाम यज्ञोपवीतका है सो यहां कोई प्रश्न करै जो यज्ञोपवीतका ग्रहण अष्टवर्ष उपरांत है ताका उत्तर सूत्रमई यज्ञोपवीत श्रावकके व्रत संबंधी अष्टवर्ष उपरांत ही है यह यज्ञोपवीत रत्नमई आभरणरूप है ॥ ८१ ॥ अर जगदीशकी कटिमें मेखला कैसी सोहती भई जैसी पर्वतकी तलहटी विजुरीके उद्योत करि युक्त जो मेघपटल ताकरि सोहै है। अर जगत्पतिके शब्द करते चरण मणिमई भूषणनि करि मंडित ऐसे सोहते भये मानों दोऊ पांव परस्पर आलाप ही करै हैं ॥८५॥ अर जगत्के स्वामीकी अंगुरी रत्न जडित मुद्रकानि करि ऐसी सोहती भई मानों ये मुद्रिका रक्षमुद्रिका ही हैं। भावार्थ—प्रभुकीसी रूप लावण्यता त्रैलोक्यविषै नाहीं सो मति काहूकी दीठि लागै यह जान करि सुरपतिने रक्षक मुद्रिका करी है, प्रभु तो जगतके रक्षक हैं उनकी रक्षा कौन करै परंतु यह इंद्रकी भक्ति है अर केसर अर चंदनके पंक कर लिप्त किये त्रैलोक्यनाथके अंग सो कैसे सोहते भये जैसा स्फटिकमणिका पर्वत संध्याके बादलनिके संसर्गतैं सोहै ॥ ८७ ॥ अर हंसनिकी पंक्ति समान उज्ज्वल दुपट्टा प्रभुके कांधे डारचा सो शुभ आकार कैसा सोहता भया जैसा निर्मल शरदका मेघ सोहै अर संतान जातिके कल्पवृक्ष अर पारिजातके कल्पवृक्ष देवलोकके वृक्षनिकरि उपजे नाना भांतिके पुष्प अर जलकरि उपजे कमलादिक अर स्थल कर उपजे स्थलकमलादि नानाप्रकारके पुष्प महा सुगंध महा मनोहर ॥ ८९ ॥ अर भद्रशालवनके अर नंदनवनके अर सौमनसवनके अर पांडुकवनके उपजे नाना प्रकारके नाना वर्णके जे अनेक पुष्प तिनकी माला शची आदि देवीनिने गूंथी, वे देवी मालाके गूंथवेविषै प्रवीण हैं सो उनकी गूंथी मालानिकी अतिसुंदरताकरि मंडित ऋषभदेव अति सोहते भये, कैसे हैं आदीश्वर सीसविषै जो माला ताके अग्रभागकरि सुमेरुके मंडन कहिये आभरण ही हैं ॥९१॥ वे भव्यवत्सल आपही भद्रशालरूप सोहते भए, भद्र कहिये कल्याणकारी है

कर अत्यंत परोक्ष है विद्याधरनिका गमन नाहीं अढाई द्वीपविषै भूचरका संचार है। मानुषोत्तर परे मनुष्य नाहीं जाय सकै हैं सो जिनपतिके जन्माभिषेकविषै देवनि सुमेरुविषै पयोदधि प्रगट किया ॥ ६९ ॥ ऐसा स्नान भगवान्हीका होय जहां स्नानके करणहारे आप अर स्नानका आसन सुमेरु अर स्नानकी कूंडी क्षीरसागर अर स्नान करावनहारे इंद्रादिक देव ऐसी सामग्री औरनिकूं कहां होय ॥ ७० ॥ इंद्र अर अनेक सामानिक लोकपालादिक देव अनुक्रम करि भगवानका अभिषेक करते भए ॥ ७१ ॥ अत्यंत सुकुमार प्रभुका शरीर ताहि शची आदि सुरांगना पल्लवहूतैं अति कोमल जे कर तिनकरि अंगोछती भई अर दिव्य सुगंध जापर भ्रमर गुंजार करै हैं ताका लेप करतीं आदीश्वरके अत्यंत बालअवस्थाका शरीर ताका स्पर्श करती अद्भुत सुखकूं प्राप्त भई ऐसा सुख अरके स्पर्शतैं नाहीं, जैसा कोमल तनु कमलनयन भगवानका है तैसा तीन लोकमें काहूका नाहीं, बहुरि गंधोदकके कलशनिकरि भगवान्का अभिषेक भया सुगंध जलकरि भरे कलश जगत्के शिरोमणिके शिर पर ऐसे बर्षे जैसैं गिरि पर वर्षा होवे॥७४॥जिनेश्वरका समचतुरसंस्थान अर वज्रवृषभनाराच संहनन महाप्रबल ॥७५॥ अछेद्य अभेद्य है काया जाकी सो दोऊ कान वज्रवत् अखंड हैं तथापि नियोगमात्र वज्रसूचीके अग्रभागतैं छिद्र प्रगट करि काननिमें कुण्डल पहराये, सो कुण्डल काननिके प्रभावकरि ऐसे सोहते भए मानों जंबूद्वीपके दोऊ भानु ही महासेवक स्वामीकी सेवाके अर्थ आये हैं ॥ ७७ ॥ अर चूडा कहिये प्रभुकी चोटी अति स्निग्ध अर अति श्याम ताविषै पद्मरागमणिका आभूषण पहराया सो कैसा सोहता भया जैसा इन्द्रनीलमणिमें पद्मरागमणि सोहै ॥७८॥ अर प्रभुके ललाटपट्टविषै रचा श्वेत चंदनका तिलक कैसा शोभता भया जैसे अष्टमीके चंद्रमाकी रेखा संध्या समय पीत बादलनिके समूह विषै सोहै है। प्रभुके भुज महा मृदु सो रत्नमई केयूर कहिये भुजाशिखराभरण (वाजूबंद) तिनकर मंडित कैसे शोभते भए जैसे बाल भुजंग रत्नावाली फणनिकरि शोभै है अर हाथनिमें कडे अद्भुत मणीनिकरि जडे सो कैसे शोभते भये मानों रत्नाचलके तट ही देवनिकरि मंडित सोहै हैं ॥ ८१ ॥ अर भग-

भए, इनका भेद ऊपरके श्लोकनिमें लिखा है अर जन्माभिषेक समय अप्सरानिका शुभ महा रमणीक नृत्य होता भया वह नृत्य हावभाव विलास विभ्रमादि करि अति सुंदर है शृंगारादि रसनिकरि अद्भुत है रचना जिनकी अर अंग हार कहिए अंगका मोडना ता करि किये हैं अनेक कोतूहल जहां ॥ ६० ॥ या भांति देवनिका समूह महा आनंदरूप प्रवर्त्या अर देवनिके शब्द समूह करि सुमेरुकी गुफा गुंजाररूप भई ॥ ६१ ॥ जब सौधर्म इंद्रने अभिषेकके अर्थि आरम्भ किया तब हाथमें अष्ट मंगलद्रव्य लिये महा मनोहर देवांगना खड़ी हैं अर कंचनके कलशनि सहित देवनिके समूह सर्व दिशातैं क्षीरसागरकूं आये सो देवनिके समूह करि क्षीरसागर सोहता भया। कैसे हैं कंचनके कलश महावेग कहिये महाशीघ्रता करि निकसै है प्रवाह जिनका अर महा घने कहिए अति पुष्ट हैं अर क्षीरसागरके जलतैं भरे स्वर्णके कलश देवनिके हाथनिहाथ करि आवते कैसे शोभते भये जैसे चांद अर सूर्य सुमेरुकी ओर आवते सोहैं।

भावार्थ—कनक कलश तो सूर्य समान भए अर क्षीरोदधिका जल चंद्रमा समान भासता भया बहुरि हजारों देव क्षीरसागरके जल करि भरे कलशनि करि जिनेंद्रका जन्माभिषेक करते भये, कैसे हैं कलश ढलती बेर सुंदर है शब्द जिनका ॥ ६५ ॥ इंद्रादिक देवनिके हाथ कर कुम्भरूप महा मेघ क्षीरोदधिके जलकरि भरे तत्कालका जाया जो जिनराज महागिर ताके शिर पर वर्षते जिनरूप गिरकूं खेदका कारण न भये ॥ ६६ ॥ क्षीरसागरके जलका प्रवाह सुमेरु पर विस्तरा ता समय अनेक देव देवाधिदेवके मुखकी उच्छ्वासकी वायुतैं बारम्बार जलके समूहविषै मक्षकानिके समूहकी न्याईं जाय पडें। भावार्थ—भगवान्‌के मुखकी वायु अति प्रवल ताकरि देवहू चलायमान होय जांय अर काऊ ही जीवके भगवान्‌के कल्याणविषै अकल्याण नाहीं सबहीकूं सुख उपजै है॥६७॥ देवनिने सुमेरुगिरि अनेक बार देख्या है सो सदा रत्नमई पीतवर्ण देख्या है सो सुमेरु जिनराजके जन्मोत्सवविषै दुग्धोदधिके समूहकरि धवल रूप देख्या है, क्षीरसागर सुमेरुतैं अति दूर है, अर विद्याधरनिके समूह

वन वापी तिनकरि शोभित है अर ता पुरविषैं रत्नमई बड़े बड़े मंदिर हैं इंद्रनीलमणिमई महा श्याम अर बज्र कहिये हीरा वैडूर्यमणि तिनकी है भीति जाविषैं अर पद्मराग मणीनिकी प्रभाकरि पूर्ण सोहै है ॥४०॥ सुर असुरनिके मन पुरुषोत्तमके पुरकी विभूति देख स्वर्गपातालकी लक्ष्मीकी अभिलाषातैं रहित भये, ऐसी विभूति जगत्रयमें नाहीं। अयोध्याका नाम साकेतपुर भी कहै हैं साकेतका अर्थ क्या जा नगरके विषैं साक कहिये एक साथ सबही देव इत कहिए प्राप्त भए तातैं साकेतपुर कहिये सो पुर कीर्तिकरि भर्या है ॥ ५० ॥ अथानंतर— सब देवनि सहित पुरंदर कहिए इंद्र अयोध्यापुरीकी तीन प्रदक्षिणा दे नगरमें प्रवेश करते भए, नाभि राजाके आंगनमें जायकरि भगवानके लायवेके अर्थ शचीकूं इंद्रने आज्ञा करी, कैसे हैं भगवान् महा पवित्र है शरीर जिनका ॥ ५१ ॥ इंद्रकी आज्ञा पाय इंद्राणी प्रसूतिगृहविषैं गई जननीकूं सुखनिद्रा अनायकरि अर मायामई बालक माताके निकट मेले ॥ ५२ ॥ भगवान्कूं नमस्कारकरि उठाय लाई बाहर लाय इंद्रके हाथ सौंपे सो सुरपति श्रीपतिके रूपका अतिशय हजार नेत्रनिकरि निरखता संता तृप्त न भया, भगवान्कूं अपनी गोदमें लेकरि ऐरावत गजपर आरूढ भया सो अपनी गोदमें लेकर आदीश्वरकूं सुरेश्वर कैसा सोहता भया जैसे अपने शिखरपर सूर्यकूं धरै निषधाचल सोहै ॥ ५४ ॥ देवनिके समूह सहित देवनिके नायककूं सुमेरुके शिखर ले गए, कैसे हैं जिनपति छत्रकी छायाके पटकरि शोभित हैं सीस जिनका अर चमरनिके समूह जिनपर ढुरे हैं गिरींद्रनिकी तीन प्रदक्षिणा दे सुरेंद्र पांडुकशिलाविषै जिनेंद्रकूं सिंहासन पर पधरावता भया, सब देवनिका चक्र कहिये समूह ताकरि संयुक्त जो सुरपति जिनपतिके अभिषेकका आरंभ करावता भया। ता समय देवनिने अनेक वादित्र बजाए, गाजता समुद्र समान गंभीर भेरी ढोल मादल मृदंग इत्यादि वादित्र देवनि बजाए अर शंख पूरे अर स्त्रीनि सहित किन्नर गंधर्व तुम्बार नारद इत्यादि देवनिकी जाति हैं सो सुंदर गान करते भए तिनके गीत काननिकूं मनोहर नानाप्रकारके रसकरि पूर्ण हैं तत १ वितत २ घन ३ सुषिर ४ ये चार प्रकार वादित्र मनके हरणहारे देव बजावते

निकायके देव चाले ॥ ३४ ॥ अर असुरकुमारादिक दश प्रकार भवनवासी उनकी अनुक्रमकरि सप्त सप्त सेना तिनकरि व्याप्त भया आकाश अत्यंत सोहता भया ॥ ३५ ॥ कैयक देव विमाननिमें बैठे हैं कैयक रथनिमें आरूढ हैं कैयक वृषभनिपर चढे हैं कैयक रोझनिपर कैयक अश्वनिपर कैयक अष्टापदनिपर कैयक शार्दूलनिपर कैयक मच्छनिपर कैयक सूरनिपर कैयक आरणे भैंसनिपर कैयक सिंहनिपर कैयक नानाप्रकारके गजनिपर कैयक चमरी मृगनिपर कैयक हिरणनिपर कैयक मींढ़निपर कैयक गरुडनिपर कैयक कोकिलानिपर, कैयक क्रौंचनिपर कयक मोरनिपर कैयक कूकडनिपर कैयक कबूतरनिपर कैयक हंसनिपर कैयक कारंडनिपर, कैयक सारसनिपर ॥ ३९ ॥ कैयक चक्रवाकनिपर कैयक बगुलनिपर इत्यादि अनेक वाहननिपर चढे चले ॥ ४० ॥ ये चतुरनिकायके देव श्वेत छत्रनिकरि अर ध्वजानिकरि अर नानाप्रकारके फेन समान उज्ज्वल चमरनिकरि सकल आकाशकूं व्याप्त करते गमन करते भये ॥ ४१ ॥ यह देवनिका आगमन अद्भुत गीत नृत्य वादित्रनिकरि संयुक्त शोभता भया भेरी शंख वादित्र इत्यादि नाना प्रकारके जे दुंदुभि तिनकरि पूरित किया है लोक जिनने ॥४२॥ ता समय सव गजनिकी सेनाका अधिपति ऐरावत तापर चढ्या सौधर्म इंद्र अति सोहता भया, कैसा है ऐरावत विक्रियाकरि विस्ताररूप किया है शरीर जानै ॥४३॥ अर आकाश समान है निर्मल उतंग है अंग जाका सो गज मानूं आकाश समान सोहै है कानोंपर श्वेत चमर सोई है शशिमंडल जाविषैं अर गलेकी जो सांकल सोई है नक्षत्रमाला जाविषैं, अर श्वेत ध्वजानिका जो समूह सोई है हंसनकी पंक्ति जाविषैं ॥ ४४ ॥

श्लोकः—सदंतांतरविस्तारी करास्फारितपुष्करः । प्रोद्वंशांकुररुमध्योधन् नागेंद्रइवभूधरः ॥

पहिले स्वर्गका इंद्र सकल इंद्रनिके समूहकरि गजेंद्र पर चढ्या देवनिकरि मण्डित भगवान्का पवित्र जो जन्मक्षेत्र तहां जाय प्राप्त भया सुर अर असुरनिकी पंक्ति आकाशतैं उतरती हुई, कुवेरकरि करी सुरपुर समान अद्भुत जो अयोध्यापुरी ताहि देखते भए, कैसी है नगरी कोट खाई परकोटा तिनकरि वेष्टित महा मनोहर है अर बन उप-

मेरा अचल सिंहासन ताहि कौन कंपायवेकूं समर्थ है देव दानवनिका समूह महा पराक्रमी जो कोई मोसूं विमुख होय ताहि मैं दंड देनेकूं समर्थ ॥ २५ ॥ ऐसा कौन जो मेरा पराभव करै जो अतिबाल अति मुग्ध स्वेच्छाचारी अज्ञानी होय सो निशंक निर्भय भया विना विचारे करै सो ऐसा लोकमें कोई नाहीं जो मेरी अवज्ञा करै सो मेरा यह सिंहासन किनने कंपाया अर मेरा मुकुट किनने नवाया, तीन भवनविषैं तीर्थंकर देव टारि ऐसा प्रबल पराक्रम औरका न देखूं हूं ऐसा जानकरि अवधि विचारी ॥ २६ ॥ तब दैदीप्यमान अवधिज्ञान नेत्रकरि जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रविषैं आदि तीर्थंकर उपजे जाने ॥ २७ ॥ तब आसनतैं उतरि सात पैंड जायकरि हाथ जोड नमस्कार किया अर हे जिनेश ! तुम जयवंत होवहु ऐसा शब्द किया ॥ २८ ॥ बहुरि जाय सिंहासन पर बैठि विचार करते मात्रही अपने समीप आया जो सेनापति ताहि आज्ञा करता भया अर्थात् विचार करते ही प्रमाण तत्काल इंद्रकूं नमस्कारकरि सेनापति जो आया हुता ताहि सुरपति कहता भया इस अवसर्पिणीकालविषैं भरतक्षेत्रविषैं आदि जिन उपजे तातैं सब देवनिसहित मोहि भरतक्षेत्रमें जाना है इसलिये मेरी आज्ञाप्रमाण तुम सर्व देवनिकूं खबर करहु ॥ ३० ॥ तब स्वामीके आदेशकरि सेनापतिने सबकूं आज्ञा करी सौधर्म स्वर्गके निवासी सब ही देव इंद्रके लार चाले अर अच्युतस्वर्ग पर्यंत सोलह स्वर्गनिके सब ही देव अपने अपने इंद्रनिकी लार चाले सोलह स्वर्गके बारह इंद्र अर बारह प्रत्येंद्र सबही बडे विवेकी विना सिखाये स्वयमेव है बोध जिनके सो जिनेश्वरका जन्म कल्याणक करनेकूं चले, अर ज्योतिषी भवनवासी व्यंतर सब ही देव अपने अपने इंद्रके साथ चले ॥ ३२ ॥ गज अश्व रथ इनके समूह अर पयादेनिके समूह अर वृषभ गंधर्व नृत्यकारिणी ये सप्त देवनिकी सेना ताकरि आकाश व्याप्त होय गया ॥ ३३ ॥ देवनिके गज अश्व वृषभ महिषादिक तिर्यंच नाहीं देव ही विक्रियाकरि नानारूप धरै हैं कैयक देव महिषनि पर चढे हैं कैयक देव गैंडानि पर चढे हैं कैयक पालकीनिपर कैयक तुरंगनिपर कैयक गजनिपर कैयक ऊंटनिपर कैयक मगरमच्छनिपर कैयक हंसनिपर इत्यादिक अनेक बाहननिपर चढे चतुर-

लिये खडी हैं, अति चपल काननिके जे कुंडल तिनके प्रकाशकरि दैदीप्यमान हैं कपोल जिनके ॥ ७ ॥ अर स्वच्छता, प्रतिधान्या, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीमती, कीर्तिमती, वसुंधरा, चित्रा, ये आठ देवी विचित्र आभरणकी धरणहारी हाथमें दर्पण लिये खडी हैं ॥ ९ ॥ इला, सुरा, पृथ्वी, पद्मावती, कांचना, सीता, नवमिका, ह्रीकांता (भद्रिका) ये आठ हर्षकी भरी उत्कृष्ट अंगकी प्रभाकरि दिशानिकूं उद्योत करणहारी प्रभुका जन्मोत्सव देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भई, हाथविषैं उज्वल छत्रनिकूं धरैं खडी हैं ॥ ११ ॥ श्री, ह्री, धृति, वारुणी, पुंडरीकिणी, अलंवुसा, अंवुजा, मित्रकेशी, ये आठ दिक्कुमारियें कमलवदनी दैदीप्यमान हैं मणिमई कुण्डल जिनके वे हाथविषैं चमर लिये खडी हैं, कैसे हैं चमर स्वर्णकी है डंडी जिनकी ॥ १२ ॥ अर चित्रा, कनकचित्रा, सूत्रामणि, त्रिसरा, ये चार देवी विजुली समान हैं प्रभा जिनकी सो आंगनविषैं उद्योत करती भईं, ये विद्युत्कुमारी हैं ॥१३॥ अर विजया, वैजयन्ती, जयन्ती अपराजिता ये चार विद्युतकुमारी, अर रुचिका, रुचिकोज्वला, रुचिकाभा, रुचकप्रभा, ये चार ते आठ विद्युतकुमारी देवी जातकर्मविषै प्रवीण हैं सबही तीर्थंकरनिके जन्मविषे गीत गानादि करि उत्सव करैं जासमय जिनेंद्रका जन्म भया ता समय पहिले ग्रैवेयक लेकरि सर्वार्थसिद्धि तक तेईससौ विमाननिके अहमिंद्र अवधिज्ञानकरि जिनराजका जन्म जानि अपने अपने सिंहासनतैं उतरि सात पैंड जाय प्रणाम करते भए अर अपने अपने स्थानक तिष्ठते ही तीर्थेश्वरका ध्यान करते भये, निज स्थानक छोडकरि अहमिंद्रनिका अर स्थानकमें गमन नाहीं, चतुरनिकायके देवनिके मुकुट नय गये अर जिनराजके जन्मके प्रभावतैं सव इंद्रनिके आसन चलायमान भये अर भवनवासी देवनिके लोकनिविषे अकस्मात् शंखध्वनि भई अर व्यंतरनिके भेरी नाद भया अर ज्योतिषीनिके सिंहनाद भया अर स्वर्गवासीनिके घंटाका शब्द भया, ये शब्द अकस्मात् भये। अर तीन लोकविषैं सव जीवनिके सुख उपज्या ॥ १२१ ॥ आसन कंपायमान होनेकर पहिले स्वर्गका सौधर्म इंद्र अति आश्चर्यकूं प्राप्त भई है बुद्धि जाकी सो चित्तमें चितवता भया कि मैं इंद्र पुरंदर शक्र ऐसा कौन जो मुझे न गिण

दिक्कुमारी देवी सेवा करै हैं सो यह वार्ता तो जगतविषैं प्रसिद्ध है सो जिनराजका जन्म इनके होवेगा सो आज अपना मनोरथ सिद्ध भया। हे प्रिये! सर्व कल्याणका भाजन जो तेरा पुत्र ताके जन्मकरि तू सर्वथा जगतकूं आनंदकी कर्ता होवेगी ॥ ९५ ॥ याभांति स्वप्नका फल सुनकरि अपने गर्भविषैं जिनेश्वरकूं उपज्या जान मरुदेवी दीप्ति अर कांतिकूं धरती संती अति हर्षकूं प्राप्त भई ॥ ९६ ॥ तीजेकालमें चौरासीलाख पूर्व अर तीन वर्ष अर साढे आठ महीना जब बाकी रहे तब आप सर्वार्थसिद्धितैं चयकरि माताके गर्भविषैं आए, अषाढबदी दोयज उत्तराषाढ नक्षत्रविषैं जननी जगतपूज्यकूं गर्भमें धारती भई ॥ ९७ ॥ अनुक्रमतैं गर्भके बढते संते माताके शरीरकी कांति बढी। अर उदर न बध्या त्रिवलीका भंग न भया ॥ ९८ ॥ वह माता तीन जगतके गुरुकूं गर्भ विषै धारती अर गुरुताके अतिशयकूं धारती हुई देहविषै लावण्यता भावकूं धारती भई यह अद्भुत है। भावार्थ— तीन लोकमें अधिक भार जाका ऐसे भगवंतकूं गर्भविषैं धारती लाघवताके भावकूं देहविषैं धारती भई यह अद्भुत बात है बडा आश्चर्य वे प्रभु जगतके सूर्य माताके गर्भविषैं ऐसे तिष्ठे जैसैं जलविषैं सूर्यका प्रतिबिंब आय प्राप्त होय, जो कदाचित माताकूं गर्भका खेद होय ऐसा जानि जगदीश्वर अलिप्त विराजे ॥ १०० ॥ दिक्कुमारीनिकरि सोध्या जो माताका गर्भ ताविषैं मति श्रुति अवधि जे तीनज्ञान तिनकरि विश्वकूं विलोकते त्रिलोकनाथ सुखतैं विराजे छह महीना तो पहिले रत्न वर्षे अर नौ महीने गर्भमें तिष्ठे तब बर्षे या भांति पंद्रह मास पिताके घर रत्नवर्षा भई नव महीने पूर्ण भये तब उत्तराषाढ नक्षत्रविषैं माताके गर्भमेंतैं जिनराजका जन्म भया, जैसैं मेघके उदयतैं निकस्या सूर्य सोहै वैसे जननीके गर्भतैं निकसे जिनराज शोभते भये, भगवान् तो तीन भुवनके सूर्य हैं अर माता पूर्वदिशा समान पवित्र है अर माताका गर्भ स्फटिकमणि समान निर्मल है जब जिनवरका जन्म भया तब देवी दिक्कुमारी जातकर्मके कर्तव्यविषैं शीघ्रही प्रवर्ती ॥ ५ ॥ विजया वैजयंती, जयंती, अपराजिता, नंदा, नंदोत्तरा, आनंदा, नंदवर्द्धना, ये आठों देवी दिक्कुमारी झारी हाथमें

सोहै वैसे पूर्वदिशा सोहै है अर अब दीर्घका कहिए सरोवरी तिनविषैं चकवी दीर्घनिशा पूर्णकरि इन कहिये सूर्य ताके दर्शनकरि हर्षित भई सुंदर शब्द करै है ॥ ८४ ॥ अर कलहंसनिका कुल कहिए समूह सो मिष्ट शब्द करता संता तोहि जगावै है तिहारे दर्शनकी है अभिलाषा जाके मानों तिहारे दर्शनकरि तिहारे चरणनिकी चाल सीख्या चाहै है, अर ये वृक्ष मंद पवनकरि हालते संते प्रगटे हैं मूर्ति जिनकी सो मानों तुमकूं अपने नृत्यका आरंभ दिखावै हैं अर ये दशोंदिशा अब निर्मल होयगई हैं सो मानों तिहारी निर्मल चेष्टा ही इनविषैं विस्तरी है सो हे मात! अब प्रभात भया तुम शय्या तजहु याभांति वंदीजननिने माताकी स्तुति करी तब माता सेजकूं तजती भई जैसे हंसिनी नदीनके पुलनिकूं तजै। कैसा है नदीका पुल जलकी तरंगनिका है समूह जहां अर कैसी है सेज पुष्परूप तरंगनिका है समूह जहां वह माता उज्वलवस्त्र पहिरकरि उज्वलमहलतैं निकसी थकी कैसी सोहती भई जैसी शरदऋतुके वादलनितैं निकसी चंद्रकला सोहै। है कैसी है चंद्रकला अर कैसी है माता धौत कहिए उज्वल है, छाया कहिए कांति जाकी ॥ ८९ ॥ श्रीदेवी आदि दिक्कुमारीनिने कीये हैं शृंगार जाके अर पहिरे हैं नवीन आभूषण जानैं अर गर्भके मध्य विराजे हैं आदि पुरुष जाके ऐसी वह माता नाभिराजाके निकट गई जैसैं मेघमाला पर्वतके निकट जाय। भूभृत नाम राजाका है अर भूभृत नाम पर्वतका है, कैसी है माता धनश्री कहिए अत्यंत है शोभा जाकी अर धनश्री नाम मेघमालाकाहू है ॥ ९० ॥ राजा सिंहासनपर विराजे हुते तिनके तांई प्रणामकरि तिनके निकट बैठी राजाने वहुत विनय किया एक सिंहासनपर दोऊ विराजे, राणी करकमल जोडि लक्ष्मीकी न्याईं लक्ष्मीपतितैं सोलह स्वप्न देखे हुते तिनका वृत्तांत कहती भई ॥ ९१ ॥ वह जगतका पिता राजा नाभि स्वप्ननिका वृत्तांत चित्तविषैं अवधारकरि कहता भया। हे प्राणप्रिये! तीन लोकका नाथ आदि तीर्थंकर तेरे गर्भविषैं आय प्राप्त भया, इन स्वप्ननिका फल दूर नाहीं नजदीक ही है अर फल अल्प नाहीं महाफल है तातैं तू मेरे वचनकी प्रतीतिकरि तेरे गर्भविषैं भगवान हिरण्यगर्भ आए, छै महीनेतक रत्ननिकी वर्षा होती भई। अर

स्वामिनी आनन्दरूप शुभ स्वप्नके दर्शनकूं प्राप्त भई सो मैं कृतार्थ भई सेवकका यही धर्म है जो स्वामीकूं आनन्द उपजावै याकरि सेवककूं कृतार्थता है ॥ ७६ ॥ माता तो आप ही जाग्रतरूप है परंतु दिक्कुमारी जगायबेके अर्थ माताकूं ऐसे शुभ शब्द कहती भई सो वे शब्द केवल मंगल हीके अर्थ हैं अर माता तो जाग्रतरूप ही है देवी कहा शब्द कहै है सो सुनहु हे विबुधार्थ कहिये हे माता ! तू कैसी है जाना है पदार्थनिका रहस्य जाने सो तू विबुधस्व कहिये जाग, हे विवर्धने कहिये वृद्धिरूपिणी ! अब तू सबको आनंद बढा अर हे देवी ! विजयलक्ष्मी-की स्वामिनी देवी पूर्ण हैं मनोरथ जाके सो तू विजयके भावकूं प्राप्त होहु ॥७९॥ हे माता ! अब यह चंद्रमा तिहारे मुखरूप चंद्रकूं देखकरि लज्जावंत होय प्रभारहित होय गया है तिहारा मुख निष्कंलक अर गुणाकर कहिये गुणनिकी खान अर चंद्रमा दोपा कहिये रात्रि ताका करणहारा है तातैं दोषाकर अर कलंकी है ॥ ७९ ॥ अर दीपनिकी ज्योति मंद भासै है सो मानों ये दीपक अपने प्रकाशकूं हंसे हैं जो यह जिनेन्द्रके माता पिताका गृह नखनिके उद्योतसमान चांद सूर्यका प्रकाश नाहीं यहां हम प्रकाश करैं या समान मूढता कहां ॥८०॥ अब संध्या दुष्टकी मित्रतासमान निष्फल डिगती भासै है, कैसी है दुष्टकी मित्रता ? अत्यंत सुखविषै है राग जाके अर क्षणमात्रमें राग मिट जाय है अर यह सांझहू प्रथम तो राग कहिए आरक्तरूप भासै हैं अर क्षण-मात्रमें आरक्तता मिट जाय है। भावार्थ—अब संध्याकी भी ललाई मिटै है ॥ ८१ ॥ अब सूर्यकी प्रभा सज्जनकी मित्रता समान बढै है, कैसी है सज्जनकी मित्रता ? अबन्ध्य कहिये सफल है अर्थ जाविषैं अर कैसी है सूर्यकी प्रभा सफल हैं सकल कार्य जाविषैं ॥८२॥ अर वे देवी कहैं हैं हे माता यह पूर्वदिशा स्त्रीकी न्याईं तुमारे मंगलके अर्थ उद्यमी भई है, कैसी है पूर्वदिशा प्रकाशरूप जो अंबर कहिए आकाश सोई है अंबर कहिए वस्त्र जाके अर देदीप्य-मान जो सूर्य सोई है तिलक जाके अर कैसी है स्त्री, प्रकाशमान अंबर कहिए वस्त्र आभूषण तिनकरि सोहै है अर ज्योतिरूप तिलककूं धरै है जैसी वस्त्राभूषण भूषित आभरण तिलक संयुक्त सौभाग्यवती स्त्री मंगलके अर्थ

हैं ॥ ४९ ॥ कैयक सेज सवारें हैं कैयक माताकूं तांबूल देवें हैं कैयक गृहके कार्यविषै तत्पर हैं कैयक अंगकी सेवाविषैं सावधान हैं ॥ ५० ॥ कैयक दर्पण लिए खडी है कैयक चवर ढारें हैं कैयक छत्रलिए ऊभी हैं कैयक पंखा करें हैं ॥ ५१ ॥ कैथक देवी माताके अंगकी रक्षाविषैं तत्पर खड्गकरि संयुक्त हैं करके अग्रभाग जिनके ग्रह राक्षसभूत पिशाचादितैं रक्षा करैं हैं सदा सावधान हैं ॥ ५२ ॥ कैयक बाहरले आंगनमें खडी हैं खड्ग चक्र गदा शक्ति अर सुवर्णकी लाठी हैं हाथमें जिनके ॥५३॥ या भांति रात्रि अर दिन देवीनिकरि माता सेवनीक होती भई सो या लोकविषैं आपकासा प्रकास औरनिका न जानती भई गर्भतैं पहिले छह महीना तक रत्नधारा नाभिराजाके मन्दिरमें वर्षी ताकरि आदि तीर्थंकरकी उत्पत्ति माता पिताने निश्चय जानी ॥ ५५ ॥

अथानतंर—जैसे तारोंकरि सव ओर चंद्रकला सेवनीय होय तैसे मरुदेवी देवनिकरि सेवनीय भई ॥५६॥ एक दिन शरदके बादरनि समान उज्ज्वल मंदिर अगरकी धूपकरि सुगंध ताविषैं महासुंदर सेज जो कि—महामनोहर वस्त्रनिकरि शोभित ताके ऊपर शयन करती हुती रात्रिके पिछले पहर महाशुभरूप सोलह सुपने निधिसमान दुर्लभ जिनका दर्शन सो देखती भई प्रथम ही सफेद हाथी देख्या मानों वह हस्ती बडा राजा है अर दानके अर्थि जो भ्रमर तिनकरि गाइये है यश जाका अति प्रचुर दान कहिए मद ताकी धाराकरि भीज रहे हैं सूंड अर कपोल जाके ॥

भावार्थ—जैसैं दानेश्वर नरेश्वरके निकट दानके अर्थ याचक आय यश गावैं तैसे मदोन्मत्त जो गजराज तापरि भ्रमर गुंजार करै हैं ॥ ५९ ॥ दूजे स्वप्नमें वृषभ देख्या सुंदर है आकार जाका मानों यह वृषभ अति उज्वल महा उन्नत सुंदराकार वृष कहिये धर्महीका स्वरूप है सो वृषभ गर्जता देख्या सो अपने नादकरि दबाया है प्रति पक्षीनिका नाद जाने ॥६०॥ तीजे स्वप्नमें उछलता नाहर देख्या नख दाढ अर केशावली तिनकरि शोभित महा तेजरूप देख्या मानों पहिले माते हाथीका कथन किया सो वाके मदकूं रोधन अर्थ मानों नाहर ढूंढवे ही आया

है ॥ ६१ ॥ चौथे स्वप्नमें नानाप्रकारके रत्ननिकरि जडित सो स्वर्णके कलश-कमल जिनकरि आच्छादित हैं मुख जिनका महा पवित्र जलके भरे तिनकरि लक्ष्मीका अभिषेक देख्या वे कलश महा शब्द करते लक्ष्मीके सिरपर परे हैं जैसैं गर्जते मेघनिकी घटा टोपकरि पृथिवीका अभिषेक देख्या तैसैं लक्ष्मीकूं देख्या ॥ ६२ ॥ अर पांचवें स्वप्नमें दो माला आकाशविषै लटकती देखीं सो नानाप्रकारके पुष्पनिकरि गूथी हैं अर लंबी हैं अर महा सुगंध सर्व दिशानिकूं सुगंध करनेवारी हैं मानों सर्वऋतुकी शोभा भेली होयकरि प्रभुकी सेवाके अर्थ आई हैं ॥ ६३ ॥ अर छठे स्वप्नमें चंद्रमंडल देख्या मानों यह चन्द्रमंडल ही श्यामा कहिए रात्रि सोई भई श्यामा कहिए नायिका तानें प्रभुकूं छत्र चढाया है छत्रके नीचे दंड होय है अर चंद्रके नीचे किरणनिका समूह है सो ही दंड जानहु कैसा है निशारूप नायिका तारारूप हैं आभरण जाके ॥ ६४ ॥ सातवें स्वप्नमें ऊगता सूर्य देख्या सो मानों पूर्व दिशारूप स्त्रीने मंगलके अर्थ कलशही थाप्या है, कलश सिंदूरकरि आरक्त होय है अर सूर्य संध्याकी ललाईकरि लाल वर्णकूं धरैं है ॥ ६५ ॥ आठवें स्वप्नमें जलक्रीडा करते दो मीन देखे सो मानों वे मीन माताके नेत्रकूं उलाहना देने आये हैं, कैंसे हैं माताके नेत्र अपनी चपलताकरि जीती है मीननिके नेत्रनिकी चपलता जानें ॥ ६६ ॥ अर नवमें स्वप्नमें दो स्वर्णके कलश देखे मानों वे स्वर्णके कलश माताके जो दोनों स्तन तिनकूं देखने आये हैं कुचनिकूं कलशकी उपमा है सो माताके कुचनि समान कलश कहे। कैंसे हैं कलश, मनके हरणहारे हैं जलकरि पूर्ण हैं अर विस्तीर्ण हैं घन हैं कठोर हैं अर कुच भी पय कहिये दुग्धकरि भरे हैं ॥ ६७ ॥ अर दसवें स्वप्नमें सरोवर देख्या, कैसा है सरोवर उदंड कहिये प्रफुल्लित पुंडरीक कहिये सफेद कमल तिनका है समूह जाविषे अर राजहंसनिकरि युक्त मनोहर है अर रथपाद कहिये चकवा तिनकूं आदि दे नाना प्रकारके जो पक्षी तिनके नादकरि पूर्ण है सो माताने सरोवर देख्या मानों अपनी प्रबल सेनाही निरखी, कैसी है सेना उदंड कहिये महा प्रचंड प्रबल सामंत तिनमें पुंडरीक कहिये श्रेष्ठ तिनका ओघ कहिये समूह जाविषैं अर राजहंस जे बडे राजा इन

करि मनोहर हैं अर रथ पयादे गज अश्वादिकके शब्दकरि शोभित हैं ॥६८॥ अर ग्यारहवें स्वप्नमें कल्लोलनिकरि वढता समुद्र देख्या, कैसा है समुद्र प्रचुर जे मीन तिनके मिथुन कहिये युगल अर उनमेष कहिये उद्घाटित है दृष्टि जिनकी ऐसे मकर कहिये मगरमच्छ तिनकूं आदि दे जे जलचर जीव तिनकी राशिकरि पूर्ण है मानों समुद्र आकाश समानही है, आकाशहू नीलवर्ण भासै समुद्रहू नीलवर्ण भासै अर आकाशविषैं नवग्रह मीन मेष मिथुन मकरादि राशिकरि पूर्ण अर यह भी मकरादि मीन राशिकरि पूर्ण ॥ ६९ ॥ बारहवें स्वप्नमें सिंहरूप है पाये जाके ऐसा सिंहासन देख्या, कैसा है सिंहासन चारों पायनिके सिंह महा प्रबल हैं भुजरूप स्तंभ जिनके अर मोटे है उद्घाटित दृष्टि जिनकी वे सिंह सिंहासनकूं कैसे धरै हैं जैसे कर्मभूमिकी आदिविषैं मनुराज कहिये कुरु-कर जगत् कहिये प्रजाकूं धरै हैं ॥ ७० ॥ तेरहवें स्वप्नमें देवतानिका विमान देख्या मानूं वह विमान स्वर्गहीकी सुंदरताका समूह मनुष्यनिकूं दिखायवेकूं आया है, सुंदर है गीत जिनके ऐसी देवांगनानिकरि मानों आन्या है ॥ ७१ ॥ चौदहवें स्वप्नमें नागेंद्रका भवन देख्या मानूं वह अपनी शोभाकरि नागलोककूं जीतकरि समस्त लोककूं जीतिवेकी इच्छाकरि आया है नागकुमारी देवनिकरि उपजी है शोभा जाके ॥ ७२ ॥ पंद्रहवें स्वप्नमें महारत्ननिकी राशि देखी सो रत्नराशि अपनी दैदीप्यमान किरणनिकरि मेघ रहित आकाशविषैं मानूं विजुरी अर इंद्रधनुषकी शोभाकूं विस्तारै है कैसी है रत्नराशि अभ्र कहिये आकाश ताकूं स्पर्शै है ॥ ७३ ॥ सोलहवें स्वप्नमें निर्धूम अग्नि देखी मानूं हर्षकरि फूल गया जो आकाश तातैं केसुवोंके पुष्पोंका समूह ही पडा है सो अग्नि अति निर्मल अर भ्रमजालकी निवृत करणहारी सोहै है ॥ ये शुभ सोलह स्वप्न देखे अर इनके पीछे मुखके मार्ग होय अपने उदरविषैं वृषभ प्रवेश करता देख्या मानूं वृषभदेव ही वृषभके रूपकरि माताके उदरमें आये ॥ ७५ ॥ ये सोलह स्वप्न देखकरि माता अति आनंदकूं प्राप्त भई तब निद्रारूपी सखी जाती रही ॥

भावार्थ—माता तो स्वामिनी है अर निद्रा ही सखी है सो या निद्रा सखीने ऐसी जानी जो मोहकरि मेरी

भावार्थ—आभूषणनिकरि माता शोभित नाहीं माताके अंगकरि आभूषण सोहते भए॥३५॥ ता मरुदेवी सहित नाभिराजा स्वर्गलोकसमान भोग भोगवै हैं ताके भोगका वर्णन करिवेकूं बृहस्पति अर शुक्रकी भी शक्ति नाहीं॥३६॥

अथानंतर—सर्वार्थसिद्धिसूं चयकरि आदि तीर्थंकरके मरुदेवीके गर्भमें आनेके छैमास रहे तबहीतैं राजाके घर आंगनविषै इंद्रकी आज्ञासूं धनपति निरंतर रत्ननिकी धारा आकाशसूं वर्षावता भया ॥ ३७ ॥ अर दिशा अर विदिशासे हर्षकी भरी दिक्कुमारी श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी आदि निन्यानवै आईं, वे देवी भगवानके माता पिताकूं प्रणामकरि इंद्रकी आज्ञातैं मरुदेवीकी सेवा करती भईं अर ऐसी वाणी माताकूं कहती भईं हे मात! तुम नादो विरधो फूलो फलो चिरकाल जीवो हमको आज्ञा देवो जो तुम्हारी आज्ञा होय सो करैं ॥ ४१ ॥ कैयक देवी तो परम आश्चर्यकूं प्राप्त भईं, मातारूप जो लावण्य सौभाग्यादिक गुण रूप समुद्रका वर्णन करैं अर कैयक माताकी शास्त्रविद्या, लिखनविद्या गंधर्व विद्या, गणितविद्या इत्यादि आगम पूर्वक अनेक विद्या अर अनेक कलाकी जो प्रवीणता माताविषै ताकी प्रशंसा करैं माता समान सर्व कलाविषैं कुशल जगतमें कोई नाहीं अर कैयक देवी अपनी तंत्री वीणादिककी प्रवीणता माताकूं दिखावती भईं अर कैयक नानाप्रकारके वादित्र बजावै हैं अर कैयक कानिकूं रसायन तुल्य मधुर गीत गावैं हैं कैयक देवांगना हाव भावविलासकी भरी नेत्रनिकूं अमृत तुल्य अद्भुत नृत्य करै हैं कैसा नृत्य शृंगारादिक नवरसकी है उत्कृष्टता जाविषै अर सुंदर है अभिनय कहिये नृत्यकला जाविषै ॥४५॥ अर कैयक देवी सुंदर है करपल्लव जिनके सो माताके पांव पलोटती भईं अर कैयक हाथ दाबती भईं अर कैयक अंग दाबती भईं ॥४६॥ कैयक तैलाभ्यंग करती भईं कैयक उद्वर्तन कहिए उबटना लगावती भईं अर कैयक माताकूं स्नान करावती भईं। कैयक स्नान वस्त्र धोवती भईं॥४७॥ कैयक माताके सुगंध लगावती भईं। कैयक नानाप्रकारके बकुचा लिए खडी हैं कैयक वस्त्र पहिरावै हैं कैयक आभूषण पहिरावैं हैं कैयक फूलनिकी माला गूंथैं हैं कैयक माताकी देहकूं शृंगार करैं हैं अर कैयक भोजन करावैं हैं कैयक नानाप्रकारकी सामग्री ल्यावैं

बहुरि कैसा है शिर सम कहिए न ऊंचा है न नीचा है जैसा चाहिए तैसा है अर जाके मुखमंडलकी शोभाकरि पूर्णमासीका चंद्रमंडल हारिके भावकूं प्राप्त भया सो मानूं आधि कहिए मनकी व्यथाकरि पांडु कहिए धूसरा होय गया है। भावार्थ—जो चिंताकरि ग्रसा गया होय सो पांडुरोगकूं प्राप्त होय यह माता मरुदेवी तो वहत्तर कला करि युक्त अर चंद्रमाकी मूर्ति सोलह कलाकी धारणहारी अर मरुदेवी निष्कलंक अर चंद्रकला कलंककरि युक्त सो मरुदेवीके मुखकी शोभा चंद्रमा कैसे पावै ॥ २९ ॥ अर स्त्रीकूं पृथिवीकी उपमा दीजै है सो पृथिवी तो कठोर अर स्पर्श गंध वर्ण इन चार गुणनिकी धारक अर माता मरुदेवी स्त्रीनिकी सृष्टिमें उत्कृष्ट चौसठ जे गुण तिन करि युक्त अति कोमल सो मरुदेवीकी उपमा पृथ्वीकूं कैसे वनै ॥ ३० ॥ अर मरुदेवी पतिसूं प्रीतिकी भरी अति सचिक्कण शुद्ध है चित्त आत्मा जाका सो जल याकी उपमा कैसे पावै, जल तो जडात्मा है अर यह ज्ञानात्मा अर जल तो किंचित स्निग्ध अर यह महास्निग्ध अर जलका नाम विष है अर अमृत भी है यह केवल अमृत ही है अर जलकी धोरी अग्रणेया कहिए परकी प्रेरी चालै है अर यह स्वतःस्वभाव धर्ममार्गविषैं चालै है सो याकूं जलकी उपमा कहां अर याकी मूर्तिकूं अग्निकी उपमा कहां? अग्नि तो दहन स्वभाव अर यह शांति स्वभाव है यद्यपि अग्नि दैदीप्यमान है प्रकाशरूप है अर तेजोमय मूर्ति है तथापि या समान अग्निमें तेज नाहीं अर या समान दैदीप्यमान प्रकाशमान अग्नि नाहीं अर याकी समानता समीर कहिए पवन सो कैसैं पावै पवनमें तो एक स्पर्श गुण सो कभी तो पवनका स्पर्श सुखका कर्ता अर कभी सुखका हर्ता अर यह मरुदेवी दर्शनकरि नाभिराजाकूं सदा अति सुख कर्ता ॥ ३३ ॥ अर आकाश संबंधी शक्ति यद्यपि शुद्ध कहिये निर्मल है तथापि मरुदेवीकी समानता कैसैं पावै? आकाशशक्ति निर्मल है परन्तु जड अर यह विचक्षण है अर आकाशशक्ति तो स्पर्शकरि रहित है काहूकरि स्पर्शा न जाय अर यह मरुदेवी कैसी है भरतारके हृदयकूं पूर्ण स्पर्शे है अर चौदह प्रकार आभूषण कल्पवृक्षकरि रचे जाके अंगके संगकरि शोभाकूं प्राप्त भये ॥ ३५ ॥

कांधेनिसहित शोभती भई आरक्त हैं हथेली जिनकी मानों ये भुजा कामकी पाश ही हैं ॥ १८ ॥ अर मानों यह माता समुद्रकी लहर ही है समुद्रकी लहर तो शंख मूंगा मोतीनिकरि सुंदर हैं । अर कैसी है माता शंखावर्त समान है ग्रीवा जाकी अर मूंगा समान हैं अधरपल्लव जाके मुक्ताफल समान दांतनिकी उद्योत तिनकरि महामनोहर है अर मरुदेवीका अंतरमुख शोभता भया आरक्त है तालवा जिह्वाका अग्रभाग जाका अर कोयलतैंहू अति सुंदर हैं शब्द जाके ॥ २० ॥ अर जाके कपोल मणिके दर्पणसमान निर्मल शोभते भए मानूं प्रीतम जो राजा नाभिराजा सो प्रियाके मुखविषैं काचकी न्याईं अपना मुख देखा चाहै है. ताके ये दोऊ कपोल सुंदर आरसे ही सन्मुख है ॥ २१ ॥ अर मरुदेवीकी समीचीन नासिका अति मध्यस्थ शोभती भई समा कहिए समान है अधिकी ऊंची नाहीं अर संपुटा कहिए समान है दोनों पुट जाके मानों यह नासिका मध्य तिष्ठती संती दोऊ ही नेत्रनिका परस्पर उलंघन निवारै है, कैसे हैं दोऊ नेत्र बढिवेकी बढी है स्पर्धा जिनके ॥ २२ ॥ अर जाके नेत्र दीर्घदर्शी श्वेत श्याम आरक्त त्रिवर्ण कमल समान शोभते भए सो कर्ण समीपतक हैं विस्तीर्णता जिनकी, दोऊ नेत्र दीर्घताकरि कानोंतक कटाक्षकूं धरै हैं सो मानूं दोऊ कर्ण दोऊ नेत्रनिके मित्र हैं सो अपनेअपने मित्रनिकूं नेत्र मंत्र करै हैं ॥ २३ ॥ अर जाकी भौंहैं सूक्ष्म हैं रेखा जिनकी अर दोऊ परस्पर घने दूर न घने मिले चढाए धनुष समान सुंदर शोभते भए ॥ २४ ॥ अर जाके ललाटकी शोभाकूं अष्टमीका चंद्रमा न पावता भया सो ललाट तो अति ऊंचा है न अति नीचा है जैसा चहिये तैसा है सो अष्टमीका चंद्र अनेक उपायकरि भी ललाटकी मनोग्यता न लहता भया ॥ २५ ॥ कुंडलनिकरि उज्वल है कपोल जाके ऐसी मरुदेवी ताके कर्णयुगलकी उपमा देयवेकूं कोई पदार्थ नाहीं कर्णयुगल अतिमनोहर कोमल हैं अर दोऊ समान हैं अर मनोहर हैं जिनवाणीके श्रवण करणहारे हैं अर जाके शिरकी शोभा वचनके मार्गतैं अगोचर है, कैसा है शिर नील कहिए श्याम कुंचित कहिए टेढे, स्निग्ध कहिए चिकने, सूक्ष्म कहिए वारीक अर घने कहिए अति सघन दीर्घ ऐसे हैं केस जिनके

१४३

अति सुंदर पांवनिके अंगुष्ठ दैदीप्यमान नखमंडलनिकरि मंडित मरुदेवीके शोभते भए मानों अपनी कांतिकरि ललाटके देखवेकी है वांछा जाके।

भावार्थ—नखनिकी ज्योतिमें ललाटका प्रतिबिंब आय परै है ॥ ७ ॥ अर मरुदेवीके दोऊ चरण शोभाकूं धरते भये उन्नत है अग्रभाग जिनका अर सचिक्कण हैं सुंदर हैं आरक्त नखनिकी किरणनिकरि कमलनिकी शोभाकूं जीतते भए। अर जाके चरणकमल कूर्म सारिखे उन्नत शोभते भए, कैसे हैं चरणकमल सुंदर हैं अंगुरीरूप पत्र जिनके अर गूढ हैं गुलफ कहिए कूण्या जिनके ॥ ८ ॥ अर कांतिरूप जलके समूहविषै गमन अर दोऊ समान अति शोभाकूं धारते भए ॥ ९ ॥ जाके चरण सुन्दर मच्छ शंखादि लक्षणनिकरि अति शोभते भए मानूं क्रीडाविषैं प्रियके स्पर्शतैं स्वेदका संबंधही धरै है अर जाकी जंघा गोल ऊपरतैं नीची अर उतरती आई अर रोमनितैं रहित अर शिरा कहिए नस तिनकरि रहित लावण्यरसकी भरी मानों कामरूप धनुषधारीके तरकस ही हैं ॥ १० ॥ अर जाके दोऊ जंघा कहिए गोडा महामृदु अर गूढ हैं संधि जिनमें सो प्रीतमके गात्रकूं कोमलस्पर्शका सुख देते भए ॥ ११ ॥ सो संसारविषैं कोइक कवि कदलीके थंभकी उपमा जंघानिकूं दे हैं सो कदलीके थंभ गोल अर दीर्घतारूप गुणकूं धरैं हैं तथापि माता मरुदेवीकी जंघा समान सुंदर नाहीं, कैसे हैं कदली थंभ जिनमें सार नाहीं अर कठोर हैं अर हाथीकी सुंड समान लम्बी हैं ॥ १२ ॥

उरुसंधिर्नितंबश्च कुकंदरमनोहरे। गुरुर्जघनभारश्च यस्याः सादृश्यमध्यगा ॥ १ ॥

अर जाकी नाभिमंडल गंभीर महामनोहर अर दक्षिणावर्त गोल अर रोमराजी कहिए रोमनिकी पंक्ति तिनकरि महा मनोहर नाभिराजाकूं हर्षका कारण होती भई अर जाकी कटि रोमरहित गोल अर क्षीण ऐसी मनोहर सोहै मानों कुचके भारकरि डिग न जाय अर जाके स्तन दोऊ कठिन अर महामृदु तिनकी शोभा कहिबेमें न आवै वेई भए चकवा तिनके युगल करि उरःस्थल सरिताकी न्याई शोभता भया ॥ १७ ॥ अर जाकी दोऊ भुजा सुंदर

नाशक श्रीऋषभदेवका चरित्र सुनि, ऋषभकी उत्पत्ति अर जन्माभिषेक अर राज्याभिषेक अर राजनीति अर बैराग्यउत्पत्ति केवलज्ञानकी प्राप्ति निर्वाणगमनपर्यंत ये सर्व कथा तोहि कहूं हूं सो एकाग्र चित्तकरि सुनहु ॥७७॥ यह लोक समस्त षट द्रव्यनिकरि पूर्ण है ये षट् द्रव्य अकृत्रिम हैं जिनका कोई उपजावनहारा नाहीं सो पदार्थनिकूं केवलज्ञानहीके उपदेशतैं ऋशीश्वर भलीभांति जानै जा कारणतैं कालादिक पदार्थनिके ज्ञानविषै जीवनिके अत्यंत अज्ञान है सो भगवान्‌रूप सूर्यका प्रकाश अज्ञानतिमिरकूं दूर करै है अर पदार्थनिका प्रतिभास करै है, कैसा है जिनसूर्यका प्रकाश सदा स्थिर है शोभायमान है उदय जाका कबहू अस्त नाहीं ॥ १७८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कालकुलकरोत्पत्तिवर्णनं नाम सप्तम सर्गः ॥

अथानंतर—यह चौदह कुलकर मनु कहाए, सो मनुका अर्थ कहिये मनुजार्थ कहिए पुरुषार्थ ताका मनन कहिये ज्ञान ताकरि इनकी मनुसंज्ञा भई, सत्पुरुषनिके योग्य जे परिमाण तिनकूं प्राप्त भए हैं मनु समान मनुष्यनिके परिणाम नाहीं ॥ १ ॥ जासमय दक्षिण भरतक्षेत्रके मध्य कल्पवृक्ष क्षीण भए तासमय नाभिराजाका मंदिर पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध होता भया ॥ २ ॥ सुवर्णमई हैं स्तंभ जाके नानाप्रकार रत्नमई हैं भीति जिनकी अर पुष्पनिकी माला मोतीनिकी माला मूगानिकी मालानिकरि शोभित है मंदिर ताका नाम सर्वतोभद्र सो मंदिर इक्यासीखणा कोट खाई वापी उपवनादिकरि मंडित ॥ ४ ॥ सो नाभिराजाके प्रभावतैं वह एक सर्वतोभद्र अनेक कल्पवृक्षनिकरि मंडित पृथ्वीविषैं शोभता भया। भावार्थ—सब पृथ्वीविषै कल्पवृक्ष जाते रहे अर नाभिराजाका मंदिर कल्पवृक्षनिकरि शोभता भया।

अथानंतर—राजा नाभिके राणी मरुदेवी अतिवल्लभा होती भई जैसी सौधर्मइंद्रके शची इंद्राणी वल्लभा वैसी नाभिके मरुदेवी होती भई। वह मरुदेवी बडे वंशकी शिखामणि बडे वंशविषैं उपजी है ॥ ६ ॥ किंचित् उन्नत

अभाव भया अर संतान भये पीछे माता पिता बहुत वर्ष जीवते भये, अर पुत्र जानते भये जो ये हमारे माता पिता हैं यह अमुकको पुत्र ऐसैं कहावत पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध भई, सो मरुदेव कुलकर आयुपूर्णकरि देवलोककूं गये ॥ ६१ ॥ ता पीछे फिर तेरहवां कुलकर प्रसेनजित अकेलाही जन्म्या यहांतैं युगलसृष्टिकी रीति निवृत्त भई, प्रसेनजितके कछुक पसेवका लेश शरीरविषैं होता भया, अर इनका पिता इनकूं विवाहकी विधिकरि बड़े कुलकी कन्या परिणावता भया, प्रसेनजितका आयु पल्यके दशलाखकोडिवें भाग सो आयुपूर्णकरि स्वर्गलोक गये। पीछे फिर चौदहवें कुलकर नाभिराजा भये जिनकी आयु कोडिपूर्व अर जिनके राज्यमें बालकनिके जन्मसमय नाभि नाल होते भये तिनके छेदनिकी विधिकरि नाभिराजा कहाये ॥ ७० ॥ यह चौदह कुलकर कहे तिनकी आयु तो कहते ही आये अर काय पहिले कुलकरकी १८०० धनुषकी अर दूजेकी १३०० धनुषकी तीजेकी ८०० धनुषकी अर चौथेकी ७७५ धनुषकी अर पांचवेंकी ७५० धनुष अर छठेकी ७२५ धनुष अर सातवेंकी ७०० धनुष अर आठवेंकी ६७५ धनुष, अर नौवेंकी ६५० धनुष अर दसवेंकी ६२५ धनुष, ग्यारहवेंकी ६०० धनुष अर बारहवेंकी ५७५ धनुष अर तेरहवेंकी ५५० धनुष अर चौदहवेंकी ५२५ धनुष ॥७२॥ ये चौदह कुलकर समचतुरसंस्थान अर वज्रबृषभनाराचसंहननके धारक अर गंभीर अर उदार है मूर्ति तिनकी अर पूर्वभवका है ज्ञान जिनकूं वे चौदह मनु कहिये कुलकर, मनुष्यनिमें वडे हैं अर कर्मभूमिकी रीतिके वक्ता हैं ॥ ७३ ॥ इनमें चक्षुष्मान यशस्वी प्रसेनजित ये तीन कुलकर तो प्रियंगुमणि सारिखे श्याम सुंदर हैं ॥ ७४ ॥ अर चन्द्राभ चंद्रमा समान गौरकांति विस्तीर्ण है प्रभा जाकी ये चार कुलकर तो श्याम अर गौर कहे अर बाकी दश ताये स्वर्ण समान प्रभाके धारक हैं ॥ ७५ ॥ ये चौदह ही कुलकर मर्यादाके रक्षक सर्व उपायके वेत्ता कामधिकार दंडके कर्त्ता नीतिके कर्त्ता प्रजाके पिता समान होते भये अधिक है बुद्धि जिनकी ॥ ७६ ॥ गोतम स्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक ! या भांति सकल कुलकरनिकी उत्पत्ति तोहि कही, अब समस्त पापनिका

दस हजारवें भाग ताके समय सिंहव्याघ्रादिक अत्यंत क्रूर भये तब तिनके भय निवारण अर्थ कुलकरने लोकनिकूं कहि लट्ठ रखाये ॥ ५३ ॥ काल पाय क्षेमंधरहू देवलोककूं गया ता समय पीछे पांचवां कुलकर सीमंकर भया ताकी आयु पल्यके लाखवें भाग ताके समय प्रजा कल्पवृक्षनिके लोभी परस्पर विसंवाद करते भये तब कुलकर वृक्षनिकी सीमा कहिये मर्यादाकरि तिनका झगड़ा मेटता भया, सीमंकरहू स्वर्गकूं गया ताके पीछे बहुरि छठे कुलकर सीमंधर भये तिनकी आयु पल्यके दस लाखवें भाग ॥ ५५ ॥ सो आयु पूर्णकरि स्वर्गकूं गया तिनके पीछे सांतवां कुलकर विपुलवाहन भया सो हाथिनिकी असवारीकरि क्रीडा करता भया ॥ ५६ ॥ ताकी आयु पल्यके दस कोड़िवें भाग सोहू आयु पूर्णकरि देव भया ताके पीछे आठवां कुलकर चक्षुष्मान भया ताकी आयु पल्यके दस कोड़िवें भाग ताके समय लोक पुत्रनिका मुख देखते भये अब तक यह रीति हुती कि जासमय पुत्रका जन्म ताही समय माता पिताका मरण सो अष्टम कुलकरके समय माता पिता पुत्रनिका मुख देखते भये तातैं याका नाम चक्षुष्मान लोगनिने कह्या। हे चिरंजीव! तिहारे राजमें हम संतानका मुख देख्या तातैं चक्षुष्मान ऐसैं लोक स्तुति करते भये ॥ ५८ ॥ सो कुलकर आयुपूर्णकरि देव भये ता पीछे नवमां कुलकर यशस्वी भया ताकी आयु पल्यके सौ करोड़वां भाग ताके समय प्रजापुत्रनिका नाम धरते भये अबतक नाम न हुता यशस्वीका विस्तीर्ण यश लोक करते भये ॥ ६० ॥ सो यशस्वी अपना यश पृथ्वीविषैं विस्तीर्णकरि स्वर्गलोक गये ता पीछे बहुरि दसवें कुलकर अभिचंद्र भया ताकी आयु पल्यके हजार कोडिवें भाग ताके समय प्रजा पुत्रकूं गोदमें उठाय चांदके सन्मुख रमावते भये अर भाजनमें जल डारि चंद्रमाका प्रतिबिंब दिखाय बालकनिकूं रमावते भये तातैं याका नाम अभिचंद्र कहाया सो अभिचंद्र चंद्रमा समान उज्वल यश जगतमें प्रगटकरि ऊर्द्धलोक गये ॥ ६३ ॥ ताके पीछे ग्यारहवें कुलकर चंद्राभ भये तिनका आयु पल्यके दसहजार कोडिवें भाग सो आयु पूर्णकरि देवलोककूं गये ताके पीछे बारहवें कुलकर मरुदेव भये तिनकी आयु पल्यके लाख कोडिवें भाग तिनके राज्यमें युगलके नियमका

सूर्यकी कांतिकरि चंद्रमा अस्त समान भासै है अर ग्रह तारा नक्षत्र ये दिवसकूं न भासैंगे रात ही भासैंगे ॥ ३७ ॥ अब तुम कही हम ये अपूर्व देखे सो पूर्व जन्मविषैं तुम विदेहक्षेत्रमें कईबार देखे हैं तातैं अपूर्व दर्शन नाहीं । देखि सुनि अनुभई वस्तुका जो दर्शन होय तो उत्पाद काहेका तातैं तुम निर्भय होवो काल स्वभावके भेदकरि वस्तूनिका स्वभाव नानारूप भासै है द्रव्य क्षेत्र अर प्रजाका आचरण अरका अर रूप होय जाय है ॥ ४० ॥ अब तक प्रजाके लोक निरपराध हुते तातैं दंड योग्य न हुते अब कछुइक दोषनिके सद्भावतैं दंड योग्य होंहिंगे, सो महा धिक्कार, इन तीन दंडनिकरि कुलकरि प्रजाकूं मार्गमें चलावेंगे राजानिके भयकरि प्रजा दोषनितैं रहित होयगी प्रजाकूं अनर्थके बचानेके अर्थ अर अर्थकी सिद्धिके निमित्त शास्त्रविषैं दंडनीति कही है, दंड कहिये दुष्टनिका निग्रह अर नीति कहिये शिष्टनिका प्रतिपालन, कुलकर लोकनिकूं कहता भया मेरी आज्ञा सुन हृदयविषैं धारकरि तुम स्त्री पुरुष सुखतैं अपने स्थानकेविषैं तिष्टो ये बचन प्रजापतिके प्रजा उरमें धारि अपने अपने स्थानकूं गये उपज्या है आनंद जिनकूं, ताके बचन कर्मभूमिके लोकनिने प्रथम ही सुने अर धारे जैसे गुरुके बचन शिष्य सुनके धारै इससे पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध इनका नाम प्रतिश्रुत भया ॥ ४७ ॥ यह प्रतिश्रुत पल्यके दसवें भाग अपनी आयु पूर्णकरि देवलोक गया ताके पीछे फिर दूजा कुलकर सन्मति भया सो पहिले कुलकरकीसी मर्यादा राखता हुवा लोकनिकूं भली मति देता भया अर दुःख निवारता भया तातैं याका नाम सन्मति कहा गया, समस्त कलानिका कुलग्रह होता भया ॥ ४९ ॥ पल्यके सौवें भाग याकी आयु होती भयी सो अपनी आयु पूर्णकरि देवलोककूं गया ॥ ५० ॥ याके पीछे फिर तीजा कुलकर क्षेमंकर भया तासमय सिंह व्याघ्र आदि क्रूरतारूप भये तिनका भय क्षेमंकर मेटता भया जो तुम इनका विश्वास मत करो अब ये कर्मभूमिके योगतैं विकारकूं प्राप्त भये हैं ॥ ५१ ॥ लोकनिकूं क्षेम कहिये कुशलका कर्ता तातैं क्षेमंकर नाम पाया ॥ ५२ ॥ सो पल्यके हजारवें भाग अपनी आयु पूर्णकरि स्वर्गलोककूं गया ताके पीछे फिर चौथा कुलकर क्षेमंधर भया सो क्षेमंधरका आयु पल्यके

जो दो महानदी तिनके मध्य यह दक्षिण भरत ताविषैं अनुक्रमकरि चौदह कुलकर उपजे ॥ २४ ॥ तिनमें आदि प्रतिश्रुत कुलकर उपज्या महाप्रभाकरि संयुक्त जाके पूर्वभवका स्मरण है ॥ २५ ॥ ताके समय प्रजा पूर्णमासीके दिन चांद सूर्यकूं विलोकिती भई, सूर्य तो अस्त होता देख्या अर चंद्र उदय होता, देख्या मानो ये रवि शशिके मंडल आकाशरूप घंटा समान सोहै हैं ॥ २६ ॥ अबतक तो भोगभूमिमें दोऊ दृष्टि न पडे सो इनकूं अकस्मात् देखकरि प्रजाके लोक भयमान भेले होय कुलकरनिके शरण गये अर पूछते भए ॥ २७ ॥ हे नराधिपति ! दोऊ गगनके अंतविषैं देखिवेमें आवै हैं अबतक कभी देखे नाहीं आजही देखनेमें आए अर एक ओर तो एक उगताही दीखै है अर एकओर अस्त होताही दीखै है अर दोऊ मण्डलाकार कहिये गोल हैं सो उनकूं देखकरि हमारे भय उपज्या है ये कहा है, अहो स्वामी ! हमकूं अकस्मात् भय उपज्या है। कहा सब प्रजाकूं प्रलयकालही आया है, कैसा है प्रलयकाल दुस्तर कहिये दुर्निवार है ॥ २९ ॥ या भांति लोकनि पूछी तब कुलकर कहते भये, हे लोक हो ! तुम भय न करहु तुमकूं यह बाधाकारी नाहीं तुम शोक तजि निश्चिन्त होहु ॥ ३० ॥ ये दोऊ प्रभावके मंडल मंडित हैं यह तो पश्चिमकी ओर अस्त होता आदित्य दीखै है यह पूर्वकी ओर उदय होता चंद्र दीखै है ॥ ३१ ॥ ये दोऊ सूर्य चंद्र ज्योतिषी देवनिके अधिपति हैं सदा मेरुकी प्रदक्षिणा करै हैं सदा भ्रमते रहे हैं. देवनिके चार भेद हैं तिनमें ज्योतिषी देवनिके समूह आकाशविषैं सदा भ्रमण करै हैं तिनके यह स्वामी हैं ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षनिकी प्रभाकरि यहां न दीखते हुते अर महाविदेहनिमें तो सदाही दृष्टिगोचर हैं, अब यहां ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षनिकी प्रभाके मंद होयवेकरि ये दृष्टिगोचर भए हैं जैसे कोई सबल शत्रुकी प्रभा घटती देख वाहि जीतवेकी इच्छाकरि प्रगट होय है तैसे ये कल्पवृक्षनिकी प्रभा मंद भई जानि मानूं उनकूं जीतिवेकूं प्रगट भए हैं अब या भरतक्षेत्रविषैं सूर्यके उदय अस्तथकी रात दिवसका विभाग होयगा अर चंद्रमाकी कलाके घटने बढ़नेसे कृष्ण अर शुक्लपक्ष प्रगट होवेंगे। दिनमें

मंदिर वन जांय, कैसे हैं मंदिर अनेक हैं स्वर्ण जिनके अर उपवन सहित नाना प्रकारकी शोभाकूं धरैं अति सुखकारी हैं भूमि जिनकी ॥८२॥ दीपांगजातिके कल्पवृक्ष ते अपनी विस्तीर्ण दीर्घ शाखाकरि कमल समान मनोहर कोंपलनिकूं धरैं हैं वे कोंपल दीपक समान अरुण अर उद्योतकारी हैं ॥८३॥ अर तूर्यांग जातिके जे कल्पवृक्ष ते चार प्रकारके अनेक जातिके वादित्रनिकूं उपजावें हैं। वादित्रनिके नाम—तत १ वितत २ घन ३ शुषिर ४। तत कहिए तारका बाजा वीणा तमूरा रबाब आदि अर वितत कहिए चर्मका मढा मृदंग ढोल नगारा डफ इत्यादि अर घन कहिए झालर झांझ मजीरा इत्यादि कांसीका बाजा अर शुषिर कहिए शंख बांसुरी करनाल तुरई इत्यादिकनिका बाजा इन वादित्रनिकूं निपजावै है सो तूर्यांग जातिका कल्पवृक्ष कहिए ॥८४॥ अर भोजनांग जातिका कल्पवृक्ष अतिमिष्ट षद्रसमय चार प्रकारके भोजन उपजावै है। भोजनोंके नाम—अशन कहिए दाल भात रोटी तरकारी आदि १ अर पान कहिए जल दुग्ध तक्र शरबत इत्यादि २, अर खाद्य काहए मेवा मिष्टान्न ३, अर स्वाद्य कहिए लवंग इलायची दालचीनी आदि ॥८५॥ अर भाजन जातिके कल्पवृक्ष थाल कटोरा रकेवी इत्यादि बासन नाना प्रकारके मणि सुवर्णमई देवें हैं ॥ ८६ ॥ अर वस्त्रांग जातिके कल्पवृक्ष महासुंदर वस्त्र देवें नाना प्रकारके वस्त्र रेशमी पशमीना सूतके तथा चीनके इत्यादि नाना प्रकारके वस्त्र इनकी शाखानिविषै लूमते रहें जो चाहो सो लेहु ॥८७॥ अर मालांग जातिके कल्पवृक्ष नाना प्रकारके पुष्पनिकी माला धरैं सोहै हैं मालती मालिका इत्यादि प्रशंसा योग्य जे पुष्प तिनकरि गूंथी जो माला भोगभूमियां इनकूं देहैं ॥ ८८ ॥ अर भूषणांग जातिके कल्पवृक्ष हार कुण्डल केयूर कटिमेखला इत्यादि आभूषणनिकरि शोभित महान भासैं हैं स्त्री अर पुरुषनिकूं उचित जो आभूषण देवे हैं ॥ ८९ ॥ अर मद्यांग जातिके कल्पवृक्ष स्त्री अर पुरुषनिकूं महा मनोहर कामोत्पात वस्तु देहैं जा करि मनकी प्रसन्नता होय अर मदनकी वृद्धि होय ॥ ९० ॥ ये कल्पवृक्ष दस प्रकार तिनकरि उपजे भोगभूमियां भोगवै हैं वे भोग चक्रवर्तिके दशांगनितैं अति अधिक हैं ॥ ९१ ॥ जहां गर्भविषै स्त्री पुरुष युगलही रहे हैं

गौ अर वृषभ, कहींइक महिष अर महिषी इत्यादि तिर्यंचनिके युगल मदनके मदकरि उन्मत्त भये परस्पर सुखतैं रमै हैं जितनी मनुष्यकी आयु तेतीही तिर्यंचकी आयु अर कोई जीव मांसाहारी दुराचारी नाहीं जहां परस्पर बैरभाव नाहीं अपनी इच्छाकरि नानाप्रकारके भोग भोगवें हैं जहां नारी नरकूं 'आर्य' ऐसा नाम कहै हैं अर नारीकूं नर 'आर्ये' कहै हैं भोगभूमिमें यही नाम है अर नाम नाहीं अर जहां सबही उत्तम एक जाति अर चार वर्णका भेद नाहीं अर षट्कर्म नाहीं जहां कोई स्वामी अर सेवक नाहीं अर जहां भेषधारी नाहीं अर कोई राजा नाहीं सब समान हैं अर कोई जहां शत्रु मित्र नाहीं सबही मध्यस्थ हैं अर सहजही सब मंदकषायके योगतैं आयुके क्षयविषैं देवही होवैं और गति उनकूं नाहीं अर मरणसमय दुःख नाहीं सुखतैं प्राण छूटैं पुरुषनिकूं तो मरणसमय छींक आवै अर स्त्रीनिकूं जंभाई आवै अर स्त्री पुरुषनिका मरण एकही काल होय लारै जन्म अर लारै ही मरण अर जन्मतक परस्पर प्रेम होय ॥ १०० ॥

अथानंतर—गौतम गणधर राजा श्रेणिकका अभिप्राय जानकरि भोगभूमिमें उपजनेके कारण कहते भये, वे कर्मभूमिके मनुष्य स्वभावहीकरि मंदकषाय हैं अर उत्तम पात्रनिकूं दान करै हैं ते पात्रदानके प्रभावकरि भोगभूमिमें जावें सो पात्रके भेद तीन उत्कृष्टपात्र मुनि सो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र, सम्यक् तप, तिनकी शुद्धताकरि महा पवित्र हैं अर शत्रु मित्रविषैं समान है बुद्धि जिनकी अर मध्यमपात्र पंचम गुणस्थानवर्ती आर्या अर श्रावक श्राविका, अर जघन्यपात्र चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अव्रतसम्यग्दृष्टी ये त्रिविध तिनकूं विनयसंयुक्त विधिपूर्वक दान देयकरि कर्मभूमिका मनुष्य भोगभूमिके दिव्य सुख भोगे हैं तीनप्रकारके ही पात्र तीनप्रकारकी ही भोगभूमि ॥ १० ॥ जैसे भले क्षेत्रविषैं विधिपूर्वक बोया बीज अल्पहू बृद्धिकूं प्राप्त होवै तैसें पात्रनिविषैं विधिपूर्वक दिया आहारादि दान विशेष फलकूं फलै जैसे शालि अर सांठेके खेतविषैं प्राप्त भया जल मिष्टताके भावकूं भजै है अर गायने पीया जो नीर सो दूध होय परिणमैं है तैसे अल्प है रसास्वाद जिसका ऐसा अन्न पान औष-

अर गर्भतैं युगलही जन्मै हैं सो जन्मके दिनतैं सात दिन तक अपने अंगुष्ठ चूंसै हैं इनकी माता तो इनके जन्म होते ही मरण पावै अर सात दिन पीछे तक धरतीमें लोटते चले अर पीछे सातवें दिन बैठनेकी शक्ति होय अर दिन सातवें पांवनितैं चलवेकी शक्ति होय बहुरि दिन सातवें सर्वकलाविषै निपुण होंय अर सकल गुणमें प्रवीण होंय अर दिन सातवें यौवन प्राप्त होय अर पीछे सात दिनमें सम्यक्त्व ग्रहणकी योग्यता होय अर जो काहूकूं सम्यक्त उपजै तो योवन पीछे सात दिन उपजै, जहां सबही मनुष्य रोग रहित आनंदतैं रमै हैं सबही कलाधरी महा गुणवंत चतुर स्त्री अर पुरुष सबही लक्षणनिकरि संपूर्ण कोईही नारी परपुरुष गामिनी नाहीं अर कोई ही नर परनारी रत नाहीं, शील स्वभावी भद्र परणामी महा सरल सौम्यमूर्ति अर मल मूत्रादि रहित हैं अंग जिनका अर निर्मल कपट रहित है बुद्धि जिनकी अर तीव्र है इन्द्रियनिका ज्ञान जिनके जहां नर देवनि समान नारी देवांगना तुल्य सुन्दर वर्ण, सुन्दर गंध, सुन्दर रस, सुन्दर स्पर्श, सुन्दर शब्द, सुन्दर भेष सबही बातनिकी मनोज्ञता भोग भूमिमें है, जहां स्त्री पुरुष परस्पर अति अनुरागी पुरुषनिके कान स्त्रीनिके गीतनिके शब्दविषै अर स्त्रीनिके कान पुरुषनिके शब्द श्रवणविषै अर पुरुषनिके नेत्र स्त्रीनिके रूप निरखवेविषैं अर पुरुषनिके रूप विलोकनिविषैं स्त्रीनिके नेत्र अर नरनिकी नासिका नारीनिकी सुगंधताविषै अर नारीनिकी नासिका नरनिकी सुगंधताविषै अर नरनिकी जिह्वा नारीनिके मुखरसास्वादनविषैं अर नारीनिकी जिह्वा नरनिके मुखरसास्वादविषैं नरोंके स्तन नारीनिके स्तनस्पर्शविषै अर नारीनिका स्तन नरनिके स्तन स्पर्शविषैं या भांति परस्पर नर नारीनिका चित्त अति आसक्त है जहां देवनि कैसे भोग हैं तथापि भोगनिकी अति आसक्तता करि जिनका मन तृप्त न होय जिनका मन सदा इंद्रीनिके विषयविषै अनुरागी है ॥ ९८ ॥ ते विषय अभिलाषी हैं तिनके रंचक मात्र हू तृप्ति नाहीं, जैसे मनुष्यनिके युगल प्रेमके भरे परस्पर रमै हैं तैसेही तिर्यंचनिके युगल परस्पर सुखसूं रमै हैं, कहींइक सिंह सिंहनी कहींइक हाथी अर हथनी कहींइक वराह अर वराहिनी कहींइक अश्व अर अश्विनी कहींइक

मंदिर बन जांय, कैसे हैं मंदिर अनेक हैं स्वर्ण जिनके अर उपवन सहित नाना प्रकारकी शोभाकूं धरैं अति सुखकारी हैं भूमि जिनकी ॥८२॥ दीपांगजातिके कल्पवृक्ष ते अपनी विस्तीर्ण दीर्घ शाखाकरि कमल समान मनोहर कोंपलनिकूं धरैं हैं वे कोंपल दीपक समान अरुण अर उद्योतकारी हैं ॥८३॥ अर तूर्यांग जातिके जे कल्पवृक्ष ते चार प्रकारके अनेक जातिके वादित्रनिकूं उपजावें हैं। वादित्रनिके नाम—तत १ वितत २ घन ३ शुषिर ४। तत कहिए तारका बाजा वीणा तमूरा रवाब आदि अर वितत कहिए चर्मका मढा मृदंग ढोल नगारा डफ इत्यादि अर घन कहिए झालर झांझ मजीरा इत्यादि कांसीका बाजा अर शुषिर कहिए शंख बांसुरी करनाल तुरई इत्यादिकनिका बाजा इन बादित्रनिकूं निपजावै है सो तूर्यांग जातिका कल्पवृक्ष कहिए ॥८४॥ अर भोजनांग जातिका कल्पवृक्ष अतिमिष्ट षट्रसमय चार प्रकारके भोजन उपजावै है। भोजनोंके नाम—अशन कहिए दाल भात रोटी तरकारी आदि १ अर पान कहिए जल दुग्ध तक्र शरवत इत्यादि २, अर खाद्य काहए मेवा मिष्टान्न ३, अर स्वाद्य कहिए लवंग इलायची दालचीनी आदि ॥८५॥ अर भाजन जातिके कल्पवृक्ष थाल कटोरा रकेवी इत्यादि बासन नाना प्रकारके मणि सुवर्णमई देवैं हैं ॥ ८६ ॥ अर वस्त्रांग जातिके कल्पवृक्ष महासुंदर वस्त्र देवें नाना प्रकारके वस्त्र रेशमी पशमीना सूतके तथा चीनके इत्यादि नाना प्रकारके वस्त्र इनकी शाखानिविषै लूमते रहें जो चाहो सो लेहु ॥८७॥ अर मालांग जातिके कल्पवृक्ष नाना प्रकारके पुष्पनिकी माला धरै सोहै हैं मालती मालिका इत्यादि प्रशंसा योग्य जे पुष्प तिनकरि गूंथी जो माला भोगभूमियां इनकूं देहैं ॥ ८८ ॥ अर भूषणांग जातिके कल्पवृक्ष हार कुण्डल केयूर कटिमेखला इत्यादि आभूषणनिकरि शोभित महान भासै हैं स्त्री अर पुरुषनिकूं उचित जो आभूषण देवे हैं ॥८९॥ अर मद्यांग जातिके कल्पवृक्ष स्त्री अर पुरुषनिकूं महा मनोहर कामोत्पात वस्तु दे हैं जा करि मनकी प्रसन्नता होय अर मदनकी वृद्धि होय ॥ ९० ॥ ये कल्पवृक्ष दस प्रकार तिनकरि उपजे भोगभूमियां भोगवै हैं वे भोग चक्रवर्तिके दशांगनितैं अति अधिक हैं ॥ ९१ ॥ जहां गर्भविषै स्त्री पुरुष युगलही रहे हैं

हैं चारों दिशाविषै ता समान मंदिर हैं अर ताके आगे चारों तरफ दूसरे मंडलमें वैसे ही रत्नमई महल हैं ताके आगैं तीसरे मंडलमें पूर्व प्रमाण मंदिर हैं अर चौथे मंडलमें चारों दिशाविषै तीसरे मंडल प्रमाण मंदिर हैं ॥ ७ ॥ अर पांचवें मंडलमें चौथे मंडलके प्रमाणतैं अर्द्ध प्रमाण मंदिर हैं। अर छठे मंडलविषै पांचवें मंडल प्रमाण हैं अर उपजनेके मंदिरकी वेदिका तुल्य दोय मंडलविषै वेदी है अर तीसरे चौथे मंडलकी वेदी उनतैं आधी है अर पांचवे छठे मंडलविषै उनतैं आधी है अर विजयदेवके मंदिरविषै उज्ज्वल चमरछत्र सहित तीन सिंहासन हैं अर मंदिरका पूर्वकी ओर मुख है ॥१०॥ अर उत्तरदिशामें छहहजार सामान्यक देव हैं अर विदिशानिमें छह पटरानीनिके आसन हैं ॥ ११ ॥ अर पूर्वदिशामें अर दक्षिण दिशामें आठ हजार माहिली सभाके देव बसै हैं अर मध्यकी दक्षिण दिशाकी सभाके दस हजार देव बसै हैं अर वारली सभाके वारह हजार देव तिनके निवास पश्चिम अर दक्षिणमें हैं अर पश्चिम दिशातैं सातों सेनाके महत्तर बसै हैं। अर चारों दिशामें अठारह हजार अंगरक्षक जातिके देव बसै हैं अर तिनके अठारह हजार आसन हैं अर अठारह हजार देवी विजयदेवके छह पटराणी सिवाय हैं अर विजयदेवका एक पल्य कछुयक अधिक आयु है ॥ १७ ॥ अर विजयदेवके मंदिरतैं उत्तर दिशाविषैं सुधर्मानामा सभा है सो छह योजन लंबी अर तीन योजन चौडी अर नव योजन ऊंची अर ताकी एक योजनकी औंडी नीव है। वहुरि उत्तर दिशाविषै सुधर्मा सभा समान जिनमंदिर है अर पश्चिम उत्तरविषै उत्पाद सभा है ॥ १९ ॥ अर अभिषेक सभा है अर अलंकार सभा है अर व्यवसाय सभा है यह सब सभा सुधर्मा सभाके समान जानहु ॥२०॥ अर विजयदेवके मन्दिरविषै पांच हजार चार सौ साठ मन्दिर हैं अर विजयके पुरतैं चारों दिशाविषै पच्चीस योजन गए चार वन हैं ॥४२२॥ तिनमें पहला अशोकबन दूजा सप्तपर्ण तीजा चंपक चौथा आम्रवन ॥२३॥ सो ये बन वारह वारह हजार योजन लंबे अर पांच पांच सौ योजन चौडे हैं ॥ २४ ॥ तिनके मध्य मूलवृक्ष अशोक सप्तपर्ण अर चंपक अर आम्र यह चार प्रधान तरु हैं तिनके नायक यह चार वन हैं अर जंबूवृक्षके पीठतैं आधा इनका पीठ है

आसन देवनिके विराजवेके सोहै हैं तिन आसनिके नाम—हंसासन क्रौंचासन मुण्डासन मकरासन सिंहासन गरुडासन दीर्घासन इत्यादि देवनिके मनहरणहारे रत्नमई रमणीक सिंहासन सोहै हैं ॥ ९०॥ अर जंबूद्वीपकी जगतीके चारों दिशा चार दरवाजे हैं तिनके नाम विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित ये चार ॥३९१॥ सो एक एक दरवाजा आठ आठ योजन ऊंचा है अर चार योजन चौड़ा नाना प्रकारके रत्ननि करि देदीप्यमान सोहै है जिनके देदाप्यमान वज्रमई युगल कपाट हैं ॥ ९२ ॥ तिन विजयादि दरवाजनिकी माहिली फिडच प्रत्येक प्रत्येक ऐती ऐती जानहु ७०७१० योजन अर तीन कोस १४२४ धनुषकी तीन हाथ इकतीस अंगुल है अर इस फिडचका धुनुपृष्ठ ७९०५६ योजन ३ कोष १५३२ धनुष अर सात अंगुल ॥९६॥ अर चारों दरवाजनिमें परस्पर अंतर जितना धनुपृष्ठका कहा ताही प्रमाण चार योजन घाटि जानहु, यह दरवाजनिका अंतर अंतर्यामीने कह्या ॥ ९७ ॥ अर या विजय नाम द्वारका द्वारपाल विजय नामा देव ताका नगर या जंबूद्वीपतैं संख्यात द्वीप समुद्रनिके परे दूजा जम्बूद्वीप है ताका पूर्वदिशाविषै सोहै है सो वह पुरुवेदिका कहिए, कोटकी भीति ताकरि मंडित बारहहजार योजनके विस्तार सोहै है नगर महा मनोहर अति अद्भुत सर्व उर सुन्दर चार तोरणनिकरि संयुक्त है ता नगरके कोटकी भीति आठ योजनका तीजा भाग अग्र विषै चौडी है अर तातैं चौगुणी मूलविषै चौडी है अर ऊंची साढे सैंतीस योजन है। अर ताकी नींव आध योजन उंडी है अर ता नगरके एक एक दिशाप्रति पचीस पचीस दरवाजे हैं सो दरवाजे सवाइकतीस योजन चौडे हैं अर साढे बासठ योजन ऊंचे हैं अर दरवाजेके ऊपर सतरह खणा महल है सो महल सुवर्णमय है, सर्व रत्नमय है अर दरवाजेनिके मध्य देवनिके उपजनेका स्थानक है सो स्थानक १२०० योजनका चौडा है अर एककोसका मोटा है ताके चौगिरद भीति दो कोसकी ऊंची अर पांचसौ धनुष चौडी है चार तोरणादिकर संयुक्त है ॥ ४०३ ॥ अर दरवाजे प्रमाण नगरके मध्य हैं ताका द्वार आठ योजन ऊंचा अर चार योजन चौडा है ताका स्वामी विजयनामा देव है सो दरवाजा बज्रमणिमई है अर ताके मणि स्वर्णके कपाट

मन्दिर, शैलराज, वसंतप्रिय, दर्शन ॥ ७५ ॥ रत्नोच्चय, दशांग आदि लोकनाभि, मनोरम लोकमध्य दिशांग अति दिशमुत्तर, सूर्याचरण, सूर्यावर्त्त, स्वयंप्रभ या भांति विवेकी वर्णवें हैं ॥ ७६ ॥ या सुमेरुकरि शोभित जो जंवूद्वीप ताकी चौगिरद जगती कहिये कोटकी भीति सोहै है सो जगती आठ योजन ऊंची अर मूलविषै बारह योजन चौड़ी अर मध्यविषै आठ योजन चौड़ी उर्द्धविषै चार योजन चौड़ी है अर आठ योजनकी है ऊण्डी नींव जाकी ॥ ७९ ॥ सो जम्बूद्वीपकी जगती मूलविषै तो सर्वरत्न मई है अर मध्यविषै वैडूर्यमणि मई है अर मूलविषै वज्र मणिमई है सो सब दिशाविषै उद्योत करती सोहे है अर ता जगतीके आगे दूजी कोटकी भीति जाहि वेदिका कहिए सो वह वेदिका जगतीको वेढे सोहै है सो दो कोस ऊंची अर ५०० धनुष आद्योपान्त चौडी सोहे है ॥ ८१ ॥ सो जगती बाहर अर वेदिकाके अभ्यन्तर देवारण्यनामा वन है सो सुंदर सुवर्णकी शिला अर वापिका अर जो महल उन कर अति सोहे है जा विषै न्यून वापिका तो १०० योजन चौड़ी है अर दश धनुष ऊंडी है अर मध्य वापिका १५० धनुष चौड़ी है अर १५ धनुष ऊंडी है अर उत्कृष्ट वापिका २०० धनुष चौडी अर २० धनुष ऊंडी है अर ता वनविषै छोटे मंदिर पचास धनुष चौडे अर सौ धनुष लम्बे अर ७५ धनुष ऊंचे हैं ॥८४॥ अर तिन छोटे मन्दिरनिके दरवाजे छह धनुष चौडे अर बारह धनुष ऊंचे हैं अर जिनकी नींव चार धनुष ऊंडी है ॥ ८५ ॥ यह लघु मन्दिर कहे तिनतैं द्विगुण वा त्रिगुण मध्य मंदिरनिकी लंबाई चौडाई ऊंचाई जानहु अर मध्य मंदिरनितैं उत्कृष्ट मंदिरनिकी द्विगुणी ही जानहु अर दरवाजेनिका विस्तार हू याही रीति है अर दरवाजेनिकी नीवकी ऊंडाई दूनी ही जानहु। इन गृहोंमें मालवोंकी पंक्ति अर कदली आदि बृक्ष अर प्रक्षागृह १ भोजनगृह २ सभागृह ३ वीणागृह ४ गर्भगृह ५ लतागृह ६ चित्रगृह ७ आभारणगृह ८ यह महारमणीय गृह हैं ॥ ८७ ॥ अर मोहनस्थान नामा महारमणीक रत्नमई गृह सोहै हैं, इन मन्दिरनिमें किन्नर किंपुरुष आदि व्यंतर देव क्रीड़ा करै हैं अर मन्दिरनिमें स्फटिकमणिमई अर मूंगा मणिमई अर नानाप्रकार मणिमई अनेक प्रकारके मनोहर

इत्यादि चित्रनिकर मंडित हैं ॥ ६२ ॥ अर तिनके चैत्यालयनिमें रत्नमई पांचसौ धनुष ऊंची एकसौ आठ प्रतिमा हैं ॥ ६३ ॥ अर नागकुमार देवनिके युगल अर यक्षनिके युगल तिनकी मूर्ति है तिनके हाथनिमें चमर हैं अर सनत्कुमार माहेंद्रकी मूर्ति है तिनके हाथानिमें चमर हैं ॥ ६४ ॥ अर झारी कलश दर्पन ध्वजा शंख ताडवीजना आरती धूपदान यह अष्टमंगल द्रव्य प्रत्येक प्रत्येक एकसौआठ २ प्रतिमा संबंधी है अर झालरि झांझ मजीरा नगारा ढोल आदि वादित्र एक एक प्रतिमा संबंधी एकसौ आठ एकसौ आठ हैं अर अकृत्रिम चैत्यालयनिके झरोखा गृह जाली शोभायमान हैं अर मूंगा मोतीनिकी झालरी नानाप्रकारके रत्न अर स्वर्णके कलश अर क्षुद्र घंटिका अदभुत सोहै हैं अर चैत्यालयनिके रत्न स्वर्णमई कोट सोहै हैं सो चार योजन ऊंचा अर मूलविषैं छै योजन चौडा अर मध्यविषैं चार योजन चौडा अर ऊर्ध्वविषैं दो योजन चौडा अर जाकी दो कोसकी नींव है अर आठ योजन ऊंचे अर चार योजन चौंडे चार दिशानिमें चार तोरण हैं अर चैत्यालयनिके कोटका द्वार पचास योजन ऊंचा है। अर उन अकृत्रिम चैत्यालयनिमें दसप्रकारकी ध्वजा हैं ॥६६॥ उनमें सिंह, हंस, गज, कमल वस्त्र वृषभ मयूर गरुड चक्र अर माला इनके चिन्ह हैं एक एक जातिकी ध्वजा एकसौ आठ २ ध्वजा सो दस जातिकी १०८० ध्वजा एक एक दिशामें है। जहां भगवानकी अकृत्रिम प्रतिमा विराजैं हैं सो गंधकुटी है अर गंधकुटीके आगैं सभामंडप है अर तिनके आगे नृत्यमंडप है अर ताके आगैं रत्ननिके स्तूप हैं अर रत्न स्तूपनिके आगैं चैत्यवृक्ष हैं अर चैत्यवृक्षनिके नीचे एक एक जिनप्रतिमा है यह सुमेरुके चैत्यालयनिका वर्णन किया सो जिनगृहतैं पूर्वदिशाविषैं नन्दी नाम द्रह है जिसका जल अति निर्मल है जामें मच्छ कच्छादिक जलचर नाहीं ॥ ७३ ॥ अर यह सुमेरु नाना प्रकारके आश्चर्य करि भरया है मूलविषैं तो वज्र मणिमई है अर चूलिकाविषै वैडूर्यमणि मई है। अर मध्यविषै स्वर्णमणिमई हैं अर देवनिका निवास है या मेरुकी शोभा कहिवेमें न आवै ॥ ७४ ॥ या मेरुको एते नामनिकरि ग्रन्थनिमें ज्ञानवान् वर्णन करें हैं, मेरु, महामेरु, सुमेरु, सुदर्शन,

सूचीं मेरु अन्तरालविषै ६७४८४२ योजनकी है अर या सूचीकी प्रदक्षिणा २१३४०३० योजनकी है अर क्षेत्रका विस्तार ९६०३ योजन अर एक योजनके आठ भाग करिए तिनमें भाग तीन लेने अर बिदेहक्षेत्र अर वक्षारगिरि विभंगा नदी अर देवरण्या वन इनकी लम्बाई आदि मध्य अंतके भेदतैं तीन प्रकार है ॥ ४६ ॥ अर कक्षा नामा विदेहकी आदि लम्बाई ५९५०७० योजन अर १२९ योजनके २१२ भाग करिए तिनिमें २०० भाग लेने ॥ ४७ ॥ विजय कहिए क्षेत्र ताका आदिकी लम्बाई मध्यतैं मिलाइए तब मध्यकी अधिक होय, अर मध्यकी लम्बाई अन्तमें मिलाइए तब अन्तकी अधिक होय। पर्वतकी नदीनिकी अन्तकी लम्बाई तो देशकी आदि लम्बाई है देशकी लम्बाईकी वृद्धि ४५८४ योजनकी है अर वक्षारगिरिकी लंबाईकी बृद्धि ४७७ योजन अर ६० कलाकी है कलाका कथन ऊपर लिखा ही है अर विभंगा नदीनिकी वृद्धि ११९ योजन अर वावन कला जानहु, यह सब चरचा सर्वज्ञ वीतराग देवने कही है। अर देवरण्यकी लंबाई वृद्धि २७८९ योजन अर ९२ कला ॥ ५३ ॥ अर पद्म नाम देशकी लंबाई २९४६२३ योजन अर ११६ कला ॥ ५४ ॥ अर जो पहले भागमें वृद्धि हीनता सो मध्य, जो मध्य वृद्धि सो अंत मध्य सो ऐसे वक्षारगिरि अर विदेहक्षेत्र अर विभंगा नदी इनकी लंबाई या भांति कही ॥५५॥ यह विदेहक्षेत्र अर वक्षारगिरि अर विभंगा नदी अर सीता शीतोदा दोऊ नदीनिके तटविषैं परस्पर सन्मुख हैं अर समान है लंबाई जिनकी ॥५६॥ अर पूर्व मेरुतैं पूर्व विदेह अर पश्चिम मेरुतैं पश्चिम विदेह हैं ये सब समान हैं ॥५७॥ जो या जंबूद्वीप समान १४४ खण्ड होय हैं तेता धातकीखंडका फैलाव है॥५९८॥ सो ११३८४१ कोडि अर ९९५७६६१ योजनका फैलाव है ॥६०॥ या धातकीखंडकूं कालोदधि समुद्र वेढै है सो कालोदधि आठ लाख योजन चौडा है सो धातकी खंडतैं दूना चौडा है सो कालोदधिकी प्रदक्षिणा इक्यानवैं लाख सत्तरहजार छहसौ पांच योजन अधिक है ॥६२॥ अर जंबूद्वीप सारिखे छहसौ बहत्तर खंड भेले करिए एते भेले करिए तो उतना विस्तार कालोदधिका है ॥ ६३ ॥ कालोदधिका समस्त फैलाव ५३१२६२ कोडि

२९५६७ योजनकी है अर नन्दनबनतैं परे सुमेरुकी चौडाई ८३५० योजनकी अर नन्दन बनकी माहिली प्रदक्षिणा २६४०५ योजनकी है अर सौमनस बनविषै सुमेरुकी बाह्य चौडाई ३८०० योजनकी है अर माहिली चौडाई २८०० योजनकी है अर सौमनस बनविषै सुमेरुकी बाहरली प्रदक्षिणा १२०१६ योजनकी है अर माहिली ८८५४ योजनकी है ॥ २५ ॥ अर पांडुक बनविषै सुमेरुकी प्रदक्षिणा ३१६२ योजन अर एक कोस कछुयक अधिक है ॥ २६ ॥ अर भूमितैं दस हजार योजन तो सुमेरुकी चौडाई है अर ऊपर १०००० योजन परे दशमे भाग चौडाई घटी तब शिरोभागविषै हजार योजनकी चौडाई है ॥ २८ ॥ अर पांचों मेरुके चैत्यालय अर चूलिका अर वापिका सरोवरी तथा पांडुकशिला आदि अर कूट अर मंदिर तिनकी चौडाई अर ऊंचाई अर ऊंडाई समान है अर धातकीखण्डके मेरुके भद्रशाल बनका विस्तार १२२५ योजनका है ॥ ३० ॥ अर भद्रशालकी दीर्घता धातकीखण्ड द्वीपविषै १०७८७९ योजन है अर गन्धमाधन पर्वतकी लम्बाई ३५६२२७ योजन है अर इतनी ही विद्युतकी है ॥ ३२ ॥ ५६९२५९ योजनकी लम्बाई माल्यवान अर सौमनसकी है इन दोऊ गजदन्तनिकी समान जानहु ॥ ३३ ॥ अर देवकुरुकी चौडाई कुलाचलनिके समीप २२३१५८ योजनकी है ॥ ३४ ॥ अर सुमेरुतैं लेकर कुलाचलनि लग देवकुरुकी वक्र लम्बाई ३९७८९७ योजन अर बानवै कला है एक सौ गुणतीस योजनके दो सौ बारह भाग करिए तिनमें बानवें भाग लेने धातकी खंड द्वीपविषैं दो मेरु हैं सो पूर्वार्द्ध अर पश्चिमार्द्धविषैं यह वर्णन जानना। अर देवकुरुकी सूची लंबाई ३६६६८० योजनकी है ॥ ५३७ ॥ अर एक एक मेरु सम्बंधी बत्तीस बत्तीस विदेह तिनमें १६ पूर्व विदेह पश्चिमविदेह हैं ॥ ३८ ॥ तिनमें पूर्व मंदिर मेरु संबंधी कक्षा नामा पूर्व विदेह है, पश्चिम मेरु सम्बन्धी गन्धमालिनी नामा पश्चिम विदेह है ॥ ३९ ॥ इन दोऊका विस्तार समान है सो इनकी सूची कहिये सूधी डोरी, ग्यारह लाख पच्चीस हजार एक सौ अठावन योजनकी जानहु अर इनकी प्रदक्षिणा ३५५८०६२ योजनकी है अर पद्मनामा विदेह अर मंगलावती पश्चिम विदेह इनकी

उनतीस योजनके दोसौ बारह भाग करिए तिनमें १९ भाग अधिक एती चौडाई कुलाचलके समीप है अर मध्य विस्तार १२५८१ योजन अर ३६ कला जानहु अर अंतकी चौडाई १८५४७ योजन अर एकसौ उनतालीसोंके दो सौ चार भाग करिए तिनमें १५५ भाग लेने अर भरततैं चौगुणा हैमवत् पर्वत अर हैमवततैं चौगुणा विस्तारसहित हरि अर हरितैं चौगुणा विस्तार विदेह अर हरि प्रमाण रम्यक्र अर हैमवत् प्रमाण हैरण्यवत अर भरत प्रमाण ऐरावत्का विस्तार जानहु ॥५०३॥ अर जो कुलाचलनिका विस्तार जंबूद्वीपविषैं कहा तातैं दूना धातकीखंड विषैं जानहु तहां बारहकुलाचल हैं अर पुष्करार्द्धद्वीपविषैं भी बारह कुलाचल जानहु अर इन अढाईद्वीपनिविषैं जंबू वृक्षादि वृक्ष अर वक्षारपर्वत अर कोटकी भीति तिनकी ऊंचाई ऊंचाईतैं चौथाई जानहु अर पंचमेरुकी उंचाई हजार हजारयोजनकी है अर ऊंचाई विशेष अर धातकीखंडके कुण्डकी चौडाई जंबूद्वीपके कुण्डकीचौडाईतैं छे गुणी है अर तहांकी नदी अर द्रहनिकी चौडाई यहांके नदी द्रहनिकी ऊंचाईतैं पचास गुनी है अर जंबूवृक्ष आदि दश महावृक्ष समान हैं अर नदी सरोवर बनकुंड कमल पर्वत द्रहनिकी ऊंडाई जंबूद्वीप समान है ॥ ८ ॥ अर चैत्य चैत्यालय वृषभाचल नाभिगिरि चित्रकूट कांचनगिरि दिग्गज पर्वतकूट वेदिका इनकी चौड़ाई ऊंचाई सर्व अढाई द्वीपमें समान है। अर सर्व कूटनिके आधे योजन ऊंचे अर पांचसौ धनुष चौड़े सर्व कूटनिके रत्नमय तोरण जानहु अर धातकीखंड अर पुष्करार्द्धविषैं चार मेरु तो चौरासी २ हजार योजन ऊंचे हैं अर हजार २ योजन ऊंडे हैं अर पिंचानवे सौ पिचानवें योजन मूलविषैं चौडे हैं, अर मूलविषैं प्रदक्षिणा ३०४२ योजनकी है अर १००० योजन भूमिविषै कन्द है तहां ९४०० योजन की चौडाई है अर भूमि मांहि प्रदक्षिणा २९७२५ योजनकी है अर पांच सौ योजन ऊंचे चढिए तहां उनके नन्दन बन हैं अर नन्दनबनतैं ५५५०० योजन ऊंचे चढिए तहां सौमनस बन है ॥ १७ ॥ अर सौमनस बनतैं २८००० योजन ऊंचे चढिए तहां पांडुक बन है अर नन्दनबनविषै सुमेरुकी चौडाई ९३५० योजन की है ॥ १९ ॥ अर नन्दनबनकी वाह्य प्रदक्षिणा

तब बारहलाख योजन भया ताहि दोऊ लाख समुद्रकी चौड़ाईतैं गुनिए तब चौबीस लाख योजन होय ऐसे लाख लाख योजन जंबूद्वीप प्रमाण लवणसमुद्रमें चौवीस खंड समावैं हैं अर धातकीखंडमें जंबूद्वीप समान एक-सौ चवालीस खँड समावैं हैं ॥ ८८ ॥ अर कालोदधिमें छहसौ बहत्तर खंड समावैं हैं अर पुष्करार्द्ध द्वीपविषैं दो हजार आठसौ अस्सी जंबूद्वीप प्रमाण खंड समावैं हैं ॥८९॥ जैसैं जंबूद्वीपकूं लवणसमुद्र बेढै है तैसे लवणसमुद्रकूं धातकीखंड वेढै है सो धातकीखंड द्वीप चार लाख योजनका चौडा है गोल आकृति है ताकी आभ्यंतरकी सूची पाचलाख योजनकी है अर मध्यसूची नौ लाख योजनकी है अर बाह्यकी सूची तेरह लाख योजनकी है ॥९०॥ अर धातकीखंडकी प्रदक्षिणा पंद्रहलाख इक्यासी हजार एकसौ उनतालीस योजनकी है ॥ ९१ ॥ यह तो आभ्यंतरके सूचीकी प्रदक्षिणा कही अर मध्यसूचीकी प्रदक्षिणा अठाईस लाख छ्यालीस हजार पचास योजनकी है अर बाह्य-सूचीकी प्रदक्षिणा इकतालीसलाख दसहजार नौसो इकसठ योजनकी है ॥९३॥ अर धातकीखंड द्वीपविषै दो महामेरु हैं एक पश्चिमकी ओर अर एक पूरबकी ओर दोऊहू इष्वाकार पर्वत हैं एक दक्षिण ओर है एक उत्तरकी ओर है ते दोऊ हजार हजार योजन चौडे हैं अर चार चार लाख योजन लंबे हैं अर चार चारसौ योजन ऊंचे हैं अर सौ सौ योजनकी उनकी नीव है ॥ ९५ ॥ अर जंबूद्वीपविषैं भरतादि सप्तक्षेत्र अर षट् कुलाचल पर्वत हैं सो धातकीखंड विषै भरतादि दो उनके चौदह क्षेत्र अर कुलाचल दो दो उनके बारह कुलाचल एक मेरु संबंधी सात सात क्षेत्र अर छहछह कुलाचल हैं सो दो मेरु संबंधी दूने जानहु ॥ ४९६ ॥ अर जे जंबूद्वीपविषै पहिली पर्वत नदी द्रह तिनके नाम कहे तेही नाम तिनके जानहु। यहां एक वहां दो अर ऊंचाईमें अर चौडाईमें तो वहांके पर्वतादि यहांके समान अर चौढाईमें द्विगुण विस्तार जानहु, ते पर्वत अर क्षेत्र मध्यकी तरफ तो पैयेके आराके आकार हैं अर बाहरली तरफ खुरपेके आकार हैं ॥ ९८ ॥ सो धातकीखंड द्वीप एक लाख अठहत्तर हजार आठसौ ४२ योजन तो भरतादिक्षेत्र पर्वतकर रुक्या है ॥ ९९ ॥ अर धातकीखंडके भरतक्षेत्रका विस्तार ६६१४ योजन अर एकसौ

द्वीप अर नंदीश्वरसमुद्र ८ अर अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र ९ अर अरुणोद्भासनामाद्वीप अर अरुणोद्भासनामा समुद्र १० अर कुंडलवरद्वीप अर कुंडलवरसमुद्र ११ अर शंखवरद्वीप अर शंखवरसमुद्र १२ अर रुचकवरद्वीप अर रुचकवरसमुद्र १३ अर चौदवां भुजंगवरद्वीप भुजंगवरसमुद्र १४ अर पद्रहवां कुसमवरद्वीप कुसमवरसमुद्र १५ अर सोलवां क्रौंचवरद्वीप अर क्रौंचवरसमुद्र १६ ये सोलह ही द्वीप समुद्रनिके नाम कहे, याहीभांति असंख्यात द्वीप अर असंख्यातसमुद्र हैं, सो द्वीपकूं वेढै समुद्र अर समुद्रकूं वेढै द्वीप ऐसे दूने २ विस्तार जानहु। अर सोलह आदिके द्वीप समुद्र कहे याही भांति अंतके सोलह कहे तिनमें पहिला मनशिल १ दूजा हरिताल २ तीजा सिंदूर ३ चौथा श्यामक ४ पांचवां अञ्जन ५ छठा हिंगुल ६ सातवां रूपवर ७ आठवां सुवर्णवर ८ नवमा वज्रवर ९ दसवां वैडूर्यवर १० ग्यारहवां नागवर ११ बारहवां भूतवर १२ तेरहवां यक्षवर १३ चौदहवां देववर १४ पंद्रवां इन्दुवर१५ सोलवां स्वयंभूरमण १६ ये जो अंतके द्वीपनिके नाम कहे तेही नाम समुद्रनिके जानहु। जंबूद्वीपादिक सोलह प्रथम राशि अर मनशिल आदिक अंतकी राशि इन दोऊ राशीनके मध्य असंख्यात द्वीपसमुद्र अनादिकालके हैं तिनके मनोहर शुभनाम हैं ॥ २३ ॥ असंख्यात जो समुद्र कहे तिनमें लवणोदधि तो लवणसमान क्षार जल है अर वारुणीवर समुद्रका वारुणी कहिए मदिरा ता समान है जलका स्वाद जाका अर घृतवरका घृतसमान अर क्षीरसागरका दुग्धसमान अर दूजा कालोदधि अर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र इनका जल मिष्ट जल समान है अर पुष्करोदधिका जल मधु कैसा स्वाद है अर सर्व असंख्यात समुद्रनिका जल इक्षुरस समान है अर पहिला लवणोदधि दूसरा कालोदधि अर अंतका स्वयंभूरमण इन तीनों ही समुद्रनिमें जलचर जीव हैं अर सबनिमें जलचर जीव नाहीं केवल जलकाय स्थावर ही हैं। अर लवणसमुद्रविषै तीरां सम्मूर्छन महामच्छ नौ योजन दीर्घ है अर मध्यविषै लवणोदधिमें अठारह योजन दीर्घ है सम्मूर्छन मच्छ हैं॥ २६ ॥ अर कालोदधिविषै सम्मूर्छन मच्छनिके संगमविषै अठारह योजन दीर्घ हैं अर मध्यविषै छत्तीस योजन लंबा मच्छ है। यह तो सम्पूर्ण मच्छोंकी दीर्घता

निमें मनोग्य स्थलविषै अठारह शिखरी हैं ते शिखर ५०० योजन ऊंचे हैं अर मूलविषै ५०० योजन चौडे हैं अर उर्द्धविषै अढाईसौ योजन चौडे हैं ॥९८॥ चार दिशानिमें अर चार विदिशानिमें तीन तीन कूट हैं ईशान दिशामें बज्र कहिये हीरामई कूट हैं अर आग्नेय दिशामें तपनीय कहिये ताया सोना समान कूट है अर पूर्व दिशामें वैडूर्य नामा कूट जाका यशस्वान् नामा देव स्वामी है अर अगर्भनामा कूटविषै यशकांतनामा गरुडकुमारदेव स्वामी है अर सुगंधि कूटविषै यशोधरनामा देव स्वामी है। अर दक्षिणदिशामें रुचक नामा कूट तहां नंदननामा देव स्वामी है अर लोहितकूटविषैं नंदोत्तर देव स्वामी है ॥ ६०० ॥ अर ताही दिशामें अंजन कूटविषैं असनिघोस देव बसे है अर पश्चिम दिशामें अञ्जनमूलविषैं सिद्धदेव बसे है, अर कनक कूटविषैं क्रमण नामा देव बसे है, अर रजत-कूटविषैं मनुष्यदेव बसै है अर उत्तर दिशामें स्फटिक कूटविषै सुदर्शन नामा देव बसै है। अर अंकनामा कूटविषैं मोघ नामा देव बसै है अर प्रवाल कूटविषैं सुप्रबुद्ध देव है। अर तपनीय कूटविषैं सुरस्वति है अर वज्रकूटविषैं हनूमान नामा देव है अर दक्षिण अर पूर्वके कोणविषैं निषध नामा कूट तामें वेणुनामा नागकुमारदेव बसै है अर नीलाचलके पिछले भागविषै पूर्व उत्तर दिशामें सर्वरत्न नामा कूट ता विषैं वेणुरी नामा गरुणकुमारदेव बसै है अर निषधाचलके पिछले भागविषैं दक्षिण पश्चिम दिशाविषै भाग विलंब नामा कूटविषै अति विलंब वरुणदेव बसै है ॥ ७॥ अर नीलाचलके पिछले भागविषै पश्चिम उत्तर दिशामें प्रभंज नामा देव पवनकुमार बसै है, ऐसा अनेक आश्चर्य करि संयुक्त सुवर्ण मय महामानुषोत्तर नामा ये पर्वत मनुष्यक्षेत्रके कोटकी न्याईं चौगिर्द सोहै है। या पर्वतके परली ओर मनुष्य विद्याधर तथा ऋद्धिधारी मुनि भी न जा सकै हैं, बिना समुदघात मनुष्यका प्रदेश भी मानुषोत्तर परे न जा सकै है, अर जैसे जम्बूद्वीपके चौगिरद लवणसमुद्र १ अर धातकीखण्डके कालोदधि २ अर पुष्करद्वीपके चौगिरद पुष्कर समुद्र है ३ याही भांति वारुणीवरद्वीप अर वारुणीवर समुद्र ४ अर क्षीरवरद्वीप अर क्षीरवरसमुद्र ५ अर घृतवरद्वीप घृतवरसमुद्र ६ अर इक्षुवरद्वीप अर इक्षुवरसमुद्र ७ अर नंदीश्वर

ममेरु सो जैसे धातकीखण्डके दोय मेरुका विस्तार कह्या ताही प्रमाण पुष्कराद्धके मेरुका विस्तार जानहु ॥ ७४ ॥ अर धातकीखण्डकीसी न्याई क्षेत्र नदी पर्वत आदि सब रचना जानहु ॥ ७५ ॥ इकतालीस हजार पांचसौ उनासी योजन अर एक सौ तिहत्तर अंश तहांके भरतक्षेत्रका मध्यवर्ती आदि विस्तार है। अर मध्य विस्तार ५३५१२ योजन अर १९९ अंश है अर बाहरला विस्तार तहांके भरत क्षेत्रकी ६५४४६ योजन अर १३ अंश है ॥७८॥ अर भरत क्षेत्रतैं लेकर विदेहक्षेत्र पर्यंत क्षेत्र चौगुणा है अर पर्वततैं पर्वत चौगुणा सर्वज्ञदेवने कहा है, अर ये अंश जो कहे सो एक योजनके दो सौ बारह अंश तामें एक ठौर १७३ लिये अर एक ठौर १९९ लिये अर एक ठौर १३ लिये अर १४२३०२४९ योजन पुष्कराद्धकी बाहरली प्रदक्षिणा कही अर ३९५६८४ योजन क्षेत्र पर्वतनिसूं रुक्या है अर विजयार्द्ध तथा नाभिगिरि अर कुलाचल इनकी ऊंचाई अर ऊंडापन जम्बूद्वीपकेनिकी कही ता समान जानहु अर चौड़ाई धातकीखंडकेनितैं द्विगुणी जानहु, अर दो मेरु पुष्कराद्धविषै समान हैं अर इष्वाकार भी दोऊ समान हैं ॥८७॥ अर मनुष्य क्षेत्रका विस्तार पैंताळीस लाख योजन है तामें अढाई द्वीप अर दो समुद्र आगये अर मानुषोत्तर पर्वत १७२१ योजन ऊंचा है अर ४३० योजन अर एक कोसका तीसरा भाग भूमिविषै ऊंडा है मूलविषै १०२२ योजन चौडा है अर मध्यविषै ७२३ योजन चौडा है अर ऊर्द्धविषै ४२४ योजन चौडा है अर एक कोटि बयालीस लाख छत्तीस हजार सात सौ तेरह योजन मानुषोत्तर पर्वतकी प्रदक्षिणा है, मध्यभागविषैं समान है बाहिर क्रम करि तिरछा ऊंचा है अर अभ्यन्तर मुख कर बैठे सिंहके आकार है, भीति इनकी सूधी ऊंची हैं ऐसा आकार है ॥ ९३ ॥ अर मानुषोत्तर पर्वत विषै चौदह गुफा हैं यह पर्वत पूर्व पश्चिम दिशाकी जे नदी तेई भई स्त्री तिनिकूं पुष्कराद्ध समुद्रविषै जायवेकूं मार्ग देवे हैं, जा दरवाजे होय नदी जाय हैं, सो दरवाजा पचास योजन लम्बा पचीस योजन चौडा अर साढा सैंतीस योजनका ऊंचा है अर मानुषोत्तर पर्वत पर चारों दिशा चार चैत्यालय हैं अर गुफानिके द्वार आठ योजनके ऊंचे अर चार योजन चौडे हैं अर ता पर्वतके चारों दिशा-

६४६९०८० एते योजनका फैलाव है ॥ ६४ ॥ अर कालोदधिकी पश्चिमदिशाविषै कुभोगभूमिया मनुष्य उदक मुख हैं अर दक्षिणदिशाविषैं अश्वकर्ण हैं अर पश्चिमदिशाविषैं पक्षीनिके मुखवाले कुमानुष हैं अर उत्तरदिशाविषैं गजकर्ण हैं अर विदिशाविषैं सूकरमुख उष्ट्रकर्ण गोकर्ण अर मन्दारमुख अर मंजारमुखतैं गजकर्ण अर अश्वकर्णके दोऊ पसवारे हैं अर जे पक्षीनिके मुख तिनके समीप गजमुख हैं अर कर्ण प्रावरण कहिए एककान विछावैं एक कान ओढें ॥ ६८ ॥ शिशुमार जातिका जो जलचर ता समान है मुख जिनके ऐसे जे कुमानुष ते कालोदधिविषै विजयार्द्धके दोऊ छेहरा जिनपर जे अंतरद्वीप तिनविषै तिष्ठै हैं ॥६९॥ अर हिमवान् पर्वतके अग्रभागविषै कालोदधिमें व्याला कैसे मुख अर व्याघ्र मुख तिष्ठै हैं अर स्यालमुख अथवा पासा सारिखामुखतैं शिखरी पर्वतके अग्रभागविषै तिष्ठै हैं ॥ ७० ॥ अर चीता सारिखे मुख अर झारी सारिखे मुख ऐसे कुभोगभूमियां रूपाचलके अग्रभागविषै तिष्ठै हैं अर द्वीपकी जगती कहिए कोटकी भीति अर समुद्रकी भीति इनके मध्य एक मनुष्य है जगतीके समीप चीतामुखी हैं ॥ ७१ ॥ यह सब कुमानुष एक पल्यके आयुके धारक एक दिनके अन्तर मीठी गारि अर पुष्प फलके भक्षक गुफाके मध्य अर तरुके तले रहणहारे व्यन्तर अर भवनबासी देवनिकी गतिमें गमन करणहारे, लवणोदधि ही समान कालोदधिमें जानहु। पांच सौ कछु इक अधिक कालोदधिमें अन्तर द्वीप हैं, ते लवणोदधितैं द्विगुण द्विगुण विस्तार जानहु। अर यह समुद्रमें द्वीप हजार योजन ऊंचे हैं समुद्रके तट पर्यन्त हैं कुभोगभूमिके चौबीस द्वीप तो अंतर विषैं तिष्ठै हैं चौबीस ही बाहर तिष्ठै हैं, कालोदधिके अर लवणोदधिके भेले किए तो सकल छानवे हैं ॥ ७३ ॥ अर कालोदधिकूं बेढैं पुष्करद्वीप है सो पुष्करद्वीप वटके वृक्ष कर शोभित है कालोदधितैं दूना चौडा है याके मध्यमें मनुष्यक्षेत्रकी मर्यादाका करणहारा मानुषोत्तर पर्वत है ताकर पुष्करार्द्ध कहावै है, द्वीपके मध्यविषै यह गिरि है तहांतक मनुष्यका गमन है आगे मनुष्यका गमन नाहीं, ता पुष्करार्द्धविषै दोय मेरु हैं एक पूर्वमेरु एक पश्चिममेरु अर दक्षिण उत्तरकी ओर इष्वाकार पर्वत हैं एक पूर्वमेरु एक पश्चि-

दधिमुख अर वत्तीस रतिकर हैं यह चार दिशाविषै बावन बावन पर्वत हैं एक एक दिशाविषै तेरह २ पर्वत हैं इन बावन पर्वतनिविषै भगवानके बावन चैत्यालय हैं एक एक गिरिविषै एक एक चैत्यालय है तिन चैत्यालयनिकरि ते पर्वत महापवित्र हैं गिरिनिके शिखर पर चैत्यालय हैं तिनके पूर्वकी ओर मुख हैं अर १०० योजन लंबे अर ५० योजन चौडे हैं अर ७५ योजन ऊंचे हैं अर चैत्यालयनिके द्वार आठ योजन ऊंचे हैं अर चार योजन चौडे हैं अर चारही योजनकी नींव है एक एक देवलके तीन २ द्वार हैं ते नंदीश्वरद्वीपके बावन चैत्यालय देवनिकरि पूज्य हैं तिनविषै रत्नमई पांचसौ धनुषकी प्रभुकी प्रतिमा विराजै है तिन चैत्यालयनिविषै फाल्गुन आषाढ और कार्तिककी अठाईविषै नितप्रति इंद्रादिक देव उत्साहसहित पूजा करै हैं अर सोलह बापिकानिके बन ६४ तिनमें नागकुमार देवनिके चौसठ मंदिर हैं जो वनका नाम सोई देवनिका नाम अर देवनिके मंदिर बासठ योजन ऊंचे अर इकतीस योजन लंबे अर एते ही चौडे अर तिनके द्वारनिका प्रमाण पूर्व कह्या ता प्रमाण जानहु ॥८०॥ अर नंदीश्वरद्वीपके परे अरुणद्वीप अर अरुण समुद्र है, सो महाअंधकार युक्त है सो ब्रह्म स्वर्गपर्यंत अंधकार है वा समुद्रके बाह्य आठ मृदंगाकार श्याम पंक्ति घनाकार हैं वा समुद्रके पार अल्पऋद्धिके धारक देव गैल भूलि जाय हैं तातैं महाऋद्धिवान् देवनिके साथ जाय हैं ॥ ८१ ॥ अर कुण्डलगिरि द्वीपविषै कुंडलगिरि पर्वत है सो गोल है पर्वतकी राशिके तुल्य है ता पर्वतकी हजार योजनकी नींव है अर बियालीसहजार योजन ऊंचा है मणीनिके समूहकरि दैदीप्यमान है सो पर्वत मूलविषै १०२२० योजन चौडा है अर मध्यविषै ७१६१ योजन चौडा है अर अग्रभागविषै ४०९६ योजन चौडा है ता पर्वतपर चारों दिशामें चार २ कूट हैं सो समस्त सोलह कूट हैं तिनमें सोलह देव हैं पूर्वदिशाविषै वज्रकूट है ताविषै त्रिशिरानामा देव है अर दूजा वज्रप्रभ नामा कूट है ताविषै पंचसिरप्रभनामा देव बसै है अर तीजा कनककूट ताविषै महासिरानामा देव बसै है अर चौथा कनकप्रभ नामाकूट है ताविषै महाभुज नामा देव बसैं है यह चार तो पूर्व दिशाके कहे अर दक्षिण दिशाविषै

दूजा इंद्र वैरोचन क्रीडा करै है ॥ ५५ ॥ अर दक्षिण दिशाके अंजनगिरि संबंधी विजया १ वैजयंती २ जयंती ३ अपराजिता ४ ये चार वापिका जो पूर्व नंदा आदि प्रमाण कही उनही प्रमाण जानहु तिनविषै इंद्रके चार लोकपाल क्रीडा करै हैं, विजयाविषै सोम वैजयंतीविषै वरुण जयंतीविषै यम अपराजिताविषै कुवेर ये चारों लोकपाल इनविषै लीला करै हैं ॥ ६५६ ॥ अर पश्चिम दिशाकी अंजनगिरि संबंधी यह चार वापिका तिनके नाम अशोका १ प्रबुद्धा २ कुमुदा ३ पुंडरीकनी ४ ये चार चारों ओर हैं तिनमें पहिलीविषै वेणुनामा देव, दूजीविषै नागकुमारनिका स्वामी धरणींद्र अर तीजीविषै नागकुमारनिका इंद्र रूपानंद क्रीडा करै है, अर चौथीविषै नागकुमारनिका स्वामी भूतानंद क्रीडा करै है अर उत्तर दिशाके अंजनगिरि संबंधी यह वापिका चार तिनके नाम प्रभंकरा १ सुमना २ आनंदा ३ सुदर्शना ४ ये चार तिनमें ईशान इंद्रके चार लोकपाल लीला करै हैं प्रभंकराविषै वरुण सुमनाविषै यम आनंदाविषै सोम सुदर्शनाविषै कुवेर ॥ ६० ॥ यह चारही अंजनगिरि संबंधी सोलह वापिका कहीं इन वापिकानिमें ६५०४५ योजन भीतरका परस्पर अंतर है अर मध्यका अंतर १०४६०२ योजन है अर बारिला अंतराल २२३६६१ योजन है ॥ ६३ ॥ अर चार अंजनगिरि संबंधी यह सोलह वापिका कहीं तिनके मध्य सुवर्णमई सोलह दधिमुख पर्वत हैं तिनके शिखर रूपामई हैं तिन पर्वतनिका हजार हजार योजनका कंद है अर दश दश हजार योजन ऊंचे अर इतने ही चौडे ढोलके आकार दधिमुखगिरि हैं अर वापिकानिकी चारों ओर चार बन हैं ते लाख लाख योजन लंबे हैं अर पचास २ हजार योजन चौडे हैं पूर्व दिशाकी ओर अशोक बन है अर दक्षिणकी ओर सप्तपर्ण वन पश्चिमकी ओर चंपकबन अर उत्तरकी ओर आम्रबन है ॥ ६८ ॥ अर इन वापिकानिके कोणके समीप रतिकर पर्वत हैं वे ताया स्वर्ण समान ढोलके आकार हैं तिनकी २५० योजनकी नीव है अर हजार हजार योजन लंबे हैं अर एते ही चौडे हैं एते ही ऊंचे हैं ते सब बत्तीस हैं एक एक अंजनगिरि संबंधी चार चार दधिमुख अर आठ आठ रतिकर हैं सो चार अंजनगिरि संबंधी सोलह

इक्षुवर समुद्रके स्वामी गंध अर महागंध अर नंदीश्वर द्वीपके पति नंदीश्वर अर नन्दप्रभ अर नंदीश्वर समुद्रके धनी सुभद्र अर भद्र अर अरुणद्वीपके रक्षक अरुण अर अरुणप्रभ ॥४१॥ अर अरुणवर समुद्रके स्वामी सुगंध अर सर्वगंध नामा दो देव जानहु । याही भांति द्वीपनिके अर समुद्रनिके दो दो अधिष्ठाता देव कहे हैं एक दक्षिणका अधिपति एक उत्तरका अधिपति है ॥ ४२ ॥ अर आठवां नंदीश्वरद्वीप ताका विस्तार एकसौ तरेसठ कोट चौरासीलाख योजन जानहु जगतका दीपक जो सर्वज्ञ वीतराग देव ताने यह सर्व द्वीप समुद्रनिका विस्तार कहा है । अर नंदीश्वर द्वीपके भीतरकी प्रदक्षिणा एक हजार छत्तीस कोटि बारहलाख दोहजार सातसौ तिरेपन योजन जिनवरदेवने कही अर वाहरली प्रदक्षिणा नंदीश्वरद्वीपकी दोहजार बहत्तर कोटि तैतीसलाख चौवन हजार एकसौ नव्वै योजन है ॥ ४७ ॥ ता नंदीश्वरद्वीपके मध्य चारों दिशानिविषैं चार अंजनगिरि हैं ते प्रत्येक प्रत्येक चौरासी हजार योजन ऊंचे अर इतने ही चौडे हैं अर हजार योजन तिनकी जड़ पृथिवीविषैं है ते चारों ढोलके आकार हैं अर विचित्रताकूं धरैं हैं वज्रमणिका है मूल जिनका अर प्रभाकर देदीप्यमान हैं ते चारों अंजनगिरि महामनोहर हैं ॥४९॥ ते पर्वत सुवर्णमूर्ति अर श्याम शिखरनिके धारक हैं तिनकी कांति दशों दिशाविषैं विस्तर रही है अर इन पर्वतनिथकी लाख योजन जाइए तब चारोंकोणविषैं चोकुटी चार वापिका हैं ते अनादिनिधन हैं ॥५१॥ सहस्रदल कमलसहित महामनोहर हैं स्फटिकमणि समान है उज्वल जल जिनका अर नाना प्रकार मणिमई हैं सिवान जिनके अर जिनमें जलचर जीव नाहीं केवल स्थावरकाय हैं अर वापीनिकी चौगिरद भीति हैं अर ते वापिका हजार २ योजन ऊंडी हैं अर लाख योजन लंबी है अर लाख योजनकी चौडी हैं एक २ वापिका जंबूद्वीप समान जानहु ॥५३॥ तिनके नाम नंदा १ नंदवती २ नदोत्तरा ३ नंदघोषा ४ यह चार वापिका पूर्व दिशाके अंजनगिरि संबंधी कही ॥ ५४ ॥ तिनमें नंदविषै तो सौधर्म इंद्र क्रीडा करै है अर नंदवतीविषै ईशान इंद्र क्रीडा करै है अर नंदोत्तराविषै असुरकुमारनिका इंद्र चमरेंद्र क्रीडा करै है अर नंदघोषाविषै असुरकुमारनिका

कही अर गर्भज इनतैं आधे लंबे जानहु अर अंतका जो स्वयंभूरमण समुद्र ताके आदिविषै सम्मूर्छन मच्छ पांचसौ योजन दीर्घ राघवमच्छ है अर मध्यविषै एक हजार योजन दीर्घताके धारक हैं ॥ २९ ॥ इन तीन समुद्रनिमें जलचर हैं अर काहूमें नाहीं अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइंद्री ये विकलत्रयके जीव अढाई द्वीपविषै कर्मभूमि हैं अर मानुषोत्तरतैं परे असंख्यात द्वीपसमुद्रनिमें विकलत्रय नाहीं अर अंतका द्वीप स्वयंभूरमण ताके मध्य नागेन्द्र पर्वत पड़ा है ताहि स्वयंप्रभाचल भी कहे हैं ताकी वरली ओर लग, सब असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें भोगभूमि हैं तीसरे काल कैसी रीति सदा प्रवर्त्तै है जहां देव हैं तहां नभचर थलचर पंचेंद्री जीव हैं, जलचर नाहीं विकलत्रय नाहीं स्थावर सर्वत्र हैं अर तहांके पंचेंद्री तिर्यंच एक पल्य आयुके धारक देवगतिमें जाने हारे हैं तहां कर्मभूमि नाहीं अर नागेंद्र पर्वतके परली ओर आधा स्वयंभूरमणद्वीप अर सारा स्वयंभूरमण समुद्र तहां कर्मभूमि है, पञ्चमकाल कैसी रीति सदा प्रवर्तै है। द्वीप अथवा समुद्र पिछलेसूं अगिला दुगुना २ अधिक विस्तार है, एक राजूमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं ॥ ३१ ॥ मेरुके अर्द्धभाग थकी स्वयम्भूरमण समुद्रके मध्य पचहत्तर हजार योजन जाइए तहां आध राजूका अर्द्ध विस्तार होय है याही भांति सर्वत्र जानहु, वाकी पाव राजूमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं।

अथानंतर—द्वीपनिके अर समुद्रनिके जे रक्षपाल देव हैं तिनके नाम कहे हैं–जंबूद्वीपका रक्षक अनाव्रत नामा देव लवणसमुद्रका अधिपति स्वस्तिक नामा देव अर धातकीखंडके नाथ दोय एक प्रभास दूजा प्रियदर्शन अर कालोदधिके अधिपति दोय एककाल दूजा महाकाल अर पुष्कर द्वीपके नायक पद्म अर पुण्डरीक अर मानुषोत्तरके नाथ चक्षुष्मान्, अर वसुचक्षु ॥ ३ ॥ अर पुष्करोदधिके अधिपति श्रीप्रभ अर श्रीवर अर वारुणीवरद्वीपके पति वरुण अर वरुणप्रभ अर वारुणीवर समुद्रके स्वामी मध्य अर मध्यांग अर क्षीरवरद्वीपके पति पांडुर अर पुष्पदंत ॥ ३७ ॥ अर क्षीरोदधिके ईश विमल अर विमलप्रभु अर घृतवरद्वीपके अधिष्ठाता सुप्रभ महाप्रभ ॥ ३८ ॥ अर घृतवरसमुद्रके नायक कनक, कनकप्रभ अर इक्षुवरद्वीपके पति पूर्ण अर पूर्णप्रभ अर

सर्ग ५

१०९

त्वसूं तो जगत ही भरया है अर कैयक जीव तहां अव्रतसम्यग्दृष्टी भी हैं, परन्तु श्रावकके व्रत नाहीं पंचम गुणस्थान नाहीं अढाई द्वीप बाहर असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें यही रचना है, अर अंतके द्वीपके मध्य स्वयंप्रभाचल ताकी पहिली तरफ आगे आधे स्वयंभूरमण द्वीप हैं अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रमें कर्मभूमिकी रचना है यहां सदा पंचमकालकीमी रीति है स्थावर तो सर्वत्र ही हैं अर तहां विकलत्रय हैं पंचेंद्री सैनी असैनी गर्भज संमूर्च्छन थलचर नभचर सबही जीव हैं एक मनुष्य नाहीं जलचर मच्छादिक पंचेंद्री अर विकलत्रय, ये जीव पहिले द्वीप समुद्रमें अर दूजे द्वीप समुद्रनिमें अर आधे तीजे द्वीपमें अर अंतहीकेमें जानहु अर द्वीप समुद्रमें नाहीं अंतके आधे द्वीप अर सारे समुद्रमें कर्मभूमिकी रचना है पहिले गुणस्थानसूं लेयकरि देशव्रतलग पांचगुणस्थान हैं छठेसूं लेकरि ऊपरले नाहीं, मिथ्यात्वमय तो सर्व जगत ही है अर अंतके द्वीप समुद्रमें स्वयंप्रभाचलके परे कैयक पंचेंद्री तिर्यंच श्रावकव्रतके धारक पंचमगुणस्थानवर्ती भी हैं ते हू सर्वज्ञदेवने असंख्यात कहे हैं, ये अति मनोहर द्वीप समुद्र कहे अर महा सुंदर पर्वत कहे तिनमें किन्नरादि अष्टप्रकार व्यंतरदेव अर नागकुमारादि भवनवासी देव बसैं हैं, देवयोनिमें श्रावकव्रत अर मुनिव्रत नाहीं पहिले गुणस्थानसूं लेय चौथे लग ही हैं ॥ २८ ॥ गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहैं हैं हे श्रेणिक ! यह असंख्यात द्वीप समुद्रनिकी रचना तोहि कही अब ज्योतिषीदेवनिकी अर स्वर्गलोककी रचना सुनहु ॥२९॥ जंबूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवणसमुद्र आदि असंख्यात जे समुद्र तिनकी रचना भगवद्भाषित जो भव्यजीव श्रवण करैं ताका संदेह शीघ्र ही दूर होय अर जो सकल त्रैलोक्यकी रचना सुनै ताका संदेह तो दूर होय ही होय । श्रीजिनरूप सूर्यका जब उदय होय तब अज्ञानरूप अंधकारका समूह कहां तिष्ठै सर्वथा संदेहरूप अंधकारका नाश होय ॥ ७३० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वीपसागरवर्णनं नाम पंचमः सर्गः ॥

रुचिकोज्वलादेवी ॥ १७ ॥ अर दक्षिण अर पश्चिमकी कोणविषैं मणिप्रभानामाकूट ताविषैं रुचकाभादेवी अर पश्चिम अर उत्तरकी कोणविषै रुचिकोत्तमनामाकूट ताविषैं रुचिकोत्तमानामा देवी ॥ १८ ॥ ये दिक्कुमारीनिमें शिरोभाग हैं वे जिनराजकी माताकी सेवा करै हैं बहुरि विदिशानिविषै और चार कूट हैं पूर्वोत्तरविषैं रत्नकूट ताविषैं विजयादेवी अर दक्षिणपूर्वविषैं रत्नप्रभनामाकूट ताविषैं वैजयंतीदेवी कही है अर दक्षिणपश्चिममें सर्वरत्ननामाकूट ताविषैं जयंतीनामादेवी कही अर उत्तरपश्चिमविषैं रत्नोच्चयनामाकूट ताविषैं अपराजितानामा देवी कही ॥ २१ ॥ चार वे अर चार ये यह आठ देवियें दिक्कुमारीनिमें अर विद्युतकुमारीनिमें महत्तर हैं सो तीर्थंकरदेवके जन्मोत्सवविषैं तीर्थंकरकी माताकी सेवा करैं हैं अर जन्मकल्याणकका उत्सव करैं हैं ॥ ७२२ ॥ यह रुचकगिरिनामा पर्वत तेरहवां है ताके उर्ध्वभागविषैं चारों दिशानिमें चार चैत्यालय हैं तिनका अंजनगिरिके चैत्यालयसूं समान विस्तार जानहु पूर्वकी उर है मुख जाका ॥ ७२३ ॥ यह रुचकगिरि पर्वत भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालयनिकरि अति सोहै है अर ये भवनवासिनी देवियें विद्युतकुमारी दिक्कुमारी कहावें हैं तिनके निवासके कूट उद्योतरूप तिनकरि पर्वत प्रकाशरूप है ॥ २४ ॥ अर अंतका स्वयंभूरमणनामा द्वीप है ताके मध्य स्वयंप्रभनामा पर्वत है ताहि नागेंद्रपर्वत भी कहैं हैं सो वलयाकार गोल अति सोहै है ॥ २५ ॥ अर पुष्करद्वीपके मध्य मानुषोत्तर पर्वत कह्या ताकी परली ओरसूं स्वयंप्रभाचलकी परली ओर तक असंख्यात द्वीप समुद्रनिमें जघन्य भोगभूमि है तहां देव हैं अर थलचर अर नभचर पंचेंद्री तिर्यंच सैनी गर्भज ही हैं तिनकी एक पल्यकी आयु है अर मरकरि भवनत्रिक देव होय हैं तहां असंख्यात द्वीप समुद्रमें तीजेकालजैसी रचना है जघन्य भोगभूमि है तिन तिर्यंचनिमें जलचर असैनी विकलत्रय नाहीं अर पंचप्रकारके स्थावर सर्वत्र हैं अर पंचेंद्रीमें देव तथा थलचर नभचर तिर्यंच हैं अर अढाई द्वीपपर मनुष्य नाहीं, भोगभूमिमें पहिला गुणस्थान मिथ्यात्व तासूं लेयकरि चौथा जो अव्रतसम्यक्त्व गुणस्थान, तहांलग चार गुणस्थान हैं पंचम गुणस्थानसूं लेकरि ऊपरले गुणस्थान नाहीं, मिथ्या-

विषैं नंदा अर स्वास्तिकनंदन कूटविषैं नंदोत्तरा अर अंजनविषैं आनंदा अर अंजनमूलकविषैं नांदीवर्द्धना ये आठ दिक्कुमारी देवी तीर्थंकरकी उत्पत्तिविषैं पूजा द्रव्य सहित जिनमाताके निकट झारी लिए तिष्ठैं हैं ॥ ९९ ॥ अर दक्षिण दिशाविषैं अमोघकूट तामें स्वस्तिता देवी अर सुप्रबुद्धकूटविषैं सुपूर्वका देवी अर मंदिरकूटविषैं प्रणिधिनामा देवी सो महा प्रतिबुद्ध अर विमलकूटविषैं यशोधरनामा देवी अर रुचककूटविषैं लक्ष्मीनामा देवी अर ताका नाम कीर्तिमती भी है ॥ ७०४ ॥ अर चंद्रकूटविषैं रुचकनामा देवी अर सुप्रतिष्ठकूटविषैं वसुन्धरानामा देवी तिष्ठै है, ये आठ दिक्कुमारी तीर्थंकरनिकी उत्पत्तिके समय मणिमई दर्पण हाथमें लिये माताकी सेवा करैं हैं अर पश्चिम दिशाविषै लोहितनामा कूट ताविषैं इलादेवी अर जगतकुसुम कूटविषै सुरादेवी अर नलिन कूटविषै पृथ्वीदेवी अर पद्मकूटविषै पद्मावतीदेवी अर कुमुदकूटविषैं कांचनादेवी अर सौमनसकूटविषैं नवमिकादेवी अर यशःकूटविषैं सीतादेवी अर भद्रकूटविषैं भद्रकादेवी, ये आठ दिक्कुमारी महा उज्वल माताके शिरपर छत्र धारती भई सोहैं हैं अर उत्तर दिशाविषै जो स्फटिककूट ताविषै लंबुसादेवी अर अंककूटविषैं मिश्रकेशीदेवी अर अंजन-कूटविषैं पुण्डरीकनी देवी ॥ १० ॥ अर कांचनकूटविषैं वारुणीदेवी रजतकूटविषैं आशादेवी अर कुण्डलकूटविषैं ह्रीदेवी अर रुचककूटविषैं श्रीदेवी अर सुदर्शन कूटविषैं धृतिदेवी, ये आठ दिक्कुमारी चमर हाथमें लिये श्रीजिन-राजकी माताकूं सेवैं हैं ॥ १२ ॥ बहुरि चारों दिशाविषैं ताही रुचकगिरिपर चार और कूट हैं ते दीप्तिकरि महा देदीप्यमान हैं तिनविषैं पूर्व दिशाकी विमलकूटविषैं चित्रादेवी अर दक्षिण दिशाविषैं नित्यालोककूट ताविषैं कनक-चित्रादेवी तिष्ठै है अर पश्चिम दिशाविषैं स्वयंप्रभनामाकूट ताविषैं त्रिसरादेवी अर उत्तर दिशाविषैं निद्योतनामा कूट ताविषैं सूत्रामणि देवी बसै है ॥ १५ ॥ ये चार विद्युत्कुमारी देवी जिनराजकी माताके निकट रहैं हैं अर महा सुन्दर वार्ता करैं हैं सूर्यकी किरण समान उद्योत करणहारी हैं, अब चार दिशानिविषैं कथन करैं हैं। पूर्व अर उत्तरकी कोणविषैं वैडूर्यनामा कूट ताविषै रुचकादेवी अर दक्षिण पूर्वकी कोणविषैं रुचकनामाकूट ताविषैं

रजतनामा कूट है ताविषैं पद्मनामा देव बसै है अर रजतप्रभनामा कूट ताविषै पद्मोत्तरनामा देव बसै है अर सुप्रभनामा कूटविषैं महापद्मनामा देव बसै है, महाप्रभनामा कूटविषैं वासुकी देव है, यह चार दक्षिण दिशाके कहे अर पश्चिम दिशामें अंकनामा कूट ताविषै हृदयांकनामा देव है अर जो अनन्तप्रभनामा कूट ताविषैं महास्थिर देव है अर मणिकूटविषैं श्रीवृक्ष देव है अर मणिप्रभविषैं स्वस्तिक देव है यह पश्चिम दिशाके कहे, अर उत्तर दिशाविषैं स्फटिकनामा कूट है ताविषैं सुंदर देव है अर जो स्फटिकनामा कूट है ताविषैं विशालाक्ष है अर माहेन्द्रप्रभनामा जो कूट ताविषैं पांडुकनामा देव है अर हिमवान् कूटविषैं पांडुरनामा देव है ये उत्तरदिशाके कहे। ये सकल १६ नागकुमार जो देव हैं तिनकी एक पल्यकी आयु है ते अपने कूटनिके महलनिमें विराजे हैं अर या कुण्डलाचलके मस्तकविषैं पूर्व पश्चिमदिशामें कुण्डल द्वीपके दो देव अधिपति तिष्ठैं हैं अर कूटकी ऊंचाई योजन एकहजारकी है अर मूलविषैं चौड़ाईहू १००० योजनकी है अर मध्यविषैं चौड़ाई ७५० योजनकी है अर ऊर्ध्वविषैं चौडाई ५०० योजनकी है ता पर्वतपर चारों दिशामें चार जिनमंदिर हैं ते अंजनगिरिके समान हैं॥ ९३ ॥ अर तेरहवां रुचिकवरद्वीप ताके मध्य रुचिकगिरिनामा पर्वत है सो वलयाकार गोल है ॥ ९४ ॥ सो रुचिकगिरि हजार योजन पृथवीविषैं ऊंडा है अर चौरासी हजार योजन ऊंचा है अर ब्यालीस हजार योजन चौडा है ॥ ९५ ॥ अर ता पर्वतविषैं चारों दिशाविषैं चार कूट हैं, ते कूट हजार योजन चौडे हैं अर पांचसौ योजन ऊंचे हैं तिन कूटनिके नाम—पूर्व दिशाविषैं नंद्यावर्तनामा कूट ताविषैं पद्मोत्तरनामा देव बसै है अर दक्षिणदिशाविषैं स्वस्तिकनामा कूट ताविषैं स्वहस्तीनामा देव है अर पश्चिम दिशाविषैं श्रीवृक्षनामा कूट ताविषै नीलकनामा देव है अर उत्तर दिशाविषैं वर्द्धमान कूट ताविषैं अंजनागिरिनामा देव है ये चार दिग्पाल देव हैं इनका पल्योपम आयु है ॥ ९६-९८ ॥ अर ताही पर्वतविषै आठ कूट हैं ते अगले कूट प्रमाण हैं तिनमें दिक्कुमारी देवी बसैं हैं अर वैडूर्यकूटविषैं विजयादेवी है अर कांचनविषैं वैजयंती अर कनकविषैं जयंती, अरिष्टविषैं अपराजिता अर दिक्कूट

बारहवें देवलोकतक भी उपजै परंतु विना वीतरागदेवकी श्रद्धा इंद्रादिक ऊंचा देव न होय छोटे देवमें उपजै अर बारहवें स्वर्ग ऊपर पर दर्शनी न जाय, आजीवी कहिए जिसने जन्मपर्यंत विषय ग्रामादिक गमन तज्या अर मौनावलंबी है मंदकषाय क्षुधा तृषादि बाधा भी सहै है अर चौथा गुणस्थानवर्ती अव्रतसम्यग्दृष्टी भी बारहवें स्वर्ग तक जाय आगे व्रत विना न जाय अर श्रावक श्राविका आर्यिका ये पंचम गुणस्थानवर्ती प्रथम स्वर्गतैं लेकर सोलहवें स्वर्गतक जाय अर अहमिंद्रलोकमें न जाय । अर द्रव्यचारित्री मुनिका भेष धरै सो प्रथम स्वर्गतैं ले नव ग्रैवेयकतक जाय आगे चौदह अनुत्तरविषै भावलिंगी मुनि ही जाय अर द्रव्यलिंगी न जाय अर द्रव्यलिंग अभव्य जीव भी धरे उग्रतपकरि नवग्रैवेयक पर्यंत जाय आगे न जाय, मुक्तिविषैं अर चौदह अनुत्तर विमाननिविषैं भावलिंगी मुनिही जाय औरकी गम्यता नाहीं ॥ १०५ ॥ अर ज्योतिषी देवन पर्यंत कृष्ण नील कापोत ये तीन अशुभ लेश्या तो द्रव्यरूप अर भावरूप हैं अर पीतलेश्या भवनत्रिकके देवनिके जघन्यरूप है अर पहिले दूजे स्वर्ग पीतलेश्या मध्यम है, अर तीजे चौथे स्वर्ग पीतलेश्या उत्कृष्ट है अर पद्मलेश्या जघन्यरूप है, अर पांचवें स्वर्गतैं लेकरि अर दशमें स्वर्गपर्यंत पद्मलेश्या मध्यम अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषैं पद्मलेश्या उत्कृष्ट है अर शुक्ललेश्या जघन्य है अर तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें इन चार स्वर्गनिविषैं अर नव ग्रैवेयकविषैं शुक्ललेश्या मध्यम है अर नव अनुदिशविषैं पंच अनुत्तरविषैं शुक्ललेश्या उत्कृष्ट है, अहमिंद्रदेव संक्लेशता रहित हैं यह देवनिकी लेश्या कही अब देवनिकी अवधि सुनहु । पहिले दूजे स्वर्गके अवधि पहिले नरक पर्यंत है अवधिकरि वहां तक देखै जाने है अर तीजे चौथे स्वर्गनिके देवनिकी अवधि दूजे नरक पर्यंत है अर पांचवें स्वर्गतैं ले आठवें पर्यंत देवनिकी अवधि चौथे नरक पर्यंत है अर आठवें नवमें दसमें ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गके देवनिकी अवधि पांचवें नरक पर्यंत है ॥ १६ ॥ अर नवग्रैवेयक वारेनिकी अवधि छठे पर्यंत है अर नव अनुदिशिवालोंकी अवधि सातवें नरक पर्यंत है अर पांच अनुत्तरवालोंकी अवधि लोकनाली पर्यंत है ११४ यह तो नीचली

पचास योजन ऊंचाईमें घटै है अर तहां परे ऊंचाईमें योजन पचीस पचीस घटै अर पांचवें छठे ४५० योजन हैं अर सातवें आठवें मंदिरनिकी उच्चता योजन ४०० अर नवमें दसमें योजन ३५० अर ग्यारहवें बारहवें योजन ३०० अर तेरहवें चौदहवें योजन २५० अर पंद्रहवें सोलहवें योजन २२५ मंदिरनिकी ऊंचाई है, अर आगे पचीस पचीस योजन घटती जानहु। अर मंदिरकी नींव पहिले दूजे स्वर्गविषैं योजन ६० अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं मंदिरनिकी नींव योजन ५० आगे युगल युगल पर्यंत पांच पांच योजन घटती है तब सोलहवें स्वर्ग २० योजन मंदिरनिकी नींव है अर नव ग्रैवेयकविषैं पहिली त्रिकमें १५ दूजी त्रिकमें १० तीजी त्रिकमें ५ अर नव अनुत्तर पंचानुत्तर विषैं इन १४ विमाननिकी मंदिरनिकी नींव योजन अढाई ॥९५॥ अर पहिले दूजे स्वर्गविषैं मंदिर पंचवर्ण रत्नमई कृष्ण नील रक्त पीत श्वेत ये पांच वर्ण सो सब जातिके रत्न पहिले दूजे स्वर्गविषैं हैं अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं कृष्णवर्ण नाहीं अर चार वर्ण रत्नमई मंदिर हैं अर पांचवें छठे सातवें आठवें इन चार स्वर्गनिमें कृष्ण अर नील ये दो वर्ण नाहीं श्वेत रक्त पीत ये तीन वर्ण हैं अर नवमें दसमें ग्यारहवें बारहवें पीत अर श्वेत ये दो वर्ण हैं और वर्ण नाहीं अर तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें अर अहमिंद्रलोकमें मंदिरनिके श्वेतवर्ण ही रत्न हैं अर चार वर्ण नाहीं वे स्वर्गलोकके मंदिर महा सुंदर हैं॥ ९८॥ स्वर्गके दो युगल घनोदधिके आधार हैं अर दो युगल घनवात बलयके आधार हैं अर ऊपर आकाशके आधार हैं॥ ९९ ॥ छै युगलनिमें इंद्रक विमानमें बारह इंद्र बसे हैं अर श्रेणीवद्धविषैं देव बसै हैं बारह इंद्रकनिमें इंद्र छै दक्षिणश्रेणीके तो एकाभवतारी हैं अर उत्तरके इंद्रकका निश्चय नाहीं अल्पसंसारी है दीर्घसंसारी नाहीं ॥ १०० ॥ अर पंचाग्निके साधक तपस्वी परमती भवनत्रिकके देव तक उपजै हैं जो उनसे महातप करै सो व्यंतर भवनवासी ज्योतिषी तक उपजे स्वर्गविषैं न जाय देव होय तो भवनत्रिकका होय अर मनुष्य होय तो मिथ्यादृष्टि राजादिक होय अर परिव्राजक कहिए दंडी सन्यासी सो पांचवें स्वर्गतक जाय ताके अग्नि जलका आरम्भ नाहीं अर परमतियोंमें आजीवका कहिए अत्यंत मंदकषायी सो

विस्तार विमान हैं ॥ ८५ ॥ अर नव ग्रैवेयकविषैं इंद्रक विमान तो संख्यात योजनके विस्तार हैं अर श्रेणीबद्ध असंख्यात योजनके विस्तार हैं अर प्रकीर्णक कैयक तो असंख्यात योजननिके विस्तार हैं अर कैयक संख्यात योजनके विस्तार हैं सब विमाननिमें ६७९७६४३ विमान तो असंख्यात योजनके विस्तार हैं अर १६९९३८० संख्यात योजनके विस्तार हैं ॥ ८६ ॥ सर्वत्र संख्यात योजनके विस्तार विमाननितैं असंख्यात योजनके विस्तार विमान चौगुने जानहु । अर अढाईद्वीप अर पहिला स्वर्गका ऋजुविमान अर पहिले नरकका सीमंतक नाम विला अर मुक्तिशिला सिद्धक्षेत्र ये पांच ४५००००० योजनके प्रमाण हैं अर मेरुकी चूलिकाके अर पहले स्वर्गके ऋजु विमान कैयक बालमात्र अंतराल है अर जंबूद्वीप अर सातवें नरकका अप्रतिष्ठ नाम विला अर सर्वार्थसिद्धि ये तीनों नौ लाख योजनके प्रमाण जानहु ॥८८॥ अर स्वर्गलोकके श्रेणीवद्ध विमानके आधे तो स्वयंभूरमण समुद्र ऊपर हैं अर बाकी आधे विमान अन्य समुद्रनिके ऊपर हैं असंख्यात योजनके विमान सर्वत्र चौगुने हैं अर संख्यात योजनके विस्तार विमान उनतैं चतुर्थ भाग हैं ॥ ९० ॥ अर पहिले दूजे स्वर्गके मंदिरनिके पीठकी बाहुल्यता ११२१ योजन अर ऊपरले स्वर्गविषैं दो दो स्वर्गनिमें निन्याणवै निन्याणवै योजन बाहुल्यता घटती गई है ॥ ९१ ॥ अर मंदिरनिकी चौडाई आदिके स्वर्गमें १२० योजन अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं १०० योजन आगे दश दश योजन चौडाई घटी तब पांचवें छठे स्वर्गविषैं चौडाई योजन नव्वे अर सातवें आठवें स्वर्गमें चौडाई योजन अस्सी अर नवमें दसमें स्वर्गविषैं चौडाई योजन सत्तर अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषैं चौडाई योजन साठ तेरहवें अर चौदहवेंविषैं योजन पचास अर पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन चालीस अर नवग्रैवेयकविषैं पहिली त्रिकमें तीस, दूजीमें बीस, तीजी त्रिकमें दश अर नव अनुत्तरविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन पचास ॥ ९३ ॥ अर पंच अनुत्तरविषैं मंदिरनिकी चौडाई योजन पांच अर मंदिरनिकी उच्चता पहिले दूजे स्वर्गविषैं योजन छैसौ है अर तीजे चौथे स्वर्गविषैं मंदिरनिकी उच्चता योजन ५०० अर आगे युगल पांच पर्यंत पचास

अर्चिमालिनी, तीजा वज्र चौथा वैरोचन, पांचवां सौम्य, छठा सौम्यरूप, सातवां अंक, आठवां स्फटिक, नववां आदित्य ये नव तिनमें कैयक इन्द्रक आठ श्रेणीवद्ध जो इंद्रक हैं सो मध्य हैं अर श्रेणीवद्ध आठ चार दिशा अर चार विदिशाविषैं हैं अर पंचानुत्तरके विमान पांच, पहिला विजय दूजा वैजयंत तीजा जयंत चौथा अपराजित पांचवां सर्वार्थसिद्धि इनमें ४ दिशानिमें श्रेणीबद्ध हैं अर सर्वार्थसिद्धि मध्यविषैं इंद्रक हैं सो त्रेसठ पटलनिविषैं सब बिमान ८४९७०२३ हैं तिनमें त्रेसठ इंद्रकके सहित सौ पटलनिके मध्यभागविषैं हैं अर जो दिशा विदिशा श्रेणीबद्ध होय वे श्रेणीगत कहिए, ते सकल आठहजार एकसौ सत्ताईस बाकी सब विमान प्रकीर्णक कहिए त्रिखरवां है ६२ श्रेणीवद्ध ८१२७ कहे तिनमेंतैं चारहजार चारसौ पचानवे तो पहिले स्वर्गविषैं कहे अर १४८८ दूजेस्वर्गविषै कहे तीजे स्वर्गविषैं ६१६ चौथे स्वर्गविषैं २०३ अर पांचवें स्वर्गविषैं २८६ छठे स्वर्गविषैं ९४ अर सातवें स्वर्गविषैं १२५ आंठवेंविषैं ३१ अर नवमें स्वर्गविषैं ५८ दसवें स्वर्गविषैं १९ अर ग्यारहवें स्वर्गविषैं ५५ बारहवें स्वर्गविषैं १८ तेरहवें स्वर्गविषैं १४ अर चौंदहवें स्वर्गविषैं ४८ पंद्रहवें स्वर्गविषैं १२० सोलहवें स्वर्गविषैं उनतालीस ॥ ७३ ॥ अर अधोग्रैवेयक पहिले त्रिकविषैं विमान एकसौ तेईस तिनमें पहिले ग्रैवेयकविषैं ४५ दूजे स्वर्गविषैं ४१ तीजेस्वर्गविषैं ३७ ये सब १२३ भये अर चौथे ग्रैवेयकविषैं ३३ पांचवें ग्रैवेयकमें २९ छठे ग्रैवेयकमें २५ ये श्रेणीबद्ध विमान कहे अर ऊर्द्ध त्रिकविषैं सातवें ग्रैवेयक विषैं २१ अर आठवेंमें १७ नवमेंमें १३ ये श्रेणीबद्ध कहे अर नव अनुत्तरके नव अर पंचानुत्तरके पांच तिनमें एक इंद्रक सहित ८१२७ बाकी सब विमान प्रकीर्णक जानहु ॥ ७७ ॥ तिन विमाननिमें प्रथम स्वर्गविषैं संख्यात योजनके विस्तार ६४०००० हैं अर दूजे स्वर्गविषैं विमान संख्यात योजनके विस्तार ५६०००० तीजे स्वर्गविषैं २४०००० अर चौथे स्वर्गविषैं १६०००० अर पांचवें छठेविषैं ८०००७ अर सातवें आठवेंविषैं १०००० अर नवमें दसवेंमें ४००४ अर ग्यारहवें बारहवेंविषैं ३९७६ तेरहवें चौदहवें स्वर्गविषैं ८८ अर पंद्रहवें सोलहवेंविषैं ५२ स्वर्गनमें ये संख्यात योजनके

कार्य्य उपजै तो स्वतःस्वभाव खरके सींग भी क्यों न उपजैं ? जैसा कारण होय वैसाही कार्य्य उपजै। जौके बीजतैं शालि न उपजै ऐसे अन्य द्रव्यकी उत्पत्ति नाहीं तातैं मुख्य उपादान कारण तो सबको अपना अपना हैं अर दूजे द्रव्यका दूजे द्रव्यकूं जो कारण कहिये है सो सहकारी कारण है मुख्य कारण नाहीं, सब द्रव्यनिको वर्तना सहाई काल कहा सो सहकारी कारण है समयादिक व्यवहारकाल कालाणुका पर्याय है, सो पुद्गल परमाणुके गमनकरि जाना जाय है ॥ १५ ॥ पुद्गल परमाणु मन्द चाल चले तो एक समयमें आकाशके एक प्रदेश गमन करै अर शीघ्र गमन करै तो एक समयमें चौदह राजू जाय ॥१६॥ अर समय आवली उच्छ्वास प्राण स्तोक इत्यादिक व्यवहार कालके भेद हैं, जिस कालका एक भागसे दूजा भाग न होय सो समय कहिये। अर जो असख्यात समय व्यतीत होय सो एक आवली कहिए अर संख्यात आवलनिका एक उच्छ्वास कहिये। उच्छ्वास अर निश्वास इन दोऊको प्राण कहिये। अर सप्त प्राणनिका एक स्तोक कहिये। अर सप्त स्तोकनिका एक लव कहिये। अर सतहत्तर लवका एक मुहूर्त कहिये। अर तीस मुहूर्तका एक अहोरात्र कहिये अर पंद्रह अहोरात्रका एक पक्ष कहिये अर दो पक्षका एक मास कहिए। अर दो मासका एक ऋतु कहिए। अर तीन ऋतुनिका एक अयन कहिए। अर दो अयनोंका एक वर्ष कहिए। अर दश वर्षनिकूं दशगुणे करिए तो वर्ष १०० होय सौको दशगुणे करिए तव वर्ष १००० होय अर हजारकूं सौ गुणे करिए तव एकलाख वर्ष होय। अर एक लाखकूं चौरासी गुणे करिए तव चौरासीलाख वर्ष होय सो एक पूर्वांग कहिए अर चौरासी लाख पूर्वांग व्यतीत होवे तव एक पूर्व कहिए। अर पूर्वको चौरासीलाख गुणा करिए तव एक पूर्वांग होय। अर चौरासीलाख पूर्वांगका एक पर्व होय। अर चौरासीलाख पर्वका एक नयुतांग होय ॥ ५ ॥ अर चौरासीलाख नयुतांगका एक नयुत होय ॥ ६ ॥ अर चौरासीलाख नयुतका एक कुमुदांग होय ॥ ७ ॥ अर चौरासी लाख कुमुदांगका एक कुमुद होय। ८।१६। अर चौरासीलाख कुमुदका एक पद्मांग होय ॥ ९ ॥ अर चौरासीलाख पद्मांगका एक पद्म होय ॥ १० ॥ अर

कालचक्रका वर्णन ।

अथानन्तर—सातवें अध्यायका आरम्भ करे हैं। कालद्रव्य दो प्रकार है—एक मुख्य कहिये निश्चयकाल अर दूजा गौणकाल कहिये व्यवहारकाल सो कालद्रव्य वर्तना लक्षण है अर वर्ण गंध रस स्पर्श इनकरि रहित है अर अगुरुलघु कहिये गुरुता अरु लघुता तिनकरि रहित है ॥ १ ॥ जैसे धर्मद्रव्य गति सहाई अर अधर्मद्रव्य स्थिति सहाई आकाश अवकाश देबेकूं सहाई तैसे काल वर्तना सहाई है। जैसे ज्ञानी जन आगमकी दृष्टिकर धर्म अधर्म आकाशका निश्चय करैं तैसे कालका भी निश्चय करना ॥ ३ ॥ जीव अर पुद्गलका परिणमन अनेक प्रकार है, सो परिणमनका सहाई कालद्रव्य है, अर गौण काल कहिये समय आवली घटिकादिरूप व्यवहारकाल ताकी प्रवृत्ति मुख्यकाल जो कालाणुरूप निश्चय कालद्रव्य ताके आधीन है ॥ ४ ॥ सबही द्रव्यनिके परिणामादि वृत्तियें अंतरंग अर बहिरंग कारणतैं होय हैं ॥ ५ ॥ अंतरंग कारण तो वस्तुका स्वभाव है सो जीवका जीवमें है अर पुद्गलका पुद्गलमें है अर सबनिका सबनिमें है, अंतरंग कारण तो आपका आपहीमें है सो सबही द्रव्य अपने स्वभाव परिणमें हैं ॥६॥ अर बहिरंगकारण सबनिके परिणमनको निश्चयकालका सर्वज्ञदेवने दिखाया है सो निश्चय करना। लोकाकाशके एक एक प्रदेशविषैं एक एक कालाणु तिष्ठै है कोई प्रदेश कालाणु विना नाहीं अर सर्व कालाणु परस्पर जुदा हैं कोऊ काहुसूं न मिलै लोकके असंख्यात प्रदेशनिमें असंख्यात कालाणु हैं, द्रव्यार्थिकनयकरि सब ही द्रव्य निर्विकार हैं अर जन्म मरणतैं रहित हैं नित्य हैं अपने स्वरूपविषै तिष्ठै हैं ॥९॥ अर पर्यायार्थिकनयकरि अगुरुलघु गुणकरि समय २ परिणमन सबके हैं सो सबही द्रव्य समयवर्ती अर्थपर्यायकरि क्षणवर्ती हैं अनित्य हैं नित्यता अर अनित्यता द्रव्यविषैं दोऊ हैं निश्चयकालका पर्याय समयादिरूप व्यवहारकाल अतीत अनागत वर्त्तमानके भेदकरि तीन प्रकार है। अर अनन्त समयके उपजावने थकी कालाणुको अनंत समय कहिये, कारणरूप कालाणु द्रव्यथकी समयरूप पर्यायकी उत्पत्ति है कारण विना कार्यकी उत्पत्ति कदाचित् न होय ॥ १२ ॥ जो कारणबिनाही

चास योजन है अर तीन वातवलय पहिले कहे हुते, तिनमें दोय वातवलयका वाहुल्यता तो तहां तीन कोसकी है अर तीजा तनुवातवलय ताकी वाहुल्यता तहां पंद्रहसौ पिचहत्तर धनुष है ॥ ३१ ॥ सो तनुवातवलयके अंतविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं तिनकी उत्कृष्ट अवगाहना धनुष ५२५ जघन्य अवगाहना साढे तीन हाथ यह जिनागमविषैं कह्या है। सिद्ध भया है प्रयोजन जिनका ऐसे भगवान जहां एक विराजे हैं तहां अनंत विराज रहे हैं एक ठौर अनंत समाये हैं ऐसी अवगाहना शक्ति है ॥ ३४ ॥ वे भगवान शरीररहित सुख पिंड सिद्धपरमेष्ठी विघ्नरहित ज्ञानोपयोग अर दर्शनोपयोगकरि युक्त हैं ॥ ३५ ॥ वे सदा सुखी सर्व लोक अर अलोकको निरंतर अनंत पर्याय सहित जानै हैं अर देखे हैं अपने स्वभावमें तिष्ठे हैं ॥ ३६ ॥ वे सिद्ध महा शुद्ध सर्व वस्तुके वेत्ता जन्म जरा मरण रहित अविनाशी भए अविनाशी धामविषैं वंधनरहित शाश्वते तिष्ठे हैं ॥ ३७ ॥ यहां गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं हे श्रेणिक ! तुझे जोतिषी देवलोकनिके पटलका प्रगट व्याख्यान कह्या अर मोक्ष पर्यंत स्वर्गलोकका व्याख्यान तुझे कहा, हे नरपति ! मैंने संक्षेपमें त्रैलोक्य प्रज्ञप्तिका व्याख्यान किया यह व्याख्यान काननिकूं सुखदाई है सो कल्याणके अर्थ तुझे कह सुनाया। अव हे चिरंजीव ! जो उपक्षेत्रका व्याख्यान कर कालका व्याख्यान मैं तोहि कहूं हूं सो तू एकाग्र चित्तकरि सुनि ॥ ३८ ॥ यह धर्मध्यान महा उज्ज्वल उदयरूप मोक्षका कारण जिनेंद्रदेवने कह्या ताके चार पाये। आज्ञाविचय १ अपायविचय २ अर विपाकविचय ३ अर संस्थानविचय ४ ये चारों पाये चित्तवृत्तिके निरोधके कारण हैं, यह लोकके आकार चिंतवन जितेंद्री पुरुषनिकूं निरंतर करना या संस्थानविचयकरि धर्मध्यान पूर्ण होय है मन अर इंद्रियरूप माते हाथी वश करनेका यह धर्म वडा उपाय है तातैं जो विवेकी मन इंद्रिय वश किया चाहैं सो संस्थानविचयका चिंतवनकरि समस्त लोककूं हेय जान शुद्ध आत्माकूं उपादेय मान आत्माका ध्यान करै ॥ १३९ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ ज्योतिर्लोकोर्द्धलोकवर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

अवधि कही अर ऊपरली अवधि समस्त ही देवनिके अपने अपने विमानकी ध्वजा पर्यंत जानहु आगे नाहीं ऐसा निश्चय सर्वज्ञदेवने कह्या है। अर ऊपरले सब ही देवनिकी देवी पहिले दूजे स्वर्ग उपजै हैं आगे देवीनिकी उत्पत्ति नाहीं, दक्षिण दिशाके देवनिकी नियोगिनी देवी सौधर्मस्वर्गविषैं उपजै हैं अर उत्तर दिशाके देवनिकी देवी ईशान स्वर्गविषैं उपजै हैं सो अपनी अपनी नियोगिनी जान ऊपरले देव इन दो स्वर्गनितैं लेजाय हैं अर पहिला तीजा पांचवां सातवां ग्यारहवां पंद्रहवां यह दक्षिण श्रेणीके हैं अर इनकी देवी पहिले स्वर्गविषैं उपजै हैं सो अपनी २ लेजाय हैं दूजा चौथा छठा आठवां बारहवां सोलहवां उत्तरश्रेणीके हैं सो इनकी देवी दूजे स्वर्गविषैं उपजै है सो भी लेजाय हैं सौधर्म स्वर्गविषैं केवल देवांगनानिके निवासके विमान छैलाख हैं अर ईशान स्वर्गविषैं चार लाख विमान हैं तिनविषैं देवी उपजै हैं। कैसी है देवी सुंदर वस्त्र आभरणकरि मन अर नेत्रनिकी हरणहारी हैं महासुन्दर रूपकरि संयुक्त हैं अनेक विक्रियाके धारक जो हाव भाव विभ्रमविलास तिनकरि मंडित महा मनोज्ञ हैं स्वभावहीकरि प्रेमकी भरी अनेक पल्यकी आयुकी धरणहारी महासुखकरि युक्त हैं तिन देवीनिसहित इंद्र तथा सामानिक त्रायस्त्रिंशत आदि देव सोलह स्वर्ग पर्यन्त सागरनिकी आयुके धरणहारे दीर्घकाल जीवैं महा सुख भोगवें हैं ११५ अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर अहमिंद्र हैं वे इंद्रनितैं अनंत गुणा सुख भोगवें हैं तिनके साता-वेदनीका पूरण उदय है स्त्रीरहित शांतभावरूप परम सुख भोगवें हैं अर सर्वार्थसिद्धिके परे बारह योजन सिद्ध-निका स्थानक है सो तीनलोकके अग्रभागमें है वह अष्टमी धरा त्रैलोक्यविषै प्रसिद्ध है सुप्रभानामा पृथ्वी सात राजू लम्बी एक राजू चौडी आठ योजन जड ताके मध्यविषैं आठ योजन नाडी है अर अनुक्रमकरि घटती गई है सो अंतविषैं अंगुलके असंख्यातवें भाग स्थूलता धरै है ऊंचा वर्तुलाकार श्वेत छत्र ताके समान उज्ज्वल है ॥ २७ ॥ पैंतालीस लाख योजनके विस्तारकूं धरै है ऐसी मोक्ष शिला है वह अष्टम धरा ताके समान अर धरा नाहीं ऐसी भगवंतदेवने भाषी है। अर मुक्तिशिलाकी प्रदक्षिणा एक कोडि बयालीस लाख ३० हजार दो सौ उनं-

चौरासीलाख पद्मका एक नलिनांग होय ॥ ११ ॥ अर चौरासीलाख नलिनांगका एक नलिन होय ॥ १२ ॥ अर चौरासीलाख नलिनोंका एक कमलांग ॥ १३ ॥ अर चौरासी लाख कमलांगका एक कमल होय ॥ १४ ॥ अर चौरासीलाख कमलका एक टुट्यांग ॥ १५ ॥ अर चौरासीलाख टुट्यांगका एक टुट्यु ॥ १६ ॥ अर चौरासी लाख टुट्युका एक अटटांग ॥ १७ ॥ अर चौरासीलाख अटटांगका एक अटट ॥ १८ ॥ अर चौरासीलाख अटटका एक अमुमांग ॥ १९ ॥ चौरासीलाख अमुमांगका एक अमम ॥ २० ॥ अर चौरासीलाख अममका एक उहांग ॥ २१ ॥ अर चौरासीलाख उहांगका एक उह ॥ २२ ॥ अर चौरासीलाख उहका एक लतांग ॥ २३ ॥ अर चौरासीलाख लतांगका एक लता ॥ २४ ॥ अर चौरासीलाख लताका एक महालतांग ॥ २५ ॥ अर चौरासीलाख महालतांगकी एक महालता ॥ २६ ॥ अर चौरासीलाख महालताका एक सिर प्रकंपित ॥ २७ ॥ अर चौरासीलाख सिरप्रकंपितका एक हस्त प्रहेलिका ॥ २८ ॥ अर चौरासीलाख हस्तप्रहेलिकाका एक चर्चिक ॥ २९ ॥ यहांतक मध्य संख्यात वर्षकालकी मर्यादा कही अर अंकनिकी संख्याकूं उलंघै सो उत्कृष्ट संख्यात वर्ष वा असंख्यात अनंतकाल ताके पल्यसागर कल्पादि अनंत भेद हैं ॥ ३१ ॥ पुद्गल परमाणु आदि मध्य अंततैं रहित अविभागी हैं इंद्रियगोचर नाहीं मूर्तिक हैं तोहू इंद्रियनितैं अगम्य हैं महासूक्ष्म हैं एक प्रदेशी हैं ॥ ३२ ॥ अर एक रस, एक वर्ण, एक गंध, दो स्पर्श ये पांचगुण एक कालमें धारै हैं अर शब्दतैं रहित हैं अर स्कंधके योगकरि शब्दकी उत्पत्तिका कारण है ॥ ३३ ॥ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श इन गुणनिकरि परमाणु गले पूरे तथा रूक्ष स्निग्ध गुणके घटने वढनेतैं उनके स्कंध परस्पर मिलैं अर बिछुरैं तातैं पुद्गल कहिये स्कंधकी न्याईं परमाणुहीकूं पुद्गल कहिये वर्णादिक गुण मिलैं अर बिछुरैं ॥ ३६ ॥ अनंतानंत परमाणूनिके समूहका अब संज्ञादिकका नाम स्कंध कहिये अर आठ संज्ञादिक एक संज्ञा संज्ञादिक कहिये, अर आठ संज्ञा संज्ञादिकका एक त्रसरेणु कहिये, आगे सनासन ततरेणु त्रसरेणु रथरेणु उत्तम मध्यम जघन्य भोगभूमि वा कर्मभूमिके बालका अग्रभाग क्रमतैं अब

१२९

यनिकी संख्या कहिये अर असंख्यात कोडि वर्षके जितने समय होंय तेते व्यवहारपल्य जावें तब एक उद्धारपल्य कहिये ॥५१॥ अर असंख्यात कोटि वर्षके जेते समय होंय तेते ही उद्धारपल्य जावें तब एक अद्धापल्य कहिये अर अद्धापल्य दश कोडाकोडी जांय तब एक सागर कहिये ऐसी दस कोडाकोडी सागरकी एक अवसर्पिणी अर दस कोडाकोडी सागरकी एक उत्सर्पिणी सो इनके प्रत्येक प्रत्येक छै छै काल हैं वस्तुनिकी शक्ति अर आयु काय सब जाविषै घटती जावै सो अवसर्पिणी अर जाविषै वढती जाय सो उत्सर्पिणी तिनमें अवसर्पिणीके छै काल, पहिला सुखमासुखमा, दूजा सुखमा, तीजा सुखमादुखमा, चौथा दुखमासुखमा, पांचवां दुखमा, छठा दुखमादुखमा, ये तो अवसर्पिणीके कहे अर उत्सर्पिणी कालका पहिला दुःखमादुःखमा दूजा दुखमा तीजा दुखमासुखमा, चौथा सुखमा दुखमा, पांचवां सुखमा, छठा सुखमासुखमा ॥५९॥ तिनमें अवसर्पिणी कालका पहिला सुखमासुखमा सागर कोडाकोडी चार अर दूजा सागर कोडाकोडी तीन अर तीजा सागर कोडाकोडी दोय अर चौथा बयालीस हजार वर्ष घाटि सागर एक कोडाकोडी अर पांचवां वर्ष हजार इक्कीस अर छठा वन हजार इक्कीस या भांति अवसर्पिणीके छह काल कहे ये अवसार्पिणी अर उत्सार्पिणी दोऊ भरत अर ऐरावतक्षेत्रविषैं प्रवर्ते और क्षेत्रनिमें नांहीं, इन दोऊ ही क्षेत्रनिमें आयुकायादिककी हानि वृद्धि है अर सर्वत्र सदा एक रीति है। पांच मेरुनिके पांच भरत अर पांच ही ऐरावत इन दस क्षेत्रनिमें पहिले दूजे तीजे कालविषै कल्पवृक्षनिकरि शोभित भोगभूमि हुती सो युगल ही उपजे। पहिले कालविषै शरीर ऊंचा कोस तीन आयु पल्य तीन। अर दूजे कालमें शरीर कोस दोय आयु पल्य दोय। अर तीजे कालमें काय कोस एक अर आयु पल्य एक पहिले कालमें देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमि समान रीति। अर दूजे कालमें हरिक्षेत्र रम्यक्क्षेत्र कैसी रीति है अर तीजे कालमें हैमवत अर हैरण्यवतक्षेत्र कैसी रीति है ॥६६॥ अर पहिले कालमें मनुष्यनिकी उगते सूर्यकीसी प्रभा अर दूजे कालमें पूर्ण चन्द्रमाकीसी प्रभा अर तीजेमें प्रियंगुमणि जैसी प्रभा स्त्री पुरुष सब ही सुन्दर अर पहिले कालमें तीन दिन पीछे बदरीफल समान आहार अर

सनासनसूं लगाय आठ आठ गुणा मोटा जानना अर आठ कर्मभूमियाका बालाग्रकी एक लीख कहिये अर आठ लीखनिकी एक जूं कहिये अर आठ जूंवानिका एक यव कहिये अर आठ यवनिकी एक उत्सेधांगुल कहिये सो या उत्सेधांगुल करि अल्प वस्तूनिका प्रमाण है अर जीवके देहकी उच्चताका प्रमाण है अर पांचसौ उत्सेधांगुलकी एक प्रमाणांगुल कहिये अर प्रमाणांगुल अवसर्पिणी कालका प्रथम चक्रवर्त्ती पांचसौ धनुषके शरीरका धारक होय है ताकी जानहु सो अकृत्रिम वस्तूनिकी ऊंचाई अर चौंडाई द्वीप अर सागर अर सुमेरु आदि पर्वतनिका प्रमाण या प्रमाणांगुलतैं जानना अर अजितनाथ स्वामीतैं लेकरिं पार्श्वनाथ पर्यंत जा समयमें जेता शरीर भया तेता शरीरकी जो अंगुल सो आत्मांगुल कहिये सो उन अंगुलनिका प्रमाण उस समयके नगरादिक ग्रहादिक अर छत्र चामरादिकका प्रमाण जानहु। भावार्थ—अंगुल तीन प्रकार है एक उत्सेधांगुल दूजा प्रमाणांगुल तीजा आत्मांगुल, सो अकृत्रिम वस्तूनिका विस्तार तो प्रमाणांगुलतैं है अर समय समय नगरादिकका प्रमाण आत्मांगुलतैं है अर आठ जौकी एक उत्सेधांगुल ताकरि अल्प वस्तूनिका प्रमाण जानहु। अर जीवनिके शरीरकी ऊंचाई पांचसौ धनुष अर साढे तीन हाथ अर तीन कोस यह सब उत्सेधांगुलतैं गिनिये सो छै उत्सेधांगुलका पाव हाथ होय अर बारह अंगुलकी एक विलस्त होय दोय विलस्तका एक हाथ अर दो हाथका एक किष्कु अर दो किष्कुका एक धनुष सो धनुषका नाम दंडहू कहिये अर २००० धनुषका एक कोस कहिये अर चार कोसका एक योजन कहिये अथवा आठ हजार धनुषनिका एक योजन कहिये ॥ ४६ ॥ क्षेत्रनिकी चौडाई लंबाई अर पर्वतनिकी ऊंचाई ये सब वडे योजनतैं कहे सो वडे योजन प्रमाणांगुलतैं है अर क्षेत्रकी जेती चौडाई तातैं तिगुनी प्रदक्षिणा जानहु ॥४७॥

अथानंतर—पल्यका विचार कहै हैं। एक गोल खाडा एक योजन चौडा अर एक योजन लंबा अर एक योजन ऊंडा सो उत्तम भोगभूमिके सात दिनके उर्णाके रोमनिके अग्रभागकरि गाढा वज्रतैं गदातैं कूट कूट भरिये अर सौ वर्ष जांय तब एक रोम काढिये सो या विधि काढते काढते जो खांडा रीता हो जाय सो व्यवहारपल्यके सम-

चौरासीलाख पद्मका एक नलिनांग होय ॥ ११ ॥ अर चौरासीलाख नलिनांगका एक नलिन होय ॥ १२ ॥ अर चौरासीलाख नलिनोंका एक कमलांग ॥ १३ ॥ अर चौरासी लाख कमलांगका एक कमल होय ॥ १४ ॥ अर चौरासीलाख कमलका एक टुट्यांग ॥ १५ ॥ अर चौरासीलाख टुट्यांगका एक टुट्यु ॥ १६ ॥ अर चौरासी लाख टुट्युका एक अटटांग ॥ १७ ॥ अर चौरासीलाख अटटांगका एक अटट ॥ १८ ॥ अर चौरासीलाख अटटका एक अममांग ॥ १९ ॥ चौरासीलाख अममांगका एक अमम ॥ २० ॥ अर चौरासीलाख अममका एक उहांग ॥ २१ ॥ अर चौरासीलाख उहांगका एक उह ॥ २२ ॥ अर चौरासीलाख उहका एक लतांग ॥ २३ ॥ अर चौरासीलाख लतांगका एक लता ॥ २४ ॥ अर चौरासीलाख लताका एक महालतांग ॥ २५ ॥ अर चौरासीलाख महालतांगकी एक महालता ॥ २६ ॥ अर चौरासीलाख महालताका एक सिर प्रकंपित ॥ २७ ॥ अर चौरासीलाख सिरप्रकंपितका एक हस्त प्रहेलिका ॥ २८ ॥ अर चौरासीलाख हस्तप्रहेलिकाका एक चर्चिक ॥ २९ ॥ यहांतक मध्य संख्यात वर्षकालकी मर्यादा कही अर अंकनिकी संख्याकूं उलंघे सो उत्कृष्ट संख्यात वर्ष वा असंख्यात अनंतकाल ताके पल्यसागर कल्पादि अनंत भेद हैं ॥ ३१ ॥ पुद्गल परमाणु आदि मध्य अंततें रहित अविभागी हैं इंद्रियगोचर नाहीं मूर्तिक हैं तोहू इंद्रियनितैं अगम्य हैं महासूक्ष्म हैं एक प्रदेशी हैं ॥ ३२ ॥ अर एक रस, एक वर्ण, एक गंध, दो स्पर्श ये पांचगुण एक कालमें धारे हैं अर शब्दतें रहित हैं अर स्कंधके योगकरि शब्दकी उत्पत्तिका कारण है ॥ ३३ ॥ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श इन गुणनिकरि परमाणु गले पूरे तथा रूक्ष स्निग्ध गुणके घटने वढनेतें उनके स्कंध परस्पर मिलें अर बिछुरें तातें पुद्गल कहिये स्कंधकी न्याईं परमाणुहीकूं पुद्गल कहिये वर्णादिक गुण मिलें अर बिछुरें ॥ ३६ ॥ अनंतानंत परमाणूनिके समूहका अब संज्ञादिकका नाम स्कंध कहिये अर आठ संज्ञादिक एक संज्ञा संज्ञादिक कहिये, अर आठ संज्ञा संज्ञादिकका एक त्रसरेणु कहिये, आगे सनासन ततरेणु त्रसरेणु रथरेणु उत्तम मध्यम जघन्य भोगभूमि वा कर्मभूमिके बालका अग्रभाग क्रमतें अब

सींगवारे हैं अर पश्चिम दिशाविषै पूंछवाले हैं। अर उत्तरदिशाविषै वचन रहित हैं अर चारों विदिशानिविषै सूस्या कैसे कानवाले हैं अर उत्तर अर दक्षिणकी कोणविषै अश्वमुख अर सिंहमुख हैं ॥ ७३ ॥ अर आगे दोऊ तरफ मूसाके कानवाले अर सींगवाले हैं अर श्वानमुख अर वंदरमुख पूछवाले हैं इनमें विजयार्द्धकी दोऊ तरफ गूंगा अर सूसाके कानवाले अर गोमुख अर मींढाके मुखवाले हैं ॥ ७५ ॥ अर हिमवान् पर्वतकी पूर्व दिशामें विजुली समान मुखवाले अर पश्चिम दिशामें श्याममुख हैं अर शिखरी पर्वतकी पूर्व दिशामें मेघमुख हैं अर पश्चिम दिशाविषै विजुली समान मुख है अर विजयार्द्धके दोऊ अंतविषै दर्पणमुख है अर गजमुख है ये चौबीस अंतरद्वीप हैं तिनमें कुभोगभूमिया हैं ॥ ७८ ॥ अर दिशामें पांचसौ योजन जाय अर विदिशामेंहू पांचसौ योजन परे जाय तहां अंतर दिशामें पचास द्वीप हैं ते छहसौ योजन चौडे तिनमें पर्वत हैं सो दिशामें पर्वत सौ योजनका विस्तीर्ण है अर पर्वत सम्बन्धी पचीस योजन दिशा विदिशाके बीच विदिशामें पचास योजनका चौड़ा द्वीप है सो पर्वत पचानवे भाग तो जलविषैं ऊंडा है अर जलथकी एकयोजन ऊंचा है अर वेदीकरि संयुक्त है अर वाही भागकूं सोलहगुणा करिए तव ऊपर जलवेष्टित नीचला क्षेत्र अर ऊपरला क्षेत्र जल संयुक्त है ॥ ४८१ ॥ लवणसमुद्रके मध्य जेते जंबूद्वीपके निकटवर्ती द्वीप हैं तेते ही धातुकीखंडके निकटवर्ती लवणोदधि संबंधी द्वीपके निकट जानहु तिनमें अष्टादशकुल कुभोगभूमियाके हैं तिन सबनिका एक पल्य आयु है तिनमें एकटंगे तो गुफामें वसैं हैं अर मीठी माटीका भोजन करैं हैं अर सब वृक्षनिके मूलविषैं वसैं हैं अर फल पुष्पके आहारी हैं अर एक दिनके अंतर है भोजन जिनका अर ते मरकर व्यंतर अर भवनवासी देव होय हैं ॥ ८४ ॥ अर जंबूद्वीप समान समुद्रका कोट है ताके अभ्यंतर शिलापट्ट है अर वाहर बनकी पंक्ति है ॥ ८५ ॥ जंबूद्वीपके विस्तारतैं लवणसमुद्रका विस्तार चौगुणा है तामें तीनयोजन घाट अंतरमंडलकी सूची है अर द्वीपसमुद्रकी पांचलाख योजनकी सूची है तामें समुद्रकी सूची दोलाख योजनकी चौड़ी सो घटाइए तव तीनलाख योजन रहा ताकूं चौगुना करिए

योजन चौडे अर मूलविषै अर मुखविषैं १०० योजन चौंडे हैं अर इन छोटे कलशनिका अंतराल परस्पर १२५ योजनका है अर बड़े कलशनितैं अन्तराल ७९८ योजन अर एक कोस कछुइक अधिक है अर यह क्षुद्रकलश अर बडे कलश यथायोग्य जलके प्रवाह करि संयुक्त हैं अर समुद्रके तटतैं ४२००० योजन परे जाइए तहां चारों दिशामें दोय दोय पर्वत हैं ते हजार हजार योजन ऊंचे हैं ॥ ६० ॥ तिनिमें पहिला पूर्व दिशाका जो पाताल कलश ताकी दोऊ तरफ दो पर्वत हैं एकका नाम कौस्तुभ दूजेका कौस्तभभास, ये रूपामई हैं अर आधे घड़के आकार हैं अर इनके अधिष्ठाता दो देव हैं तिनके नाम उदंग अर उदवास तिन देवनिकी विभूति विजयदेवकी विभूति समान जानहु ॥ ६१ ॥ अर दक्षिण दिशाकी तरफ कदंवक नामा कलशके दोऊ तरफ उदंक अर उद्वास नामा पर्वत हैं तिनके अधिपति शिव अर शिवदेव हैं ॥ ६२ ॥ अर पश्चिमकी उर बडवामुख कलशके दोऊ तरफ शंख अर महाशंख नामा पर्वत है ते शंख समान उज्वल है तिनके अधिपति जो देव तिनके नाम उदंक अर उद्वास हैं ॥ ६३ ॥ अर चौथा उत्तर दिशाकी उर यूपकेसर नामा कलश ताके दोऊ तरफ दोय पर्वत हैं तिनके नाम उदंक अर उद्वास तिनके स्वामी लोहित अर लोहितांक नामा देव हैं तिन देवनिकी विभूति विजयदेव समान जानहु। अर इन पर्वतनिका पातालकलशसूं अन्तर ११६००० योजनका है ॥ ४६६ ॥ अर इन पर्वतनिके शिखरविषैं नागकुमार देव लवणसमुद्रके वेलंधर तिनमें देवनिका निवास है ॥ ६७ ॥ लवणसमुद्रकी अभ्यंतरकी तरफ तरंगनिके धरण हारे ४२००० देव हैं तिनका नियोग है अर ७२००० नागकुमार देव जलकी वाह्य तरंगणीकूं धारैं हैं अर जलक्रीडाविषैं है अति आदर जिनका ॥ ६८ ॥ अर २८००० नागकुमार देवजलके अग्रकी शिखाकूं धारैं हैं ॥ ६९ ॥ अर समुद्रकी पश्चिम दिशामें १२००० योजन जाइए तहां एक गौतम नामा द्वीप १२००० योजनके विस्तार है तामैं गौतम नामा गिरि है ताका गौतमनामा देव अधिपति है सो विभूतिकरि कौस्तुभनामा देवसमान है अर या गौतमनामा द्वीपविषै कुभोगभूमियां मनुष्य हैं तिनमें पूर्वदिशामें तो इकटंगे हैं अर दक्षिण दिशाविषै

पक्षविषै दिनदिन वृद्धि अर कृष्णपक्षविषै दिनदिन हानि वेदिकाके अंत विषै है ॥ ४१ ॥ अर अधोभागविषै समुद्र द्रोणीके आकार है अर आकाशविषै विस्तीर्ण है अथवा जुडी हुई दो नावके आकार है अथवा यवकी राशि तुल्य है ॥ ४२ ॥ अर जगती कहिये वेदी तातैं ९५००० योजन गये समुद्रके बीच चार दिशामें चार पातालकलश हैं तिनके नाम–पूर्वदिशामें पाताल कलश १ पश्चिम दिशामें बडवामुख २ दक्षिण दिशामें कदंबक ३ उत्तर दिशामें यूपकेसर ४ ये पातालकलश मूलविषै अर अंतविषै १०००० योजन चौडे हैं अर मध्यविषै लाख योजन चौडे हैं अर लाख योजन उंडे हैं अर ये जलसमान पाताल तिनकी मोटाई ५०० योजनकी है अर तेतीस हजार तीनसौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीसराभाग इतना इतना एक २ कलशका एक २ भाग है ऐसे तीन २ भाग एक एक कलशविषै हैं सो ऊपरले भागमें जल है अर मध्यविषै जल पवन दोऊ हैं अर मूलविषै केवल पवन है, पवनका ऊचा नीचा स्वभाव है सो पवन ऊंचा आवै तव जल ऊंचा चढै अर नीचा पवन होय तब जल नीचा आवै शुक्लपक्षमें जल ऊंचा जाय अर कृष्णपक्षमें जल नीचा आवै अर इन पाताल कलशनिमें अन्तराल परस्पर दोय लाख सत्ताइस हजार एक सौ पौने इकहत्तर योजन है। शुक्लपक्षविषै पूर्णमासीके दिन जलकी पूर्ण बढ़वारी है अर अमावसके दिन सर्वथा जलकी घटवारी है यह तो चार दिशानिके पातालकलश कहे ॥४५१॥ अर चार दिशानिमें छोटे पाताल कलश चार मुख्य अर मूलविषै १००० योजन चौडे अर १००० योजन लंबे मध्यमें दस हजार योजन चौडे हैं अर ऐते ही ऊंडे हैं अर ५० योजनकी इनकी मुटाई है अर एक एकमें तीन तीन भाग हैं अर वाही तरफ जल पवन पाइए है ॥ ५३ ॥ अर एक एक भाग ३३३३ $\frac{1}{3}$ योजन अर एक योजनका तीजा भाग है ऐसे तीन भाग हैं अर इन दिशानिमें कलशनिका अन्तराल ११३०८५ योजन अर एक योजनके आठवें भाग दिशाके कलशनितैं विदिशानिके अन्तराल है अर इन आठों कलशनिके अन्तरालविषै मोतिनिकी पंक्तिकी नाई बीचमें हजार छोटे कलश हैं ते हजार छोटे कलश हजार योजन ऊंडे अर मध्यविषै हजार

तिनकी चारो दिशामें रत्नमई जिनप्रतिमा हैं ते अशोकादि देवनि करि पूज्य हैं ॥ २५ ॥ अशोक वनकी उत्तर पूर्व दिशामें अशोकपुर नगर है तहां अशोकदेवका मंदिर है सो विजयदेवके मंदिर प्रमाण है अर सप्तपर्ण वनतें पूर्वकी उर सप्तपर्ण नामा पुर है तहांका स्वामी सप्तपर्ण नामा देव है ताका मंदिर अशोकके मंदिर समान है अर चंपकवनतें दक्षिण पश्चिम दिशा विषैं चंपकपुर है ताका स्वामी चंपकनामा देव है ताका मंदिर तिनही प्रमाण जानहु। अर आम्रवनतें पश्चिम उत्तरकी उर आम्रपुर है ताका अधिपति आम्र नामा देव है ताका मंदिर तिनही प्रमाण जानहु ॥ ३० ॥ यह जंबूद्वीपके पूर्वदिशाके विजयनाम द्वारपालका वर्णन किया याही भांति वैजयंत जयंत अपराजित तीनों देवनिका वर्णन जानहु। आयु, काय, नगर विभूति, परिवार, चारों द्वारपालनिका समान जानहु ॥३१॥ यह जंबूद्वीपका संक्षेप वर्णन किया या जंबूद्वीपकूं बेढकर लवणसमुद्र तिष्ठ्या है सो दोयलाख योजन चौडा है, जंबूद्वीपके कोटके खाई समान लवणसमुद्र है सो वेदिका संयुक्त है ॥ ३२ ता लवण समुद्रकी प्रदक्षिणा पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ उनतालीस योजन कछु ऊन है अर अठारह हजार नौ सौ तिहत्तर कोटि छयासठ लाख उनसठ हजार छै सौ योजन प्रमाण लवणसमुद्रविषै प्रकीर्णक जानने ॥ ४३४ ॥ अर दश हजार योजन नीचे ऊपर विस्तार चौडा है अर हजार योजन औंडा है अर ग्यारह हजार योजन शास्वता पृथ्वीतें ऊंचा रहै है ॥ ३५ ॥ अर तटसूं पंचानवें हाथ गये एक हाथ ऊंचा है अर पंचानवें योजन गये एक योजन ऊंडा है अर आगे पचानवें स्थानक जाय तहां सोलह योजन सोलह हाथ अर सोलह अंगुल ऊंचा है ॥ ४३७ ॥ शुक्लपक्षके पंद्रह दिननिमें पांच हजार योजन समुद्रका जल बधै है अर कृष्णपक्षमें घटै है तब ग्यारह योजन रह जाय है ॥ ३८ ॥ तीन सौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग शुक्लपक्षमें प्रति दिन बधै है अर कृष्णपक्षमें प्रति दिन इतनाही घटै है अर वेदिकाके निकट अंतविषैं मक्खीके पंख समान है तहां आध योजन ऊंचा बधै है, दो सौ छ्यासठ धनुष दो हाथ सोलह अंगुल शुक्ल-

४० योजन उंचा सुमेरुकी चूलिका वैडूर्य मणिमई सो मूलविषैं १२ योजन चौडी अर मध्यविषैं ८ योजन चौडी अर शिखरविषैं ४ योजन चौडी है ॥ ३ ॥ अर चूलिकाकी प्रदक्षिणा मूलविषैं ३७ योजन मध्यविषैं २५ योजन अर अंतविषैं १२ योजन कछुयक अधिक जाननी अर लोहिताक्षमय आदि सुमेरुके चूलिका पर्यंत छह विभाग हैं अर सातवां भाग वनकरि किया सो ११ प्रकार है । पहिला विभाग लोहताक्षमय अर दूजा पद्मराग मय तीजा वज्रमय चौथा सर्वरत्नमय पांचवां वैडूर्य मय छठा हरितालमय सो ये छै भाग कहे सो एक एक भाग १६५०० योजनका है ताके छै विभागनिके ९९००० योजन भये अर सातवां वनकृत भाग ७ ताके ग्यारह भाग भूमिविषै पहिला भद्रशालवन दूजा मानुषोत्तर तीजा देवरमण चौथा नागरमण पांचवां भूतारमण छठा नंदन सातवां उपनंदन आठवां सौमनस नवमां उपसौमनस दसवां पांडुक ग्यारहवां उपपांडुक यह गणधर देवने ग्यारह भाग कहे यह ग्यारह स्थानक कहे तिनविषै ऊंचा चढे तो पर्वतकी चौडाई घटै है, मेरुकी जडसूं ग्यारह योजन ऊंचा चढे एक योजन चौडाई घटै है अर ग्यारह हाथ ऊंचा चढिये तो एक योजन चौडाई घटै है अर नन्दनवनतैं ऊंचा ग्यारह हजार योजन है अर ताही समान चौडाई है, ऐसी ही सौमनसवनकी है । अर पांचवां प्रदेश चूलिकाविषै पांच योजन ऊंचा चढिए तव एक योजन चौडाई घटै अर पांच हाथ ऊंचा चढिये तव एक हाथ चौडाई घटै ऐसे चूलिकाविषै चौडाई घटै ॥ ३।४ ॥ अर सुमेरुकी दोऊ तरफ पार्श्व भुजा प्रत्येक प्रत्येक एक लाख एक सौ योजन अर एक योजनके ग्यारह भाग तिनमें दोय भाग हैं अर नन्दनवनकी पूर्व दिशाविषै पण्य नामा भवन है । अर दक्षिण दिशाविषै वारुणनामा भुवन है अर पश्चिमदिशाविषै गंधर्वनामा भुवन है अर उत्तरदिशाविषै विचित्रक नामा भुवन है सो यह नन्दन वनके चार भुवनतैं ५० योजन ऊंचे हैं अर तीस योजन चौडे हैं अर ९० योजनकी प्रदक्षिणा है ॥ १७ ॥ यह चार भुवन कहे तिनमें पण्यविषै तो सौमनस नामा लोकपाल रमै है । अर वारुणविषै यम नामा लोकपाल रमै है अर गंधर्वविषै वारुण नामा लोकपाल रमै हैं अर चित्रविषै कुवेर नामा लोकपाल रमै हैं यह चारों

थाके दोऊ तरफ दो सिंहासन हैं सो जो दक्षिणकी ओर सिंहासन है तापर सौधर्म इंद्र खडा रहे प्रभुका अभिषेक करै है अर उत्तरकी ओरका सिंहासन पर ईशान इंद्र दूजे स्वर्गका खडा रहे प्रभुका अभिषेक करै है, तीनों सिंहासननिके मुख पूर्वकी ओर हैं तिनपर भरतक्षेत्र अर ऐरावतक्षेत्र अर पूर्व पश्चिम विदेह जम्बूद्वीपके तीर्थंकरनिका जन्मकल्याणकविषै जन्माभिषेक होय है ॥

भावार्थ—चारों दिशाकी चार पांडुकशिला तिनपर चार सिंहासन तिनपर जंबूद्वीपके तीर्थंकरनिका अभिषेक होय है अर पांडुकवनविषै चारों दिशाविषै चार जिनमंदिर हैं ते सब रतनमई महा मनोहर शास्वते अकृत्रिम हैं ॥५५॥ ते पांडुकवनके मंदिर चारो पच्चीस योजन लंबे अर पौना उन्नीस योजन ऊंचे अर साढे बारह योजन चौडे हैं अर तिनकी आधकोस ऊंडी नीव है ॥५६॥ अर तिन चैत्यालयनिके द्वारकी ऊंचाई चार योजनकी है अर चौडाई दो योजनकी है अर दोय छोटे दरवाजे हैं ते दो योजन ऊंचे अर एक योजन चौडे हैं ॥५७॥ यह तो पांडुकवनके चैत्यालयनिका विस्तार कह्या अर पांडुकवनके घणा नीचे सौमनस बन ताविषै चार जिनमंदिर हैं तिनकी ऊंचाई साढे सैंतीस योजन अर लंबाई पचास योजन अर चौडाई पच्चीस योजन है अर नींव कोस एक ऊंडी जानहु। जो वर्णन सौमनसवनके चैत्यालयनिका किया ताही प्रमाणकरि कुलाचल अर वक्षार गिरनिके चैत्यालयनिका जानहु। अर नंदनवन भद्रशालवन इनविषै चार चार चैत्यालय हैं तिनकी लंबाई १०० योजन अर चौडाई पचास योजन अर ऊंचाई ७५ योजन जानहु अर तिनकी नींव दोयकोस ऊंडी है अर सकल विजयार्द्ध पर्वतनिविषै सिद्धायतन चैत्यालय हैं तिनका वर्णन पांडुकवनके चैत्यालयनिके प्रमाण जानहु। अर सकल विजयार्द्धका प्रमाण भरतक्षेत्रके विजयार्द्ध प्रमाण जानहु। अर विजयार्द्धविषै देवछन्दनामा गर्भगृह है सो आठयोजन लम्बा अर चारयोजन ऊंचा अर दो योजन चौडा अर नींव कोस एक ऊंडी ॥३६१॥ अर भगवानका अकृत्रिम चैत्यालय देदीप्यमान रतनमय थंभनिकरि शोभित है अर सुवर्णमई है भीति जिनकी तिन भीतिनिविषै चंद्र सूर्य उडते पक्षी अर मृगनिके युगल

मिले ऐसे चार वन हैं ॥ ७८ ॥ दो देवारण्य दो भरतारण्य ये चार वन हैं अर इन वननिका वेदीका विस्तार भद्रशाल वनकी वेदीकी न्याई विस्तार है ॥ २७९ ॥ अर विदेह क्षेत्रके बीच ९९००० योजन ऊंचा मेरु है दोऊ भोग भूमि हैं मर्यादा जाकी ॥८०॥ तीन कटनीकरि संयुक्त ९९००० योजन ऊंचा सुमेरु सो पृथिवीविषै प्रसिद्ध है अर मेरु ऊपर चूलिका ४० योजन ऊंची है ताकरि मेरु अति शोभायमान है अर मेरुकी नींव १ हजार योजनकी है अर मूलविषै चौडाई १० हजार योजन अर एकयोजनके भाग ११ तिनमेंसे दस भाग लेने ॥ ८३ ॥ अर याकी परिधि कहिए तो ३१९१० योजन है अर एक योजनके ग्यारह भागनिमें अढाई भाग अर पृथिवीतलतैं एः हजार योजन ऊंचे चढिए तो तहां सुमेरुकी चौडाई दस हजार १०००० योजन है अर तहांकी परिधि ३१६२ योजन है तीनकोस दो सौ वारह धनुप तीनहाथ तेरह अंगुल कछुयक अधिक यह परिधि सुमेरुका जहां भद्रशाल वन है तहां है ॥२८८॥ वहुरि भद्रशाल वनतैं पांच सौ योजन ऊंचे चढिए तहां ५०० योजनका चौडा नंदन वन है ॥८९॥ तहां सुमेरुकी विस्तीर्णता ९९५४ योजन अर ६ कला है सो यह तो व्यास कहा ॥२९०॥ अर तहांका प्रदक्षिणा ३१४७९ योजन है ॥ ९३ ॥ सो यह तो वाह्यप्रदक्षिणा है अर नंदनवनका भीतरका विस्तार ८९५४ योजनका है अर तहांका प्रदक्षिणा २८३१६ योजन अर आठ कलाकी है अर नंदनवनतैं ६२५०० ऊपर चढिए तहां तीजा सौमनसनामा वन है ॥ २९६ ॥ तहां ४२७२ योजन अर आठकलाका वाह्य विस्तार है अर तहांकी वाह्य प्रदक्षिणा १३५११ योजन अर छह कलाकी है अर जो बाहरला विस्तार तातैं हजार योजन घाट माहिला विस्तार मुनि कहे हैं सो ३२७२ योजन अर आठ कला जानहु ॥ २९९ ॥ अर सोमनसवनकी बीचकी परिधि १०३४९ योजन अर तीन कला यहां सुमरुके विस्तार विषै एक योजनका ग्यारह कला लेनी कला कहो अथवा भाग कहो ॥ ३०० ॥ अर सौमनस वनतैं ३६००० योजन ऊंचा चढिये तहां चौथा पाण्डुक नामा वन है सो पांडुक वनका विस्तार ४९४ योजनका है, तहां मेरुकी परिधि ३१६२ योजन अर एक कोस है ॥ २ ॥ अर

सदा एकरीति है क्षेत्रकी रीति पलटै नाहीं अर नीलाचलके जड़ निकट कुंड हैं तिनमेंतैं निकसी कछादिक देशनिमैं गंगा अर सिंधक्षेत्र प्रति दो दो नदी हैं, विजयार्द्धगिरिकी गुफाकूं उलंघि सीता नदीमें प्रवेश करै हैं, पर्वतकी चौडाई समान गुफाकी लंबाई है अर आठ योजन ऊंची है अर बारह योजन चौडी है अर पचास योजन लंबी है अर एक एक गिरि प्रति दोय दोय गुफा हैं ॥६८॥ अर गंगाकूं आदिले सोलह नदी भरतक्षेत्रकी गंगा समान हैं अर रक्ता रक्तवती आदि ये सोलह नदी निषधाचलतैं निकसीं अर सीतामैं प्रवेश करती भईं यह गंगादि सोलह प्रमाण सो यह बत्तीसों नदी पूर्व विदेह विषैं हैं अर पश्चिम विदेहविषैहू वैसीही उसीप्रमाण वेही नाम ये वत्तीस नदी निषधाचल वा नीलाचलतैं निकसी अर शीतोदा नदीमें प्रवेश करती भईं ये चौंसठ नदियें प्रत्येक प्रत्येक चौदह हजार नदीनिके परिवारकरि मंडित हैं अर देवकुरु उत्तरकुरु दो भोगभूमिविषै सीता अर शीतोदा महानदी हैं सो प्रत्येक प्रत्येक चोरासी हजार नदीनिकरि संयुक्त हैं सो दोऊ नदिनिके तटविषैं वियालीस वियालीस हजार नदी प्रवेश करैं हैं अर सीता शीतोदा नदी दोऊनिकरि समुद्रपर्यंत एक एक प्रति पांच पांच लाख बत्तीस हजार अडतीस नदीनिका सब परिवार है, पूर्व पश्चिम विदेहनिमें सब नदीनिका प्रमाण चौदह लाख चोसठ हजार अठत्तर हैं अर भरत क्षेत्रविषैं गंगा अर सिंधु यह दोनों नदी हैं अर इनका परिवार चौदह चौदह हजार नदी हैं अर ऐरावत क्षेत्रविषै रक्ता रक्तोदा नदी हैं तिनका परिवार इनही प्रमाण है अर रोहिता अर रोहितास्या सुवर्णकूला अर रूप्यकूला यह चारों नदी प्रत्येक प्रत्येक अठाईस हजार परिवार संयुक्त हैं। अर हरिता हरिकांता अर नारी नरकांता इन चार नदीनिका परिवार एक एक प्रति छप्पन २ हजार नदी हैं। गंगा सिंधु आदि ये बारह नदी तिनका परिवार सर्व तीन लाख वानवे हजार १२ नदी हैं सब जंबूद्वीपकी नदियें एकत्र करिए तो सत्रहलाख बानवे हजार नब्वे होय हैं। सो लवण समुद्रमें इनका प्रवेश है अर या जंबूद्वीप विषैं बत्तीस महाविदेह अर एक ऐरावत एक भरत यह चौतीस क्षेत्र हैं तिनविषैं चौंतीसवृषभाचल पर्वत हैं ॥ ७७ ॥ अर सीता शीतोदा दोऊ नदीनके तट पूर्व पश्चिम विदेह पर्यंत लंबे ते समुद्रके तटतैं

भरत ऐरावतके विजयार्द्धकी दोय श्रेणी तिनमें दक्षिण श्रेणीकी नगरी पचास अर उत्तरश्रेणीकी साठ अर विदेहके विजयार्द्धकी श्रेणीनिमें पचपन नगरी हैं एक तो यह विशेष अर दूजा यह विशेष जो विदेहका विजयार्द्धनिविषै तो सदा चौथे कालकी आदिकी रीति अर दोऊ क्षेत्रनिके विजयार्द्धविषै ऋषभदेवके समय तो चौथेकालकी रीति अर वर्द्धमान स्वामीके समय चौथेकालके अंतकी रीति यातैं घटै वधै नाहीं अर विदेहनिमें सदा एक रीति है सो ही एकरीति तहांके विजयार्द्धनिमें है । अर यहांके विजयार्द्धमें महावीर स्वामीतैं लेय महापद्म स्वामीके समयतक आयुवर्ष १२० अर शरीर हाथ ७ ऊंचा अर महापद्म स्वामीके समयतैं बधेगा सो चौबीसवें तीर्थंकरके समय कोटि पूर्व आयु अर शरीर पांचसौ धनुष ऊंचा याके सिवाय विद्याधरनिमें घाट बाढ नाहीं सो विदेहके विजयार्द्धनिमें प्रत्येक प्रत्येक एकसौ दस नगरी हैं अर वत्तीस जो विदेह कहे हैं तिनमें कक्षादि आठ यहां त्रेसठशलाका पुरुष उपजे हैं तिनकी राजधानीनिके नाम—क्षेमा क्षेमपुरी अरिष्टा अरिष्टापुरी खडगा मंजूषा मोषधी पुंडरीकिनी इन पुरीनिमें शलाका पुरुष उपजैं हैं यह इंद्रपुरीके समान पुरी है यह तो आठ कक्षादिके विदेहनिका कही । अर सुसीमा, कुंडला, अपराजिता प्रभंकरा अंकावती पदमावती शुभा रत्नसंचया यह आठ राजधानी वक्षादिक आठ विदेहनिमें अनुक्रमतैं कही हैं ॥६१॥ अर अश्वपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयापुरी, अरजा, विरजा, अशोका, वीतशोका, यह आठ राजधानियें पदमादिक अर विदेहनिकी हैं ॥६३॥ अर विजया वैजयंती जयंती अपराजिता, चक्रा खड्गा, वप्रा अयोध्या यह आठ वप्रादिक आठ विदेहनिकी कही हैं ॥ ६४ ॥ यह सब ही पुरी दक्षिण उत्तरकी ओर लंबी बारह योजन अर पूर्व पश्चिमकी ओर चौडी योजन नव सुवर्णमई हैं कोट अर तोरण जिनके अर इन पुरीनिके हजार हजार बडे दरवाजे अर पांच पांच सौ छोटे दरवाजे अर सात सौ खिरकी अर नानाप्रकार रत्नजडित महा मनोहर हैं कपाट जिनके अर हजार चौहटे अर बारा २ हजार गली, ऐसा इन पुरीनिका विस्तार है ॥६७॥ ये नगरियें अनादि निधन हैं विदेह क्षेत्रविषै प्रलय नाहीं अपना अपना आयु पूर्णकर प्राणी मरै हैं परन्तु क्षेत्रकी

उत्तर विदेहविषैं पश्चिमा गंधमादिनी एक फेनमालिनी एक उर्णमालिनी ये नीलाचलतैं निकसी ये विभंगा नदीके प्रमाण करि रोहिता नदी समान ये विभंगा महानदीतैं मिली ॥

भावार्थ—ये बारह विभंगानदी नीलाचल अर निषधाचलके जडविषै जे कुण्ड हैं तिनमेंसूं निकसी हैं अर सीता अर शीतोदा महानदीविषै जाय मिली हैं तहां रत्ननिके तोरण हैं तिनविषै दिक्कुमारी देवी बसै हैं अर वक्षारगिरि पर्वतनिके मध्य सीता अर शीतोदा दोनों नदीनके तटविषै पूर्व अर पश्चिमके मध्य बत्तीस विदेह हैं॥ ४४ ॥ तिनके नाम कक्षा सुकक्षा महाकक्षा कक्षकावती आवर्ता लांगलावर्ती पुष्पकला पुष्पकलावती यह आठ विदेह सीता नदी अर नीलाचलके अंतरालविषैं दक्षिण उत्तर लंबे हैं। अर वच्छा सुवच्छा महावच्छा वच्छिकावती रम्या सुरम्या रमणीय मंगलावती ये आठ पूर्व विदेहा सीता नदी निषधाचलके मध्य हैं दक्षिण उत्तर लंबे हैं एक एक क्षेत्र छह खंडनिकरि युक्त है जो चक्रवर्तीका देश है अर पद्मा सुपद्मा महापद्मा पद्मकावती संख्या नलिना कुमदा सरिता ॥ २४९ ॥ यह आठ पूर्व विदेह शीतोदा अर निषधाचलके मध्य हैं दक्षिण अर उत्तर लंबे हैं अर वप्रा सुवप्रा महावप्रा वप्राकावती गंधा सुगंधा गंधला गंधमालिनी यह आठ पश्चिम विदेह नीलाचल शीतोदाके मध्य तिष्ठे हैं नीलाचलतैं शीतोदा पर्यंत लंबे हैं अर एक एक विदेहके छहछह खण्ड सो छहखंडका राज्य चक्रवर्ती करैं अर वासुदेव तीनखंडका राज्य करैं अर एकएक क्षेत्रका २२१२ योजन एक योजनके अष्टभाग घाटि यह पूर्वापर विस्तार चौडा है अर सकल विदेहका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला है तामें सीतानदीका विस्तार योजन ५०० घटाया तब विदेहका विस्तार ३३१८४ योजन अर चार कला रहा ताका आधा १६५९२ योजन अर दोय कला सो क्षेत्रकी लंबाई सो जो वक्षार पर्वत अर विभंगानदी तिनकी लंबाई जानहु। अर बत्तीस विदहनिम बत्तीसविजयार्द्धतैं एक विदेहकी जेती चौडाई तेतीही विजयार्द्ध गिरिकी लम्बाई सो जैसा भरतक्षेत्र अर ऐरावत क्षेत्रके विजयार्द्धका वर्णन किया वैसा ही बत्तीस विजयार्द्धका वर्णन जानहु सबके नव शिखर पच्चीस २ योजन ऊंचे वही सकल वर्णन है इतना विशेष जो

सवा चारसै अर चारके पचीससै तिनिमें एक एकके सवा छैसै ॥४६॥ इनमें चौदह पूर्वके पाठी तीनसै ३०० अर विक्रिया ऋद्धिके धारी ९०० अर अवधिज्ञानके तेरासै १३०० अर केवलज्ञानीके सात से ७०० श्रीवर्द्धमान केवल कल्याणकतैं लेय निर्वाण कल्याणक पर्यंत सब सात सौ होहिं। अर विपुलमनःपर्ययके धारी पांच सै ५०० अर परवादीनिके जीतनहारे वादित्र ऋद्धिके धारक चारसौ ४०० अर सामान्य मुनि करि नव हजार नवसै ९९०० ये सकल गणधरनि सहित चौदह हजार ऊपर ग्यारह होहिं यह जिनेश्वर मुनीश्वरके संघ करि जिनेश्वरका समवसरण ऐसा सोभता भया जैसा नदीनिके समूहकरि समुद्र सोहै ॥५०॥ सब संघ करि युक्त तीर्थेश्वर राजगृह नगरके निकट आये, कैसा है नगर लक्ष्मीका गृह कहिये भंडार है सोहै है स्वर्णमय रत्नगृह जाविषैं ॥५१॥ अर राजगृह नगरका दूसरा नाम पंचशैलपुर है यह नगर मुनिसुव्रतनाथके जन्म करि परम पवित्र है अर पांच पर्वतनि करि वेष्टित है अर पर सेनाकरि जीत्या न जाय अर महा विषम है ॥ ५२ ॥ पञ्च पर्वतनिके नाम—पहिला ऋषिगिरि पूर्व दिशाकी ओर चौकोर जिनके चहुं ओर नीझरने झरै हैं मानों यह गिरि इंद्रके दिग्गजनिकी न्याई अतिशय कर सब दिशानिकूं शोभित करै है ॥५३। दूजा दक्षिग दिशाकी ओर वैभार नामा पर्वत त्रिकोणाकार सोहै है १ अर तीजा दक्षिण पश्चिमके मध्य विपुलाचल सो त्रिकोणाकार ही सोहै है ॥५४॥ चौथा बलाहक नामा पर्वत चढे धनुषके आकार तीनों दिशानिकूं व्याप्त कर सोहै है ४ अर पांचमा पांडुक पर्वत गोलाकार पूर्व उत्तरके मध्य शोभता भया। ये पांचों पर्वत फल पुष्पनिके समूहकरि नम्रीभूत जो लता अर वृक्ष तिनकरि शोभित हैं अर झरते नीझरानिके समूहकरि मनोहर हैं ॥ ५६ ॥ इन पर्वतनितैं वन एक वासुपूज्यके समवसरण टार सर्व तीर्थंकरनिके समबसरणके आयवे कर महा पवित्र हैं। भावार्थ—सबनिके समवसरण यहां आये हैं। वासुपूज्य स्वामीका न आया ॥ ५७ ॥ वे वन सिद्धक्षेत्रनिकरि शोभित हैं, कैसे हैं सिद्धक्षेत्र तीर्थयात्राकूं आवते जो भव्यनिके अनेक समूह तिनकरि सेवित हैं, अर नाना प्रकारके अतिशयकरि संयुक्त हैं ॥ ५८ ॥ तहां भगवान् विपुलाचलविषै विराजे इंद्रने करी है प्रभुके समवसरणकी समस्त रचना जहां ॥ ५९ ॥ समवसरणविषै तो सौधर्म इंद्रादिक समस्तदेव अर श्रेणिकादिक मनुष्य आये

बरसाई आकाशतैं पहुपनिकी वृष्टि तिन पुष्पनि करि आशा कहिये दिशा अर विश्वंभरा कहिये पृथ्वी सो शोभती भई ॥ ३२ ॥ अर चहुंदिशा चौंसठ चमर देवनिने ढारे तिनकरि जिनवर ऐसा शोभता भया जैसी बढती गंगाकी तरंगनि करि हिमवान् गिरि पर्वत शोभै है ॥ ३३ ॥ अर सर्व जगत्के ईश्वर जिनेश्वर तिनिका प्रभामंडल अपने तेजकरि सूर्यके तेजकूं आच्छादित करता शोभता भया दूर किया है रात्रि दिनका भेद जाने ॥ ३४ ॥ अर देवनिके वजाये जे दुंदुभी तिनकी धीर ध्वनि आकाशविषै विस्तरी मानूं लोकविषै जिनराजके कर्मशत्रुके जीतवेका यश ही गावैं हैं ॥ ३५ ॥ अर या पृथ्वीविषै जीवन्मुक्त जो श्री अरहंतदेव तिनके तीन छत्र शोभते भये मानों तीन भुवनमें भगवानका इष्ट छत्र राज्य ही प्रकट दिखावै हैं। भावार्थ—तीन छत्र त्रैलोक्यनाथ ही पर फिरैं। ॥ ३६ ॥ वहुरि जिनपतिका सिंहासन सुरेंद्रनिकरि वेष्टित शोभता भया कैसे हैं जिनपति तज्या है राजानिकरि वेष्टित सिंहासन जिनि। भावार्थ—जिन जब राजानि वेष्टित सिंहासन तज्या तब इंद्रनिकरि वेष्टित सर्वोत्कृष्ट सिंहासन विराजे ॥ ३७ ॥ वहुरि जिनेंद्रकी दिव्यध्वनि धर्मके व्याख्यानविषै जगत्त्रयकूं पवित्र करती भई, कैसी है दिव्यध्वनि एक योजन तक सुनवेमें आवै है श्रवण करणहारनिके चित्त अर काननिकूं अमृत तुल्य है ॥ ३८ ॥ भगवान् देवन करि अर्चित मानों अष्ट प्रातिहार्य विभव करि मंडित अनेक देशनिविषै विहारकरि मगधदेशविषै आये ॥ ३९ ॥ पाई है सप्त ऋद्धिरूप संपदा जिनि ऐसे ग्यारह गणधर समस्त श्रुतके पारगामी इंद्रभूत्यादिक तिनकरि मंडित महावीर, जीवनिकूं जगत्तैं पार करते भये ग्यारह गणधरनिके नाम इंद्रभूत १ अग्निभूत २ वायुभूत ३ शुचिदत्त ४ पांचमा सुधर्म ५ छट्ठा मांडव ६ सातवां मौर्यपुत्र ७ आठमां अकम्पन ८ नवमा अचल ९ दशमा मेदार्यक १० ग्यारमा प्रभास ११ यह ग्यारह सकल मुनिनके गुरु होते भये ॥४३॥ तिनकी सप्त ऋद्धीनिके नाम—प्रथम तप ऋद्धि १ जाके तप्त दीप्तादि सात भेद हैं अर २ बुद्धि ऋद्धि ३ विक्रियाऋद्धि ४ अर अक्षीणऋद्धि ५ वलऋद्धि ६ औषधऋद्धि ७ रस ऋद्धि ये सात ऋद्धि ७ तीन गणधरनिके शिष्य मुनि चौदह हजार तिनकी विगति पांचोंके दश हजार साढ़े छैसौ तिनविषै एक एकके २१ सो तीस अर दोके साढ़े आठसौ तीन एक एकके

पादपद्मंजिनेन्द्रस्य सप्तपद्मैः पद्रे पद्रे । भुवेव नभसागच्छदिन्द्रादिभिः सुपूजितम् ॥ १ ॥

अर्थ—अर जिनेन्द्रके चरणकमलकूं देव पद्पदविषैं सप्त सप्त कमलनिकरि पूजे हैं जिनेन्द्र आकाश विषे गमन करे हैं सो मानों पृथिवी ही कमलनिकरि प्रभुकी पूजा करै है कमल आकाशविषे फूल रहे हैं मानों चरण कमलनिका संगपाय विकासकूं प्राप्त भए हैं। ९ ॥२४॥ अर मेदिनी कहिए पृथ्वी वह शालि आदि समस्त अन्नके समूह स्वतेसुभाव फल तिनकरि शोभती भई मानो ये धान नाहीं हैं जिनेश्वरके दर्शनके आनंदतैं पृथ्वीके रोमांच भए हैं। १० ॥२५॥ अर आकाश मेघादिक आवरण करि रहित भया शोभता भया मानूं आकाश जिनराजके केवलज्ञानकी विमलताकी शिक्षा ही आचरै है। ११ ॥ २६ ॥ अर सर्व दिशा निर्मलताकूं धरती भई सो मानों निर्मल होय भगवानकूं सेवै हैं सो जिनदेव निर्मल जीवनही करि सेयवे योग्य हैं, कैसी हैं निर्मल भई दिशा नीरज कहिए रज रहित हैं यहां एक व्यंग है नीरज नाम कमलका है सो कमल रात्रीविषै नाहीं प्रफुल्लित होय है अर ए दिशा अहोरात्र सदा ही नीरज हैं समवसरणमें रात्रि दिनका भेद नाहीं है। १२ ॥ २७ ॥ अर देवेन्द्रकी आज्ञातैं देवीनिका आवनेका शब्द करते भए जो आवो जिनेंद्र धर्मका दान करै हैं सो लेहु याभांति सब ओर देवनिके शब्द होय रहे हैं देव आवैं हैं। १३ ॥ २८ ॥ अर जिनेन्द्रके आगे धर्मचक्र चला जाय है हजार आरा जाके सो अपनी दीप्ति करि सूर्यकी दीप्तिकूं जीते है। १४ ॥ २९ ॥ ये देवकृत चौदह अतिशय अद्भुत तिन करि संयुक्त जिनपति पृथ्वीविषै विहार करते भये, अष्ट मंगल द्रव्यनिकरि मंडित अर ध्वजानिकरि शोभित ॥ ३० ॥ ये चौंतीस अतिशय कहे हैं। अब अष्ट प्रातिहार्य कहै हैं—

अशोक नगमाभासी दशोकानोकुहश्रया । नमद्भुवनमाकाशं महत्वं किमतः परं ॥ ३१ ॥

अर्थ—अशोक नाम वृक्ष शोककूं हरै है ऐसी अपनी पत्र पुष्पादिक जो विभूति ता करि शोभता भया आकाशकूं उद्योतरूप करता भया या उपरांत और महत्व क्या ? अशोकवृक्ष अपनी उच्चताकरि मानों आकाशकूं स्पर्शै है आकाश मानो नय गया है ॥ ३१ ॥ बहुरि नम्रीभूत भये हैं सिरके केश जिनके ऐसे जो देव तिनके हाथनि करि

होना अर उन्मेष कहिए उघडना, तिनसे रहित शांत हैं सुन्दर लोचन जिनके ॥ ११ ॥ अर नख केश बधे नांहीं ॥ १२ ॥ अर भोजनका अभाव ॥ १३ अर जराका अभाव ॥ १४ ॥ छायाका अभाव ॥ १५ ॥ अर अपार कांति ॥ १६ ॥ अर एक ही मुख महा मनोहर चतुर्मुख भासै ॥ १७ अर सन्मुख दो दिशानिकी तरफ दोय सै योजन दुर्भिक्षका अभाव अर उपसर्गका अभाव अर कोई जीव काहू जीवकूं उपसर्ग पीडा न कर सकै ॥ ८ ॥ अर गगन गमन । १९ । १४ । सबही विद्याविषै प्रवीणता ॥ १० ॥ घातिया कर्मनिके क्षयतैं ये दश अद्भुत अतिशय प्रकट भए सो जिनराजका शरीर देख्या अर यश सुन्या जगत्कूं सुख उपजै ॥ १५॥ अथानंतर—देवकृत चतुर्दश अतिशय तिनका कथन करै है—जिनराजकी सर्वार्थ मागधीभाषा अमृतकी धाराकी नाईं कर्णपुटकर पीवते जे तीन जगतके प्राणी तिनकी तृप्ति करै है ॥ १६ ॥ वहुरि पृथ्वीविषै सर्व प्राणीनिके मित्रता होय है जे जाति विरोधी प्राणी हैं ते परस्पर वासना न सूंघ सके हैं ऐसे सिंह, गजादिक अर गरुड सर्पादिक तिनका दोष मिट जाय ॥ १७ ॥ अर छै ऋतुके फल फूले एकैलार फले फूले सर्वऋतु एकैलार भेली भईथकी भगवानकूं सेवे हैं सो कैसी हैं षट्ऋतु फलफूलनिकरि नम्रीभूत भए जे वृक्ष तिनकरि मानों प्रभुकूं नमस्कार करै हैं ॥ १८ ॥ जिन विषै वह जानै मैं आगे जाऊं वह जानै मैं आगे जाऊं ऐसी श्रद्धाकरि मानों सबऋतु एक ही काल आयकरि प्रभुकूं सेवैं हैं । प्रभुकी सेवा आराधनाकूं आई हैं अर पृथ्वीरूप स्त्री मानों अपने अन्तःकरणकी शुद्धता जिनेश्वरकूं दिखावती संती शुद्ध आरसी समान उज्वल भासै है, कैसी है पृथ्वीरूप बधू सर्वरत्नमई शोभै है अंग जाका । ४ ॥ १९ ॥ अर जो पवन है सो प्रभूके अनुगामिनी भई विचरै है सन्मुख नाहीं आवै है जैसे सेवक स्वामीके पीछे ही चलै हैं तैसें पवन पीछे लागी आवै है कैसी है पवन स्पर्शकरि उपजाया है जीवनके अंगकूं सुख जाने ॥ ५ ॥ २० ॥ अर जब भगवान जगत्के बांधव जीवनके उपकार निमित्त विहार करें तब सब जगतकूं आनंद होय किसीके दुःख न रहै । ६ । ॥२१॥ अर पवनकुमार देव एक योजन तक पृथ्वीकूं कंटक पाषाण कंटकादि रहित करैं । ७ ॥२२॥ वहुरि सनत्कुमार कहिए मेघकुमारदेव शब्द करते संते शुभ सुगंध जलकी वर्षा करै । ८ ॥२३॥

उनकरि उससमय विपुलाचल देवमनुष्यनिकरि पूज्य भया ॥६०॥ मुनीनिके चार संघ तिनमें पाई है ऋद्धि जिनि ऐसे जे ऋषि सो भगवान्‌के समीप तिष्ठे हैं अर यति कहिए कषायनिके अंतकरणहारे श्रेणिधारक अर मुनि कहिये प्रत्यक्षज्ञानी अर अनागार कहिये मुनि ये गणधरनिसहित ग्यारह अधिक चौदह सहस्र साधु होते भये, अर आर्यिकानिकै संघविषै चंदना आदि पैंतीस हजार आर्यिका अर श्रावक एक लक्ष अर श्राविका तीन लक्ष ॥ ६३ ॥ ये चतुर्विध संघ अपने अपने स्थानकविषै तिष्ठते भये अर देवदेवी चतुर्निकायके असंख्यात अर अनेक तिर्यंच तिनकरि मंडित वह धीर महावीर बारहसभाकरि शोभता भया ॥ ६४ ॥ तहां समवसरणविषै देव मनुष्य तिर्यंच तीन भवनके प्राणी धर्म श्रवणकी इच्छाकरि तिष्ठते भये तब गौतम गणधरके प्रश्नतैं भगवान् व्याख्यान करते भये ॥६५॥ जीवके भेद दोय एक सिद्ध एक संसारी अर जीवका लक्षण उपयोग जीवनमें सिद्ध अनंत अर संसारी अनंतानंत ॥६६॥ तिन दोनों भेदनिमें सिद्धक्षेत्रविषै विराजे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके उपायकरि करी है आत्माकी सिद्धि जिनि ते सिद्ध कहिये ॥६७॥ ते सिद्ध अष्ट कर्मनिके क्षयतैं होय हैं सो विशेषताकरि कहै हैं ज्ञानावरणीके पांच भेद तिनके क्षयतैं अर दर्शनावरणीके नव भेद तिनके क्षयतैं ॥ ६९ ॥ वेदनीयके दोय भेद साता असाता तिनके उडावनेतैं अर मोहनीके अठाईस भेद तिनके हनैतैं अर आयु कर्म चार प्रकार ताके भस्म करवेतैं अर बयालीस प्रकार नामकर्म तथा त्रानवै प्रकार ताके नाशतैं अर दोय भेद गोत्रकर्म ताके नाशवेतैं अर पंच भेद अतंरायकर्म ताके विध्वंसतैं अर वेदनीयकर्म दोय प्रकारके नाशतैं साधु महा पुरुष सिद्ध होय हैं, त्रैलोक्यके शिखर सिद्ध तिष्ठे हैं एक एक सिद्धक्षेत्रविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं वे सिद्ध क्षायकसम्यक्त, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य परमसूक्ष्मताकरि संयुक्त हैं अर महा गहन अवगाहन गुणकरि मंडित हैं अर अव्याबाध कहिये बाधारहित अनंतसुख ताकरि संयुक्त हैं अर अगुरुलघु हैं ॥७३॥ गुरुता अरु लघुता जिनमें नाहीं, ये प्रसिद्ध जे अष्टगुण तिनकूं आदि दे सिद्धनिके अनंत गुण हैं वे सिद्ध असंख्यातप्रदेशी हैं अर वर्णादि पुद्गलके बीस गुण तिनके नाशतैं अमूर्तिताकरि संयुक्त तिष्ठे हैं ॥ ७४ ॥ अर जो शरीरतैं मुक्त भये हैं तातैं किंचित्मात्र ऊन पुरुषाकार विराजे हैं जैसैं

मुनिकूं होय है अर ग्यारवें उपशांतकषाय तहां भी यथायोग्य यथाख्यात चारित्र है सो बारवेंतैं उतरता सुख कहिए अर आठमें नवमें दशमें क्षपकश्रेणीवारिनिके ऊपरले गुणस्थाननितैं उतरता सुख कहिए॥ ८७ ॥ दशमेंतैं उतरता नववेंमें नवमेंतैं उतरता आठवेंमें, अर आठवेंतैं उतरता सातवेंमें अप्रमत्तसंयमीके सुख हैं। जहां चार कषाय चार विकथा, पांच इंद्रिय, निद्रा अर स्नेह ये पंद्रह प्रमाद नाहीं सो प्रमादके अभावतैं परमशांततारूप अप्रमत्तसंयमीके सुख हैं॥ ८८ ॥ अर सातवेंतैं उतरता छठे गुणस्थान प्रमत्तसंयमीमुनिके यद्यपि प्रमाद है तथापि हिंसा, मृषा, अदत्तादान, कुशील, परिग्रह इन पांच पापनिके त्यागतैं पंचमहाव्रतकी सिद्धि है तातैं प्रमत्तमुनिके भी शांततारूप सुख है॥ ८९ ॥ अर मुनितैं उतरता पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावकके महातृष्णाके जीतवेतैं सुख है कैसे हैं श्रावक हिंसादिक पंच पाप तिनका यथाशक्ति अणुव्रतरूप किया है त्याग जिनि ॥ ९० ॥ अर अणुव्रती श्रावकतैं उतरता अव्रतसम्यग्दृष्टी चतुर्थगुणस्थानवर्ती तत्वश्रद्धानिकरि उपज्या सुख अनुभवै है यद्यपि अव्रतसम्यग्दृष्टि अणुव्रती श्रावककी अपेक्षा आरंभी है परिग्रही है अर हिंसा आदि तृष्णा पर्यंत पांच पापनिका त्यागकरि व्रत नाहीं धरै है तथापि विषयकषायतैं महाविरक्त है अर सप्तव्यसनका त्यागी है अर जिनके विश्वासघातादि मोटे पाप नाहीं किंचित् कदाचित् युद्धादिकका योग बनै तो न्यायरूप हिंसा है अर निज स्त्रीका सेवन है। मिथ्यादृष्टीनि सारिखे विषयासक्त नाहीं मोक्षाभिलाषी हैं तातैं इनहूंके ज्ञानरूप सुख है। ये चतुर्थ गुणस्थानादिकके धारक सम्यग्दृष्टि तो सुखीही हैं अर तीजे गुणस्थानका नाम मिश्र जहां सम्यक्त अर मिथ्यात्व दोऊ हैं ये दोऊ परस्पर विरुद्धरूप हैं। तातैं तीजे गुणस्थानवारिनके सुख दुख दोऊ मिश्रित हैं सम्यक्तकी धारणाकरि तो सुख है अर मिथ्यात्वकरि दुख है जैसैं शी(फि) रणीका स्वाद मिष्ट अर अम्ल दोऊरूप हैं तैसैं तीजे गुणस्थानवारेनिके भाव मिश्रधारारूप हैं। यहां सुख दुख दोनों कहिए ॥ ९२ ॥ अर सम्यक्तकूं नाशकरि भाव नीचे पडे सो जौलग मिथ्यात्वभूमिकूं नाहीं स्पर्शै है तौलग अंतरालवर्ती सासादन गुणस्थान कहिए जैसैं फल वृक्षकी शाखासूं टूटै अर भूमि नाहीं छूही अंतरालवर्ती है परन्तु भूमि स्पर्शैगा, सो सम्यक्तरूप शाखातैं

मूसिमें मैन गलि जाय अर आकाश तथा पुरुषाकार रह जांय तैसैं पुरुषाकार बिराजे हैं ॥ ७५ ॥ अर मृत्यु जन्म जरा अनिष्टसंयोग क्षुधा तृषा इत्यादि जे आधि व्याधि उनकरि उपजे जे समस्त दुःख उनकरि वे सिद्ध अबाधित हैं जिनके कोऊ बाधा नाहीं ॥७६॥ अर वे सिद्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव ये पांच भेदके परावर्तनकरि रहित परम आनंदरूप हैं ॥ ७७ ॥ अर जे ज्ञानी परम मोक्षके उद्यमी जे अंतरात्मा तिनके भेद तीन। चौथा अव्रतसम्यक्त गुणस्थान ताके धारक अव्रतसम्यग्दृष्टि सो प्रथम भेद अर दूजा भेद देशव्रत पंचमगुणस्थान ताकरि युक्त ग्यारह प्रतिमाके धारक अणुव्रती श्रावक अर तीजा भेद महामुनि छठे गुणस्थानकतैं लेय चौदहवें गुणस्थानक लग नव प्रकार है ॥७८॥ यह जीव पारणामिकभाव धारक मोहके उदयतैं तथा क्षयोपशमतैं गुणस्थानविषै प्रवर्तें हैं ॥७९॥ वहां चौदह गुणस्थानोंके नाम पहिला मिथ्यादृष्टि १ दूजा सासादन २ तीजा सम्यक्मिथ्या कहिए मिश्र ३ चौथा अव्रतसम्यक्दृष्टि ४ ॥ ८० ॥ पाचवां संयतासंयत कहिये देशव्रत सत्यार्थ है नाम जाका ५ छठा प्रमत्त संयमी ६ सातवां अप्रमत्तसंयमी ७ आठवां अपूर्वकरण ८ नवमां अनिवृतकरण ९ दशमां सूक्ष्मसांपराय १० सो आठवें नवमें दशमेंविषै उपशमक्षायकश्रेणी दोय अर ग्यारवेंमें क्षपकश्रेणीवाला न जाय, उपशमवालाही जाय, ग्यारवेंका नाम उपशांत कषाय ११ बारवेंका क्षीणकषाय १२ तेरवां सयोगकेवली १३ चौदहवां अयोगकेवली १४ ये चौदह गुणस्थान कहे हैं तिनमें चौथे गुणस्थानक ताईं सम्यक्ती अर पंचम गुणस्थानके गृहस्थ अर छठेसे चौदहवें तक मुनि, सो सारे निर्ग्रंथ वाह्यरूपमें तो मुनिनमें भेद नांहीं सब ही दिगंबर अर अध्यात्म कहिए भाव तिनमें नाना भेद हैं सर्व मुनिनमें उतरते भाव छट्ठे गुणस्थानवारिनके हैं अर ऊपरके गुणस्थाननिमें चढते चढते भाव बारहवें गुणस्थान उत्कृष्ट अंतरात्मा अर तेरहवें चौदहवें गुणस्थान मुनीश्वर परमात्मा भए ॥ ८४ ॥ संयतासंयत पांचवां गुणस्थान वहांतक गृहस्थ तिनिमें वाह्यरूपका भी भेद अर भावनिमें भी भेद अर ऊपरले नव गुणस्थान निर्ग्रंथनिके हैं तिनमें वाह्यरूप भेद नाहीं अर अंतरंग भेद हैं ॥ ८५ ॥ मुनीनिमें सर्व उत्कृष्ट केवली तेरवें चौदहवें गुणस्थान हैं तिनके अतेंद्रीसुख अनंत है। कैसे हैं केवली पाई है नवक्षायकलब्धि जिनि अर केवलीसे उतरता सुख बारवें क्षीणकषाय गुणस्थाने

उनकरि उससमय विपुलाचल देवमनुष्यनिकरि पूज्य भया ॥६०॥ मुनीनिके चार संघ तिनमें पाई है ऋद्धि जिनि ऐसे जे ऋषि सो भगवान्के समीप तिष्ठे हैं अर यति कहिए कषायनिके अंतकरणहारे श्रेणिधारक अर मुनि कहिये प्रत्यक्षज्ञानी अर अनागार कहिये मुनि ये गणधरनिसहित ग्यारह अधिक चौदह सहस्र साधु होते भये, अर आर्यिकानिके संघविषै चंदना आदि पैंतीस हजार आर्यिका अर श्रावक एक लक्ष अर श्राविका तीन लक्ष ॥ ६३ ॥ ये चतुर्विध संघ अपने अपने स्थानकविषै तिष्ठते भये अर देवदेवी चतुर्निकायके असंख्यात अर अनेक तिर्यंच तिनकरि मंडित वह धीर महावीर बारहसभाकरि शोभता भया ॥ ६४ ॥ तहां समवसरणविषै देव मनुष्य तिर्यंच तीन भवनके प्राणी धर्म श्रवणकी इच्छाकरि तिष्ठते भये तब गौतम गणधरके प्रश्नतैं भगवान् व्याख्यान करते भये ॥६५॥ जीवके भेद दोय एक सिद्ध एक संसारी अर जीवका लक्षण उपयोग जीवनमें सिद्ध अनंत अर संसारी अनंतानंत ॥६६॥ तिन दोनों भेदनिमें सिद्धक्षेत्रविषै विराजे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके उपायकरि करी है आत्माकी सिद्धि जिनि ते सिद्ध कहिये ॥६७॥ ते सिद्ध अष्ट कर्मनिके क्षयतैं होय हैं सो विशेषताकरि कहै हैं ज्ञानावरणीके पांच भेद तिनके क्षयतैं अर दर्शनावरणीके नव भेद तिनके क्षयतैं ॥ ६९ ॥ वेदनीयके दोय भेद साता असाता तिनके उडावनेतैं अर मोहनीके अठाईस भेद तिनके हनैतैं अर आयु कर्म चार प्रकार ताके भस्म करवेतैं अर बयालीस प्रकार नामकर्म तथा त्रानवें प्रकार ताके नाशतैं अर दोय भेद गोत्रकर्म ताके नाशवेतैं अर पंच भेद अतंरायकर्म ताके विध्वंसतैं अर वेदनीयकर्म दोय प्रकारके नाशतैं साधु महा पुरुष सिद्ध होय हैं, त्रैलोक्यके शिखर सिद्ध तिष्ठे हैं एक एक सिद्धक्षेत्रविषै अनंत सिद्ध विराजे हैं वे सिद्ध क्षायकसम्यक्त, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य परमसूक्ष्मताकरि संयुक्त हैं अर महा गहन अवगाहन गुणकरि मंडित हैं अर अव्याबाध कहिये बाधारहित अनंतसुख ताकरि संयुक्त हैं अर अगुरुलघु हैं ॥७३॥ गुरुता अरु लघुता जिनमें नाहीं, ये प्रसिद्ध जे अष्टगुण तिनकूं आदि दे सिद्धनिके अनंत गुण हैं वे सिद्ध असंख्यातप्रदेशी हैं अर वर्णादि पुद्गलके बीस गुण तिनके नाशतैं अमूर्तिताकरि संयुक्त तिष्ठे हैं ॥ ७४ ॥ अर जो शरीरतैं मुक्त भये हैं तातैं किंचित्मात्र ऊन पुरुषाकार विराजे हैं जैसें

है सो सुख सम्यग्दृष्टिनिकै होय उन सम्यग्दृष्टि जीवनिका मनुष्यभव सफल है अर अज्ञानी जीवनिका मनुष्यभव दीर्घ संसारका ही कारण है। कैसे हैं अज्ञानी मूढ है चित्त जिनका सो उनकूं मनुष्यभव दीर्घ संसार ही का कारण है। अभव्य अर दूरभव्य ये तो अज्ञानी ही हैं अर ज्ञानभाव निकट भव्यहीके आवै निकटभव्यता ही निर्वाणका कारण है ॥ ३१ ॥ ? कर्मभूमिविषै अर सवही भोगभूमिविषै तिर्यंचकी न्याई मनुष्यनिकी आयु जानो। कर्मभूमिविषै उत्कृष्ट कोटिपूर्व अर जघन्य अंतमुहूर्त अर भोगभूमिविषैं जघन्य एक समय अधिक कोटिपूर्व भरत ऐरावतकी अपेक्षा, उत्कृष्ट तीन पल्य ही है, अर मध्यभोगभूमिविषैं पल्य दोय अर जघन्यभोगभूमिविषैं एक पल्य है ॥ ३३ ॥ परमती बालतपके धारक कायक्लेशविषैं तत्पर मिथ्यादृष्टि तिनमें कैयक निराहारी, कैयक पवनाहारी, कैयक कंदमूल भक्षी, कैयक पत्र फूलके आहारी शांत होगई है बुद्धि जिनकी, अर जीती हैं कषाय अर क्रिया है इंद्रियनिका निग्रह जिनि ऐसे परिव्राजक अकाम निर्जराकरि युक्त अथवा यिर्यंच व्रत नेमके धारक मिथ्यादृष्टि ॥ ३४ ॥ मिथ्यात्वकरि मलिन है चित्त जिनका, सो भवनवासी व्यंतर जोतिषी इन देवनिमें उपजें अथवा अल्पऋद्धिके धारक स्वर्गवासी भी होय हैं, कैसे हैं वे देव कंदर्प कहिये कामकी है तीव्रता जिनके, ऐसे गवैया वजैया नचैया, अभियोग कहिये दासकर्मके करणहारे अर किल्बिषादि कहिये सबतैं उतरते हैं महा नीच निकृष्ट देव होवें ॥ ३६ ॥ ते बडे देवनिकी ऋद्धिका ऐश्वर्य अर महा उदय देखकरि मानसिक दुःखकरि पीडे सदा क्लेशरूपही रहैं देव दुर्गति कहिये देवनिमें नीच दशा ताके दुःखकरि सदा पीड़ित हैं ॥ ३७ ॥ सम्यग्दर्शनके अलाभतैं अभव्यनिकी न्याईं भव्यहू भवसागरविषैं डूबे हैं सदा दुःखही है ॥ ३८ ॥ देवनिमें भवनवासी देव जो असुरकुमार जातिनका उत्कृष्ट आयु एक सागर किंचित् अधिक अर व्यंतरनिका उत्कृष्ट एक पल्य अर जघन्य आयु दशहजारवर्ष अर भवनवासीनिका जघन्य दश हजार वर्ष, अर ज्योतिषी देवनिका उत्कृष्ट एक पल्य कछु इक अधिक अर जघन्य आयु ज्योतिषीनिका पल्यके आठवां भाग ॥ अर स्वर्गवासीनिका उत्कृष्ट तेतीस सागर अर जघन्य एक पल्य कछु इक अधिक ॥ ४० ॥ अर जीवनिकैं लब्धि पांच क्षयोपशम १ विशुद्धि २

ऐसे तिर्यंच मनुष्य देव नारकी यह चारोंही गतिके मिथ्यादृष्टि मरकरि तिर्यंचगति पावैं, त्रस थावर अनेक भेद हैं जामें ॥ २० ॥ पृथ्वीकाय १ अपकाय २ तेजकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ इनविषै बारंबार जन्म धरै हैं अर दुख भोगै हैं ॥ २१ ॥ अर कृमि आदि वेइंद्री २ अर जूं आदि तेइंद्री ३ अर भ्रमरादि चौइंद्री ४ तिन विषै भ्रमै हैं ॥ २२ ॥ अर पंचेंद्रीके अनेक भेद पक्षी मच्छी मृगादि अनेकप्रकार तिनविषै ये प्राणी चिरकाल तिर्यंचगतिके दुःख भोगै हैं ॥ २३ ॥ तिर्यंचकी अल्प आयु अन्तर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट आयु भोगभूमिविषै तीन पल्य अर कर्मभूमिविषै कोटिपूर्व अर नरक तिर्यचगतिका स्वरूप कह्या। तिर्यंच चारोंही गतिविषै जाय अर चारोंही गतिका आया तिर्यंच होय एता भेद है जो नरकका आया नर होय अथवा पंचेंद्री तिर्यंच ही होय अर स्थावर विकलत्रय न होय। अर देवगतिका आया मनुष्य होय अथवा पंचेंद्री तिर्यंच ही होय अथवा पृथ्वीकाय जलकाय वनस्पतिकायमें आय उपजे ॥ २ ॥ नरक तिर्यंच दोय गति तो दुःखरूपही हैं अर ऐसे जीव ऐसे कर्मकरि उत्तम मनुष्य होंय। जे स्वभावहीकरि निःकपट होंय अर स्वभावही थकी कोमल होंहिं अर भद्रपरिणामी होंहिं अर स्वभावथकी पापनितैं डरै हैं अर सहजही मद्य मांस मधु उदंबरादि अयोग वस्तुके सहज ही त्यागी होंहिं ऐसे जीव मनुष्यायु बांधैं। कुभावनिकरि कुमानुष होय ॥२६॥ भले भावनिकरि भले मनुष्य होंहिं रागसूं कैयक तिर्यंच भी मनुष्यगति पावैं। अर कैयक नारकी भी शुभ परिणामनितैं मनुष्यगति पावैं अर देव भी शुभ कर्मनिकरि मनुष्यगति पावैं अर मनुष्य भी शुभ परिणामनिकरि मनुष्यगति पावैं ॥२७॥ सो मनुष्य भवविषै भी ये प्राणी इष्टके अलाभतैं अर अनिष्टके संयोग दुःखही भोगवे हैं आर्य म्लेच्छखंड अर नीच ऊंच कुल तिनविषै ये जीव उपजे हैं अर मरै हैं। नरक तिर्यंच गति तो प्रत्यक्ष दुःखरूपही हैं अर मनुष्य गतिविषै भी अनेक दुःखनिकरि दुःखही है ॥ २८ ॥ अर जिनका अनिष्टका संयोग नाहीं अर इष्टका वियोग नाहीं ऐसे भी मनुष्य हैं तिनिके भी विषयरूपी ईंधनकरि प्रज्वलित है इच्छारूप अग्नि जिनकी उनके सुख कहांतैं होय ॥ २९ ॥ कोई एक मनुष्यके अधिकारनिकरि निकट संसारी तिनके सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके सेवनतैं सुख होय संतोषका ही नाम सुख

मलिन हैं ॥ ८ ॥ ये प्राणी निरंतर पाप कर्मकूं बांधे हैं ताकरि चतुर्गतिविषै दुखी भए भ्रमै हैं । कैसे हैं पापकर्म दुःखतैं छूटे हैं बंधन जिनके ॥ ९ ॥ कई एक पापी जैसें पापनिकरि नरकआयु बांधै हैं तिनका कथन सुनहु जो रौद्रध्यानकरि दुष्टपरिणामी आरंभी परिग्रहकेधारी महामिथ्यादृष्टि अनंतानुबंधीके धारक जिनकूं जड अर चेतनका विवेक नाहीं अष्ट मदकरि उन्मत्त अनिष्ट कहिए खोटी है दृष्टि जिनकी जिनके विचार नाहीं ॥१०॥ परनिंदाके करनहारे अर परनिंदाके श्रवणहारे परदोष सुनकरि हर्ष पावैं अर अपनी प्रसंसाके करणहारे महानिंद्य जो पराया धन ताके लोभी अधिक हैं भोगनिकी तृष्णा जिनके ॥ ११ ॥ मद्य मांस अर शहतके आहारी दुराचारी कर्मभूमिके दुष्ट मनुष्य अर सिंह व्याघ्र मगरमच्छादि दुष्ट तिर्यंच नरकायु बांधै हैं ॥ १२ ॥ सो नरकगति महा उष्ण अर महा शीततांकरि पीडित है शरीर जिनका ऐसे नारकी जीव नपुंसकवेदी नरकके महाविषम बिलानिविषै उपजे हैं ॥ १३ ॥ यहां ऐसी कोई वस्तु नाहीं अर ऐसा कोई क्षेत्र नाहीं अर ऐसी कोई कालकी कला नाहीं अर ऐसा कोई स्वभाव नाहीं जाकरि नारकीनिकूं दुःखका विश्राम होय । भावार्थ—सब सामग्री सब क्षेत्र सब समय सब स्वभाव दुःखमई है सब नारकीनिकूं सदा दुःखका भोगना अर विना आयु पूर्ण भए मरण नाही सदा मार खायवो ही करैं परंतु प्राण न निकसैं वहुत जीवना सबकूं वल्लभ अर नारकीनिकूं वल्लभ नाहीं ॥ १५ ॥ नारकी मरण चाहैं, पहिले नरकका नाम १ रत्नप्रभा २ शर्कराप्रभा ३ बालुकाप्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूमप्रभा ६ तमप्रभा ७ महातमप्रभा इन सातोंही पृथ्वीविषै आयुका प्रमाण सुनहु पहिले नरकमें उत्कृष्टआयु सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १० पांचवें १७ छठें २२ सातवें ३३ यह उत्कृष्ट स्थिति कही । अर जो पहिला उत्कृष्ट सो दूजा एक समय अधिक जघन्य अर जो उत्कृष्ट सो तीजा एक समय अधिक जघन्य या भांति सर्वत्र जानहु अर पहिले नरकके पाथडेतैं एक समय अधिक जघन्य दशहजार वर्ष आयु है जा समान अल्प आयु नरकविषै नाहीं, नरकविषै कर्मभूमिका मनुष्य अर तिर्यंच ही जाय अर नरकतैं आया कर्मभूमिका मनुष्य अर तिर्यंच ही पंचेंद्रिय होय अर प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ इनके जो वश हैं अर महा चिंतावान आर्त्तध्यानरूप भवनविषै निरंतर भ्रमै है मन जिनका ॥१९॥

अर भव्यके चौदह ॥ १०० ॥ जे सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकी शुद्धताकरि मोक्ष पायवेकूं समर्थ हैं वे भव्य हैं अर मोक्षसे विमुख अभव्य हैं, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकी निर्मलतातैं निकटभव्य जाण्या जाय रत्नत्रयकी प्राप्तिके योग्य भव्य ही हैं अर इनके प्राप्त भए निकटभव्य कहिए सो यह भव्यता केवलपदका कारण है जौलग केवल उपजै तौलग जीव परोक्ष ज्ञानी हैं अर प्रत्यक्षज्ञानी भगवान ही हैं सो निकटभव्यके तो परोक्ष ज्ञानी ही जानैं अर प्रत्यक्षज्ञानी तो सर्वज्ञही हैं तासूं कोऊ छिप्या नाहीं सर्वही जानैं अर निकटभव्य तो सबकरि जाण्या जाय ॥ २ ॥ अर जीवनिके अभव्यता तथा दूरभव्यता केवलज्ञानगम्यही है तातैं केवलीके वचनहीतैं अभव्य अर दूरभव्य जाण्या पडै परोक्षज्ञानीनिकरि अभव्य अर दूरभव्य जाण्या न पडै ॥ ३ ॥ अभव्यकूं अर दूरभव्यकूं न जान सकै काहेतैं जो अनंतकालका ज्ञान केवली विना न होय जीवका यह भव्यत्व अर अभव्यत्व लक्षण स्वतःस्वभाव है काहूका किया अभव्य न होय अर भव्य न होय । जैसैं एक भाजनविषै उडद रांधिवेकूं चढाए तिनमें जो घोरड होय सो अनेक यत्न करै तोहू न सीझै तैसैं अभव्य कदाचित् भी न सीझै अर दूरभव्य हाल न सीझै काल पाय सीझैगा अर निकटभव्य शीघ्र ही सीझै ॥ ४ ॥ भव्यके तो भवसागर अनादिसांत कहिए आदि नाहीं पर अंत है भ्रमे तो अनादिके हैं परंतु समय पाय सीझैगा अर अनंत भव्य ऐसे हू हैं संसारका अंत कदे ही नाहीं जो सबही भव्य सीझैंगे तो भव्यराशिका अभाव हो जाय सो अनंतभव्य संसारविषै सदा रहैंगे अर तिनमेंतैं सदा सीझबो करैंगे, सो भव्यनिके तो भवसागर अनादिसांत कहिए अर अनादि अनंतहू कहिए अर अभव्यनिके सर्वथाप्रकार संसार अनादि अनंत ही है अर अभव्यराशिमें सो कदेहू कोई न सीझै सदा भवसागरमें कष्ट भोगता रुलवोही करै ॥ ६ ॥ संसारविषै दोय राशि एक भव्यराशि दूसरी अभव्यराशि सो अभव्य अनंत अर तिनतैं अनंतगुणे सिद्ध अर सिद्धनतैं अनंतगुणे भव्य सो भव्य अभव्य मिथ्यात्वके योगतैं संसारके दुःख भोगवै हैं ये सकल जीव द्रव्यकी न्याईं अविनाशी हैं जैसैं कालका नाश नाहीं तैसैं सकल द्रव्यार्थिक नयकरि नित्य हैं अर पर्यायार्थिक नयकरि अनित्य हैं अर अनादिके मिथ्यात्व अव्रत कषायनितैं

अनुत्तर मुख समान है। अर सिद्धक्षेत्र कहिए सिद्धशिला सो ललाट समान है। अर जहां सिद्ध विराजें सो वें आकाशके प्रदेश लोकका शिखर कहिए मस्तक है ॥३०॥ कैसा है यह लोक अपने उदरविषे धरे हैं समस्त जीवादि पदार्थनिकूं जाने। अर यह लोक पुरुषाकार है परंतु अकृत्रिम है, किसी पुरुषकरि किया नाहीं। सो यह लोक तीन वातवलयनिकरि बेढ्या है। पहिले वातवलयका नाम घनोदधि सो या लोककूं वेढे है अर घनोदधिके सब ओर घनवातवलय वेढै है अर घनावतकूं तनवात वेढै है। याभांति बेढकरि तीनों वातवलय तिष्ठे हैं ॥३२॥ तिनमें पहिला घनोदधि सो तो गोमूत्र सारिखा पीत वर्ण है अर दूजा घनवात मूंगके वर्ण है अर तीजा तनवातवलय अनेक वर्णका कह्या है ।३३। यह वातवलय दंडाकार है अर घनीभूत कहिए पुष्ट है अर दंडाकार कहिए लंबाईरूप है अर ऊर्द्धभाग अधोभागविषै सर्वत्रलोककूं वेढै है पातालविषै तो अति जड हैं अर ऊर्द्धविषै लोकपर्यंत ये पवन मंडल चढ़ रहे हैं अर चंचल हैं लोकके अंतलग हैं अधोलोकके अंतविषै तो इन तीनों वातवलयनिका विस्तार प्रत्येक प्रत्येक बीस हजार योजन हैं अर लोकके शिखर तीनों वातवलयनिका विस्तार किंचित् ऊन एक योजनका है ॥ ३५ ॥ अर दण्डाकारके परित्यागविषै अनुक्रमतैं ये तीनों या भांति हैं। घनोदधि योजन सात, घनवात योजन पांच, अर तनवात योजन चार या भांति अधोलोकविषै विस्तार है। अर प्रदेशनिकी हानितैं मध्यलोककी बाहुल्यता योजन पांच घनवातकी योजन चार तनवातकी योजन तीन ॥३७॥ अर प्रदेशनिकी वृद्धितैं ब्रह्मतैं ब्रह्मोत्तरके अंत घनोदधिका विस्तार सात योजन है, अर घनवातका योजन पांच तनवातका योजन चार है ॥ ३८ ॥ बहुरि ब्रह्मोत्तरके ऊपर प्रदेशनिकी हानिकरि घनोदधिका विस्तार योजन पांच, घनवातका योजन चार, तनवातका योजन तीन है या भांति वातवलयनिका विस्तार है ॥ ३९ ॥ यह लोकके शिखरविषै घनोदधिकी बाहुल्यता कहिए मुटाई योजन आध अर घनवातकी मुटाई योजन पांच अर तनवातकी मुटाई घनवाततैं कछु ऊन है ॥९॥ यह लोक सब ओर तीन वातवलयनिकरि वेढ्या ऐसा सोहै है जैसा वख्तरनिकरि सामन्त सोहै है मानों यह लोकरूप योधा तीन वातवलयरूप वख्तरनिकरि वेढ्या अलोककूं जीत्या चाहै है ॥४०॥ अर इन नरकनिविषै पहिली पृथ्वी रत्नप्रभा १

भाग दो हैं ॥ १८ ॥ अर सातवें नरकका अंत चित्रातैं छै राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार राजू छै अर एक राजूके सातभाग करिए तिनमें भाग १ अर पाताललोकका अंत चित्रापृथिवीतैं सात राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार सातराजू अर ऊर्ध्वलोकविषै चित्रा पृथिवीके अधोभागतैं दूजा ईशान स्वर्ग ताका शिखर डेढ राजू है तहां लोकका विस्तार राजू दोय है अर एक राजूके सात भागनिमें भाग पांच हैं ॥ २० ॥ अर ईशानस्वर्गके शिखरतैं डेढ राजू ऊंचा चौथा माहेंद्र स्वर्गका जो शिखर है तहां लोकका विस्तार राजू चार अर एक राजूके सात भागनिमें तीन भाग है ॥२१॥ अर चौथ स्वर्गके शिखरतैं ब्रह्मोत्तर छठा स्वर्ग ताका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार पांच राजू है ॥२२॥ अर छठे शिखरतैं आंठवें कापिष्ट स्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार चार राजू अर एक राजूके सात भागनिमें भाग तीन हैं ॥२३॥ अर आठवेंके शिखरतैं दशमां स्वर्ग महाशुक्र ताका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार तीन राजू है अर १ राजूके ७ भागनिमें ६ भाग है। अर दशवेंके शिखरतैं बारहवें सहस्रारका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू तीन है। अर एक राजूके सात भागमें भाग दोय है ॥ २५ ॥ अर बारहवें सहस्रारके शिखरतैं चौदहवें प्राणत स्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है, तहां लोकका विस्तार दोय राजू अर एक राजूके सात भागनिमें पांच भाग है। ऐसा कथन श्रीवीतराग देवने प्रकाश्या ॥२६॥ अर चौदहवें शिखरतैं सोलहवें अच्युतस्वर्गका शिखर आध राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू दोय अर एक राजूके सात भागनिमें भाग एक, अर अच्युतस्वर्गके शिखरतैं लोकका शिखर सिद्धक्षेत्र सो एक राजू ऊंचा है तहां लोकका विस्तार राजू एक याभांति सकल लोकका पूर्व पश्चिम बिस्तार कह्या है। अर दक्षिण उत्तर तो सर्वत्र सात राजू है ॥२७॥ यह लोक पुरुषाकार है ताका स्वरूप सुनहु। अधोलोक तो या लोक रूप पुरुषके नितंब अर जंघा चरण इन समान है अर मध्यलोक कटि समान है। अर चौथे स्वर्गके अंत नाभि समान है। अर पांचवें छठे देवलोक हृदय समान है। अर तेरहवां चौदहवां स्वर्ग भुजा समान है अर पंद्रहवां सोलहवां स्वर्ग दोऊ कांधे समान हैं। अर नवग्रैवेयक ग्रीवा समान है अर नव अनुदिश ठोडी समान है। अर पंच

तो बैतके आसनसमान है अर मध्यविषै झालरीके आकार गोल है अर ऊर्ध्वविषै मृदंगके आकार है एता विशेष जो लोक यह चौकोर है कटिपर धरे हैं करयुगल जाने अर पसारी हैं दोनों जंघा जाने ऐसा पुरुषका जैसा आकार होय है तैसा आकार लोकका है। ऐसा लोक है अचल है स्थिति जाकी । दक्षिण उत्तर तो यहलोक सर्वत्र सात राजू है ॥९॥ अर ऊपर प्रदेशनिकी वृद्धिकरि पंचमा छठा स्वर्ग ब्रह्म ब्रह्मोत्तर ताके निकटविषै पांचराजू है बहुरि प्रदेशनिकी हानिकरि लोकके अंतविषै एक राजूका विस्तार है । अर तीनलोककी ऊंचाई चौदह राजू है । सुमेरुतैं सात राजू नीचे अर सातही ऊपर इसप्रकार चौदह राजू है ॥११॥ चित्रा पृथिवीके अधोभागतैं दूजे नरकके अंततक एक राजू है अर तीसरे तक दोय राजू है अर चौथेके अंत तक तीन राजू हैं पांचवें तक चार राजू है अर छठेके अंत तक पांच राजू है अर सातवेंके अंत तक छै राजू है अर पाताललोकके अंततक सात राजू है, यह तो चित्रा पृथिवीसे अधोभागविषै पाताललोककी प्ररूपणा करी है । अर चित्रा पृथिवीतैं ऊपर दूजे ईशान स्वर्गके अंततक डेढ राजू है अर चौथा महेंद्र स्वर्ग ताके अंततक डेढ राजू है अर कापिष्ट कहिए आठवां स्वर्ग तहांलग एक राजू अर सहस्रार कहिए बारहवां स्वर्ग ताके अंततक एकराजू अर आरण पंद्रहवां अच्युत सोलहवां ताके अंततक एकराजू अर लोकके अंततक एक राजू याभांति चौदहराजू उच्च है अर दक्षिण उत्तर सर्वत्र सात राजूके विस्तार है अर पूर्व पश्चिम लोककी विस्तीर्णता याभांति है सो अधोलोकका विस्तार लोकके ज्ञाता भगवानने याभांति कह्या ॥ १६ ॥ दूजे नरकका अंत चित्रा पृथिवीतैं एक राजू नीचा है तहां लोकका पूर्व पश्चिम विस्तार राजू एक अर एक राजूके सातभाग करिए तिनमें भाग छै है । अर तीजे नरकका अंत चित्रापृथिवीके अधोभागतैं दोयराजू नीचा है तहां लोकका विस्तार दोय राजू है अर एक राजूके सात भागनिमैं भाग पांच अर चौथे नरकका अंत चित्रा पृथिवीतैं तीन राजू है तहां लोकका विस्तार राजू तीन है अर एक राजूके सात भागमें भाग चार । अर पंचम नरकका अंत चित्रातैं चार राजू नीचा है तहां लोकका विस्तार राजू चार, अर राजूके सात भागनिमें भाग तीन है । अर छठे नरकका अंत चित्रातैं राजू पांच नीचा है । तहां लोकका विस्तार राजू पांच अर एक राजूके सात भागनिमें

सुखदुख भोगनेका स्थानक है अर प्रवाहरूप सदा स्थिर है याका सकल आकार विस्तार सुनिवे योग्य है सो कहकरि नानाप्रकारके वंशनिका उपजना अर हरिवंशकी उत्पत्ति अर या वंशविषै बडे बडे राजा भए तिनके चरित्र तुझे कहूंगा, हे श्रेणिक ! तेरी सुनिवेकी इच्छा है सो तू सुनि ॥९५॥ जबतक यालोकविषै जिनरूप रविके ज्ञानरूप अति विस्तीर्ण देदीप्यमान किरण उद्योत न करै तौलग ही या जगतविषै पदार्थनिके श्रद्धानविषै विवेकनिकूं मोहकरि भ्रम होय हैं। भावार्थ—जौलग जिनवाणीका श्रवण न होय तौलग विवेकनिका संदेह न जाय जैसैं सूर्यके उदय विना नेत्रवाले हू न देख सकैं ये जीव भव्यभावके योगतैं वीतरागके उपदेशथकी द्रव्य क्षेत्रकालभावकूं जानकरि विधिपूर्वक पदार्थनिका निश्चय करै है, कैसे हैं पदार्थ अतिसूक्ष्म हैं अर अति दूरवर्ती हैं चेतन अचेतन मूर्ति सूक्ष्म स्थूल सबनिका निश्चय भव्यनिकूं भगवानके वचनतैं होय है, कैसा है भगवानका वचन निश्चय है सकल पदार्थनिका जाविषै ॥ ९१ ॥

इति श्री अरिष्ट नेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ श्रेणिक प्रश्न वर्णनो नाम तृतीय सर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथानंतर—अनंत अलोकाकाशविषै लोकका वर्णन करे हैं। कैसा है, अलोकाकाश सर्व अर अनंत है विस्तार जाका, अरूप अनंत हैं प्रदेश जाके अर अकेला है जाविषै द्रव्य नाहीं ऐसा शून्यरूप अनंत अलोकाकाश है ॥ १ ॥ जाविषै जीव अजीव और पदार्थ नाहीं देखिए हैं तातैं अलोकाकाश कहिए ॥ २ ॥ जाविषै जीव अर पुद्गल दोऊनिकी गति और स्थिति नाहीं, गति स्थितिके कारण धर्मास्तिकाय अर अधर्मास्तिकायके अभावतैं अलोकविषै जीव पुद्गलकी गति स्थिति नाहीं ॥ ३ ॥ अर अलोकताके अनंत बिभाग मध्यप्रदेशविषै अनादिनिधन लोकाकाश तिष्ठ्या है सो असंख्यात प्रदेशरूप है सर्व द्रव्यनिकरि भर्या है ॥ ४ ॥ पंचास्तिकाय कहिए जीव १ पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश ५ ये पांच बहु प्रदेशी पंचास्तिकाय कहिए अर छट्टा कालद्रव्य एक प्रदेशी सो पंचास्तिकायमें नाहीं जहां ये षट् द्रव्य सकल विलोकिए सो लोकाकाश कहिए, सो लोक पातालविषै

पुष्पवृष्टि करते संते सर्वज्ञकी स्तुति करते भये तहां विपुलाचलके वनविषै एक महामुनि दिव्यध्वनि अर दुंदुभी नाद सुनकरि ध्यानविषैं मगन होय केवलज्ञानकूं प्राप्त भये ताकी वार्ता सुनकरि राजा श्रेणिकने गौतमस्वामीकूं नमस्कारकरि पूछ्या कैसे हैं गौतमस्वामी सब मुनिनिमें श्रेष्ठ हैं अर इन्द्रनिकरि पूज्य हैं अर कैसा है राजा महा भक्तिकरि उपज्या है अति आश्चर्य जाकूं ॥ ८० ॥ राजा पूछे है, हे भगवन् ! उस मुनिका क्या नाम है यह देवनिके समूहकरि पूज्य हैं याका वंश कौन है अर तत्काल ऐसे अद्भुत अतिशयकूं कैसैं प्राप्त भया ॥ ८२ ॥ तब गौतमस्वामी श्रुतकेवली महानिगर्व आगमज्ञानके वेत्ता राजाके तांईं सकलवार्ता कहते भये कैसा है राजा उपज्या है आश्चर्य जाकूं ॥ ८३ ॥ गणधर कहै हैं हे राजन् ! भली है बुद्धि तेरी सो मैं तेरे तांईं या मुनिका नाम अर वंशमाहात्म्य कहता हूं सो तू सुनि—या श्री मुनिका नाम जितशत्रु है पृथिवीविषै प्रसिद्ध महाराज हुता सो तेरे श्रवणमें आया ही होयगा ॥८५॥ यह हरिवंशरूप आकाशविषै भानुसमान सब राजानिकी विभूतिकूं जीतै, ऐसी हुती विभूति जाके सो राजलक्ष्मी तजकरि श्रीवर्द्धमानके निकट मुनि भया ॥८६॥ महा दुर्द्धर तप मांहिले और वाहिरले सकल वारहप्रकार जैसैं औरनिसूं न बनै तैसैं तपकरि आज घातिया कर्मनिका नाशकरि अद्भुत केवलज्ञानकूं प्राप्त भया ॥८७॥ ताकारणकरि जिनमार्गकी प्रभावनाके करणहारे देवनिने उनका केवलकल्याणक क्रिया भक्ति थकी पूजे सम्यग्ज्ञानकी प्राप्तिके अर्थ ॥ ८८ ॥ बहुरि राजा श्रेणिक उपज्या है कौतूहल जाके सो गौतम स्वामीकूं प्रणामकरि याभांति पूछता भया—हे गणधराधीश ! यह हरिवंश जो आपने कह्या सो यह वंश कहां है कब प्रवर्त्या अर जिनकरि उपज्या सो वे पुरुष कौन थे ॥९०॥ अर इस वंशविषै केते राजा प्रजाके रक्षक महा प्रवीण धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक भए सो कहो ॥ ९१ ॥ अर या भरतक्षेत्रविषै जे जिनेश्वर, चक्रेश्वर, हरि, प्रतिहरि, हलधर भए उनके सकल चरित्र अर सकल वंशनिकी उत्पत्ति कहो अर लोकालोकका विभाग मैं सुण्या चाहूं हूं सो कहो यह सर्व कथा मोहि कहो ॥ ९३ ॥ तब गौतमस्वामी समवशरणविषै कहते भए हे श्रेणिक ! तैंनैं जो प्रश्न किया सो आगमप्रमाण तुझे कहता हूं तू सुनि ॥९४॥ प्रथम तो तोकूं त्रैलोक्यका कथन कहूंहूं सो त्रैलोक्य

स्वर्गपर्यंत देवनिके परक्षेत्र गमन है अर अहमिंद्रनिके परक्षेत्र गमन नाहीं निज क्षेत्रविषै ही विहार करैं ॥६८॥ अर मोक्षका मूल महा अमोलक अद्भुत रत्नत्रयरूप रत्न सहज साध्य है अन्यकरि सहज सिद्ध न होय ध्यानके आधीन है सो वीतराग रत्नत्रयके प्रसादतैं मोक्ष ही होय अर सराग रत्नत्रयकरि उत्कृष्ट देवनिके उत्कृष्ट सुख भोगकरि ॥ ६९ ॥ स्वर्गतैं चय विदेह क्षेत्र तथा भरत ऐरावत विषै कर्मभूमिमें बडे बडे मनुष्य होंय। कैयक तो चक्रवर्ती होंय ॥ ७०॥ जिनके षट्खंड पृथ्वीका राज्य नव निधि चौदह रत्न हैं सो चक्रवर्तीनिमैं कैयक तो चरमशरीरी राज तजकरि निर्वाण सुखके साधनविषै समर्थ होंय॥७१॥अर कैयक अल्प भव लेय सिद्ध होंय। अर कैयक बडे पुरुष बलभद्र होंय ते तद्भव मुक्ति जांय अथवा इनमें कोई स्वर्ग जाय बहुरि अल्पभवमें मुक्ति पावैं अर कैयक निदानके योगतैं नारायण प्रतिनारायण होंय ॥७२॥ अर कैयक पूर्वभवविषै अभ्यास किया है सोलहकारण जिनि ते तीर्थंकर होयकरि तीनलोकके गुरु होंय, ये सुर असुर नर सबही तिनकी कीर्ति करैं हैं, यह जिनशासन मोटा वृक्ष है सम्यक्तरूप थिर है जड जाकी अर ज्ञानरूप है पेड जाकै अर चारित्ररूप है डाली जाकै अर नय उपनय वह ही है शाखा अर उपशाखा जाकै ॥ ७४ ॥ अर राजविभूति देवविभूति सोई है पुष्प जाके ऐसे जिनशासनरूप वृक्षकूं जो निकटभव्य सेवै सो निर्वाण फल पावै ॥ ७५ ॥ निर्वाणफलकरि उपज्या जो सारभूत आनंदरस ताहि पानकरि महापुरुष चारोंगतिसूं निवृत्त भए संते सिद्धलोकविषै सदा काल तिष्ठै हैं ॥ ७६ ॥ याभांति श्रीवर्द्धमान भगवान् तेई भये भानु तिनके वचनरूप किरणनिके प्रकाशसूं तीनभवनरूप कमलिनी धर्म श्रवणकरि अति विकाशकूं प्राप्त भई सोहती भई, कैसे हैं जिनसूर्य, मोक्षमार्गके प्रकाशक हैं ॥ ७७ ॥ प्रथमही प्रशंसा योग्य जो धर्मानुराग ताके भरे जो भव्यजीव ते धर्मश्रवण करते भए, त्रैलोक्यके जीव सुर असुर नर तिर्यंचनिकी सभा जैसा निर्मल जातिवंत रत्न अग्निमें शुद्ध भया शोभाके समूहकूं पावै तैसी सकल सभा शोभती भई, जिनराजकी वाणी धर्मोपदेशरूप तीनों लोकनिके जीवनिकी समस्त भ्रांति दूर करती भई, जैसे मेघमाला समस्त रजकूं दबावै ॥ ७८ ॥ अथानंतर—भगवानकी दिव्यध्वनिके पीछे देवदुंदुभी नाद करते भये ॥ ७९ ॥ बहुरि देव हर्षित भये

आयु बाईस सागर ॥ ५५ ॥ अर नव ग्रैवेयकनिविषै एक एक सागर बध्या सो पहिले ग्रैवेयकविषै तेईस अर नवमें ग्रैवेयकविषै उत्कृष्ट इकतीस । अर अनुत्तरविषै उत्कृष्ट आयु सागर बत्तीस अर जघन्य सागर इकतीस अर पंच पंचोत्तरनिमें सर्वार्थसिद्धमें तो सागर तेतीस, अर विजयादिक चारमें उत्कृष्ट तेतीस, अर जघन्य सागर बत्तीस अर सर्वही देवलोकमें जे नीचले स्वर्गकी आयु उत्कृष्ट सो ऊपरलेकी जघन्य एक समय अधिक है, यह रीति सर्वत्र जानो ॥ ५८ ॥ अर देवनिकी उत्कृष्ट आयु सौधर्मस्वर्गविषै पल्य पांच अर बारवें स्वर्गपर्यंत दोय दोय पल्य बढती जाय तब बारवें स्वर्ग पल्य सत्ताईस अर तेरवें स्वर्ग चौंतीस चौदहवें इकतालीस पंद्रहवें अडतालीस सोहलवें पचपन यह देवनिकी उत्कृष्ट आयु स्वर्गनिमें कही ॥ ५९ ॥ अर अहमिंद्रलोकमें देवी नाहीं केवल पुरुष देवही हैं ॥ ६० ॥ अर कर्मनिकी शक्तिके योगतैं सकल कल्पवासिनी देवीनिकी उत्पत्ति पहिले दूजे स्वर्गमें होय है । ऊपरले देव अपनी नियोगिनी सौधर्म ईशानविषै उपजी जानि ले जाय हैं ॥ ६१ ॥ अर ज्योतिषी भवनवासी व्यंतर तथा पहिले दूजे स्वर्गके जो देव हैं तिनके मनुष्य तिर्यंचनिकी न्याई तीव्रमोहके उदयतैं कायाकरि संभोग है ॥ ६२ ॥ अर तीजे चौथे स्वर्ग देवनिके मध्य मोहके उदयतैं स्पर्शका संभोग है ॥ ६३ ॥ अर पांचवें छठे सातवें आठवें स्वर्गवासीनिके रूपहीका विषय है अर नवमें दशवें ग्यारवें बारवें स्वर्गमें देवनिके शब्दही का संभोग है अर तेरहमें चौदहवें पंद्रहवें सोलमें स्वर्गमें मनहीका संभोग है ॥ ६४ ॥ इनके मोहका मंद उदय है अर अहमिंद्रनिके पहिले ग्रैवेयकतैं लेय सर्वार्थसिद्धिपर्यंत शांतभावनिकी प्रधानता है सुखकरि पूर्ण है जिनके मोहका उदय प्रगट नाहीं तातैं संभोगतैं रहित हैं जहां देवांगना नाहीं ॥ ६५ ॥ पहिले स्वर्गतैं लेय सोलहवें स्वर्ग पर्यंत इतनी बातनिकरि देव चढते चढते हैं, स्थिति कहिये आयु, प्रभाव कहिये अतिशय, सुख कहिये निर्विकल्पता, अर विशुद्धि कहिये निर्मलता, अर लेश्या कहिये शुभलेश्या इंद्रियनिका क्षयोपशम अर अवधिज्ञान ॥ ६७ ॥ इतनी बातनिकरि ऊपरले देव बढते बढते हैं। अर गति कहिए गमन, अर शरीरकी उच्चता अर अभिमान कहिये गर्व अर परिग्रह कहिये संघ इनकरि ऊपरले देव घटते घटते हैं। सोलहवें

देशना ३ प्रायोग्य ४ अर करण ५. तिनमें चार तो बहुत वेर भई अर पांचवीं करणलब्धि निकटभव्यहीके होय। यह क्षयोपशमादि सकल करणलब्धिकरि सफल हैं। करणलब्धिके भेद ३ अधोकरण १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिकरण ३ ॥ ४२ ॥ जब या करणलब्धिकरि दर्शनमोहका उपशम करें तब उपशम सम्यक्त होय फिरं दर्शनमोहका क्षयोपशम करें अर भावनिकी शुद्धतातैं दर्शन मोहका क्षय होय ॥ ४३ ॥ सम्यक्तके तीन भेद हैं प्रथम उपशम १ क्षयोपशम २ अर क्षायक ३ ये त्रेधा सम्यक्त सो जब करणलब्धिकरि सम्यक्त उपजे तब भव्यजीव आनंदकूं भोगे हैं ॥ ४४ ॥ अर चारित्रमोहके क्षयोपशमकी लब्धितैं ये भव्यजीव चारित्रकूं पायकरि कर्मनिका क्षय करै हैं ताकरि अनंतदर्शन १ अनंतज्ञान २ अनंतसुख ३ अनंतवीर्यकूं पावे हैं ४ संसारसे निवृति भये निर्वाणविषै तिष्ठे हैं ॥ ४६ ॥ अर जिनके चारित्रमोहका उदय है ताकी अत्यंत प्रबलता है तिनके सम्यक्तहीका वल है ते अव्रतसम्यग्दृष्टी दृढ सम्यक्तके प्रभावतैं देवायुका बंध करैं ॥ ४७ ॥ अर जे अणुव्रती पंचम गुणस्थानवर्ती हैं ते सौधर्मादि अच्युतस्वर्गपर्यंत सोलह स्वर्गनिविषैं उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देव होंहिं ॥ ४८ ॥ अर सरागसंयमके धारक जे प्रमत्तसंयमी तथा अप्रमत्तसंयमी निःपाप मुनिराज ते प्रथमस्वर्गतैं लेय सोलहस्वर्ग अर कल्पातीत कहिये नव ग्रैवेयक अर नव अनुदिश पंच पंचोत्तर ये तेईस सोलह स्वर्गनिके ऊपर अहमिंद्र लोक है तहां मुनि जांय, स्वर्गविषैं तो इंद्रादिक स्वर्गवासी देव अर परै अहमिंद्र सो भावनिकरि किया जो तप ताका फल देवगतिका सुख साधु सो मुनि पावै हैं अर परंपराय मोक्ष जावै हैं ॥४९॥ पहिलास्वर्ग सौधर्म १ दूजा ईशान २ तिनविषै उत्कृष्ट आयु दोयसागर किंचित् अधिक अर तीजा सनत्कुमार ३ चौथा माहेंद्र ४ तिनविषै उत्कृष्ट आयु सागर सात, अर पांचवां ब्रह्म ५ छठा ब्रह्मोत्तर ६ तहां आयु दशसागर है अर सातवां लांतव ७ अर आठवां कापिष्ट ८ तिनविषै आयु चौदह सागर। अर शुक्र कहिए नवमां ९ महाशुक्र कहिए दशवां तिनविषै आयु सोलह सागर, ग्यारहवां सतार ११ बारहवां सहस्रार १२ तिनविषै अठारासागर, अर तेरवां आनत १३ चौदहवां प्राणत १४ तिनविषै सागर बीस। अर आरण पंद्रहवां १५ सोलहवां अच्युतस्वर्ग १६ तिनविषै उत्कृष्ट

भए। अर तीजा पाथडा रौरक ताविषै दिशानिके एकसौ अठ्यासी। अर विदिसानिके एकसौचौरासी सब मिलि तीनसौ बहत्तरि ॥ ९० ॥ अर चौथा पाथडा भ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौ चौरासी अर अर विदिशानिके एकसौअस्सी सब मिलि तीनसौचौसठि। अर पांचवां उद्भ्रांत ताविषै दिशानिके एकसौअस्सी विदिशानिके एकसौछिहत्तरि सबमिलि तीनसौछप्पन ॥ ९२ ॥ अर छठे संभ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौ छिहत्तरि अर विदिशानिके एकसौबहत्तरि सब मिलि तीनसौअडतालीस अर सातवां असंभ्रात ताविषै दिशानिके एकसौबहत्तरि अर विदिशानिके एकसौअडसठ सबमिलि ३४०॥९४॥ अर आठवां विभ्रांत ताविषैं दिशानिके एकसौअडसठ अर विदिशानिके एकसौचौसठि सब मिलि तीनसौबत्तीस ॥९५॥ बहुरि नवमां त्रस्त ताविषैं दिशानिके एकसौ चौसंठ अर विदिशानिके एकसौसाठ सबमिलि ३२४॥९६॥अर दसवां त्रसित ताविषै दिशानिके एकसौसाठ विदिशानिके १५६ सबमिलि ३१६ ॥९७॥ अरग्यारहवां वक्रांत ताविषै दिशानिके १५६ विदिशानिके १५२ सबमिलि ३०८ ॥९८॥ अर बारहवां अवक्रांत ताविषै दिशानिके १५२ अर विदिशानिके १४८ सबमिलि ३०० ॥ ९९ ॥ अर तेरहवां विक्रांत ताविषै दिशानिके १४८ अर विदिशानिके १४४ सबमिलि दोयसैबाणबै। ये सब तेरह पाथडनिमें इंद्रक बिला एक एक पाथडेमें एक एक इंद्रक बिला सो तेरह पाथडानिमें इंद्रक तेरा अर श्रेणीबद्ध चवालीससैबीस सो इंद्रक ये सब मिलि चालीससै तेतीस भए ॥२॥ इंद्रक बिला तो पाथडानिके मध्य है अर श्रेणीबद्ध दिशानिमें पंकति रूप है अर प्रकीर्णक कहिए बिखरवां सर्वत्र है । ते सकल गुणतीसलाख पिच्याणवेहजार पांचसौ सडसठि सब मिलि पहले नरक तेरा पाथडानिविषैं तीस लाख पाथडे हैं ॥ ३ ॥ अथानंतर दूजे नरकके पाथडे ग्यारा तिनके बिला कहै हैं। दूजेका पहिला पाथडा तरक ताविषै दिशानिके एकसौ चवालीस अर विदिशानिके १४० सबमिलि २८४। अर दूजा स्तनक ताविषै दिशानिके १४० अर विदिशानिके १३६ सब मिलि २७६ ॥ ५ ॥ अर तीजा मनक ताविषैं दिशानिके एकसौ छत्तीस अर विदिशानिके १३२ सब मिलि २६८ ॥ ६ ॥ अर चौथा वनक ताविषैं दिशानिके १३२ अर विदिशानिके १२८ सब मिलि २६० ॥ ७ ॥ अर पांचवां घाट ताविषै दिशानिके एक-

लाख अर दूजेमें पचीसलाख तीजेमें पंद्रहलाख चौथेमें दशलाख पांचवेंमें तीनलाख छठेमें पांचघाट एक लाख ९९९९५, सातवें नरकमें पांच ये सब जोडिए तब सब चौरासी लाख होयहैं ॥ ६ ॥ अर सातों नरकनिके पाथडे

१	धम्मा	३००००००
२	वंशा	२५०००००
३	मेघा	१५०००००
४	अंजना	१००००००
५	अरिष्ट	३०००००
६	मघवी	९९९९५
७	माघवी	५

कहे हैं तिनमें पहिले तेरह, दूजे ग्यारह, तीजे नव, चौथे सात, पांचवें पांच छठे तीन, सातवें एक ॥ ७३ ॥ पहिले नरकके तेरह पाथडे तिनके नाम । पहिला सीमंतक १ नारक २ रौरव ३ भ्रांति ४ उद्भ्रांति ५ संभ्रांति ६ असंभ्रांति ७ विभ्रांति ८ त्रस ९ त्रसित १० वक्रांत ११ अवक्रांत १२ विक्रांत १३ ये पहिले नरकं धम्माविषै तेरह हैं। अर दूजे नरकविषै स्तरक १ स्तनक २ मनक ३ वनक ४ घाट ५ संघाट ६ जिह्व ७ जिह्वक ८ लोल ९ लोलुप १० अर स्तनलोलुप ११ ये ग्यारह दूजे नरक वंशाविषै हैं। बहुरि तप्त १ तापित २ अन्यस्तपन ३ तापन ४ निदाघ ५ प्रज्वलित ६ उज्ज्वलित ७ संज्वलित ८, संप्रज्वलित ९ ये नवपाथडे तीजे मेघानरक ताविषै हैं ॥ ७९ ॥ बहुरि आर १ तार २ चमार ३ वर्चक ४ स्तमक ५ खड ६ खडखड ७ ये सात पाथडे चौथे अंजना नरकविषै हैं ॥ ८१ ॥ तम १ भ्रम २ झष ३ अंध ४ अर तमिस्त्र ५ ये पांच पाथडे पांचवें अरिष्ट नरकके हैं। अर हिम १, मर्दल २ वल्लक ३ ये तीन पाथडे छठे मघवीनरकके हैं। अर अप्रतिष्ठान एक पाथडा सातवें नरक महातमका है ॥ ८३ ॥ ये सब उणचास पाथडे सात नरकनिके कहे हैं सातवें तैं पहिलेतक दोय दोय पाथडे बधे। पहिले तेरह कहे तिनमें पहिला सीमंतक पाथडा ताविषै एक एक दिशमें श्रेणीबद्ध विले उनचास, बडा है अंतर जिनविषै ॥ ॥८५॥ अर च्यारि विदिशा तिनविषै अडतालीस अडतालीस विले सो च्यारि विदिशाके एकसौ बानवे अर चार दिशाके एकसौछ्यानवे दिशा विदिशाके सब मिलि तीनसौ अठ्यासी श्रेणीवद्ध विला भए ॥८८॥ अर दूजा पाथडा नारक तामें चारों दिशानिके एकसौबाणवे अर विदिशानिके एकसौअठासी ये सब मिलि श्रेणीबद्ध तीनसौअस्सी

अर सातवेंतैं नीचे एकराजू नीचा पातालका अंत है अर छै भूमिनिकी मुटाई टारि, सो मुटाईके तीजे दूजे नरककी मुटाई बत्तीसहजार योजन है, अर तीजी पृथ्वीकी मुटाई अट्ठाईसहजार योजन है, अर चौथीकी चौवीसहजार योजन, अर पांचवेंकी मुटाई बीसहजार योजन, अर छठेकी मुटाई सोलहहजार योजन, अर सातवेंकी मुटाई आठहजार योजन है ॥ ५७ ॥ दश प्रकारके भवनवासी जे असुर कुमारादिक तिनके विमाननिकी संख्या कहै हैं अर असुरकुमारनिके चौसठ लाख विमान अर नागकुमारनिके चौरासीलाख विमान, अर गरुडकुमारनिके बहत्तर लाख विमान अर द्वीपकुमार, उदधिकुमार, मेघकुमार, दिक्कुमार अग्निकुमार, विद्युतकुमार इनके विमान प्रत्येकके छिहत्तर छिहत्तर लाख हैं ॥ ५८ ॥ अर वायुकुमारनिके विमान छ्यानवेलाख हैं । ये भवनवासीनिके विमान सात कोटि बहत्तरलाख कहे हैं सो एकएकमें एकएक चैत्यालय ॥५९॥ अर अधोलोकविषै भूतनिके विमान चौदहहजार अर राक्षसनिके सोलहहजार ये पाताललोक संबंधी कहे हैं । पाताललोकविषै भवनवासी तथा व्यंतर दोयही जाति हैं । अर असुरकुमारनिकी उत्कृष्ट आयु एक सागर कछुइक अधिक अर नागकुमारनिकी तीन पल्य, अर गरुड़कुमारनिकी आयु अढाई पल्य अर द्वीपकुमारनिकी दोय पल्य अर उदधिकुमार, मेघकुमार, विद्युत्कुमार अग्नि कुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार इन सबकी उत्कृष्ट आयु डेढ़ पल्य है अर जघन्य आयु दश हजार वर्ष पहिले कहा ही था अर मध्यके भेद जघन्यसूं लेकरि उत्कृष्ट पर्यंत नानाप्रकारके हैं ॥ ६५ ॥ अर असुर कुमारनिका शरीर ऊंचा पच्चीस धनुष है अर नव जाति भवनवासी अर आठजाति व्यंतरनिका शरीर दश धनुष ऊंचा है अर ज्योतिषी देवनिका सात धनुष यह शरीरकी ऊंचाई कही । अर पहिले दूजे देवलोकका शरीर सात हाथ ऊंचा अर तीजे चौथे स्वर्गमें छै हाथ अर पांचवें छठे सातवें आठवेंमें पांच हाथ अर नववेंतैं बारहवेंतक चार हाथ अर तेरहवें चौदहवेंमें साढेतीन हाथ अर पंद्रहवेंमें सोलहवेंमें हाथ तीन अर नव ग्रैवेयकमें पहिली त्रिकमें हाथ अढाई, दूजी त्रिकमें हाथ दोय २, तीजी त्रिकमें हाथ डेढ अर नव अनुत्तरविषै हाथ सवा अर पंच अनुत्तरविषै हाथ एक ॥६७॥ अथानंतर हे श्रेणिक ! सातही नरकनिके अनुक्रमणकरि संक्षेपतैं विला कहूं हूं सो तू सुनि । पहिले नरकविषै विला तीस

दूजी शर्कराप्रभा २ तीजी बालुका प्रभा ३ चौथी पंकप्रभा ४ पांचवीं धूमप्रभा ५ छठी तमप्रभा ६ सातवीं महातमप्रभा ७ ये सातों पृथ्वी घनोदधि वातवलयनिके मध्य तिष्ठै है। अर पहिली पृथ्वीतैं लेकरि सातवींतक नीचे नीचे तिष्ठै है, वे पहिले तो नरकनिकी पृथ्वीके प्रभाके नाम कहै हैं बहुरि नरकोंके नाम कहैं हैं पहिला धम्मा १ दूजा वंशा २ तीजा मेघा ३ चौथा अंजना ४ पांचवां अरिष्टा ५ छठा मघवी ६ सातवां माघवी ७ ॥ ४४ ॥ पहिली रत्नप्रभा पृथिवी ताके तीन भागनिके नाम खरभाग १ पंकभाग २ बहुलभाग ३ ये तीनोंभाग एक लाख अस्सीहजार योजन प्रमाण हैं। तिनमें पहिला खरभाग सोलहहजार योजन है, अर दूजा पंकभाग चौरासीहजार योजन है अर तीजा बहुलभाग अस्सीहजार योजन है। याभांति तीनोंकी मुटाई कही है। तिनमें पहिला खरभाग सोलह हजार योजन है ताविषै सोलहभागमें नवप्रकार भवनवासी हैं दश जातिमें एक असुरकुमार भवनवासी नाहीं, नीचले सातवें भागमें सात जातिके व्यन्तरनिके निवास अर आठ जातिमें एक राक्षसजाति इनमें नाहीं अर सब हैं। अर दूजा पंकभाग तामें दोय भाग हैं एक भागमें राक्षसजाति एकमें असुरनिके निवास रत्ननिकरि दैदीप्यमान हैं ॥ ४८ ॥ खरभागविषै सोलहभाग कहिये तिनके नाम। पहिला चित्रानाम पटल १ दूजा वज्रा २ तीजा वैडूर्य ३ चौथा लोहितांक ४ पांचवां मसारगल्व ५ छठा गोमेद ६ सातवां प्रवालपटल ७ आठवां ज्योति ८ नवमां रसपटल ९ दशमां अंजन १० ग्यारहवां अंजनमूल ११ बारहवां अंग १२ तेरहवां स्फटिक १३ चौदहवां चंद्रभाष्य १४ पंद्रहवां वर्चक १५ सोलहवां बहुशिलामय १६ यह सब ही पटल नवप्रकार भवनवासीनिके अर सप्तप्रकारके व्यंतरनिके निवास रत्नमई महा प्रभावकूं धरै हैं एक पटलकी मुटाई हजार हजार योजन है रत्नप्रभाविषै पहिला खरभाग अर दूजा पंकभाग ये तो कहे हैं अर बहुलभागविषै पहिला नरक अर नीचे छै नरक अर सोलह नरकनिकी भूमि अपनी अपनी जेती मुटाई धारै है सो ता मुटाईकूं टारकरि एक एक राजूका लम्बा नरकनिमें अंतर है। भावार्थ—चित्रा पृथ्वीके अधोभागमें एक राजू तो दूजा नरक है, अर दूजेके एक राजूके परे तीजा है अर तीजेतैं एक राजू चौथा है, चौथेतैं एक राजू पांचवां, तातैं एक राजू छठा अर छठेतैं एक राजू सातवां, याभांति छै राजूमें सात नरक हैं

सगुहकूट ३ मणिभद्रकूट ४ विजयार्द्धकुमारकूट ५ पूर्णभद्रकूट ६ खण्डप्रपातकूट ७ दक्षिणार्द्धकूट ८ वैश्रवणकूट ९ यह नव शिखर भरतक्षेत्रके विजयार्ध समान जानहु ॥१२॥ अर जे षट् कुलाचल कहे हैं ते सातों क्षेत्रनिकूं धरै हैं तातैं इनकूं वर्षधर कहिए वर्ष नाम क्षेत्रका है। षट् कुलाचलनिके दोनों ओर अनादिसिद्ध अकृत्रिम बन हैं ते बन छहों ऋतुके फल फूलनिकरि भरे जे नम्रीभूत वृक्ष तिनकरि भरे महा मनोहर हैं अर पक्षीनिके समूह अर भ्रमरनिके जे समूह तिनके मधुर शब्दकरि महा रमणीक है एक एक कुलाचलके दो दो बन हैं सो लम्बे तो पर्वतकी लंबाई समान पूर्व पश्चिमके समुद्र पर्यंत हैं अर चौडे योजन आध, नानाप्रकारकी मणिके हैं कोट जिनके एक एक पर्वतके दोनों तीर बनखण्ड सोहै हैं, अर बनोंका कोट आध योजन ऊंचा अर पांचसौ धनुष चौडा ॥११६॥ अर नानावर्णके भले भले जो रत्न तिनके कोटकी भित्ति हैं सो कोटकी भित्तिके उचित रत्ननिके तोरण सोहै हैं अर पहाडनिके ऊपर सर्व ओर मणिमई महामनोज्ञ दो कोस ऊंची पदमवेदी है ॥ १८ ॥ या मध्यलोकविषै द्वीप समुद्र अर पृथ्वी नदी द्रह पर्वत नगर अर तिनके कोटनिकी ऊंचाई अर चौडाईका यह ही प्रमाण जानहु ऊंचाई योजन आधा, चौडाई धनुष पांचसौ ॥ ११९ ॥ अर इन छहों कुलाचलनिके मध्य छह द्रह हैं पूर्व पश्चिम समान है लंबाई जिनिकी ॥ २० ॥ द्रहनिके नाम—पद्म १ महापद्म २ तिगिंछ ३ केसरी ४ महा पुंडरीक ५ पुंडरीक ६ ॥२१॥ इन छहों द्रहनिके मध्यतैं चौदह नदी निकसीं तिनमें सात तो पूर्व दिशाकी ओरके समुद्रमें गई, अर सात पश्चिम ओरके समुद्रमें गईं। नदियनिके नाम—गंगा १ सिंधु २ रोहित ३ रोहितास्या ४ हरित ५ हरिकांता ६ सीता ७ सीतोदा ८ नारी ९ नरकांता १० सुवर्णकूला ११ रूप्यकूला १२ रक्ता १३ रक्तोदा १४ ये चौदह महानदियां हजारनि नदीनि सहित समुद्रमें मिलीं ॥ २५ ॥ पहिला पद्मद्रह तो हजार योजन लंबा अर पांचसौ योजन चौडा अर दशयोजन ओंडा ताकी चौगिरद वेदी कहिए कोटकी भित्ति है सो जितनी हिमवानकी भित्ति है तेती ही याकी है महाशुभ शीतल सुगंध जलकरि यह द्रह सर्वत्र भरया है अर या पद्मद्रहविषैं जलतैं ऊंचा एक योजनके विस्तार

लाख योजन अर धनुपृष्ठ १५८११३ योजन अर १६ कला अर याका वाण ५०००० योजन अर या विदेहक्षेत्रकी चूलिका २९२१ योजन अर १८ कला अर याके भुज दोय १६८८३ योजन अर सवातेरहकला यह जम्बूद्वीपके दक्षिणार्द्धका वर्णन कीया सो ही उत्तरार्द्धका वर्णन जानना, जो वर्णन भारतका सो ऐरावतका अर जो वर्णन हिमवान्का सो शिखरीका अर जो वर्णन हैमवतक्षेत्रका सोही हैरण्यवत्का अर जो वर्णन महा हिमवानका सो ही रुक्मीका है अर जो वर्णन निषधका सो ही नीलका विदेहतक तो दूने दूने अर विदेहतैं आधा नील नीलतैं आधा रम्यक अर रम्यकतैं आधा रुक्मी अर रुक्मीतैं आधा हैरण्यवत् अर हैरण्यवत्तैं आधा शिखरी अर शिखरीतैं आधा ऐरावत याभांति आधेआधे घटते आए. जीवा धनुपृष्ठ पार्श्वभुजा अर चूलिका ये सबविस्तार विदेह तक तो दूने दूने बढते गए अर विदेहतैं आधे आधे घटते गए ॥ ९७ ॥ नीलाचल वैडूर्य मणिमयी ताके शिखर नव, तिनके नाम—सिद्धायतन १ नीलकूट २ पूर्वविदेहकूट ३ सीताकूट ४ कीर्तिकूट ५ नरकांतकूट ६ पश्चिम विदेह कूट ७ रम्यककूट ८ अपदर्शनकूट ९ ये नव शिखर नीलाचलके (निषधाचल) शिखरसमान ऊंचे अर मूलमध्य ऊर्द्धविषै शिखरनिकी चौडाई निपधाचलके शिखरनिके समान जानहु ॥ ९९ ॥ अर रूपामई रुक्मीपर्वत ताके शिखर आठ हैं ताके नाम सिद्धायतनकूट १ रुक्मीकूट २ रम्यकूट ३ नारीकूट ४ बुद्धिकूट ५ रूपकूट ६ हैरण्यवतकूट ७ मणिकांचनकूट ८ या पर्वतकी ऊंचाई अर विस्तार कूटनिका मूलमध्य ऊर्द्धविषै महाहिमवान समान जानहु ॥१००॥ अर शिखर नामा-पर्वतके शिखर ग्यारह ताके नाम सिद्धायतन १ शिखिरीकूट २ हैरण्यवतकूट ३ सुरदेवीकूट ४ रक्ताकूट ५ लक्ष्मीकूट ६ सुवर्णकूट ७ रक्तवतीकूट ८ गंगदेव्याकूट ९ ऐरावतकूट १० मणिकांचनकूट ११ ये ग्यारहकूट हिमवानके शिखरसमान शोभाकरि संयुक्त जानहु। अर आदिमध्य अंतविषै विस्तार शिखरनिका अर ऊंचाई शिखरनिकी अर सुंदरता हिमवान् समान जानहु अर जैसा वर्णन विजयार्द्ध भरतक्षेत्रका कह्या तैसा ही ऐरावतक्षेत्रका है ताके शिखर नव पंचप्रकार रत्नमई महा देदीप्यमान शोभै हैं। ९ शिखरनिके नाम—सिद्धायतन कूट १ उत्तरार्द्ध कूट २ तमि-

क्षेत्रतैं परे दूजा पर्वत महाहिमवान् सो ४२१० योजन अर १० कला चौडा ॥ ६२ ॥ अर ऊंचा योजन २०० अर पृथिवीविषै जड योजन ५० अर याकी जीवा ५३९३१ योजन अर ६ कला ॥ ६३ ॥ अर याकी जीवा लघु धनुपृष्ठ ५७२९३ योजन अर १० कला ॥ ६५ ॥ अर याका वाण ७८९४ योजन अर १४ कला, अर या पर्वतकी चूलिका ८१२८ योजन अर ४॥ कला अर याकी भुजा ९२७६ योजन अर ९॥ कला अर या पर्वतके शिखर आठ रूपामयी रत्ननिकरि मंडित है तट जाका सदा सोहै है। अर अकृत्रिम हैं अविनश्वर हैं कूटनिके नाम—सिद्धायतन १ महाहिमवान् २ हैमवत् ३ रोहित - ह्रीकूट ५ हरिकांत ६ हरिवर्ष ७ वैडूर्य ८ रत्नमयी ये अष्टशिखर ५० योजन ऊंचे अर शिखरनिकी चौडाई मूलविषै योजन ५० अर मध्यविषै ३७॥ अर ऊर्द्धविषै योजन २५ ॥७२॥ अर या पर्वततैं परे तीजा क्षेत्र हरि ताका विस्तार योजन ८४२१ अर १ कला ॥७३॥ अर याकी जीवा योजन ७३९०१ अर कला १७ अर याकी जीवाका धनुपृष्ठ ८४०१६ योजन अर कला ४ अर याका वाण १६३१५ योजन अर कला १५। अर याकी चूलिका ९९९५ योजन अर ५॥ कला अर याकी भुजा १३३६१ योजन अर ६॥ कला ॥७५॥ अर या क्षेत्रके परे तीजा निषधाचल सो ऊंचा ४०० योजन अर पृथिवीविषैं जड १०० योजन अर या पर्वतकी जीवा ९४१५६ योजन अर २ कला अर याका धनुपृष्ठ १२४३४६ योजन अर कला ९ अर याका वाण ३३१५७ योजन कला १७ अर चूलिका याकी १०१२७ योजन २ कला अर याकी भुजा २०१६५ योजन अर २॥ कला ॥८५॥ अर यह निषधाचल तत्कालके गले स्वर्णके वर्ण है ताके शिखर नव सर्व रंगरूप रत्नमयी किरणनिकरि देदीप्यमान है ॥८६॥ शिखरनिके नाम सिद्धायतनकूट १ निषधकूट २ हरिवर्षकूट ३ पूर्व विदेहकूट ४ ह्रीकूट ५ धृतिकूट ६ सीतोदाकूट ७ विदेहकूट ८ रुचककूट ९ ये नव शिखर सबही सौ सौ योजन ऊंचे अर शिखरनिकी मूलविषै चौडाई योजन १०० अर मध्यविषै ७५ योजन अर ऊर्द्धविषै शिखरनिकी चौडाई ५० योजन ॥८९॥ अर निषधाचलके परे विदेह नामा क्षेत्र ताका विस्तार तेतीसहजार छह सौ चौरासी योजन अर ४ कला ॥ ९० ॥ अर याकी जीवा

१७६६ योजन अर कला १ अर विजयार्धका माहिला वाण २३८ योजन अर कला ३ अर बारिला धनुपृष्ठ १०७२० योजन अर कला ११॥ भावार्थ—बीचकी जीवा तो १७६६ योजन अर कला १; अर वारली जीवा १७४३ योजन अर कला १५ अर विजयार्धका बारला वाण योजन २८८ अर कला ३ अर विजयार्धकी चूलिकाका घनाकार योजन ४८६ किंचित् ऊन अर विजयार्ध पूर्व पश्चिम दोऊ तरफकी भुजाका प्रमाण योजन ४८८ अर कला १६॥ अर हिमवान् पर्वतकी दक्षिणदिशा विषै लघुजीवा १४४७१ योजन अर कला ६ अर हिमवानका लघु धनुपृष्ठ १४५२८ योजन अर कला ११ ॥४१॥ अर इसका वाण ५२६ योजन कला ६ ॥४२॥ अर हिमवानकी चूलिकाका विस्तार १८७५ योजन अर कला ६॥ ॥ ४३ ॥ अर हिमवानकी पूर्व पश्चिम भुजाका प्रमाण १८९२ योजन अर कला ७॥ अर हिमवान् पर्वत ऊंचा योजन १०० अर पृथिवीविषै जड योजन २५ अर चौडाई १०५२ योजन अर कला १२ हिमवानकी जीवा योजन २४००० अर कला १ अर बृहदनु पृष्ठ २५२३० योजन अर ४ कला अर याका वाण १५७८ योजन अर कला १८ अर इस गिरिकी चूलिकाका भाग ५२३० योजन अर ७ कला अर याकी भुजा ५३५० योजन अर १२॥ कला ॥ ५१ ॥ अर या हेममयी गिरिके ग्यारह शिखर तिनमें पहिलाशिखर सिद्धायतन ताविषै एक भगवानका अकृत्रिम चैत्यालय है, ग्यारह शिखरनिके नाम—सिद्धायतनकूट १ हिमवान् २ भरतकूट ३ इलाकूट ४ गंगाकूट ५ श्रीकूट ६ रोहित ७ सिन्धु ८ सुरादेवी ९ हैमवत १० वैश्रवण ११ ॥५४॥ ये सबही कूट पच्चीस योजन तो ऊंचे हैं अर मूलविषै चौडे योजन २५ अर मध्य विषै चौड़े योजन १८॥ अर अन्तविषै चौड़े योजन १२॥ ॥५६॥ अर हिमवान पर्वततैं परे दूजा क्षेत्र हैमवत सो चौडा २१०५ योजन अर कला ५ ताकी जीवा ३७६७४ योजन अर १६ कला ॥ ५८ ॥ अर इसका धनुपृष्ठ ३८७४० योजन अर १० कला अर या धनुषका वाण ३६८४ योजन अर ४ कला ॥ ५९ ॥ अर हैमवत क्षेत्रकी चूलिका ६३७१ योजन अर ७ कला ॥ ६० ॥ अर या क्षेत्रकी भुजा ६७९५ योजन अर तीन कला ॥ ६१ ॥ या

१०

५०० योजन चौडे हैं ॥ ६४ ॥ सो रोहिता रोहितास्या आदि देकर जो दो नदी हैं ते पूर्व पश्चिमकी तरफ पर्वतसूं आध योजन उरे प्रदक्षिणा देय करि समुद्रकूं प्राप्त होय हैं जैसैं सीता सीतोदा नदी मेरुगिरिकी प्रदक्षिणा देयकरि समुद्रकूं प्राप्त होय हैं तैसैं इन पर्वतनिकी प्रदक्षिणादेयकरि नदी समुद्रमें प्रवेश करैं हैं। बहुरि इन पर्वतनिके शिखर पर मंदिर हैं तिनविषै स्वाति १ अरुण २ पद्म ३ प्रभास ४ नामक व्यंतर देव बसैं हैं ॥ ६५ ॥ बहुरि जंबूद्वीप विषै क्षेत्र पर्वत नदी आदि रचना पाइये हैं तिनतैं दूनी धातकीखंड वा पुष्करार्धविषै रचना पाइये हैं ॥ ६६ ॥ बहुरि संख्यातद्वीप जावैं तव एक और जम्बू नामा द्वीप है सो ता द्वीपविषै भी पर्व कहे जो व्यंतर तिनके नगर पाइये हैं ॥ ६७ ॥ बहुरि मेरु अर नील पर्वतके बीच तो उत्तरकुरु भोगभूमि है फिर मेरु अर निषध पर्वतके मध्य देवकुरु भोगभूमि है सो उन भोगभूमियनिकी चौडाईका प्रमाण ११८४२ योजन अर २ कला बहुरि उनकी जीवा ५३००० धनुष अर तिनका धनुपृष्ठ ४६०१८ योजन अर १२ कला ॥ ६९ ॥ अर भोगभूमिकी वृत्ति कहिए चौडाई ७१०४३ योजन अर ४ कला ॥ ७० ॥ यहां एक योजनकी नव कला लीनी तिनमें चार कला अर विदेहक्षेत्रका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला ॥ ७१ ॥ अर सुमेरुकी पूर्व अर उत्तर दिशाके मध्य भागविषै अर सीतानदीके पूर्वकी ओर नीलाचलके समीप जंबूवृक्षका स्थल है ॥ ७२ ॥ सो स्थलके ऊपर चौगिर्द महासुंदर रत्ननिकी वेदी है सो ५०० धनुष चौडी अर दोय कोस ऊंची ॥ ७३ ॥ ता स्थलका विस्तार अधोभागविषै ५०० कोस अर मध्यविषैं विस्तार कोस ८ अर अन्तविषै कोस दोय यह स्थलकी चौडाई कही ॥ ७४ ॥ सुवर्णमयी वह स्थल ताकी पाठिका कोस ऊंची आठ अर चौडी मूलविषै १२ कोस अर मध्यविषै आठ अर अग्रभाग विषै कोस ४ ॥ ७५ ॥ अर ताका चौगिर्द अधो कहिए नीचे नीचे छह मणि वेदी हैं अर तिनके ऊपर प्रत्येक प्रत्येक पद्मवेदी हैं ॥ ७६ ॥ सो जम्बूवृक्ष मूलविषै एक कोसके विस्तार है अर पेडकी ऊंचाई दो योजन है। अर पृथ्वीविषै ऊंचा दोय कोस है अर याकी शाखाका विस्तार ८ योजन है ॥ ७७ ॥ अर पाषाणमई

सीता, नारी, सुवर्णकूला, रक्ता ये सप्त नदी तो पूर्व गामिनी हैं अर सिंधु, रोहितास्या, हरिकांता, सीता नरकांता, रूप्यकूला, रक्तोदा यह सप्त नदी पश्चिम दिशाके समुद्रकी ओर प्रवेश करे हैं ॥ ५७ ॥ सकल विदेहक्षेत्रका विस्तार ३३६८४ योजन अर ४ कला है। सुमेरु पर्वतकी पूर्वोत्तर दिशा अर सीता नदी पूर्वदिशा अर नीलाचलके समीप जंबूवृक्षका स्थल है ॥५८॥ सो जंबूवृक्षके स्थलके ऊपर चौगिरद रत्ननिका कोट है सो कोट दो कोस ऊंचा है अर ५०० धनुष चौडा अर वृक्षका स्थल मूलविषै विस्तार कोस ५०० अर मध्यविषै कोस ८ अर ऊर्द्ध विषै कोस दोय ॥ १५९ ॥ जंबूनद कहिए स्वर्णमई यह वृक्ष ताकी पीठिका ऊंची कोस आठ अर मूलविषै विस्तार कोस १२ अर मध्यविषै कोस आठ अर ऊर्द्धविषै कोस ४ अर वृक्षका विस्तार मूलविषै कोस एक। अर पेड़की ऊंचाई योजन दोय अर पृथ्वी विषैं जड कोस दो अर शाखाका विस्तार योजन आठ ॥६०॥ यह वृक्ष रत्नमई पृथ्वीकाय है महा कहिये मोटा है पेट जाका अर वज्रमई शाखा है जाकी अर सोहै हैं रूपमई पत्र जाके अर मणिमई पुष्प अर फल ताकी किरणनि करि अंकूर फैल रहे हैं ॥६१॥ अर अत्यंत आरक्त जे पल्लव कहिए कोंपल तिनका संतान कहिए समूह ताकरि अति शोभायमान करी हैं सब दिशा जानै पहिली जो पीठिकाका वर्णन किया ताविषै जंबूवृक्षका प्रकाशरूप सोहै है पृथ्वीकायरूप स्वरूप जाका अर नानाप्रकारकी जे शाखा तिनकरि शोभित है ता वृक्षकी चारों दिशाकी तरफ चार बडेडाले हैं तिनमें उत्तरकी ओरके डालकेविषै भगवानका मंदिर है अर तीन डालोंमें देवीनिके निवास हैं ॥ ६१ ॥ यह वृक्ष पृथिवीकाय है रत्नमयी जड है अर हरित वर्ण मणिमई पेड है अर आरक्त कोंपल या वृक्षका सब रत्नमई ही विस्तार है अर जंबू वृक्षके नीचे तीस योजन चौडे अर पचास योजन ऊंचे आदर अर अनादरनामा दोय देवनिके मंदिर हैं वे देव या वृक्षके अधिष्ठाता हैं ॥३६२॥ बहुरि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत इन चार क्षेत्रनिके मध्य चार पर्वत हैं, श्रद्धावान १ विजयवान् २ पद्मवान् ३ गंधवान ४ ये चार पर्वत हैं ॥६३॥ सो एक हजार योजन तो ऊंचे हैं अर मूलविषै १००० योजन चौडे हैं अर मध्यविषै ७५० योजन अर शिखरविषैं

ऊंचा है अर मूलविषै ४ योजन अर मध्यविषै २ योजन अर अंतविषै एक योजन चौडा है बहुरि ता पर्वतके शिखिरविषै एक वज्रमयी मंदिर सोहै है। सो वह मंदिर मूलविषै तो ३००० धनुष चौडा है अर मध्यविषै २००० धनुष चौडा है अर शिखिरविषै १००० धनुष चौडा है ताके ऊपर रत्नमई महाकांति संयुक्त एक गंगा नाम कूट है ताका विस्तार श्लोकमें कहै हैं—

अंते पंचशतायामं तदर्द्धंचापि विस्तरं। द्विसहस्रधनुस्तुंगं भितिवज्रमयं गृहम् ॥ ५७ ॥

अर शिखरविषै पांचसौ धनुष लंबा है अर अढाईसौ धनुषके विस्तार है अर दोहजार धनुष ऊंचा है ए ऐसा वज्रमई मंदिर सोहै है ॥१४७॥ फिर ता मंदिरके वज्रकपाट नामा वज्रमई द्वार सोहै है सो वह द्वार ८० धनुष ऊंचा है अर ४० धनुष चौडा है ॥ ४८ ॥ अर वह गंगा नदी या कुण्डकी दक्षिण ओर जायकरि विजयार्द्धकी गुफाविषैं अष्ट योजनके विस्तार होती भई सो विजयार्द्धगिरिकी गुफातैं निकसि चौदह हजार नदीनि सहित साढे बासठ योजनके पाटकूं धरे लवण समुद्रकी पूर्व दिशाकी ओर प्रवेश करती भई सो प्रवेश करनेके द्वार पौने चौरानवै योजन ऊंचा है अर आध योजन औंडा है अर साढे बासठ योजन चौड़ा है अर तोरणनिकरि संयुक्त है ॥५०॥ या भांति सर्व प्रकार गंगाकी रचना समान सिंधु नदीकी रचना जाननी अर विदेह पर्यंत सब नदीनिकी चाड़ाई वा नीब तोरणतैं दूने २ जाननी अर औंड़ाई भी सब नदीनिकी दूनी दूनी जाननी अर उन नदीनिके स्थानकविषै दिक्कुमारी देवी हैं ते यथास्थानविषै वसै हैं ॥५२॥ बहुरि रोहितास्या नामा नदी है सो पर्वत पर दोयसौ छिहत्तर योजन जायकरि पर्वततैं श्री देवीके मंदिरविषै प्राप्त होनी भई ॥ ५३ ॥ तहां तैं निकसि १६०५ योजन सूधी जाय करि नाभिगिरिकी प्रदक्षिणा देयकरि पश्चिमके समुद्रमें प्रवेश करती भई ॥५४॥ फिर रोहिता नामा जो नदी है सो भी रोहितास्या समान प्रमाणकूं लिये पूर्वके समुद्रमें प्रवेश करती भई, जे छहूं उत्तर दिशाकी नदी हैं तिनकी रचना दक्षिणकी नदीनिकी समान जानहु, यथायोग्य परिवारादि रचना समान जाननी ॥ ५६ ॥ तहां गंगा, रोहित, हरि,

कमल है, सो आकाशविषै सोहै है अर जाके मध्य एक कोसकी कर्णिका है सो आध योजन निकसकरि सोहै है। सो पद्मद्रहतैं तीजे तिगिंछद्रहतक तो दूनी दूनी लम्बाई चौडाई जानहु अर तिगंछतैं केसरीविषै सब विस्तार आधा अर केसरीतैं महा पुंडरीकका आधा अर तातैं पुंडरीकका आधा सो इनमें देवीनिके निवासके मंदिर हैं। देवीनिके नाम–श्री १ ह्री २ धृति ३ कीर्ति ४ बुद्धि ५ लक्ष्मी ६ सो इनमें देवीनिकी आयु एक पल्य अर इनमें श्री ह्री धृति ये तीन तो सौधर्म इंद्रकी नियोगिनी अर कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी ये तीनों ईशानइंद्रकी नियोगिनी हैं इन देवीनिके तीन तीन सभा अर सामानिक देव इनके सेवक ॥ ३१ ॥ अर पद्मद्रहके पूर्व दिशाके द्वार गंगा निकसी, अर सिंधु पश्चिमके द्वार निकसी अर रोहित उत्तरके द्वार निकसी ॥ ३२ ॥ अर दूजा महापद्मद्रह तामैतैं रोहितास्या अर हरिता निकसी अर तिगिंछतैं हरिकांता शीतोदा निकसीं, अर केसरीद्रहतैं शीता नरकांता निकसीं अर महापुंडरीकतैं नारी अर रुप्यकूला निकसीं ११, अर पुंडरीकतैं सुवर्णकूला रक्त रक्तोदा निकसीं जिन द्वारनि करि ये नदी निकसीं ते द्वार रत्ननिके तोरणनिकरि दैदीप्यमान हैं ॥ ३५ ॥ अर सवा छै योजन गंगाका प्रवाहका पाट अर ऊंडा कोस आध यह तो निकासविषै विस्तार जानहु अर द्वारनिके तोरण नानाप्रकारकी मणीनिकरि मनोहर ऊंचे नव योजनके आठ भाग करिए तामें भाग तीन लीजै। जब गंगा पद्मद्रहतैं निकसी तब हिमवान पर्वतपै ५०० योजन तो पूर्वकी ओर गई पीछे उलटकरि गंगाकूटतैं दक्षिण दिशाकी ओर भरतक्षेत्रविषै आई कछुइक अधिक १०० योजन तो आकाशकूं उलंघकरि पर्वततैं पूर्वके द्वार पडी तहां पूर्वका द्वार सवा छह योजनके विस्तार गोमुखाकार है ताविषै अर्द्ध योजन प्रमाण जिन्हा सो गोमुखी होय गंगागिर सो गायके सींगके आकार गिरि ॥ ४० ॥ श्रीदेवीके मंदिरके आगे होय निकसी सो भूमिविषै दश योजनके विस्तार होती भई। पृथवीविषै ६० योजन चौडा अर १० योजन ऊंचा एक वज्रमुख नाम कुंड है ताके मध्य आठ योजन चौडा अर जलतैं दो कोस ऊंचा ऐसा एक द्वीप कहिए टापू है अर ता द्वीपके मध्य एक वज्रमई पर्वत है सो पर्वत १० योजन

अर चारों ही गजदंतनिमें मध्यके दो दो कूट सो चारनिके आठ भये तिनमें आठ दिक्कुमारी बसैं हैं तिनिके नाम—भोगंकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, वसुमित्रा, सुमित्रा, वारिषेणा, अचलावती, यह आठ दिक्कुमारी हैं ॥ २२६ ॥ अथानंतर—एक मेरु संबंधी सोला वक्षारगिरि तिनिके नाम कहै हैं—चित्रकूट, पद्मकूट, नलिनकूट, एकशैल ये चार नीलाचल अर सीता नदीके अंतरतक लम्बे हैं ॥ २२८ ॥ अर त्रिकूट, वैश्रवण, अंजन, अर आत्मांजन ये चार सीता अर निषधाचलकूं स्पर्शें ऐसे लाम्बे हैं ये तो पूर्व विदेहके कहे ॥ २९ ॥ अर श्रद्धावान विजयवान्, आशीविष, सुखावह ॥ ३० ॥ ये चार पश्चिम विदेहविषै अपनी लम्बाई कर शीतोदा अर निषधाचलकूं स्पर्शैं हैं ॥३१॥ चंद्रमाल, सूर्यमाल, नाममाल, अर मेघमाल, ये चार शीतोदा अर नीलाचलके मध्य तिष्ठे हैं ॥ ३२ ॥ नदीके तटविषै इन वक्षारगिरिकी ऊंचाई योजन पांचसौ अर सर्वत्र इनकी ऊंचाई चार सौ योजन जानहु ॥ ३३ ॥ एक मेरु संबंधी सोलह वक्षरागिरि सो पांच मेरु संबंधी अस्सी जानहु सो इन वक्षारगिरनिके मस्तकविषै शिखर हैं तिनमें कुलाचलनिके नामसे जो कूट हैं तिनविषै दिक्कुमारी देवी बसैं हैं। अर नदीनिके समीप शिखरविषै भगवानके अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर मध्यके कूटनिविषै व्यंतरनिके क्रीडा करनेके निवास हैं अर भद्रशाल नामा वन सुमेरुकी पूर्व दिशातैं पश्चिम दिशालग लंबा है अर नाना प्रकारके बृक्ष अर बेलनिकरि भरया है नीलवर्ण सोहै है दोऊ भागनिविषै लंबाई बाईस हजार योजन है पूर्व पश्चिम तो एता लंबा है। अर दक्षिण उत्तर भद्रशालका विस्तार कहिये चौडाई ढाईसौ योजन ॥ २३७ ॥ भद्रशालाके पूर्व पश्चिम लंबी वेदिका कहिये भित्ति सो एक योजन ऊंची अर दो कोस चौडी है अर एक कोस ओंडी है अर नीलाचलतैं गृहवती नामा विभंगा नदी सीताविषै जाय मिली अर हृदयवती अर पंकवती भी, ये वक्षारगिरिके अंतरविषैं तिष्ठी हैं अर तप्तजला नदी निषधाचलतैं निकसी सोहू सीतामें जाय मिली अर मत्तजला अर उन्मत्तजला ये भी सीताविषै जाय मिली क्षीरोदा शीतोदा स्रोतवाहिनी ये तीन विभंगा निषधाचलतैं निकसीं अर शीतोदामें मिलीं ॥ ४१ ॥ अर

दक्षिण तटविषै कुमद नामा कूट अर सुमेरुतैं पश्चिम दिशाविषै पलाश कूट बहुरि सीताके पश्चिमतटविषैं अवतंम नामा कूट अर सुमेरुतैं उत्तर दिशाविषैं रोचननामा कूट अर एक कंचनगिरि एक सुमेरु सम्बन्धी २०० । सो पांच मेरु सम्बन्धी १००० जानहु इनविषैं देव दिग्गजेंद्र बसै हैं ॥ ९ ॥ अर सुमेरु पर्वततैं पश्चिम अर उत्तरके भागविषैं गन्धमादन नामा पर्वत है सो सुवर्णमई सब ओर सुंदर है अर मेरुके पूर्व अर उत्तरदिशाविषै माल्यवान पर्वत है सो वैडूर्यमणिमई महाज्योतिरूप अति सुंदर सोहै है ॥ ११ ॥ अर सुमेरुकी पूर्वकी अर दक्षिणकी उर सोमनसनामा पर्वत है अर पहिले कोणविषैं ताये सोनामय विद्युतप्रभ नामा पर्वत है अर जो गजदंत लम्बाई चौडाईमें कंचनगिरिके समान है ॥ २१२ ॥ वे नीलाचल अर निषधाचलके निकट तो ४०० योजन ऊंचे हैं अर सुमेरुके समीप पांचसौ योजन ऊंचे हैं ये जेते ऊंचे हैं तातैं चौथा भाग इनकी जड जानहु अर देवकुरु उत्तरकुरविषैं ये पाचस योजन चौडे हैं अर चारो ही गजदन्तनिकी दीर्घता योजन तीस हजार दोयसौ नव योजन अर छह कला हैं अर चारों समान हैं ॥ १४ ॥ अर एकके शिखर सात दूजेके नव तीजेके सात चौथेके नव, तिनमें पहिला गंधमादन तिनके शिखरनिके नाम कहैं हैं—सिद्धायतन, गन्धमादन, उत्तरकुरु, गंधमालिनी, लोहित, स्फटिक आनंद ये सातकूट गंधमादनके कहे । अर सिद्धायतन, माल्यवत् उत्तरकुरु, कक्षा, सागरक, रजत, पूर्णभद्र, सीताकूट, हरिसभ नामा कूट यह नव शिखर माल्यवानके जानहु ॥ १८ ॥ फिर सिद्धायतन सौमनस, देवकुरु मांगल, विमल, कांचन, वसिष्ट, यह सात शिखर तीजे सौमनस गजदंतके जानहु । अर चौथा विद्युतप्रभ ताके शिखर नव सिद्धायतन, विद्युतप्रभ, देवकुरु, पदमक, तपन, स्वस्तिक, सतोज्वल, सीतोदाकूट, हरिशब्द कूट ये नवकूट विद्युतप्रभके कहे इन नव कूटनिकी ऊंचाई गिरिकी जड समान जानहु । जो पांचसौ योजन गिरि ऊंचा सवासौ योजनकी जड एताही ऊंचा शिखर यह निश्चय जानहु ॥ २२ ॥ यह चार गजदंतनिके बत्तीस शिखर कहे तिनिमें चारोंके चार सिद्धायतनिमें भगवानके चार अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर कूटनिविषै देव क्रीडा करैं हैं

सीतोदा नदीके दोऊ तटनिमें यमकूट अर मेघकूट ये दोय पर्वत हैं ॥ ९२ ॥ ये नाभिगिरिके समान हैं। अर इनके शिखरनिविषै देवनिके मंदिर हैं, जो कूटनिका नाम सोही देवनिका नाम। नीलाचलतैं पांचसौ योजन नीलवान् द्रह है, एक उत्तरकुरु कूट, दूजा चंद्रकूट, तीजा ऐरावत् कूट, चौथा माल्यवान् कूट, ये द्रह नदीनिके मध्य हैं, एकनैं दूसरेका अंतर ५०० योजन है ॥९३॥ वे दक्षिणके समुद्रतैं उत्तरके समुद्रतक लम्बे हैं पद्मद्रह समान इनकी दीर्घता है ॥ ९४ ॥ अर निषधाचलकी उत्तरकी उर नदीविषै निषध नाम द्रह है, दूजा देवकुरु तीजा सूर्य चौथा सुलपस्थ अर पांचवां तड़ितप्रभ ॥ ९६ ॥ ये दस द्रह रत्ननिकरि चित्रित हैं तट जिनके अर ये सबही वज्रमूल कहिए हीरनिकी हैं जड़ जिनके ये महाद्रह उनविषै नागकुमार बसै हैं कमलनिके हैं मंदिर जिनके ॥ ९७ ॥ कैसे हैं कमल जलतैं दो कोस ऊंचे हैं अर एक योजनका है विस्तार जिनके अर एक एक द्रहविषैं एक एक कमल ताकी कर्णिका एक कोस विस्तारमें है, अर एक एक कमलके समीप प्रत्येक प्रत्येक एक लाख चालीस हजार एकसौ सतरह कमल अर एक एक द्रहके सन्मुख दस दस पर्वत सोहै हैं कांचन कूट हैं नाम जिनके ते सीता शीतोदा नदीनिके तटविषैं हैं ॥ २०० ॥ ये सब ही कंचनगिरि समान हैं। सौ योजन ऊंचे है, चौडाईमें अर मूलविषैं तो सौ योजन अर मध्यविषै पचहत्तर योजन चौडे हैं अर शिखिरविषैं पचास योजन चौडे हैं। तिनिके ऊपर एक एक भगवान्‌की अकृत्रिम प्रतिमा है देवल नाहीं, एक एक कंचनगिरि पर एक २ प्रतिमा निरालम्ब तिष्ठै है वे प्रतिमा मोक्षमार्गकी दीपिका हैं पांच सौ धनुप ऊंची मणिमई सो एक एक मेरु सम्बन्धी दो दो सौ कांचनगिरि सो पांच मेरु सम्बन्धी हजार कांचनगिरि भए, तिनिमें हजार प्रतिमा हैं अर इनके शिखरविषै देवनिके क्रीडागृह हैं तिनिमें कांचन नामा देव क्रीडा करै हैं ॥२०४॥ यह तो सीता नदीके उत्तर तटके कूट कहे अर अब दक्षिण दिशाके कूट सुनहु। तिनिके नाम—पद्मोत्तरकूट नीलावतकूट यह तो सुमेरु पर्वततैं पूर्व दिशाकी ओर अर शीतोदाके दक्षिण तटविषै स्वस्ति नामा कूट अंजनगिरि नामा कूट बहुरि सुमेरुके दक्षिण तटविषै अंजनगिरि नामाकूट अर शीतोदाके

है पेड जाका अर वज्र कहिए हीरा तिन मई तो शाखा तिन करि शोभित है अर सोहे हैं रूपामई पत्र जाके तिनकरि शोभित है अर मणिमई है पुष्प अर फल जाके ॥१७८॥ अर रक्त मणिमई पल्लवनिका जो समूह ताकरि आरक्त करी हैं दिशा जानैं, सो पहिली पीठिकाका वर्णन किया ताविषै यह जंबूवृक्ष प्रकाशरूप सोहै है ॥७९॥ सो यह वृक्ष पृथ्वीकाय है बनस्पतिकाय नाहीं नाना प्रकार शाखानिकरि शोभित यह वृक्ष है ताके चारों बडे डाहले हैं ॥ ८० ॥ तिनमें उत्तरके डाहलेविषै भगवानका अकृत्रिम अद्भुत चैत्यालय है अर ताके तीन डाहलेनिमें आदर अर अनादर नामा जो देव तिनके निवास हैं। जंबूवृक्षके अधोभाग तीस २ योजनके विस्तार अर पचास योजन ऊंचे इन दोऊ देवनिके दो मंदिर हैं ॥ १८२ ॥ अर वेदिकाके भीतर सात दिशानिविषै सात प्रधान वृक्ष हैं तिनके परिवारके एते वृक्ष जानहु। चार बहुरि एक सौ आठ बहुरि चारहजार बहुरि सोलह हजार बहुरि बत्तीसहजार बहुरि चालीस हजार बहुरि अडतालीसहजार जो सातप्रधान वृक्ष तिनका परिवार या अनुक्रमतैं ॥ ८४ ॥ एते वृक्ष भए सर्व वृक्ष एकत्र करिए तो एक लाख ४० हजार एक सौ उगनीस १४०११९ भए इनमें सात प्रधानवृक्ष आयगए ॥८६॥ बहुरि सुमेरुके दक्षिण अर पश्चिमके भागविषै अर शीतोदा नदीके पहिले तटविषै निषधाचलके समीप शालमली वृक्षका स्थल सोहै है ॥ ८७ ॥ जैसा जंबूवृक्षका स्थल है तैसा ही शालमली वृक्षका स्थल जानहु, ये दोऊ पृथ्वीकाय हैं। अर इनके परिवारके वृक्ष सर्वही पृथ्वीकाय हैं जैसा वर्णन जम्बूवृक्षका किया तैसाही शालमली वृक्षका जानहु ॥ ८८ ॥ ता शालमली वृक्षकी दक्षिण दिशाकी शाखाविषै भगवान्का अकृत्रिम चैत्यालय है। अर ताकी तीन शाखाविषै वेणु अर वेणुधारी नामा देवनिके निवास हैं जैसा वर्णन आगे आदर अर अनादरका किया है तैसा ही इन दोऊनिका जानहु ॥८९॥ जैसे उत्तरकुरुके अधिष्ठाता आदर अनादर हैं तैसे देवकुरुके अधिष्ठाता वेण अर वेणधारी जानहु ॥९०॥ अर नीलाचलतैं दक्षिणदिशाविषै एक हजार योजन सीता नदीके पूर्व तटविषै चित्रकूट अर विचित्रकूट नाम पर्वत हैं ॥ ९१ ॥ अर निषधाचलके उत्तर दिशाविषै

महाउत्सवरूप तिनकूं पहले देखकरि अपने गर्भविषै जगतके ईश्वरकूं धारती भई ॥ २१ ॥ भगवान धरतीकी रक्षा निमित्त अनेक जीवनिके पालवेअर्थि ऊर्द्धलोकतैं मध्यलोकमें आए पिचत्तर वर्ष अर साढे आठ महीने चतुर्थकालके बाकी रहेहुते तब भगवान गर्भविषै आए। चौथेकालका नाम दुखमासुखमा है सो दुखमाके अंत अंतिम तीर्थंकर उपजे ॥ २२ ॥ आपाढ सुदि छठ उत्तराफाल्गुणी नामा नक्षत्रविषै वर्द्धमान माताके गर्भमें आए ॥ २३ ॥ दिक्कुमारादि कहिए छप्पनकुमारिका तिनकरि करी है सेवा जाकी ऐसी माता सुंदर हैं स्तन जाके ताके गर्भविषै आया, वह जातिरूप जिनराज जगतका सूर्य प्रछन्न है तौभी गर्भकूं देदीप्यमान करता भया जैसैं रवि मेघमालाविषै आच्छादित है तो भी मेघमालाकूं प्रकाशरूप करै है, मेघमंडलमें प्रगट दीखै है ॥२४॥ अर नौ महीना अर आठ दिन व्यतीत भए चैत्र सुदि चौदश उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै प्रभु जन्मे ॥ २५ ॥ तब प्रभूके माहात्म्यतैं इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए, तब इंद्रादिक देव अवधिज्ञानतैं अंतिम जिनेश्वरका जन्म जानकरि सिंहासनतैं उतरि प्रणाम करते भए ॥ २६ ॥ भवनवासी देवनिके शंख अर व्यंतरनिके भेरी अर जोतिपी देवनके सिंहनाद अर स्वर्गवासी देवनिके घंटाका शब्द महामनोहर होता भया। ये वादित्र विना बजाए स्वतःस्वभाव सुन्दर शब्द करते भए तिनकूं सुनकरि चतुरनिकायके देव अति हर्षित होय महा मंगलीक ध्वनि करते भए। जैसी समुद्रकी गर्जना होय तैसी देवनिकी ध्वनि भई ॥ २७ ॥ गज १ तुरंग २ रथ ३ पयादे ४ वृषभ ५ गंधर्व ६ नृत्यकारिणी ७। ये सप्त जो सेना तिनि सहित अर अपनी अपनी स्त्रीनि सहित चतुरनिकायके देव आभूषणनि करि मंडित इंद्र की लार कुंडलपुर नगरविषै आय प्राप्त भए ॥ २८ ॥ इंद्र है मुख्य जिनमें ऐसे समस्त देव नगरकी तीन प्रदक्षिणा देयकरि राजाके आंगनविषै आए, अनेक कोटि चन्द्रमाकी कांतिकूं जीतै है मुख जिनका ऐसे जो जिनराज तिनकूं नमस्कार करके माता पिताकी वंदनाकूं गए। सब इंद्र तो आंगनविषै खडे रहे अर इंद्राणी प्रसूतीगृहमें पठाई सो माताकूं मायामई निद्रा लाय अर माताके निकट मायामई बालक पधराय प्रभुकूं उठाय शची नामा इंद्राणी ल्याई सो अपना पति

है पेड जाका अर वज्र कहिए हीरा तिन मई तो शाखा तिन करि शोभित है अर सोहै हैं रूपामई पत्र जाके तिनकरि शोभित है अर मणिमई है पुष्प अर फल जाके ॥१७८॥ अर रक्त मणिमई पल्लवनिका जो समूह ताकरि आरक्त करी हैं दिशा जानैं, सो पहिली पीठिकाका वर्णन किया ताविषै यह जंबूवृक्ष प्रकाशरूप सोहै है ॥७९॥ सो यह वृक्ष पृथ्वीकाय है बनस्पतिकाय नाहीं नाना प्रकार शाखानिकरि शोभित यह वृक्ष है ताके चारों बडे डाहले हैं ॥ ८० ॥ तिनमें उत्तरके डाहलेविषै भगवानका अकृत्रिम अद्भुत चैत्यालय है अर ताके तीन डाहलेनिमें आदर अर अनादर नामा जो देव तिनके निवास हैं। जंबूवृक्षके अधोभाग तीस २ योजनके विस्तार अर पचास योजन ऊंचे इन दोऊ देवनिके दो मंदिर हैं ॥ १८२ ॥ अर वेदिकाके भीतर सात दिशानिविषै सात प्रधान वृक्ष हैं तिनके परिवारके एते वृक्ष जानहु। चार बहुरि एक सौ आठ बहुरि चारहजार बहुरि सोलह हजार बहुरि बत्तीसहजार बहुरि चालीस हजार बहुरि अडतालीसहजार जो सातप्रधान वृक्ष तिनका परिवार या अनुक्रमतैं ॥ ८४ ॥ एते वृक्ष भए सर्व वृक्ष एकत्र करिए तो एक लाख ४० हजार एक सौ उगनीस १४०११९ भए इनमें सात प्रधानवृक्ष आयगए ॥८६॥ बहुरि सुमेरुके दक्षिण अर पश्चिमके भागविषै अर शीतोदा नदीके पहिले तटविषै निषधाचलके समीप शालमली वृक्षका स्थल सोहै है ॥ ८७ ॥ जैसा जंबूवृक्षका स्थल है तैसा ही शालमली वृक्षका स्थल जानहु, ये दोऊ पृथ्वीकाय हैं। अर इनके परिवारके वृक्ष सर्वही पृथ्वीकाय हैं जैसा वर्णन जम्बूवृक्षका किया तैसाही शालमली वृक्षका जानहु ॥ ८८ ॥ ता शालमली वृक्षकी दक्षिण दिशाकी शाखाविषैं भगवान्का अकृत्रिम चैत्यालय है। अर ताकी तीन शाखाविषै वेणु अर वेणुधारी नामा देवनिके निवास हैं जैसा वर्णन आगे आदर अर अनादरका किया है तैसा ही इन दोऊनिका जानहु ॥८९॥ जैसे उत्तरकुरुके अधिष्ठाता आदर अनादर हैं तैसे देवकुरुके अधिष्ठाता वेण अर वेणधारी जानहु ॥९०॥ अर नीलाचलतैं दक्षिणदिशाविषै एक हजार योजन सीता नदीके पूर्व तटविषै चित्रकूट अर विचित्रकूट नाम पर्वत हैं ॥ ९१ ॥ अर निषधाचलके उत्तर दिशाविषै

सारस्वत आदित्य प्रमुख अष्टप्रकारके लौकांतिकदेव नमस्कारकरि प्रभुकी स्तुति करते भए ॥ ४९ ॥ अर सौधर्म आदिक इंद्र देवनिसहित आयकरि अभिषेक करते भए अर पूजाकरि पालकीमें चढाये बहुरि वह पालकी इंद्रने उठाई ॥५०॥ मगशिर वदि दशमीके दिन उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै भगवान वनकूं गए ।५१। शरीरके सकल वस्त्र आभूपण माला उतारि पञ्चमुष्टनिकरि शिरके केशलोंचकरि मुनि भए ।५२। भगवानके केशनिके समूह जो भ्रमर सारिखे श्याम उनकूं इंद्रने उठायकरि क्षीरसागरविषै पधराए सो क्षीरसागर जिनेंद्रके केशनिके पुञ्जकरि मण्डित अति शोभता भया मानूं इंद्रने इंद्रनीलमणीनिके समूह समुद्रविषै डारे ॥ ५४ ॥ जिनराजका तपकल्याणक देख कर सकल सुरनर हर्षित भए, तीसरे कल्याणककी पूजाकरि अपने अपने स्थानकूं गए ॥५५॥ तप धरते ही जिनेश्वरकूं चौथा मनःपर्ययज्ञान उपज्या चार ज्ञान ही हैं नेत्र जाके सो धीर वीर बारह वर्ष द्वादश प्रकारका तप करता भया ॥ ५६ ॥ जिननाथके गुणनिके समूहका है ग्रहण जाके सो विहार करता हुवा ऋजुकूला नदीके तीर ज्रंभिक नामा ग्राम जाके वन विषै आवता भया ॥ ५७ ॥ तहां शालका जो वृक्ष ताके समीप शिलापर आतापन योगधरि तिष्ठ्या तादिन दूजा उपवास था, सो वैशाख सुदी दशमीके दिन उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै वह शुक्लध्यानी घातिया कर्मनिके समूहकूं घातकरि केवलज्ञानकूं प्राप्त होता भया ॥ ५९ ॥ तव समस्त सुरासुर केवलके प्रभावकरि तत्काल चलायमान भया आसन जिनका सो आयकरि ता प्रभुकी सेवा महिमा करते भए ॥ ६० ॥ सो गणधर विना वाणी न खिरी छियासठ दिन तक प्रभु मौन गहि विहार किया फिर राजगृह नगरके समीप महा विस्तीर्ण विपुलाचल पर्वत तापरि आय विराजे जैसैं लोकनिके उद्योत करिवेअर्थ सूर्य उदयाचलपर तिष्ठै ॥ ६१ ॥ तव सुर असुर सवही प्रभुकूं विपुलाचल पर्वतपर विराजते जानकरि इत उततैं आए जैसैं जिनेंद्रके गुण सकल एकत्र भेले होय ही हैं तैसैं सुरासुर सकल ही गिरिपर भेले भए ॥ ६२ ॥ सो पर्वत सौधर्मादिक इंद्रनिकरि अर देवनिकरि वेष्टित भया वर्द्धमानके विराजवेकरि विपुलाचल ऐसा शोभायमान भया जैसा कर्मभूमिकी रीति आदि ऋषभके विराजवेकरि कैलाशपर्वत शोभित भया हुता ॥ ६३ ॥ तहां देवनि तीनकोट रचे एकएक कोटके चारों

मान दीखै है ॥ ३९ ॥ ऐसे ऐरावत गजपर जिनेंद्रकूं चढायकरि देवनि सहित सौधर्म इंद्र सुमेरुपर्वतपर जाय प्राप्त भया, कैसा है जिनेंद्र ऐरावतका मंडन कहिये आभूषण है जिनकरि ऐरावत सोहै है ॥४०॥ ता जिनराजकूं सुरराज गजराजतैं उतारकरि गिरिराजके शिखर जो पांडुके वन ताविषै प्रसिद्ध जो पांडुकशिला तापरि जो सिंहासन ताविषै पधरायकर स्वर्णके कलशनिकरि देवनिकरि आन्या जो क्षीरसागरका जल ताकरि देवनसहित इंद्रप्रभुकूं सपरायकरि वस्त्र आंभूषण पुष्पमालादिकरि शृंगारकरि अतिस्तुति करता भया बहुरि सुमेरुतैं ल्याय माताकी गोदविषै पधरायकर करी है जन्मकल्याणककी उचित क्रिया जिनि ॥४३॥ बहुरि राजा सिद्धार्थ अर राणी प्रियकारिणीके समीप आनंदके दायक जो जिननाथ तिनका वर्द्धमान नाम कहि वहुत स्तुतिकर देवनिसहित देवेश्वर देवलोककूं गया ॥ ४४ ॥ गर्भके पहिले छह महीनातैं लेकरि जन्म पर्यंत पंद्रहमासकर जो रत्नधारा बरसी ताकरि समस्त याचकजन राजाने तृप्त किए ॥४५॥ वे भगवान वर्द्धमान देवनकरि सेव्य ज्यों ज्यों वृद्धिकूं प्राप्त भया त्यूं त्यूं माता पिता बंधु अर तीन लोकके जीव तिनके आनंद अर अनुराग वढावता भया ॥४६॥ वे भगवान सुर असुरनिके इंद्र तिनके मुकुटनि पर कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला ताकरि अर्चित हैं चरणकमल जिनके अर महाधीर सोदेवोपुनीत भोगनिकरि मंडित तीस वर्षके होते भए ॥ ४७ ॥ ता भगवानका चित्त व्रतरूप अथवा शुद्ध है आचरण जाका अर चिर कहिए क्षणवर्ती नाहीं अर स्थिर कहिए दृढ है सो भोगनिविषै आसक्त न भया, कैसे हैं भोग महाकुटिलतारूप हैं जैसैं महाकुटिल सिंहके नखरंध्रनिविषै मोती न परोए जांय ॥ भावार्थ—मोती तो शुद्ध कहिए निर्मल अर व्रत कहिए गोल अर स्थिर कहिये अचल अर चिर कहिए जलके बुदबुदाकी न्याईं क्षणभंगुर नाहीं सो सिंहके नखरंध्र कुटिल महावक्र उनविषै कैसैं परोए जांय। तैसैं भगवानवर्द्धमानका चित्त शुद्ध कहिए रागादि रहित अर व्रत कहिए संयमरूप अर स्थिर कहिए अचल अर चिर कहिए क्षणवरती नाहीं सो भोगनिविषै कैसैं आसक्त होय। कैसे हैं भोग महा अशुद्ध हैं अर अव्रतरूप हैं अर क्षणभंगुर हैं अर चपल हैं अर कुटिल कहिए वक्र हैं ॥ ४८ ॥ सो एक दिन वे जो भगवान शांतचित्त स्वयंबुद्ध तिनकूं संसारशरीरभोगतैं वैराग्य उपजा। तब

जो सौधर्म इंद्र ताके हाथविषै प्रभु पधराये ॥ ३० ॥ सो इन्द्र प्रभुकूं करकमलनितैं ग्रह करि पूजै चिरकाल अनुरागकी दृष्टि करि देखै हजार नेत्ररूप जो कमलनिके समूह ताकरि अरचै ॥ भावार्थ—सहस्र नेत्रकरि सहस्राक्ष जो इंद्र सो देखता तृप्त न भया ॥ ३१ ॥ बहुरि चंद्रमातैं अति निर्मल अति उत्तंग अंगके धरणहारे प्रभु तिनकूं इंद्र ऐरावत हस्तीके ऊपर आरोपण करता भया, सो कैसा है ऐरावत हस्ती हिमाचलके शिखरनिके समूह समान ऊंचा है। गिरिके तो अधोभाग नीझरने झरैं हैं अर गजके अधोभाग मदकी धारा झरै है ॥ ३२ ॥ कुंभस्थलतैं झरता जो मद ताके सुगंधकरि भ्रमण करै हैं भ्रमरनके समूह जा पर सो कैसा सोहै है जैसी हेमाचलकी तलहटीकी भूमिविषै तमाल वृक्षनिके बन करि मंडित सोहै, यहां गज तो गिरि भया अर मदधारा नीझरना भए अर भ्रमरनिका मंडल तमालवृक्ष तिनके बन समान श्याम ॥३३॥ अर काननके निकट लग रही रक्त चामरनिकी पंक्ति सो कैसी सोहै है जैसे हिमाचलके तटकी भूमि रक्त अशोक वृक्षनिका महा बन कर सोहै है। भावार्थ—हिमाचल तो महारक्त अशोक वनकूं धरै है सो महा आरक्त है अर हस्ती रक्तचमरनिकी पंक्तिकूं धरै है ॥३४॥ बहुरि वह हस्ती महा मनोग्य स्वर्णकी सांकल क्षुद्र घंटानिकी पंक्ति कर मंडित है शरीर जाका सो कैसा सोहै है मानों दैदीप्यमान स्वर्णमई कटिमेखलानिकरि मंडित हिमाचल ही है ॥ ३५॥ अर अनेक हैं रद कहिये दांत जाके तिनपर देवांगना नृत्य करै हैं गान करै हैं संगीतशास्त्रके अनुसार, तिनकरि वह हस्ती सो हिमवत समान सोहै है जैसे हिमवन पर्वतके ऊंचे शिखरनि पर देवांगना नाचै हैं गावै हैं तैसै याके दंतनिपर गान करै हैं नृत्य करै हैं ॥ ३६ ॥ सुवृत कहिये गोल अर दीर्घ कहिए लांबी ऐसी हालती जो सूंड ताकरि रोकी हैं दसूं दिशा जाने मानूं वह सूंड अति दीर्घ अर स्थूल स्फुरायमान हैं सर्पके फणही हैं ॥३७॥ ता गजराजपर जिनराजकूं सौधर्म इन्द्र लेकरि तिष्ठ्या अर दूजे स्वर्गका ईशान इन्द्र महा मनोज्ञ उज्जल छत्र प्रभुके सिरपर धारता भया मानूं प्रभुकूं ऊंच चढे जान पूर्णमासीका पूर्ण चंद्रमंडल ही निकट आय तिष्ठ्या है। अर असुरकुमारनिका इंद्र चमरेंद्र ताकी भुजानि करि हलाए जे चमर तिनकरि हाथी मनोहर भासै है जैसे चमरी कहिये सुरहगाय सो हालते केसनके चमरनिकरि शोभाय

महाउत्सवरूप तिनकूं पहले देखकरि अपने गर्भविषै जगतके ईश्वरकूं धारती भई ॥ २१ ॥ भगवान धरतीकी रक्षा निमित्त अनेक जीवनिके पालवेअर्थि ऊर्द्धलोकतैं मध्यलोकमें आए पिचत्तर वर्ष अर साढे आठ महीने चतुर्थकालके बाकी रहेहुते तब भगवान गर्भविषै आए। चौथेकालका नाम दुखमासुखमा है सो दुखमाके अंत अंतिम तीर्थंकर उपजे ॥ २२ ॥ आषाढ सुदि छठ उत्तराफाल्गुणी नामा नक्षत्रविषै वर्द्धमान माताके गर्भमें आए ॥ २३ ॥ दिक्कुमारादि कहिए छप्पनकुमारिका तिनकरि करी है सेवा जाकी ऐसी माता सुंदर हैं स्तन जाके ताके गर्भविषै आया, वह जातिरूप जिनराज जगतका सूर्य प्रछन्न है तौभी गर्भकूं देदीप्यमान करता भया जैसें रवि मेघमालाविषै आच्छादित है तो भी मेघमालाकूं प्रकाशरूप करै है, मेघमंडलमें प्रगट दीखै है ॥२४॥ अर नौ महीना अर आठ दिन व्यतीत भए चैत्र सुदि चौदश उत्तराफाल्गुणी नक्षत्रविषै प्रभु जन्मे ॥ २५ ॥ तब प्रभूके माहात्म्यतैं इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए, तब इंद्रादिक देव अवधिज्ञानतैं अंतिम जिनेश्वरका जन्म जानकरि सिंहासनतैं उतरि प्रणाम करते भए ॥ २६ ॥ भवनवासी देवनिके शंख अर व्यंतरनिके भेरी अर जोतिषी देवनके सिंहनाद अर स्वर्गवासी देवनिके घंटाका शब्द महामनोहर होता भया। ये वादित्र विना बजाए स्वतःस्वभाव सुन्दर शब्द करते भए तिनकूं सुनकरि चतुरनिकायके देव अति हर्षित होय महा मंगलीक ध्वनि करते भए। जैसी समुद्रकी गर्जना होय तैसी देवनिकी ध्वनि भई ॥ २७ ॥ गज १ तुरंग २ रथ ३ पयादे ४ वृषभ ५ गंधर्व ६ नृत्यकारिणी ७। ये सप्त जो सेना तिनि सहित अर अपनी अपनी स्त्रीनि सहित चतुरनिकायके देव आभूषणनि करि मंडित इंद्र की लार कुंडलपुर नगरविषै आय प्राप्त भए ॥ २८ ॥ इंद्र है मुख्य जिनमें ऐसे समस्त देव नगरकी तीन प्रदक्षिणा दयकरि राजाके आंगनविषै आए, अनेक कोटि चन्द्रमाकी कांतिकूं जीतै है मुख जिनका ऐसे जो जिनराज तिनकूं नमस्कार करके माता पिताकी वंदनाकूं गए। सब इंद्र तो आंगनविषै खडे रहे अर इंद्राणी प्रसूतीगृहमें पठाई सो माताकूं मायामई निद्रा लाय अर माताके निकट मायामई बालक पधराय प्रभुकूं उठाय शची नामा इंद्राणी ल्याई सो अपना पति

वका अतिमुक्त मुनिसूं प्रश्न अर देवकीके अष्ट पुत्रनिके पूर्वभवका श्रवण अर पापका नाश करणहारा श्रीनेमिनाथके चरित्रका श्रवण ॥९०॥ बहुरि श्रीकृष्णकी उत्पत्ति अर गोकुलविषै बाललीला अर बलदेवके उपदेशतैं सर्व शास्त्रनिका ग्रहण ॥९१॥ बहुरि वसुदेवके धनुषरत्नका आरोपण अर यमुनाविषै नागकुमारका जीतना बहुरि कंसके हाथीकूं जीतना अर चाणूरमल्लका निपात अर कंसका विध्वंस ॥८२॥ अर उग्रसेनकूं राज अर हरिका सत्यभामासूं पाणिग्रहण अर तासूं अधिक प्रीति ॥९३॥ अर जीवद्यशाका जरासंधपै जाना अर विलाप करना अर जरासंधका यादवनिपर रोष होना अर बडी सेना भेजना रणविषै कालयवनका पराभव अर अपराजितका हरिके हाथकरि रणविषै मरण अर यादवनिकूं परम हर्षका उपजना काहूका भय नाहीं ॥९५॥ बहुरि शिवदेवीके श्रीनेमिनाथकी उत्पत्ति गर्भमें आये तब षोडश स्वप्नका देखना अर पतिसूं स्वप्नका फल पूछना, पति कही तिहारे श्रीनेमिनाथ पुत्र होंयगे ॥ ॥ ९६ ॥ बहुरि भगवान्का जन्म अर सुमेरुविषै जन्माभिषेक बहुरि बालक्रीडा अर जिनराजका प्रताप अर जरासंधका यादवनिपर आगमन, अर यादवनिका समुद्रकी ओर गमन ॥ ९७ ॥ अर मार्गविषै देवतानिने जो माया दिखाई ताकरि जरासंधका पीछे फिरना बहुरि श्रीकृष्णका समुद्रके तीर दाभकी सेजपर तिष्ठ तेला करना ॥ ॥ ९७ ॥ अर इंद्रके वचनतैं गौतम नामा देवकरि समुद्रका संकोचना अर कुवेरकरि द्वारिकापुरीका क्षणमात्रमें रचना बहुरि रुक्मिणीका विवाह अर सत्यभामाके दैदीप्यमान भानुकुमारका जन्म अर रुक्मिणीके प्रद्युम्नका जन्म अर पूर्वला वैरी जो धूमकेतु ताकरि प्रद्युम्नका हरण ॥ १०० ॥ विजयार्द्धविषै प्रद्युम्नकी स्थिति कालसंवर विद्याधरके मंदिर अर कृष्ण अर रुक्मिणीकूं प्रद्युम्नका खेद अर नारद विदेहक्षेत्रमें जायकरि सीमंधर स्वामीकूं पूछकर आया ताकरि खेदका निवारण, प्रद्युम्नकूं षोडश लाभकी प्राप्ति अर प्रज्ञप्तिविद्याकी प्राप्ति ॥ १ ॥ अर प्रद्युम्नका कालसंवरसूं संग्राम, अर नारदके आग्रहकरि मातापिताके निकट आगमन अर शंबुकुमारकी उत्पत्ति अर प्रद्युम्नकी बालक्रीडा अर पिताकापिता जो वसुदेव ताने प्रद्युम्नसूं प्रश्न किया ॥ २ ॥ अर प्रद्युम्नने अपने परिभ्रमणका सकल व्याख्यान किया। बहुरि यादवनिके सकल कुमारनिका वर्णन, बहुरि यादवनिकी वार्ताके

जिनशासनविषै उपदेश होय है तातैं अधिकारनिके विभाग कहिये हैं ॥७४॥ प्रथम ही बर्द्धमान जिनेश्वरका धर्मतीर्थ प्रवर्तन। बहुरि गणधरादि गणनिकी संख्या। बहुरि राजगृहविषै समवसरका आगमन। अर गौतम स्वामीसूं राजा श्रेणिकका प्रश्न। अर क्षेत्र कहिए त्रैलोक्य। अर काल कहिए षट्काल तिनका निरूपण। बहुरि कुलकरनिकी उत्पत्ति अर ऋषभकी उत्पत्ति। अर क्षत्रियादिकके वंशका वर्णन। बहुरि हरिवंशकी प्रवृत्ति। अर हरिवंशविषै मुनिसुव्रतनाथकी उत्पत्ति ॥ ७७ ॥ बहुरि दक्षप्रजापतिका चरित्र। बहुरि राजा वसुका वृत्तांत। बहुरि अंधकवृष्णिका अर ताके दशपुत्रनिका कथन। बहुरि सुप्रतिष्ठ मुनिकूं केवलज्ञानकी उत्पत्ति। बहुरि अंधकवृष्णिकूं दीक्षा। अर समुद्रविजयका राज। अर वसुदेवका सौभाग्य वर्णन। अर उपाय करि वसुदेवका घरतैं विदेशकूं निकसना ॥ ७९ ॥ अर वसुदेवके राणी सोमा अर विजयसेनाका लाभ बहुरि वनगजका वश करना अर विद्याधरकी पुत्री स्यामाका संयोग ॥ ८० ॥ बहुरि वसुदेवकूं अंगारक विद्याधरका ले उडना अर चंपापुरीविषै डारना अर गंधर्वसेनाका लाभ, विष्णकुमार मुनिका चरित्र बहुरि चारुदत्त सेठकी कथा अर ताके मुनिका दर्शन अर वसुदेवके सुंदर नीलंयशाराणीका लाभ अर सोमश्रीका लाभ ॥ ८२ ॥ अर वेदकी उत्पत्तिका कथन अर राजा सौदासका कथन। अर वासुदेवके कपिला राजकन्याका लाभ अर पद्मावतीका लाभ अर राणी चारुहासिनि अर रत्नावतीकी प्राप्ति अर राजा सोमदत्तकी पुत्री वेगवतीका संगम अर मदनवेगाका लाभ बालचंद्राका अवलोकन तथा प्रियंगुसुन्दरीका लाभ अर बंधुमतीका समागम, प्रभावती की प्राप्ति अर रोहिणीका स्वयंवर, ताके स्वयंवरविषै संग्राम अर संग्रामविषै वसुदेवकी जीत अर समुद्रविजयादि बडे भाइनिसूं मिलाप ॥ ८६ ॥ अर बलभद्रकी उत्पत्ति, कंसका व्याख्यान अर जरासंधकी आज्ञातैं राजा सिंहरथका बंधन ॥ ८७ ॥ अर कंसकूं जरासंधकी पुत्री जीवद्यशाका लाभ अर राज्यकी प्राप्ति उग्रसेन पिताका बंधन बहुरि वसुदेवसूं देवकीका विवाह ॥ ८८ ॥ बहुरि कंसका बडा भाई जो अतिमुक्त ताके आदेशकरि कंसकूं आकुलताका होना "जो देवकीके पुत्र कर मेरा मरण है" बहुरि वसुदेवसूं प्रार्थना करना जों देवकीकी प्रसूति हमारे घर होय ॥ ८९ ॥ सो वसुदेव प्रमाण करी बहुरि वसुदे-

केवली भए। यह तीन तो केवली भए अर विष्णु १, नन्दिमित्र २ अपराजित ३ गोवर्धन ४ भद्रबाहु ५ ये पांच चतुर्दश पूर्वके धारक श्रुतकेवली भए। बहुरि विशाखाचार्य १, प्रोष्ठलक्ष २, त्रिय ३, जय ४, नाग ५, सिद्धार्थ ६, धृतिषेण ७, विजय ८, बुद्धिल ९, गंगदेव १०, धर्मसेन ११, ये ग्यारहअंग अर दशपूर्वके पाठी भए ॥६३॥ अर नक्षत्र १, यशःपाल २, पांडु ३, ध्रुवसेन ४, अर कंसाचार्य ५ ये पांच मुनि ग्यारह अंगके पाठी भए ॥६४॥ अर सुभद्र १ यशोभद्र २ यशोबाहु ३ लोहाचार्य ४ ये चार मुनि एक आचारांगके धारक भए॥ ६५ ये पूर्वाचार्य और हू आचार्य तिनकरि विस्तरचा यह एकदेश आगम ताका एकदेश व्याख्यान करिए है॥ ६६ ॥ यह हरिवंशपुराण अपूर्व कहिए आश्चर्यकारी अर्थथकी तो वहुत है शब्दथकी अल्प है तातैं शास्त्रके विस्तारके भयकरि अल्परूप सारवस्तुका संग्रह करिए है॥ ६७ ॥ मन वचन कायकी शुद्धताकूं धरैं जे भव्यजीव सदा जैनसूत्रका अभ्यास करैं तिनकूं वक्तापनेकरि अर श्रोतापनेकरि यह पुराणका अर्थ कल्याणका कर्ता होय है। बाह्य अर आभ्यंतरके भेदकरि जो तपकी विधि है सो दोय प्रकारकी है ताविषै स्वाध्यायनामा परम तप है, काहेतैं जो यह स्वाध्याय नामा तप है सो अज्ञानताकूं निवारै है॥ ६९ ॥ जातैं परम पुरुषार्थका करणहारा यह पुराणका अर्थ जे देश कालके जाननहारे पंडित तिन करि व्याख्यान करवे योग्य है। अर जे मत्सरभाव रहित श्रद्धावान पुरुप हैं तिनकरि सुनवे योग्य है, मत्सर कहिए अदेखसखाभाव सो सत्पुरुपनिकूं त्याज्य है॥ ७०॥

अथ अनुक्रमाणिका (कथनोंकी सूची)

आगैं इस पुराणविषै ये आठ बडे अधिकार हैं सो अनुक्रमणतैं कहैंगे, इनविषै प्रथम ही त्रैलोक्यका कथन ॥ १ ॥ अर राजानिके वंशकी उत्पत्ति ॥ २ ॥ अर हरिवंशका निरूपण ॥ ३ ॥ अर वसुदेवका चरित्र ॥ ४ ॥ अर नेमिनाथका चरित्र ॥ ५ ॥ अर यादवनिका द्वारिकाविषै निवास ॥ ६ ॥ अर नारायण प्रतिनारायणके युद्धका वर्णन ॥ ७ ॥ बहुरि नेमिनाथके निर्वाणका निरूपण । ८ । यह आठ महा अधिकार पूर्वाचार्यनिने सूत्रनिके अनुसार प्ररूपे सो यह अवांतर अधिकारनि करि शोभित है॥ ७२ ॥ संग्रह करि त्रिभागकरि वस्तुके विस्तारकरि जाथकी

कल्पवृक्ष समान उत्कृष्ट है। कैसा है कल्पवृक्ष औंडी है जड़ जाकी। बहुरि कैसा है यह पुराण अति अगाध है जड़ जाकी महादृढ है, जाकी जड जिनशासन है। बहुरि कल्पवृक्ष अर पुराण दोऊ पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं अर कल्पवृक्ष तो बहुशाखा कहिए अनेक शाखा तिनकरि शोभित है अर यह पुराण बहुशाखा कहिए अनेक कथा तिनकरि शोभित है अर कल्पवृक्ष विस्तीर्ण फलका दाता है अर यह पुराण महापवित्र पुण्यफलका दाता है अर आप पवित्र है अर कल्पवृक्ष हू पवित्र है। यह हरिवंशपुराणं श्रीनेमिनाथके चरितकरि महा निर्मल है॥ ५१॥ जैसैं द्युमणि कहिए सूर्य ताकी ज्योतिकर प्रकाशे जे पदार्थ तिनकूं दीपक तथा मणि तथा खद्योत कहिए पटबीजना तथा विजुली यह लघुवस्तु हू अपनी शक्तिप्रमाण यथायोग्य प्रकाश करै है॥ ५२॥ तैसैं बडे पुरुष केवली श्रुतकेवली तिनकरि प्रकाश्या जो यह पुराण ताके प्रकाशविषै अपनी शक्तिप्रमाण हम सारिखे अल्पबुद्धि हू प्रवर्त्तैं हैं जैसैं सूर्यके प्रकाशे पदार्थनिकूं कहा दीपादिक न प्रकाशैं? तैसैं केवली श्रुतकेवलीके भाषे पुराणकूं कहा हम सारिखे न प्ररूपैं? अपनी शक्ति अनुसार निरूपण करैं॥५३॥ द्रव्यप्रच्छन्न १ क्षेत्रप्रच्छन्न २ कालप्रच्छन्न ३ भावप्रच्छन्न ४ द्रव्यप्रच्छन्न कहिए कालाणु, अर क्षेत्रप्रच्छन्न कहिए अलोकाकाश, अर कालप्रच्छन्न कहिये अनागत काल ३ अर भावप्रच्छन्न कहिए अर्थ पर्यायरूप षट्गुणी हानिवृद्धि ४ ऐसे जे अगम्य पदार्थ आचार्यरूप जो सूर्य तिनकरि किया है प्रकाश जिनका तिनकूं सुकुमारताकरि युक्त जो यह मन सो स्थूल पदार्थनिकूं जैसैं लोक बाह्यदृष्टि करनेतैं देखैं तैसैं देखै है। द्रव्य क्षेत्रादिकके भेदथकी पांच प्रकार है भेद जाका ऐसा यह आगम पुराणपुरुषनिकरि भाष्या तातैं प्रमाण है॥ ५५॥ या ग्रंथके मूलकर्ता आप श्रीतीर्थंकर देव बहुरि उत्तर ग्रंथकर्त्ता गौतम नामा गणधर देव अर उत्तरोत्तर ग्रंथकर्त्ता अनेक आचार्य ते सब ही सर्वज्ञदेवके अनुसार कथन करणहारे हमकूं प्रमाण हैं। ५७॥ तिन केवली अर पांच चतुर्दश पूर्वके धारी श्रुतकेवली अर ग्यारह अंग दश पूर्वके पाठी ग्यारह अर एकादश अंगके धारक पांच अर एक आचारांगके धारक चार अर पांचप्रकारके मुनि पंचमकालके आदिविषै होते भए तिनमें श्रीवर्द्धमानके पीछे तीन केवली भए। इंद्रभूत कहिए गौतम अर सुधर्माचार्य अर जंबूस्वामी अंतिम

सुनिवेथकी जरासंधका कोप अर यादवनिके निकट दूत पठावना ताका आगमन ताकरि यादवनिकी सभाविषै क्षोभ अर दोनों सेनानिका निकसना । अर विजयार्द्धविषै वसुदेवका गमन, विद्याधरनिका क्षोभ वसुदेवका पराक्रम ॥४॥ अर अक्षोहिणीका प्रमाण अर रथी अतिरथी अर्द्धरथी जे राजा महासमर्थ तिनका कथन ॥५॥ अर जरासंधने चक्रव्यूह रचा, ताके भेदिवे अर्थ कृष्णके कटकविषै गरुडव्यूहकी रचना अर कृष्णके गरुडवाहिनी विद्याकी प्राप्ति अर बलदेवकूं सिंहवाहिनी विद्याकी प्राप्ति । अर नेमिनाथके द्विमात भाई रथनेमि अर कृष्णके भाई अनावृष्टि अर अर्जुन इन चक्रव्यूह भेद्या, अर कृष्णकी सेनाविषै मुख्य पाण्डव अर जरासंधकी सेनाविषै मुख्य धृतराष्ट्रके पुत्र कौरव तिनमें परस्पर महायुद्ध वहुरि कृष्ण जरासंधका महायुद्ध ॥ ८ ॥ ता समय कृष्णके हाथविषै चक्रका आवना अर जरासंधका बध, वासुदेवकी विजय सो वसुदेवकूं विजयार्द्धविषै विद्याधरिनिकरि प्रगट भई अर कृष्णका कोटिशिलाका उठावना अर वसुदेवका विजयार्द्धतैं आगमन अर वलदेव वासुदेवकी दिग्विजय अर देवोपुनीत रत्नकी प्राप्ति ॥ १० ॥ अर दोऊ भाइनिकूं राज्याभिषेक अर द्रोपदीका हरण बहुरि धातकीखंडमें कृष्णसहित पाण्डव जाय द्रौपदी ल्याए ॥ ११ ॥ वहुरि नेमिनाथके शरीरके बलका वर्णन वा नेमिनाथकी जलक्रीडा पंचायन शंखका पूरना अर नेमिनाथके विवाहका हर्ष ॥ १२ ॥ वहुरि जीवनिकूं बंधसे छुडावना अर नेमिनाथकी दीक्षा, अर केवलज्ञानका उपजना देवनिका आगमन, समवसरणकी विभूतिका वर्णन, राजमतीकूं तपकी प्राप्ति । अर यति श्रावकके धर्मका उपदेश अर भगवानका तीर्थविहार अर देवकीके षट्पुत्रनिका संयम ॥ १४ ॥ बहुरि भगवान्‌का गिरनारगिरिविषै आगम अर देवकीके प्रश्नका उत्तर अर रुक्मिणी सत्यभामा आदि आठों पटरानीनिके भवांतरका कथन ॥ १५ ॥ बहुरि गजकुमारका जन्म अर ताकरि दीक्षा ग्रहण अर वसुदेव टार नव भाईनिका वैराग्य अर त्रिषष्ठिशलाकाके पुरुषनिकी उत्पत्तिका वर्णन अर जिनराजके अन्तरालका कथन अर बलभद्रका प्रश्न प्रद्युम्नकी दीक्षा अर रुक्मिणी आदि श्रीकृष्णकी स्त्रीनिका अर पुत्रनिका संयम अर द्वीपायन मुनिके क्रोधतैं द्वारावतीका नाश ॥१८॥ बलभद्र नारायणका द्वारिकातैं निकसना अर कुटुंबका भस्म

ह ना अर दाऊ भा निका शोक सहित कौशांबी नगरीके वनविषै प्रवेश ॥१९॥ अर वलभद्रका जलके अर्थि जाना अर कृष्णका अकेला रहना अर विना जाने जरदकुमारके हाथकरि छूट्या जो बाण ताकरि दैवयोगतैं हरिका परभव गमन ॥२०॥ ताकरि जरदकुमारकूं शोक उपजना अर वलभद्रके अति दुस्तर दुःखका उपजना बहुरि सिद्धार्थदेवके उपदेशतैं वलभद्रकूं वैराग्य उपजना तप धरना अर पांचवें स्वर्ग जाना अर पांडवनिका वैराग्य होना अर गिरनार गिरिविषै नेमिनाथका मुक्त होना ॥२२॥ अर पांचों पांडव महापुरुषनिका उपसर्गका जीतना अर जरदकुमारकूं दीक्षा लेना अर जरदकुमारकी सन्तानतैं हरिवंशका रहना अर तिनके वंशके दीपक जे राजा जितशत्रु तिनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति अर जो राजा श्रेणिक हरिवंशके शिरोमणि निनिका राजगृहविषै राज्य ॥२४॥ अर बर्द्धमान भगवानका दीपमालिकाके दिन निर्वाणगमन तातैं देवनिका वह दिन उत्सवरूप मानना तब दीप्यमान दीपमालिका प्रसिद्ध भई अर गणधरनिका निर्वाणगमन यह हरिवंशपुराणका विभाग संक्षेपकर कह्या है।

अथानंतर—भव्यजीव प्रसिद्धिके अर्थ विस्तार सहित व्याख्यान सुनहु ॥ २६ ॥ एक ही पुरुषका चरित्र सुनाथका पापका नाश करै अर जो सर्व तीर्थेश्वर चक्रेश्वर हलधर तिनका चरित्र भव्यजीव जे सुनें ताका क्या पूछना, वह तो जन्मजन्मके पाप निवारै ही जैसै महामेघकी एक बूंद ही महातापका विच्छेद करै तो समस्त लोकविषै व्याप रहे मेघमालाके समूह तिनकी सहस्रधारा झरै तिनिकरि आताप क्यों न दूर होय सर्वथा दूरही होय ॥ २७ ॥ जे विवेकी जन हैं सो जिनमें वक्रमार्ग ऐसे लौकिक पुराण भ्रांतिरूप तिनकूं तज करि या जैनपुराणकी पदवी महासरल कल्याणकी करणहारी हितकारी ताहि ग्रहो मोहकी है बाहुल्यता जामें ऐसी दिग्मूढता कहिए दिशाभूलपना ताहि तजिकरि भव्यजीन शुद्धमार्ग लेवहु, जिन कहिये भगवान तेई भये भास्कर कहिये सूर्य तिनकरि प्रगट किया जो शुद्धमार्ग महाविस्तीर्ण ताके होतेसंते शुद्ध है दृष्टि जाकी ऐसा सम्यग्दृष्टि सो खाड़ेविषै काहेकूं परै! भावार्थ—सूर्यके प्रकाश विना अन्धपुरुष संकीर्ण मार्गविषै खाडेमें परै अर सूर्यके उदयकरि प्रगट भया मार्ग विस्तीर्णताविषै दिव्य नेत्रनिका धारक काहेकूं खाडेमें परै ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ संग्रहविभागवर्णन नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीहरिवंशपुराण

होना अर दोऊ भाईनिका शोक सहित कौशांबी नगरीके वनविषै प्रवेश ॥१९॥ अर बलभद्रका जलके अर्थि जाना अर कृष्णका अकेला रहना अर विना जाने जरदकुमारके हाथकरि छूट्या जो बाण ताकरि दैवयोगतैं हरिका परभव गमन ॥२०॥ ताकरि जरदकुमारकूं शोक उपजना अर बलभद्रके अति दुस्तर दुःखका उपजना बहुरि सिद्धार्थदेवके उपदेशतैं बलभद्रकूं वैराग्य उपजना तप धरना अर पांचवें स्वर्ग जाना अर पांडवनिका वैराग्य होना अर गिरनार गिरिविषै नेमिनाथका मुक्त होना ॥२२॥ अर पांचों पांडव महापुरुषनिका उपसर्गका जीतना अर जरदकुमारकूं दीक्षा लेना अर जरदकुमारकी सन्तानतैं हरिवंशका रहना अर तिनके वंशके दीपक जे राजा जितशत्रु तिनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति अर जो राजा श्रेणिक हरिवंशके शिरोमणि तिनिका राजगृहविषै राज्य ॥२४॥ अर बर्द्धमान भगवानका दीपमालिकाके दिन निर्वाणगमन तातैं देवनिका वह दिन उत्सवरूप मानना तब दीप्यमान दीपमालिका प्रसिद्ध भई अर गणधरनिका निर्वाणगमन यह हरिवंशपुराणका विभाग संक्षेपकर कह्या है।

अथानंतर—भव्यजीव प्रसिद्धिके अर्थ विस्तार सहित व्याख्यान सुनहु ॥ २६ ॥ एक ही पुरुषका चरित्र सुनाथका पापका नाश करै अर जो सर्व तीर्थेश्वर चक्रेश्वर हलधर तिनका चरित्र भव्यजीव जे सुनें ताका क्या पूछना, वह तो जन्मजन्मके पाप निवारै ही जैसै महामेघकी एक बूंद ही महातापका विच्छेद करै तो समस्त लोकविषै व्याप रहे मेघमालाके समूह तिनकी सहस्रधारा झरै तिनिकरि आताप क्यों न दूर होय सर्वथा दूरही होय ॥ २७ ॥ जे विवेकी जन हैं सो जिनमें वक्रमार्ग ऐसे लौकिक पुराण भ्रांतिरूप तिनकूं तज करि या जैनपुराणकी पदवी महासरल कल्याणकी करणहारी हितकारी ताहि ग्रहो मोहकी है बाहुल्यता जामें ऐसी दिग्मूढता कहिए दिशाभूलपना ताहि तजिकरि भव्यजीन शुद्धमार्ग लेवहु, जिन कहिये भगवान तेई भये भास्कर कहिये सूर्य तिनकरि प्रगट किया जो शुद्धमार्ग महाविस्तीर्ण ताके होतेसंते शुद्ध है दृष्टि जाकी ऐसा सम्यग्दृष्टि सो खाड़विषै काहेकूं परै! भावार्थ—सूर्यके प्रकाश विना अन्धपुरुप संकीर्ण मार्गविषै खाडेमें परै अर सूर्यके उदयकरि प्रगट भया मार्ग विस्तीर्णताविषै दिव्य नेत्रनिका धारक काहेकूं खाडेमें परै ॥ २८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ संग्रहविभागवर्णन नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

प्रकाशक—

पन्नालाल बाकलीवाल

महामंत्री—भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था,

१२ विश्वकोषलैन, बाघबाजार, कलकत्ता।



मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ—

जैनसिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेस

१२ विश्वकोषलैन, बाघबाजार, कलकत्ता।



श्रीवीतरागाय नमः ।

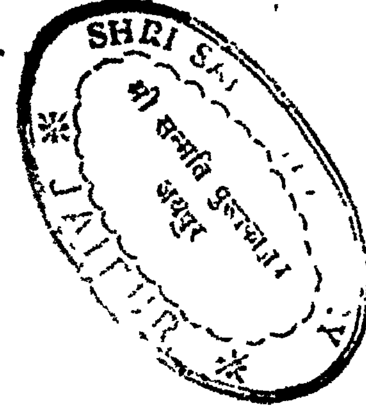
श्रीगांधी—हरीभाई देवकरण जैन ग्रंथमाला

१२

श्रीमद् जिनसेनाचार्य विरचित संस्कृतग्रंथकी

स्वर्गीय पंडितप्रवर दौलतरामजीकृत भाषानुवाद

श्रीहरिवंशपुराण



जिसको

भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था, कलकत्ताने

सोलापुरवासी गांधी—हरीभाई देवकरण एण्ड सन्सके प्रदत्त द्रव्यसे

अपने पवित्र प्रेममें छपाकर प्रकाशित किया ।

वीरनिर्वाण संवत् २४५६

अप्रैल १९३०

चैत्र सुदी ९
विक्रम संवत् १९८७

श्रीहरिवंशपुराण



॥ श्री जिनाय नमः ॥

निवेदन

श्रीदिगंबर जैनशास्त्रोंका सुप्रचार करनेके लिये इस संस्थाका जन्म हुआ था। तदनुसार अनेक ग्रन्थका मुद्रण और प्रकाशन हो चुका है। सर्व साधारणमें पुराण ग्रन्थोके प्रचारकी आवश्यकता देखकर संस्थाने श्रीपद्मपुराणजी और हरिवंश पुराणजीको अति सुलभ न्योछावरमें देनेका निश्चय किया था, हर्ष है कि लगातार लगभग सालभर तक परिश्रम और बहु व्यय करनेके बाद उक्त दोनों ग्रंथ शुद्धता पूर्वक छपकर पूर्ण होगये हैं। श्री आदिपुराणजी आजसे २-३ साल पहले ही छप चुके थे इस तरह सबसे उत्तम और बड़े तीनों पुराण ग्रन्थोंका अत्यल्प न्योछावरमें प्रत्येक धर्मबन्धु संग्रह कर लाभ उठा सक्ता है।

संस्थाके संरक्षक और परम संस्थापक दानवीर सेठ हरीभाई देवकरण फार्मके मालिक सेठ हीराचंद रामचंदजी शोलापुरवासी और उनके स्वर्गीय भ्राता बालचंदजी तथा फूलचंदजी की जिनवाणी भक्तिका ही प्रसाद है कि संस्था इतने बड़े ग्रन्थोंको इस तरह सुलभ प्रचार करनेमें सक्षम हुई है, और आगे भी सदा रहेगी।

जिनवाणी माताका इस तरह उद्धार और प्रचारकर यश और पुण्य दोनोंका जो संग्रह करना चाहते हैं उन्हें इस संस्थाका दानी सहायक बनजाना चाहिये विशेष विवरण पत्र व्यवहार तथा नियमावली और रिपोर्ट से जाना जा सक्ता हैं। आशा है हमारे धर्मबन्धु इस तरफ अवश्य लक्ष्य देंगे।

जिनवाणी सेवक—

श्रीलाल काव्यतीर्थ

मंत्री-भा० जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था,

१२, विश्वकोष लेन, बाघबाजार, कलकता।

श्रीहरिवंशपुराणजी वचनिकाके सर्गोंकी विषयानुक्रमणिका



सर्ग सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१	प्रथम सर्ग—मंगलाचरणादि, संग्रह विभाग वर्णन	१
२	द्वितीय सर्ग—धर्मतीर्थ प्रवतन	१५
३	तृतीय सर्ग—श्रेणिकमहाराजका प्रश्न वर्णन	२८
४	चतुर्थ सर्ग—अधोलोकका वर्णन	४५
५	पांचवां सर्ग—द्वीप और सागरोंका वर्णन	७०
६	छठा सर्ग—ज्योतिर्लोक और ऊर्ध्वलोकका वर्णन	११७
७	सातवा सर्ग—कालद्रव्य और कुलकरोंकी उत्पत्तिका वर्णन	१२७
८	आठवां सर्ग—ऋषभदेव भगवानके गर्भ जन्म कल्याणकका वर्णन	१४२
९	नौवां सर्ग—ऋषभदेव भगवानकी केवलज्ञानकी उत्पत्तिका वर्णन	१६३
१०	दशवां सर्ग—भगवान ऋषभ द्वारा धर्मतीर्थकी प्रवृत्तिका वर्णन	१८६
११	ग्यारहवां सर्ग—चक्रवर्ती भरतका दिग्विजय वणन	२००
१२	बारहवां सर्ग—भगवान ऋषभदेवके निर्वाणकल्याणका वर्णन	२१२
१३	तेरहवां सर्ग—इक्ष्वाकुवंशका वर्णन	२१७
१४	चौदहवां सर्ग—सुमुख और वनमालाका सम्भोग वर्णन	२२०
१५	पन्द्रहवा सर्ग—हरिवंशकी उत्पत्तिका वर्णन	२३०
१६	सोलहवां सर्ग—भगवान मुनिसुव्रतनाथके पांचों कल्याणोंका वणन	२३७
१७	सत्तरहवां सर्ग—राजावसुके चरित्रमें नारद और पर्वतका विवाद वर्णन	२४६
१८	अठारहवां सर्ग—राजा समुद्रविजयका राज्य लाभ वर्णन	२६०
१९	उन्नीसवां सर्ग—वसुदेव और गंधर्वसेनाका विवाह वर्णन	२७५
२०	बीसवांसर्ग—विष्णुकुमारका माहात्म्य वर्णन	२८७
२१	इक्कीसवा सर्ग—चारुदत्तके चरित्रका वर्णन	२९२
२२	बाईसवां सर्ग—नीलंयशाका लाभ वर्णन	३०६
२३	तेईसवां सर्ग—सोमश्रीका लाभ वर्णन	३१६
२४	चौबीसवां सर्ग—वनमाला कपिला, पद्मावती, चारुहासिनी, रत्नवती, सोमश्री वेगवती मदनवेगाका लाभ वर्णन	३२८
२५	पच्चीसवा सर्ग—राजा त्रिशिखरका वर्णन	३३४
२६	छब्बीसवा सर्ग—बालचंद्राका दर्शन वर्णन	३३६
२७	सत्ताइसवां सर्ग—मुनिराज संजयंतका चरित्र वर्णन	३४३
२८	अट्ठाइसवां सर्ग—मुनिराज मृगध्वज, और महिस का चरित्र वर्णन	३५४
२९	उनतीसवा—बंधुमती, प्रियंगुसुंदरी लाभ वर्णन	३५८
३०	तीसवा सर्ग—प्रभावतीका लाभ वर्णन	३६२
३१	ईकतीसवा सर्ग—रोहिणीका स्वयंवर वसुदेवका समुद्रविजयादि भाइयोंसे मिलाप वर्णन	३६६
३२	बत्तीसवां सर्ग—सकलवधू, बंधुजन समागम वर्णन	३७६
३३	तेतीसवां सर्ग—कंस, बलदेव, वासुदेव, देवकी और उसके पुत्रोंका पूर्वभव वर्णन	३८०

सर्ग सं०	विषय	पृष्ठ सं०
३४	चौतीसवां सर्ग—महोपवास विधि वर्णन	३६१
३५	पैंतिसवां सर्ग-नारायण कृष्णका बालक्रीड़ा वर्णन	३६४
३६	छत्तीसवां सर्ग—कंसका पराजयवर्णन	४०२
३७	सैंतीसवां सर्ग—भगवान नेमिनाथकी उत्पत्तिके कारण स्वप्न और उनका फल वर्णन	४१४
३८	अडतीसवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका जन्माभिषेक वर्णन	४२०
३६	उनतालीसवां सर्ग—जन्माभिषेकस्तवन वर्णन	४२८
४०	चालीसवां सर्ग-यादवोंका विदेशगमन वर्णन	४३४
४१	इकतालीसवां सर्ग—द्वारावतीनिवास वर्णन	४३८
४२	व्यालीसवां सर्ग-रुक्मिणी हरण	४४४
४३	तेतालीसवां सर्ग—शंबु और प्रद्युम्नके पूर्वभव का वर्णन	४५२
४४	चवालीसवां सर्ग—कृष्णको जांबुवती लाभ वर्णन	४६६
४५	पैंतालीसवां सर्ग—कुरुवंसकी उत्पत्ति, पांडव धृतराष्ट्र संयोग, द्रोपदीका लाभ वर्णन	४७३
४६	छयालीसवां सर्ग-कीचकके निर्वाणगमनका वर्णन	४८४
४७	सैंतालीसवाँ सर्ग-कुरुवंश निरूपण, प्रद्युम्न और उसके माता पिताका समागम वर्णन	४८६
४८	अडतालीसवां सर्ग—यादवोंके कुमारोंका वर्णन	५०१
४६	ऊनचासवां सर्ग—धर्मोत्पत्ति वर्णन	५०६
५०	पचासवां सर्ग-चक्रव्यूह गरुड़व्यूहकी रचनाका वर्णन	५१४
५१	इक्यावनवां सर्ग-यादवजरासिंधसेनासमागम, हिरण्यनाभ सेनापतिका वध वर्णन	५२३
५२	बावनवां सर्ग—जरासिंधका वध वर्णन	५२७
५२	बावनवां सर्ग—कृष्णका दिग्विजय वर्णन	५३४
५३	त्रेपनवां सर्ग-द्रोपदीका हरण, पांडवोंका दक्षिण मथुरामें निवेश वर्णन	५३७
५४	चौवनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका तपकल्याण वर्णन	५४३
५५	पचपनवा सर्ग-भगवान नेमिनाथका केवलज्ञान कल्याण वर्णन	५५७
५६	छप्पनवां सर्ग—समवशरणका वर्णन	५६६
५७	सतावनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका धर्मोपदेश वर्णन	५७६
५८	अपवनवां सर्ग-भगवान नेमिनाथका विहार वर्णन	६१२
५६	उनसठवां सर्ग—वासुदेवकी आठ पटरानियों का भवांतर वर्णन	६२१
६०	साठवां सर्ग—त्रेसठ शलाका पुरुषोंका चरित्र, और तीर्थंकरोंका अंतर वर्णन	६३०
६१	इकसठवां सर्ग—द्वारावती विनाश वर्णन	६६३
६२	बासठवां सर्ग—कृष्णका परलोक गमन वर्णन	६७०
६३	त्रेसठवां सर्ग—बलदेवका तप वर्णन	६७५
६४	चौंसठवां सर्ग-युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों दीक्षणाका वर्णन	६६०
३५	पैंसठवां सर्ग—भगवान नेमिनाथका निर्वाण कल्याण वर्णन	७०१
६६	छयासठवां सर्ग-गुरुओंके चरणकमलका वर्णन	७०५





२ग-

श्रीवीतरागाय नमः ।

पुन्नाटगणीय महाकवि श्रीमज्जिनसेनाचार्य विरचित संस्कृतग्रंथका

जयपुर निवासी स्वर्गीय पंडित दौलतरामजीकृत भाषानुवाद

श्रीहरिवंशपुराण ।

मंगलाचरण ।

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणाद्रव्यसाधनं ।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनम् ॥ १ ॥

अर्थ—प्रथम ही जैनशासन कहिये जैनसिद्धांत है सो जयवंत होहु, कैसा है जिनशासन उत्पात व्यय ध्रौव्यलक्षणरूप जो सत्ता सो है लक्षण जाका । ऐसा जो द्रव्य कहिये षट् द्रव्यनिका समूह ताका साधन कहिये कथन करणहारा है अर कैसा है जिनसूत्र सिद्धं कहिये स्वतःसिद्ध है, काहूकरि किया नाहीं अर द्रव्यार्थिकनयकरि अनादि है अर पर्यायार्थिक नयकरि आदि सहित है ॥

भावार्थ—प्रवाह रूप अनादिकालसे प्रवर्त्या है अर सदा प्रवर्त्तैगा तातैं अनादि अनन्त है अर जब प्रगट होय है तब केवलीनके मुखकरि प्रगटै है तातैं आदि सहित है अर जे षट् द्रव्य हैं ते स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकालकी स्वभावकी

अपेक्षा अस्तिरूप हैं अर परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परभावकी अपेक्षा नास्तिरूप हैं या भांति सब ही द्रव्य अस्तिनास्तिरूप हैं अर जिनशासन अस्तिनास्तिका प्रगट करणहारा है ॥ १ ॥ अर श्रीवर्द्धमान तीर्थंकर जिनेश्वरके ताईं नमस्कार होहु, कैसे हैं श्रीवर्द्धमान श्री कहिये अनंत चतुष्टय विभूति, सो जिनके वृद्धिकूं प्राप्त भई है। बहुरि कैसे हैं शुद्धज्ञानके प्रकाशक हैं रागादिक रहित जो शुद्धज्ञान सोई है प्रकाश जिनका अर लोकालोकके एक अद्वितीय सूर्य हैं ॥ २ ॥ बहुरि श्री ऋषभनाथ स्वामीके ताईं नमस्कार होहु। कैसे हैं ऋषभ सर्वके ज्ञायक हैं सर्वज्ञदेव हैं अर सर्व व्यवस्था कहिये सकल कर्मभूमिकी रीति, ताके उपदेशक हैं। असि, मसि, कृषि, बाणिज्य आदि सर्व रीतीनके निरूपण करणहारे हैं अर किया है आदि ही धर्मतीर्थका प्रवर्त्तन जिन्होंने।

भावार्थ—श्रावकके अणुव्रत अर यतिके महाव्रत तिन सबनिका मार्ग प्ररूपण हारे हैं अर स्वयंभू कहिये आप ही अपनी शक्ति करि प्रगट भये हैं अर तीर्थंकर पदकों प्राप्त भये हैं ॥ ३ ॥ बहुरि अजितनाथ स्वामीके ताईं नमस्कार होहु, कैसे हैं अजिनाथ जिनने दूजा तीर्थ प्रगट किया। प्रथम ही तीर्थ तो ऋषभनाथका समय अर दूजा तीर्थ इनका समय। कैसे हैं अजिनाथ गणधरादि समस्त मुनिनिके ईश्वर हैं अर जीते हैं कर्मशत्रु जिनि अर जिन अजितने धर्मरूप तीर्थकूं अजितताके भनकूं प्राप्त किया है। जिनका भाष्या धर्म कोई खंडित न कर सकै वीतरागका धर्म अपराजित है ॥ ४ ॥ बहुरि तीजे तीर्थंकर श्री संभवननाथके ताईं नमस्कार होहु। जिन संभवनाथजीके होतेसंते भगवानके भक्त जे भव्यजीव ते ऐसा विवेक भजते भये कि सुख संसार विषै है वा भुक्ति विषै है।

भावार्थ—अविवेकी जीवनके यह विचार नाहीं कि सुख कहां है। संभवनाथके उपदेशतैं भव्य जीव ऐसा विचार करते भये जो संसार तो चतुर्गति दुखरूप ही है वामें सुख नाहीं। सुखरूप एक निर्वाण ही है ऐसा विवेक जिनके उपदेशतैं भव्योंके होता भया तिनि श्रीसंभवनाथके ताईं सुखकी प्राप्तिके अर्थ बारंबार नमस्कार होहु ॥ ५ ॥ बहुरि अभिनंदन स्वामीके ताईं हमारा मन-वचन काय करि नमस्कार होहु। कैसे हैं अभिनंदन समस्त लोककूं आनंद उपजावन हारे हैं अर जिनेंद्र हैं गणधरादि मुनिनिके इन्द्र हैं सो अभिनन्दन स्वामी चौथा तीर्थ प्रगट करते भये।

भावार्थ—अभिनन्दनका समय चौथा तीर्थ है, तीर्थ कहिये जाकरि भव्यजीव भवसागरकूं तिरैं। कैसा है भगवानका तीर्थ अन्वर्थ कहिये सत्यार्थक है ॥६॥ बहुरि पांचवें तीर्थंकर श्रीसुमतिनाथ तिनिके ताईं सुबुद्धिकी प्राप्तिके अर्थ सदा नमस्कार होहु। जो भगवान सुमतिनाथ पांचवां तीर्थ प्रवर्त्तावते भए, कैसा है जिनका तीर्थ, विस्तार सहित है धर्मका अर्थ जाविषै ॥ ७ ॥ बहुरि छठे श्रीपद्मप्रभ तीर्थंकरके ताईं नमस्कार होहु । जिनकी प्रभा कहिये दीप्ति दशों दिशाकूं उद्योत करती भई, कैसी है पद्मप्रभकी प्रभा-जीती है कमलकी प्रभा जानें।

भावार्थ-कमलकी प्रभा भी आरक्त है अर पद्मप्रभकी प्रभा भी आरक्त है परन्तु पद्मप्रभकी प्रभा समान कमलकी प्रभा नाहीं ॥ ८ ॥ बहुरि सप्तम तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं सुपार्श्वनाथ कृतार्थ है आत्मा जिनका सो सुपार्श्वनाथ सातवें तीर्थकूं भव्य जीवनके कल्याण निमित्त प्रवर्त्तावते भये, कैसे हैं भगवान सुपार्श्व स्वार्थ कहिये केवल आत्मार्थताकरि पूर्ण हैं ॥ ९ ॥ बहुरि अष्टम तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ जो अष्टम तीर्थके कर्ता हैं तिनके ताईं नमस्कार होहु । चंद्रमा समान है उज्ज्वल कीर्ति जिनकी कीर्तिके तुल्य चंद्रमा कहां परन्तु दृष्टान्त देखी वस्तु हीका देवेमें आवै है, कैसा है भगवानका तीर्थ इंद्रादिक देवनिकरि पूज्य है अर कैसे हैं भगवान सकलके रक्षक हैं चतुर्विध संघके स्वामी हैं ॥ १० ॥ बहुरि श्रीपुष्पदन्त नवमें तीर्थंकरके ताईं नमस्कार होहु कैसे हैं पुष्पदंत अपनी देहकी अर दांतनकी प्रभाकर जीती है कुन्दके पुष्पकी प्रभा जिनि ॥

भावार्थ—दांत तो सबनिहीके उज्ज्वल हैं परंतु पुष्पदंतकी देह भी कुंदके पुष्प समान उज्वल है चंद्रप्रभ अर पुष्पदंत ये दोऊ श्वेतवर्ण हैं यद्यपि कुंदका पुष्प उज्वल है तथापि कुंदके पुष्पकी प्रभा जिनेश्वरकी प्रभा समान उज्वल नाहीं ॥११॥बहुरि दशमा तीर्थंकर श्रीशीतलनाथ कुमार्गके नाश करणहारे धर्मतीर्थके कर्त्ता तिनके ताईं नमस्कार होहु। कैसा है जिनका तीर्थ जंतु कहिए प्राणी तिनके संतापका निवारणहारा है अर शुचि कहिए पवित्र है अर भव-आतापका मेटनहारा महा शीतल है ॥ १२ ॥ बहुरि ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथ अरहंत देव विच्छेद होगया जो धर्मतीर्थ ताहि प्रगट करि भव्यजीवनकी भवफांसीकूं शीघ्र ही छेदते भए तिनके ताईं नमस्कार होहु।

भावार्थ—शीतलनाथ स्वामीकूं मुक्ति गए पीछे धर्मकी विछित्ति भई धर्मका लोप होयगया सो श्रेयांसनाथ स्वामी धर्मका उद्योतकर भव्यजीवनिकूं पारकरते भए ॥ १३ ॥ बहुरि बारवें वासुपूज्य स्वामी त्रैलोक्यके सूर्य तिनके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं वासुपूज्य कुतीर्थ कहिए कुमार्ग सोई भया अंधकार ताहि मेटकर बारहवां तीथ महा उज्ज्वल ताहि प्रगट करते भए । कैसे हैं वासुपूज्य सूर्य तीन लोकके स्वामी हैं जगतपति हैं ॥ १४ ॥ बहुरि तेरहवें तीर्थंकर श्रीविमलनाथ तिनके ताईं नमस्कार होहु । जो श्रीविमलनाथ कुमार्गरूपी मैल कर मलिन जो जगत, ताहि धर्मरूप तीर्थंकर निर्मल करते भए ॥ १५ ॥ बहुरि चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनंतनाथ तीथ कहिए धर्म, ताके कर्त्ता जिनराज, तिनके तांईं नमस्कार होहु । कुसिद्धांत कहिए मिथ्याशास्त्र सोई भया तम कहिए अंधकार ताके भेदनेकूं सूर्य समान है उपदेश जिनका ॥ १७ ॥ बहुरि पंदरहवें तीर्थंकर श्रीधर्मनाथ महामुनि तिनके ताईं नमस्कार होहु । कैसे हैं धर्मनाथ धर्मतीर्थके कर्त्ता हैं कैसा है धर्मतीर्थ अधर्मका जो मार्ग सोई भया पाताल ताविषै पडते जे प्राणी तिनके उद्धार करवेकूं समर्थ है ।

भावार्थ—पुष्पदन्तकूं मुक्ति गये पीछे शीतलनाथके अन्तरालविषै पावपल्य धर्मकी विछित्ति भई । बहुरि शीतलनाथके मुक्ति गये पीछे श्रेयांसनाथके अंतरालविषै आध पल्य धर्मकी बिछित्ति भई बहुरि वासुपूज्यके अंतरालविषै पौण पल्य विछित्ति भई बहुरि विमलनाथके अन्तरालविषै एक पल्यकी विछित्ति भई अर अनन्तनाथके अन्तरालविषै पौण पल्य बहुरि धर्मनाथके अन्तरालविषै आध पल्य अर शांतिनाथके अन्तरालविषै पाव पल्य या भांति सात तीर्थंकरनिके अन्तरालविषै धर्मकी विछित्ति चार पल्य भई । जब तीर्थंकर प्रगटे तब धर्मका उद्योत भया ॥ १७ ॥ अर उपजाया है धर्मतीर्थ जाने ऐसे जो सोलहवें तीर्थंकर पांचवे चक्रवर्ति श्रीशान्तिनाथ तिनकूं भवदुखकी शांतिके अर्थ नमस्कार होहु । कैसे हैं शांतिनाथ करी है नानाप्रकारकी शान्ति जिनिने अर परम शान्त है स्वरूप जिनका । भावार्थ—संसारविषै सात प्रकारकी ईति है-अतिवृष्टि १ अनावृष्टि २ मूसक ३ टिड्डी ४ सूवा ५ आपका कटक ६ परका कटक ७ ये सप्त ईति हैं तिनके भगवान निवारक हैं ॥१८॥ बहुरि सत-

रहवे श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्र छठे चक्रवर्ति तिनके तांईं नमस्कार होहु । तीनलोकविषै विस्तर रही है कीर्ति जिनकी
ऐसे भगवान कुंथुनाथ तिनकरि सतरहवां तीर्थ प्रवर्त्या ॥ १९ ॥ बहुरि अठारहवें भगवान सातवें चक्रवर्ति पापरूप
बैरीके नाश करणहारे श्रीअरनाथ तिनके तांईं नमस्कार होहु । कैसे हैं अरनाथ संसारके जो थावर जंगम सकल
प्राणी तिनकूं धर्मतीर्थकर कल्यानके करणहारे हैं ॥२०॥ बहुरि उन्नीसवें तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथ मोहरूप महा मल्लके
मलवेकूं बडे मल्ल, तिनके तांईं नमस्कार होहु । कैसे हैं मल्लिनाथ धर्मतीर्थके प्रवर्तनकर थापी है संसारविषै अचलकीर्ति
जिनि ॥ २१ ॥ बहुरि बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत ईश्वर तिनके तांईं निरंतर नमस्कार होहु । जो भगवान
अपना वीसवां तीर्थ प्रगटकर भवसमुद्रथकी भव्यजीवनिकूं तारते भए ॥ २२ ॥ बहुरि इकीसवें तीर्थंकर धर्मतीर्थके
कर्त्ता श्रीनमिनाथ मुनिनिमें मुख्य तिनके तांईं नमस्कार होहु । कैसे हैं नमिनाथ नबाये हैं, वश किये हैं अन्तरंग
वहिरंगके शत्रु जिनि । भावार्थ—अन्तरंगके शत्रु तो रागादिक अर वहिरंगके शत्रु आरंभ परिग्रहादिक, ते सब
शत्रुबश किये हैं ऐसे इकीसवें तीर्थंकर, तिनके तांईं सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्ररूप जो तीर्थ ताकी सिद्धिके
अर्थ हुये, तीर्थके कर्त्ता हैं ॥२३॥ बहुरि हरिवंश रूप उदयाचल पर्वत ताके शोभायमान शिखामणि सकल जगत-
क सूर्य श्रीअरिष्टनेमि बाईसवें तीर्थंकर, तिनके तांईं नमस्कार होहु । कैसे हैं अरिष्टनेमि-तीर्थ कहिये तिरवेका
उपाय जो परम धर्मरूपरथ, ताके चक्र कहिये पहिये, तिनकी नेमि कहिये धुरा हैं । अथवा तीर्थ कहिये परमध्यान
सोई भया चक्ररूप आयुध ताकी धारा है ॥ २४ ॥ बहुरि तेईसवें तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथके समयविषै धर्मतीर्थके
कर्त्ता जो श्रीपार्श्वनाथ जिनेश्वर सो जयवन्त होहु । कैसे हैं श्रीपार्श्वनाथ जिनके पूर्वभवका शत्रु जो कमठका
जीव असुर महा प्रबल पर्वतनिका उठावनहारा सो तप कल्याणके समय पूर्वभवका वैर चितार उपसर्ग करता
भया, ताहि धरणेंद्र कहिये नागदेवनिका इंद्र पाताललोकका स्वामी भगवानका भक्त सो निवारता भया, ताके प्रता-
पकर सो कमठ भाग्या ऐसे श्रीपार्श्वनाथ जगतविषै जयबंत होहु ॥२५॥ बहुरि वीरनाथ अन्तिम तीर्थंकर तिनके
तांईं नमस्कार होहु । या भांति अवसर्पिणी कालके तीजे चौथे कालविषै किया है धर्मतीर्थका प्रवर्तन जिन, ते

जिनेश्वर देव हमकूं निर्वाणकी सिद्धिके अर्थ होहु ॥ २६ ॥ जो भगवान अतीतकालकी अपेक्षा अनन्त अर वर्तमान कालकी अपेक्षा संख्यात अर अनागतकालकी अपेक्षा अनन्तानन्त ते अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंच परमगुरु, सर्व ही सदा सर्वत्र हमकूं मंगलरूप होहु ॥

अथानंतर—कई एक आचार्यनिके नाम कहैं हैं—समन्तभद्र आचार्यके वचन श्रीमहावीर स्वामीके वचनकी नाईं प्रमाण करवे योग्य हैं। कैसे हैं महावीरके वचन ? या लोकविषै जीवकी सिद्धिके करणहारे हैं अर किये हैं नयप्रमाणकी युक्तिकरि अनेक शास्त्र जिनि। अर कैसे हैं समन्तभद्रके वचन जीवसिद्धि नामा ग्रन्थके कर्त्ता हैं नय प्रमाणकी युक्तिकरि किया है जिनशासनका व्याख्यान जिनि ॥ २९ ॥ बहुरि जगतविषै प्रसिद्ध है ज्ञान जिनका ऐसे श्रीरिषभदेव तिनकी निर्दोष वाणी सत्पुरुषनिकूं बुद्धिका बोध करै है तैसैं श्रीसिद्धिसेन आचार्यकी वाणी निर्दोष भले पुरुषनिकूं बुद्धिका बोध करै है। सम्यग्दर्शन ज्ञान उपजावै है। बहुरि देवसंघ नामा जो आचार्य, तिनकी वाणी क्यूं न बंदवेयोग्य होय सदा वंदवेयोग्य ही है। कैसे हैं देवसंघ पूज्यपाद हैं वंदनीक हैं चरण जिनके। बहुरि जिनेंद्र इंद्र चंद्र अर्क इत्यादि व्याकरण तिनका है अवलोकन जिनकै ॥ ३० ॥ ऐसे श्रीवज्रसूरि आचार्य तिनकी वाणी धर्मशास्त्रके वक्ता जे गणधर देव तिनकी वाणीकी नांईं प्रमाण है कैसी है, तिनकी वाणी—कर्म कहिये कर्मनिका बंध अर बंधके कारण रागादिक अर मोक्ष कहिये कर्मनिसे रहित होना, अर मोक्षके कारण रत्नत्रय तिनका है विचार जाविषै ॥३२॥ बहुरि महासेन आचार्यकी कथा कोन नाहीं वर्णवे सब ही वर्णवै। जैसे सुंदर लोचन हैं जाके ऐसी वनिता कहिये स्त्री ताका वर्णन सब ही करै। कैसी है सुंदर स्त्री अर कैसी है महासेनकी कथा ? मधुरा कहिये माधुर्य, ताकूं धरै है अर शीला कहिये स्त्री तो शीलवंती है अर कथा शीला कहिये स्वत्वभावकूं धरै है। अथवा शीलवंत पुरुषनिका कथन है जाविषै ऐसी है अलंकारधारिणी कहिये कथा तो नानाप्रकारके अलंकारनिकूं धरै है अर स्त्री अनेक आभूषणनिकूं धरै है ॥३३॥ बहुरि रविषेणाचार्य जिनकी काव्यमयी मूर्ति या लोकविषै रवि कहिये सूर्य ताकी कांतिकी नाईं निरंतर प्रकाशकूं करै है। कैसी है सूर्यकी कांति उद्योतरूप है अर किया है पद्म कहिये कमल-

का प्रकाश जाने अर कैसी है रविषेणकी काव्यमयी मूर्ति-किया है पद्मपुराणका व्याख्यान जाने अर उद्योतरूप है। जैसैं वारांगना कहिये सुन्दर स्त्री अपने सब अंगन करि कौनके अत्यंत अनुराग न उपजावै ? अर्थात् सबोंके अनुराग उपजावै ॥३४-३५॥ अर बाहुबल नामा आचार्य महाशांत है तो भी तिनकी महारमणीक उत्प्रेक्षा अलंकार के लिए वक्रोक्ति महारमणीक अर्थकूं प्रकाशती थकी कौनके मनकूं अनुरागी न करै ? सबके मनकूं अनुरागी करै जैसैं सुन्दरस्त्रीके सुखकी वक्रोक्ति रमणीक महा उत्प्रेक्षांको लिये कौनके चित्तकूं मोहित न करै ? रमणीक अर्थके विकाशतैं शांत पुरुषनिके मनकूं भी अनुरागी करै ॥ ३६ ॥ बहुरि श्रीकुमारसेन गुरु तिनका यश निर्मल, जाकूं कोई जीत न सकै, सो या लोकविषै समुद्र पर्यंत विचरै है। प्रभाचंद्र नामा ग्रंथ ताका किया है प्रकाश जिनि कैसा है कुमारसेनका यश चंद्रमाके उदयकी प्रभा समान उज्वल है बहुरि कैसा है यश समस्त जो उक्ति तिनकेविषै तिलक समान है। पद्य कहिये छंदोबंध और गद्य कहिये छन्द रहित संस्कृत तिन दोउनकी जो उक्ति (वाणी) तिनके विशेषविषै तिनका यश तिलक समान है। शब्दागम १ युक्त्यागम २ परमागम ३ तीनोंका ही है विशेष ज्ञान जिनकूं ऐसे जो कुमारसेन तिनकी विशेषज्ञता सबनके शिरोभाग वर्तै हैं। अर कविनके चक्रवर्ती हैं जीत्या है। परलोक जिनि, ऐसे जो वीरसेन गुरु तिनकी कीर्ति कलंकरहित ही है। बहुरि जिनसेनाचार्यने श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्रके अपार गुणनिकी स्तुति करी सो वह स्तुति पार्श्वाभ्युदय काव्य ही जिनसेन स्वामीकी कीर्तिकूं कहै है।

भावार्थ—जिनसेनकृत पार्श्वनाथ स्तवन जाके पढनेतैं जिनसेनके गुण विस्तरे हैं पृथ्वीविषै कीर्ति विस्तार होय रही है ॥४०॥ अर जो वर्द्धमानपुराण सोई भया ऊगता सूर्य ताका जो कथन तेई भई किरण सो पंडितनिके मन तेई भये स्फटिकमणिकी भांति ताविषै देदीप्यमान भासै हैं ॥४१॥ सत्पुरुषनिकर भाषी जो वाणी सो निर्गुण कहिये बन्धनसूं रहित है तथापि दया क्षमा सत्य सन्तोषादिक अनेक गुणनिकूं धारै हैं। जैसैं—आमकी मंजरी, निर्गुण कहिये तागानतैं रहित है तथापि स्त्रीके मुखविषै कर्णफूलके आकारकरती संती गुणनिकूं धरै है, महाशोभायमान दीखै है। जैसैं अग्नि स्वर्णकी कालिमाकूं दूर करै है तैसैं मेरे काव्यविषै कोई दोष होय तो साधुजन सोधिवे समर्थ हैं ते

शुद्ध कर लेहु ॥ ४२ ॥ सत्पुरुषनिकी सभा कविके काव्यविषै कदाचित् कोई दोष होय तो उस दोषकूं काढिनाखें काव्यमें कोई दोष रहना न देय जैसे समुद्रके मध्य कोई मल आय पर्या होय तो लहर मलकूं काढ डारै ॥ ४३ ॥ जैसैं समुद्रविषै निर्मल जो सीपी तिनविषै जलकी बूंद भी मोती होय जाय तैसैं जडात्मा मूर्ख भी निर्मूल पुरुषकरि प्रतिबोध्यासंता प्रतिबुद्ध होय जाय जैसे जलसूं मोती होय जाय, तैसैं जडबुद्धि पंडित होय जाय ॥४४-४५॥ बहुरि खल कहिये दुष्ट तेई भये व्याल कहिये सर्प तिनकूं वे विवेकी राजा हैं ते अपनी शक्तिकर निग्रह करैं तिनका अधिकार न होने देंय कैसे हैं वे सर्प समान दुष्ट दुर्वचनरूप जो विद्या विष तासूं भर्या जो मुख ताविषै स्फुरायमान हैं जीभ जिनिकी ॥ ४६ ॥ जैसैं मेघ, दाहका उपजावनहारा जो ग्रीष्मसमय, ताहि शांत करै तैसैं। कैसा है ग्रीष्म समय बहुत उडै हैं रज जा विषै अर निपटरूपा है सरदीसूं रहित है अर आतापकारी है ऐसे ग्रीषमकूं वर्षा कालविषै मेघ शीतल करै है। कैसे हैं मेघ मिष्ट हैं शब्द जिनके तैसैं सत्पुरुष दुष्टनिकूं समय पाय शांतकरै हैं, कैसे हैं सन्त–सुंदर हैं शब्द जिनके अर कैसे हैं खल पापरूप रजकरि पूर्ण हैं अर महा रूखे हैं जिनमें सज्जनता नाहीं अर लोकनिकूं आताप उपजावै हैं ऐसे खलनिकूं शांतिताकूं प्राप्त करैं हैं। या श्लोकविषै दुष्टनिकूं ग्रीष्मकी उपमा दई अर संतनकूं मेघ समान वर्णये ॥४७॥ जैसैं अंधकारकी राशिकूं चांद सूर्यकी किरण निवारै तैसैं अज्ञानीकूं ज्ञानी प्रतिबोधै, कैसा है अंधकार जाविषै भला बुरा दृष्टि नाहीं पडै है अर कैसा है मूढनिका अज्ञानभाव जाविषै दुराचार अर शुभाचार सब समान भासै हैं, हेयोपदेयकी सुधि भासै नाहीं ॥ ४८ ॥ याभांति सत्पुरुषनिका हू सहाय मेरे ऐसा जो मैं सो काव्यमय अपनी देहकूं यालोकविषै स्थिर करू हूं। कैसा है काव्यमय देह समस्त रोग अर समस्त जो कुभाव तिनकरि रहित है, उद्धतपनेतैं रहित है अर महाशांत है। भावार्थ—यह काया तो क्षणभंगुर है सो राखी न रहै अर कवितारूप काया बहुतकाल तक रहै है ॥ ४९ ॥

अथ ग्रंथकी उत्पात्ति।

अथानंतर—मैं हरिवंश नाम जो पुराण महा मनोहर ताहि प्रगट करूं हूं। कैसा है यह पुराण संसारविषै

द्वितीय सर्ग ।

(तीन लोकका कथन)

अथानंतर—जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै वडी विभूतिका भर्‍या विदेह नामा देश है सो देश लक्ष्मी करि स्वर्गलोक समान है ॥१॥ सो वह देश सर्व उपसर्गतैं रहित जहां प्रजा वहुत सुखसूं वसै सो देश महासुंदर जहां प्रतिवर्ष सर्व-धान्यकी भले प्रकार उत्पत्ति अर गाय भैंस वृषभादि गोधनसूं भर्‍या ।

भावार्थ—जहां धान्य अति सस्ता अर गोरसकी वाहुल्यता सो देश खेट कर्वट मटंव पुरभेदन द्रोणमुख अर अनेक धातुनिकी खानकी खान अर क्षेत्र ग्राम । अर घोषकहिए गायनके खरक तिनकरि शोभित है । ता देशका कहा वर्णन करैं ? जहां सुखका निवास अर धर्मका निवास अर धर्मका प्रकाश वडे वडे राजा इक्ष्वाकुवंश आदि क्षत्रियनिके वंशविषै स्वर्गतैं चयकरि उपजे हैं । ता देशविषै कुण्डलपुर नामा नगर मानों सुखरूप जलका कुण्ड ही सोहै है । सव सुखनिका समूह ही है अर अखंड कहिए इंद्र ताके नेत्रनिकी पंक्ति सोई भए भ्रमरनिके समूह तिनिकूं कमलनिका वन जो महा सरोवर ता समान मनोज्ञ भासै है ॥ ५ ॥ जा नगरविषै अति उज्ज्वल जे महलनिके समूह तिनकरि आकाश अति धवल होय रह्या है, कैसे हैं महलनिके समूह शरदऋतुके मेघ समान अति उन्नत अर महा निर्मल हैं ॥ ६ ॥ जा नगरविषैं रात्रि समय चंद्रमाकी किरणनिके स्पर्शतैं घरनिकैं लगीं जे चंद्रकांतमणिकी शिला तातैं अमृत झरै है सो कैसी सोहै हैं जैसैं रतिसमय स्नेहकी भरी स्त्री सोहै है ॥७॥ अर जा पुरविषै घरनिके लगी सूर्यकांतिमणि ते सूर्यकी किरणनिके स्पर्शतैं दिनविषै महा प्रज्वलित दीखै हैं सो कैसी भासै है जैसैं धनीसूं कुपित भई स्त्री प्रज्वलित भासै है । अर जा नगरविषै मंदिरनिके शिखरविषै पद्मराग-मणि देदीप्यमान लगी है सो सूर्यकी किरणके स्पर्शतैं रागकी भरी रमणीकी नाईं शोभै है, देखनहारेनिके मनकूं अनुराग उपजावै है ॥९॥ अर वह नगर मुक्ता कहिए मोती अर मरकत कहिए हरितमणि वज्र कहिए हीरा अर मोरके कंठ समान रंगकूं धारै वैडूर्यमणि अर विद्रुम कहिए मूंगा इन सवके प्रकाशकरि कैसा सोहै है मानो समस्त

रत्ननिकी खानकी शोभा एकत्र भेली भई है ॥ १० ॥ अर वह नगर कोटरूप पर्वत अर खाई अर पड़कोटा उनकरि वेढ्या अतिशोभायमान भासै है जाकी ऊपर सूर्यका मंडल ही जाय है अर शत्रुमंडल न जाय सकै है ॥११॥ ता नगरके गुणनिका वर्णन पहिले ही कथन कर पूर्ण होहु अधिक क्या करैं जो नगर स्वर्गावतरणविषै महावीरका आधारके भावकूं प्राप्त भया। भावार्थ—जहां अंतिम तीर्थंकर ऊर्ध्वलोकसूं चयकरि माताके गर्भविषै आए ताका कहांतक वर्णन करैं ॥ १२ ॥ ता नगरविषै सूर्यकीसी प्रभाका धरणहारा राजा सिद्धार्थ होता भया, कैसा है राजा सिद्ध भए हैं पुरुषार्थ जाके अर जो सर्व अर्थका देखनहारा है। अर पिता सर्वार्थ अर माता श्रीमती ताकरि पाया है जन्म जाने ॥ १३ ॥ जाकूं धरतीकी रक्षा करतेसंते धरतीके सब दोष मिट गए, एक ही दोष दीखै है जो वा राजाकी प्रजा धर्मार्थिनी है तौ भी परलोकके भयतैं रहित है। भावार्थ—जो प्रजा धर्मार्थिनी होय है ताहि परलोकका भय होय है सो या राजाके राजमें परलोक कहिये शत्रुजन तिनका भय नाहीं ॥ १४ ॥ जहां कदे ही शत्रुकी बाधा नाहीं ता राजाके प्रशंसायोग्य गुण तिनकूं कौन नर तोल सकै। राजाके गुण अतुल हैं जिन गुणनिकरि वह नराधिपति त्रैलोक्यके गुरु जे वर्धमान तिनका गुरु कहिए पिता होता भया ताके गुणनिका कहां लग वर्णन करैं ॥१५॥ उस राजाके प्रियकारिणी नामा पटराणी पतिसूं अकृत्रिम स्नेहकी धरणहारी मानों साक्षात् समुद्रकी पटराणी जो गंगा ताके समान निर्मल है। कैसी है गंगा अर कैसी है प्रियकारिणी? गंगा तो ऊंचा कुलाचल हिमवान् पर्वत तातैं उपजी है अर यह राणी ऊंचा जो कुल सोई भया पर्वत तातैं उपजी। अर गंगा तो जलकी भरी अर यह धनीसूं स्नेहकी भरी ॥ १६ ॥ पृथिवीविषै महाराजा चेटक ताके चित्तकूं अति हर्षकूं उपजावनहारी सप्तपुत्री तिनमें आदि यह प्रियकारिणी जाका दूजा नाम त्रिशला ताके गुण वर्णन कर कौन प्रशंसा कर सकै? जो माता अपने पुण्यकरि महावीरके जन्मका कारण होती भई शुभ नामकर्मने जाकूं जिनेश्वरकी जननी करी ॥ १८ ॥ सर्व दिशातैं नमस्कार करतीसंती सर्वदेवनकी सेना जाके प्रभावतैं आकाशतैं वर्षती भई रत्नकी धारा ॥१९॥ अच्युत कहिए सोलहवां स्वर्ग ताका पुष्पोत्तर विमान तहांतै प्रभुकूं अवतरते संते वह माता प्रियकारिणी षोडश स्वप्न

ध्ययन ॥ ८ ॥ नवां कल्पव्यवहार ॥ ९ ॥ दसवां कल्याणकल्प ॥ १० ॥ ग्यारहवां महाकल्प ॥ ११ ॥ बारहवां पुण्डरीक ॥ १२ ॥ तेरहवां महा पुण्डरीक ॥१३॥ चौदहवां निषद्यक ॥१४॥ बाहुल्यता करि प्रायश्चित्तका है वर्णन जामें सो जगत्रयका गुरु सर्व जीवनके हितविषै उद्यमी कहता भया। कैसा है अंग प्रकीर्णकका व्याख्यान प्रतिपाद्य कहिए कथन करवे योग्य है ५ अर मतिज्ञानादि केवल पर्यंत पांचो ज्ञाननिका स्वरूप अर इनका जानपना तथा फल सव कहते भए। अर इन ज्ञाननिमें मति, श्रुत, परोक्ष, अर अवधि, मनःपर्यय ये एकोदेश प्रत्यक्ष अर केवल सकल प्रत्यक्ष सो सब भेद कहते भए, अर ज्ञानकी संख्या कहिए गणना सो सकल प्रकासी ६ बहुरि चौदह मार्गणाके भेद अर चौदह गुणस्थाननिके भेद अर चौदह जीवसमास तिनके भेदकरि जीवद्रव्यका व्याख्यान करतेभए ७ फिर सत्संख्या क्षेत्र स्पर्शन काल अंतर भाव अल्पबहुत्व कहिए आठ तिनकरि नाम स्थापना द्रव्य भाव इनकरि द्रव्यका लक्षण कहतेभए सो जीवपुद्गलादि षद्द्रव्य हैं ते अपने अपने लक्षणनिकर सबही भिन्न भिन्न हैं द्रव्यनिका सत्ता लक्षण है सो उत्पाद व्यय ध्रौव्यता करि संयुक्त है ८ अर कर्मका बन्ध दोय प्रकारका है एक शुभ एक अशुभ तिनके कारण भी दोय प्रकारके हैं एक शुभोपयोग एक अशुभोपयोग तिनिमें शुभ तो सुखका दाता अर अशुभ दुखका दाता अर बन्धतैं छूटना सो मोक्ष। अर मोक्षका कारण शुद्धोपयोगरूप शुक्लध्यान अर अष्ट गुणरूप फल तिन अष्टगुणनिके नाम—क्षायक सम्यक्त १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३ अंनतवीर्य ४ सूक्ष्मत्व ५ अवगाहन ६ अगुरुलघु ७ अव्याबाध ८ ये आठ। अर बन्धका फल दुख मोक्षका फल आनंद जो लोकविषे भोगै हैं सो तीन लोकविषै अनेक अलोकके मध्य तिष्ठ हैं सो लोक अर अलोकका स्वरूप त्रैलोक्यनाथ कहते भए।

अथानंतर—गौतम गणधर सप्तऋद्धि कर संपन्न जो द्वादशांग अर उपांग जो चौदह प्रकीर्णक तिन सहित जिन भाषित अर्थकूं ग्रंथरूप प्रकट करता भया ॥११॥ बारह सभाविषै त्रैलोक्यके जीव तिष्ठते हुते जिनसूर्यकी वाणीरूप किरणनिकरि मानो सोते जागे, तजी है महामोहकी निद्रा जिनि ॥ १२ ॥ जिनेश्वरकी बाणी होठ

हारी जो दिव्यध्वनि ताकरि श्रावण वदी प्रतिपद पूर्वाह्न समय अभिजित नक्षत्रविषै द्वादशांगका निरूपण करते भये, कैसी है जिनकी दिव्यध्वनि दुन्दुभी बाजेनिकी जैसी गम्भीर ध्वनि होय तैसी गम्भीर है अर एक योजन तक श्रवणमें आवै है ॥९१॥ भगवान् वर्द्धमान पहिला जो आचारांग, अर दूजा सूत्रकृतांग, तीजा संस्थानांग, चौथा समवायांग, तिनका अर्थरूप व्याख्यान करतेभये, फिर पांचवां व्याख्यान प्रज्ञप्ति, छठा ज्ञातृधर्मकथा, सातवां उपासकाध्ययन आंठवां अंतकृतदशांग तिनका अर्थ कहते भए ॥ ९३ ॥ नवमां अनुत्तर अर दशवां प्रश्नव्याकरण ग्यारहवां विपाकसूत्र इनका परम पवित्र अर्थ श्रोतानिकूं कहते भए ॥ ९४ ॥ बहुरि बारहवां दृष्टिवाद ताके भेद पांच तिनका अर्थ सर्वज्ञदेव सकल सभाकूं सुनावते भए, कैसा है दृष्टिवाद तीनसै त्रेसठ पाखण्डियनका है खण्डन जा विषै ॥९५॥ जगतके नाथ जिनेंद्र बारहवें अंगके पांच भेदनिमें प्रथम भेद परिकर्म कहते भए ॥ १ ॥ दूजा सूत्र ॥ २ ॥ तीसरा प्रथमानुयोग ॥ ३ ॥ चौथा पूर्वगत ॥ ४ पांचवां चूलिका ॥ ५ ॥ ये सकल भेद भासते भए ॥ ९६ ॥ चौथा पूर्वगत उसके भेद चौदह उनमें पहिला उत्पादपूर्व परम तत्त्वका है निरूपण जाविषै ॥१॥ दूजा अग्रायणी नामा पूर्व मुख्य है अध्यात्मचरचा जामैं तीजा वीर्यप्रवाद पूर्व ॥३॥ चौथा अस्तिनास्तिप्रवाद ॥४॥ पांचवां ज्ञानप्रमाद ॥५॥ छठा सत्यप्रवाद, तिनका अर्थ प्रभु प्ररूपते भए ॥६॥ सातवां आत्मप्रवाद ॥७॥ आठवां कर्मप्रवाद ॥ ८ ॥ नववां प्रत्याख्यान ॥९॥ दशवां विद्यानुवाद ॥१०॥ ग्यारहवां कल्याणपूर्व ॥११॥ बारहवां प्राणवायपूर्व ॥१२॥ अर तत्वका कथन है जा विषै ॥९९॥ तेरहवां क्रियाविशाल विस्तीर्ण है अर्थ जामें ॥१३॥ चौदहवां धर्मलोकविंदुसार ॥१४॥ यह चौदह पूर्व तिनका व्याख्यान भगवान समस्तके वेत्ता गौतमादि मुनिकूं कहते भए फिर चूलिकाके पांच भेद तिनकी कथा करते भए अनेक हैं वस्तु जिनमैं ॥१००॥ या भांति अंगप्रविष्ट जे पूर्व तिनका निर्णय कर जिनेश्वर देव अंगबाह्य जे चौदह प्रकीर्णक तिनका व्याख्यान करते भए। पहिला प्रकीर्णक सामायिक यथार्थ है नाम जाका जामें सामायिकका व्याख्यान है ॥१॥ दूजाप्रकीर्ण चतुर्विंशति स्तवन ॥२॥ तीजा वंदना नाम महा पवित्र ॥३॥ चौथा प्रतिक्रमण ॥४॥ पांचवां विनय ॥५॥ छठा कृतिकर्म तिनका स्वरूप भगवान् भव्यनकूं कहते भए ॥६॥ सातवां दशवैकालिक ॥७॥ आठवां उत्तरा

आदि सकल स्त्रीनि सहित शोभती भई जैसी देदीप्यमान बिजुरीनि करि संयुक्त शरदके बादरनिकी पंक्ति सोहै।
भावार्थ—आर्यकानिकी पंक्ति तो श्वेत वस्त्रकूं धरैं शरद ऋतुके बादरानिकी पंक्ती भई अर राणी आदि
और स्त्रीं आभर्णादिक करि मंडित बिजुरीनिकी शोभा धारती भई ॥ ७८ ॥ अर चौथी सभाविषैं ज्योतिषी
देवनिकी स्त्री शोभती भई सुन्दर हैं मूर्ति जिनकी मानूं समवसरणरूप समुद्रविषै तारानिके प्रतिबिम्ब ही हैं
॥ ७९ ॥ अर पांचवीं सभाविषै व्यंतर देवनिकी देवांगना सोहती भई मानों वे साक्षात् वनलक्ष्मी ही हैं जिनके
करकमलनिकी शोभाकूं हरै हैं अर छठी सभाविषैं नगकुमारादि भवनवासीनकी देवांगना नागनके फणनिकरि
शोभित नागवेल समान शोभती भई ॥ ८१ ॥ बहुरि सातवीं सभाविषैं असुरकुमारादि दश प्रकारके भवनवासी-
देव शोभते भये मनोहर हैं सुंदर भेष जिनके ॥८२॥ अर आठवीं सभाविषै किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस
भूत पिशाच अष्ट प्रकारके व्यंतरदेव शोभते भये ॥ ८३ ॥ बहुरि नवमी सभाविषैं चंद्र सूर्य तारा ग्रहनक्षत्र ये पांच
प्रकारके जोतिषीदेव विस्तीर्ण है शरीरविषै ज्योति जिनके ते शोभते भये ॥ ८४ ॥ अर दशवीं सभाविषै कल्प-
वासीदेव कल्पवृक्षसमान मनके हरणहारे सब देवनिमें श्रेष्ठ शोभते भये मुकुट कुण्डलहार केयूर कटिमेखला-
निके धरणहारे । अर ग्यारहवीं सभाविषै मनुष्य विद्याधर अर भूमिगोचरी अपने पुत्रपौत्रादि सहित तिष्ठे शोभते
भये नानाप्रकारकी भाषाके भाषणहारे अर नानाप्रकारके भेषके धरणहारे भगवानकूं नमस्कार करते देवनसे दीखे
हैं अर अनेक भूमिगोचरी विद्याधर जिनकूं सेवैं ऐसे बडे २ राजा नम्रीभूत भये भगवान्के सन्मुख तिष्ठे हैं ॥८६॥
अर बारहवीं सभाविषै सिंह गज अश्व महिष वृषभ सर्प नकुल इत्यादि अनेक तिर्यंच शांत भये तिष्ठे हैं जिन-
राजके प्रभाव करि उपज्या है विश्वास जिनके ॥८७॥ ये बारह सभा प्रदक्षिणा दिये प्रथमही विनयरूप नमस्कारकरि
चौगिरद तिष्ठे हैं ॥८८॥ तहां गौतम गणधर जिनेंद्रकूं तीर्थ कहिये जो धर्म ताके अर्थ पापके नाशकरणहारे प्रश्न
पूछता भया, कैसे हैं जिनेंद्र प्रत्यक्ष देखैं हैं समस्त पदार्थनिका स्वरूप जिनि सर्वके ज्ञाता द्रष्टा हैं अर जन्म जरा
मरण अथवा रागद्वेष मोह ये जो दोष हैं तिनके क्षय करणहारे हैं ॥ ८९ ॥ सो भगवान् सर्व संदेहकी दूर करण-

ओर चार दरवाजे सो तीन कोटके द्वादश दरवाजे शोभते भए ॥६४॥ एकयोजनके विस्तार महावीरका समवसरण होता भया ताविषै बारह सभा आकाश तुल्य स्फटिकमणिकी है भित्ति जाके ॥ ६५ ॥ ता समवसरणविषै चौतीस अतिशय अर अष्ट प्रातिहार्य तिनकरि युक्त जिनचंद्र इंद्रादिककरि वेष्टित ऐसे शोभते भए जैसैं नक्षत्रनिमें निशाकर सोहै ॥ ६६ ॥ तहां भगवानके समवशरणमें इंद्रकी प्रेरणाकरि इन्द्रभूत कहिए गौतम अर अग्निभूत वायुभूत हैं नाम जिनके ऐसे पडित ब्राह्मण आए ॥ ६७ ॥ ये तीनों भाई तिनके प्रत्येक २ पांच पांच सौ शिष्य सो सर्व ही वस्त्रादिक परिग्रह तजकरि संयम अंगीकार करते भए ॥ ६८ ॥ राजा चेटककी पुत्री चंदना ब्रह्मचारिणी सो सकलपरिग्रह तजकरि एक श्वेतवस्त्र धार सकलआर्यानिमें मुख्य भई ॥७०॥ अर श्रेणिकमहाराज चतुरंग सेनाकरि संयुक्त विपुलाचलपर्वतके निकट जाय प्राप्त भए गिरि पर चढ करि सिंहासन पर तिष्ठते जिनेश्वर तिनकूं प्रणाम करते भए ॥ ७१ ॥ कैसे हैं प्रभु छत्र चमर झारी कलश ध्वजा दर्पण वीजना अर धारा प्रसिद्ध अष्टमंगल द्रव्य तिनकर युक्त हैं ॥७२॥ अर अष्ट प्रकारकी जो महाध्वजा तिनकरि संयुक्त है समवसरण जिनका अष्ट प्रकार ध्वजानिमें पुष्पमाला चक्र वस्त्र कमल गज सिंह वृषभ गरुड अष्ट प्रकारके आकार हैं ॥ ७३ ॥ अर मानस्तम्भ तथा रत्ननिके तूप कहिये पुञ्ज अर चार प्रकारके महावन अर वापी अर सरोवरी अर वल्ली वनलता मंडप ॥ ७४ ॥ इत्यादि और भी अनेक रचनानिकरि मंडित जिनराजका समवसरण शोभता भया, जा ठौर जे जे वस्तु चाहिए ते सकल समवसरणमें पूर्ण हैं ऐसा रमणीक त्रैलोक्यमें और स्थानक नाहीं ॥ ७५ ॥

बारह सभानिका वर्णन ।

अथानंतर—जिनराजके समीप प्रथम सभामें मुनिराज तिष्ठते थके सुवर्ण समान सुन्दर है शरीर जिनके ऐसे शोभते भये जैसे चंद्रमाके समीप शुक्रादिक ग्रह बृहस्पति सहित तिष्ठते सोहैं ॥ ७६ ॥ बहुरि दूजी सभामें कल्पवासिनीदेवी शोभती भई कल्पवेल समान सुन्दर हैं भुजा जिनकी जैसी सुमेरुके समीप भोगभूमि सोहै तैसी जिनवरके समीप स्वर्गवासी देवी शोभती भई ॥७७॥ अर तीजी सभामें आर्यकानिकी पंक्ति राजानिकी राणी

न हाले अर अधरनिके स्पर्शविना विस्तरी देव मनुष्य तिर्यंचनिके मिथ्यात्वका नाश करती भई अर जिनेश्वरका भाष्या तत्वार्थका मार्ग श्रद्धान है लक्षण जाका शंका, कांक्षा, भोगाभिलाषादि कलंकसे रहित महा निर्मल है ॥ १४ ॥ सम्यग्दर्शनरूप समीचीन ज्ञानरूप आभूषणनिका नायक अनेक भव्य जीवनिने अपने कर्ण अर हृदयविषै थाप्या ॥१५॥ षट्काय पंच इंद्रिय गुणस्थान जीवस्थान कुल जाति आयु इनके भेद भव्य जीवने मार्गणानि ऊपर अर गुणस्थानपरि मार्गणा ये परस्पर सकल भेद आगमकी दृष्टितैं भव्य जीवनिने अवलोक-करि निश्चय किए ॥ १६ ॥ गुणस्थानपूर्वक जे क्रिया तिनविषै षट्कायनिके जीवनिकी हिंसादिकका त्याग सो पहिला अहिंसा नाम महाव्रत कहिए ॥ १७ ॥ अर जो राग द्वेष मोहथकी परजीवनिकूं आताप-कारी वचन तजना सो दूजा सत्यमहाव्रत कहिए ॥१८॥ बहुरि अल्प अथवा बहुत पराया द्रव्य विना दिया ताका अंगीकार न करना सो तीजा अदत्तादान परित्याग महाव्रत है ॥ १९ ॥ अर मन वचन कायकरि तथा कृतका-रितअनुमोदनाकरि स्त्रीका अर स्त्रीके संगीनका त्याग सो चौथा ब्रह्मचर्य महाव्रत कहिए ॥ २० ॥ अर बाह्य आभ्यंतरके सकल परिग्रह दोषरूप तिनका त्याग करना सो परिग्रह त्याग नामा पांचवां महाव्रत कहिए ॥२१॥ अर निरखकरि चलना रात्रिकूं गमन न करना जीवनके समूहकूं टारकरि पग धरना जूडाप्रमाण धरती सोधकर चलना सो पहिली ईर्यासमिति कहिए यह ईर्यासमिति सर्व व्रतनिकी शुद्धता करणहारी है ॥ २२ ॥ बहुरि कर्कश वचन कठोर वचन निर्दय वचन तजकरि मोक्षमार्गका है यत्न जाके ऐसा जो यति ताकूं सदा धर्मकार्यविषै हित मित वचन बोलना सो दूजी भाषासमिति कहिए ॥ २३ ॥ अर यतिके शरीरकी थिरताके अर्थ अन्न जलकी शुद्धता देख विधिपूर्वक आहारका ग्रहण सो तीजी एषणा समिति कहिए ॥ २४ ॥ अर योग्य वस्तु देख ग्रहण करना अर धरना सो चौथी आदाननिक्षेपण नाम समिति कहिए ॥२५॥ बहुरि जंतु रहित प्राशुक भूमिविषै शरी-रके मलनिका त्याग सो पंचमी प्रतिष्ठापना समिति कहिए ॥२६॥ याभांति ये पांच समित जे कहीं वे पालनी बहुरि मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ये तीन गुप्ति मुनिनिकूं धारणी, कैसी हैं ये गुप्ति मन वचन कायके योगनकी शुद्धरूप है

मनोप्रवृत्ति जिनमें अर मनकी सेना पांच इंद्रीनिका निरोध अर समता वंदन स्तुतिकरण प्रतिक्रमण स्वाध्याय कायोत्सर्ग ये षट् आवश्यक क्रिया अर केशनिका लोंच अर स्नानका त्याग अर एकबार भोजन अर बैठकर भोजन न करना, खडा ही करना, अर वस्त्रका त्याग ॥ २८ ॥ अर भूमिशय्या अर दंतधावन न करना, ये साधुके मूलगुण हैं अर बारह तप बारह संयम सराग बीतराग चारित्र अर बाईस परीषहका जीतना ॥ २९ ॥ अर द्वादशानुप्रेक्षा, तथा उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म, अर ज्ञानदर्शनतपचारित्रका विनय ॥ ३० ॥ यह यतिका धर्म कर्मबंधके काटनेका कारण भगवान कहते भए। जा समय जिनराजने व्याख्यान दिया ता समय समवशरणमें सुर असुर नर तिर्यंच सब ही हुते सो सबके समीप सर्वज्ञने मुनिधर्मका व्याख्यान किया, सो मुनि होनेकूं समर्थ जो मनुष्य तिनमें केईक नर संसारतें भयभीत परिग्रहका त्यागकरि मुनि भए, शुद्ध हैं जाति कहिए मातृपक्ष कुल कहिए पितृपक्ष जिनके ऐसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सेकडां साधु भए ॥३२॥ अर शुद्ध वंशकी उपजी सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध कहिए निर्मल श्वेतवर्णकी धरणहारी हजारां राणी आर्यिका भई अर कैयक मनुष्य चारों ही वर्णके पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत धार श्रावक भए। अर चारों वर्णकी कईएक स्त्री श्राविका भई ॥ ३५ ॥ अर सिंहादिक तिर्यंच बहुत श्रावकके व्रत धारते भए यथाशक्ति नेमविषै तिष्ठे। अर देव सम्यग्दर्शनके धारक अव्रतसम्यग्दृष्टी होय जिनपूजाविषैं अनुरागी भए ॥३६॥ अर राजा श्रेणिकने बहुत आरंभ परिग्रहके योगतें पहिली दशाविषै नरककी उत्कृष्ट आयुके भाव किये हुते सो नरककी उत्कृष्ट आयु तेंतीस सागर सातवें नरकविषै है ॥३७॥ सो तीर्थंश्वरके निकट क्षायकसम्यक्तके प्रभावतें नरककी उत्कृष्ट आयु छूटी। प्रथम नरकके प्रथम पाथडेविषै चौरासी हजार वर्षकी आयु धार उपजेंगे ॥ ३८ ॥ कहां तेंतीससागर सातवें नरककी आयु अर कहां प्रथम नरककी अल्प आयु, अहो क्षायकसम्यक्त्वका प्रभाव सर्वोत्कृष्ट है॥३९॥ अर राजा श्रेणिकके पुत्र अक्रूर वारिषेण अभयकुमार और भी सम्यक्त व्रतके धारक भए। अर इनकी माता राजलोककी धनी स्त्री ॥ ४० ॥ सम्यक्त व्रत शील दान प्रोषधोपवास जिनपूजाकूं अंगीकार करि जगत्रयका गुरु जो जिनेंद्र ताहि प्रणाम करती भई ॥४१॥

अर देवेंद्र जिनेंद्रकूं स्तोत्र पूर्वक प्रणामकरि अपने अपने वर्गनिसहित अपने अपने स्थानकूं गए अर राजा श्रेणिक भी उच्चगुणरूप श्रेणी चढ्या अर भगवानकूं नमस्कारकरि स्तुतिकरि हर्षित होय नगरमें गया ॥४३॥ भगवानका समवसरणरूप समुद्रतैं निकसे प्राणी तेई भए चंचललहर तिनकरि शोभता भया। जैसैं समुद्र नदीनिके प्रवाहकरि सदा भर्‍या ही रहै है ॥ ४४ ॥ तैसैं भगवानका समवसरण देव मनुष्य तिर्यंच जो आते अर जाते तिनकरि पूर्ण ही रहै कदे घटै नाहीं जैसैं सूर्यका मंडल किरणनिके समूहकरि पूर्ण ही दीखै है कबहू किरणनिकी कमी न दीखै एक निकसै एक पैठै ॥४५॥ भगवानके समवसरणमें सूर्यमंडलका उदय अस्त धर्मचक्र अर भामंडलकी कांति कर न जान्या परै ॥ ४६ ॥ ता समवशरणविषै वर्द्धमान तीर्थंकर धर्मका उपदेश करै हैं, निरंतर सेवायोग्य जो सर्वज्ञ तिनके उपदेशकरि श्रेणिकके ऐसी रुची बढी जो जिनवाणी सदा सुनबोई करूं। धर्म अर्थ काम ये तीन पदार्थ राजाके परस्पर अविरोधके भावकूं प्राप्त भए ॥३७॥ तासमय गौतम गणधरकूं पायकरि सर्वज्ञके उपदेशतैं राजा सर्व अनुयोगनिके मार्गविषै प्रवीण भया। भावार्थ—प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग ये चार अनुयोग जिनविषै राजाकूं परिपूर्ण ज्ञान भया ॥ ४९ ॥ राजा महाविवेकी सो राजगृही नगरीके भीतर अर बाहर ऊंचे ऊंचे जिनमंदिर बनाए निरंतर जिनधर्मकी महिमा अर उत्सव है जिनविषै ऐसे जो जिनचैत्यालय तिनकरि नगर शोभित किया अर समस्त मगध देशमें चैत्यालय कराए सामंतनिके समूह अर महामंत्री पुरोहित सेनापति तिननें भी कराए अर प्रजाके लोकनिने भी कराए। सकल देश जिन देवालयनिकरि महामनोहर भासता भया ॥ ५१ ॥ श्रेणिकके राजमें नगर ग्राम अर घोष कहिए अहीरनिकी पल्ली जहां गाय भैंस महिषी बहुत गोरसकी प्रचुरता उन स्थाननिकेविषै अर पर्वतनिके अग्रभागविषै नदीनिके तट अर वनके मध्य सब ठौर जिनमंदिर निकी महिमा पंक्ति लोक देखते भए ॥ ५२ ॥ वे भगवान वर्द्धमान जगतके सूर्य ज्ञानरूपी प्रभामंडलकी दीप्तिकरि मिथ्याज्ञानरूप हिम कहिए शीत ताका अंतकरणहारे मध्यान्हके सूर्य कैसी कांतिकूं धरते थके मगधदेशकी प्रजाकूं प्रतिबुद्ध कर मध्यदेशकी ओर विहार करते भए क्या करते संते अज्ञानरूप शीतका अंतकरि महा कहिए

मोटा उदय कहिए प्रताप ताकरि पूर्ण प्रकाशरूप तिष्ठते संते मोहरूप अंधकार जो विस्तीर्ण ताकूं निवारते हुए पूर्वदेशकी प्रजाकूं प्रतिबोधि मध्यदेशकी ओर आए ॥ ५३ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ धर्मतीर्थप्रवर्तनो नाम द्वितीयसर्गः ॥ २ ॥

अथानंतर—जिनेश्वरके प्रभावकरि मध्यदेशविषै धर्मतीर्थकी प्रवृत्ति होते संते सब देशनिविषै धर्मतीर्थ प्रवर्त्या दर्शनमोह कहिए मिथ्यात्व ताकी निवृत्ति भई। जीवनके चित्त जिनेंद्रके उदयविषै निर्मल होय गए जैसै या लोकविषै अगस्तके उदयविषै जलके निवाण निर्मल होय जांय कालुष्यता न रहै। काशी कौशल कौशल्य कुसंधि अश्वष्ट साल्व सालवर्त गर्तपंचाल भद्रकार पट्टच्चर मौक मत्स्यकनीय मूरसेन वृकार्थक मध्यदेश अर कालिंग कुरुजांगल कैकेय आत्रेय कांबोज बाल्हीक प्रवन श्रुतिसिंधु गांधार सौवीर सूर भील दशरुक वाडवान भरद्वाज उत्तर तार्ण कार्ण प्रछाल इत्यादि अनेक देशनिविषै विहार करते संते वीतराग लोकनिकूं धर्मरूप करते भए। कैसे हैं भगवान विभव कहिए अंतर वाह्यविभूति ताकरि मंडित हैं। अर भव्य वत्सल कहिए भव्यनके तारक हैं जैसे भगवान ऋषभने चतुर्थकालके आदि जीवनकूं उपदेश दिया वैसा ही महावीर देते भए केवलज्ञानका है उद्योत जिनके ऐसे जो जिनसूर्य तिनके प्रकाशके होते संते मिथ्यात्वरूप अग्निका चमत्कार कहां जाता रह्या सो हम न जानै ॥ ८ ॥ जिस समय सर्वज्ञ वीतरागके शरीरका दर्शन अर वचननका पाया है श्रवण जिन जीवोंने ता समय तिनके परशास्त्रके श्रवणविषै अभिलाष न होती भई ॥ ९ ॥ दश अतिशय तो प्रभु लिए ही उपजे नित्य कहिए सदा निर्मलता जिनके शरीरविषै मल मूत्रादि सर्व मल नाहीं ॥ १ ॥ अर पसेव मल नाहीं ॥ २ ॥ अर दूध समान उज्वल रुधिर ॥ ३ ॥ अर वज्रवृषभनाराच संहन ॥ ४ ॥ समचतुरस्रसंस्थान ॥ ५ ॥ अर अद्भुत रूप ॥ ६ ॥ महासुगंध ॥ ७ ॥ अर शुभ लक्षण कहिए शरीरमें एक हजार आठ लक्षण ॥ ८ ॥ अर अतुलवल जा समान त्रैलोक्यमें नाहीं ॥ ९ ॥ अर महामिष्ट वचन सबनिकूं हितकारी ॥ १० ॥ स्वतः स्वभाव पवित्र है शरीर जिनका सो दश अतिशय करि शोभते भए अर केवल उपजे दश अतिशय तिनका वर्णन—निमेष कहिए नेत्रनिका मुद्रित न

तीसवां मित्र, इकत्तीसवां प्रभाख्य ये इकतीस इंद्रक पहिले अर दूजे स्वर्गविषै हैं ॥४७॥ अर तीजे चौथे स्वर्गविषै सात पटल हैं तिनके नाम—पहिला अंजन दूजा वनमान तीजा नाग चौथा गरुड पांचवां लांगल छठा बलिभद्र सातवां चक्र ॥ ४८ ॥ अर पाचवें छठे स्वर्गविषै पटल चार तिनके नाम—पहिला अरिष्ट दूजा पुष्पंक (देवसमिति) तीजा ब्रह्मक चौथा ब्रह्मोत्तर ॥४९॥ अर सातवें आठवें स्वर्गविषै पटल दो हैं तिनके नाम—पहिला ब्रह्महृदय, दूजा लांतव ॥ ५० ॥ अर नौवें दशवें स्वर्गविषै एक है ताका नाम शुक्र अर ग्यारहवें बारहवें स्वर्गविषै पटल एक ताका नाम सतार अर तेरहवें चौदहवें विषै पटल तीन तिनके नाम पहिला आनत, दूजा पुष्पक, तीजा प्राणत, अर पंद्रहवें सोलहवें स्वर्गविषै पटल तीन हैं तिनके नाम पहिला सानुकार, दूजा सौमनस, तीजा प्रीत्यंकर ॥ ५१ ॥ ये बावन पटल सोलह स्वर्गनिके कहे, अर नव ग्रैवेयकनिके तीन त्रिक तिनके पटल नव तिनमें नीचले त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला सुदर्शन, दूजा अमोघ, तीजा प्रबुद्ध, अर मध्यके त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला यशोधर, दूजा सुभद्र, तीजा सुविशाल ॥५२॥ ऊपरले त्रिकके पटल तीन तिनमें पहिला सुमत, दूजा सोमस, तीजा प्रीत्यंकर, ये नव पटल नव ग्रैवेयकनिके कहे अर नव अनुत्तरनिके नव वे अनुदिश कहिए तिनके इन्द्रक पटल एक ताका नाम आदित्य, अर पंचानुत्तरका पटल ताका नाम सर्वार्थसिद्धि ये ६३ पटल इन्द्रक विमान ऊर्ध्वलोकके कहे हैं ॥५४॥ पटलके मध्यभागविषै एक एक इन्द्रके श्रेणीवद्ध प्रकीर्णक हैं ये सब विमान केते हैं सो कहे हैं सौधर्म स्वर्गविषैं विमान ३२००००० अर ईशानविषैं २८००००० सनत्कुमारविषैं १२००००० माहेन्द्रविषैं ८००००० ब्रह्मविषैं २९६००० ब्रह्मोत्तरविषै १०४००० लांतवविषै २५०४२ कापिष्टविषै २४९५८ अर शुक्रस्वर्गविषै २००२० अर महाशुक्रविषै १९९८० अर सतार स्वर्गविषै ३०१९ अर सहस्रार स्वर्गविषै २९८१ अर आनत प्रानतविषैं ४४० अर आरण अच्युतविषैं २६० अर नीचले त्रिकविषै १११ अर मध्यके त्रिकविषै १०७ अर ऊपरले त्रिकविषैं ९१ ये नव-ग्रैवेयकविषैं ३१५ विमान हैं ॥ ६२ ॥ अर नव अनुदिशिके विमान नव तिनके नाम तिनमें पहिला आर्चि, दूजा

संयुक्त रवि शशि किंचित् घाट चौगुने चौगुने द्वीप समुद्रमें द्वीप विमाननिकी संख्या पाइये है ॥ ३३ ॥ यह जोतिषलोकका संक्षेप वर्णन कह्या ॥ १ ॥

अथानंतर—स्वर्गलोकका संक्षेप वर्णन करै हैं—सुमेरुकी चूलिकाके ऊपर ऊर्ध्वलोक है सो मृंदगके आकार है। ऊपर ऊपर सोलह स्वर्ग हैं अर अहमिंद्रनिका लोक है नवग्रैवेयक नव अनुत्तर अर पंच पंचोत्तर ये तेइस अहमिंद्र लोक हैं ॥ ३५ ॥ पहिला स्वर्ग सौधर्म, दूजा ईशान, तीजा सनत्कुमार, चौथा माहेन्द्र, पांचवां ब्रह्म, छठा ब्रह्मोत्तर सातवां लांतव, आठवां कापिष्ट, नवमां शुक्र, दशवां महाशुक्र, ग्यारहवां सतार, बारहवां सहस्रार, तेरहवां आनत, चौदहवां प्राणत, पंद्रहवां आरण, सोलहवां अच्युत ये सोलह स्वर्ग कहे हैं ॥ ३७ ॥ अर नव ग्रैवेयककी तीन त्रिक हैं तिनमें पहिली अधोत्रिक, दूजी मध्यत्रिक, तीजी ऊर्ध्वत्रिक ॥ ३९ ॥ अर इनके ऊपर नव अनुदिश अर तिनके ऊपर पंच अनुत्तर अर तिनके ऊपर मुक्ति है सो ऊर्ध्वलोकका शिखर है ॥४०॥ सोलह स्वर्गनिके अर अहमिंद्रनिके बिमान ८४९७०२३ हैं अर पटल ६३ हैं सो ऊर्ध्वपंक्ति तिष्ठै हैं एक २ पटलमें एक २ इंद्रक विमान है सो पटलके मध्यभागविषैं है, सकल ६३ इंद्रक विमान हैं तिनमें पहिले इन्द्रकसंबंधी चार दिशामें श्रेणीबद्ध विमान प्रत्येक प्रत्येक ६३ हैं अर चार विदिशानिमें प्रत्येक प्रत्येक बासठ हैं अर दूजे इन्द्रकके दिशा दिशा प्रति बासठ अर विदिशा विदिशाप्रति ६१ या भांति सब दंडक संबंधी दिशा विदिशाविषै एक एक श्रेणीबद्ध घाट है अब सब इंद्रकनिके नाम कहे हैं उनमें ६३ इंद्रक विमान हैं तिनमें दिशा दिशा प्रति एक एक घाट है, प्रथम इंद्रक विमानका नाम ऋजु, दूजा विमल, तीजा चंद्रनायक, चौथा वल्गु, पांचवां वीर, छठा अरण, सातवां नंदन, आठवां नलिन, नववां कांचन, दशवां रोहितर, ग्यारहवां चंचक, बारहवां महत, तेरहवां दीप्ति, चौदहवां वैडूर्य, पंद्रहवां रुचक, सोलहवां रुचिकभास, सत्रहवां अर्क, अठारहवां स्फटिक, उन्नीसवां पृथिवी (पथीक), बीसवां मरु, इकीसवां भद्र, बाइसवां हारिद्रक, तेइसवां पद्म, चौवीसवां लोहित, पचीसवां बज्र, छव्वीसवां नंद्यावर्त, सत्ताइसवां प्रभंकर, अट्ठाइसवां प्रष्ठक, उणतीसवां गज,

सातवां भाग है अर मध्य अंतर पचास कोस है अर उत्कृष्ट अंतर हजार योजन है अर सूर्यका विमान ताया सोना समान रक्त वर्ण आधे गोलेके आकार है अर चंद्रमाका विमान स्फटिकमणि समान श्वेत है तथा कमलतार समान श्वेत है अर राहु वा केतुका विमान लंबा एक योजन अर मोटा अढाईसौ धनुष है अर राहु केतुके विमान श्याम मणिमय चंद्र सूर्यके विमानके नीचे हैं अर शुक्रका विमान मालतीके पुष्प समान रूपामई उज्ज्वल है अर वृहस्पतिका विमान मुक्ताफल समान तथा स्फटिकमणि समान उज्ज्वल है अर बुद्धका विमान सुवर्ण समान है अर शनैश्चरका विमान ताये सुवर्ण समान है अर मंगलका विमान लाखके रंग समान लाल वर्ण है यह ज्योतिषी देवनिके विमाननिका वर्णन कहा ॥२०॥ अर अरुणद्वीप अर अरुणसमुद्रके ऊपर समस्त जोतिषी देवनिके विमान केवल श्यामवर्ण ही हैं अर तातैं तहां महा अंधकार है अर अढाई द्वीपविषैं ही सूर्यादिकका उदय अस्त होय आगे अढाई द्वीपके परे सव ज्योतिषी देवनिके विमान स्थिर ही हैं ॥ २३ ॥ अर असंख्यात ज्योतिषी देव हैं तिनके इंद्र सूर्य चंद्रमा हैं वे चंद्रसूर्य असंख्यात द्वीप समुद्रमें असंख्यात हैं ॥ २४ ॥ अर जंबूद्वीपमें चंद्र सूर्य सुमेरुसूं ११२१ योजन न्यारे रह कर प्रदक्षिणा करैं हैं ॥ २५ ॥ जम्बूद्वीपविषैं दो चंद्र दो सूर्य अर लवणोदधिविषैं चार चंद्र चार सूर्य अर धातकीखण्डविषैं बारह चंद्र बारह सूर्य अर कालोदधिविषैं ४२ चंद्र बयालीस सूर्य अर पुष्करार्द्धविषैं वहत्तर चंद्र बहत्तर सूर्य अर अढाई द्वीपविषैं १३२ चंद्र १३२ सूर्य हैं, ज्योतिषी देवनिका चंद्रमा इंद्र है अर सूर्य प्रत्येंद्र है। एक चंद्रमाका इतना परिवार सो कहै हैं एक चंद्रमाके साथ सूर्य एक अर २८ नक्षत्र अर ८८ ग्रह अर छ्यासठ हजार नौ सौ पिचहत्तर कोडाकोडी तारे ६६९७५०००००००००००००० ॥ २९ ॥ अर मानुषोत्तरके उरै आधे पुष्करद्वीपमें ७२ चंद्रमा अर ७२ सूर्य अर मानुषोत्तरतैं परे पचास हजार योजन जाय तहां चंद्र सूर्यादिक चक्रवलय करि तिष्ठै हैं अर मानुषोत्तर पर्वततैं परे प्रथमवलय आगे लाख लाख योजन जाय तहां चार अधिक वलय हैं। तिनकी किरण परस्पर मिल रही हैं ॥३२॥ अर धातकीखण्डकूं आदि देयकरि द्वीपनिविषैं पिछलोकरि

अथानंतर—ज्योतिषचक्रका वर्णन करैं हैं। या पृथ्वीतलतैं सातसौ नव्वे योजन ऊंचा तारामंडल है सो यह जोतिषी देवनिके नीचे है। पृथ्वीतलतैं नवसौ योजनतक जोतिषचक्रकी हद्द है ॥ २ ॥ समस्त ज्योतिषचक्र सातसौ नव्वे योजनसूं लेयकरि नवसौ योजनतक ज्योतिषी देवनिका लोक है, सो एकसौ दश योजन जोतिषीदेवनिकी धराका दल है ॥ ३ ॥ यहांतैं सातसौ नव्वे योजन तो तारामंडल है अर तारामंडलतैं दश योजन ऊंचा सूर्यमंडल है सो यहांतैं आठसौ योजन है अर सूर्यमंडलसूं अस्सी योजन ऊंचा चंद्रमंडल है सो यहांसूं आठसौ अस्सी योजन है अर चंद्रमंडलसूं चार योजन ऊंचा नक्षत्रका विमान है सो यहांतैं आठसौ चौरासी योजन है अर नक्षत्रमंडलतैं चार योजन ऊंचा बुधका विमान है सो यहांतैं आठसौ अठ्यासी योजन है ॥५॥ अर बुधतैं ऊंचा तीन योजन शुक्रका विमान है, सो यहांतैं आठसौ इक्यानवे योजन है अर शुक्रतैं तीन योजन ऊंचा बृहस्पतिका विमान है सो यहांतैं आठसौ चौरानवे योजन है अर बृहस्पतितैं तीन योजन ऊंचा मंगलका विमान है सो यहांतैं आठसौ सत्तानवे योजन है अर मंगलतैं तीन योजन ऊंचा शनैश्चरका विमान है सो यहांतैं नवसौ योजन है, चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा ये पांचप्रकार जोतिषीदेव असंख्यात हैं तिनमें चंद्रकी आयु एक पल्य अर एक लाख वर्षकी है अर सूर्यकी आयु एक पल्य अर एक हजार वर्षकी है अर शुक्रकी आयु एक पल्य सौ वर्षकी है अर बृहस्पतिकी आयु पौन पल्य है अर मंगल बुध शनैश्चरकी आयु आध पल्य है अर तारानिकी आयु पाव पल्य है अर कैयक तारानिकी आयु आध पाव पल्य है, आध पाव पल्यतैं जोतिषीनिकी आयु घटती नाहीं ॥ ९ ॥ अर एक योजनके इकसठ भाग करिये तामें छप्पन भाग चंद्रमाका विमान है अर इकसठ भाग एक योजनके करिये तामें अड़तालीस भाग लीजिये सो सूर्यके विमानका विस्तार है अर एक कोस शुक्रका विमान है अर पौन कोस बृहस्पतिके विमानका विस्तार है अर आध कोस सकल ग्रहनिके विमाननिका विस्तार है उत्कृष्ट विस्तार आध कोस है अर तारानिका मध्य विस्तार पावकोसतैं कछुयक अधिक है अर जघन्य विस्तार पाव कोस ही का है अर तारनिका परस्पर जघन्य अंतर एक कोसका

अर रम्यकक्षेत्र सो ८४२१ योजन अर कला १। अर रुक्मी पर्वत ४२१० योजन अर कला १० अर हैमवतक्षेत्र २१०५ योजन अर कला ५ अर शिखरी पर्वत १०५२ योजन अर कला १२ अर ऐरावत ५२६ योजन अर कला ६ क्षेत्रतैं दूना पर्वत अर पर्वततैं दूना क्षेत्र सो यह गिनती तो विदेहक्षेत्रतक है अर विदेहतैं आधा नील अर नीलतैं आधा रम्यक तातैं आधा रुक्मी तातैं आधा हैरण्यवत् तातैं आधा शिखरी। अर शिखरीतैं आधा ऐरावत ॥१९॥ अब सप्त क्षेत्रनिका विस्तार लिखते हैं—या भारतक्षेत्रके मध्य एक विजयार्ध गिरि है सो ताकी लंबाई एक ओर तो पूर्वके समुद्र तक है अर एक ओर पश्चिमके समुद्रतक है सो विद्याधरनिके निवासकरि शोभै है ॥२०॥ विजयार्ध पृथिवीतैं पच्चीस योजन ऊंचा है। अर सवा छै योजन पृथिवीविषै ताकी जड है अर यह पर्वत रूपाके वर्ण सुपेद है योजन ५० चौडा है। अर पृथिवीतैं दस योजन ऊंचे चढिए तब दो विद्याधरनिकी श्रेणी हैं सो दोय श्रेणीका विस्तार दस दस योजन चौडा है अर लंबाई तो समुद्र पर्यंत है ॥ २१ ॥ श्रेणी दोय हैं तिन विषै एक दक्षिणश्रेणी एक उत्तरश्रेणी सो दक्षिणश्रेणीविषै नगर ५० अर उत्तरश्रेणीविषै नगर ६० ये सब ही नगर सुरपुर समान हैं अर इन दोऊ श्रेणीनतैं फिर दस योजन ऊंचे चढिए तहां आभियोग जातिके देवनिके क्रीडा योग्य दस दस योजन दोय श्रेणी हैं ताविषै अनेक नगर हैं। फिर पांच योजन ऊपर चढिए तहां दस योजनके विस्तार विजयार्ध देवकी पूर्णभद्रा नाम श्रेणी है ॥ २५ ॥ अर विजयार्धके ऊपर नव शिखर हैं तिनके नाम हैं—सिद्धायतन १ दक्षिणार्धक २ खण्डप्रताप ३ पूर्णचंद्र ४ विजयार्धकुमार ५ मणिभद्र ६ तमिस्रगुहक ७ उत्तरार्धक ८ अर नवमा वैश्रवण ये नवकूट गिरिके शिखर सोहै हैं शिखरनिकी ऊंचाई योजन ६। अर चौडाई मूल विषै तो योजन ६। अर मध्यविषै चौडाई योजन ५ किंचित ऊन अर ऊपरकी चौडाई ३ कछुइक अधिक ॥२९॥ पहिला सिद्धायतन कूट तामें पूर्व सन्मुख जिनेश्वरका अकृत्रिम चैत्यालय है, सो चैत्यालय पौन कोस ऊंचा है अर आधकोस चौडा है अर एक कोस लम्बा अविनाशी है ॥ ३१ ॥ भरतक्षेत्रके अर्धभागविषै विजयार्ध गिरि ताकूं प्रत्यंचा कहिए फिडच ताका विस्तार वीचका ९७४८ योजन अर कला १२ अर या फिडचका लघु धनु पृष्ट

क्षेत्र सातनिके नाम अर विस्तार आगे कहैं हैं। सुमेरु एक, देवकुरु, उत्तरकुरु दोय अर जम्बू तथा शालमली दोय बृक्ष अर कुलाचल छै तिनविषै द्रह छै अर तिन द्रहनिविषै चोदह महानदी अर विभंगा नदी बारह अर वक्षारगिरि बीस अर राजधानी चौंतीस अर वैताढ्य चौंतीस अर बृषभाचल चौंतीस अर चौंतीस वैताढ्यनिकी गुफा अरसठ अर नाभिगिरि चार अर एक २ वैताढ्यविषै विद्याधरनिकी पुरी प्रत्येक प्रत्येक ११० सो चौंतीसोंकी पुरी ३७४० ॥ ११ ॥ इन सवनि करि यह जम्बूद्वीप शोभै है यह जितने कहे इनसे दूने धातकीखण्ड दूजेद्वीपमें से है हैं अर जेते धातकीखण्डमें तेतेही पुष्करार्धमें जानहु ॥१२॥ यह अढाई द्वीपका संक्षेप व्याख्यान किया अब जम्बूद्वीपके सात क्षेत्रनिके नाम सुनहु। पहिला भरत दूजा हेमवत तीजा हरि चौथा विदेह पांचमा रम्यक छठा हैरण्यवत सातमा ऐरावत सो ऐरावत तो सुमेरुकी उत्तरकी ओर है। अर भरत क्षेत्र सुमेरुकी दक्षिण ओर है अर जो ये सात क्षेत्र कहे हैं सो इनमें भरतक्षेत्रके विस्तारतैं चौगुणा विस्तार हेमवतका है अर हैमवततैं चौगुणा हरिक्षेत्रका अर हरिक्षेत्रतैं चौगुणा विदेहका अर विदेहतैं चौथा भाग रम्यकका अर रम्यकतैं चौथा भाग हैरण्यवतका अर हैरण्यवततैं चौथा भाव ऐरावतका भरतका ऐरावतका विस्तार बरोबर है ॥ १४ ॥ अर छह कुलाचलनिके नाम— हिमवान् १ महाहिमवान २ निषध ३ नील ४ रुक्मी ५ शिखरी ६ सो हिमवानतैं चौगुणा महाहिमवानका है अर महाहिमवानतैं चौगुणा निषध अर निषधतैं नील बरोबर है अर नीलतैं चौथा भाग रुक्मी अर रुक्मीतैं चौथे भाग शिखरी हिमवान अर शिखरीका विस्तार बरावर है, दक्षिणके अर उत्तरके कैयकनिका विस्तार बराबर है ॥ १४ ॥ अर भरत क्षेत्रका विस्तार ५२६ योजन अर भाग छह अर योजनका जो उगनीसमा भाग सो कला कहिए सो यह क्षेत्र जम्बूद्वीपके विस्तारकूं १९० भाग करिए तिनमें एक भाग है अर भरतक्षेत्रतैं दूना हिमवान् पर्वत सो १०५२ योजन १२ कला अर हिमवान्तैं दूना हेमवत्क्षेत्र सो २१०५ योजन अर कला ५ अर महा हिमवान् पर्वत ४२१० योजन अर कला १० अर हरिक्षेत्र ८४२१ योजन अर कला १ अर निषधाचल १६८४२ योजन अर कला २ अर विदेहक्षेत्र ३३६८४ योजन अर कला ४ अर नीलाचल १६८४२ योजन अर कला २

अब मध्यलोकका विस्तार संक्षेपता करि सुनहु ॥७६॥ बुध कहिए विवेकी भगवानके जे वचन वेई भए सर्वप्रकाशी दीपक तिनिकी कांतिकी ज्योतिकरि सदाकाल ततरूप होय हैं। कहा करि ऐसे होय हैं चांद सूर्य अगोचर जो अधोलोकका अन्धकार ताहि जिन वचनरूप दीपकके प्रकाशतैं दूरकरि पदार्थकूं देखै हैं। भावार्थ—अधोलोकविषै चांद सूर्यका प्रकाश नाहीं महा अन्धकार है सो जिनवचन दीपकके विना ऐसे अंधकारविषै वस्तु कैसैं भासै जिनेश्वररूप सूर्यके प्रकाशकरि लोकालोक सब ही भासैं तो अधोलोकके पदार्थनिके अवलोकनकरि आश्चर्य कहा, जिनसूर्यके उद्योगविषैं अज्ञान अंधकार कहां रहै है ॥ ३७७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ अधोलोक संस्थाननाम वर्णनो चतुर्थः सर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

मध्य-लोकका वर्णन

अथानंतर—मध्यलोकका वर्णन करै हैं, यह मध्यलोक भी मध्यतनु वातवलयके अंत पर्यंत तिष्ठा है, सुमेरु पर्वत लक्ष योजन है सो ताकी हजार योजन तो पृथ्वीविषै जड है। अर निन्यानवै हजार योजन ऊंचा है सो जेते सुमेरु ऊंचा है तेती मध्यलोककी ऊंचाई अर जेती सुमेरुकी जड़ है तेती मध्यलोककी निचाई ॥ १ ॥ अर मध्यलोकविषैं असंख्यात द्वीप अर समुद्र हैं तिनके मध्य जम्बूद्वीप अर गोल है आकार जाका सब ही द्वीप समुद्र गोल वर्तुलाकार हैं द्वीपकूं वेढै हैं समुद्र, समुद्रकूं वेढैं अगला द्वीप ताहि वेढै अगला समुद्र या भांति असंख्यात द्वीप समुद्र हैं अर जंबूनामा द्वीप सबमें आदि सो जम्बू नामा वृक्षकरि शोभायमान है ॥ २ ॥ यह जम्बूद्वीप वज्रके कोट करि वेष्टित अपने विस्तारकरि लवण समुद्रकूं स्पर्शैं है या भांति जम्बूद्वीपका विस्तार लक्ष योजनका है ॥ ३ ॥ अर सुमेरु गिरि या जम्बूद्वीपके नाभि समान मध्यविषै है ॥ ४ ॥ जम्बूद्वीपकी परिक्षेप कहिए प्रदक्षिणा सो योजन तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताइस अर कोस तीन धनुष एकसौ अठाईस अंगुल साढे तेरह है अर जम्बूद्वीपको एकत्र घनाकार करिए तो योजन सात सौ नव्वेकोटि छप्पन लाख चौरानवे हजार एकसौ पचास होय अर या जम्बूद्वीपविषैं

धारक निर्दय मृषावादी, परधन परदाराके हरणहारे महालोभी अनंतानुबंधी चौकड़ीका है उदय जिनके मांस आहारी मद्यपायी मधुभक्षक सात व्यसनोंके सेवनहारे अन्यायमार्गी अर लुटेरे विष देनहारे नरक जांय सो नरकगति दुष्ट मनुष्य तथा दुष्ट तिर्यंचगति पावैं। एकेंद्रीतैं ले चौइन्द्री पर्यंत तो नरकमें न जांय पंचेंद्री ही जांय तिनमें असैनी तो पहले तकही जावैं। आगैं न जावैं अर जलके सर्प दूजे नरक तक जावें। अर पक्षी तीजे नरक तक जावैं। अर भुजंग चौथे नरकतक जावैं। अर सिंह पांचवें नरकतक जावैं। अर स्त्री छठे नरक तक जांय। अर मनुष्यनिमें पुरुष तथा महामच्छ सातवें तक जाय ॥७०॥ सातवेंका निकस्या लगता ही सातवें जाय तो दुष्टतैं दुष्ट तिर्यंच होय दूजीबार सातवें नरक जाय अर और नरकमें जावे तो जावे। अर छठेका निकस्या लगताही जाय तो दुष्ट मनुष्य तिर्यंच होय दोयबार और लगता जाय। अर पाचवेंका निकस्या लगता ही पांचवें जाय तो दुष्ट नर तथा पशु होय अर तीनवार लगता ही जाय अर चौथेका निकस्या लगता वहां ही जाय तो चार बार फेर जाय अर तीसरेका निकस्या नर तिर्यंच होय तीजे ही जायवो करै तो पांचवार वहीं फेर जाय, अर दूजे नरकतैं लगता जाय तो दुष्ट मनुष्य पशु होय छै वार दूजेमें ही फेर जाय। अर पहले नरकका निकस्या तहां ही जाय तो दुष्ट मनुष्य तिर्यंच होय सात वार फेर लगता ही जाय अर नरकनिविषै जीव अनंतवार गए अर जांयगे ॥ ७२ ॥ अर यह नियम है कि सातवेंतैं निकस्या दुष्ट तिर्यंच होय एकबार नरकही जाय कोई नरक जाय अर छठेका निकस्या मनुष्य होय तो होवे परंतु संयमी न होय। अर पांचवेंतैं निकस्या तद्भव मोक्ष न जाय मुनिव्रत धरै तो धरै। चौथेका निकस्या चरम शरीरी होय तो होय ॥ ३७३ ॥ अर पहिले दूजे तीजे तें निकस्या तीर्थंकर भी होय तो होय यह तीर्थेश्वरकी आज्ञा है ॥ ७४ ॥ नरकतैं निकसे पंचेंद्री तिर्यंच अर मनुष्य होंय परन्तु वलदेव वासुदेव चक्रवर्ती न होंय ये स्वर्गहीके आए होंय। अर मिथ्यादृष्टि तो नरकतैं निकसे तिर्यंच ही होंय अर मनुष्य होंय तो हीन होंय अर सम्यग्दृष्टि पूर्वले पापतैं नरकविषै गए नरकतैं निकसि उत्तम मनुष्य होंय ॥ ७५ ॥ गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं। हे श्रेणिक ! अधोलोकका विस्तार मैंने संक्षेपकरि तोहि कहा

वैर चितराय परस्पर लडावैं हैं अर चोथे नरकते लेकरि सातवें पर्यंत असुरकुमारनिका गमन नाहीं, नारकी ही वैर चितारकरि परस्पर लडावैं हैं ॥ ५८ ॥ अपने शरीरकरि उपजे नाना प्रकारके शस्त्र कुंत कहिये सेल अर चक्र कहिये करौत अर शला कहिए त्रिशूल इनकूं आदि दे खडग कुठारी कुहाडनि करि परस्पर खंड खंड करैं हैं महा पीड़ा उपजावैं हैं ॥ ५९ ॥ जैसैं पारेकूं खंड खंड करिए अर तत्काल मिल जाय तैसैं नारकीनिका शरीर खंड खंड होय मिल जाय है। जहां तक उनका आयुकर्म है तहां लग मारने करि मरें नाहीं, शरीर संबंधी अर मन संबंधी आधि व्याधिका दुःख पूर्वपापके विपाकतैं सदा सहै हैं वह याकूं दुखी करै है वह वाकूं दुखी करै है परस्पर मारना ताडना होयवो ही करै है। वे नारकी महाक्षार महा उष्ण महादुर्गंध वैतरणी नदीके जलथकी अर महा दुर्गंध मृत्तिकाथकी महा दुस्सह दुख भोगवैं हैं ॥ ३६२ ॥ एक आंखके निमिषमात्र हू नारकीनिकूं सुख नाहीं। वे नारकी निरंतर नरकविषै दुःख भोगवैं हैं नरकविषै जीवनके महा अशुभ परिणाम हैं अर नपुंसक सब ही हैं अर हुंडकसंस्थान हैं॥ ६३ ॥ छठे नरक तकके निकसे तो मनुष्य अर पंचेंद्री तिर्यंच दोय गति ही में आवैं हैं अर सातवेंतैं निकसे तिर्यंच ही होय अर कैएक जीवनिने पहिले मिथ्यात्वविषै नरकका बंध किया हुता बहुरि सम्यक्तकूं पाय करि तीर्थंकर पदका बंध कीया, सो पूर्व बंधकरि सम्यक्ततैं च्युत होय तीजे नरकतक जाय तहांका निकस्या तीर्थंकर होय तो होय। अर चौथेका निकस्या तीर्थंकर न होय कदाचित् चरमशरीरी होय तो होय अर पांचवेंतैं निकस्या कदाचित् साधु होय तो होय जे जीव पहिले दूजे तीजेतैं निकस करि तीर्थंकर होवैं तिन जीवनिका मरणतैं छै महीने पहिले उपसर्ग दूर होय ॥ ६५ ॥ पहिले नरकविषै नारकी मूवा अर याकी जगह दूजा जब ही उपजै अर अंतर पडै तो पहिले नरकविषै अड़तालीस घड़ीका अंतर पड़ै यह अंतर कथन अंत र्यामीने कह्या ॥ ३६६ ॥ अर दूजे नरक अंतर पडे तो दिन सात तीजे नरक दिन पंद्रह चौथे नरक मास १ पांचवें नरक मास २ छठे नरक मास ४ सातमें नरक अंतर मास छह ॥६७॥ भावार्थ—नरकमें जे नारकी हैं तिनमें घटे बढे नाहीं एक मरै एक उपजै जो अंतर पडै तो इतना पडै यह मिथ्याती महापापी बहुत आंरभी परिग्रहके

कैयक भैंसनिके आकार कैयक द्रोणीके आकार अर कैयक कमलपुटके आकार ॥ ३४४ ॥ अर छठे नरकविषै तथा सातवेंविषै नारकिनके उत्पत्तिके स्थान कैयक खेतके आकार कैयक झालरके आकार कैयक मल्लिकाके आकार कैयक मयूरिकाके आकर हैं ॥ ४५ ॥ ये उत्पत्ति स्थानक एक कोश चौडे कैयक दोय कोस चौडे कैयक तीन कोस चौडे कैयक एक वा दोय वा तीन योजन चौडे हैं। अर तिनमें सौ योजन चौडे हैं यह उत्कृष्ट वर्णन किया, सौ योजन सिवाय तिनकी चौडाई नाहीं। भावार्थ—क्रमतैं सातों नरकनिविषै एक दो वा तीन कोष एक दोय तीनसौ योजन चौडाई सब स्थान कहे हैं। अर जो चौडाई वर्णन करी ताथकी पांचगुनी ऊंचाई जानहु, नारकीनिके समस्त उत्पत्ति स्थानकनिकी ऊंचाई चौडाई समस्त वस्तु श्रीवीतरागदेवने बताई ॥ ४७ ॥ जे इंद्रक बिले हैं ते सब तिखूटे हैं तीन द्वारनिकूं धरै हैं अर इंद्रके तो दूजे श्रेणीवद्ध अर प्रकीर्णकतैं कैएक दोय द्वार अर दोय कोण अर कैएक तीन द्वार अर त्रिकोण अर कैएक एक द्वार एक कोण कैएक पंच द्वार पंच कोण अर कैएक सप्त द्वार सप्त कोण ॥ ४८ ॥ वे संख्यात योजनके विस्तार करि युक्त हैं तिनमें तो अल्प अंतर छह कोस अर उत्कृष्ट अंनर कोस बारह अर असंख्यात योजनरूप है प्रमाण जिनका तिनका अंतर उत्कृष्ट तो असंख्यात योजन अर जघन्य अंतर सात हजार योजन ॥ ५० ॥ अर नरकनिविषै नारकी उपजकरि भूमिमें पड़े हैं तहां पड़करि उछलते हैं सो पहिले नरक तो योजन सात अर कोस सवा तीन ऊंचे उछलते हैं, अर नीचले नरकविषै पहिलतैं दूना जानहु ॥ ५१ ॥ दूजे नरकविषै योजन १५ अर कोस २॥ नारकी ऊंचे उछलते हैं। अर तीजे नरकविषै योजन ३१ अर कोस १ उपजतेही पृथ्वीमें पड़करि आकाशविषै उछलते हैं अर उछल करि पाछे पडे हैं ॥ ५३ ॥ अर चौथे नरकके नारकी योजन ६२ अर कोस दो उछलते हैं। अर पांचवें नरकके नारकी योजन १२५ महा दुःखके पीडे ऊंचे उछलते हैं। अर छठे नरकविषै नारकी योजन २५० ऊंचे उछल करि पाछे पडै हैं। अर सातमें नरकविषै योजन ५०० ऊंचे उछल करि पाछे पृथ्वीविषै पडै हैं ॥ ३५७ ॥ तीजे नरक तक तो अपना अपना पूर्वला वैर बिचारि नारकी परस्पर लडै हैं अर असुरकुमार देव हू इनकूं पूर्वला

धनुष पिचहत्तर अर दूजे पाथडेविषै धनुष सत्तासी हाथ २ ॥ ३० ॥ अर तीजे पाथडेविषै धनुष १०० अर चौथे पाथडेविषै धनुष ११२ हाथ दोय ॥३१॥ अर पांचवेंविषै धनुष १२५ ऊंचाई नारकीनिकी गणधरदेवने कही ॥३२॥ ये पंचम नरकके पांच पाथडेनिविषै शरीरकी ऊंचाई जानहु ॥ ३३ ॥ अर छठे नरकके पहिले पाथड़ेविषै धनुष १६६ हाथ २ अंगुल सोलह ॥ ३३ ॥ अर दूजेविषै धनुष २०८ हाथ १ अंगुल ८ अर तीजे पाथड़ेविषै धनुष २५० ॥३४॥ या भांति छठेके तीन पाथडेनिके नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई ज्ञाननेत्रके धारकनिने कही ॥ ३५ ॥ अर सातवें नरकविषै एक पथड़ा ताविषै धनुष ५०० नारकीनिके देहकी ऊचाई कही। यह सब निश्चय केवलीनिके उपदेश करि भव्य जीवनिके भया ॥ अथानंतर—प्रथम नरकादि सातोंही नरकनिकी पृथ्वीविषै अवधि प्रमाण कहै हैं। पहले नरकके कोस ४ दूजे नरकके कोस ३॥, तीजे नरकके कोस तीन, चौथे नरकके २॥, पांचवें नरकके कोस दोय, छठे नरकके कोस १॥, सातवें नरकके कोस एक या भांति अवधिका प्रमाण जानना ॥३८॥ अर पहिले दूजे नरकविषै लेश्या कापोत अर तीजे नरकविषै ऊपरले पाथड़ेनिविषै कापोत अर नीचले पाथडनिविषै नील ॥३९॥ अर चौथे नरकविषै सब पाथड़ानिविषै नील लेश्या ही है। अर पांचवां नरकविषै ऊपरले पाथड़निमें नील लेश्या है अर नीचले पाथड़निविषै कृष्णलेश्या है अर छठे नरकविषै सब पाथडनिविषै कृष्णलेश्याही है अर सातवें नरकविषै परम कृष्णलेश्या है अति दुष्ट भावनिकरि तहां जाय है तहां दुष्ट भावही हैं। अर तहांके निकसे मनुष्य न होवैं दुष्ट तिर्यंच ही होंय एक वार फिर नरकमें जांय ॥३४१॥ अर चौथे नरकतक तो अति उष्णताकी बाधा है। अर पांचवें नरकविषैं ऊपरले विलानिविषै तो उष्णताकी बाधा है। अर नीचले विलानिविषै शीतताकी बाधा है अर छठे नरकविषै सर्वत्र शीत है अर सातवें नरकविषै महा शीत है ॥ ४२ ॥ अर नारकीनके उत्पत्तिके स्थानक तीजे नरक तक तो कैयक कड़ाहीके आकार हैं अर कैयक कुम्भीके आकार हैं अर कैयक मुद्गरके आकार हैं कैयक कुस्थलीके आकार हैं कैयक मृदंगके आकार अर कैयक नालीके आकार ॥ ४३ ॥ अर चौथे नरकविषै तथा पांचवें नरक विषै नारकीनिके उत्पत्तिके स्थानक कैयक गायके आकार कैयक गजके आकार हैं कैयक अश्वादिकके आकार

भाग पांच ॥१०॥ अर नवमें पाथडेमें धनुष चौदह अंगुल उनीस अर भाग ७ ॥ ११ ॥ अर दशवें पाथडेविषै धनुष चौदह हाथ तीन अंगुल पन्द्रह अर भाग नव ॥ १२ ॥ अर ग्यारहवें पाथडेमें धनुष पन्द्रह हाथ दो अंगुल बारह यह दूजे नरकके पाथडेनिका ग्यारहका कथन किया। यहांतें एक धनुष हाथ दोय बाईस अंगुल एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ये तीन अनुक्रम कर वृद्धि भई। तीजे नरकके पहिले पाथडेमें धनुष सतरह हाथ ? अंगुल दश अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय इतना ऊंचा शरीर नारकीनिका है ॥ १५ ॥ अर तीजेके दूजे पाथडेविषै धनुष उनीस नव अंगुल अर १ अंगुलका तीजा भाग सर्वदर्शीने दिखाया ॥ १६ ॥ अर तीजेके तीजे पाथडेविषैं धनुष बीस हाथ तीन अंगुल आठ शरीर ऊंचा है। अर चौथे पाथडेविषै धनुष बाईस हाथ दोय अंगुल छह अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ॥३१७॥ अर पांचवें पाथडविषैं धनुष चौवीस हाथ एक अंगुल पांच अर एक अंगुलका तीजाभाग ॥१८॥ अर छठेविषै धनुष छवीस अर अंगुल ४ शरीर ऊंचा है ॥ ९॥ अर सातवें पाथडेविषै धनुष सत्ताईस हाथ तीन अंगुल दोय अर एक अंगुलके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ २०॥ अर आठवें पाथडेविषै धनुष उन्तीस हाथ दोय अर अंगुल एक अर अंगुलके तीन भागनिमें भाग एक ॥२०॥ अर नवमें पाथडेविषै धनुष एकतीस हाथ एक बतलाई है ॥ २१॥ यह तीजे नरकके नव पाथडेनिके नारकीनिकी ऊंचाई कही है ॥२२॥ अर चौथे नरकके पहिले पाथडेविषै धनुष पैंतीस हाथ दो अंगुल बीस अर एक अंगुलके सात भाग करिए तिनमें भाग चारि ॥ २३ ॥ अर दूजे पाथडेविषै धनुष चालीस अंगुल सत्रह अर एक अंगुलका सातवां भागमें एक भाग है ॥२४॥ अर तीजे पाथडेविषै धनुष चवालीस हाथ दो अंगुल तेरह अर सात भागनिमें भाग पांच हैं ॥२५॥ अर चौथे पाथडेविषैं धनुष उनचास अंगुल दश अर अंगुल एकके सातभागनिमें भाग दोय है ॥२६॥ अर पांचवें पाथडे विषै धनुष तिरेपन हाथ दो अंगुल छह अर एकके सातभागनिमें भाग छह ॥२७॥ अर छठेविषै धनुष ५८ अंगुल तीन अर अंगुलके सात भागनिमें भाग तीन ॥२८॥ अर सातवेंविषै धनुष बासठ अर हाथ २ की ऊंचाई है। या भांति चौथे नरकके सात पाथडेनिके नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई कही ॥ ३२९ ॥ अर पांचवें नरकके पहिले पाथडेविषै

अर सातवां नरक माघवी ताविषै पाथडा एक अप्रतिष्ठान ताविषै जघन्य आयुसागर २२ अर उत्कृष्ट आयु
सागर तेतीस ॥ ९२ ॥ याभांति सातों नरककी आयुका वर्णन किया जो पहले उत्कृष्ट सो दूजे एक समय
अधिक जघन्य आयु याही भांति सब पाथडनिमें जानहु ऐसैं नारकीनिकी आयु कही।

अथानंतर—नारकीनिके शरीरकी ऊंचाई कहै हैं। पहिले नरकके पहिले पाथडनिमें नारकीनिका शरीर हाथ
तीन दूजे पाथडेमें धनुष १ हाथ १ अर साढे आठ अंगुल याभांति तेरह पाथडे तक पाथडे पाथडेविषै दोय दोय
हाथ अर साढा आठ २ अंगुल बढता गया अर तीजेमें धनुष १ हाथ ३ अंगुल १७ ॥ ९३ ॥ अर चौथे पाथडेमें
धनुष २ हाथ २ अंगुल १॥, अर पांचवें पाथडेमें धनुष ३ अंगुल १०, ॥ ९४ ॥ अर छठे पाथडेमें धनुष ३ हाथ
२ अंगुल १८॥, ॥ ९५ ॥ अर सातवें पाथडेमें धनुष ४ हाथ १ अंगुल ३ अर आठवें पाथडेमें धनुष ४ हाथ ३
अंगुल ११॥ ॥ ९७ ॥ अर नवमें पाथडेमें धनुष ५ हाथ १ अंगुल वीस ॥ २९८ ॥ अर दशमें पाथडेमें धनुष ६
अर अंगुल साढे चार ॥ ९९ ॥ अर ग्यारहवें पाथडेमें धनुष ६ हाथ २ अंगुल तेरह ॥ ३०० ॥ ऐसा कथन सर्वज्ञ
देवने किया जिनके भ्रम नाहीं वे महाप्रवीण हैं। अर बारहवें पाथडेमें धनुष ७ अंगुल २१॥ ॥१॥ तेरहवें पथडेमें
धनुष ७ हाथ ३ अंगुल ६ या भांति पहिला नरक घम्मा ताके तेरा पाथडनिविषै पुराण पुरुषनि नारकीनिके
शरीरकी ऊंचाई कही ॥ २ ॥ अर दूजे नरकके पहिले पाथडेविषै धनुष ८ हाथ २ अंगुल २ अर एक अंगुलके
ग्यारह भाग करिये तिनमें भाग दोय ॥ ३ ॥ दूजे नरकके दूजे पाथडेमें धनुष ९ अंगुल २२ एक अंगुलके
ग्यारह भागनिमें भाग चार ॥ ४ ॥ अर तीजे पाथडेमें धनुष नौ हाथ तीन अंगुल अठारह अर ग्यारह भागनिमें
भाग छह ॥ १०५ ॥ अर चौथे पाथडेमें धनुष दश हाथ दो अंगुल चौदह अर एक अंगुलके ग्यारह भागनिमें
भाग आठ ॥६॥ अर पांचवें पाथडेमें धनुष ग्यारह हाथ १ अंगुल दश अर ग्यारह भागनिमें भाग दश ॥७॥ छठे
पाथडेमें धनुष बारह अर अंगुल सात अर ग्यारह भागनिमें भाग १ ॥ ८ ॥ अर सातवें पाथडेमें धनुष बारह हाथ
तीन अंगुल तीन अर ग्यारह भागनिमें भाग तीन ॥९॥ अर आठवें पाथडेमें धनुष तेरह हाथ १ अंगुल तेईस अर

सागरके सात भागनिमें भाग तीन ॥ ७८ ॥ अर दूजा पाथडा तार ताविषै जघन्य आयुसागर ७ अर सात भागनिमें भाग ३ अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ अर सात भागनिमें भाग छह ॥ ७९ ॥ अर तीजा पाथडा मार ताविषै जघन्य आयुसागर ७ अर सात भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट आयु सागर ८ अर भाग दो ॥ ८० ॥ चौथा वर्चस ताविषै जघन्य आयु सागर ८ अर सात भागनिमें भाग २ उत्कृष्ट सागर ८ अर भाग पांच ॥ ८१ ॥ अर पांचवां पाथडा तमक ताविषै जघन्य आयुसागर ८ अर एक सागरके सात भागनिमें भाग ५ उत्कृष्ट आयु सागर ९ अर एक सागरका सातवां भाग ॥ ८२ ॥ अर छठा पाथडा खड ताविषै जघन्य आयु सागर ९ अर एक सागरके सात भागनिमें भाग १ उत्कृष्ट आयु सागर ९ अर सात भागनिमें भाग चार ॥ ८ ॥ अर सातवां खडखड ताविषै जघन्य आयु सागर ९ अर भाग ४ अर उत्कृष्ट आयु सागर दस, यह चौथे नरकके सात पाथडेनिका वर्णन किया ॥ ८५ ॥ अर पांचवां नरक अरिष्टा ताका पहिला पाथडा तम ताविषै जघन्य आयु सागर दश अर उत्कृष्ट आयु सागर ११ अर एकसागरके पांचभागनिमें भाग दो अर दूजा पाथडा भ्रम ताविषै जघन्य आयु सागर दश अर पांच भागनिमें भाग दोय अर उत्कृष्ट आयु सागर बारह अर भाग चार ॥ ८६ ॥ अर तीजा पाथडा रिख ताविषै जघन्य आयु सागर बारह अर भाग चार उत्कृष्ट आयु सागर चौदह अर भाग एक ॥८७॥ अर चौथा पाथडा अंध ताविषै जघन्य आयु सागर चौदह अर एक सागरके पांच भागनिमें भाग एक अर उत्कृष्ट आयु सागर पंद्रह अर भाग तीन ॥ २८८ ॥ अर पांचवां पाथडा तमिस्र ताविषै जघन्य आयु सागर पंद्रह अर भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु सागर सतरह ऐसा कथन श्रीवीतराग देवने किया यह पंचम नरकके पाथडनिका व्याख्यान किया ॥ ८९ ॥ अर छठा नरक मघवी ताका पहिला पाथडा हिम ताविषै जघन्य आयु सागर सतरह अर उत्कृष्ट आयु सागर अठारह अर एकसागरके तीनभागनिमें भाग दोय ॥ ९० ॥ अर दूजा पाथडा वर्दल ताविषै जघन्य आयु सागर अठारह अर भाग दो अर उत्कृष्ट आयु सागर वीस अर तीजा भाग ॥ ९१ ॥ अर तीजा ललक ताविषै जघन्य आयु सागर वीस अर एकका तीजा भाग अर उत्कृष्ट सागर बाईस । या प्रकार छठे नरकके तीन पाथडनिका कथन किया

आठवां जिह्वक ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग पांच ॥ ६५ ॥ अर नवमां लोल ताविषै जघन्य आयुसागर २ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भाग पांच, उत्कृष्ट आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग सात ॥ ६६ ॥ अर दसवां लोलुप ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर ग्यारह भागनिमें भाग सात, अर उत्कृष्ट सागर २ अर सागर ग्यारह भागनिमें भाग नव ॥६७॥ ग्यारह तनलोलुप ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर सागरके ग्यारह भागनिमें आयुभाग नव अर उत्कृष्ट सागर तीन ॥ ६८ ॥ यह दूजा नरक जो वंशा ताके ग्यारह पाथडनिकी प्ररूपणा करी ।६९। अर तीजे नरकका पहिला पाथडा तप्त ताविषै जघन्यआयु सागर तीन अर उत्कृष्टआयु सागर तीन अर एक सागरके नवभाग करिए तिनिमें भाग चार अर तीजेका दूजापाथडा तपित ताविषै जघन्य आयु सागर ३ अर नव भागनिमें भाग चार अर उत्कृष्ट आयु सागर तीन अर एकके नव भागनिमें भाग आठ ॥ २७० ॥ अर तीजा पाथडा तपन ताविषै जघन्य आयु सागर ३ अर एकके नव भागनिमें भाग आठ उत्कृष्ट सागर ४ अर नव भागनिमें भाग तीन ॥७१॥ अर चौथा तापन ताविषै जघन्य आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ३ अर उत्कृष्ट आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ७ ॥७२ ॥ अर पांचवां निदाघ ताविषै जघन्य आयु सागर ४ अर नव भागनिमें भाग ७ अर उत्कृष्ट आयु सागर ५ अर नवमें भाग दो ॥७३॥ अर छठा प्रज्वलित ताविषै जघन्य आयु सागर ५ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग २ अर उत्कृष्ट सागर पांच अर नव भागनिमें भाग छह ॥७४॥ अर सातवां उज्वलित ताविषै जघन्य आयु सागर ५ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट सागर ६ अर नव भागनिमें भाग एक ॥२७५॥ अर आठवां संज्वलित ताविषै जघन्य आयुसागर ६ अर एकसागरके नवभागनिमें भाग १ उत्कृष्ट सागर ६ अर एक सागरके नव भागनिमें भाग पांच ॥७६॥ अर नवमां संप्रज्वलित ताविषै जघन्य आयुसागर ६ अर नव भागनिमें भाग पांच अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ यह तीजे नरकके नव पाथडनिका निर्णय किया ॥७७॥ अर चौथा नरक अंजना ताका पहिला पाथडा आर ताविषै जघन्य आयु ७ सागर अर उत्कृष्ट आयु सागर ७ अर एक

अर उत्कृष्ट आयु सागरके दश भागनिमें भाग तीन ॥५३॥ अर सातवां असंभ्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरके दश भागनिमें भाग तीन अर उत्कृष्ट आयु एक समय अधिक सागरके दशभागनिमें भाग चार ॥ ५४ ॥ अर आठवां विभ्रांत ता विषै जघन्य आयु सागरके दस भागनिमें भाग ४ अर उत्कृष्ट आयु आध सागर अर नवमां त्रस्त ता विषैं जघन्य आयु सागर आध अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग सात ॥ ५५ ॥ अर दसमां त्रसित ता विषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दस भागनिमें भाग छै अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें सात भाग ॥ ५६ ॥ अर ग्यारवां वक्रांत ताविषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दस भागनिमें सात भाग अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग आठ ॥ २५७ ॥ अर बारवां अविक्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरके दस भागनिमें भाग आठ अर उत्कृष्ट आयु सागरके दस भागनिमें भाग नव ॥५८॥ अर तेरवां विक्रांत ताविषै जघन्य आयु एक समय अधिक सागरके दश भागनिमें भाग नौ अर उत्कृष्ट आयु सागर एक, यह प्रथम नरकके नारकीनिकी आयु कही । अर दूजे नरकका पाथडा पहिला तर्क ताविषै जघन्य आयुसागर १ किंचित् अधिक अर उत्कृष्ट आयुसागर १ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भाग दोय ॥५९॥ अर दूजा पाथडा तनक ताविषै जघन्य आयु सागर १ अर एक सागरके ग्यारह भागनिमें भागदोय अर उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग चार अर तीजा पाथडा मनक ताविषैं जघन्य आयु सागर १ अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग ४, उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारहं भागनिमें भाग ६ ॥६०॥ चौथा पाथडा वनक ताविषै जघन्य आयु सागर १, अर सागरके ग्यारह भागनिमें भाग ६ अर उत्कृष्ट आयु सागर १ अर ग्यारह भागनिमें भाग आठ ॥६१॥ अर पांचवां पाथडा घाट ताविषै जघन्यआयु सागर १ अर एकसागरके ग्यारह भागनिमें भाग ८ अर उत्कृष्ट आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग दस ॥ ६२ ॥ अर छठा पाथडा संघात ताविषै जघन्य आयु सागर १ ग्यारह भागनिमें भाग १० अर उत्कृष्ट आयु सागर २, ग्यारह भागनिमें भाग एक ॥६३॥ अर सातवां जिह्व ताविषै जघन्य आयु सागर २ अर भाग १, उत्कृष्ट आयु सागर २ अर ग्यारह भागनिमें भाग तीन ॥६४॥ अर

विलानिका अंतर ३२४९ योजन अर धनुष ३५०० ॥ ३२ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ३२४९ योजन अर धनुष २००० ॥ ३३ ॥ ऐसे भेद सर्वज्ञ देवने कहे हैं । अर प्रकीर्णकनिका अंतर ३२४८ योजन अर धनुष ५५०० ॥ ३३४ ॥ अर चौथे नरकविषै इंद्रकनिका अंतर ३६६५ योजन अर धनुष ७५०० ॥ ३५ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ३६६५ योजन अर धनुष ५५५५ अर एक धनुषके नव भाग करिये तिनिमें भाग पांच लीजिये ॥ ३६ ॥ अर प्रकीर्णकनिका अंतर ३६६४ योजन अर धनुष ७७२२ सौ अर एक धनुष के नव भाग करिये तिनिमें भाग दोय लीजे ॥ ३७ ॥ अर पांचवें नरकविषै इंद्रक विलानिका अंतर ४४९९ योजन अर ५०० धनुष ॥ ३८ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ४४९८ योजन अर धनुष ६००० अर प्रकीर्णकनिका अंतर ४४९७ योजन अर धनुप ६५०० ॥ ४२ ॥ अर छठे नरकविषै इंद्रकनिका अंतर ५९९८ योजन अर धनुष ५५०० सौ ॥ ४३ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ६९९८ योजन अर धनुष २००० अर प्रकीर्णकनिका अंतर ६९९६ योजन अर धनुष ७५०० ॥ ४५ ॥ अर सप्तम नरकविषैं अर इंद्रक एक ही है अर श्रेणीवद्ध चार अर प्रकीर्णक हैं ही नाहीं सो इंद्रकनिका श्रेणीबद्धसूं अंतर ३९९९ योजन अर कोस २ अर श्रेणीवद्धनिमें परस्पर अंतर तीन हजार नौसै निन्यानवै योजन अर एक कोसका तीजा भाग ॥ ४७ ॥

अथानंतर—उनचास पाथड़निमें आयुका कथन करै हैं, प्रथम नरकविषै पहिला पाथडा सीमंतक तहां जघन्य आयु नारकीनकी दश हजार वर्ष अर उत्कृष्ट आयु नव्बे हजार वर्ष ॥ २४८ ॥ अर दूजा पाथडा तारक ताविषै जघन्य आयु ९०:० वर्ष किंचित् अधिक अर उत्कृष्ट आयु नव्बे लाख वर्ष ॥४९॥ अर तीजा पाथडा रौरव ताविषै जघन्य आयु नव्वै लाख वर्ष अर एक समय अधिक । अर उत्कृष्ट आयु असंख्यात कोडि पूर्व ॥ ५० ॥ अर चौथा पाथडा भ्रांत ताविषै जघन्य आयु असख्यात कोटिपूर्व एक समय अधिक अर उत्कृष्ट आयु सागरका दसवां भाग ॥२५ ॥ अर पांचवां उद्भ्रांत ताविषैं जघन्य आयु सागरका दसवां भाग एक समय अधिक अर उत्कृष्ट आयु सागरका पांचवां भाग ॥५२॥ अर छठा संभ्रांत ताविषै जघन्य आयु सागरका पांचवां भाग अर एक समय अधिक

है अर श्रेणीबद्ध विले तिनिकी भूमिकी मुटाई एक कोस अर कोसका तीजा भाग, अर जो प्रकीर्णक विले तिनिकी मुटाई भूमिविषै कोस एक अर कोसके तीन भागनिमें भाग एक ॥२१८॥ अर वंशा कहिये दूजा नरक ताविषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस डेढ। अर श्रेणीवद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस दोय। अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस साढे तीन अर तीजा नरक मेघा ता विषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस दोय अर श्रेणीबद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस दोय अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस चार अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ १९ ॥ अर चौथा नरक अंजना ताविषैं इंद्रकनिकी भूमिकी मुटाई कोस ढाई अर श्रेणीवद्ध भूमिकी मुटाई कोस ३ अर एक कोसका तीजा भाग अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस पांच। अर एक कोसके छै भाग करिये तिनिमें भाग पांच ॥ २२० ॥ अर अरिष्ठा पांचवां नरक ताविषैं इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस ३, अर श्रेणीवद्धनिकी कोस ४, अर प्रकीर्णकनिकी कोस ७ ॥ २१ ॥ अर छठा नरक मघवी ता विषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस साढे तीन अर श्रेणीवद्धनिकी भूमिकी मुटाई कोस ४ अर एक कोसके तीन भागनिमें भाग दोय अर प्रकीर्णकनिकी भूमिकी मुटाई कोस आठ, एक कोसका छठा भाग ॥ २२२ ॥ सातवां नरक माघवी ताविषै इंद्रककी भूमिकी मुटाई कोस ४, श्रेणीवद्ध चार तिनकी भूमिकी मुटाई कोस पांच एक कोसका तीजा भाग, या भांति सब विलानिका विस्तार अर भूमिकी मुटाईका वर्णन कहा।

अथानंतर—विलानिका अंतर कहें हैं। प्रथम नरकविषै इंद्रक विलानिमें परस्पर अंतर ६४९९ योजन अर कोस दोय, अर एक कोसके भाग बारह करिये तिनिमें ग्यारह भाग लीजेये ॥ २५ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर ६४९९ योजन अर दोय कोस अर कोसके नव भागनिविषै भाग पांच लीजै ॥ २६ ॥ अर प्रकीर्णका अंतर ६४९९ योजन कोस एक अर कोसके छत्तीस भाग करिये तिनिमें सतरह भाग लीजै ॥ २७ ॥ अर दूजे नरक विषै इंद्रक विला २९९९ योजन अर धनुष ४७०० ॥ २८ ॥ अर श्रेणीवद्धनिका अंतर २९९९ योजन अर धनुष छत्तीस सौ ॥ २९ ॥ अर प्रकीर्णका अंतर २९९९ योजन अर धनुष तीनसौ ॥ ३१ ॥ अर तीजे नरकविषै इंद्रक

... छ्यानवे हजार छह
... अर सैंतीसवां वर्चस्क ताका विस्तार बारहला
... ग्यारह लाख आठ हजार तीनसे तेतीस योजन एक योजनके ती
... अर उणतालीसवां खड ताका विस्तार दश लाख सोलह हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर
तीन भागनिमें भाग दो ॥६॥ चालीसवां खडखड ताका विस्तार नव लाख पचीस हजार योजन ये चौथे नरकके
सात इंद्रक कहे ॥ ७ ॥ अर पांचवें नरकका प्रहिला इंद्रक तम सो उनचासमें इकतालीसवां ताका विस्तार आठ
लाख तेतीस हजार तीनसौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥२०८॥ अर बयालीसवां भ्रम ताका
विस्तार सात लाख इकतालीस हजार छै सौ छ्यासठ योजन अर एक योजनके तीन भागनिमें भाग दो ॥ ९ ॥
अर तियालीसवां रिष ताका विस्तार छै लाख पंचास हजार योजन ॥ १० ॥ अर चवालीसवां अंध ताका विस्तार
पांच लाख अठानवै हजार तीन सौ तेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥११॥ अर पैंतालीसवां तमिस्र
ताका विस्तार चार लाख छ्यासठ हजार छैसौ छ्यासठ योजन, योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ये पंचम नरकके
पंच इंद्रक कहे ॥२१२॥ अर छठे नरकका पहिला इंद्रक हिम, सो उनंचासमें छ्यालीसवां ताका विस्तार तीन लाख
पिचहत्तर हजार योजन केवलदर्शीने दिखाया ॥ १३ ॥ सैंतालीसवां वर्दल ताका विस्तार दोय लाख तियासी हजार
तीन सौ तेतीस योजन, योजनका तीजा भाग ॥ १४ ॥ अडतालीसवां लल्लक ताका विस्तार एक लाख इक्यानव
हजार छैसौ छ्यासठ योजन अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ।१५। ये छठे नरकके तीन इंद्रक कहे। अर सातवें
नरकका अप्रतिष्ठान नामा इंद्रक एक ताका विस्तार एक लाख योजन यह वस्तुनिका विस्तार समस्त विस्तार वेत्ता
जो सर्वज्ञ देव तिनि कहा ॥२१६॥ ये सात नरकनिके उनचास पाथडे हैं, सो एक २ पाथडेविषैं एक २ इंद्रक बिला
जो पाथडेका नाम सोई इंद्रक बिलेका नाम यह तो समस्त इंद्रकनिके विस्तारका वर्णन किया ॥२१७॥ अब इंद्रक
निकी भूमिकी मुटाई कहिये जाडापना सो सुनहु। धम्मा कहिये पहिला नरक ताविषैं इंद्रककी मुटाई एक कोसकी

भागनिमें भाग दोय अर उन्नीसवां संघाट ताका विस्तार अट्ठाईस लाख पचासहजार योजन ॥ ८८ ॥ अर वीसवां जिह्व ताका विस्तार सत्ताईसलाख अठावनहजार तीनसौ तेतीस योजन, एक योजनका तीजाभाग ॥ ८९ ॥ अर इक्कीसवां जिह्वक ताका विस्तार छब्बीसलाख छ्यासठ हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर एकयोजनके तीन भागनिमें दोयभाग ॥ ९० ॥ अर बाईसवां लोल ताका विस्तार पचीस लाख पिचहत्तर हजार योजन अर तेईसवां लोलुप ताका विस्तार चौबीसलाख तिरासीहजार तीनसो तेतीस योजन अर योजनका तीजाभाग ॥ ९१ ॥ अर चौबीसवां तनुलोलुप ताका विस्तार तेईसलाख इकानवे हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ ९२ ॥ ये दूजे नरकके ग्यारह इंद्रक कहे अर तीजे नरकका पहिला इंद्रक तप्त सो उनचासकी गिनतीमें पचीसवां ताका विस्तार तेईस लाख योजन ॥ ९३ ॥ छब्बीसवां तपित ताका विस्तार बाईस लाख आठहजार तीनसौ तेतीस योजन अर योजनका तीन भागनिमें भाग एक ॥९४॥ अर सत्ताईसवां तपन ताका विस्तार इक्कीसलाख सोलहहजार छहसौ छियासठ योजन, एकयोजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥९५॥ अर अट्ठाईसवां तापन ताका विस्तार बीसलाख पचीस हजार योजन एक योजनका तीजा भाग ॥ ९६ ॥ अर उनतीसवां निदाघ ताका विस्तार उन्नीस लाख तैंतीसहजार तीनसौ तैंतीस योजन अर योजनका तीजा भाग ॥ ९७ ॥ तीसवां प्रज्वलित ताका विस्तार अठारह लाख इकतालीस हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर योजन एकके तीन भागनिमें भाग दोय ॥ १९८ ॥ इकतीसवां उज्वलित ताका विस्तार सतरह लाख पचासहजार योजन ॥९९॥ बत्तीसवां संज्वलित ताका विस्तार सोलह लाख अठावन हजार तीनसै तेतीस योजन अर योजनका तीजा भाग ॥ २०० ॥ अर तेतीसवां संप्रज्वलित ताका विस्तार पंद्रहलाख छ्यासठ हजार छहसौ छ्यासठ योजन अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥१॥ या प्रकार तीजे नरकके नव पाथडे कहे यहांलग उनचासमें तैतीस भए। अर चौथे नरकका पहिला इंद्रक आर सो उनचासमें चौंतीसवां ताका बिस्तार चौदह लाख पिचहत्तर हजार योजन अर योजनके तीन भागनिमें भाग दोय ॥३॥ पैंतीसवां तार ताका विस्तार तेरहलाख त्रियासी हजार तीनसौ तैंतीस

तिनिका विस्तार कहै हैं-पहला सीमंतक ताका विस्तार पैंतालीस लाख योजन अर दूजा नरक ताका विस्तार चवालीस लाख आठहजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनके तीन भाग करिए ताका एक भाग अर तीजा रौरव ताका विस्तार तैंतालीस लाख सोलहहजार छहसो छियासठ योजन अर एक योजनके तीन भाग करिये तामैं दोय भाग ॥ ७२ ॥ अर चौथा भ्रांत ताका विस्तार वयालीसलाख पचीसहजार योजन ॥ ७३ ॥ अर पांचवां उपभ्रांत ताका विस्तार इकतालीसलाख तैतीसहजार तीनसौतैतीस योजन एक योजनके तीन भागनिमें एक भाग ॥७५॥ अर छठा संभ्रांत ताका विस्तार चालीसलाख इकतालीसहजार छहसो छ्यासठ योजन अर योजनिके तीनभागनिमें भाग दोय अर सातवां असंभ्रांत ताका विस्तार गुणतालीसलाख पचासहजार योजन ॥७६॥ अर आठवां विभ्रांत ताका विस्तार अडतीलीसलाख अट्ठावनहजार तीनसोतेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥७७॥ अर नवमां त्रस्त ताका विस्तार तेतीसलाख छ्यासठि हजार छहसौछ्यासठ योजन अर एकयोजनके तीनभाग तिनमें दोय भाग ॥७८॥ अर दशवां त्रसित ताका विस्तारं छत्तीसलाख पिचत्तर हजार योजन ॥ ७९॥ अर ग्यारहवां वक्रांत ताका विस्तार पैंतीसलाख तियासी हजार तीनसौतेतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग। अर बारहवां अवक्रांत ताका विस्तार चौतीस लाख इक्याणवें हजार छसै छासठि योजन। अर एक योजनके तीन भागनिमेंसे दोय भाग ॥ ८१ ॥ अर तेरवां विक्रांत ताका विस्तार चौतीसलाख योजनका है ॥ ८२ ॥ ये प्रथम नरकके तेरह इंद्रक कहे ॥ ८३ ॥ अब दूजे नरकका पहिला पाथडा इंद्रक तर्क सो उनचासकी गिनतीमें चौदह गिणिए ताका विस्तार तेतीसलाख आंठहजार तीनसौतैतीस योजन अर एक योजनका तीजा भाग ॥ ८४ ॥ अर पंद्रहवां तनक ताका विस्तार बत्तीसलाख सोलहजार छहसो छ्यासठ योजन अर एक योजनके तीनभागनिमें भाग दोय ॥ ८५ ॥ अर सोलवहां मनक ताका विस्तार इकतीसलाख पच्चीसहजार योजन ॥८६॥ सत्रहवां वनक ताका विस्तार तीसलाख तेतीसहजार तीनसै तेतीस योजन अर एकयोजनका तीसराभाग ॥ ८७ ॥ अर अठारहवां घाट ताका विस्तार गुणतीसलाख इकतालीसहजार छहसौ छ्यासठ योजन एक योजनके तीन

महाविंध्य ॥ ५२ ॥ अर तीजे नरकका पहला इंद्रक तप्त ताके श्रेणीवद्ध चारि तिनिके नाम—पूरब दिशाका दुःख पश्चिमका महादुःख दक्षिणका वेदना उत्तरका महावेदना ॥ ५३ ॥ अर चौथे नरकका पहला पाथड़ा अर ताके श्रेणीवद्ध च्यारि पूरब दिशाका निसृष्ट पश्चिमका अति निसृष्ट दक्षिणका निरोध उत्तरका महानिरोध ॥ ५४ ॥ अर पांचवें नरकका पहिला पाथड़ा तम ताके इंद्रकका भी नाम तम ताके समीपवर्ती च्यारि श्रेणीवद्ध तिनमें पूरब दिशाकी निरुद्ध पश्चिमका अतिनिरुद्ध दक्षिणका विमर्दन उत्तरका महाविमर्दन अर छठे नरकका पहला पाथडा हिम ताके इंद्रकका भी नाम हिम ताके श्रेणीवद्ध पूरव दिशाका नील पश्चिमका महानील दक्षिणका पंक उत्तरका महापंक अर सातवें नरकका एकही पाथडा अप्रतिष्ठान ताके श्रेणीवद्ध चारि पूर्वदिशानिका काल पश्चिमका महाकाल दक्षिणका रौरव उत्तरका महारौरव ॥ ५७ ॥ सब चौरासीलाख विले तिनमें तिरासी लाख नव्वेहजार तीनसै सैंतालीस प्रकीर्णक अर गुणचास पाथडे इंद्रक तिनसहित छ्यानवैसै तिरेपन श्रेणीवद्ध ए सब मिलि चौरासी लाख है तिनमें पहले नरकविषै विले तीस लाख तिनमें ६ लाख तौ संख्यात योजनका विस्तार अर चौबीस लाख असंख्यात योजनके विस्तार ॥ अर दूजे नरके पांच लाख संख्यात योजन विस्तारि । अर वीस लाख असंख्यात योजनके विस्तार अर तीजे नरक तीनलाख संख्यात योजनके विस्तार अर वारहलाख असंख्यात योजनके विस्तार अर चौथे नर्क दोय लाख संख्यात योजनके विस्तारि अर आठ लाख असंख्यात योजनके विस्तारि ॥ ६३ ॥ अर पांचवें नर्क साठ हजार संख्यात योजनके विस्तारि अर दोयलाख चालीसहजार असंख्यात योजनके विस्तारि अर छठे नर्क उगणीसहजार नौसै निन्याणवै संख्यात योजनके विस्तारि ॥ ६५ ॥ अर गुण्यासी हजार नौसै छ्यानवै असंख्यातयोजनके विस्तार ॥ ६६ ॥ अर सातमें नरक एक संख्यात योजनके विस्तारि । अर चारि असंख्यात योजनके विस्तार ॥६७॥ विलानिके तीनभेद इंद्रक १ श्रेणीबद्ध २ प्रकीर्णक ३ अर तीनंनं गुणचास इंद्रक सो तो सब संख्यात योजनके विस्तार अर श्रेणीबद्ध सकल असंख्यात योजनके विस्तार अर प्रकीर्णकनिमें कैयक संख्यात योजनके विस्तार अर कैयक असंख्यात योजनके विस्तार ये दोयरूप॥६९॥अथानंतर-गुणचास इंद्रके

पांचवां तमक ताविषैं दिशानिके ४८ विदिशानिके ४४ सब मिलि ९२ ॥ ३२ ॥ अर छठा खंड ताविषै दिशानिके ४४ अर विदिशानिके ४० सब मिलि ८४ ॥३३॥ सातवां खडखड ताविषै दिशानिके ४० अर विदिशानिके ३६ कुल ७६ ॥ ३४ ॥ याभांति चौथे नरकके सात पाथडें तिनमें सात इन्द्रक विले तिन सहित श्रेणीबद्ध सातसैसात अर प्रकीर्णक ९९२९३ सब मिलि दशलाख। अर पांचवें नरकके पाथडे पांच तिनमें पहिला तम ताविषैं दिशानके ३६ अर विदिशानिके ३२ सब मिलि ६८ अर दूजा भ्रम ताविषैं दिशानिके ३२ अर विदिशानिके २८ सब मिलि ६० ॥ ३८ ॥ तीजा रिख ताविषैं दिशानिके २८ विदिशानिके २४ सबमिलि ५२ ॥३९॥ अर चौथा अंध ताविषैं दिशानिके २४ अर विदिशानिके २० सब मिलि चालीस ॥४०॥ पांचवां तमिश्र ताविषैं दिशानिके २० अर विदिशानिके १६ सब मिलि छत्तीस ॥४१॥ याभांति पांचवें नर्कके पांच पाथडानिमें इंद्रकविला पांच तिन सहित श्रेणीबद्ध दोयसै पैंसठ ॥४२॥ अर प्रकीर्णक २९९७३५ सब मिलि तीन लाख ॥४३॥ अर छठे नरकके पाथडे तीन तिनमें पहिला हिम ताविषैं दिशानिके १६ अर विदिशानिके १२ सबमिलि २८ ॥४४॥ दूजा वर्दल ताविषैं दिशानिके १२ अर विदिशानिके ८ सब मिलि २० ॥४५॥ अर तीजा लल्लक ताविषैं दिशानिके आठ अर विदिशानिके चार सब मिल बारह ॥४६॥ याभांति तीन पाथडानिमें ३ इंद्रक विला तिन सहित श्रेणीबद्ध ६३ अर प्रकीर्णक ९९९३२ सब मिलि ५ घाट १ लाख ॥४७॥ अर सातवें नरकविषैं पाथड़ा एक जाका नाम अप्रतिष्ठान ताविषैं विला पांच तिनमें इंद्रक एक अर चारों दिशानिविषै चार श्रेणीबद्ध अर विदशानिविषैं नाहीं ॥ ४९ ॥ अर पहले नरकका पहला पाथड़ा सीमंतक ताविषैं इंद्रकहूका नाम सीमंतक ताकी चारि दिशानिके जे श्रेणीबद्ध इंद्रकके समीप तिनके नाम। पूरव दिशाकी उर कांक्ष पच्छिमकी उर महाकांक्ष दक्षिणकी उर पिपास उत्तरकी उर अतिपिपास ए चार प्रथम नरकके प्रथम पाथड़ेके समीपवर्त्ती दिशानिके श्रेणीबद्ध कहे। कैसे हैं नरकनिके विले महाकुरूप नारकीनिकरि भरे हैं अर प्रसिद्ध हैं ॥ ५१ ॥ अर दूजे नरकका पहिला पाथड़ा तरक ताके इंद्रकहूका नाम तरक ताके समीपवर्ती दिशानिविषै च्यारि श्रेणीवद्धनिके नाम-पूरवदिशाका अनिच्छ पश्चिमका महाअनिच्छ दक्षिणका विंध्य उत्तरका

सौ अठाईस अर विदिशानिकें १२४ सबमिलि २५२ ॥८॥ अर छठे संघाट ताविषैं दिशानिके १२४ अर विदिशानिके १२० सब मिलि २४४ ॥ ९ ॥ सातवां जिह्व ताविषै दिशानिके १२० अर विदिशानिके ११६ सब मिलि २३६ ॥ १० ॥ आठवां जिह्वक ताविषैं दिशानिके ११६ अर विदिशानिके ११२ सब मिलि २२८ ॥ ११ ॥ अर नववां लोल ताविषैं दिशानिके ११२ विदिशानिके १०८ सब मिलि २२० हैं ॥ १२ ॥ अर दशवां लोलुप ताविषैं दिशानिके १०८ विदिशानिके १०४ सब मिलि २१२ ॥ १३ ॥ अर ग्यारहवां स्तनलोलप ताविषैं दिशानिके १०४ विदिशानिके १०० सब मिलि २०४ ॥ १४ ॥ दूजे नरकके ग्यारह पाथडे तिनमें इंद्रक ग्यारा तिनसहित श्रेणीवद्ध २६९५ ॥ १५ ॥ अर प्रकीर्णक चौवीसलाख सित्याणवेहजार तीनसौ पांच सबमिलि एकलाख पचीस ॥१६॥ अर तीजे नरकके नवपाथडे तिनमें पहला तप्त ताविषै दिशानिके सौ विदिशानिके छ्यानवे सबमिलि १९६ ॥१७॥ अर दूजा तपित ताविषैं दिशानिके छिनवै अर विदिशानिके ९२ सब मिल १८८ ॥१८॥ अर तीजा तपन ताविषैं दिशानिके बाणवै अर विदिशानिके ८८ सब मिलि १८० ॥१९॥ अर चौथा तापन ताविषै दिशानिके ८८ विदिशानिके ८४ सब मिलि १७२ ॥ २० ॥ अर पांचवां निदाघ ताविषैं दिशानिके ८४ विदिशानिके ८० सब मिलि १६४ ॥ ॥ २१ ॥ अर छठा प्रज्वलित ताविषै दिशानिके अस्सी विदिशानिके ७६ सब मिलि १५६ ॥ २२ ॥ अर सातवां उज्ज्वलित ताविषै दिशानिके छिहत्तरि विदशानिके वहत्तरि सब मिलि १४८ ॥ २३ ॥ अर आठवां संज्वलित ताविषै दिशानिके ७२ विदिशानिके ६८ सब मिलि १४० ॥ २४ ॥ अर नबमां संप्रज्वलित ताविषै दिशानिके ६८ विदिशानिके ६४ सब मिलि १३२ ॥ २५ ॥ या भांति तीजे नरकके पाथडे नव तिनिमें नव इन्द्रक विलानिसहित श्रेणीवद्ध १४८५ अर प्रकीर्णक १४९८५१५ ॥ २७ ॥ चौथे नरकके पाथडे सात तिनमें पहला अर ताविषैं दिशानिके ६४ विदिशानिके ६० सब मिलि १२४ ॥ २८ ॥ दूजा तार ताविषैं दिशानिके साठ अर विदिशानिके ५६ सब मिलि ११६ ॥ २९ ॥ अर तीजा मार ताविषैं दिशानिके ५६ विदिशानिके ५२ सब मिलि १०८ ॥ ३० ॥ चौथा चर्चक ताविषैं दिशानिके ५२ विदिशानिके ४८ सब मिलि १०० ॥ ३१ ॥ अर

आश्चर्यकरि युक्त भई अर प्रातःसमय स्नानकरि वस्त्राभरण पहरि पतिके निकट जाय स्वप्नका फल पूछती भई तव वसुदेव महाविवेकी कहते भए हे प्रिये ! तेरे पुत्र सूर्यके देखिवेतैं महाप्रतापी अन्यायरूप तिमिरका हरणहारा जगतका सूर्य होयगा अर चंद्रमाके अवलोकनतैं महाकांतिका धारक परम सुंदर पुत्र होयगा अर लक्ष्मीके स्नानतैं देवनिकरि राज्याभिषेक योग्य होयगा अर विमान देखिवेतैं देवलोकतैं आवेगा अर अग्निके देखिवेतैं महा तेजवंत होयगा अर देवनिकी ध्वजा देखिवेतैं देवनिकरि प्रशंसा योग्य मनुष्यनिका पति होयगा अर रतनराशि देखिवेतैं गुणरूप रतननिके समूहका धारक होयगा महासुंदर जगतका वल्लभ धैर्यका धारक निर्भय पुरुष होयगा ये स्वप्नके फल भर्तारके मुखतैं देवकी सुनकरि अतिहर्षित भई गर्भकूं धारती भई। ज्यूं ज्यूं देवकीका गर्भ बढै त्यूं त्यूं जगतका आताप मिटता गया। ज्यूं ज्यूं गर्भकी वढवारी भइ त्यूं त्यूं गौतम स्वामी कहै हैं। हे राजा श्रेणिक ! पृथ्वीविषैं सर्व जीवनिकूं सुख वढता भया। जीवनिके धर्मरूप मन होय गए ॥ १६ ॥ अर कंस जो है सो वहनके गर्भके दिन गिनता जाय परंतु नारायणके गुण न गिनै जो ऐसा पुरुष मोतैं हत्या जाय यह न विचारी। यह तो जानै नव महीने पुत्र होयगा अर वसुदेवका जन्म सातवैं मास ही भया। सो वाहि सुधि न रही। रात्रिसमय कृष्णनामा पुत्रका जन्म भया ॥ १८ ॥ शंख चक्र गदा आदि शुभ लक्षणनिका धारक अति दैदीप्यमान इंद्रनीलमणिसमान श्याम सुंदर देवकीके प्रसूतिगृहकूं अपनी दीप्तिकरि उद्योत करता भया ॥ १९ ॥ जासमय कृष्णका जन्म भया तासमय मित्र बांधवनिके कल्याणके कारण शुभ निमित्त होते भए अर शत्रुनिके घरमें भयके कारण अशुभनिमित्त होतेभए सो नरनिमें उत्तम जो नारायण ताके प्रभावतैं प्रकाश होयगया। सात दिनका अखंड कुंड भया हुता सो रात्रिसमय होते ही बालककूं वसुदेव बलभद्र ले निकसे। बलभद्रकी गोदमें वासुदेव अर वासुदेवके हाथमें छत्र याभांति ये दोऊ घरतैं निकसे। कंसके सुभट सूते हुते सो सूतेही रहे। तिनिमें एकहू न जाग्या अर नगरके द्वार आय पहुंचे तहां भी लोग सूते ही रहे अर द्वारके दृढ कपाट सो कृष्णके चरण

सेठानी रेवतीनामा धाय ताके घर ले गया अर वाके मृतकयुगल भया हुता सो देवकीके प्रसूतिगृहविषैं मेलि देव तो अपने स्थानक गया अर कंसकूं प्रसूतिकी खबर भई सो वह पापी प्रसूतिगृहमें आय निर्जीव पुत्रनिका युगल देखता भया तौहू कंस पापका ग्रस्या पांय पकरि अर शिलापरि पटके ॥ ६ ॥ बहुरि कैयक दिनमें देवकीके दूजा गर्भ रह्या ताविषैं अनिकदत्त अनिकपाल आये सो इनिका जन्म भया तब यह देव वाही भांति इनिकूं भद्रलपुरविषैं सुदृष्टिनामा सेठ ताकी अलकानामा स्त्रीके पहुंचाये अर वाके मृतक युगल भया हुता सो यहां ल्याये तेऊ पापी कंसने शिलापरि पटकि मारे बहुरि तीजे गर्भ शत्रुघ्न अर यतिशत्रु ये दोऊ पुत्र भए तिनहूकूं वाही भांति देव लेय गया अर वाके मृतकपुत्र यहां ल्याय डारे। वसुदेवके छहों पुत्र निर्विघ्नपने भद्रलपुरमें अलका नामा सेठानीके पले जिनिका पुण्य रक्षक तिनिकूं विघ्न करिवे समर्थ नाहीं। वे छहों पुत्र अतिरूपवान सुखसूं लडाये थके वृद्धिकूं प्राप्त भए ॥ ८ ॥ ज्यूं ज्यूं ये कुमार श्रेष्ठी सुदृष्टिनामा श्रावकके घर अलका सेठानीके पले अर वृद्धिकूं प्राप्त भए त्यूं त्यूं सेठि सेठानीके अतुल्य लक्ष्मी बढती भई। जे अपूर्व वस्तु सेठिके घरमें न हुती तिनिका लाभ भया। सेठकी विभूति राजानिकी विभूतिकूं उलंघती भई। कैयक दिन देवकी पुत्रनिके वियोगतैं चिंतारूप भई। जब वसुदेव कही तेरे पुत्र तो भद्रलपुरविषैं आनंदसूं तिष्ठै है तू चिंतावान क्यूं है। तब यह पतिके वचनतैं इनिकी चंद्रमाकी कलाकी नाईं कांति करि बढती भई ॥ १० ॥ अथानंतर—एकांतमें देवकी अपने मंदिरविषैं पतिकी सेजपर शयन करती हुती सो रात्रिकूं पिछले पहर प्रशंसा योग्य यानैं सात स्वप्न देखे। तिनिके नाम, पहिले स्वप्नमें अंधकारका नाश करणहारा सूर्य देख्या। दूजे स्वप्नमें महा मनोहर पूर्ण चंद्रमा देख्या तीजे स्वप्नमें दिग्गज लक्ष्मीकूं स्नान करावते देख्या। चौथे स्वप्नमें आकाशमें पृथ्वीविषैं विमान आवता देख्या पांचवें स्वप्नमें दैदीप्यमान अग्नि देखी। छठे स्वप्न देवनिकी ध्वजा देखी अर सातवें स्वप्न कांतिकरियुक्त रतननिकी राशि देखी अर इन स्वप्ननिके पीछे सिंह मुखमें प्रवेश करता देख्या ॥ १३ ॥ ये अपूर्व स्वप्न देखिवेकरि देवकी

प्रीत्यंकरनामा पुत्रकूं राज देय आप संसार शरीर भोगतैं विरक्त होय प्रायोपगमननामा संन्यास धारि आराधना
आराधि अच्युतनामा सोलहवां स्वर्ग ताविषैं बाईस सागरके आयुका धारक अच्युतेंद्र भया ॥ ४१ ॥ फिर तहांतैं
चयकरि हस्तिनापुरविषैं परम जिनधर्मी राजा श्रीचंद्र ताके श्रीमतीनामा राणी ताके सुप्रतिष्ठनामा पुत्र भया
॥ ४२ ॥ कैयक दिनमें राजा श्रीचंद्र सुप्रतिष्ठकूं राज देय सुमंदिरनामा मुनिके निकट मुनि होय मोक्ष प्राप्त भए
अर राजा सुप्रतिष्ठ मासोपवासी यशोधरनामा मुनि तिनकूं विधिपूर्वक आहार दिया सो राजाके पंचाश्चर्य भए
॥ ४४ ॥ एकदिन राजा कार्तिककी पून्यूंकी रात्रिविषैं आठसौ राणीनि सहित तिष्ठै हुता सो उल्कापात देखकरि
राजलक्ष्मीकूं विनश्वर जानि अपनी सुनंदानामा राणीका सुदृष्टिनामा पुत्र ताकूं राज देय सुमंदिरनामा मुनिके
समीप चारहजार राजानिसहित महाव्रत धारता भया ॥ ४७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र तपवीर्यकी वृद्धि भई ग्यारह
अंग चौदह पूर्व पढे ॥ ४८ ॥ अर सर्वतोभद्र आदि अनेक तपकरि अपना शरीर शोषित किया जेते सिंहनिःक्री-
डतादि महा तप हैं वे सब सुप्रतिष्ठनामा मुनिने किये ॥ ४९ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ महोपवासवर्णनोनाम चतुस्त्रिंशतःसर्गः ॥ ३४ ॥

अथानंतर—श्रीअरिष्टनेमिका चरित्र वसुदेव अतिमुक्तिक मुनिके मुख सुनिकरि परम हर्षित भया सो
मुनिकूं नमस्कारकरि देवकी सहित अपने घर गया। जैसैं मथुरापुरीविषैं पहले रमते हुते क्रीडाकरि आशक्त
ताही भांति निःशंक रमते भए अर शंकासहित जो कंस ताकरि अति सेवनीक कैयक दिनमें पहला गर्भ देवकीकूं
रह्या तामें नृप अर देवपाल ये दोऊ पुत्र गर्भमें आए परंतु कंसका भय नाहीं अर शत्रुके योगतैं महा भय होय
परंतु प्रबल सहाईके सहायतैं भयका नाश ही होय। वसुदेवके धर्मका सहाय अर इंद्रादिक देवनिका सहाय जा
समे देवकीके युगलपुत्र भए ताही समय इंद्रकी आज्ञातैं एक नैगमनामा देव दोऊ पुत्रनिकूं भद्रलपुरविषैं अलकानामा

राजाने बुलाये तिनकूं राजा कहता भया हो समस्त विद्याधरो ! जो गमनविषैं मेरी पुत्रीकूं जीते ताहि मैं पुत्री परणाऊं अर वह सुमेरकी प्रदक्षिणा करके जिनवरकी पूजा करै अर दोऊमें पहले आय मुझे आशिका देवै सो जीतै जो कोई याहि जीतै सो परणै। यह वार्ता सुनि सब विद्याधर या राजाकी पुत्रीकूं विद्याविषैं अधिक जानि याकी विद्या देखिवेकूं खडे ता समय राजा सूर्यप्रभु अर धारणीनामा राणीके पुत्र चिंतागति आदि तीनों कमर बांध गमनकूं उद्यमी भये। अर सब देखें यह तीनों भाई कन्याकी लार दौंडे। सो कोई केता दौडा कोई केता दौडा परन्तु कन्याकूं न पहुंचे। सो कन्या इनकूं उलंघकरि सुमेरुकी प्रदक्षिणा दे भद्रसाल वनविषैं जिनप्रतिमा पूजि शीघ्रही आय श्रमकरि उपजे स्वेदके पसेव तिनकी बूंद तेई भये मुक्ताफल तिनकरि शोभित पितापै आय नमस्कारकरि आशिका दीन्हीं। तब राजा सब राजनके मध्य अपनी पुत्रीकूं जीतका पत्र दिया अर पुत्रीकूं संसारके भोगनितैं विरक्त जानि तपकी आज्ञा करी। तब वह निवृतनामा आर्याके समीप व्रतनिके समूह धारि आर्या भई ॥ ३१ ॥ गमनविषैं जीते कन्याने चिंतागति आदि तीनों भाई सो दमवरस्वामीके समीप मुनि भये सो महा तपकरि माहेंद्रनामा चौथा स्वर्ग ताविषैं सातसागर आयुके धारक सामानिक जातिके देव भए तहांसे चयकरि मनोगति अर चपलगति दोऊ भाईनिके जीव गगनवल्लभनामा पुरविषैं राजा गगनचंद्र ताके राणी गगनसुंदरी तिनके मनोगतिका जीव तो अमितवेगनामा पुत्र भया। अर चपलगतिका जीव अमिततेजनामा पुत्र भया सो हम दोऊ भाई पुंडरीकणीनामा पुरीविषैं स्वयंप्रभ तीर्थंकरके समीप अपने पूर्वभव सुनि मुनि भए अर हम तिहारी वेई पूछी जो चिंतागति कहां उपज्या है तब केवली कही राजा अरहदासका पुत्र अपराजित भया है सो या भवतैं पांचवें भव भरतक्षेत्रविषैं हरिवंशका तिलक अरिष्टनेमि मुनि बाईसवां तीर्थंकर होयगा अर या भवविषैं अपराजितकी आयु एक महीनेकी है। सो अब आत्मकल्याण करना योग्य है यह वचनकहि चारण मुनि तो विहार करि गये अर राजा अपराजित चारणमुनिके वचन सुनि आठदिनतक तो भगवानकी पूजा करी बहुरि

३९३

यौवन अवस्थाविषैं परणाई ॥ ६ ॥ वहुरि दो हजार राजकन्या गुणरूप आभूषणकरि मंडित और परणाई। एकदिन राजा अरहदास मनोहरनामा उद्यानविषैं देवनिकरि बंदिवे योग्य बिमलवाहननामा तीर्थंकर तिनकी वंदनाके अर्थि पुत्र परिवारसहित गया ॥ ८ ॥ तहां जिनवानी सुनि पांचसौ राजानिसहित मुनि भया अर अपराजितकूं राज दिया सो अपराजित राज करै। एकदिन अपराजितने सुनी जो विमलबाहननामा तीर्थंकर अर राजा अरहदास मुनि गंधमादननामा पर्वततैं मुक्ति गये सो राजा अपराजित यह बात सुनिकरि तेला किया अर निर्वाण कल्याणककी भक्ति करी अर नगरविषैं जे चैत्यालय हैं तिनकी पूजाकरि अपने मंदिरमें गया। अपनी स्त्रीकूं धर्मोपदेश करै था ॥ ११ ॥ ता समय दो चारण मुनि आये तिनकूं राजाने उठकरि हाथजोड नमस्कार किया वे विराजे तव तिनकूं पूछ्या हे प्रभु! जे जिनधर्मी हैं तिनकूं मुनिकूं देखकरि परमहर्ष उपजै है सो यह रीति तो अनादिकी है अर आपकूं देखकरि मेरे अपूर्व स्नेह उपज्या सो कछु पूर्व संबंध है। तब दोऊ मुनीनिमें वडे मुनि कहते भये हे राजन्। हमारे अर तेरे जे पूर्व संबध है सो सुनि अमृतरूप वाणीकरि मुनि कहै हैं अर अपराजित सुनै है। एक पुष्करावर्द्धनामा द्वीपविषैं पश्चिमविदेह तहां विजयार्द्धगिरिकी उत्तर श्रेणीविषैं एक गण्यपुरनामा नगर तहां सूर्यप्रभनामा राजा सूर्य समान है प्रभा जाकी ताके धरणी समान मनकी हरणहारी धारिणी नामा राणी ॥ १६ ॥ ताके पुत्र तीन भये। चिंतागति १ मनगति २ चपळगति ३ यह तीनों ही भाई महा स्नेहवंत अर महा पुरुषार्थके धारक ॥ १७ ॥ अर ताही उत्तरश्रेणीविषैं एक अरिंजयनामा नगर ताके अजीतसेनानामा राणी ताके प्रीतिमतीनामा पुत्री जाकूं अनेक विद्या सिद्ध भई सो पृथिवीविषैं प्रसिद्ध सो कहती भई हे पिता! जो मांगूं सो मुझे वर देवो तब पिता ताका मन संसारतैं परांगमुख जानि कहता भया जो एक तपकी तो आज्ञा न दूं अर जो मांगे सो ही दूं ॥२०॥ तव कन्या कहती भई मेरे तो तपकी बांछा है अर जो तुम यह आज्ञा न देवो तो मुझे गमनविषैं जीतै सो मेरा वर। तब राजाने यह प्रमाण करी सो सब विद्याधरनिकूं

आज्ञातैं देव अलंकानामा सेठाणीके ले जावेंगे अर अलंकाके मृतक युगल यहां लावेंगे अर तेरे पुत्र भद्रलपुरविषैं सुद्रष्टीसेठके घर अलका सेठाणीके नवयौवन होवेंगे। वसुदेवतैं अतिमुक्तिक मुनि कहै हैं तेरे छहों पुत्रनिके नाम सुनि नृपदत्त १ देवपाल २ अनिकदत्त ३ अनिकपाल ४ शत्रुघन ५ यतिशत्रु ६ यह छहों रूपकरि समान तेरे पुत्र बाईसवें तीर्थंकर तीन जगतके नाथ हरिवंशरूप आकाशके चंद्र श्रीनेमिनाथ तिनके शिष्यहोय निर्वाणकूं प्राप्त होवेंगे अर इन छहोंके बाद देवकीके गर्भमें निर्नामिकमुनिका जीव सातवां पुत्र होयगा सो कृष्णनामा नवमां वासुदेव है ॥ ७२ ॥ या भांति वसुदेव अतिमुक्तिकमुनिके निकट कंसके पूर्व भव अर तपके प्रभावकरि कंसका उदय अर अपने बलदेव अर वासुदेव अर वे तीनों युगल यह आठ पुत्र अर देवकी स्त्रीके पूर्व भव अर या भवका प्रताप सुनि वसुदेव परमहर्षकूं प्राप्त भया जिनमार्गमें है परमश्रद्धा जाके निरंतर जिनवाणीकी प्रशंसा करणहारा वसुदेव मथुराविषैं सुखसूं तिष्ठता भया ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ बलदेववासुदेवकीतनयअनागार चरित्रवर्णनोनाम त्रिंयस्त्रिशः सर्ग ॥ ३३ ॥



अथानंतर– गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! देवकीका बल्लभ वसुदेव अपने वंशमें जिनेंद्रका प्रगट होना सुनकरि अतिहर्षित भया अर अतिमुक्तिकस्वामीकूं पूछता भया हे नाथ ! हरिवंशका तिलक जिनेंद्रदेव होयगा ताका कुछ वृत्तांत सुनना चाहूं हूं। तब मुनिने कही याही जंबूद्वीपविषैं सीतोदानामा नदीके दक्षिणतटविषैं पद्मानामा विदेहक्षेत्रमें एक सिंहपुरनामा नगर तहां अर्हद्दासनामा राजा होता भया ॥ ३ ॥ सो महा जिनधर्मी ताके जिनदत्तानामा स्त्री सो भगवानकी पूजाविषैं प्रवीण तानैं ये शुभ स्वप्न देखे तिनके नाम लक्ष्मी १ गज २ शेर ३ सूर्य ४ चंद ५ ताके शुभ नक्षत्रविषैं एक अपराजितनामा पुत्र भया सो काहूकरि जीता न जाय अर पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध है पराक्रम जाका ॥ ५ ॥ सो ताके मातापिताने चक्रवर्तीकी प्रीतिमतीनामा पुत्री महा गुणवंती

त्तरमें अपराजितनामा विमानविषैं बत्तीस सागर आयुके धारक अहमिंद्र देव भए ॥ ५५ ॥ अर रसोईदार मुवा सो मरकरि तीजे नरकमें गया तहां तीन सागर दुःख भोगे बहुरि वह अमृतरसायननामा रसोईदारका जीव तीजे नर्कतैं निकसि तिर्यंच गतिरूप वनविषैं बहुत भ्रमा फिर मलयनामा देशविषैं पलासनामा ग्राम ॥ ५७ ॥ ताविषैं यक्षदत्तनामा कुलंबी ताके यक्षलानामा स्त्री ताके यक्षलिकनामा पुत्र भया अर याही कलुंबीके एक दूजा पुत्र छोटा ताका नाम यक्षस्थावर सो एक दिन यह यक्षलिक गाडा भरे जाय थो अर मारगमें एक सर्पिणी हुती सो छोटे भाईने बहुत मनैं किया तौहू बडे भाईने गाडा सर्पिणीपर चलाया सो सर्पिणीका फण टूट गया महा दुःखतैं मुई अकामनिर्जराके योगतैं मनुष्यगतिमें उपजी ॥ ६० ॥ सो सर्पिणी शरीर तजि स्वेतविकानामा पुरीविषैं एक वासवनामा राजा ताके वसुंदरीनामा राणी ताके गर्भविषैं नंदियशानामा पुत्री भई सो राजा गंगदेव परणी कैयक दिनमें यक्षकिलनामा कलुंवी मरकरि नंदियशाके निर्नामिकनामा पुत्र भया सो पूर्व भवके विरोधतैं नंदियशा निर्नामिकतं द्वेप राखै अर यह निर्नामिक अमृतरसायननामा रसोईदारका जीव है सो मुनिहत्याके योगतैं यानैं कुगतिविषैं महादुःख भोगे हैं। यह कथा राजा गंगदेव आदि सबने सुनी सो राजा संसारतैं विरक्त होय देवनंदिनामा पुत्रकूं राज देय दोयसौ नृपनिसहित मुनि भया अर वह छहों पुत्र अर निर्नामिक अर श्रेष्टीके पुत्र शंख सेठ ये सकल मुनि होय संसारतैं मुक्ति होयवेके अर्थि निर्मल तप करते भए अर राणी नंदियशा अर रेवतीनामा धाय अर बंधुमती सेठानी यह तीनों सुव्रता आर्याके निकट व्रत धारती भई ॥६५॥ निर्नामिकनामा मुनि सिंघनिःक्रीडतादि तप करै सो नारायणपदका निदान करता भया अर यह सबही तपके प्रभावकरि देवलोक गये तहांतैं चयकरि रेवती धायका जीव भद्रलपुरविषैं सुद्रष्टीनामा सेठके अलंकानामा स्त्री हुई अर राणी नंदियशाका जीव यह देवकी भई ताके वे गंग आदि पूर्वले पुत्र स्वर्गतैं चयकरि या जन्मविषैं हू पुत्र होंहिंगे तद्भव मोक्षगामी गुणनिके समुद्र होंहिगे अर अलकानामा सेठाणीके मृतक पुत्र तीन युगल होवेंगे। सो इंद्रकी

भये तिनके नाम ॥ ४२ ॥ गंग १ गंगदत्त २ गंगरक्षक ३ नंद ४ सुनंद ५ नंदिषेण ६ ये सब ही अति सुंदर होते भए ॥ ४३ ॥

अथानंतर राणी नंदयशाके चौथे गर्भ सातवां पुत्र आया सो आगामी जन्मविषैं कृष्ण होनहार है अर या नंदयशाका पूर्वभवका विरोधी है सो याकूं गर्भमें आये पीछे राणी राजाके अभावनी होती भई सो जन्म होते ही पुत्रकूं तजि दिया तब रेवतीनामा धायने ताकूं पाल्या ॥ ४४ ॥ जब यह बडा हुआ तब सेठके शंखनामा पुत्रतैं याका स्नेह बध्या वह बलभद्र होनहार यह नारायण होनहार एक दिन यह निर्नामिक शंखकी लार मनोहरनामा उद्यानमें गया वहां प्रजाके लोक भी गए हुते अर निर्नामिकके बडे भाई छहों भोजन करते हुते तिनकूं शंखने कही यह तुम्हारा छोटा भाई है याहि क्यों ना बुलावो तब तिनि निर्नामिककूं बुलाया सो निर्नामिक भी भोजन करै था सो नंदयशाने देख्या तब क्रोधकरि निर्नामिकके लात मारी। तब निर्नामिककूं अधिक दुःख उपज्या अर शंख भी खेदखिन्न भया अर निर्नामिककूं साथ लेय शंख द्रुमसेणिनामा मुनिके निकट जायकरि नमस्कार किया अर एकांतविषैं निर्नामिकके पूर्व भव पूछे तब द्रुमषेणनामा मुनि अवधिज्ञानी कहते भए एक गिरनगरनामा नगर तहां चित्ररथनामा राजा ताके कनकमालिनीनामा राणी सो महा गुणवंत राजा कुबुद्धियोंके संगमें मांसाहारी भया ताके अमृतरसायननामा रसोईदार सो मांसके बनावनेकी विधिविषैं प्रवीण सो राजाने रीझकरि ताहि दश गांव दिये, एक दिन राजा सुधर्मनामा मुनिके निकट धर्मश्रवणकरि मांसके दोष जानिकर आपकूं निंद्य तीनसौ राजानिसहित अपने मेघरथनामा पुत्रकूं राज देय मुनि भया अर मेघरथ श्रावकके व्रत धारै सो रसोईदारतैं कोप किया जो इस रसोईदारने हमारे पिताकूं अभक्षणका भक्षण कराया सो एक अकेला गांव याके राख्या अर गांव छीन लिये ॥ ५३ ॥ तब रसोईदारने मुनिसूं कोप बांध्या जो यानैं मेरी आजीविका हरी। सो वह प्रचंड रूप श्रावक होय कडवी तुंबी विषरूप ताका आहार दिया सो मुनिने गिरनारीनामा गिरपर देह तजी पंच पंचो-

उज्जयनी आये सो वज्रमुष्टिने देखे अर अपनी स्त्रीका वृत्तांत जानकरि इनका वैराग्य जानि वज्रमुष्ठि हू मुनि भया अर वह सातों भाईकी स्त्री अपनी मासुकी गुराणी जिनदत्ता आर्यिका ताके समीप आर्या भई। सो हू उज्जयनीविषैं आई तब मंगी इनका वृत्तांत सुनि संसारकूं निंद्य जानि अपने खोटे चारित्रकी निंदाकरि गृहत्याग आर्या भई ॥ २९ ॥ यह सब महा तपकरि प्रथमस्वर्गविषैं एकसागर आयुके धारक त्रायस्त्रिंशत जातिके देव भये ॥३०॥ तहांतैं चयकरि धातकीखंडविषैं पहले भरतक्षेत्रमें विजयार्द्धगिरिविषैं दक्षिणश्रेणीमें नित्यालोकनामा नगर ॥३१॥ ताविषैं चित्रचूलनामा राजाके मनोहरीनामा राणी तिनके सात भाईनिमें वडा भाई सुभानुका जीव प्रथमस्वर्गतैं चयकरि चित्रांगदनामा पुत्र भया अर छह भाई इन ही मातापिताके तीन युगल भये ॥३२॥ तिनके नाम गरुडकांत गरुडसैन गरुडध्वज, गरुडवाहन, मणिचूल, हेमचूल चित्रांगद यह सातों भाई सूधे यहां भी भेले भये ॥ ३३ ॥ सातों ही अति सुंदर रूप अर समस्त विद्याके पारगामी राजा चित्रचूलके पुत्र मनुष्यनिके शिरोमणि होते भये।

अथानंतर—मेघपुरनामा नगर तहां राजा धनंजय ताके राणी सर्वश्री ताकी पुत्री धनश्री सो अति रूपवान पृथिवीविषैं प्रसिद्ध ॥ ३५ ॥ ताके स्वयंवरविषैं समस्त विद्याधरनिके पुत्र आये तब तानैं अपने मामाके पुत्र हरवाहनके गलेमें वरमाला डाली ॥ ३६ ॥ तब सब राजा क्रोधमें भर गये जो हमकूं यानैं यूंही बुलाये याकी इच्छा तो हरिवाहनके देवेकूं हुती ॥३७॥ सो वे क्रोधवान होयकरि अर कन्याके अर्थि परस्पर युद्ध करते भये सो युद्धमें अनेक सामंतनिका नाश भया तब यह चित्रचूलके सातों पुत्र इन विषयनिकूं पापके कारण जानि भूतानंदनामा केवलीके निकट मुनिव्रत धारते भये ॥ ३९ ॥ सातों ही भाई आराधना आराधि माहेंद्रनामा चौथा स्वर्ग ताविषैं सात सागरकी आयुके धारक सामान्यक जातिके देव होयकर सुख भोगते भए। तहांतैं चयकरि चित्रांगदनामा वडा भाईका जीव या भरतक्षेत्रके हस्तिनागपुरविषैं श्रेष्टी स्वेतवाहन ताके स्त्री बंधुमती ताके शंखनामा पुत्र भया ॥ ४१ ॥ अर छोटे भाई छहों ताही नगरका गंगदेवनामा राजा ताके राणी नंदयशा ताके छहों पुत्र तीन युगल

याने देखी वाकूं उठायकरि मुनिके निकट ले गया सो मुनिके चरणारविंदके प्रसादतैं मंगी निर्विष होयगई ॥१४॥ तब वज्रमुष्ठि मंगीकूं मुनिके पायनमें मेल्हि आप सुदर्शननामा सरोवरविषैं कमलनिके लेयवेकूं गया स्त्रीकूं कह गया जबतक मैं न आऊं तबतक तू यहांही रहियो मंगी तो मुनिके निकट तिष्ठी अर याका पति सरोवर गया सो सूरसेननामा चोर सातवां भाई सो वज्रमुष्ठिका ताकी स्त्रीतैं अधिक स्नेह देखि मनमें विचारी पतिकी प्रीतिमें तो कभी नाहीं देखूं हूं नारीकी प्रीति यातैं कैसी है तब वाकी परीक्षा लेयवेकूं ताकूं अपना रूप दिखाया सो यह सूरसेन महा रूपवान है अर अपने मिष्ट वचन याहि सुनाये सो यह पापिनी सूरसेनका रूप देखिकरि अर ताके मिष्टवचन सुनि कामकरि विह्वल भई अर यह कहती भई हे देव ! मोहि अंगीकार करो तब वानैं कही तेरे भर्तारके जीवते मैं कैसे अंगीकार करूं तेरा पती महा वलवान योधा तातैं मैं डरूं हूं तब वानैं कही हे नाथ! तुम भय मत करो मैं वाहि खड्गकरि मारूंगी तब सूरसेनने कही उसे मारेगी तो मैं अंगीकार करूं ऐसाकहि ताका कर्तव्य देखिवेकूं सूरसेन छिपकरि तिष्ठा ॥ १९ ॥ वहुरि वज्रमुष्टि आय मुनिकूं कमल चढाया अर नमस्कार करता हुता सो मंगीने ताहि मारना विचारया तब सूरसेनने ताका हाथ पकडि वाहि बचाय लिया अर सूरसेन छिप गया सो यह वृत्तांत देखि सूरसेनका चित्त संसारतैं विरक्त भया अर मगी अपने दोष छिपायवेके अर्थि मूर्छा खाय धरतीपर पडी। तब भर्तारने वासूं पूछी हे प्रिये ! काहूतैं तू डरी यहां भयका कारण कछु नाहीं या भांति धैर्य बंधाय वज्रमुष्टि मुनिकूं नमस्कार करि मंगीकूं लेयकरि अपने घर गया ॥ २३ ॥ पीछे सूरसेनके छहों बडे भाई चोरीकर वहुत धन लाये सो वरावरके सात वांटकर अर सूरसेनतैं कही एक वांट तू ले तब सूरसेनने वांट न लिया अर भाईनितैं कही यह संसारीजीव धन उपार्जे हैं सो स्त्रियनिकी चेष्टा तो मैं नीके देखी तब ताकूं भाइयनिने पूछी तैं क्या देखी तब वज्रमुष्टिका अर मंगीका सकल वृत्तांत कह्या तब सुनकरि यह सब भाई वरधर्ममुनिके निकट ही मुनि भये अर द्रव्य अपनी स्त्रियनिके पास भेज्या ॥ २७ ॥ कैयक दिनमें ये सातों मुनि गुरुके लार

सेन ७ तिनकी स्त्रियनिके नाम कालिंद्री १ तिलका २ कांता ३ श्रीकांता ४ सुंदरी ५ द्विति ६ चंद्रकांता ७ यह सातों पुत्रनिकी स्त्रीनिके नाम कहे ॥१००॥ कयक दिनमे भानुसेठ अभयनंदि गुरूके समीप दिगंवर भए अर यमुनानामा सेठानी जिनदत्ता आर्यिकाके निकट आर्या भई ॥१॥ अर यह सातों भाई द्यूतक्रीडा अर वेश्याके प्रसंगकरि सब द्रव्य खोय चोरीके अर्थि उज्जयनी नगरी गये ॥२॥ रात्रिसमय छोटा भाई सूरसेन ताहि महाकालनामा मसाणभूमिमें कुलकी संतानके अर्थ राखकरि छहों भाई नगरीमें चोरीकूं गये अर याहि कह गये जो हम मारे जांय अथवा पकडे जांय तो तू यहांतें भाग जाइयो अर जो हम द्रव्य लेकर आवें तो वरावरका बांट तोहि देंगे ॥ ३ ॥ यह वार्ता कहकरि वह छहों तो गये अर छोटे सूरसेन भाईकूं राख्या तहां बैठा तासमय उज्जैनका राजा वृषभध्वज ताके राणी कमला अर राजाके एक दृष्टिमुष्टिनामा वडा शेधा ताके वप्रश्रीनामा स्त्री ताके वज्रमुष्टनामा पुत्र ताकूं राजा विमलचंद्रकी मंगीनामा पुत्री परणाई मंगीकी माताका नाम विमला सो मंगी अपने भर्तार वज्रमुष्टिकूं अति वल्लभ सो सासूकी सेवाविषैं मंद प्रवर्त्तें सो सासूका चित्त याके ऊपर कलुषित रहै सो सासूके यह उपाय रहे जो काहूप्रकार मेरे पुत्रका चित्त यातैं विरक्त होय अथवा यह मरै ॥ ७ ॥ एकसमय वसंतके उच्छवविषैं वज्रमुष्टि तो वनमें रमने गया अर मंगीकी सासुने घडेमें सर्प रखाया अर मंगीतैं कपटकरि कही हे वधू यामैं ! मोतीनिकी माला है सो तू पहन तव यह घडेमें हाथ डारती भई ॥ ९ ॥ सो ता सर्पने डसी मंगी विषके वेगकरि मूर्छित होयगई सो सासूने सेवकनितैं कही याहि मसाणमें डाल आवो सो सासूकी आज्ञातैं महाकालमसानमें डाल आये ॥ १० ॥ पीछे रात्रिविषैं मंगीका पति वज्रमुष्टि आया सो यह वृत्तांत सुनकरि प्यारी जो प्रिया ताके ढूंढिवेकूं महास्नेहतैं महाकालनामा मसाणविषैं गया एक हाथमें खड्ग अर एक हाथमें दीपक सो रात्रिकूं प्रतिमायोग धरे एक वरधर्मनामा मुनि विराजे हुये थे तिनकी प्रदक्षिणा देय नमस्कारकरि वज्रमुष्टि कहता भया हे पूज्यपाद ! जो मैं अपनी स्त्रीकूं पाऊंगा तो मैं सहस्रदल कमलकरि तिहारी पूजा करूंगा ॥ १२ ॥ यह कहकरि ढूंढिवे आया सो मंगीकूं

यह वचन सुनकरि ऋषिकूं क्रोध उपज्या तव वह सातौं देवांगना चितारीं सो शीघ्र ही आई तिनकूं कही पूर्वजन्ममें मेरा कार्य करियो ऐसा कहि नगर वाहिर गया ॥ ८८ ॥ अर उग्रसेनकूं क्लेश देनेके अर्थि निदान किया जो मैं याका पुत्र होय याहि पीड़ा उपजाऊं सो वह प्राण तजि उग्रसेनकी राणी पद्मावतीके गर्भविषैं आया ॥८५॥ जा दिनतैं गर्भमें आया ताही दिनतैं मातापिताकूं क्लेशकारी भया एकदिन राजा राणीका क्षीणशरीर देखकरि पूछ्या तुमकूं क्या दोहला उपज्या है ॥ ८६ ॥ तव राणीने कही हे नाथ ! या गर्भके दोपकरि जो दोहला उपज्या है सो न चिंतवनमें आवै न कहिवेमें आवै तव राजाने कही जो उपज्या है सो कहो तव राणी राजाके हठसूं आंसूभरि गदगद वचन कहती भई हे प्रभु या गर्भके दोपकरि मुझ पापिनीकूं दोहला उपज्या है कि तिहारा उदर विंदारि रक्तपान करूं तव राजाने अपने शरीर समान मैंदेका पुतला वनवाय रससूं भरि वाकी इच्छा पूरी करी तव नवमें मास पुत्रका जन्म भया सो वक्रमुख अर भ्रकुटी चढाये ॥८९॥ सो कांसेकी मंजूसमें डाल यमुनामें वहाया सो कौशांवी नगरीविषैं मंजोदरीनामा मद्यकरनीने पकड्या अर वामें जो वच्चा हुता ताका कंस नाम धर्या वाका सव वृत्तांत तुम जानो ही हो ॥ ९१ ॥ वह दुष्ट निदानके दोपकरि पिताका निग्रह करता भया सो अव तेरा पुत्र ताके पिता उग्रसेनकूं छुडावेगा यह कथा अतिमुक्तिक स्वामीने वसुदेवतैं कही वहुरि कहते भए तेरे पुत्रका संवंध मैं कहूं हूं सो सुनि ॥ ९३ ॥ या देवकीके सातवां पुत्र नवमां नारायण होवेगा। शंख, चक्र, गदा खड्गका धारक कंसादिक वैरीनिकूं हणिकरि तीनखंडका भोक्ता होवेगा ॥ ९४ ॥ अर यातैं वडे छह भाई तद्भव मोक्षगामी हैं तिनकी मृत्यु ही नाहीं यातैं तू चिंता तजि ॥ ९५ ॥ सात पुत्र तो देवकीके अर एक पुत्र रोहिणीका वलभद्र इन सवनिके पूर्वभव मैं तुमसूं कहूं हूं सो देवकीसहित तू सुनि इनके भव तेरे चित्तकूं आनंदकारी हैं याही मथुराविषैं राजा सूरसेन ताके राजविषैं एक भानुनामा सेठ सो वारहकोटि द्रव्यका स्वामी ताके यमुनानामा स्त्री ॥९७॥ ताके सातपुत्र तिनके नाम सुभानु १ भानुमित्र २ भानुषेण ३ सूर ४ सूरदेव ५ सूरदत्त ६ सूर-

३८५

सो तेरा संयमरहित तप मुक्तिके अर्थि कैसैं होय ॥ सो एक जैनमारग ही विषैं तप संयम ज्ञान दर्शन चारित्र है ॥ ६७ ॥ वीरभद्र आचार्य कहै हैं हे तापस ! तेरा पिता मरकरि सर्ष भया सो या ईंधणविषैं बलै है यह तू निश्चय जानि यह मुनिके वचन सुनि तापसने कुल्हाडेतैं काष्ठ चीर्‍या सो वलता सर्प नजर पड्या ॥ ६९ ॥ तव तापस आपका तप अज्ञानरूप जाण्या अर अपने पिताकूं तपकरि स्वर्ग गया जानता हुता सो सर्पकी योनिविषैं देखि खेदखिन्न भया ॥ ६० ॥ अर जिनधर्मका स्वरूप ज्ञानमई जानि वह वशिष्ट तापस वीरभद्रनामा मुनिके निकट मुनि भया ॥ ७१ ॥ अर अनेक मुनि तप करते हुते तिनके मध्य यह भी तप करने लगा परंतु याके अंतरायके उदयतैं आहारके लाभमें अंतराय पडै मुनि भए पीछे वीरभद्र गुरूने याकूं शास्त्र पढिवेके अर्थ शिवगुप्तनामा मुनिकूं सौंप्या तिनके निकट छह मास रह्या वहुरि सुमतिनामा मुनि तिनके निकट रह्या ॥ ७५ ॥ यतिधर्मकी विधिका वेत्ता यह वशिष्टमुनि वाईसपरीषहका सहनहारा पृथिवीविषै प्रसिद्ध एकाविहारी भया कैयक दिनमें विहार करता मथुरा आया वाकूं राजा प्रजा सव गुरू जानि पूजते भए सो पर्वतके शिखरपर आतापन योगधरि तिष्ठ्या हुता ताके निकट सात देवांगना आयकर कहती भई हे देव हमकूं आज्ञा करो सोई हम करैं तव मुनिने कही या समय मोहि कछु कार्य नाहीं यातैं अपने स्थानक जावो तव वह अपने स्थानक गई अर वशिष्टमुनि मासोपवासी अति निस्पृह महा तपस्वी तिनकूं सव ही लोग आहार दिया चाहैं सो राजा उग्रसेनने लोगनिकूं मनै किया जो मुनिकूं मैं ही पारणा दूंगा और न देवे सो काहूने न दिया अर राजा प्रमादके योगतैं विस्मरण होयगया तीनवार पारणैं राजा भूला एकवेर तो जरासिंधुका दूत आया अर दूजीवार अग्निके उपद्रवकरि विस्मरण होय गया अर तीजी वेर हाथीका उपद्रव भया सो मुनि नगरविषैं भ्रमणकरि आहारके अलाभतैं खेदकरि पीडित भए संते बनकूं जाते हुते सो नगरके द्वार क्षणिक खडे रहे शरीर अति शिथिल होयगया हुता ॥ ८२ ॥ तव देखकर काहूने कही राजाने वडा अनर्थ किया जो आप मुनिकूं आहार न दिया अर औरनिकूं मनै किए

पनिहारी जावैं सो जिनदाससेठकी प्रियंगुतिलकानामा दासी सो भी जल भरने गई ताहि सब पनिहारी कहती भई तू या तापसकूं प्रणाम करि। तब प्रियंगुतिलकाने कही या ऊपर मेरी भक्ति नाहीं कैसैं प्रणाम करूं। तब पनिहारिनिने हठकरि याकूं वा तापसके पायनमें डारी। तब यानैं कही मैं धीवरके पायन परी यह वचन मूढ तापस सुनकरि जायकरि राजापर पुकारया जो जिनदास सेठने मोहि निंद्या विना कारण क्लेश उपजाया ॥ ५३ ॥ तब राजा जिनदत्त सेठकूं बुलायकर पूछ्या तैं तापसकूं क्यों दुखाया तब जिनदत्त सेठने कही मेरे अर याके मिलाप नाहीं रूसावनेका कारण कहा ॥५४॥ तब तापसने कही याकी दासी प्रियंगुतिलकाने मोहि दुखाया तब राजाने दासी बुलाई अर कही हे पापिनी! तू तपस्वीकी निन्दा क्यों करी अर नमस्कार क्यों न किया ॥ ५५ ॥ तब वानैं कही यह तपस्वी नाहीं यह धीवरसमान कुबुद्धि है याकी जटाविषैं अनेक नन्हीं मच्छी भरी हुई हैं। जब राजाने वाकी जटा सुधवाई सो अनेक सूक्ष्म मच्छी मरी हुई निकसीं तब वह तापस लज्जावान भया। लोगनिने वाकी हास्य करी अर कही झूठा तापस है ॥ ५७ ॥ तब वह कोपकरि मथुरातैं वाराणसीपुरी गया सो वाराणसी पुरीके बाहिर गंगाके तीर तप करै ॥ ५९ ॥ तहां पांचसौ मुनियनिसहित स्वामी वीरभद्र आए तहां एक पुरुषने विना जाने तापसकी प्रशंसा करी कि यह वसिष्टनामा तापस महाभयंकर तप करै है तब मुनिने उसे मनै किया जो अज्ञान तप प्रशंसा योग्य नाहीं तब उस तापसने पूछ्या मैं कैसैं अज्ञानी तब मुनि बोले तू छहकायके जीवनिकूं पीडा करै हैं यातैं अज्ञानी है। या पंचाग्नि तपविषैं अग्निके योगकरि पंचेंद्री जीव पर्यंत भस्म होय हैं तहां विकलत्रयकी कहा बात ॥ ६३ ॥ तेरे पृथ्वीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतीकाय, यह पांच स्थावर बेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री पंचेंद्री इन प्राणियनिकी हिंसा होय है यातैं प्राणसंयम कहां प्राणीनिकी दया सो ही संयम है ॥ ६४ ॥ सो तू विरक्त तो भया परंतु मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्रकरि अभिमानी है अर जहां अभिमान तहां ज्ञान नाहीं सो ज्ञान विना संयम कहां यातैं तू इंद्रीसंयम अर प्राणसंयम तिनतैं रहित केवल कायक्लेश ही करै है

थकी देवकीके रजस्वलापनेके वस्त्र स्वामीके निकट डारे अर कहती भई यह तिहारी बहनके आनंदके वस्त्र हैं सो देखहु या भांति ताके चंचलताके वचन सुनि मुनिवर संसार स्थितिके वेत्ता सो वचनगुप्तिकूं छोडि करि कहते भये ओह शोकके स्थानविषैं तू आनंदकूं प्राप्त भई सो यह तेरी महामूढ़ता है ॥ ३५ ॥ या देवकीके गर्भविषैं ऐसा पुत्र होयगा जो तेरे पति अर पिता दोऊकूं मारैगा ॥ ३६ ॥ तब यह जीवंयशा अश्रुपातकरि भरे हैं नेत्र जाके सो जायकरि पतिकूं मुनिके कहे वचन कहती भई तब कंस यह बचन सुनिकरि शंकावान होय तत्काल वसुदेवपै गया अर अपना वर मांग्या ॥ ३८ ॥ कही हे स्वामी ! मुझे यह वर दो जो देवकीके प्रसूति मेरे घर होय सो वसुदेव तो यह वृत्तांत जानै नाहीं सो विना जाने कही तिहारे घर प्रसूतिके समय वह रहै यामें क्या दोष है वहनका जापा भाईके घर होय यह तो उचित ही है या भांति वचन दिया ॥ ४० ॥ पीछे अतिमुक्तिक मुनिके वचनका वृत्तांत जाना तब पश्चात्ताप उपज्या देवकी रुदन करती संती पतितैं कहती भई, हे प्रभु ! तिहारे पुत्र घने ही हैं मैं क्या करूंगी । तब पति पत्नी सहकारनामा बनविषैं अति मुक्तिक स्वामीके निकट गये वह मुनि चारणऋद्धिके धारक अवधिज्ञानी उनकूं वसुदेव देवकीसहित नमस्कारकरि निकट बैठे तब मुनिने धर्मवृद्धि दई तब वसुदेव पूछते भए हे भगवन् ! यह कंस कैसे अपने पिताका वैरी भया सो कारण कहा याहीका कारण है या परभवका कारण है अर यानैं क्या तप किये जो राज विभूति पाई अर मेरा पुत्र याका घातक कैसैं होयगा सो मैं सुना चाहूं हूं । तब मुनि अवधिज्ञानी याका संशय निवारिवेके अर्थ कहते भये महापुरुषनिका यही स्वभाव है जो जीवनिका महा संदेह दूर करैं ॥ ४५ ॥ अतिमुक्तिकनामा मुनि वसुदेवतैं कहते भये हे देवनिके प्यारे ! परम सज्जन मैं तेरे प्रश्नका उत्तर कहूं हूं सो सुनि ॥४६॥ याही मथुराविषैं उग्रसेनके राजमें या कंसका जीव पहिले भववसिष्ट नामा तापस हुता सो पंचाग्नि तपविषैं प्रवीण ॥ ४७ ॥ एक पांवतैं खडा रहै अर ऊर्द्धवाहु अर वडी है जटा जाके सो यह तापस ज्ञानभावतैं रहित यमुनाके तटविषैं तप करै सो यमुनाके तट जलके अर्थि लोगनिकी

वानै याका सब वृत्तांत कह्या कि हे प्रभु ! यमुनाके प्रवाहमेंतैं यह मंजूस पाई तामेंसे यह बालक निकस्या सो दयाकरि मैं पाल्या अर वडा किया सो नित्य सैकडों उलाहने लावै तब मैं उलाहनोंसे डरी ॥ १७ ॥ यह स्वभावहीकरि निर्दयी बालकनितैं क्रीडा करै सो उनके परस्पर सिर भिडावै अर वेश्यानिकी चोटी पकडि २ खेंचे तिनकूं व्याकुलकरि छोडै तब लोगनिके उलाहनेतैं याहि घरतैं निकाला सो यह भिक्षाके अर्थ विदेशमें गया काहूका शस्त्रविद्यामें शिष्य भया सो अब शस्त्रकलामें निपुण है ॥ २० ॥ याकी माता यह मंजूस है मैं नाहीं यातैं जो याके गुण दोष होंय तो मुझे न लागैं याके गुण दोष याहीकूं अथवा या मंजूसकूं ऐसा कहकरि वह मंजूस महीपतिकूं दिखाई तामैं राजा उग्रसेनके नामकी मुद्रिका सो जरासिंधने वांची ॥ २२ ॥ तामें यह लिखा हुता कि यह राजा उग्रसेन अर राणी पद्मावतीका पुत्र गर्भविषैं तिष्ठता ही मातापिताकूं क्लेशकारी भया अर अशुभ नक्षत्रमें उपज्या सो मंजूसमें घालकरि यमुनामें वहाया याके कर्मनिकरि याकी रक्षा होऊ ॥ २४ ॥ यह लेख वांचकरि राजाने जानी यह तो मेरा भाणजा है पद्मावती मेरी वहन ताका पुत्र है तब जरासिंध हर्षित होय कंसकूं अपनी कन्या जीवंयशा परणाई तब कंसने विचारी जो मुझे जन्म होते ही पिताने नदीमें वहाया सो पिता मेरा वैरी है यह जानि जरासिंधतैं मथुराका राज मांग्या अर वडी सेना लार लेय जीवंयशासहित मथुरा आया पिताकूं युद्धविषैं जीतकरि बांध्या अर मथुरापुरीके दरवाजेमें राख्या आप जीवंयशासहित मथुरामें सुखसूं तिष्ठै यह जीवंयशा जरासिंधकी कालिंदसेनानामा राणी ताकी पुत्री है ॥२७॥ कंसने मथुराका राज पाया तब विचारी यह सब उपकार वसुदेवका है सो मैं भी कुछ वाकी सेवा करूं तब प्रार्थनाकरि वसुदेवकूं महाभक्तितैं मथुरामें लाया अर अपनी वहन देवकी वसुदेवकूं परणाई सो कंसके स्नेहतैं वसुदेव मथुरामें रहे देवकीसहित देवनि समान रमैं ॥ ३० ॥ उग्रसेन महाराजकी राजधानी कंसने पाई सो मथुराका राज करै यह जरासिंधका जंवाई सो ताके अतिवल्लभ एकदिन मुनिके आहारके समय कंसके वडे भाई अतिमुक्तिकनामा मुनि कंसके घर आहारकूं आये तब नमस्कारकरि जीवंयशा चंचलभावकरि हंसती

अथानंतर—सौर्यपुरविषैं वसुदेवतैं जे बुद्धिमान राजकुमार हुते वह बिनती करते भये कि हमकूं शस्त्रविद्या सिखाओ सो वसुदेव अनेक राजपुत्रनिकूं शस्त्रविद्या सिखावते भये एक समय वसुदेव अपने कंसादिक धनुषविद्याके जे शिष्य प्रवीण तिनसहित जरासिंधके देखिवेकूं राजगृहनामा नगर गये तहां जरासिंधकी आज्ञातैं घोषणा कहिये मुनादी फिरती हुती कि समस्त लोग सावधान होय सुनो एक सिंहपुरनामा नगर ताका निवासी राजा सिंहरथ महा उद्धत है अर ताके रथके सिंह जुते सिंहनिके रथपर चढ्या फिरै है सो प्रबल है पुरुषार्थ ताका ॥ ४ ॥ वाकूं जो कोई जीवता पकडकरि मोहि दिखावै वही पुरुष सामंतनिमें महा सामंत है वह शत्रूनिके यशरूप समुद्रका पीवनहारा ताहि मैं मानधन अर अपनी पुत्री जीवंयशा परणाऊंगा अर जो देश मांगै सो ही दूंगा ॥ ७ ॥ यह मुनादी वसुदेवने सुनी तब अपने सब शिष्यनिकूं आज्ञा करी कि या मुनादीका पता तुम लाओ सो पता लेतही वसुदेव सिंहरथपर चढ़करि गये जायकरि वासूं युद्ध आरंभा सो वह सिंहरथ तो जो सिंह तिर्यंच तिनके रथपर चढ्या अर वसुदेव विद्यामई जो सिंह तिनके रथपर चढ्या सो जब वसुदेवने अपने बाण तापर चलाये तब वह सिंह भागे अर सिंहरथ भागा तब वसुदेवने कंसकूं आज्ञा करी तू याकूं बांधि तब कंसने वसुदेवकी आज्ञातैं सिंहरथकूं बांध्या तब वसुदेवने प्रसन्न होयकरि कंसतैं कही तू वर मांग। तब वानै कही हे प्रभु ! तिहारा वचन भंडार रहै जब मोहि चाहियेगा मांग लूंगा तब वसुदेवने कही हमने प्रमाण किया कैयक दिनमें सिंहरथकूं लायकरि जरासिंधकूं सौंप्या तब जरासिंधने प्रसन्न होय वसुदेवतैं कही तुम मेरी पुत्री परणो तब वसुदेवने कही यह शत्रु कंसने पकड्या है ॥ १२ ॥ तब जरासिंधने कंसकूं बुलायकरि कही तेरा कुल क्या है सो तू कह तब कंसने कही कौसांबी नगरीविषैं मंदोदरी नामा मद्यकरनी मेरी माता है ॥ १३ ॥ यह कंसके बचन सुनिकरि जरासिंध चित्तमें चिंतवते कि याकी प्रकृति राजपुत्र कैसी है यह कलालीका पुत्र नाहीं ताही समय कौशांबी नगरीतैं मंदोदरी बुलाई तब वह मंजूस अर मुद्रिका ले आई ॥ १५ ॥ जरासिंधने पूछी क्या यह तेरा पुत्र है तब

सुंदरी अर सूरसेना अर अपने पुत्र सहित जरा अर जीवंयशा ॥ ३४ ॥ इनकूं लेयकरि और भी जहां जहां जे जे रानी हुतीं तिन सबकूं लेयकरि शीघ्रगामी जो विमान तामें बैठि सूर्यपुरनामा नगर आय प्राप्त भये कैसा है सूर्यपुर सूर्यके विमान समान देदीप्यमान है प्रभा जाकी अर सुंदर गीत नृत्य वादित्रनिकी ध्वनिकरि पूर्ण है ॥ ३६ ॥ सो विमान तो वसुदेवका नगरके बाहिर रहा अर वह धनवती देवी जो इनकूं विमानमें बैठायकरि लाई है सो पहले नगरमें आयकरि वसुदेवके राजलोकसहित आयवेकी समुद्रविजयकूं वधाई दी तब राजा सर्व नगरमें शोभा कराय नगर उछालि आप सब भाईनि सहित सन्मुख गया ॥ ३८ ॥ तब वसुदेव विमानतैं उतरि बड़े भाई समुद्रविजयकूं प्रणामकरि औरहू सब बडे भाईनिकूं प्रणाम करता भया अर वसुदेवकी सब राणी जिठानी-निकूं प्रणामकरि जिठानीनिके पांव लागती भई अर सब वसुदेव अर इनकी राणीनिकूं प्रणाम करते भये शिव-देवीकूं आदि देय वही जिठानी वसुदेवकी वधू जे नम्रीभूत भई तिनकूं उरतैं लगाय लोचन अश्रुनितैं पूर्ण किये अर अनेक आशीष दई ॥ ४० ॥ सबनिका यथायोग्य सन्मान किया अर सबनिके आदर है जाका ऐसा जो वसुदेव सो रोहिणीसहित रमता भया बंधुरूप सिंधु कहिये समुद्र तिनविषैं आनंदरूप जलका बढावनहारा वसु-देवरूप चंद्रमा सो रोहिणी समान राणी रोहिणी वासूं रमता जगतका आताप हरता भया वसुदेवकूं राणीनि-सहित सौर्यपुरमें पधराय देवी धनवती समुद्रविजयतैं अर वसुदेवतैं विदा होय अपने स्थानक गई ॥४२॥ सौर्य-पुरके समस्त ही लोग वसुदेवका विभव देखकरि परस्पर बतरावते भये जो पूर्वभवविषैं या वसुदेवने जिनधर्म आराध्या है ताका यह फल है वसुदेव शूरवीरताकरि प्रबल जीते हैं राजनिके समूह जानैं अति उदार महा मनो-हर है चरित्र जाका अनेक विद्याधरीनिका वल्लभ देवनि समान है प्रभा जाकी अर अद्भुत है विभूति जाकी यह सर्व पूर्वोपार्जित धर्मका फल है ॥ ४४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ सकलबधुबंधूजन समागमवर्णनोनाम द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

इति विद्याधरकाण्ड समाप्तम् ।

पुर जाय वेगवती देखी अर बालचंद्रा परणी सो पूर्णचंद्र समान है मुख जाका ॥ १६ ॥ नवीन वधू पूर्णचंद्रा अर वेगवती मनकी हरणहारी तिन सहित रमता कितनेक दिन सुखतैं तहां रहा ॥ १७ ॥ बहुरि उन दोऊ सहित सौर्यपुर जायवेकी आज्ञा मांगी तब बालचंद्राका पिता कांचनदंष्ट्र अर वेगवतीका बडाभाई मनोवेग इन्होंने बसुदेवकूं बहुत द्रव्य दिया अर पुत्रनिकूं बहुत सामग्री दीनी जब ससुरतैं सौर्यपुरकी सीख मांगी तब वह नागकुमारी ऐंणी पुत्रकी पूर्वभवकी माता रत्ननिकरि देदीप्यमान विमान रच्या तामैं बैठकरि वसुदेव बालचंद्रा वेगवती सहित ता विमानमें चढकरि अरिंजयपुर आये विद्युद्वेगतैं मिले। वह विमान ऐसा जहां मन करै तहां ही जाय ॥ २० ॥ विद्युद्वेगतैं मिलि राजलोकके मांही गये अर अपनी स्त्री मदनवेगा देखी ताहि लेयकरि विमानके मारग शीघ्रही गंधसमृद्धनामा नगर गये तहां राजा गंधारकी पुत्री प्रभावती देखी ॥ २२ ॥ प्रभावतीके पिताने बहुत धन दिया ॥ २३ ॥ बहुरि ताहि लेयकरि तत्काल असितपर्वतनगर गये तहां राजा सिंहदंष्ट्र ताकी पुत्री नीलंयशा अपनी वल्लभा ताके महलमें कितनेक दिन रहे ताके पिताने हू बहुत धन दिया बहुरि नीलंयशाकूं लेयकरि किन्नरोद्गीतनामा नगर गये तहां नीलकमल सारिखे सुंदर नेत्र जाके ऐसी श्यामा देखी उसे लेयकरि श्रावश्रीपुरी गये वहां प्रियंगुसुंदरी अर बंधुमती हुती तिनकूं लयकरि महापुरनामा नगर गये तहां सोमश्रीतैं मिले सो ताहि लेयकरि इलावर्द्धननामा पुर गये तहां रानी रत्नवतीतैं मिले वाहि लेयकरि भद्रलिपुर गये तहां चारुहासिनी ताहि लेयकरि जयपुरनामा नगर गये तहांसे अश्वसेनानामा राणीकूं लेयकरि शालगुहा नामा पुर गये तहांतैं पद्मावती राणीकूं लेयकरि वेदशांपुरनामा नगर गये तहां कपिलानामा स्त्रीतैं मिलै अर कपिलनामा पुत्र ताका अभिषेक कराया अर उनकूं लेयकरि अचलग्राम गये ॥ ३० ॥ तहां मित्रश्रीनामा रानी ताकूं लेयकरि तिलवस्तुकनामा नगर गये तहां पांचसौ रानी हुतीं उनकूं लेयकरि गिरतटनामा नगर गये तहां सोमश्रीकरि युक्त होय चंपापुरी गये तहां रानी गंधर्वसैना हुती ताहि लेयकरि विजयखेटनामा नगर गये तहां रानी विजयसेना ताके पुत्र अक्रूरदृष्टि वाकूं लेयकरि कुल्यपुरनामा नगर गये ॥ ३३ ॥ तहां पद्मश्री अर अवंति

लहर जाविषैं ऐसा शब्द करता समुद्र देख्या अर तीजे स्वप्नमें वह चंद्रमुखी पूर्ण हैं मनोरथ जाके सो संपूर्ण चंद्रमाकूं देखती भई अर चौथे स्वप्नमें कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल मृगराज अपने मुखमें प्रवेश करता देख्या ॥ ३ ॥ प्रभातसमय वह कमलनयनी जागी अर स्नानादि क्रियाकरि पतिके समीप जाय स्वप्नका फल पूछती भई तब पतिने कहा हे प्रिये ! तेरे महा पुरुष पुत्र होयगा गजेंद्रके देखिवेकरि सबमें बडा अर समुद्रके देखिवेकरि महा गंभीर सर्वजगतका वल्लभ अर चंद्रके देखिवेकरि अनेककलाका धारक महाकांतिवान चंद्रमातैं हू अधिक है प्रभा जाकी सर्वजगतका वल्लभ अर सिंहके देखिवेकरि महाधीरवीर पृथ्वीका पति जासमान योधा जगतमें नाहीं ॥५॥ याभांति पतिके मुखतैं रोहिणी स्वप्नके शुभफल सुनकरि अति हर्षित भई चंद्रकलातैं हू अधिक सोहती भई ॥

अथानंतर—महाशुक्र स्वर्गविषैं संखनामा मुनिका जीव सामानिक देव भया हुता सो चयकरि रोहिणीके गर्भमें आया यह माता रोहिणी रत्ननिकी खानि है अर वलभद्र महामणि है जब नव महीने पूर्ण भये तब माता शुभ नक्षत्रविषैं सुखसूं पुत्र जनती भई चंद्रमा समान है वदन जाका ऐसा पुत्र वसुदेवके घर प्रगट भया । ताका जन्मोत्सव देखिकरि जरासिंध आदि सब राजा अपने अपने स्थानक गये वह पुत्र महासुंदर अपना नाम राम कहायकरि पृथिवीविषैं वृद्धिकूं प्राप्त भया वढाई है मातापिता आदि कुटंबीनितैं प्रीति जानै । एक दिन राजा रुधिरके मंदिरविषै श्रीमंडपमें समुद्रविजय आदि वसुदेवके हितू सबही वैठे हुते अर बसुदेव भी उनके समीप हुता सो एक विद्याधरी महा दिव्यमूर्ति आकाशतैं उतरी अर वसुदेवकूं कहती भई ॥ ११ ॥ हे देव ! तिहारी राणी वेगवती अर मेरी पुत्री वालचंद्रा तिहारे चरणारविंदका दर्शन चाहै है और तो तुम परण आये वह वालचंद्रा कुमारी है सो विवाहकी आसकरि तिष्ठै है सो शीघ्रही चलो ताहि परणकरि सुखी करो यह वार्ता विद्याधरीकी सुनिकरि वडे भाईकी तरफ दृष्टि धरी तब समुद्रविजय सब अभिप्राय जानि याहि शीघ्रही पठाया सो विद्याधरीकी लार तत्काल गगनवल्लभपुर गया अर समुद्रविजयादिक सब भाई सौर्यपुर गये ॥ १५ ॥ वसुदेवने गगनवल्लभ-

श्वसुर पुत्र भ्रातृसहित आए हुते वह सब ही मिले स्नेहके अश्रुपातकरि भरे हैं नेत्र जिनके ॥ ३० ॥ अर जरासिंध आदि सब ही प्रसन्न भए अर रोहिणीका पिता राजा रुधिर अर भाई हिरण्यनाभ अर सब कुटुंबके रोहिणीकी अति प्रशंसा करते भये कि धन्य है या वाईका भाग्य जो ऐसा वर पाया सांझ समय सब ही अपने स्थानक गए रातदिन सबके वसुदेव हीकी कथा वहुरि भली तिथि भला नक्षत्र देखि रोहिणीविषैं चंद्रमाका समागम ता दिन समुद्रविजयने लघुवीरकूं रोहिणी परणाई इनका विवाह देखि सब ही राजा हर्षित भए । जरासिंघ समुद्रविजय आदि सवही राजा एक बर्षतक राजा रुधिरके नगर रहे ॥ ३३ ॥ युद्धविषैं करी है सहाय जानें ऐसा दधिमुखनामा विद्याधर ताकी वसुदेवने बहुत प्रशंसा करी अति सन्मान किया वह बहुत प्रसन्न होय इनकी आज्ञा पाय अपने स्थानक गया ॥ ३४ ॥ अर वसुदेवकुमार नई बधू जो रोहिणी ताका मनोहर मुखरूप कमल तापर भँवर समान अनुरागी होय पहली परणी जो प्रिया तिनकूं भूलि गया जैसे भंवर नवीन पुष्पका रस पायकरि पूर्वमें भोगी जे वेलि तिनकूं विसरि जाय ॥ ३५ ॥ भुजाही है सहाई जाके ऐसा वसुदेव शूरवीर ताका मानरूप पर्वत रणसंग्रामविषैं अनेक शत्रूनिके बाणरूप वज्र करि न चूर्‍या गया भेले भये हैं समस्त पृथिवीके भूपाल जहां तिनविषैं वसुदेवके पराक्रमका विशेष यश होता भया आश्चर्यकारी है पराक्रम जाका वे शत्रु अति लोभी याके प्राणनिके ग्राहक याका कछु भी न करि सके सो यह सब जिनभाषित तपका प्रभाव है पूर्वभवविषैं वसुदेवने महातप किये हैं ऐसे तप औरनितैं न बनैं ॥ ३६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ रोहिणीस्वयंवर वसुदेवस्य भ्रातृसमागमवर्णनोनाम एकत्रिंशतिमो सर्गः ॥ ३१ ॥

अथानंतर—रोहिणी राणी भरतारसहित सुंदर सेजपर शयन करती हुती सो चार शुभ स्वप्न देखे ॥ १ ॥ पहला स्वप्न चंद्रमा समान उज्ज्वल वर्ण मदोन्मत्त गाजता हुवा गजेंद्र देख्या अर दूसरे स्वप्न उठे हैं पर्वतसमान ऊंची

दिव्यास्त्र हाथ लिए राजाने अग्निवाण चलाया सो कुमारने वरुणनामा बाणकरि बुझाया बहुरि राजाने वरुण बाण कहिए जलवाण चलाया सो कुमारने वायुवाणकरि निवारया इत्यादिक अनेक बाणनिकरि दोऊ वीर भिडे दोऊ ही दिव्यास्त्रविषैं प्रवीण सो महा युद्ध करते भए। जिनकी आकाशविषैं देवस्तुति करै हैं॥ १८ ॥ बहुत कहांलग कहिए जे जे बाण वडे भाईने चलाये ते सब छोटे भाईने बीचहीमें काटे जैसे गरुड सर्पकूं हतै तैसैं समुद्रविजयके वाण वसुदेवने छेदे सो कैयक बार कई बाण बडे भाईके वसुदेवने निराकरण किए॥ १९ ॥ तब राजाने क्षुद्रप्रनामा वाण चलाया सो वसुदेवने बीचही काट्या अर अपने बाणनिकरि राजाका रथ अर सारथी अर घोडे घायल करे अर बडे भाईके अंगका बचाव किया तब राजा या योधाकी प्रवीणता देखि अति प्रसन्न भया अर सब ही राजा सिर हिलायकरि तथा चुटकी बजायकरि कुमारकी प्रशंसा करते भए॥ २१ ॥ एतीवेर तक राजाने भाईकूं न पिछाण्या परसेनाका सामंत जानि दिव्यास्त्रनिमें महाप्रबल जो रौद्रास्त्र सो चलाया तब वसुदेवने ब्रह्मशस्त्र करि उडाया॥ २२ ॥ शस्त्रविद्याविषैं महाप्रवीण जो वसुदेव तानैं रणविषैं समुद्रविजयके अनेक शस्त्र छेदे अर वडे भाईका शरीर बचाया। या भांति बहुत देरतक रणक्रीडा करि उपजा है अधिक स्नेह जाके सो अपने नामकी पत्री वाणके बांधि बडे वीरपै पठाई सो वाण राजाके पांवनिमें जाय पड्या तब राजा बाणके जो पत्र बंधाहुता सो बांच्या तामें यह समाचार हुते हे महाराज! मैं तिहारा सेवक छोटा भाई वसुदेव जो छिपकर घरतैं निकस्या हुता सो सौवर्ष व्यतीत भए आपके पांयन आया अर अब आपके चरणारविंदकूं प्रणाम करूं हूं॥२६॥ यह पत्रके समाचार बांचिकरि राजा भाईके स्नेहकरि पूर्ण है हृदय जाका सो हाथतैं धनुष डारि रथतैं उतरि भाईके सन्मुख चाल्या॥२७॥ तब छोटा भाई वसुदेव रथतैं उतरि दूरहीतैं प्रणामकरि पिता समान जो बडा भाई ताके पांयन पड्या तब राजाने भाईकूं उठाय उरतैं लगाया॥२८॥ दोऊ भाई उरतैं उर लगाय अश्रुपातसहित नेत्रनिकूं धारते भए बहुरि अक्षोभ आदि आठ भाई समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं बडे सो सबही बसुदेवतैं मिले॥२९॥ ता रणविषैं वसुवदेवके जित

युद्ध करना है ॥३॥ दधिमुखने कही जो आप आज्ञा करोगे सोई होयगा सो बडे भाईकी तरफ धीरे २ रथ चलाया अर समुद्रविजय अपने सारथीतैं कहता भया जो या योधाकूं देखि मेरे हिरदेविषैं स्नेह उपजै है सो कारण कहा अर मेरो दहिनी भुजा अर नेत्र फरकै हैं सो प्यारा भाई मिला चाहिए। अर यह मारिवे योग्य शत्रु ताहि देखि ऐसा अनुराग भाव क्यों उपजै है यह चिन्ह तो बंधुके मिलापके हैं अर योग मिला शत्रुतैं रणका सो यह बात कैसैं बनै देशविरुद्ध कालविरुद्ध यह बात बनती दीखै नाहीं तब सारथीने कही हे प्रभु! शत्रुकूं जीते पीछै बंधुका अवश्य मिलाप होयगा ॥ ८ ॥ अर हे राजन! यह शत्रु अगाध योधा है अर अनेक राजानिकरि जीत्या न जाय तातैं सब राजानिके समीप ऐसे शत्रुकूं जीतिवेतैं सबनिमैं तिहारी प्रशंसा होयगी अर जरासिंधतैं पूजा पावोगे वह घना सन्मान करेंगे यह वचन जब सारथीने कहे तब राजाने बहुत प्रसन्न होय वसुदेवपर रथ चलाया। कैसा है समुद्रविजय धनुष चढाया है अर बाण साध्या है अर वसुदेव हू धनुष चढाय बाण साध्या है समुद्रविजय वसुदेवकूं भाई न जानै है सो परपक्षका योधा जानि कहै है हे धीर! औरनितैं रणविषैं तेरी धनुषबाणकी प्रवीणता हमने बहुत देखी तैसीही हमकूं दिखाव तेरा शूरवीरतारूप पर्वत ऊंचा है तापर मानका शिखर सोहै है पर मैं राजा समुद्रविजय हूं सो अपने बाणरूप मेघकी वृष्टिकरि तेरा मानशिखर आच्छादित करूंगा ॥ १२ ॥ बड़े भाईके यह वचन सुनि वसुदेवकुमार अपने शब्द पलटि अर रूपपलटकरि यह वचन कहता भया हे राजेंद्र! बहुतकहिवेकरि क्या रणविषैं हमारा तिहारा पराक्रम प्रगट होवैगा ॥ १३ ॥ तुम समुद्रविजय हो अर मैं संग्रामविजय हूं अर अगर तुमकूं प्रतीत न आवै तो शीघ्र ही बाण चलावो जब कुमारने यह वचन कहे तब समुद्रविजय बडे योधा बिना जाणे लघुवीर पर बाण चलावते भए ॥१५॥ सो योधाने जो बडे भाईके बाण आए सो बीचहीमें काटे आपतक आवने न दिए ॥ १६ ॥ अर आप जे बाण चलाए सो भाईका अंग बचायकरि चलाए बहुत बेर सामान्य शस्त्रनितैं युद्ध भया तब समुद्रविजयने विचारी. जो यह योधा सामान्य शस्त्रनितैं न जीत्या जाय तब

पौंड्रका धनुष तोड्या अर हिरण्यनाभकूं अपने रथमें चढाया अर अपने बाणरूप मेघकी वृष्टिकरि पौंड्रकूं आच्छादित किया तब पौंड्रकी पक्ष अनेक योधा वसुदेव पर आये ॥ ९० ॥ सो वसुदेवने अपने तीक्ष्ण बाणनिकरि सब योधानिके बाण भेदे अर पैंड पैंडविषैं शत्रूनिकी सेनाकरि धन्य धन्य कहावता भया सो सबने कही ऐसा सुभट अबतक न देख्या एक तरफ अकेला वसुदेव अर एक तरफ अनेक योधा तब न्यायवंत जे राजा हैं वे कहते भए अबतक यह अन्याय न देख्या जो एकतैं अनेक लडैं एकतैं एकहीका युद्ध योग्य है ॥ ९२ ॥ तब जरासिंधने धर्मयुद्ध देखिवेकी इच्छाकरि राजानिकूं आज्ञा करी। जो या कन्याके अर्थि एक एक नृप युद्ध करो जो याकूं जीतै सोई कन्याका पति। तब और तो खडे खडे देखे तब राजा शत्रुंजय वसुदेवतैं युद्ध करने लग्या सो शत्रुंजयने बाण चलाये ते सब वसुदेवने दूरहीतैं काटे अर ताका रथ तोड्या अर बखतर काट्या अर बहुत विह्वलकरि याकूं जीवदान दिया ॥ ९५ ॥ बहुरि बसुदेवतैं राजा दंतवक्रने युद्ध आरंभा सो दंतवक्र महा उद्धत चिरकाल युद्ध करता भया ताकूं भी बसुदेवने रथ रहित किया अर ताका सब पुरुषार्थ हरि ताहिहू जीवता छोड्या ॥ ९६ ॥ बहुरि काल समान उद्धत राजा कालमुख सो वसुदेवतैं युद्ध करिवे आया सो वसुदेवने वाकूं हू जीत्या अर जीवता छोड्या बहुरि राजा शल्य युद्धकूं आया ताहि वसुदेवने जृंभणी शस्त्रकरि बांध्या तब जरासिंधने राजा समुद्रविजयतैं कही हे नृप ! तुम शस्त्रविद्याविषैं प्रवीण हो रणविषै या मानीका मान हरो ॥ ९९ ॥ तब जरासिंधकी आज्ञाकरि महान्यायके वेत्ता राजा समुद्रविजय युद्धकूं उद्यमी भए जो न्यायवंत राजा हैं तिनकी यही रीति है जो रणविषैं स्वामीकी आज्ञा प्रमाण करें ॥ १०० ॥ जरासिंध सबका स्वामी है ताकी आज्ञा प्रमाण समुद्रविजयने अपने सारथीतैं कह्या जो तू अपना रथ याके रथपर चलाव सो वानैं चलाया तब वसुदेव अपना पिता समान ज्येष्ठ भ्राताका रथ अपने ऊपर आवता देखि दधिमुख विद्याधर जो अपना सारथी ताहि कही जो समुद्रविजय मेरा बडा भाई है यातैं इनकी तरफ अपना रथ धीरे २ चलाव यह मेरे गुरुजन हैं सो इनतैं एक रीतिसे

नेत्रनिकूं आह्लादकारी ऐसा सूर्य देख्या। अर आठवें स्वप्न सरोवर रूप सुंदर स्त्री ताके दीर्घ चंचल लोचन समान मीन युगल देखे परस्पर स्नेहके भरे अदेखसका भावतैं रहित जलविषै केलि करते देखे। अर नवमें स्वप्न वह कमलनैनी सुगंध जलके भरे दोय कंचनके कलश जिनके मुख कमलतैं ढके सो देखती भई मानूं वह कलश माता अपने कुचकुंभ समान ही देखे ॥ १४ ॥ अर दशवें स्वप्न वह जगज्जननी महा मनोहर सरोवर देखती भई मानूं वह निर्मल सरोवर पवित्र जलका भरा माताका मन ही है कैसा है, सरोवर सिवाणसहित स्वच्छ जलतैं भर्या अर कमलनिकरि शोभित अर राजहंसादि पक्षीनिकरि संयुक्त है ॥ १५ ॥ अर ग्यारहवें स्वप्न माताने मोटा समुद्र देख्या कैसा है समुद्र घूमती उछलती जो ऊंची तरंग तिनकरि सुंदर है। अर मूंगा मोती मणि तिनकरि पूरित है अर जामें झाग उठै हैं महा उद्धत महा भयानक गिराहनिके समूह जामें भ्रमै हैं॥ १६ ॥ अर बारहवें स्वप्न लक्ष्मीका स्थानक महा मनोहर सिंहासन देख्या सो कैसा है सिंहासन जाके चारोंपाए मृगेंद्रके आकार महा मनोहर हैं, कैसे हैं मृगेंद्रनिके आकार तीक्ष्ण नख अर तीक्ष्ण डाढ अर दृढ दृष्टि अर दैदीप्यमान अतिसुंदर केशावली ताकरि शोभित है अर सिंहासन मणीनिकी जो प्रभा ताकरि दशोंदिशा रूप जे वधू तिनके मुखकूं उद्योत करणहारा है। अर तेरहवें स्वप्ने यह जगतमाता आकाशविषैं देव विमान देखती भई, कैसा है विमान नानाप्रकारके भेदनिकूं लिए जे ध्वजा तिनकी जो अणी सो ही भई भुजा ताहि हिलावता मणीनिकी माला अर मोतीनिके हार तिनकरि दैदीप्यमान है ॥ १७ ॥ अर चौदहवें स्वप्ने यह जिनजननी पातालनिसैं निकसता नागेंद्रका भवन देखती भई कैसा है फणेंद्रका भवन फणनिपर मणीनिका उद्योत ताकरि भेद्या है पृथिवीका तिमिर जानैं अर नागकुमारीके मधुरगीत तिनकरि मनोहर है अर मानूं वह नागभवन भूमिकी शिखामणि ही है ॥१९॥ अर पंद्रहवें स्वप्ने यह पतिव्रता आकाशकूं स्पर्शों शिखा जाकी ऐसी रत्ननिकी राशि देखती भई, कैसी है रत्नराशि अरुण जे पद्मराग मणि अर उज्वल जे वज्रमणि अर हरित जे मरकतमणि अर श्याम इंद्रनीलमणि

प्रीतिकरि अति हर्षित है मन जाका सो महा प्रशंसा योग्य यह स्वप्न देखकरि आनंदसूं भर गई ॥ ५ ॥ पहिले स्वप्न श्वेत गजराज देखा सब ओर झरै हैं मदके नीझरने जाके अर दिग्गजनितक प्राप्त भई है गर्जना जाकी अर तमालवृक्षके पत्रनिसमान श्याम भंवर जिनपर गुंजार करै हैं अर कैलाश पर्वत समान है वर्ण जाका ऐसा चलते पर्वत समान सुर हस्ती देख्या अर दूजे स्वप्न धवल वृषभ देख्या ऊंचे हैं सींगनिके अर अपने खुरजकरि भूमिकूं खोदता महा टांडता सब दिशानिकूं शब्दायमान करता लंबी हैं पूंछ जाकी अर दीर्घ है कांधा जाका शरदके मेघ समान शुक्ल वर्ण महाधीर नेत्रनिकूं प्रिय महा भारके चलावनेकूं समर्थ शिवदेवी देखती भई ॥ ७ ॥ अर तीजे स्वप्न सिंह देख्या, उलंघ्या है पर्वतका शिखर जानै अर चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल है दाढ जाकी अर लंबा अर सब दिशमें व्याप रहा है शब्द जाका शरदके बादलनि समान श्वेत महा सुंदर मृगराज (शेर) देख्या । अर चौथे स्वप्न हाथीनिकरि होय है अभिषेक जाका अर गजराजके कुंभस्थल समान कुचरूप कलश जाके ऐसी लक्ष्मी देखी सुंगध जलके भरे कलश तिनकरि जाहि गजराज स्नान करावैं हैं गजकी सूंडकरि उठाये हैं कलश अर कलशनिके मुख पर कमलके पत्र हैं अर कमला स्नान करती कमलनिके सिंहासन बैठी है ॥ ९ ॥ अर पाचवें स्वप्न निर्मल आकाशविषैं दो माला लटकती देखी सो माला महाश्रेष्ठ जिनके मकरंदकरि तृप्त होय रहे हैं भंवरके नमूह माला महा । फुलित महा कोमल हैं पुष्प जाविषैं मानूं वह दोऊ माला माताने अपनी भुजा ही समान देखी । अर छठे स्वप्न चंद्रमा देख्या जो चंद्रमा रात्रिविषै अपनो किरणनिकरि अंधकारकूं दूरकरि मेघपटलरहित आकाशविषैं प्रकाश कररह्या है मानूं वह निशाकर निशिरूप सुंदर नारीका मनोहर हास्य ही है हास्य भी उज्ज्वल अर चंद्रमा भी उज्ज्वल । अर सातवें स्वप्न माता शिवदेवी दिवाकरकूं देखती भई कैसा सूर्य देख्या दृष्टि सुख कहिए नेत्रनिकूं सुखकारी अर आले सिंदूर समान है अरुण वरण जाका मानूं वह सूर्य दिशा रूप स्त्रीका पुत्र ही है दिन २ देखिवे योग्य है मुख जाका अर सूर्य नेत्रनिकूं आताप उपजावे है अर माताने

धरका अखंड प्रताप जाके गर्वकरि हती है रिपुकी शंका जिनि अर यदुवंशी राजा नानाप्रकार क्रीडाकरि रमते भये ॥ ७३ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं। हे श्रेणिक! जिनधर्मरूप मेघ जाके जलकी धाराकरि या पृथिवीविषैं नानाप्रकारके फल निपजै यह जिन धर्मरूप जलकीधारा लक्ष्मी अर कीर्तिकी उपजावनहारी है महा भयंकर जो रिपुरूप दावानल ताके दाहरूप दुःखकूं बुझावै है अर यह जिनमतरूप मेघमाला जगतके बांधवरूप जो सज्जन तिनकूं हर्ष उपजावै है ॥ ७४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कंसापराजितवर्णनोनाम षडत्रिंशः सर्ग ॥ ३६ ॥



५—पांचवां अधिकार।

श्रीनेमिनाथस्वामीका चरित्र।

अथानंतर—गौतमस्वामी कहै हैं। हे श्रेणिक! या लोकविषैं हर्षका कारण जो प्रगट भया सो तू सुनि पहले तोहि कहा ही हुता जो समुद्रविजयके घर नमिनाथ अवतरेंगे तिनका अद्भुत चरित्र म कहूं हूं सो सुनि हे राजा! अंधकवृष्टिके दशपुत्र ते दशार्ह कहिये तिनमें मुख्य शौर्यपुरका स्वामी राजा समुद्रविजय ताके रानी शिवदेवी ताके गर्भविषैं नेमिनाथ अवतरेंगे। ताके छै महीने पहले इंद्रकी आज्ञातैं पिताके घर कुवेर रत्ननिकी वृष्टि करता भया। सो दिनप्रति साढे तीन कोडि रत्न बर्षे सो अर्थीजन तृप्त भये। सब ही लोक अमोलक रत्न राजाके द्वारतैं ले गये जो उदारचित्त मेह समान दानधारा वर्षै तिनके पात्र अपात्रका भेद कहा वह सब ही आर्थियोंको तृप्त करै ॥ ३ ॥ सब दिशानितैं दिक्कुमारी माताकी सेवाकूं आईं तीन जगतविषैं सब दिशाके जीतिवेका यश जिनेश्वरका प्रगट करतीं भईं ॥ ४ ॥ एकदिन माता शिवदेवी रात्रिके पिछले पहर महा सुंदर सोलह स्वप्न देखती भई। कैसी है शिवदेवी समस्त अतिशयका दिखावनहारा समुद्रविजय अपना पति ताकी

कर्म सोइ प्रबल हैं। काहूका किया कछु होय नाहीं। जा समय जो भवितव्य होय सो ही होय। काहूका बल भवितव्य आगे न चलै॥ ६६॥ अर यादवनिका बुरा होनहार है। वे पशु देहतैं मूर्ख हैं। जो पशु आधा हू होय सोहू मरिवेकी शंका राखै। खेतमें चरिवेकूं पैठे तब निकसिवेका उपाय विचारै अर ऐसे वे मूर्ख पशुहूतैं, अति अविवेकी हैं यह विचार न किया जो हम याहि मारे हैं पर याके पीछे जरासिंधु है॥ ६७॥ तेरे ही चरणका उनकूं शरण हुता अर तेरेही कंटक भये तौ अब वे श्रवण अगोचरही रहेंगे अर उनके कुलरूप शाखाका बल बहुत भया है तो हू हे पुत्री! मेरे क्रोधरूप दावानलकरि भस्म भया देखि॥ ६८॥ ऐसे प्रिय वचनरूप जलकरि पुत्रीकी क्रोधरूप अग्नि बुझाई। अर कालयवननामा अपना पुत्र साक्षात काल तुल्य महा विकराल ताहि यादवनिके नाशके अर्थि आज्ञा करता भया॥६९॥ सो पिताकी आज्ञा पाय हाथी घोडे रथ पयादेनिकरि पूर्ण चालते समुद्र समान कटक ताकरि युक्त शत्रु जे यादव तिनिपरि चाल्या। सो शीघ्रही जायकरि यादवनिसूं युद्ध करता भया। सतरह वेर युद्ध तानैं यादवनिसूं किया। परंतु इनकूं जीत न सक्या। सो अतुल मालावर्तनामा पर्वत तहांतैं भागि गया॥ ७०॥ बहुरि जरासिंधु अपने भाई अपराजितकूं यादवनिपरि विदा करता भया। कैसा है भाई जीते हैं अनेक प्रबल वैरी जानैं अर जरासिंधुके प्राण समान प्यारा है सो शीघ्र ही यादवनिपरि गमन किया। वैरीनिका समूह ताके ग्रसिवेका लोलुपी सो प्रबल कालकी अग्निकी शिखाकी पंक्ति समान प्रज्वलित अपना कटकरूप वन ताका प्रेर्‍या चाल्या। सो तीनसै छियालीस प्रबल युद्ध अपराजितने यादवनिसूं किये। सो महायोद्धा यशका उपार्जनहारा हरिके वाणकरि हर्‍या है प्राण रूप सार जाका सो मानूं खेद निवारिवे अर्थि वीरशय्यापरि शयन करता भया।

भावार्थ—जरासिंधुका छोटा भाई अपराजित तीनसै छ्यालीस वेर युद्धकरि हरिके वाणतैं मूवा॥ ७२॥ अर हरिकी पुरी जो मथुरा ताविषैं नगरके लोक हर्षकूं धरते अर सुखकूं करते बसते भये कैसे हैं लोक हरि अर हल-

नामा पुत्री वलभद्रकूं विवाही, अर सुकेतुने अपनी सत्यभामानामा पुत्री केशवकूं परणाई। वह सत्यभामा प्रभानामा राणीकी पुत्री है ॥६०॥ इनके विवाहविषैं अनेक विद्याधरी पवित्र हैं भेष जिनके सो नृत्य करती भईं। वे विद्याधरी अपने कुचरूप कलश तिनके भारकरि खेदखिन्न भया है अंग जिनका। भावार्थ अति नाजुक बदन है अर नृत्यविषैं शिथिल होय गये हैं वस्त्र अर कांचिदाम अर केशनिके वंधन जिनके अर मनोहर है नूपुरनिका शब्द जिनिका ॥ ६१ ॥ नीलांवर कहिये हलधर अर पीतांवर कहिये हरि इन दोऊ भाईनिके प्रथम विवाह भये। कैसे हैं दोऊ वीर नानाप्रकारके मणीनिके आभूषण तिनिकी ज्योतिकरि प्रकाशरूप है अंग जिनके। समस्त यादव इनि दोऊ भाईनिकूं देखिकरि अति प्रसन्न भये इनिकूं सब वंशके शिरोमणि जानते भये। बडे २ राजा तिनिकरि सेवनीक ये पुत्र तिनकूं देखकरि रोहिणी वलभद्रकी माता अर देवकी श्रीकृष्णकी माता अति हर्षित भईं अर शिवदेवी आदि सबही बहुत हर्षित भईं। प्रथमही मदनकी रंगभूमिविषैं सत्यभामा मोहनका मन हरती भई। अर रेवती हलधरका मन मोहती भई। सीखी हैं अनेक कला अर धारैं हैं अनेक गुण तिनके योगकरि उन दोऊ भाईनिके वे दोऊ मन हरती भईं। जे चतुर हैं ते समय न चूकें। जिहि जिहि समय जे जे उचित कर्तव्य हैं तिनि तिनिकरि वे इनकूं प्रसन्न करती भईं। अथानंतर—वह जरासिंधुकी पुत्री जीवंयशा कलुष है भावनाके रोगकरि, मन जाका समुद्रसमान राजा जरासिंधु ताहि क्षोभ उपजावती भई। जैसैं वेला कहिये तरंग अति चंचलतारूप सो समुद्रकूं क्षोभ उपजावै, तमालके पत्र समान अति श्याम विखर रहे हैं केश जाके सो पिताके निकट अति रुदन किया। यादवनिकरि किया जो दोष-सो पिताकूं कहती भई हे तात! सर्व पृथ्वीके पति तुम, अर तुम बैठे मेरा धनी मार्‌या जाय अर मैं विधवा भई। सो यह वारता सहारी न परै। अब यादवनिका रुधिर सोई भया जल अर उनके सिर तेई भये सरोज कहिये कमल तिनिकरि पतिकूं पाणी द्यूं तौहू मेरा क्रोध न बुझै ॥६५॥ पुत्रीके ये विलापके वचन सुनिकरि पृथिवीका पति कहता भया। हे पुत्री! तू शोक तजि देवके ये पूर्वोपार्जित

सरोवरका निवासी हंस गंगाके तीर आवै। तैसैं वह विद्याधर हंस रथनूपुर चक्रवालनामा नगरतैं मथुरा आया कैसी है मथुरा दिशि दिशि गलिनमें विचरै हैं राजहंस जहां ॥५४॥ सो दूत आयकरि द्वारै खड्या। तब द्वारपाल वाहि राजसभामें ल्याये। सो वह राजसभा यादवनिकरि शोभित तहां दूत आय नमस्कारकरि यादवनिका इंद्र जो समुद्रविजय तासूं कहता भया हे नरेंद्र! मेरी विज्ञप्ति सुनहु। विजयार्द्धगिरिविषैं दक्षिणश्रेणी ताविषैं रथनूपुर चक्रवालनामा नगर ताका अधिपति राजा सुकेतनामा विद्याधर नमि विनमिके कुलकी ध्वजा ॥ ५५ ॥ सो सब विद्याधरनिका स्वामी है तानैं कृष्णके पराक्रम सुनि जो देवोपुनीत धनुष चढाया अर शंख वजाया अर नागशय्यापर आरोहण किया। यह वार्ता सुनि राजा सुकेतके कृष्णसूं अति प्रेम उपज्या सो मोहि पठाया है। ताकी पुत्री सत्यभामाकूं कृष्ण वरहु। सर्वकल्याणका मूल जो कृष्ण सो विद्याधरनिकूं विभूतिके अर्थ होहु ॥५६॥ यह दूतका वचन सकल यादवनिके मनका हरणहारा ताहि सुनिकरि समुद्रविजय कृष्णकूं आज्ञा करी। जो तुम सुकेतुकी पुत्री सत्यभामासूं विवाह करहु तब कृष्ण अति प्रसन्न होय दूतसूं कही। सत्यभामारूप रत्नकी धारा सुकेतरूप कुवेरकी वरषाई रतनाचलरूप जो मैं सो मोपर शीघ्रही परौ। भावार्थ—सुकेतु तौ कुवेर समान अर सत्यभामा रत्नकी दृष्टि समान अर मैं रत्नाचल समान सो वह रत्नधारा मोपरि परौ। सुकेतुकी दई मेरे गृहमैं प्रवेश करै ॥ ५७ ॥ ऐसे प्रीतिके वचन कहि दूतका बहुत सन्मान किया। अर दूतकूं विदा किया। अर वह दूत अतिहर्षित भया अपने स्वामीपै जायकरि नमस्कारपूर्वक सब यादवनिके गुण वर्णन किये। अर वाके बहुत गुण गाये। यह दूत आप तौ हर्षित होय आया हुता। अर सत्यभामाके मातापिताकूं अति हर्षित किये अर कार्यकी सिद्धि कही ॥ ५८ ॥ विद्याधरनिका इंद्र राजा सुकेत अपने दूतके मुख बलदेव वासुदेवके गुण सुनिकरि अति अनुरागी भया। दूत कही या पृथिवीविषैं बलदेव वासुदेव दोऊ भाई प्रकाशरूप हैं। हत्या है औरनिका तेज जिनि रूपकांति प्रताप धर्मज्ञता उनकी सब जानकरि सुकेत अर सुकेतका भाई रतिमाल ये दोऊ पुत्री लेकरि मथुरा आये। सो रतिमालने रति समान अपनी रेवती-

सावंत उठे। समस्त सेना कंसके कार्यविषैं सावधान सो बलदेव वासुदेवके प्रतापतैं सकल सेना भागि गई ॥ ४७ ॥ अथानंतर—च्यारि घोडे जुपे हैं जा रथके ताविषैं बलदेव वासुदेव वडे भाई सहित रथपर वैठि मल्लका भेष धरे अनेक आभरणकरि युक्त माता पिताके मंदिर आए। कैसा है मंदिर समुद्रविजयादिक सब भाईनिकरि पूर्ण है ॥ ४८ ॥ हलधर अर हरि अनुक्रमतैं वडेनिके पायनि पडे। पहले समुद्रविजयके बहुरि समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं बडे आठ भाई तिनिके पायन परे। वहुरि वसुदेव तथा मातानिके पायनि परे। सबनि आशीष दई। चिरकालके विरहका उपज्या जो अंतरंगका आताप ताहि मिलवेरूप जलकी धाराकरि बुझावते भए ॥४९॥ देवनि समान वसुदेव अर देवीनि समान देवकी सो अपने पुत्रका मुख देखि अतुलसुखकूं प्राप्त भई कैसा है पुत्र बुझाई है शत्रुरूप अग्नि जानैं। अर, सदा प्रफुल्लित है वदन जाका ऐसे पुत्रका संयोग सुखका कारण क्यों न होय या समान अर सुख कहा। अर वह यशोदाकी पुत्री वसुदेव ले आए हुते जाका नाक कंसने चिपटा किया सो हू कृष्णकूं देखि आनंदरूप भई ॥५०॥ जासमय कृष्ण घर आए ताही समय उग्रसेनकूं निर्बंधन किया। चिरकाल वंदीगृहके योगतैं क्षीण है शरीर जाका कंसकी शंकातैं रहित सकल नगर उछाहरूप भया ॥ ५१ ॥ कंसके सकल सज्जन अर ताकी बहू अत्यंत रुदन करती भई। अर कंसकूं शीघ्र ही दागकूं लेगए। कंसका संस्कार करि जरासिंधकी पुत्री जीवंयशा अपने पिताके पास गई रुदनकरि रुकगए हैं कंठ जाके ॥५२॥ जीवंयशा तो जरासिंधुपै गई अर यादव अपनी सभासहित विराजे हैं तासमय आकाशरूप समुद्रविषैं एक विद्याधर मीनकीसी लीला धरता मथुराके समस्त लोकनि देख्या कैसे हैं मथुराके लोक ऊपरकी ओर हैं मुखकमल जिनके। अर वह विद्याधर अति शीघ्रगामी मीनसमान चपलगत्ति सुकेत नामा विद्याधरका दूत आकाशरूप समुद्रविषैं सबनिकी दृष्टि पर्‍या। कैसा है आकाशरूप समुद्र अंभोद कहिए मेघ तेई हैं चपल तरंग जाविषैं मीनके तो नेत्र चमकें अर दूतके देदीप्यमान आभूषण भाषते भए ॥५३॥ शरीरविषैं उज्वल निर्मल वस्त्र पहिरे, अर चंदनादि सुगंध लगाये वह विद्याधर प्रगट कलहंस समान मथुरापुरी आया। जैसैं मान-

सैनकरि बुलाया सोहू आया। भावार्थ—दोऊ भेले होय भूधरकूं मारो सो दोऊ महामल्ल माधवपै आए। कैसे हैं दोऊ मल्ल महा कठोर महा तीक्ष्ण विकराल हैं नख जिनके अर दोऊ मुष्टि बांधे प्रगट सिंह समान भयंकर है आकार जिनका अर स्थिर हैं चरण जिनके। भावार्थ–जिनके पग अतिदृढ हैं सो कृष्ण तो चाडूर मल्लके सन्मुख आया, परस्पर मुष्टिकरि युद्ध होने लाग्या अर मुष्टी नामा मल्लपरि बलभद्र पधारे। कैसा है मुष्टी वज्रपात समान है कठोर मुष्टि जाकी वाहि आवतेकूं देखकरि बलदेव बोले तिष्ठि तिष्ठि ऐसा कहि एक थपेड दीन्हीं सो वाके तत्काल प्राण निकसि गए। मनुष्यकी कहा शक्ति जो शलाका पुरुषनिसूं लरैं। इनिसूं देव न लरि सकैं अर कृष्णने चाडूरकूं पकरया अर भुजजंत्रमें पेलि डाल्या रुधिरकी धारा वाके मुखतैं निकसी तत्काल जीव निकसि गया। यद्यपि वह चाडूर अति समर्थ हुता अर अति बलवान महा गर्ववान जासूं कोई मनुष्य जीति न सकै परंतु हरिपै वाका जोर कहा चालै। कैसे हैं हरि कहिए इंद्र अथवा हरि कहिए मृगेंद्र ता समान महा वीर्यके धारक हैं ॥४०॥ वे दोऊ मल्ल एक हजार सिंह अर एकहजार माते हस्ती तिनतैं अधिक बलके धारक हुते सो तत्काल दोऊ मल्ल हरि हलधरने मारे। उन दोऊनिकूं मूवे देखिकरि कंस आप चलायकरि आया तीक्ष्ण शस्त्र हैं जाके करविषैं तब तमस्त रंगभूमि चलायमान होयगई। जैसा समुद्र गाजै तैसा गाजता कृष्णपर आया तब कृष्ण महाबली वाके हाथतैं खड्ग खोसि लई अर म्यानमें घाल दई अर वाहि गाढा पकरया क्रोधकरि वाके पग पकरि चहुं ओर फिराय अर शिलापर पटकि मारया अर हंसे अर कही याही बलपरि गर्व करै हुता ॥ ४५॥ जब कंसकूं केशवने पछारया तब कंसकी समस्त सैना क्रोधकरि युद्धकूं उद्यमी भई तब अकेले बलिभद्र कुटिल हैं भ्रकुटी जिनकी महलका थंभ उपारि योद्धानिपरि दौरे। वज्रपातसमान थंभका घात ताकरि कैयक मारे तब सब योद्धा भागे बलदेव वासुदेवसूं कौन लरि सकै। जब कंसके सामंत सब भागि गए। तब जरासिंधुकी बडी सेना कंसके तावे हुती तामैं बडे बडे राजा युद्धकूं उद्यमी भए। यादवनिपरि विषम है दृष्टि जिनकी जैसैं समुद्र गाजै तैसा शब्द करते भए सब औरतैं

दर गए। सो लीलामात्र दोऊ गजनिसूं युद्ध किया। सो कठिन चोट लगावैं तौ वे मरि ही जांय पर इनकूं न मारना सो लीलामात्रमें दोऊभाई इन दोऊगजनिके दांत उखार लिए। जैसैं सांपनिकरि वैठे बांसके अंकुरे उखारैं तैसैं वंधनकरि वेष्टित हस्तीनके दांत उखारि लिए ॥ ३४॥ मूलतैं उखरि गए हैं दांत जिनके ऐसे वे हस्ती विरस शब्द करते भागिकरि नगरमें पैठे अर ये दोऊ वीर अपने गोपीनिसहित नगरमें आए ॥ ३५॥ अपने कांधेनिकरि महा मल्लनिकूं ठेलते ये दोऊ मल्ल रंगभूमिमें आए। कैसी है रंगभूमि कमलनिकी कूपलनिकरि मंडित शोभित है द्वार जाका अर वडे २ राजा जहां कौतुक देखै हैं कमलनिपर भंवर गुंजार करै हैं॥३६॥ सो रंगभूमिविषै हरि अर हलधरका लीलामात्र गर्जना खमका ठोंकना अर अपने चरण अर भुजदंड तिनकी चेष्टाका करना अर नाना प्रकारकी मल्लविद्याकी कला अर दृढ दृष्टि अर दृढ मुष्टि तिनकरि वह रंगभूमि सोहती भई। जैसैं वस्त्रका छेहरा लता थकी सुंदर भासै तैसै इनकी सुंदर चेष्टा सुंदर भासती भई। तासमय वसुदेवकूं वलदेव सैनकरि सब दिशा वताता भया हे हरि! यह तेरा वैरी कंस है अर वे याके निकट जरासिंधुके लोग हैं अर ये समुद्रविजयादिक तेरे वावा हैं अर ये काका वावानिके वेटा हैं। कृष्ण तो उनकी ओर देखि रह्या। अर वे सब भाई काका बाबाके इन दोऊ भाईनिकी ओर देखि रहे ॥ ३८ ॥ अर कंस मल्लनिकूं आज्ञा करी जो तुम परस्पर मल्लयुद्ध करहु। सो सब ही अपनी अपनी जोडीतैं युद्ध करते भए। जहां अनेक देशनिके राजा देखै हैं अर अनेक लोग भेले होय रहे हैं तिनिका अति क्षोभ होय रह्या है अर अनेक मल्ल गर्जना करै हैं अर खम ठोकै हैं तिनकरि रंगभूमि रमणीक होय रही है। जैसैं आरणे भैंसे क्रोधके भरे परस्पर लरैं तैसैं मल्ल परस्पर लडैं हैं ॥ ३९ ॥ अथानंतर—दुष्ट कंस कृष्णपरि चाडूरनामा मल्लकूं आज्ञा करी। कैसा है चाडूर पर्वतकी भारी भीति समान विस्तीर्ण है वक्षस्थल जाका अर प्रगट महा दृढ घाणी समान है भुज जंभ जाके जामें पेलि डाले हैं अनेक मल्ल जानैं। सो स्वामीकी आज्ञाप्रमाण सबके सन्मुख आया अर कंसने विषसमान विषम दृष्टिकरि दूजा मुष्टीनामा मल्ल ताहूकूं

राजानिका इंद्र है ॥ २५ ॥ दोऊ भाईनिके जन्मांतरका स्नेह ताकरि भिलिगये हैं मन जिनके सो यमुनामें स्नान करि गोपनके समूह सहित अपने घर आए। दोऊ भाई जलक्रीडाविषैं निपुण अर देवनिकरि नृपनिकरि सेवनीक ॥ २६ ॥ सो आयकरि भोजन किया बलभद्रने तो इनके लेयवे योग्य वस्तु हुती सो लई अर हरिने महा सुगंध महास्वाद गायनिका घीव अर दधि दुग्ध मिष्टान्न आदि अनेक रस अर नानाप्रकारके व्यंजन अर खीर आदि अनेक भोजन चौकेमें सुवर्णके पात्रमें भली भांति भोजन किए। अति नरम अति सुंदर अति मिष्ट अति उज्ज्वल तंदुल आरोगिकरि कृष्ण उठे। दोऊ भाई महा सुगंध चंदन अर गजा अतर अति सुगंध लगायकरि नाना प्रकारके पुष्पनिकूं धरे अति सुगंध है शरीर जिनके। पान सुपारी लवंग इलायची दालचीनी चावते अरुण हैं अधर जिनके अर देदीप्यमान है मुख जिनका ॥२८॥ नानाप्रकारके मल्लविद्याके करणहारे तिनमें प्रवीण समस्त विद्यानिमें प्रवीण किए है सुंदर भेष जिनि। वडा भाई नीलांबर छोटा भाई पीतांबर उरविषैं लगाया है सिंदूरिका रंग जिनि अर नवीन पुष्पनिकी वनमाला तिनके हैं सेहुरे जिनके मालती आदि अनेक पुष्पनिकरि शोभित ॥ २९ ॥ अपने मनविषैं कंसका विध्वंस विचारकरि चले। अपने चरणनिके घातकरि पृथ्वीकूं क्षोभ उपजावते महा भयंकर मल्लका भेष धरि अपने गोपनिके समूह सहित मथुरापुरीकी ओर चाले मारगमें कंसके पक्षके असुर इनपर आए एक नागरूप होय आया। एक गर्द्दव होयकरि आया एक खोटा तुरंग होयकरि आया फाऱ्या है मुख जिनि कृष्णके विनाशिवेकूं चलायकरि सन्मुख आया। ये कृष्णने सब भगाए अर एक केसीनामा असुर आया सोहू केशवने भगाया। सवनिकूं जीतिकरि नगरमें प्रवेश करते हुते सो नगरके द्वार दोय गजराज आए। मदके झरिवेकरि भीजि रहे हैं कपोल जिनके सो एकैलार दोऊ गज कंसकी आज्ञातैं इनपरि ल्याए। तिनकूं जानिकरि दोऊ भाई हर्षित भए। दोऊ युद्धकी रंगभूमिविषैं महा मल्ल हैं इन दोऊ हाथीनिमें एक चंपकनामा हाथी ताके सन्मुख तौ राम कहिए बलदेव गए, अर दूजे हाथीका नाम पाटाभर तापरि फणिरिपु कहिए नागके दमनहारे दामो

युक्त देख्या ताका कारण कहूं हूं। तुम मेरे शास्त्र पढावनेके गुरु अर महा पंडित अर या लोककी सकल रीतिके ज्ञाता औरनिकूं मारग बतावोहो सो तुम सारिखे विवेकी मेरी माता पूज्य ताहि तिरस्कारके वचन कहौ। यह तुम कूं योग्य है ? ॥ २१ ॥ ये वचन वासुदेव उलाहनारूप कहे तब वलदेव भाईकूं छातीसूं लगाय रोमांच होय गदगद वाणीकरि हर्षके आंसू नांखता प्रगट करी है अंतःकरणकी विमल वृत्ति जानैं सो सब वृत्तांत केशवसूं कहता भया हे धीर जरासिंधुकी पुत्री जीवंयशा कंस परन्या है ताके घर कंसके वडे भाई अतिमुक्तिकनामा मुनि आहारकूं आये सो वा पापिनीने मुनिके निकट तेरी माता देवकीके रतिके वस्त्र डारे तब मुनि कही या देवकीके नवमां नारायण पुत्र होयगा सो पहिले तेरे पतिकूं मारैगा अर पीछे तेरे पिताकूं मारैगा। सो वानैं ये मुनिके वचन कंससूं कहे। सो पहिले तेरे छह भाई तीन युगल भए वे तौ तद्भव मोक्षगामी हैं सो भद्रलपुरविषैं अलकानामा सेठानीके घर हैं अर अलकाके छह पुत्र तीन युगल मृतक भए सो देवनि देवकीकी प्रसूतिगृहमें लाय डारे सो मूवेहू कंसने शिला-पर पछार मारे अर चौथे गर्भ सातवां पुत्र तू भया सो सातवें महीने ही जन्म्या। शत्रु न जानि सक्या सो तोहि होते ही नंदके घर आय राख्या है ये वचन वलदेवके सुनि वासुदेवकूं वडे भाईनिके मारिवेकरि कंसपर क्रोध उपज्या अर वडे भाई कही तेरे मारिवेके उपाय वानैं वहुत किए जन्महीतैं उपाय करै है अर अब मल्लयुद्धका उपाय रच्या है। ये वचन हलधरके मुरलीधर सुनिकरि कंसके मारिवेविषैं चित्त धरता भया ॥२४॥ अबतक हरिके जीवमें यह हुती जो मोसारिखा सामंत अहीरनके कुलमें क्यूं उपजा अब रोहिणीका पुत्र वलदेव ताके मुख आपकूं हरिवंशी जान्या जो हमारा क्षत्रीनिका कुल है। जा वंशविषैं श्रीमुनिसुव्रत नाथ भए अर नेमिनाथ होहिंगे। मैं देवकीका पुत्र हूं अर मेरा पिता वसुदेव है अर यह वलदेव मेरी वडी माताका पुत्र वसुदेवका नंदन मेरा बडा भाई है अर समुद्रविजयादि वसुदेवके वडे भाई सब मेरे वावा हैं मैं वडे कुलविषैं उपज्या हूं अर नंद यशोदाके पल्या हूं सो ये मेरे धर्मके माता पिता हैं ऐसा सब वृत्तांत जानि कृष्णका मुख कमल फूलि गया हरि कहिए इंद्र ता समान यह हरि कहिए वासुदेव

विछुरा है छोटा भाई वसुदेव ताके देखिवेके मिसकरि बडे भाई मथुरा आये कंसकूं यह जताया जो छोटे भाइसूं मिलिवे आए हैं। जब यादवनिका इंद्र समुद्रविजय सब भाईनि सहित आया तब वसुदेव सन्मुख गये। अर कंसहू शंकाका भऱ्या सन्मुख जाय इनिकूं पुरीमें ल्याया। नगरकी मंदिरनिकी शोभा देखकरि यादवनिके नेत्र तृप्त भये। कंसने सबनिकूं डेरे दिवाये अर बहुत आदर किया। भांति भांतिकी इनके सामग्री पठाई। जैसैं कोऊ स्नेही स्नेह दिखावै तैसैं कंसने कपटसूं दिखाया। दिन प्रति तिनकी सेवा दान मान प्रणामकरि पाहुनगतिकरि मानूं स्नेह दिखावै है। कैयक दिन यादवनिसहित यादवनिका ईश्वर समुद्रविजय भाईके निकट रह्या अंतरमें है दाह जिनके। अर गोकुलमें है गोप जिनकूं मल्लयुद्धके अर्थि कंस पत्र पठाया तब बलभद्र सब अर्थ जान्या अर सब गोपनिकूं युद्धाभिलाषी करते भये अर कृष्णके निकट महा प्रवीण बलभद्र यशोदाकूं तेजकरि कठोर वचन कहते भये। हे यशोदे! तू कृष्णकूं स्नान क्यूं न करावै है एती ढील क्यूं करै है। तोहि तनहूकी सुधि नाहीं एक वेर कहौ वा बहुत वेर कहौ तू अपना स्वभाव नाहीं तजै है जैसैं सीप महा उज्ज्वल पवित्र मुक्ताफलकूं निपजावै है परंतु समुद्रविषैं उपजी तातैं समुद्रकी लहरिका स्वभाव चंचल सीप हू धरै है। तैसैं तू कृष्णसारिखे पुत्ररत्नकी उपजावनहारी है परंतु गोपिनके स्वभावकूं नाहीं तजै है ये वचन हलधरने कहे तब यसोदाके नेत्र आंसूनिकरि भरि आये अर कछु उत्तर न दिया। शीघ्रही न्हायवेकूं जल कीया। अर भोजनकी तयारी करी ॥ १८ ॥ तब दोऊ भाई बोले स्नान तो हम नदीविषैं करैंगे अर भोजनकी तयारी कर लेहु सो दोऊ वीर महाधीर नदीके तीर गये। तहां एकांतविषैं हलधर चक्रधरसूं कहता भया। हे कृष्ण! तू आज उदास चित्त क्यूं है। तेरे मुखतैं लांबे उष्ण स्वास निकसै हैं अर तेरे नेत्र आंसुनिकरि सजल हैं। अर तेरा मुख दाह करि मुरझाए कमलसमान भासै है कांतिरहित दीखै है यह कहा कारण है सो मोहि कहो ॥ २० ॥ विकसित बदन बलभद्र तानैं स्नेह सहित माधवसूं पूछ्या तब माधव कहते भए हे आर्य! मेरे वचन सुनो। मेरा चित्त दुःखकरि

महा भयंकर फणानिकरि मणिनकी किरण तिनका समूह तिनतैं निकसै हैं अग्निके स्फूलिंगके समूह तिनकरि हरिके जरायवेकी है इच्छा जाके। तव माधव उछलिकरि वाके सिर परि जाय परे अर नागकूं नारायणने पांवसूं खूंध्या अर सहस्रदल कमल ले बाहिर आये। सब गोप अर गोपी द्रहके तट वृक्षनिके तले चिंतारूप खडे हुते अर हलधरहू खडे हुते सो हरिकूं देखिकरि सबही हर्षित भए अर गोप गोपी गान करते भए अर बलभद्र अति प्रसन्न धन्य धन्य यह शब्द उच्चार करते भए। भुजंगकूं भुजनितैं जीतकरि कमलकूं लय पवनकी नाईं शीघ्र ही मुकुंद आय सो देखकरि सब सखा फूल गए। लहलहाट करते अति दैदीप्यमान पीतांबर तिनकरि शोभित आनंदके भरे अति उल्लासरूप श्यामसुंदर कारी नागपर परते कैसे सोहते भए जैसैं श्यामशिलापर वरषता विजुरीसहित मेघ सोहै माधव तो मेघ भए अर बिजुरी अर कारीनाग शिला समान जानहु। नागकूं जीति भुजानितैं उपारि सहस्रदल कमलकूं केशव ल्याए अर और अनेक कमल गोप ल्याए तिनिके भारे वंधायके सबने कंसपै पठाए सो पापी पराए गुणनिका न सहि सकनहारा क्रोधकरि तप्तायमान भया अर अति उष्ण उस्वास वाके मुखतैं निकसे अर आज्ञा करी नंदके नंदन आदि सबही ग्वाल मल्लयुद्धकूं यहां आवैं यह आज्ञा करि मल्लयुद्धके अर्थि अपने सब मल्ल भेले किए। जघन्य मध्यम अर उत्कृष्ट सबही मल्ल एकत्र भए कैसा है कंस करोत सारिखा है तीक्ष्ण चित्त जाका तत्काल माधवकूं मार्‍या चाहै है। यह शत्रुका चरित्र वसुदेवने जान्या जो याके विलम्ब नाहीं शीघ्र ही हरिकूं हत्या चाहै है। तव वसुदेव अपने अनावृष्टि पुत्रकूं मंत्रकरि बडे भाई समुद्रविजयके निकट समाचार पठाए जो यहां यह चरित्र है। यह वार्ता सुनि शत्रुकी दुष्टता जानि समुद्रविजय आदि वसुदेवके बडे भाई अर और यदुवंशी रथ तुरंग हाथी पयादे समस्त अपनी सेन्या सहित शीघ्र ही वसुदेवके समीप आए। पृथिवीकूं शोभित करते शस्त्रनिके धारक सामंत वसुदेवके निकट आए। उपज्या है गर्व जाकूं अर दुष्ट है हृदय जाका ऐसा कंस ताके विदारिवेकी है इच्छा जिनकी ॥ ९ ॥ चिरकालका

तामिषैं कंसका मदन सोहता भया ॥ २ ॥ अर शरदऋतुविषैं मेघमालाके अभावतैं चंद्रमाकी किरण आकाशविषैं प्रगट भासती भईं। आकाश तौ चंद्रकलाकरि देदीप्यमान भासता भया अर पृथ्वीविषैं कर्दम विघटि गया पृथ्वी निर्मल होय गई। अब कैयक दिनमें कंसके घातकरि बढैगा हरिका प्रताप ताकूं प्रगट करती शरदऋतु सोहै है ॥ ३ ॥ शरदऋतुविषैं विस्तीर्ण जे नदीनिके पुलनि तिनपर आय परे हैं जलके फैन अर निर्मल होय गई है नदी अर निर्मल होय गये हैं सरोवर अर सरोवरनिमैं फूले हैं स्वेत कमल तिनके मिसतैं यह ऋतु मानूं हरिका उज्ज्वल यशही विस्तारती थकी सोहै है सो शरदऋतुविषैं पृथ्वी सब दिशि हर्षकी भरी नारीसमान सोहती भई कैसी है वसुंधरारूप नव वधू नवा वर जो नवल नागर नारायण ताके कंठसूं लागिवेकी है इच्छा जाके। भावार्थ—धरित्रीरूप स्त्री धरिणीधरकूं वरा चाहै है। कैसी है धरित्रीरूप स्त्री वृक्षनिके फलरूप कुच तिनके भारकरि नम्रीभूत हैं अर नाना प्रकारके काचे धान विकसि रहे हैं। तेई मानूं कंचुकी समान सोहै हैं अर स्त्रीहू पहिले गर्भ ग्रहै है पीछे जणै है अर भूमिहू पहिले वीजकूं ग्रहै है पीछे अंकुरा काढै है अर नानाप्रकारके तृण अर काचे धान तिनकूं चरकरि हर्षित भये गाय बलध शब्द करै हैं तेई शब्द जाके। भावार्थ—स्त्री तो हर्षित होय गावैं हैं अर गाय बलध हर्षित होय दहाडै हैं सो उनका दहाडना सोई धरारूप नारीका शब्द है शरदऋतुविषैं भूमिरूप भार्या कृष्णकूं हर्ष उपजावती भई अर रिपुनिका नाश दिखावती भई ॥ ५ ॥ अथानंतर—जानी है हरिकी सकल क्रीडा जानैं ऐसा कंस सो बहुरि भी कृष्णके नाशके अर्थि नागेंद्र द्रहविषैं सहस्रदल कमल ताके ल्यायवेकू गोकुलके गोपीनिकूं आज्ञा करी। सो वा सरोवरविषैं महा विकराल नागकुमार देव रहै ताविषैं कोऊ स्नान करिवेकूं जाय न सकै। सो वह जमुनाका द्रह नागनिकरि महाविषम तहांतैं कमल कौन ल्याय सकै। कंस जानी वह मेरा शत्रु नागथकी नाशकूं प्राप्त होयगा जब कंसका आज्ञापत्र गोकुलमें आया तव सवनिकूं चिंता उपजी यह कमल कौन ल्यावै। तब महाबली वासुदेव अपनी भुजाका है बल जाके सो लीलामात्र द्रहविषैं प्रवेशकरि समस्त द्रहकूं अवगाह्या। सो महा कोपकरि उठ्या काली नाग

मांगै सो देऊं। सो या घोषणाकूं सुनिवेकरि अनेक राजकुमार आये सो काहूहीतैं यह कार्य न भया। तब विलखे होय उठि गए अथानंतर—जरासिंधुका पोता भानु गोकुलमें आय उतर्‍या। सो कृष्णकूं पराक्रमी जानि याकी सामर्थ्य प्रत्यक्ष देखि कार्यके अर्थि याहि मथुरा ल्याया ॥ ७४ ॥ सो कृष्ण भानुकी लार आयकरि नागशय्या देखी महाभयंकर जे सर्प तिनके फणनिकरि डरावनी सो वा नागशय्यापर आरूढ होता भया अर मायामई भुजंगम तिनके मुखकरि निकसै है धूम ताकरि भयंकर अग्निकी ज्वालाकरि प्रज्वलित जो देख्या न जाय सो धनुष माधवने तत्काल चढाया। अर शंख फूंक्या ताका शब्द दशू दिशामें भया। जे कार्य कृष्ण किए ते भानुकुमारके किए जनाये। तब सब लोक ताके महात्म्यकी प्रशंसा करते भए। सो शंख ऐसा बाज्या मानूं समुद्र ही गाज्या। कैयक तो कहै हैं यह कार्य भानुकुमारने किया अर कैयक कहै हैं एक सांवरा लरिका हुता तानैं किये। तब भानुकुमारने कंसकी शंकाकरि कृष्णके लार अपने चाकर देय गोकुलमें पठाय दिया ॥ ७८ ॥ अर आप शय्या अर धनुष शंखके समीप ठाडा जे भानुके सेवक कृष्णकी लार गये हुते ते कृष्णके गुणनिकरि अति अनुरागी भये ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहै हैं ॥ हे श्रेणिक! कृष्ण गर्भमें न आया हुता ता पहिले ही वांध्या है वैर जानैं ऐसे कंस महा दुष्ट सो कहा करि सकै। कृष्णने पूर्वभवविषैं जिनधर्म आराध्या सो सहाई तब शत्रुका क्रिया कहा होय ॥ ७९ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णबालक्रीडावर्णनोनाम पंचत्रिंशः सर्गः ॥ ३५ ॥



अथानंतर—शरदऋतु प्रगट भई। वाणासनजातिके वृक्ष तेई भये धनुष तिनके भ्रमररूप फिडिचि चढी। अर कल हंसिनीके मनोहर शब्द तेई शंखनिके शब्द सो रिपुका मद सोई भया मोरनिका शब्द ताहि तिरस्कार करते भये। भावार्थ—शरदविषैं मयूरनिका शब्द नाहीं सोहै है। तैसैं कृष्णकी नवीन लक्ष्मी सोई भई शरदऋतु

देवकीने सब वृत्तांत अपने स्वामीसूं कह्या सो अति प्रसन्न भया ॥६२॥ बलभद्र केशवकूं नितप्रति जायकरि कला गुण सिखावै सो बुद्धिमान तुरंत सीख ले। गुरुका वचन जो शिष्य विनयवान होय ताहीके लागै। या भांति हलधर अर हरि विद्याभ्यासकरि काल व्यतीत करैं। सो कृष्ण बाल्यावस्थाकूं उलंघकरि कुमारावस्थाकू प्राप्त भया, परंतु वह महानुभाव निर्विकार परदाराका परित्याग जाके सो विषयानुरागी न होता भया। जो बडे पुरुष हैं तिनतैं अयोग्य क्रिया न होय। अर जगतका वल्लभ जो इनकूं देखिके स्त्रीनिका मन मोहित न होय। वे गोपवधू इनके निकट रास विलास करती भईं। अर ये देवनिसमान नृत्य अर गान करते भए अर कछूही विकार नाहीं। जैसैं सुवर्णकी मुद्रिकामें मणि सोहै तैसैं कृष्ण गोपिनमें सोहते भए ॥ ६५ ॥ या हरिविषैं जीवनिका अनुराग वृद्धिकूं प्राप्त होता भया अर याहि न देखें तब सबनिके विरह उपजै। एकदिन कंस अपने शत्रुकूं ढूंढिवेकूं व्रजमंडलमें विहार करता भया। तब कंसकूं बाहिर निकस्या जानि नंद अरु यशोदा पुत्रकूं वनविषैं लेगए। तहां एक राक्षसनी अट्टहास करती रूक्ष हैं नेत्र जाके अर विकराल है मुख जाका सो कृष्णकूं देखिकरि अपनी काया बढाई अर खायवेकूं दौडी। तब हरि अपने पराक्रमकरि वाहि दूर भगाय दई ॥ ६८ ॥ अर कृष्ण मातापिताकी लार आगे जाय था सो मारगमें शाल्मली वृक्षके खंडका एक थंभ बना हुता तहां थंभनिकी पंक्ति अति भारी सो अनेक मनुष्यनितैं न उचै। ताहि कृष्ण उठायकरि मंडपपरि धरता भया। ये पुत्रके पराक्रम देखि मातापिता निशंक भए। जो याहि मारिवे समर्थ कोऊ नाहीं ॥ ६९ ॥ तब अपने स्थानक जाय सुखसूं बैठे। अर कंस व्रजविषैं विहारकरि मथुरापुरी आया। सो मथुरापुरीमें देवालयविषैं तीन रत्न अकस्मात् उपजे। नागशय्या, सिंहके आकारके हैं पाये जाके। अर पंचायन संख, अर धनुप, सो निमित्तज्ञानीने कंससूं कही। जो नागशय्यापरि आरोहण करै अर धनुप चढावै अर संख बजावै सो तेरा शत्रु है। सो कंसने शत्रुके निश्चयकरिवे अर्थि नगरमें घोषणा फेरी। जो पुरुष नागशय्यापरि आरूढ होय अर धनुप चढावै अर शंखका शब्द करै ताहि मेरी पुत्री अपराजिता परणाऊं। अर जो

अद्भुत है हीस जिनकी अर ऐसे उछले हैं मानों आकाशकूं उलंघेंगे अर आवर्त रूप करे हैं मानों गगनरूप समुद्रकी तरंग ही उठे हैं सो यह सेना वर्तुलाकार है अर स्वतः स्वभाव है पुरुषार्थ जिनमें अर दूजी बृषभनिकी सेना सुन्दर है मुख अर रोम जिनके कमल समान हैं नेत्र जिनके, अर महा मनोहर हैं ककुध जिनके अर सुन्दर है पूछ जिनकी अर मनोज्ञ हैं गात्र जिनके अर स्वर्णमई खुर अर सींग तिनकरि महा रमणीक अर विस्तीर्ण है कांति जिनकी अर चन्द्रमा समान है प्रभा जिनकी ॥ २४ ॥ ज्यों तुरंगकी सेना सप्त प्रकार त्योंही बृषभोंकी सप्त प्रकार सेना है अर सप्त प्रकारही भिन्न भिन्न रथोंकी सेना सो रथ पर्वत कर अभेद्य आकाशरूप समुद्र विषैं जहाज समान जिनकी प्रभा देखते सूर्यके रथकी कहा प्रभा ऐसी रथोंकी सेना अति मनोहर वर्तुलाकार शोभती भई ॥ २५ ॥ अर चौथी गजोंकी सेना सोई सप्त प्रकार भांति २ के गज अपनी मदधाराकरि वर्षते मानों मेघ समान ही है। ऊंची करी हैं सूंड जिन अर महा गर्जना करे हैं जैसे मेघ गाजे तैसेही यह गाजें हैं वडे वडे देव जिनपर चढे हैं यह गजनिकी सेना अनेक रचनाकूं धरे वर्षा ऋतुकी शोभाकूं विस्तारै है। ये गज तुरंग बृषभ सब देवही हैं तिर्यंच नाहीं मायारूप रचे हैं ॥ २६ ॥ अर पांचमी गंधर्वोंकी सेना सात प्रकार सो सप्त प्रकार महा कोमल सुर तिनकरि गानकी रचना करै हैं अर बीन, बांसुरी, ताल, मजीरा इत्यादि अनेक वादित्रोंके मिले हुए शब्द तिनकर पूर्ण किया है त्रिभुवनका उदर जिन अर देव देवांगना तिनके कानोंको रमणीक ऐसे गीत गंधर्व अपनी स्त्रियों सहित गावते भए ॥ २७ ॥ अर छठी नृत्यकारिणी सेना सो भी सात प्रकार ताविषैं देवांगना नृत्य करै हैं समस्त रसको पुष्ट करनहारी महा मनोहर गात्रोंकी चेष्टा तिनकरि देवोंके मन सोई भए कल्पवृक्ष तिनके आनंदरूप पुष्पोंकी मंजरी प्रफुल्लित करती संती आगे २ नृत्य करती संती जाय हैं यह नृत्यकारिणीनिकी सेना नितम्बके भारकर मंद मंद चलती अति शोभै है यह षट् सेना कही अर सातमी पियादेनिकी सेना सो भी सात प्रकार ते सबही नानाप्रकार आभूषण पहरे स्वतः स्वभाव पुरुषार्थको धरे अनेक प्रकार

प्रकारके भवनवासी महादेदीप्यमान इनके इंद्र २० अर प्रत्येंद्र २० तिनके साथ यह दशोंदिशाकूं प्रकाश करते गमन करते भए ॥ १६ ॥ अर व्यंतरोंके भेद ८ किन्नर १ किंपुरुष २ महोरग ३ गंधर्व ४ यक्ष ५ भूत ६ राक्षस ७ पिशाच ८ तिनके इंद्र सोलह अर प्रत्येंद्र भी सोलह तिनके पीछ सब सोलह तिनके पीछे सब चले अर देवनिकी देवी मनकी हरनहारी गीत, नृत्य. वादित्रविषै निपुण ते जिनराजका जन्म कल्याणकका उत्सव देखिवेकूं चाले भवनवासी व्यंतर इनके निवास अधोलोकविषैं भी हैं अर मध्यलोकमें भी हैं ॥ १९ ॥ अर ज्योतिषी देवनिके भेद ५ चंद्र, सूर्य, ग्रह, तारा, नक्षत्र तिनमें चंद्रमा इनका इंद्र अर सूर्य प्रत्येंद्र सो यह सब ही ज्योतिषी देव अपनी कांतिकरि पृथिवीविषै प्रकाश करते शोभते भए। सब देवनिके साथ अधिक शोभा विस्तारते सौर्यपुर आए ॥ १८॥ अर स्वर्ग सोलह तिनके इंद्र १२ अर प्रत्येंद्र भी १२ प्रथम स्वर्गका नाथ सौधर्म ताकूं आदि दे अच्युत पर्यंत सब ही इंद्र अपने देवनि सहित देवाधिदेवके दर्शनकूं आय एक एक इन्द्रकी साथ सप्तांग सेना सो सोलह ही स्वर्गनिके देव अति आनन्दके भरे इंद्रोंके साथ जिनेंद्रकी जन्मपुरी आये ॥ १९ ॥ सौधर्म इन्द्र अपनी इन्द्राणी आदि देवीनि सहित ऐरावत गजेंद्र पर आरूढ़ अति शोभता भया, कैसा है ऐरावत अनेक हैं मुख अर दांत जाके अर दान्तों पर सरोवर अर सरोवरोंमें कमलोंके समूह अर कमलोंमें पत्रावली अर कमलोंके पत्र पत्रमें महास्वरूप सुर सुन्दरी नृत्य करै हैं मानों वह ऐरावत गजेन्द्र चलता हिमाचल पर्वतही है यह ऐरावत तिर्यंच नाहीं देव है, देवमाया करि गजका रूप धरा है ॥ २० अर इन्द्रके साथ सप्त प्रकार सेना एक एक सेना सात सात प्रकारकी सो इंद्रको वेढ कर सब सेना चाली। कुलिश कहिये वज्र सो है मुख्य जिनमें ऐसे शस्त्र तिनकूं धरे मानों यह देवोंकी सेना शस्त्रनिकी बनी है तिनके मध्य कुलिशायुध कहिये इन्द्र सो अति सोहै है ॥ २१ ॥ सात सेनामें सात प्रकारकी तिसका व्याख्यान करे हैं वे तुरंग तिर्यंच नाहीं देवमाया कर अश्वरूप हैं अपनी शीघ्रता कर पवनको जीतैं ऐसी है चाल जिनकी अर

अथवा त्रैलोक्यरूपी पुरुष ही मानूं आनंदकरि नृत्य करै हैं कैसा है त्रैलोक्यरूपी पुरुष शिवपद जो मोक्ष सोई है शीस जाके अर पंचानुत्तर है मुख जाके अर नवअणुत्तर है ठोडी जाके अर नवग्रीव है ग्रीवा जाके अर षोडश स्वर्ग हैं शरीर जाके अर मध्यलोक हैं कटि जाकी अर अधोलोक है पांव जाके ऐसा त्रैलोक्यरूपी नटवा मानूं श्रीभगवानके जन्मविषैं नृत्य ही करै हैं नृत्यका करणहाराहू कटिपर कर धरिकरि नाचै है अर लोकहीका आकार ऐसा है जैसा कटिपर हाथ धरे पुरुषका होय ॥ भावार्थ—जिनराजके जन्मविषैं सब लोक हर्षकरि नाच उठ्या सब हीके आनंद भया ॥ १२ ॥ जा समय जिनेंद्रका जन्म भया ताही समय भवनवासीनिके शंखका शब्द बिना वजाया अकस्मात् होता भया अर व्यंतर देवनिके अकस्मात ढोलका शब्द भया अर ज्योतिषी देवनिके सिंहनाद वाजि उठे अर कल्पवासी देवनिके स्वयमेव घंटाका नाद भया अर जिनवरके जन्मके प्रभावतैं चतुरनिकायके देवनिके विना वजाए वादित्र शब्द करते भए अर देवनिके अधिपति सौधर्म इंद्रादि अर असुरनिके अधिपति चमरेंद्रादिक जिनके सिंहासन कंपायमान भए अर मुकुट चलायमान भए तब वे अवधिविचारि भगवानका जन्म कल्याणक जानि अति आनंदके भरे चतुरनिकायके देवनिसहित भरतक्षेत्रकी ओर चले अर सोलह स्वर्गके ऊपर नवग्रैवेयिक नव अणुत्तर पंचानुत्तर तिनके अहमिंद्र विशुद्ध है दृष्टि जाकी ते प्रभुका जन्म जानि सिंहासनतैं उठि सात पैंड जायकरि जिनराजके चरणारविंदकूं नमस्कार करते भए अहमिंद्रनिका यही नियोग है सो निज स्थान तजि कर क्षेत्र विषैं विहार न करैं पांचों कल्याणकविषैं वहां तिष्ठे ही वंदना करैं, कैसैं हैं अहमिंद्र मुकुटकी अणी ताके संघट्टकरि अर देदीप्यमान आभरणके रत्ननिकी किरणनिकरि किया है सकलदिशामें प्रकाश जिनि भगवानके महाभक्त हैं सदा प्रभुका ध्यान ही करै हैं अर तहां तिष्ठे ही अढाईद्वीपविषै जिनेंद्र अर मुनींद्र तिनिकी वंदना करै हैं अर चतुरनिकायके देव तिनमें भवनवासी दशप्रकारके असुरकुमार १ नागकुमार २ विद्युतकुमार ३ पवनकुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ सुवर्णकुमार ७ उदधिकुमार ८ मेघकुमार ९ दिक्कुमार १० ये दश

कनककूं जीते प्रभा जाकी ऐसे अपने शरीरकी प्रभाकरि दशों दिशाविषैं विजुरीकी न्याईं उद्योत करती भई।

भावार्थ—विजुरी हू ठौर ठौर चमके अर यह हू महल महलमें भासै ॥६॥ भगवानके गर्भावतारविषैं राजा समुद्रविजय महासमुद्रकी लीलाकूं धारता गाजता भया। कैसा है समुद्रविजय रूप समुद्र बड़े बडे गजराज सोई हैं मगरमच्छ जाविषैं अर उछलती ऊंचे तरंग सोई हैं मीनोंकी पंक्ति जा विषैं अर महासुंदर रथ तेई हैं जहाज जाविषैं अर अति आज्ञाकारी भये हैं राजा तिनकी सेना सन्मुख चली आवै है सोई है नदियांनिका आगम जाविषैं नदीनिमें तरंग उछलै हैं अर सेनानिमें तुरंग उछलै हैं जिनेश्वरके माता पिता सुखतैं नव मास पूर्ण करते भये कैसे हैं माता पिता सुर नर विद्याधर सबनिकरि पूज्य हैं अर परस्पर बन्धा है परम स्नेह जिनके राजा तो राणीकूं अति चाहै अर रानी राजाकूं अति चाहै। अर कैसे हैं माता पिता इंद्रकी आज्ञाकरि सेवाविषैं तत्पर जे देवदेवी तिनकरि किया प्रचुर विभव ताकरि मंडित हैं ॥ ८ ॥ नव महीने व्यतीत भये तब शुभ तिथिविषैं चित्रा नक्षत्रमें रात्रिसमय शुभ वेला सवही ग्रह जासमय शुभ हुते तासमय वह जगज्जननी शिवदेवी शिवलोकका देनहारा जो बुद्ध परब्रह्म जगतविषैं उद्योत करणहारा जगतके जीवनिका मन हरणहारा जगदीश ताहि जनती भई। वे भगवान नेमिनाथ हरिवंशके आभूषण तीनज्ञानरूप नेत्रके धारक एकहजार आठ लक्षणनिकरि शोभित है शरीर जाका नीलकमल समान श्यामसुंदर शरीरके धारक अपनी कांतिकरि पृथ्वीविषैं किया है प्रकाश जिनि, दशोंदिशा ज्योतिरूप होयगई रात्रि समय प्रसूतिगृहविषैं मणीनिके महादीपक तिनकी कांतितैं बहुत गुणी कांति आपके तनकी फैल गई मानूं कोटिक सूर्य उगे ॥९॥ जिनेंद्रचंद्रके उदयविषैं जगतमें हर्षरूप समुद्र वृद्धिकूं प्राप्त भया। जंबूद्वीप संबंधी पृथिवी अर समुद्रका तट सोही हैं वस्त्र जाके अर जंबूद्वीपकी वेदिका सोई है कटिमेखला जाके अर गिरिराज जो सुमेरु सोई है नाभि जाके अर षट् कुलाचल वेई हैं कंठ जाके अर कुलाचलनितैं निकसी गंगादिक नदी सोइ हैं हार जाके ऐसी धरतीरूप स्त्री प्रमोदकरि चलायमान भई सो मानूं नृत्य ही करै है ॥ ११ ॥

सुनकरि अतिहर्षित चित्त भई पुत्र गोदहीमें आया ऐसा जानकरि जिनपूजादिक प्रशंसा योग्य शुभ क्रिया करती भई कैसी हैं वह शुभ क्रिया सब जीवनिके मनकी हरनहारी कल्याणकी दायक हैं ॥४६॥ यह जिनराजकी माताके स्वप्न फलका व्याख्यान पवित्र स्तोत्र जो प्रभात संध्याविषैं निरंतर पढे स्मरण करे सो जिनराजकी लक्ष्मीकूं प्राप्त होय॥४७॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ स्वप्नकथनवर्णनोनाम सप्तत्रिंशः सर्गः ॥ ३७ ॥

अथानंतर—इंद्रकी आज्ञाकरि कुबेर जिनेंद्रके मातापिताकूं महाभक्तिके समूहतैं तीर्थनिके जलकरि अभिषेक कराय सुगंध द्रव्यसूं चर्चकरि अद्भुत वस्त्राभूषण पृथिवीमें दुर्लभ तिनकरि पूजता भया। माताका गर्भ दिक्कुमारीनिने पहिले ही सोधा हुता ताविषैं शिवदेवी प्रभुकूं धरती भई, कैसा है जिनरूप चंद्र बधुजनरूप समुद्र ताकी वृद्धिका करणहारा अस्त किया है आतापका उदय जानै, ताहि माता शिवदेवी जगत्के कल्याणके अर्थ उदरविषैं धारती भई जैसैं पूर्वदिशा चंद्रमाकूं धारै ॥ २ ॥ जब प्रभू गर्भमें पधारे तब गर्भकी और ही प्रभा होय गई माताके गर्भके योगतैं त्रिवली भंग न भई अर उष्ण स्वास निकसे अर अधरपल्लवका रंग न घट्या आलस्य न उपज्या मातारूप वेल ऐसी नाजुक कुचरूप गुच्छनिका भार न सम्हारि सकै तो गर्भका भार कैसैं सम्हारे तातैं कृपानिधि जो भगवान् सो फलरूप या वेलके लागे। परंतु याकूं भाराक्रांत न करी।

भावार्थ—यह पद्मनी रूप सुंदर बेल पुष्पहीका भार न सम्हारै तो फलका कैसे सम्हारै। तातैं प्रभु याके गर्भमें अलिप्त रहे। याहि गर्भका भार न भया, जा दिनतैं जिनेश्वर उदरमें आये वाही दिनतैं माताका मन सकल जीवनिकी दयाविषैं अति प्रवर्त्या अर मनविषैं निरंतर तत्वहीका विचार रहै अर बचन सब जीवनिके हित भाषणविषैं अर संदेह विवारणविषैं प्रवर्ते। अर शरीर व्रतरूप आभूषणविषैं अर विनयके पोषणविषैं प्रवर्त्ते। जिनराजके अतिशयतैं माता शिवदेवीके सब उचित ही उचित रीति होती भई ॥ ५ ॥ वह माता

रत्ननिके सिंहासन देखवेकरि देव अर दानव तिनके समूहकरि जे दैदीप्यमान जे मणि तिनके उद्योतकरि युक्त जो मुकुट तापर लगाए है कर युगल जिनि। भावार्थ–सीसके मुकुट नवाए हैं माथा अर हाथ जोडि वारंवार नमस्कार करेंगे सबतैं ऊंचा, सब करि पूज्य जो सिंहासन तापर तेरा पुत्र विराजेगा अर हे कमलवदनी! तैंने देव विमान आवते देखे सो विमाननिमें मुख्य जो पंचोत्तर विमान तिनमें जयंत नामा विमानतैं प्रभू तेरे उदरमें आए हैं विमानोंके नाथ जे सुरनाथ ते जाकी सदा सेवा करे हैं अर सुरनर मुनि सबनिकरि सेवनीक हैं चरण जाके महा उदयका धारक त्रैलोक्यमें गरिष्ठ ऐसा जिनचंद्र तेरे पुत्र होयगा ॥३९॥ अर हे हंसगामिनी! तैंने जो नागेंद्रका भवन भूमिभेदकरि निकसता देख्या सो तेरा पुत्र भवपिंजरका भेत्ता मतिश्रुति अवधि तीन ज्ञानका धारक सकल विधिका वेत्ता होयगा ॥ ४० ॥ अर हे देवी! तैंने नाना प्रकार दैदीप्यमान किरणनिके समूहकरि दिव्य रत्ननिकरि राशि देखी जाके अवलोकनतं तेरा पुत्र गुणरूप रत्ननिकी राशि होयगा अर जे शरणार्थी हैं तिनका आश्रय होयगा ॥ ४१ ॥ अर हे वल्लभे! निर्धूम अग्निकी ज्वाला आकाशविषैं लग रही है शिखा जाकी ऐसी प्रदक्षिणा करती देखी ताका यह फल है तेरा पुत्र शुक्लध्यानरूप अग्निकरि सकल कर्मरूप बनकूं भस्म करेगा ॥ ४२ ॥ हे सौभाग्यवती! तेरे पुत्रके प्रभावतैं ये सुरेश्वर सामान्य राजाकी नाई तेरी आज्ञा सिरपर धारेंगे, कैसे हैं सुरेश्वर किरीट कहिए मुकुट अर कुंडल तिनकूं आदि देय अद्भुत हैं आभूपण जिनके जो अपने आज्ञाकारी सेवक हैं ॥ ४३ ॥ हे सुंदरी! तेरे पुत्रतैं सुरेंद्रकी सुंदरी सची आदि तेरी सेवाविषैं उद्यमी हैं ढीले होय गये हैं केशनिके बंधन जिनके पुत्रके अर लहलहाट करै हैं माला जिनकी कटिमेखला अर नूपुरनके रमणीक हैं शब्द जिनके ॥ ४४ ॥ हे शशिमुखी! तू यह प्रतीत कर पवित्र हैं चरित्र जिनका ऐसे जिनेन्द्र सूर्यके जानिनेकरि तू अपने वंशकूं अर आपकूं अर मुझकूं अर या जगतकूं पवित्र करैगी, शोभित करैगी ॥ ४५ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक तैं कहै हैं हे श्रेणिक! वह शिवदेवी सौभाग्वती अपने पतिके मुख यह स्वप्नके फल

रूप रथका धोरी वृषभ समान है स्कंध जाके सो मोक्ष मार्गका चलावनहारा होयगा अर हे केहरिकटिनी! सिंहके देखनेसे अत्यंत वीर्यका धारी महा मदोन्मत्त हस्तीसमान जे मिथ्यादृष्टि तिनके मदका हरनहारा महा धीर एक अद्वितीय वीर तपोधनका ईश्वर होयगा ॥ २९ ॥ अर लक्ष्मी अभिषेक करती देखी सो जन्म समय ही सुरेंद्र गजेंद्र पर आरूढ कर गिरेंद्रके मस्तक विषै क्षीर सागरके जलकर जाहि न्हवावेंगे अर आप सुमेरु सारखा स्थिर होयगा अर हे प्राणप्रिये! पुष्पोंकी दो सुगंध माला अम्बर विषैं लटकती देखी जिसका यह फल है तेरा सुत सुगंध शरीरका धारक होयगा अर अनंत दर्शन ज्ञानका धारक लोक अर अलोका ज्ञाता दृष्टा होयगा अर हे चन्द्रवदनी! तैंने स्वप्नमें चन्द्र देखा सो तेरा पुत्र जिनेंद्र चंद्र जगतका तिमिर हरनहारा निरंतर आल्हाद करता दर्शन योग्य होयगा अर हे सुदर्शन कहिए सम्यक् दर्शनकी धरनहारी अथवा सुन्दर है अवलोकन जाका ऐसी तू सो तेरे सूर्यके देखनेसे जगतका सूर्य पुत्र होगया तेरा पुत्र अपने प्रचंड तेज करि समस्त तेजस्वियोंका तेज जीत करि जगतविषैं तेजोनिधि होयगा अर अन्त बाह्य तिमिरको हरेगा ॥३३॥ अर हे मृगनेत्रे! तैंने दो मच्छ जलविषैं केलि करते देख तिनके देखवेसे तेरा नंदन इंद्रियोंके भोग अर उपभोग त्यागकर सिद्धलोकविषैं अनंत सुख रसका भोगता होयगा ॥ ३४ ॥ अर हे प्रियभाषिणी! तैंने दो पूर्ण कुम्भ देखे सो तेरा घर नव निधि करि पूर्ण होयगा नवनिधिका नाथ तेरे नंदन होयगा पूर्ण हैं मनोरथ जाके ऐसा तेरा अंगज कहिए पुत्र उसके प्रभावसे सब जगत् आनंद रूप होयगा तेरे संपूर्ण मनोरथ सिद्ध भए अर हे पतिव्रते! अनेक कमलके समूह कर भरा सरोवर तैंने देखा सो समस्त लक्षणनिकरि मंडित तेरा पुत्र महा ज्ञानी तृष्णा रहित अनेक भव्य जीवोंकी तृष्णा दूर कर निर्वाण प्राप्त करेगा अर हे विशालनेत्रे! तैंने अमृत मई महा गंभीर समुद्र देखा तिसका यह फल है तेरा पुत्र समुद्र समान गंभीर बुद्धि होयगा नीति रूप महा नदियोंसे भरा जो सुखरूपसमुद्र जिसका अमृत रस अनेक भव्य जीवोंको प्यावेगा तेरा पुत्र जगत गुरु धर्मका उपदेशक भव्यनिकूं भवसागरतैं तारेगा अर हे सुंदरवदनी!

अर पीत जे पुष्पराग मणि इत्यादि अति श्रेष्ठ मणि तिनकी महा शिखा तिनकरि प्रकाशरूप हैं जिनके नाना-प्रकार रंगका अकाशविषैं इंद्रधनुष होय रह्या है। अर सोलहवें स्वप्ने वह शिवदेवी राजा समुद्रविजयकी रानी निर्धूम अग्नि देखती भई कैसी है अग्नि विकराल है शिखा जाकी अर दशों दिशा विषै प्रकाश है जाका अर महा पवित्र है कांति जाकी अर सौम्य है स्वरूप जाका मानूं शरीर धरे साक्षात् लक्ष्मी ही आनन्दकी बढावन-हारी है ॥ २१ ॥

यह सोलह स्वप्ने माता-जाके पीछे एक श्वेत हस्ती मुखमें प्रवेश करते देख्या मानूं भगवान नेमिनाथ ही इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान करते जयंतनामा विमानतैं चयकरि माताके गर्भमें आए। कार्तिक शुदि छठके दिन गर्भावतार भया सो मानूं यह तिथि ही त्रैलोक्यविषै प्रसिद्ध करी ॥ २२ ॥ यह माता पुनः पुनः जागरणके अंतर ये सोलह स्वप्ने देखकरि जय जय शब्द करती अर गीतगान मंगल तिनकरि जाग्रत होय आलस्यरहित सेजकूं तजती भई ॥२३॥ प्रभातसमय देहकृत्यकरि मंगलरूप वस्त्राभरण पहरे हर्षकी भरी पतिके निकट जाय प्रणाम करती भई राजा बहुत आदर किया राजाके समीप यह जगतकी माता सोलह स्वप्ने देखे हुते तिनका फल पूछती भई ॥२४॥ सो राजा स्वप्नका फल कहै है। हे प्रिये ! आज छै महीने भये तेरे घर रत्ननिकी वृष्टि होय है अर दिक्कुमारी देवी जिनकी आर्थि तोहि सेवैं हैं वह त्रिभुवनका स्वामी तीर्थका कर्त्ता तेरे पुत्र होयगा स्वपननिका फल कहा कहै हैं ? गजगामिनी तू तीर्थंकरकी जननी तेरे भगवान पुत्र होंयगे वह महंतोंका महंत जगत्रयका गुरु तेरा बालक होयगा तेरे भागकी कहा प्रशंसा करिए सो हे तनूंदरी महा सुकुमार है अंग जाका ऐसा शुक्लवर्ण हस्ती देखा सो तेरा पुत्र सबमैं श्रेष्ठ सबका एक अधिपति गजराजकी चालका जीतन-हारा सर्वोत्कृष्ट होयगा अर श्वेत बृषभके देखवेकरि कलंकरहित है बुद्धि जाकी सो यह जगत्का गुरु अपने गुणों कर अपने कुलको अर तीन लोकको शोभित करेगा जैसे गायोंके कुलको धोरी बृषभ शोभित करै। तेरा पुत्र धर्म

अद्‌भुत रसका प्रवाह बहै है अर नानाप्रकारके आभूषण पहिरे अति सुंदर हैं अंग जिनके ऐसी देवांगनानिके समूह नानाप्रकारकी नृत्य कलाकरि नृत्यकी रचना करै हैं।

भावार्थ—याभांति सुरगिरिपर जगत्गुरुका अभिषेक भया अर देवनिने स्तुतिकी नृत्य भये जन्मकल्याणकका उत्सवकरि सौधर्मस्वर्गका अधिपति आनंदके साथ जिनेंद्रकूं ऐरावतके ऊपर चढायकरि सौर्यपुरकी ओर चाले जिनेंद्र महाधीर हैं जिनके सिरपर छत्र फिरै हैं अर चमर ढुरै हैं जाकी कीर्ति देव देवी गावै हैं ऐसे जिनेंद्रकूं गिरेंद्रतैं सुरेंद्र गजेंद्रपरि आरूढकरि सौर्यपुरकूं ले चाले सो सौर्यपुर मृगेंद्र समान जे यादवनिके इंद्र तिनकरि भरचा है आनंदके भरे चतुर्निकायके देव बारंबार प्रणाम करते स्तुति करते गीतगान करते जगतविषैं आनंद बिस्तारते भगवानके चरण कमलकी सेवाविषैं सावधान तिनसहित सुरेंद्र ऐसे शब्द करते प्रभुकूं लावै हैं हे प्रभु! समस्त लोककूं उलंघै ऐसे हैं अतिशय तिहारे अद्भुत ऐश्वर्यके धारक जे शिवदेवीके नंदन तुम नांदो विरधो फूलो फलो चिरकाल जीवो इत्यादि पवित्र वचननिकरि स्तुति करिवे योग्य भगवान तिनका स्तवन करते सुर असुर सौर्यपुरकी ओर चले आवै हैं अर कुलाचलनितैं उपजी जे नदी तिनका निर्मल जल ताकी लहरकरि शीतल अर भोगभूमिके कल्पवृक्ष तिनके नानाप्रकारके पुष्पनकरि महा सुगंध अर मंद मंद विचरती ऐसी शीतल मंद सुगंध पवन बाजै है जाकरि प्राणीनिके खेद दूर होय सो पवन प्रभुके साथ साथ अनुकूल चली आवै है॥ भावार्थ—पवन पीछे पीछे चली आवै है सामने नहीं आवै है प्रभुका कोमल अंग ताहि आलिंगकरि पवन महा मनोहर भई है भगवान तत्कालके बालक योग्य वस्त्र पहिरे अर आभूषणनिकरि मंडित अति सुंदर है माला उरविषै ऐसे अद्भुत बालक कल्पवृक्ष अपनी परम शोभाकरि सबकी शोभा जीतनहारे श्याममूर्ति महासुगंध कर्पूर चंदनका लेप किए कैसे शोभै हैं जैसा चांदनीकरि संयुक्त नीलाचल शोभै है॥

भावार्थ—आप तो नीलाचल समान हैं अर कर्पूर चंदनका लेप चांदनी समान है वे भगवान लक्ष्मीधर

योग्य हो या पृथिवीविषैं सबतैं ऊंचा ऊर्द्धलोक है सो उर्द्धलोकके निवासी देव तिहारे किंकर हैं उर्द्धलोककूं तजकरि या मध्यलोकविषैं तिहारे पायन आवै हैं तुम तत्कालके जन्मे तोहू त्रैलोक्यतैं अधिक है बल तिहारा हे जीवनिके हितू तीन भवनके गुरू सबकरि स्तुति करिवे योग्य नेमि जिनेंद्र हम इंद्रादिक देव भक्तिके भारकरि तुमकूं नमस्कार करै हैं सो हमकूं तुम अविनाशी सुख देवहु ॥ १० ॥ हे कामरूप गजेंद्रकूं मृगेंद्रसमान तिहारे तांई नमस्कार अर हे क्रोधरूप फणेंद्रकूं पक्षीनिके इंद्र गरुडसमान तुमकूं नमस्कार अर हे मानरूपगिरिकूं वज्रसमान तुमकूं नमस्कार अर हे लोभरूप महावनकूं दावानलसमान तिहारे तांई नमस्कार। हे ईश्वरताके धरणहारे धीर! तिहारे तांई नमस्कार, अर हे सर्वव्यापक विष्णु तिहारे तांई नमस्कार हे अनंतशक्तिकरि युक्त देव! तिहारे तांई नमस्कार है, हे अरिहंतदेव! हे वीतराग! हे सर्वके वेत्ता सर्वज्ञ! अर हे आचिंत्यपदके स्वामी! तिहारे तांई नमस्कार हे ब्रह्मपदके कारण परब्रह्म तिहारे तांई नमस्कार। याभांति सत्यवचनके समूहनिकरि देवनिके समूह जिनराजकी स्तुति करि प्रणामकरि महाविकराल जो भवसागर ताके तारक जे नेमि तीर्थेश्वर तिनतैं यही वर मांगते भए जो हमकूं भवभवविषैं तिहारा भक्ति देवो यह तिहारी भक्ति ही भवसागरतैं तारणहारी है ॥ १२ ॥ अर पूर्णज्ञानकी देनहारी है सो या भक्तिके प्रसादकरि हमकूं केवलबोधकी प्राप्ति होवहु।

अथानंतर—खेदरहित जे देव विशेष है बुद्धि जिनकी तिनने मथ्या है महा अमृतरूप क्षीरसमुद्र समान अमृतका अति पान किया सो यातैं उद्गीरण भया मेरुके खंडखंडविषैं क्षीरसागरका जल विस्तर्‌या है अर अतिशयपनेकरि बाजै हैं अनेकप्रकारके वादित्र मृदंग बीन भेरी आदि अनेक तिनका गंभीर शब्द ताकरि पूर रहा है सुमेरुका सकल स्थल वादित्रनिके शब्दकरि सब दिशा पूर्ण होयगई ऐसा जिनेंद्रका जन्माभिषेक ताका उत्सव ताकी घोषणाहीके अर्थि मानूं सब दिशानिमें वादित्रनिका शब्द विस्तर्‌या है सब दिशा गुंजार कर रही हैं अर नृत्य करै हैं देव देवांगना अर विद्याधरनिके समूह उतंग सो संगीत ताके नादकरि अति मनोहर शृंगार हास्य

अर अभव्य जननिकरि यह सुख अलभ्य है जो निर्वाणपदका सुख है सोई सुख है अर सुख नाहीं वह सुख अतींद्रिय है अर अखंड है अविनश्वर है जे भगवान केवली जगतके ईश्वर महाप्रभु तिनकरि वह सुख सेवने योग्य है देवेंद्र नागेंद्र नरेंद्र आदि देव मनुष्यनिका सुख ता सुखके अनंतवें भाग नाहीं ॥ ४ ॥ हे प्रभु ! उत्पाद व्यय ध्रौव्य वही है स्वभाव जिनका ऐसे सकल पदार्थ तिनका निरूपण करणहारा एक तिहारा ही मार्ग है अर तिहारे ही मार्गके सेवनतैं ये प्राणी परमपद पावै हैं अन्यमतके आश्रयतैं परमपद नाहीं मिलै है तातैं तिहारा शासन ही सेवने योग्य है ऐसा निश्चयकरि या जगतविषैं जे जीवनिके समूह तिहारी भक्तिविषैं, स्तुतिविषैं निरंतर सावधान होय हैं तेई कृतार्थताकूं प्राप्त होय हैं। हे जिनेंद्र ! जीवनिके कृतार्थ करणहारे तुमही हो। हे प्रभु ! तुम जन्महीतैं दश अतिशय धरै हो सब ही जीवनिकूं हितकारी परमप्रिय हैं वचन जिनके ऐसे तुम अर दशों दिशाकूं सुगंधकरणहारा महासुगंध है शरीर तिहारा। अर समचतुरसंस्थान ३ अर वज्रवृषभनाराचसंहनन ४ अर अद्भुत रूप ५ एकहजार आठ लक्षण तिहारे तनमें ६ अर दुग्ध समान रुधिर ७ अर पसेवरहित ८ अर अतुल बल ९ निर्मल शरीर जाके देहविषै मलमूत्र नाहीं १० हे स्वामी ! सब विभावनिकूं जीतनहारी जो तिहारी बुद्धि ताकरि तुम मदनके जीतनहारे हो अर सकल पूज्य हो अर तिहारे जन्मकरि यह क्षेत्र पूज्य भया। यह पृथिवी सुखरूप आंसुवनितैं भर गई ॥

भावार्थ—सकल भूमिमैं सुखकी वृद्धि भई अर छहों ऋतुके धान्य फल गए तुम अनंतगुणकरि पूर्ण हो तिहारे गुण सकल लोकमें न समावें। हम गुणनिकी वांछातैं तिहारी आराधना करै हैं हे नाथ ! यह अचलनाथ कहिए मेरु सो यद्यपि निन्याणवें हजार योजन पृथ्वीतैं ऊंचा है तथापि तुम समान उच्च नाहीं यह सुमेरु उच्च है अचल है तथापि तिहारे स्नानका आसन होता भया सो यह उचित ही है जे बुद्धिमान हैं ते बडेनिकी बराबरी न करै हैं ईश ऐसा अप्रमाण अनंत अतुल्य प्रभुत्व तिहारा मान ही है धन जिनके ऐसे देव अर मनुष्य तिनकरि आप मानिवे

सो ज्ञानदृष्टिकरि समस्त स्थावर जंगमरूप यह जगत ताकूं देखो हो अर दर्शन ज्ञान चरित्ररूप निर्मल रत्न तिन-करि विराजमान हो पूर्वभवविषैं उग्रतपकरि युक्त सोलहकारण भावना भाय तीर्थंकर प्रकृति उपार्जी सो तीर्थंकर नाम प्रकृतिरूप अति विशिष्ट अद्भुत पुण्यका महा उदय सोई भया तीव्र पतनका वेग ताकरि चलायमान यह देव-निके समूह सोई भये कुलाचल तिनकरि सेवित हैं चरण कमल तिहारे अर तुम युगविषैं मुख्य तिहारे मुखकम-लका दर्शन करते करते तृप्ति न होय है। भव्यजीवरूप भंवरनिकी यही अभिलाषा है कि आपके मुखरूप कमलका दर्शन करवोही करैं धीर पुरुषनिके स्तवनकी ध्वनि अर दुंदुभि वादित्रनिका नाद ताकरि प्रगट भया है शुद्ध यश तिहारा ताकरि पवित्र भया है भरतक्षेत्र हरिवंशरूप मोटा उदयाचलपर्वत ताकी शिखा मणि बालदिवाकर अपनी दीप्तिकरि जीती है अनेक सूर्यनिकी दीप्ति जिनि अर महाकांतिका धरणहारा शरीर ताकरि जीती है अनेक पूर्ण चंद्रमानिकी कांति जिनि इंद्रनील मणीनिकी ज्योतिका मंडल ताकरि मंडित करी हैं दशों दिशा ऐसा मुखमंडल तिहारा ऐसे नेमिजिनेंद्र सो तिहारे तांई नमस्कार। तुम तीनभवनके गुरू परमेश्वर सब जीवनिपर दयालु अपने आत्मकल्याणके अर्थि अर परोपकारकी बुद्धिकरि या भवतैं तीन भव पहले जैसा जिन सूत्रविषैं गया है यतिका धर्म सो आदरया जाकी बराबर तीनलोकमैं और वस्तु नाहीं, महा कल्याणका कारण मुक्तिका पंथ सो तुम विधि पूर्वक पालन किया जीवनिकूं उपदेश दिया नानाप्रकारके तप विधिपूर्वक करि कुकर्मरूप मल समस्त धोया अर निर्मल भावकरि तीर्थंकर पद उपार्ज्या सो पद सफल जगतकरि पूज्य है॥ २ ॥ हे जगतवल्लभ! अब तुम अपार दुःखका भरया जो भवसमुद्र ताहि उलंघकरि मोक्ष पधारोगे, कैसा है मोक्षपद समस्त जगतका शिखर है जाके अग्र-भाग अनंत गुणनिके आश्रय सिद्ध परमेष्ठी विराजै हैं ताकरि पाई है महा महिमा जानैं अर जा स्थानकूं महामुनि परम पद कहै हैं वह एक अविनश्वर आत्महित है अर वह महंत पुरुषनिकरि पूज्य है अर महंत पुरुषनिकरि ही पाइये है। अर निरंतर है उदय जाका अर अंततैं रहित है महा प्रबल बडे पराक्रमी धीर पुरुष तेई वासुखकूं पावैं हैं

ऐसे शोभै हैं मानूं गरुड अर हंसकी पंक्ति ही अनेकप्रकार चली आवै है गरुडके अर हंसके दोऊ ओर पर हैं अर कलशनिके दोऊ पसवारे हैं कलश तो पीतवर्ण है सोई गरुडका स्वरूप जानो अर क्षीरोदधिका जल अति उज्ज्वल हंसका स्वरूप है ॥ ४९ ॥ इंद्रकी भुजाकरि उठाये मेघसमान गाजते सहस्र है गणना जिनकी ऐसे पवित्र जलके भरे प्रभुके शिरपर अखंड वर्षते मानूं सुमेरुकूं धवल वर्णही करै हैं यद्यपि सुमेरुका वर्ण धवल नाहीं पीत है तथापि भगवानके आश्रयतैं धवल कहिए उज्वल भया है, जो शुद्धका आश्रय करै सो शुद्ध होय यह निश्चय है सो जिनराजके आश्रयतैं गिरिराज धवल भासै है ॥ ५० ॥ सौधर्म इंद्र जब जिनेंद्रका अभिषेक किया तब सबही निर्मल जलकरि जिनराजका अभिषेक करते भए। जिनशासनके राग करि उपज्या है प्रशस्त ज्ञान जिनके, सो वीतरागकी भक्तिविषैं सदा सावधान हैं अल्प रहा है संसार समुद्र जिनके जे भक्तनिके लक्षण सिद्धांतविषैं कहे हैं सो सुरेंद्रनिमें हैं ॥ ५१ ॥ अर शची आदि इंद्रानी भगवानके तनकूं अंगोछती भई अर सुगंध जलकरि अभिषेक किया मानूं वह कलश इंद्राणीनिके कुचकुंभ समान सुंदर हैं एक साथ सब इंद्रानी जिनेंद्रका अभिषेककरि सुगंधका लेप करती भई अर सुंदर वस्त्र अर मणीनिके आभूषण अर कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला प्रभुकूं पहराई कल्याणके पर्वत यदुपति तिनकूं श्रृंगार अरिष्टनेमि नाम धरि इंद्रादिक सुर असुरनि करि सहित प्रदक्षिणाकरि प्रभुकी स्तुतिकरते भए। कैसे हैं प्रभु तीन लोककी लक्ष्मी जिनके चरणारविंदविषैं आय प्राप्त भई है ॥ ५२ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशेजिनसेनाचार्यस्यकृतौ जन्माभिषेकवर्णनोनाम अष्टत्रिंशःसर्गः ॥ ३८ ॥

अथानंतर—सुरपति जिनपतिकी स्तुति करै है, हे त्रैलोक्यनाथ! तुम बिना पढाये सकल श्रुतके पारगामी मतिज्ञानके धारक अवधिके प्रकाशक निर्मल ज्योतिके धारक मोहनिद्राकरि रहित विशिष्ट है ज्ञानलोचन तिहारे

पांचसौ धनुषका ऊंचा सिंहासन है ताविषैं प्रभुकूं पधराय तहां ग्रहे है पूजाके उपकरण अर देवांगनाके समूह चौगिर्द गीत गान करै हैं अर नटवनिके समूह नृत्य करै हैं महा उत्कृष्ट रस हावभाव लय ताविषैं स्वर्गवासी अनुरागी होय रहे हैं ॥ ४३ ॥ जहां ढोल बाजे हैं शंखनिका शब्द होय रह्या है अर सिंहनाद अर भेरी तिनके शब्द होय रहे हैं सो वादित्रनिकी ध्वनिकरि गिरेंद्रकी गुफा नादरूप होय रही है मानूं जिनेश्वरके गुणनिकरि समस्त जगत्का उदर ही भर गया है। जिनेंद्रके गुण भव्यनिके श्रवणनिकूं महा सुखदाई है अर दशो दिशामें फैल रहे हैं ॥ ४४ ॥ अर समस्त आकाश सुगंधकरि आच्छादित भया नानाप्रकारके अवीर अर धूपके पटल अर पुष्पनिके समूह महा सुगंध महा मनोहर पांडुक वनमें विस्तरे सो पांडुकवनकी पवनकरि दशों दिशा सुगंध रूप होय गई ॥ ४५ ॥ ग्रहे हैं अनेक शरीर जाने। अर देवनिकी सेना जाकी ऐसा इंद्र सो भक्ति करि जिनवरका महा अभिषेक आरंभता भया देवनि करि लाये मणि स्वर्णमई कलश दुग्धरूप क्षीरसागरके शुभ सुगंध जलकरि पूर्ण तिनकरि शचीका पति जगतपतिकूं न्हावावता भया अर आनंदकरि भरी जो देवनिकी पंक्ति अर देदीप्यमान मणीनिके मनोहर कलश ते हैं तिनके करविषैं तिन कलशनिके जलके प्रवाहकरि सुमेरु सब ओर आच्छादित होय गया सो कैसा सोहै है मानूं पांचवां क्षीरसागर सुमेरुतैं अति दूर है ताहीकूं जिनराजके प्रभावकरि देव अपने वाहुरूप रस्सनिकरि ल्याये हैं ताहीविषैं सुमेरु तिष्ठता है ऐसा सोहै है ॥ ४७ ॥ देव कलशनिकूं हाथनि हाथ लावैं हैं वह वाहि पकडावै है वह वाहि पकडावै है अर परस्पर यह शब्द होय रहे हैं तूं कलशकूं ले तू कलशकूं ले मेरा सन्मुख छोड ऐसा काननिकूं मनोहर शब्द देवनिके होय हैं देवनिके समूहकरि वह कलशनिकी पंक्ति शोभासहित पांडुकवनमें आवै है जैसैं हंससिनकी पंक्ति आवै ॥४८॥ स्वर्ण अर मणिके कलश क्षीरोदधिके जलतैं भरे देवनिकी शीघ्र चालकरि चले आवैं हैं सो ऐसे शोभै हैं मानूं चंद्र सूर्यकी पंक्ति ही हैं।

भावार्थ—कलश तो सूर्यकी प्रभाकूं धरै उज्वल जल चंद्रमाकी प्रभाकूं धरै है अर वह कलश आकाशविषैं आवते

की हरण हारी जिन जननी रूप मेघमालाके समीप विजुरी समान चमकती सोहै है ॥ ३५ ॥ अर रुचिकप्रभा १ रुचिका २ रुचिकोज्वला ३ यह सम्पूर्ण विद्युतकुमारीनिमें मुख्य अर विजयादिक चार यह भगवानके जात: कर्मका उत्सव करती भई। अर चतुर्निकायके देव सब ही शीघ्र ही आयकरि सौर्यपुरका प्रदक्षिणा दे नगरमें आए कैसा है नगर कुवेरकरि निर्माप्या अद्भुत शोभाकूं धरै है। मानूं वह नगर इंद्र लोककी शोभाके जीतवे हीकूं प्रगट भया है सो इंद्र सहित सब देव जिनके जन्मपुरकूं देखते भए ॥ ३७ ॥ अर इंद्र देवनि सहित नगरमें प्रवेशकरि राजमहलमें आय खडे रहे सब ही रीतिके वेत्ता इंद्रने भगवानके लायवेकूं शचीनामा इन्द्राणीकूं आज्ञा करी सो प्रभुके लायवेकूं प्रसूतिगृहमें गई ॥ ३८ ॥ तहां मायामई बालक माताके समीप पधराय माताकूं सुख निद्रा अणाय माता अर पुत्रकूं प्रणामकरि अपने कोमल करनितैं जिनेंद्रकूं बाहर लाय अपने पतिकूं सोंप्या तव इंद्र सीसनवाय दोऊ हाथनितैं प्रभुकूं लिए जिनेंद्रका मुखचंद्र कमलहूकूं जीतै ऐसा सुंदर अर कमल समान नेत्र जीती है नील कमलके वनकी प्रभा जानैं श्यामसुंदर शरीर अर कमलनितैं हू अति अरुण है कर चरण जाके ऐसे भगवान तिनका रूप हजार नेत्रनिकरि निरखता हू इंद्र तृप्त न भया ॥ ३९ ॥ स्फटिक मणीनिके गिरनितैं हू अति उज्ज्वल जो ऐरावत गजेंद्र ताके मस्तकविषैं जिनेन्द्रकूं पधराया सो कैसा शोभै है मानूं स्फटिक मणिमय गिरिका इंद्र नीलमणिमई शिखर ही है गजराजपर जिनराजकूं चढायकरि गिरिराजकी ओर चाले ढुरते चमर अर सिरपर ढुरता छत्र ताकरि कैसी शोभा बनी है मानूं चलती तरंगनिकरि फेनसंयुक्त समुद्र है ॥४०॥ ऐरावतपर प्रभु आरूढ भए सो ऐरावतका वर्णन करै हैं जाके बत्तीस बदन अर बदन २ प्रति अष्ट २ दंत अर दंत २ प्रति एक २ सरोवर अर सरोवरविषैं कमलिनी अर कमलिनीविषैं कमल अर कमल २ प्रति बत्तीस पत्र अर पत्र पत्र प्रति महा रसकी भरी अप्सरा नृत्य करै हैं यह विभूतिकरि देव सुमेरु पर्वत गए तहां जाय गिरेंद्रकी प्रदक्षिणा करी। अर गजेंद्रतैं जिनेंद्रकूं उतारि गिरेंद्रके शिखरपर पांडुकवन है तहां अति मनोहर पांडुकशिला तापर

के आयुध लिए मानों आयुधों की अटवी ही चली जाय है यह सातप्रकार सेना कही सो एक सेना सातसात प्रकार हैं प्रथम ही हाथीनिकी सेना जिसकी सात कक्षानिमें पहिली कक्षामें हाथी चौरासी हजार अर दूसरी कक्षामें हाथी एक लाख सडसठ हजार तीसरीमें यातैं दूनी चौथीमें यातैं दूनी पांचवीमें यातैं दूणी छठीमें यातैं दूणी अर सातवींमें तातैं दूनी याही भांति सातों सेनामें जानो। सबनिमें पहली कक्षामें चौरासी हजार अर आगे दूणे २ बढते सर्वत्र याही प्रकार संख्या जाननी सकल देव तो जन्मकल्याणकका उत्सव करिवेकूं आए अर दिक्कुमारी देवी पहिले ही आई हुतीं सो जन्मकल्याणकके गीत गावती भई ॥ ३० ॥ देवीनिके नाम विजया १ वैजयंती २ अपराजिता ३ जयंती ४ नंदा ५ अनंदा ६ नंदवर्द्धिनी ७ नंदोत्तरा ८ यह हृदयकूं आनंदकी उपजावनहारी माताकी सेवा करती भई ॥३१॥ यह देवी कुंडलादि आभूषणनिकरि शोभित हाथमें झारी लिए खडी हैं मानूं शृंगार रसके भरे अपने कुच कलश लियेही खडी हैं अर महा सुंदर निर्मल हार अर नानाप्रकारके मणिमई आभूषण लिए ठाढी हैं॥ ३२ ॥ वहुरि देवी यशोधर १ प्रवुद्धा २ स्वकीर्ति ३ सुस्थिता ४ लक्ष्मीमती ५ अर विचित्र गुणकी धरनहारी विचित्रा ६ अर चित्रा ७ वसुन्धरा ८ यह देवी मणीनिके दर्पण लिए खडी है मानूं यह देवी तो दिशा भई अर दर्पण चंद्र भए जैसैं चंद्रमा संयुक्त दिशा सोहै तैसैं दर्पण सहित ये देवी सोहै हैं अर इला १ नवमिका २ पद्मावती ३ पृथिवी ४ परा ५ प्रवरकांचना ६ चंद्रिका ७ ये देवी नानाप्रकारके आभूषणनि करि मंडित अपनी प्रभारूप तारा तिनकरि दैदीप्यमान चांदनी रात समान माताके निकट श्वेत छत्र लिए खडी हैं ॥३४॥ वहुरि श्री १ धृति २ दिशा ३ वरवारुणी ४ पुंडरीकणी ५ अलंवुसा ६ मिश्रकेशी ७ ह्री ८ यह देवी चमर हाथमें लिए माताके सिरपर ढारती कैसी सोहै हैं जैसैं मंद उज्ज्वल झागनिकरि युक्त जे तरंग तिनकरि संयुक्त कुलाचलनितैं निकसी नदी ही है।

भावार्थ—देवी तो नदी भई अर इनके कर तरंग भए अर चमर फेन भए अर दैदीप्यमान देवी कनकचित्रा १ अर चित्रा २ अर तीन लोकमें प्रसिद्ध त्रिशिरसा ३ सूत्रामणि ४ यह देवी नाना प्रकारके उपकरण लिए तिमिर

करि रोमांच होय आंइ ॥ ५१ ॥ जहां वछरानिसहित गायनकी ध्वनिके गंभीर शब्द अर गोपीनिके दही विलोवनेके शब्द हरिकी माता जो देवकी ताका मन हरते भए गंभीरशब्द कौनका मन न हरैं। नंद गोप देवकीकूं आई जान बहुत हर्षित भया यशोदासहित अपनी स्वामिनीकूं सब ग्वालनिकरि युक्त महाभक्तिकरि नमस्कार करता भया अर यशोदा अपना पुत्र जो कृष्ण ताहि लाय देवकीकूं नमस्कार करावती भई। कैसा है कृष्ण धोती अर दुपट्टा ये दोय पीतवर्ण हैं वस्त्र जाके अर मोरनिकी पांख ताका है मुकुट जाके अर प्रफुलित जे नीलकमल तिनिकी है माला जाके अर सुंदर कंठी ताकरि सोहै है शंख समान कंठ जाका अर सुवर्णके कर्णाभरण तिनकरि सोहैं हैं श्रवण जाके अर आरक्त पुष्पनिका है सेहरा जाके अर कर अर चरण सुवर्णके कडानिकरि शोभित है अर अनेक ग्वाल संग हैं अर वांसुरी वजावै हैं ऐसे कृष्णकूं यशोदा लायकरि देवकीकूं प्रणाम कराया। गोपका भेषधरि देवकीके निकट वैठे सो देवकी चिरकाल वासुदेवका मुख देखि रही अर हाथनिसूं पपोल्या ॥ ५६ ॥ देवकी यशोदाकूं कहती भई ये यशोदे तुम वनमें वसो हो परन्तु धन्य है भाग्य तिहारा जो तिहारे ऐसा पुत्र सो यशवंती हो, जगतविषैं ताहीका जन्म प्रशंसा योग्य है जो राज पाया तो कहा। ऐसे पुत्र समान कहा राज तव यशोदा कहती भई हे स्वामिनी ! तुम कहौ हौ सो सत्य है मैं या पुत्रके संतोषकरि अति पोषी गई हूं मोहि कछु न चाहिए। यह तिहारा दास तिहारी आशीपतैं जीवहु ॥ ६९ ॥ तासमय पुत्रके दर्शनकरि देवकीके स्तन दूधसूं भरि आए सो मानूं माता पुत्रकू ऐसे कहै है हे पुत्र ! मैं तोहि रिपुके भयकरि न्यारा किया है कछु दुष्ट वुद्धिकरि न्यारा न किया है सो स्तनतैं दूध झरै है मानूं माता अपना निर्मलभाव पुत्रकूं दिखावती सोहै है ॥६०॥ माताके दूध झरता देखि वलभद्र विचारी मत कदापि शत्रु तक यह वार्ता प्रगट होय, ऐसा भयकरि दूधके घडानिकरि माताका अभिषेक कराया जे बुद्धिमान हैं ते उपायमें कदे न चूकैं, जासमय जो उचित होय सो ही करैं ॥ ६१ ॥ हरिके देखिवेकरि पाया है प्रमोद जानैं ऐसी देवकी पूर्ण भए हैं अर्थ जाके ताहि वलभद्र मथुरा ले आए

बिलोवनेके थंभके डोरिसूं मोहनकूं बांध्या सो महाबली थंभकूं उपाड़ि बाहर जाय था सो उन दोऊ वृक्षनिकूं दाहिने हाथसूं अर बांये हाथसूं उपारिकरि दूरि बगाय दिये तब वे दोऊ देवी जाती रहीं बहुरि न आई सो नंद अर यशोदा दोऊ पुत्रके बाल्यावस्थाविषैं पराक्रम देखि अति अचरजकूं प्राप्त भये। अर मनमें जानी यह सामान्य मनुष्य नाहीं कोऊ महापुरुष हैं सो घरि घरि बालककी सबनिके प्रशंसा होती भई बारंबार देखिवेयोग्य केशव महारूपवान गोकुलविषैं वृद्धिकूं प्राप्त भया, बहुरि पांचवी देवी वृषभका रूपधरि वासुदेवकूं मारिवेकूं आई। सो वह वृषभ ऐसा शब्द करै मानूं समुद्र गाजै है अर इधर उधर याहि मारिवेकूं फिरै। तब कृष्णने वाकूं मायाचारी देव जानि वाका कंठ पकरि दूरि भगाय दिया। कैसे हैं कृष्ण सुकंठ कहिये सुंदर है कंठ जिनका। भावार्थ—ऐसा मनोहर कंठ अर मनुष्यनिका नाहीं। महा मधुर हैं वचन जाके ॥४६॥ बहुरि एक देव पाषाणमई अति वर्षाकरि गाय गोप अर गोपिनसहित गोपालके मारिवेकूं उद्यमी भया। तब गोपाल अपनी भुजाकरि गोवर्धन पर्वत उठाय लिया अर गिरिके तलै गाय अर गोप गोपी बचाय लिये। ये कृष्णके चरित्र मनुष्यनितैं अगोचर बलभद्रके मुख सुनिकरि माता देवकी अपने पुत्रके देखिवे अर्थ उपवासके मिसकरि गोकुलमें आई। सो कृष्णके सुकंठकरि गाये जे गीत सो देवकी सुनै अर गायनिके घंटानिकी ध्वनि सुनकरि देवकी परम संतोषकूं प्राप्त भई कृष्णके कंठके गीत सुनि देवनिका मन हर्या जाय तौ देवकीकी कहा बात ॥ ४९ ॥ अर देवकीने दोऊ भाईनिके योगकरि वन महामनोहर देख्या। कहुंयक वन महा सचिक्कण जो कृष्णका वर्ण ताकरि इंद्रनीलमणि समान श्याम भासै है अर कहुंयक बलभद्रके शुक्लवर्णकरि शुक्ल भासै है, अर गायनिके समूहकरि वन शब्दायमान होय रह्या है ऐसा वन देखकरि माता हर्षकूं प्राप्त भई पुत्रका दर्शन कौनकूं हर्ष न करै। माता देवकी गोकुलकी गायनिकूं देखकरि अतिप्रसन्न भई। कैसी है गाय महा सुंदर तृण अर जल तिनकरि तृप्त है अर जिनके स्तन बछरे चूखै हैं अर ग्वाले दोहैं हैं, कुंभसमान हैं आंचल जिनके दुग्धकरि पूर्ण है अर गायनके रोम अति मनोहर हैं यह गोकुलकी दशा अर गोपालकूं देखि माता हर्ष

अंरुण है कर चरण जाके सो गो अर गोपिनका चित्त हरता भया महा सुंदर कहिए नीलकमल तासमान शोभायमान देह जाकी ताकूं अवलोकन करते गोपिन्के समूह तृप्त न भए दूधकर पूर्ण हैं स्तन जिनके सो वह कहै याहि मैं चुखाऊं वह कहै याहि मैं चुखाऊं यह जगत वल्लभ सब हीकूं सुहावणा लागै ॥३४॥ एकदिन वरुणानामा निमित्तज्ञानी कंसका तानैं कंससूं कही हे राजा! तेरो रिपु काहूनगरीमें तथा वनविषैं तथा गांवविषैं वृद्धिकूं प्राप्त होय है सो ठीक करहु ॥ ३६ ॥ तब कंस रिपुके नासकी वृद्धिके अर्थि तेला किया अर पूर्व भवविषैं देवी साधी हुतीं ते चितारीं। सो सातूं ही देवी कंसके निकट आयकरि कहती भईं तैं तपकरिके हमकूं पूर्वभवविषैं साधी हुतीं सो अब हम तेरे कार्य करिवेविषैं तत्पर हैं। एक वलदेव अर वासुदेव विना कहो जाहि मारें। तव कंस कही मेरा प्रबल वैरी काहू स्थानकविषैं वृद्धिकूं प्राप्त होय है ताहि तुम हेरिकरि मारो। वाकी करुणा न करहु ॥ ३९ ॥ या भांति कंस कही तब वे आज्ञाप्रमाण शत्रुके ढूंढिवेकूं गईं। तिनमें एक पूतनानामा देवी विकराल है मूर्ति जाकी सो विषके भरे आंचल तिनकूं धारे धायका रूपकरि कृष्णकूं चुखायवेकूं गई। सो बालक पालने झूले हुता ताके मुखमैं आंचल दिया सो वे नारायण अनेक देवनिकरि जे सेवनीक कठोर है मुख जिनका सो याके आंचल ऐसे दावे जो पुकारकरि भागी ॥ ४१ ॥ अर आप सोवते वैंठते डरकरि पसरते डिगते पायनि परते दौरते अनेक कला धारते दूध दही घृत भोजन करते दिनदिन वृद्धिकूं प्राप्त भए। वे मनुष्यनिके इंद्र कुलके चंद्र तिनकी उपमा काहू और मनुष्यनितैं न वनै। जो पूतना तौ भाजिकरि ऐसी गई जो फिरि न आई अर कंसहूतैं न मिली। अर दूजी देवी विकराल है शरीर जाका पांयनके घातकरि कृष्णके मारिवेकी है इच्छा जाकी सो विजुरीकी नाईं परी। वे अर्धचक्री नरनिके नायक अंजनगिरि समान है शोभा जिनकी अर विस्तीर्ण है हृदय जिनका बालक है तौऊ कोपकरि वाके पांव पकरि दूर वगाई अनेक देव हैं सहाय जिनिके ॥ ४३ ॥ सो वह दूजी देवी हू गई अर दोय देव याकूं दाविकरि मारिवेके अर्थ जमल अर अर्जुन वृक्षका रूप धारि दाहिणी वांई ओर ठाड़ी। अर यशोदाने

स्पर्शतैं उघरि गए अर मेहके जलकी बूंद बालकके कानमें गई सो छींकका शब्द भया सो दरवाजेकी ऊपरली भूमिविषैं राजा उग्रसेन तिष्ठता हुता तानैं छींकका शब्द सुनि आशीष दई। जो तू चिरकाल जीज्यो। तोहि काहू करि विघन मति होउ। तब बसुदेव बलिभद्र उग्रसेनकूं कहते भए। हे पूज्य! यह रहस्य गोप्य राखो या देवकीके पुत्रतैं तिहारा वंदीगृहतैं छूटना होयगा॥ २४॥ तब उग्रसैनने कही यह मेरे भाई देवसेनकी पुत्रीका पुत्र वैरीकी बिना जानिमें सुखसूं रहो। ये राजा उग्रसेनके शुभ वचन सुनि वसुदेव अर बलभद्र नगरतैं बाहिर गए॥ २५॥

जासमय कृष्णकूं लेय बाहिर निकसे तासमय नगरका रक्षक देव वृषभका रूपधरि सींगनपर दीपक धरि इनके आगे २ गमन करता मारग दिखावता भया। आगैं यमुनाप्रवाह तीव्र बहता हुता सो कृष्णके प्रतापतैं यमुनाके मध्य मारग होयगया। नदीका प्रवाह भी घटि गया। तब ये वृंदावनके घाट यमुना उतरकरि गोकुल गांव गए तहां नंदगोप ताके यशोदा स्त्री सो वे दोऊ आय इनके पांयनि परे इनि रात्रिविषैं वे देखे॥ २७॥ उनकूं बालक सौंप्या अर सब रहस्य जताया अर कही तुम याहि पुत्रकी बुद्धि करि पालियो। यह बालक विशाल नेत्र देखिवे वालेनिकी दृष्टिकूं कांतिरूप अमृत वरषै है। याभांति उनकूं समुझाय कृष्णकूं वहां पधराया अर वाही समय यशोदाके पुत्री भई हुती ताहि विश्वासके अर्थ ल्यायकरि देवकीकूं सौंपी अर आप दोऊ अपने स्थानक बैठी काहूके लखिवेमें यह वारता न आई॥ २९॥ अथानंतर—देवकीके प्रसूति भई सुनिकरि निरदई प्रसूति गृहमें आया अर कन्या भई देखी तव मनमें विचारी यह कन्या तो मोहि मारिवे सकै नाहीं याका पति कोऊ राजकुमार मेरा शत्रु होय तो होय। यह विचारि मनमें शंकावान होय वह पापी अपने हाथकरि कन्याकी नासिका चपटी करता भया वह कंस देवकीके मनकूं आतापका करणहारा ये दुष्ट कार्यकरि कैयकदिन गृहमें सुखसूं तिष्ठ्या। अर गोकुलविषैं कृष्णका जातकर्म भया कृष्ण नाम धरया सो वडा पुण्याधिकारी नंद यशोदाकूं अद्भुत प्रीति बढावता वृद्धिकूं प्राप्त भया॥ ३३॥ सो बालक गदा खड्ग, चक्र, अंकुश, शंख, पद्म इत्यादि प्रशस्त लक्षणका धारक

होगी ॥५१॥ यह आज्ञाकरि वे तो गये बहुरि अपने घरमें काहूने कृष्णकी बातही न करी जैसैं कोई पूर्वजन्मकी कथा याद अणावै तैसैं नारदने याद दिवाई ॥ ५२ ॥ अर तेरा भाई रुक्मी शिशुपालकी पक्ष गया हुता सो तानैं अति हित जताया सो रुक्मी तेरी सगाई वा शिशुपालतैं कर आया सो विवाहके दिन नजदीक हैं कुछ दिनमें विवाह होनेवाला है वह शिशुपाल बडा राजा है यह वचन भूवाके सुनकरि रुक्मणी कहती भई क्या मुनिके वचन अन्यथा हों कदापि न हों मेरे तो एक पति वासुदेव ही हैं यातैं मेरा अभिप्राय शीघ्र ही द्वारकापतिकूं पहुंचा वहुरि वेई मेरे नाथ हैं यह कन्याका रहस्य भूवा जानकरि एकांतमें रुक्मणीके नामका एक पत्र लिख नारायणके पास भिजवाया जामैं यह समाचार हुते तिहारे नाम ग्रहणहीका है विश्राम जाकरि राखे हैं प्राण जानैं ऐसी रुक्मणी सो तिहारे दर्शनकूं चाहै है सो माघ शुदि अष्टमीका लग्न है या लग्नपर मोहि आयकरि ले जावहु अर जो कदाचित तुम न आये अर मेरा पिता अर बांधव जो शिशुपालकूं परणावेंगे तो मेरा मरण ही है तिहारे अलाभ विषैं मैं न जीऊंगी अर नगरके बाहिर नागदेवका मंदिर है तहां मैं लग्नके वक्त पहिले आऊंगी अर तुम मेरेतैं पहिले वहां आइयो कृपाकरि मेरा कर ग्रहणकरि लेजाइयो ॥६३॥ यह रुक्मणीके पत्रका रहस्य माधव जानकरि रुक्मणीके हरण प्रति सावधान हो तिष्ठे ॥६४॥ चंदेरी नामा नगरीका पति शिशुपाल कुंडलपुरके धनी राजा भीष्म विदर्भदेशके स्वामी तिनके वचनतैं विवाहके अर्थि बडी सेनातैं आया कुंडलपुरके चारों तरफ शिशुपालका कटक पड्या अर नारदने एकांतविषैं मोहनतैं कही यह अवसर है तब कृष्ण बलभद्र सहित प्रछन्न निकसे यह भेद कोई न जानैं जासमय कन्या नगरके बाहर नागदेवके मंदिर भूवा आदि अनेक स्त्रियनि सहित आई हुती तातैं पहले बलदेव वासुदेव जाय पहुंचे सो माधवने रुक्मिणी देखी ॥ ६८ ॥ पहिले नारदने रुक्मणीका रूप वर्णन किया हुता ताके श्रवणरूप इंधनकरि केशवके रागरूप अग्नि उपजी हुती सो परस्पर दर्शनरूप पवनकरि दोऊके रागरूप अग्नि अतिवृद्धिकूं प्राप्त भई तहां रुक्मिणीकूं मोहन कही तेरे अर्थि हम आये हैं तू हमारे हृदय-

पुण्यकरि पूर्वोपार्जित कर्मने यह कन्या महा सुलक्ष महारूप महासौभाग्य एकत्रकरि बनाई है जगततैं अधिक है सौभाग्यता अर सुलक्षण जाके ॥ ३३ ॥ याके कर अर चरण अर मुखरूप कमल अर जंघा नितंब भुज नाभि कुच, उदर, भौंह, कर्ण, नेत्र, सिर, कंठ, नासिका, अधर यह समस्त अंग उपमाकूं जीतिकरि याके तनविषैं तिष्ठै हैं। संसारमें ऐसी कोई उपमा नाहीं जो रुक्मिणीके अंगकूं दीजे ऐसा रुक्मिणीका रूप देखि नारद आश्चर्यकूं प्राप्त भए मनमें विचारी मैं अनेक राजकन्या देखी परंतु या समान नाहीं यह अनुपम कन्या केशवकूं परणायकरि सत्यभामाके रूप अर सौभाग्यकरि मद है सो निवारूं ऐसा विचार करता जो नारद ताहि हाथ जोड प्रणाम करती भई जो रुक्मणी सहज स्वभाव विनयकी भूमि अर शब्द करै है आभूषण जाके जब रुक्मणीने नमस्कार किया तब नारदने आशीष दी। जो हे पुत्री ! तू द्वारिकापतिकी पटराणी हूज्यो जब रुक्मणीकी भूवा नारदतैं पूछी द्वारकापति कौन तब नारदने सब व्याख्यान किया सो सुनकरि रुक्मणी कृष्णविषैं अतिआसक्त भई नारद किंचितकाल तहां रह रुक्मणीके चित्तरूप भीतिविषैं कृष्णका चित्रामकरि अर रुक्मणीका वर्ण रूप वय विद्या चित्त विषैं लिखि वाहर गये ॥ ४३ ॥ एकांतविषैं रुक्मणीका रूप पटविषैं स्पष्ट लिखा अर जायकरि हरिकूं दिखाया कैसा है रूप चित्तकूं मोहका कारण ॥ ४४ ॥ सो चित्राममें लक्षण देखि कृष्ण नारदतैं पूछते भए। नारदतैं श्रीकृष्णका हित तो सदातैं है अर चित्रपट देखि दूना स्नेह उपज्या ॥ ४५ ॥ कृष्ण पूछै हैं हे भगवन् यह तुम कौन कन्याका रूप चित्रपटविषैं लिख्या है ऐसा अद्भुत रूप मनुष्यनिमें नाहीं अर देवीनिका नाहीं ॥४६॥ याभांति कृष्णने पूछी तब नारद कहते भए हे मित्र यह राजा भीष्मकी कन्या रुक्मिणीका रूप है सो सुनकरि कृष्णकूं करग्रहणकी चिंता उपजी ॥ ४७ ॥ एक समय एकांतविषै भूवा रुक्मणीतैं कहती भई हे बाले ! मैं कहूं हूं सो तू सुनि एक दिन अतिमुक्तिकनामा अवधिज्ञानी मुनि आए हुते सो तोहि देखकरि कही यह पुत्री लक्षणवती है सो वासुदेवके उरस्थलविषैं लक्ष्मीकी न्याईं निवास करैगी। केशवके सोलहहजार राणी तिनकी यह स्वामिनी

वंदना अर मुनिनिकी वंदना तिनविषैं है अनुराग जाका। महा जिनधर्मी निकट चतुर्विधसंघका अनुरागी धर्मप्रिय महा श्रद्धावान शास्त्रविषैं निपुण अर बडा चर्चावान सज्जन स्वभाव कौतूहली सदा अढाईद्वीपविषैं परिभ्रमण करै जहां याके आदर सत्कारमें कमी होय तहां ही अरुचिरूप होय। सो यह नारद यादवनिकी सभामें धर्मकी चर्चाकरि समुद्रविजय आदि बडेनिकूं पूछकरि राजलोकमें गया ॥ २५ ॥ तहां कृष्णकी पटरानी सत्यभामा कृष्णके प्राणहूतैं प्यारी महाशीलवंती स्नानकरि आभूषण पहिरे हुती अर मणियनिका दर्पण हाथविषैं हुता सो अपना रूप निरखती हुती सो नारद तो दूरतैं सत्यभामा देखी मानूं साक्षात् रति ही है ॥ २६ ॥ अर वह शृंगारमें लग रही हुती सो नारदकूं न देखे उठकरि इनका आदर न किया सो तत्काल क्रोधकरि याके घरतैं निकसे ॥ २७ ॥ मनमें विचारी या लोकविषैं विद्याधर भूमिगोचरी मोहि देखि सबही उठिकरि नमस्कार करैं। अर सबही राजानिकी रानी नमस्कार करैं ॥ २८ ॥ यह सत्यभामा रूपके मदकरि गर्वित मेरी उर दृष्टि हू न करी यह विद्याधरकी पुत्री महा धीठ है ॥ २९ ॥ तातैं याके रूप सौभाग्यके गर्वरूप पर्वतकूं मैं याके शोकरूप वज्रपातके निपातकरि चूर्ण न करूं तो मैं नारद काहेका अर आगेकूं मेरी शंका कौन राखैं ॥ ३० ॥ याके रूप सौभाग्यकूं उलंघै ऐसी यापर सौत हरिके घरमें लाऊं बहुत रत्ननिकी भरी वसुंधरा समान राणी कन्हैयाके लाऊं अर याहि निस्वास नाखती मैं निरखूं तब मेरी क्रोधरूप अग्नि बुझै मुझ नारदकूं रुसाय निश्चिंत कौन रहै ॥ ३१ ॥ ऐसा विचारकरि नारद सब ठौर भ्रमै परंतु सत्यभामा सादृश्य रूप न देख्या तब कुंडनपुर आए जहां राजा महा भीष्म शत्रूनिकूं महा भयंकर बडा वंशका उपज्या ताके एक रुक्मनामा पुत्र महा बुद्धिमान महापराक्रमी अर रुक्मिणी नामा कन्या सो कलागुणविषैं प्रवीण ॥ ३४ ॥ सो नारद पहिले राजसभाविषैं आए अर राजाने अति सत्कार किया बहुरि राजलोकमें गए सो रणवासकी सबही स्त्री आय प्रणाम करती भई। अर रुक्मिणीनामा कन्या महा सुंदर भूवातैं है अनुराग जाका जैसी संध्यासमय सूर्यकी उदय लक्ष्मी सोहै तैसी रुक्मिणी शोभै है मानूं हरिके

गौतम गणधरतैं राजा श्रेणिकने पूछी। हे नाथ यह नारद कौन है अर याकी उत्पत्ति कौनतैं है? तब गौतम गणधरने कही हे भूप नारदकी संपूर्ण कथा तोहि कहूं हूं सो सुन ॥ १३ ॥ यही सौर्यपुर जहां यादवनिका राज ता नगरके समीप दक्षिणकी ओर तापसनिका आश्रम जहां अनेक तापस कंदमूलादि फलपत्रनिके भक्षणहारे रहैं ॥ १४ ॥ तिनमें एक सुमित्रनामा तापस ताके सोमयशानामा स्त्री वह तापस उच्छूवृत्ति कहिए नगरविषैं बणिक जन हाट उठाय घर जांय अर उनकी हाटतैं वाह्यस्थलविषैं अन्नके कण विखर रहे होवें सो बीन लावे या वृत्तिकरि उदर पूर्ण करैं अर कभी कंदमूलादि भक्षण करैं सो इनके नारद पुत्र भए ॥१५॥ सो बालक चंद्रमा समान कीर्ति धारी सो बालककूं वृक्षके नीचे सूधा सुवायकरि मातापिता दोऊ क्षुधा तृषातैं पीडित उच्छूवृत्तिके अर्थि नगरमें गए ॥ १६ ॥ अर बालक वृक्षके नीचे क्रीडा करता हुता तहां एक जंभ्रक नामा देव आया सो बालककूं देखिकरि पूर्वस्नेहतैं वैताढ्य पर्वत ले गया ॥ १७ ॥ तहां एक मणिकांचननामा गुफा ताविषैं वह देव बालककूं रखकरि कल्पवृक्षनिकर उपज्या मनोज्ञ आहार ताकरि ताहि बढाया ॥ १८ ॥ जब यह बालक अष्टवर्ष ऊपर भया तब याहि जिनआगमका रहस्य समझाया अर देव याहि आकाशगामिनी विद्या देता भया ॥ १९ ॥ अर याका नाम नारद धरया सो यह नारद महाविद्यावान अनेक शास्त्रनिका पाठी मुनिराजनिके चरणारविंदकी सेवाकरि श्रावकके व्रत धारता भया ॥ २० ॥ यह नारद जन्महीतैं कामका जीतनहारा है अर कामदेव समान महा सुंदर है अर जो राजा कामी हैं तिनका अति वल्लभ है तिनकूं वनवांछित स्त्री परणाय दे अर आप महा शीलवान है लोभकरि रहित है अर सदा वदन प्रसन्न है हास्यरसविषैं है अनुराग जाका ॥२१॥ अर महा तेजस्वी है मान धन है अर विना सत्कार क्रोधकरि प्रज्वलित होय अर कोई स्तुति करै तो डरहू जाय अर रणके देखिवेविषैं है प्रेम जाका अर जे जलपाक कहिए वाचाल है तिनमें मुख्य है ॥ २२ ॥ अर अढाई द्वीपविषैं जिनराजके जन्म कल्याणक आदि पंचकल्याणक तिनके दर्शनका अभिलाषी है जाके अर चैत्यालयनिकी

अथानंतर—सब यादवनिकी सभा भरी है ताविषैं आकाशगामी नारद आकाशतैं आवते भये कैसै है नारद पीतवण जटाका है भार जिनके अर दाढ़ी मूंछ श्वेत हैं अर शरदके मेघ समान उज्ज्वल है वर्ण जिनका ॥ २ ॥ जैसा विजुरीका उद्योत होय तैसी प्रभाकूं धरे सभामें आये अर नानाप्रकारके वर्णकरि विस्तीर्ण जो योगपट्ट ताकरि शोभित हैं। जैसा प्रवेशकरि युक्त चंद्रमा शोभै तैसें शोभै हैं ॥ ३ ॥ हल हलाट करते वस्त्र कोपीन अर दुपट्टा तिनकरि मंडित सभामें ऐसे आये जैसें जगके अनुग्रहकी वृद्धिकरि कल्पवृक्ष आवै ॥ ४ ॥ कंठविषैं यज्ञोपवीतका सूत्र कैसा शोभै है मानूं रत्नत्रयहीकरि युक्त हैं मनवचनकायकी शुद्धताकरि धारा है ब्रह्मचर्य ताकरि उज्ज्वल हैं। जन्मतैं लेय बालब्रह्मचर्यरूप महापंडित ताकरि मंडित हैं। कैसा है ब्रह्मचर्य अद्वितीय है प्रभाव जाका अति बडाईका कारण है ॥ ६ ॥ कैसै हैं नारद मिथ्यात्व रहित पवित्र है प्रकृति जिनकी कामादि अंतरंगके बैरी छै तिनके जीतनहारे हैं जैसें बलदेव वासुदेव राज्यके उदयकरि समस्त राजानिकरि पूजित है तैसें यह विना ही राज विभूति सब राजानिकरि पूजनीक हैं ॥ ७ ॥ कामादिक पट् वैरीनिके नाम काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मद ५ मत्सर ६ जब नारद अंबरतैं उतरे तब सबही राजा सीस नवाय उठि खड़े रहे अर नमस्कारकरि आसन देते भये वहुत भक्तिकरि नारदके चरण पूजते भये कैसे हैं नारद सन्मानमात्रही है हर्ष जिनके अर काहूका कछु चाहिये नाहीं ॥९॥ वसुदेव वासुदेव अर समुद्रविजयादि सब ही राजा नारदका सन्मान करते भये नारद नेमिजिनेश्वरकूं नमस्कारकरि सभामें बैठा नेमिनाथके दर्शनकरि अर बचन श्रवणकरि उपज्या है अति आनंद जाकूं सो ताके यही अभिलाषा कि मैं प्रभुका दर्शन कर्‍या ही करूं अर इनके वचन सुना ही करूं तीर्थंकर देव बलदेव अर वासुदेव इनमें नारदका अधिक अनुराग है सो इनका अवलोकनकरि अर इनके वचनरूप अमृतकरि नारदके अति प्रीति बढी ॥ १० ॥ सभामें तिष्ठकरि नारद पूर्व विदेहके अर पश्चिम विदेहके तीर्थंकरनिकी कथारूप अमृतकरि अर सुमेरुकी वंदनाकर आए हुते सो वहांकी सब वार्ता कहि यादवनिका मन तृप्त करते भए। जब नारदका कथन आया तब

तिमिरका समूह जिनिने राम कहिये बलदेव दामोदर कहिये वासुदेव तिनकूं निरंतर आनंदकूं बढ़ावते श्रीनेमिनाथ बाल्यावस्थविषैं मनोहर क्रीड़ा करते भये जिनकी क्रीडा सुर नर विद्याधर सबनिके मनकूं हरे ॥ ५० ॥ समस्त यादवनिकी स्त्री तिनके करनिकूं शोभित करते श्रीभगवान सबनिके हाथनिमें विचरैं वह जाने मैं ल्यूं अर वह जाने मैं ल्यूं सबनिके प्यारे जगजीवन जिनेश्वर बाल्यावस्थातैं तरुण अवस्थाकूं प्राप्त भये महा रूपवान जिनके रूप समान त्रैलोक्यमैं काहूका रूप नाहीं प्रगट हैं सब लक्षण जिनमें ऐसे यौवनरूप जिनपर नीलकमल समान नेत्र जिनके सो प्रभुके रूपकूं देखकरि नर नारीनिके नेत्र और जगह विश्राम न करते भये ॥ ५२ ॥ जनताका हृदय कमलसमान उन भगवानका रूप भानुसमान सो प्रफुल्लित करता भया प्रभु ऐसे सुंदर जो सबके मन हरैं इनकूं देखि सकल जननिका मन मोहित होय परंतु इनका मन किसीकूं देखि मोहित न होय इन समान सुर-नरका रूप नाहीं ॥ ५३ ॥ तातैं जिनके रूपकी उपमा अरकूं नाहीं जिनेश्वर स्वरूप जिनेश्वरहीका है जगतविषैं कोई इन समान होय तो इनकूं उपमा दीजे हरि कहिये इंद्र अथवा हरि कहिये वासुदेव यह बडे बुद्धिमान हैं इनके जानिवेमें अनके उपमा हैं परंतु जिनराजकूं जाकी उपमा दीजे ऐसा कोई पदार्थ नाहीं तातैं मौन गहि बैठि रहे हैं ॥ ५४ ॥ श्रीनेमिनाथके निकट भाई बंधु निजजन जब शृंगाररसकी चर्चा करैं अथवा परणायवेकी बात चलावें तब आप लज्जाकरि नीचे होय जावैं ॥ ५५ ॥ तीनज्ञानरूप जल ताकरि धोया है मोहरूप कलंक जिनि सो नेमिजिनेश्वरका मन संसारकी मायारूप धूलिकरि धूसरा न होता भया ॥ ५६ ॥ अर वह द्वारिकापुरी सुंदर हैं द्वार जाके सो जैसैं समुद्रकी लहर चंद्रमाकी किरणनिके समूहकरि वृद्धिकूं प्राप्त होय तैसैं वह पुरी जिनराजके गुणनिके समूहकरि अत्यंत हर्षकूं प्राप्त भई लोकरूप तरंग तिनकरि उछलती हुई आनंदरूप प्रवर्तती शोभती भई ॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वारावती निवासवर्णनोनाम एकचत्वारिंशः सर्ग ॥ ४१ ॥

की भांति भांतिकी वस्तु कुवेर सदा ही ल्यावै हैं अर आप सदा देवलोकहीके वस्त्राभरणादि पहिरै हैं अर सब सामग्री देवलोकहीकी आवै है तिनका कहा वर्णन करिए जिनके लार जेते आए हुते ते सब ही देवनिने आराधे अर हरि हलधरकी विशेष पाहुनगति करी ॥ ३९ ॥ बहुरि कुवेरने यादवेंद्रसूं कही आप सब ही सरदार या पुरीविषैं प्रवेश करो। अर तिहारी प्रजाकूं वसाओ ऐसा कहि पूर्णभद्र यक्षकूं रखि कुवेर तौ अपने स्थानक गया अर सब यादव एकत्र हो समुद्रके तट जय जयकार शब्दकरि अति हर्षित होय हलधर अर हरिका अभिषेक करवाया कैसे हैं दोऊ वीर नरनायक हैं हल अर गदाका है आयुध जिनके बडाभाई तो हलधर है छोटा भाई गदाधर है ये दोऊ ही नरेश्वर जिनेश्वरदेवके उपासक हैं ॥ ४१ ॥ जैसैं स्वर्गविषैं सुर प्रवेश करै तैसैं यादव चतुरंग सेना सहित अर अपनी प्रजा सहित द्वारिकामें प्रवेश करते भये ॥ ४२ ॥ पूर्णभद्रनामा यक्षकूं कुवेर रख गया हुता तानैं सवनिकूं यथा योग्य स्थानविषैं राखे मंगलरूप वे सब ही मंदिर तिनविषैं यह यादवेश्वर सुखतैं तिष्ठे जे मथुरावासी हुते तिन्होंने तो द्वारिकाविषै अपने निवासका स्थानक मथुरा ठहराया अर जे शौर्यपुरके निवासी हते तिन द्वारिकाविषै अपने निवासका नाम शौर्यपुर ठहराया। अर जे वीरपुरके वासी हुते तिन्होंने अपने वासका नाम वीरपुर ठहराया याभांति संकेतकर वे यथायोग्य निवास करते भए अर ता नगरीविषै कुवेरकी आज्ञाकरि यक्षदेव अढाई दिन सब ही घरविषै पूर्ण धन धान्य वर्षावते भए किसीके घरमें किसी वस्तुकी कमी न रही जहां विराजा कृष्ण सो ताके प्रतापकरि पश्चिमके सब राजा वश भए बलदेव वासुदेवकी आज्ञा सब मानते भए ॥ ४६ ॥ अनेक राजानिकी पुत्री हजारों व्याहकरि द्वारकापति सुरपतिकी न्याईं यथेष्ट सुखसूं रमै ॥ ४७ ॥

अथानंतर—श्रीनेमिनाथ कुमार द्वारिकाविषैं चंद्रमाकी न्याईं वृद्धिकूं प्राप्त होता भया समस्त कलानिका स्थानक है शरीर जाका ॥४८॥ बहुरि श्रीनेमिनाथ ऊगते सूर्य समान शोभते भये दशार्ह कहिये समुद्रविजयादि दश भाई जिनके बदन सोई भये कमल तिनका प्रफुल्लित करणहारा है उदय जिनका अर अपनी ज्योतिकरि दूर किया है

जहां सर्व रत्नमई अति उतंग जिनेंद्रके चैत्यालय महा पवित्र जिनके चौगिरद कोट अर दरवाजे तिनकरि वह पुरी स्वर्गपुरी समान सोहै है अर अग्निकूण आदि चार विदिशा अर पूर्व आदि चार दिशा तिनविषैं समुद्रविजयादि दश भाईनिके महल अनुक्रमतैं होते भए अर वसुदेवके मंदिरके मध्य एक सर्वतोभद्रनामा महल कल्पवृक्ष अर कल्पलताकरि मंडित अठारह खणका केशवके रहनेका शोभता भया ॥ २७ ॥ अर सर्व राजलोकनिके अर पुत्रादिकनिके योग्य मंदिरनिकी पंक्ति कृष्णके मंदिरके चौगिर्द सोहती भई अर बलदेवका मंदिर अति सुंदर बन वापी सरोवरादिकरि संयुक्त शोभता भया ॥ २९ ॥ अर बलदेवके महलके आगे एक सभा मंडप सोहता भया वह रत्नमई सभा मंडप इंद्रके सभामंडप समान सोहता भया जाकी कांतिकरि सूर्यहूकी किरण मंद भासै अर उग्रसेनादि भूपतिके योग्य मंदिर सबही भाईनिके आठ आठ खणके सोहते भए नाहीं कर सकिये वर्णन जाका ऐसी द्वारावतीनामा पुरी महा मनोज्ञ रचकरि कुवेर वासुदेवकूं दिखावता भया ॥ ३२ ॥ अर इतनी वस्तु कुवेर कृष्णकूं देता भया मुकुट हार कौस्तु मणि पीतवस्त्र अर नक्षत्रमाला नामा आभूषण यह वस्तु लोकविषैं दुर्लभ है सो माधवकूं दई अर कुमुद्वतीनामा गदा अर शक्ति अर नंदकनामा खड्ग सारंगनामा धनुष अर दोय तरकस अर वज्रमई बाण ॥ ३४ ॥ अर सर्व आयुधनितैं पूर्ण दिव्य रथ जाके गरुडकी ध्वजा अर चमर अर सफेद छत्र केशवकूं कुवेरने दिए अर बलभद्रके ताईं दोय नील वस्त्र अर रत्नमाला मुकुट गदा अर हल मूशल अर धनुष वाण दोय तरकस अर दिव्यास्त्रनिकरि भर्‍या रथ ताके ताडपत्रके आकारकी ध्वजा अर छत्रादिसहित औरहू मनोहर वस्तु हलधरकूं दीनी ॥ ३७ ॥ अर नेमि जिनेंद्रके पिता समुद्रविजय अर माता शिवदेवी अर समुद्रविजयके सब भाई तिनकूं वस्त्राभरणादि नानाप्रकारकी वस्तु दई अर उग्रसेनादि भोजकवृष्टिके पुत्र तिनकूं वस्त्राभरणादि अनेक वस्तु दई ॥ ३८ ॥ अर भगवान श्रीनेमिनाथ ता निरंतर इंद्रादि देवनिकरि अर कुवेरकरि पूज्य ही हैं उनकूं तो उनकी अवस्था योग्य अनुपम वस्तु तिनकरि सदा ही सेवै हैं ऋतु ऋतु

उठ्या ही चाहिए। मानूं समुद्र बलभद्र नारायणका सत्कार ही करै है नेमिनाथ तीर्थंकर तो तीनलोकके प्रभु अर वलभद्र नारायण तीनखंडके अधिपति जिनपतिके महाभक्त सो मानों समुद्र इनका विनय ही करता भया अर वह समुद्र झागनिके मंडलकरि ऐसा शोभै है मानूं समुद्रविजय अक्षोभ आदि सब भाईनिका अर भोजवंशीनिका आदर ही करै है तुम भले ही पधारे।

भावार्थ—झाग हू उज्ज्वल अर हास्य हू उज्ज्वल सो फेन उठै है इनके आयवेकरि समुद्र हर्षित भया हंसै ही है। अर शुभ तिथि देखि स्थानककी इच्छाकरि बलभद्र सहित कृष्ण तीन उपवास धारते भए अर डाभकी सेंज पर तिष्ठकरि नमोकार मंत्र जप्या अर समुद्रके तीर तिष्ठे ॥ १८ ॥ तब सौधर्मइन्द्रकी आज्ञातैं गौतमनामा देव आयकरि इनका वहुत सन्मान करता भया अर कुवेरने इंद्रकी आज्ञातैं श्रीनेमिजिनेश्वरकी भक्ति अर बलदेव वासुदेवके पुण्यकरि द्वारावतीनामा परमपुरी निर्मापी सो नगरी बारह योजन लंबी अर नव योजन चौडी बसी वज्र कहिए हीरा तिनका है कोट जाके अर समुद्र ही है खाई जाके ॥ १९ ॥ अर रत्न स्वर्णकरि रचे बहुत खण निके अनेक मंदिर तिनकरि वह नगरी आकाशकूं रोकती संती ऐसी शोभती भई मानूं इंद्रपुरी ही स्वर्गलोकतैं उतरी है ॥ २० ॥ जहां अनेक कूप अनेक वापी अनेक सरोवरी अनेक कुंड चौखूंटे तथा गोल अर अनेक द्रह जिनमें नाना प्रकारके कमल फूलि रहे हैं अर महामिष्ट स्वादिष्ट है जल जिनविषैं ॥ २१ ॥ अर अनेक हैं चारों ओर वन जहां कल्पवृक्ष अर कल्पलता समान बेल अर नागरबेलि, लौंग, सुपारी, इलाची, अगर, चंदन आदि अनेक वृक्ष तिनकरि शोभित वह वन नंदनवनकी शोभाकूं जीतते भए अर वा नगरीविषैं अनेक मंदिर ऐसे हैं जिनकें स्वर्ण रत्नके कोट अर दरवाजे सर्व रतिके सुखके देनहारे वे मंदिर सुरमंदिर समान सोहते भये नाना प्रकारकी मणीनिके हैं शिखर जिनिके ॥ २३ ॥ अर अनेक सुंदर बाजार अर अनेक गली अर ठौर ठौर जलके निर्वाण तिनकरि महा मनोहर वह पुरी सब राजा अर प्रजानिके वासयोग्य शोभती भई ॥ २४ ॥ अर

मोती हाथी घूमै तैसा ही घूमै हैं जाविषै अनेक भँवर उठै हैं अर अनेक लहर उठै हैं अर बैठै हैं अर अनेक जलके मंडल ऊंचे उछलै हैं सो मानूं आकाशकूं आच्छादित करै हैं ॥ ३ ॥ अर जाविषैं अनेक मगरमच्छ विचरै हैं अर ग्राहनिका ग्रह ऐसे रत्नाकरकूं यादव निरखते भए ॥ ४ ॥ जाका पार न पाइए ऐसा अपार है अर अति गंभीर है जे महा बुद्धिमान अनेक यत्न करैं तोहू समुद्रका थाह न पावैं जाहि कोई तिर न सकै गम्भीरताके योगतैं जाका तल अगम्य है ॥ ५ ॥ अर अति उतंग अति चंचल तरंगनिके प्रसंगकरि अलंघ्य है जाविषैं चली आवै हैं अनेक नदी तिनकरि अति मनोहर है अर अमोलिक महा रत्न तिनकरि जगतका उपकार करै है अर अनादि कालका है अर निर्मलता अर विस्तीर्णताके योगतैं आकाशकी शोभाकूं अंगीकार करै है ॥ ७ ॥ अर अपने उदरविषैं धरै है अनेक जीव तिनकी रक्षाका है दृढ व्रत जाके मानूं यह समुद्र जिनशासनका स्वरूप ही है जिन मार्गहू जीवोंका रक्षक है अर यह समुद्र हु अनेक जीवनिका रक्षक है अर जिनमार्ग जे वादी जीतिकी इच्छा करैं तिनकरि अलंघ्य है अर यह भी लोकनिकरि अलंघ्य है ॥ ८ ॥ अर वाहुका भव्यजीव अनंतानुवंधी कषायनिके आताप निवारिवेकूं आश्रय करै है अर या समुद्रका आश्रय तापके अनुबंधकूं निवारै है। यह समुद्र अपने स्पर्शहीकरि आतापकूं निवारै तो अवगाह कर क्यों न निवारे ॥९॥ ऐसे समुद्रकूं यादवनिने देख्या देखकरि जानी मानू यह सूत्रार्णव ही है, अंबुधिकूं (समुद्र) विलोकिकरि राजानिके समूह बहुत राजी भए अर समुद्रकी लहरमें मूंगा मोती आदि अनेक रत्न तीरां आए सो मानूं नेमिनाथके आगम करि समुद्रने हर्षित होय पुष्पांजलि ही चढाई अर समुद्र ऊंचा उछल्या सो मानूं नृत्य ही करै है अर समुद्र गर्जा मानों जयजयकार शब्द ही करै है अपने तरंगरूप करि तिनमें नानाप्रकारके रत्ननिकरि मानूं अर्घ ही देय है अर मानूं वह सागर अपनी कल्लोल रूप भुजानिकरि हरि जे कृष्ण तिनसूं मिलाप ही करै है अर ध्वनिरूप वचनकरि हरिका सत्कार ही करै है अर वह समुद्र युगविषैं प्रधान जे बलभद्र तिनकूं देखकरि मानूं चलाचल होवेके मिसकरि उठै ही है बडेनिकूं देखकरि

दुखी भई रुदन करूं हूं मैं इतनी बडी भई तो हू उनके साथ जल न सकी अद्यापि जीवनकी आशा है ॥ ३८ ॥ अर यादव सब ही राजा अपनी प्रजा सहित अग्निमें जले ॥ ३९ ॥ अर मैं दुःखिनी स्वामिके वियोगतैं दुःखकी भरी विलाप करूं हूं ॥ ४० ॥ यह वचन वृद्ध रूपिणीके जरासिंध सुनकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भया अर अंधकवृष्टी अर भोजकवृष्टीनिके सन्तानका मरण जान ॥ ४१ ॥ पीछे फिरि अपने स्थानक भाईनि सहित आया अर जे यादवनिमें याके अंगी हैं तिनकूं पाणी देकर कृत्यकृत्य होय सुखसे तिष्ठा ॥ ४२ ॥ अर यादव अपनी इच्छासे पश्चिम समुद्रके वनविषैं आये सो ते बन लौंग, इलायची, दालचीनी आदि सुगन्ध द्रव्यनिकी सुगंधताकरि महा सुगंध है अर जहां शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजै है ॥ ४३ ॥ दूर देशसे आये यह यादव नृप सो पश्चिमके सागरके तट अपनी प्रजा सहित डेराकरि तिष्ठे ॥ ४४ ॥ यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे राजन् ! वह जरासिंध करुणारहित यादवनिके पीछे लग गया अर उनके मारनेहीका है प्रयोजन जाके जवांई अर भाईनिके मारिवेकरि उपज्या है अधिक कोप जाकूं सो मार्गविषै देवनिने अग्निका प्रपंचकरि रोका सो पीछे फिरया जिनके पुण्यका उदय है तिनका रिपु कहा करै ऐसा जान जे जिनधर्मी विवेकी जन हैं सो जिन भाषित धर्मकी स्थिति करो । जिनधर्मके प्रभावसे सकल विघ्न टरे हैं ॥ ४५ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यादवप्रस्थानवर्णनोनाम चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४० ॥



छठा अधिकार

(यादवनिका द्वारिकामें निवास करना)

अथानंतर—श्रीनेमिनाथ जिनके लार समुद्रविजय आदि दशार्ह अर भोजकवृष्टीके पुत्र अर बलभद्र नारायण सबही समुद्रकी शोभाकूं देखिवेकूं गये सो समुद्र अति अथाह देख्या याविषैं अनेक तरंग उठे हैं अर जैसा

उत्तरपुराण तथा नेमपुराणविषैं यह कथन है जो नेमनाथ स्वामीका जन्म शौर्यपुरका नाहीं द्वारिका गये पीछे प्रभुका जन्म भया अर नेमिनिर्वाणकाव्यविषैं ऐसा कथन-जो प्रभुका जन्म तो द्वारका ही है परन्तु द्वारकामें यह बामव बसै है जहां दशार्ह समुद्रविजयादि दश भाईनिके महल अर इनकी प्रजा बसै सो शौर्यपुर अर उग्रसेनका निवास सो मथुरा अर द्वारकाहीमें जहां पांडवनिका निवास सो हस्तिनापुर या भांति लिखा है ॥ २५ ॥ अर इनकूं निकसे सुन पीछेसे जरासिंध गया तब यादवनिनै सुनी जो वह आया तब महा उत्सवकरि यादव युद्धकूं उद्यमी भये अल्प ही अंतर दोनों सेनाके रह्या तब तीनखंडके निवासी देव मायामई सामर्थ्यकरि विक्रिया रचते भये ठौर ठौर अग्निकी ज्वाला प्रज्वलित है अर यादवनिके अकाश अग्निमें जरै हैं अर सब कटक जरै है अर जगह जगह इनके आभूषण पडे हैं अर गज अश्व दौड़े २ फिरै हैं ऐसी विक्रिया जरासिंधने देखी अर अग्निकी ज्वालाकरि मार्ग भी चलता न देखा अर एक देवी वृद्ध मनुष्यनीका रूप धरे रोवती देखी तासूं जरासिंधने पूछा यह विस्तीर्ण कटक कौनका जरै है अर तू क्यों रोवै है अर कौन है या भांति पूछी तब वह देवी वृद्धरूपिणी कष्टकरि स्वास भरती नीठ नीठ कहती भई रुदनकरि रुक रहे हैं कंठ जाके ॥३२॥ वृद्धरूपणी कहै है हे तेजस्वी मैं कहूं हूं सो तू सुन, महत पुरुषके निकट अपना दुःख निवेदन करिये तो दुःखकी निवृत्ति होय उनके वचन ही सुनि साता उपजै है ॥ ३३ ॥ एक राजगृह नामा नगर है तहां राजा जरासिंध राज करै है सो पृथिवीविषैं प्रसिद्ध है अर समुद्रपर्यंत पृथिवीविषैं वाका राज है अर महा सत्यवादी है अर वाके प्रतापरूपी अग्नि बड़वानलका रूपकरि समुद्रविषैं भी मानों प्रज्वलित है वासूं बैर करि समर्थ कौन अर वानैं तो यादवनि पर कृपा करनमें कमी न करी परन्तु ये अपराधी भये सो अपने अपराधकी शल्यकरि वह किसी दिशा अपना जीव ले भाग जांय सो पृथिवीविषैं कोई शरण न देख्या चक्रवर्तीनिके कोपकरि कहा बचै तब उन अपना मरण ही शरण जाना अग्निविषैं प्रवेश कर भस्म भये अर मैं उनके बड़ोंकी दासी हूं सो अपने स्वामीकी दुर्बुद्धिकरि

उपजे हैं ॥ १४ ॥
यह जरासिंध प्रतिनारायण है अर याके नाश करनहारे अपने कुलमें यह बलभद्र नारायण आपही आयकरि भस्म न
जातैं जौलग कृष्ण रूप अग्निविषैं वह प्रतिनारायणरूप पतंग अपनी पक्ष सहित यहांसे उठाय कर और
होय तब तक कालक्षेप करना योग्य है जिससे कई एक दिन हम तुम शूरवीर कृष्णको तिससे यह
जगह रक्खें यह कृष्ण तीन खंडका जीतनहारा योधा इस समय जरासिंधसे लडवे सामर्थ्य नाहीं कार्यकी सिद्धि निःसं-
स्थानक तज करि हम तुम कई एक दिन पश्चिम दिशाकी ओर निवास करें स्थानक पकडे तो रण विषैं नीकी
देह होय ॥ १७ ॥ हम यह स्थानक तजे पश्चिमकी ओर चलें अर जो वहां जरासिंध आवै अपने कटकमें सबोंको कही
पाहुणगति करें यह भी रणप्रिय है सो उसे रणविषैं प्रसन्न करैं ॥ १८ ॥ यह मंत्र करि उद्यमी भए आनंदभेरीका
आनन्द भेरीका नाद कर सबोंको चलनेका विचार जनाया तब सब ही लोक चलवेकूं उद्यमी भए सब ही यदुवंशी अंधक-
नाद सुन सब ही प्रजा चारों वर्ण अपने कुटुम्ब सहित यादवोंके साथ चलवेकूं प्रस्थान करते भए
वृष्टीके अर भोजकवृष्टीके चलवेकूं उद्यमी भए मथुराके अर शौर्यपुरके अर वीरपुरके सबही लोक अप्रमाण धनके भरे
जैसे कोई क्रीडाके अर्थ वन विषै जाय तैसे देश तज विदेशके उद्यमी भए अठारह कोड घर अर देखकरि यह
राजाके साथ निकसे यादवोंका राज्य ही प्रिय है जिनको ॥ २२ ॥ शुभ तिथि शुभ नक्षत्र शुभ योग अब ही लडें
यादव भूपाल प्रयाण करते भए। यद्यपि बलदेव वसुदेवके मनमें यह विचार आया जो जरासिंधसे तब यह
परंतु बडोंकी अज्ञासे प्रयाण ही करते भए उन्होंने कही इस समय तुम्हारी अवस्था नाहीं उलंघकरि ये पश्च-
बडोंके आज्ञाकारी सो उनके कहेसे प्रयाण ही किया ॥ २३ ॥ सो अनेक देशनिकूं रमणीक अर जहां
मकी ओर गए सो विंध्याचलके समीप डेरा किया। सो विन्ध्याचल गजनिके बनकर हरती भई ॥ २४ ॥
सिंह शार्दूल घने अर जाका शिखर आकाश लग रहा है सो वा गिरकी शोभा प्रजाके मनकूं पीछे द्वारका गये अर
यहां हरिवंशपुराणमें तो यह कथन है जो श्रीनेमिनाथका जन्म शौर्यपुरमें भया अर जन्म भये

भावार्थ—जरासिंधको अपराजितका ऐसा शोक उपजा जो तत्काल प्राण जाते रहै परंतु याके मारवे कर यादवोंपर महाक्रोध उपजा तिसकर प्राण थंभे ॥ १ ॥ समस्त यादवोंके नाशके अर्थ अपने मित्रवर्गोंसे मंत्रकरि आज्ञा करता भया, कैसा है जरासिंध समस्त मय अर पुरुषार्थ तिनकरि पूर्ण है ॥ २ ॥ जरासिंधकी आज्ञासे नानादेशके राजा चतुरंग सेना करि मंडित स्वामीके आज्ञाकारी महा स्वामिभक्त स्वामीके निकट आए सेनारूप समुद्र तिसके मध्यवर्ती जरासिंध पृथिवीका पति यादवनिपर कूच ही करता भया तब यह खबर यादवोंको भई यादव महा चतुर हलकारेही हैं नेत्र जिनके ॥ ४ ॥ यह वार्ता सुनकरि जे वयोवृद्ध हैं अंधकवृष्टि अर भोजकवृष्टीके बंशके सो सब मिलकरि मंत्र करते भए धर्मका है निरूपण जिनके ॥ ५ ॥ यादव विचार करै हैं जरासिंध तीन खंडका स्वामी है अखंड है आज्ञा जाकी सो औरों कर जीता न जाय महा प्रचंड है अर चक्र खड्ग गदा दंड रत्नादि दिव्यास्त्रके बलकर उद्धत है ॥ ६ ॥ अर कृतज्ञ है जो कोई उसकी सेवा करै तिसका गुण मानै है कृतघ्न नाहीं अर कोई उससे द्वेष करै अर फिर प्रणाम करै तो उसे क्षमा भी करै है अबतक अपना बुरा उसने नाहीं किया पहले अनेक उपकारही किए हैं ॥ ७ ॥ अर आपां उसका जंवाई मारा अर भाई मारा सो उसका बडा अपमान भया सो वह अपना अपमान मल धोवनेकूं महा कोपवान अपने ऊपर आवै है ॥ ८ ॥ अर अपना दैवबल अर पुरुषार्थकी सामर्थ्य देखता भी नाहीं देखै है महा गर्ववान है ॥ ९ ॥ अर कृष्णके पुण्यकी सामर्थ्य अर पुरुषार्थ अर बलभद्रका पुरुषार्थ बाल्यावस्थाहीसे लेयकर जगतमें प्रसिद्ध है परंतु उसे नाहीं भासै है अर श्रीनेमिनाथका अपने जन्म भया इन्द्रादिक देवोंके आसन कंपायमान भए जिसका प्रभुत्व बाल्यावस्थाहीविषैं तीन लोकमें प्रगट है जिसकी सेवाविषैं सकल लोकपाल सदा सावधान तिसके कुलकूं ऐसा कौन मनुष्य जो विघ्न करै जिस कुल विषै तीर्थंकर देव प्रगट होय सो कुल अपराजित है किसीकर जीता न जाय ऐसा कौन है जो अग्निकूं हाथ करि स्पर्शे अग्नि तीव्र ज्वालाकरि युक्त है तैसे तीर्थंकर बलदेव वासुदेवके सन्मुख जीतकी इच्छाकरि कौन आवै ॥१३॥

आपकूं कृतार्थ
यहां की सब सेवा तेरे ताल्लुक है ऐसी आज्ञाकरि देवनिका राजा प्रभुके मातापिताकी आज्ञा पाय
मानता संता समस्त चतुर्निकायके देवनि सहित अर समस्त इंद्राणीनि सहित पाया है जन्मोत्सवका लाभ जानैं
सो अपन स्थान गया सिद्ध भई है यात्रा जाकी अर दिक्कुमारी हू जन्मसमयका उत्सवकरि पुत्रसहित माता
शिवदेवीकूं प्रणामकरि हर्षकी भरी अपने अपने स्थानक गई अपने शरीरकी प्रभाकरि दशों दिशाविषैं किया है
उद्योत जिनि अर भगवान जगतके चंद्र अपने उज्ज्वल गुणनिकरि जगतकूं आह्लाद उपजावते लक्ष्मीकरि सोहते
भये। कैसे हैं भगवान बाल्यावस्थाविषैं हू बालभावतें रहित है क्रिया जिनकी सो बंधुवर्ग अर देव तिनकरि लडाये
वृद्धिकूं प्राप्त होते भये यह अरिष्टनेमिका जन्माभिषेकका स्तवन तीन लोककूं हर्षित करणहारा पापका नाशक
पुण्यका मार्ग संसारमें सार मोक्षका कारण भव्य जीवनिकूं प्रमोदका कर्ता प्रमादका हर्ता धर्मका बढावनहारा जो
कोई प्रीति करि सुने व्याख्यान करे पढे सदा चिंतवे सो पुरुष सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र संपदाका वर्णनहारा
जो वीतरागका धर्म ताहि प्राप्त होय अर वह पुरुष पुण्यके आस्रवका कारण होय है कैसा है पुण्यका आस्रव
शरीरके सुखका देनहारा शांतिका करणहारा पुष्टताका बढावनहारा संतोषका उपजावनहार संपतिका मूल यह
लोक परलोक कल्याणकी प्राप्तिका प्रत्यक्ष उपाय सर्व पापाश्रवका निवारणहारा पूर्वभवविषैं अनेक दारुण कर्म
किये तिनका नाश करणहारा है जे राग द्वेष मोहादि भावकरि उपाजे हैं अशुभकर्म तिनका मेटनहारा यह
जिनेंद्रका मुख्य स्तोत्र हमारे भक्तिका समूह करो या स्तोत्रके प्रभावकरि हमारे परमेश्वरमें परमभक्ति होवो ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जन्माभिषेकास्तवनवर्णनो नाम एकोनचत्वरिंशः सर्गः ॥ ३९ ॥

अथानंतर—जरासिंध सुनी जो भाई अपराजित युद्धविषें परलोक गया यह वार्ता सुनकरि शोकरूप समुद्र
विषें डूबे था सो क्रोधरूप जहाज कर थंभा।

देवनिकी सेनाकरि मंडित शीघ्रही उत्तरादेशाकूं उल्लंघकरि अपना जन्मस्थान जो सौर्यपुर तहां पधारे कैसा है सौर्यपुर ऊंची ध्वजानिका समूह ताकरि शोभित है अर यादवनिके गंभीर नाद तिनकरि जहां दशों दिशा व्याप्त होय रही है अर महा मनोज्ञ सुगंधजलकी जहां वर्षा होय रही है अर पुष्पकी वृष्टि होय रही है ताकरि नगरकी गली रुक रही हैं। अर मानूं वह पुर लक्ष्मीका निधान ही है अनेक निधिनितैं भरा है अर महामंगलका है प्रसंग जाविषैं ऐसे सुंदर सौर्यपुरविषैं श्रीनेमिनाथ आय प्राप्त भये वह सौर्यपुर ऐश्वर्यका अर आश्चर्यका मूल है या पृथिवीविषै आनंदको प्रगट करते लोकनिको प्रमोद वढाते प्रभु आये वयकरि बालक अर गुणनिकरि वृद्ध जिनेश्वर सौर्यपुरकी प्रजा अर राजा समुद्रविजय सोई भये कमलनिके बन तिनके प्रफुल्लित करवेकूं ऊगते सूर्य समान है ताहि ऐरावत मतंगके सिरतैं उतारकरि माताकी गोदमें इंद्र पधरावता भया अर इंद्र आप विक्रियाशक्तिकरि दैदीप्यमान हजारों भुजा वनाईं सो शोभाकरि युक्त तिनपर हजारों देवी नचाईं सो देवी सौंदर्यताके समूहकरि पूर्ण तिनका नृत्य हर्षकरि यादव देखे हैं समस्त पृथिवीके राज्यतैं प्रभुके जन्मोत्सवके लाभ मनमें अधिक जानते संते आनंदरूप हैं नेत्र जिनके सो इंद्रका रच्या आनंद नाटक ताहि निरखते भये जहां इंद्र नटवा ता नृत्यका कहा वर्णन करिये ऐसी ही शोभा ऐसे ही वादित्र ऐसा ही आप ऐसा ही सब समाज ऐसा ही अंगका मोडना ऐसा ही भौंहका चढावना ऐसी ही लीला ताकरि महाप्रवीण इंद्र नटवा आनंद नाटक करता भया प्रगट किये हैं नानाप्रकार रस जानैं अर देवनिका राजा जगतके राजाकूं अर तिनके मातापिताकूं प्रणामकरि पूजाकरि अमोलक वस्त्राभरण पहिराय भगवानके दाहने अंगूठेमें अमृतका स्थापन करि अर अनेक देवकुमार प्रभुकी सेवाकूं राखे। तिनकूं यह आज्ञा करी जो प्रभुकी वय होय ताही प्रमाण तुम वय धारकरि नाना ऋतुविषैं नानाप्रकार सेवा करहु अर सेवाविषैं अति तत्पर जो कुवेर ताहि सुरपतिने आज्ञा करी हे धनपति ! तू जिनपतिकी वय प्रमाण छहों ऋतु योग्य सकल सामग्री पहुंचाय जो वस्तु न होय सो लावो अर उनकी रक्षा करहु

रानीकूं गूढ गर्भ हुता काहूने न जाण्या सो मार्गमें पुत्र भया यह वार्ता कहि राजा अति उत्सव किया नगरमें सवनिके आनंद भया विद्याधरनिके समूह या पुण्याधिकारीके जन्मोत्सवविषैं नूपुरनिका नाद करते नृत्य करते भये ॥ ६० ॥ प्रद्युम्न नाम स्वर्णका है सो यह कुमार स्वर्णकी कांतिकूं जीतै तातैं याका नाम प्रद्युम्न ठहराया यह कुमार सैकडों कुमारनिकरि सेवित राजा कालसंवरके घर वृद्धिकूं प्राप्त होय ॥ ६१ ॥ अथानंतर—रुक्मिणी जागी देखे तो पुत्र नांहीं तव वृद्धा धायतैं कही देखो बालक कहां है सो सगरे मंदिरमें ढूंढ्या अर न पाया तब माता विलाप करती भई हाय पुत्र तोहि काहू वैरीने हर्या पूर्वोपार्जित पुण्यने मोहि निधि दिखाय अर पाछी लई, मैं परभवविषैं काहू स्त्रीका पुत्र हर्या ताका यह फल है ॥ ६४ ॥ या भांति रुक्मिणी विलाप किया जाकरि सबकूं करुणा उपजै याके रुदनकी ऐसी ध्वनि भई जो सबनिके काननि पडी ॥ ६५ ॥ तब वासुदेव यह वृत्तांत जानि बलदेवसहित रुक्मिणीके मंदिर आय। अर अन्य हू राजलोककी रानी बांधव जन आय भेले भये। रुक्मिणीका अर सव रानीनिका रुदन सुनि नारायण अपने भुजवीर्यकूं अर अपनी सावधानीकूं निंद्यते भये। सुनंदानामा खड्गके स्वामी कृष्ण सो कहते भये जगतविषैं दोय ही पदार्थ हैं दैव अर पुरषार्थ सो दैव ही प्रवल है जे पुरषार्थका गर्व करै हैं तिनकूं धिक्कार ॥ ६८ ॥ जो पुरषार्थही प्रबल होय तो मैं वासुदेव उघडी खड्ग समान तेजस्वी मेरे पुत्रकूं शत्रु कैसे ले जाय इत्यादि विचार करि माधव रुक्मिणीतैं कहते भये हे प्रिये! तू शोक मत करि धैर्य धरहु ॥ ७० ॥ वह पुत्र स्वर्गलोकतैं चया है अर पुण्याधिकारी है सो अल्प आयु न होय मो मारखे पिताके अर तुझ सारखी माताके हीनपुण्यका धनी अर अल्प आयु न होय यह कोई भवितव्य ऐसा ही हुता सो भया या भांति अनेक जाय हैं अर पीछे आवैं हैं। तेरा पुत्र लोकनिके नेत्रनिकूं उत्सवका कर्ता ताहि मैं हेरूंगा जैसें सूक्ष्मदृष्टि वाले द्वितीयाके चंद्रमाकूं आकाशविषैं हेरैं। या भांति रुक्मिणीतें राम कहिये बलभद्र ताका भाई वासुदेव धैर्य बंधाय ताका मुख धुवाया अर पुत्रके ढूंढिवेकूं माधव उपाय करते भये ॥ ७२ ॥ ताही समय नारद

माहात्म्य देखैं ऐसी विचारि यह दोऊ अभिमानी मुनिनपर गए ॥ ७ ॥ सो एक सात्विकनामा मुनि गुरुतैं परै विराजे हुते इन दोऊ विप्र पुत्रनिकूं देखि मनमें विचाऱ्या यह अभिमानी हैं अर क्रोधरूप हैं मत कदाचित गुरुपै जाय विवाद करैं ये दोऊ महिषसमान हैं सो सभाविषैं क्षोभ उपजावेंगे । मुनीनिकी सभा सागर समान है अर श्रीगुरु धर्मका उपदेश करै हैं तातैं इनकूं यहां ही थांभिए यह विचारि अवधि है नेत्र जिनके ऐसे सात्विकनामा साधु द्विजपुत्रनिकूं कहते भए हे विप्रो ! यहां आवहु तब यह सात्विकमुनिपर गए अर उनके निकट बैठे तब इनकूं वादरूप अर गर्वसहित देखि मुनिके निकट अनेक लोग आय भेले भए जैसैं वर्षाविषैं गृहमें पानी आय भरै । मुनिने विप्रनितैं पूछ्या हे विप्रो ! तुम कहांतैं आए तब वे बोले हम गांवतैं आए हैं ॥ १२ ॥ तब मुनि कही यह तो हम जानै हैं शालिग्राम गांवके तुम वासी हो परंतु हमने यह पूछ्या है या संसारविषैं भ्रमण करते तुम कौन गतितैं आए । तब विप्र बोले यह ज्ञान तो काहूकूं नाहीं तब यति कही तुम जहांतैं आए हो सो हम कहै हैं ॥ १४ ॥ तुम पूर्वभवविषैं या ग्रामके निकट श्याल हुते । तुममें पूर्वभवविषैंहू प्रीति हुती ॥ १५ ॥ सो याही गांवमें प्रवरकनामा ब्राह्मण किसान सो सातदिनकी महा वर्षा भई अर प्रबल पवन वाजी अर उलकापात भए वह किसान कंपायमान है शरीर जाका सो एक बडे वृक्ष तलैं गया अर सात दिनकी वर्षाकरि किसानके चर्म उपकरण नाडी चडस इत्यादि भीजि गए सो दोऊ श्याल क्षुधाकी वेदनाकरि भखते भए ताकरि उदरविषैं वायुशूल उपज्या सो सही न जांय ऐसी वेदना पाय श्याल मूवे अकामनिर्जराके योगतैं तुम मनुष्य भए ॥ १९ ॥ सो एक सोमदेवनामा ब्राह्मण ताकी अग्निलानामा स्त्री ताके तुम दोऊ अग्निभूति वायुभूतिनामा पुत्र भए कुलके गर्वकरि गर्वित ॥२०॥ सो यह कुलमद झूठा है पापके उदयतैं दुर्गति अर पुण्यके उदयतैं सुगति जीवनिकूं होय है कुलजातिके गर्वकरि कहा सो गर्व करना वृथा है ॥ २१ ॥ श्यालनिके मरे पीछे वह प्रवरकनामा किसान खेतमें गया सो श्यालनिको मरे देखि उनकी खालकी भाथडी बनाई सो आजहू वाके घरमें वह दोऊ भाथडी हैं अर प्रवरक मरकरि अपने

है परंतु चांदनीकरि युक्त अत्यंत शोभै है तैसैं यद्यपि मोहि परदाराके हरणकरि कलंक तो लागैगा परंतु यह चंद्रमाकरि शोभा ही है ॥ ५८ ॥ चंद्रकांतिके योगकरि पाया है विकाश जानैं ऐसा जो कुमुदिनीका वन सो यद्यपि ताहि तोडिवेकी बाधा है तथापि प्रफुल्लित ताके योगकरि बाधाकूं नाहीं देखै है ऐसा चिंतवनकरि यह रागकरि अंध चंद्राभाके हरिवेविषैं मन धारता भया बुद्धिवान अर मानवान हुता तथापि मंदबुद्धि होय गया तब रागकरि अंध चंद्राभाके हरिवेविषैं मन धारता भया ... तब राजाके मंत्री प्रधान बुद्धिवान हुता तानैं कही या समय राजा भीमकूं वश करना है सो और उपद्रव न उठावना तब राजाके मनमें आगई सो पहले भीमके ऊपर गये ताहि वशकरि अयोध्या आये चंद्राभाविषैं आशक्त है मन जाका सो वसंतकी क्रीडा रची सब राजा स्त्री सहित बुलाये सो याके आज्ञाकारी सभी राजा राजलोकसहित आये अर राजा वीरसेन हू अपनी स्त्रीसहित आये सबनिकूं वस्त्राभरण देय विदा किये सो प्रसन्न होय सबही अपने अपने स्थानक गये अर वीरसेनका सबनितैं अधिक सन्मानकरि वटपुरकूं विदा किया अर चंद्राभा बेई कही जो इन योग्य आभूषण होय हैं सो थोडे ही दिनमें हो चुकेंगे तब राणी इनकूं विदा करेंगी सो वीरसेन तो भोला सो याके मनमें आय गई सो वह तो अपने स्थानक गया अर ताके पीछे मधुने चंद्राभाकूं घरमें राखी अर सब राणीनिके ऊपर शिरोभाग करी अर पटराणीका पद दिया या सहित यथेष्ट क्रीडा करै ॥ ७६ ॥ अर याका पति वीरसेन याके वियोगरूप अग्नि-करि दाहकूं प्राप्त भया संता बैंडा बावला होगया सो पृथिवीविषैं परिभ्रमण करै हाय चंद्राभा ! हाय चंद्राभा ! ऐसे प्रलाप करता गांव गांवकी गलीमें भ्रमै सो भ्रमता भ्रमता अयोध्या आय निकस्या । चंद्राभा अपने महलके झरोखे बैठी हुती सो अपने पतिकूं देखिकरि दयावान होय राजातैं कहती भई । हे नाथ ! मेरे पूर्वले पतिकूं देखो यह प्रलाप करता भ्रमै है सो राजाने कुछ जवाब न दिया ताही समय कोतवाल एक परदारारतकूं पकडकरि पृथिवी पति पर लाये अर कही हे देव ! यह महापापी है बडा अपराध किया है परदाराके सेवनका जो दंड होय सो याकू दीजिये ॥ ८१ ॥ तब राजाने कही परदारासेवनका दंड हाथ पांव अर सिरका छेद करना है सो योग्य जानो

आहारका त्यागकरि समाधिमरण किया सो नंदीश्वरद्वीपका देव भया चांडालकी पर्यायतैं देवपर्याय भई अर वह कुत्ती श्रावकके व्रत पाल समाधिमरणकरि अयोध्याके राजाके घर पुत्री भई सो यौवनप्राप्त भई तब याका स्वयंवर रच्या सो वरमाला हाथमें अर वरकी ओर निरखे हुती ता समय वह नंदीश्वरद्वीपका देव यहां आय निकस्या सो याहि देखि कानमें कही हे अग्निज्वाला ! तूं वे नर्कके दुःख भूल गई अर अब विवाह करै है सो धिक्कार तुझकूं ॥ ५६ ॥ ऐसें देवके वचन सुनि यह राजपुत्री संसारकूं असार जानि सम्यक्तकूं अंगीकारकरि आर्याके व्रत धार एक श्वेत साडी धारी अर सब परिग्रह तजे ॥ ५७ ॥ नवयौवनमें व्रत धारे अर वह दोऊ भाई श्रावकके व्रत पालि समाधिमरणकरि सौधर्म स्वर्गविषैं देव भये अर स्वर्गतैं चयकरि अयोध्याका राजा हेमनाभ ताके धरावतीनामा राणी ताके यह दोऊ मधु कैटभनामा पुत्र भये जब यह बडे भये तब राजा हेमनाभ मधुकूं राज्य अर कैटभकूं युवराज पद देय मुनिव्रत धारते भये ॥ ६० ॥ अर मधु कैटभ दोऊ भाई अति सुखतैं राज करैं इन समान पृथिवीमें अर योधा नाहीं अर अद्भुत है तेज जिनका मो चंद्र सूर्यकी न्याईं उद्योत करते भये ॥ ६१ ॥ तासमय एक भीमकनामा राजा ताके क्षुद्र सामंत अर एक पहाडपर गढ ताहि गहकरि मधुकी आज्ञा न मानै अर याके देशमें बाधा करै सो ताके वश करिवेके अर्थि मधु चाल्या सो मार्गमें एक बटपुरनामा नगर तहां राजा वीरसेन सो राजा मधुका अति भक्त तहां डेरा किया सो वीरसेनने मधुकी अति भक्ति करी अर राजलोकसहित मधुकी पाहुणगति करी अर अति सन्मान किया सो राजा वीरसेनके रानी चंद्राभा सो साक्षात चंद्रकला अर महा रूपवती अर मधुभाषिणी सो वह राजा मधुका मन हरती भई ॥ ६५ ॥ यद्यपि राजा मधुकी बुद्धि शास्त्रविषैं दृढ हुती तथापि चंद्राभाके देखिवेकरि रागरूप होय गई । जैसैं चंद्रकांतिमणिकी शिला दृढ है परंतु चंद्रमाके देखिवेकरि आर्द्र होय जाय ॥ ६६ ॥ राजा मधु मनमें विचारै है यह रूप सौभाग्यकरि युक्त या सहित मैं राज करूं तो वह राज सुखके अर्थि अर या विना मेरे राज विष तुल्य है ॥ ६७ ॥ जैसैं चंद्रमा कलंकी

चित्तमें चिंतवते भए मुनीनिका वडा प्रभाव है हम विनयाचार उलंघ्या हुता सो कीले गए जिनधर्मका इम फल प्रत्यक्ष देख्या अब जो वंधनतैं छूटैं तो जिनधर्मका आराधन करैं यह विचारकरि यह दोऊ खडे अर इनके माता पिताने सुनी जो तिहारे पुत्र मुनिके मारिवेकूं गए हुते सो देवनिने कीला तब यह दोऊ माता पिता आय मुनिके पांव लागे मुनिके प्रसन्न करिवेकूं उद्यमी भए मुनि महा दयावान ध्यानपूर्णकरि तिष्ठे हुते यह सकल कार्य क्षेत्रपालका किया जानि ताहि कही वह महा विनयवान निकट खड्या है ॥ ४१ ॥ सो मुनि कहै हैं हे यक्ष ! इन पुत्रनिका दोष क्षमा करहु कर्मनिकी प्रेरणाकरि जीवनितैं शुभ अशुभ कार्य निपजै है तातैं तुम करुणा करहु यह मुनि आज्ञा करी तब वह कहता भया जो आप आज्ञा करोगे सो ही होयगा यह कह उनकूं अकीले ॥ ४४ ॥ सो यह दोऊ मुनिके मुख यति अर श्रावकका धर्म श्रवणकरि अणुव्रत ले श्रावक भये ॥ ४५ ॥ चिरकाल सम्यक सहित श्रावकके व्रतपाल कालकरि पहिले स्वर्ग देवलोक गये अर इनके माता पिता जिनधर्मकी अश्रद्धाकरि मूवे सो मिथ्यात्वके प्रभावकरि कुगति गये ॥४७॥ अर वे देव देवलोकके सुख भोगि चये सो अयोध्यापुरीविषैं समुद्रदत्तनामा सेठके धारणीनामा सेठानी ताके पूर्णभद्र मणिभद्रनामा दोऊ पुत्र भये नाहीं विरोध्या है सम्यक्त जिनि सो महा जिनधर्मी भए ॥ ४८ ॥ एक दिन महेंद्रसेननामा मुनिके मुख धर्म श्रवणकरि इनका पिता मुनि भया अर नगरका राजा मुनि भया और हू मुनि भये ॥ ५० ॥ अर एक समय यह दोऊ भाई पूर्णभद्र अर मणिभद्र रथ चढे मुनिके दर्शनकूं जाय थे सो मार्गमें एक चांडाल अर कुत्तीकूं देखकरि अति अनुराग उपज्या ॥ ५१ ॥ तब गुरुपै जाय वंदनाकरि भक्तितैं पूछते भए हे प्रभो ! चांडाल अर कुत्तीतैं स्नेहका कारण कहा तब मुनि अवधिज्ञानी त्रैलोक्यकी स्थितिके ज्ञाता कहते भए विप्रके जन्मविषैं तिहारे यह माता पिता हुते सो पापके उदयतैं नरकमें जाय तहांके दुख भोगि यह चांडाल अर कूकरी भए हैं ॥ श्रीगुरुके वचन सुन पूर्णभद्र मणिभद्र उनके पास जाय पूर्वभवकी कथा कहि धर्मोपदेश देते भए सो वे दोऊ ही उपदेश सुनि शांतचित्त भए चांडालकी आयु १ मासमात्र हुती सो श्रावकके व्रतधारि चतुर्विध

पुत्रके पुत्र भया ताहि जातिस्मरण उपज्या सो जानता ही गूंगा होय रह्या है अर अपने भाईनिमें बैठ्या है अर मेरी ओर निरखै है ऐसा कहिकरि गूंगेकूं मुनिने बुलाया अर कह्या तू प्रवरकनामा ब्राह्मण है सो पुत्रका पुत्र भया है अब शोककूं तजि अर गूंगापनाहू तजि अमृतरूप वचन बोलि या संसारविषैं यह जीव नटकी न्याईं नृत्य करै है सो स्वामीतैं सेवक होय अर सेवकतैं स्वामी होय पितातैं पुत्र होय अर पुत्रतैं पिता होय, मातातैं स्त्री होय अर स्त्रीतैं माता होय। संसारका स्वरूप ही विपर्यय है जैसे अरहटविषै ऊपरकी घटी तलैं अर तलेकी ऊपर या भांति होय हैं तैसैं या संसारविषैं उपरांतली होय है यह जीव अनादिकालतैं भ्रमण करै है ॥ २७ ॥ यह संसारका चरित्र असार अर महा भयंकर जानि हे पुत्र! तू सारवस्तुका संग्रह करि दया है मूल जिनका ऐसे पंचमहाव्रत धारि सोई सार हैं याभांति प्रवरकनामा किसान ब्राह्मणकूं मुनिनें प्रतिबोध्या तब वह प्रदक्षिणा देयकरि मुनिके पांव पड्या ॥२९॥ आनंदके अश्रुपातकरि भर गए हैं नेत्र जाके बहुरि उठि गदगद वाणी बोलता हाथ जोड मुनिकूं नमस्कारकरि विप्र कहता भया हे ईश्वर! तुम सर्वज्ञ तुल्य हो वस्तुका स्वरूप प्रत्यक्ष देखो हो त्रैलक्यकी रचना तुमसूं छिपी नाहीं ॥ ३१ ॥ हे श्रीगुरु मेरा मनरूप नेत्र अज्ञानरूप पटलकरि आच्छादित हुता सो तुम ज्ञानरूप अंजनकी सींककरि पटल दूर किया यह अनादि भववनविषैं मोहरूप अंधकार विस्तर रह्या है अर मैं भववनविषैं अनादिका भ्रमण करूं हूं सो तुम मुक्तिका मार्ग दिखाया ॥ ३२ ॥ हे भगवन्! तुम प्रसन्न होय मोहि दिगंबरी दीक्षा देवहु यह विनतीकरि प्रवरक किसानब्राह्मण मुनि भया ॥ ३४ ॥ यह विप्रका चरित्र सुनिकरि देखकरि कई मुनि भए अर कई श्रावक भए ॥ ३५ ॥ अर यह दोऊ भाई अग्निभूति वायुभूति विलखे होय घर गए इनके माता पिताने इनकूं बहुत निंदे ॥ ३६ ॥ रात्रिविषैं यह पापी मुनिकूं मारिवे गए वे सात्विकमुनि एकांतविषैं कायोत्सर्ग धरि ठाढे हुते सो इन दोऊने खडग चलाई सो बनका अधिष्ठाता यक्ष देवताने इनकूं कीले ॥ ३७ ॥ प्रभात भए लोक इनकी निंदा करी अर यह दोऊ भाई हू अपने दुराचारकी मनमें निंदा करते भए ॥ ३८ ॥ यह दोऊ

विषैं पक्षीनिकूं खवाय दूं ॥ ४४ ॥ अथवा मगरमच्छनिके समूहकरि भर्‍या जो समुद्र ताविषैं डाल दूं ॥ ४५ ॥ अथवा यह तत्कालका जाया मांसका पिंड है याके मारवेकरि कहा विना रक्षा आपही मर जायगा ऐसा बिचारि करि असुर आकाशतैं उतर्‍या मानूं बालकके पुण्यने उतार्‍या पृथिवीविषैं आय एक खंदरा अटवी देखी तहां वडी भारी शिलाके तले बालककूं दाबिकरि वह धूमकेतुनामा असुर अदृश्य होयगया ॥ ४८ ॥ ताही समय एक मेघकूटनामा नगर ताका अधिपति कालसंवरनामा विद्याधर अपनी कनकमालानामा राणी सहित विमानमें बैठा जाय था सो बालकके पुण्यकरि ताका विमान अटक्या तब वाने विचारी यह कहा कारण है ॥ ५० ॥ तत्काल पृथिवीविषैं उतर्‍या अर बालकके स्वासतैं शिला हालती देखी तब विद्याके बलकरि शिलाकूं उठाय अर बालक देख्या अर अखंडित है अंग जाका अर स्वर्ण समान है प्रभा जाकी साक्षात् कामदेव ॥ ५२ ॥ ताकूं वह विद्याधर दयावान लेयकरि अपनी रानी कनकमाला ताहि देवेकूं उद्यमी भया अर कही तेरे पुत्र नाहीं सो यह तू ले तब वाने पहिले तो हाथ पसारे बहुरि संकोच लिये मानूं नाहीं इच्छे है विद्याधरी दीर्घदर्शिनी जाके विचार गंभीर ॥ ५४ ॥ तब राजा कही हे प्रिये ! ऐसा सुंदर बालक तू क्यों न ग्रहै है। तब वाने कही आगे तिहारे पांचसौ पुत्र हैं अर जिनके नानेरेके बडे २ राजा हैं अर यह बालक पछ्या पाया जाका कुल कोऊ जानैं नाहीं सो उन आगे याकी गिनती कहा यह मार्‍या मार्‍या फिरै अर हर कोऊ याके सिरमें दे तब मोपै देख्या न जाय तातैं मैं अपुत्रवंती ही रहूंगी या क्लेशतैं अपुत्रपना ही भला है ॥ ५६ ॥ या भांति कनकमाला कही तब राजा कालसंवरने वाहि धैर्य बंधाया अर वाके कानमेंतैं कर्णपत्र लेयकरि बालकके पट्ट बांध्या अर कही मो जीवते यह युवराज अर मेरे पीछे यह राजा ॥ ५७ ॥ तब कनकमाला बालककूं उरतैं लगाय लिया यह कनकमाला राजविद्याविषैं प्रवीण है यह राजा राणी दोऊ पुत्रसहित मेघकूटनगर गये ॥ ५८ ॥ बालक हू एकदिनहीका हुता अर तासमय रात्रिविषैं यह बालक पाया तासमय राजा रानी ही हुते अर कोई न हुता सो नगरमें जायकरि राजा कही

भई प्रभात पतिसूं स्वप्नके फल पूछे तब पतिने कही तेरे पुत्र महापुरुष आकाशगामी होयगा ॥ ३० ॥ यह पतिके बचन सुनि प्रिया हर्षकूं प्राप्त भई जैसैं दिवसके आदिविषैं कमलिनी सूर्यके तेजकरि स्पर्शी हुई प्रफुल्लित होय, तैसी प्रफुल्लित भई ॥ ३१ ॥

अथानंतर—सोलहवें स्वर्गका अच्युतेंद्र उपेंद्र कहिये कृष्ण तिनकूं आनंद बढावता संता रुक्मिणीके गर्भमें आया ॥ ३२ ॥ अर वाही दिन सत्यभामाकूं शुभ स्वप्न आये अर गर्भ रह्या ॥ ३३ ॥ इन दोऊनिके गर्भ बढे सो माता पिताकूं परम सुख होय ॥ ३४ ॥ जब नव महीने पूर्ण भये तब रुक्मिणीके पुत्र भया सर्व लक्षणकरि पूर्ण अर वाही समय सत्यभामाके पुत्र भया ॥ ३५ ॥ सो दोऊनिके बधाईवाले रात्रिसमय एक साथ हरिपर आये हरि पौढे हुते सो सत्यभामाके बधाई वारे गर्वकरि सिराहनेकी ओर खडे रहे अर जे रुक्मिणीके बधाई वारे हुते तिनने जानी जो हम पांयन तरफ ठाडे रहेंगे तो पहले दृष्टि हम पर आवेगी। इतनेहीमें हरि जागे सो पहले रुक्मिणी वालेनिकी तरफ दृष्टि पडी अर उनही बधाई दीनी अर पीछे सत्यभामाके बधाई देते भये सो प्रथम पुत्र रुक्मिणीका ठहरया अर वह दूजा ठहरया हरि हर्षित होय दोऊकूं अंगके आभूषण दिये बडा हर्ष भया ॥ ३८ ॥ अर वाही वेला एक धूमकेतुनामा असुर महा बलवान धूमकेतु कहिये अग्नि समान प्रज्वलित सो ताका विमान रुक्मिणीके मंदिरपर अटक्या सो कुअवधिकरि तानैं रुक्मिणीका पुत्र अपना शत्रु जाण्या सो क्रोधकरि अरुण भये हैं नेत्र जाके विमानतैं नीचा आय प्रछन्नरूप रुक्मिणीके प्रसूतिगृहमें प्रवेश किया, बालकके दर्शनरूप ईंधनकरि प्रज्वलित भई है पूर्व वैररूप अग्नि जाके ॥४१॥ यद्यपि रुक्मिणीके महलकी महा रक्षा है अर काहूका संचार नाहीं तथापि यह आसुरी मायाकरि रुक्मिणीकूं महा निद्रा अनाय बालककूं अपनी बाहुकरि उठाया। बालक पुण्यके भारकरि पर्वत समान है परंतु असुर मलिन बुद्धि लेयकरि आकाशमें चाल्या ॥ ४३ ॥ सो ऊपर लेजाय विचार कीया यह मेरा शत्रु स्त्रीका हरणहारा है याहि हाथनिकरि मसल डारूं या नखनकरि विदारि आकाश-

ईर्षारूप शल्यकरि पीडित है चित्त जाका सत्यभामा जानै यह वनदेवी है ता समय हरि आयकरि सत्यभामासूं हंसते भये जो तुमकूं तिहारी वहनका अपूर्व दर्शन भया परन्तु भलीभांति भया सुनकरि सत्यभामा यह रहस्य जानि कृष्णतैं कोपकरि कहती भई हम तो आपसमें मिल ही रही हैं तुम कहा मिलावोगे तब रुक्मिणी कृष्णके बचन सुनिकरि सत्यभामाकूं जानकरि विनयपूर्वक नमस्कार करती भई जे वडे कुलके उपजे हैं तिनमें विनय लक्षण सहज ही होय है ॥१७॥ वृक्ष अर लतानिके मंडपकरि मंडित वह वन ताविषैं दोऊ राणीनिसहित चिरकाल विहार करि कृष्ण अपने महल पधारे ॥ १८ ॥ वे कृष्ण महाशूरवीर सुखके सागरमें मग्न तिनके एक दिनकी न्याई वहुत दिन व्यतीत भये ॥ १९ ॥ एकदिन हस्तिनापुरका अधिपति राजा दुर्योधन तानें स्नेहपूर्वक हरिके निकट दूत भेज्या अर पत्रमें यह समाचार लिखे कि तुम्हारी रुक्मिणी अर सत्यभामा दोनों रानीके गर्भ है सो जाके पहिले पुत्र होवेगा सो मेरी पुत्रीका वर यह दूतके वचन सुनि हरिने ताका वहुत सम्मान कर विदा किया सो जायकरि अपने पतिके कार्यकी सिद्धि करता भया ॥ २२ ॥ अर यह वार्ता सत्यभामा सुनकरि रुक्मिणीके निकट अपनी दासी पठवाई सो नमस्कारकरि कहती भई ॥ २३ ॥ हे देवी ! हमारी स्वामिनीने हमारे मुख कितनेक समाचार कहाये हैं सो तुम कणफूलनिकी न्याई कानिनिमें धारहु तुम महा बुद्धिमान हो ॥ २४ ॥ सत्यभामा यह कही है जो हम तुम दोऊमें जाके पुत्र होय सो दुर्योधनकी पुत्री परणैगा सो तिहारे जो पहले पुत्र होय तो वह वरैगा। अर जो मेरे होय तो वह वरैगा सो तिहारे पुत्र परणैं तो मेरे शिरके केश मुंडाय तिनपर पांव धरि परणिवे जाय अर मेरा परणैं तो तिहारे केशनिपर पांव धरि परणिवेकूं जाय यह अपने वचन हैं। हे यशकी धरणहारी सौभाग्यवती ! यह वचन हमारी स्वामिनी कहे सो हम तुमतैं कहे सो अब तुम कहो सो उनतैं कहैं तब रुक्मिणी प्रमाण करी वह पीछे जाय सत्यभामातैं कहती भई ॥२८॥ एकदिन रुक्मिणी रात्रिविषैं सेजपर शयन करती हुती सो स्वप्नविषैं हंस विमान पर चढी आपकूं अंबर विषैं विहार करती देखी ॥ २९ ॥ तब जागी अति प्रसन्न

सामग्री दी। सब राणीनिके शिरोभाग करी सो रुक्मिणी पतिकी प्रीतिकरि अर मान्यकरि अति संतुष्ट भई अबतक सत्यभामाका अर रुक्मिणीका मिलाप न भया है रुक्मिणी अति चतुर सो मनमें जाने सत्यभामा ही हरिके मन भावती है अर महासुंदर है सो काहूभांति मो पर अधिक कृपा रहै तो भली। सो सत्यभामातैं ईर्षा राखै रतिक्रीडाविषैं पतिकूं अति रमावती भई कृष्णके रुक्मिणीतैं अति राग सो एकदिन रुक्मिणीके मुखके तांबूलका उगाल पीतांबरके पल्ले वांध छिपाय अर सत्यभामाके घर गये वाकी सेजपर जागते ही सोय गये अर वह पीतांवरके पल्ले बंधा हुआ उगाल सो सहज ही सुगंध अर रुक्मिणीके मुखकी सुगंध तातैं अति सुगंध तापर भंवरनिके समूह गुंजार करते हुते सो सत्यभामा जानी यह कोई अद्भुत सुगंधित वस्तु है सो पीतांबरके पल्लेतैं खोलि वह महासुगंध सुंदर ताहि पीसकरि अंगके लगावती भई। तब माधव मुलके अर वह ईर्षाकरि कोप करती भई अर कही रुक्मिणी तो मेरी वहिन है तुम क्यों हसो हो ॥ ६ ॥ हरिकी चेष्टाकरि सत्यभामा सौतका सौभाग्य अति जानिकरि ताके रूप लावण्य देखिवेकूं अभिलाषिनी भई अर पतिकूं कहती भई हे नाथ! मोहि रुक्मिणी दिखाओ मेरे कान तो ताके गुण श्रवणकरि हर्षित भये अब नेत्रहू हर्षित करहु ॥ ८ ॥ तब कृष्ण कही भली वात तुमकूं मिलावेंगे यह कहकरि आप मणिवापिकाके तट सत्यभामाकूं ले गये अर कही तुम यहां तिष्ठो मैं रुक्मिणीको लाऊं हूं सो आप आयके रुक्मिणीकूं ले गये अर कही हे प्रिये! तुम वनविषै प्रवेश करहु। मैं भी आऊं हूं सो आप तो वृक्षनिके आसरे होय रहे अर रुक्मिणी वनके मध्य होय गई सो सत्यभामा रुक्मिणीकूं दूरतैं देखि जानी यह कोई वनदेवी है अद्भुत आभूषण पहिरे आम्रके वृक्षकी डाली हाथतैं पकडे खडी, ढीले होय रहे हैं चोटीके केश जाके तिनकूं वायें करते संवारती स्तनके भारकरि नम्रीभूत है अंग जाका जैसे अद्भुत लता फलके भारकरि नम्रीभूत होय है तैसी शोभै है ॥ १२ ॥ ऐसी रुक्मिणीकूं देखिकरि सत्यभामा जानी यह कोऊ वनदेवी है। तब पुष्पांजलि चढाय रुक्मिणीके पांयनिपर पडी अपना सौभाग्य अर सौतका दुर्भाग्य यांचती भई

अर मुरारि कहिए कृष्ण सो हू रुक्मणीका शरीर सोई भई बेल अर वाका मुख सोई सुगंध फूल ताका भंवर भया निशविषैं रमता भया सो अति क्रीडाकरि कोमल सेजविषैं दोऊ लगकरि सूते सो परस्पर भुजानिके स्पर्शतैं सुखनिद्रा आयगई। अर प्रभातका समय आया कूकडे बोलने लगे मानूं वे कुर्कट रात्रिका अंतही निवेदन करैं हैं पहले तो वह कुर्कुट ऊंचे स्वर बोलै हैं बहुरि नीचे स्वर बोलैं सो मानूं सुख सेज सूनी जे यादवनिकी रानी तिनके भयकरि धीरे बोलै हैं जो मत कदाचित हमारे उच्चशब्दकरि यह रानी दुःख पावै। रात्रि थोडी सी ही रहै तब कूकडे बोलै हैं सो कूकडानिका बोलना कामिनीनिकूं रुचै नाहीं प्रभातसमय प्रथमसंध्याकी न्याई रुक्मिणी कृष्णके पहिले जागी। यह पतिव्रतानिका धर्म है पतिके शयन किएपीछे आप शयन करै अर पतिके जागनेतैं पहिले वह जागै। अर पतिकूं भोजन कराए पीछे आप भोजन करै सो रुक्मिणी कृष्णतैं पहिले जागकरि सेजतैं उतर बैठी अर पतिके पांव दावै सो कृष्ण प्रियाके हाथका स्पर्श जानिकरि जागै देखैं तो साक्षात लक्ष्मी पांव पलोटै है अर रतिक्रीडाकरि दैदीप्यमान है मुखकमल जाका अर लज्जाकरि नीची होय रही है ॥ ८ ॥ सो कृष्ण नवीन कामिनीकूं देखकरि अति अनुरागरूप भए ऐसी सुंदर स्त्री काहूके नाहीं बहुरि प्रभातके वादित्र बाजे संगीतकी ऐसी ध्वनि भई जैसी मेहकी ध्वनि होय द्वारकामें घर घर लोग जागे सब प्रजा अपनेअपने कार्यविषैं प्रवर्तीं अर सूर्यका उदय भया, जो तिमिर निशाकरतैं न गया हुता सो सूर्यके उदयतैं गया अर पदार्थ प्रगट भासने लगे सूर्य दुर्निवार तिमिरके हरिवेकूं समर्थ है अर जगतका नेत्र है निर्मल है सो प्रगट भया जैसैं जिनवचन मिथ्यातरूप तिमिरकूं हरिकरि विधिमार्गविषैं प्रवर्तें तैसैं रवि रात्रिकूं हरकरि आकाशविषैं चल्या ॥ ११० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ रुक्मणीहरणवर्णनोनाम द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥

अथानंतर—कृष्णने सत्यभामा घरविषैं शिरोभाग रुक्मिणीकूं महल दिया सो महल सकल संपदाकरि भरया रुक्मिणीकूं कृष्णने पटराणीका पद दिया प्रधान अर द्वारपाल अर सेवक हाथी, घोडे, रथ, पालकी आदि सब

राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! जब वासुदेवने शिशुपाल मारचा अर अनेक रथनिके समूह चूर्ण करि डारे तब मानूं सूर्यहू अपनी किरण संकोचकरि अस्ताचलके आश्रय आय गया सूर्यने मनमें विचारी यह माधव तेजस्वीनिका तेज नाहीं देख सकै है। मति कदाचित मोहि तेजवान जानिकरि पकड ले ऐसी शंकाकरि दिवाकर अस्त भया ॥ १०० ॥ जब सूर्यका उदय भया हुता तब याके अनुरागकरि संध्या आरक्त भई हुती अर जब सूर्य अस्त भया तब भी संध्या आरक्त होती भई सो मानूं आद्योपांत अपना अनुराग यानैं दिखाया।

भावार्थ—जैसा उदयविषैं तैसा ही अस्तविषैं अनुराग ऐसा ही चाहिये ॥ १०१ ॥ जब सूर्य अस्त भया अर संध्याहू याके पीछे चलीगई तब समस्तजगत तिमिरके पटलकरि आच्छादित भया सो तिमिरपटलकरि कज्जलसमान श्याम है अर मोहकूं उपजावै है अर कामकूं वढावै है ऐसी जो रात्रि संबंधी पवनकरि तिमिरकी पताका फरांवै है जैसैं राजाका वियोग भए दुष्ट जन चौगिरद दौडैं तैसैं दिनकरके अस्त होते तिमिर सर्वत्र विस्तरचा ॥२॥ बहुरि केतीक रात्रि गए चंद्रमाका उदय भया सो चंद्रमा अपनी किरणनिकरि निशा संबधी अंधकारकूं हरता संता पृथिवीविषैं प्रकाश करता भया जैसैं तृषातुर अंजुलिकरि जल पीवै तैसैं मनुष्यनिके लोचन तेई भई अंजुलि तिनकरि पीया संता निशाकर जननीके मनका आताप मेटता भया अर मदनकी बुद्धि करता भया वह चंद्रमा जे सुखी जन कहिए संयोगी जन हैं तिनिका तो सखा कहिये मित्र है तिनकूं तो प्रमोद उपजावै है। अर जे विरही हैं तिनकूं आताप उपजावै है चंद्रमाकी किरणकूं स्पर्शतीथकी कमोदिनी विकाशकूं प्राप्तभई जैसैं प्रिया प्रीतमके समीप विकाशकूं प्राप्त होय। अर चंद्रमाके उदयतैं कमलिनी मुद्रित भई अर चकवा चकवी वियोगकरि दुखी भए जे हर्षके कारण हैं तेहू दुखीनिकूं सुख न उपजाय सकै ॥ ४ ॥ जब रात्रिका समय आया तब मानी नायकानिके मान मिटे वह रात्रिका समय स्त्री पुरुषनिकूं हर्षका उपजावनहारा है तासमय फटिकमणीनिके महल अर हीरा मोतीनिके महल चांदनीनिकरि अति शोभित तिनविषैं मनोहर स्त्रीनिकरि संयुक्त यादवनृप सुखतैं रमते भए

कैसैं विजय होय यह मेरे मनमें संदेह है सो मैं ही मंदभागिनी हूं अर तुम तो वीराधिवीर हो सो तिहारे युद्धकी चिंता कहा यह वचन रुक्मिणीने कहे तब कृष्णने कही हे कोमलचित्तकी धरणहारी! तुम भय मत करहु यह बहुत भए तो क्या मैं पराक्रमी एकही घना मेरे होते यह क्या करि सकैं ॥८७॥ तब रुक्मिणीने कही अतिमुक्तिक नामा मुनिने यह कही हुती जो एकवाणकरि सात तालके वृक्ष छेदै सो वासुदेव है यामें संदेह नाहीं। ये वचन रुक्मिणीके सुनकरि कृष्णने एक वाणकरि तालवृक्षनिकी पंक्ति छेदी यह वासुदेव सामान्यास्त्र अर दिव्यास्त्रनिके वेत्ता इनकी शस्त्रविद्याका कहा कहना अर रुक्मिणीकी अंगुलीविषैं वज्रमणिकी मुद्रिका हुती सो माधवने अपने हाथकरि चूर्णकरी तब रुक्मिणीका यह संदेह तो गया जो या युद्धविषैं दोऊ भाई तो मारे न जांय तब हाथ जोड बहुत विनती करी हे नाथ! मेरे भाईकी रक्षा करो युद्धविषैं यह न मारा जाय ॥९२॥ तब हरिने कही तेरे भाईकूं न मारें कृष्ण अर रुक्मिणी तो रथमें विराजे हैं अर बलभद्र सारथी हैं सो बलभद्रने शत्रूनिकी ओर रथ चलाया दोऊभाई क्रोधकरि वैरीनिपर वाणनिकी वृष्टि करते भए सो शिशुपालका सब कटक भाग्या अर वह दोऊ रुक्मी अर शिशुपाल खडे सो शिशुपालकूं तो हरिने कहा जो तू हमतैं युद्ध करि यह शिशुपाल राजा मदघोषका पुत्र है अर महा उन्मत्त है परंतु कृष्णतैं कहा करि सकै कृष्ण तो हरि कहिए साक्षात् सिंह ही है अर वह गज है अर बलभद्रने रुक्मीतैं कही तू हमतैं लडि सो उन दोऊनितैं यह युद्ध करते भए सो शीघ्र ही शिशुपालका सिर कृष्णने वाणकरि वेध्या सो भूमिमैं पड्या ताके सावंतपनेका अति मद हुता अर पृथिवीविषैं अतिशय हुता सो यश सहित वाकूं मार्‍या अर बलदेव रुक्मीकूं घायल किया अर रथ चूर्ण किया रुक्मिणीका भाई जानि कृष्णने जीवदान दिया अर दोऊ भाई विजयकरि रुक्मिणीकूं लेय गिरनार गए तहां कृष्णतैं रुक्मिणीका विवाह भया। कुंदनपुरके राजाकी पुत्री परणकरि हलधरसहित हरि द्वारावती आया ॥ ९८ ॥ बलभद्र तो रेवतीके मंदिर गए रेवतीतैं अधिक है प्रीति जिनकी अर कृष्ण नव वधू जो रुक्मिणी तासहित परम प्रेमतैं रमते भए ॥ ९९ ॥ गौतमगणधर

विर्षे तिष्टै है जो तेरा हमतैं सच्चा स्नेह है तो हमारे रथमें आय बैठ अर हमारे मनोरथ पूर्ण कर ॥ ७० ॥ यह
वचन माधवने कहे तब भूवा रुक्मिणीतैं कहती भई हे कल्याणरूपणी ! जो अतिमुक्तिक स्वामीने कहा हुता
सो तेरा वर तेरे पुण्यके उदयतैं यहां आया अर पुत्रीके देनहारे शास्त्र में मातापिता कहे हैं सो माता पिता हू
विध कहिये कर्म ताके अनुसार दे हैं। सो पूर्वोपार्जित कर्मही गुरु है ॥ ७३ ॥ ये वचन भूवा कहे अर रुक्मिणी
कृष्णविषैं अति अनुरागिणी परंतु लज्जाकरि युक्त सो रथ पर कैसे चढै । तब माधव अपने दोऊ हाथनिकरि याहि
उठाय अर रथमें धरी स्नेहकरि लग गए हैं नेत्र जाके ॥ ७४ ॥ यह दोऊ मदनकरि आतुर सो इन दोऊका पर-
स्पर अंगस्पर्श तो होय गया सो दोऊकूं अतिसुख उपज्या ॥ ७५ ॥ कृष्णहू अद्भुतरूप अर रुक्मणीहू अद्भुत
रूप अर दोऊके सुगंध शरीर मुखके सुगंध स्वास सो परस्पर दोऊके सुगंधमें भर गए प्रियाका रूप तो प्रीतमके
मनकूं वशीकर होता भया अर प्रीतमकारूप प्रियाके मनका वशीकरण होता भया पूर्वोपार्जित कर्मने रुक्मणीकूं
शिशुपालतैं विमुख करी अर कृष्णकूं सन्मुख करी विधिने इनका संयोग किया ॥ ७७ ॥ कृष्णने रुक्मिणी रथमें
चढाय मनमें विचारी ऐसा तो मैं निर्बल नाहीं जो चोरकी न्याईं छानैं ले जाऊं। तब पंचायननामा शंख मोहनने
वजाया तब ताका शब्द दशोंदिशानिमें भया सो शब्द सुनि शत्रुकी सेना क्षोभकूं प्राप्त भई रुक्मी अर शिशुपाल
यह वृत्तांत जानकरि युद्धकूं चढे तिनके साथ साठहजार रथ अर दस हजार हाथी अर तीसलाख घोडे सो
पवनतैंहू शीघ्रगामी ॥ ८१ ॥ अर वहुत लक्ष्य पयादे जिनके हाथनिमें खड्ग चक्र धनुष इतनी सेनासहित
रुक्मी अर शिशुपाल दशोंदिशाकूं ग्रसते हरि हलधरके निकट आए ॥ ८२ ॥ तब माधव रुक्मिणीकूं शत्रुओंकी
सेना दिखावते भए रुक्मिणी हरिके वांये अंग बैठी है सो रुक्मिणी मृगनेनी वैरीका प्रवल वल देखि उपजी
है पतिरमणकी शंका जाके सो पतितैं कहती भई ॥ ८४ ॥ हे नाथ ! यह मेरा भाई रुक्मी कोपित भया अर
यह शिशुपाल सो इनके अपार सेना है अर आप दोऊ भाई ॥ ८५ ॥ सो तिहारी दोऊ भाईनिकी सेनातैं रणविर्षे

वैरानुभावतैं बालककूं मातातैं जुदा करता भया धिक्कार या वैरकूं यह वैर पापका बढावनहारा है ॥ २२ ॥ अर प्रद्युम्न पूर्वभवके पुन्यतैं बचा सो कष्टविषै रक्षा करै यह सामर्थ्य पुण्यहीकी है ॥ २३ ॥ सीमंधर जिनेंद्रने यह कथा कही सो पद्मरथ चक्रवर्ती सुनिकरि प्रमोदरूप भया प्रणाम करता भया ॥ २४ ॥ अर नारद हू यह कथा सुनि जिनेश्वरकूं प्रणामकरि हर्षित होय चाल्या सो आकाशके मार्ग होय तत्काल मेघकूटनामा नगर गया ॥ २५ ॥ कालसंवरने नारदका बहुत विनय किया अर नारदहू पुत्रलाभके उत्सवकरि वाहि आनंद उपजायकरि कनकमाला रानीके मंदिर गया वानैं बहुत विनयकी वह पुत्रवती सो बारंबार वाकी प्रशंसा करै पुत्रकूं नारदने देख्या जाकी सैकडों कुमार सेवा करै हैं सो प्रद्युम्नकुमारकूं देखकरि प्रमोदके योगतैं नारदके रोमांच होय आए परंतु काहूकूं भेद न जताया ॥ २७ ॥ राजा राणी कुंवर सबने प्रणाम किया सो इन आशीष देय करि आकाशके मार्ग विमानमें बैठे शीघ्र ही द्वारिका आए प्रद्युम्नकी कथा पूर्व भव संबंधी जिनेन्द्रके मुख सुनी हुती सो यादवनिने कही अर आप मेघकूटनामा नगरविषैं प्रत्यक्ष प्रद्युम्नकूं देखि आए सो सब वार्ता यादवनितैं कहि करि सबकूं हर्ष उपजाया ॥ २९ ॥ बहुरि नारद प्रफुल्लित है मुख कमल जिनका सो रुक्मिणीकूं देख करि सीमंधर जिनेश्वरकी भाषी सकल कथा कहकरि बहुरि कहते भए। हे रुक्मिणी ! तेरा पुत्र मेघकूटपुरविषैं कालसंवर राजाके घरमें अनेक राजकुमारनि सहित क्रीडा करता देख्या सो मानूं साक्षात् देवकुमार ही है ऐसा रूपवान और नाहीं ॥ ३१ ॥ सो तेरा पुत्र सोलहवें वर्ष सोलहलाभ संयुक्त प्रज्ञप्ती विद्याकूं धरिकरि आनंदरूप आवैगा जो दिन वह आवैगा ता दिन तेरे मंदिरके उपवनविषैं विना समय मयूर ध्वनि करेंगे ॥ ३३ ॥ अर तेरे उपवनविषैं एक मणिवापिका सूखी है सो पुत्रका आगमन होयगा ताही समय वह वापिका जलतैं पूर्ण होयगी अर कमल फूल जांयगे ॥ ३४ ॥ अर तेरा शोक दूर करिवेके अर्थि बिना ही समय अशोकवृक्ष प्रफुल्लित होयगा अर मूक कहिये गूंगा ते वचनालाप करने लगेंगे अर कुब्ज कहिये कुबडे ते कुब्जपनतैं रहित होंयगे ये कारण

तिष्ठे धैर्यरूप वख्तरकूं पहिरे बाण नदीधारा समान जो मेहकी धारा ताहि धैर्यसूं सहते भए ॥ ९ ॥ अर शीतकालकी रात्रिविषैं वे दोऊ बुद्धिमान नदी सरोवरनिके तीर तिष्ठे हैं देहकी कांतिरूप कमलकूं क्लेशकी उपजावनहारी जो हिमऋतुका शीत पवन ताहि दोऊ मुनि कायोत्सर्ग धरि सहते भए ॥ १० ॥ अर इनके निरंतर वाहर भावनाका चिंतवन वे बारह भावना चारित्र धर्मकी शुद्धता करणहारी तिनकरि इनका हृदय पवित्र होता भया अर बाईसपरीषहकूं जीतिकरि योगीश्वर संवरकूं करते भए ॥११॥ वे दोऊ ध्यान अर अध्ययनविषैं सावधान वैयावृतकी क्रियाविषैं उद्यमी रत्नत्रयकी शुद्धताकरि और मुनीनिकूं दृष्टांतरूप होते भये जो कोऊ मुनिव्रत धारो तो ऐसे तप करो ॥ १२ ॥ यह मधुकैटभ तपोधन महा मुनीश्वर हजारोंवर्ष तपकरि ॥ १३ ॥ अंतसमय सम्मेदशिखर आयकरि प्रायोपगमननामा सन्यास धारण किया । कैसे हैं दोऊ यतीश्वर माया मिथ्या निदान यह तीन शल्य तिनतैं वार्जित हैं एक महीनेका सन्यास धरिकरि शरीर तजि सोलहवें स्वर्ग मधु तो इंद्र भया अर कैटभ सामानिक जातिका देव भया हजारों देव देवनिका नायक भया ॥ १५ ॥ बाईस सागर दोऊनिकी आयु भयी दोऊ सम्यक्दृष्टि स्वर्गविषैं सुख भोगते भए ॥ १६ ॥ तिनमें मधुका जीव पहलें चया सो रुक्मिणीकी कुक्षिरूप रत्नकी खानविषैं भरतक्षेत्रका कृष्णनामा नवमा नारायण ताके प्रद्युम्ननामा पुत्र होयगा अर दूसरा भाई कैटभ सोहू देवलोकतैं चयकरि याहीका भाई दूसरी जांबुवतीनामा माता ताके गर्भविषैं पुत्र होयगा अर याका नाम शंबुकुमार होयगा सो रूपकरि पराक्रमकरि कृष्ण समान होयगा ॥१८॥ ये दोऊ भाई जन्मांतरकी प्रीतिकरि परस्पर हितविषैं उद्यमी महाधीर चरमशरीरी प्रद्युम्न अर शंबुकुमार महासुंदर याही भवतैं सिद्धलोक सिधारेंगे अर वह राजा वीरसेन वटपुरका स्वामी चंद्राभाका धनी स्त्रीके विरहके संतापतैं आर्तध्यानविषैं गमन होय मूवा सो संसारवनविषै चिरकाल भ्रमणकरि मनुष्य भया अर अज्ञान तपकरि धूम्रकेतु कहिए अग्निके समान प्रज्वलित सो धूम्रकेतु नामा असुर भया ॥ २१ ॥ सो पूर्वभवकी स्त्रीका हरण विभंगा अवधितैं जानिकरि

करि वश न करै तौलग चढनेवालेनिकूं भयही है कुशल नाहीं ॥ ९५ ॥ जो यह मनरूप दंती साधुरूप महाव्रतके योगकरि वश होय तो तपरूप रणभूमिविषैं पापरूप सेनाकूं हणै यह पंचेंद्रीरूप मृगनिके समूह परस्पर सुगंधरूप शब्दके अभिलाषी मनरूप पवनके प्रेरे विषयरूप बनमें चरै हैं तिनकूं धैर्यरूप पाशमें बांधि-करि चिरकालके उपार्जे पाप तिनका मैं क्षय करूं हूं ॥ ९८ ॥ ऐसे कहिकरि राजा मधुने मनका बेग रोक्या अर ज्ञानरूप जलकरि बुद्धि निर्मल करी भवतापकी शांतिके अर्थि मुनिव्रत धरिवेका उद्यमी भया ॥ ९९ ॥ ताही समय एक विमलवाहननामा मुनि अयोध्याके सहस्राम्रनामा बनविषैं सहस्र मुनि सहित आए। सो मुनिका आगमन सुनिकरि राजा मधु कैटभ दोऊभाई परिजन कहिए परिवारके लोक अर पुरजन कहिए नगरके लोग अर बंधुजन कहिए राजलोक तिन सहित साधुके समीप गया अर विधिपूर्वक मुनिकी पूजाकरि धर्म श्रवण किया संसार शरीर अर इनसूं उपज्या है वैराग्य जाके सो राजा मधु कैटभ सहित मुनि भया ॥ २ ॥ अर औरहू बडे बडे वंशके उपजे हजारों राजा मधुके लार तप धारते भए अर चंद्राभा आदि अनेक राणी आर्यिका भई ॥ ३ ॥ अर राजा मधुका माधवनामा पुत्र राज्य करै सो कुलकी वृद्धिका करनेवाला दिन दिन बढता जो पुरुषार्थ अर विजय तिनकरि युक्त बहुत दिन राज्य करता भया अर दोऊ भाई मधु कैटभ पंचमहाव्रत अर पंच समिति तीन गुप्तिकरि मंडित सकल परिग्रह रहित निस्पृह निर्ग्रंथनके गुरु महातप करते बाहरके अर भीतरके सब परिग्रह तजे एक शरीर मात्रही है परिग्रह जिनके काहूतैं ममत्व नाहीं षष्ट कहिए बेला अष्टम कहिए तेला पक्ष कहिए पंद्रह उपवास मासोपवास अर षट्मास पर्यंत यह धीर उपवासही करते भए जेते सिद्धांतविषैं तपके विधान कहे हैं अर उपवासनकी विधि कही है सो कर्म निर्जराके अर्थि सब करे ॥ ७ ॥ अर ग्रीषमऋतुविषैं ऊंचे गिरिके शिखर अतापन योग धरि तिष्ठे सो पसेवकी बूंद इनके परती भई सो मानूं कर्मही झरै हैं ॥ ८ ॥ अर वर्षा ऋतुविषैं वे धीर भगवान जीवदयाके प्रतिपालक वृक्षके मूल दोऊ मुनि

जसा करो तब चंद्राभा राजाकूं कही हे प्रभु ! ऐसा क्या यानैं अपराध किया जो ऐसा दंड याहि दीजै तब राजा कही परदारा समान अर पाप कहा तब चंद्राभा कही या पापका दंड प्रजाहीकूं है या राजानिकूं भी दंड है तब राजाने कही सबनिकूं है तब वह हंसी अर नीची होय गई।

भावार्थ—तुम भी परदारारत पापी हो। तब राजा मनमें समझि मुर्झाय गया जैसैं दाहका मार्‍या कमल मुर्झाय जाय राजा मनमें चिंतवै है यानैं मेरे कल्याणके अर्थि सच्ची वार्त्ता कही परस्त्रीका हरण दुर्गतिका कारण है राजाकूं वैराग्य उपज्या अर यह हू वैराग्यरूप भई राजाकूं विरक्त जानि चंद्राभा कहती भई हे प्रभु ! ऐसे अन्यायरूप भोगनिकरि कहा यह परस्त्रीके विषय किंपाक फलसमान दुःखदाई हैं बाह्य मनोज्ञ भासैं तो कहा ॥८५॥ भोग तो वही है जो आपकूं अर परकूं संताप उपजावै समस्त ही विषय शास्त्रतैं विरुद्ध हैं अर परदारासेवन अर परधनहरण अर मांसभक्षण यह तो महापाप हैं इन पापनिके करणहारे नरक निगोदविषैं जाय हैं या भांति चंद्राभाने मधुकूं संबोध्या तब राजा मधु प्रतिबोध होय मोहरूप मदिरा जो काम सो तज्या ॥ ८७ ॥ अर अति आदरतैं राजा ताहि कहता भया हे सत्यभाभिनी ! तैंनैं भली कही ॥ ८८ ॥ ऐसे कर्म भले पुरुषनिकूं योग्य नाहीं इन बातनिकरि आपकूं नरकादि पीडा उपजै है इन बातनिके करणहारे महापापी या भवविषैं हू दुखी होंय अपयश लहैं परभव नरककेविषैं पडै हैं ॥ ८९ ॥ जो मेरे सारिखे राजा हू ऐसे निंद्य कर्म करैं तो प्रजाका कौन निवारे ॥ ९० ॥ निज स्त्रीविषैं हू जो अधिक राग करै तो वह हू कर्मबंधका कारण है निंद्य है तो परस्त्रीसेवनकी क्या बात परस्त्रीसेवन समान और पाप नाहीं ॥ ९१ ॥ यह मनरूप माता हाथी ज्ञानरूप अंकुशकरि रोक्या हू उबट मार्गविषैं ले जाय है ॥ ९२ ॥ यह मनरूप मतंग गज तीव्र तपरूप अंकुशकरि उबटमारगतैं पीछे लाय मारगविषैं चलावै है सोही धन्य है ॥ ९३ ॥ काम लोभकी वासनाकरि उन्मत्त भया यह मनरूप गज ताकूं तप संयमरूप दंडकरि जबलग पीछे न लावै तौलग मदका अभाव कहांतैं होय ॥ ९४ ॥ जबलग मनरूप माते मतंगकूं यत्न

होंय तब तू अपने पुत्रका आगमन जानियो। अर हे पुत्री! तू सीमंधरस्वामीके वचन अन्यथा मत जानियो ॥ ३७ ॥ यह नारदके मुखके हितरूप वचन सुनिकरि श्रद्धा करी अर नमस्कारकरि नारदतैं कहती भई पुत्रकी वार्ता सुनि झरे है दुग्ध जाके स्तनविषैं ॥ ३८ ॥ रुक्मिणी कहै है हे भगवन्! यह कार्य तुमत बांधवहीतैं बनै औरसूं न बनै हे साधूनिकीं सेवाविषैं उद्यमी! तिहारे जिनधर्मीमात्रसूं परमस्नेह है अर मैं तो तिहारी बालिका ही हूं मैं पुत्रके शोकरूप अग्निकरि दग्ध हुती अर मेरे कोई अवलंब न हुता सो हे धीर! तुम हस्तावलंब देयकरि मोहि थांभी ॥ ४० ॥ जो सीमंधर सर्वज्ञने भाष्या है सो सत्य है मोहि जीवते पुत्रका दर्शन अवश्य होयगा मैं जिनेश्वरके वाक्यकरि जीऊं हूं अर दृढ है मन मेरा अर आप इच्छा होय जहां जाइये अर शीघ्र ही बहुरि तिहारे दर्शन हूज्यो ॥ ४२ ॥ नारदसूं रुक्मिणी मिष्टवचन कहि प्रणाम किया तब नारदहू याहि आशीष देयकरि गए अर रुक्मिणी हरिकी इच्छा पूरती संती सुखतैं तिष्ठी ॥ ४३ ॥ यह प्रद्युम्न अर संबुकुमारके पूर्वभवका चरित्र मनुष्य बहुरि देव-बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि प्रद्युम्न संबुकुमारके भवतैं दोऊ मुक्ति होंयगे यह चरित्र जो पढ़ै सुनै अर श्रद्धा करै सो जिनशासनविषैं भक्तिवंत थोरे ही भवमें निर्वाणपद पावै।

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ संबुप्रद्युम्नपूर्वभववर्णनोनाम त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४३ ॥



अथानंतर—सत्यभामाके भानुकुमारनामा पुत्र सो ऊगते सूर्यकी न्याईं वृद्धिकूं प्राप्त होता भया कैसा है भानुकुमार सूर्यकी किरणनिके समूह समान है ज्योति जाकी सो भानु कहिए सूर्य ताकी भानुकहिए दीप्ति तासमान है उद्योत जाका ऐसा भानुकुमारनामा पुत्र ताके वढिवेकरि सत्यभामाका मनरूप उदयाचल प्रकाशकूं प्राप्त होता भया ॥२॥ एकदिन नारद कृष्णपै आए तब कृष्ण प्रणामकरि पूछी हे भगवन्! अब आप कहांतैं यहां आए सो कहो तिहारे दर्शनकरि मोहि अति हर्ष होवै है जब जब आप आवोहो तब तब हर्षहीकी बात लावो हो ॥ ३ ॥

जसा करो तब चंद्राभा राजाकूं कही हे प्रभु ! ऐसा क्या यानैं अपराध किया जो ऐसा दंड याहि दीजै तब राजा कही परदारा समान अर पाप कहा तब चंद्राभा कही या पापका दंड प्रजाहीकूं है या राजानिकूं भी दंड है तब राजाने कही सबनिकूं हैं तब वह हंसी अर नीची होय गई।

भावार्थ—तुम भी परदारारत पापी हो। तब राजा मनमें समझि मुझांय गया जैसैं दाहका मार्या कमल मुझांय जाय राजा मनमें चिंतवै है यानैं मेरे कल्याणके अर्थि सच्ची वार्त्ता कही परस्त्रीका हरण दुर्गतिका कारण है राजाकूं वैराग्य उपज्या अर यह हू वैराग्यरूप भई राजाकूं विरक्त जानि चंद्राभा कहती भई हे प्रभु ! ऐसे अन्यायरूप भोगनिकरि कहा यह परस्त्रीके विषय किंपाक फलसमान दुःखदाई हैं बाह्य मनोज्ञ भासैं तो कहा ॥८५॥ भोग तो वही है जो आपकूं अर परकूं संताप उपजावै समस्त ही विषय शास्त्रतैं विरुद्ध हैं अर परदारासेवन अर परधनहरण अर मांसभक्षण यह तो महापाप हैं इन पापनिके करणहारे नरक निगोदविषैं जाय हैं या भांति चंद्राभाने मधुकूं संबोध्या तब राजा मधु प्रतिबोध होय मोहरूप मदिरा जो काम सो तज्या ॥ ८७ ॥ अर अति आदरतैं राजा ताहि कहता भया हे सत्यभामिनी ! तैंनैं भली कही ॥ ८८ ॥ ऐसे कर्म भले पुरुषनिकूं योग्य नाहीं इन बातनिकरि आपकूं नरकादि पीडा उपजै है इन बातनिके करणहारे महापापी या भवविषैं हू दुखी होंय अपयश लहैं परभव नरककेविषैं पडै हैं ॥ ८९ ॥ जो मेरे सारिखे राजा हू ऐसे निंद्य कर्म करैं तो प्रजाका कौन-निवारै ॥ ९० ॥ निज स्त्रीविषैं हू जो अधिक राग करै तो वह हू कर्मबंधका कारण है निंद्य है तो परस्त्रीसेवनकी क्या बात परस्त्रीसेवन समान और पाप नाहीं ॥ ९१ ॥ यह मनरूप माता हाथी ज्ञानरूप अंकुशकरि रोक्या हू उवट मार्गविषैं ले जाय है ॥ ९२ ॥ यह मनरूप मतंग गज तीव्र तपरूप अंकुशकरि उबटमारगतैं पीछे लाय मारगविषैं चलावै है सोही धन्य है ॥ ९३ ॥ काम लोभकी वासनाकरि उन्मत्त भया यह मनरूप गज ताकूं तप संयमरूप दंडकरि जबलग पीछे न लावै तौलग मदका अभाव कहांतैं होय ॥ ९४ ॥ जबलग मनरूप माते मतंगकूं यत्न

४६५

मानूं इंतिभीति रहित पृथिवी ही है ॥३३॥ तब माधवने राजा मेरुके निकट दूत भेज्या सो वानैं पहिले ही निमित्त ज्ञानीकूं पूछ्या हुता कि या पुत्रीका वर कौन होयगा तब वानैं कही कृष्ण नामा नारायण होयगा कृष्णका दूत गया ताही समय पुत्री वानैं पठाई मृग समान हैं नेत्र जाके ॥ ३४ ॥ मनकी हरणहारी जो गौरी ताहि मनमोहन परणकरि सुसीमाके मंदिरके समीप याहि ऊंचा मंदिर दिया ॥ ३५ ॥ बहुरि अरिष्टपुरका राजा हिरण्यनाभि सो बलभद्रका मामा ताके श्रीकांता नामक रानी अर पुत्री पद्मावती सो साक्षात लक्ष्मीही है ताका स्वयंबर मंडप सुनिकरि बलभद्र नारायण गए अर बडा भाई अनावृष्टि इनके साथ सो हिरण्यनाभिने प्रीतिकरि इनका बहुत सम्मान किया अर या हिरण्यनाभका पिता राजा सत्र ताहि वैराग्य भया तब हिरण्यनाभका रेवतनामा बडा भाई सोहू पिताके साथ मुनि भया हुता ॥३९॥ ताकी पुत्री चार रेवती १ वंधुमती २ सीता ३ राजीवनेत्रा ४ सो चारों पहिलेही बलभद्रकूं दीनी हुती सो उनका स्वयंवर काहेकूं होय उनकी तो सगाई पहिले ही बलभद्रतैं होगई हुती अर पद्मावतीका स्वयंवर हुता सो अनेक राजा आए हुते जिनकूं युद्धविषैं जीतिकरि कृष्ण पद्मावती परण्या यह दोऊ भाई परणकरि द्वारिका आए ॥ ४२ ॥ जैसैं इंद्र प्रतेंद्र देवनि सहित इन्द्रपुरीमें आवैं तैसैं यह दोऊ भाई अनेक भाईनि सहित द्वारावतीमें आए । पद्मावतीकूं परणिकरि गौरीके गृहके समीप हरिने याकूं मंदिर दिया ॥ ४३ ॥

अथानंतर——गंधारनामा देश ताविषैं पुष्कलावतीनामा नगरी तहां राजा इंद्रगिरि ताके मेरुमतीनामा रानी अर पुत्र हिमगिरि सो हिमाचल सारिखा स्थिर अर पुत्री गांधारी सो महा मनोहर गंधर्वादिकलाकी वेत्ता ॥४५॥ सो गांधारीकूं याके भाई हिमगिरिने हयपुरके राजा सुमुखसूं सगाई करी हुती सो नारदने आय यह वार्ता वासुदेवसूं कही सो हरि वहां जायकरि हिमगिरिकूं रणभूमिविषैं जीतिकरि गांधारीकूं लेय आए आनंदसूं विवाह किया ॥ ४७ ॥ अर पद्मावतीके मंदिरके समीप माधवने गांधारीकूं महल दिया अर देवनि कैसे भोग भोगकरि याहि रमावते भए ॥ ४८ ॥ यह कृष्णकी आठ पटराणी अर सोलह हजार राणी तिनकरि सेवनीक तिन सहित

अर जांबुवतीके अखंडित प्रीति होयगई ॥ १९ ॥ बहुरि एक सिंहलद्वीपका श्लक्ष्णरोमनामा राजा ताके लक्ष्मणानामा कन्या सो महा लक्षणवती सो राजा माधवसूं विमुख ताके निकट माधवने दूत पठाया सो जाय कहता भया तिहारी कन्या मुरारीकूं परणावो सो यानैं न मानी तब वलभद्रसहित मुरारी लक्ष्मणाके देखिवेकूं आए सो लक्ष्मणा समुद्रस्नानकूं आई हुती सो विशाल हैं नेत्र जाके ॥ २२ ॥ सो ताकी लार राजाका सेनापति द्रुमसेन हुता ताहि युद्धविषैं परास्तकरि मुरारी लक्ष्मणाकूं हर लाए अर विधितैं परणी अर कैसे हैं कृष्ण लक्ष्मण समान है प्रभा जाकी सो जांबुवतीके घरके निकट लक्ष्मणाकूं माधवने महल बताया ॥ २४ ॥ अर लक्ष्मणाका भाई महासेवक हरिपै आया अर नम्रीभूत भया सो हरि ताका अति सम्मानकरि सिंहलद्वीप पठाया सो कृष्णकी कृपातैं सुखसूं राज्य करता भया ॥२५॥ बहुरि एक राष्ट्रवर्द्धननामा राजा ताके विनयानामा रानी जाके नमिति नामा पुत्र महा पराक्रमी अर महा बुद्धिमान ताके सुसीमानामा बहिन वह सुसीमा वसुधाकी सीमा कहिए हद्द ही है वसुधामें ऐसी कोऊ और बनिता नाहीं सो राजा सुराष्ट्रने नमितिको युवराज पद दिया सो नमिति पृथिवी विषैं प्रसिद्ध महा पुरुषार्थका धारक महामानी सो बडे २ राजानिकूं न गिनै ॥ २८ ॥ सो नमितिकुमार अर सुसीमा यह दोऊ वहन भाई समुद्र स्नानकूं आए हुते सो नारदने नारायणतैं कही जो सुसीमा रूप गुणकी खान है, तब आप माधव वहां गए प्रभासनामा तीर्थके तीर अपनी सेना राखि वहां गए सो नमितिकूं युद्धविषैं जीति कन्याकूं द्वारावती लेआए ॥ ३० ॥ लक्ष्मणाके मंदिरके समीप मणि सुवर्णमयी मंदिर सुसीमाकूं दिया अर देवनिकी न्याईं वासुदेव सुसीमासहित रमता भया अर सुसीमाका पिता राष्ट्रवर्द्धन पुत्रीके अर्थि बहुत दायजा भेजता भया अर रथ हाथी घोडे पालकी आदि भली भली भेंट हरिपै पठाई ॥ ३२ ॥

अथानंतर—सिंधुदेशका राजा मेरु इक्ष्वाकुकुलका तिलक वीतभवनामा नगर तहां राज करै ताकी राणी चंद्रवती ताके उदरविषैं गौरीनामा पुत्री भई सो मानूं साक्षात गौरी कहिए पार्वतीही है अर मूर्तिवती विद्याही हैं अर

तव नारद बोले हे हरि ! विजयार्द्धपर्वतकी दक्षिणश्रेणी तहां जंबूपुरनामा नगर ताका राजा जांबवनामा विद्याधर ताके शिवचंद्रानामा चंद्रवदनी राणी ताके विश्वसेननामा पुत्र जाका विश्वविषैं यश अर ताके जांबुमतीनामा बहिन साक्षात् लक्ष्मी समान सो अपनी सखीनिसहित गंगास्नानकूं आई सो ऐसी सोहती हुती मानूं तारानिकरि युक्त चंद्रकांति ही सोहै है सो मैंने गंगामें प्रवेश करतो देखी ऊंचे है, अर गोल हैं कठिन कुच जाके तेरे मन हरिवेकूं समर्थ मानूं राजा जांववरूप हिमाचलतैं उपजी साक्षात् गंगाही गंगाद्वारविषैं प्रवेश करती देखी यह नारदके वचन स्नेहरूप सुनिवेकरि कृष्णके काम उद्दीप्त भया जैसैं घृतके सींचवेकरि अग्नि प्रज्वलित होय ताही समय वडा भाई अनावृष्टि तासहित मोहन वहां गए सो जांबुवतीकूं गंगाविषैं स्नानक्रीडा करती देखी अर कन्याने केशव देखे इंदीवर कमल समान है श्याम सुंदर शरीर जाका तव यह दोऊ कामके बाणकरि वेधे गए ॥ १० ॥ ताही समय कृष्ण दोऊ भुजानिकरि ताहि उठाय लई मुखतैं लगि गए हैं नेत्र जाके अर कृष्णके भी नेत्र लगि गए कैसी है वह तिरस्कार करी है लक्ष्मीकी शोभा जानैं अर अत्यंत है लज्जा जामैं ॥ ११ ॥ जब कन्हैया जांबुवती उठाई तव वाके लार हजारां सखी हुतीं सो विलाप करती भईं सो राजा सुनकरि जांबुवतीका पिता अति क्रोधरूप भया पुत्रीके हरिवेकरि विद्याधर खड्ग हाथमें लिए शीघ्रही कृष्णपर आया तीक्ष्ण शस्त्र हैं जाके कर विषैं ॥ १३ ॥ तव अनावृष्टिनामा कृष्णका वडा भाई विद्याधरपर गया सो वासूं युद्धकरि ताहि तत्काल बांध लिया अर वासुदेवकूं आय सौंप्या तव वह अपने पुत्र विश्वसेनकूं वासुदेवकूं सौंपि आप मुनि भया अर विश्वसेनने अपनी बहिन वासुदेवकूं परणाई ताहि परणि विश्वसेनकूं साथ लेय द्वारावतीनाथ द्वारका आए ॥ १६ ॥ रुक्मिणीके महलके निकट जांबुवतीकूं माधवने महल दिया ॥ १७ ॥ अर जांबुवतीके भाईका बहुत सन्मानकरि वासुदेवने विदा किया सो अपने स्थानकूं गया अर पृथिवीविषैं दुर्लभ जो भोग तिनकरि केशव जांबुवतिकूं रमावता भया ॥१८॥ रुक्मिणीका अर जांबुवतीका निकट महल सो परस्पर मिलाप हुवा ही करै आनेजानेसे रुक्मिणी

होंय तब तू अपने पुत्रका आगमन जानियो। अर हे पुत्री ! तू सीमंधरस्वामीके वचन अन्यथा मत जानियो ॥ ३७ ॥ यह नारदके मुखके हितरूप वचन सुनिकरि श्रद्धा करी अर नमस्कारकरि नारदतैं कहती भई पुत्रकी वार्ता सुनि झरे है दुग्ध जाके स्तनविषैं ॥ ३८ ॥ रुक्मिणी कहै है हे भगवन् ! यह कार्य तुमत बांधवहीतैं बनै औरसूं न बनै हे साधूनिकी सेवाविषैं उद्यमी ! तिहारे जिनधर्मींमात्रसूं परमस्नेह है अर मैं तो तिहारी बालिका ही हूं मैं पुत्रके शोकरूप अग्निकरि दग्ध हुती अर मेरे कोई अवलंब न हुंता सो हे धीर ! तुम हस्तावलंब देयकरि मोहि थांभी ॥ ४० ॥ जो सीमंधर सर्वज्ञने भाष्या है सो सत्य है मोहि जीवते पुत्रका दर्शन अवश्य होयगा मैं जिनेश्वरके वाक्यकरि जीऊं हूं अर दृढ है मन मेरा अर आप इच्छा होय जहां जाइये अर शीघ्र ही बहुरि तिहारे दर्शन हूज्यो ॥ ४२ ॥ नारदसूं रुक्मिणी मिष्टवचन कहि प्रणाम किया तब नारदहू याहि आशीष देयकरि गए अर रुक्मिणो हरिकी इच्छा पूरती संती सुखतैं तिष्ठी ॥ ४३ ॥ यह प्रद्युम्न अर संबुकुमारके पूर्वभवका चरित्र मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि मनुष्य बहुरि देव बहुरि प्रद्युम्न संबुकुमारके भवतैं दोऊ मुक्ति होंयगे यह चरित्र जो पढै सुनै अर श्रद्धा करै सो जिनशासनविषैं भक्तिवंत थोरे ही भवमें निर्वाणपद पावै।

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ संबुप्रद्युम्नपूर्वभववर्णनोनाम त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४३ ॥



अथानंतर—सत्यभामाके भानुकुमारनामा पुत्र सो ऊगते सूर्यकी न्याईं वृद्धिकूं प्राप्त होता भया कैसा है भानुकुमार सूर्यकी किरणनिके समूह समान है ज्योति जाकी सो भानु कहिए सूर्य ताकी भानुकहिए दीप्ति तासमान है उद्योत जाका ऐसा भानुकुमारनामा पुत्र ताके वढिवेकरि सत्यभामाका मनरूप उदयाचल प्रकाशकूं प्राप्त होता भया ॥२॥ एकदिन नारद कृष्णपै आए तब कृष्ण प्रणामकरि पूछी हे भगवन् ! अब आप कहांतैं यहां आए सो कहो तिहारे दर्शनकरि मोहि अति हर्ष होवै है जब जब आप आवोहो तब तब हर्षहीकी बात लावो हो ॥ ३ ॥

शिष्य कौथुमी ताका अमरावर्त ताका सित अर सितका वामदेव, ताका कपिष्टल ताका जसस्थामा, ताका सरवर ताका सरासण ॥ ४६ ॥ अर ताका द्रावण ताका विद्राचल अर विद्रावनका पुत्र द्रोण सो द्रोणाचार्य सर्व भार्गव वंशविषैं श्रेष्ठ ॥ ४७ ॥ सो द्रोणके अश्विनीनामा स्त्री ताके अश्वत्थामा नामक पुत्र होता भया। बडा धनुषधारी जाके सन्मुख रणविषैं अर्जुन ही आय सकै ॥ ४८ ॥

अथानंतर–अर्जुनका प्रताप अर धनुष विद्याका ज्ञान यह दोऊ भाई दुर्योधनादि न सहि सके सो पहिले बट भया था अर संधि भई थी तामें दूषण विचारते भये। सो यह तो बडी अयोग्य हम सौ अर वे पांच सो आधा बट कैसे संभवै है ॥ ५० ॥ यह वार्ता पांडवनिने सुनी तब युधिष्ठिर तो महा धीर सो उनको तो क्रोध न उपज्या अर छोटे भाई चारों समुद्र समान निर्मल अर गंभीर हुते परंतु पर पुरुषनिके मुखके वचन वेही भये पवन ताकरि क्षोभकूं प्राप्त भए ॥५१॥ प्रथम ही अर्जुन उठा सो मैं बाणोंकी धारा रूप मेघ वृष्टिकरि शत्रुरूप पर्वतनिकूं आच्छादितकरूं तब युधिष्ठिरने उसे मने किया जो क्षमा करहु तब बडे भाईके वचनरूप वायुकरि अर्जुनरूप मेघ शांत होय गया अर भीमरूपी भुजंगम यह कहता संता उद्यत भया था जो मैं दृष्टि ही करि सौऊ शत्रुनिकूं भस्म करूंगा सो वडे भाईके वचनरूप मंत्रकरि शांत भया ॥ ५३ ॥ अर नकुल हू शत्रुनिके समूहके नाश करवेकूं उद्यमी भया सो युधिष्ठिरने भुजानिकरि थांभ्या अर सहदेवरूप दावानल प्रज्वलित भया हुता जो मैं बनरूप वैरिनकूं शीघ्र ही भस्म करूंगा सो हू युधिष्ठिर रूप मेघने बुझाया यह चारोंही भाई युधिष्ठिरके प्राणसमान हैं सो युधिष्ठिरकी आज्ञाकरि क्षमारूप भये॥ ५५ ॥ अर वेऊ इनकूं प्रवल जानि संकि गये शांतचित्त होय घरमें रहे सो धृतराष्ट्रके पुत्र कपटी तिन यह घरमें सोते हुते सो रात्रिको घरमें अग्नि लगाई तब यह सचेत होय माता सहित सुरंगके मार्ग होय निकसे सो यह तो विदेश गये अर दुर्योधनका अपयश भया जो याने प्रपंच करि भाई मारे हस्तिनापुरके सब लोग दुर्योधनकी निंदा करते भये जो यह पापी है अर सब कुलके लोक पांडवनिकूं मूये जान इनकी क्रिया करते भये॥५९॥ अर यह पांचों

संतनिके पति योजनगंधा सो योजनगंधा राजाकी पुत्री अर कीरकैपैली ताके पुत्र संतनु अर संतनुके शांतन ताका दूजा नाम व्यान ह कहै हैं ॥ ३१ ॥ ताका पुत्र धृतधर्मा अर ताका धृतोदय ताके धृतमान अर ताके धृत ॥३२॥ अर धृतके धृतराज ताके रानी तीन, अंविका १ अंबालिनका २ अंबा ३ यह तीनोंही वडे राजानिकी बेटी तिनमें अंविकाके धृतराष्ट्र नामा पुत्र भया। अंबालिकाके पांडु नामा पुत्र भया अर अंबाके विदुरनामा पुत्र भया ये तीनों ही महा ज्ञानवान होते भए अर राजा धृतराजका भाई रुक्म जाके रानी गंगासो वडे राजाकी पुत्री महा पवित्र ताके भीष्म नामा पुत्र होते भए ॥ ३५ ॥

अथानंतर--धृतराष्ट्रके रानी गंगा ताके दुर्योधन आदि सौ पुत्र भये तिनमें परस्पर अत्यंत प्रीति अर सब ही शास्त्रविद्याविषैं प्रवीण ॥ अर पांडुके रानी दोय एक कुन्ती दूजी माद्री कुंतीके कर्णनामा पुत्र तो पांडु थकी गांधर्व विवाह कर भए। वहुरि युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन ये तीन पुत्र भये अर माद्रीके नकुल अर सहदेव ये दोऊ पुत्र भए यह पांचों ही भाई पांडुके पुत्र महा जिनधर्मी पंचपरमेष्ठीके दास होते भए ॥ ३८ ॥ कुछुयक दिनमें पांडु तो मुनि भए अर माद्री आर्यिका भई सो जिनधर्मके प्रसादतैं दोऊ स्वर्गविषैं गए अर धृतराष्ट्रके सौ पुत्र अर पांडु-के पांच पुत्र तिनमें राजके अर्थ विरोध होता भया तव भीष्म, विदुर, द्रोण यह वीच पडे अर दुर्योधनका मंत्री शकुनि ससुरोम येहू वीच परे अर इनके राजका विभाग कर दिया पांडुके पांच पुत्र तिनिकूं राज्य आधा अर धृतरा-ष्ट्रके पुत्र सौ तिनकूं आधा राज दिया या भांति वांट किया परंतु वे सौ या वातमें प्रसन्न नाहीं ॥ ४१॥ अथानंतर—जरासिंधके अर दुर्योधनके अर कर्णके एकांतविषैं वचन भया ऐसी प्रीति भई सो किसीके टारे न टरै ॥ ४२ ॥ अर भार्गवाचार्य धनुर्विद्याके आचार्य तिनके वंशविषैं उपजे द्रोणाचार्य सो धनुषविद्याविषैं प्रवीण सो धृतराष्ट्रके अर पांडवनिके पुत्रनिकूं धनुषवेद सिखावैं सो द्रोणके मध्यस्थभाव सवनिकूं समान सिखावैं काहूमूं अंतर नाहीं द्रोणकी वार्ता सुनि राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछ्या हे प्रभो! भार्गवाचार्यके वंशमें द्रोण उपजे सो इनके वंशकी मोहि कथा कहो। तव गणधर देव कहैं हैं हे श्रेणिक! तू सुनि ॥४४॥ प्रथमही अत्रेय भया ताका पुत्र अर

अनेक राजा भये बहुरि धृतमित्र धृतिषेण सुव्रत शतमंदर श्रीचंद्र सुप्रतिष्ठ इत्यादि सैंकडां नृप व्यतीत भये बहुरि राजा धृतिपद्म धृतेंद्र धृतिवीर्य यह प्रसिद्ध भये। बहुरि धृतिदृष्टि धृतिद्रिति धृतिप्रीति इत्यादि अनेक कुरुवंशी भूपति भये बहुरि राजा अमरघोष, हरिघोष, हरिध्वज, सूर्यघोष सुतेज. पृथुइभवाहन इत्यादि पृथिवीपति व्यतीत भये बहुरि राजा विजय ताके जयराज बहुरि सनत्कुमार नामा चौथे चक्रवर्ती कुरुवंशहीमें भये ॥ १५ ॥ सो महा-रूपवान तिनके रूपकी पाशिके खैंचे स्वर्गके देव आये अर देवनिके वचन सुनि मुनि भये ॥ १६ ॥ बहुरि सनत्कुमारका पुत्र सुकुमार ताके वरकुमार ताके विश्व ताके विश्वानर ताके विश्वकेत ताके बृहध्वज ॥ १७ ॥ ताके विश्वसेन ताके ऐरानामा रानी प्राणहूतैं अधिक वल्लभ ताके उदर भगवान शांतिनाथ सोलहवें तीर्थंकर पंचम चक्रवर्ती होते भये ॥ १८ ॥ तिनके नारायणनामा पुत्र ताके नरहरि ताके प्रशांति ताके शांतिवर्द्धन ताके शांतिचंद्र ताके शशांकांक ताके कुरु इत्यादि राजा कुरुवंशी भये इत्यादि अनेक भूप कालवश भये बहुरि राजा सूर्य भया ताके रानी श्रीमती ताके गर्भविषैं भगवान कुंथुनाथ सत्रहवें तीर्थंकर छठे चक्रवर्ती भये ॥ २० ॥ तिनपीछे अनेक राजा भये बहुरि सुदर्शननामा राजा भये तिनके रानी मित्रा ताके गर्भविषैं भगवान अरःनाथ अठारहवें तीर्थंकर सातवें चक्रवर्ती भये ॥ २२ ॥ बहुरि राजा सुचारु ताके चारु ताके चारुरूप महा बलवान ताके चारुपद इत्यादि अनेक राजा व्यतीत भये ॥ २३ ॥ बहुरि ताके राजा पद्ममाल ताके सुभूप ताके पद्मरथ ताके महापद्म नवमें चक्रवर्ती इनके विष्णु अर पदम यह दोनों पुत्र हुए ॥ २४ ॥ फिर राजा सुपद्म पद्मदेव कलकीर्ति कीर्ति सुकीर्ति वसुकीर्ति वीर्यवान ॥ २५ ॥ वासुकी, वासव, वसु, सुवसु, ये कुरुवंशीके नाथ होते भये। बहुरि श्रीवसु, वसुन्धर ॥ २६ ॥ वसुरथ इंद्रवीर्य चित्र विचित्रवीर्य यह महा बलवान होते भये ॥ २७ ॥ बहुरि राजा विचित्रवीर्य, चित्ररथ, महारथ, व्रातरथ, वृषानंत, वृषध्वज, ॥ २८ ॥ श्रीवृत, व्रतधर्मा, धृतधारण, महासर, प्रतिसर, सर, पारासर ॥ २९ ॥ सारद्वीप, द्वीप, द्वीपाइन, सुशांति, शांतिभद्र, शांतिषेण ॥ ३० ॥ सो वह राजा शांतिषैण अर

मनमोहन सुखतैं राज्य करै ॥ ४९ ॥ पुण्यरूप वृक्षकरि उपजे नारायणपदके भोगरूप फल तिनकूं भोगवता लोकनिके समूहकूं आनंद देता भया कृष्णके राज्यमें कोऊ हू पुरुष दुःखी नाहीं सबही आनंद करै हैं वह मुकुंद कहिए माधव जिनधर्मका करणहारा धोरीजे शत्रु सन्मुख आए अर लडे तिनकूं क्षणमात्रमें तृणकी न्याई उपारि डारे अर महाश्रेष्ठ देवांगनासारिखी बधू बरता भया अर विनाही यत्न जाके बहुत रत्न आय प्राप्त भये जो भव्यजन जिनधर्मका सेवन करैं सो मनमोहनकी न्याईं मनवांछित सुख पावैं ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जाम्बुवत्यादिमहादेवीलाभवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशःसर्गः ॥ ४४ ॥

अथानंतर—दशार्ह कहिये समुद्रविजयादि दश भाई जिनके भाणजे प्रसिद्ध पांच पांडव तिनके नाम, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, अर सहदेव, सो यह द्वारावती नगरी आये ॥ २ ॥ यह वार्ता सुनिकरि राजा श्रेणिक गौतम गणधरसूं पूंछता भया हे प्रभो ! ये पांडव कौन हैं अर कौन वंशविषैं उपजे हैं ॥ ३ ॥ तब गणधर कहते भये सोमप्रभ श्रेयांसका वंश ताविषैं कुरुनामा राजा भये ताके वंशमें शांतिनाथ कुंथुनाथ अरःनाथ ये तीन तीर्थंकर भये ॥ ४ ॥ या वंशमें जेते राजा भये ते धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके साधक हुये सो कुरुवंशीनिकी महिमा तू आदितैं सुनि ॥ ५ ॥ या वंशविषैं बड़े बड़े राजा हुये जिनके नाम सुनि कुरुजांगलदेश भोगभूमि समान है शोभा जाकी ताविषैं हस्तिनापुर ताविषैं पृथिवीके आभूषण रिषभदेवके समय राजा सोमप्रभ अर श्रेयांस भये कुरवंशके तिलक दानधर्मके नायक होते भये ॥ ७ ॥ सो राजा सोमप्रभके जयकुमार पुत्र भये तिनके नाम मेघेश्वरहू कहै हैं सो मेघेश्वर भरतके बडे उमराव तिनके कुरनामा पुत्र । ताके कुरुचंद्र ताके शुभंकर ताके धृतिकर या भांति अनेक कालके योगकरि अनेक कोटि राजा भये रिषभदेवके समयतैं नेमिनाथके समयपर्यंत कोटाकोटि सागरविषैं जो राजा भये तिनका कथन कौन करि सकै, बहुरि या वंशविषैं राजा धृतिदेव भये ताके धृतंकर ताके गंगदेव इत्यादि

युधिष्ठिरकूं विवाहनीं विचारी हुतीं सो उनकी और भांति बात सुनी। यह सब श्राविकाके व्रतरूप तिष्ठती हुतीं ॥ ९७ ॥ अर वाही नगरमें एक प्रियमित्रनामा महाजन बडा धनवान सो वाने सुनी हुती जो या समय पांडव बडे पुरुष हैं उन समान और नाहीं सो पांडवनिके देखवेकी तथा उनके यश सुनवेकी वाके अति अभिलाषा हुती ताके सामिनीनामा भामिनी अर नयनसुंदरीनामा कन्या सो अपने रूप सौंदर्यताकरि नेत्रनिकूं आनंदकी देणहारी ॥ ९९ ॥ सो जब राजाने अपनी दश पुत्री युधिष्ठरकूं देनी विचारी तब याहूने अपनी पुत्री युधिष्ठरहीकूं देनी विचारी हुती सो तिनकी और वार्ता सुनि राजाकी दशों पुत्री अणुव्रत धरि तिष्ठी हुतीं त्यों ही श्रेष्ठीकी पुत्री भी उन सहित तिष्ठी राजा अर राजाकी रानी अर यह सेठ अर सेठिनी महा पुरुषनिके लक्षण जाननहारे इसलिये युधिष्ठिरकूं देनी विचारी हुती ॥ १०१ ॥ सो उनके परलोककी सुनि इन सबनिके यह विचार भया था कि जो वे परलोक गए तो कोई हू दूजा तो पति हमारे होनहार नाहीं पति वे ही हैं सो वे तो निश्चयरूप हैं अर ये पांचों भाई तहातैं आगे चले सो चंपापुरी गए तहां इनका भाई कर्ण राज करै सो दुर्योधनका अर जरासिंधका मित्र तहां एक भयंकर गजराज सो नगरके मध्य उपद्रव करै था अर महा प्रबल ताहि भीमने मद रहित किया अर प्रजाका उपद्रव मेट्या परंतु वहां आपकूं प्रकट न किया तहांतैं आगे गए एक सुरपुरसमान वैदिसिनामा नगर तहां राजा वृषध्वज ताके दृढायुधनामक वडा पुत्र सो युवराज ॥ ५ ॥ अर राजाके दिशावली नामा रानी ताके द्यसानन्दानामा पुत्री सो सब दिशाविषैं प्रगट है यश जाका दिशा समान निर्मल ॥ ६ ॥ वा राजाके मंदिर भीम भिक्षाके अर्थि गए सो गम्भीर है शब्द जाके सो वह राजा भीमकूं महा रूपवान अर महा पुरुष जानि अपनी कन्या लेयकरि भीमके निकट आया अर मिष्ट वचन कहता भया ॥ ८ ॥ हे नरोत्तम! तुम योग्य भिक्षा यह मेरी कन्या है सो लेहु अर पाणिग्रहण करो ॥९॥ भीम कही यह अपूर्व भिक्षा है सो मैं स्वाधीन नाहीं जो याके अर्थि हाथ पसारूं यहां मेरी माता अर मेरा वडा भाई है वे करैं सो सही तब राजा कही तिनकूं पूछि

गुणव्रत चार शिक्षाव्रत अर यतिका धर्म पंच महाव्रत पंच समिति तीनगुप्ति रूप ॥ ८७ ॥ यह तेरहप्रकार चारित्र है या भांति इनके परस्पर आलाप भया अर मनविषैं प्रीति उपजी तब कन्या मनमें चिंतवती भई। राजलक्षणकरि युक्त कहा यह ही युधिष्ठिर है? जो मातासहित महादयाकरि मंडित मोहि उपदेश देय है अर धीरज बंधावै है। सर्वथा मेरें पुण्य करि वह मेरा पति सत्यवादी जीवो। वे पुरुष शत्रुनिके जीतनहारे हैं ॥ ८९ ॥ वा दिन वाके आश्रम रहे बहुरि प्रात ही चलिवेकूं उद्यमी भए तब युधिष्ठिरने वाहि कही तेरा दर्शन बहुरि हूज्यो वाका बहुत सन्मानकरि मिष्ठवचन कहि आगे चाले अर याके आशा बंधी जो यही हैं समय पाय मोहि परणेंगे। सो यह तो आशारूप यहां तिष्ठै है युधिष्ठिरके उपदेशकरि कुछ याकूं अणुव्रतका ग्रहण हुआ अर वनतैं निकसि तापसका भेष तजि विप्रका रूपधरि पांचों भाई माता कुंती सहित ईहापुरनामा नगर गए ॥ ९१ ॥ अर राजा समुद्रविजयने द्वारिकामें सुनी जो दुर्योधनने कुंती अर पांचों पांडव मायाचारकरि अग्निमें जलाये सो अपनी बहन अर भाणजे तिनके मरणकरि दुर्योधन पर अति क्रोध भए। कुरुवंशिनिके मारिवेकूं उद्यमी भए अर पांचों भाई ईहापुरमें कैयक दिन रहे तहां भृंग समान स्याम भृंगनामा राक्षस महा भयंकर मनुष्यनिका आहार करणहारा वासूं भीमसेनने युद्ध किया ताहि जीतिकरि ताड दिया बहुरि न आवै सो इनका नगरविषै बडा यश भया यह राक्षस मनुष्यनिके आहारी देवयोनि नाहीं राक्षसी विद्याके साधक दुष्ट मनुष्य हैं वा राक्षसके तिरस्कारकरि नगरके लोकनिका भय मिट्या प्रजा भयरहित भई तब इनकी बहुत पूजा करी अर यह माता सहित आगे चाले। सो एक नृभृंगनामा वडा नगर ॥ ९३ ॥ तहां राजा चंडवाहन जो पाप कर्मके करणहारे हैं तिनकूं भयंकर ताके रानी विमलप्रभा अति वल्लभा ताके पुत्री दश ते सर्व ही रूपके अतिशयकरि संपूर्ण शरदकी पूर्णमासीके चंद्रमाकेसमान सुंदर वदन जिनके अर वे सर्वही सर्व कलाविषैं प्रवीण ॥९५॥ तिनके नाम गुणप्रभा १ सुप्रभा २ ह्री ३ श्री ४ रति ५ पद्मा ६ इंदीवरा ७ विश्वा ८ चर्या ९ अशोका १० सो इनके माता पिताने यह सब

स्तनकाहू भार न सहारि सकै वह देवनिका मन हरणहारी तापसनी, तापस लोकनिकरि पूज्य चंद्रकला समान निर्मल संपूर्ण तपोवनकूं उज्वल करती हुती ॥७५॥ सो वाके आश्रम पांडव गए सो वानैं उचित वृत्तिकरि इनकी पाहुनगति करी अर वह मिष्ट वचन बोलनहारी इनके मार्गका खेद निवारती भई तब वाकूं माता कुन्तीने प्रेमकरि पूछी हे बाले ! हे कमल कोमले ! तू नवयोवनविषैं वैराग्यकूं कौन कारणतैं प्राप्त हुई है सो कहि तेरी बुद्धि निर्मल है या भांति कुंतीने पूछी तब वह राजपुत्री मृगनयनी मधुर वचन कहिकरि माताका मन हरती कहती भई ॥ ७८ ॥ हे पूज्ये ! तुम भली पूछी मेरे वैराग्यका कारण कहूं हूं सज्जनतैं मिले मनका दुख कहिवेमें आवै ॥ ७९ ॥ पहिले मेरे माता पिताने यह विचार किया हुता जो या कन्याकूं राजा पांडु अर रानी कुंतीका बडा पुत्र युधिष्ठिर ताहि परणावेंगे वह स्वतःस्वभाव ही उदार चेष्टाका धारक है बहुरि मेरे अभाग्यतैं उनकी माता अर भाईनिसहित ऐसी वार्ता लोकनिके मुखतैं सुनिवेमैं आई जो न कही जाय न धरी जाय ॥ ८१ ॥ सो योग्य तो यह हुता कि जैसैं मेरा पति अग्निदाहकरि मरया त्यों ही मैं हू अग्निप्रवेश करूं यह तो मोतैं न बनी मैं हीनशक्ति तातैं तापसीनिके मार्गविषैं प्रवर्ती हूं ॥८२॥ यह वचन राजपुत्रीके सुनकरि कुंतीने जानी यह मेरी ही पुत्रवधू होनहार है। तब वाहि कही हे भद्रे ! तैंनैं बहुत भली करी जो अग्निप्रवेश न किया अपने प्राण बचाए ॥ ८४ ॥ यह प्राणी अपने मित्रनिका कल्याण विचारे अर पूर्वोपार्जित कर्म कुछ और ही करि डारै तातैं दीर्घदर्शीपणा ही योग्य है। विना विचारे शीघ्र करना सो ही संतापका कारण है, हे कल्याणी ! यह प्राण कल्याणके कारण हैं सो मेरे वचनतैं तू यह प्राण राखि। जीवता थका प्राणी सैंकडों कल्याण देखै है यातैं तू घरमें न रहै तो तपोवनविषैं रहि परंतु प्राणत्याग मत कर ॥ ८५ ॥ वाही समय युधिष्ठिर माताके निकट आय खडे रहे। कुंती अर वह राजकन्या दोउनिकी बात युधिष्ठरने सुनी सो माताके निकट धर्मका व्याख्यान करते रहे अर बाहिर सुनाते रहे जो वीतरागका प्ररूप्या हुता दोय प्रकार धर्म तामें गृहस्थधर्म तो बारह व्रतरूप पंच अणुव्रत तीन

भाई महा बुद्धिमान गंगा पार उतरकरि भेष पलट पूरबकी दिशि गये ॥६०॥ सो माता कुंती लार तातैं येऊ वाकी चाल परमाण धीरे २ जा रहें थे सो चले चले कोसिका नामा पुरी गए जहां राजा वर्ण ॥६१॥ ताके रानी पद्मावती अर पुत्री सुदर्शना पुष्पसमान कोमल है अंग जाका सो पहिले युधिष्ठिरकी प्रशंसा यानै सुनी हुती सो याके युधिष्ठिरपर अनुराग हुता सो युधिष्ठिरके दर्शनरूप चंद्रमाकरि वह सुदर्शनानामा कन्या कुमुदिनी समान विकाशकूं प्राप्त भई ॥६२॥ अर मनमें चिंतवती भई याजन्मविषैं मेरे यही भर्तार होवै वह राजा वर्णकी पुत्री राजा युधिष्ठिरके प्यारी स्त्री होनहार है ॥६४॥ सो ताका अभिप्राय जानि युधिष्ठिरकेहू प्रेम उपज्या सो वाहि सैनहीकरि करग्रहणकी आशा बंधाय आप आगे गए ॥ ६५ ॥ वाने जानी इनके वचन मिथ्या नाहीं यह मोहि वरेंगे यह प्रतीतिधरि राजाके संगमकी आशाकरि वह कन्या सखीजनमें उचित जो विनोद ताकरि काल व्यतीत करै ॥ ६६ ॥ अर वे पांचों भाई स्वभाव ही करि सुन्दराकार विप्रका भेष धरि आगैं गए पांचो ही भाई मनुष्यनिका मन हरणहारे ॥६७॥ इनका आसन शयन अर महा मनोहर भोजन सुखतैं होय ये पुण्याधिकारी सो इनकूं अचिंती वस्तु आय प्राप्त होय ॥ ६८ ॥ बहुरि यह तापसका भेषधरि श्लेष्मान्तक नामक बनविषैं गए तहां तापसीनिका आश्रम महा रमणीक ताविषैं यह तापसीनिकरि पूजित विश्राम करते भए ॥ ६९ ॥ यहां एक और कथा है वसुंधरपुरका राजा विंध्यसेन ताकी नर्मदानामा रानी ताकी पुत्री वसंतसुंदरी सो ताके माता पिताने युधिष्ठरकूं देनी विचारी हुती बहुरि उनके दग्ध भयेकी वार्ता सुनिकरि वह कन्या अपने पूर्वोपार्जित कर्मकूं निंदती संती तापसके आश्रमविषैं तप करिवेका उद्यम करै थी अर वाकी यह भावना हुती कि जो जन्मांतरविषैं भी मेरा पति युधिष्ठिर ही होय ॥ ७२ ॥ सो वह कन्या तापसीनिके आश्रमविषैं अति उत्कट रूप लावण्यताकी धरणहारी पाटंबरकी सारी ओढे शिरपर जटा धरे बटवृक्षकी शाखासमान शीतल सोहती हुती ॥ ७३ ॥ कर्ण पर्यंत है विशाल अर तीक्ष्ण नेत्र जाके अर किंदूरीसमान आरक्त हैं अधर जाके अर चंद्रमासमान है मुख जाका अर ऐसी नाजुक जो नितंब अर

॥ ५३ ॥ वह कथा करनी जामें वक्ता अर श्रोताके पापका बंध न होय अर कुगतिके फल न भोगैं सो धर्मकथा या लोक अर परलोकके कल्याणके अर्थि जानो ॥ ५४ ॥ जैसे पुण्यमई कथा वक्ता अर श्रोताकूं कल्याणके अर्थि होय है तैसें पापमयी कथा वक्ता अर श्रोताकूं विपरीत फलका कारण होय है ऐसा जानि अहो भव्य जीव हो मलके भरे असत्य वचन तिनकूं तजो अर निष्पाप दयामई जे सत्य वचन तिनकूं भजो। कैसे हैं निष्पाप सत्यवचन अपना निर्मल यश ताहि प्रगट करै हैं अर गुणनकूं बढावै हैं दोषनकूं जीतै हैं अर सर्वज्ञदेवकरि भया है प्रकाश जिनका ॥ ५६ ॥ इन जीवनके पूर्वभवके भले आचरणका फल भली बुद्धि अर महा पुरुषार्थ अर बुरे आचरणका फल कुबुद्धि अर हीन पराक्रम अर जहां जांय अपमान होय तातैं प्राणीनिके शुभाचरण ही शरण हैं ॥ ५७ ॥ या लोकविषैं यह जिनागम दुःखरूप अग्निकी शिखा तेही भया ज्येष्ठमासका आताप ताके निवारिवेकूं मेघ समान है या जिन आगमविषैं भाषी जे व्रतनकी विधि सो यह प्राणी करहु, कैसी है व्रतनकी विधि? नाना प्रकारके लाभरूप निधिकूं धरै है बहुरि कैसी है व्रतनकी विधि शास्त्रनिके वेत्तानिकरि करी है।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कुरुवंशोत्पत्ति पांडवधृतराष्ट्रसंयोग द्रोपदीलाभवर्णनो नाम पंचचत्वरिंशः सर्गः ॥ ४५ ॥

अथानंतर—हस्तिनापुरविषैं गिरिहूतैं स्थिर जो पांडव सबनिकरि मानिवेयोग्य भोगी पुरुष जिनका सुखसूं काल व्यतीत होय ॥ १ ॥ निरंतर परम विभूतिकरि वर्द्धमान जो यह पांचों भाई सो इनकी विभूति देखिकरि वह सौ बहुरि मर्यादा उलंघिवेकूं उद्यमी भये तब शकुनिनामा दुर्योधनका मंत्री वाने दुर्योधनतैं कही जो युधिष्ठिर भोला जीव है ताहि कपटके पाशनिकरि द्यूतक्रीडाविषैं जीतहु सो दुर्योधनने कपटके पाशनितैं द्यूतक्रीडा करि युधिष्ठरकूं जीत्या सो जीतिकरि दुर्योधन अपने भाईनिसहित इन पांचनिमें बडा जो युधिष्ठिर ताहि कहता

विदुरने बांच्या सो पत्र वांचकरि सर्व वृत्तांत जानि परम प्रमोदकूं प्राप्त भये द्रुपदके कुटुम्बमें द्रोणादिकके अति सुख भया शंख आदि वादित्रनिकी ध्वनि भई पांडवनिका द्रोण अर भीष्म अर विदुरसे मिलाप भया सबनिने दुर्योधनकूं लायकरि उनकूं अर इनकूं एकत्रित किया यह पांचों भाई अर वे दुर्योधनादि १०० द्रोपदीके विवाहमें मिले ॥ ४३ ॥ जैसैं दीवट स्नेह कहिए तेल ताके भारकरि भरा अधिक उद्योत करै तैसैं द्रोपदी परम स्नेहकी भरी पाणिग्रहणके योगकरि अर्जुनने वरी अधिक दीपती भई ॥ ४४ ॥ द्रोपदी अर अर्जुनका विवाहमंगल देखि करि सकल राजा अपने अपने नगर गए अर दुर्योधनादि भी पांडवनिकूं लेयकरि हस्तिनापुर आए ॥ ४५ ॥ आधे आधे राज्यके विभागकरि यह पूर्वरीति हस्तिनापुरमें तिष्ठे ॥ ४६ ॥ अपने नगर आये जो युधिष्ठरकी मांग हुती वह मगायकरि युधिष्ठिर परण्या अर भीमसेनकी मांग हुती वह मगाय करि भीमसेन परण्या सो दोऊ भाई परणकरि सुखसूं हस्तिनापुरमें तिष्ठे अर द्रोपदी अर्जुनकी स्त्री सो युधिष्ठर अर भीम ये दोऊ अर्जुनसूं वडे सो इनके छोटे भाईकी वहू पुत्रकी वधू समान जो पुत्री ही गिनिये। नकुल अर सहदेव यह अर्जुनतैं छोटे सो इनकी द्रोपदी भावज सो माता समान गिनिए ॥ ४८ ॥ इन चारों भाइयनिके तो द्रोपदी- विषैं पुत्री अर माताकी बुद्धि अर द्रोपदीके दो ज्येष्ठ जो स्वसुर समान अर पिता समान अर दो देवर सो पुत्र समान अर अर्जुन पति अर यह पतिव्रता नारी ॥ ४९ ॥ यह पांचों पांडव शुद्ध अर द्रोपदी शुद्ध जिनका यह विपरीत कथन करे हैं तिनके पाप निवारिवेकूं कौन समर्थ ॥ ५० ॥ जो परजीवमें सच्चा भी दूपण होय अर कोई प्रकाशै तो पापका कारण है अर जो वृथा परदोप भाषे है झूठा दूपण लगावै है ताके पापका कहा पूछना ॥५१॥ जो जीव छोटे हू मनुष्यनिका सांचहू दोप कहे है ते हू कुगतिगामी हैं अर लोकनिंद्य हैं भले पुरुप परदोष न भाषैं अर जो कोई स्त्रीकी सांची निंदा होती होय तोहू सत्पुरुप मौन गहैं अर औरनिकूं मनै करैं सो स्त्री चरित्रकी कहा चर्चा चुप रहो ॥ ५२ ॥ अर जो महापुरुपनिके झूठे दोप पापी कहै हैं तिनकी जिह्वाके सो खंड क्यों न होंय

ननामा विद्याधर ताने अपनी पुत्रीके वर ढूंढिवेके अर्थि गांडीवनामा धनुष मेल्या जो यह धनुष चढ़ावै सो मेरी पुत्रीका वर अर यह धनुष चढ़ाय राधा वेध वींधिवेकूं समर्थ होय सो द्रोपदीका पति ॥ २५ ॥ यह घोषणा सुनिकरि द्रोण कर्ण अर दुर्योधनादिक धनुषके निकट आये सो वह धनुष देवाधिष्ठित वाहि कोऊ देखि न सकै स्पर्श न करि सकै सो चढावना कहां द्रोपदीका पति तव होणहार जो अर्जुन तिन आयकरि धनुष देख्या अर स्पर्श किया जैसैं पतिव्रता पतिके वश होय तैसैं धनुषकी फिड़चि अर्जुनके वश भई ॥ २८ ॥ तब अर्जुन धनुष चढाया सो फिडचके चढ़ायवेका ऐसा शब्द भया जाकरि करण दुर्योधन द्रोणादिकनिके कान बधिर समान होय गये ता शब्द करि और शब्द सुननेमें न आया जा समय अर्जुनने गांडीवनामा धनुष चढाया ता समय द्रोण करण दुर्योधनादिकनिके मनमें यह शंका उपजी जो यह कहा अर्जुन ही है मरकरि बहुरि उपज्या, ओर धनुषधारीके यह विद्या कहां धन्य याकी दृष्टि धन्य याकी मुष्टि धन्य याकी सुष्टता ॥ ३१ ॥ धनुष चढाय वह कुंतीका पुत्र वेधविद्याविषैं प्रवीण निशाणा वेधता भया ॥३२॥ सब राजनि देख्या जो यह कार्य याहीसूं वनै जब यह कार्य भया तब द्रोपदी याके सुंदर कंठिविषैं अपने करकमलकरि वरमाला डारी ! सो वरमाला डालते समय मालाका तार टूट गया सो मालाके पुष्प चपल पवनकरि पांचू भाईनिपर आय पडे तब मूढ लोग कहते भये याने पांचों वरे वह महा सती अर्जुनकी स्त्री अर्जुनकूं वरकरि फूली वेलिसमान सोहती भई ॥३६॥ फिर अर्जुन सब राजानिके देखते द्रोपदीकूं माताके निकट लेय गया ॥ ३७ ॥ तब सब राजा युद्धके अभिलाषी भये सो द्रुपदने मनै किये तोहू न मानी अर युद्धकूं उद्यमी भये तब भीम अर्जुन अर धृष्टद्युम्न यह तीनों धनुषधारी तिन उनकूं आगे न आवने दिये ॥ ३९ ॥ अर धृष्टद्युम्न द्रोपदीका भाई अर्जुनसहित रथमें बैठा हुता अर्जुनकूं कही अब तुम भीष्म अर द्रोणसूं आपा प्रगट करो तब अर्जुनने अपने नामका पत्र लिखकरि बाणके बांधि द्रोणकी ओर भेजा सो वह बाण द्रोणकी गोदमें पडा पत्रमें अपना सब संबन्ध लिखा हुता सो वह पत्र ॥ ४० ॥ द्रोणकी गोदमेंसे उठाय अश्वत्थामा अर भीष्म अर

आवो तब भीम जायकरि मातासूं अर भाईसूं कही उनि आज्ञा दई तुम विवाह करो तब वृषभध्वजकी पुत्री वसानंदा ताहि परणिकरि वंदिसपुरमें डेढ महीना रहकरि नर्मदानामा नदीकूं तिरकरि विंध्याचल पर्वत गये, कैसे हैं पांचों भाई अनेकप्रकार राजक्रीडा तिनविषैं प्रवीण हैं ॥११॥ अथानंतर–संध्याकारनामा अंतरद्वीप ताविषैं संध्याकारनामा नगर ताविषैं राजा सिंहघोष राज करै सो राजा हिडंबके वंशविषैं उपजा है ॥ १२ ॥ ताकी सुदर्शनानामा रानी अर ताके हृदयसुंदरीनामा पुत्री ताहि त्रिकूटाचलका राजा मेघवेग याचता हुता सो सिंहघोषने न दई ॥१३॥ सिंहघोष निमित्तज्ञानीकूं पूछी कि मेरी पुत्रीका वर कौन होयगा। तब वानें कही यह मेघवेग विंध्याचलविषैं गदानामा विद्या साधै है सो वाहि जो हनेगा सो तेरी पुत्रीकूं वरेगा ॥१४॥ यह वृत्तांत जानि भीमसैन वहां गया वाहि सावधानकरि वासूं युद्ध किया सो ताहि मारकरि गदाके स्वामी भये ॥ १५ ॥ अर सिंहघोषकी हृदयसुंदरीनामा पुत्री परनी ताका दूजा नाम हिडंबसुंदरी हू कहै हैं महा उच्छवसूं इनका विवाह भया ॥ १६ ॥ वहुरि अनेक देश विहार करते यह प्रतापके पुंज हस्तनापुरनामा नगर तहां जायवेकी है इच्छा जिनकी ते पांडुपुत्र मार्गके वसतैं एक माकंदीनामा नगरी तहां गये सो वह नगरी देवपुरीसमान अर तहांके मनुष्य देवनिसमान ॥ १८ ॥ तहां राजा द्रुपद ताके रानी भोगवती अर धृष्टद्युम्न आदि पुत्र तिनकी शक्ति अनेक वेर सावंतनिके देखिवेमें आई ॥ १९ ॥ अर राजा द्रुपदके द्रोपदीनामा पुत्री सो रूप लावण्य सौभाग्य कला तिनकरि शोभित है शरीर जाका ॥२०॥ जासमान और सुंदरी नाहीं वह द्रौपदी स्त्रीनिकी सृष्टिमें अनुपम है ताके अर्थि सकल राजानिके पुत्र मनोरथ करैं अर सबनिहीके दूत याकी यांचनाके अर्थि आवैं जैसैं क्रूरग्रह दान यांचैं तैसैं सब याहि यांचैं ॥ २१ ॥ तब राजा द्रुपद मनमें विचारी या कन्याकूं सबही यांचैं मैं कौनकी प्रार्थना भंग करूं तब राजाने स्वयंवर रच्या अर सब राजपुत्र बुलाये अर सबनिकूं यह लिखी जो राजा वेध वींधै सो कन्याकूं वरै ॥ २२ ॥ यह वात सुनि द्रोपदीरूप ग्रहके वस भये कर्ण दुर्योधनादि सब ही राजा द्रुपदकी माकंदीनामा नगरी आये सो राजानिका समूह भेला भया एक सुरेंद्रवर्द्ध-

भया जो तुम बारह वर्षका राज्य हारें सो तुम सब भाई यहां मत रहो ॥ ३ ॥ जहां तिहारा नाम न सुनिये तहां जाओ। हे युधिष्ठिर! जो तुम सत्यवादी हो तो बारहवर्ष प्रछन्न रहो ॥४॥ ऐसा दुर्योधनने कहा तब यह धर्मात्मा सकल सामग्री तजि चारों भाईनिसहित बारह वर्षकी अवधिकर नगरतैं निकले जब पांचो भाई निकले तब द्रोपदीहू प्रेमकी भरी अर्जुनके पीछे चली जैसैं चांदनी चंद्रमाके साथही रहै तैसैं यह हू अर्जुनके साथ चली पांडवनिने विचारी अपने कृष्णका आश्रय है सो उन्हींपै चलैं ॥ ६ ॥ यह पांचो भाई महा धीर नरकुंजर गमनकरि कालांजना नाम बनी तहां गए ॥ ७ ॥ सो असुरीद्वीपनामा नगरतैं आयकरि सुतारनामा विद्याधर कुसुमावली नामा अपनी स्त्री ताके सहित वनीमें रमैं है यह सुतारनामा विद्याधर प्रकीर्णक नामा विद्याधरका पुत्र अर याकी माताका नाम आसुरी सो वनमें सावरनामा विद्याकरि भीलका भेष किए कामिनी सहित क्रीडा करै। अर कामिनी हू भीलनिका भेष किए सो उस विद्याधरकूं अर्जुनने जानी यहहू महाधनुषधारी है अर वानैं अर्जुनकूं देखकरि जाना यह महा बाणबली है ॥ १० ॥ सो परस्पर तत्काल इन दोऊनिके महायुद्ध भया दिव्य जे बाण तिनकरि दशूं दिशा आच्छादित होय गई बहुरि वह दोऊ बाहुयुद्ध करिवेकूं उद्यमी भए सो महाबली अर्जुनने वा बलवान विद्याधरके उरस्थलविषैं एक मुष्टिप्रहार किया सो एक ही मूकीसूं वह भूमिमें गिर पड्या अर आप दयालुचित्तसे खडे होय रहे ॥ १२॥ वाकी कुसुमावलीनामा स्त्रीने पतिकी भीख मांगी तब वाहि सीख दई सो नमस्कारकरि विजयार्द्धगिरिकी दक्षिणश्रेणीविषै गया॥ १३ ॥ अर यह धीर चले चलैं मेघदलनामा नगर गए तहां राजा सिंह ताके कनकमेखलानामा रानी ॥ १४ ॥ अर तिनके पुत्री कनकावती सो अत्यंत रूपवान महासुंदरी अर ताही नगरमें एक मेघनामा वणिक ताके अलका नामा स्त्री वाके लक्ष्मीकांता नामा पुत्री सो राजकन्या ॥ १५ ॥ अर सेठकी कन्या यह दोऊ कन्या निमित्तज्ञानीके कहिवेतैं इनकी माताने भीमसेनकूं देनी विचारी हुती सो भीमसेन भेष पलटि भिक्षाके अर्थ तिनके पास गया सो पुण्यके योगकरि भीखमें यह दोऊ कन्या

ही मिलीं ॥ १६ ॥ तहां कैयक दिन सुखतैं विश्राम करि यह पुरुष प्रधान कौशलनामा देश गए तहां हू सुखतैं कैयक दिन रहि रामगिरि नामा पर्वत गए तहां राम लक्ष्मणके कराए जिनेंद्रके चैत्यालय चांद सूर्य समान दैदीप्यमान सैकडों रतनमई अकृत्रिम चैत्यालय सारिखे सुंदर श्रीरामचंद्र कराए तिनकी शोभाका कहा कहना जहां निरंतर नानादेशके अनेक भव्यजन आवैं अर वंदना करैं सो पांडवके पुत्र तहां पूजाकरि प्रभुकी स्तुति करते भए। ता पर्वतविषैं लतामंडप महामनोज्ञ ताविषैं अर्जुन द्रोपदीसहित क्रीडा करता भया जैसैं श्री श्रीराम सीता सहित रमे ॥ २१ ॥ याभांति स्वइच्छा विहार करि यह पुरुषोत्तम सुखसूं ग्यारहवर्ष पूर्ण विहार करते भए काहूके जानिवेमें नहीं आये जो यह पांडव हैं अर इनके सुखमें अंतर न पड्या, कैसे हैं यह पांचो भाई धन्य है अर मान्य है चेष्टा जिनकी। अथानंतर—एक विराट नामा नगर तहां राजा विराट ताकी सुदर्शना नामा स्त्री ॥ २३ ॥ तहां यह पांडव अपना आपा छिपाय रहे युधिष्ठिर तो पंडित होयकरि रह्या अर भीम रसोईदार होयकरि रह्या अर अर्जुन नृत्यकारी होय रह्या अर नकुल सहदेव अश्वनिके शालिहोत्री होयकरि रहे अर द्रोपदी मलिन होय रही यह राजा बिराटके सन्मान योग्य होयकरि रहे ॥ २४ ॥ यथायोग्य अपने विनोदकरि यह सुखसूं काल व्यतीत करैं प्रमादरहित है मन जिनका ॥ २५ ॥

अथानंतर—एक चूलिकानामा नगरी तहां चूलिक नामा राजा ताके विकचा नामा रानी फूले कमल समान है मुख जाका ताके सौ पुत्र ॥ २६ ॥ तिनमें बडा कीचक सौ भाइनिमें वडा अर दुराचारिनिमें वडा जाके रूपमद यौवनमद चातुर्यता मद अर शूरवीरताका मद अर द्रव्यका मद ऐते मदनोंकरि उन्मत ॥ २७ ॥ सो राजा विराटकी रानी सुदर्शना कीचककी बहन सो यह बहनसूं मिलवेके अर्थि विराटपुर आया वाने द्रोपती देखी सो देख करि कामासक्त भया पापी यह न जाने जो यह महासती है ॥ २८ ॥ कैसी है द्रोपती महा सुगंधित है शरीर जाका ताके तनकी सुगंधताकरि दशूं दिशा सुगंधित होय रही। अर रूप लावण्य सौभाग्य गुणकरि पूरित है

शरीर जाका ॥ २९ ॥ ताके दर्शन मात्र ही कीचक महामानी हुता तौ हू वाका मन द्रौपदीसूं तन्मय भया दीनता के भावकूं प्राप्त भया वा पापीने अनेक उपायकरि लोभ दिखाया अर आपहू रागके वचन कहे अर औरनि हाथ कहाये सो याके मनमें कुछ हू न आई ॥ ३१ ॥ वह महासती जाके परपुरुष तृणसमान वा दुष्टके आग्रहविशेषतैं द्रोपती वाहि मिथ्या वार्ता करि विश्वास उपजाय आयकरि सब वृत्तांत अपने जेठ भीमसेनसूं कह्या ॥ ३२ ॥ तब वह महाधीर रात्रि समय द्रोपतीका भेषधरि वा पापीने जहां संकेत किया हुता तहां एकांतविषैं गया सो वह महा मदनातुर याहि द्रोपती जानै शीघ्र ही आया जैसे स्पर्श इंद्रीके विषकरि अंध गंधहस्ती खाडमें पडिवेकूं आवै तैसे द्रोपदी जानि भीमके निकिट आया सो भीमसेनने दोऊ भुजानिकरि वाका कंठ ही पकड्या ॥३४॥ अर वाहि भूमिविषैं पिछाडा अर पायनसूं मसल्या अर मुष्टि प्रहारकरि हन्या जैसैं गिरिपर वज्र परै तैसे कीचकपर भीमकी मुष्टि पडी वह परदारारत कामी कुशीलका अभिलाषी वाहि अन्यायका फल दिखाय छोड दिया जे दयावंत उज्ज्वल चित्त हैं वे ऐसे पापीकूं हू न मारैं सब जीवनिपर है दयालु चित्त जिनका ॥ ३६ ॥ वह कीचक पापका फल प्रत्यक्ष देखि विषयसूं विरक्त भया एक रतिवर्द्धननामा मुनि तिनके समीप जायकरि मुनिव्रत आदरे भावनकी शुद्धतातैं वह शास्त्रका श्रद्धानी भया अर बारह भावनाकर शुद्ध रत्नत्रयका आराधन करता भया ॥ ३८ ॥ अर कीचकके भाई सौ तिन कीचककूं न देख्या तब जाना या द्रोपतीके कारणतैं हमारा भाई मारा गया सो हम द्रोपतीकूं अग्निमें जलावेंगे सो याके जलावेकूं उन पापीनिने अग्नि प्रज्वलित करी सो भीमसेन यह वार्ता जानि वे सौ हू वाहि अग्निमें भस्म किए । ४०॥ वह सौ हू महा उद्धत महा बलवान महा सुभट हुते परंतु अकेले भीमने सब मारे जैसे एक सिंह अनेक गजनिका प्रहार करै ॥ ४१ ॥

अथानंतर—वह कीचक जो मुनिभया सो वनविषै पर्यंकासन धर ध्यानारूढ तिष्ठता हुता सो एक यक्षने देख्या ॥ ४२ ॥ तब यक्षनैं विचारी यह द्रोपतीपर आशिक भया हुता सो अब देख याके वैराग्यविषै कैसी दृढता है सो

मुनिके चित्तकी परखके अर्थ यक्षने अर्धरात्रिके समय द्रौपतीका रूप दिखाया मदन करि उन्मादरूप ॥ ४३ ॥ सो साधु वाके शब्द सुनिवेकूं वधिर समान होयगए अर वाकारूप देखवेकूं अंध समान होय गए रूप महा मनोहर अर विलासका भरा परंतु अंधा कहा देखै अर महा सुंदर शब्द शृंगार रसके भरे परंतु वधिर कहा सुनै ॥ ४४ ॥ कैसे हैं कीचकनामा मुनि वश किए हैं इंद्रियनिके समूह जिनने अर शुद्ध भया है मन जिनका। वाही समय कीचकनामा मुनिकूं केवलज्ञान उपज्या तव यक्षदेव मुनिकूं नमस्कारकरि क्षमा कराय पूछता भया हे प्रभो! द्रौपतीसूं आपके मोहका कारण विना कारण ऐसा मोह न उपजै ॥ ४५ ॥ तव कैयक पूर्वभव आपके अर द्रौपदीके यक्षकूं कीचक यति कहते भए यक्ष नमस्कारकरि हाथ जोडि विनयवान हुवा सुनै है ॥ ४८ ॥ मुनि कहै हैं हे यक्ष! यह तरंगिनी नामा नदी जामें वेगवतीनदीका मिलापभया है सो तरंगिनीनामा नदीके तीरमें महा दुष्ट क्षुद्रनामा म्लेच्छ हुता सो महा पापी गरीव जीवनिका वैरी ॥ ४९ ॥ सो साधुके दर्शनसूं मैं शांत भया अर मरकरि उत्तम मनुष्य भया। तहां मेरा नाम कुमार देव भया। अर धनदेव नामा मेरा पिता अर सुकुमारिका नामा मेरी माता सो वह पापिनी आहार विषै मुनिकूं विष देय मारती भई सो मुनि हत्याके पापकरि नर्कविषैं महादुःख भोगि तिर्यंच भई वहुरि नर्ककूं गई वहुरि तिर्यंच भई या भांति अनेक जन्म नर्क अर तिर्यंचके लहे ॥५२॥ अर मैं कुमार देव ताका पुत्र सो म्लेक्षतैं मरिकरि उत्तमकुल तो पाया परंतु यतीके तथा श्रावकके व्रत न धारै सो अव्रतके योग तैं अनेक भवविषै भ्रमण किया ॥ ५३ ॥ वहुरि एक सित नामा तापस ताके मृगसंगिनी नामा तापसनी ताके मैं मधुनामा पुत्र भया सो तापसीनिके आश्रमविषै वृद्धिकूं प्राप्त भया ॥ ५४ ॥ वहुरि एक विनयदत्त नामा मुनि जिनकूं काहू महाभाग पुरुषने आहार दान दिया ताके पंचाश्चर्यका अतिशय देखकरि मैं मुनि भया वहुरि स्वर्ग लोक गया तहांतैं चयकरि कीचक भया ॥५५॥ अर कुमारदेवकी पर्यायविषैं मेरी सुकुमारिकानामा माता चिरकाल संसार भ्रमण करि दुर्भगा दुर्गंधा अनुमतिकानामा मनुष्यणी भई अर महा दुःखकी भोक्ता सो आर्याके व्रतधारि

निदान सहित तप किया ताके प्रभावकरि देवयोनि पाय द्रोपती भई सो अनेक भवविषैं यासूं मेरे अनेक संबंध भये। काहू जन्ममें यह माता भई कबहू बहन भई कबहू पुत्री भई कभी प्रिया भई तातैं मेरा यातैं मोह भया यह कथा कीचक मुनिने यक्षकूं कही सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक! या संसारचक्रके परिभ्रमणविषैं संयोग अर वियोग अवश्य होय माता मरिकरि बहन होय बेटी होय अर स्त्री होय अर स्त्री मरि माता होय बहन होय बेटी होय यह संसार चक्रका चरित्र है ॥ ५९ ॥ ऐसी संसार चक्रकी विचित्रिता जानिकरि भव्यजीव वैराग्यकूं अंगीकार करि मोक्षहीके अर्थि महातप करिवेका यत्न करहु कैसे हैं भव्य संसारके कारणतैं निवृत्त भई है बुद्धि जिनकी ॥ ६० ॥ या संसारके इंद्रादिकपदके महासुख हू जिनकूं तुच्छ भासै है इत्यादि कीचक मुनिके वचन सुनि वह यक्षदेव अपनी देवनि सहित सम्यक्तरूप रत्नाभरणकरि आपकूं शोभित करता संता गुरूनिकूं नमस्कारकरि धीर्यकरि संयुक्त अपने धाम गया ॥ ६२ ॥ अर कीचकनामा मुनि देव मनुष्य अर विद्याधर तिनके समूहकरि पूजनीक हैं चरण जिनके सो अंतर बाह्य तपकरि महा धैर्यके धारी लोकविषैं जिनमार्गका प्रबल प्रकाश करि परमपदकूं प्राप्त भए। वह परमपद अविनश्वर है सो आत्मशुद्धताकरि पाइए है।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कीचकनिर्वाणगमनवर्णनोनाम षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४६ ॥

अथानंतर—कीचकके सौ भाईनिका वृत्तांत सुनिकरि दुर्योधन मनमें विचारता भया ऐसे कार्य पांडव विना न होवें बारहवर्षमें कैयक दिन घटै हैं सो जानिये है वे विराटपुरमें हैं सो नगरके गो महिषी आदि ग्रहण किये वे प्रगट होहिं यह क्षत्रीनिका विरद है कोऊ दुर्जन बालक तथा स्त्री तथा गऊ आदि पशुनिका ग्रहण करै तासूं युद्ध करै उनकूं छुडावै अथवा उनके अर्थि अपना जीव देय यह मनमें विचारिकरि हस्तिनापुरतैं दुर्योधनादि सौ भाई विराटपुर आय गौ ग्रहण करते भये तब पांचों भाई उनपर चढे बारहवर्ष की अवधिहू पूर्ण भई जैसैं भली

नय दुर्नयके निवारिवेकूं उद्यमी होय तैसैं पांडव तिनके जीतिवेकूं उद्यमी भये दुर्योधनसूं युद्धके अर्थि पांचों प्रयाण करते भये । जैसैं मुनि कर्मनिके समूहतैं लडिवेकूं सावधान होय जैसैं वर्षाविषै मेघजलकी धारा वरषै अर दशों दिशाकूं आच्छादित करैं तैसैं यह पांचों बाणवृष्टिकरि दिशानिकूं आच्छादित करते भये गाधांरीके सौ पुत्र दुर्योधनादिक इनका युद्ध देखिकरि अति प्रसन्न भये ऐसे योधा जगतमें नाहीं ॥ ५ ॥ तब दुर्योधन बहुरि एकता विचारता भया तब युधिष्ठर निर्मलबुद्धि महाधीर उनकी बात न मानी अर उनपर द्वेषहू न विचारता हुवा भीष्म द्रोण दुर्योधनादि सबनिसूं क्षमा कराय माता कुंतीसहित अर सकल भाईनि सहित दक्षिणकी दिशि चाले ॥ ७ ॥ सो मार्गमें विंध्याचलके वनविषैं विदुरनामा मुनि तप करते हुते-सो तिनकूं युधिष्ठर सब भाईनि सहित नमस्कारकरि स्तुति करता भया ॥ ८ ॥ हे पूज्य ! तिहारा जन्म कृतार्थ है जो सकल परिग्रह तजकरि जिनेश्वरके मार्गविषैं तिष्ठे महातप करो हो यह जिनभाषित मुनिका धर्म मोक्षका मार्ग है याजिनधर्मविषैं निर्मल सम्यग्दर्शन तत्वार्थश्रद्धानलक्षणरूप अर सर्व अर्थका प्रकाश करणहारा सम्यक्ज्ञान अर सब पापरहित सम्यक्चारित्र सोहै है पंचमहाव्रत तीन गुप्ति पांच समिति पंच इंद्रीनिका निरोध अर कषायनिका जीतना अर संयमका धारना या जैनमार्गविषैं है ताविषैं प्रवर्तैं तुम सारिखे साधु शीघ्रही सिद्धपद पावै हैं ॥११॥ या भांति जिनमार्गकी अर साधुनिकी स्तुतिकरि बहुरि मुनिकूं बंदि पांडुके पुत्र माता अर द्रोपदीसहित द्वारिका गये ॥ १२ ॥ सर्व भाईनि सहित राजा युधिष्ठरकूं आये जानि यादव सन्मुख गये अर नगरविषैं महा उछाह भया बहन अर भाणजेनिका आगमन भया अर चिरकालमें आये सो समुद्रविजयादि दशूं भाईनिके परम आनंद भया अर प्रथमही पांडव श्रीनेमिनाथका दर्शनकरि बहुरि समुद्रविजयादि अपने मामानिसूं मिले बलदेव वासुदेव आदि दशूं भाईनिके पुत्र महासुंदर तिनसूं मिले अर मांहि सब अंतःपुरकी रानी नानी मामी आदि तिनसूं मिले अर द्वारिका नगरीकी रचना देखि अति प्रसन्न भये ॥ १४ ॥ अर इनके दर्शनकरि सबनिकूं आनंद भया परस्पर सज्जननिका मिलाप सुखका कारण है ॥

अथानंतर—कृष्णने पांचों भाईनिकूं रत्नमयी पांच मंदिर रहिवेकूं दिये तिनविषैं सर्व भोग सामग्री तिनविषैं यह पांचों भाई निवास करते भये। अथानंतर—समुद्रविजयादि दशूं भाई इनकूं अपनी पांच पुत्री परणावते भए सो युधिष्टर लक्ष्मीमति परणे अर भीम सेखवती परणे अर अर्जुन सुभद्रा परणे अर नकुल विजया परणे अर सहदेव रति परणे ॥ १८ ॥ देवनि सारिखे वे पांचो भाई देवांगना समान यह इष्ट कन्या तिनकूं परणकरि इन सहित सुखसूं रमैं ॥ १९ ॥ यह पांडवनिकी कथा हे श्रेणिक ! तोहि संक्षेपरूप कही अब कृष्णके पुत्र प्रद्युम्नका चरित्र तोहि कहूं हूं सो सुनि ॥ २० ॥ एक विजयार्द्धगिरिविषैं मेवकूटनामा नगरमें काल संवरनामा राजाके घर प्रद्युम्न सकल कला अर गुण तिनकरि वृद्धिकूं प्राप्त भया जैसे चंद्रमा वढता थका समुद्रकी वृद्धि करै है तैसे प्रद्युम्नकुमार बढताथका बंधुवर्गकी वृद्धि करताभया।२१। विद्याधरनिके उचित जे विद्या आकाशगमनादि सो विद्याधरनिके पुत्र सहित सीखता भया शीघ्रही या महा उद्यमीकूं सकलविद्या सिद्ध भई ॥ २२ ॥ वल्यावस्थाहीतैं लेयकरि याके रूप लावण्य सौभाग्य पुरुषार्थकी वृद्धि भई सो अपनेरूप लावण्यताकरि नर नारीनिका मन हरता भया वाके गुण छिपैं नाहीं। अथानंतर—कुमार यौवनकूं प्राप्त भया सर्व शास्त्र विद्याविषैं प्रवीण सो यह कुमार अपने गुणनिकरि नर नारिनिका मन हरता सबनिका वल्लभ भया भावार्थ—जो काहूका कछु हरे है सो अभावणा लागै है अर यह मन हरताहू वल्लभ भया ॥२४॥ एते नाम कहि लोक याका यश कहते भए मन्मथ, मदन, काम, कामदेव, मनोभव, अनंग सुंदर अंग इत्यादि अनेक नाम याके प्रसिद्ध भए ॥ २५ ॥

अथानंतर—एक सिंहरथनामा राजा सो राजा कालसंवरतैं परांगमुख तापर राजाने अपने पांचसौ पुत्र विदा किये हुते सो तिनकूं वानैं जीते तब राजाकूं वाके जीतवेकी चिंता भई तब प्रद्युम्न राजातैं विदा होय वा पर गये। सो वाहि पकडकरि कालसंबरपर ले आये, अर कालसंवरकूं दिखाया जो यह शत्रु तिहारे पांयन आया है यह पुत्रका पराक्रम राजा देखिकरि अति प्रसन्न भया अर मनमें जानी यह पुत्रके प्रतापकरि मैं दोऊ श्रेणीका

अधिपति होय चुक्या जो दोऊ श्रेणीमें गर्भवंत होयगा वाहि यह जीतिवे समर्थ है महा राज्यपद है उदार फल जाका ऐसा पुहुप समान युवराजपद सो राजा याहि दिया अर याके सिर पट्ट बांध्या, सो प्रद्युम्नका प्रताप देखि पांचसौ भाई कालसंवर राजाके पुत्र सर्वथाप्रकार याका नाश चिंतवते भये सो वह छल ढूंढिनविषैं तत्पर आसनविषैं शय्याविषै वस्त्रविषैं तांबूलविषैं अथवा खानपानविषैं घात किया चाहे सो काहू ठौर याहि छलि न सकै ॥ २९ ॥ वे मायाचारी अर यह निष्कपट महा विनयवान याके सवसूं हित सो वह याहि सिद्धायतननामा द्वार तहां ले गये ॥३०॥ अर इन सवने कही जो शीघ्रही या द्वारपर चढ़ै सो यहांके निवासी देवतें विद्याका भंडार अर मुकुट पावै ।३१। सो यह वहां गये अर ता देवने वही वस्तु भेंट करी वहुरि उनके कहेतें महाकालनामा गुफामें गये तहांके निवासी देवने खडग, खेट, छत्र, चमर भेंट किये। वहुरि नागगुफामें गये तहांके देवने सिंहासन अर नागशय्या अर विद्यारूप जे देवी तिनकूं प्रसन्न करणहारी वीणा भेंट करी ॥३३॥ वहुरि एक विषम वापिका तहां प्रद्युम्न गया। सो वहांके देवने युद्ध किया सो युद्धविषैं वाहि जीत्या सो वानैं मगरके चिन्हकी ध्वजा भेंट करी अर अनेक वस्तु दई वहुरि अग्निकुंडविषैं प्रवेशकरि अग्निकूं मथी तहांका देव दास होय युगलवस्त्र भेंट करता भया ॥ ३४ ॥ वहुरि मींडाके आकार दोयगिर तिनविषै प्रद्युम्न प्रवेश किया सो दोनों कुंडल अर मुकुट अर अमृतवाला अतिउज्ज्वल तहांके मर्कटनामा देव तानैं भेंट करी वहुरि कपित्थनामा वनमें गये सो वहांके देवने विद्यामयी हस्ती दिया अर वाल्मीकनामा वनविषै गये तहांके देवन क्षुद्रघंटिका अर वस्तर अर मुद्रिकादि आभूषण दिये ॥३६॥ अर सरावनामा पर्वतविषैं वहांके देवने कटिसूत्र हार अर कडे अर केयूर अर कंठाभरण एती वस्तुकी प्राप्ति भई ॥ ३७ ॥ वहुरि सूकरनामा असुर ताथकी दिव्य शंख अर धनुष इनकी प्राप्ति भई अर एक मनोवेगनामा विद्याधर सो काहू शत्रुने कीलाहुता ताहि प्रद्युम्नकुमारने छुडाया ताथकी मोतिनिका हार अर इंद्रजालकी प्राप्ति भई ॥ ३९ ॥ अर मनोवेगका शत्रु एक वसंतनामा विद्याधर ताथकी कन्या अर नरेंद्रजाल अर पुष्पधनुष इतनी

वस्तुकी प्राप्ति भई अर भवनाधिपनामा देवने प्रद्युम्नकूं पांच बाण दिये तिनके नाम उन्मादकर मोहकर संतापकर मदकर शोककर ॥ ४० ॥ बहुरि प्रद्युम्नकुमार एक नागगुफा है तहां गये सो ताका अधिष्ठाता पार्थिवनामा देव तानैं चंदनकी अर अगरकी माला अर पुष्पनिका छत्र अर पुष्पशय्या इतनी वस्तु भेंट करी ॥ ४१ ॥ बहुरि दुर्जयनामा बन जाविषैं एक जयंतनामा गिरि ताविषैं वायुनामा विद्याधर ताके सरस्वतीनामा स्त्री ताकी रतिनामा पुत्री सो प्रद्युम्न कामदेव परण्या ॥ ४२ ॥ यही सोलह स्थानक विघ्नके कारण लिनविषैं प्रद्युम्न अनेकलाभ लेयकरि निकस्या सो याके लाभ देखिकरि वह पांचसौ भाई अचरजकूं प्राप्त भये ते संवरादिक पांचसौ कालसंवरकेपुत्र प्रद्युम्नकुमारके पुण्यका माहात्म्य जानिकरि याकी अतिप्रशंसा करते भए अर याके साथ अपने नगर आए ॥ ४४ ॥ पाया है देवोपुनीत दिव्यरथ जानैं अर जुपे हैं महाउज्वल वृषभ जाके तापर आरूढ अर देवोपुनीत पुष्पनिका धनुष जाके हाथमें अर पांच बाण देवोपुनीत अर छत्र ध्वजा अर दिव्य आभरण यह सब देवोपुनीत तिनकूं धरे प्रद्युम्न कामके बाणकरि स्त्रियनिका मन वेधता अर सब नगरका मन हरता मेघकूटनगरमें आया सैकडों राजकुमार हैं संग जाके ॥ ४६ ॥ सो आयकरि कालसंवर पितासूं प्रणाम करता भया सो राजा देखिकरि अति हर्षित भया अर जानी याही छविसूं यह मातापै जाय तो वह हू अति प्रसन्न होय तब याहि आज्ञा करी हे पुत्र! तू अपनी जननीके निकट जावहु। तब यह पिताकीआज्ञातैं उसी छविसूं मातापर आया ॥४७॥ सो नेत्रकूं पथ्य समान महामनोहर अद्भुत आभूषण पहिरे अनुपम है रूप जाका सो दूर हीतैं रथऊपर चढे प्रद्युम्नकुमारकूं देखिकरि कनकमालाके कुछ और ही भाव होय गए ॥ ४८ ॥ बहुरि यह महा विनयवान रथतैं उतरि कनकमालाके पांयन पड्या तब याकी अति प्रशंसाकरि गोदीमें लिया अर याका मस्तक चूम्या, अर अपने कोमल करपल्लवनिकरि याका अंग स्पर्श्या मुख स्पर्श्या ॥ ४९ ॥ बहुरि महामोहके उदय वाका मन परवस होय गया सो हृदयरूप भूमिकाविषै खोटे मनोरथ प्रवर्ते ॥ ५० ॥ ताका मन विकारने खैंच्या सो मनमें

चिंतवे है जो स्त्री एक बार सेजविषैं अपने अंगकरि याके अंग स्पर्शें है सो धन्य है अर वाहीका जन्म सफल है या संसारविषैं एक वही स्त्री है और स्त्री कहिवे मात्र हैं ॥ ५१ ॥ रूप लावण्य सौभाग्य चतुराई आदि अनेकगुण या प्रद्युम्नमें हैं, सो एक क्षणमात्रहु या कामदेवका मिलाप मोहि होय तो या समान दुर्लभ पदार्थ नाहीं या भांति प्रवर्त्या है असंभाव्य संकल्प जाके ताहि प्रणामकरि प्रद्युम्न अपने घर आया वह विद्याधरी प्रद्युम्नके मिलापके लाभका है मनोरथ जाके सब क्रिया भूल गई न खान न पान न स्नान न संस्कार सबही विसर गई तब वाके शरीरकी असमाधानी जानि प्रद्युम्न देखिवे गए सो ताका तन कमलिनीके पत्र समान कोमल मुरझाया देख्या अर वाके देहकी दाहकरि पुष्प अर पल्लवनिकी सेज कुम्हलाई देखी तब वाहि शरीरकी असमाधिका कारण पूछ्या। तब वाके अंगकी चेष्टाकरि मनकी विपरीतता जानी तब कर्मनिकी चेष्टाकूं निंद्यकरि वाहि माता अर पुत्रका संबंध कहिवेकूं तत्पर भए ॥५७॥ तब वानैं आदि मध्य अर अंततक सब कथा कही तोहि उद्यानविषैं पाया अर महारूपवान जानि बढाया सो याही अर्थि जो यह यौवनवान होयगा तब हमारे मनोरथ पूरेगा सो याकारण तेरे यत्न किए अर आकाशगामिनी विद्याका तोहि लाभ भया ॥५८॥ यह वार्ता वाके मुखकी सुनिकरि यह जिन मंदिरविषैं सागरचंद्रनामा मुनि हुते तिनपै गया तिनका दर्शनकरि प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछे तब स्वामी सब कहे अर कनकमाला पूर्वभवविषैं चंद्राभा हुती अर यह राजा मधु हुता सो सब वृत्तांत मुनिने प्रद्युम्नकुमारकूं कह्या ॥ ६० ॥ अर मुनि कही गौरी अर प्रज्ञप्ती विद्या भी वह तोहि देगी यह वार्ता सुनि यह धर्मात्मा शील ही है धन जाके सो वाके पास गया सो वह देखिकरि हर्षित भई अर यासूं कही हे मदन ! तू सुनि जो तेरी इच्छा है तो गौरी अर प्रज्ञप्ति विद्या लेहु ॥ ६२ ॥ तब यानैं कही मेरी इच्छा है कृपाकरि भिक्षा देवोगे तो मैं लूंगा यह कही तब वह दुराचारिणी विधिपूर्वक यह दोऊ विद्या प्रद्युम्नकुमारकूं देती भई। तब यानैं हाथ पसार विद्या ली अर वह हर्षित होय कुछ और भावना करती भई तब वाहि कही तुम मेरी प्राणदाता तातैं माता अर विद्याके दानतैं मेरी

गुरु ॥ ६४ ॥ या भांति कहि नमस्कार करि आगैं खडा अर नया है मुकुट जाका अर जोडी है आंजुली जानैं नमस्कारकरि अपने स्थानकूं गया ॥६५॥ तब वानैं जानी यानैं मोहि छली सो महा क्रोधके वशतैं वक्षस्थल अर कुच नखनिकरि विलूरे ॥६६॥ अर अपने धनीकूं अंग दिखाया अर कही प्रद्युम्नकी यह चेष्टा देखो मैं तो तुमको वाही दिन कही हुती जो यह पराया पूत अपना कैसे होयगा सो तुम न मानी अब यह चरित्र देखहु मेरा शील मैं नीठ राख्या है ॥ ६७ ॥ यह वार्ता त्रियाकी सुनिकरि वह विवेकहीन एकांतविषैं अपने पांचसौ पुत्रनिकूं आज्ञा करता भया जो यह प्रद्युम्न दुराचारी है याहि शीघ्र ही मारो। तब वे पापी पिताकी आज्ञा पाय प्रसन्न भए अर याहि आदरसहित कालांबुनामा वापिकामें लेगए ॥ ६९ ॥ वहां जायकरि प्रद्युम्नकुमारसूं कहते भए। जो आपां या वापी विषैं जलक्रीडा करैं। यह विचारचा पहिले वापिकामें यह पडै पीछे आपां पांचसौ यापर पडैं अर मारिवेकी है इच्छा जिनके तब प्रज्ञप्तीविद्याने याके कानमें कही यह शत्रु हैं इनतैं सावधान रहना जैसी उनके मनमें हुती तैसी विद्यादेवीने कही। तब यह आप तो अंतर्ध्यान होय वापिकाके तीरपर बैठ्या अर अपना मायामई शरीर बनाय वापिकामें प्रवेश कराया वे जानैं वापिकामें प्रद्युम्न पड्या तब पांचसौ भाई निर्दई वज्रपातकी तरह याके ऊपर एक साथ पडे ॥ ७२ ॥ सो मारिवेकी है इच्छा जिनकी सो कुमार तो वापीके तीरही हुते इनकूं दुष्ट जानि सबके नीचे मुख अर ऊपर पांवकरि वापिकाविषैं लटकाए अर वापिका ऊपर एक अजूहशिला मेली जो वह निकलि न सकै अर चारसौ निन्यानवेकूं तौ या भांति टेरे अर एक पंचचूडनामा उनका भाई ताहि न लटकाया अर वाहि पिताके निकट पठाया सो वानैं जाय सब वृत्तांत कह्या सो सुनिकरि राजा अति क्रोधायमान हुवा अर आप बखतर पहरि सकल शस्त्र बांधि सेनासहित कालसंवर प्रद्युम्नकुमारपर आया तब प्रद्युम्नकुमारने विद्याके प्रभावकरि मायामई सेना रची सो महा युद्ध भया केतीक देरमें कालसंवर भाग्या वाकी इच्छा भंग भई तब घर जाय कनकमालापर गौरी अर प्रज्ञप्ती विद्या मांगी जो वे विद्या देहु जो शत्रुका निपात करैं तब

वह पापिनी कहती भई जो वे दोऊ विद्या तो मैं वा दुराचारीकूं बाल्यावस्थाहीमें दई ॥ ७६ ॥ तब वानैं जानी यह स्त्री दुराचारिणी है। यानैं पुत्र हू मोतैं खोया अर विद्याहूं मोतैं खोई ऐसा जानि वह महामानी पाछा जाय कुमारसूं युद्ध करता भया तब कुमारने याकूं बांध्या ॥ ७७ ॥ ताही समय नारद आए सो महाप्रवीण तब प्रद्युम्न उठिकरि नमस्कार किया अर बहुत स्तुति करी नारदने सब संबंध कह्या अर कही घरकूं वेगि चालि यह वृत्तांत सुनि प्रद्युम्न नारदकी लारही द्वारिका जायवेकूं उद्यमी भया। ताही समय कालसंवरकूं बंधनतैं छोड्या अर क्षमा कराई अर पांयन पड्या बारंबार नमस्कारकरि कहता भया तुम मेरे पिता हो मैं तिहारा बालक हूं मेरा अपराध क्षमा करो बहुरि माता कनकमालापै जायकरि क्षमा कराई जो पूर्वकर्मके वशकरि जीवनके अनेक अपराध उपजे हैं सो मैं तिहारा पुत्र हूं मेरे दोष क्षमा करहु ॥ ७९ ॥ अर वे चारसौ निन्यानवै भाई वापिकामें गिरे हुते तिनके छुडावनेका उपाय कोऊ न जानता हुता सो कुमार सब उपायका वेत्ता उनकूं छोडकरि बहुत क्षमा कराई। उनसूं भाईपनेका बहुत स्नेह जनाया ॥ ८० ॥ बहुरि कालसंवरतैं आज्ञा मांगी जो पुत्र तो मैं तिहारा हूं परंतु कृष्ण अर रुक्मिणीके मेरे देखिवेकी बहुत अभिलाषा है सो तुम आज्ञा करो तो मैं मिलि आऊं ॥ ८१ ॥ अर याही भांति माता कनकमालासूं कही अर मातापिताकूं प्रसन्नकरि बारंबार प्रणामकरि उनकी आज्ञा पाय नारदके साथ विमान पर आरूढ होय आकाशके मार्ग द्वारकाकी ओर चाल्या ॥८२॥ सो मार्गमें नानाप्रकारके कथा करते चले जांय। हस्तिनापुरका राजा दुर्योधन ताकी पुत्रीकूं कृष्णके पुत्रकूं परणायवेके अर्थ लावते हुते सो वाके लार बडी सेन्या हुती सो मार्गविषैं बनीके मध्य वह सेन्या प्रद्युम्नने देखी तब नारदसूं पूछी हे पूज्य! यह सेन्या कौनकी पश्चिम दिशिकी ओर किस अर्थ जाय है, याभांति कामदेव पूछी तब नारदने कही हे प्रद्युम्न! यह कथा मैं तोहि संक्षेप मात्र कहूं हूं ॥ ८५ ॥ एक कुरुवंशका आभूषण राजा दुर्योधन युद्धविषैं शत्रुनिकरि न जीत्या जाय सो हस्तिना-पुरविषैं राज्य करै है ॥ ८६ ॥ तानैं यह प्रतिज्ञा करी हुती जो रुक्मिणी अर सत्यभामा दोऊके गर्भ है सो कृष्णके

बडा पुत्र होय ताहि मैं अपनी पुत्री परणाऊं सो तुम दोऊ एक साथ भए सो तेरी बधाई कृष्णपै पहिले गई सो तोहि बडा ठहराया बहुरि सत्यभामाके बधाईवारे गए ॥ ८८ ॥ अर धूम्रकेतुनामा असुर जाय था सो रुक्मिणीके मंदिरपर ताका विमान अटक्या तब तोहि शत्रुजानि वह ले गया। तब रुक्मिणी खेदखिन्न भई अर सत्यभामा हर्षित भई ॥ ८९ ॥ सो तेरे आयवेकी वार्ता तो दुर्योधन जानै नाहीं यातैं अपनी उदधिकुमारीनामा पुत्री भानु-कुमारके अर्थि भेजी है अर यह मांग तो तेरी है बडा पुत्र तो तू है सो यह बडे राजाकी पुत्री है यातैं याकी रक्षाके निमित्त बडी सेना लार है ॥ ९१ ॥ यह वार्ता सुनिकरि नारदकूं आकाशविषैं थापिकरि कुमार पृथिवीविषैं उतर्‍या सो महा विकराल भीलका रूपधरि मार्ग रोककरि सेनाके अधिकारीनिकूं कही जो कृष्णने या वनकी जगात हमकूं दी है सो तुम देयकरि जावो। तब कैयकनिने कही याहि घेर देहु अर कैयकनिने कही अपने कहा कमी है यह हू अर्थी है कुछ ले जाहु तब याकूं पूछी तुम कहा मांगो हो तब भील कही जो सेनाविषैं सारवस्तु है सो लूंगा। तब काहूने कही सबमें सार तो कन्या है तब यह बोला जो सार है सो देवो। तब इनने कहा तू कन्या मांगै सो तू कृष्णका पुत्र नाहीं। तब यानैं कही हम कृष्णहीके पुत्र हैं। तब सेनामें जे समझदार पुरुष हुते तिनने कही यह बैंडा है याहि घेर देहु। तब धनुषकी अणीकरि याहि सावंतनि डराया अर वे चलिवेकूं उद्यमी भये ॥ ९६ ॥ तब प्रद्युम्नने मायामई भीलनिकी सेना रची ताकरि दुर्योधनकी सेना जीती अर कन्याकूं लेय-करि नारदके निकट आय बैठे अर कन्याकूं अपना दिव्यरूप दिखाया सो कन्या कामदेवका रूप देखि मोहित भई अर भयरहित तिष्ठी अर नारदने कन्याकूं सर्व वृत्तांत कहे जो तू याकी मांग है। यह कृष्णका बडा पुत्र है तब वह महा प्रसन्न होय विश्रामकूं प्राप्त भई ॥ ९८ ॥

अथानंतर—महाशीघ्रगामी जो विमान तापरि चढे कुमार नारदसहित द्वारिका आये। कैसी है द्वारिका मनोहर है द्वार जाका ॥ ९९ ॥ सो प्रद्युम्न दूरहीतैं द्वारिकाकूं देखिकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भये समुद्र ही है कोट

जाके अर गोपुर कहिये दरवाजे अर बुरज तिनकरि शोभित है ॥१००॥ अर नगरके बाहर भानुकुमारकूं देख्या जो अश्वनिका अभ्यास करै अर नानाप्रकारके अश्व खरीदै सो विमान बैठे प्रद्युम्नने भानुकुमारकूं देख्या तब विमानतैं उतरि एक महामनोहर मायामई तुरंग रच्या अर आप वृद्धका रूपधरि अश्वनिके व्यापारी भये अर अश्वकूं भानुकुमारके निकट ले गये। सो वह अश्वपर आरूढ भया अर अश्व महा मनोहर ॥२॥ सो भानुकुमारने अश्वकूं दौडाया सो अश्व भानुकुमारके वश न रह्या अपनी इच्छाकरि पाछा वृद्धके निकट आया ॥३॥ तब भानुकुमार तुरंगतैं उतरि वृद्धकूं कह्या तुरंग वदलगाम है चढिवे योग्य नाहीं तब वृद्ध हंस्या अर कही तुम राजकुमार तुरंगहूकी असवारी न जानो देखहु मैं वृद्ध हूं जो कोई मोहि चढाय दे तो मैं तुमकूं अश्वके गुण दिखाऊं तब याहि अश्वपर चढाया सो अश्वकूं भलीभांति नचाया दौडाया अश्वके गुण दिखाये अर उतरिकरि कुंवरकी ताली देयकरि बहुत हास्य करी। कुंवर बहुत खिसाना पर्‌या बहुरि वृद्धका रूप दूरकरि मायामई मर्कट अर मायामई तुरंग बनाये तिनकरि सत्यभामाका उपवन विध्वंस किया। बहुरि सत्यभामाकी वापिका आए सो मायाकरि वापी निर्जल करी अर मांखी मांछर डांस तिनकरि विरूप करी अर नानाप्रकारकी क्रीडाकरि लोकनिकूं आश्चर्य उपजाया अर मीढानिके युद्धकरि कृष्णका पिता वसुदेव ताहूसूं क्रीडा करी ॥८॥ बहुरि सत्यभामाके घर नगरके लोग न्योते हुते सो मायाकरि लडाये। ऐसी माया करी जो वे परस्पर यष्टि मुष्टि आदि उपकरणनिकरि भिडे अर उठि गये वह आहार सब आप अकेला भोजन कर गया। बहुरि वमनकरि सत्यभामाका सब मंदिर मलीन किया ॥९॥ यह क्रीडाकरि बहुरि मायामई क्षुल्लकका भेषकरि माता रुक्मिणीके घर आया सो कृष्णके खायवेके सब लाडू खा गया अर माताकूं आश्चर्य उपजाया बहुरि माताके सिरके केश लेयवेकूं सत्यभामाकी नायण आई सो मायाकरि उनहीके सिरके केश मूंडे तब वे सत्यभामापर गई सो सत्यभामा उनका वृत्तांत देखि बलदेवपर पुकारी तब बलदेव रुक्मिणीके कृष्णकी हिमायत जानि याके तिरस्कार करिवेकूं आपही

रुक्मिणीके घर आये सो प्रद्युम्न वृद्धका रूपकरि रुक्मिणीकी पौलिमें पसरया सो बलभद्र टांग पकडि घसीटने लगे सो टांग वधती चली गई। तव बलदेव जानी यह देवमाया है तव वे उठि गए इत्यादि अनेक चरित्र लोकनिकूं अचरजके उपजावनहारे प्रद्युम्न उपजाए सो कहांतक कहें ॥ ११ ॥ अर प्रद्युम्नके आगमके चिन्ह जो सीमंधरस्वामी नारदकूं कहे हुते सो सब भए। रुक्मिणीके कुचकलश दूधसूं भरि गए अर झरने लगे अर जितने चिन्ह कहे हुते ते सब भये तब माताने जानी सोलह वर्ष होय चुके सो मेरा पुत्र यहां रूप पलटि आया है ॥ १३ ॥ ताही समय प्रद्युम्नकुमार संपूर्ण माया संकोचि अपना निजरूप प्रगट करि माताकूं प्रणाम करता भया ॥ १४ ॥ तब माता आनंदकी भरी पुत्रकूं उरतैं लगाय समस्त दुःख विस्मरण करती भई अर तत्काल माताके हर्षके आसूं पडे सो आंसूं न पडे मानूं सब दुःख शरीरके निकसि गये अर पुत्रके दर्शनरूप अमृत करि सींच्या रुक्मिणीका शरीर मानूं रोमांचके मिसकरि स्नेहके अंकुर ही धारता भया ॥ १६ ॥ वहुरि माताके अर पुत्रके परस्पर कुशलका पूछना भया अर माता पुत्रसूं चित्तकूं आनंदके दायक वचन गहती भई। हे पुत्र! धन्य है वह कनकमाला विद्याधरी जानैं तेरी बालक्रीडाके सुख देखे ॥ १८ ॥ तव पुत्र प्रणामकरि मातासूं कहता भया हे माता! मैं तोहि सर्व बालक्रीडा दिखाऊं हूं तू देखि यह वचन पुत्रने मातासूं कहे। कैसा है पुत्र जाहि देखि नेत्रनिकूं आनंद उपजै ॥१९॥ वाही समय तत्कालका जाया बालक होय गया वहुरि एक दिनका होय गया अर नानाप्रकारके विनोद दिखाए वहुरि अंगूठा चूखने लगा अर फूले हैं नेत्रकमल जाके ॥ २० ॥ बहुरि दूध चूंखणा होय माताके आंचल चूंखने लगा वहुरि उरकरि चालने लाग्या वहुरि थणी करने लाग्या बहुरि माताकी आंगुरी पकडि मणीनिके आंगनमें चलने लाग्या वहुरि रजमें लोटि माताके कंठविषैं लाग्या। वहुरि तोतला बोलने लग्या। जाके सुनै आनंद उपजै वहुरि रोने लग्या हंसने लग्या। वारंवार मुलकै इत्यादि मनोहर बालक्रीडाकरि माताके मनोरथ पूर्ण किए अर कही जा समय तू कहै जैसा ही होय जांऊं तव

माता अति प्रसन्न भई बहुरि सोलहवर्षका कुमार होय गया अर माताकूं नमस्कारकरि कही मैं कहूं सो करहु माताकूं उठाय करि आकाशमें लेगया। यादवनिकी सभाके ऊपर जाय कहता भया। अहो यादव भूपति हो! तुम सर्व देखो हो अर तिहारे देखते मैं लक्ष्मीसमान कृष्णकी प्रिया रुक्मिणीकूं ले जाऊं हूं तुम राखिवे समर्थ हो तो राखो ऐसा कहि शंख बजाया। रुक्मिणीकूं नारद अर उदधिसुंदरीके निकट विमानमें थापि आप युद्धके अर्थि तिष्ठ्या तब सब यादव युद्धके अर्थि द्वारिकातैं निकले चतुरंग सेना सहित अर सर्व आयुध ही हैं आभूषण जिनके सो प्रद्युम्नने अपनी विद्याके बलकरि सर्व यादवनिकी सेना मूर्छित करी अर आप हरिसूं चिरकाल युद्ध किया सो कृष्णके सर्वशस्त्र पुत्रने विफल करि डारे तब कृष्ण बाहुयुद्ध करिवेकूं उद्यमी भए अर प्रद्युम्न हू उद्यमी भया॥ ३०॥ तब नारद विमानतैं नीचे उतरिकरि दोऊ योधानिकूं युद्धतैं निवारचा अर पिता पुत्रका संबंध प्रकट किया॥ ३१॥ तब प्रद्युम्नने प्रणाम किया अर कृष्णने पुत्रकूं उरसूं लगाया आनंदके अश्रुपातकरि नेत्र भरि आए॥ ३२॥ अर कृष्ण बहुत असीस दीनी प्रद्युम्नने मायाकरि यादवनिकी सेना मूर्छित करी हुती सो उठाई सब यादव प्रद्युम्नको देखिकरि अति प्रसन्न भए अर प्रद्युम्न सब बांधवलोकनि सहित द्वारावतीमें प्रवेश करता भया॥३३॥ रुक्मिणी अर जामवन्ती यह दोऊ पुत्रके आगमनका अति उछाह करती भई इन दोऊका एक चित्त है प्रद्युम्नपर दोऊनिका विशेष हित है॥ ३४॥

अथानंतर—सबही काकी बडिया माईनिका है मान्य जाके ऐसा प्रद्युम्न सो श्रेष्ठ राजकन्यानिसूं विवाहके आरंभविषैं कृष्ण रुक्मिणीकूं कहिकरि कालसंवर अर कनकमालाकूं बुलावता भया सो याके विवाहविषैं मेघकूटपुरतैं कालसंवर अर कनकमाला दोऊ आए प्रद्युम्नका उदधिसुन्दरी आदि अनेक कन्यानितैं विवाह भया विवाहविषैं जे मातापिताके करिवेके कार्य हैं सो सब प्रद्युम्नके कहेतैं कृष्ण अर रुक्मिणीने कालसंवर कनकमालासूं कराए अर उनकूं कही या प्रद्युम्नके मातापिता तुमही हो अर तिहारा ही पुत्र है या भांति उनसूं बहुत हित जनाया

अर प्रद्युम्न अनेक राजकन्या परणीं पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावकरि अद्भुत सुख भोगता भया जिनेंद्रका उत्तम मार्ग ताकरि उपज्या है निर्मल भाव जाके ॥ ३६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कुरुवंशनिरूपण प्रद्युम्नमातापितासमागमवर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४७ ॥

अथानंतर—संबुकुमारकी अर सुभानुकुमारकी उत्पत्ति कही है सो सुनहु। गौतमस्वामी कहै हैं हे श्रेणिक! यह कथा चित्तकी हरणहारी है ॥ १ ॥ राजा मधुका छोटा भाई कैटभ सोलहवें स्वर्ग देव हुता ताकी आयु तहां व्यतीत भइ सो ताने केवलीकूं पूछ्या मैं कहां उपजूंगा तब केवली कही तू कृष्णका पुत्र होयगा अर तेरा बडा भाई भी तिनहीके उपज्या है सो वह देव कृष्णपै आय महा मनोहर हार देता भया, यह हार तुम जा रानीकूं दोगे वाके मेरा जन्म होयगा सो कृष्णके जीवमें यह, जो मैं यह हार सत्यभामाकूं दूं अर यह वाके पुत्र होय सो यह वार्ता रुक्मिणी सुनी अर पुत्रकूं कही जो यह पुत्र जांबुवतीके होय तब प्रद्युम्न मायाकरि जांबुवतीकूं सत्यभामाका रूपकरि कृष्णपै पठाई सो कृष्ण जांबुवतीकूं सत्यभामा जानि वह हार दिया सो वह सोलहवें स्वर्गका देव जांबुवतीके गर्भविषैं आया बहुरि सत्यभामा हू गई तब वाहूकूं निकट बुलाई ताके कोई और देव गर्भमें आया यह दोऊ रानी गर्भवती भई ज्यूं ज्यूं उनके गर्भ वढै त्यूं त्यूं माता पिता अर सब कुटुम्बकूं आनंद बढ़ता भया जैसे चंद्रमाकी वृद्धिविषैं समुद्रकी कलोल वृद्धिकूं प्राप्त होय जब नव मास संपूर्ण भये तब जांबुवंतीके वह देव पुत्र भया ताका संबुकुमार नाम धरया अर सत्यभामाके पुत्र भया ताका नाम सुभानुकुमार भानुकुमारसूं छोटा। रुक्मिणी अर जांबुवती यह दोनों प्रद्युम्नकुमार अर संबुकुमारकरि हर्षित भई अर सत्यभामा भानुकुमार अर सुभानुकुमार इन दोनों पुत्रनकरि अति प्रमोदरूप भई ॥ ८ ॥ अर हरिकी और हू स्त्रीनिविषैं पुत्र भये सो सर्व यादवनिके हृदयकूं आनंदके करणहारे महा सत्यवादी पराक्रमी यशके धारी होते भये ॥ ९ ॥ संबुकुमार अर सुभानुकुमार ये

दोऊ समानवय नानाप्रकारकी क्रीडा करैं सो सब क्रीडानिमें सुभानुकुमारकूं जीतै। संबुकुमार महा पराक्रमी देवनकी न्याईं क्रीडा करैं ॥ ११ ॥ अथानंतर—रुक्मिणी प्रद्युम्नके अर्थि अपने भाई रुक्मकुंवरकी पुत्री जांची सो वाने न दई वह इनकूं न चाहै पूर्वला विरोध तब माताकी आज्ञातैं प्रद्युम्न अर संबुकुमार ये दोऊ भीलका भेष धरि तहां गये अर रुक्मकुंवरकी कन्या हरी वह छुडायवे आया तब वाहि जीति कन्याकूं ले आये सो वह कन्या साक्षात् लक्ष्मीसमान ताहि परणकरि कृष्णका पुत्र द्वारिकाविषैं अद्भुत भोगनकरि रमै ॥१४॥ अर संबुकुमार एक दिन सुभानुकुमारकूं द्यूतक्रीडामें जीता अर ताहीसमय जीतका सकल धन याचकनिकूं दिया बहुरि जो जो क्रीडा होय तामें संबुकुमार जीते, पंछीनकी क्रीडा मीढानिकी क्रीड़ा हिरणनिकी क्रीडा सुगंधकी परख रागकी परख अर तुरंग आदि सबकै क्रीड़ाविषैं संबुकुमार ही जीते। कृष्णकी सभाविषैं संबुकुमारकी जीतकी प्रशंसा होय एक दिन युगल वस्त्र संबुकुमारने आंगनमें धोयकर पहिने अर दिव्य अलंकारकी रचनाविषैं संबुकुमार जीत्या ॥ १७ ॥ संबुकुमारका बल देखि कृष्ण अति प्रसन्न भये संबुकुमारकूं कही तू वर मांगि तब वाने एक महीनेका राज मांगा हरिने दिया। सो एक महीनेका राज पाय संबुकुमार अन्यायमार्गविषैं प्रवर्त्या ॥ १८ ॥ तब केशवने पकडि याहि नगर बाहिर काढ्या सो प्रद्युम्नकी मायाकरि कन्याका भेष धरि बनविषै रहै अदभुत कन्या बनी अर सत्यभामा बनमें गई हुती सो याका रूप देखि चकित होय गई याहि पूछी तू कौन है। तब याने कही मैं विद्याधरकी पुत्री हूं तब सत्यभामा याहि रथमें चढाय नगरमें लेय आई ॥ १९ ॥ सुभानुकुमारके परणायवेकी है इच्छा जाके सो संबुकुमार नगरमें आया सत्यभामा अपने पुत्रके अर्थि जे बड़े बड़े राजानिकी पुत्री आई हुती ते बलात्कार परन्या अर अपना रूप संबुकुमार प्रगट दिखाया एकही रात्रविषैं सैकड़ों कन्या परणकरि माताकूं सुख उपजाया ॥ २१ ॥ ता पीछे सत्यभामा आदि कृष्णकी सब राणीनिके सैकडां राजकुमार सैकडां राजपुत्री परने अर इंद्रसमान क्रीडा करते भये ॥ २२ ॥ एक दिन संबुकुमार कृष्णके पिता जो वसुदेव तिनके निकट

जाय विनोदकी वार्ता कहता भया। पितामहसे प्रणामकरि पोता कहता भया हे पूज्य! तुम तो चिरकाल बहुत परिभ्रमणकरि विद्याधरनिकी पुत्री परणी अर मैं तो बिना खेद ही अपने घरमें बैठे एक रात्रिमें सौ परनीं सो तुममें अर मोमें बड़ा अंतर ॥ २५ ॥ तब वसुदेव कही हे वत्स! तू तो बाणकी न्याईं पराया प्रेर्या चालै है अर चलाया भी ग्रहमें आय पडे है। सो तोमें अर हममें बडा अंतर हम तो विजयार्द्ध गिरिरूप सागरके मगर मच्छ अर तू द्वारकारूप कूपका मींडक वृथा ही आपकूं पराक्रमी मानै है ॥ २७ ॥ जे हम विद्याधरनके पुरविषैं देखी सुनी अर अनुभवी सो औरनिकूं दुर्लभ ऐसे वसुदेवने कह्या तब संबुकुमार कहता भया। हे पूज्य! जो जो चरित्र तुमने देखे अर किये अर अनुभवे ते सब सुनिवेकी मेरी इच्छा है आप कृपाकरि मोकूं कहो ॥ २९ ॥ तब वसुदेवने कही आनंदभेरी दिवाय अर सब भाईनिकूं भेलेकरि यादवनिके समीप मैं मेरा चरित्र कहूंगा तब संबुकुमारने सब यादव एकत्र किये तिनके समीप वसुदेव अपना सब वृत्तांत कहता भया ॥ ३१ ॥ प्रथम ही वसुदेवने लोक अर अलोकका स्वरूप कह्या बहुरि हरिवंशकी उत्पत्ति अर ताविषैं यदुवंशका प्रगट होना तामैं राजा अंधकवृष्टिके दश पुत्र दशार्ह तिनिमें वडे समुद्रविजय अर छोटा मैं सो सौर्यपुरके लोगनिके कहिवेतैं मेरा गमन भया। सो सौ बर्षमें बडे भाईसूं मिल्या विजयार्द्धगिरिके अपने सब चरित्र कहे अर बलदेव वासुदेवकी उत्पत्ति कही अर श्रीनेमिजिनका जन्म अर प्रद्युम्न संबुकुमारकी उत्पत्तिपर्यंत सब कथा कही ॥३३॥ जा समय वसुदेव निजकथा कही ता समय सबही यादव अर सबही रानी समुद्रविजयादि सब भाई अर सब भाईनिकी रानी अर वसुदेवकी सब रानी विद्याधरी सब सुनिकरि अति हर्षित भईं। सब विद्याधरीनिकूं अपने अपने सब चरित्र स्मरण भए ॥ ३४ ॥ सभामें बाल वृद्ध तरुण स्त्री पुरुष सब हुते। यदुवंशी, भोजवंशी अर पांडव यह सब कथारूप अमृतरसका पानकरि वसुदेवकी प्रशंसा करते भए माता शिवदेवी आदि सब ही रानी रुचिकरि वसुदेवकी कथा सुनि इनके सौभाग्यकी प्रशंसा करती भई राजा तो अपने अपने स्थानकूं गए अर रानी अपने अपने स्थानकूं गईं बडे बडे विश्वासभाजन करैं हैं रक्षा जिनकी।

भावार्थ—राजलोककी रक्षा या भांति है बडी बडी समझदार स्त्री उनपर रहै हैं, अर बुद्धिवान खोजानिका प्रवेश है अर ड्योढीके दरोगा बडे इतवारी पुरुष हैं ॥ ३७ ॥ बसुदेवकी कथा पुरानी पडी हुती सो दिन दिन घर घरविषैं ऐसी प्रवर्ती मानूं नवीन कथा है। आश्चर्यमय वसुदेवकी कथा सवनिकूं अनुरागरूप होती भई ॥ ३८ ॥ बहुरि राजा श्रेणिक नमस्कारकरि गौतमस्वामीसूं पूछते भये हे प्रभो ! इन यादवनिके कुमारनिका कथन मोहि कहो द्वारकाविषैं कितने कुमार क्रीडा करते भये ॥ ३९ ॥ तब गौतम गणधर कहै हैं हे श्रेणिक ! तू सुनि राजा उग्रसैनके पुत्र घर अर गुणधर युक्तिक दुर्द्धर सागरचंद्र अर उग्रसैनका काका शांतनु ताके पुत्र महासेन, शिवी, अस्वस्त, विशद, अनंतमित्र ॥ ४१ ॥ अर महासेनका पुत्र सुखेणाहृदिक विषमित्र अर सिवीका पुत्र सत्यक अर हृदिकका पुत्र कृतिधर्मा द्रढधर्मा अर सत्यका पुत्र वज्रधर्म अर वज्रधर्मका पुत्र असंग ॥४२॥ अर समुद्रविजयके पुत्र महासत्य दृढनेमि अरिष्टनेमि रथनेमि सुनेमि जयसेन महीजय सुफल्गु तेजसैन मयमेघ सिवनंद चित्रक अर गौतमादिक ॥ ४५ ॥ अर समुद्रविजयतैं छोटा अक्षोभित ताका पुत्र उद्धदवच्छ क्षुभितवारिधि अम्भोधि जलधि कामदेव दृढव्रत ॥४६॥ अर तीजा भाई स्तिमितिसागर ताके पांच पुत्र उर्मि-मान वसुमान वीर पाताल स्थिर ॥४७॥ अर चौथा भाई हिमवत ताके तीनपुत्र विद्युत्प्रभ माल्यवान गंधमादन। ये सबही सत्यवादी अर महा पराक्रमी ॥ ४८ ॥ अर पांचवां भाई विजय ताके छः पुत्र अकंपन बलियुगंत केसरी धीमान अलंबुष ॥ ४९ ॥ अर छठा भाई अचल ताके सात पुत्र महेंद्र मलय सह्यगिरि शैलनग अचल यह हैं नाम जिनके ॥ ५० ॥ अर सातवां भाई धारण ताके पांचपुत्र वासुकाय धनंजय कर्कोटिक शतमुख विश्व-रूप ॥ ५१ ॥ अर आठवां भाई पूर्णचंद्र ताके चार पुत्र दुःक्रूर, दुर्दर्शी, दुर्द्धर, दुर्मुख,। यह चारों अति चतुर ॥५२॥ अर नवमा भाई अभिचंद्र ताके छः पुत्र चंद्रमा समान है उज्वल कीर्ति जिनकी तिनके नाम चंद्र, शशांक, चंद्राभ वा शशी, सोम, अमृत, प्रभ ॥ ५३ ॥ अर दशमां भाई वसुदेव ताके पुत्र बहुत अर सबही महा बलवान

तिनमें कैयकनिके नाम कहूं हूं सो हे श्रेणिक ! तू सुनि, रानी विजयसेना ताके पुत्र दो–अक्रूर अर क्रूर अर श्यामाके पुत्र दोय एक ज्वलन दूसरा अनिलवेग ॥ ५४ ॥ अर गंधर्वसेनाके पुत्र तीन, मानूं तीनलोक ही हैं। एक वायुवेग दूसरा अमितगति तीजा माहेंद्रगिरि अर पद्मावतीके पुत्र तीन–दारु वृधार्थ अर दारुक ॥ ५६ ॥ अर नीलंयशाके पुत्र दोय सो महाधीर, एक सिंह दूजा मतंगज। अर सोमश्रीके पुत्र दोय—एक नारद दूजा मरुदेव। अर मित्रश्रीके पुत्र सुमित्र कपिलात्मज अर दूजी पद्मावती ताके पुत्र दोय एक पद्म अर दूजा पद्मांक। अर अश्वसैनाका पुत्र एक–अश्वसैन अर प्रौढाका पुत्र पौंड्र अर रत्नावतीके पुत्र दोय एक रत्नगर्भ दूजा सुगर्भ ॥५९॥ अर सोमदत्तकी पुत्री ताके पुत्र दोय एक चंद्रकांत दूजा शशिप्रभ अर वेगवतीके पुत्र दोय एक वेगवान दूजा वायुतेज ॥ ६० ॥ अर मदनवेगके पुत्र तीन–दृढमुष्टि अनावृष्टि हिममुष्टि यह तीनों भाई कामदेव समान सुंदर ॥ ६१ ॥ अर बंधुमतीके पुत्र दोय बंधुषैण अर सिंहसेन अर प्रियंगुसुंदरीका पुत्र एक शीलायुध ॥ ६२ ॥ अर प्रभावतीके पुत्र दोय एक गांधार दूजा पिंगल अर जरानामा रानीके पुत्र दोय १ जरतकुमार दूजा वाहीक ॥ ६३ ॥ अर अवंतीनामा रानीके पुत्र तीन सुमुख दुर्मुख, महारथ अर रोहिणीनामा रानीके पुत्र तीन वलदेव सारण अर विदुरथ यह तीन पुत्र अर वालचंद्रा नामा रानीके पुत्र दोय एक वज्रदंष्ट्र दूजा अमितप्रभ अर देवकीका पुत्र कृष्ण इत्यादि वसुदेवके पुत्र कहे अर वलभद्रके पुत्र बहुत तिनमें कैयकनिके नाम उन्मुंड, निषध, प्रकृतिद्युति, चारुदत्त, ध्रुव पीठ, शक्रदमन, श्रीध्वज, नंदन, धीमान, दशरथ, देवनंद, निष्पात. विद्रुम, शंतनु ॥ ६७ ॥ पृथु सतधनु नरदेव महाधनु इत्यादि महाबलवान वलदेवके पुत्र पृथिवीमें प्रसिद्ध होते भए ॥ ६८ ॥ अब कृष्णके पुत्रनिके नाम सुनिए–प्रथम भानु, सुभानु, भीम, महाभानु, सुभानुक, वृहद्रथ, अग्निशिख, विष्णुसंजय ॥ ६९ ॥ अकंपन, महासेन, धीर, गंभीर, उदधिगौतम, वसुधर्मा, प्रसेनजित ॥ ७० ॥ सूर्य, चंद्रवर्मा, चारुकृष्ण, विश्रुत, सुचार, देवदत्त, भरत, शंख ॥ ७१ ॥ प्रद्युम्न, संबु इत्यादि केशवके पुत्र शस्त्र शास्त्रविद्याके अभ्यासी युद्धविषैं प्रवीण

होते भए ॥ ७२ ॥ तिनके पुत्र पौत्र अर सब यादवनिके कुमार अर भानजे अर भूवाके पुत्र सब ही साढे तीन क्रोड गिनिवेमें आए ते सबही कुमार यशवंत महापराक्रमी अर कामदेव समान क्रीडा है प्रिय जिनकूं सो द्वारिकाविषैं नानाप्रकारकी क्रीडा करैं ॥ ७४ ॥ तिन कुमारनिकरि वह द्वारावती कैसी सोहै जैसी नागेंद्रकी पुरी नागकुमारनिकरि सोहै है, ये कुमार नानाप्रकारके भेष धरे सुंदर वस्त्राभूषण पहिरे सुगंधकरि मंडित प्रचंड हैं चरित्र जिनके सो हाथीनिपर चढे तुरंगनि चढे रथनि चढे अर नानाप्रकारके नर बाहन तिनपर चढे महा योधा प्रजाकूं प्रमोद उपजावनहारे नगरीमें प्रवेश करैं अर निकसैं तिनकरि वह पुरी देवपुरी समान सोहती भई ॥७५॥ बाहुल्यताकरि वह यादवनिके पुत्र स्वर्गलोकके चये वीतरागके मार्गके आचरणहारे उदार है पुन्यका उदय जिनके अर गावने योग्य है यश जिनके तिनका यह चरित्र या ग्रंथविषैं गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कह्या तिन उत्तम कुमारनिका चरित्र जे मनुष्य बुद्धिमान एकाग्रचित्तकरि सुनैं अर श्रद्धा करैं ते इह लोक परलोकविषैं सुखके भाजन होंय अर उनकी कुमारवय अर यौवनवय धर्ममें व्यतीत होय विषयवासना न उपजै ॥ ७६ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यदुकुलकुमारोदेशवर्णनोनाम अष्टचत्वारिंशःसर्गः ॥ ४८ ॥

अथानंतर—मधुसूदन कहिये कृष्ण तिनकी बहन यशोदाकी पुत्री जो इनकी एवज यशोदाके घरतैं ल्याये हुते अर देवकीके वृद्धि भई सो अब यौवन अवस्थाकूं प्राप्त भई ताका नख शिख वर्णन करैं हैं वह महाश्रेष्ठ चंद्रमा समान निर्मल यशकी धरणहारी विस्तरया है नवयौवनका प्रचुर भार जाके ताहि धरे महा मनोहर गुणरूप आभूषणकरि शोभित ॥ १ ॥ कोमल हैं चरणकमल जाके बिनाही महावर आरक्त हैं पगथली जाकी अर समान है उन्नत भाग जाका अर नखरूप मणीनिके मंडल चंद्रमासमान प्रकाशरूप तिनिकरि सुंदर है अंगुलीरूप पल्लव जाके, जाके चरणनिकी उपमाकूं जगतमें वस्तु नाहीं अर लोक कमलनिकी उपमा चरणनिकूं

देहिं सो कमल कहा तातैं कमल लज्जाकरि मुद्रित होय हैं ॥२॥ अर जाके गूढ टकूणे अर मनोहर जानूं अर अत्यंत वर्तुलाकार रोमरहित अनुपम जंघा नितंबका भार सहिवेकूं असमर्थ जिनकी उपमा देवेकूं कोई वस्तु नाहीं ॥ ३ ॥ जाकी दोऊ जंघा अति कोमल वर्तुलाकार उज्वलकांति अर दीप्तिकूं धरे, शोभाकरि पूर्ण हाथीकी सूंड समान आकारकूं धरे लाठी समान गोल कदली समान कोमल लोक कहै हैं, सर्व उपमाकूं उलंघकरिके सोहती भई ॥४॥ बहुरि रसकरि सोहती पूर्ण वर्णरूप कुलाचलतैं उपजी आनंदकी उपजावनहारी पुण्य प्रकृतिरूप नदी ताके पुल- समान जघनस्थली जाकी अर तट समान नितंब जाके महा राजकुमाररूप जो राजहंस तिनकी है क्रीडा जहां ऐसी वह ॥ ५ ॥ सुंदर स्त्रीनिके मध्य अति सोहती भई तनुरूप वृक्ष ताके मध्य सूक्ष्म कोमल रोमनिकी पंक्ति सोई भई लता ताकरि वह अति सुंदर भासती भई मनोहर है छवि जाकी अर मनुष्यनिके नेत्रनिकूं सुंदर ऐसी निज नाभिकी गंभीरता ताकरि वह अति सोहती भई अर त्रिवलीकी सुंदरताकरि वह सुंदर स्त्रीनिके मध्य विशेष सोहती भई अर उरविषैं दैदीप्यमान सोलावानीके सुवर्णके कलश समान जे कुच तिनकूं धारती सोहती भई, कैसे हैं कुच स्याम है बीटली जिनकी अर अति कठिन हैं गोल हैं पुष्ट हैं, कुंभ तो जलकरि पूर्ण अर कुच पय ताकरि पूर्ण वे अमृतरस जो जल ताकरि पूर्ण झरै अर ये अमृतरस कहिये पय ताकरि झरैं अर कनकके कलस जलके भरे राजानिके पीवनेयोग्य तिनकरि मुहर होय है अर इनपर स्याम बीटली है सोई मुहर है ॥ ७ ॥ अर जाकी दोऊ भुजलता सिरसके पुष्पसमान मृदु अर मनोज्ञ है कांधे जाके अर करकमलकी प्रभाकूं धरे अति रमणीक पाटलके पल्लवसमान अरुण हथेली जाकी अर कंडीरके पुष्पसमान आरक्त है नखरूप पुष्प जाके ॥ ८ ॥ अर कठोरता रहित अति कोमल शंखसमान कंठ जाका अर अति सुंदर ठोडी अर किंदूरीके फलसमान अरुण हैं अधर जाके अर हंसतेमुख प्रसन्न है वदन जाका अर दैदीप्यमान कपोल कांतिकूं धरे अति निर्मल सोहते भए अर वक्र हैं भौंहैं जाकी अर मनोहर है ललाट जाका अर कमलदल समान विस्तीर्ण कर्णपर्यंत कटाक्षकूं धरै

उज्ज्वलता अर स्यामता अर अरुणताकूं धरै विशाल नेत्र महा तीक्ष्ण तिनकरि वह कन्या अति सोहती भई ॥ ९ ॥ जाके मुखकी उपमा न तो चन्द्रमाकूं न कमलकूं अर अति सुन्दर उज्ज्वल महा सघन दाडिमके कण समान सब समान मनोहर है दांत जाके अर सिरविषैं भ्रमरकी स्यामताकूं उलंघै ऐसे स्याम दैदीप्यमान सुगंध सचिकण लंबायमान वक्र अद्भुत हैं केश जाके अर हाथनिमें पायनिमें है मुद्रिका जाके अर कंकण नूपुर आदि चतुरदश आभरण तिनकूं शोभित करै ऐसा है सुंदर तनु जाका दैदीप्यमान अंग जाका उद्योत अर कोमल वस्त्र अर महा सुंदर पुष्पमाला पहिरे कनकहूतैं अति सुंदर शरीर जाका सो सब यादवकुलके वाल वृद्ध तिनके चित्तकूं वालक्रीडा करि हरै सब ही याकूं लडावें सब यादवनिकरि पाई है प्रतिष्ठा जानै सकल कला सकल गुणनिके समूह यामें बसते भए यह साक्षात् सरस्वतीसमान सोहती भई ॥ ११ ॥ या भांति या कन्याका सुखसे काल व्यतीत होय एक दिन यह दर्पणविषैं अपना मुखकमल देखती हुती सो चिपटी नासिका देखि लज्जावान होय संसारके भोगनितैं विरक्त भई ॥१२॥ एकदिन सुव्रतानामा आर्या नगरके बनविषैं आई जाके साथ आर्यिकानिका समूह सो यह कन्या वसुदेव अर देवकी आदि गुरुजननिकूं पूछकरि आर्यिकानिके दर्शनकूं गई सो नमस्कारकरि अपने पूर्वभव सुव्रतानामा आर्याकूं पूछती भई आर्यिका अवधिज्ञानकरि संयुक्त है सो याहि याके पूर्वभव कहें हे पुत्री ! तू पूर्वभव विषैं सोरठनामा देशविषैं मूढबुद्धि पुरुष हुती जा देशविषैं काहूका भय नाहीं अर तू पुरुषके शरीरविषैं अति रूपवान अर धनकरि पूर्ण जाहि काहूका अंकुश न हुता मदका भर्या अंध था जाके हृदयका ज्ञान नेत्रनिका ज्ञान महा उन्मत्त हुता सो वह ही अंध एक दिन गाडा भरे जाय था अर मार्गविषैं वनमें कोई एक महा मुनि मृत्तिकासन धरे हुते सो या मूर्खने कुछ न देखा सो मुनिके समीप होय गाडा काढ्या सो गाडाकी रगडकरि मुनिकी नासिका मसली गई परंतु वे मुनि महाधीर सो धीरताके योगकरि उनके मनविषैं कुछ भी खेद न भया ॥ १५ ॥ जो कदाचित् किसी जीवका विना जाने भी घात होय तो जीवघातके पापतैं नर्कविषैं निपात होय अर मुनिके घातका

कहा कहना या जीवके उपार्जें कर्म याकूं दुःखरूप फलै हैं जो एक वारहू काहू एक जीवका घात करै तो याका घात परवश अनेक बार होय अर जो एक बार हू काहूके अवयव भंग करै तो अनेक बार याके अवयव भंग होंय यह जिनेश्वरकी आज्ञा है जैसा करै तैसा भोगै जो वचनकरि मनकरि कायकरि परजीवकूं पीडा करै सो भव भवमें पीडा पावै अर जो प्रभुताके मदकरि किसीप्रकार परजीवका अपमान करै अर कठोर वचन कहै ताका भव भवविषैं अपमान होय जो परजीवनिकूं दुःख देवेविषैं चतुर होय सो चतुर्गतिविषैं दुःखही भोगैं ऐसा जनि जो विवेकी जीव हैं तिनकूं परवाधाकी निवृत्तिही करनी जो राज्य पावैं अर ऐश्वर्यता पावैं तौ हू काहूका पराभव न करना आपकूं अर परकूं हित होय सोही करना या संसार भ्रमणविषैं भ्रमते जे प्राणी तिनके सदा प्रवलताही नाहीं रहै है कबहुंक प्रबलसे निर्बल होय जाय हैं। अर कबहुंक निर्बलसे प्रबल होहि जाय हैं जो दुष्ट प्रबल होय निर्बलकूं पीडा करैं हैं जीवनिकूं दुःख दे हैं सो भव भवविषैं दुखी होय हैं ॥ १९ ॥ तातैं काहू हू प्राणीकूं दुःख न देना अर जो दुष्ट मुनिकूं उपद्रव करैं ताके पापका कहा पूछना वह महा पापी अनंतकाल कुगतिविषैं भ्रमण करैं हैं ते विना जाना प्रमादकरि गाडा चलाया फिर अति पश्चात्ताप किया अर मुनीसूं क्षमा कराई अर पापका प्रायश्चित्त किया तातैं नर्क न गया अर मनुष्यगति पाई परंतु पापके उदयकरि स्त्री जन्म पाया अर नासिका मसली गई. यह आर्याके वचन सुनि वह कन्या नमस्कारकरि वाही आर्याके समीप व्रत धारती भई। समस्त कुटुंबसूं मोह तजि घरका त्याग किया समस्त वस्त्र तजि एक श्वेत साडी राखी अर सिरके केशनिका लौंच किया आभूषण सब तजे अर अपने करकी आंगुलीनिकरि केश उखाडे सो मानूं सब पापही उखाडे पापहू श्याम केशहू श्याम सो यह आर्या परिग्रह तजती अर लौंच करती ऐसी सोही मानूं अशुभकी नाशक ही है। वह आर्या सफेद वस्त्र धरे ऐसी सोहती भई मानूं शरदकी नदीही है नदी तो कूल कहिये तट तिनकरि वेष्टित है अर यह दुकूल कहिये वस्त्र तिनकरि वेष्टित है अर नदी तो निर्मल जलकी भरी है अर यह निर्मल भावनिकी भरी

है ॥ २३ ॥ समस्त यादवनि करी है तपकी महिमा जाकी अर याके वयविषैं तपके भाव देखि सबही उत्तम जीवनिके यह भाव भये । जो नवयौवनविषैं तप धरै हैं सो धन्य हैं अर याहि देखि सब लोक ऐसी जानते भये जो यह रति है या धृति है या सरस्वती है ॥ २४ ॥ व्रत गुण संयम उपवासादि तपकरि वह दिन प्रति वढती भई अर बारह भावना कर भाया है भाव जानैं सो महा तपकी करणहारी आर्यकानिके संगमें गुणसंयुक्त वसै आगमविषैं लगाई है अपनी बुद्धि जानैं सकल आर्यकानिविषै है प्रशंसा जाकी ॥ २५ ॥ या भांति बहुत वर्ष तप करते व्यतीत भये । एक समय आर्यानि सहित यह विंध्याचल पर्वतके वनविषैं गई ॥ २६ ॥ अर अन्यहू संघ यात्राकूं जाय था सो रात्रिविषैं तीक्ष्ण हैं शस्त्र जिनके अर कठोर है चित्त जिनका ऐसे वनचर कहिये भील तिनि याकूं देखी यह प्रतिमा योगधरि बनविषैं तिष्ठती हुती सो भीलनि जानी यह कोई वनदेवी है । सो तापै वरदान मागते भये वे मूर्ख ऐसी प्रार्थना करते भये हे भगवती ! हम तेरे प्रसादसे आजकी दौडमें धन पावैं तो तेरी सेवा करें हम तेरे किंकर हैं । ऐसा मनोरथकरि वे पापी काहू पर दौडे सो मार्गविषैं माल लूट लिया । भीलनिके हाथ द्रव्य बहुत आया सो उन मूढनि जानी हमकूं देवीका वर भया । फिर बनमें आये सो प्रतिमा योग धरैं तिष्ठती हुती सो भीलनि देखी सो वह समाधि योगधरि तिष्टती हुती । बहुरि बनविषैं एक सिंह आया तानैं वह आर्या भखी सो समाधिमरणकरि स्वर्गलोककूं गई ॥ २९ ॥ जे सज्जन पुरुष हैं ते दुष्टके उपद्रवतैं साहस न तजैं वा सिंहके विकरार नख अर तीक्ष्ण डाढ अर विकट मुख तिनकी अणीकरि विदारा गया है शरीर जाका सो और अंग तो सिंह भख गया अर तीन आंगुली बची यह धर्मके प्रसादकरि स्वर्गलोक गई ॥ ३० ॥ अर सिंहके भखिवकरि याके शरीरका रुधिर गिर्‍या ताकरि पृथिवीतल आरक्त होय रहा था सो भीलनि जानी यह वरदाता देवता रुधिर प्रिय है अर याकी रुधिरसूं रुचि है ऐसा विचारि वे दुराचारी याकी तीन आंगुलीका त्रिशूल थापि याहि विंध्याचलवासिनी देवी जानि बनके महिष मारि वा स्थलकी पूजा करते भए । वह पापी किरात महाहिंसक रुधिर मांस

करि बलि देतेभए वह स्थानक इन दुष्टनि मलिनवस्तुकरि अपवित्र किया दुर्गंध किया जहां माखी भिणभिणाट करैं नेत्रनिकूं विषसमान वह स्थानक किरातनि किया अर चहुंओर दुर्गंध महाअपवित्र दीखै वह तो महादयावान धर्मकी आराधन हारी तपकरि स्वर्ग गई सब अपराधरहित जामैं कुछ दोष नाहीं अर दुष्ट भीलनिने खोटा मार्ग प्रगट किया सो यह भीलनिका मार्ग जे नर्कके जानहारे मांस आहारी हैं तिन अंगीकार किया अर भैंसा आदि पशु तिनकूं हणे हैं रुधिर पान करै हैं वह बधिक खोटी गतिके जानहारे हैं जिनके हाथमें त्रिशूल महा रुद्र-ध्यानी अभक्षके भक्षणहारे अयोग्य पान करणहारे वे ही कुगति न जांय तो अर कौन जांय। जे अनर्थी अवस्तु जो देवी ताहि देवत्व मानकरि हिंसा करै हैं भीतिमात्रविषैं त्रिशूलका आकार बनाय जो पशुकरि घात करै हैं वे नर्क निगोदमें पडे हैं जे सावंत परस्पर संग्रामकरि मरण मारण करै हैं तेहू शास्त्रके अनुसार शांतभाव-रूप नाहीं कषायरूप हैं तो दुर्बलके मारवेको कहा वात जे पापी वृथा दीन जीवनकूं मारै हैं ते करुणारहित पारधी महा घोर नर्कमें पडैं हिंसासमान अर अपराध नाहीं अर दयासमान कोई धर्म नाहीं काहूका छता हू अपराध एकांतविषैं अथवा सभाविषैं कोई कहै सो पापका बंध करै अर जो काहूका अनहोता दोप प्रगट करै सो तो नर्कगमनका कारण है ही यामें संदेह कहा। झूठहीकूं मूर्ख लोक सत्यकरि मानै हैं जो विकथाका कथन करैं मांसका भक्षण करैं महिषादिकनिका रूधिरपान करैं जिनके हाथमें त्रिशूल ते प्रत्यक्ष पापी हैं तिनमें बिवेक काहेका अर मद्य मांस रुधिरका आहार करैं या सामान विपरीत कहा यह भी मूर्खनिमें ज्ञान नाहीं। जैसैं एक गाडरी कूपमें पडे तो ताकी देखादेखी अनेक गाडरी कूपमें पडैं तैसैं कोई मूढ कुदेवनका सेवनहारा अवस्तु रूप जे कुदेव तिनकी सेवा करैं तिनकी देखा देखी अनेक मूढजन कुदेवनकी आराधना करैं सो या समान विप-रीत कहा वीतरागदेवका मार्ग परजीवकी दयाविषैं तत्पर जो आराध्या थका जीवनकूं अविनश्वर पद देय। अर कहां परजीविकी घातका निरूपणहारा अधर्म साक्षात् नर्क निगोदका कारण दुष्ट कुकवीनिका प्ररूप्या सो या कलि

कालविषैं दुराचारी जीवनिने धर्मकरि मान्या है ॥ ३७॥ देखो या कलिकालके चरित्र प्रथम तो इस समय न्यायवान धर्मात्मा राजा ही नाहीं अर कदाचित कोऊ बडा राजा कबहूं प्रजाके भाग्यकरि न्यायवान होय दुष्टलोकनतैं प्रजाकी रक्षा करै सोऊ कुकवीनिका प्रेरा मिथ्या शास्त्रके योगतैं महिष अर मींडा आदि पशुजीवनिका घात कुदेवनके आराधननिमित्त करै क्षत्रीनिहूके कुलमें दीन जीवनिका निपात करै तो भीलादिक नीच कुलकी कहा कथा क्षत्रीनिका कुल तो दीनबंधु दीनानाथ है। अर देखहु मूढ लोकनिकी मूढता जो काहू प्रकार कबहुक पूर्वोपार्जित कर्मके योगतैं कार्यकी सिद्धि होय तो मूढजन ऐसे मानै जो देवताके वरतैं यह कार्य सिद्ध भया तातैं मैं उनका आराधन करूं यह विचारि आयुधनिकरि जीवनिकूं मारि उनका रुधिर देवतानिकूं बलि दे हैं सो भव भवविषै दुःख भोगवे हैं पापी जीवनिके करुणा कहां अर करुणा विना सुगति कहां जो पापी रुधिरही देवो तो अपने अंगका क्यों न देहु अर अपना शिर छेदि बलि क्यों न देहु अर देवता तो मनसा आहारी हैं मनके प्रदेशनि विषै अमृत स्रवे है ताका पान करि सागरां पर्यंत तृप्त होय हैं, मांस आहारी नाहीं देवनिके मनहीमें क्षुधा उपजै है अर मन तैंही विलाय जाय है ॥ ३९ ॥ जे निर्दई देवनिका छलकरि पशूनिका घात करै हैं ते पारधी समान हैं अर या जगतविषैं जो देवताही वरदाता होय तो पूज्या थका प्रणम्या थका प्रसन्न किया थका काहूकूं राज्य देय धन संतानादि देय तो सबही धनवान अर राजा हो जांय कोई निर्धन अर रंक न रहे सो जीवनिका भला अर बुरा होना तो कर्माधीन है अर काहूके आधीन नांहीं, वह कुदेव धनवन्तनिपै दीप तेल वालि पुष्प इत्यादि वस्तुवनिकी याचना करै हैं ते तोहि धन संपदा कहांसे देहिंगे वही दीन पराई आस करैं तो औरनिकी आस कैसे पूर्ण करैं देवता मोहि वर देगें यह अभिलाषा करना जगतविषैं बडी भूल है ॥ ४१ ॥ या संसारविषैं एक जिनप्रतिमा टारि अर प्रतिमा पूज्य नाहीं जो भव्यजीव द्रव्यकरि भावकरि परिणामनकी शुद्धतातैं जिनप्रतिमाकी पूजा करैं सो मनवांछित स्वर्ग मोक्ष फल पावैं यह जिन प्रतिमा कल्पबेलसमान मनवांछित फलकूं फलै है ॥ ४२ ॥ हिंसा करना

अर करावना अर हिंसाकी अनुमोदना करनी यह तीन अशुभ इनकरि पापका आस्रव होय है ताकरि दुर्गतिका बंध होय है अर हिंसा कुगतिका कारण है अर सर्व पापनिका मूल है अर वीतरागका भाख्या जीव दयारूप धर्म जो किया थका अर कराया थका अर करतेकूं भला जाना थका कल्याणकारी है ताकरि शुभका आस्रव होय है सो सुगतिका कारण है ॥४३॥ जो मन शुभ होय अर वचन सत्य होय अर काय कुचेष्टासे रहित होय सोही पुन्य कहिए अर मन अशुभ अर असत्य वचन अर कुचेष्टारूप काया यह ही अशुभ इनकरि महा पापका बंध होय है सो पाप ही दुर्गतिका कारण है ॥४४॥ अज्ञानरूप तिमिर अति सघन अतिदृढ सकल लोकविषै विस्तर्या है जो पवित्र बुद्धिरूप नेत्रनिकूं मुद्रित करै है जाकी कोई औषधी नहीं इसलिए जो प्राणी तत्वकूं देखा चाहैं सो अज्ञान-तिमिरकूं दूर करैं अर जो अतत्वविषै निरंतर व्याकुल बुद्धि है सो तत्वकूं कैसे विलोकि सकै ॥ ४५ ॥ जे अग्नि अर वायुकूं जलकूं भूमिकूं लताकूं वृक्षकूं देव मानै हैं सो भ्रमबुद्धि हैं तिनमें धर्म नाहीं अर अपने घरमें मृत्तिकादि करि देव कल्पैं हैं ते बुद्धिसे विमुख हैं अर चंद्रमा अर सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र यह गगनमें विचरै हैं अर नेत्रनिकरि दीखैं हैं तिनको जे देव मानै हैं ते तो सब मूढदृष्टि हैं देव तो परब्रह्म परमात्मा सिद्ध भगवान ही हैं अथवा निज आत्माही देव है अर कोई देव नाहीं वस्तुका स्वरूप सदा अस्तिरूप है नास्तिरूप है नित्य है अनित्य सामान्य है विशेष है निज परको अनेकांतरूप मानना सोही कार्यकी सिद्धि है द्रव्यमें अर गुणमें नाममात्र भेद है अर वस्तु अभेद है यह स्याद्वाद ज्ञानका मूल है अर जे मिथ्यादृष्टि दृढ मूढता करि एक ही नयका पक्षपात करैं हैं तिनकूं ज्ञानकी प्राप्ति नाहीं सो दीर्घसंसारी जानने ॥ ४७ ॥ यही नय परस्पर विवादकूं लिए मिथ्या हैं अर एही परस्पर विरोध रहित सत्य हैं जो दो नयका धारक सोई ज्ञानी अर एक नयका पक्षी सो अज्ञानी है । नैगम संग्रह व्यवहार यह सब नय प्रमाणका अंश है एक एक अंगका कथन सो नय अर सर्वांग कथन सो प्रमाण अर प्रमाणकरि निश्चयरूप जो वस्तु ता विषैं सब नय सधैं हैं ॥ ४८ ॥ मुनिपति जे भगवान तिनका जो मार्ग ताविषैं श्रद्धावन जे मोक्षाभि-

लाषी जीव पुरुषनके किए नवीन मार्ग तिनसे विमुख हैं तेई निर्वाणकूं पावैं हैं सिद्धनका जो अखंड अविनाशी सुख ताका है लाभ जहां वह परमधाम महा मनोहर है समस्त पदार्थ जहां भासै हैं उदार हैं चरित्र जिनके तिनिकूं वह धाम सुलभ है औरनिकूं नाहीं ॥ ४९ ॥ जे भव्यजीव सम्यक्तकी शुद्धताकरि युक्त हैं ते नाना प्रकार निरमल तपकूं अंगीकार करो सो तप, व्रत, गुण अर शील तिनकी राशि हैं। अर वे भव्यजीव जिनेंद्रके गुणोंके ग्रहणकूं अति अनुरागी हैं ॥ ५० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ धर्मोत्पत्तिवर्णनोनाम एकोनपंचाशत् सर्गः ॥ ४९ ॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक यादवनिकी वृद्धि सुनकर गौतम स्वामीकूं नमस्कारकरि पूछता भया। कैसे हैं गौतम वृद्धिकूं प्राप्त भया है श्रुतज्ञानरूप नेत्र जिनके ॥ १ ॥ राजा श्रेणिक पूछै है हे प्रभो ! जैसे समुद्रविषैं मणिनिकी राशि होय सो मणीनिकी राशि क्रांतिकर संयुक्त होय तैसे यदुवंशीरूप समुद्रविषैं अनेक पुरुषरत्नसमान गुणरूप किरणनिके धारक होते भये ते सकल लोकविषैं प्रसिद्ध महा योधा भये अर कृष्ण वासुदेव अनेक युद्धविषैं प्रगट है पराक्रम जिनका सो पृथिवीविषैं अति प्रसिद्ध भये सो इनकी प्रसिद्धताविषै जरासिंधके कहा बिचार भया ॥ ३ ॥ तब गणधर कहते भये हे श्रेणिक ! यह बलदेव अर वासुदेव दोऊ भाई मनुष्यनिमें मुख्य सो इनके पराक्रम जरासिंधके श्रवणमें आये तब जरासिंध अपने मुख्य मंत्री हैं तिनसे मंत्र करता भया अहो मंत्री हो ! तुम यह शत्रु अबतक क्यों ढीले छोडे यह शत्रु समुद्रविषैं क्षणभंगुर तरंगकी न्यांई वृद्धिकूं प्राप्त भये सो तुम मोहि क्यों न कही यह कारण कहो, मंत्री हैं सो राजाके नेत्र हैं सब ओरकी खबर मंत्री हलकारनिकरि मगाय करि राजासे कहैं अर मंत्री ही न कहैं तो और कौन कहे मंत्री जो हैं राज्यके रक्षकहैं ॥ ७ ॥ मैं तो ऐश्वर्यके मदकरि असावधान रहा मैं जानूं तो एते दिन शत्रु द्वारकामें कैसे रहैं तुम जानते हुये यह बात

प्रगट क्यों न करी अर जो तुम भी न जानी तो यह मंत्रीपद कैसा मैं तो तिहारे भरोसे, सेवकका यह धर्म नाहीं जो स्वामीकूं शत्रु मित्रनिकी बात न कहै जो महा उद्यमकरि राजा शुत्रुनका उपाय न करै तो परिपाकविषैं अति दुखदाई होय जैसे रोग उपजा अर तत्काल यत्न न करै तो रोग वढा थका दुखकूं उपजावै प्रथम तो यादवनिने मेरा जवांई कंस मारचा बहुरि मेरा भाई अपराजितकूं मारचा ऐसे अपराधकरि समुद्रके शरण गये मेरे समुद्रके जीतवेके अनेक उपाय हैं जो मैं समुद्रमें प्रवेश न करूं अर देव विद्याधरनिकूं आज्ञा न करूं तो भी जाल डाल मच्छीकी तरह पकड लूं जेते मैं उपाय न करूं तवतक मेरा शत्रु चाहे जहां रहे अर जो मैं क्रोध करूं तो समुद्रमें कैसे रह सकै जौलग मेरे क्रोधरूप अग्नि प्रज्वलित न होय तौलग द्वारकामें निर्भय रहैं अर मैं उपाय कर मारचा चाहूं तब कैसे निर्भय रहैं एते दिन मैं न जाना तातैं कुटुम्ब सहित सुखसे रहैं अब मैं जानी तब कैसे मेरे वैरी निश्चिन्त रहैं यातैं अब तुम शम कहिये शान्तता अर दान कहिये देना यह दोऊ उपाय तो सर्वथा तजो अर भेद कहिये फोडा तोडी अर दंड कहिये मारना ये दोय उपाय निश्चय करो ये अपराधी साम अर दाम योग्य नाहीं भेद अर दंड योग्य ही हैं यह बचन स्वामीके सुनकरि मंत्री नमस्कारकरि धनी शांतता उपजाय हाथ जोड विज्ञप्ती करते भये। कैसा है स्वामी यादवके दंडके उपायका है उद्यम जाके मंत्री महीपतिसूं कहैं हैं हे नाथ ! हम शत्रूनिकी सुध न राखैं ऐसे शठ तो नाहीं परंतु जानहीकरि आपसूं मालूम नाहीं किया यादवनके वंशमें तीन पुरुष ऐसे जन्मे हैं जिनकी देव सेवा करै हैं उनकूं जीतवे समर्थ देव अर मनुष्य कोई नाहीं प्रथम तो बाईसवें तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ राजा समुद्रविजय रानी शिवदेवीके गर्भविषैं उपजे हैं तिनकी तीन लोक सेवा करैं फिर वसुदेवके रोहिणी नामा रानीके उदरविषैं नवमें बलभद्र उपजे हैं जिनका नाम पद्म है अर अर वसुदेवहीके दूजी रानी देवकी सो ताके गर्भविषै नवमें नारायण कृष्ण उपजे हैं यह तीन पुरुष महा दुर्जय हैं जब श्रीनेमिनाथ गर्भविषैं आए तब छः महीने पहिलेसे समुद्रविजयके घर रत्नवृष्टि भई सो पंद्रह मास रत्न वर्षे अर उनका जन्म भया तब इन्द्रादिक

सुमेरुविषैं ले जाय अर जन्माभिषेक करते भये सो भगवान तीन लोकके नाथ जिनकी सब लोग सेवा करैं जिनके माता पिताकूं कोई कैसे जीते जो समस्त पृथिवीके राजा एकत्र होंय तो भी उनका कहा कर सकें अर बलभद्र नारायणकी सामर्थ कहा आपके श्रवणमें न आई जो शिशुपाल सरीखे योधा अनेक रणविषै जीते ॥ २० ॥ अर जिनकी पक्ष पांडवनसे प्रचण्ड योधा और विद्याधर हू उनमें हैं उनका पिता वे अर उनके पुत्र विद्याधरनके परने हैं अर साढ़े तीन क्रोड कुमार महायोधा रणधीर एक राजा सूरके वंशके हैं अर आप यह न जाने जो मेरे भयसे समुद्रमें छिप कर रहे हैं वह सब ही बहुत बुद्धिमान न्यायमार्गी हैं ॥ २३ ॥ दैवबल, समयबल, बुद्धिबल, सब उनमें है अर देव उनके सहाई हैं सो हम जानी सोते नाहरकूं न जगावैं ज्यों है त्यों ही रहो ॥ २४ ॥ ऐसा जान हम देश काल विचार धीरे रहे अपना अर पराया बल विचारना समय विचारना यह ही प्रशंसा योग्य है ॥ २५ ॥ यह विचार हम चुप होय रहे सेवक वही जो स्वामीके हितकी कहे अब आप भली जानो सो करो इत्यादि सत्य बचन पथ्यरूप मंत्रिन जरासिंधसूं कहे परंतु जरासिंधके मनमें न आई जब क्षय काल आवै तब हठग्राही हठ न छोडें ॥ २७ ॥ मंत्रीनिके बचन उलंघि जरासिंध यादवनके निकट द्वारकाकी ओर पतिसेन नामा दूत भेजा ॥२८॥ पूर्व पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सब देश राजनपै दूत भेजे अर पत्रमें लिखी जो चतुरंग सेना सहित शीघ्र ही तुम यहां आइओ ढील मत करियो ॥ ३० ॥ सो दूतके देखवे मात्र ही राजा करण अर दुर्योधनादि सब ही राजा जरासिंधके पक्षी सत्यवादी जरासिंधके हितकी है अभिलाषा जिनके ते सब ही जरासिंधपै आये जब महा बलवान सब राजा आये, तब उन सहित जरासिंध प्रयाणकरि शत्रुके जीतवेकी है इच्छा जाके सो राजगृही नगरीतैं कूंचकरि आधा आया अर प्रतिसेन नामा दूत द्वारका गया जैसे पुण्यवान स्वर्गपुरी जाय ॥ ३३ ॥ सो दूत अनेक आश्चर्यकरि भरी जो द्वारावतीपुरी ताविषैं प्रवेशिकरि राज्य द्वार आया अर समस्त यादवनि करि भरी जो सभा ताविषैं अंधकवृष्टि अर भोजकवृष्टिके वंशके सब अर पांडव सब ही बैठे हुते सो

द्वारपाल जाय विनती करी तब याहि सभामें बुलाया ॥ ३५ ॥ सो जाय प्रणामकरि आज्ञातें सन्मुख वैठा अर प्रतिहरिकी आज्ञा प्रमाण राजा समुद्रविजयसे स्वामीके वलके गर्भ करि कहता भया जो पृथिवीपतिने आज्ञा करी है सो चित्त लगायकरि सुनहु सकल यादवनिसहित चक्रेश्वरकी आज्ञा उरमें धारहु ॥३७॥ ऐसी आज्ञा करी है मैं तिहारा कहा अनिष्ट किया जो तुम भय मान समुद्रमें बसे हो ॥ ३८ ॥ जो अपराध उपजा है तो तुम हीसे उपजा है आपहीसे भय मान आश्रय पकडा है सो मोसे भय मत मानो तुम आयकरि मुझे नवो अर मेरी सेवा करहु ॥ ३९ ॥ अर कदाचित समुद्रके बलसे जो न आवोगे अर न नवोगे तो मैं ऐसा हूं समुद्रकूं पानकरि जाऊंगा अर तुमकूं पीडा करूंगा ॥ ४० ॥ जब तक मैंने तुमको न जाना हुता तब तक देश काल विचार आश्रय पकरि रहे अब मैं तुमको जान पाये तब कैसे रह सकोगे ॥ ४१ ॥ यह दूतके बचन सुनि समस्त ही राजा कोपरूप भये अर बलदेव वासुदेव भोहें टेढी करि बोले वाकी मृत्यु निकट आई है सो ऐसे गर्भके बचन कहै है सो अब समस्त सेना सहित हम पर आवहु हमहू संग्रामके अभिलाषी हैं तिहारी भलीभांति पाहुणगति करेंगे ऐसे बचन कहकरि दूतकूं बिदा किया सो कुवचनरूप वज्रका मार्या स्वामीके पास जायकरि सब वार्ता कहता भया अर उनका सब रहस्य जताया जो वे महा मदोन्मत्त हैं अर युद्ध करवेकूं सन्मुख हैं ॥ ४४ ॥

अथानंतर—समुद्रविजयके बडे मंत्री विमल अमल अर शार्दूल ये तीनों मंत्रविषैं निपुण सो मंत्रकरि राजा समुद्रविजयकूं कहते भए हे नाथ ! साम, दाम दंड, भेद यह चार उपाय हैं तिनमें साम कहिए मृदुता सो अपनी अर पराई दोनों ओरकी शांतताके अर्थि हैं तातैं ये मगधदेशका राजा जरासिंध उससे सलाह करिए अर संग्राम न करिए तो बहुत भला है ॥ ४६ ॥ युद्धविषैं बहुतोंका नाश है कुशलका संदेह है अपने कुल ही कुलके सब कुमारनका समूह है सो एक हू डील युद्धविषैं नाशकूं पावै तो सहारा न जाय अर ज्यों अपने अमोघ बाणके बर्षावनहारे हैं त्यूं जरासिंधहूकी सेनामें बहुत हैं, कर्ण दुर्योधन द्रोण भीष्म आदि बडे २ योधा हैं

॥ ४९ ॥ इसलिए समस्त जीवनिके कल्याण निमित्त साम ही योग्य है जरासिंधके निकट दूत भेजो ॥ ५० ॥ यामें दोष नाहीं अर अपनी मृदुताकरि जो वह शांतता न होय तो जैसा उचित होयगा तैसा करेंगे यामें दोष नाहीं ॥ ५१ ॥ यह मंत्रकरि इन मंत्रीनिने राजासूं कही तब राजा कही कहा दोष है तब एक लोहजंघ नामा कुमार महा चतुर शूरवीर नीतिवान जरासिंधके निकट अपनी सेनातैं बहुत सन्मानकरि भेजा सो वह आज्ञा प्रमाण गया ॥५२॥ अर इन पहली जरासिंध कूचकरि मालव देशविषै देवावतार नामा तीर्थ है तहां आय डेरे करे हुते ॥ ५३ ॥ सो वह तीर्थ कैसे प्रसिद्ध भया दोय मुनि मासोपवासी एकका नाम तिलकानंद अर दूसरेका नाम नंदक सो उनके प्रतिज्ञा हुती जो वनहीमें भिक्षा पावें तो लेवें सो वनविषैं बडा संघ श्रावकोंका आय उतरा था। तहां मुनीनिकूं पारण भया सो मुनि ऋद्धिधारी तिनके प्रसादसे पंचाश्चर्य भए रत्नवृष्टि पुष्पवृष्टि सुगंधजलकी वृष्टि शीतल मंद सुगंध पवन अर जय जयकार शब्द ॥ ५५ ॥ यह पंचाश्चर्य कहिए या अतिशयतैं वह देवावतार नामा तीर्थ पृथिवीविषैं प्रसिद्ध भया अनेक जीवनके पाप हरणहारा तहां जरासिंधके कटकविषैं यादवनिका लोहजंघ नामा दूत गया ॥ ५६ ॥ सो दूत जाय जरासिंधसे मिला और एकांतविषैं जरासिन्धसे संधिकी वार्ता करी दूत महा पण्डित सो याके वचनकरि प्रतिहरि प्रसन्न भया अर छः महीनेकी सन्धि मानी छः महीनेमें तुम सरंजाम कर लेवो ॥ ५८ ॥ अर दूतका बहुत सन्मान किया बहुत बकसीस करी सो दूत पृथिवीपतिसे प्रसन्न होय द्वारका आया समुद्रविजयादिकसे सब वार्ता कही ॥५९॥ तब सब यादव सावधान होय एक वर्षमें संग्रामका सब सरंजाम किया ॥ ६० ॥ यादवनके मित्र सब यादवनमें आये अर जरासिंध सैन्य रूप समुद्रकरि वेष्टित कुरुक्षेत्रनामा स्थानकविषैं प्रधान पुरुषनिकरि युक्त आय प्राप्त भया अर द्वारकातैं दूजा सागर केशव भी तहां ही जाय प्राप्त भया । दोऊ सेना समुद्र समान सोहती भई ॥ ६२ ॥ तहां कैयक दक्षिण दिशिके अर कैयक उत्तर दिशिके बडे २ राजा अपने सकल कटककरि युक्त केशवसे आय मिले दशार्ह कहिए

अंधकवृष्टिके पुत्र समुद्र विजयादि दश भाई। अर भोजकवृष्टिके पुत्र अर पांडव अर और हू बडे २ शार्दूल नृप पृथिवीविषैं प्रसिद्ध हरके हितू सब आये सबनमें वे राजा समुद्रविजय श्रीनेमिनाथके पिता तिनके साथ अक्षोहिणीके पति अर राजा मेरु नामा इक्ष्वाकुवंशके अधिपति एक अक्षोहिणीदलका स्वामी ॥ ६६ ॥ राष्ट्रवर्द्धन नामा देशका राजा अर्द्ध अक्षोहिणीदलका स्वामी अर सिंघल देशका राजा पद्मरथ सो भी अर्द्ध अक्षोहिणी दलका स्वामी ॥६७॥ अर राजा सकुनका भाई चारुदत्त नामा महा पराक्रमी चौथाई अक्षोहिणी दलका स्वामी यह कृष्णके परमहितु ॥६८॥ अर चरवरदेशके स्वामी यमन देशके स्वामी अर आवीर देशके कांबोज देशके अर द्रविड देशके और भी अनेक देशनिके बहुत राजा शूरवीर हरिकी पक्ष आए ॥ ६९ ॥ अर अनेक अक्षोहिणी दलके धनी बहुत गुण करि पूर्ण अनेक राजा जरासिंधकी ओर आये, कैसा है जरासिंध चक्ररत्नके प्रभावकरि वश किये हैं भरतक्षेत्रके तीन खंड जानै एक अक्षोहिणी दलका प्रमाण कितना कहा सो सुनिये।

नव हस्तिसहस्राणि नवलक्षरथा मताः। नवकोटितुरंगास्तु शतकोट्यो नराभव ॥ ७१ ॥

अर्थ—हाथी नव हजार अर रथ नव लक्ष अर तुरंग नवकोटि अर नव सौ कोड पयादे यह अक्षोहिणी दलका प्रमाण जानना ॥ ७१ ॥ यादवनके कटकमें समुद्रविजयका कुमार श्रीनेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि अर वलभद्र नारायण ये तीन तो अतिरथि कहिए सब योधानमें श्रेष्ठ सबनके शिरोभाग हैं इनके तुल्य भरतक्षेत्रमें और सुभट नाहीं ॥ ७२ ॥ अर राजा समुद्रविजय तथा वसुदेव अर युधिष्ठिर अर भीम अर अर्जुन अर रुक्म कहिए रुक्मिणीका भाई अर प्रद्युम्न कृष्णका पुत्र अर सत्यक ॥ ७३ ॥ अर धृष्टद्युम्न द्रोपदीका भाई अर अनावृष्टि कृष्णके वडे भाई अर राजा सल्य अर राजा भूरिश्रवा वहुरि राजा हिरण्यनाभि अर राजा सहदेव राजा सारण ॥ ७४ ॥ ये राजा सर्व शास्त्रविषैं निपुण अर पराङ्मुख कहिए जो कायर होय रणसे पाछे मुडैं अर लड न सकैं तापर महादयावान। जो सन्मुख होय लडैं अर आप समान होय अथवा आपतैं अधिक होय ताहीसूं

लडें आपसे हीन बली होय तासें न लडैं यह महा दयावान महा बलवान महारथी हैं। महारथी कौन कहिए जो अकेला ११ हजार माते हाथीसूं लडै सो महारथी जानिए ॥ ७५ ॥ अर समुद्रविजयतैं छोटे अर वसुदेवतैं बडे अक्षोभि आदि आठ भाई अर जांबुवंतीका पुत्र संचु अर भोज नामा राजा तथा विदूरथ अर द्रोपदीका पिता द्रुपद अर स्यंघराज अर शल्य अर वज्र सुयोधन ॥ ७६ ॥ अर पौंड्र, पद्मरथ. कपिल अर भगदत्त, मेघ क्षेम धूर्त इत्यादि सब राजा रणविषैं समानबली यह समरथी हैं ॥ ७७ ॥ अर राजा महानेमि घर अर कृष्णका भाई अक्रूर अर निषद उल्मुख अर दुर्मुख कृष्ण कृतिवर्मा अर राजा विराट अर चारुकृष्ण अर सकुनि, पवनभानु, दुःशामन, अर शिखंडी, वाहीक, सोमदत्त, देवशर्मा, वक्र वेणुदारी त्रिक्रांत इत्यादि सर्व राजा अर्धरथी हैं। यह सब ही नानाप्रकारके युद्धके करणहारे महाधीर संग्रामतैं कदे ही न टरैं ॥ ८० ॥ अर इन सिवाय और सब राजा कुलवंत मानवंत यशवंत पृथिवीविषैं प्रसिद्ध दोऊही सेनाविषैं रथी हैं ॥ ८१ ॥ यह दोऊ ही कटक समुद्रसमान पडे सो राजा कर्ण कुंतीका पुत्र जरासिंधकी सेनाविषैं दुर्योधनके शामिल है जब दोऊ कटक पडे अर कर्णके डेरे कृष्णतैं नीरे हैं तब कुंती कृष्णतैं मंत्रकरि राजा कर्णके समीप गई अति आकुलताकी भरी स्नेहके भारकरि पराधीन है शरीर जाका ॥ ८३ ॥ कर्णके कंठसूं लागि रुदन करती थकी माता पुत्रकूं आदि मध्य अवसानतैं सब संबंध कहती भई ॥ ८४ ॥ तब कर्ण माताके वचन सुनि अपना कुरुवंश विषैं जन्म अर माता कुंती अर पिता पांडु यह सब निश्चय करता भया ॥ ८५ ॥ अर अपने अंतःपुरमें निज वर्ण है तिनतैं सब निश्चय किया अर कुंतीकी अतिस्तुति करी बहुत सन्मान किया तब कुंती अपना बडा पुत्र जो कर्ण ताकूं आदरसहित कहती भई ॥८६॥ हे पुत्र! उठ हमारे कटकमें आवौ तेरे सब भाई तेरे दर्शनके अभिलाषी हैं। कृष्ण आदि सबही तेरे निज वर्ग तोहि बहुत चाहै हैं तेरे दर्शनकी सबके अभिलाषा है ॥ ८७ ॥ तू कुरुवंशीनिका ईश्वर है अर बलदेव वासुदेवके प्राणहूतैं प्यारा है ॥ ८८ ॥ तू कुरुवंशीनिका राजा है युधिष्ठिर तेरे शिरपर छत्र फिरावेगा अर भीम चमर

ध्वज कहिए कृष्ण तिनकूं कुवेरने गारुड नामा रथ दिया सो अनेक आयुधनिकरि पूर्ण जीतका स्वरूप ॥ १० ॥ अर सुभटनिका नायक महा शूरवीर कृष्णका वडा भाई अनावृष्टि अर अर्जुन इन दोऊकूं समुद्र विजयादिक सब राजा अगवानी करते भए ॥ १२ ॥ अर जरासिंधने राजा हिरण्यनाभ है तिसकूं सेनापति किया ताका अभिषेक भया वह भी महा बलवान् ॥ १३ ॥

अथानंतर—युद्धके वादित्र दोऊ सेनामें बाजै परस्पर दोऊ कटकमें चतुरंग सेना युद्धकूं उद्यमी भई ॥ १४ ॥ वह वाहि बुलावै अर वह वाहि बुलावै परस्पर राजा युद्ध करने लगे सो क्रोधके भारकरि वक्र भई है भौंह जिनकी ताकरि क्रूर है वदन जिनिके ॥ १५ ॥ हाथिनिके सवार तो हाथिनिके सवारनितैं लडन लगे अर रथनिके सवार रथवारेनिसूं अर घोरनिके सवार घोरनिसूं पयादे पयादनिसूं लडने लगे ॥ १६ ॥ या भांति योधा परस्पर युद्ध करने लगे धनुषनिकी फिडचनिका शब्द अर रथोंका शब्द अर गजनिकी गर्जना अर तुरंगनिका हींसना अर योधानिके सिंहनाद तिनकरि दशोंदिशा शब्दायमान भई ॥ १७ ॥

अथानंतर—जरासिंधके कटककूं प्रथम ही देख करि श्री नेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि अर्जुन अर कृष्णके भाई अनावृष्टि सो रथनेमिके तो बृषभकी ध्वजा अर अनावृष्टिके हाथीकी ध्वजा अर अर्जुनके मर्कटकी ध्वजा ॥ १८ ॥ अर कृष्णके अभिप्रायके वेत्ता यह तीनों भील महा उद्धत बखतर पहने शस्त्र बांधे जरासिंधकी सेनाकें चक्रव्यूहकूं भेदने उद्यमी भए ॥ १९ ॥ अर नेमिनाथका दुमात भाई रथनेमि इन्द्रका दिया संख पूरता भया। अर कुन्तीका पुत्र जो अर्जुन सो देवनिका दिया शंख पूरता भया अर अनावृष्टि वासुदेवका बड़ा भाई वलाहक जातिका शंख बजावता भया इन तीनोंके शंखनादिकरि दशोंदिशा व्याप्त भई अर यादवनिकी सेनाविषैं अति हर्ष भया अर शत्रुकी सेनाविषै अति भय उपजा जरासिंधकी सेनाका चक्रव्यूह ताका मध्य तो अनावृष्टिने भेदा अर रथनेमिने दाहनी ओर भेदी अर अर्जुनने पश्चिम अर उत्तर दोऊ दिशा सेनाकूं भेदी ॥ २२ ॥

ढारेगा अर अर्जुन तेरा मंत्री अर नकुल सहदेव ये दोऊ तेरे द्वारपाल अर मैं तेरी माता सदा तेरा हितही चाहूं यह माताके वचन सुनि भाईनिसूं है परमस्नेह जाका तथापि जरासिंध अपना स्वामी अर वाका आपपर उपकार अर दुर्योधनतैं सांचा मिलाप सो स्वामीकार्यकूं शिरपर धरि माताकूं कहता भया, माता पिता भाई बंधु या लोकविषै दुर्लभ है यह बात सत्य है तथापि अवार और ही प्रयोजन उपज्या है रणसंग्राम आय वन्या है सो मैं युद्धके समय स्वामीकार्यकूं तजकरि भाइनिमें आऊं तो यामें वडा अपयश है अर वडा हास्य है ॥ ९३ ॥ तातैं या समय मेरा आवना सर्वथा नाहीं अर मैं एक करूंगा इनके युद्धविषैं स्वामीकार्यके अर्थि भाईनि टारि अर योधानिसूं युद्ध करूंगा ॥ ९४ ॥ अर युद्धनिवृत्ति भए जो कदाचित आयुकर्मके वशतैं जीवूंगा अर वैराग्य न उपजेगा तो भाईनिसूं मिलाप होयगा ॥ ९५ ॥ तातैं तुम जाहु अर सब भाईनिसूं यहही कहो ऐसा कहि माता कुंतीकी प्रतिष्ठाकरि याहि सीख दई सो गई वलदेव वासुदेव आदि सबनिसूं कर्णके कहे समाचार कहे ॥ ९६ ॥

अथानंतर—जरासिंधने भला रणखेत देख्या जहां पृथिवी समभाग काहू ठौर ऊंची नीची नाहीं ऐसा स्थानक हेरि वैरीनिके जीतिवेके अर्थि प्रवीण राजा है तिनसूं मंत्रकरि चक्रव्यूह रच्या चक्रव्यूह कहिये चक्रसमान वर्तुलाकार सेनाका आकार रच्या अर चक्रके हजार आरे सो एक २ आरेके निकट एक एक राजा सो हजार आरेके निकट हजार राजा अर एक २ राजाके ढिंग सौ सौ हाथी अर दोय दोय हजार रथ अर पांच पांच हजार तुरंग, अर सोलह हजार पियादे अर यातैं चतुर्थभाग विभूतिसहित छः राजा नेमि कहिये चक्रकी धुरा ताके समीप तिष्ठे अर मध्यके स्थानविषैं जरासिंधके ढिंग कर्ण आदि पांचहजार राजा तिष्ठे ॥ १०१ ॥ तिनहीके मध्य राजा धृतराष्ट्रके अर गांधारीमाताके पुत्र दुर्योधनादि सौ भाई खडे अर मध्यविषैं और हू वडे २ राजा पूर्वभागविषैं तिष्ठे ॥ ३ ॥ कुलवंत मानके धरणहारे महाधीर महा वलवान वडे २ राजा पचास, चक्रकी धुराकी संधिविषैं तिष्ठे अर या चक्रव्यूहके बाहर अपनी अपनी सेनासहित नानाप्रकारके व्यूह रचि अनेक ठौर राजा खडे यह चक्रव्यूह

अथानंतर—यादवनिका सेनापति अनावृष्टि सो परसेनाका सेनापति हिरण्यनाभ युद्ध करता भया अर रथनेमि रुक्मीसे लडे अर अर्जुन दुर्योधनसे भिडे। कैसा है अर्जुन धैर्य है अग्रेसर जिनके ॥२३॥ इनके परस्पर महा युद्ध भया अर यह समानवली अनेक आयुधोंके धारक सो वाणनिकी वर्षा करते भए ॥२४॥ अर नारद आकाशविषैं तिष्ठ्या दूरसे देखै है अप्सरानिके समूह आकाशमें देखै हैं महायोधानिपर पुष्पनिकी वर्षा होय है अर कलह है प्रिय जाकूं ऐसा नारद सो अतिहर्षित भया हँसै है कितनीक देरमें रथनेमि वाणवर्षाकरि रुक्मीका निपात किया रुक्मी बहुत लडा अर रथनेमिने हजारों राजा युद्धविषैं जीते अर समुद्रविजयादिक दश भाई तिनमें वसुदेव विजयार्द्धकी ओर गए अर नवो भाई युद्धविषैं हुते तिन जे परसेनाके राजा सन्मुख आए सो सब मारे अर इनके पुत्र तिन वहुत शत्रु मारे ॥ २६ ॥ अर वलभद्र नारायणके पुत्र तिन युद्धविषैं शंकारहित वाणनिकी वर्षा करी जैसैं पर्वतविषैं मेघ वृष्टि करै तैसैं वैरिनिविषैं बलदेव वासुदेवके पुत्रनिने वाणनिकी वर्षा करी ॥ २७ ॥ अर धृतराष्ट्रके दुर्योधनादि सौपुत्र अर पांडुके पांचपुत्र तिनमें परस्पर महायुद्ध भया सो कहनेकूं कौन समर्थ ॥२८॥ राजा युधिष्ठर तो राजा शल्यसूं लडे अर भीम दुःशासनसूं लड़े अर सहदेव शकुनीसे लड़े अर नकुल राजा उलूकसैं लड़े ॥ २९ ॥ अर दुर्योधन अर अर्जुन दोऊ परस्पर युद्ध करते भए इनके महा युद्ध भया दोऊ ही खड्ग अर वाणविद्याविषैं प्रवीण केतीक वेरमें पांडुवनिने धृतराष्ट्रके पुत्र मारे अर कईएक मृतक समान किए अर राजा करण जरासिंधकी सेनामें है सो धनुषविषैं वाण बसाकरि कानपर्यंत खैंच अपने वाण चलाए सो कृष्णकी पक्षके योधा सन्मुख आए ते राजा करणतैं अनेक वींधे ॥ ३२ ॥ यह बराबरकेनमें महायुद्ध भया अनेक सामंत मारे गए वहुरि अनावृष्टि अर हिरण्यनाभि इन दोऊ सेनापतीनिके परस्पर महा रौद्र युद्ध भया अर नानाप्रकारके आयुधनिकरि सुभट लरे ॥ ३२ ॥ सो हिरण्यनाभने अनावृष्टिकूं युद्धविषैं सातसौ नव्वे वाणोंकरि भेद्या अर वाण सताईस और लगाए ॥ ३४ ॥ सो अनावृष्टि इतने वाणनिकरि घायल होय अर हिरण्यनाभकूं हजार वाणनिकरि

भेद्या यह अनावृष्टि युद्धक्रियाविषैं अति कुशल है ॥ ३५ ॥ बहुरि हिरण्यनाभ राजा युधिष्ठरका पुत्र महायोधा प्रतिहरिका सेनापति तानै अनावृष्टिकी ऊंचीध्वजा छेदी अर अनावृष्टिने हिरण्यनाभकी ध्वजा छेदी अर धनुष छेदा छत्र छेदा बहुरि सारथी छेदा बहुरि हिरण्यनाभ अर धनुष लेकर बाणवृष्टि करता भया तब अनावृष्टिने शत्रुपर परिघनाम शस्त्र चलाया हिरण्यनाभका रथ चूर्ण कर डारचा तब हिरण्यनाभ अनावृष्टिपर एक हाथमें खड्ग अर एक हाथमें खेटक लिए आया सो शत्रुकूं सन्मुख आवता देख अनावृष्टि भी खड्ग अर खेटक हाथमें लिए रथसे उतरकरि शत्रुके सन्मुख गया सो यह दोऊ ही शस्त्रविद्याविषैं अति प्रवीण सो वह उसका प्रहार टार जाय अर वह उसका प्रहार टार जाय अर दोऊ ही महा वीराधिवीर सेनापति सो इनके खड्ग युद्ध भयंकर भया ॥ ३९ ॥ अर कितनेक बेरमें अनावृष्टिने खड्ग घातकरि हिरण्यनाभके दोऊ भुज छेदे भुजनितैं रुधिरका प्रवाह निकला सो जरासिंधका सेनापति पृथिवीविषैं पड़ा ॥४०॥ जब प्रतिहरिका सेनापति हरिके सेनापतिने मारा तब प्रतिहरकी सेनाके अगवानी पीछे होय प्रतिहरिके निकट गए अर अनावृष्टि जीतपाय हर्षित होय रथ चढ अपनी सेना सहित बलदेव अर वासुदेवके निकट आया सो सब सेनाके लोग सेनापतिकी स्तुति करते भए अर बलभद्र नारायण यह दोऊ ही वृषभध्वज कहिए रथनेमि अर हस्तिध्वज कहिए अनावृष्टि अर कपिध्वज कहिए अर्जुन इन तीननिसूं अति स्नेहकर मिले अनावृष्टिने तो हिरण्यनाभि मारचा रथनेमि अर अर्जुनने चक्रव्यूह भेद्या यह तीनोंही महा परक्रमी हैं ॥४३॥ जब परसेनाका सेनापति मारा गया तब उनकी सब सेना विषादरूप विषकरि दूषित भई ता समय सूर्यहू अस्त भया । अर दोऊ सेनाके योधा अपने अपने डेरा गए अर यादवनिका कटक अरिके भंग थकी अति हर्षकरि पूर्ण घूमते समुद्र समान गरजता सोहता भया जिनराजके धर्मके प्रभावकरि कर्मनिकी सेनाको जीते तो औरनिकी कहा बात ॥ ४६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ यादवजरासिंधसेनासमागमहिरण्यनाभसेनापतिवधवर्णनो नाम एकपंचाशत् सर्गः ॥ ५१ ॥

अथानंतर–सूर्यके उद्योत होते मागध कहिए मागध देशका राजा जरासिंध अर माधव कहिये कृष्ण इन दोऊके योधा आयुध सजकरि युद्धके अर्थि निकसे पूर्वरीति व्यूह रचकरि दोऊकटकके सावंत आय ठाढे भये अर अनेक राजा परस्पर लडकरि अनेक राजानिकूं मारते भए जा समय रथविषैं तिष्ठता जरासिंध सो अपना हंस नामा मंत्री निकट बैठा है ताहि पूछता भया यह यादव सब खडे हैं तिनके प्रत्येक प्रत्येक नाम अर चिन्ह मोहि कहो मेरे इनसे द्वेष है औरनिके मारिवेकरि कहा तब हंस नामा मंत्री कहता भया हे देव ! यह फेनके पुञ्ज समान श्वेत अश्व सांकल घरे जुपे हैं जा रथके अर गरुडकी ध्वजा है सो रथमें कृष्ण बैठा है ॥ १ ॥ अर यह सूवाकी पांख समान हरे घोडे जुपे जा रथके अर घोडोंके स्वर्णकी सांकल अर रथके वृषभकी ध्वजा या रणमें श्री अरिष्ट नेमिनाथ तीर्थंकरका दुमात भाई रथनेमि समुद्रविजयका पुत्र है ॥ २ ॥ अर यह कृष्णकी दाहिनी ओर राहूके वर्ण जुपे हुवे हैं तुरंग जाके अर तालकी हैं ध्वजा जाके ता रथके भीतर बलभद्र बैठा है अर केश समान श्याम वर्ण जिनके ऐसे घोडे अर घोडोंके स्वर्णके आभूषण वा रथमें राजा युधिष्ठर विराजा है अर चंद्रमा समान निर्मल तुरंग पवन समान है वेग जिनका सो तुरंग या रथके जुपे अर रथके गयंदकी ध्वजा या रथके मध्य अनावृष्टि बैठा है यह कृष्णका बडा भाई है अर इनके कटकका सेनापति है जाने अपना सेनापति हिरण्यनाभि मारा ॥ १० ॥ अर यह भीमका रथ है जाके नीलकमल समान रंगके धारक तुरंग जुपे हैं अर तुरंगनिके रत्न स्वर्णके आभूषण हैं ॥ ११ ॥ अर यह राजा समुद्रविजयका रथ है जाके सिंहकी ध्वजा अर चंद्रमा समान शुक्ल वर्ण तुरंग मणि स्वर्णकरि शोभित अश्व जुपे हैं सो सब यादवनिकी सेनाके मध्य सबनिका शिरोमणी रथमें विराजा है यह नेमि जिनेश्वरका पिता है अर कृष्णके पिताका बडा भाई है ॥ १२॥ अर यह अक्रूरका रथ है जाके केलिकी ध्वजा अर मिश्रवर्ण घोडे जुपे हैं सूर्य समान है, ज्योति जाकी ऐसा यह अक्रूर कृष्णका बडाभाई है इसका रथ रत्न स्वर्णमई देदीप्यमान है ॥ १३ ॥ अर तीतरके रंग जुपे हैं तुरंग जाके

ऐसा यह राजा सत्यकका रथ है अर यह कुमुदके पुष्प समान वर्णके धरणहारे जुपे हैं अश्व जाके सो महा नम्य-कुमारका रथ है ॥ १४ ॥ स्वर्णमई लांबा दण्ड ताके लगी है पताका तिनकरि शोभित है अर सूवाकी चोंचके रंग जुपे हैं अरुण तुरंग जाके ऐमा यह भोज नामा राजाका रथ है अर यह कनक वर्ण तुरंगनि करि युक्त मृगकी ध्वजा जाके सो जरतकुमार कृष्णका बडा भाई है ॥ १६ ॥ अर यह राजा मरुराजका रथ है लाल अवलष जुपे हैं घोडे जाके सो अश्व स्वर्णके आभूषणनिकरि मंडित है ॥ १८ ॥ अर यह पद्मरथका रथ है जाके कमलके रंग तुरंग जुपे हैं यह राजा पद्मरथ शूरवीरोंमें अग्रेश्वर शोभै है सो कटकके अग्रभाग खडा है अर यह राजा सारण जाके रथके परेवाके रंग घोडे जुपे हैं सो घोड़े तीन वर्षके नवयोवन हैं अर रथके कमलकी ध्वजा है ॥ २० ॥ अर यह राजा नग्नजित ताका पुत्र मेरुदत्त ताका रथ सोहै है जाके लाल अर सफेद रंगके घोड़े जुपे हैं सो घोड़े पांचवर्षके हैं अर यह विदुरतकुमारका रथ जाके कलशके आकार ध्वजा है अर पंचरंग घोरे जुपे हैं अर सूर्यके रथसमान रथ है यह विदुरतकुमार महायौवनवंत है अति तेजस्वी है यह यादव रणविषैं परम निपुण है तिनके घोडोंके सर्ववर्ण अर रथोंके वर्णन करिवेकूं कौन समर्थ है हजारों सैकड़ों ये यदुवंशी हैं ॥ २३ ॥ अब अपने राजा महायोधा अर राजानिके कुमार तिनके अनेकचिन्हनिके रथ देखहु ॥ २४ ॥ तिहारे कटकमें नाना देशके सुभट आये हैं। अनेक राजानिकरि युक्त सोहै हैं अर नानाप्रकारके रचे हैं व्यूह जाविषै सो शत्रूनिकी सेनाकूं भयकारी हैं यह वचन मंत्रीनिके सुनकरि जरासिंध अपने सारथीसूं कहता भया। जो तू यादवनिकी ओर रथ चलाय अर जरासिंधु अपने वाणनिकरि सब यादवनिकूं आच्छादता भया ॥२७॥ अर जरासिंधुके पुत्र कोपकरि यादवनिसूं रणक्रीडा करते भए रथों पर तिष्ठे बराबरवालनितैं बराबरवाले लडते भये ॥२८॥ अर जरासिंधका बडा पुत्र कालयवन सो साक्षात् काल समान मलय नामा गजपर चढा अधिक युद्ध करता भया तिसतैं सहदेव लडा अर द्रमसेन अर राजा द्रम अर राजा जलकेत अर चित्रकेतु अर धनुंधर अर महीजय यह परस्पर भिड़े ॥ ३० ॥ अर राजा भानु अर कांचनरथ अर राजा

अर गंधमादन अर राजा सिंहक अर चित्रमाल अर राजा महीपाल अर वृहध्वज अर राजा सुवीर अर आदित्यनाभि अर राजा सत्य अर राजा सत्व दोऊही मनोहर अर राजा धनपाल अर सतानीक अर महाशुक्र अर महावसु ॥ ३१ ॥ अर राजा वीर अर राजा गंधदत्त अर राजा प्रवर अर पार्थिव, अर राजा चित्रांगद अर वसुगिर अर राजा श्रीमान् अर सिंहकटि राजा प्रगटपने परस्पर लडे ॥ ३२ ॥ अर मेघनादि, अर महानादि अर राजा सिंहनाद अर वसुध्वज अर राजा वज्रनाभ अर महाबाहु अर राजा जितशत्रु अर पुरंदर अर राजा अजित अर अजितशत्रु अर राजा देवानन्द अर शतद्रुत अर राजा मन्दर अर हिमवान अर राजा विद्युन्माली केतुमाली ॥ ३४ ॥ अर राजा कर्कोटक अर हृषीकेश अर राजा देवदत्त अर धनंजय अर राजा सगर अर स्वर्णबाहु अर राजा मघवान अर अच्युत यह राजा परस्पर संग्राम करते भये। अर राजा दुर्जय अर दुर्मुख अर राजा वासुकि अर कंवल अर राजा त्रिशिर अर धारण अर माल्यवान अर सम्भव ॥ ३६ ॥ अर महापद्म अर महानाग अर राजा महासेन अर महाजय अर राजा वासव अर वरुण अर सतानीक अर भास्कर ॥ ३७ ॥ अर गरुत्मान् अर वेणुदारी अर वासुवेग अर शशिप्रभ अर वरुण अर आदित्यधर्मा अर विष्णुस्वामी अर सहस्रदिक् अर केतुमाली अर महामाली अर चंद्रदेव अर वृहद्वलि अर सहस्ररश्मि अर अर्चिष्मान् इत्यादि परस्पर युद्ध करते भये. जरासिंधके पुत्र बहुत लडे ॥ ३९ ॥ युद्धविषैं मनुष्य हस्ती तुरंग बहुत चूर्ण भये अर प्रलयकाल समान युद्ध भया अर कालयवन बहुत लडा सो युद्धविषैं वसुदेवके पुत्रनिने उसे रोका। वसुदेवके पुत्रनिके अर प्रतिहरके पुत्रके परस्पर महायुद्ध भया अर ताके विवाद भी बहुत भया ॥ ४१ ॥ कालयवन महायोद्धा सो वसुदेवके पुत्र ताने बहुत मारे तिनके सिर अरुणकमल समान सो सामान्यचक्र अर बाण अर खडग तिन करि कालयवनने काटे सो पृथिवीविषैं पडे तिनकरि पृथिवी सोहती भई। जब कालयवनने वसुदेवके बहुत पुत्र मारे तब सारण नामा कुमारने क्रोधकरि खड्गके प्रहारकरि कालयवनकूं कालके मन्दिर पहुंचाया। सारणके अर

कालयवनके चिरकाल अति युद्ध भया सो वर्णनमें न आवै। कालयवनका मृत्यु आया सो मानो जरासिंधका सर्वस्व ही गया बहुरि जरासिंधके अर पुत्र तिन आयकरि कृष्णकूं घेरा सो प्रतिहरिके पुत्र सबही महा शूरवीर हरिसे बहुत लडे सो हरिने अर्द्ध चन्द्रवाणकरि उनके सिर छेदे अर मृत्युकूं प्राप्त किये ॥ ४४ ॥ तब राजा जरासिंध अपने पुत्रनिकूं रणभूमिपर पणे देख क्रोधकरि कृष्णपर आया धनुषकूं खैंचता बाणकूं लगावता फिणचकूं खेंच चढावता रथपर चढा प्रतिहरि हरिपर आया ॥ ४५ ॥ तिन दोऊके परस्पर महा भयंकर युद्ध भया दोऊही उद्धत परक्रमके धारक सो प्रथम तो सामान्य शस्त्र जे तीर तलवार सेल कटारी इत्यादि अनेक आयुध तिनकरि अति भयंकर युद्ध भया फिर दिव्यास्त्र जे देवोपुनीत शस्त्र तिनकरि दोऊ लणने लगे प्रतिहरिने हरिपर मारवे अर्थ नागबाण चलाया सो हजार नाग मायामई आये। तब माधवने मगधदेशका राजा जो जरासिंध तापर गरुडवाण चलाया ताकरि सब नाग नाशकूं प्राप्त भये ॥ ४८ ॥ बहुरि जरासिंधने जनार्दन जो कृष्ण तापरि मेघवाण चलाया सो कृष्णने पवनवाणकरि ताका निराकरण किया। अर जरासिंधने वायुवाण चलाया सो कृष्णने नागवाणकरि ताकूं निवारचा अर प्रतिनारायणने नारायणपर अग्निबाण चलाया सो अग्निके समूह चले आवें तब केशवने वरुण नामा बाणकरि अग्निबाण निवारचा वरुण जलका स्वामी है अर मगधदेशके इंद्रने उपेंद्र कहिये कृष्ण तापरि वैरोचननामा वाण चलाया सो हरिने माहेंद्रास्त्रकरि वह वाण निवारचा अर जरासिंधने राक्षस वाण चलाया सो वासुदेवने नारायण अस्त्र कर निवारचा ॥ ५३ ॥ अर जरासिंधने तामस नामा वाण चलाया सो माधवने सूर्यवाणकरि वह वाण भेद्या प्रतिवासुदेवने वासुदेव पर अश्वग्रीव नामा वाण चलाया सो मुरारिने ब्राह्मास्त्रकरि शीघ्रही निवारचा यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकतैं कहैं हैं, हे श्रेणिक ! ये दोऊही नरेन्द्र शस्त्र शास्त्रके वेत्ता जेते दिव्यास्त्र हैं तेते सकल प्रतिहरिने हरिपर चलाये सो हरिने सब निराकरण किये ॥ ५५ ॥ तब वह राजनिका राजा वृथा भये हैं उद्यम जाके सो पृथिवीविषैं धनुष डार दिया चक्रकूं चितारा सो चक्रकी हजार

यक्ष सेवा करै हैं ॥ ५६ ॥ सो चक्र चिंतवता प्रमाण सहस्र किरणनिकरि युक्त दशो दिशा विषैंउद्योत करता प्रति-
केशवके करविषैं आया ॥ ५७ ॥ सो वृथा भये हैं अनेक शस्त्र जाके तातैं महा क्रोधरूप जो जरासिंध तानै
चक्रकूं फिराय कर भौंहें टेढीकर कृष्ण पर चलाया ॥ ५८ ॥ सो चक्र आकाशमें चलाया जाके तेजकरि सूर्यका
तेज दब गया अर जरासिंधके पक्षके राजा हैं तिनिने एकलार समान चक्र चलाये सो चक्रकू आवता देख ताके टारने
अर्थि कृष्ण तो शक्ति अर गदा सम्हाली अर बलभद्रने हल मूसल सम्हाले अर भीमने गदा अर्जुनने धनुष आदि अनेक
शस्त्र अर अनावृष्टिने परिष सम्हाऱ्या अर युधिष्ठिरने शक्ति संभाली यह सब कृष्णके पक्षी चक्रसूं भिरवेकूं उद्यमी भए
॥ ६१ ॥ समुद्रविजय आदि नौ भाई सावधान होय अत्यर्थपने चक्रकी उर अनेक शस्त्र चलावते भए अर कृष्ण
चक्रके सन्मुख खडे सो वह चक्र सामंतनिने अनेक प्रकार निवाऱ्या परन्तु चक्र पाछा न रह्या मित्रकी न्याईं शीघ्र
ही आया सो आयकरि प्रदक्षिणा देय हरिके दहिने करविषै तिष्ठ्या, कैसा है हरिका दाहिना कर, शंख चक्र अर
अंकुशका है चिन्ह जाविषैं ॥ ६६ ॥ जब चक्र कान्हाके करमें आया तब आकाशतैं पुष्पवृष्टि भई अर देवनिकी
यह ध्वनि भई जो यह कृष्ण नवमां वासुदेव है ॥ ६७ ॥ अर शीतल, मंद सुगंध पवन अनुकूल वाजी जाकरि
यादव योद्धानिके हृदय हर्षकूं प्राप्त भये जब चक्र कान्हाके करविषैं आया तब जरासिंध चित्तमें चिंतवता भया
जो चक्रहूका चलावना वृथा गया मैं विचारी कछु अर भई कछु और ॥ ६८ ॥ चक्रके पराक्रमकरि वशकरी हुती
मैं सब दिशा अर तीनखंडका अधिपति मैं प्रचण्ड पराक्रमी ॥ ६९ ॥ जाके पूर्ण सेना देव विद्याधर जाके आज्ञा-
कारी अर पुत्र महा पिताभक्त अर मित्र निःकपट अर पुरुषार्थ हू मेरा प्रबल सो ये सबही बात जबलग मेरे देव
बल हुता तबलग कार्यकारी हुते जब देवबल विलाय जाय तब पुरुषार्थ सबही वृथा यह बात ज्ञानवान कहै हैं
सो सत्य है यामें संदेह नाहीं । मैं गर्भेश्वर गर्भमें आया जबहीतै सबनिका स्वामी मोहि कोई बडा पुरुष उलंघि न
सकै अर कहा यह क्षुद्र गोपि जाके गर्भविषैं क्लेश जन्मविषैं क्लेश अर ग्वालनिमें पल्या नन्हा मनुष्य अर सत-

मासा भया ॥७२॥ सो देवयोगतैं मेरा जीतनहारा भया यातैं धिकार धिकार पूर्वोपार्जित कर्मकूं अर जो यह मुझ सारिखेनकूं जीतनहारा पूर्वोपार्जित कर्मने किया हुता तो ऐसा क्लेशरूप क्यों किया जो गर्भदुखी अर जन्मदुखी अर गोपनिमें पल्या तातैं देवकी मूढता समान और मूढता कहां, दैव नाम पूर्वोपार्जित कर्मका है। धिकार या जगतकी मायाकूं यह माया लोककूं अंध करिवेकूं प्रवीण है अर धीर पुरुषनिके धैर्यकी लोप करनहारी है अर वेश्या समान अनेक पुरुषनिकी भोगनहारी है परघरगमन करनहारी है यातैं या राजलक्ष्मीकूं धिकार, धन्य वे पुरुष ते जगतकूं तजि जगदीशके मार्गमें लागे यह विचारकरि आई है मृत्यु निकट जाके सो ज्ञानको तो न प्राप्त भया अर क्रोध-करि कृष्णकूं कुवचन कहता भया। अरे गोप तू चक्रकूं क्यों न चलावै है कहा ढील कर रह्या है, हे मुग्ध! तू कहा समय हेरै है जो कार्य करना सो शीघ्र करना विलंब कहा अर जे दीर्घसूत्री हैं ते विनाशकूं प्राप्त होय हैं ऐसे कुवचन जरासिंध कृष्णतैं कहता भया। जरासिंध यद्यपि निश्चय जान चुका है जे मेरा मृत्युकाल आया यामें संदेह नाहीं परंतु जाकी प्रकृति ही निर्भय है यह त्रिषष्ठिशलाका पुरुष महा शूरवीर इनके मरणका भय कहा होय? जब कृष्णकूं जरा-सिंधने चक्र चलावनेकी प्रेरणा करी तब कृष्ण स्वभावहीकरि विनयवान स्नेहवान वातैं कहते भए मैं चक्रवर्ती उपज्या हूं सो चक्र मेरे हाथ आया तुम मेरी आज्ञामें तिष्ठो अर सुखसे राज करो यद्यपि तुम हमारे द्वेषविषैं निष्ठे प्रवर्त्तें हो तथापि हमारे द्वेष नाहीं प्रीति है हम प्रणाममात्रसूं प्रसन्न हैं काहूके मारिवेके अभिलाषी नाहीं ॥ ७८ ॥ यह वचन वासुदेव कहे तब प्रतिवासुदेव गर्भका भर्या बोल्या जो यह चक्र मेरे अलात चक्र कहिए घेघली ता समान है तू याकरि गर्वकूं प्राप्त भया ॥ ७९ ॥ तैंनें अबतक कभी भी कल्याण देखे नाहीं तू जन्म दरिद्री है जो नन्हा मनुष्य होय थोडी ही संपदाकरि गर्वकूं धरे अर जे महत्पुरुष हैं तिनके महा कल्याणहूकरि गर्व नाहीं जो लक्ष्मीनाथ हैं तिनके मद कहा ॥ ८० ॥ तू जानै है यह चक्र मेरे आया मैं चक्री होय चुक्या सो मैं तोहि या चक्र सहित अर तेरे बाबा समुद्रविजयादि दशार्ह तिनके चक्र कहिए समूह सहित तोहि समुद्रविषैं डुबोऊंगा ऐसे

कठोर वचन जरासिंध कृष्णकूं कहे तब चक्री चक्रकूं भ्रमायकरि प्रतिचक्रीपर डारचा सो चक्र शीघ्र ही चाल्या अर प्रतिहरिकी वक्षस्थलरूप वज्रकी भीति ताहि भेदता भया प्रतिहरिकूं मारकरि तत्काल हरिके हाथविषैं आया सो यह उचित ही है कार्यसिद्ध भया तब कालक्षेप काहेका ॥ ८३ ॥ जब हरिकी विजय भई तब देवनिके हर्ष भया अर हरिने पंचायननामा शंख बजाया सो समस्त यादवनिके मनकूं हरता भया अर रथनेमि अनावृष्टि अर्जुन ये सेनाके अग्रेश्वर शंखध्वनि करते भये अर कृष्णके कटकमें वादित्रनिकी ध्वनि होती भई अर सर्वत्र अभयघोषणा फिरी जो कोई काहूकूं न मारि सकै अर सबनिका भय मिट गया अर परसेनाके सबही विनाही कहे वासुदेवकी आज्ञामें आए ॥ ८६ ॥ अर राजा दुर्योधन अर द्रोण अर दुःशासनादिक विरक्त होय विदुरमुनिके निकट जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए, ॥ ८७ ॥ अर सुदर्शननामा उद्यानविषैं राजा कर्ण दमवरनामा दिगंबरके निकट जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए कैसी है वह जिनदीक्षा निर्वाणके जे सुख तिनकी देनहारी है स्वर्णके हैं अक्षर जिनमें ऐसे राजा कर्णके कानमें कुंडल वा वनमें तजे तबतैं वह स्थानक कर्णस्वर्ण कहावे है ॥ ८९ ॥ जब हरि प्रतिहरिका संग्राम होय चुका तब धनपति तौ यदुपतिकूं पूछिकरि स्वर्गलोक गया अर यादवराजा अपने अपने डेरामें आए अर मधुसूदन कहिए कृष्ण सो महाभारथविषैं जरासिंधकूं पडा देखि अति सोचकरि व्याकुल भये जरासिंध कैसा देख्या मानो समुद्रविषैं सूर्य ही पडा है वाकी मरण दशा देखि मधुसूदन रुदन किया सो रुदनकरि नेत्र ऐसे अरुण होयगए मानों जयाके पुष्प ही हैं अर कृष्णके आंसू पडे सो मानों जरासिंधकूं जलही दिया ॥ ९१ ॥ गौतम-गणधर कहे हैं हे श्रेणिक ! यह प्राणी शुभके उदयविषैं संपदाकूं भोगवै है, वह संपदा प्रचंड पुरुषनिके प्रतापकूं उलंघनहारी है, अर जब सुखका क्षय होय तब आपदाकूं भजै है तातैं भव्यजन सम्पत्ति विपत्ति दोऊ समान जान मोक्षका कारण जो जिनभाषित निर्मल तप ताहि आदरतैं करहु ॥ ९२ ॥

इति श्री अरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ जरासिंधवधवर्णनोनाम द्विपंचाशःसर्गः ॥ ५२ ॥

अथानंतर—प्रभात ही सूर्यके उदय पहले हरि जाग सबकूं दर्शन देते भए अर सूर्य हु उदय भया कैसा है सूर्य हरिकी न्याई औरनि करि अलंघ है तेज जाका अर उद्योत किया है सब दिशाविषै जानै प्रभात ही कृष्ण जे घायल हैं दोऊ सेनाके मनुष्य तिनके यत्न कराये अर जे मृतक भए हैं जरासिंध आदि तिनकी दग्धक्रिया करी ॥ २ ॥ अर सभाविषैं समुद्रविजयादि सबही कृष्ण सहित तिष्ठे संते वसुदेवका आगम देखे हैं ॥ ३ ॥ परस्पर सब ही भाई बतलावैं वसुदेवके समाचार भी न आए सो कहा है अर कैयक पुत्र भी उनकी साथ गए हैं प्रद्युम्नकुमार अर संबुकुमार यह दोऊ पोते भी गए हैं तिनकी खबर भी न आई याभांति सब ही यादव परस्पर बातें करै हैं बाल अर वृद्ध सब ही बसुदेवकी बाट देखे हैं अर जैसे गाय बछडोंकी ओर देखे तैसे समुद्रविजयादि बडे वसुदेवकी बाट देखे हैं अर जैसे बछडे गायकी ओर देखे हैं तैसे बलदेब वासुदेव आदि वासुदेवकी बाट देखे हैं ताही समय आकाशविषैं उद्योत दृष्टि पडा अर वेगवतीनामा विद्याधरी आई अर ताके साथ एक नागकुमारी देवी आइ यह नागकुमारी वेगवतीकी दादीका जीव है, ऋषदत्ता तपस्विनी जिनधर्मकूं आराधि देवी भई सो सभाके मध्य आयकरि समुद्रविजयसूं कहती भई जो तुम कृतार्थ होवो वसुदेवने तो सब विद्याधर जीते अर वसुदेवके पुत्रने जरासिंध जीता वसुदेव बहुत नीके हैं वह कुशल रूप हैं अर तिहारी कुशल चाहे हैं सब बडोंसे प्रणाम किया है अर छोटोंसे असीस कही है यह वचन देवीके सुनकरि सबही यादव हर्षित भए अर रोमांच होय आये अर यह पूछतै भए जो उन विद्याधर कैसे जीते तब देवी कहती भई वसुदेवके संग्रामविषैं सामर्थके समाचार सुनो यहांसे वसुदेव विजयार्द्धगिरि जायकरि सब साले अर ससुरे विद्याधर भेलेकरि अर सब विद्याधर घेरे वह समस्त सेना सहित जरासिंधकी मदत आवते हुते मो उनकूं रोके अर दोऊ सेनानिमें महा युद्ध भया सो प्रजाकूं महाप्रलय कालकी शंका भई ॥ १५ ॥ सो दोऊ सेनानिके युद्धमें रथ हाथी मनुष्य तुरंग इत्यादि अनेक विध्वंस भए वसुदेव अर वसुदेवके पुत्र अर प्रद्युम्न अर संबुकुमार यह पौत्र तिनसहित विद्याधरनिसूं युद्ध किया ।तिनके समूह

रूप बनकूं भस्म करवे अर्थि दावानलका रूप आचरते भए बाण रूप है ज्वाला जिनके ॥ १७ ॥ सो युद्धके समय आकाशविषैं देव गम्भीर शब्द करते भये जो वसुदेवका पुत्र नवमा वासुदेव भया अर रणविषैं चक्रकरि जरासिंध मार्‍या ऐसा कहकरि वसुदेवके रथपर देवोंने नाना प्रकारके रत्नोंकी वृष्टिकरी यह देवनिकी वाणी सुनि रत्नवृष्टि देख सब ही बैरी विद्याधर भयमान इधर उधरतैं वसुदेवके शरणमें आए ॥२१॥ अर वसुदेवके पुत्रनिकूं अर प्रद्युम्न शंबुकुमारकूं विद्याधर पुत्री परणावते भए अर हम वसुदेवकी पठाई तुमपै आई हैं कुशल क्षेमकी वार्ता कहवे अर्थि हमारा आवना भया है अर अनेक विद्याधरनिके ईश्वर भांति भांतिकी भेंट लेय करि वसुदेवके लार नारायणकी भक्तिकूं आवैं हैं ॥ २४ ॥ या भांति वह नागकुमारी हर्षके समाचार कहै है ताही समय आकाशके मार्ग विमाननिके समूह करि विद्याधर वसुदेवके साथ आवते भये सो विमाननितैं उतरि वसुदेवके पीछे बलदेव वासुदेवकूं प्रणामकरि नानाप्रकारकी वस्तु भेंट करते भये ॥ २६ ॥ बलदेव अर वासुदेव पिताकूं देख उठकरि प्रणाम करते भये अर वसुदेवने दोनों छातीसे लगाए अर बहुत असीस दई अर वसुदेव सब बडे भाइनिकूं प्रणाम करते भए प्रद्युम्न अर संबुकुमार यथायोग्य सब बडोंको प्रणाम करते भए अर वह विद्याधर वसुदेवके साथ आएहुते तिनका बलभद्र अर वासुदेवने सन्मान किया व बलभद्र वासुदेवका दर्शनकरि अपना जन्म सफल बनाते भए ॥

अथानंतर—बलदेव वासुदेव दोऊ भाई पश्चिमकी दिशा प्रयाण करते भए। दोऊ भाई आनंदकरि पूर्ण सिद्ध भए हैं सब मनोरथ जिनके जिस क्षेत्रविषैं जरासिंध हत्या या क्षेत्रविष सब यादवनिके आनंद भया सो वह स्थानक आनंदपुर कहाया तहां हरिने अनेक जिनमंदिर कराए ॥ ३२ ॥ फिर चक्रकी पूजाकरि सब रत्न करि मंडित मधुसूदन आय भरतक्षेत्रकूं जीतता भया तीन खण्डके देव अर दानव अर मानव सब जीते वर्ष आठतक दिग्वजय करी निरंतर इष्ट प्रदान करि सेव्यमान जो कृष्ण सो जीतवे योग्य है तिन सबनिकूं जीतकरि कोटिशिलाकी ओर आया कैसी है वह कोटिशिला मुक्त भये हैं कोटि मुनि जहांतैं इसलिये महातीर्थ है ॥ ३५ ॥ वह

पवित्र शिला ताहि प्रदक्षिणा देय प्रणामकरि सिद्धनिका ध्यान धरि कृष्ण दोऊ भुजानिकूं चार अंगुल उठावते भया वह शिला एक योजन ऊंची अर एक योजन चौडी अर एक योजनही लम्बी अर तीन खंडके सब देव वा शिलाकी रक्षा करैं वह शिला पहला वासुदेव त्रिपृष्ट ताने मस्तक ऊपर हाथ ऊंचे करिए इतनी उठाई अर दूजा द्विपृष्ट ताने मस्तक प्रमाण उठाई ॥ ३८ ॥ अर तीजा स्वयम्भू वाने कंठ पर्यंत उठाई अर चौथा पुरुषोत्तम वाने कुच पर्यंत उठाई अर पांचवां पुरुषसिंह वाने हृदय पर्यंत उठाई ॥ ३९ ॥ अर छठा पुण्डरीक वाने कटि पर्यंत उठाई अर अर सातवां दत्त वाने जंघोंतक उठाई अर आठवां लक्ष्मण वाने गोडा पर्यंत उठाई अर नवमां कृष्ण वाने चार अंगुल उठाई या भांति नव नारायण कोटिशिलाकूं उठावते भए सो कालका योग पाय बडे पुरुषनिका बल घटे है शिला उठावनेके बल करि सबोंने जानी यह महाबली है या समान देवबल औरनिका नाहीं सो संपूर्ण दिग्विजय करि अर्द्ध चक्रवर्ती जो कृष्ण सो द्वारकाकी ओर चले सो कईएक दिनमें द्वारका जाय प्राप्त भए कैसी है द्वारका सुन्दर है द्वार जाके अर कैसे हैं कृष्ण उत्तम पुरुषनिकी असीसकरि बढा है आनंद जिनके जैसे स्वर्गविषैं इन्द्र प्रवेश करै तैसे महा शोभायमान जो द्वारावती ताविषैं नरेन्द्र प्रवेश करता भया जब द्वारिका आये तब सब ही विद्याधर साथ आये सो द्वारिका विषैं यथाविधि अपने अपने स्थान तिष्ठे दूसरे दिन सब भूचर खेचर देव भेले होयकरि बलभद्र नारायणका अभिषेक किया अर सबनिने कही यह आधे भरतक्षेत्रके प्रभु हैं यामें संदेह नाहीं यह बलभद्रनारायण प्रसिद्ध पुरुष हैं ॥ ४५ ॥ दोऊ भाई सिंहासन पर विराजकरि प्रथमही जरासिंधका पुत्र सिंहदेव ताका अभिषेक कराया राजगृहका राज्य दिया अति स्नेह किया अर अनेक देश दिये बहुरि राजा उग्रसेनके पुत्र दार ताहि अभिषेक कराय मथुरापुरीका राज्य दिया अर समुद्रविजयके पुत्र रथनेमि श्रीनेमिनाथके दुमात भाई तिनिकूं शौरीपुरका राज्य दिया महानेमि सुनेमि रथनेमि इत्यादि नेमिनाथके दुमात भाई हैं ॥ ४७ ॥ अर हस्तनापुरका राज्य पांडवनिकूं दिया इनसूं हरिका अधिक स्नेह है अर हिरण्यनाभ जरासिंधका

सेनापति सो तो युद्धविषैं अनावृष्टितैं लड परभव गया ताका छोटा भाई रुक्मनाभ राजा रुधिरका पुत्र तासूं अति स्नेहकरि कौशल देश दिया। अर जितने भूमिगोचरी तथा सब विद्याधर हैं तिनकों वासुदेवने अपने अपने स्थानक दिए। अर सबनिकूं विदा किए सो पांडवादिक अपने अपने स्थानक गए अर द्वारकाविषै यादव ऐसे रमे जैसे देव स्वर्गविषैं रमै कृष्णके रत्न सात प्रथम सुदर्शननामा चक्र जाकरि शत्रुवर्गकूं सुख नाहीं अर सारंगनामा धनुष जाकी ध्वनि सुनि शत्रु कंपायमान होवें अर सुनदा नामा खड्ग ३ कौमुदीनामा गदा ४ अमोघमूलानामा शक्ति ५ पंचजन्यनामा शंख ६ अर कौस्तुभनामा मणि इत्यादि ७ रत्न वासुदेवके होंते भए तिनकरि अतुल प्रताप यह सात रत्न दिव्यमूर्ति हरिके हितकारी होते भए ॥ ५२ ॥ अर वलभद्रके अपराजितनामा हल सो महा दिव्य आयुध है अर शक्ति नामा मूसल दिव्य गदा अर रत्नमाला इत्यादि रत्न वलदेवके होते भए। कैसा है वलभद्र जीता है रिपुमंडलका पराक्रम जानें ॥ ५३ ॥ अर्धचक्री कहिए कृष्ण वासुदेव उसके सोलहहजार रानी अर आठहजार गणवद्ध देव शरीरके रक्षक ॥ ५४ ॥ तिनके सेवनीक सुखकूं भोगता भया। हरिके सोलह हजार रानी सो देवांगनानिके विभ्रमकी हरणहारी अर वलभद्रके आठ हजार रानी सुरांगनानितैं हू अधिक उन सहित देवनि कैसे सुख भोगता भया ॥ ५५ ॥ सभी यादव जिनमतके अधिकारी हिमऋतु शिशिरऋतु वसंतऋतु ग्रीष्मऋतु वर्षाऋतु शरदऋतु इन छहो ऋतूनिविषैं द्वारिकाके मध्य मणीनिके मंदिर तिनविषैं सुन्दर स्त्रीनिके सहित रमते भए ॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णविजयवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५३ ॥



अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछता भया हे प्रभो! पांडवनिका विशेष चरित्र मोहि कहो तब संदेहके समूहकूं निवारणहारे गौतमगणधर कहते भये हे श्रेणिक! हस्तिनापुरविषैं पांडव सुखतैं राज करें कृष्णकी

पवित्र शिला ताहि प्रदक्षिणा देय प्रणामकरि सिद्धनिका ध्यान धरि कृष्ण दोऊ भुजानिकूं चार अंगुल उठावते भया वह शिला एक योजन ऊंची अर एक योजन चौडी अर एक योजनही लम्बी अर तीन खंडके सब देव वा शिलाकी रक्षा करैं वह शिला पहला वासुदेव त्रिपृष्ट ताने मस्तक ऊपर हाथ ऊंचे करिए इतनी उठाई अर दूजा द्विपृष्ट ताने मस्तक प्रमाण उठाई ॥ ३८ ॥ अर तीजा स्वयम्भू वाने कंठ पर्यंत उठाई अर चौथा पुरुषोत्तम वाने कुच पर्यंत उठाई अर पांचवां पुरुषसिंह वाने हृदय पर्यंत उठाई ॥ ३९ ॥ अर छठा पुण्डरीक वाने कटि पर्यंत उठाई अर अर सातवां दत्त वाने जंघोंतक उठाई अर आठवां लक्ष्मण वाने गोडा पर्यंत उठाई अर नवमां कृष्ण वाने चार अंगुल उठाई या भांति नव नारायण कोटिशिलाकूं उठावते भए सो कालका योग पाय बडे पुरुषनिका बल घटे है शिला उठावनेके बल करि सबोंने जानी यह महाबली है या समान देवबल औरनिका नाहीं सो संपूर्ण दिग्वि-जय करि अर्द्ध चक्रवर्ती जो कृष्ण सो द्वारकाकी ओर चले सो कईएक दिनमें द्वारका जाय प्राप्त भए कैसी है द्वारका सुन्दर है द्वार जाके अर कैसे हैं कृष्ण उत्तम पुरुषनिकी असीसकरि बढा है आनंद जिनके जैसे स्वर्गविषैं इन्द्र प्रवेश करै तैसे महा शोभायमान जो द्वारावती ताविषैं नरेन्द्र प्रवेश करता भया जब द्वारिका आये तब सब ही विद्याधर साथ आये सो द्वारिका विषैं यथाविधि अपने अपने स्थान तिष्ठे दूसरे दिन सब भूचर खेचर देव भेले होयकरि बलभद्र नारायणका अभिषेक किया अर सबनिने कही यह आधे भरतक्षेत्रके प्रभु हैं यामें संदेह नाहीं यह बलभद्रनारायण प्रसिद्ध पुरुष हैं ॥ ४५ ॥ दोऊ भाई सिंहासन पर विराजकरि प्रथमही जरासिंधका पुत्र सिंह-देव ताका अभिषेक कराया राजगृहका राज्य दिया अति स्नेह किया अर अनेक देश दिये बहुरि राजा उग्रसेनके पुत्र दार ताहि अभिषेक कराय मथुरापुरीका राज्य दिया अर समुद्रविजयके पुत्र रथनेमि श्रीनेमिनाथके दुमात भाई तिनिकूं शौरीपुरका राज्य दिया महानेमि सुनेमि रथनेमि इत्यादि नेमिनाथके दुमात भाई हैं ॥ ४७ ॥ अर हस्तनापुरका राज्य पांडवनिकूं दिया इनसूं हरिका अधिक स्नेह है अर हिरण्यनाभ जरासिंधका

सेनापति सो तो युद्धविषैं अनावृष्टितैं लड परभव गया ताका छोटा भाई रुक्मनाभ राजा रुधिरका पुत्र तासूं अति स्नेहकरि कौशल देश दिया। अर जितने भूमिगोचरी तथा सब विद्याधर हैं तिनकों वासुदेवने अपने अपने स्थानक दिए। अर सबनिकूं विदा किए सो पांडुवादिक अपने अपने स्थानक गए अर द्वारकाविषै यादव ऐसे रमे जैसे देव स्वर्गविषैं रमैं कृष्णके रत्न सात प्रथम सुदर्शननामा चक्र जाकरि शत्रुवर्गकूं सुख नाहीं अर सारंगनामा धनुष जाकी ध्वनि सुनि शत्रु कंपायमान होवैं अर सुनंदा नामा खड्ग ३ कौसुदीनामा गदा ४ अमोघमूलानामा शक्ति ५ पंचजन्यनामा शंख ६ अर कौस्तुभनामा मणि इत्यादि ७ रत्न वासुदेवके होंते भए तिनकरि अतुल प्रताप यह सात रत्न दिव्यमूर्ति हरिके हितकारी होते भए ॥ ५२ ॥ अर वलभद्रके अपराजितनामा हल सो महा दिव्य आयुध है अर शक्ति नामा मूसल दिव्य गदा अर रत्नमाला इत्यादि रत्न वलदेवके होते भए। कैसा है वलभद्र जीता है रिपुमंडलका पराक्रम जानें ॥ ५३ ॥ अर्धचक्री कहिए कृष्ण वासुदेव उसके सोलहहजार रानी अर आठहजार गणवद्ध देव शरीरके रक्षक ॥ ५४ ॥ तिनके सेवनीक सुखकूं भोगता भया। हरिके सोलह हजार रानी सो देवांगनानिके विभ्रमकी हरणहारी अर वलभद्रके आठ हजार रानी सुरांगनानितैं हू अधिक उन सहित देवनि कैसे सुख भोगता भया॥ ५५ ॥ सभी यादव जिनमतके अधिकारी हिमऋतु शिशिरऋतु वसंतऋतु ग्रीष्मऋतु वर्षाऋतु शरदऋतु इन छहो ऋतूनिविषैं द्वारिकाके मध्य मणीनिके मंदिर तिनविषैं सुन्दर स्त्रीनिके सहित रमते भए॥ ५७ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ कृष्णविजयवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५२ ॥



अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीकूं पूछता भया हे प्रभो! पांडवनिका विशेष चरित्र मोहि कहो तब संदेहके समूहकूं निवारणहारे गौतमगणधर कहते भये हे श्रेणिक! हस्तिनापुरविषैं पांडव सुखतैं राज करैं कृष्णकी

प्रबलता करि बढा है हर्ष जिनके ॥ २ ॥ जब हस्तिनापुरविषै पांडवनिका अखंड राज्य भया तब प्रजाकूं अति सुख उपजा सो सबही प्रजा दुर्योधनादिककूं भूल गई ॥३॥ एक समय पांडवनिकी सभाविषै नारद आया अढाई-द्वीपविषै अखंड है गति जाकी अर प्रचंड है चित्त जाका अर स्वभाव हीकरि कलहप्रिय है सो सबही भाईनिने आदर सहित नारदका विनय किया बहुरि नारद राजलोकमें गये सो सबनिने विनय किया अर द्रौपदी काहू कार्यकरि ब्याकुल चित्त हुती सो निकसिवे पैसवेकरि नारदकूं न देख्या ॥ ५ ॥ सो अग्नि जैसे तेलके प्रसंगकरि प्रज्वलित होय तैसे नारद क्रोधकरि प्रज्वलित भया अनादरकरि दुखित प्राणी सज्जनका अवसर न जाने ॥ ६ ॥ द्रौपदीकूं दुख देनेका अभिप्राय जाके सो याके हरायवेका निश्चय करि घातकीखंडका पूर्वार्द्ध भरतक्षेत्र तहां अंगदेशविषैं अमरकंकानामा नगरी तामें प्रवेश किया तहां राजा पद्मनाभ सो अतिकामी स्त्रीनिका अति लोलुपी वासूं मिल्या ॥८॥ वाने जानी यह नारद अढाई द्वीपमें फिरै है सो मेरीसी रानी भी काहूके है ऐसा विचार यह नारदके साथ अपने राजलोकमें गया सब स्त्री नारदकूं प्रणाम करती भई तब राजा नारद से पूछी हे प्रभो ! तुम मेरीसी राणी काहू और ठौर हू देखी तब नारद जानी याके स्त्रीनिका गर्व है अर यह विषयाभिलाषी है जब याके समीप द्रौपदीके रूपकी लावण्यता लोकातीत वर्णन करी वाके द्रौपदीकी अभिलाषारूप पिशाच लगाय-करि द्वीप क्षेत्र नगरोंकी वार्ता करि तत्काल आप विहार कर गया ॥ ११ ॥ अर राजा पद्मनाभ द्रौपदीके अर्थि संग्रामकनामा पातालवासी देव ताहि आराधता भया ॥ १२ ॥ सो वह देव याका आराध्या थका अर्जुनकी स्त्री द्रौपदी ताकूं सूतीकूं सेज सहित उठाय राजा पद्मनाभकी पुरी ले गया ॥ १३ ॥ अर देवने पद्मनाभसूं कही वाहि लाया हूं सो तेरे मन्दिरके उपवनविषै है तब यह जाय करि द्रौपदीकूं देखता भया मानों साक्षात् देवांगना ही है ॥१४॥ सो द्रौपदी सर्वतोभद्रनामा महलविषै सूती सो और ही स्थानक देखकरि जानी यह स्वप्न है सो स्वप्नकी शंका करि सेजविषै सोय गई ॥ १५ ॥ अर लग रही है आंख जाकी तब वाका अभिप्राय जानि यह राजा धीरे

धीरे वाके निकट जाय प्रिय वचन कहता भया, हे विशालनेत्रे ! घटस्तनी ! कहिये घट समान है स्तन जाका यह धातकीखंडद्वीप है मैं पद्मनाभनामा राजा हूं सो नारदने तेरा मनोहररूप वर्णन किया ताके अर्थि मैं देव आराध्या सो देव तोहि ले आया है सुनकरि यह महा सती चकितचित्त होय रही सो मनमें चितवती भई महा दुःख मेरे उदय आया सो अब यही प्रतिज्ञा है जौंलग मोहि अर्जुनका दर्शन न होय तौलग मेरे आहारका त्याग है अर शरीरके संस्कारका त्याग है ॥ २० ॥ कैसी है द्रौपदी अभेद्य है शील जाका सो शीलरूप वज्रके कोटमें बैठी राजा पद्मनाभकूं कहती भई कैसा है वह कामकरि पीडित है चित्त जाका द्रौपदी कहै है मेरे भाई तो बलभद्र नारायण हैं अर अर्जुन मेरा पति है अर मेरे दोय जेठ एक युधिष्ठर दूजा भीम सो महा योधा अर दोय देवर नकुल अर सहदेव सो यमराज समान हैं सो उनके मनोरथरूप रथ जल अर थलविषै विचरे हैं कोई निवारवे समर्थ नाहीं यातैं जो तू अपना कल्याण चाहै है अर कुटुम्बका भला चाहे है तो मोहि शीघ्रही मेरे स्थानकूं पहुंचा देय मैं कालकूटविष समान हूं ॥ २४ ॥ याभांति द्रौपदीने कही परन्तु यह आग्रह न तजै याका रूप देख और नारीनिसे इच्छा घट गई तब यह महासती एक बुद्धि उपाय वासूं कहती भई मेरे पीहर सासराके एक मासमें न आवें तो तेरी इच्छा होय सो करना तब वह सुनकरि चुप हो रहा अर अपने राजलोककी सर्व स्त्री याके लुभावनेके अर्थ रक्खीं अर यह महा सती निर्भय होय आहारका त्याग करती अश्रुपात डारती अपने पतिकी बाट देखै अर वहां हस्तिनापुरविषै प्रभात समय द्रौपदीकूं न देखिकरि पांडव व्याकुल भये कोई उपाय न जाना तब यह पांचों भाई हरिके निकट गये कैसे हैं हरि पराये दुःखकर दुःख है जाके सो सब भरतक्षेत्रविषै द्रौपदी हेरी सो काहू ठौर न पाई तब सब यादवनिने विचार किया जो या क्षेत्रतैं और क्षेत्रविषै कोई क्षुद्र ले गया तब सब यादव भेले होय मंत्र करै हैं ताही समय नारद आया समस्त यादवनिकरि भरी जो सभा ताविषै हरिसे कही मैं धातुकीखंडविषै द्रौपदी अति दुर्वल अमरकंका नामा नगरीविषै पद्मनाभ नामा राजाके मंदिरविषै देखी सो निरंतर आंसू डारै है। अर पद्मनाभके राजलोककी स्त्री ताहि आदरसे सेवै हैं अर शीलमात्रही है आधार जाके सो निस्वास डारै है यह द्रोपदीकी

वार्ता नारदके मुखतैं सुनकरि कृष्ण नारदकी प्रशंसा करते भये अर प्रसन्न भए। कैसा है नारद बुरा भी करै अर भला भी करै तब कृष्ण बोले वह दुष्ट द्रोपदीकूं हरिकर कहां जावेगा वह मृत्युकूं चाहै है सो वाहि कालके मंदिर पहुंचावेंगे याभांति कहकरि कृष्ण वैरीसे द्वेषरूप भए अर द्रोपदीके लायवेकूं उद्यमी भए वासुदेव दक्षिणके समुद्रके तट रथ चढि गए ॥३८॥ तहां लवण समुद्रके अधिष्ठाता देवकूं आराधिकरि पांचो पांडवनि सहित धातुकीखंडके भरतक्षेत्रमें गए अमरकंका नामा नगरीके उद्यानविषैं विराजे सो पद्मनाभकूं इनकी वार्ता हलकारोंने कही जो छह रथ हैं तिनमें कृष्ण अर पांच पांडव हैं अर उनके संग सैना कुछ भी नाहीं यह वार्ता सुनकरि राजा पद्मनाभ चतुरँग सेनासहित इनसे युद्ध करिवे अर्थि नगर वाहर निकस्या सो पांडवोंने युद्धकरि भगाया सो पीछे नगरमें पैठा अर नगरके द्वार जुड़ि गढपकरि बैठा सो गढ़ पांडवनिकरि अलंघ्या तब कृष्ण क्रोधकरि गढ़के लातकी दई सो गढका चूर होयगया कोट दरवाजे सब चकचूर भए अर नगरके मंदिर ढहने लगे लोक व्याकुल होय भाजे भाजे फिरैं पुरमें कोलाहल वहुत भया ॥ ४४ ॥ तब वह पद्मनाभ नगरके लोक अर राजलोक सहित कोई उपाय न जानि भयकरि व्याकुल द्रोपदीके शरण गया महा कंपायमान शीघ्रही द्रोपदी पर जाय कहता भया हे देवी ! हे दयावती ! हे सौम्य ! हे पतिव्रते ! क्षमा करो क्षमा करो मुझे अभयदान देवो मैं अपराधी तिहारी शरण आया हूं ॥ ४६ ॥ तब याहि शरण आया जानि यह महासती शीलवंती कृपावती कहती भई हे राजा ! तू स्त्रीका भेष धरि वासुदेव स्वामीके शरण जावहु वह नरोत्तम महा दयाल हैं जो अपराध भी करै अर उनके पांवों पड़े तो क्षमा करैं वह सबही पर दयावान हैं अर स्त्री तथा बालक पर अति दयावंत है जे शस्त्रसे डरैं अर युद्धसे डरैं तिनकूं कान्ह कबहूं न मारैं द्रोपदीके यह वचन सुनि वह राजा पद्मनाभ आप स्त्रीका भेष धरि अपनी स्त्रीनि सहित कृष्णके शरण आया वह शरणागत पालक पृथिवीपति वाकूं अभयदान देय विदा करते भए। कैसे हैं कृष्ण जो शरण आवै उसके भयके हर्ता हैं अर दुष्टनिकूं दंडके दाता हैं।

अथानंतर—द्रोपदी कृष्णकूं प्रणाम करि कुशलक्षेम पूछती भई अर कृष्णने ताकी कुशलक्षेम पूछी अर अर्जुन द्रोपदीकूं उरविषें लगाय बिरहविथा निवारी अर अपने प्रस्वेद सहित कर तिनकरि याकी चोटी खुल रही हुती सो वांधी अर याके प्रतिज्ञा हुती जादिन पतिकूं देखूं ताही दिन भोजन करूं अर पति न आवै जेते मेरे शरीरका संस्कार नाहीं सिरके विखरे बाल न सवारूं जब पति आवैगा तव ही वेणी वन्ध करेगा वेणी कहिए चोटी सो वांधेगा सो पतिहीने चोटी वांधी अर ताहीसमय स्नानकरि पांचो पांडवनि सहित कृष्ण भोजनकरि, द्रोपदीकूं भोजन कराया अर द्रोपदी अपना दुःख निवेदन कर आंसूनिसहित नारुया। भावार्थ—आंखोंमें आंसू न पडे मानो दुःख ही गया ॥ ५३ ॥ हरि जो है सो द्रोपदीकूं रथमें चढाय ले चले समुद्रविषैं आय अर शंख बजाया सो शंखके शब्दकरि दशों दिशा पूरित भई ता समय या भरतक्षेत्रका वासुदेव कपिल वहांके तीर्थेश्वरके दर्शन करने आया हुता तहांकी चंपापुरी ताके उद्यानविषैं भगवानका समोशरण हुता सो कपिलने प्रभुकूं पूछी हे नाथ! यह शंख कौनने बजाया मेरे समान शक्तिका स्वामी दूसरा वासुदेव मेरे इस भरतक्षेत्रमें नाहीं याभांति कपिलने पूछी तव जिनेंद्रने कही यह जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रका कृष्ण नामा नोवां नारायण है सो अमरकंकापुरीके राजा पद्मनाभने द्रोपदी हरी ता कारण इनका आगमन भया तव कपिलने प्रभुसे कही हे नाथ! वहांका वासुदेव यहां आवे अर मैं न मिलूं और उनकी पाहुणगति न करूं यह योग्य नाहीं। उनसे मिलनेकी मेरी इच्छा है तव भगवानने कही किसी कालमें तीर्थेश्वरका तीर्थेश्वरसे अर चक्रेश्वरका चक्रेश्वरसे अर हरिसे हरिका अर प्रतिहरिका प्रतिहरिसे अर वलभद्रका वलभद्रसे मिलाप न भया अर न होयगा ॥५८॥ सो तू जायगा तो तेरा अर उसका मिलाप ध्वजानिकरि होयगा तू वाकी ध्वजा देखेगा अर वह तेरी देखेगा तेरे शंखका नाद वह सुनैगा अर उसके शंखका नाद तू सुनेगा मुखदर्शन कदाचित न होय सो यह गया जो प्रभुने कहा हुती सो भया, याके रथकी ध्वजा उसने देखी अर उसके रथकी ध्वजा वाने देखी अर शंखध्वनि सुनी वहुरि कपिल अपनी चंपा-

पुरी गया अर अन्यायमार्गका कर्ता अमरकंकापुरीका राजा पद्मनाभ ताका बहुत तिरस्कार किया जातैं आगेकूं ऐसे काम न करै ॥ ३१ ॥ ज्यों कृष्ण समुद्रकूं तिर गये हुते त्योंही शीघ्रही तिरि पीछे जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें आए समुद्रके तट केशव तो विश्राम किया। अर पांडव नावकरि गंगाकूं तिरि दक्षिण तटविषैं आय तिष्ठे भीमका स्वभाव कौतुकी तानैं कृष्णके निकट नाव पीछे न भेजी अर नाव छिपा दी अर कृष्ण ताही समय समुद्रके तटसे गंगाके दूसरे तट द्रोपदीसहित आए अर वहांहीसे पांडवोंको पूछी तुम गंगा कैसैं तिरे ॥६५॥ तब भीम कृष्णकी शक्ति देखिवेकूं झूठ बोले जो हम भुजानितैं तिरे तब कृष्ण जानी यह सत्य कहै है तब आप महाबली तुरंग अर सारथी सहित रथकूं एक हाथ पर उठायकरि एक भुज अर जंघानिकरि अथाह नदीकूं ऐसे उलंघी जैसैं कोई गोडा प्रमाण जलकूं उलंघे ॥ ६६ ॥ तब पांडव आश्रयकूं प्राप्त भए अर शीघ्रही सन्मुख जाय प्रणाम करते भए अर वासुदेवकी अतुल्य शक्ति ताकी स्तुति करते वासुदेवकूं उरसे लगावते भए ॥ ६७ ॥ अर भीमका हास्यरूप स्वभाव सो हंसकरि कृष्णतैं क्रीडाकी वार्ता कहता भया जो हमने तिहारी शक्ति देखवे अर्थ पाछी नाव न पठाई सो तिहारी शक्तिका कहा कहना तब कृष्ण इनतैं विरक्तचित्त भए प्रथम तो बडोंसे हास्य न करना अर जो उनके प्रसन्न होवे अर्थ हास्य करिए तो देश काल देखि रीतिप्रमाण उनका भाव देखि काम करिए सो इन विना समय हास्य करी ताकरि कृष्ण उदास होय पांडवनिसूं कहते भए हे कुपांडवो ! जो मनुष्यसे न बनै ऐसे अमानुषिक मेरे कर्म या जगतविषैं तुम अनेक बार देखे तौहू तिहारे संदेह न गया। या गंगाके उतरिवेविषैं मेरी शक्ति तुमने क्या देखी ॥६९॥ या भांति इनसे उलाहना देते मनमोहन इन सहित हस्तिनापुर आए अर अपनी बहन सुभद्रा उनका पोता परीक्षित अर्जुनके पुत्रका पुत्र ताहि हस्तिनापुरका राज देय पांडवनिकूं यहांसे काढे ॥ ७० ॥ अर आप समस्त सावंतनिसहित द्वारका गए अर सब यादव सन्मुख आगे कृष्णपुरीमें जाय आनंद उपजाया अर निज स्त्री हैं उनका बहुत सन्मान किया ॥७१॥ अर पांडव हस्तिनापुरसे निकल दक्षिण मथुराकी ओर स्वामीकी

आज्ञाप्रमाण चले स्वामीकी आज्ञा इनकूं ऐसी भई जैसें विना समय असणिपात पड़े सो यह जायकरि दक्षिण मथुराविषैं प्रवेश करते भए सो दक्षिण मथुरा अनेक प्रवीण जन तिनकरि भरी है अर पांडव भी महा निपुण हैं ॥ ७२ ॥ यहां समुद्रकी लहर महा मनोहर अर तटके वनविषैं लौंग इलायची अगर चंदन तिनकी सुगंध पवन-करि सब दिशा सुगंध रूप होय रही हैं ऐसे मलयागिरिके तट तिनविषैं पांचो भाई विहार करते भए ॥ ७३ ॥ यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! कहां लवण समुद्र जम्बूद्वीपके परे सो जम्बूद्वीप जंबू-वृक्षोंकरि मंडित है अर कहां धातकीखंडकी पृथिवी जहां यहांके मनुष्यकी अगम्य तहां वासुदेव गए अर कार्य कर आए सो जिनधर्मके प्रभावसे क्या क्या सिद्ध न होय जिन जीवोंने पूर्वभवविषैं जिनधर्मका आराधन किया है तिनकूं कुछ दुर्लभ नाहीं ॥ ७५ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्रौपदीहरणपांडवदक्षिणमथुरानिवेशवर्णनोनाम त्रिपंचाशत् सर्गः ॥ ५३ ॥

अथानंतर—श्रीनेमिकुमार तरुण अवस्था संयुक्त तिनकूं इन्द्रलोकतैं कुवेर नितप्रति वस्त्र आभूषण लावे अर कल्पवृक्षोंकी माला अर सुगंध द्रव्यका लेप निरंतर लावे आप बडे २ राजपुत्रोंकरि वेष्टित सब यादवनिकरि शोभित जो सभा ताविषैं विराजे हुते वह सभा वलभद्र वासुदेव आदि कोटिक यादवनिकरि पूरित जाविषैं अनेक राजा आवै हैं नमस्कार करै हैं सभाका नाम कुसमचक्रा ॥ २ ॥ तहां इंद्रका निर्मापा जो सिंहासन ता ऊपर श्रीतीर्थेश्वर विराजे अर वलभद्र वासुदेव दोऊ भाई सिंहासनके तले दोऊ ओर वैठे सभा अति सोहती भई मानूं जिनराजके समीप सौधर्म ईशान इन्द्र वैठे हैं सभाविषैं कृष्ण वासुदेव अमृतरूप कथा करते हुते कैसे हैं कृष्ण अनेक राजानिकरि सेवनीक हैं वासुदेवपद जिनका अर कैसे हैं राजा प्रगट है शूरवीरता अर शरीरकी दीप्ति जिनकी अर महा विभूतिकरि मंडित है ता समय सभाविषैं वलवंतनिके वलकी वार्ता चली तब काहूने अर्जुनकी प्रशंसा करी अर काहूने युधिष्ठरकी प्रशंसा करी काहूने भीमकी प्रशंसा करी अर काहूने नकुल सहदेवकी

प्रशंसा करी काहूने बलभद्रकी प्रशंसा करी काहूने हरिकी प्रशंसा करी जो पर्वत उठाय लिया अर कोटिशिला उठाई सो सबोंने देखी या भांति सभाविषैं अनेक राजानिकी प्रशंसा भई तब पद्मनाभ बलभद्र बोले तुम सब औरनिकी वृथा स्तुति करो हो श्रीभगवान नेमि जिनेन्द्रकासा बल तीन लोकमें नाहीं यह चाहें तो अपने करतल करि पृथिवीकूं उठाय लेंय अर समुद्रकूं दिशानिविषैं बखेर देवें यह जगनायक हैं इनकासा बल सुरनरमें नाहीं यह बचन बलभद्रके सुनकरि वासुदेव मुलककरि जिनदेवतैं कहते भये अद्भुत बलके धरणहारे आप हो सो मल्लयुद्धमें क्यों न परखिये तब भगवान जिनेश्वरदेव कही हमसे मल्लयुद्ध तो तुम कहा करोगे देखें हमारा चरण ही सिंहासनसे चलाओ तुम बडे भाई हो तुमतैं मल्लयुद्ध कहा करिये ॥ १० ॥ तब कृष्ण जिनराजके बलके परखिवे अर्थि उठकरि चरण चलायवेकूं उद्यमी भये सो चरणकी एक अंगुली हू चलाय न सके कैसे हैं जिनके चरण कोटिक चन्द्रमाकी ज्योतिकूं हरैं ऐसे हैं नख जिनके सो कृष्ण खेद खिन्न होय पसेवरूं भर गये अर स्वांस भर आये तब हाथ जोड विनती करते भये हे देव ! तिहारा बल लोकोत्तर है तुम समान त्रैलोक्यमें अर कोई बल- वान नाहीं तिहारा गर्भ अर जन्म देवनिकरि पूजनीक है हम मंद बुद्धि धरकरि यह अयुक्त कौतुक किया सो क्षमा करो अर चित्तमें बडा पश्चात्ताप भया जो मैं विना बिचारे अयुक्त किया ताका फल अपमान भया अर मनमें विचारी इनके बलका थाह नाहीं अथाह बात है वासुदेवके बलका गर्भ हुता सो गया अर साथमें इंद्रका आसन चलायमान भया सो इंद्र देवनि सहित आय प्रभुकी पूजाकरि स्तुतिकरि नमस्कारकरि अपने धाम गये ॥ १३ ॥ अर भगवान जिनचंद्र अनेक देव अर राजकुमारनि सहित अपने महल पधारे अर हरि हू निगर्व होय अपने धाम गये अर हरिके चित्तविषैं कछुएक शंका उपजी जो राजका अर्थी होय सो जिनराजतैं भी सकै विद्यावान बलवान पुरुषके बडे राजमें नाहीं ऐसा विचार कृष्णके होता भया अर जिनराज तो सदा प्रतापरूप इनके कुछ वितर्क नाहीं महा शांतरूप हैं ॥

अथानंतर—निरंतर जिनचंद्रकूं अपने सैकडों वल्लभ तिनसहित केशव सेवै स्नेहका भरया दर्शन करै अर्चा करै ॥ १५ ॥ यहां एक और कथा चलै है विजयार्द्धविषै एक श्रुतशोणितनामा नगर तहां वाणनामा राजा पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध अर रणसंग्रामविषै महा शूरवीर ताके उषानामा पुत्री सो गुण कलारूप आभरण तिनकरि शोभित पृथ्वीमें प्रसिद्ध ताने प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्धके उदार गुण सुने सो ताके चित्तमें अनिरुद्ध वस्या ताका चित्त हू कोमल अर अनिरुद्ध हू कोमल तथापि अनिरुद्धके गुणनिका श्रवन ताके मनविषैं अर तनविषैं मदनरूप आताप उपजावता भया। यहां कोई प्रश्न करै कोमलकूं कोमल कैसैं आताप उपजावै, ताका समाधान। ताके भौंह वक्र अर इनकी वृत्ति वक्र सो ता वक्रवृत्तिने ताका मन अपने आधीन किया ॥ १८ ॥ सो याके चित्तकी व्याकुलता कोऊ जानै नाहीं तब वाहि जे हितकारी स्त्री हैं तिनि पूछ्या सो वाने अनिरुद्धका वृत्तांत कह्या जो मैं ताके गुण सुने हैं सो वाहि वरूंगी तब वाकी सखी विद्याधरी अनिरुद्धकूं रात्रिविषै विद्याधरनिके लोक ले गई ॥ १९ ॥ सो ले जायकरि उषाके सेजपर शयन कराया प्रभात ही उठिकरि अनिरुद्ध देखे तो कोई अर ही स्थानक अर ही रत्नमई मंदिर हैं तहां मृदुशय्याविषैं आप पौढ्या है अर उठकर देखे तो एक सुंदर कन्या बैठी है ॥ २० ॥ कैसी है कन्या? सुंदर हैं नितम्ब जाके अर कठिन हैं कुच जाके अर मनोज्ञ है तन जाका अर तनके मध्य मनोहर त्रिवली जाके सो वाहि देखकरि अनिरुद्ध चिंतवता भया यह मनकी हरणहारी कौन है शची है या पद्मावती है या यह कोऊ मनुष्य वधू है ऐसी अबतक देखिवेमें न आई अर स्थानक हू कोऊ अपूर्व नजर आवै है नेत्रनिका हरणहारा इंद्रलोक समान यह स्थानक है यह सत्य है या असत्य है जाग्रत है या स्वप्न है सोते मनुष्यका मन भ्रमै है सो यह मेरा मन ही न भ्रमै है ऐसी आसंका अनिरुद्धके मनमें उपजी तब चित्रलेखानामा सखी सब वृत्तांत कहती भई अर वाही समय सखी इन दोऊनिका एकांतविषै गंधर्वविवाह करावती भई सो अनिरुद्धकुमार उषाके महलहीमें विराजे निरंतर सुरतरूपी अमृतका पान करते ये दोऊ देव देवांगना समान वींद वींदनी तिनका सुखसूं काल

व्यतीत होय यह समाचार हरिने सुने तब बलभद्र अर प्रद्युम्न शंबुकुमार आदि कईएक यादवनि सहित तत्काल अनिरुद्धके लायवे अर्थि विमानके मार्ग राजा बाणके नगर गये ॥ २ ॥ अर यह विवाह उषाने सखीके समीप एकांतमें किया वाहि माता पिता न जानै अर कृष्ण पुत्रकूं अर पुत्रबधूकूं लेवे अर्थि तहां गए सो वह राजा कृष्णसूं युद्ध करवेका उद्यमी भया, नर तुरंग रथ हाथी यह चतुरंग सेना सहित इनपर आया सो वाहि जीतिकरि वासुदेव उषासहित अनिरुद्धकूं लेयकरि द्वारिका आये ॥ २७ ॥ अनिरुद्धके विरहका दुःख सब यादवनिकूं हुता सो अनिरुद्धके आयवे करि सब ही आनंदरूप भए द्वारकाविषैं सब ही यादव देवनि समान क्रीडा करैं।

अथानंतर—वसंतऋतु आई सो नगरके नर नारि सब ही वनविषै क्रीडाकूं गये वनविषैं सब वृक्ष फूले सो कृष्ण हू अपनी सकल राणीनि सहित गिरनारके वनविषैं क्रीडाकूं गए सो विनतीकरि श्रीनेमिनाथकूं भी ले गए यद्यपि भगवानके किसी क्रीडाका अनुराग नाहीं तथापि भाई अर भौजाई तिनके आग्रहसूं गए अनेक अश्व अनेक रथ अनेक हस्ती अर अनेक योधानिकरि युक्त महा सुंदर वस्त्राभरण पहिरे जगतके ईश्वर नेमीश्वर अर तीनखंडके ईश्वर बलदेव अर वासुदेव यह तीनों ही भाई वनमें गए जिनेन्द्रके वृषभकी ध्वजा अर बलदेवके ताडकी ध्वजा अर वासुदेवके गरुडकी ध्वजा अर समुद्रविजयादिक दशों भाईनिके पुत्र सब ही तरुण वयवाले इनके साथ गए अर कृष्णका पुत्र प्रद्युम्न पुष्पनिके हैं बाण अर धनुष जाके अर मगरकी है ध्वजा जाके सो दशूं भाइनिके पुत्रनिके संग नेमिकुमारके पीछे चाले ॥ ३१ ॥ अर नगरके लोक अपने अपने वाहननिपर चढे यथायोग्य वस्त्राभरणकरि मंडित वनक्रीडाके वास्ते बनमें गए अर हरिकी राणी आदि अनेक राणी पालकी रथ इत्यादि अनेक बाहननिपर चढि बनमें गईं वह गिरनारनामा गिरि नर नारीनिकरि अति शोभता भया गिरिके बन ऐसे शोभते भए जैसे सुमेरुके वन देव देवांगनानिकरि सोहैं अर गिरिपर जायकरि सब नर नारी अपने अपने बाहनसूं उतरि वन विहार करते भए गिरिके तट अर बन तिनविषैं स्त्री पुरुष जलकेलि आदि अनेक केलि

करते भये सब जगह नर नारी फैलि गये वह वंसतका समय तामें सुगंध पुष्पनिका मकरंद विस्तर गया अर शीतल मंद सुगंध पवन दक्षिणकी बाजती भई ताकरि प्राणीके खेद विलय होते भये यद्यपि यादवनिके राजमें काहूकूं काहू प्रकारका खेद नाहीं तथापि जितनी विषयक्रीड़ा है उतना सव खेदरूप ही है सो क्रीडामात्र खेद दक्षिणकी पवनकर निवृत्त भया आमनिके मौर लागे हैं तिनपर कोयल मिष्ट शब्द करै हैं जिनके शब्द सुनकरि कामका उद्दीपन होय है ॥३७॥ अर भंवर पुष्पनिका मकरंद पीय मधुर शब्द करै हैं अर कुर्वकजातिके वृक्ष अर मौलसरी आदि सुगंध वृक्ष भंवरनिके समूहकरि सुंदर दीखै हैं अर द्विपद कहिये मनुष्य अथवा कोयल आदि मनोहर पक्षी अर षट्पद कहिये भ्रमर तिनके शब्दकरि गिरिके वन मनोज्ञ भासे हैं जैसे शरणागतकरि शरणागत प्रतिपाल सोहै तैसैं वह वन आश्रितनिकरि शोभता भया अर हस्तीनिके कुंभस्थलविषैं अर दोऊ काननिविषैं भंवर गुंजार करते हुते सो आमनि की मंजरीपर गये सो यह बात उचित ही है नई वस्तुविषैं रुचि विशेष होय ॥३८॥ पुष्पनिके भारकरि नय गये वृक्ष सो पुष्पनिके चूंटने अर्थि स्त्रीनिने हाथकरि हिलाये ॥ ३९ ॥ अर कुछएक ऊंची हुती शाखा जिनकी सो स्त्रीजननिने पुष्पनिके ताई नीची करी सो उनके करका स्पर्श पाय प्रफुल्लित होते भये जैसे प्रीतम प्रियाके करका स्पर्श पाय प्रसन्न होय ॥४०॥ ता वनविषैं तरुणजन अपनी तरुणीनिसहित वनभ्रमणका सुख भोगकरि पुष्पनिकी सेजपर ऋतुक्रीडा करते भए ॥ ४१ ॥ ता वसंतऋतुविषैं बन वनमें अर नानाप्रकारके गुलोंके लतागृहमें अर तरु तरु प्रति अर सरोवर प्रति अर वापिका प्रति यादव अर समस्त नगरके लोक क्रीडा करते भए। माधव कहिए कृष्ण सोई भया चंद्रमा तिनि षोडस सहस्र स्त्रीनि सहित चैत्रमास वनमें व्यतीत किया कैसा है चैत्रमास फैल रह्या है फूलनिका मकरंद जाविषैं ऐसे चैत्रमासमें माधवचंद्र महा सौभाग्यकूं धरे बनविषैं विहार करते भए। हरिकी सबही स्त्री मनकी हरणहारीं पतिकी आज्ञातैं वृक्ष अर वेलकरि रमणीक जो वह वन ताविषै श्रीनेमि जिनेंद्रकूं विहार करावती भईं ॥ ४२ ॥ वे केशवकी कामिनी अपने मुखकी सुगंधताकरि

वाचाल जे मधुकर तिनकरि वेष्टित हैं अर बनकी लतानिके पुष्पनिकरि चूंटिवेविषैं तत्पर हैं अर मदनके मदकरि आलस्यरूप है मन अर नेत्र जिनके ॥४५॥ सो वह मुकुंदकी मनमोहिनी अपना देवर जो देवाधिदेव ताकूं नाना-विधि पतिकी आज्ञाप्रमाण बनक्रीडा करावती भई अपनी इच्छासूं नाहीं कोई एक भावज करसूं कर ग्रहि बनविषै विहार करावै अर कैयक चंद्रवदनी प्रभूकूं बनकी शोभा दिखावै कैयक तालके तमालके बीजना तिनकरि वयार घालैं अर कैयक आशोकवृक्षके नवीन पल्लवकरि सेहरा बनावैं ॥ ४७ ॥ अर कैयक पुष्पमाला पहरावैं अर कैयक सिरपर फूल टांमें कैयक कंठविषैं पुष्पनिके आभूषण पहिरावैं ॥४८॥ या भांति वसंतकी ऋतुविषैं भगवान नवयौवन मधुसूदनकी प्रियानिकरि लडाया थका हर्षसूं क्रीडा करता भया। वह कृष्णकी कामिनी जिनसमान संसारमें कामिनी सुंदर नाहीं सो भक्तिसूं जैसैं सेवक प्रभुकी सेवा करै तैसैं यह नेमीश्वरकी सेवा करती भई दोय मास वसंतके हरिने बनक्रीडाकर पूर्ण किए बहुरि ग्रीष्मऋतु आई सो सूर्यकी किरण अति तीव्र भई तब हरिकी आज्ञातें हरिकी प्रिया जिनेंद्रसूं जलक्रीडाका आग्रह करती भई। गिरनार गिरि शीतल नीझरनानिकरि महा मनोहर तहां जलके निवाण पवित्र जलकरि पूरित तिनविषैं तीर्थेश्वर भोजाइनिके आग्रहसूं जलक्रीड़ा करते भये यद्यपि भगवान स्वतःस्वभाव रागरूप रजसूं पराङ्मुख हैं तथापि ता समय ॥ ५१ ॥ जलविषैं तिरना डुबकी लेना अर दूर जायकरि निकलना अर परस्पर पिचकारीनिकरि रमना याभांति यदुपति जलक्रीडा करते भए। वे भावज भगवानके मुखकमलपर जल डारती भई। वे षोडस सहस्र अर प्रभु अकेले परंतु अपने हाथनिके छांटनिकरि अर पिच-कारीनिकी धारानिकरि सबनिकूं हराई सब पीछे होय गई वह जगदीशकी जलक्रीडा जगतके मनकूं हरती भई जगतके जीवनिनि ऐसी क्रीडा कबहुं न देखी अर भांति भांतिकी सुगंधकरि जलहू अति सुगंधरूप होय गया जापर भंवर गुंजार करैं सो जल मनुष्यनिके मनकूं हरता भया ॥ ५४ ॥ ता जलक्रीडाकरि तरुणीनिका ग्रीष्मका दाह मिट्या जैसे एक मोटा गजराज हथनियोंके समूहकूं जीते तैसैं अकेला जिनराज जलकेलिविषैं भौजाईनिके

समूहकूं जीतता भया वह संपूर्ण स्त्री वा जलकेलिविषैं तृप्त होती भईं च्युत होय गए हैं करणाभरण जिनके अर तरल होयगई है दृष्टि जिनकी अर धूसरे होय गए हैं अधर जिनके अर शिथिल होय गई हैं कटिमेखला जिनकी विखर रहे हैं केश जिनके हरिकी प्रियानिकी सखीजन वस्त्राभूषण नवीन लाईं सो स्नानकरि उन पहरे अर भगवान नेमिजिनेंद्र हू स्नान कर नवीन वस्त्राभरण पहरे जिन वस्त्रनिविषैं जलकेलि करीहुती सो वस्त्र पखालवेके अर्थि नेत्रनिकी सैनकरि जामवंतीकूं जिनेंद्रने आज्ञा करी तव वह भौंह टेढीकरि कहती भई मेरा पति नागशय्यापर शयन करै है जाविषैं कोटिक भुजंगनिके फण तिनपर मणि तिनकी ज्योतिके मंडलकरि दुगुणित भई है मुकुटके मणीनिकी प्रभा जाकी अर मेघकी ध्वनिकूं जीते ऐसा जो शंख वाहि वजावै है जाकर धरती आकाश शब्दायमान होय है अर शारंग नामा धनुष जाहि कोऊ देखि न सकै ताहि चढावै है ॥ ६१ ॥ ऐसा मेरा भरतार सो मोहि कवहूं ऐसी आज्ञा न करै अर तुम देवर होयकरि मोसूं वस्त्र पखालवेकी आज्ञा करी सो उचित नाहीं ॥ ६२ ॥ मैं तो आपकी माता समान हूं यह वचन जामवंतीके सुनिकरि कोई कन्हैयाकी कामिनी वाहि कहती भई हे निर्लज्ज ! यह अनंतगुणके स्वामी त्रैलोक्यनाथ इनसूं पीछा जवाव कहना योग्य नाहीं तैंने यह वचन विना समझसूं कहे ॥ ६३ ॥ यह वार्ता उनके परस्पर भई तव भगवान जामवंतीसूं कहते भए तेरा पतिका अद्भुत पौरुष कहा जो औरनिसूं न वनै सो शंखका वजावना अर धनुषका चढावना अर नागशय्यापर शयन करना वताय सो यह कहा कठिन कार्य है ऐसा कहकरि आप शीघ्रही नगरमें आये राजमंदिरविषैं प्रवेश किया ॥ ६४ ॥ अर नागशय्यापर आरोहण किया वह शय्या चलायमान जे सर्प तिनके फणनिकरि भयंकर है अर धनुष चढाया अर शंख पूरा भगवान ईश्वर तिनकूं कठिन कहा ॥६५॥ वाचाल जो शंखका शब्द ताकरि सवदिशा शब्दायमान भईं आकाश धरती अर समुद्र सवही शब्दायमान भये ॥ ६६ ॥ अर जे मदोन्मत्त हस्ती हुते सो वंधन तुडावते भये अर कोटिक तुरंग वंधन तुड़ाय हींसते हींसते भ्रमण करते भये ॥ ६७ ॥ अर महलके शिखर पडते भये। कृष्ण

सभामें बैठे हुते सो सब सभा क्षोभकूं प्राप्त भई अर नगरके लोक प्रलयकालके आगमकी शंकाकरि व्याकुल भये ॥ ६८ ॥ तब हरि अपने शंखका शब्द सुनकरि शीघ्रही जाय नेमिकुमारकूं नागशय्यापर आरूढ देख्या समस्त राजानि सहित वासुदेव जिनदेवका पराक्रम देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भया ॥ ६९ ॥ जामवंतीके कठोर वचनकरि प्रभुकूं रोस उपजाया यातैं यह कार्य किये ऐसा जानि जामवंतीकूं उलाहना दिया अर सब भाईनिसहित नेमिश्वरकी प्रशंसा करता भया मोटे पुरुषनिका विकार हू अति हर्षकारी होय है। कृष्ण वडे भाई प्रभुकूं उरसूं लगाय पूजाकरि अपने घर गया अर अपनी स्त्रीनिसूं जलकेलि वनकेलिकरि वीतरागकूं रागसहित किया यातैं हरि अधिक प्रसन्न भये ॥ ७१ ॥ वाही समय वासुदेव भोजवंशीनिकी राजमतीनामा सुता जिनपतिके ताईं यांची अर सब राजा कुटुंबसहित भेले किये सबनिका बहुत सन्मान किया ॥ ७२ ॥ सब स्त्री पुरुष परमरूपके धरणहारे अनेक आभूषणनिकरि मंडित नगरविषैं भाईनिके घर भोजनके ताईं पधारते भये ॥ ७३ ॥

अथानंतर—ग्रीष्मऋतु गई अर वर्षाऋतु आई आकाशविषें मरुस्थलके पंथी तृषातुर मेघमाला देखते भये ॥ ७४ ॥ प्रथम तो मेघ गर्जता भया अर बहुरि शीतल जलके कण वर्षते भये जिनकरि पपीहानिकूं सुख होय सो वह मेघका वर्षना या पृथिवीविषैं जे नरनारी वियोगी हैं तिनकूं दूणा दुःसह आताप उपजावता भया ॥ भावार्थ—मेघके वर्षनेकरि औरनिका आताप दूर होय अर वियोगीनिके दूणा आताप वढै ॥ ७५ ॥ ग्रीष्मकी दाहकरि अर दिवाकरके किरणकरि दग्ध जो वनस्थली तिनविषैं प्रथमही मेघके वर्षनेकरि अंकुर ऊगते भये सो मानूं हर्षके रोमांच ही भये हैं पृथ्वीरूप प्रियाने मेघरूप प्रीतमके दर्शनकरि हर्षके रोमांचही धारे हैं ॥ ७६ ॥ चलायमान विजुरी अर चलायमान बादल अर वर्षैं हैं मेहकी बूंद अर इंद्रधनुष चढि रह्या है सो आकाश तो इनकरि व्याप्त है अर पृथिवी सावनकीटोकरनिकर भरी है सो पंथी चाले पंथीनिका मन सर्वथा गमनसूं विमुख भया है ॥ ७७ ॥ अर कुटिल जातिके वृक्ष अर कदंबजातिके वृक्ष अर वकुल जातिके वृक्ष फूलि रहे हैं तिन करि

सब दिशा सुगंधमई होय रही हैं वनके स्थान अर पहाडकी तलहटी अर पहाडके शिखर हरियाली करि सोहै हैं ॥ ७८ ॥ लता मेघकी गर्जनाकरि भयकूं प्राप्त भई स्त्रीजनने चूडा अर कंकण तिनके शब्दकरि वाचाल जो बाहुलता ताकरि प्रीतमका कंठ दृढ ग्रहणकरि भयरूप ग्रहका निग्रह करती भईं ॥ ७९ ॥ अर त्रिकालयोगके धारणहारे मुनि ग्रीष्मसमय गिरिके शिखरकी शिलापर आतापन योग धरि तिष्ठे हुते सो वर्षाकालविषैं शीतलपवन मेघकी बूंद तिनकरि अति विषम जे वृक्षनिके तल तहां ध्यान धरते भये ॥ ८० ॥ ता समय श्रीनेमि-जिनेश्वर चार घोडानिकरि युक्त जो रथ तापर चढकरि विवाहकूं चाले सो वह रथ सूर्यके रथकी प्रभाकूं जीते है तापर विराजे श्रीनेमिनाथ राजानिके तरुण पुत्रनिकरि संयुक्त गमन करते भये ॥ ८१ ॥ कैसे हैं प्रभु राजमतीके पीहरकी स्त्री जननिने तृषित नेत्रनिकरि पिया है सुंदरतारूप जल जिनका ऐसे नेमिकुमार विस्तीर्ण राजमार्ग होयकरि गये दयाकरि पूर्ण है चित्त जिनका अर मनोहर है दर्शन जिनका तासमय पवनके योगकरि समुद्र ऊंचा उछल्या सो मानूं नटवेकी नाईं समुद्र नृत्य ही करै है नटवा नाचै है सोई मधुरध्वनि करै है अर समुद्रहू गर्जता संता मधुरध्वनि करै है अर नटवा हाथनिकरि भाव दिखावै है अर समुद्र तरंगरूप हाथनिकरि भाव दिखावै है अर उपवनमें होयकरि बनकी शोभा देखते ईश्वर जाय हैं सो नम्रीभूत है शाखा जिनकी ऐसे वन वृक्ष फूल डारै हैं सो मानूं नम्रीभूत भये कुसुमांजलिही चढावै हैं ॥ ८२ ॥ सो बनविषैं भगवान नानाजातिके तृण आहारी मृगादि पशु भयकरि कंपायमान तिनकूं नीचे पुरुष घेरे बैठे सो देखिकरि आप रथ थांभ्या अर सारथीसूं पूछया यह नानाप्रकारके मृगजातिकूं रोके हैं यह नीचजन इनकूं क्यों घेरि रहे हैं तब सारथी हाथ जोडि नमस्कारकरि कही हे नाथ ! यादव आदि अनेक राजा उत्तमवंशके उपजे सो तो सब जिनधर्मी हैं जिनके तो अन्नका ही आहार है अभक्षका प्रयोजन नाहीं अर कैयक भील आदि नीचकुलके आये हैं ते मांसाहारी हैं तिन पापीनिने मांसके अर्थि यह पशु रोके हैं ॥ ८७ ॥ यह वचन सुनिकरि भगवान दयानिधान सब ही जीवनकूं छुडावते भये अर राजपुत्रनिकूं

निरखिकरि कहते भये विस्तरचा है अवधिज्ञान जिनके अर मेघकूं जीते ऐसी है ध्वनि जिनकी प्रभु कहे हैं ॥८८॥ अहो लोको ! यह पशु, नाहीं हैं घर जिनिके अर वनके तृण जलका है भक्षण जिनके अर निरपराध ऐसे मृगनिके समूह इनकूं कोई मारे ता समान निर्दयी कौन ? धिकार उन पापीनिकूं जे दुर्वल जीवनिकूं मारैं रणविषैं रणके जीतिवेकरि पाई है कीर्ति जिनि ऐसे योधा जो उनपर चलायकरि आवैं तापर प्रहार करैं और पर न करैं । हाथीका असवार तुरंगका सवार रथका सवार जो लडिवे आवे वासूं लडै और पर प्रहार न करैं ॥ ९० ॥ यह सामंतनिकी रीति है अर पापी जीवनिके विचार नाहीं जे वनके दुष्ट जीव अष्टापद सिंह अर वनगजकूं पकडकरि मारिवेकूं आवैं उनसूं दूर भागैं अर युद्धसूं दूर भागैं अर महादुर्वल मृग अर शूसा आदि उनकूं मारैं अर उनका मांस भखैं ते पापीनिकूं लाज न आवै ॥९४॥ अपने चरणनिमें काटेनिके वेधके भयतैं पागरखी पहरैं अपने शरीरके अनेक यत्न करैं अर वापर कोमल मृग उनकूं मृगयाविषैं तीक्ष्ण शस्त्रनिकरि मारैं उनके करुणा कहां परजीवमें अर आपमें भेद कहा जे परजीवकूं मारै हैं सो भव भवमें मारे जाय हैं नरक निगोदके दुःखरूप फल तिनके फूलरूप यह हिंसादि पाप जे नीचजन आचरै हैं तिनके परभवविषैं सुख कहांसूं होय इन पापोंके उदयविषैं जीव दुःखही भोगवै है अर षट्कायके जीवनिका पीडन सोही पाप है ॥ ९५ ॥ देखो यह वडा आश्चर्य है यह प्राणी विस्तीर्ण राज्यकूं तो चाहै है अर जीवनिकी हिंसाविषैं तत्पर होय है सो हिंसाकरि पापका वंध होय है अर पापके वंधका फल कडुवा है प्रकृतिबंध प्रदेशवंध स्थितिबंध अनुभागवंध यह चार प्रकार वंध तिनके वश पडे यह प्राणी दुर्गतिविषैं नानाप्रकार दुःख भोगवैं हैं ॥ ९६ ॥ यह जीव नरभव पायकरहू विषयसुखकरि मोहित भया संसारके दुःखकी निर्वृतिका यत्न नाहीं करै है भवभवमें दुःखकी खान जो यह विषयरूप नीच सुख ताकरि अति आसक्त हैं सो इनकी भूल कहां लग कहिये यह वाह्यरूप विषयोत्पन्न सांसारिक सुख इंद्रादिक पदनिके भोगवैं तो तृप्तिके कारण नाहीं जैसे सैकडा नदी समुद्रकूं तृप्तिका कारण नाहीं ॥ ९७ ॥ देखो देखो मैं पूर्वभव विषैं विद्याधरनिका अधिपति

भया बहुरि देवोंके सुख भोगकरि महाराज भया बहुरि अच्युतेन्द्र भया फिर राजा सुप्रतिष्ठ भया फिर जयन्त नामा विमानविषैं अहमिंद्र भया जहां इन्द्रहूतैं असंख्य गुणा सुत है सो मैं भोगे यह तेतीस सागरका है उत्कृष्ट आयु जहां अर जघन्य बत्तीसका सो मैं उत्कृष्ट आयु भोगी खो हू मैं तृप्त न भया ॥ १८ ॥ तो यह मनुष्यभवका अत्यंत तुच्छ आयु सो मोहि कैसे तृप्तिका कारण होय यह संसारिक सुख सर्वथा असार है। यद्यपि तीर्थेश्वर पद सर्वोत्कृष्ट है तथापि विनश्वर है तातैं आतापका करणहारा क्षणभंगुर यह विषयसुख ताहि तजकरि अविनश्वर निराबाध आताप रहित जो आत्मीक मोक्षसुख ताहि मैं तप कर उपार्जूं या भांति ईश्वरने मनकर बचनकर वैराग्य चिंतवन किया वाही समय पंचम स्वर्गके निवासी महा उज्वल अष्ट प्रकारके लौकांतिक देव आए सारस्वत, आदित्य, वन्हि, अरुण, अर्क, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, यह अष्ट प्रकार हैं भेद जिनके ॥ ॥ ये सब ही शीघ्र आये नमस्कार करते भए नम्रीभूत भए हैं मुकुट जिनके अर जोडे हैं कर जिनि वह देवऋषि ब्रह्मचर्यके धारक प्रभुतैं कहते भए, हे प्रभो ! यह समय है। अब तुम या भरतक्षेत्रविषैं धर्मतीर्थ प्रगट करो, तुम धर्मके नायक हो ॥ २ ॥ या भांति लौकांतिक देव स्तुति करते भए, भगवान स्वयंभू स्वयमेव प्रतिबुद्ध हैं तिनकूं कोई कहा समझावै, स्वामी वचन कहै अर वाहीके अनुसार सेवक बोले सो वचन पुनरुक्त कहिए सो पुनरुक्त अवसर विषैं सफल हैं लौकांतिक देवोंका यही नियोग है तप कल्याणकविषैं आय स्तुति करैं अर वैराग्य वृद्धिके वचन कहे भगवान सब जीवनिके बांधव तत्काल मृगनिकूं छुडाय द्वारावती पुरीमें आए तहां सिंहासनपर विराजे इंद्रादिक तपकल्याणके अर्थि आए प्रभुने स्नान किया अर इंद्रने वस्त्राभूषण पहराय अर कल्पवृक्षनिके फूलनिकी माला पहराई अर सुगंधका लेप किया भगवान सिंहासन पर विराजे ता समय सब राजानिकरि संयुक्त हरि अर हलधर बैठे अर सुर असुर बैठे सो सबनिकरि मंडित प्रभु कैसे सोहैं जैसे सुदर्शन मेरु कुलाचलनिकरि सोहै ॥ ६ ॥ तब भगवान तपके अर्थि उठने लगे तब हरि अर हलधर आदि सबही यदुवंशी अर भोजवंशी अनेक राजा तिनि विविधि

वचनकरि प्रभुकूं राखवेका उद्यम किया परंतु न राख सके जैसे प्रबल सिंह पिंजरा तोड निकसा चाहे उसे कोऊ न राख सकै तैसे भगवान मायारूप पींजरा ताहि तोडकरि निकसे सो कोऊन राख सके ॥ ७ ॥ आप तीर्थेश्वर जगतकी स्थितिके वेत्ता माता पिता आदि सकल बंधुजन तिनकूं संबोधकरि कुवेरकी रची जो उत्तरकुरुनामा पालकी तापरि आरूढ भये ॥ ८ ॥ वह पालकी ध्वजा अर श्वेत छत्र तिनकरि मंडित है अर मणिमई है वाडि ताके अर नाना प्रकारके वर्णकूं धरै है जैसे उदयाचलके शिखरविषैं चन्द्र आरूढ होय तैसे जिनवर पालकी पर असवार भए ॥ ९ ॥ सो पालकी पहले तो बडे बडे राजानिने उठाई पीछे इंद्रादिक देव आकाशके मार्ग ले चाले ॥ १० ॥ आकाशविषैं उत्कृष्ट हर्षकरि देवनिका किया सुंदर शब्द होता भया वह शब्द कानोंको प्रिय सदा सुनने योग्य भाग्हीनोंको दुर्लभ अर पृथिवीविषैं भगवानके बनविषैं जावनेसे सोचकरि पृथ्वीके लोक विलाप करे हैं तिनके शब्दकरि दिशा शब्दायमान होय रही है ॥ ११ ॥ प्रभुके तपकल्याणकविषैं अप्सरा नवरस सहित शब्द करती भई नेमनाथकूं विलोककरि बनविषैं सब ही जीव हर्षरूप भए। कैसे हैं श्रीनेमनाथ दृढताकूं प्राप्त भया है शांत रस जिनके जैसे वर्षा व्यतीत भये शरद विषैं मेघ अति उज्ज्वल भासे तैसे विषय रसके व्यतीत भये प्रभु अति उज्ज्वल निर्मल शांतिरसरूप भासते भये ॥ १२ ॥

अथानंतर—श्रीनेमि जिनेश्वर देवनिकी सेना सहित गिरनार गिरि जाय प्राप्त भये, कैसा है गिरनारगिरि सुमेरु समान है शोभाजाकी जाका नाम ग्रंथनिमें ऊर्जयंत कहै हैं सो गिरि पापनिकी सेनाकूं जीतता संता ऊर्जयंत नाम कहावै है अर कैसे हैं नेमि जिनेश्वर अविनश्वर जो गुणनिकी सेना ताकरि संयुक्त हैं ॥ १३ ॥ सुमेरुके सब तर्फ दिनकर अर निशाकर विचरे है तो हू तिमिरका अभाव नाहीं होय है। अर या गिरनारके आस पास जिनवरके प्रभावतैं तिमिरका अभाव है सोहू गिरनारकी ऊंचाई करि सुमेरका दृष्टांत दीजिये है अर प्रकाशका समूह देखिये तो भगवानके विराजवे करि यह गिरि न्यून नाहीं।

वह गिरनारतैं जे वाचाल नीझरने तिन करि अर पंछिनिके शब्द करि अर सुखके रसके देनहारे जे सुंदर मिष्ट आम्रफल तिन करि अर सुगंध फूलनिके मनोहर वृक्ष तिन करि पूर्ण है अर खोटे फूलनि कर रहित अति सोहे है ॥ १५ ॥ मणि अर स्वर्ण करि महा सुंदर वह गिर नाना प्रकारकी धातु अर रस अर औषध तिनकी शोभाकूं धरे अति सोहे है जाके शिखर किन्नर देवों करि मंडित सोहे हैं अर जाके वन अति रमणीक राजानि करि सोहे हैं ॥ १६ ॥ ऐसे गिरनार निःपाप जो उपवन ता विषैं भगवान पालकीतैं उतरे वह पालकी जिनेश्वरके विराजवे करि अति सुंदर भासै है अर मह पवित्र है सकल विकारकूं हरे है, भगवान अपना मत जो आत्मज्ञान ताहि पाय करि बनमें गये सो बन सिंहादि दुष्ट जीवनिकरि रहित है तहां हरि कहिये इन्द्र अथवा हरि कहिये वासुदेव तिन पालकीसे उतारे, भगवान महा तपको सन्मुख होय पालकीसे उतर करि तप धारनकी शिला पर आये तहां शिला आसपास देवोंके समूह करि विकाशरूप है जैसे इकवीसमें जिनेश्वर नमिनाथ आये हुते तैसे नेमिनाथ भी वैराग्यके अर्थि आये। माया सहित जो पृथिवी ताके त्यागकी है अभिलाषा जिनके सो शिलापर आय वस्त्र आभूषण अर पुष्प मालादि सब तजे ॥१८॥ वह भगवान कृति कहिये कृतार्थ वस्त्राभरणादि तजकरि पद्मासन विषै धीरता धारकरि प्यारी स्त्री जो ज्ञानानन्द विभूति ता अर्थि राजमती अर राजलक्ष्मी तिन त्यागके विषै प्रवर्ती है इच्छा जिनकी ऐसे जिनेन्द्र कल्याणभावविषै तत्पर जो बुद्धि तामें रत सो अपने कोमल कर तिनकी अंगुलनि करि सिरके केश उपाड़े सो केश अति सघन अति श्याम अति सुन्दर अति सुगंध अति सच्चिकण कायर पुरुषनिकरि उखाड़े न जांय सो तत्काल पंचमुष्टिकरि उपाड़े ॥ १९ ॥ सो मानों केश न उपाड़े सब परिग्रह ही उपाड़े सो भगवान लौंचकरि सकल परिग्रह तज करि हजार राजानि सहित दिगम्बरी दीक्षा धारते भये ॥ २० ॥ सिरके केश उपाडे मानों तीनों शल्यही उपाडी सो केश इन्द्रने मणीनिके पिटारे में मेल करि क्षीरसागरके जलविषैं पधराए ॥ २१ ॥ जहां भगवान तप लिया सो तीर्थ भया अर जा समय जिनेश्वर तप आदर्‍या

ताही समय मनःपर्ययज्ञान उपजा भगवान कोटिक देव तिनकरि संयुक्त चन्द्रमा समान सोहते भए जैसे चार ग्रह तारानिकरि युक्त सोहैं तैसे भगवान मुनीनिकी मंडलीकरि सोहते भए, चार ज्ञानकरि विराजमान चार कषायके त्यागी चतुर्विध संघके नायक परिग्रह त्यागियोंके तारक श्रावण सुदी चौथके दिन दिगम्बर भये। वेला पारणा करना यह प्रतिज्ञा धारी जब भगवान तप कल्याणकके धारक भये तब नर अर सुर असुर शोभनीक अष्ट द्रव्यनिकरि पूजाकरते भये अर नमस्कार कर या भांति स्तुति करते भये हे देव! तुम मदनके भंग करनहारे प्रभु हो अर संसारी जीवनिकूं शरण हो अर जीवोंके हितके वास्ते है चेष्टा जिनकी अर क्रोधका नाश करनहारे हो अर तृष्णासे रहित हो अर मुनीनिके नाथ हो अर निश्चय व्यवहार दोऊ नयके प्ररूपक हो या भांति स्तवन पूर्वक सुर असुर अर राजेश्वरने परमेश्वरकूं नमस्कार करि इनके गुण अपने हृदयमें धारते भये तपविषैं विराजमान भगवान कर्मरूप शत्रूनिके नाशको चक्रकी धारा समान तिनकूं भाव सहित नमस्कार करि सुर नर अपने स्थानक गये ॥२९॥ अर वेलाके पारणे अर्थि प्रभु द्वारकापुरीमें अहारकूं गये तहां वरदत्तनामा श्रावक भगवानकूं विधिपूर्वक निर्दोष आहार देता भया सो दानके प्रभावकरि पंचाश्चर्य भये रत्नवृष्टि १ पहुपवृष्टि २ सुगंधजलकीवृष्टि ३ शीतलमन्दसुगंधपवन ४ अर जयजयकारशब्द ५ जब भगवान साधुके मार्गमें आये तप धारा तब राजसुता जो राजमती सो अपने मनविषैं अति आतापकूं धारती भई। पतिके वियोगविषैं उपजा है चित्तमें खेद जाके। जैसे कुमुदिनी दिन विषैं मुरझाय जाय तैसे मुरझाय गई। शिथिल हो गए हैं भूषण अर केशनिके समूह जाके अपने समस्त परिवार सहित ॥ ३१ ॥ वरका हरणहारा जो पूर्वोपार्जित कर्म ताकूं उलाहना देती वह श्रेष्ठ महा सती गिरनार गिरपर आई शोकके समूह करि भरी गुरुजनोंके वचन करि हरया गया है संताप जाका सो तपविषैं बुद्धि धरै पर्वत पर आई वह तप अविनश्वर पदका कारण है अर शांततारूप सुखका मूल है वह राजमती कर अर चरणनिकी कांतिकर कमलकी शोभाकूं उलंघती शरीरका अनुराग

तज वैराग्यकूं उद्यमी भई। राजमतीने स्त्रीपना महा निंद्य जाना कैसा है स्त्रीपना प्रथम तो पराधीन है बहुरि नानाप्रकार दुःखरूप है जो भर्तारका लाभ न होय तो दुःख अर भर्तारके अंगविषैं दुःख होय तो स्त्रीकूं महादुःख फिर शोकका बडा भारी दुःख अर पुष्पवती न होय तो दुःख अर बांझ होय तो बडा दुःख फिर विधवापनेका दुःख कहनेहीमें न आवै अर प्रसूतिका रोग वाकी महा बाधा अर सौभाग्य न होय दुर्भाग्य होय तो महादुःख अर पति भाग्यहीन होय तो महादुःख अर गर्भविषै बालक मरजाय तो महादुःख अर गर्भमें बालक आवै अर पतिका वियोग होय तो महादुःख अर गर्भपात होय तो महादुःख अर गर्भके भारविषैं महादुःख अर जीवते ही धनीका वियोग होय अर मर्मकी जगह रोग उपजै सो बडादुःख या स्त्री पर्यायका कारण मिथ्यात है मिथ्यादृष्टि जीवही स्त्री पर्याय पावै है सम्यक्दृष्टी जीवनिके स्त्री पर्यायका बंध न होय जैसैं वस्त्रका मूल तार तैसैं स्त्री पर्यायका कारण मिथ्यात्व जो कोई दुःखरूप स्त्री पर्यायका अंत किया चाहै सो सम्यक्तका सेवन करै यह जिनभाषित सम्यग्दृष्टि पूज्य पुरुषनिकरि सेवने योग्य है अर अभव्य जीवनिकूं सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति नाहीं।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवानतपकल्याणवर्णनो नाम चतुःपंचाशत् सर्गः ॥ ५४ ॥

अथानंतर—श्री नेमिजिनेंद्र रत्नत्रय अर तपव्रत गुप्तिसमितिनिके समूहकरि सोहते भए जीती है सकल परिषह जिन्होंने अर अप्रस्त कहिए महानिंद्य जे आर्त्त रौद्र कुध्यान तिनकूं तजकरि धर्मध्यान अर शुक्लध्यानकूं ध्यावते भए। इन समान अर प्रशंसा योग्य नाहीं चित्तका एकाग्र निरोध ताहि ध्यान कहिए सो वज्रवृषभ संहननवालोंके चित्तका निरोध अंतर्मुहूर्त तक रहै है और संहननवालोंके अल्प रहै जिनका मन थिर न होय उनकूं ध्यान नाहीं चिंतवनमात्र होय ॥ ३ ॥ अज्ञानी जीवोंके तो आर्त रौद्र ही है अर सम्यग्दृष्टियोंके धर्मध्यान अर शुक्लध्यान है प्रथम ही आर्त्तध्यानका स्वरूप कहै हैं आर्त्त कहिए अर्दन बाधा कहिए पीडा ता विषैं उपजा जो

कलेश सो आर्त्तध्यान कहिये यह आर्त्तध्यान कृष्ण नील कापोत लेश्याके बलकरि उपजै है ॥ ४ ॥ सो आर्त्त ध्यानके लक्षण दो, एक वाह्य एक अभ्यंतर सो रुदनादिक अर विलापादिक यह तो वाह्य लक्षण हैं अर परस्त्री विषयादिकविषैं जो अनुरागभाव सो अंतरंग लक्षण है अर देवनिके तथा नृपनिके विषय देखिकरि सुनकरि अभिलाषा करना सो आर्त्तध्यान ताके लक्षण चार सो अपने भाव तो आप जान पाइए है अर औरनिके अनुमान कर जाने जाय हैं अनिष्टके संयोगविषैं वाके वियोगका चिंतवन सो अनिष्टसंयोगार्त्त कहिए ऐसी अभिलाषा करे जो मेरे अनिष्टका संयोग कदे ही मति हो अर कदाचित् अनिष्टका संयोग हुआ होय तो वाके वियोगके वास्ते विकल्प करवो करै सो पहिला आर्तध्यान कहिए अर दूसरा इष्टवियोगार्त्तध्यान ताका लक्षण कहै हैं मनोग्य वस्तुका वियोग होय तब जीवकूं खेद उपजै अर ऐसी विचारै मेरे इष्टका वियोग कबहूं मत होय ॥ ८ ॥ अर कदाचित हुआ होय तो अंतरंगकी चिंताकरि जलता ही रहै अर वाकी प्राप्तिका उपाय चिन्तवै यह दोय भेदके चार भेद भए अनिष्टका संयोग अर इष्टका वियोग इनके न होयवेका अभिलाष अर हुआ होय तो अत्यंत शोक मनको न भावै जे दुःख तिनका कारण अंतरंग तो विकारभाव है अर वहिरंग कारणविषैं शस्त्र अर दुष्ट जीव है अर वायु पित्त कफ आदि शरीरविषैं उपजै अनेकप्रकार रोग कुक्षरोग नेत्ररोग दंत पीडा वायु शूलादि पीडा इत्यादि अति दुस्सह रोग तिनकरि उपजी पीडा ताविषैं अति कायर होय सो रोगार्त्तध्यान कहिए अर या जन्म संबंधी तथा परभव संबंधी भोगनिका अभिलाषी होय सो भोगार्त्त कहिए ॥ ११ ॥ शोक अरति भय उद्वेग विषाद जुगुप्सा यह ही भए विष तिनकरि दुःखित मानसिक दुःखका कारण समस्त दोषोंका मूल यह आर्त्तध्यान है मेरे अनिष्टकी उत्पत्ति कभी मत होवे ऐसी चिंता करना सो पहले पायेका लक्षण है अर जो अनिष्ट उपज्या ताके अभावहीका निरंतर चिंतवन करै सदा विकल्परूप ही रहे ॥ १३ ॥ अर वाह्यपदार्थ कैयक चेतन अर कैयक अचेतन तिनमें पशु पुत्रादि चेतन अर धन धान्यादि अचेतन तिनके संग्रहका अभिलाषी होय मनोज्ञविषैं प्रीति करै अर

अमनोग्यविषैं अप्रीति करै अर वायु पित्त कफ आदि अंगके रोग इनका सदा वियोग ही चाहै यह लक्षण आर्त्तध्यानके हैं अर शोक भय आदि मनके दुःख कठिन तिनकरि सदा पीडित ही रहै मेरे मनोज्ञ वस्तुका वियोग अर असुन्दर वस्तुका संयोग कभी भी न होय या लोकविषैं अर परलोकविषैं मेरे मन भावती वस्तुका संयोग सदा रहो अर अणभावतीका मिलाप कभी न होय मनोज्ञके वियोगविषैं अर अमनोज्ञके संयोगविषैं झुरै यह आर्त्तध्यानका लक्षण है अर रोगका नाश अर भोगको अभिलाष यह सब आर्त्तध्यानके लक्षण जानो। या आर्त्तध्यानका आधार प्रमाद है अर फल तिर्यंच गति है अर यह क्षयोपशम भाव है अर पहले गुणस्थानसे लेय छठे गुणस्थानतक याकी दौड़ है ॥ १८ ॥ यह आर्तध्यानका लक्षण कहा अब रौद्रध्यानका लक्षण कहै हैं जो प्राणी दुष्ट होय अर क्रूरचित्त होय उसका जो भाव सो रौद्रध्यान कहिये वाके भेद चार हिंसानन्द १ मृषानन्द २ चौर्यानन्द ३ परिग्रहानन्द। ४ हिंसाकूं आदि देय अपराध तिनविषै रुचि सो हिंसानंदादिक चार भेद हैं हिंसाविषैं आनन्द माने मृषावादविषैं आनन्द माने चोरी विषैं आनन्द माने परिग्रहकी वधवारी विषैं आनन्द माने या रौद्रध्यानके लक्षण दोय प्रकार हैं एक वाह्य एक अभ्यन्तर सो वाह्य लक्षण कठोरता अर क्रूर वचनादि कर जान पड़े जो यह रौद्र ध्यानी है शरीरकी चेष्टा करि भौंहोंको वक्रताकरि नेत्रनिकी अरुणता करि दुष्ट जाना पड़े सो यह वाह्य लक्षण हैं ॥ २१ ॥ अर माहिले लक्षण समरंभ कहिये जीवहिंसादि पापों विषै यत्नकी प्रवर्त्ति अर समारंभ कहिये हिंसादिकके उपकरण शस्त्रादिक तिनका अभ्यास करना अर आरंभ कहिये हिंसादिक पापोंका प्रथमारंभ ये अभ्यंतरके लक्षण हैं हिंसाविषै जो तीव्र अनुराग सो हिंसानंद कहिये ॥२२॥ अर अपनी वनाई युक्ति करि परलोकका साधन औरसे और कहना अर लोकोंको ठगना सो महानिन्द्य मृषानन्द कहिये ॥ २३ ॥

भावार्थ—स्वर्गका कारण जीवदया है अर हिंसाकूं स्वर्गका कारण कहना अर यह वात लोक माने तव आप आनंद मानना सो मृषानन्द है अर अज्ञानके योगकरि परधन हरवेकी अभिलाषा होय अर वलात्कारे पराया धन

हर आनन्द मानै अथवा काहू दुष्टने पराया धन हरा होय ताकी वार्ता सुन हर्षित होय सो चौर्यानन्द कहिये ॥ २४ ॥ अर आपके परिगृह बढता देख आनन्द मानै अर औरके परिगृहानन्द नामा रौद्रध्यान कहिये पशु पुत्र कलत्र यह चेतन परिग्रह हैं अर वस्त्र आभरणादि यह अचेतन परिगृह हैं इनकी आपके वृद्धि होय अर पराये हानि होय वामें पापी प्रमोद मानै अर आपके परिगृहकी वृद्धि कर आपको स्वामी मानै ॥ इत्यादि रौद्रध्यानके लक्षण हैं ॥ २५ ॥ यह रौद्रध्यान चारप्रकार अशुभ लेश्यानिके वलकरि जीवोंको पहले गुणस्थानसे लेय पांचवें गुणस्थान तक होय है कृष्ण नील कापोत यह तीन लेश्या अशुभ हैं अर पीत पद्म शुक्ल यह तीन शुभ हैं ॥२७॥ यह रौद्रध्यान जीवके अनादिकालका है अर जौलग मिथ्यात्व है तौलग रहेगा परन्तु एक भांतिका घणा रहे तो अंतर्मुहूर्त रहे पीछे और भांति रौद्रध्यान होय एक हिंसाके अनेक भेद अर एक मृषाके अनेक भेद एक चोरीके अनेक भेद एक परिगृहके अनेक भेद हैं सो उनमें परिणाम भ्रमण करवौ करै अंतर्मुहूर्त पीछे एक भावतैं और रूप रौद्रध्यान होय जाय तातैं यद्यपि आर्त्त रौद्र अनादिकालके हैं अर अभव्योंके अनंतकाल रहेंगे तथापि और २ रूप होवौ करैं तातैं अंतर्मुहूर्त काल कह्या अर यह क्षयोपशमभाव है अर लेश्या कषायनिकी तीव्रतासे औदयिक भावहू कहिए अर रौद्रध्यानका फल नरकगति है ॥ २८ ॥ तातैं आर्त्त रौद्र इन दोऊ कुध्याननिकूं तजकरि जे मोक्षाभिलाषी हैं सो धर्मध्यान अर शुक्ल ध्यानविषैं अपनी बुद्धि धारो, कैसे हैं मोक्षाभिलाषी शुद्ध है आहार अर विहार जिनका ॥ २९ ॥

अथानंतर—धर्मध्यानकी सिद्धिके वास्ते योग्य द्रव्य योग्य काल अर योग्य भाव कहे हैं ॥ ३० ॥ योग्य द्रव्य तो उत्तम शरीर अर उत्तम संहनन अर योग्य क्षेत्र आर्यक्षेत्र ताविषैं एकांत अर प्राशुक कहिये निर्जन्तु भूमि जहां डांस मच्छर आदि क्षुद्र जीवींका उपद्रव नाहीं अर योग्य काल जाविषै अति उष्णता अति शीतता अर नेत्र निश्चल करि धर्मध्यान अर शुक्लध्यानकूं ध्यावे यह दो जीवके हितकारी हैं ज्ञानीजीव अपने मनकूं

इतनी जगहविषैं चाहे जहां रोके । नाभिके ऊपर अथवा हृदयके विषै अथवा मस्तकविषै अथवा अलकविषै रोक करि ध्यान करे वा नासिकाके अग्रभाग लग रही है दृष्टि जाकी ॥ ३४ ॥ धर्म कहिये यह वस्तुका स्वभाव ताथकी च्युत न होना सो धर्मध्यान कहिये ताके लक्षण दो एक बाह्य एक अभ्यन्तर जो सत्यार्थ शास्त्रका अवलोकन अर व्रत शील तपादिकका आचाण अर गुणनिका अनुराग अर छींक जंभाई डकार श्वासोश्वास इनकी मन्दता अर शरीरकी निश्चलता अर शुभक्रियाका धारण यह धर्मध्यानके बाह्य लक्षण हैं अर अध्यातमविषैं लीन होय । अर दश प्रकार धर्मध्यानका विचार सो निश्चय लक्षण है। धर्मध्यानके भेद दश प्रथम अपायविचय, अपाय कहिये कर्मनिका नाश ताका चिंतवन कर्मबन्धके कारण रागादिकनमें रुचि, निरंतर ऐसे भाव उपजे जो यह संसारके कारण मन वचन कायके योग तिनकी प्रवृत्तिका अभाव मेरे कैसे होय ॥ ३८ ॥ ऐसी चिन्ता चित्तमें रहे अर पीत पद्म शुक्ल यह तीन शुभलेश्या जाके पाइये सो आपायविचयनामा पहिला धर्मध्यान कहा ॥ ३९ ॥ अर दूसरा अपायविचय कहिये है जितने मोक्षके उपाय पवित्र भाव हैं ज्ञान वैराग्यादि सो मेरे कैसे होवें शुद्धोपयोगका उपाय सदा चिन्तवे सो अपायविचयनामा धर्मध्यान कहिये अर तीसरा जीवविचय ताविषैं ऐसा चिन्तवन करै जो यह जीव पदार्थ द्रव्यार्थिक नयकरि अनादि निधन ध्रुव पदार्थ है। अर पर्यायार्थिक नयकरि उत्पाद व्ययरूप है उपजै विनशे है अर उपयोग लक्षण है असंख्यात प्रदेशी है अर अचेतनके संबंधतैं अपने कर्मके फल भोगवै है इत्यादि जीवका स्वरूप चिन्तवना सो जीवविचय धर्मध्यान कहिये ॥ ४२॥ अर चौथा अजीवविचय धर्मध्यान जाविषैं पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल इनके स्वभावका चिन्तवन ॥ ४३ ॥ अर आठ प्रकार कर्म्मका चार प्रकार बन्ध प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश तिनके उदयका चिंतवन सो विपाकविचयनामा पांचवां धर्मध्यान कहिये । अर छठा वैराग्यविचय कहिये हैं यह शरीर महा अशुचि अर संसार असार अर भोग इन्द्रायणके फल समान प्राणनिकूं हर्ता ॥ ४५ ॥ ऐसी वैराग्यबुद्धि सो विरागविचय जानों अर सातवां भवविचय

कहिये हैं इन जीवनिके इस भवसे दूसरा भव धरना सो भव कहिये सो सब ही भव दुःखरूप हैं। देवपर्याय, मनुष्यपर्याय, नर्कपर्याय तिर्यंचपर्याय सबही दुःखरूप हैं यह विचार करना सो भवविचय जानो। अर आठवां संस्थानविचय कहिये हैं ज्ञानी जीव ऐसा चितवन करें जो अलोकाकाश अंनता है ताविषैं तीन वातवलय करि वेष्टित लोकाकाश है सो अनादिसिद्ध है काहूका किया नाहीं काहूके आधार नाहीं अपने आधार है। ताके आकारका चिंतवन सो संस्थानविचय कहिये ॥ ४७ ॥ अर नवमां आज्ञाविचय जो जिनेश्वरकी आज्ञा प्रमाण अलौकिक पदार्थनिका निश्चय करना। अर बन्ध मोक्षादिविषैं जिनभाषित श्रद्धा करनी सो आज्ञाविचय धर्मध्यान कहिये। अर दशवां हेतु विचय ताका लक्षण कहिये है स्याद्वाद कथनके आश्रयतैं युक्तिके अनुसार जो नित्यता अर अनित्यता अर अस्तिता अर नास्तिता इनका विचार सो हेतुविचय नामा दशमां धर्मध्यान कहिये ॥ ४९ ॥ ये दश प्रकार धर्मध्यान चतुर्थ गुण स्थानतैं लेयकरि सातवां अप्रमत्तगुणस्थान तहां लग होय है। यह धर्मध्यान प्रमादका नाशक है अर पीत पद्म लेश्याके बल करि उपजै है ॥ ५० ॥ अर क्षयोपशम भाव है अर अन्तर्मुहूर्त काल है अन्तर्मुहूर्त पीछे एक भेदतैं और भेदरूप धर्म ध्यान होय है यह धर्मध्यान स्वर्ग मोक्षका दायक है सो ध्यानी पुरुष ध्यायवे योग्य है ॥ ५१ ॥ धर्म ध्यानके चार भेद तो सकल ग्रन्थनिमें हैं। आज्ञाविचय अपायविचय विपाकविचय संस्थानविचय अर बडे ग्रन्थोंमें दश भेद भी कहे हैं अर शुक्लध्यान महा पवित्र है अर पवित्रताका कारण है समस्त दोष रहित हैं ताके दोय भेदे हैं एक शुक्ल दूसरा परम शुक्ल। सो शुक्लके भेद दोय अर परम शुक्लके भेद दोय पृथक्त्ववितर्कवीचार अर एकत्ववितर्कअवीचार यह दोय भेद तो शुक्लके हैं अर सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति अर समुच्छिन्नक्रियानिवर्त्तक यह दोय भेद परम शुक्लके हैं ॥ ५३ ॥ सो शुक्लध्यानके लक्षण दोय एक वाह्य एक अभ्यंतर। छींक जम्भाई खासी डकार आदि शरीरकी चेष्टाका अभाव अर श्वासोच्छ्वासकी अत्यंत मंदता सो यह लक्षण तो शुक्लध्यानके बाहरले हैं अर चित्तकी निश्चलता यह अंतरंगके लक्षण हैं यह लक्षण जिनके

होय सो तो ध्यानारूढही है अर औरनिके अनुमानकरि विवेकी जाने,वहिरंग लक्षण तो शरीरकी चेष्टाका अभाव अर अंतरंग लक्षण मनका निरोध ॥ अथानंतर—शुक्लध्यानके चार पायोंका लक्षण कहै हैं ॥ ५५ ॥ पहला पाया पृथक्त्ववितर्कवीचार ताका भेद सुनो पृथक्त्व नाम अनेकताका है अर वितर्क कहिये द्वादशांग निर्दोष सूत्र सो द्वादशांगके अनुसार तत्वकी अनेकताका विचार सो कौन भांति विचार करै अर्थसूं अर्थांतर अर शब्दसूं शब्दांतर अर योगसूं योगांतर परिणामका संचार होय ॥ ५६ ॥ अर्थ कहिए ध्यायवे योग्य निज द्रव्य निजगुण निज स्वभाव पर्याय तिनविषैं परिणाम विहार करै कभी आत्मद्रव्यमें लवलीन होय अर कब ही अपने निजगुण ज्ञान आनंदादि अनंत तिनमें मग्न होय कभी स्वभाव परणतिरूप अर्थपर्याय अथवा सिद्धपर्याय ताविषैं तल्लीन होय द्रव्यसे गुणमें गुणसे द्रव्यमें अथवा गुणसे गुणमें अथवा गुणसे परणतिमें या भांति निज विहार करै सो अर्थ संक्रम कहिए अर शब्द कहिऐ जिनसूत्रके शब्द तिनका रहस्य विचारता शब्दसे शब्दान्तर विहार करै सो व्यंजन संक्रम कहिये अर योग कहिये मन वचन कायके योगतैं योगांतर संचार सो यो संक्रम कहिये याभांति जिनश्रुतके अनुसार निज वस्तुकी अनंतताका ध्यान करै सो पहिला पाया पृथक्त्ववितर्कवीचार कहिये यह पहिला पाया उपशम अर क्षपक दोऊ श्रेणीवारे धारैं सो उपशमश्रेणीवारे तो मोहका उपशम करैं अर क्षपकवारे मोहका क्षय करैं क्षपकश्रेणीवारेनिके अत्यंत निर्जरा है ॥ ६० ॥ अर्थसूं अर्थांतर शब्दसे शब्दांतर योगतैं योगान्तर यह पहिले पायेका लक्षण कहा सो यह पाया आठमेंसे ले ग्यारहवें गुणठाणे लग है अर दूसरा पाया एकत्ववितर्क अवीचार सो बारमें गुणठाणे ही होय अर क्षपकश्रेणी वालेही धारें जहां एकीभावका अवलम्बन जो तत्वविषैं आरूढ भया तो वाही विषैं लीन भया अर जो गुणविषैं स्थिरीभूत भया तो तहांही भया एकवस्तुका है अवलम्बन जहां उपशम श्रेणीवालोंके तो शुक्लध्यानरूप शस्त्र अति तीक्षण नाहीं इसलिए मोहका उपशम ही करे अर क्षपकश्रेणीवालोंके ध्यानरूप शस्त्र तीक्षण है सो मोह शत्रुका नाश ही करे यह शुक्लध्यान शुक्ललेश्याहीके योगकरि होय है जिनके

पहिले पाएविषे उपशमश्रेणी है उनके उपशमभाव है अर क्षपकश्रेणी उनके क्षायकभाव ही है पहिले पायेमें दोऊ श्रेणी अर दोऊ भाव हैं अर स्वर्ग मोक्ष दोऊ फल हैं अर अंतर्मुहूर्त स्थिति है यह सम्पूर्ण प्रथम पाएका लक्षण कहा अर दूसरा पाया एकत्ववितर्क अवीचार ताका लक्षण कहिए है एकत्व कहिए द्रव्यगुणकी एकताका है चिंतवन जा विषै द्रव्य कहिए आत्मद्रव्य अर गुण कहिए चेतनत्व अमूर्तित्व आदि अनंत गुण तिनमें भेद नाहीं सो एक ही वस्तुविषै चित्त लग रह्या है जो गुणमें लग गया तो गुणहीमें लगा अर आत्मद्रव्यमें लगा तो वहांही लगा बहुरि परिणामका पलटना नाहीं सो एकत्व कहिये अर वितर्क कहिये द्वादशांग सूत्रकी श्रद्धा दोऊ पायेनिमें है दूसरे पायेमें पृथक्ता कहिये अनेकता नाहीं अर वीचार कहिये अर्थ व्यंजन योगका संक्रम नाहीं एकही अर्थविषै एकही शब्दविषै एकही योगविषै आरूढ है जिनवानीके अनुसार वस्तुकी अभेदताविषैं चित्तकी आरूढता है ॥६४॥ एक ही द्रव्य तथा एक ही गुण तथा तथा एकही शुद्ध परिणतिविषै गलतान भया है मोहका नाश तो पहलेही पाएकरि किया अर इस दूसरे पाएकरि ज्ञानावरण दर्शनावरण अर अन्तराय इन तीन घातियोंका नाश करे ॥ ६५ ॥ वह कृतार्थ बारहवें गुणठानेके अंत घातियोंका घात करे तेरहवें गुणठाणे केवलज्ञानकूं पावै तहां नव केवललब्धि प्रगट होय केवलज्ञान केवलदर्शन क्षायिकसम्यक्त क्षायिकचारित्र अनंतदान अनंतलाभ अनंतभोग अनंत उपभोग अनंत-वीर्य यह नव केवललब्धि तीर्थंकरके तथा और सामान्यकेवली तिन सबहीके तेरहवें गुणठाणे होय है ॥ ६६ ॥ सो भगवान केवली पूजने योग्य ध्यावने योग्य तीन भवनके परमेश्वर किंचितऊन कोडिपूर्व केवलज्ञान युक्त विहार करे। महा विदेह क्षेत्रविषैं तो कोडिपूर्वका आयु ही है अर या भरतक्षेत्रविषै चौथे कालकी आदि कोडि पूर्वका आयु है सो काहू जीवकूं नवमें वर्ष केवल उपजा सो नव वर्ष घाट कोडिपूर्व केवल अवस्थामें विहार करे ॥ ६७ ॥ अर या केवलीके चारों अघातियोंकी थिति आयु समान होय सो तो समुद्घात न करे अर जाके आयु तो अन्तर्मुहूर्त रहे अर नाम गोत्र वेदनीयकी अधिक थिति होय सो केवलसमुद्घात करि नाम गोत्र वेदनीकी

थिति आयु प्रणामही करै सो तेरहवें गुणस्थानके अंतर्मुहूर्त सूक्ष्माक्रियाप्रतिपाति नामा तीसरा शुक्लाध्यान होय जो केवल समुद्धात न करे समस्त अघातियानिकी बराबर ही स्थिति होय तो सहज ही यह तीसरा शुक्लध्यान होय ताका लक्षण कहे हैं। मनोयोग वचन योग ये बादर तिनकूं सूक्ष्मकरि काययोगमें आवे अर मनो वचन-योग सूक्ष्म है तिनका अभाव करे है यह सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति नामा तीसरा शुक्लध्यानका पाया परम शुक्लका पहिला भेद है। अर काहू केवलीकूं केवलसमुद्धात करना पडे अर आयु प्रमाण अघातियोंकीस्थिति करनी पडे तो अंतर्मुहूर्त आयु रहे तब समुद्घात करै सो वह भगवान् समस्त अघातियोंके क्षय करवे समर्थ्य पहिले समय दण्ड करे दण्ड कहिये दण्डके आकार आत्माके प्रदेश चौदह राजू दीर्घ होय जायं फिर कपाटके आकार जीवके प्रदेश दूसरे समय होय अर तीसरे समय पटलके आकार प्रदेश होय अर चौथे समय लोकपूर्ण होय तीन सौ तेतालीस राजू घनाकार जीवके प्रदेश विस्तरे ता समय लोकप्रमाण व्यक्तिरूप होय ज्यों चार समयमें प्रदेश विस्तरे ज्यों ही चार समयमें संकोचे। पांचवें समय पूर्ण संकोचे छठे समय प्रतर संकोचे सातवें समय कपाट संकोचे अर आठवें समय दंड संकोचे ॥ ७४ ॥ फिर शरीर प्रमाण होय करि या परम शुक्लध्यानकूं ध्यावे सो समुद्धातके सात ही समय है आठवें समय शरीर प्रमाण हैं, शरीरवाले प्रदेश नाहीं रहै है बहुरि चौदहवें गुण ठाणेके अंत शुक्लध्यानका चौथा पाया समुछिन्नक्रिया ताहि ध्यावे सो यह चौथे पाया परम शुक्लका दूसरा भेद है जहां प्रदेशोंकी चंचलता मिटी देह प्रमाण प्रदेश रहे अर योगीनिका अभाव भया सकल प्रकृतियोंका क्षय भया सो समुछिन्नक्रिया कहिये ॥ ७६ ॥ या चौथे शुक्लविषै सर्व बन्धका अभाव अर आस्रवका निरोध अर योगकेवलीके यथाख्यातचारित्र मोक्षका कारण है सो भगवान अयोग केवली आठों कर्मोंका नाशक भया घातिया कर्म तो मुनिपदमें खोये अर अघातिया जिनपदमें खोये चौदहवे गुण ठाणेके अन्त सोलह पानीके स्वर्ण समान चेतना शक्ति देदीप्यमान भई ॥ ७८ ॥ सिद्ध तो यहांही होय चुके परन्तु ऊर्द्धगमन स्वभावसे अर कर्मनिके संयोगके

वियोगसे अर बन्धके नाशसे कुम्हारके चक्रकी न्याईं पूर्वप्रसंगतैं अर आग्निकी शिखाकी न्याईं अर लेप रहित्त तूंबीकी न्याईं अर एरंडके बीजकी न्याईं एक समयमें ऊर्द्धगमन करे ॥ ८९ ॥ अर धर्मास्तिकायके अभावसे अलोकविषैं गमन न करे अर लोकके शिखरही तिष्ठै अनन्त सुखका पुंज तिष्ठै ॥ ८१ ॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चार पुरषार्थ हैं तिनमें मोक्ष पदार्थ सर्वोत्कृष्ट है अर जीवका हित है सो कर्मके क्षयतैं होय अर कर्मका क्षय शुक्लध्यानसे होय सकल कर्म प्रकृतिका अभाव सो मोक्ष अनन्त सुखरूप सो यत्नसाध्य भी है अर सहजसाध्य भी है जे तीर्थंकर देव अर तद्भव मोक्षगामी चरम शरीरी हैं तिनके तो सहज साध्य ही है अर जे तद्भव मोक्षगामी नाहीं जन्मान्तरमें मोक्ष जावेंगे तिनके यत्नसाध्य है प्रथमही चौथा अव्रत गुणस्थान तहांसे लेकर प्रकृतियोंका क्षय होय है अनन्तानुबन्धीकी चौकडी अर तीन मिथ्यात्व इन सातोंका क्षय तो चौथे गुणस्थानही होय है। जाके सातोंका क्षय होय सो क्षायिकसम्यकदृष्टि कहिये, अर जो मुनि क्षपकश्रेणी चढे सो सातवें गुणठाणेके अन्त नरकायु, तिर्यंचायु, देवायु इन तीन प्रकृतिका क्षय करे अर सातवें अप्रमत्तसे आठवें अपूर्वकरण गुणस्थान जायकरि पाप प्रकृतियोंकी स्थिति क्षीण करे। अर वह क्षायिकसम्यक्दृष्टि क्षपकश्रेणीका धारक नवमें गुणस्थानके नव भागमें प्रकृति छत्तीस खपवै तहां पहले भागमें शुक्लध्यान रूप अग्निकरि सोलह प्रकृति भस्म करै तिनके नाम निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ॥ ९० ॥ अर नरकगति नरकगत्यानुपूर्वी तिर्यंचगति तिर्यंचगत्यानुपूर्वी एकेन्द्री जाति वेइन्द्री जाति तेइन्द्री जाति, चौइन्द्री जाति, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण यह सोलह प्रकृति पहिले भागविषै खपायकर दूसरे भागविषै अप्रत्याख्यानकी चौकडी अर प्रत्याख्यानकी चौकडी खपावे, अर तीजे भाग विषैं नपुंसक वेद खपावे, अर चौथे भागविषै स्त्री वेद खपावै अर पाचवें भागविषैं षट हास्यादि खपावे अर छठे भागविषै पुरुष वेद खपावे अर सातवें भागविषै संज्वलन क्रोध खपावे अर आठवे भागविषै संज्वजल मान खपावे अर नवमें भागविषै संज्वलन मायाको खपावे। या भांति अनिवृतिकरण नामा गुणस्थान ताके नव भागविषै

अर दशवें गुणस्थानका नाम
प्रकृति छत्तीसकूं खपावे ये सत्ताकी अपेक्षा कथन है बंध उदयकी अपेक्षा नाहीं है। अर दशवें गुणस्थानका नाम सूक्ष्मसांपराय तहां सूक्ष्मलोभका अभाव करे दशवेंके अंत सर्वथा मोह रहित होयकरि बारहवां क्षीणकषाय नामा गुणस्थान ताके अंतके दो समय सो पहिले समय तो निद्रा अर प्रचलाका अन्त करे अर दूसरे समय ज्ञानवर्णीकी प्रकृति पांच दर्शनावर्णीकी प्रकृति चार अर अंतरायकी प्रकृति पांच ये चौदह प्रकृति खपावै शुक्लध्यानके दूसरे पाएसे यह सोलह प्रकृति खपायकरि केवली होय ॥९६॥ अर असाता वेदनीय १ देवगति २ औदारिक शरीर ३ वैक्रयिक ४ आहारक ५ तैजस ६ कार्मांण ७ यह पांच शरीर अर यही पांच बंधन अर यही पांचो संघात अर आंगोपांग तीन ही शरीरनिके तैजस कार्मांणके नाहीं औदारिक आंगोपांग वैक्रियक आंगोपांग ॥ ९८ ॥ अर आहारक आंगोपांग अर संस्थान छह संहनन छह वर्ण पांच रस स्पर्श आठ गंध दो देवगत्यानुपूर्वी एक अर देव गति एक ॥ १०० ॥ अगुरुलघु एक उश्वास एक परघात एक उपघात एक प्रशस्तविहाय एक अर अप्रशस्तविहाय एक अर प्रत्येकशरीर अपर्याप्त स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ दुर्भग सुस्वर दुस्वर अनादेय अयशकीर्ति निर्माण, नीचगोत्र ये सब इकट्ठेकिए बहत्तर होंय सो तेरहवें गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थानमें जायकरि खपावे अर चौदहवां अयोगकेवली ताके अंतके समय तेरह प्रकृति खपावै तिनके नाम साता वेदनीय १ मनुष्यायु १ मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ पंचेन्द्री जाति १ त्रस १ वादर १ पर्याप्ति १ शुभग १ आदेय १ उच्चगोत्र १ यशस्कीर्ति १ तीर्थंकर १ यह तेरह प्रकृति अयोगकेवली अंतके समय खपावै ॥७॥ अ, इ, ऊ, ऋ, ऌ यह पांच ह्रस्व अक्षर तिनका उच्चार होय तेताकाल चौदहवें गुणस्थान तिष्ठ करि सिद्धलोककूं सिधारै सो सिद्धपर्याय आदिकूं लिये अनन्ती है जाकी आदितो है अर अंत नांहीं अनंतगुणरूप सिद्ध पर्याय सादि अनंती कहिये याही भांति अनन्ते सिद्ध भये अर अनंत होवेंगे सो याही भांति गुणस्थानोंमें चढ कर्मप्रकृति खपाय सिद्ध भेय अर याही भांत होवेंगे ॥८॥ सिद्धपदका कारण धर्मध्यान अर शुक्लध्यान है सो भगवान नेमिनाथ छप्पन दिन तो धर्मध्यान ध्याया अर

आसोज सुदी पडिवाके दिन प्रभात ही शुक्लध्यान रूप अग्निकरि चार घातिया कर्मरूप बन ताहि भस्म किया ॥ १० ॥ अर अनंत ज्ञान अनंत दर्शन अनंत सुख अनंत वीर्यरूप चतुष्टयकूं प्राप्त भये जब नेमिश्वरकूं केवलज्ञान उपज्या तब इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भये अर मुकुट नय गये ॥ ११ ॥ कल्पवासी देवनिके अकस्मात् घंटाका शब्द भया। अर ज्योतिषी देवोंके सिंहनाद बाजा। अर व्यंतरनिके ढोल बाजे। अर भवनवासी देवोंके शंखका शब्द भया अर या भांति अकस्मात् शब्द भए तब चतुर्निकायके देव भगवानकूं केवलज्ञान उपज्या जान अपने अपने इन्द्रोंके साथ केवलकल्याणककी पूजाके उद्यमी भए सबही इंद्र मुकुटोंके नयवेकरि अर सिंहासनके कंपायमान होयवे करि प्रभुका केवलकल्याणक जानकरि सब देवनि सहित अपने बाहनोंके समूह करि आकशरूप समुद्रकूं पूरकरि सप्तसेना सहित सुरपति गिरनारकी प्रदक्षिणाकरि समोसरणमें आए ॥ १३ ॥ भले प्रकार नमस्कार करि निगर्व भए। दूसरी वेर गिरनार आए पहिले तपकल्याणकविषैं तो आए ही हुते अर अब ज्ञानकल्याणकविषैं आए सुमेरगिर तो एक जन्म कल्याणकके स्नान मात्रहीसे पवित्र भया हुता अर यह गिरनार तप कल्याणकका स्थानक ज्ञानकल्याणकका स्थानक अर आप श्रीनेमिनाथ या गिरहीसे निर्वाण पधारेंगे यह गिरि सुमेरुकूं भी जीतता भया ॥ १४ ॥ जहां अष्ट प्रातिहारियों करि शोभित नेमिजिनेंन्द्र विराजे हैं जहां मन्दारजातिके कल्पवृक्ष आदि अनेक कल्पवृक्षोंके पुष्प तिनकी वर्षाकरि दशोदिशा सुगंध होयरही हैं अर देवांगनाओंके गीत करि गिर शब्दायमान होय रहा है अर दुन्दुभीबाजोंका नाद तिनकरि सब दिशानाद रूप होय रही हैं अर जहां शोकका हरणहारा जो अशोकवृक्ष फल फूलों कर मंडित सोहै है। अर तीन छत्र तीन भवनकी प्रभुताके चिह्नकूं धरे प्रभुके सिर पर फिरे हैं ॥ १६ ॥ अर हंसोंकी पंक्तिके पैरोंके समान महा मनोहर उज्ज्वल अनेक चमर प्रभुपर ढुरे हैं अर सूर्य मंडलीकी ज्योतिकूं जीते ऐसा प्रभुकी देहकी कांतिका मण्डल दिपै है अर हेममयी सिंहासन नानाप्रकार रत्ननिके समूहकरि जड्या इन्द्रधनुषकी शोभाकूं जीते तापरि जिनवर विराजे हैं अर नाना-

प्रकार भाषाके भेदकूं धरे सकल विकार रहित दिव्यध्वनि जिनराजके मुखसे खिरै है ॥ १७ ॥ यह अष्ट प्रातिहार्य
और चौवीस अतिशय तिनकरि मंडित नेमिजिनेश्वर हरिवंशके तिलक बाईसवें तीर्थंकर स्वभाव ही करि
धैर्यके धारक गुणके समूह बोधरूप दिनके कर्ता जिनरवि त्रैलोक्यके उद्धारके अर्थि गिरनारके शिखर पर विराजे
तहां सब देव आय सेवा करते भए ॥ १८ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवाननेमिनाथकेवलज्ञानवर्णनोनाम पंचपंचाशत् सर्गः ॥ ५५ ॥

अथानंतर — इन्द्रकी आज्ञातैं देवोंने प्रभुका समोसरण रचा है वह समवसरण तीन जगतके प्राणियोंको
शरण है ॥ १ ॥ द्वारकाके सब लोक यदुवंशी अर भोजवंशी आदि गिरपरि बलभद्र नारायणके साथ चाले
॥ २ ॥ सो जिनेन्द्रका समवसरण बाहर भीतर देखकरि आश्चर्यकूं प्राप्त भए ॥ ३ ॥ जैसी समवसरणकी भूमिकी
रचना तीर्थेश्वरके होय है तैसी श्रोतानिकूं संक्षेपता कर कहिये है ॥ ४ ॥ स्वभावरूप जो यह भूमि तातैं एक
हाथ प्रमाण ऊंची दिव्यभूमि फिर ताकै ऊपर एक हाथ ऊंची कल्पभूमि सो वह भूमि चौखूटी सुखकी देनहारी
अपनी शोभा करि स्वर्गकी शोभाकूं जीते सो उत्कृष्ट समवसरणका विस्तार बारह योजन होय है अर नेमिनाथ
बाईसवें जिन हैं इसलिये इनका डेढ योजन है ॥ ६ ॥ समवसरण तो कमल समान है अर गन्धकुटी कर्णिका
समान उच्च है समवसरणकी भूमि ऐसी सोहे है मानो लक्ष्मीकी परंपराय ही है। समवसरणकी भूमि इन्द्रनील
मणिमई काच समान निर्मल सोहे है अधिकसे अधिक सोभा धरै है ॥ ८ ॥ दूरहीतैं इन्द्रादिक देव जाहि नमस्कार
करे हैं वह मानस्थंभके आंगणकी भूमि तीन जगतकरि मानने योग्य है। चारों महा दिशानि विषै चारों दरवाजों-
की ओर दोय दोय कोसके विस्तार राजमार्ग है तिनके मध्य मानस्थंभोंके पीठ हैं तिनके ऊपर स्वर्ण रत्नमई
जिनप्रतिमा हैं तिनकूं सुर असुर मनुष्य माने हैं देव विद्याधर भूमिगोचरी मानस्थंभोंके समीप आय जिनप्रतिमा

पूजे हैं वह मानस्थंभोंकी भूमि देदीप्यमान पद्मरागमणिमई अरुण वर्ण है ॥ १२ ॥ चारों दरवाजोंके चारों ही राजमार्गविषै तीन तीन सुवर्णके पीठ तिन पर मानस्थंभ सोहे है बर्तुलाकार आध कोस चौडे अर दोय कोस ऊंचे पीठ हैं ॥ १३ ॥ अर पीठोंकी चौडाईतें एक धनुष घाट मानस्थंभोंकी चौडाई है अर एक योजन कुछयक अधिक मानस्थंभोंकी ऊंचाई है ॥ १४ ॥ अर यह मानस्थंभ मूलविषै वज्रमणि कहिये हीरा तिनके हैं अर मध्यविषै फटिक मणिके हैं अर अग्रभागविषै बैडूर्य मणिमई हैं अर जिनके चारों तरफ भगवानके बिंब विराजे हैं अर इन मानस्थंभोंके ऊपर ध्वजा है सो बारह योजनसे दृष्टि पडे है अर एक २ मानस्थंभके आश्रय दोय दोय हजार स्थंभ हैं ते नानाप्रकार रत्नोंकी किरणों करि देदीप्यमान हैं अर मानस्थंभोंका ऊपरला भाग बीस योजन प्रमाण आकाश विषै उद्योत करे है श्रीदेवीके मस्तकविषै चूडामणि रत्नोंसे भी अधिक आभा जिनकी ते मानस्थंभ देवोंका अर मनुष्योंका मान हरे है जिनके देखे महामानियोंका मान बिलाय जाय बहुरि मानस्थंभोंके आगे चार सरोवर हैं जिनमें कमलफूल रहे हैं अर हंस सारस चकवा मनोहर शब्द करे हैं तिनकरि सब दिशा शब्दायमान होय रही हैं ॥ १९ ॥ अर सरोवरोंके आगे वज्रमणिमई पडकोटा है सो मनुष्योंके वक्षस्थल पर्यंत ऊंचा है अधिक है कांति जाकी अर ऊंचाईसे द्विगुणी है चौडाई जाकी सो समवसरणके चौगिर्द प्रदक्षिणारूप तिष्ठे है ॥ २० ॥ या पडकोटाके भीतर जलकी भरी खाई है ताकी भूमि फटिकमणि समान उज्ज्वल है अर खाईमें गोडों प्रमाण ऊंडा जल है मानों यह खाई भूमिरूप नारीकी काली साडी है ॥ २१ ॥ अर खाईमें सुवर्णमई कमलोंके रजके पुंज करि जल पीतवर्ण होय रहा है मानों खाईका रूप धरि समुद्र ही चहूं ओर प्रदक्षिणा करे है ॥ २२ ॥ अर खाईके आगे बेलोंका बन है सो समवसरणके चारो ओर प्रदक्षिणा रूप सोहै है ताविषैं नानाप्रकारके सुगंध फल फूल रहे हैं तिनकी सुगंधताकरि दशोंदिशा सुगंधरूप होय रही हैं अर भंवर गुंजार करैं हैं अर नानाप्रकारके शुभ पक्षी सुंदर शब्द करै हैं ॥ २३ ॥ अर या बली वनके आगे पहला कनकमई कोट है सो अति देदीप्यमान है अर

जाके रूपामई चार दरवाजे हैं सो मानों विजयार्द्ध गिर ही हैं ॥ २४ ॥ या पहिले कोटमैं द्वारपाल व्यंतर देव हैं
ते कुंडल कटकादि आभूषणनिकर सोहै हैं। अर मुद्गर हैं जिन्होंके हाथमें ते दुष्ट जीवनिकूं तिरस्कार करै हैं
॥ २५ ॥ अर दरवाजोंके पसवाडे मणिमई तोरण है अर दरवाजे दरवाजे छत्र, चमर, कलश, झारी, दर्पण, ताड-
वीजना, स्वस्तिक ध्वजायें आठ मंगलद्रव्य धरे हैं एक एक मंगलद्रव्य एकसौ आठ आठ हैं अर दरवाजोंके आगे
नाट्यशाला है सो दरवाजोंमें धसते माहिली ओर दोऊ तरफ दो नाट्यशाला हैं अर एक एक नाट्यशालाके तीन
तीन खणे हैं तिनविषैं देवांगना नृत्य करै हैं अर नाट्यशालाके आगे चार वन हैं पूर्व दिशाविषै असोकवन है
अर दक्षिणदिशाविषै सप्तपर्ण नामा बन है। अर पश्चिमदिशाविषै चंपकनामा वन है अर उत्तरदिशाविषै आम्र-
बन है॥ २८ ॥ यह चार बन तिनमें चार चैत्यवृक्ष हैं अशोकवनविषै अशोक तरु अर सप्तछद वनविषैं सप्तछद
अर चंपक बनविषै चंपक अर आम्रवनविषै आम्र यह चार चैत्यवृक्ष जिन प्रतिमाकरि शोभित महा मनोहर है
॥ २९ ॥ अर इन वनविषैं मनोहर वापिका है कोई वापी त्रिकोण अर कोई वर्तुलाकार अर कोई चौखूंटी नाना
प्रकार रत्नोंके हैं तट जिनके अर फटिकमणि समान निर्मल है भूमि जिनकी ॥ ३० ॥ वे समस्त वापी तोरण
सहित अधिक सोहे हैं अति सुंदर भाषैं हैं तीर्थ हैं जिनमें हंस आदि मनोहर पक्षी सुंदर शब्द करै हैं तिन वापि-
योंके नाम नंदा, नंदोत्तरा, आनंदा, नंदवती, अभिनंदनी, नंदघोषा यह छै वापिका तो अशोक बनमें हैं॥ ३२ ॥
फिर विजया, अभिजया, जंयती, वैजयंती, अपराजिता, जयोत्तरा, यह छह वापिका सप्तपर्ण नामा बनविषै हैं
॥३३॥ फिर कुमुदा, नलनी, पद्मा, पुष्करा, विकचोत्पला, कमला यह छह वापिका चंपक बनविषै है ॥३४॥ फिर
प्रभासा, भास्वती, भासा, सुप्रभा, भानुमालिनी, स्वयंप्रभा यह छह वापिका आम्रवनविषै हैं इन वापियोंमें स्नान
कर बनके पुष्प लेकर चैत्यवृक्षोंके विम्बोंकी पूजाकरि भव्यजीव मांही प्रवेश करै हैं ॥ ३६ ॥ अर इन बनोंके
विषै नाट्यशाला है तिनमें ज्योतिषी देवोंकी स्त्री हावभाव विलास विभ्रम सहित नृत्य करै है रसकी पुष्टता

सहित हर्षकी भरी देवी नाचे हैं अर इन वनोंके चौगिर्द वनदेवी हैं सो महा मनोज्ञ वज्रमणि मई हैं अर वनवेदीके आगे ध्वजानिकी पंक्ति हैं अर ध्वजानिके पीठ तीन धनुष चौडे हैं अर आधा योजन ऊंचे हैं तिनपर रत्नमई बांस तिन पर ध्वजा फरहरे हैं ते ध्वजा दश दश प्रकारकी हैं अर क्षुद्रघंटिकाकरि सोहै हैं विचित्र रूप हैं पट जिनके मयूर हंस गरुड पुष्पमाला सिंह हस्ती मगर वृषभ चक्र यह दश प्रकार चिह्न तिनकरि मंडित हैं एक एक चिह्नकी एक सौ आठ आठ ध्वजा हैं सो कमल, एक वनमें एक हजार अस्सी। जब चारो वनकी भेली करिए तब तेतालीस सौ बीस होवें अर इन ध्वजानिके आगे पचखणी नृत्यशाला हैं तिनमें भवनवासिनी देवी नृत्य करैं हैं ॥ ४८ ॥ बहुरि आगे दूसरा हेममई कोट है जा कोटकी पंच भूमिका हैं अर रत्नमई चार दरवाजे हैं अर दरवाजोंपर दैदीप्यमान स्वर्णके पीठ हैं तिनपर कनकमई कलश है अर कलशनिके कण्ठ विषैं रत्नोंकी माला है अर वे कलश महा शुद्ध जलसे भरे हैं अर तिनके मुख कमलनिकरि आच्छादित हैं अर मंगलरूप हैं दर्शन जिनका ऐसे दो दो कलश सोहै हैं अर या दूसरे कोटिके द्वारोंके द्वारपाल भवनवासी देवोंके हाथमैं बेंतके दंड हैं अर या दरवाजेके भीतर दोय नाट्यशाला हैं ॥५१॥ बहुरि आगे कल्पवृक्षोंका वन है जाके मध्य सिद्धार्थ वृक्ष है तिनके नीचे सिद्ध प्रतिमा विराजे है अर कल्पवृक्षोंके वनकी चौगिंद वनदेवी है बहुरि आगे मार्गविषैं नव नव रत्नोंके तूप हैं सो पद्मरागमणिमई महा सुंदर हैं तिनके आगे देवोंके क्रीडा करवेके मंदिर हैं सो स्वर्ण रत्नमई अनेक खणके हैं बहुरि आगे तीजा फटिकमणिमयी कोट है ताकी नानाप्रकार महा रत्नमई सात भूमि है अर ताके चार दरवाजे तिनमें पूर्वके द्वार आठ द्वारपाल हैं तिनके नाम विजय १ विश्रुत २ कीर्ति ३ विमल ४ उदय ५ विश्वधृक ६ वास ७ वीर्यवर ८ फिर दक्षिणके द्वारपाल आठ हैं तिनके नाम वैजयंत १ शिव २ ज्येष्ठ ३ वरिष्ट ४ अनंग ५ धारण ६ याम्य ७ अप्रतिव ८ यह दक्षिण दिशाके द्वारपाल जानो ॥ ५८ ॥ अर पश्चिमके द्वारके द्वारपाल आठ तिनके नाम जयंत १ अमित २ सार ३ सुधामा ४ अक्षोभ्य ५ सुप्रभ ६ वरुण ७ वदर ८ यह आठ पश्चिम दिशाके

द्वारपाल जानो ॥ ५९ ॥ अर उत्तरदिशाके द्वारपाल आठ तिनके नाम अपराजित १ अर्च २ अतुलार्थ ३ अमोघ ४ उदित ५ अक्षय ६ उदतकौवेर ७ पूर्णकाम ८ यह आठ उत्तर दिशाके द्वार जानो ॥ ६० ॥ ये चारों ही द्वारोंके द्वारपाल रत्ननिके आसन पर तिष्ठे हैं अर द्वारके दोऊ तर्फ मंगल दर्पण धरे हैं तिनमें जीवोंके भव दीखे हैं सो यह द्वारपाल द्वार द्वार दर्शन करनेवालोंको पूर्व भव दिखावे हैं जिन मंगल दर्पणोंकरि द्वार दैदीप्यमान भासै हैं यह चारों द्वारों विषैं विजयादिक बत्तीस द्वारपाल कल्पवासी देव हैं महा दैदीप्यमान वस्त्राभूषणोंकरि शोभित हैं अर जय जय शब्द करैं हैं ॥ ६३ ॥ अर इन तीनों कोटोंमें पहला कोट एक कोस ऊंचा दूजा कोट दोय कोस ऊंचा अर तीजा कोट तीन कोस ऊंचा अर कोटोंकी उंचाईसे चौडाई आधी आधी जानो अर तीजे कोटके भीतर नानाप्रकार वृक्ष अर बेलोंका भरा मनोहर वन तहां नाना प्रकारके मंदिर हैं ॥ ६६ ॥ अर वनके चौगिर्द वेदी है अर वनमें कदली आदि नानाप्रकारके वृक्ष हैं ॥ ६७ ॥ वहुरि वनके आगे नाट्यशाला है तामें लोकपाल देवतानिकी स्त्री निरंतर नृत्य करैं हैं अर आगे एक और पीठ है सो दैदीप्यमान रत्नोंके समूहकी किर-णनि करि तिमिरकूं हरे हैं ता पर सिद्धार्थ वृक्ष है ताके तले सिद्ध प्रतिमा है अर सिद्धार्थ वृक्षके चौगिर्द अनेक वृक्ष हैं अर वापिका है अर रत्नोंके द्वादश स्तूप हैं सो पृथिवीके आभूषणही हैं रत्नमई हैं ॥ ७१ ॥ अर चारो दरवाजोंके भीतर वेदी करि मंडित चारों दिशाविषै चार वापिका हैं नन्दा १ भद्रा २ जया ३ पूर्णा ४ यह उनके नाम हैं ॥ ७२ ॥ तिनमें स्नान किए प्राणी अपने पूर्व जन्मकूं जानै सो वापिका पवित्र जलकरि भरी है अर सर्व पाप रोगकी हरणहारी है तिनविषैं प्राणी सात भव देखे हैं तीन अगले तीन पीछले एक वर्तमान ॥ ७४ ॥

अथानंतर—कोस एक ऊंचा अर एक योजनसे कुछ एक अधिक चौडा कदलीकी है ध्वजा जा पर अर ऊंचा है तोरण जाके, जिसमें तीन लोकके प्राणी निकसे हैं अर पैसे हैं जिसका यह अतिशय है जिसमें त्रैलोक्यके जीव माय जायं ऐसा त्रैलोक्यविजय नामा जयांगण सोहे है अर जहां मोतीनिकी झालरी बन रही हैं

अर मणि मोती मूंगाओं करि शोभित हैं रत्नोंके पुष्प अर स्वर्णके कमल तिन कर अर्चित है अर स्वर्णके रस कर लिप्त है भूमि सो मानों भूमिसे निकसे सूर्यही सोहे हैं अर जहां सुखके निवास अनेक मंदिर सोहे हैं सो सुर असुर अर नरों करि पूर्ण है अर नाना प्रकारके हैं कहीं एक चित्रामके मनोहर महल हैं तिनमें अद्भुत चित्राम है कहीं एक पुण्यके फलकी प्राप्ति कर जीवोंको स्वर्गादि सुख होय है तिनके चित्राम मंढे हैं कहीं एक पापके उदय करि नरकादिक दुःख होय हैं तिनके चित्राम मंढे हैं सो मानो वह चित्राम देखनहारेनिकूं साक्षात् धर्म अर अधर्म की गतिही दिखावे है ॥ ८१ ॥ अर कहीं एक यह मंदिर देव अर मनुष्य देखनहारोंको धर्मकी श्रद्धाही उपजावे है, दान शील तप अर पूजाका प्रारंभ अर इनके फल स्वर्ग मोक्ष अर जो इनसे रहित हैं तिनके विपरीति ऐसी प्रतीति प्रगट उपजावे है ॥ ८२ ॥ अर स्फुरायमान है मोतिओंकी झालरी जिनके अर देदीप्यमान मणि जडी हैं अर पताकाओंके क्षुद्रघंटिका लगी हैं तिनका पवनकी प्रेरणा करि रमणीक शब्द होय है ॥ ८३ ॥ अर देदीप्यमान रत्नोंकी माला ऐसी भासे है मानो समुद्रविषै लहर ही है सो या सभामंडपकूं मुनींद्रादिक भक्तिकरि निरखे हैं अर वह मुनि पापसे डरे हैं धर्मविषै है रुचि जिनकी ऐसा यह त्रैलोक्यविजय नामा जयांगण इन्द्रध्वज सोहै है ताके मध्य सुवर्णका पीठ है सो वह पीठ कैसा सोहे है मानों भगवानकी विजयलक्ष्मीकी मूर्तिवन्त देह है ॥ ८५ ॥ ता पर हजार थम्भका वडा मंडप है ताका नाम महोदय है जाविषै जिनवानी मानों मूर्तिवन्ती विराजे है उस मंडप को दाहिना देकर महाधीर. बहुश्रुति विराजे हैं अर श्रुतिकेवली कहिये सकल श्रुतके पारगामी कल्याण रूप जो जिनश्रुत ताका व्याख्यान करे हैं ॥ ८७ ॥ अर उस मंडपके समीपी मंडप चार तातै आधा है प्रमाण जिनका तिनविषैं मंडित आक्षेपणी आदि चार कथा करे हैं ॥ ८८ ॥ आक्षेपणी कहिये जिनमार्गकी दृढ करनहारी अर विक्षेपणी कहिये मिथ्यामार्गकी खंडनहारी अर संवेगणी कहिये धर्मकी रुचि बढावनहारी अर निर्वेदनी कहिये संसार शरीर भोगसूं वैराग्य करणहारी यह चार कथा बिवेकी करे हैं ॥ ८९ ॥ अर इन

मंडपोंके प्रकीर्णक वास नाना प्रकारके तिनविषैं मुनिजन श्रोतानिके समीप केवल ऋद्धि आदि ऋद्धियोंका व्यारुयान करै हैं ॥ ९० ॥ बहुरि नाना प्रकारकी लताओं करि मंडित तप्त सुवर्णमयी पीठ है जहां यथाकाल भव्यजीव सामग्री चढावे हैं बहुरि मार्ग मार्गमें एक या तर्फ एक वा तर्फ यह दोय दोय मंडप हैं तिनेंम नवनिधिके रक्षक देव तिष्ठे हैं सो मनवांछित दानके दायक हैं ॥ ९२ ॥ अर एक अति विस्तीर्ण प्रमद नामा प्रेक्षग्रगृह है तहां कल्पवासनी देवी सदा नृत्य करैं हैं ॥९३॥ अर वह विजयांगण ताकी कोणविषै लोक स्तूप है सो चार चार योजन ऊंचे हैं अर जिनपर ध्वजा फरहरे है ते स्तूप अधोभागविषैं वेतके आशनके आकार हैं अर मध्यभागविषैं झालरी समान हैं अर उर्द्धभागविषैं मृदंगके आकार हैं अर शिखरविषैं ताडवृक्षक आकार हैं ॥९५॥ सो स्तूप निर्मल फटिकमणि समान उज्ज्वल हैं जिनमें लोककी रचना प्रत्यक्ष दृष्टि पडै है जैसे निर्मल आरसीविषैं मुख दीखे मध्यलोक नामा स्तूप ताविषैं सम्पूर्ण मध्यलोकका स्वरूप भासै है ॥९७॥ बहुरि मंदिर नामा स्तूप मंदराचलके आकार देदीप्यमान सोहे है ताकी चारों दिशाविषैं प्रतिमा सोहे है ॥९८॥ अर कल्पवास नामा स्तूप जामें कल्पवासी देव सोहे हैं जाविषैं साक्षात् स्वर्गलोककी समस्त रचना देखनहारेकूं दृष्टि पडे है फिर ग्रैवेयकनामा स्तूप सो मनुष्योंको नवग्रीवकी रचना प्रत्यक्ष दिखावे है ॥ १०० ॥ फिर नव अनुदिश नामा स्तूप तिनमें प्राणी नव अनुत्तरकी रचना देखे हैं फिर विजियादि चतुष्क नामा स्तूप हैं ता विषैं विजियादिक विमानोंकी रचना भासै है अर सर्वार्थसिद्धि नामा स्तूप जामें सर्वार्थसिद्धिकी रचना प्रत्यक्ष भासै है ॥ १ ॥ अर फटकमणि समान निर्मल सिद्धिरूप स्तूप ताहि भव्यकूट नामा स्तूप भी कहै हैं देदीप्यमान है कूट जाके जा विषैं सिद्धोंके प्रतिविम्ब भासे हैं जैसे दर्पणविषै मुख भासे अर स्पर्शा न जाय सो यह भव्यकूट नामा स्तूप जाहि अभव्य न देख सकै अर प्रबोध नामा स्तूप जिनके देखवे करि ज्ञान उपजै चिरकालका अज्ञान मिटै सो यह स्तूप निकटभव्यही देखै जिसे पाय करि साध संसारसे छूटैं या भांति यह दश स्तूप ऊंचे विराजे हैं ॥ ६ ॥ यह तीसरा कोट नाना प्रकार रत्नमई चौगिर्द महा सुन्दर सोहे है जैसे सूर्यकी

चौगिर्द परवेष सोहे है तैसे यह तीजा कोट प्रभुके आस पास सोहे है जाका प्रभाव चार ज्ञानके धारी गणधर देव भी न जान सकै वह भगवान्का समोसरण देवनिकूं प्रिय तीनलोकविषै सार शोभा करि सुन्दर कल्याणका मंदिर सोहता भया जिसे श्रीपुर कहिये अर क्षेमपुर कहिये अर श्रेयपुर कहिये मंगलपुर कहिये उत्तमपुर कहिये शरणपुर कहिये जयपुर कहिये अपराजितपुर कहिये आदित्यपुर कहिये जयन्तपुर कहिये वह त्रैलोक्य सार अद्भुत पुर भगवानके प्रभावकरि आश्चर्यकारी होता भया जैसा समोसरणका निर्मापण है तैसा इन्द्रादिक देव काहू ठौर न रच सके यह प्रभुहीके प्रभाव करि यह आश्चर्यकारी है किसीकी शक्ति नाहीं जो ऐसा बनावे तीन पीठोंमें पहले पीठ पर चारों तर्फ धर्मचक्र अर दूजे पीठविषै मयूर हंस आदि अष्ट महाध्वजा चारों दिशा अर चार विदशाकी ओर है ॥ ३९ ॥ अर तीजे पीठविषै श्रीमंडप महा मंगलरूप ता विषै गंधकुटी तामें प्रभुका सिंहासन तापर जिनेंद्र विराजमान जाकी सुर असुर अर नरकोटिक हर्षित चित्त भये स्तुति करै हैं मुकुट विषै लगाये हैं कर कमल जिन सुर नर या भांति प्रभुकी स्तुति करे हैं, हे महादेव! तुम विजयरूप हो, हे महेश्वर! तुम महा मोहके जीतनहारे हो, हे महाबाहु तुम समान जीतका स्वरूप अर नाहीं, हे महेक्षण कहिये विशाल हैं नेत्र जिनके सर्वके देखनहारे सबके जाननहारे तुम समान तुमही हो इत्यादि महा स्तुति करे हैं ताही समय वरदत्त नामा राजा मुनिके व्रतधरि मुख्य गणधर भया ॥ ४३ ॥ अर छह हजार रानियों सहित राजीमति दीक्षा धरि आर्य्यकानिके गणकी गुराणी भई मुनियोंको आदि दे द्वादश सभा प्रभुके समोसरणमें होती भई सो नमस्कार कर अपने अपने स्थान तिष्ठे प्रभुको आराधे हैं गंधकुटीकी प्रदक्षिणा रूप बारह सभा सोहे हैं। तहां प्रथम सभाविषै वरदत्त गणधर आदि योगीन्द्र विराजे हैं सो प्रत्यक्ष धर्मका स्वरूप मानों निर्मल धर्मेश्वर जो भगवान् तिनके स्वरूप ही हैं ॥ ४७ ॥ फिर दूजी सभामें कल्पवासी देवनिकी देवी तिष्ठे हैं सो मानों भगवानकी बाह्य विभूतिही है ॥ ४८ ॥ अर तीजी सभामें राजमती आदि आर्य्यकानिके अर श्राविकानिके समूह तिष्ठे हैं सो लज्जा क्षमाशांति आदि गुणों करि शोभित

हैं मानों धर्मकी प्ररूपणा ही है धर्मका स्वरूप धरे विराजी हैं। अर चौथी सभामें जोतिषी देवोंकी देवी दिपै हैं मानों वह देवी प्रभाका स्वरूप ही हैं दैदीप्यमान है भगवानकी परम ज्योति ताकी प्रशंसारूप भक्तियुक्त हैं॥ ५०॥ अर पांचमी सभामें व्यंतर देवोंकी देवांगना तिष्ठै हैं मानों वह मूर्तिवन्त बन लक्ष्मी ही हैं बनके पुष्पोंके आभूषण करि बेल की न्याईं नम्रीभूत होय रही हैं प्रभुके चरणोंको नवै हैं॥ ५१॥ अर छठी सभामें भवनवासी देवोंकी देवी हैं, भगवानकी महा भक्त भासे हैं मानों नागलोककी लक्ष्मी ही नेमनाथकी सेवाकूं आई हैं॥ ५२॥ अर सातवीं सभामें दश प्रकार भवनवासीदेव भगवानकी स्तुति करै हैं। भगवान समस्त पाप कर्मके नाशक हैं जिनकी भक्तिसे पाप पलाय जाय यह भवनवासी देव अपने फणोंमें हैं दैदीप्यमान रत्नोंकी प्रभाकरि मनोहर दीखै हैं॥ ५३॥ अर आठवीं सभामें अष्ट प्रकारके व्यन्तर महासुन्दराकार तिष्ठै हैं प्रभुके गुण वर्णन करै हैं पुष्पोंकी माला पहरै हैं॥ ५४॥ अर नवमी सभामें चन्द्र सूर्यादि पंचप्रकार ज्योतिषी देव नम्रीभूत भये प्रभाकी वृद्धिको चाहे हैं प्रभुकी प्रभाके प्रभाव करि मंद होय गई है कांति जिनकी॥ ५५॥ अर दशमी सभाविषैं सौधर्म इंद्र आदि सोलह स्वर्गनिके बारह इंद्र अर बारह प्रत्येंद्र आदि सबही स्वर्गवासी देव तिष्ठे हैं सो स्वर्गवासी सौंदर्यताके स्वामी महासुखी भगवानके महाभक्त सोहै हैं जिन समान अर देव नाहीं॥ ५६॥ अर ग्यारहवीं सभाविषैं वलदेव वासुदेव आदि सबही राजा तिष्ठे हैं समस्त सिद्धिके देनहारे जिनवर तिनको सेवै हैं अर बडे बडे श्रावक सबही तिष्ठे हैं यह ग्यारहवीं सभा मनुष्योंकर मंडित है वह सम्यग्दृष्टी श्रावक मानों दान पूजादि धर्म मूर्ति ही हैं भगवानका है ध्यान जिनके॥ ५७॥ अर बारहवीं सभामें सिंह, गज, मृग वृषभादि थलचर अर हंस गरुणादि नभचर अनेक जातिके तिर्यंच तिष्ठे। भगवानके अतिशयकरि दूर होय गई है अविद्या जिनकी अर मिट गए हैं वैर जिनके अर विलाय गए मायाचार आदि दोष जिनके इन दोषोंके अभावसे गुणरूप होय रहे हैं कैयक तिर्यंच सम्यक्त धारते भए अर कईएक श्रावकके व्रत धारते भये अर कईएक मनुष्य मुनि भये

अर कैयक देव सम्यक्त्वके धारक भए या भांति
अर कईएक स्त्री आर्यिका भईं अर कैयक श्राविका भईं। द्वादशांगरूप जो जैनशास्त्र
बारह सभाकरि मण्डित जिनेश्वर समोशरणविषैं विराजे मानों यह द्वादशसभा जगतका
ताके गुण ही हैं तिनकरि प्रभु सेवने योग्य हैं ॥ ५९ ॥ वह भगवान नेमनाथ सिंहासनकी शोभा राजेंद्रपना
ईश्वरपना प्रगट करै हैं यह ईशपना अर ठौर नाहीं और देवनिकरि ढारे चमर तिनकरि सब लोकका भामंडलकी
प्रगट दिखावै हैं ॥ ६० ॥ अर चंद्रमासमान उज्वल तीनछत्र तिनकरि त्रैलोक्यनाथपना प्रकाशै अर करै है
ज्योतिकी प्रभाकरि प्रभुका आधिक्यपना दिखावै हैं भामंडलकी प्रभा जीवोंका जन्मांतरका तिमिर दूर है अर
॥ ६१ ॥ अर अशोकनामा वृक्ष सबजीविका शोक दूर करै हैं वह अशोकवृक्ष सब ऋतुके पुष्पोंकर शोभित अर सब
पुष्पवृष्टिकरि देव जिनेश्वरकूं पूजै हैं ॥६२॥ अर दुंदुभि वाजोंके मंडलशब्दकर जीतकी लक्ष्मी प्रगट करै हैं अष्ट प्रातिहार्य-
जीवोंको अभयदानका देनहारा दिव्यध्वनि ताकर अपना सर्वज्ञपना प्रगट करै हैं वे भगवान महेश्वर उपजे हैं
करि शोभित सर्वेश्वरपना भव्योंको प्रकाशै हैं वह अष्ट प्रातिहार्य किसीकर न हरे जांय अपने गुणोंकर विराजे
॥६४॥ लोकोंके आनंदके वास्ते अपनी सकल विभूति दिखावते नेमि जिनेश्वर केवलज्ञानसहित समोसरणमें यह
सर्वलोककूं उलंघै ऐसी विभूति जिनकी ॥ ६५ ॥ देव परस्पर देवोंको बुलावै हैं अर यह शब्द करै हैं आत्मकल्याण
भगवान पूर्ण ब्रह्म परमातमा सकल गुणोंका पुंज सब जीवोंको कल्याण कारी है जो जहां
किया चाहे सो आयकर इसे भजो ॥ ६६ ॥ अनेक देव अर मनुष्य समोसरणमें बैठे हैं अर अनेक आवै हैं जोड
समोसरण दृष्ट पडा तहां तत्काल अपने अपने वाहननितैं उतरकरि मानस्थंभनिके समीप आयकरि हाथ मान-
सीस नवाय नमस्कार करै हैं ॥ ६८ ॥ वाहनादि परिग्रह तिनकूं वाहर तजकरि पूजाकी सामग्रीकरि युक्त मंडित
स्थंभके पीठकूं प्रदक्षिणाकरि नमस्कार करै है बहुरि मानस्थंभके परे उत्तमजन प्रवेश करै हैं महाभक्तिकरि अर
भीतर पैठे हैं ॥ ७० ॥ अर जो कुकर्म करनहारे पापी हैं अर नीच हैं पाखंडी हैं अर जिनके अंग विकल हैं

जिनकी इंद्री भी विकल हैं सो बाहरहीतैं वंदना करै हैं अर छत्र, चमर, झारी, आदि सब उपकरण बाहर तजकरि जयांगणविषैं कितनेक निजवर्गनिसहित हाथ जोड नमस्कार करते देवेंद्र, नागेंद्र, नरेंद्र प्रवेश करै हैं विधिपूर्वक भीतर जायकरि अपने मणीनिके मुकुट नवाय नेमीश्वरकूं नमस्कार करै हैं अर पहली पीठपर धर्मचक्र है ताकरि पूजै हैं अपनी शक्तिप्रमाण अर विभवप्रमाण सुर असुर नरेंद्रादिक प्रभुकूं बारंबार नवैं हैं बहुरि हर्षके भरे प्रगटे हैं रोमांच जिनके सो हाथ जोड शीश नवाय अपने स्थानक तिष्ठै हैं जैसे सूर्यके उदयकूं पायकरि कमलनिका समूह विकसै है तैसैं जिन रविकूं पायकरि गुणरूप कमल विकसै हैं ॥ ७६ ॥ सकल सुरोंकी सेना अर नरोंकी सेना समोसरणविषैं प्रवेश करती संती समोसरणकूं पूरिवे समर्थ न होती भई। जैसैं अनेक नदी प्रवेश करती संती समुद्रकूं पूर न सकैं। कईएक निकसैं हैं कईएक पैठे हैं कई प्रदक्षिणा करै हैं कईएक नमस्कार करै हैं कईएक स्तुति करै हैं कईएक ईश्वरका ध्यान धरै हैं या भांति संतोंके समूह तहां तिष्ठे हैं जहां भगवन्तके प्रभावकरि मोह नाहीं, भय नाहीं द्वेष नाहीं, विषयकी अभिलाषा नाहीं, रति नाहीं, अदेखसकाभाव नाहीं अर छींक, जम्भाई, खांसी, डकार, इत्यादि विकार नाहीं फिर निद्रा तंद्रा क्लेश, भूख, प्यास इत्यादि नाहीं जीवोंका अकल्याण नाहीं सबही विघ्न जिनके वचन हरै हैं ॥ ८० ॥ समोसरणकी भूमिविषैं त्रैलोक्यकी अद्भुत विभूति है यह भगवानकी बाह्य विभूति है सोई कथनमें न आवै तो अंतरंगकी विभूति कौन कहि सकै संपूर्ण विभूतिकी एक भूमि ऐसा जिनेश्वरका स्थान ताविषैं जिनेश्वर विराजे अंतरंगकी विभूतिकरि महापवित्र सो बारह सभाके भव्य जीवनिके समूह अभिलाषरूप जो नेत्र तिनकरि जिनेश्वरका रूप अमृतरूप समुद्र ताहि पीवते भए ॥ १८१ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ समोसरणवर्णनोनाम षष्टपंचाशत् सर्गः ॥ ५६ ॥

अथानंतर—कल्याणका एकनिवास जो वह स्थानक सदा उत्सवरूप ताविषैं भव्यलोक धर्मश्रवणकी इच्छा-

करि हाथ जोड तिष्ठे तहां वरदत्तनामा मुख्य गणधर वक्तानिमें श्रेष्ठ जे भगवान नेमिजिनेंद्र तिनकूं समस्त भव्य जीवनिके हितकी वार्ता पूछता भया ॥ १ ॥ तव गणधरके प्रश्नसे स्वामीके मुखसे दिव्यध्वनि खिरी। प्रभुका मुखकमल जिसका चहुं ओरसे दर्शन होय है अर प्रभुकी वाणी धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चार पुरुषार्थ तिनकूं प्रगट करै है अर चार वर्ण अर चार संघ तिनोंको मार्गकी दिखावनहारी है अर प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग इन चारोंकी माता है चारों अनुयोग जिनवाणीसे प्रगट होय हैं अर जिनेश्वरकी वाणी अक्षेपणी विक्षेपणी संवेगणी निर्वेगनी चतुर्विध कथाकी वृत्तिको धरैं हैं अर चतुर्गतिकी निवारण हारी हैं अर एक दोय तीन चार पांच छह सात आठ नव इत्यादि अनेक भेदोंको धरै हैं द्रव्यकी सत्ता स्वभाव पर्यायरूप है द्रव्य पर्यायवन्त है जैसें सत्ता पर्याय है एक है तथापि अनन्तभेदोंकी धरणहारी हैं तैसैं जिनवाणी एकरूप है तथापि अनन्तनयरूप है ॥ ५ ॥ एक आत्मस्वरूपकी कथनहारी है इसलिये एकरूप कहिए अर यती श्रावक यह दोय प्रकार धर्म तिनकी निरूपणहारी अथवा निश्चय व्यवहार दोय नयकी प्रगट करणहारी इसलिये दोयरूप कहिये अर रत्नत्रयका अथवा द्रव्यगुण पर्यायकी प्रकाशनहारी इसलिये क्रिया कहिये अर चार अनुयोगकी कथनहारी चतुकषायकी नाशनहारी चतुर्गतिकी निवारणहारी चार रूप कहिए अर पंचास्तिकायकी प्ररूपणहारी पंचपरावर्तनके भेद दिखावनहारी पंचपरमेष्ठीकी भक्ति प्रकाशनहारी इसलिये पंचरूप कहिए अर षट्द्रव्योंकी दिखावनहारी षटकायके जीवकी रक्षा करणहारी इसलिये षटरूप कहिए अर सप्तभय निवारणहारी सप्तव्यसनकी निन्दनहारी सप्तभंग रूप इस लिए सप्त प्रकार कहिए अर अष्ट कर्मकी नाशन हारी अष्टगुणोंकी भाषणहारी इसलिए नवरूपभी कहिए अर दशलक्षण धर्मकी निरूपणहारी अर दशधा परिग्रहकी छुडावनहारी इसलिए दशरूप भी कहिए इत्यादि कहांतक कहिए या जिनवाणीकी महिमा श्रीजिनेश्वर देव ही जानैं ऐसी यह जिनवाणी जगतके उद्धार करिवेकूं जिनेश्वरके मुखतैं प्रगट भई ॥ ६ ॥ वह जिनवाणी

जीवोंके अहितकूं निवारती संती अर हितको प्रगट करती संती अर प्राणियोंको यथायोग्य धर्मविषैं धारती संती अर अशुभका प्रहार करती संती अर शुभकूं थापती संती अर जीवोंके उपार्जे कर्मोंको स्थिर करती संती अर जीवोंकों शिवस्थानका संग करावती संती एक योजन अधिक विस्तरी महा मधुर स्निग्ध गम्भीर महा दिव्य अक्षरोंकी प्रगट करनहारी निरक्षरी महासाध्वी सरस्वती अनन्यवृति कहिए एक धर्मकी प्ररूपणा टार नहीं है अर वृति जाकी ऐसी भगवानकी वाणी भाव अर अभाव दोनोंकी दिखावनहारी निर्विकल्पभावकी बढावनहारी जगतकी स्थिति जतावनहारी अनादिसिद्ध शारदा सर्वज्ञके मुखसे प्रगट भई यह किसीकी करी नाहीं याका कोई कर्त्ता नाहीं अनादिकालकी प्रवर्ते है अर सदा प्रवर्तेगी केवलज्ञानियोंकरि इसका व्याख्यान होय है वह वक्ता हैं अर सर्व श्रोता हैं ॥ १० ॥ सो प्रभुकी ध्वनिमें यह आज्ञा भई जो आत्मा है अर परलोक है धर्म अधर्म है तिनके कर्त्ता जीव हैं अर तिनके फल सुख दुःख तिनका भोक्ता जीव है जो नास्तिक यह चरचा नहीं मानै हैं सो नरक निगोदके अधिकारी हैं अर तिनके फल आपही भोगवै हैं आपही अज्ञानकरि संसारविषै भ्रमै हैं अर आप ही ज्ञानकरि मुक्त होय हैं ॥ ११ ॥ जबतक यह मिथ्यादृष्टी है रागद्वेषादि भावकरि कलेशरूप है तव तक भवसागरविषैं भ्रमै है अर जब याके सम्यक्ज्ञान होय अर संसार शरीर भोगसे वैराग्य उपजे तब सिद्ध होय संसारसे छूटै। या जीवकी मूढदशा जाती रहे अर ज्ञानदशा होय तब मोक्ष पावै यह अध्यात्मज्ञान दीपिका समान मोक्षमार्गका दिखावनहारा है। वह श्रीभगवानकी वाणी अध्यात्मरूप यद्यपि एक स्वरूप है नानारूप नाहीं तथापि नानाप्रकार भासती भई सभाविषैं जितने श्रोता हुते सो सब अपनी अपनी भाषामें समझें जैसे स्वच्छजल एकरूप है परंतु पृथिवीविषैं नाना वृक्षनिके योगसे नानारूप होय है ॥१५॥ सब सभा सावधान होय सुनै है अर जिनेश्वर-रूप सूर्य उनके अंतरंगका अज्ञानरूप तिमिर दिव्यध्वनिरूप किरणकर हरते भए वे भगवान विश्वात्मा कहिये विश्वके हितू इत्यादि कथन कर जीवनिकूं उपदेश देते भये ॥ १६ ॥ या संसारविषैं जीवोंकी दोय राशि हैं एक

तो भव्यराशि दूजी अभव्य राशि तिनमें अभव्य राशि तो मोक्षके अधिकारी नाहीं अर जे भव्य जीव हैं तिनमें निकटभव्य मोक्षके पात्र हैं मोक्षनामा पुरुषार्थ भव्य जीवनहीके होय है जे भवनवासी भव्यताके योगकर शुद्ध हैं तेई सिद्धपदकूं पावें हैं ॥ १७ ॥ मोक्षका उपाय आत्मध्यान अर सूत्रका अध्ययन है सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र इनकी एकता सो ध्यान कहिये ॥ १८ ॥ सो सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रका विशेष वर्णन करें हैं जो तत्त्वका निःसंदेह श्रद्धान सो सम्यक्दर्शन कहिये सो सम्यक्दर्शन संशय विमोह विभ्रमसे रहित है समस्त मलका है अभाव जहां जब तक संशय है तब तकही मन मलीन है सो सम्यक्दर्शन तीन प्रकार है एक उपशम दूजा क्षयोपशम तीजा क्षायिक जाके मोहकी सात प्रकृति उपशमें सो उपशम अर सातोंका क्षयोपशम होय सो क्षयोपशम उसे वेदक भी कहिये अर सातोंका क्षय होय सो क्षायिक यह तीन भेद कहे अर निःसर्ग तथा अधिगम इन दोय भेदनिकरि दोय प्रकार भी कहिये सो स्वतः स्वभाव होय सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशसे होय सो अधिगम कहिये ॥ २० ॥ जीव, अजीव आस्रव, बंध, संबर, निर्जरा, मोक्ष यह सप्त तत्व तिनकी श्रद्धा करनी इनके लक्षण जानै जो तत्वोंका श्रद्धान सो सम्यक्दर्शन कहिये। अथानंतर—सप्त तत्वोंमें जीवके लक्षण कहे हैं जीवका लक्षण उपयोग ताके भेद दो एक ज्ञानोपयोग एक दर्शनोपयोग सो ज्ञानोपयोगके भेद आठ अर दर्शनोपयोगके भेद चार मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, केवल, कुमति, कुश्रुति, कुअवधि यह आठ ज्ञानोपयोगके भेद हैं अर चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल यह चार दर्शनोपयोगके भेद हैं ॥ २४ ॥ आत्माका चिन्ह चैतन्य है सो संसार अवस्थाविषैं इच्छा, द्वेष, प्रलय, सुख, दुःख, इन चिन्होंकरि चेतना जानी जाय है अचेतनमें ये लक्षण नाहीं कई एक भूतवादी ऐसा कहै हैं जो पृथिवी अप तेज वायु इन चारोंका मिलाप सो ही जीव अर इनका विछुडना सोई मरण सो यह वात प्रमाण नाहीं इन चारोंका मिलाप सो शरीरका आकार है अर आत्मा निराकार है इनके मिलापकरि चेतनाकी उत्पत्ति नाहीं इनके वियोगकरि चेतनाका मरण नाहीं चेतना जन्म मरणसे रहित है इनका संयोग सो शरीरकी उत्पत्ति अर इनका

वियोग सो शरीरका मरण भूतवादी कहे है पीसा अन्न अर जल इत्यादि वस्तूनिके मिलापकर मद्यकी उत्पत्ति होय है अथवा गुल अर बोरडीका आदि वस्तुओंके मिलापकर मद्यकी उत्पति होय है तैसे पृथिवी, जल, अग्नि, पवन इनके योगसे जीव होय है सो यह बात मिथ्या है वह मद्यकी सामग्री जुदी जुदी है तिनमें लेश मात्र मदशक्ति होय है इसलिये वह भेली होय मद्यकी कर्त्ता होय है अर इन भूतचतुष्टयमें जीवत्वशक्ति नाहीं यह कायाके कारण तिनकूं जो चैतन्यताके कारण मानै हैं सो वालू रेत आदिकमें तेलकी उत्पत्ति चाहै हैं सो कैसे होय यह जीव अनादिनिधन है जाका आदि अन्त नाहीं अनादिकालका गत्यन्तरसे आवै है अर गत्यन्तरको जाय है या भवबनविषैं अपने कर्मोंके वश जीव भ्रमण करै है ॥ २७ ॥ अर कईएक प्रत्यक्षवादी कहै हैं जो प्रत्यक्ष दीखै सो ही प्रमाण अर जो न दीखै सो प्रमाण नाहीं यह शरीरही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर है इसलिये या सिवाय अर जीव नाहीं इत्यादि मिथ्या वार्त्ता जो नास्तिकवादी प्ररूपै हैं सो अपना अर परका अहित करै हैं या श्रद्धासे आप डूबै हैं अर औरोंको डुबोवै हैं ॥ २८ ॥ अर कईएक मिथ्यावादी ऐसा मानै हैं जो आतमा है परन्तु नित्य नाहीं क्षणभंगुर है सो ऐसी श्रद्धा सत्य नाहीं आतमा नित्य है अखंड अविनश्वर है जो क्षणभंगुर होय तो पूर्व जन्मका स्मरण कैसे होय कईएकको पूर्वभवका जातिस्मरण भी होय है अर क्षणभंगुर होय तो या जन्मकी वार्त्ताका स्मरण कैसे होय पिछले अनुसंधानकी बुद्धिका लोप होय तो सकल व्यवहारहीका लोप होय देना लेना आदि सब व्यहार मिट जाय ॥२९॥ अर कईएक वादी आत्माको ज्ञानमात्रही मानै हैं सो आतमा ज्ञान आदि अनंत गुण मात्र है एक ज्ञानमात्रही कहिवेमें न आवै अनन्त गुणका अभाव होय है यह जीवद्रव्य आप, ज्ञाता है दृष्टा- कर्त्ता है, भोक्ता है, अरक्ता कहिये कर्मोंका तजनहारा अर उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यकर युक्त है अर गुणवान है ॥ ३० ॥ अर असंख्यातप्रदेशी लोकप्रमाण है अर प्रदशोंका संकोच विस्तारकरि शरीर प्रमाण है अर वर्ण पांच रस पांच, गंध दोय, स्पर्श आठ यह पुद्गलके वीस गुण तिनिसे रहित है ॥ ३१ ॥ अर कईएक कहै हैं आतमा

सोवाके जीवमात्र है अर कईएक कहे हैं अणुमात्र है अर कईएक कहै हैं अंगुष्टमात्र है अर कईएक कहै हैं पाचसौ योजन प्रमाण है सो यह सब ही असत्यवादी हैं जैसा ये कहै हैं तैसा नाहीं आतमा अमूर्तिस्वरूप चिद्रूप है ॥ ३२ ॥ देही देहीके विषैं भिन्न २ जीव पदार्थ सो सबही असंख्यातप्रदेशी हैं अर व्यवहार नयकर देहप्रमाण है जो देहीप्रमाण न होय तो अर्थकी सिद्धि न होय जो देहप्रमाणसे अधिक होय अर बहु योजन होय तो स्पर्शा भी जाय अर नेत्रोंकर देखा भी जाय अर देहप्रमाणसे न्यून आतमा होय तो शरीर जितना अधिक होय उतना मृतकसमान चेष्टारहित होय इसलिये ऐसे नाहीं आतमा अदृश्य है अर अस्पर्श है जैसा देह धारै है ताही प्रमाण प्रदेश विस्तरै हैं ॥ ३५ ॥ सो आतमा गति चार, इंद्री पांच, षट्काय, वेद तीन, योग पंद्रह, कषाय पचीस, ज्ञान आठ, संयम सात, सम्यक्त छह, लेश्या छह, दर्शन चार, सैनी असैनी दोय, भव्य अभव्य दोय, आहारक अनाहारक दोय, मार्गणा चौदह, तिनकरि लखिये है अर चौदह गुणस्थान तिनकर विलोकिये है सो जीव पदार्थ चेतन है ॥३६॥ अर प्रमाण दोय, एक प्रत्यक्ष दूजा परोक्ष अर नय द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक, नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत अर निपेक्ष चार नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव, अर सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, भाव, अन्तर, अल्पबहुत्व यह आठ इनकरि जीव जाना जाय; अर मुक्त जे सिद्ध ते निज गुणोंकरि जाने जाय हैं ॥ ३८ ॥ द्रव्य कहिये वस्तुका स्वरूप सो अनेकरूप है ताका एकरूप निरूपण सो नय कहिये जहां द्रव्यका नित्य स्वरूप वर्णन करिये सो द्रव्यार्थिक नय कहिये अर जहां अनित्य स्वरूप वर्णन करिये पर्यायकी मुख्यताकरि सो पर्यायार्थिक नय कहिये ॥३९॥ यह मूल नय दोय हैं सो परस्पर सापेक्ष हैं द्रव्य विना पर्याय नाहीं अर पर्याय विना द्रव्य नाहीं। दोऊ नयोंके भेद नैगमादिक नय हैं तिनमें नैगम, संग्रह, व्यवहार यह तीन तो द्रव्यार्थिकके भेद हैं अर ऋजुसूत्र शब्द अर समभिरूढ एवंभूत यह चार पर्यायार्थिक नयके भेद हैं। जो वस्तुकी एकता सोही द्रव्य अर जो अनेकता सो ही पर्याय एकताका नाम सामान्य कहिये अर अनेकताका नाम विशेष कहिये पदार्थके संकल्प विकल्प मात्रका

ग्राहक सो नैगमनय, कहिये ताके भेद तीन अतीतविषैं वर्तमानका आरोपण सो भूतनैगम ऐसा कहना जो आज दीपिमालिकाके दिन वर्द्धमान स्वामी मोक्ष गये सो जा दिन मोक्ष गये वा दिनकूं व्यतीत भए अढाई हजार वर्ष ऊपर गये अर आजका दिन कहना सो भूतनैगम जानो अर होनहारविषै वर्तमान समान कहना सो भाविनैगम है जैसे अरहन्तोंको सिद्ध कहना अर वस्तु कछु निपजी कछु न निपजी ताहि निपजी समान कहिये सो वर्तमाननैगम जानो ऐसा कहना जो भात रांधिये है सो भात नाम तो रंध चुके अर रांधतेको भात कहना सो वर्तमान नैगम है जब चावल चरवेमें डाले अर अग्निपर चढाये तब भातही कहिये तो दोष नाहीं अर वस्तुका भेद न करना समस्तका ग्रहण करना सो संग्रह नय कहिये सबही द्रव्य सत्तारूप हैं अस्तित्व गुण विना कोई द्रव्य नाहीं सब द्रव्योंको एकरूप जानना सो सामान्य संग्रह अर सब जीवोंको एकरूप जानना सो विशेष संग्रह कहिये यह संग्रहके दोय भेद हैं अर संग्रह नयकरि किया जो द्रव्योंका संग्रह ताविषैं ऐसा भेद करना जो द्रव्यके जीव अर अजीव यह दोय भेद हैं यह कथन करना सो सामान्य संग्रह भेदका व्यवहार है अर जीवमें भेद करना जो यह संसारी अर सिद्ध सो विशेष संग्रह भेदकरि व्यवहार है यह व्यवहारके दोय भेद जानो ॥ ४५ ॥ अर ऋजुसूत्रका भेद सुनो भूत अर भविष्यत् यह दोनों वक्र सो इनको तजकरि वर्तमान अर्थपर्यायरूप द्रव्यका कथन करना सो ऋजुसूत्र कहिये जैसे सूत्र सूधा चला जाय सूत्रविषै वक्रता नाहीं तैसे ऋजुसूत्रविषै वर्तमान परणतिकीही प्ररूपणा है ताके भेद दोय एक सूक्ष्म ऋजुसूत्र एक स्थूल ऋजुसूत्र जो एक समय अवस्थाही द्रव्यकी अर्थपर्याय सो सूक्ष्म ऋजुसूत्र कहिये अर मनुष्यादि पर्याय अपनी आयुप्रमाण तिष्ठै है ऐसा कहना सो स्थूल कहिये ऋजुसूत्र यह ऋजुसूत्रके दोय भेद कहे अर शब्द कहिये ध्वनि ॥ ४६ ॥ सो लिंग कहिये स्त्रीलिंग पुलिंग नपुंसक लिंग इन तीन लिंगरूप शब्दका उच्चार है अर शब्द है सो साधनेकरि सिद्ध होय है अर एकवचन, द्विवचन, बहुवचनरूप नानाप्रकार है अर काल कहिए अतीत अनागत वर्तमान तिनकरि शब्दका भेद होय है सो एक

यथार्थ शब्द एक रूढिक जिसका अर्थ सो यथार्थ अर जिसका अर्थ नाहीं सो रूढिक अर शब्द अनेक अर अर्थ एक जैसे दारा, भार्या, कलत्र ये सब स्त्रीपर्यायके नाम हैं यह शब्दनय कहिए ॥ ४७ ॥ अर समभिरूढ नयका भेद सुनो जो संसारमें प्रसिद्ध शब्द पड गया सो कहना गौ ऐसा शब्द सुहीको कहिए जहां अर्थका विचार नाहीं गौ शब्दका अर्थ तो यह है गच्छति जो गमन करै उसको गौ कहिए सो गमन तो सब ही करै हैं परन्तु गौ नाम गायहीका प्रसिद्ध जानहु अर कोई चक्षुहीन है अथवा प्रशंसा योग्य चक्षु नाहीं अर नाम ताका कमलनयन है सब ही कमलनयन ही कहैं यह समभिरूढ नय माननी अर जैसी चेष्टा होय तैसा ही कहिए इन्द्रतीति इन्द्र इसका अर्थ जो क्रीडा करै सो इंद्र जासमय क्रीडा करै तासमय इंद्र कहिए यह एवंभूतनामा नयोंका स्वरूप है जो कर्मशत्रुको जीतै सो जिन जेते वचनके मार्ग उतने ही नय यह संख्या नाहीं जो ऐते ही नय हैं नय असंख्य हैं ॥ ५२ ॥ यह जीव तत्वका व्याख्यान किया अर अजीवके भेद पांच—धर्म, अधर्म, आकाश काल अर पुद्गल इन तत्वोंकी श्रद्धा करै सो सम्यग्दर्शनका लक्षण है। धर्मका लक्षण गति अधर्मका लक्षण स्थिति आकाशका लक्षण अवकाशदान अर कालका लक्षण वर्तना अर पुद्गलका लक्षण मूर्तित्व मिले अर विछुडे इसलिए पुद्गल कहिए सो गति अर स्थिति जीव अर पुद्गल ही के हैं अर द्रव्यके नाहीं पुद्गल अनेकरूप है उसके मूलभेद दोय हैं एक अणु अर एक स्कंध, जो परमाणुओंका समूह एकत्र होना सो स्कंध अर अकेला परमाणु सो अणु कहिए अणु मिलै तब स्कंध होय अर स्कंध विछुडै तब अणुमात्र रहजाय अर कालकी पर्याय समय आदि अनेक हैं कलन स्वभाव कहिए वर्तमान लक्षण उसे धरै सो काल एक निश्चय काल एक व्यवहारकाल जो कालाणु द्रव्यरूप सो निश्चय काल अर जो समयादि पर्यायरूप सो व्यवहार काल यह व्यवहारकाल समयादि है सो पुद्गल परमाणुकी गति-कर जाना जाय है इसलिए परतंत्र कहिए अर निश्चयकाल स्वतःसिद्ध अविनाशी पदार्थ है इसलिए स्वतंत्र कहिए उस निश्चयकालकी यह व्यवहारकाल पर्याय है ॥ ५६ ॥ यह अजीव तत्वका व्याख्यान किया फिर आस्रवका

व्याख्यान करे हैं मन वचन कायके द्वारा कर्मका आगम सो आस्रव कहिए उसके दोय भेद जो पुण्य कर्मका आस्रव सो शुभास्रव कहिए अर जो पापका आस्रव सो अशुभास्रव कहिए ॥ ५७ ॥ सो कषाय संयुक्त जीव अर कषाय रहित जीव यह आस्रवके दोय स्वामी तिनमें पहला मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ताहि आदि देय दशमा सूक्ष्मसाम्पराय तहांलग सकषाय कहिए अर ग्यारहवां उपशांतमोह अर बारहवां क्षीणमोह तेरहवां सयोग जिन चौदहवां अयोग जिन यह चार गुणस्थान अकषाय हैं तिनमें ग्यारहवें बारहवें उपशांतमोह तो एक वेर पाछे आवे है अर क्षीणमोह तथा सयोग जिन अयोग जिन यह कृतार्थ होय ही चुके सो सकषायके तो कर्मोंका आश्रव सांपराय कहिए कछुयक काल रहाऊ है अर अकषायके ईर्यापथ कहिए रहाऊ नाहीं गमनरूप ही है ॥५९॥ सकषायीके जो आश्रव है सो इंद्रियोंके विषय अर कषाय अर हिंसादि पाप अर अव्रत असंयम प्रमाद इनकर होय है उसकी पच्चीस क्रिया हैं तिनमें प्रथम सम्यक्त्वपरिवर्धनी सम्यक्क्रिया है उसके लक्षण अरहंत देव निर्ग्रंथ गुरू जिनप्रतिमा जिनवचन इनकी पूजा ॥ ६१ ॥ अर अशुभके उदयसे कुगुरु कुदेव कुधर्म इनका स्तवन सो मिथ्यातपरिवर्धनी मिथ्यातक्रिया जानो अर तीजी असंयमवर्द्धनी प्रयोगक्रिया ताके लक्षण जहां षट्कायकी दयाका यत्न नाहीं विना देखे गमनादिककी प्रवृत्ति ॥६३॥ अर चौथी प्रमादपरिवर्द्धनी प्रमादसहित क्रिया उसे समादानक्रिया भी कहिए उसके लक्षण संयम भी धारकर असंयमकी ओर सन्मुख होना अर पांचमो ईर्यापथ क्रिया कही, ईर्यासमिति सहित गमन करना सो संयमकी वृद्धिका कारण है अर जो ईर्यासमिति विना गमन करना सो असंयमवर्द्धनी पापास्रवका कारण है यह क्रिया सरागीहीके होय यह पांच सांपरायकी क्रिया कहिए ॥ ६५ ॥ अर छठी प्रद्वेषकी क्रिया सो क्रोधके आवेशके वशसे उपजे अर सातमी कायकी क्रिया उसका लक्षण दुष्ट जीवके दुष्टताका उद्यम होय ॥ ६६ ॥ आठमीं अधिकरणी क्रिया जो हिंसाके उपकरणका ग्रहण अर नवमी पारितापिकी क्रिया जो स्वेच्छाचारपनेथकी परजीवको दुःखकी उत्पत्ति करना ॥ ६७ ॥ अर दशमी प्राणातिपातकी क्रिया उसका लक्षण जीवनिके इन्द्री बल आयु श्वासोच्छ्वास प्राणोंका

वियोग करै यह छठीसे लेय दशमी तक व्यापिका क्रिया कहीं अर ग्यारहवीं दर्शन क्रिया उसका लक्षण प्रमादी जीवके रागभावके योगसे मनोज्ञ रसरूपके अवलोकनका अभिप्राय होय ॥६९॥ अर बारहवीं स्पर्शन क्रिया कर्मके बंधका कारण जानना उसके लक्षण पल्लव पुष्प आदि सजीव वस्तु कोमल तिनके स्पर्शका अविवेकीके अभिलाष होय ॥७०॥ अर तेरहवीं पापाश्रवकी करणहारी प्रत्यायकीनामा क्रिया उसके लक्षण पापके उपकरण अपूर्व निपजावै ॥७१॥ अर चौदहवीं समंतानुपातिनीनामा क्रिया सो साधुजनोंको अयोग्यताके लक्षण स्त्री पुरुष अर पशु तिनके स्थानकविषैं मलमूत्रादि डारे ॥ ७२ ॥ अर पंद्रहवीं अनाभोगनामा क्रिया उसके लक्षण विना देखी विना पूंजी भूमिविषैं अंगादिकका स्थापन यह ग्यारहवींसे लेय पंद्रहवीं तक दुःक्रिया हैं ॥७३॥ अर सोलहवीं स्वहस्त क्रिया आस्रवकी वढावनहारी जाननी उसके लक्षण जो अयोग्य कार्य किसीसे न वने सो अपने हाथों करै ॥ ७४ ॥ अर सत्रहवीं निसर्गनामा क्रिया स्वतःस्वभाव आस्रवकी करणहारी उसके लक्षण पापके अंगीकारकी वृत्ति विना सिखाई आपही जान लेय अर अठारहवीं विदारणनामा क्रिया उसके लक्षण पराये औगुणका लोकोंके निकट प्रकाश करना यह क्रिया बुद्धिकी नाश करणहारी है ॥ ७६ ॥ अर उन्नीसवीं जिनआज्ञाउलंघनी क्रिया उसके लक्षण अज्ञानी जीव जिन आज्ञा यथार्थ पालनेकूं असमर्थ अर षट् आवश्यकादिविषै मिथ्यात्वके योगसे औरसे और प्ररूपण करैं ॥ ७७ ॥ अर बीसवीं अनादरनामा क्रिया उसके लक्षण शठताके योगसे अर आलसके वशसे शास्त्रोक्त विधिके करनेविषैं आदर नाहीं यह सोलहवींसे लेय बीसवीं पर्यंत अनाकांक्षनामा क्रिया कहीं अर इकीसवीं प्रारंभनामा क्रिया उसके लक्षण और जीवन आरंभ किया जो आरंभ जहां हिंसा उसविषैं अज्ञानी हर्ष मानै आपके आरंभकी वांछा इसलिये पराये आरंभ अच्छे लागैं ॥ ७८ ॥ अर बाइसवीं पारिग्रहणीनामा क्रिया उसका लक्षण परिग्रहकी अति तृष्णा जो हाथ पडे सो ही उठाय लय अर तेईसवीं मायानामा क्रिया उसका लक्षण जो ज्ञानदर्शनादिविषैं मूढता अर परजीवोंका ठगना ॥ ७९ ॥ अर चौवीसवीं मिथ्यादर्शननामा क्रिया उसके लक्षण

मिथ्यादर्शनके आरंभका दृढ करना अर अन्य जीवोंको मिथ्यात्वविषैं अनुराग बढावना ॥ ८० ॥ अर पचीसवीं अप्रत्याख्याननामा क्रिया उसके लक्षण कर्मके उदयके वशसे पापथकी अनिवृत्ति किसी ही अयोग्य क्रियाका त्याग नाहीं सर्व पाप क्रियाकी प्रवृत्ति यह बीसवीं क्रियासे लेय पचीसवीं तक अनिवृत्ति क्रिया हैं यह पचीस आस्रवकी क्रिया कहीं ॥ ८१ ॥ जिस जीवके कषायपरिणाम मंद होवैं उसके आस्रव मन्द होय अर जिसके कषाय मध्य होय उसके आस्रव भी मध्यतारूप होय अर जिसके तीव्र कषाय होय उसके आस्रवकी तीव्रता जानो जैसा कारण तैसा कार्य कषाय तो कारण हैं अर आश्रव कार्य है ॥८२॥ सो आश्रवके भेद दोय एक जीवाधिकरण एक अजीवाधिकरण तिनमें जीवाधिकरणके भेद सुनो समरम्भ कहिए प्रमादी जीवके जीवहिंसादि पापोंके विषय यत्नका आवेश सो समरंभ अर जीवहिंसादि पापोंके उपकरणका अभ्यास करना सो समारंभ अर हिंसादिकका उद्यम सो आरंभ यह तीन मन वचन कायके योगकरि गुणिए तब नव भेद होवैं अर नवको कृत कारित अनुमोदनकरि गुणिए तब सत्ताइस भेद होवैं अर सत्ताइसको चार कषायोंकर गुणिए तब एक सौ आठ भेद होंय यह जीवाधिकरणके भेद कहे अर अजीवाधिकरणके भेद चार निबर्तना निक्षेप सयोग निसर्ग तिनमें वर्तनाओंके भेद दोय अर निक्षेपके भेद चार अर संयोगके भेद दोय अर निसर्गके भेद तीन ॥ ८५ ॥ इनका वर्णन करैं हैं तिनमें निवर्तनाके दोय भेद एक मूल निवर्तना दूजी उत्तर निर्त्रितना जो मूलसे रचना सो मूल निर्वर्तना अर जो कछुयक रचना सो उत्तर निर्वर्तना सो यह दोऊ रचना मन, वचन, कायकर होय हैं ॥८६॥ अर निक्षेपके भेद चार प्रथम सहसा निक्षेप उसका अर्थ तत्काल विना विचारे वस्तु डार देय यह न विचारै जो इसके डारे किसीको बाधा होयगी ॥ ८७ ॥ अर दूजी दुःप्रमृष्टनामा निक्षेप जो विना पूजै अथवा यथाविधि न पूजै वस्तु मेल देय अर तीजा अनाभोगनामा निक्षेप जो अयोग्य स्थलविषैं योग्य वस्तु मेल देय अर चौथा अप्रत्यवेक्षित नामा निक्षेप जो विना देखे वस्तु मेल देय दयाका विचार नाहीं ये चार निक्षेपके भेद कहे अर संयोगके भेद दोय एक भुक्तसंयोग

एक पानसंयोग जो भोजनके उपकरण अथवा पीनेके उपकरण तिनको विना देखे ग्रहे अथवा अयोग उपकरण-करि खानपान करै यह संयोगके दोय भेद भये कहे अर निसर्गके भेद तीन मन वचन काय ॥८९॥ यह संक्षेपता-करि आस्रवका भेद कहा। अथानंतर—आस्रवका विशेष भेद कहै हैं ज्ञान अर दर्शनका दूषण कहना अर ढांकना ज्ञानदर्शनविषैं विघ्न करना आसादना करनी यह दूषण ज्ञानावर्णीय और दर्शनावर्णीय कर्मके आस्रवके कारण हैं ॥ ९१ ॥ अर आप दुःखी होना औरोंको दुःखी करना आप शोकवंत रहना अर औरोंको शोकवंत करना आप क्लेशरूप रहना औरोंको क्लेश करना अर आप संतापरूप रहना अर औरोंको आताप करना आप रुदन करना अर औरोंको रुदन करावना यह सब असाता वेदनीयके आस्रवके कारण हैं ॥९२॥ अर सकल प्राणियोंविषैं दया अर वृत्तियोंविषै अति अनुराग अर सरागसंयम अर दान क्षमा अर अंतर्वाह्य शौच अर अरहंत देवकी पूजा अर बाल वृद्ध तपस्वियोंविषैं वैयावृत्य, यह सातावेदनीयके आस्रवके कारण हैं ॥९४॥ अर केवली श्रुतकेवली अर चतुर्विध संघ धर्म देवप्रतिमा इनका रूप औरसूं और कहना यह दर्शनमोहके आस्रवके कारण हैं ॥९५॥ अर कषायनिके उदयसे अति तीव्र परिणाम होय सो चारित्रमोहके आस्रवका कारण है ता चारित्रमोहके दोय भेद हैं एक कषायवेदनीय एक नोक-षायवेदनीय, आप कषाय करना औरनिकूं कषाय उपजावना सो कषायवदेनीयके आस्रवका कारण है ॥ ९७ ॥ अर उपहास्यादिकरि धर्मकी हास्य करना हास्यवेदनीयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर नानाप्रकार क्रीडाविषैं आसक्तता अर व्रत शीलादिककी अरुचि सो रतिवेदनीय नामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर परजीवकूं अरति करना अर परकीर्तिका नाश करना सो अरति वेदनीयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर जो कुशीलका सेवना सो अरतिके आस्रवका कारण है ॥१००॥ जो आपकू शोक उपजावना अर औरनिके शोककी वृद्धि भयें आनन्द मानना सो शोक वेदनीय नामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर आप सदा भयरूप रहना अर औरनिकूं भय उपजावना सो भयनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर भले आचरणके आचारविषैं

अपवाद करना अर घृणा करना सो जुगुप्सानामा नोकषायके आस्रवका कारण है अति ठगावद्या अति मिथ्या अर अति विषयानुराग यह स्त्रीवेदनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर निगर्वता अर अल्प क्रोध अर निज दाराविषैं सन्तोष यह पुरुषवेदनामा नोकषायके आस्रवका कारण है अर कषायकी प्रचुरता अर पराई गुह्य वार्त्ताका प्रकाशन अर स्त्रीविषैं आसक्तता यह नपुंसकवेदनामा नोकषायके आस्रवके कारण हैं ॥ ५ ॥ अर बहुत आरम्भ अर परिग्रह ये नर्कायुके आस्रवके कारण हैं अर मायाचार है सो तिर्यंचायुके आस्रवका कारण है अर अल्प अरम्भ अल्प परिग्रह निगर्व स्वभाव अर संतोषवृत्ति यह मनुष्यायुके आस्रवका कारण है ॥७॥ अर सम्यक्त्व तथा यती श्रावकके व्रत अर बालतप कहिये अन्य तापस सम्बन्धी अज्ञानतप अर अकामनिर्जरा ये देवायुके आस्रवके कारण हैं ॥ ८ ॥ अर मन वचन कायकी वक्रता अर पराया अपवाद यह अशुभ नामकर्मके आस्रवके कारण हैं अर दर्शनविशुद्धि विनयसम्पन्नता निरतिचार शीलव्रत निरन्तर ज्ञानोपयोग संवेग शक्तितस्त्याग शक्तितस्तप साधुसमाधि वैयाव्रत्यकरण अर्हतभक्ति आचार्यभक्ति वहुश्रुतभक्ति प्रववचनभक्ति आवश्कप्रभावना मार्गप्रभावना अर प्रवचनवात्सल्यता यह सोलह भावना तीर्थंकरप्रकृतिनामा नामकर्मके आस्रवके कारण हैं अर पराये छते गुणका ढाकना अर अपने छते औगुण ढाकना अर पराये अनहोते औगुन कहना अर अपने अनहोते गुन गावना, पराई निन्दा अर अपनी प्रशंसा यह नीच गोत्रके आस्रवके कारण हैं ॥ ११ ॥ अर आप सब काल लहूरा (छोटा) भाई हुआ रहना आपको सबसे लघु जानना अर गर्व न करना अर पराये गुणोंकी प्रशंसा करनी अर अपनी न करनी अपने औगुनकी निंदा करनी यह उच्च गोत्रके आस्रवका कारण है अर पराए काममें विघ्न करना सो अंतरायकर्मके आस्रवका कारण है उसके भेद पांच जो दानविषैं विघ्न करना सो दानान्तरायका कारण है, पराए लाभविषै अन्तराय करना सो अपने लाभान्तरायका कारण है अर पराए भोगविषैं अंतराय करना सो भोगान्तरायके आस्रवका कारण है अर पराए उपभोगविषै अंतराय करना सो अपने उपभोगांतरायके

आस्रवका कारण है अर पराए वीर्यविषै विघ्न करना सो अपने वीर्यान्तरायके आस्रवका कारण है अर कहांतक कहिए जो जो अशुभ कार्य हैं वे सब अशुभास्रवके कारण हैं अर जितने शुभकार्य हैं वे सब शुभास्रवके कारण हैं हिंसा, मृषा, चोरी, कुशील. परिग्रह यह पांच पाप इनथकी निवृत्ति होना सो व्रत कहिये सो इन पापोंका एकोदेश त्याग सो अणुव्रत अर सर्वथा त्याग सो महाव्रत कहिये इन व्रतोंके स्थितिकरणके कारण पांचो व्रतोंकी पचीस भावना कहै हैं प्रथम हम अहिंसा महाव्रतकी पांच भावना कहै हैं वचनगुप्ति १ मनोगुप्ति २ अर दिवसविषै निरखकर भोजन ३ अर इर्यासमिति ४ अर आदाननिक्षेपणसमिति ५ यह पांच ॥ १६ ॥ अर सत्य महाव्रतकी भावना पांच क्रोधका त्याग १ लोभका त्याग २ भयका त्याग ३ हास्यका त्याग ४ अर विना विचारे वचनका त्याग ५ यह पांच अर अचौर्यव्रतकी भावना पांच पराया सूना घर १ अर तजा घर २ अर जहां किसीका तालुक होय तहां साधु प्रवेश न करैं ३ अर अशुद्ध भिक्षा न लेवैं ४ अर किसीसे संवाद न करैं ५ यह पांच अर चौथा व्रत ब्रह्मचर्य ताकी भावना पांच कहै हैं स्त्रीके रागकी कथा न कहनी न सुननी १ अर स्त्रीका मनोहर अंग निरखना नहीं २ अर गरिष्ट भोजन न करना ३ अर शरीरका अंजन मंजन न करना ४ अर पूर्वले भोगोंको स्मरण न करना ५ यह पांच ब्रह्मचर्यकी भावना अर पांचमां परिग्रहका त्यागनामा महाव्रत ताकी भावना पांच जानो जो पांचो इंद्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषय तिनविषैं रागद्वेष न करना ॥ २० ॥ यह पांच महाव्रतकी पचीस भावना कहीं अर हिंसादिक पाप तिनमें सर्वथा दोष ही है इन पापोंसे इस भवविषैं अथवा परभवविषैं जीवका अकल्याण ही है व्रतोंके दृढ करनेके अर्थि बुद्धिमानोंको यह भावना निरंतर भावनीं ॥ २१ ॥ वहुरि जे विवेकी हैं तिनकूं सदा यह विचारना जो यह हिंसादि पाप सदा असाता वेदनीय कर्मके कारण हैं इसलिये दुःख ही हैं इन समान संसारमें दुःखका कारण अर दोष नाहीं अर सब जीवोंसे मित्रता अर गुणवंतोंविषैं प्रमोद अर दुःखी जीव की दया अर दुष्टोंसे मध्यस्थता यह चार भावना धर्मध्यानका मूल है सो विवेकियोंको सदा भावनीं अर जे संसारके भ्रमणसे सदा

भयभीत हैं तिनकूं संवेग अर वैराग्यके अर्थ जगत्का स्वभाव अर कायका स्वभाव भावने योग्य हैं कायका स्वभाव तो अशुचि अर जगतका स्वभाव अथिर यह भावना भव्यजीव निरन्तर करें पांच इन्द्री तीन बल आयु अर श्वासोश्वास यह प्राणियोंके दश प्राण तिनका प्रमादी होयकर निपात करना सो हिंसा कहिये प्रमादी जीवके पर-प्राणियोंका पीडन सो अधर्म है अनर्थ है अर जे सावधान हैं पंच समितके पालक हैं तिनके हिंसाके अभावसे बन्धका अभाव है ॥ २६ ॥ अर जो अविवेकी प्रमादी परप्राणको हरै हैं सो आपकर आपको हनै हैं जो परप्राणियोंका घात किया चाहे हैं सो पहिले अशुद्ध भावके योगसे आपको आप हणे हैं परका घात तो ताके आयुके अन्तसे होय है अर अपने भाव इसने हणे इसलिये आत्मघाती तो निश्चय भया ॥ २७ ॥ हिंसा समान पाप नाहीं अर दया समान धर्म नाहीं अर सत्य होहु अथवा असत्य होहु जिसमें परप्राणीकी पीडा है सो असत्यही है जो वचन जीवोंके हितका कर्ता है सो ही सत्य है ॥ २८ ॥ अर पराई वस्तु विना दई ग्रहण करना सो चोरी कहिये सो विना संक्लेश परिणाम न होय इसलिये चोरी है सो हिंसाका मूलही है ॥ २९ ॥ अर दया आदि गुणोंकी जाविषैं वृद्धि सो ब्रह्मचर्य कहिये जो ब्रह्मविषै चर्या ब्रह्मचर्य अर रतिके वास्ते पुरुषोंकी विकारचेष्टा सो अब्रह्म ॥ ३० ॥ सो अब्रह्म नाम कुशीलका है अर हाथी, घोडे, गाय, बलध, यह चेतन परिग्रह हैं अर मणि मुक्ताफल सुवर्ण रजतादि यह अचेतन परिग्रह यह बाह्य परिग्रह हैं अर मिथ्यात्व रागादिक अंतरंग परिग्रह हैं तिनविषैं ममत्व तजना सो परिग्रहत्यागनामा व्रत है इन हिंसादिक पापों का त्याग सो व्रत कहिये ताके भेद दोय एक महाव्रत दूजा अणुव्रत सो महाव्रत तो यतीका मार्ग है अर अणुव्रत श्रावकका मार्ग है सो दोऊही व्रती तिनका मुख्यधर्म शल्यका त्याग है सो जो शल्यवंत है सो व्रती नाहीं निःशल्यव्रती जो निःशल्य हैं सो ही व्रती हैं शल्यके भेद तीन माया कहिये कपट मिथ्या कहिये विपरीत श्रद्धान अर निदान कहिये भोगाभिलाष वह तीन शल्य हैं इनके गये व्रती नाम पावै है ॥ ३३ ॥ गृहस्थ तो घर संयुक्त है इसलिये अल्पव्रती है अर यति बनोवासी है सो महाव्रतका धारक है ॥ ३४ ॥

गृहस्थके कुछ राग भाव है अर बनोवासीके वीतरागता है अर जो यती होयकर राग भाव धारे है सो गृहस्थोंसे न्यून है अर जो श्रावक विरक्तचित्त है सो साधु समान है ॥ ३५ ॥ जो श्रावक महा दयावान है जिसके त्रस-हिंसाका त्याग है अर स्थावरकी हिंसा प्रयोजनमात्र ही है सो पहला अणुव्रत कहिये अर जो रागसे द्वेषसे मोहसे परजीवको पीडा न उपजावे अर अयोग्य वचन न कहे सो असत्यविरतिनामा दूसरा सत्य अणुव्रत कहिये अर पराया धन बढमोला अथव थुडमोला विना दिया कदाचित न ले किसीका धरा मेला विसरा गिरा पडा न ले थोडे मोलकर भोले जीवोंके पाससे बढमोली वस्तु न ले सर्वथा प्रकार परधनका परिहार सो तीजा अचौर्य-अणुव्रत कहिये अर जो सवर्था प्रकार परदाराका त्याग अर निजदाराविषैं सन्तोष सो चौथा ब्रह्मचर्य अणुव्रत कहिये ॥ ३९ ॥ अर सुवर्णादिक दासादिक अर ग्रह क्षेत्रादिक परिग्रह तिनका परिमाण सो पांचवां परिग्रहप्रमाणनामा अणुव्रत कहिए ॥ ४० ॥ अर इन पंचाअणुव्रतनिके धारियोंके तीन गुणव्रत अर शिक्षाव्रत चार हैं जो दिशाका प्रमाण प्रसिद्ध सो दिग्व्रतनामा पहला गुणव्रत कहिए जो मैं पूर्वदिशाविषैं इतनी दूर जाऊं अर ग्रामादिकका प्रमाण जो इस गांव तक जानो सो देशविरतनामा दूजा गुणव्रत कहिए अर अनर्थ-दंडका परिहार जो तीजा गुणव्रत कहिए अनर्थदंडके भेद पांच पापोपदेश १ अपध्यान २ प्रमादचर्या ३ हिंसादान ४ अर पापसूत्रका श्रवण ५ । जो पाप कार्यका उपदेश, व्यापारका उपदेश, खेतीका उपदेश इत्यादि आरंभके उपदेश सो पापोपदेश कहिए । जिन कार्योंमें जीवोंकी हिंसा सो ही पाप ॥ ४६ ॥ अर दूजा अपध्यान कहिए जो पराई हार अर अपनी जीत विचारिवो करै किसीकूं मारना किसीकूं बांधना किसीके धन हरना चाहे, इसका अकाज कैसैं होय ऐसा चिंतवन सो अपध्यान कहिए अर भूमि खोदना जल डोलना अग्नि जलावना वृक्षादि छेदना इत्यादि अनर्थकर्म करै सो प्रमादचर्या कहिए अर विष कंटक शस्त्र अग्नि रस्सा दंड चाबुक आदि बध बन्धनके उपकरण देने अथवा शस्त्रादिकका विक्रय करना हिंसक जीवोंका आदर सो हिंसाप्रदान कहिए ॥ ४९ ॥ अर जा

कथाके श्रवणसे हिंसादि पापोंके अनुरागकी वृद्धि होय सो कुकथा कहिए कुकथाका श्रवण अथवा कथन सो कुसूत्र-श्रवण कहिये जिसकरि पाप हीका बंध होय यह अनर्थदंडके पांच भेद कहे तिनका त्याग सो तीजा गुणव्रत कहिए ॥ ५० ॥ अब चार शिक्षाव्रत सुनो सुख दुःख शत्रुमित्रादिविषै समभाव अर सब जीवोंविषैं करुणाभाव अर पंचपरमेष्ठियोंविषैं भक्तिभाव सो सामायिक कहिए यह चार शिक्षाव्रतोंमें पहला शिक्षाव्रत है प्रभात मध्याह्न सायंकालविषैं सामायिक कर्तव्य है ॥ ५१ ॥ अर दोय अष्टमी अर दोय चतुर्दशी एक मासविषै यह चार पर्व इनविषैं चारों आहारका त्याग करना अर निरारम्भी होय प्रोषधोपवास करना सो दूजा शिक्षाव्रत है। इंद्रियोंको वशकर एकांतविषैं सोलह पहर मुनिकी न्याईं तिष्ठना सो पोसेकी रीति है ॥ ५२ ॥ अर गंध पुष्पमाला अन्न-पानादिरूप भोग अर वस्त्र आभूषण स्त्री बाहनादि उपभोग तिनका अपनी शक्तिके अनुसार प्रमाण करना सो तीजा भोगोपभोगपरिमाणनामा शिक्षाव्रत है ताका यह विचार जो निषिद्ध भोग उपभोग हैं तिनका तो सर्वथा त्यागही करना तिनका प्रमाण नाहीं अर जो न्यायरूप भोगोपभोग शुद्ध अन्नपानादिक अथवा निज-स्त्री सेवनादिक वस्त्राभूषणादिक इनका प्रमाण करै ॥ ५३ ॥ इतनी वस्तु तो विवेकियोंको सर्वथा तजनी। मद्य मांस मधु माखन अगालित जल वीधा अन्न रात्रिभोजन उदंबर आदि अशुद्ध फल अर कंदमूल आदि अनन्त-काय अर पेठा कोहला तरबूज वृन्ताक बैंगन बदरीफल इत्यादि जो शास्त्रवर्जित अभक्ष्य वस्तु हैं तिनका भक्षण कदापि न करना अर द्यूतक्रीडा चोरी शिकार वेश्यासेवन परस्त्रीसेवन यह महानिंद्य कर्म हैं सो कभी न करने ॥ ५४ ॥ अर संयमकी वृद्धिके वास्ते प्रवर्तै सो अतिथि कहिए उसे भक्तिकर भोजनादि देय सो अतिथिसंविभाग-नामा चौथा शिक्षाव्रत है ॥ ५५ ॥ साधुको इतनी वस्तु श्रावक देय शुद्ध भोजन देय अर भोजन हीविषैं शुद्ध औषध देवै पुस्तकादि उपकरण देवै अर बनविषैं साधुओंके विराजिवेके स्थानक बनावै जिनमें साधु आय विराजें यह चारप्रकार संविभाग साधुओंको श्रावक करै अर आर्यिकाओंको आहार, औषध, पुस्तक, वस्त्र, कमंडलु, पीछी

आदि देवे ग्रामके समीप आर्यिकानिके विराजिवेको स्थान करावें अर श्रावक श्राविकाओंको भक्तिकरि आहार औषध उपकरण पुस्तक वस्त्राभरणादि देय रहिवेकूं स्थानक देय उनके भय निवारै धर्म स्नेह अधिक राखै या भांति चतुर्विध संघकी अर सम्यक्दृष्टि जीवनिकी सेवा करे अर जगके जीव मनुष्य पशु तिन सवहीको अन्न जल तृण वस्त्र औषधादि देय जीवोंके दुख निवारे सो जिनधर्मका धारी श्रावक कहिए। यह बारह व्रत श्रावकके कहे पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत अर अन्त समय सल्लेखना करै, कषायनिका क्षीण करना सो अंतरंग सल्लेखणा है अर कायका क्षीण करना सो वहिरंग सल्लेखणा कहिए॥ ५७ ॥ जो रागादिकोंकी उत्पत्ति शास्त्रके मार्गकरि मेटे सो सल्लेखणा कहिए रागादिकका परिहार अज्ञानीजीव न कर सके ज्ञानीही करै ॥५८॥ सम्यक्त-के निःशंकतादि अष्ट अंग तिनके विरोधी शंकादि पंच अतिचार सो अज्ञानी जीवोंको तजनेका कहिए जिनवचनविषै संदेह अर कांक्षा कहिये भोगोंकी अभिलापा अर विचिकित्सा कहिये व्रतियोंके रोगादिककी बाधा देख यत्न न करना सूग करना अर अन्यदृष्टिप्रशंसा कहिये मिथ्या परपूठि प्रशंसा करना अर संस्तव कहिये साक्षात मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करना यह सम्यक्त्वके पांच अतीचार हैं ॥ ५९ ॥ अर बारह व्रत अर अन्त सल्लेषणाके अनुक्रममें पांच अतीचार कहे हैं सो व्रतियोंको तजने। अतीचार तजे तब व्रत निर्मल होय प्रथम ही दया व्रतके अतीचार पांच, बंध कहिये रोकना उसे निज स्थानक न जाने देना अर बध कहिये लाठी मुकी आदिकरि ताडना अर छेदन कहिये कर्ण नासिकादिक छेदना अर अतिभारारोपण कहिये पशु अर मनुष्यों-पर बहुत बोझ लादना अर अन्नपानादिनिरोध कहिये किसीकी आजीविका दूर करनी यह दयाव्रतके पांच अतीचार हैं ॥ ६२ ॥ अर झूठका उपदेश देना अति ठगविद्या करनी धर्मका उपदेश औरसे और कहना स्वर्ग मोक्षकी क्रिया औरसे और कहनी सो मिथ्योपदेशनामा दूजे व्रतका पहला अतीचार है अर दूजे व्रतका दूजा अतीचार किसीकी गुह्य वार्त्ता प्रकाशनी स्त्री पुरुषोंकी चेष्टा प्रकाशनी अर कूटलेखक्रिया कहिये कूडा लिखना

किसीके विना कहे उसके नामका पत्र किसीको लिखना ॥ ६४ ॥ अर न्यासापहार कहिये किसीने धरोहर घनी धरी अर वह भूल गया अर लेती वेर वह थोडा लेने लगा उसे ज्यों का त्यों न कहना सो न्यासापहार कहिये ॥ ६५ ॥ अर पांचमां साकारमन्त्रभेद ताका अर्थ कैयक ऐसे दुष्ट हैं जो भौंह नेत्र आदि पराई चेष्टा देखकरि पराया रहस्य जान जांय अर ईर्षाकरि उसका मंत्र प्रकाश करे सो साकारमंत्रभेद कहिये यह दूजे सत्यनामा अणुव्रतके पांच अतीचार कहे सो विवेकियोंको तजने ॥ ६७ ॥ चोरीका प्रयोग सो पहला अतीचार अर चोरोंकी हरी वस्तुका ग्रहण सो दूजा अतीचार अर राजाकी आज्ञासे विरुद्ध अयोग्य क्रियाका करना सो तीजा अतीचार अर बांट घाटकर दूसरको देना अर बधते बाटोंसे पराई वस्तु लेना तोलनेमें घाट बाध करना सो चोरीका चौथा अतीचार है ॥ ६९ ॥ अर रूपेमें तथा सुवर्णमें और धातु मिलावना तथा महंगी वस्तुमें सस्ती वस्तु मिलावनी सो प्रतिरूपकव्यवहारनामा पांचवा अतीचार कहिये यह तीजे अचौर्य अणुव्रतके पांच अतीचार कहे ॥ ७० ॥ अब कुशीलके अतीचार कहै हैं पराया विवाह करावना सो कुशीलका प्रथम अतीचार अर कुशीली स्त्रीको ग्रन्थोंमें इत्वरिका कहिये तिनमें जिसके सिरपर स्वामी सो परगृहीता अर जिसके स्वामी नाहीं सो अपरिगृहीता कहिये तिनके घरकी ओर गमन तिनसे व्यापारादिकका सम्बन्ध रखना सो अतिचार है अर अनंगक्रीडा कहिये स्पर्शन मर्दन आलिंगन चुम्बनादि चेष्टा अर काम तीव्राभिनिवेश कहिये कामके तीव्र परिणाम यह परदारा-परित्याग स्वदारासंतोषनामा चौथे अणुव्रतके पांच अतीचार कहे सो व्रतियोंको तजने ॥७२॥ अर पांचमां परिग्रह-प्रमाणनामा अणुव्रत ताके पांच अतीचार कहे हैं हिरण्य कहिये सुवर्ण रूप समुद्रा अर सुवर्ण कहिये सोना रूपादि आभरण अर वास्तु कहिये हवेली हाट नौहरा आदि अर क्षेत्र कहिये धरती अर धन कहिये चतुःपदादि अर धान्य कहिये अन्न अर दासी दास कहिये सेवकादि अर कुप्य कहिये वस्त्र सुगंधादि अर भांड कहिये भाजन यह दशधा परिग्रह तिनमें दोय दोयका एक एक जोडा हिरण्य अर सुवर्णका जोडा वास्तु अर क्षेत्रका जोडा धन अर

धान्यका जोडा, दासी अर दासका जोडा, कुप्य अर भांडका जोडा यह दशके पांच जोडे भये तिनके प्रमाणविषै व्यतिक्रम करना यह पांच अतीचार परिग्रह प्रमाणके तजने अर दिग्व्रतनामा गुणव्रतके पांच अतीचार कहे हैं तिनमें ऊर्ध्वव्यतिक्रम कहिये पर्वतादि ऊंचे क्षेत्र तिनके आरोहणविषै व्यतिक्रम कहिये उलंघन करना अर अधः कहिये नीची भूमि ताके उतरनेविषैं व्यतिक्रम करना अर तिर्यग् कहिये चार दिशा चार विदिशा तिनके प्रमाणविषें व्यतिक्रम करना, लोभके योगसे जो प्रमाण किया है उसे भूल जाना अर क्षेत्रवृद्धि कहिये प्रमाणक्षेत्रसे अधिक क्षेत्रविषैं गमन करना यह पहिले दिग्व्रतनामा गुणव्रतके पांच अतीचार कहे ॥ ७४ ॥ अर दूजा देशव्रतनामा गुणव्रत ताके पांच अतीचार कहैं हैं प्रेष्यप्रयोम कहिये जहांतक गमन रखा है वहां तक ही सेवक भेजे अर वस्तु पठावे आगे नाहीं, अर जो पठावै तो पहला अतीचार है अर दूजा आनयन कहिए प्रमाणके क्षेत्रसे अगले क्षेत्रकी वस्तु न मंगावै अर पुद्गलक्षेप कहिए प्रमाणके क्षेत्र सिवाय परक्षेत्रविषैं कांकरी आदि बगायकरि अपना अर्थ न जनावै अर शब्दानुपात कहिये प्रमाणके क्षेत्रतैं परे काहूकूं अपना शब्द न सुनावै परक्षेत्रविषैं हेला (आवाज) करि काहूकूं अपना रहस्य न जनावै अर रूपानुपात कहिये अपने प्रमाणके क्षेत्रविषैं खडा रहै परक्षेत्रविषैं अपना रूप न दिखावै अपना रूप दिखाय किसीको अर्थ न जनावै जो अर्थ जतावै तो अतीचार है यह पांच अतीचार देशव्रतके कहे ॥७५॥ अर अनर्थदंडके पांच अतीचार कहे हैं कंदर्प कहिए जाकरि कामका विकार अति बढे सो सामग्री सेवै यह पहला अतीचार है अर कौत्कुच्य कहिये मुखकी वक्रता अर भौंहोंकी वक्रता अर नेत्रनिके कटाक्ष इनकरि अपना सविकाररूप दिखावै अर मौखर्य कहिये अधिक बकै अर असमीक्षाधिकरण कहिये विना देखे विना पूजे उपकरणादि उठावे मेले अर भोगानर्थक कहिये अनर्थभोग तिनकी अभिलाषा करै अर शक्ति नाहीं अर भोग सेवै वहुत द्रव्यखर्चकरि भोग सेवै यह सब भोगनार्थके अर्थ हैं ।७६। यह पांच अतीचार तीजे गुणव्रतके तजने । अब सामायिकके अतीचार कहे हैं मनकी दुष्टता वचनकी दुष्टता कायकी

दुष्टता यह तीन अर सामायिकका निरादर अर पाठविषैं भूलना यह पांच अतीचार सामायिकनामा पहिले शिक्षाव्रतके तजने ॥७७॥ अर प्रोषधोपवासके अतीचार पांच विना देखे विना पूजे क्षेत्रविषैं शरीरका मल डारना अर विना देखी विना पूजी वस्तुग्रहण अर विना देखे विना पूजे आसन विछावना अर पोसहका निरादर अर परवीका विस्मरण यह पांच अतीचार पोसहनामा दूजे शिक्षव्रतके कहे !!७८॥ अर सचित्त वस्तुका ग्रहण तथा अचित्त वस्तुकूं सचित्तका संबंध अर अचित्तविषै सचित्तका मिलावना उष्ण जलविषैं शीतका मिलावना अर अभिषव कहिये वर्णकरि रसकरि गंधकरि चलते वस्तु ताका भक्षण अर भोगोपभोगका अति अनुराग अति सेवना अर दुःपक्काहार कहिए जो दुष्ट आहार दुःखसेती पचै ताका सेवन यह पांच भोगोपभोगप्रमाणनामा तीजे शिक्षाव्रतके अतीचार तजने अर जो अतिथिसंविभागनामा चौथा व्रत ताके पांच अतीचार कहै हैं सचित्त कहिये पातल दौना आदि तिनमें अन्नादिकका धरना अर पातल दौंनाकरि अन्नपान ढाकना अर परव्यपदेश कहिए दानका कार्य औरनिकी भलाई और आप कार्यके वास्ते जाना अर मात्सर्य कहिए औरोंका दान न देख सकना किसी दातारका यश न देख सकना अर कालातिक्रम कहिए काल उलंघ आहार देना यह पांच अतीचार चौथे शिक्षाव्रतके तजने यह बारह व्रतके साठ अतीचार कहे अर पांच सम्यक्त्वके कहे अब सलेखनाके पांच अतीचार कहै हैं जीवित आशंशा कहिए जीवनेकी अभिलाषा अर मरण आशंशा कहिए मरणकी अभिलाषा अर मित्रानुराग कहिये किसी मित्रसे अनुराग ताविषैं मन अर सुखानुबंध कहिये या शरीरमें सुख भोगे तिनका चिंतवन अर निदान कहिये परभवके भोगकी अभिलाषा यह पांच अतीचार अन्त सल्लेखनाके तजने ॥ ८१ ॥ सम्यक्त्व आदि सलेखनापर्यंत सत्तर अतीचार कहे सो सब तजने योग्य हैं ॥ ८२ ॥ अर सम्यज्ञानादिककी वृद्धिकर अपना अर परजीवोंका कल्याण होय है सो ज्ञानादिककी वृद्धिका अभिलाषी होय दान करै अर स्वर्गादिककी अभिलाषा न करै अपने धनका खर्चना सो दान कहिये सो मुनिराजको तथा आर्यकाओंको अथवा श्रावक श्राविकाओंको अर अव्रत-

सम्यकद्दष्टियोंको भक्तिकरि विनय पूर्वक देना अर सव जीवोंसे दयाभावकरि दान देना मुनिराजकूं अर आर्या-कूं तथा निरारंभी श्रावकोंको प्रासुक भोजन देना, मुनि तो उत्कृष्ट पात्र हैं अर आर्या श्रावक श्राविका यह मध्यम पात्र हैं अर अव्रतसम्यग्दृष्टि जघन्य पात्र हैं सो त्रिविध पात्रनिकूं विधिपूर्वक उत्तम वस्तु आहारादिक देनी, उत्तम श्रावक दाता अर उत्कृष्ट पात्र मुनि अर उत्तम ही सामग्री अर उत्तम विधिसे दान करै इन सबनिकी विशेषता होय तो उत्कृष्ट ही फल निपजै जैसे उत्तम ही भूमि होय उत्तम ही बीज होय अर उत्तम समयविषै विधिसे समझदार मनुष्य वाहै तो उत्तमही फल निपजै ॥८३॥ मुनिकूं जो आहारदान देय सो प्रतिग्रहादि नवधा भक्तिकरि देय, प्रतिग्रह कहिए अत्र तिष्ठ तिष्ठ अन्न जल शुद्ध है ऐसे शब्द कहै १ फिर मुनिको ऊंचे स्थानक खडा करे अर आप नीचा रहे २ फिर पग धोवै ३ प्रणाम करै ४ अर्चा करै ५ मनशुद्धि ६ वचनशुद्धि ७ कायशुद्धि ८ आहारशुद्धि ९ यह नवधा भक्ति मुनिराजके दानसमय श्रावक करै। सो उत्तम फलका कारण है नवधा भक्ति ही मुनिदानकी विधि है॥८४॥ अर देव कहिए देवे योग्य निर्दोष पवित्र वस्तु देय मुनिकूं कैसा आहार देना जाकरि तपकी वृद्धि होय अर स्वाध्यायकी वृद्धि होय सो आहार देना समताका करणहारा देना अर विषमताका करणहारा न देना ।८५। अर दाताके गुण सात श्रद्धा कहिए श्रद्धासहित देय अर शक्ति कहिए दानकी शक्ति लोपै नाहीं अर निर्लोभता कहिए दानके फलकरि स्वर्गादिककी अभिलाषा नाहीं अर दया कहिए दयाभाव राखै चित्तकी कोमलता सो दया अर क्षमा कहिए क्रोधका अभाव दानसमय स्त्री पुत्रादिकसे कषाय न करै अर अनुसूया कहिए पराई निंदा नहीं ईर्षा नहीं अविषाद कहिए शोक नहीं यह सप्त गुण धारै सो उत्तम दाता, मनकी गति विचित्र है सो दानका करणहारा उज्वलमन होय ॥८६॥ अर पात्र कहिए महा पुरुष मोक्षके कारणभूत जो गुण तिनकूं धारै अर दाताकूं भवसागरसे उधारै ॥ ८७ ॥ मुनि तो आहार ही ग्रहै अथवा आहारके समय विवेकी श्रावक मुनिकूं रोग जानि निर्दूषण औषधि भी देय अर पुस्त-कादि उपकरण देय अर बनविषैं मुनियोंके निवास योग्य स्थानक करावे अर काहू वस्तुका मुनियोंके प्रयोजन

योग्य स्थानक करावै अर काहू वस्तुका मुनियोंके प्रयोजन नाहीं अर आर्याओंको आहार औषध शास्त्रादि अर वस्त्रादि भी देय अर निरारम्भी श्रावकोंको भी यही वस्तु देय अर गृहवासी श्रावक अर श्राविकाओंको तथा अव्रत-सम्यग्दृष्टियोंको आहार औषध वस्त्राभूषणादि सबही उत्तम वस्तु देय अर दुःखित भूखित जीवोंको आहारादि वस्त्रादि सबही देवै एक अभक्ष वस्तु अर वध बन्धनके उपाय शस्त्रादिक रससादिक चाबुकादिक किसीको कभी न देवै अभयदान सब जीवोंको देय ॥ ८७ ॥ दान, शील, तप, व्रतादिकर पुण्यका आस्रव होय है सो जीवोंको सुखका कारण है अर हिंसादि पापोंकरि अशुभका आस्रव होय है सो जीवोंको दुखका कारण है अर हिंसादि पापोंकरि नर्कका कारण भी होय है ॥ ८८ ॥ यह आस्रव तत्त्वका व्याख्यान किया अब बंधका कथन करै हैं मिथ्यादर्शन अर हिंसादि अविरत अर प्रमाद अर कषाय अर मन वचन कायके योग यह बंधके कारण हैं ॥ ८९ ॥ सो मिथ्यादर्शनके भेद दोय एक निसर्ग कहिए स्वतः स्वभाव अर एक अन्योपदेशतः कहिए पराए उपदेशसे जो मिथ्यातकर्मके उदय जीवके तत्त्वकी श्रद्धा न होय विपरीत श्रद्धा होय सो निःसर्गमिथ्यादर्शन कहिए ॥ ९० ॥ और अज्ञानी जीवोंके उपदेशसे चार प्रकार मतभेद धारे सो अन्योपदेशनामा मिथ्यात्व कहिए, मतभेद चार—कईएक क्रियावादी, कईएक अक्रियावादी, कईएक विनयवादी, कईएक अज्ञानवादी यह चार वादी कहिए अर मिथ्यादर्शन पांच प्रकार कहिए है नित्य ही माने अथवा अनित्य ही माने नित्यानित्य न माने सो एकांतमिथ्याती कहिये अर विपरीतमिथ्याती अधर्मविषैं धर्म माने अर विनयमिथ्याती कुगुरु, कुदेव, सबोंका विनय करै अर संशयमिथ्याती जिनवचनविषै संशय राखै अर अज्ञानमिथ्याती पशु समान कुछ ही न समझै यह पांच प्रकार मिथ्यादर्शन तजै सो सम्यकदर्शन कहिये ॥ ९२ ॥ अर पांच थावर छठा त्रस इनका घात अर पांच इंद्री छठा मन इनकी चंचलता यह बारह अव्रत कहिये अर प्रमादके अनेक भेद हैं प्रमाद नाम असावधानीका है अर कषायके भेद पचीस सोलह कषाय नव ईषत् कषाय अर योगके भेद पंद्रह तिनमें मनोयोगके भेद चार अर

वचनयोगके भेद चार अर काययोगके भेद सात इनका विशेष जगह २ लिखा हैं ॥ ९४ ॥ मिथ्यादृष्टिके तो यह पांच बंधके कारण सब ही हैं अर सम्यकदृष्टि अव्रतीके एक मिथ्यात नाहीं अर चार हैं श्रावकके पांचमें गुणठाणे चार ही हैं परंतु बारह अव्रतमें एक त्रसघात नाहीं अर ग्यारह हैं अर छठे प्रमत्तगुणठाणे यतीके मिथ्यात अर अव्रत नाहीं अर प्रमाद कषाय योग तीनों हैं ॥ ९६ ॥ अर सातवें अप्रमत्त गुणस्थानसे लेयकरि दशमें सूक्ष्मसांपरायतक कषाय अर योगही हैं ॥ ९७ ॥ अर ग्यारवां उमशांतकषाय अर बारहवां क्षीणकषाय अर तेरहवां सयोगकेवली इन तीनगुणठाणेविषैं योगही बंधका कारण है और नाहीं अर चौदहवांअयोग तहां वन्धका अभाव है ॥ ९८ ॥ कषायकरि कलंकी जो आत्मा सो कर्मवर्गणा योग पुद्गलको समय समय ग्रहै है सो बंध कहिये सो बन्ध अनेक प्रकार है ताके भेद चार प्रकृतिबंध १ स्थितवंघ २ अनुभागवंध ३ प्रदेशवंध ४ यह चार प्रकार बन्ध जानो ॥ १०० ॥ अब इनके लक्षण कहैं हैं प्रकृति कहिए स्वभाव जैसे नीमका स्वभाव कड़वा है अर नीबूका खट्टा है तैसें सब कर्मनिके स्वभाव न्यारे २ हैं ॥ १ ॥ ज्ञानावर्णी कर्मका स्वभाव अज्ञानरूप है अर दर्शनावर्णीका स्वभाव देखनेयोग्य पदार्थकूं न देखने देय अर साता असाता वेदनीयका स्वभाव सुख दुःख-का भोगना अर दर्शनमोहका स्वभाव तत्वकी अश्रद्धा अर चारित्रमोहका स्वभाव महा असंयम ॥ ४ ॥ अर आयु कर्मका स्वभाव भवधारण अर नामकर्मका स्वभाव देव नारकादि नाना प्रकारका नाम निपजावना ॥५॥ अर गोत्र कर्मका स्वभाव ऊंच नीच गोत्रमें निपजावना अर अंतरायका स्वभाव दानादिकविषैं विघ्नकरना जैसे इन कर्मोंके स्वभाव दुर्निवार हैं तैसे इनकी स्थिति भी दुर्निवार है विना भोग न छूटै जैसे अजा गाय भैंस आदि दूधका माधुर्यपना स्वभावथकी अच्युत है तैसे कर्मोंकी प्रकृतिकी स्थिति भी अच्युत है विना भुगते न छूटै। ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी वेदनीय अंतराय इन चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति प्रत्येक ३० कोडाकोडी सागर अर नाम गोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति बीस कोडाकोडी सागर अर आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर है अर दर्शनमोहकी

उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागर है अर चारित्रमोहकी उत्कृष्ट स्थिति चालीस कोडाकोडी सागर है यह उत्कृष्ट स्थिति कही अर जघन्यस्थिति वेदनीय कर्मकी मुहूर्त बारह अर नाम गोत्रकी जघन्यस्थिति मुहूर्त आठ अर अन्य सव कर्मनिकी जघन्य स्थिति मुहूर्त एक यह जघन्य स्थितिके रूप कहे अर जघन्य स्थितिसे एक समय अधिक लेकर उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय न्यून पर्यंत मध्य स्थितिके नाना भेद जानने ॥ ८ ॥ यह स्थिति-बंधका स्वरूप कहा अर जैसे अजाके दुग्धमें मिष्टता अर सचिक्कणता मंद है इसलिये अधिक मिष्टता अर सचिक्कणता गायके दुग्धविषें सो मध्यके भेदकूं धरे है अर गायके दूधसे विशेष भैंसके दुग्धविषें है सो भैंसका दूध मिष्टता अर सचिक्कणताकी तीव्रताकूं धरै है यह दूधविषें रसकाविशेष कहा तैसे पुद्गलकर्मकी सामर्थ्यताके विशेषका विपाक सो अनुभागबन्ध कहिए तिनमें शुभका अनुभाग चार प्रकार है गुण खांड मिश्री अमृत इन चारोंकी मिष्टता बढती चढती है तैसे शुभका सुख भी चढता चढता अर उतरता उतरता है अरअशुभका अनुभाग भी चार प्रकार है जैसे नीम कांजी अर विष अर हलाहल इन चारोंकी कटुता चढती चढती है ऐसे अशुभका दुःख बढता चढता अर उतरता उतरता है ॥ ९ ॥ यह अनुभागबंधका स्वरूप कहा अर जो पुद्गलपरमाणुओंके समूह कर्मवर्गणारूप परणाये तासहित आत्माओंके प्रदेशका संश्लेश सो प्रदेशबंध कहिए ॥ १० ॥ प्रदेशसहित जो कर्मप्रकृति ताका जीवके प्रदेशोंको मिलाए सो प्रदेशबंध अर प्रकृतिबंध इन दोनों बंधनके कारण तो मन वचन कायके योग हैं अर स्थितिबंध अर अनुभागबंध यह दोय प्रकार बंध कषायोंके निमित्तसे होय हैं ॥ ११ ॥ यह बंधका स्वरूप कहा आगे आठों कर्मोंके कार्य कहिए हैं जाकरि ज्ञान आवऱ्या जाय अथवा जो ज्ञानको आवरे सो ज्ञानावर्णीका कार्य है अर जो दर्शनको आवरे अथवा जाकरि दर्शन आवऱ्या जाय सो दर्शनावर्णी कहिये ॥१२॥ अर जाकरि देहसंबंधी सुख दुःख भोगवै अथवा जो भोगवाये सो वेदनीय कर्म कहिए अर जो जीवोंको मोहैं अथवा जाकरि जीव मोहे जांय सो मोहनीय कर्म कहिए ॥ १३ ॥ अर जाकरि नारकादि भवोंको धरैं सो

आयु कर्म कहिये अर जाकरि यह जीव अनेक नाम धारै अथवा जो नाम धरावै सो नाम कर्म कहिये अर जो ऊंच नीच गोत्रमें धरै अथवा जाके उदयकरि गोत्र धारिये सो गोत्रकर्म कहिये अर जो दानादिकके मध्य अन्तर पाडे, जाके उदयकरि दान देय सके अर लाभ न होय सके सो अन्तरायकर्म कहिये ॥ १५ ॥ आत्माका एक अशुद्ध परिणाम ताकरि ग्रहे जो पुद्गलके स्कंध सो नानाप्रकार कर्मरूप होय परणवै हैं जैसे एक प्रकार भोगिये अन्न सात धातुरूप होय परणवै है मूल प्रकृति तो अष्ट प्रकार हैं अर उत्तर प्रकृतियोंका भेद कहिये हैं ज्ञानावर्णकी प्रकृति पांच दर्शनावर्णकी प्रकृति नव, वेदनीयकी दोय, मोहनीयकी अठाईस आयुकी चार अर नामकी बयालीस तिनमें चौदह पिंडप्रकृति तिनके भेद पैंसठ अर अठाईस अपिंड प्रकृति यह अर वह सब मिल व्यालीस तिनकी तिराणवें भई अर गोत्रकर्मकी दोय अन्तरायकी पांच यह सब मिलि एक सौ अडतालीस भई ॥ १९ ॥ अब इनके नाम निरूपण करै हैं मतिज्ञानावर्णी, श्रुतज्ञानावर्णी, अवधिज्ञानावर्णी, मनःपर्ययज्ञानावर्णी, केवलज्ञानावर्णी, यह पांच प्रकृति ज्ञानावर्णीकी हैं ॥ २० ॥ द्रव्यार्थिकनयके कथनतैं मनःपर्ययज्ञान अर केवलज्ञान शक्तिरूप अभव्यविषै भी हैं व्यक्तिरूप नाहीं ज्ञानावर्णी पांच प्रकृतिका उदय अभव्यविषै भी है अर मनःपर्यय केवलकी प्रगटता भव्य ही विषै है ताहीतैं भव्य कहिए है अर जे केवलज्ञानकी व्यक्तिकूं योग्य नाहीं ते ही अभव्य ॥२२॥ अर चक्षुदर्शनावर्णी अचक्षुदर्शनावर्णी अवधिदर्शनावर्णी केवलदर्शनावर्णी चार तो यह अर निद्रा निद्रानिद्रा प्रचला प्रचलाप्रचला स्त्यानगृद्धि यह नव प्रकृति दर्शनावर्णीकी हैं तिनमें पांच निद्राका निर्णय करै हैं निद्रा कहिए अल्प निद्रा किंचित् शयन अर ऊपराऊपरी निद्रा सो निद्रानिद्रा कहिए ॥ २४ ॥ अर खेदकरि उपजी सो प्रचला आत्माको अत्यर्थपने चलायमान करै अर पुनः पुनः निद्राका आवरण सो प्रचलाप्रचला कहिए ॥ २५ ॥ अर स्त्यानगृद्धि कहिए स्वप्नताविषैं जाकर अतिगृद्ध होय अर जाके उदयसे आत्मा अति रौद्रकर्म बहुत करै सो स्त्यानगृद्धि कहिए है यह नव प्रकृति दर्शनावर्णीकी कहीं अर वेदनीयकी प्रकृति दोय एक साता एक असाता जाके उदयतैं

तनका अर मनका सुख होय सो साता अर जाके उदयतैं तनमनका दुःख होय सो असाता यह दोय वेदनीयकी प्रकृति कहीं ॥ २७ ॥ अर मोहनीयकी अठाईस तिनमें दर्शन मोहनीयकी तीन मिथ्यात, मिश्रमिथ्यात अर सम्यक्त्वप्रकृति मिथ्यात तिनके लक्षण सुनो। जहां अतत्वकी श्रद्धा महा मूढता धर्म अधर्मकी परख नाहीं सो मिथ्यात्व कहिए अर जो आत्माका सम्यक्त्व अर मिथ्यात्व मिश्रधारारूप शुद्धाशुद्ध भाव अर तत्वातत्वकी मिश्र श्रद्धा सो मिश्रमिथ्यात्व तीजे गुणठाणेही होय अर पहिलामिथ्यात्व पहिले गुणठाणे ही होय सो तो केवल अशुद्ध भाव ही है अर दूजा मिथ्यात्वकी मिश्रधारा शिखरणीके रससमान खट्टामिट्ठा दोनों स्वाद लिए है जैसैं माचणेके द्रव्यविषैं मदशक्ति होय तैसैं याविषैं मिथ्यात्वशक्ति है अर तीजा सम्यक्त्वप्रकृति मिथ्यात्व सो सम्यक्त्व ही है सम्यक्त्वके तीन भेद तिनमें यह वैदिक सम्यक्त्वका स्वरूप है मोहकी छहप्रकृति तो इसमें उमशमी हैं अर सातमी प्रकृतिका उदय है आत्माके शुद्ध परिणाम ताकरि रोके हैं अशुद्ध भाव जाने अर आत्मरसविषैं तिष्ठ्या है परंतु सातवीं प्रकृतिके उदयकरि कुछ चपलता है कुछ मलिनता है कुछ शिथिलता है यह तीजे मिथ्यात्वका लक्षण है तीर्थंकरोंमें तथा तीर्थोंमें तथा देव स्थूलमें तथा शास्त्रमें कुछ एक न्यूनाधिक जाने यह याका लक्षण है यह तीन प्रकृति दर्शनमोहकी कही अर चारित्रमोहकी प्रकृति पचीस, चारित्रमोहके भेद दोय एक नोकषायवेदनीय एक कषायवेदनीय तिनमें नोकषायवेदनीयकी प्रकृति नव अर कषायवेदनीयकी प्रकृति सोलह ॥ ३१ ॥ जाके उदयतैं हास्यकी प्रगटता होय सो हास्यप्रकृति कहिए अर जाके उदयतैं रति उपजै सो रति अर जाके उदय अरति उपजै सो अरति ॥ ३२ ॥ अर जाके उदय सोच उपजै सो शोक अर जाके उदय उद्वेग उपजै सो भय अर जाके उदय अपने दोष छिपावै अर पराए गुण छिपावै सो जुगुप्सा यह षट् हास्यादि नोकषाय निन्द्य हैं ॥ ३३ ॥ अर जाके उदय स्त्रियोंकेसे कायर चंचल कुटिल भाव होवैं सो स्त्रीवेद कहिए सो महानिंद्य हैं अर जाके उदय निष्कपटता निश्चलता शूरवीरता उदारता ऐसे भाव होंय सो पुरुषवेद कहिए अर जाके उदय महामलीन महा आतुर

भाव होय सो नपुंसकवेद कहिए पुरुषवेदके उदयकरि स्त्री भोगिवेका भाव होय अर स्त्रीवेदके उदयतैं पुरुषभोगका भाव होय अर नपुंसकवेदके उदयतैं पुरुष स्त्री भोगिवेका एकही काल भाव होय ये तीन वेद कहिए नोकषायवेदनीयकी नव प्रकृति कहीं अब कषायवेदनीय कहै हैं ॥ ३४॥ क्रोध मान माया लोभ यह चार कषाय तिनमें जो सम्यक्त्वकूं अर व्रतकूं घातै सो अनंतानुबंधीकी चौकडी कहिए जाका क्रोध पाहणरेखा समान अर मान पाषाणके थंभ समान अर माया बांसकी जड समान लोभ लाखके रंग समान यह पहली चौकडी कही॥ ३६ ॥ जाके उदय न सम्यक्त्व न व्रत अर दूजी चौकडी अप्रत्याख्यान जाके उदय श्रावक व्रत न आदर सकै ताके लक्षण हलकी लीक समान क्रोध अर अस्थिके स्थंभसमान मान अर मीढाके सींगसमान माया अर मझीठके रंग समान लोभ यह दूजी चौकडी अव्रतरूप ताके लक्षण कहे ॥ ३७ ॥ अर तीजी चौकडी प्रत्याख्यान जाके उदय जीव श्रावकके व्रत तो ग्रहै परंतु यतिके व्रत न धरि सकै ताके लक्षण गाडीकी लीकसमान क्रोध अर काष्ठके थंभ समान मान अर गोमूत्र समान वक्रमाया अर कसूंभेके रंग समान लोभ अर चौथी चौकडी संज्वलन जाके उदय मुनिके व्रत तो धारै अर यथाख्यात चारित्र न होय ॥३९॥ ताके लक्षण जलरेखा समान क्रोध वैंतकी लता समान मान अर सुरह गायके केशनिकी वक्रता समान माया अर हरिद्राके रंग समान लोभ यह चार चौकडीका स्वरूप कह्या। चार चौकडीकी सोलह कषाय कहिये तिनमें अनंतानुबंधीका फल नर्कगति अर अप्रत्याख्यानका फल तिर्यंचगति अर प्रत्याख्यानका फल मनुष्यगति अर संज्वलनका फल देव गति, यह इनके फल है। यह मोहनीयकर्मकी अठाईस प्रकृति कहीं अर आयुकी प्रकृति चार नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु, देवायु इनके अपनी अपनी आयुपर्यंत आत्माको शरीरविषैं रोकि राखै शरीरमेंसूं निकसिवे न दे अर नामकर्मकी प्रकृति तिराणवें तिनके नाम कहै हैं जाके उदय ये जीव भवांतरकूं गमन करै सो गति ताके देव नारकादि चार भेद हैं जाके उदयकरि नरक तिर्यंच देव अर मनुष्यगतिमें जीव जाय सो चार गति कहिये अर सामान्यपने जातिनामा प्रकृति भेद पांच एकेंद्री जाति बेइंद्री

जाति तेइंद्री जाति चौइंद्री जाति पंचेंद्रिय जाति जाके उदय एकेंद्रियादि जन्म होय सो जाति कहिये अर जाके उदय औदारिक वैक्रियक आहारक तैजस कार्माण यह पांच शरीर सो शरीर नाम प्रकृति कहिये ॥४५॥ अर इन पांच शरीरोंमें तैजस कार्माणके आंगोपांग नाहीं तीन ही शरीरके आंगोपांग हैं औदारिक आंगोपांग, वैक्रियक आंगोपांग, आहारक आंगोपांग ये तीन आंगोपांग प्रकृतिके भेद कहे अर जाके उदय नेत्र आदि इंद्रियोंके स्थानक होंय सो निर्माणनामा नामकर्मकी प्रकृति कहिये ॥ ४७ ॥ अर कर्मके उदय वेवशतैं ग्रहे जे पुद्गल तिनका परस्पर शरीरविषैं बंधन सो बंधननामा प्रकृति कहिये ताके भेद पांच जे शरीरनिके नाम ते ही बंधनके नाम जानहु अर जाके उदय शरीरविषैं परमाणूनिका परस्पर छिद्ररहित मिलाप होय सो संघातनामा प्रकृति कहिये ताहूके वे ही पांच भेद जानहु जो शरीरनिके कहे ॥ ४९ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय प्राणीनिके शरीरके आकारकी रचना होय सो संस्थाननामा प्रकृति कहिये ताके भेद छह समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, हुडकसंस्थान, ॥ ५१ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय हाडनिके संधान सुश्लिष्ट होंय सो संहनननामा प्रकृति कहिये ताके भेद छह वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक, स्फटिक यह छह संहनन कहे ॥ ५३ ॥ अर जा प्रकितके उदय स्पर्श होय सो स्पर्शनामा प्रकृति ताके भेद आठ कर्कश, कोमल, गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, शीत, उष्ण ॥ ५५ ॥ अर जाके उदय रस होय सो रसनामाप्रकृति ताके भेद पांच कटु, तिक्त, कषाय, अम्ल, मधुर, ॥ ५६ ॥ अर जाके उदय गंध होय सो गंधनामा प्रकृति ताके भेद दोय एक सुगंध, एक दुर्गंध ॥ ५७ ॥ अर जाके उदय वर्ण होय सो वर्णनामा प्रकृति ताके भेद पांच कृष्ण श्वेत, हरित, रक्त, पीत ॥ ५८ ॥ अर जाके उदय पहले शरीरका क्षय होय अर नवे शरीरमें गमन करै, पूर्वशरीरका आकारमान काय जामें एक समयतैं लगाय तीन समयपर्यंत ज्योंका त्यों रहै सो आनुपूर्वी कहिये ताके भेद चार जो गतियोंके भेद सो ही अनुपूर्वीके भेद जानहु ॥ ५९ ॥ अर जाके उदय न तो गुरुताके

योगतैं नीचा डूबे न लघुताके योगतैं आकके तूलकी न्याईं ऊंचा उछले सो अगुरलघुनामा प्रकृति कहिये ॥ ६० ॥ अर जा प्रकृतिके उदय आपथकी आपका घात होय सो उपघातप्रकृति कहिये अर जाके उदय परथकी आपका घात होय सो परघात प्रकृति कहिये ॥ ६१ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय सूर्यकी न्याईं आतापका उदय होय सो आतापनामा प्रकृति कहिये सो सूर्यके विम्वके पृथ्वीकायके जीव ताके आताप प्रकृतिका उदय है और कोई जीवके नाहीं अर जा प्रकृतिके उदय चन्द्रमा अथवा आगियाकी न्याईं उद्योत होय सो उद्योतनामा प्रकृति कहिए ॥ ६३ ॥ अर जाके उदय श्वासोश्वास निपजे सो उश्वासनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय आकाशविषैं गमन सो विहायनामा प्रकृति कहिये जाके भेद दोय एक शुभविहाय एक अशुभ विहाय ॥ ६४ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय एक शरीरविषैं एक ही जीव पाजे सो प्रत्येक शरीर कहिये देवनिका शरीर नारकीनिका शरीर अर पृथिवी, अप, तेज, वायु इन चार थावरनिका शरीर अर केवलीका शरीर अर मुनिका आहारकशरीर यह तो प्रत्येकशरीर है इनमें निगोद नाहीं अर विकलत्रय अर पंचेंद्रिय तिर्यंच अर मनुष्य इनका शरीर निगोद सहित ही है अर वनस्पतिकायमें जे प्रत्येक हैं ते तो निगोद रहित हैं अर जो साधारण है सो निगोद सहित है अनंतकाय निगोद सो साधारण कहिये जा प्रकृतिके उदय साधारण शरीर धरै सो साधारण प्रकृति कहिये ॥ ६६ ॥ अर जाविषै प्रकृतिके उदय जीवका वेइंद्रियादिविषैं जन्म होय सो त्रस प्रकृति कहिये अर जाके उदय पंच थावरविषैं उपजै सो थावरनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय प्राणी सबकूं प्यारा लागे सो सुभगनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय प्राणी सवनिकूं अभावना लागै सो दुर्भगनामा प्रकृति कहिये ॥ ६८ ॥ अर जाप्रकृतिके उदय मनोज्ञ स्वरकी उत्पत्ति होय सो सुस्वरनामा प्रकृति कहिये अर जिसके उदय अनिष्ट स्वर मुखतैं निकसे सो दुःस्वरनामा प्रकृति कहिये अर जाथकी रमणीक होय सो शुभनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अति विरूप होय सो अशुभनामा असुंदर प्रकृति कहिये ॥ ७० ॥ अर जाके उदय

सूक्ष्म शरीर धारै सो सूक्ष्मनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय बादर शरीर धारै सो बादरनामा प्रकृति कहिये अर जा प्रकृतिके उदय आहार, शरीर, इंद्रिय, श्वासोश्वास, भाषा, मन, यह छह पर्याप्ति होंय सो पर्याप्तिनामा शरीर कहिये अर जाके उदय पर्याप्ति पूरे न करि सके अर अपर्याप्त समय ही मरण होय सो अपर्याप्तिनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय स्थिर होय सो स्थिरनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अथिर भाव होंय सो अस्थिरनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय आदर होय सो आदेयनामा प्रकृति कहिये अर जाके उदय अनादर होय सो अनादेयनामा प्रकृति कहिये ॥ ७४ ॥ अर जाके उदयकरि पवित्र गुण प्रसिद्ध होंय सो यशस्कीर्तिनामा प्रकृति कहिए अर जाके उदय निंदा होय सो अयशस्कीर्तिनामा प्रकृति कहिए ॥ ७५ ॥ जाके उदय तीर्थंकरपद पावै सो तीर्थंकरनामा प्रकृति कहिए ॥ ७६ ॥ यह नामकर्मकी तिराणवे प्रकृति कहीं अर गोत्रकर्मकी प्रकृति दोय एक उच्च गोत्र एक नीच गोत्र जाके उदय उत्तम कुलविषैं जन्म होय सो उच्च गोत्र अर जाके उदय नीच कुलविषैं जन्म होय सो नीच गोत्र कहिए सो क्षत्रिय वैश्य ब्राह्मण ऊंचगोत्री हैं अर अवशेष शूद्र सर्व नीचगोत्री हैं अर देव सर्व ऊंचगोत्री हैं अर तिर्यंच नारकी नीचगोत्री हैं ॥ ७७ ॥ अर अंतरायकी प्रकृति पांच जा प्रकृतिके उदय दानकी शक्ति होतें दान न करि सकै सो दानांतराय अर जा प्रकृतिके उदय अनेक यत्न किए भी लाभ न होय सो लाभांतराय ॥७८॥ अर जाके उदय धन होते हू भोग न करि सकै सो भोगांतराय अर जा प्रकृतिके उदय उपभोग कहिए वस्त्राभरण स्त्री आदि तिनका विभूतिके होते हू उपभोग न होय सकै सो उपभोगांतरायनामा प्रकृति कहिए ॥ ७९ ॥ अर जा प्रकृतिके उदय उछाह न करि सकै संपति होते हू जाके उछाह नाहीं अर खाते पीतेहू शरीरके विषैं वीर्य नाहीं सो वीर्यांतरायनामा प्रकृति कहिए। यह आठकर्मकी एकसौ अडतालीस प्रकृति कहीं ॥ ८० ॥ अर स्थितिबंधका भेद जघन्य मध्यम उत्कृष्ट आठही कर्मनिका ऊपर कहि आए सो जान लेना। कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका बंध पंचेंद्रिय सैनी पर्याप्तहीके होय है ॥८३॥ अर कषायनिकी तीव्रता मंदता मध्यताके

विशेषथकी कर्मनिका भोग होय है यह कषाय हैं सो भावास्रव अर भाववंध जानने जैसैं कषायभाव होय सो तैसैं ही कर्मनिकी स्थिति बंधै अर तैसा ही उदयविषैं अनुभाग होय, पुण्य प्रकृतिका उदय शुभरूप आवै तव सव सामिग्री शुभही मिलै तिनके संयोगविषैं हर्ष ही निपजै अर अशुभ प्रकृतिका उदय महा निकृष्ट है ताके अनुभवविषैं विषाद ही होय, अशुभ भावनिकरि अशुभ कर्म वंधे हैं तिनका फल क्लेशरूप ही है अर शुभके उदयतैं शुभ सामिग्री मिलै शुभ क्षेत्रविषैं ही जन्म होय अर शुभ समय ही रहै अर शुभ जन्म ही धरै अर शुभ ही भाव होंय ॥८८॥ अर अशुभके उदय सव खोटी सामिग्रीही मिलै अर नरकादि अशुभ क्षेत्रविषैं ही उपजै अर सदा अशुभ समयमें ही वर्तै अर अशुभ जन्म ही उपजै अर अशुभ भाव ही होंय यह द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव शुभके अर अशुभके सुन्दर अर असुन्दर जानने अर प्रदेशवंधका निर्णय ऊपर करि आए, आत्माके असंख्यात प्रदेश सो एक एक प्रदेशपर पुद्गलके अनंत अनंत प्रदेश एक क्षेत्रावगाही होंय सो प्रदेशवंध कहिए ॥ ९५ ॥ शुभ आयु, शुभ नाम अर शुभ गोत्र अर साता वेदनीय यह चार प्रकार शुभका वंध है अर यातैं उलटा सो पापका बंध है ॥ ९६ ॥ यह बंधका कथन पूर्ण भया अर आस्रवका निरोध सो संवर, जहां नए कर्म न आय सकें सो संवर ताके भेद दोय एक द्रव्यसंवर एक भावसंवर संसारके कारण जे रागादिक तिनकी निवृत्ति सो भावसंवर कहिए अर जो द्रव्यकर्मका निरोध सो द्रव्यसंवर कहिए। तीन गुप्ति पांच समिति दशलक्षण धर्म, बारह अनुप्रेक्षा, पंच चारित्र, बाईस परीषहका जीतना यह संवरके सत्तावन भेद कहे अर तपकरि पूर्वोपार्जित कर्मकी निवृत्ति करना सो निर्जरा ताके भेद होय एक सविपाकनिर्जरा एक अविपाकनिर्जरा जो कर्म अपना रस देयकरि खिर जाय बहुरि नए और बंधै सो सविपाकनिर्जरा कहिए यह तो सव ही संसारी जीवनिके है जो कर्म बंधे हैं सो फल देयकरि खिरै ही हैं अर जो विवेकीनिके तपकरि संवरपूर्वक निर्जरा होय नवा न बंधे पुराणा झडें सो अविपाकनिर्जरा मोक्षका मूल कहिए।

भावार्थ—जो कर्म उदय आय झाडैं जैसे आम्रफल पककरि डालतैं गिरे यामें कुछ उपाय नाहीं अर जैसें आम्रफल कच्चा पालमें देयकरि पकावैं तैसे न उदय आया कर्म उदीरकरि उदयमें लाय तपकरि खपाइए सो अविपाकनिर्जरा कहिए। यह अविपाकनिर्जरा सम्यग्दृष्टिहीके होय यह निर्जराका व्याख्यान किया अर बंधके कारण मिथ्यात्व अव्रतादिक तिनके अभावतैं अर निर्जराके योगतैं समस्त कर्मका नाश होय सो मोक्ष कहिए वह मोक्ष निर्ग्रंथरूपके धारक महामुनि तिनहीके होय है औरके न होय ॥ २०१ ॥ इन जीवादि सप्त तत्वनिका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन अर इनका ज्ञान सो सम्यक्ज्ञान अर श्रद्धान ज्ञानकूं पायकरि अशुभकी निवृत्ति सो चारित्र ये तीन रत्न मोक्षके साधन हैं जिनके रत्नत्रय अभेदरूप है अर शुद्धोपयोगकी मुख्यता है ते तो वा ही भवतैं निर्वाणकूं प्राप्त होय हैं अर जिनके भेदरूप व्यवहार रत्नत्रय है शुभोपयोगकी मुख्यता है वे सात भव देवनिके अर आठ भव मनुष्यनिके धरैं। सुरनरके सुख भोगि सिद्धपदकूं प्राप्त होय हैं। भावार्थ—जिनके उत्कृष्ट आराधना है वे तो तद्भव ही मोक्ष होंय हैं अर जिनके मध्य आराधना होय ते तीन भवमें मोक्ष होंय अर जिनके जघन्य आराधना होय ते पंद्रह भवमें पार होवैं हैं, जे निकटभव्य हैं तिनके आत्मध्यानकरि सिद्धपदकी सिद्धि होय है ॥ ३ ॥ ऐसा जिनेन्द्र भगवानका भाख्या निःसंदेह मोक्षका मार्ग ताकूं सुनकरि बारह सभाके भव्य जीव भगवानकूं हाथ जोडि नमस्कार करते भए ॥ ४ ॥ कैयक देव मनुष्य तिर्यंच सम्यक्त्व धारते भए अर कैयक नर तिर्यंच श्रावकके व्रत धारते भए अर कैयक मनुष्य मुनिव्रत धारते भए जे संसारके भ्रमणसूं भयभीत हैं ते वीतरागका मार्ग आराधते भए ॥५॥ यह धर्मोपदेश सुनि दोय हजार राजा मुनि भए अर हजारां राजकन्या आर्यिका भई अर बलभद्रकी माता रोहिणी अर कृष्णकी माता देवकी अर रुक्मिणी आदि कृष्णकी अनेक राणी श्राविकाके व्रत धारती भईं ॥७॥ अर अनेक यदुवंशी अर भोजवंशी राजा जिनमार्गके वेत्ता श्रावकके बारह व्रत धारते भए ॥८॥ भावार्थ—कैयक मुनि भए, कैयक आर्यिका भईं। अर कैयक श्रावक भए, कैयक श्राविका भईं ॥ ९ ॥ या भांति धर्मश्रवणकरि जिनेश्वरकूं

प्रणामकरि देवनि सहित इंद्र अपने अपने स्थानक गए अर वलभद्र नारायण आदि सब यादव अपने २ स्थानक गए अर जिनेश्वरके चरणारविंदकी भक्ति सो शरदऋतुकी न्याई लोककूं उज्ज्वल करती भई जैसे शरद ऋतु सब दिशानिकूं उज्वल करै तैसैं भगवंतकी भक्ति सब लोककूं उज्वल करती भई, जैसें शरदऋतुविषें नभोमंडल मनोज्ञ भासै है अर भक्तिविषें ध्यानरूप नभोमंडल रमणीक भासै है अर शरदऋतुविषें उज्ज्वल मेघपटलकरि नभोमंडल धोयाजाय है अर भक्तिविषें भावरूप अंबर उज्ज्वल भया है अर शरदऋतुविषें ग्रह अर तारे आकाशमें प्रगट भासै हैं अर भक्तिविषें जीवनिमें अनेक शुभ लक्षण प्रगट भासै हैं शरदऋतुविषें ग्रह तारे ऐसे सोहै हैं मानूं आकाश फूलि रहा है अर भक्तिविषें हू शुभ भाव फूले हैं अर शरदऋतुविषें वन्धूक कहिये मिझन्या फूले हैं। सप्तपर्ण जातिके वृक्ष फूले अर भक्तिविषें भगवानके भक्त फूले हैं अर शरदऋतुविषें भी वृक्षनिसूं फूल झडे हैं अर भक्तिविषै भगवानके भक्त हू पुष्पांजली क्षेपै हैं शरदऋतु उज्ज्वल अर भक्ति हू उज्ज्वल तातैं शरदका दृष्टांत दिया। गणधर देव कहै हैं हे श्रेणिक! भगवान नेमिनाथके दर्शन जैसैं तीनलोकके प्रगट भक्त पुष्पांजली चढावते आवैं तैसैं शरदऋतु हू पुष्पांजलि बखेरती सब दिशानिकूं उज्ज्वल करती आई अर आकाशमंडलकूं उज्ज्वल मेघपटल करती आय प्रगट भये हैं ग्रह अर तारानिकरि नभोमंडल फूल्यासा दीखै है अर मिझन्या तथा सप्तपर्ण आदि वृक्षनिके नवीन पुष्प निकासती आई ऐसी शरदऋतुविषें जिनेश्वरके विहारका उद्यम भया।

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ श्रीनेमिनाथधर्मोपदेशावर्णनोनाम अष्टपंचाशत् सर्गः ॥ ५८ ॥



अथानंतर—भगवान विहारकूं सन्मुख गिरनारके शिखरतैं उतरे जैसैं अहमिंद्र लोकतैं जगत्के उद्धारके अर्थि मध्यलोकमें पधारै तैसैं जगतकूं भवोदधितैं उद्धारिवेके अर्थि गिरनारतैं नीचे उतरे। जब भगवान विहारकूं सन्मुख भये तब कुवेर यह घोषणा करता भया जाकी जो इच्छा होय सो लेवहु अर भगवानके विहारविषें पृथिवी मणिरूप

होती भई अर मनोवांछित दान ठौर ठौर बंटे और ठौर ठौर मंगलाचार होते भये अर पृथिवी सब ऋतुके फल फूलनिकरि मंडित भई भगवानके विहारकी महिमा कहा कहनी। जब भगवान जीवनिके हितकूं उद्यमी भये तब पृथिवी आनंदरूप होय गई ॥ ४ ॥ जैसें वर्षाविषैं जलकी धारा वर्षै तैसें आकाशतें रत्नधारा वसुधाविषैं बरसती भई ॥ ५ ॥ प्रभुके सन्मुख प्रणाम करते देव चले जाय हैं नम्रीभूत हैं मुकुट जिनके तिनकी कांतिकरि व्यापि रही हैं दशूं दिशा, वे सबही देव भगवानकी प्रभाके अनुरागी हैं अर सुवर्णमई कमल हजार २ पत्रके पावनिके तले क्षेपे हैं सो मानूं वे कमल पृथ्वीके आभूषणही हैं ॥ ७ ॥ अर नानाप्रकारके रत्ननिकी विचित्रताकरि पृथ्वी रत्नमई होय रही है इंद्र अर इंद्राणी तेई भये भंवर तिनकरि सेवित प्रभुके चरणकमल तिनपर सुर असुर अर नर भंवर भये गुंजार करै हैं अर भक्तिरूप मकरंदका पान करै हैं जब भगवान विहार करै हैं तब पृथ्वीविषैं वसु जातिके देव आगैं २ इंद्रकी आज्ञाकरि चले जाय हैं ॥ ११ ॥ अर ऐसे वचन उच्चारते जाय हैं हे प्रभो! तुम जयवंत होहु हमपर कृपा करहु लोकके हित करिवेका यह समय है तुम लोकके हितविषैं उद्यमी हो, हे ईश! याहीतैं तुमकूं सुर असुर नर आयकरि प्रणाम करै हैं तुम समस्त विधिके वक्ता हो ॥ १२ ॥ भगवान विश्वके कल्याणके अर्थि विहार करैं धर्मचक्र आगे २ चला जाय है पृथ्वीविषैं संपदा विस्तरै तीनलोकके जीव हर्षित होंय ॥ १४ ॥ अर विहारके वादित्रनिकी ध्वनि ऐसी होय है जैसी मेहकी ध्वनि होय ध्वनिमें यह शब्द होंय हैं भव्यनिकूं आनंद बढो ॥ १५ ॥ बीणा, वांसुरी, मृदंग, झालर, शंख, काहल इत्यादि अनेक वादित्र बाजै हैं कैयक गीत गावैहैं मंगल शब्द होय रहे हैं जैसें समुद्र गाजे तैसें शब्द होय हैं भव्यनिके प्रयाणके महाशब्द तिनकरि धरती आकाश शब्दायमान होय रहे हैं, कैयक गीत गावै हैं कैयक भगवत्कथा करै हैं कैयक आनंदरूप हास्य करै हैं कैयक गरजै हैं कैयक नानाप्रकार राग करै हैं अर कैयक किन्नरी देवियां नृत्य करै हैं अर स्वर्गलोककी अप्सरा नृत्य करै हैं अर गंधर्व-जातिके देव वादित्र बजावै हैं ॥ १८ ॥ अर कैयक मंगलस्तोत्रनिकरि स्तुति करै हैं अर कैयक जय २ शब्द करै

हैं जहां २ प्रभु पांव धरे हैं तहां तहां अति मंगलाचार हो रहे हैं। या भूतलविषै गीत नृत्य वादित्र नानाप्रकारके मनके हरणहारे देवनि अर मनुष्यनिने किए ॥ २० ॥ अर सब दिशानिकूं सब लोकपाल सावधानी सहित सेवा करते चले जाय हैं प्रभुकी सेवा ही सेवकनिकूं कल्याण के अर्थि है। अर जिनका जो अधिकार है ताही रीति सेवा करै हैं ॥ २१ ॥ अर कैयक देव महा दैदीप्यमान सब ओर दौडते फिरै हैं इंतजाम करै हैं रीतिमाफिक चलावै हैं ॥ २२ ॥ अर दैदीप्यमान हैं रत्नमई कडे जिनके ऐसे कर तिनकरि आंजुली जोडते प्रभुकूं शीश निवाय नमस्कार करै हैं देवनिके मुकुट भूमिकूं स्पर्शैं हैं तिनके रत्ननिकी ज्योतिकरि पृथिवी ऐसी सोहै है मानों कोटिक कमलनिकरि पृथिवी प्रभुकी पूजा ही करती सोहै है ॥ २५ ॥ लोकपाल आग आगे चले जाय हैं वे लोकपाल लोकेश्वरके पायक हैं मानूं भगवानकी कांति ही मूर्ति धरि आगे आगे चली जाय है ॥ २६ ॥ अर पद्मनामा देवी तथा सरस्वतीनामा देवी अपने मंडलसहित मंगलद्रव्य हाथमें धरे आगे २ जाय है। भगवानकूं प्रदक्षिणा देय नमस्कारकरि मंगलद्रव्य लिए चली जाय हैं अर इंद्र नमस्कार करता हाथ जोडे चला जाय है अर यह शब्द कहै है, हे देव ! कृपा करो जगतकूं भवबनतैं निकासो अर देश देशके राजा प्रणाम करते चले जाय हैं ॥२८॥ या भांति वे ईश्वर तीनलोकके परमेश्वर सुर नर असुर तिर्यंचनिकरि सेवित लोकनिके उद्धारिवे अर्थि आर्यक्षेत्रविषैं जहां जहां भगवान चरणकमल धारैं हैं तहां पद पदविषैं देव रत्न सुवर्णमई कमल रचै हैं अर यह शब्द वारंवार कहै हैं॥ ३०॥ हे नाथ ! हे जगज्ज्येष्ठ ! हे लोकके पितामह ! तुम जयवंत होहु। हे स्वयंभू ! हे अविनाशी ! हे देव ! हे अनंतगुणकेस्वामी ! हे जीवनिके दयालु ! तुम जयवंत होवो। हे सर्व जगतके बांधव ! हे धर्मके नायक ! तुम जयवंत होहु। सबनिके शरणके देनहारे शरणागत प्रतिपाल ! तुम जयवंत होहु। हे पवित्र ! हे उत्तम ! हे श्रीधर ! तुम जयवंत होहु ॥ ३२ ॥ ऐसी घोषणा करते पृथिवी अर आकाशकूं शब्दायमान करते प्रभुके साथ विहार करते भये जैसा मेघका गंभीर शब्द होय तैसा जयजयकारका शब्द होता भया ॥ ३३ ॥ वह वीतराग देव सर्व इंद्रनिकरि पूज्य

मंगलरूप है दर्शन जाका इंद्रनिके मुकुटविषैं नील रत्न सोई भई भंवरनिकी पंक्ति ताका है भ्रमण जाके चरण-कमलनि पर ॥ ३४ ॥ चरणकमलकी निवासिनी जो लक्ष्मी ताकरि जगतकूं आनंद उपजावता संता जिनवर जीवनिकी दयाकरि अद्भुत विभूतिसूं विहार करैं। देवमार्ग जो आकाश ताविषैं विहार करता रत्न कमलनिपर चरणकमल धरता धर्मका स्वामी विहार करै है ॥ ३६ ॥ लोकके कल्याणके अर्थि विहार करता विश्वेश्वर ताके आगै देश देशके राजा चले जाय हैं ॥ ३७ ॥ जैसे पतिव्रता स्त्री पतिकी अनुगामिनी होय सो प्रशंसा योग्य है तैसैं महाविभूतिरूप स्त्री सर्वज्ञकी अनुगामिनी सोहै है स्त्री भी सुवर्ण वर्ण है, अर मणीनिके आभूषणनिकरि मंडित है ॥ ३८ ॥ तैसैं समवसरणकी विभूति हू मणि सुवर्णमई है अर प्रभुकी अनुगामिनी है तातैं प्रशंसा योग्य है अर चौगिर्द पवनकुमार देव भूमि शुद्ध करते जाय हैं। अपनी सेवामें सावधान हैं जैसे साधु अपनी वृत्तिमें सावधान होय। देवनिकरि बुहारी भूमि दर्पण समान दिपै है ॥ ३९ ॥ अर मेघकुमारदेव गंधोदककी वृष्टि करते जांय हैं अर देदीप्यमान बिजुरी चमकती जाय है ॥ ४० ॥ अर मंदारजातिके कल्पवृक्षनिके पुष्प तिनकी वर्षा होती जाय है तिनपर भंवर गुंजार करै हैं जिनमार्गके ईश्वर तिनका ऐसा विहार ताकी देवनिके समूह प्रशंसा करते भये ॥ ४१ ॥ सुवर्णकी रजका मंडल अर रत्ननिका चूर्ण ता करि पृथिवीतल कैसा सोहता भया जैसे ज्योतिषी देवनिके मंडलकरि आकाश सोहै है। देव नानाप्रकारके पत्रनिकूं कुंकुमके रसकरि युक्त करै हैं। सो मानूं अपना चित्रकारपना ही पृथिवीविषैं प्रसिद्ध करै हैं ॥४३॥ अर कदली, नारियल, ईख, कमरख, नारंगी आदि सब ही फल अर सब ही फूल छहों ऋतुनिके जगह जगह फलि रहे हैं फूलि रहे हैं। मार्गके समीप दोऊ ओर बाग लगि रहे हैं अर खेतनिमें सब धान्य फलि रहे हैं अर मार्गविषैं जगह जगह सुंदर मंदिर हैं तिनमें देव, देवी, नर, नारी गीत नृत्य करै हैं ॥ ४५ ॥ प्रभुके विहारकरि मार्ग ऐसा मनोज्ञ भया है मानूं यह कर्मभूमि मनवांछित सामग्रीकरि भोगभूमिकूं जीतै है सर्व सामग्री पृथ्वीविषैं पैंड पैंडविषैं परिपूर्ण है मार्गके अंत दोऊ ओर दो दो कोसके

विस्तार सीमा है ॥ ४६ ॥ वह मार्ग तोरणनिकरि शोभित है मानूं वे शोभाके कारण कल्पवासी देवनिने कल्पे हैं। ठौर ठौर मार्गविषैं मनवांछित दानकी देनहारी दानशाला हैं। तहां मनवांछित दान वटै है मानूं वे दानशाला साक्षात् दानशक्ति ही हैं ॥ ४८ ॥ अर तोरणनिके भीतर उतंग कदलीकी ध्वजाकरि मंडित महा सघन है छाया जाकी सूर्यकी कांतिकूं रोकै ऐसा वनदेवनिने वनके पुष्पनिकरि पुष्पमंडप रच्या है। पुष्पनिकी मंजरी तिनके पुंजकरि महासुगंध महा सुंदर मानूं पुण्यके समूहका आकार ही है ॥ ५० ॥ वह पुष्पमंडप रत्ननिकी बेल अर चित्रामरूप भीति तिनकरि मनोहर भासै है चन्द्रमा अर सूर्यकी प्रभाकूं जीतै ऐसी कांतिके मंडलकरि मंडित है घंटाके मनोहर शब्द अर ध्वजानिकी क्षुद्र घंटिकानिके मनोज्ञ शब्द तिनकरि सब दिशानिकूं शब्दरूप करै है वह पुष्पमंडप समीचीन सुगंधकरि खैंची है भंवरनिकी पंक्ति जानै। सो महासुगंध महा उज्ज्वल मानूं प्रभुका यशही मूर्तिवंत दीखै है ॥ ५३ ॥ ऊंचे हैं थंभ जाके स्थूल हैं मोतिनिकी झालरी जाके अर चार द्वारनिकरि सोहै है। ता मंडपके मध्य दयाकी मूर्ति रागादिक वैरीनिके दमनहारे संयमके स्वामी स्वयंभू सर्व लोकके हितके अर्थि गमन करै हैं ॥ ५५ ॥ अर प्रभुके पीछे भामंडल सोहै है अर तीन छत्र अति निर्मल ऊपरां-ऊपरि सोहै हैं मानूं प्रभुका त्रैलोक्यनाथपना प्रगट प्रकाशै हैं ॥ ५७ ॥ अर हजारां चंवर जिनेश्वरपर स्वयमेव ढुरै हैं जैसैं गिरेन्द्रपर हंसनिकी पंक्ति पड़ै अर हजारों मुनि प्रभुके साथ विहार करै हैं अर सब ओर देवनिकी सेना विस्तरि रही है अर इंद्र द्वारपाल हुआ देवनिसहित आगे २ जाय है। शची सहित इंद्र सर्वज्ञ देवकूं सेवै है। अर भगवानकी केवललक्ष्मी प्रगट भासै है अर मंगलनिका मंगल भगवान ताके साथ मंगलद्रव्य लिये देव चले जांय है अर शंख अर पद्मनामा दो निधि तिनकरि मनवांछित दान देते जाय हैं। सुवर्ण अर रत्ननिकी वर्षा होय है अर नागकुमार देव दैदीप्यमान हैं मणि जिनके फणविषैं दैदीप्यमान उद्योत करते जाय हैं मानूं वे ज्ञानरूप द्वीपकी दीप्ति ही हैं ॥ ३६ ॥ अर अग्निकुमार जातिके देव धूपके घट लिए जाय हैं तिनका

सुगंध ऊर्द्धकू जाय है मानूं भगवानके अंग हीका सुगंध फैल रह्या है। अर भगवान्के भक्त चांद सूर्य प्रभाके मंडलकूं धरें दर्पणजातिके मंगल द्रव्य लिये जाय हैं अर आतापके निरोध करणहारे उज्ज्वल रत्नमई छत्र देव प्रभुके सिरपर फिरावैं हैं। अर देवनिके हाथमें ध्वजा फरहरै हैं सो मानूं मिथ्यावादीनिका तिरस्कारकरि वे जीतिवेका स्वरूप नृत्य ही करै हैं। मानूं वे ध्वजा जिनेश्वरकी दयाकी मूर्ति ही सोहै हैं अर वैभवीनामा देवी बहुरि विजया वैजयंती इत्यादि आगें आगें जाय हैं मानूं तीन जगतके नेत्ररूप कुमुद तिनकूं प्रफुल्लित करणहारी भगवान्की कांतिरूप चंद्रिका देवीनिका रूप धरे सोहै हैं अर स्वर्गलोकके निवासी कल्पवासी देव अर देवी अर मध्यलोकके ज्योतिषी भवनवासी व्यंतरदेव अर पातालके भवनवासी अर व्यंतरदेव ये सब ही चारप्रकारके देव देवी अनुरागके भरे आनंद नाटक करै हैं जाविषैं सब रस प्रगट शोभै हैं। अर गंभीर मधुर है ध्वनि जिनकी ऐसे दुंदुभी मेघकी ध्वनिकूं जीतनहारे वादित्र बाजै हैं तिनके नादकरि दशूं दिशा शब्दायमान होय रही हैं ॥ ७१ ॥ अर धर्मचक्र जीता है सूर्य जानैं, हजार हैं धारा जाकी, जाकी कांतिके समूहकरि आकाशविषैं उद्योत होय ताहि देव लिये चले जाय हैं। अर देव यह घोषणा करते जाय हैं यह तीनलोकका एक प्रभु पृथिवीविषैं विहार करै है सो आओ याकूं नमस्कार करो यह घोषणा होय रही है ॥ ७३ ॥ अर बडे बडे देव ध्यावते संते सब दिशामें जय जयकार शब्द करै हैं मांनू वे देव प्रभुके प्रभावके अंश ही हैं। यह परम अद्भुत भगवंतदेवका विहार ताहि पायकरि पृथ्वीविषैं अद्भुत शोभा होती भई, जीवनिके अद्भुत मंगल होते भये ॥ ७५ ॥ जा देशविषैं प्रभु विहार करैं ता देशविषैं जीवनिक मनकी चिंता न होय अर रोगकी बाधा न होय अर अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि सप्तप्रकार ईति भीति न होय ॥ ७६ ॥ अर अंधनिके आंख होंय रूपकूं निरखैं अर वधिरनिके कर्ण होंय सब बात नीके सुनैं अर गूंगा पुरुष प्रकट वचनालाप करै अर पंगुनिके पग होवें सो पर्वतकूं उलंघैं ॥ ७७ ॥ अर जहां प्रभु विहार करैं तहां अति उष्ण अर शीत न होय अर रातदिनका भेद न होय अर जेते अशुभ कर्म वे सब विलाय जांय शुभकी

वृद्धि होय ॥ ७८ ॥ अर वसुधारूप वधू सर्व धान्यकरि निष्पन्न भई धान्यके अंकुरेरूप रोमांच सो ही हैं कंचुकी जाके सो कमलरूप हस्तकरि प्रभुके चरण ग्रहै है अर जिनसूर्यके चरणरूप किरणनिके संयोगकरि प्रफुल्लित भई है भूतलके कमलनिकी पंक्ति सो आकाशविषैं सरोवरकी शोभाकूं विस्तारै है अर छहों ऋतु एकैलार जगत्पतिकूं सेवै हैं मानू प्रभुकी सम्यग्दृष्टिके प्रभावतैं ये उपशमरूप होय गई हैं। भगवान्‌के विहारकरि भूमि रत्ननिकी उपजावनहारी है यातैं रत्नजननी नाम पाया है। प्रभुके प्रसादकरि शीतकाल उष्णकाल हू अपनी विषमताकूं तजिकरि समरूप वरतै है अर काहू प्राणीकूं कोई प्राणी न हतै है ॥ ८४ ॥ त्रस अर थावर सब ही जीव सुखसूं समय पूर्ण करै हैं। यह पृथ्वीविषैं प्रभुकी प्रभुता वरतै है ॥ ८५ ॥ अर सर्प नकुलादिक तथा सिंह मृगादिक सबही जातिविरोधी जीव निर्वैर होय गये हैं। भगवंतके प्रभावकरि जीवनिकी दुर्बुद्धि दूर भई है ॥ ८६ ॥ अर शीतल मंद सुगंध पवन प्रचंडता रहित भई प्रभुकूं सेवै हैं मानूं सेवकनिकूं सेवाकी विध सिखावै है सेवकका यही धर्म है जो स्वामीतैं अनुकूल होय प्रतिकूल न होय सो पीछे पीछे लार लगी आवै है ॥ ८८ ॥ अर दिक्कुमारी निर्मल आभरणकरि मंडित कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकरि जिनपतिकूं पूजै हैं, वे दिक्कुमारी प्रभारूप हैं, तिमिरकी हरणहारी हैं अर आकाश निर्मल होय गया है जाविषैं तारा प्रगट दीखै हैं सो कैसे सोहै हैं मानूं शरदऋतुविषैं सरोवरमें कुमुद ही फूलि रहे हैं। अहो ! त्रैलोक्यनाथका अद्भुत माहात्म्य है जो मंदबुद्धि तिर्यंचहू दूरतैं नमस्कार करै हैं। अर वह कहै हैं मैं पहिले जाऊं वह कहै मैं पहिले जाऊं या भांति दर्शनकी अभिलाषाके भरे सुर नर चले आवै हैं, जा दिशाविषैं त्रैलोक्यका ईश्वर पांव धरै है तहां २ सुरेश्वर आगै आगै दौडा जाय है अर दिश दिशके राजा पूजाके उपकरण लिये पूजिवेकूं आवै हैं। सब ही दिशके नरेश्वर जगदीश्वरके लारहैं अर कैयक चले आवै हैं। भगवान सारिखा सर्वेश्वर और नाहीं। सुरेश्वर, नरेश्वर, असुरेश्वर, खगेश्वर सबही जिनेश्वरके दास हैं भगवानके विहारसमय देवनिकी सैना तो आकाशविषैं चली जाय है अर मनुष्यनिकी सैना भूमिविषैं सब ओर चली जाय है। जहां भगवान विहार करैं तहां पृथिवी पवित्र होय है।

अथानंतर—प्रभुके शरीरकी जोतिका प्रतिविंब मंडलरूप होय रह्या है ताहि भामंडल कहिए है ताका निरूपण करै हैं। वह ज्योतिका मंडल है ताके एक ऊंचा दंडके आकार प्रभाका दंड भासै है। ताके ऊपर महा अपूर्व कांतिकूं धरे अपनी कांतिकरि सूर्य आदि सब तेजस्वनिका तेज मंद करता भामंडल सोहै है। वह भामंडल अधिकसूं अधिक तेजकूं धरै है यह महा स्थूल है तेज जाका सो रूपी है अरूपी नाहीं भगवानका आत्मसंबंधी अरूप तेज तो अनंत अपार है अर यह शरीरके तेजका मंडल है सो ही कथनमें न आवै। भामंडलका तेज काहूकरि निवारथा न जाय अप्रतिघात है, अर दूर किया है समस्त तिमिर जानैं अर ज्योतिके मंडलके मध्य एक पुरुषाकार तेजोमय सहस्ररश्मिरूप प्रभुके सब ओर सोहै है अद्भुत है उदय जाका। ता भामंडलका विस्तार तो एक कोस है अर ऊंचाई तीर्थंकरके शरीरकी ऊंचाईके अनुसार है ऋषभदेवका शरीर पांचसौ धनुषका हुता अर नेमीश्वरका शरीर धनुष दश ऊंचा है सो शरीरके अनुसार भामंडलकी ऊंचाई है ॥ ९९ ॥ वह भामंडल महा मनोहर दीखै है जाके देखिवेकरि नेत्रनिकूं सुख होय। वह भगवानके शरीरका भामंडल पुरुषाकार है अर जगत्‌-पूज्य है ॥ १०० ॥ जे हीनपुण्यी हैं पापी जीव हैं तिनकूं दर्शन नाहीं जैसैं घूघू सूर्यकूं न विलोकै। वे प्रभु समस्त लोककूं धर्मका प्रकाश करते लोकनिकूं कल्याणके अर्थि जगत्‌के ईश्वर विहार करते भए। सब देवनिकी कांतिकूं उलंघै ऐसी है कांति जिनकी सो कैयक वर्ष विहारकरि आर्यखंडके जीव प्रतिबोधे अनेक मंद बुद्धि प्रवीण भए। हिंसक जीव हिंसातैं रहित भए। वीतरागदेवके विहार समय जीवनिकूं आर्ति चिंता आदि खेद न होते भए ॥८॥ प्रभुने जगतके कल्याण निमित्त महा विभूतितैं विहार किया अनेक देश संबोधे देशनिके नाम—सोरठ, मत्स्य, लाटोरु, सूरसेन, पाटच्चर, कुरु, जांगल, पांचाल, कुशाग्र, मगध, अंजन, अंग, बंग, कलिंग आदि अनेक देश-निम विहारकरि लोकनिकूं जिनधर्मी किए। राजा प्रजा सब संबोधे। कैयक राजा मुनि भए, कैयक श्रावक भए कयक रानी आर्यिका भईं, कैयक श्राविका भईं, कैयक ब्राह्मण अर वणिक मुनि भए, कैयक श्रावक भए। अर

इन उच्चकुलकी स्त्री कैयक आर्यिका भई, कैयक श्राविका भई अर कैयक शूद्रलोक हू श्रावक भए अर उनकी स्त्री श्राविका भई। श्रावक श्राविकाके व्रत सबही कुलनिकूं होय है अर यति आर्यिकाके व्रत उच्चकुल बिना नाहीं। या भांति सकल जीव संबोधे अर श्रावकके व्रत सिंह, गज, मृगादि पशुओंने धारे अर हंस गरुडादि पक्षीनिने धारे अर अनेक देव सम्यक्त्वके धारक भए ॥१२॥ नेमीश्वर विहार करते मलयनामा देशविषैं आए ताविषैं भद्रलपुरनामा नगर ताके सहस्राम्रनामा वनविषै प्रभु पधारे अर समवसरणकी रचना भई। चतुरनिकायके देव आदि बारह सभा प्रभुके प्रदक्षिणा रूप बैठे। तहां भद्रिलपुरका राजा पुंडू अपनी प्रजासहित परमेश्वरके दर्शनकूं आया सो हाथ जोडि शीश नवाय नमस्कारकरि मनुष्यनिकी सभामें बैठ्या तहां देवकीके पुत्र छह सुदृष्टिनामा सेठ अर ताकी अलकानामा सेठानीके पले हुते सो सकल मातापितासहित दर्शनकूं आए। इन छहों भाईनिके प्रत्येक प्रत्येकके बत्तीस बत्तीस स्त्री सो अपने रूपकरि शचीनामा इंद्राणीहूका रूप जीतैं ॥ १७ ॥ ते छहों भाई छहों रथनितैं उतरकरि समोशरणमें आए. जिनराजकूं नमस्कारकरि राजापुंडूके समीप आय बैठे अद्‌भुत है तेज जिनका ॥१८॥ तहां भगवान् सम्यग्दर्शन सहित यति अर श्रावकका धर्म दिव्यध्वनिकरि कहते भए यतिका धर्म साक्षात् निर्वाणका कारण है अर श्रावकका धर्म परंपराय मोक्षका कारण है। यह व्याख्यान सुनि यह छहों भाई तत्त्वके वेत्ता धर्मरूप अमृतके पानकरि तृप्ति भए, जाना है संसारका स्वरूप असार जिनि सो राजासूं अर माता पितासूं अर सकल कुटुंबसूं क्षमा कराय जिनेश्वरके चरणारविंदकूं नमस्कारकरि यह छहों भाई जिनेश्वरी दीक्षा धारते भए। छहों भाई छह काय जीवके दयालु षद्द्रव्यके वेत्ता एकै साथ सर्वसंगके त्यागी भए। सो छहों द्वादशांगके पाठी श्रुतकेवली भए अर जिनकूं बीजबुद्ध्यादि अनेक ऋद्धि उपजीं अर महा दुर्द्धर तप करते भए ॥ २१ ॥ इन छहों मुनीनिके वेला आदि तप समान, धारणा पारणा सबनिका साथ अर शीत उष्ण वर्षाके तीनों योग साथ अर शय्या, आसन, स्थान, सबनिका साथ ॥ २२ ॥ यह छहों भाई तद्भव मोक्षगामी चरमशरीरी महातपके

करणहारे तिनके देहकी कांति गृहस्थ अवस्थातैं अधिक होती भई। इनकी उपमा देवेकूं येही छहों मुनि और इन समान नाहीं यह वाह्याभ्यंतर तपके करणहारे जिनेश्वरके परम भक्त होते भए ॥ २४ ॥ याभांति महा विभूति सहित विहारकरि तीन लोकका नायक अनेक मुनीनि सहित बहुरि गिरनार पधारे ॥ २५ ॥ तहां समवसरण-विषैं देवनिसहित सकल इंद्र आए। अर उपेंद्र कहिए वासुदेव वलदेव समस्त यादवनि सहित आए। भगवान सुर नर मुनीनिकरि सेवनीक तिनके संघका वर्णन करे हैं। वरदत्तस्वामीकूं आदि देय ग्यारह गणधर ते श्रुतज्ञानरूप समुद्रके पारगामी सोहते भए ॥ २७ ॥ अर चारसौ मुनि चौदह पूर्वके धारक अर ग्यारह हजारआठसौ मुनि शिष्य अर पंद्रहसौ अवधिज्ञानी अर पंद्रहसौ केवली ॥ २९ ॥ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी नवसौ अर वादि-ऋद्धिके धारक आठसौ अर ग्यारहसौ विक्रियाऋद्धिके धारक याभांति अठारह हजार अर ग्यारह गणधर ते मुनि जानो। अर राजमती आदि चालीसहजार आर्यिका अर एकलाख उनहत्तरहजार श्रावक अर तीनलाख छत्तीसहजार श्राविका यह सबही चतुर्विध संघ सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध भगवंतके मुखथकी उपदेश सुनते भए। गिरनारी गिरिविषैं पूर्वली भांति धर्मोपदेश भया। धर्मरूप अमृतकी वर्षा भई ताकरि भव्यरूप पपीहा तृषित हुते सो तृप्त भए। भगवानकी दिव्यध्वनि सब जीवनिकूं तृप्त करती भई। याभांति अपार है उदय जाका ऐसा गिरनार सोई भया उदयाचल तापर जिनसूर्य विराजे। तब सकल सभाके लोकनिके हृदय तेई भए कमल सो विकाशकूं प्राप्त होते भये ॥ ३४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवानविहारवर्णनोनाम एकोनषष्ठि सर्गः ॥ ५९ ॥

अथानतर—धर्मोपदेशके भये पीछे देवकी कृष्णकी माता महाविनयवान जिनेश्वरसूं हाथ जोडि नमस्कारकरि पूछती भई। हे भगवन्! आज मेरे मंदिरमें दो मुनि दिगंबर महामनोहर आहारकूं आए बहुरि वेही आए

बहुरि वेही आए या भांति दोय मुनि तीन वेर आये सो एक दिनविषैं मुनि तीनवेर कैसैं आए। अर उनकूं देखि करि मेरे ऐसा मोह उपज्या मानूं मेरे पुत्र ही हैं यह प्रश्न देवकीने किया तव श्रीभगवान कहते भए वे छह तेरे पुत्र हैं तीन युगल तेरे भए सो देव होतेही कंसके भयसूं उनकूं लेगए सो भद्रिलपुरविषैं अलका नामा सेठानीके घर पले अर ताके मृतक पुत्र भए सो देवनिने तेरे निकट आय डारे ते तीनोंही मृतकयुगल कंसने सिलापर पटके अर तेरे तीनों युगल छहों पुत्र मेरे निकट मुनि भए ते छहों तेरे घर आहारकूं आए पहिले प्रथम युगल आया बहुरि दूसरा युगल आया बहुरि तीसरा युगल आया याभांति तीन वेर छहों साधु आये वे छहों समान रूप हैं तातैं तैं जाने वेही आगे साधु दूसरी वेर भोजन नाहीं करैं अर आवैं नाहीं वे कृष्णके बडे भाई छहों धर्मश्रवणकरि मेरे शिष्य भए हैं सो या भववनमें कर्म काटिकरि सिद्धलोककूं जावेंगे वे महा पुरुष हैं अर तेरे उनसूं पुत्रका स्नेह उपज्या सो सत्य है परंतु जगतका सकल स्नेह वृथा है तू जिनधर्मविषै स्नेहकरि जाकरि भवसागरकूं तिरै यह कथा जिनेश्वरके मुखसूं सुनिकरि देवकी मुनीनिकूं नमस्कार करती भई अर सकल यादव नमस्कार करते भए अर बलदेव वासुदेव नमस्कारकरि मुनीनिकी अति स्तुति करते भए॥

अथानंतर—कृष्णकी पटरानी सत्यभामा प्रभुकूं प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछती भई तव भगवान कहते भए सत्यभामा सुन हे अर सर्व सभा सुनै है या भरतक्षेत्रविषै भद्रिलपुरमें कपिलनामा ब्राह्मण ताके मरीचीनामा स्त्री ताके मुंडशालायननामा पुत्र भया सो विद्यामदकरि गर्वित आपकूं पंडित मानै। जा समयमें भगवान पुष्पदंत तो परमधाम पधारे हुते अर शीतलनाथस्वामी प्रगटे हुते सो शीतलनाथके उपजने पहलें पावपल्य धर्मका विच्छेदभया ता समय जिनमार्गके ज्ञाता भव्यजीव भरतक्षेत्रमें न रहे अर अज्ञानकी प्रवृत्ति भई वा समय मुंडशालायननामा विप्रने राजा प्रजा मूढजन तिनकूं भ्रम उपजायकरि पापकी प्रवृत्ति करी अणछान्या जलकरि स्नान अर गौ कन्या गज तुरंगादि दशप्रकार दान यह प्ररूपणा करी। अर लोभकरि लोगनिकूं ठगे ता पापकरि सप्तम

नरकविषैं नारकी भया। बहुरि दुष्ट तिर्यंच होयकरि नरक ही गया कुयोनिविषैं बहुत भ्रमण करके कभी मनुष्य देह पाई परंतु नीचकुलविषै उपज्या ॥ १५ ॥ बहुरि गंधावतीनामा नदी ताके तीर गंधमादननामा पर्वत तहां यह एक पर्वतकनामा भील भया ताके वल्लरी नामा स्त्री ॥ १६ ॥ एक दिन ता पर्वतपर श्रीधर अर धर्म यह दोय चारणमुनि आए तिनका भीलकूं पुण्यके उदय दर्शन भया भील मुनिकूं नमस्कारकरि श्रावकके व्रत धारे ॥१७॥ कालपाय मरणकरि विजयार्द्धगिरिविषैं अलकापुरी तहां राजा महाबल विद्याधर ताके रानी योतिर्माला अर बडा पुत्र सतबली वासूं छोटा यह हरिबाहननामा राजकुमार होता भया कैयक दिनमें इनका पिता महाबल श्रीधर मुनिके निकट मुनि भया अर इन दोऊ भाईनिके ताईं राज्य दिया आप मुनि होय मुक्ति पधारे ॥ १९ ॥

अथानंतर—बडे भाई सतबलने छोटे भाई हरिवाहनकूं देशसूं निकाल दिया सो हरिवाहन भगवाहन भगली नामा देशविषैं अंबुदावतनामा पर्वतपर श्रीधर्म अर अनंतवीर्यनामा चारण मुनीनिका दर्शनकरि मुनि भया, वीतरागका धर्म आराधिकरि दूसरे स्वर्ग देव भया तहां स्वर्गलोकके सुख भोगि मरण समय संक्लेशभावथकी शरीर छोडि स्त्रीपद उपार्ज्या सो तू विजयार्द्धगिरिविषै राजा सुकेतके स्वयंप्रभा रानीके गर्भविषै सत्यभामानामा पुत्री भई सो वासुदेवने परणी अब या जन्मविषैं आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय तहांसूं चय मनुष्य भव पाय सिद्धपद पावैगी ॥ २४ ॥ यह कथा सुनि सत्यभामा अति हर्षित भई संसारका क्षय जानि कौन हर्षित न होय। बहुरि रुक्मिणी देवाधिदेवकूं प्रणामकरि अपने पूर्वभव पूछती भई तव प्रभुकी आज्ञा भई, याही भरतक्षेत्रविषै मगधनामा देश ताविषैं लक्ष्मीग्राम तहां सोमदेवनामा ब्राह्मण ताके तू लक्ष्मीमतिनामा ब्राह्मणी हुती सो रूपके अभिमान करि महामूढ पूज्य पुरुषनिका अपमान करै एकदिन शृंगार करती हुती नानाप्रकारके वस्त्रा-भरण पहरे चंद्रमासमान मणीनिके दर्पणविषै अपना मनोहर मुख निरखती हुती तासमय याके घर समाधिगुप्त नामा मुनि तपकरि महाक्षीण शरीर आहारकूं आए सो यानैं निन्दा करी ॥ ३० ॥ सो मुनिकी निंदाके पापकरि

सातदिनके भीतर उदंबर कोढ उपज्या तब यह अग्निमें प्रवेशकरि मूई सो आर्तध्यानकरि गधी भई गधी होय करि लूणके लदनेमें आई सो लूणके लदिवेकरि मरी बहुरि पापके योगकरि राजगृहनामा नगरविषैं सूकरी भई सो सूकरी पापीनिके मारी मरी सो मरिकरि गौओंके बाडेविषैं कूकरी भई सो दौमें जल मरी। मरकरि मंडक नामा ग्राम तहां त्रिपदनामा धीवर ताके मंडकीनामा भार्या ताके पूतिगंधानामा पुत्री भई ॥ ३४ ॥ याके ऐसा पापका उदय जो माताने हू न पाली अर दादीने वृद्धिकूं प्राप्तकरी याका ऐसा दुर्गंध शरीर जो याही याके घरमें न राखैं सो कुटी बांधि नदीके तीर रहै एकदिन नदीके तीर समाधिगुप्तिनामा मुनि आय विराजे वे महा दयावान तिनि याही संबोधी अर याके पूर्वभव कहे अर धर्मका श्रवण कराय श्राविकाके व्रत दिये ॥३६॥ तब यह कीरकी कन्या उपारकनामा नगर गई तहां आर्यिकानिकी संगति भई तिनके साथ राजगृहीनामा नगरी गई अर याने आचाम्लवर्द्धननामा तप किया अर वहां मुनीनिके निर्वाणक्षेत्र हैं तहां सिद्धशिलाकूं वंदकरि नील गुफाविषैं सन्यास धारि यह महा सती प्राण त्यागि अच्युतेन्द्रके गगन वल्लभानामा महादेवी भई तहां पचपन पल्यकी आयु भई तहांसूं चयकरि कुंडनपुरविषैं राजा भीष्म ताके रानी श्रीमती ताके तू रुक्मणीनामा पुत्री भई पीछे वासुदेवकी पटरानी अब या भवविषैं आर्यिकाके व्रतधरि स्त्रीलिंग छेद उत्कृष्ट देव होयगी तहांसूं चयकरि मनुष्य होय मुनिव्रत धरि मोक्ष पावैगी ॥ ४१ ॥ यह कथा भीष्मकी पुत्री सुनिकरि आपकूं शीघ्रही मुक्तिकी प्राप्ति जानि प्रभुकूं प्रणाम करती भई कैसी है भीष्मकी पुत्री भीष्म कहिये महा भयंकर जो संसार बन ताके भ्रमणसूं भयभीत है बहुरि जांबुवती वासुदेवकी तीसरी पटराणी जिनराजसूं अपने भव पूछती भई सो भगवान कहै हैं अर जांबुवती सुनै है अर सकल भव्य सुनै हैं वे भव्य संसारसूं विरक्त हैं या जंबूद्वीपविषैं पूर्वविदेह यहां पुष्पकलावती देशविषैं वीतशोकानामा नगरी ताविषैं देवलनामा एक बडा गृहस्थ ताके देवमतीनामा स्त्री ताके यशस्विनी नामा पुत्री ॥४४॥ सो सुमतिनामा गृहस्थकूं परणाई सो वह मूवा तब यह अति दुखरूप भई तब एक जिनदासनामा जिनधर्मी तानैं संबोधी परंतु अज्ञानके

उदय सम्यक्त न पाया दान अर उपवासको विधिकरि मरी सो नंदनवनविषैं अंतरनामा देवके मेरुनंदननामा देवी भई वाकी तीसहजार वर्षकी आयु भई देवपर्यायके सुख भोगि तहांसूं चयकरि संसारवनमें बहुत भ्रमी ॥ ४८ ॥ बहुरि या जंबूद्वीपके ऐरावतक्षेत्रविषै विजयपुरनामा नगर ता विषै राजा बंधुषेण ताके रानी बुद्धिमती तिनके बंधुयशानामा पुत्री भई सो कुमारीही श्रीमती नामा आर्यिकाके समीप जिनदेवका धर्म आराधि प्रोषधव्रतकरि देह तजि कुवेरके स्वयंप्रभानामा स्त्री भई सो तहांसूं चयकरि पुंडरीकणीनामा पुरीविषैं जंबूद्वीपके पूर्वविदेहमें बज्रमुष्टीके सुभद्रानामा स्त्री ताके सुमतिनामा पुत्री भई सो सुंदरीनामा आर्यिकाके निकट रत्नावली नामा तप किया ॥ ५२ ॥ अर समाधिमरणकरि पांचवें स्वर्ग ब्रह्मेंद्रके इंद्राणी भई। जाकी तेरह पल्यकी आयु भई तहांतैं चयकरि भरतक्षेत्रके विजयार्द्धकी दक्षिणश्रेणीविषैं जांबवनामा नगर ता विषैं जांबवनामा विद्याधर ताके रानी जांबवती तिनके तू जांबुवतीनामा पुत्री भई। नारायणकी पटरानी अब आर्यिकाके व्रत धरि कल्पवासी देव होयकरि बहुरि मध्यलोकविषै राजपुत्र होय तपकरि लोकशिखर जायगी ॥ ५५ ॥ यह कथा सुनि वह शीलरूप आभूषणकी धरणहारी परमेश्वरकूं प्रणामकरि बैठी आपका संसारसूं निस्तार जानि अति हर्षित भई ॥ ५६ ॥ बहुरि वासुदेवकी चौथी पटराणी सुसीमा विनयकरि सर्वज्ञदेवकूं अपने पूर्वभव पूछती भई सो प्रभु सकल सभाके प्राणीनिके मनकूं आल्हादकी उपजावनहारी जो दिव्यध्वनि ताकरि कहते भये। धातकीखण्डनामा द्वीप ता विषै दोय मेरु तिनमें पहले मेरु संबंधी पूर्व विदेह तहां मंगलावतीनामा देश ता विषैं रत्नसंचयनामा नगर ॥ ५८ ॥ तहां राजा विश्वसेन ताके अनुद्धरीनामा राणी अर राजाका मंत्री सुमति सो प्रसिद्ध परमश्रावक ॥ ५९ ॥ एकसमय यह राजा विश्वसेन अनुद्धरीका धनी युद्धविषैं अयोध्याके राजा पद्मसेनने मार्‍या सो रानी अनुद्धरी अति दुःखित भई सो सुमतिनामा मंत्रीने संबोधी ॥ ६० ॥ परंतु मिथ्यात्वके उदय सम्यक्त्व धारि न सकी वाह्य सुभक्रियाकरि जंबूद्वीपका विजयनामा द्वार ताका अधिष्ठाता विजयनामा देव ताके ज्वलनवेगानामा देवी भई ॥ ६१ ॥

ताकी दशहजार वर्षकी आयु भई बहुरि चिरकाल संसार भ्रमणकरि जंबूद्वीपके विदेहविषैं सीतानदीके दक्षिण तटविषैं एक शालिग्रामनामा रमणीक गांव जहां महा धनवान एक यक्षलनामा गृहस्थ ताके देवसेनानामा स्त्री ताके यज्ञदेवीनामा पुत्री भई यक्षनिके आराधनसूं याका यक्षदेवी नाम धरचा सो यह यक्षनिकी पूजाके अर्थ वनविषैं गईहुती सो धर्मसेननामा मुनिकें निकट धर्मका श्रवण किया ॥ ६५ ॥ अर जिनधर्मकी क्रिया आदरी अर मुनीनिकूं भक्तिकरि दान दिये । अर यह व्रत लिया जो मुनि आर्यिकानिकूं भोजन देयकरि मैं भोजन करूं ॥६६॥ सो दानके प्रभावकरि यानैं पुण्यका बंधकिया एकदिन यह अपनी सखीनि सहित विपुलाचलनामा पर्वत तहां क्रीडाकूं गई हुती सो अकालवृष्टि भई ताकरि पीडित होय यानैं गुफामें प्रवेश किया सो सिंहने भखी सो मरकरि हरिनामा वर्षक्षेत्र मध्यभोगभूमि तहां उपजी अर दोय पल्यकी आयु भई तहांसूं ज्योतिषी देवनिके देवी भई तहां एकपल्यकी आयु भई तहांसूं चयकरि जंबूद्वीपके विदेहविषै पुष्कलावती नामा देश तहां वीतशोकनामा नगरीके अशोकनामा राजा ताके श्रीमतीनामा रानी ताके श्रीकांतानामा पुत्री भई सो जिनदत्तानामा आर्यिकाके समीप कुंवारी आर्यिका भई अर रत्नावलीनामा तपकरि चौथे स्वर्ग माहेंद्रनामा इंद्रके इंद्राणी भई वाकी ग्यारह पल्य आयु भई तहां स्वर्ग सुख भोगे तहांसूं चई सो सराष्ट्र नामा देशविषैं राजा राष्ट्रवर्द्धन ताके रानी सुज्येष्ठा ताके तू सुसीमा नामा पुत्री भई अब तू आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि देव होयगी तहांसूं चयकरि ॥ ७२ ॥ गिरनगरविषै मनुष्य होय मोक्ष जायगी यह अपने भव जिनस्वामीके मुख सुसीमा सुनिकरि आपकूं कृतार्थ मानती भई प्रभुकूं प्रणामकरि स्त्रीनिकी सभामें बैठी बहुरि कृष्णकी पाचवीं पटरानी लक्ष्मणा तीर्थेश्वरकूं नमस्कारकरि अपने भव पूछती भई तब भगवान सब जीवनिके हितू कहते भए या जम्बूद्वीपविषै विदेहक्षेत्र तहां कच्छकावती देशमें सीतानदीके उत्तर तट विषै अरिष्टपुरनामा नगर तहां राजा वासव सो वासव कहिए इंद्रसमान विभूतिका धारक ताके सुमित्रा नामा रानी सो पतिके लार सहस्राम्र नामा वनविषैं सागरसेन नामा मुनिके दर्शनकूं गई ॥ ७७ ॥ तहां राजा वासव

गुरुपर धर्मश्रवणकरि अपने वसुसेननामा पुत्रकूं राज्यदेय मुनि भया अर रानी सुमित्रा पुत्रके मोहसूं आर्यिका न भई घरमें रही ॥ ७८ ॥ बहुरि पुत्रका भी वियोग भया सो यह महा दुःख शोककरि मूई सो भीलनी भई तहां भीलनीकी पर्यायमें नन्दिभद्र नामा चारणमुनि अवधिज्ञानी तिनका दर्शन भया अपने पूर्वभव मुनिके मुख सुनि करि वाहि जातिस्मरण भया अर तीन दिनका अनशन धरि देहतजि व्यंतर देवनिसें गंधर्वजातिमें नारद तुंवरू इत्यादि भेद हैं तिनमें नारद जातिके देवनिविषै यह मेघमालिनीनामा देवी भई तहांसूं चयकरि या भरतक्षेत्र विषैं विजयार्द्धकी दक्षिणश्रेणीमें चंदनपुरनामा नगर तहां महेन्द्र नामा राजा ताके रानी अनुद्धरी ताके यह कनक-माला नामा पुत्री भई सो महेन्द्र नगरका राजा हरिवाहन विद्याधर याने स्वयंवरविषै वरया ताके यह अति वल्लभा भई एक दिन जिनपूजाके अर्थि यह सिद्धकूट चैत्यालय गई तहां चारणमुनिके मुख धर्म श्रवणकरि मुक्ता-वली नामा तप आदरया अर समाधिमरणकरि तीजे स्वर्ग सनत्कुमार इंद्रके इंद्राणी भई वाकी नव पल्यकी आयु भई स्वर्गके सुख भोगि तहांतैं चई ॥८५॥ सो तू राजा श्लक्ष्णरोमके रानी कुवेरमति ताके उदरसूं सुलक्षणानामा पुत्री भई अर कृष्ण वासुदेवके पटरानी भई अब आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होयगी तहां सूं चय मनुष्य होय मुक्ति जावेगी ॥८६॥ यह अपने भव लक्ष्मणा सुनिकरि प्रभुकूं प्रणाम करती भई बहुरि गांधा-रीनामा कृष्णकी छठी पटरानी अपने पूर्वभव जिनेद्रकूं पूछती भई सो प्रभु दिव्यध्वनिकरि कहते भए कौशल देशविषैं अयोध्या नगरी तहां राजा रुद्रदत्त ताके पटरानी विनयश्री सो पति सहित सिद्धार्थ वनविषै श्रीधरमुनिकूं दान दिया सो दानके प्रभावकरि उत्तरकुरु भोगिभूमिविषैं उपजी तहांतैं चयकरि चंद्रमाके देवी भई ताकी आयु पल्यके आठवें भाग भयी ॥ ८९ ॥ तहांसूं चयकरि विजयार्द्धकी उत्तरश्रेणीविषैं गगनवल्लभनामा नगर तहां राजा विद्युद्वेगके रानी विद्युन्मति ताके महाक्रांतिकी धारक विनयश्रीनामा पुत्री भई सो नित्यालोकपुरका राजा महेंद्रविक्रम ताकूं परणाई ॥९१॥ कैयक दिनमें राजा महेन्द्रविक्रम चारणमुनीनिके मुख धर्म श्रवणकरि मंदराचल

परि मुनिव्रत धारे अर अपने हरिवाहनपुत्रकूं राज्य दिया ॥ ९२ ॥ अर रानी विनयश्री आर्यका होय सर्वतोभद्र नामा तप किया अर समाधिमरणकरि पहिले स्वर्ग सौधर्म इन्द्रके वल्लभा भई ताका आयु पांच पल्यकी भई ॥ ९३ ॥ तहांसूं चयकरि गांधारनामादेशविषैं पुष्पकलावतीनामा पुरी तहां राजा इंद्रगिरि ताके रानी मेरुमती ताके गांधारीनामा पुत्री भई ॥ ९४ ॥ सो कृष्णके पटराणी पद पाया अब आर्यिकाके व्रत धारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय बहुरि नरभव पाय निरंजन पद पावेगी यह कथा सुनकरि गांधारी आनंदकूं प्राप्त भई बहुरि हरिकी सातवीं पटराणी गौरी भगवानसूं अपने भव पूछती भई सो प्रभु कहै हैं ॥ ९५ ॥ एक ईभ्यपुरनामा नगर तहां धनदेवनामा सेठ ताके यशस्विनीनामा कामिनी सो एक दिन अपने मंदिरमें तिष्ठती हुती सो आकाश विषै दोय चारण मुनिकूं देखकरि अपने पूर्वभव स्मरण करती भई जो मैं धातकीखंडनामा द्वीपविषैं पूर्वमेरुके पश्चिम विदेहविषै नंदशोकपुरमें आनंद श्रेष्ठीके स्त्रीहुतीं सो अमितसागर नामा मुनिकूं पति सहित मैं दान दिया हुता सो हमारे घरमें देवोंने पंचाश्चर्य किये बहुरि मैं भर्त्तार सहित वर्षाका जल पिया सो विषसहित हुता ताकरि प्राण तजि दानके प्रभावकरि देवकुरुभोगभूमिविषैं उपजा तहांसूं दूजे स्वर्ग ईशानइंद्रके देवी भई तहांसूं चयकरि मैं धनदेव सेठकी स्त्री यशस्विनी भई या भांति अपने पूर्वभव यशस्विनी जानकर संसारतैं विरक्त भई ॥ १०० ॥ सुभद्रनामा मुनिकूं नमस्कारकरि प्रोषधव्रत ग्रहे बहुरि कैयक दिनमें समाधिमरणकरि सौधर्मके इंद्राणी भई पांच पल्यकी आयु भई ॥ १ ॥ तहांतैं चयकरि कौसांबीनामा नगरीविषै सुभद्रनामा सेठके सुमित्रानामा स्त्री ताके धर्ममतिनामा पुत्री भई धर्मविषै है बुद्धि जाकी ॥ २ ॥ सो जिनमति आर्यिकाके निकट तपधरि जिनेंद्रगुण सम्पतिनामा व्रत करि दशवें स्वर्ग महाशुक्र नामा इंद्रके वल्लभा भई तहां इकीस पल्यकी आयुभोग चई सो राजा मेरुचन्द्रके रानी चन्द्रमती ताके तू गौरीनामा पुत्री भई सो नारायणके घर पटरानी पद पाया ॥ ४ ॥ अब आर्यकाके व्रतधारि स्त्रीलिंग छेदि स्वर्गविषै देव होय बहुरि नरभव पाय सिद्धपद पावेगी यह कथा सुनिकरि गौरी हर्षित

भई बहुरि आठवीं पटरानी पद्मावती अपने भव परमेश्वरकूं पूछती भई सो कहैं हैं ॥ ५ ॥ याही भरतक्षेत्रविषैं उज्जयनी नगरीमें राजा अपराजित ताके रानी विजया ताके पुत्री विमलश्री सो हस्तिशीर्षनामा नगरके राजा हरिषेणकूं परणाई सो अपने पतिसहित वरदत्तनामा मुनिकूं आहारदान दिया एक समय यह पति सहित भीतरके घरमें पौढी हुती सो कृष्णागर धूपकी धूंवांकरि मूई सो दानके प्रभावतैं जघन्यभोगभूमि जो हिमवंतक्षेत्र है ता विषै उपजी एक पल्यकी आयु भई तहांतैं चंद्रमाके चन्द्रप्रभानामा देवी भई ताके आठवेंभाग आयु भई ॥ ९ ॥ तहांसूं चयकरि मगधदेशविषैं एक शाल्मली खंडनामा ग्राम तहां जयदेवनामा गृहस्थ ताके देवलानामा स्त्री ताके पद्मदेवीनामा पुत्री भई सो धर्मनामा आचार्यके मुख धर्म श्रवणकरि याने यह व्रतलिया जो मैं यावज्जीव अनजाना फल न भखूं ॥११॥ एक समय चंडबाणनामा भील ताने अकस्मात् गांव घेरया अर गांवके नर नारी सब बंदीमें पकडे ५ह पद्मदेवी अति रूपवान सो पापी भील याहि भार्या करना विचारया परंतु यह महा शीलवंती याके वश न भई अपने व्रतमें दृढ रही ॥ १३ ॥ काहू समय या भीलकूं राजगृह नगरके राजा सिंहरथने मारया सो याकी प्रजा वन विषैं भ्रमती भई अर ये बंदिके नर नारी हू भ्रमते भए मार्ग भूलि गए हैं सो क्षुधा तृषाकरि पीडित मूढजन विना जानै विषफल खायकरि मूवे अर यह पद्मदेवी व्रतवान यातैं अनजाणे फल न भखे अर अनशनकरि शरीर तज्या सो हेमवंत क्षेत्र जघन्य भोगभूमि तहां उपजी अर एक पल्यकी आयु भई सो आयु पूर्ण करि स्वयंभूरमण नामा अंतका द्वीप तामें सूर्यप्रभनामा गिरि ताका अधिपति स्वयंप्रभनामा देव ताके स्वयंप्रभा नामा देवी भई सो तहांसूं चयकरि या भरतक्षेत्रविषै जयंतनामा नगर ताका राजा श्रीधर ताके राणी श्रीमती तिनके विमलश्री नामा पुत्री भई सो भद्रिलपुरके राजा मेघनादकूं परणाई ताके मेघघोषनामा पुत्र भया सो पृथिवीविषै प्रसिद्ध कैयक दिनमें राजा मेघनाद स्वर्ग प्राप्त भया तब यह रानी विमलश्री पद्मावती नामा आर्यिकाके निकट व्रत धारि आचम्लवर्द्धन नामा तपकरि बारहवें स्वर्ग सहस्रार नामा इंद्रके इंद्राणी भई जाकी आयु सत्ताईस पल्य भई ॥ २१ ॥

सो स्वर्गके सुख भोगि तहांसूं चयी सो अरिष्टपुरनगरका राजा स्वर्णनाभ ताके श्रीमतीनामा राणी तिनके तू पद्मावतीनामा पुत्री भई सो कृष्ण परण्या तोहि पटरानीका पद दिया ॥२२॥ अब आर्यिकाके व्रतधारि महातपकरि स्त्री लिंग छेदि स्वर्गविषैं देव होय बहुरि नरभव पाय मुनिव्रत धारि निराकारपद पावैगी यह कथा पद्मावती सुनि करि अति प्रसन्न भई मानूं मुक्तिही पाई ॥ २३ ॥ या भांति भूधरकी आठों पटरानीके भव भगवान कहे बहुरि बलभद्रकी माता रोहिणी अर केशवकी माता देवकी यह दोऊ अर अन्य यादव अपने २ भव भगवानकूं पूछिकरि धर्मविषै आरूढ भए संसारभ्रमणका उपज्या है भय जिनके ॥ २४ ॥ सुर असुर नर अर यादव राजेश्वर सब ही जिनेन्द्रकूं नमस्कार करि स्तुति करि अपने स्थानक जाय हैं अर पूजाके वास्ते बारंवार आवैं हैं ॥२५॥ बहुरि भगवान नेमीश्वर भव्यजीवनिके कल्याणके वास्ते गिरनारसूं देशान्तरकूं विहार किया सूर्यका विहार जगतके कल्याणके वास्ते है तैसे जिनराजका विहार जगत जीवनिके कल्याणके वास्ते है ॥ २६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ वासुदेवअष्टपटराणीभावांतरवर्णनो नाम नवपंचाशत् सर्गः ॥ ५९ ॥

अथानंतर—कृष्णकी माता देवकीके गजकुमार नामा पुत्र भए सो गजकुमार वसुदेव समान रूपवान अर वासुदेवके मनके प्रिय ॥ २७ ॥ सो बाल्यअवस्थातैं योवनअवस्थाकूं प्राप्त भए सो स्त्रीजनोंके मनकूं हरणहारी है कांति जिनकी जब राजकुमार तरुण भए तब वासुदेव या भाईके परणायवे वास्ते अनेक राजानिकी पुत्री याचीं अर एक सोमशर्मानामा विप्र ताके क्षत्रियानामा स्त्री ताके सोमानामा पुत्री सो अति रूपवान सो वासूं गिरधारीने गजकुमारका विवाह आरंभ्या सो सबही यादव हर्षित भए वाहीसमय जगतके स्वामी जिनराज बहुरि गिरनारपर पधारे तब सबही यादव महामंगलसहित जिनेश्वरके दर्शनकूं चाले ॥ ३१ ॥ तब गजकुमार इनकूं जाते देखकरि किसी खोजेकूं पूछी यह उत्साह किसका है तब खोजेकूं आदिसूं लेयकरि नेमिजिनेश्वरकी सब वार्ता

कही खोजा महा जिनधर्मी विवेकी ताके कहेतैं गजकुमार जानी जो श्रीनेमिकुमार बाईसवें तीर्थंकर जगतके तारक हमारे वंशरूप आकाशविषै सूर्यसमान प्रगटे हैं तिनके दर्शनकूं सब जाय हैं वे मेरे बाबाके पुत्र हैं अर जगतके नाथ हैं ऐसा जानि गजकुमारहू जिनवरकी वंदनाकूं गया सूर्यके रथके समान रथ तापर चढ्या हर्षके रोमांच धरे समवसरणमें गया तहां भगवान अरहंतदेव महालक्ष्मीकरि मंडित बारह सभासहित विराजे हुते तिनकूं नमस्कारकरि गजकुमार चक्रपाणिके समीप मनुष्यनिकी सभामें बैठ्या तहां भगवान सुरनरअसुर तिनकूं संसारके तिरिवेका उपाय रत्नत्रयरूपधर्म ताका निरूपण करते हुते ॥ ३५ ॥ तासमय जिनेंद्रकूं प्रणामकरि कृष्ण अति विनयसंयुक्त अपने अर और भव्य जीवनिके कल्याणके वास्ते पूछे हैं, हे ईश ! हे नाथ ! हे कृपानिधे ! या भरतक्षेत्रके वर्तमान कालके सबही तीर्थेश्वर अर चक्रेश्वर अर अर्द्धचक्रेश्वर अर बलभद्र अर प्रतिनारायण तिन सबनिकी कथा विशेषताकरि मोहि कहो यह प्रश्न केशवने किया तब जिनेश्वर सबनिकी उत्पत्ति कृष्णकूं कहते भए हे भव्योत्तम ! त्रिषष्ठिशलाकाके पुण्य पुरुषनिकी उत्पत्ति मैं तोहि कहूं हूं सो तू सुनि। पहले तीर्थनाथ ऋषभनाथ १ अजित २ संभव ३ अभिनंदन ४ सुमति ५ पद्मप्रभु ६ सुपार्श्व ७ चंद्रप्रभ ८ पुष्पदंत ९ शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमलनाथ १३, अनंत १४, धर्म १५, शांति १६, कुंथु १७, अरः १८, मल्लि १९, तीन शल्यके नाशकरणहारे अर मुनीनिके इंद्र मुनिसुव्रत ॥ २० ॥ अर नमिनाथ २१, इक्कीस तीर्थंकर तौ मुक्ति होय चुके अर बाईसवां मैं नेमिनाथ २२, अर तेइसवां पार्श्वनाथ २३ अर चौबीसवां महावीर यह दोय होनहार हैं यह चौबीस तीर्थंकरनिके नाम कहे सो इन चौबीसमें आठ तो पूर्वभवविषैं जम्बूद्वीपके विदेहके अर पांच पूर्वभवविषैं भरतक्षेत्रके अर सात धातकीखंडद्वीपके अर चार पुष्करार्द्धद्वीपके ॥ ४३ ॥ अर पूर्वभवकी इनकी नगरीके नाम कहै हैं ऋषभनाथ अर शांतिनाथ इनकी पूर्वजन्मकी पुंडरीकणीनामा पुरी अर अजितनाथकी पूर्वजन्मकी सुसीमानामा पुरी बहुरि अरःनाथकी पूर्वजन्मकी क्षेमपुरी अर कुंथुनाथ संभवनाथ अभिनंदन इनकी पूर्वजन्मकी

रत्नसंचयनामा पुरी अर मल्लिनाथकी पूर्वजन्मकी बीतशोका नामा पुरी इन आठ तीर्थंकरनिकी पूर्वभवकी पुरी जंबूद्वीपके विदेहकी जानो अर मुनिसुव्रतनाथकी पूर्वभवकी यह भरतक्षेत्रकी चंपा नामा नगरी और नमिनाथके पूर्वभवकी कौशांबी नामा पुरी अर नेमिनाथके पूर्वभवकी पुरी हस्तिनापुरी अर पार्श्वनाथकी पूर्वजन्मकी अयोध्यानामा पुरी अर महावीरकी पूर्वजन्मकी छत्राकारनामा पुरी यह पांच पुरी भरतक्षेत्रके पुर जानो ॥४६॥ अर सुमतिनाथकी पूर्वभवकी घातकीखंडद्वीपकी पुंडरीकणीनामा पुरी अर पद्मप्रभकी पूर्वभवकी घातकीखंडनामा द्वीपकी सुसीमानामा नगरी अखंड है लक्ष्मी जाविषैं अर सुपार्श्वनाथकी पूर्वभवकी क्षेमपुरी घातकीखंड द्वीपविषै प्रसिद्ध अर चंद्रप्रभकी पूर्वभवकी रत्नसंचयनामा पुरी सोहू घातकीखंडविषैं है यह तो घातकीखंडके प्रथम मेरुकी विदेह संबंधी जानो अर पुष्पदंतकी तथा शीतलनाथकी अर श्रेयांसनाथकी अर वासुपूज्य इन चारोंकी नगरीनिके वेही नाम पुंडरीकणी सुसीमा क्षेमपुरी अर रत्नसंचय ॥ ४८ ॥ परंतु वे चार घातकीखंड द्वीपकी अर यह चार पुष्करार्द्ध द्वीपकी बहुरि घातकीखंडद्वीपविषैं दोय मेरु तिनमें दूजे मेरु संबंधी दूजा ऐरावतक्षेत्र ताविषैं अरिष्टपुरनामा नगर सो अनंतनाथके पूर्वभवका पुर जानो ॥ ५० ॥ अर घातकीखंडविषै पहला मेरु ता संबंधी तहांका भरतक्षेत्र तहां महापुरनामा नगर सो विमलनाथके पूर्वभवका पुर है अर वाही द्वीपमें अर वाही क्षेत्रमें भद्रिलपुर नामा नगर सो धर्मनाथका पूर्वभवका पुर जानो ॥ ५१ ॥ यह चौबीसों तीर्थंकरके पूर्वभव जन्मके—परजन्मके पुर जानो अर चौवीसों जिनराजके पूर्वभवके नाम कहै हैं। वज्रनाभ १, विमल २, विपुलवाहन ३, महाबल ४ अतिबल ५ अपराजित ६, नंदिषेण ७, पद्म ८, महापद्म ९, अर पद्मगुल्म १०, नलिनगुल्म ११, पद्मोत्तर १२, पद्मासन १३, पद्म १४ दशरथ १५ मेघरथ १६ सिंहरथ १७ घनपति १८ वैश्रवण १९ श्रीधर्मा २०, सिद्धार्थ २१, सुप्रतिष्ठ २२, आनंद २३ नंदन २४ यह चौबीस पूर्व जन्मके नाम कहे तिनमें सुप्रतिष्ठ मेरा नाम हुता मैं सुप्रतिष्ठके भवतैं चयकरि जयंतनामा विमाणविषैं गया तहांसूं चयकरि नेमिनाथ भया ॥ ५६ ॥ अर पहिला जिनवर ऋषभ सो तो

पूर्वभवविषैं महा मंडलेश्वर राजा हुते अर ग्यारह अंगके पाठी हुते अर पूर्वनिविषै हू प्रबोध हुता अर कनक समान प्रभाके धारक हुते अर सबही पूर्वभवविषैं सिंहनिःक्रीडतादि तपोंके करणहारे अर एक मास मात्र प्रायोपगमन सन्यासके धरणहारे अर सबही यथायोग्य स्वर्गलोक गए तहांसूं चयकरि तीर्थेश्वर भए ॥ ५८ ॥ अर इनके पूर्व भवनिके दीक्षादायक गुरु तिनके नाम सुनो। वज्रसेन १, अरिंदम २ स्वयंप्रभ ३, विमलवाहन ४, सीमंधर ५, पिहताश्रव ६, आरिंदव ७, युगंधर ९, सर्वजनानंद ९, उभयानंद १०, वज्रदत्त ११, वज्रनाभि १२, सर्वगुप्त १३, त्रिगुप्त १४ चिंत्तारक्ष १५ विमलवाहन १६ धनरथ १७ संवर १८ वरधर्म १९ सुनंद २० आनंद २१ वीतशोक २२ दामर २३ प्रोष्टल २४ ये चौवीस पूर्वभवके इनके दीक्षागुरु ये सबही वंदिवे योग्य स्तुति करिवे योग्य निर्मल आचारके धारक संवरकरि शोभित मोक्षके मूल जानहु ॥ ६४ ॥

अथानन्तर—चौवीसों तीर्थंकर जिस जिस धामसूं आये सो सुनो आदिनाथ धर्मनाथ शांतिनाथ कुंथुनाथ ये चार जिनराज तो सर्वार्थसिद्धिसूं आये अर अभिनंदन स्वामी विजयनामा विमाणसे आये ॥ ६५ ॥ अर चंद्रप्रभ अर सुमतिनाथ यह दोऊ वैजयंत विमाणसूं आये अर नमिनाथ अर मल्लिनाथ यह दोऊ अपराजितनामा विमाणसूं आये यह पंचानुत्तरके आये कहे। अर पुष्पदंत पंद्रहवें आरणनामा स्वर्ग तहांतैं आये अर शीतलनाथ अच्युतनामा सोलहवां स्वर्ग तहांके पुष्पोत्तरनामा विमाणतैं आये अर श्रेयांसनाथ अर अनंतनाथ अर महावीर यह बारहवें सहस्रारनामा स्वर्ग तहांतैं आये ॥ ६७॥ अर विमलनाथ अर पार्श्वनाथ अर मुनिसुव्रत अर संभवनाथ सुपार्श्वनाथ पद्मप्रभु यह ग्रैवेयकतैं आये हैं तिनमें अधोग्रीव मध्यग्रीव उपरिमग्रीव जाननी अर वासुपूज्यस्वामी महाशुक्रनामा दसवां देवलोक तहांतैं आये ॥६९॥ ये तीर्थंकरनिके आवनेके स्वर्ग बताये अब चौवीस तीर्थंकरोंके जन्मके दिवस कहै हैं ऋषभदेवका जन्म चैत्रवदी नवमी अर अजितका माघ सुदी दशमी अर संभवनाथका मार्गशीर्षसुदी पूर्णमासी अर अभिनंदनका माघसुदी बारस अर सुमतिनाथका श्रावणसुदी ग्यारस अर पद्मप्रभका कार्तिकबदी

६३३

तेरस अर सुपार्श्वनाथका जेठ सुदी बारस अर चंद्रप्रभका पोषबदी ग्यारस अर पुष्पदंतका मार्गशीर्ष सुदी पडवा अर शीतलनाथका माह बदी तेरस ॥ ७४ ॥ अर श्रेयांसनाथका फागुणबदी ग्यारस अर वासपूज्यका फागुणवदी चौदश अर विमलनाथका माह सुदी चौदस अर अनंतनाथका जेठबदी बारस अर धर्मनाथका माह सुदी तेरस अर शांतिनाथका जेठबदी चौदश अर कुंथुनाथका वैशाखसुदी पडवा अर अरनाथका मार्गशीर्षसुदी चौदश अर मल्लिनाथका मार्गशीर्षसुदी ग्यारस अर मुनिसुव्रतका आसोजसुदी बारस ॥ ७९ ॥ अर नमिनाथका आषाढबदी दशमी अर नेमिनाथका वैशाखसुदी तेरस अर पार्श्वनाथका पौषवदी ग्यारस अर महावीरका चैत्रसुदी तेरस ॥८१॥ ये सब ही तीर्थेश्वर धर्मतीर्थके नायक अर अनंतवीर्यके धारक हैं अर महा निर्मल स्वरूप हैं शांतिके कर्त्ता हैं आतापके हर्त्ता हैं इनकी महिमा केवलज्ञान ही गम्य है ये सब समान हैं कालके योगकरि आयुकी अर कायकी लघुता अर दीर्घता है अर किसी प्रकार लघुता दीर्घता नाहीं है यह तीर्थंकरोंके जन्मके दिन कहे अर आगे इनके माता पिताके नाम अर जन्मक्षेत्र अर जन्मभूमि अर जिनवृक्षोंके नीचे दीक्षा धारी ते वृक्ष अर निर्वाणभूमि कहैं हैं सो तू सुनि याभांति केशवकूं नेमिजिनेंद्र कहते भए अर राजा श्रेणिकतैं गौतमस्वामी कहते भए ऋषभदेवके पिता नाभि माता मरुदेवी अर जन्मनक्षत्र उत्तराषाढ अर जन्मभूमि अयोध्या अर दीक्षा धरिवेका वृक्ष बड अर निर्वाणभूमि कैलाश अर अजितका पिता राजा जितशत्रु माता विजया जन्मनक्षत्र रोहिणी जन्मभूमि अयोध्या अर दीक्षाव्रत सप्तच्छद अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ॥ ८४ ॥ अर संभवनाथका पिता राजा जितारि अर माता सेनाराणी अर जन्मका ज्येष्ठा नक्षत्र अर जन्मपुरी श्रावस्ती अर दीक्षाका सालवृक्ष अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ये तीर्थंकरोंके माता पितादिक तिहारी रक्षा करो अर तुमको आनंदके अर्थी होहु अर अभिनंदनका पिता राजा संवर अर माता सिद्धार्था पुरी अयोध्या अर जन्मका पुनर्वसु नक्षत्र अर सरल जातिका दीक्षावृक्ष अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर अर सुमतिनाथका पिता राजा मेघप्रभ अर सुमंगला नामा जननी अर जन्मनक्षत्र मघा अर जन्मपुरी

अयोध्या अर दीक्षावृक्ष प्रियंगु अर निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर। वे भगवान सुमतिनाथ तोहि सुमति देहु अर पद्मप्रभका पिता राजा धरण माता राणी सुसीमा अर जन्म नक्षत्र चित्रा अर जन्मपुरी कौशांवी अर दीक्षावृक्ष प्रियंगु अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥८८॥ भगवान पद्मप्रभु तुझे मंगलके दाता होवो अर सुपार्श्वनाथका पिता राजा सुप्रतिष्ठ माता राणी पृथिवी अर जन्मनक्षत्र विशाखा अर जन्मपुरी काशी अर दीक्षावृक्ष सिरीष अर निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर ॥ ८९ ॥ अर चन्द्रप्रभका पिता राजा महासेन अर माता लक्ष्मणा जन्मभूमि चंद्रपुरी जन्मनक्षत्र अनुराधा अर दीक्षातरु नागवृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥९०॥ अर पुष्पदंतका पिता राजा सुग्रीव अर माता रानीरामा अर जन्मनक्षत्र मूल जन्मपुरी काकंदी अर दीक्षातरु शालिवृक्ष अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ऐसे पुष्पदंत तुझे परमपदके दाता होहु ॥ ९१ ॥ अर शीतलनाथका पिता राजा दृढरथ अर माता रानी सुनन्दा अर जन्मपुरी भद्रला जन्मनक्षत्र पूर्वाषाढ अर दीक्षाका पलासवृक्ष अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर ॥ ९२ ॥ अर श्रेयांसका पिता राजा विष्णु अर माता विष्णुश्री अर जन्मनक्षत्र श्रवण अर जन्मभूमि सिंहनादपुर अर दीक्षावृक्ष तिन्दुक अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह श्रेयांसनाथ तुझे कल्याणके कर्त्ता होवो ॥ ९३ ॥ अर वासुपूज्यका पिता राजा वसुपूज्य अर माता राणी पटला अर जन्मनक्षत्र सतभिषा अर जन्मपुरी चंपापुर अर दीक्षा वृक्ष जयांश्रीप अर निर्वाणभूमि चंपापुरीही जानो ॥ ९४ ॥ अर विमलनाथका पिता राजा कृतवर्मा अर माता राणी शर्मा अर जन्मनक्षत्र उत्तरा भाद्रपद अर जन्मपुरी कांपिल्य अर दीक्षाका जम्बूवृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह भगवान विमल तुझे निर्मल करो अर तेरी शल्य हरो ॥ ९५ ॥ अर अनन्तनाथका पिता राजा सिंहसेन अर जननी सर्वयशा अर जन्मपुरी अयोध्या अर जन्म नक्षत्र रेवती अर दीक्षावृक्ष पीपल अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर वह भगवान अनन्त तुम भव्यजीवोंको अन्तरहित करो ॥ ९६ ॥ अर धर्मनाथका पिता राजा भानु अर माता राणीसुव्रता अर जन्मनक्षत्र पुष्य अर जन्मभूमि रत्नपुर अर दीक्षावृक्ष दधिपर्ण अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेद-

शिखर ऐसे धर्म्मनाथ तुम भव्यजीवोंको धर्मके दाता होवो ॥ ९७ ॥ अर शान्तिनाथका पिता राजा विश्वसेन अर माता राणी ऐरा अर जन्म नक्षत्र भरणी अर जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष नन्दी अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ते शांतिजिनेश्वर तुमकूं परमशांतिके कर्ता होवो ॥ ९८ ॥ अर कुंथुनाथका पिता राजा सूर्य अर माता श्रीमति अर जन्मनक्षत्र कृतिका अर जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष तिलकतरु अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर ते कुंथुजिनेश्वर तिहारे दोष निवारो बहुरि अरनाथका पिता सुदर्शन अर माता सुमित्रा अर जन्म नक्षत्र रोहिणी जन्मभूमि हस्तिनागपुर अर दीक्षावृक्ष आम्र अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर यह अरनाथ स्वामी तिहारे अशुभकर्म निवारो ॥ १०० ॥ अर मल्लिनाथका पिता राजा कुंभ अर माता रानी रक्षिता अर जन्म नक्षत्र अश्विनी अर जन्मभूमि मिथिलापुरी दीक्षावृक्ष अशोक अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर वे भगवान मल्लि तिहारे रागादिक मल हरो अर मुनिसुव्रतनाथका पिता सुमित्र अर माता राणी पद्मावती अर जन्मनक्षत्र श्रवण अर जन्मभूमि कुशाग्रपुर अर दीक्षावृक्ष चंपक अर मुक्तिक्षेत्र सम्मेदशिखर वह भगवान मुनिसुव्रत तुमकूं परम आनंदके दायक होवो अर नेमिनाथका पिता राजा विजय अर माता राणी वप्रा अर जन्म नक्षत्र अश्वनी अर जन्मपुरी मिथिला अर दीक्षावृक्ष मौलसरी अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर वे भगवान नेमिनाथ तिहारे अशुद्धभाव हरो, क्रोध मान माया लोभकी निवृति करो ॥ ३ ॥ अर नेमिनाथका पिता राजा समुद्रविजय माता शिवदेवी जन्मनक्षत्र चित्रा जन्मभूमि सौर्यपुर अर दीक्षावृक्ष मेषश्रणी अर निर्वाणभूमि गिरनारगिर ॥ ४ ॥ अर पार्श्वनाथका पिता राजा अश्वसेन अर माता राणी वर्मा अर जन्म नक्षत्र विशाखा अर जन्मपुरी बानारसी जाका नाम काशी भी कहै हैं अर दीक्षावृक्ष धव अर निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखर अर महावीरका पिता राजा सिद्धार्थ अर माता प्रियकारिणी अर जन्मनक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी अर जन्मभूमि कुण्डलपुर अर दीक्षाका साल वृक्ष अर निर्वाणक्षेत्र पावापुर वे भगवान अंतिम तीर्थंकर तिहारे कर्म निवारो अर आनन्द

के कर्ता होवो ॥ ६ ॥ दीक्षा धरनेके वृक्ष हैं तिनको चैतवृक्ष भी कहे हैं सो महावीरके तो यह बत्तीस धनुष ऊंचा है अर अन्य सबोंके देहकी उच्चतासे द्वादश गुणा है ॥७॥ अर निर्वाण गमनके नक्षत्र कहे हैं सुपार्श्वनाथका निर्वाण नक्षत्र अनुराधा अर चंद्रप्रभुका निर्वाणनक्षत्र ज्येष्ठा अर श्रेयांसका धनिष्ठा नक्षत्र अर वासुपुज्यका नक्षत्र अश्विनी विमलनाथका भरणी अर महावीरका स्वाति नक्षत्र अर अन्य सबोंके जन्मनक्षत्रही निर्वाणनक्षत्र जानो यह निर्वाण कल्याणके नक्षत्र कहे अर शांति, कुन्थ, अरह यह तीन तीर्थंकर तो चक्रेश्वरही भए अर अन्य सब तीर्थेश्वर महा मंडलेश्वर भए ॥ १० ॥ अर चन्द्रप्रभ पुष्पदंत यह दोय शुक्लवर्ण भए अर मुनिसुव्रत अर नेमिनाथ यह दोनों अंजनगिरसमान श्याम सुन्दर भए अर पद्मप्रभु कमलके रंग समान अरुण भए अर वासुपुज्य केसलाके पुष्प समान अरुण वर्ण भए अर सुपार्श्वनाथ प्रियंगुमणि समान हरित वर्ण भए अर पार्श्वनाथ मेघघटा समान सुंदर वर्ण भए अर अन्य सोलह सोलह पानीके ताए स्वर्ण समान जानो अर मुनिसुव्रत अर नेमिनाथ ये दोऊ पहले कृष्ण वर्ण कहे तिनमें मुनिसुव्रत तो अंजनगिरि समान श्याम जानो अर नेमनाथ नीलकंठ जो मयूर ताके कंठ समान वर्ण जानो ॥ १४ ॥ अर वासुपुज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर यह पांच तो कुमार कालविषैं मुनि भए इन्होंने विवाह न किया अर राज भी न किया अर अन्य सब राजाभए अर विवाहकिए अर राज तज वैराग्य भए ॥ १५ ॥ अर ऋषभका तप कल्याणक द्वारिकाविषै अर अन्य सबोंका जन्मभूमिविषैं तपकल्याणक जानों ॥ १६ ॥ अर मल्लिनाथ पार्श्वनाथ यह तो दीक्षा लिए पीछे तेले पारनेका नेम करते भए अर वासुपुज्य स्वामी इकन्तरा उपवास धारते भए अर सब वेले पारणे करते भए अर ऋषभ देव प्रथम छै महीने उपवास धारते भए बहुरि छै महीनेका अंतराय भया अर ता पीछे बेले पारणा ही किया अर श्रेयांसनाथ सुमतिनाथ अर मल्लिनाथ यह तीनों पूर्वांनुसमयं दीक्षा धारते भए अर और सब अपरान्ह कालविषै तप धारते भए ऋषभदेव तो सिद्धार्थ बनविषैं मुनि भए अर महावीर ज्ञातृवनविषैं जिनदीक्षा धारी अर वासुपुज्य क्रीडोद्यान नामा

वनविषै वैराग्य धारा अर धर्मनाथ वप्रका नामा वनविषै विरक्त भए अर पार्श्वनाथ मनोरमा नामा उद्यानविषैं यती भए अर मुनिसुव्रतनाथ नील गुफाके निकट निर्ग्रंथ भए अर और सब तीर्थंकर नगरके निकट सहस्राम्र नामा वनविषैं वीतरागता धारते भए ॥ २१ ॥ अब चौवीसों जिनराजोंको तपकल्याणकी पालकियोंके नाम कहै हैं— सुदर्शना १ सुप्रभा २ सिद्धार्था ३ अर्थसिद्धा ४ अभयंकरी ५ निवृत्तिकरी ६ मनोरमा ७ मनोहरा ८ सूर्यप्रभा ९ शुक्रप्रभा १० विमलप्रभा ११ पुष्पप्रभा १२ देवदत्ता १३ सागरदत्तिका १४ नागदत्ता १५ सिद्धार्थतिथिका १६ विजया १७ वैजयंती १८ जयंती १९ अपराजिता २० उत्तरकुरु २१ देवकुरु २२ विमलाभा २३ चन्द्राभा २४ यह चौवीस जिनवरोंका अनुक्रमतैं चौवीस पालकी जाननी ॥२६॥ अब चौवीसोंकी दीक्षातिथि कहै हैं ऋषभदेवकी चैत्रवदी नवमी अर मुनिसुव्रतका बैशाख बदी नवमी अर कुंथुनाथका वैशाख सुदी पडवा अर सुमतिनाथकी वैशाख सुदी नवमी अर अनंतनाथकी ज्येष्ठवदी बारस अर शांतिनाथकी जेठवदी तेरस अर सुपार्श्वनाथकी ज्येष्ठ सुदी वारस अर नमिनाथकी आषाढ वदी दशमी अर नेमनाथकी सावण सुदी चौथ अर पद्मप्रभकी कार्तिक बदी तेरस अर महावीरकी मार्गशिर बदी दशमी अर पुष्पदंतकी मार्गशिर सुदी पडवा ॥ ३२ ॥ अर अरनाथकी मार्गशिर सुदी दशमी अर सम्भवनाथकी मार्गशिर सुदी पूर्णमासी अर मल्लिनाथकी मार्गशिर सुदी एकादशी अर चन्द्रप्रभ अर पार्श्वनाथ इन दोऊकी पौष वदी एकादशी ॥ ३४ ॥ अर शीतलनाथकी माहवदी द्वादशी अर विमलनाथकी माह सुदी चतुर्थी अर अजितनाथकी माहसुदी नवमी अर अभिनन्दनकी माह सुदी द्वादसी अर धर्मनाथकी माह सुदी त्रयोदशी ॥ ३६ ॥ अर श्रेयांसनाथकी फागुण बदी तेरस अर वासुपूज्य फागुण बदी चौदस ॥ ३७ ॥ ये सबोंकी दीक्षातिथि जानो अर आदिनाथ स्वामी तो दीक्षाधरे पीछे वरसवें दिन पारणाकिया ॥३८॥ अर औरोंने तीजे दिन पारणा किया अर मल्लिनाथ पार्श्वनाथ इन दोऊने तेलापरणा किया अर वासुपूज्य एकन्तरे पारणा किया ऋषभ देव तो पारणाविषै पवित्र इक्षु रस लिया औरनि गायके दूधकी खीरका पारणा किया।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके प्रथम पारणेके पुरोंके अनुक्रतैं नाम कहे हैं हस्तिनापुर १ अयोध्यापुरी २ श्रावस्ती ३ विनीता ४ विजयपुर ५ मंगलपुर ६ पाटलीखंड ७ पद्मखंड ८ श्वेतपुर ९ अरिष्टपुर १० इष्टपुर ११ सिद्धार्थपुर १२ महापुर १३ धान्यपुर १४ वर्द्धमानपुर १५ सौमनसपुर १६ मन्दपुर १७ हस्तिनापुर १८ चक्रपुर १९ मिथलापुर २० राजग्रहपुर २१ द्वारावतीपुर २२ काम्यकृतपुर २३ कुण्डलपुर २४ यह चौबीसों जिनराजके प्रथम पारणाके पुर कहे अब प्रथम पारणा देनहारोंके अनुक्रमतैं नाम कहे हैं सो तुम सुनो राजा श्रेयांस १ ब्रह्मदत्त २ सुरेंद्रदत्त ३ इन्द्रदत्त ४ पद्मक ५ सोमदत्त ६ महादत्त ७ सोमदेव ८ पुष्पक ९ पुनर्वसु १० सुनंद ११ जय १२ विशाख १३ धर्मसिंघ १४ सुमित्र १५ धर्ममित्र १६ अपराजित १७ नंदिषेण १८ वृषभदत्त १९ दत्त २० सन्नय २१ बरदत्त २२ धन्य २३ वकुल २४ यह चौबीसों प्रथम पारणा देन हारोंके नाम कहे हैं ते महा भव्य हैं इन सबोंके पंचाश्चर्य भये ॥५१॥ सो साढे बारह कोडि अर इतनेही हजार रतन वर्षे ॥५२॥ अर इन चौबीसों प्रथम पारणा देनहारोंमें आदिके दोय तो श्यामसुन्दर अर सब ताये हुये सुवर्ण समान ॥ ५३ ॥ इनमें कईएक तो तद्भव मुक्ति गये अर कईएक तीजे भव मुक्ति गये ऋषभ मल्लि पार्श्वनाथकूं तो तेला व्यतीत भये केवल उपजा अर वासुपूज्यकूं एक उवासके दूजे दिन केवल उपज्या अर और सबनिकूं बेला व्यतीत भये केवल उपज्या ॥ ५५ ॥ अब चौबीसों जिनराजोंके केवलकल्याणकके क्षेत्र कहे है ऋषभदेवका केवल कल्याणक तौ पुरमित्तालनामा नगर ताके निकट सकटासुख नामा बनविषैं अर नेमिनाथका गिरनारगिरविषै अर पार्श्वनाथका काशीके निकट ॥५६॥ अर महावीरका ऋजुकूटा नामा नदीके तट और तीर्थकरोंका केवलकल्याणक महामनोहर बनविषैं होता भया ॥ ५७ ॥ अर ऋषभदेव श्रेयांसनाथ मल्लिनाथ अर नेमनाथ पार्श्वनाथ इनकूं तो केवलज्ञानकी उत्पत्ति प्रभातसमय भई अर औरनिकूं केवलोत्पत्ति दिनके पिछले पहर भई ॥ ५८ ॥ अर ऋषभदेवके केवल उपजनेकी तिथि फागुण बदी एकादशी अर मल्लिनाथकी फागुण बदी द्वादशी अर मुनिसुब्रतकी फागुन बदी छठ अर सुपार्श्वनाथ

६३

चन्द्रप्रभ इन दोऊकी फागुण बदी सप्तमी अर पार्श्वनाथ चैत बदी चतुर्थी ॥ ६० ॥ अर अनंतनाथकी चैतवदी अमावस्या अर नमिनाथ चैतसुदी तृतीया कुंथुनाथकी चैतसुदी दशमी अर सुमतिनाथ अर पद्मप्रभुकी चैतसुदी दशमी अर महावीरकी बैसाख सुदी दशमी अर नेमिनाथ आसोज सुदी एकम अर सम्भवनाथकी कार्तिक बदी पंचमी अर पुष्पदंतकी कार्तिक सुदी तृतीया बहुरि अरनाथकी कार्तिक सुदी द्वादशी ॥६३॥ अर शीतलनाथकी पौष वदी चौदश अर विमलनाथकी पौष सुदी दशमी अर शांतिनाथकी पौष सुदी ग्यारस अर अजिनाथकी पौषसुदी चतुर्दशी अर अभिनंदन अर धर्मनाथकी पौषसुदी पूर्णमासी ॥६५॥ अर श्रेयांसनाथकी माह बदी अमावस्या अर वासुपूज्यकी माह सुदी दोज॥ ६६ ॥ ये चौवीसों तीर्थंकरनिका केवल उपजनेकी तिथि कही।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंका निर्वाणतिथि कहे हैं ऋषभदेवका निर्वाणतिथि माह वदी चतुर्दशी अर पद्मप्रभकी फाल्गुण वदी चौथ अर सुपार्श्वनाथका फागुणबदी छठ अर मुनिसुव्रतकी फागुण वदी बारस, मल्लिनाथ अर वासुपूज्य इनकी फागुण सुदी पंचमी ॥ ६८ ॥ अर अनन्तनाथ बहुरि अरनाथ इन दोऊनिकी चैतवदी अमावस्या अर अजितनाथकी चैत सुदी पंचमी अर संभवनाथकी चैत सुदी छठ अर सुमतिनाथकी चैत सुदी दशमी अर नमिनाथका बैशाख बदी चतुर्दशी अर कुंथुनथका वैसाख सुदी प्रतिपद अर अभिनंदनकी वैशाख सुदी सप्तमी अर शांतिनाथकी जेठ बदी चतुर्दशी अर धर्मनाथका जेठ सुदी चौथ अर विमलनाथकी आषाढबदी अष्टमी अर नेमिनाथकी आषाढ सुदी अष्टमी अर पार्श्वनाथकी श्रावण सुदी सप्तमी अर श्रेयांसनाथकी श्रावण सुदी पूर्णमासी अर चंद्रप्रभकी भादवा सुदी सप्तमी पुष्पदंतकी भादवा सुदी अष्टमी अर शीतलनाथकी आसोज सुदी पंचमी अर महाबीरकी कार्तिक बदी चतुर्दशी यह चौवीसों तीर्थेश्वरोंकी निर्वाण तिथि कही ॥ ७६ ॥ अर ऋषभ अजित श्रेयांस शीतल अभिनंदन सुमति सुपार्श्व चंद्रप्रभ यह प्रभु तो पूर्वाह्न कहिए दिनके पहिले पहर मुक्त भए अर संभव पद्मप्रभ पुष्पदंत वासुपूज्य यह दिनके पिछलेपहर मुक्त भए अर विमल अनंत

नाथ शांतिनाथ कुंथुनाथ मल्लिनाथ मुनिसुव्रत नेमिनाथ पार्श्वनाथ इनकी मुक्ति रात्रिसमय भई अर धर्मनाथ अरहनाथ नमिनाथ अर महावीर इनकी मुक्ति अरुणोदय बेला भई यह तीर्थंकरनिका मुक्ति होनेका समय कहा यह सबही तीर्थंकर धर्मके कर्ता अर कर्मके हर्ता हैं ॥ ८० ॥ अर ऋषभ वासुपूज्य अर नमिनाथ तो पद्मासनतैं मुक्ति भए और सब कायोत्सर्ग आसनतैं मुक्त भए अर आदि तीर्थंकर अंतिम तीर्थंकर इनके दोयके तो चौदह दिन पहले समोसरन विघटा अर दिव्यध्वनि खिरनेतैं रही अर अर सबोंके समोसरण एक महीने पहिले विघटा अर दिव्यध्वनि खिरनेसे रही ॥ ८२ ॥

अथानंतर—चौबीसों जिनेंद्रनिकी लार जेते मुक्त गए तिनकी संख्या कहै हैं महावीरके साथ छब्बीस मुनि मुक्त भए अर पार्श्वनाथके साथ पांचसौ छत्तीस अर उतने ही नेमनाथ अर मल्लिनाथके साथ पांचसौ मुनि अर शांतिनाथके साथ नवसौ मुनि अर धर्मनाथके साथ आठसौ एक मुनि अर विमलनाथके साथ छैहजार सातसौ बारह ॥८५॥ अर अनंतनाथके साथ सात हजार पांचसौ सात अर पद्मप्रभुके साथ तीन हजार आठसौ अर ऋषभदेवके साथ दस हजार अर बाकी और तीर्थंकरनिके साथ एक एक हजार जानों यह चौबीसोंके साथ मुनि मुक्त भए तिनका कथन किया ॥ ८६ ॥ अब बारह चक्रवर्तीके नाम सुनो—भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शांति, कुंथु, अरनाथ, ॥ ८७ ॥ सुभूमि महापद्म हरिषेण जयसेन ब्रह्मदत्त यह बारह चक्रवर्ती षट् खंडनिके नायक हैं अब नव नारायण तिनके नाम कहैं हैं—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट २ स्वयंभू ३ पुरुषोत्तम ४ पुरुषसिंह ५ पुंडरीक ६ दत्त ७ लक्ष्मण ८ कृष्ण ९ यह नव वासुदेव तीनखंडके स्वामी अर्द्धचक्री शत्रूनिके प्रतापकूं खंडित करणहारे हैं ॥ ९० ॥ अर इनके बडे भाई बलभद्र तिनके नाम सुनो—विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नंदीमित्र, राम, पद्म यह नव बलभद्र कहे ॥ ९१ ॥ अर नारायणके शत्रु प्रतिनारायण नव तिनके नाम सुनो—अश्वग्रीव, तारक, मेरुक, निशंभु, मधुकैटभ बली प्रहरण रावण जरासिंधु यह नव प्रतिवासुदेव कहे तिनमें आठ तो विद्याधर अर एक जरासिंध

भूमिगोचरी ॥ ९३ ॥ यह नारायण प्रतिनारायण बलिभद्र नव नव कहे तिनमें बलिदेव तो ऊर्द्धगामी हैं इन पूर्व भवविषैं भोगाभिलाष रहित तप किया है अर अर्द्धचक्री हरि प्रतिहरि इन निदान सहित महातप किया है यातैं वैराग्यके अधिकारी नाहीं ॥ ९५ ॥ अब यह चक्रवर्त्यादि जासमय भये सो समय कहे हैं पहला भरत चक्रवर्ती तो ऋषभ देवके समय भया अर दूजा सगर अजितनाथके समय भया अर तीजा मघवा अर चौथा सनत्कुमार यह धर्मनाथकूं मुक्त भए पीछे शांतिनाथके पहले भए अर शांति, कुंथु, अरनाथ यह तीन चक्रवर्ती तीर्थंकर ही भए सो इनका वही समय अर आठवां सुभौम अरनाथ स्वामीकूं मुक्त भए पीछे मल्लिनाथ पहले भए ॥ ९६ ॥ अर मल्लिनाथकूं मुक्ति भए पीछे मुनिसुव्रतनाथ पहली भवमें महापद्म चक्रवर्ती भए अर मुनिसुव्रत पीछे अर नमिनाथ पहले दशवें चक्रवर्ती हरिषेण भए अर नमिनाथ पीछे नेमिनाथ पहिले ग्यारहवें चक्रवर्ती जयसेन भये अर नेमनाथ पीछे अर पार्श्वनाथ पहले बारहवें चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त यह बारह चक्रवर्ती तिनमें आठवां सुभौम सप्तमी धरागये अर बारहवां ब्रह्मदत्त भी उसी जगह अर तीजा मघवा अर चौथा सनत्कुमार यह दोऊ तीजे स्वर्गदेव भये बाकी आठों आठ कर्म हण निर्वाण गये अर जो स्वर्गादि विषै गये हैं सोहू थोडेही भवमें सिद्धपद पावेंगे यह महापुरुष मुक्तिहीके अधिकारी हैं ॥ ९९ ॥ अब नव नारायण कौन समय भये सो सुनो पहला नारायण तो श्रेयांसनाथके समय भया अर दूजा वासुपूज्यके समय भया अर तीजा विमलनाथके समय भया अर चौथा अनंतनाथके समय भया अर पांचवां धर्मनाथके समय भया यह पांच तो श्रेयांसनाथसे लेकर धर्मनाथके समय पर्यंत भये पहले नारायण त्रिपृष्ट ताहि आदि देय पुरुषसिंह पर्यंत यह पांच नारायण तो पांच तीर्थंकरनिके समय भये अर छठा पुण्डरीक नामा नारायण अरनाथ पीछे अर मल्लिनाथ पहले भया अर मल्लिनाथ पीछे अर मुनिसुव्रत पहले सातवां दत्त नामा नारायण भया ॥ १०० ॥ अर मुनिसुव्रतके पीछे अर नमिनाथके पहले आठवां नारायण लक्ष्मण भया अर नवां नारायण कृष्ण नेमनाथके समय है सो

प्रत्यक्ष नेमनाथकूं पद्म नामा बलिभद्र सहित धर्मके प्रश्न करे है ॥ १ ॥ इनमें पहला त्रिपृष्ट तो माघवी पधारे अर दूजा द्विपृष्ट तीजा स्वयंभू चौथा पुरुषोत्तम पांचवां पुरुषसिंह अर छठा पुण्डरीक यह पांच मघवी पधारे अर सातवां दत्त अरिष्ट पधारे आठवां और नवमां मेघा यह सब निर्वाणके अधिकारी हैं ॥ २ ॥ और बलिभद्र नव तिनमें विजय, अचल, स्वधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नन्दीमित्र, रामचन्द्र यह आठ तो आठों कर्म खपाय परमधाम पधारे अर नवमां पद्मनामा बलदेव कृष्णका ज्येष्ठ भ्राता मुनिव्रतधरि पांचवां ब्रह्मस्वर्ग तहां देव होवेंगे अर कृष्ण तीर्थेश्वर पद धारेंगे तिनके समय बलिभद्र सिद्धपद पावेंगे यह सब शलाका पुरुष सिद्धक्षेत्रके पात्र हैं।

अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके शरीरकी उच्चता कहे हैं ऋषभदेवका शरीर ऊंचा धनुष पांच सौ और अजितनाथका साढे चार सौ अर सम्भवनाथका चार सौ अभिनंदनका साढे तीन सौ अर सुमतिनाथका तीनसौ पद्मनाथका अढाई सौ अर सुपार्श्वनाथका दोय सौ चद्रप्रभका डेढ सौ पुष्पदंतका सौ धनुष यहांतक पचास पचास धनुष घटे शीतलनाथका शरीर धनुष नव्वे श्रेयांसका धनुष अस्सी वासुपूज्य सत्तर, विमलका साठ अनन्तनाथका पचास यहां तक दश दश धनुष घटे धर्मनाथका शरीर धनुष पैंतालीस शान्तिनाथका चालीस कुन्थुनाथका पैंतीस अरनाथका तीस मल्लिनाथका पच्चीस मुनिसुव्रतका वीस, नमिनाथका पंद्रह, नेमनाथका दश धनुष यहां तक पांच पांच धनुष घटे अर पार्श्वनाथका शरीर नव हाथ अर वर्द्धमानका हाथ सात यह तीर्थंकरनिकी देहकी ऊंचाई कही अर चक्रवर्तीनिके देहकी उच्चता कहे हैं पहले चक्रवर्तिका देह धनुष पांच सौ ऊंचा दूसरेका साढे चार सौ तीसरेका धनुष साढे बियालीस चौथेका साढे इकतालीस पांचवेंका चालीस छठेका पैंतीस सातवेंका तीस आठवेंका अठाईस नवमेंका बाईस दशवेंका बीस ग्यारहवेंका चौदह बारहवेंका धनुष सात यह चक्रवर्तीनिके शरीरकी ऊंचाई कही ॥१॥ अब नव नारायण अर नव प्रतिनारायण अर नव बलभद्र इनके शरीरकी ऊंचाई कहे हैं धनुष अस्सी, सत्तर, साठ पचास चालीस छब्बीस बाईस सोलह अर दश धनुष यह ऊंचाई नारायण प्रतिनारायण और बलिभद्रोंके

शरीरकी कही। नारायण प्रतिनारायण बलिभद्र यह तीन पदवीके धारक एक समयमें होवें इसलिये कायकी ऊंचाई तो तीनोंका समान है अर आयुमें किंचित भेद है सो आगे कहै हैं अब चौबीसों तीर्थंकरोंकी आयु कहै हैं ऋषभदेवकी आयु चौरासीलाख पूर्व और अजितनाथकी बहत्तर लाख पूर्व सम्भवनाथकी साठ लाख पूर्व अभिनंदनकी पचास लाख पूर्व सुमतिनाथकी चालीस लाख पूर्व पद्मप्रभकी तीस लाख पूर्व सुपार्श्वनाथकी बीस लाखपूर्व चंद्रप्रभकी दश लाख पूर्व पुष्पदन्तकी दोय लाख पूर्व और शीतलनाथकी एक लाख पूर्व यहां तक तो पूर्वकी आयु भई अर श्रेयांसकी चौरासी लाख वर्ष वासुपूज्यकी बहत्तर लाख वर्ष विमलनाथकी साठ लाख वर्ष अनन्तनाथकी तीसलाख वर्ष धर्मनाथकी दशलाख वर्ष शांतिनाथकी एकलाख वर्ष ॥ १३ ॥ अर कुंथुनाथकी पिचाणवें हजार वर्ष अरनाथकी चौरासी हजार वर्ष अर मल्लिनाथकी पचपन हजार वर्ष मुनिसुव्रतकी तीसहजार वर्ष नमिनाथकी दश हजार वर्ष नेमिनाथकी एक हजार वर्ष पार्श्वनाथकी सौ वर्ष महावीरकी बहत्तर वर्ष यह तीर्थंकरनिकी आयु कही वे तीर्थंकर तोहि मंगलके कर्त्ता होओ ॥ १५ ॥ अर बारह चक्रवर्तीनिकी आयु कहे हैं पहला भरत ताकी आयु चौरासी लाख पूर्व अर दूसरेकी बहत्तर लाख पूर्व तीसरकी पांच लाख वर्ष चौथेकी तीन लाख वर्ष पांचवेंकी एक लाख वर्ष छठेकी पिचानवें हजार वर्ष सातवेंकी चौरासी हजार वर्ष आठवेंकी साठ हजार वर्ष, नवमेंकी तीस हजार वर्ष, दशवेंकी छब्बीस हजार वर्ष, ग्यारहवेंकी तीन हजार वर्ष, वारहवेंकी सात सौ वर्ष, यह चक्रवर्तीकी आयु कही। अब नव नारायणोंकी आयु सुनो पहलेकी चौरासी लाख वर्ष, अर दूसरेकी बहत्तर लाख वर्ष तीसरकी साठ लाख वर्ष चौथेकी तीस लाख वर्ष पांचवेंकी दश लाख वर्ष छठेकी साठ हजार बर्ष सातवेंकी तीस हजार बर्ष आठवेंकी बारह हजार वर्ष नवमेंकी एक हजार वर्ष यह नारायणकी आयु कही। अर प्रतिनारायणोंकी भी याही प्रकार जाननी अर बलिभद्रोंकी आयु कछु अधिक है ॥ २१ ॥ सो कहे हैं पहले बलभद्रकी आयु सत्तासी लाख वर्ष, अर दूसरेकी सत्तर लाख वर्ष, तीसरेकी पैंसठ लाख वर्ष, चौथेकी

बत्तीस लाख वर्ष, पांचवेंकी कुछ एक अधिक दश लाख वर्ष, छठेकी पैंसठ हजार वर्ष सातवेंकी बत्तीस हजार वर्ष, आठवेंकी सतरह हजार वष नवमेंकी बारह सौ वर्ष ॥ २२ ॥ अर भगवान आदिनाथसे लेय अर धर्मनाथ पर्यंत पन्द्रह तीर्थंकरोंमें ऋषभ अर अजितके समय पहला अर दूसरा चक्रवर्ति भया अर अंतरालविषै कोई पदवी धर न भया अर श्रेयांसनाथसूं ले अर धर्मनाथ पर्यंत पांच तीर्थंकरोंके समय पांच नारायण भये सो तीर्थंकरोंके समय ही भये अंतरालविषैं न भये अर धर्मनाथ पीछे तीजा चक्रवर्ती अर चौथा चक्रवर्ती भया तापीछे शान्ति कुन्थु अरनाथ यह तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती हू भये बहुरि ता पीछे छठा नारायण भया तापीछे आठवां चक्रवर्ती भया ॥२३॥ ता पीछे मल्लिनाथ भये अर मल्लिनाथ पीछे नवमें चक्रवर्ती महापद्म भया ता पीछे सातवां नारायण भया बहुरि मुनिसुव्रतनाथ भये अर ता पीछे दशवां हरिषेण चक्रवर्ती भया ता पीछे आठवां नारायण भया अर नमिनाथ पीछे ग्यारवां चक्रवर्ती भया ता पीछे नेमनाथ भये तिनके समय नवमें बलिभद्र अर नारायण भये अर नेमनाथ पीछे बारहवां चक्रवर्ती भया ता पीछे पार्श्वनाथ अर महावीर भये या भांति शलाका पुरुष भये। अब तीर्थंकरनिके दाहिने पगके लक्षण कहिये हैं वृषभ हस्ती घोडे वंदर चकवा कमल सांथिया चंद्रमा मगरमच्छ श्रीवच्छ गैंडा भैंसा सूर सेह वज्र मृग छेला मीन कलश कच्छप नीलकमल सर्प सिंह। अथानंतर—तीर्थंकरोंकी आयुकी विगति करे हैं ऋषभदेवका कुमार काल वीस लाख पूर्व अर राज त्रेसठ लाख पूर्व अर तप हजार वर्ष अर केवलकल्याणकविषैं हजार वर्ष घाट लाख पूर्व यह चौरासी लाख पूर्वका विस्तार कहा अर अजितनाथका कुमारकाल अठारह लाख पूर्व अर राज्यावस्था त्रेपन लाख पूर्व अर एक पूर्वांग अधिक चौरासी लाख वर्षका एक पूर्वांग कहिये है अर संयमकाल बारह वर्ष अर एक पूर्वांग और बारह वर्ष एक पूर्वांग घाट एक लाख पूर्व केवल कल्याणकविषैं समोसरणमें विराजे यह बहत्तर लाख पूर्वका विस्तार कहा। अर सम्भवनाथका आयु साठ लाख पूर्व तामें कुमारकाल पन्द्रह लाख पूर्व अर राज्य अवस्था चवालीस लाख पूर्व अर चार पूर्वांग अर संयमकाल चौदह वर्ष अर केवल कल्याणक विषै

चार पूर्वांग अर चौदह वर्ष घाट लाख पूर्व या भांति साठ लाख पूर्वका विस्तार कहा अर अभिनन्दनका आयु पचास लाख पूर्व तिनमें कुमारकाल साढे बारह लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे छत्तीस लाख पूर्व अर आठ पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष अठारह अर केवल कल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें आठ पूर्वांग अर वर्ष अठारह घटावने यह पचास लाख पूर्वका विस्तार कहा अर सुमतिनाथका आयु चालीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल दश लाख पूर्व अर राज्य समय उणतीस लाख पूर्व अर बारह पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष बीस अर केवल कल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें बारह पूर्वांग अर वर्ष बीस घटावने यह चालीस लाख पूर्वका विगतवार विस्तार कहा अर पद्मप्रभका आयु तीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल साढे सात लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे इक्कीस लाख पूर्व अर सोलह पूर्वांग अर संयमकाल छह महीना अर केवलकल्याणकविषैं लाख पूर्व तामें सोलह पूर्वांग अर मास छह घटावना यह तीस लाख पूर्वका विस्तार कहा अर सुपार्श्वनाथका आयु बीस लाख पूर्व तामें कुमारकाल पांच लाख पूर्व अर राज्य अवस्था चौदह लाख पूर्व अर बीस पूर्वांग अर संयमकाल वर्ष नव अर केवल कल्याणकविषै बीस पूर्वांग अर नव वर्ष घाट लाख पूर्व यह बीस लाख पूर्वका विस्तार कहा अर चंद्रप्रभका आयु दश लाख पूर्व तामें कुमारकाल अढाई लाख पूर्व अर राज्य अवस्था साढे छह लाख पूर्व अर चौवीस पूर्वांग अर संयम काल महीना तीन अर केवलकल्याणक विषैं चौवीस पूर्वांग अर तीन मास घाट लाख पूर्व अर पुष्पदंतका आयु दोय लाख पूर्व तामें कुमारकाल पचास हजार पूर्व अर राज्य अवस्था भी पचास हजार पूर्व अर अठाईस पूर्वांग अर संयमकाल मास चार अर केवल कल्याणकविषै लाख पूर्व तामें अठाईस पूर्वांग अर मास चार घटावने यह दोय लाख पूर्वका विस्तार कहा अर शीतलनाथका आयु लाख पूर्व तामें कुमारकाल पचीस हजार पूर्व अर राज्य अवस्था पचास हजार पूर्व अर संयमकाल तीन महीना अर केवल कल्याणक पचीस हजार पूर्व तीन मास घाट अर श्रेयांसनाथका आयु वर्ष चौरासी लाख तामें कुमारकाल

इकीस लाख वर्ष अर राज्य अवस्था ब्यालीस लाख वर्ष अर संयमकाल दोय मास अर केवल कल्याणकविषैं इकीस लाख वर्ष दोय महीने घाट अर वासुपुज्य स्वामीका आयु वहत्तर लाख वर्ष तामें कुमारकाल अठारह लाख वर्ष अर इन विवाह न किया राज्य भी न किया वर्ष अठारह लाखके भए तबही वैराग्य धारा। अर संयम काल मास एक अर केवल कल्याणकमें एक मास घाट चौवन लाख वर्ष विराजे, अर विमलनाथका आयु वर्ष साठ लाख तामें कुमारकाल वर्ष पंद्रह लाख वर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष लाख तीस अर संयम काल मास तीन अर केवल कल्याणक तीन मास घाट पंद्रह लाख वर्ष अर अनंतनाथका आयुवर्ष लाख तीस तामें कुमार काल साढे सात लाख वर्ष अर राज्य अवस्था पंन्द्रह लाख वर्ष अर संयमकाल मास दोय अर केवल कल्याणकविषैं दोय मास घाट साढेसात लाख वर्ष अर धर्मनाथका आयु दश लाख वर्ष तामें कुमार काल वर्ष लाख अढाई अर राज्य अवस्था पांच लाख वर्ष अर संयम काल मास एक अर केवलकल्याणकमें एक मास घाट अढाई लाख वर्ष अर शांतिनाथका आयुएक लाख वर्ष तामें कुमारकाल पचीस हजार वर्ष अर राज्य अवस्था पचास हजार वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल कल्याणकमें सोलह वर्ष घाट वर्ष हजार पचीस अर कुंथुनाथका आयु पच्चाणवें हजार वर्ष तामें कुमारकाल पौणा चौबीसहजार वर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष हजार साढे सैंतीस अर संयमकाल वर्ष सोलह अर केवल कल्याणकमें सोलह वर्ष घाट वर्ष हजार पौणा चौवीस अर अरनाथका आयु वर्ष हजार चौरासी तामें कुमारकाल इक्कीस हजारवर्ष अर राज्य अवस्था वर्ष हजार वियालीस अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल कल्याणकमें तप-काल सोलह वर्ष घाट इक्कीसहजार वर्ष अर मल्लिनाथका आयुवर्ष पचावनहजार तामें कुमारकाल वर्ष सौ अर इन राज्य न किया विवाह न किया सौ वर्षके होय मुनिव्रत धारे अर संयमकाल दिन छह वाकी वर्ष चौवनहजार नव सौ तामें छह दिन घाट केवल कल्याणकमें रहे अर मुनिसुव्रतका आयु तीसहजार वर्ष तामें कुमारकाल साढे सात हजार वर्ष अर राज्य अवस्था पंद्रह हजार वर्ष अर संयमकाल मास ग्यारह अर ग्यारह महीना घाट साढे सात हजार वर्ष

केवल कल्याणकमें तिष्ठे अर नमिनाथका आयु दशहजार वर्ष तामें कुमार काल अढाई हजार वर्ष अर राज्यावस्था पांच हजार वर्ष अर संयमकाल नव वर्ष अर नव वर्ष घाट अढाई हजार वर्ष केवल कल्याणकमें विराजे अर नेमिनाथका आयु एक हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष तीनसौ अर इन विवाह न किया अर न राज्य किया तीनसौ वर्षके होय मुनि भए सो संयमकाल दिन छप्पन अर सातसौ वर्ष छप्पन दिन घाट केवल कल्याणकविषें विराजे अर पार्श्वनाथका आयु वर्ष सौ तामें कुमारकाल वर्ष तीस अर इन राज न किया अर विवाह भी न किया तीस वर्षके होय मुनिव्रत धारे सो संयमकाल मास चार अर वर्ष सत्तर चार मास घाट केवल कल्याणकमें विराजे अर महावीरका आयु वर्ष बहत्तर तामें कुमारकाल वर्ष तीस अर इन विवाह न किया अर राज्य न किया अर तीस वर्षके यती भये सो वर्ष बारह संयमकाल बाकी तीस वर्ष केवल कल्याणकमें विराजे यह सबोंकी आयुका विस्तार कहा अब चोवीसों तीर्थंकरोंके संघका निरूपण करें हैं ऋषभके गणधर चौरासी अर अजितके नव्वे सम्भवके एक सौ पांच अभिनन्दनके एकसौ तीन अर सुमतिके एकसौ सोलह पद्मप्रभके एकसौग्यारह सुपार्श्वके पिच्चाणवें चन्द्रप्रभके तिराणवें अर पुष्पदंतके अठासी अर शीतलके इक्यासी श्रेयांसके सतहत्तर अर वासुपूज्यके छ्यासठ विमलके पचावन अनंतके पचास धर्मके तैतालीस अर शांतिके छत्तीस अर कुंथुके पैंतीस अर अरहनाथके तीस अर मल्लिनाथके अठाईस अर मुनिसुव्रतके अठारह अर नमिके सतरह अर नेमिके ग्यारह अर पार्श्वनाथके दश अर महावीरके ग्यारह यह सबोंके गणधर कहे इनमें एक एक मुख्य तिनके नाम कहे हैं ऋषभके वृषभसेन अर अजितके सिंहसेन अर सम्भवके चारुदत्त अभिनन्दनके वज्र सुमतिके चमर पद्मप्रभके वज्रबलि अर सुपार्श्वके चमरवलि अर चंद्रप्रभके दंडिका पुष्पदन्तके वैदर्भ अर शीतलके अनागार श्रेयांसके कुंथु वासुपूज्यके सुधर्म अर विमलके नन्दिराय अनन्तके जय, धर्मके अरिष्ट, शांतिके चक्रायुध कुन्थुके स्वयंभू अरहनाथके कुन्थु मल्लिनाथके विशाखाचार्य अर मुनिसुव्रतके मल्लि अर नमिके सोमक नेमिके वरदत्त अर पार्श्वनाथके स्वयंभू महावीरके इन्द्रभूति

जाहि गौतम हू कहे हैं यह गणधर सप्त ऋद्धि करि युक्त अर सर्व श्रुतके पारगामी हैं ॥ अथानंतर—तीर्थंकरोंके साथ जितनें राजा वैरागी भये तिनका निरूपण करें हैं महावीरके साथ तीन सौं अर पार्श्वनाथके साथ छै सौ अर इतने ही मल्लिनाथके साथ अर वासुपूज्यके साथ छै सौ ॥ ४९ ॥ अर ऋषभदेवके साथ राजा चार हजार अर और सबोंके साथ एक एक हजार राजा जानों ॥ ५० ॥ ऋषभदेवके सकल यति चोरासी हजार अर अजितके एक लाख अर सम्भवनाथके दोय लाख अर अभिनन्दनके तीन लाख अर सुमतिके तीन लाख बीस हजार अर पद्मके तीन लाख तीस हजार अर सुपार्श्वनाथके तीन लाख चंद्रप्रभके अढाई लाख पुष्पदन्तके तीन लाख शीतलनाथके एक लाख श्रेयांसके चौरासी हजार वासुपूज्यके वहत्तर हजार विमलनाथके अडसठ हजार अनन्तनाथके छयासठ हजार धर्मनाथके चौसठ हजार शांतिनाथके वासठ हजार कुन्थुनाथके साठ हजार अरहनाथके पचास हजार मल्लिनाथके चालीस हजार मुनिसुव्रतके तीस हजार नमिनाथके बीस हजार नेमनाथके अठारह हजार अर पार्श्वनाथके सोलह हजार अर महावीरके चौदह हजार यह चौवीसोंके मुनि कहे सो मुनियोंका संघ सात प्रकार है ताका वर्णन सुनो ऋषभदेवके चौदह पूर्वके पाठी मुनि सैंतालीस सौ पचास अर सूत्रके अभ्यासी शिष्य इकतीस सौ पचास अर अवधिज्ञानी नव हजार केवली बीस हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारी बीस हजार छै सौ अर विपुलमति मनःपर्यके धारी बारह हजार साढे सात सौ अर वादिऋद्धिके धारी बारह हजार सवा सात सौ यह चौरासी हजार भये अजितनाथके चौदह पूर्वके पाठी सैंतीस सौ पचास अर आचारंग सूत्रके अभ्यासी शिष्य इक्कीस हजार छै सौ अर अवधिज्ञानी चौराणवें सौ अर केवली बीस हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक बीस हजार चार सौ पचास अर विपुलमति मनःपर्ययवाले बारह हजार चार सौ वादिऋद्धिके धारक बारह हजार चार सौ यह सब मुनि लाख भये अर सम्भवनाथके चौदह पूर्वके पाठी इक्कीस सौ पचास अर शिष्य एक लाख गुणतीस हजार तीन सौ एक सब सूत्राभ्यास करें हैं अर नव हजार छः सौ अवधिज्ञानी अर पन्द्रह

हजार केवली अर उन्नीस हजार साढे आठ सौ विक्रिया ऋद्धिके धारक अर बारह हजार विपुलमति मनःपर्यय-ज्ञानके धारक अर बारह हजार अर एक सौ वादि ऋद्धिके धारक यह दोय लाखका विस्तार कहा अर अभिनंदनके मुनि तीनलाख तिनमें चौदह पूर्वके पाठी पच्चीस सौ अर सूत्रके अभ्यासी शिष्य दोयलाख तीस हजार पचास अर अवधिज्ञानी नव हजार आठ सौ अर केवली सोलह हजार अर विक्रिया ऋद्धिके धारक उणतीस हजार अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी ग्यारह हजार छे सौ पचास अर वादिऋद्धिके धारक ग्यारह हजार यह अभिनन्दनके तीनलाख साधु कहे अर सुमतिनाथके चौदह पूर्वके पाठी चौबीस सौ अर आगमके अभ्यासी शिष्य दोय लाख चव्वन हजार तीनसौ पचास अर निर्मल अवधिज्ञानके धारक ग्यारह हजार अर केवलज्ञानके धारक तेरह हजार विक्रियाऋद्धिके धारक अठारह हजार चार सौ अर विपुलमति मनःपर्ययके धारक दश हजार चार सौ अर वादि ऋद्धिके धारक दश हजार चार सौ पचास यह सब तीनलाख बीस हजार भए ॥ ७६ ॥ अर पद्मप्रभके चौदह पूर्वके पाठी तेईस सौ अर शिष्य दोय लाख उणहत्तर हजार अर अवधिज्ञानी दशहजार अर केवली बारह हजार आठसौ और विक्रियाऋद्धिके धारक सोलहहजार तीनसौ अर वादिऋद्धिके धारी नव हजार अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके धारक दश हजार छे सौ यह सब तीनलाख तीसहजार भए। अर सुपार्श्वनाथके चौदह पूर्वके पाठी तेईस सौ अर शिष्य दोय लाख चवालीसहजार नवसौ बीस अर अवधिज्ञानी नवहजार अर केवली ग्यारह हजार तीनसौ अर विक्रियाऋद्धिके धारक पंद्रहहजार डेढसौ अर विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानके धारक नवहजार छेसौ अर वादित्त ऋद्धिके धारक हजार आठ यह सब मुनि तीनलाख भए अर चंद्रप्रभके चौदह पूर्वके पाठी दोय हजार अर शिष्य दोय लाख दश हजार चारसौ अर अवधिज्ञानके धारक आठ हजार अर विपुलमति पनःपर्ययके धारक भी आठ हजार अर केवल ज्ञानी दशहजार अर विक्रियाऋद्धिके धारक चार हजार अर वादित्तऋद्धिके धारक सात हजार छेसौ, यह सब

अढाई लाख भए अर पुष्पदंतके चौदह पूर्वके पाठी पंद्रह सौ अर शिष्य एक लाख पचावनहजार पांचसौ अर अवधि
ज्ञानके धारक आठ हजार चारसौ अर केवली साढे सातहजार अर विक्रियाॠद्धिके धारक तेरा सौ अर विपुलमति
मन:पर्ययज्ञानके धारक पैंसठसौ अर वादित्तॠद्धिके धारक छिहत्तरसौ अर शीतलनाथके चौदह पूर्वके पाठी चौदहसौ
अर शिष्य गुणसठहजार दोयसौ अर अवधिज्ञानी बहत्तरसौ अर केवली सातहजार अर विक्रियाॠद्धिके धारक
बारहहजार, साढे सातहजार विपुलमति, मनपर्ययके धारक अर वादित्तॠद्धिके धारक सतावनसौ ॥ ९४ ॥ अर
श्रेयांसनाथके चौदह पूर्वके पाठी तेरहसौ अर शिष्य अडतालीसहजार दोयसौ अर अवधिज्ञानके धारक छहहजार
अर केवलज्ञानी पैंसठसौ अर विक्रियाॠद्धिके धारक ग्यारह हजार अर विपुलमति मन:पर्यय ज्ञानके धारक छह
हजार अर वादित्तॠद्धिके धारी पांचहजार अर बासुपूज्यके चौदह पूर्वके पाठी बारहसौ अर शिष्य उन्तालीस हजार
दोयसौ अर अवधिज्ञानके धारक चौवनसौ अर केवलज्ञानके धारक छहहजार अर विक्रियाॠद्धिके धारक दशहजार
विपुलमति मन:पर्ययज्ञानके धारक छहहजार अर वादित्तॠद्धिके धारक बयालीससौ अर विमलनाथके चौदह पूर्वके
पाठी ग्यारहसौ अर शिष्य अडतीसहजार पांचसौ अर अवधिज्ञानके धारक अडतालीससौ अर केवलज्ञानके धारक
पचपनसौ अर विक्रियाॠद्धिके धारक नव हजार अर मन:पर्ययज्ञानके धारक पचावनसौ अर छत्तीससौ वादित्रॠद्धिके
धारक ॥२॥ अर अनन्तनाथके चौदह पूर्वके पाठी एक हजार अर शिष्य उन्तालीस हजार पांचसौ अर अवधिज्ञानी
तैंतालीससौ अर केवलज्ञानके धारक पांच हजार अर विक्रियाॠद्धिके धारक आठहजार मन:पर्ययज्ञानी पांचहजार
अर वादित्तॠद्धिके धारक बत्तीससौ अर धर्मनाथके चौदह पूर्वके पाठी नवसौ अर शिष्य चालीसहजार सातसौ अर
अवधिज्ञानी छत्तीससौ अर केवलज्ञानी पैंतालीससौ अर विक्रियाॠद्धिकेधारी सात हजार अर विपुलमति मन:पर्यय-
ज्ञानी पैंतालीससौ अर वादित्तॠद्धिके धारक अठाईससौ अर शांतिनाथके चौदह पूर्वके पाठी आठसौ अर शिष्य ६५२
इकतालीसहजार आठसौ अर अवधिज्ञानी तीनहजार अर केवलज्ञानी चारहजार अर विक्रियाॠद्धिकेधारी छहहजार

अर मनःपर्ययज्ञानी चार हजार अर वादित्तऋद्धिके धारी चोवीससौ अर कुंथुनाथके चौदह पूर्वके पाठी सात सौ अर शिष्य तैंतालीस हजार डेढ सौ अर अवधिज्ञानके धारी पचीससौ अर केवलज्ञानी वत्तीससौ अर विक्रिया ऋद्धिवाले इक्यावनसौ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानवाले तैंतीनसौ पचास अर वादित्त ऋद्धिवाले दोय हजार बहुरि अरनाथके चौदह पूर्वके पाठी छहसौ दश अर शिष्य पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस अर अवधिज्ञानी अठाईस सौ अर केवली भी अठाईस सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी तैंतालीस सौ अर मनःपर्ययज्ञानी वीस सौ पचावन वादित्त ऋद्धिके धारी सोलह सौ अर मल्लिनाथके चौदह पूर्वके पाठी पांचसौ पचास अर शिष्य गुणतीस हजार अवधिज्ञानी वाईस सौ अर छब्बीससौ पचास केवलज्ञानी चौदह सौ विक्रिया ऋद्धिवाले अर विपुलमति मनःपर्ययवाले वाईस सौ अर वादित्त ऋद्धिवाले भी वाईस सौ अर मुनि सुव्रतनाथके चौदह पूर्वके पाठी पांच सौ अर शिष्य इक्कीस हजार अर अवधिज्ञानी अठारह सौ अर केवली अठारह सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी बाईस सौ अर विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी पंद्रह सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी वारह सौ अर नमिनाथके चौदह पूर्वके पाठी साढे चार सौ अर शिष्य बारह हजार छह सौ अर अवधिज्ञानी सोलह सौ अर केवली भी सोलह सौ अर विक्रिया ऋद्धिवाले पंद्रह सौ अर मनपर्ययज्ञानी वारह सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी हजार अर नेमनाथके चौदह पूर्वके पाठी चार सौ अर शिष्य ग्यारह हजार आठ सौ अवधिज्ञानी पंद्रहसौ अर केवली पंद्रह सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी ग्यारह सौ अर मनपर्यय ज्ञानी नव सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी आठ सौ ॥ २८ ॥ अर पार्श्वनाथके चौदह पूर्वके पाठी साढे तीन सौ अर शिष्य दश हजार नव सौ अर अवधिज्ञानी चौदह सौ अर केवलज्ञानी एक हजार अर विक्रियाऋद्धिके धारी हजार अर मनःपर्यय ज्ञानी साढे सात सौ अर वादित्त ऋद्धिके धारी छै सौ ॥ २९ ॥ अर वर्द्धमान जिनेन्द्रके चौदह पूर्वके पाठी तीन सौ अर शिष्य नव हजार नव सौ अवधिज्ञानी तेरह सौ अर केवली सात सौ अर विक्रिया ऋद्धिके धारी नव सौ अर मनःपर्ययज्ञानी पांच

सौ अर वादि ऋद्धिके धारी चार सौ ॥३१॥ यह चौवीस तीर्थंकरोंके सात प्रकारके मुनि प्रत्येकके कहे। अथानंतर—चौवीसो जिनराजोंके आर्यकानिका व्याख्यान करे हैं ऋषभदेवके समोसरणमें आर्यका तीन लाख पचास हजार अर अजितनाथके तीन लाख बीस हजार ॥२॥ अर संभवनाथके अर अभिनन्दनके अर सुमतिनाथके प्रत्येक २ तीन तीन लाख अर तीस २ हजार ॥३२॥ पद्मप्रभके चार लाख अर बीस हजार अर सुपार्श्वके तीन लाख तीस हजार अर चन्द्रप्रभ अर पुष्पदंत अर शीतलनाथ इन तीनोंके प्रत्येक प्रत्येक तीनलाख अस्सी २ हजार अर श्रेयांसनाथके एक सौ बीस हजार अर वासुपूज्यके एक लाख छै हजार अर विमलनाथके एक लाख तीन हजार अर अनंतनाथके एक लाख आठ हजार अर धर्मनाथके बासठ हजार चार सौ अर शांतिनाथके साठ हजार तीन सौ ॥ ३७ ॥ अर कुंथुनाथके साठ हजार साढे तीन सौ अरनाथके साठ हजार अर मल्लिनाथके पचंपन हजार। मुनिसुव्रतके पचास हजार अर नमिनाथके पैंतालीस हजार अर नेमनाथके चालीस हजार अर पार्श्वनाथके अडतीस हजार अर वर्द्धमानके चौबीस हजार यह चौवीसों तीर्थंकरनिकी आर्यका कहीं।

अथानंतर—श्रावक अर श्राविकानिकी गिणती कहे हैं ऋषभदेवकूं आदि लेय अर चंद्रप्रभ पर्यंत प्रत्येक तीन तीन लाख श्रावक अर पुष्पदंतसे लेय अर शांतिनाथ पर्यंत दोय दोय लाख श्रावक अर कुन्थुनाथसे लेय अर वर्द्धमान पर्यंत प्रत्येक लाख लाख श्रावक जानो यह श्रावकनिकी गिनती कही अर श्राविका ऋषभसे लेय चंद्रप्रभ तक पांच पांच लाख अर पुष्पदंतसे लेय शांतिनाथ पर्यंत चार चार लाख अर कुंथुनाथसे लेय वर्द्धमान पर्यंत तीन तीन तीन लाख जाननीं यह चतुर्विध संघका व्याख्यान किया। अथानंतर—चौबीसों तीर्थंकरोंके शिष्य जितने सिद्ध भए तिनका कथन कहे हैं॥ ४३ ॥ ऋषभदेवके शिष्य साठ हजार नव सौ सिद्ध भए अर अजितके सतत्तर हजार एक सौ अर सम्भवनाथके एक लाख सत्तर हजार एक सौ अर अभिनंदनके दोय लाख अस्सी हजार एक सौ अर सुमतिनाथके शिष्य तीन लाख सोलह हजार एक सौ अर पद्मप्रभके तीन लाख तेरह हजार

छै सौ अर सुपार्श्वनाथके दोय लाख पिचासी हजार छै सौ अर चंद्रप्रभके दोयंलाख चौंतीस हजार अर पुष्पदंतके एक लाख गुणासी हजार छै सौ अर शीतलनाथके अस्सी हजार छै सौ अर श्रेयांसनाथके पैंसठ हजार छै सौ अर वासुपुज्यके चव्वन हजार छै सौ अर विमलनाथके इक्यावन हजार तीन सौ अर अनंतनाथके इक्यावन हजार अर धर्मनाथके गुणचास हजार सात सौ अर शांतिनाथके अडतालीस हजार चार सौ अर कुंथुनाथके छियालीस हजार आठ सौ बहुरि अरनाथके सैंतीस हजार दोय सौ अर मल्लिनाथके अठाईस हजार आठसौ अर मुनिसुव्रतके उन्नीस हजार दो सौ अर नमिनाथके नव हजार छै सौ अर नेमनाथके आठ हजार अर पार्श्वनाथके बासठ सौ अर महावीरके बहत्तर सौ यह चौबीसों तीर्थंकरोंके शिष्य सिद्ध भए अर पहिले तीर्थंकरसे लेय सोलहवें तीर्थंकर तक तो जा समय तीर्थंकरोंको केवल उपजा ताही समय कईएक शिष्योंकी सिद्धि भई अर कईएकोंकी पीछे भई अर सोलह सिवाय औरोंके शिष्योंकी मुक्ति, कईएक तीर्थंकरोंको केवल उपजा ता पीछे एक महीने कई एककी दोय महीने पीछे कई एककी तीन महीने पीछे कई एककी छह महीने पीछे सिद्धि भई अर कईएक तीर्थंकरोंको केवल उपजे पीछे एक वर्ष दोय वर्ष तथा तीन वर्ष पीछे चार वर्ष पीछे या भांति सिद्धपदकूं प्राप्त भए ॥ ६५ ॥

अथानन्तर—चौबीसों तीर्थंकरोंका अन्तराल कहे हैं। ऋषभ पीछे अजितनाथ पचास लाख कोडि सागर बीते भये अर अजितनाथ पीछे सम्भवनाथ तीस लाख कोडि सागर अर सम्भवसे अभिनन्दनका दश लाख कोडि सागर अभिनन्दनसे सुमतिका नव लाख कोडि सागर अर सुमतिनाथसे पद्मप्रभका नव्बे हजार कोडि सागर अर पद्मसे सुपार्श्वका नव हजार कोटि सागर अर सुपार्श्वसे चन्द्रप्रभका नव सौ कोडि सागर अर चन्द्रप्रभसे पुष्पदन्तका नव्वे कोडि सागर अर पुष्पदन्तसे शीतलनाथका नव कोडि सागर अर शीतलनाथसे श्रेयांसनाथका अन्तर कोडि सागर तामें सागर सौ अर वर्ष छियासठ लाख छब्बीस हजार घटावने अर श्रेयांसनाथ पीछे वासु-

पूज्यका अन्तर चव्वन सागर अर वासुपूज्य पीछे विमलनाथका अन्तर तीस सागर अर विमल पीछे अनन्तनाथका अन्तर नव सागर अर अनन्तनाथ पीछे धर्मनाथका अन्तर चार सागर अर धर्मनाथ पीछे शान्तिनाथका अन्तर सागर तीन तामें पौण पल्य घाट अर शांतिनाथ पीछे कुन्थुनाथका अन्तर आधा पल्य अर कुन्थुनाथ पीछे अरनाथका अन्तर हजार कोडि वर्ष घाट पाव पल्य बहुरि अरनाथ पीछे मल्लिनाथका अन्तर हजार कोडि वर्ष अर मल्लि पीछे मुनिसुव्रतका अन्तर चौवन लाख वर्ष अर मुनिसुव्रत पीछे नमिका अन्तराल छह लाख वर्ष अर नमि पीछे नेमनाथका अन्तराल पांच लाख वर्ष अर नेमिनाथ पीछे पार्श्वनाथका अन्तर पौणा चौरासी हजार वर्ष अर पार्श्वनाथ पीछे महावीरका अन्तराल वर्ष अढाई सो जब महावीर स्वामी निर्वाण पधारे तब चौथा कालके वर्ष तीन अर साढे आठ मास हुते अर चौथा काल बियालीस हजार वर्ष घाट कोडाकोडि सागरका है अर बियालीस हजार वर्षमें इक्कीस हजार वर्षका पांचवां काल है अर इक्कीस हजार वर्षहीका छठा काल है यह बियालीस हजार वर्ष भये तिनमें पंचम कालके अन्त तक महावीर स्वामीका धर्म है अर छठे कालमें धर्मका अभाव है अर छठेके अन्त पांच भरत पांच ऐरावत इन दश क्षेत्रोंमें प्रलय होय है छठेके अन्त तक अवसर्पिणी काल है आगे उत्सर्पिणी काल लगेगा अर ऋषभदेवसे लेकर पुष्पदन्त तक तो धर्म अखंड चला अर पुष्पदन्त पीछे धर्मका पाव पल्य विच्छेद भया बहुरि शीतलनाथ पीछे आध पल्य अर श्रेयांसके पीछे पौण पल्य अर वासुपूज्यके अन्तरविषैं एक पल्य अर विमलनाथके अन्तरविषैं पौण पल्य अर अनन्तनाथके अन्तरविषैं आध पल्य अर धर्मनाथके अन्तरविषैं पाव पल्य या भांति सात तीर्थंकरनिके अन्तरविषैं चार पल्य धर्मका विच्छेद भया बहुरि अन्तके आठ तिनके अन्तरविषैं धर्म निरन्तर रहा अर पहले तीर्थंकरसे लेय अर सात तीर्थंकरनिके तीर्थविषैं तो केवललक्ष्मी निरन्तर रही अर चंद्रप्रभ अर पुष्पदन्तके तीर्थविषैं उन पीछे केवलीनिविषैं भये अर शीतलनाथके तीर्थविषै चौरासी अर श्रेयांसनाथके तीर्थविषै बहत्तर अर वासुपूज्यके तीर्थविषै उन

पीछे चवालीस केवली अर विमलनाथके तीर्थविषैं उन पीछे केवली चालीस अर अनन्तनाथके पीछे छत्तीस अर धर्मनाथके पीछे केवली बत्तीस शान्तिनाथके पीछे अठाईस अर कुन्थुनाथके पीछे चौबीस अर अरनाथके पीछे बीस अर मल्लिनाथके पीछे सोलह अर मुनिसुव्रतके पीछे बारह अर नमिनाथ पीछे आठ अर नेमिनाथ पीछे चार अर पार्श्वनाथ पीछे तीन अर वर्द्धमान पीछे तीन भये यह चौबीसों तीर्थंकरोंके तीर्थविषैं उनकूं मुक्ति गये पीछे केवली भये तिनका कथन किया जहां लग दूसरा तीर्थंकर न उपजे तहां लग पहलेका तीर्थ कहिये याही भांति सर्वत्र जनना। महावीर पीछे बासठ वर्षमें तीन केवली भये गौतम सुधर्मा अर जम्बूस्वामी अर इन तीन केवलियों पीछे सौ वर्षमें पांच ग्यारह अंग अर चौदह पूर्वके पाठी भये ॥ ७९ ॥ अर तिन पीछे एक सौ तियासी वर्ष पर्यन्त ग्यारह मुनि ग्यारह अंग अर दश पूर्वके पाठी भये अर तिन पीछे दोयसै बीस वर्ष पर्यंत पांच मुनि ग्यारह अंग के पाठी भये अर तिन पीछे एक सौ अठारह वर्ष पर्यंत चार मुनि एक आचारांगके पाठी भये अर महावीरके गणधर ग्यारह तिनकी आयु सुनो। प्रथम गणधरकी आयु वर्ष बाणवें दूसरकी चौबीस तीसरेकी वर्ष सत्तर चौथेकी वर्ष अस्सी पांचवेंकी वर्ष सौ छठेकी वर्ष त्रियासी सातवेंकी पिचाणवे वर्षकी आठवेंकी अठहत्तर वर्ष नवेंकी बहत्तर वर्ष दशवेंकी साठ वर्ष ग्यारहवेंकी चालीस वर्ष ॥ ८३ ॥ यह ग्यारह गणधरोंकी आयु कही अर तीसरे कालमें पल्यका आठवां भाग बाकी रहा तब कुलकर उपजे सो पल्यके आठवें भागमें चौदह भये अर जब तीजेमें तीन वर्ष अर साढे आठ महीना बाकी हुते तब ऋषभदेव मुक्ति पधारे अर चौथे कालके तीन वर्ष अर साढे आठ महीने बाकी रहे तब वर्द्धमान स्वामी मुक्ति पधारे अर भगवानकूं मुक्ति गये पीछे इक्कीस हजार वर्षके पंचमकालमें इक्कीस कलंकी अर इक्कीस अर्द्धकलंकी होंयगे सो पापी धर्मका विघ्न करेंगे अर कुगति जावेंगे॥

अथानंतर—बारह चक्रवर्तियोंके आयुका विगतवार वर्णन करे हैं प्रथम भरत चक्रवर्तिकी आयु पूर्व चौरासी लाख तामें कुमारकाल सतहत्तर लाख पूर्व अर महा मंडलीक पंद्रह हजार वर्ष अर दिग्विजय साठ हजार वर्ष

अर राज्य एक पूर्व घाट छै लाख पूर्व अर संयमकाल अंतमुहूर्त अर केवल अवस्थामें एक लाख पूर्व अर त्रियासी लाख निन्यानवै हजार नव सौ निन्याणवे पुवांग अर त्रियासी लाख नव हजार तीस इतने वर्ष विराजे फिर जगतके शिखर पधारे चौरासीलाख वर्षका एक पूर्वांग अर चौरासी पूर्वांगका एक पूर्व ॥९७॥ अर दूसरा सगर चक्रवर्तिका आयु बहत्तरलाख पूर्व तामें कुमारकाल अर मंडलेश्वरपना पचासहजार पूर्व अर दिग्विजयका काल साठ हजार वर्ष अर राज्यसमय उणहत्तरलाखसत्तरिहजार पूर्व अर सित्यानवैहजार नौसौ निन्याणवें पूर्वांग अर वर्ष त्रियासीलाख अर लाख पूर्व संयमकाल तामें जितने वर्ष तप किया उतने घाट लाख पूर्व केवल अवस्थाके जानो ॥१००॥ अर तीजा चक्रवर्ति मघवा ताका आयु पांच लाख वर्ष तामें कुमारकाल पच्चीसहजार वर्ष अर मंडलेश्वरपना पच्चीसहजार वर्ष अर दिग्विजय दशहजार वर्ष अर राज्य तीनलाख नव्वेहजार वर्ष यह स्वर्गलोक गए ॥ २ ॥ अर चौथा चक्रवर्ती सनत्कुमार आयु तीनलाख वर्ष तामें कुमारकाल पचास हजार वर्ष अर मंडलेश्वरपना भी पचास हजार वर्ष अर दिग्विजय दशहजार वर्ष अर राज्यअवस्था नव्वेहजार वर्ष अर संयम एकलाख वर्ष यह स्वर्गलोक गए। पांचवां चक्रवर्ति शांतिनाथ ताका आयु एक लाख वर्ष तामें कुमारकाल पच्चीसहजारवर्ष अर दिग्विजय आठसौ वर्ष अर चक्रवर्तिपद चौबीसहजार दोयसौ वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर समोसरणमें विराजे सोलहवर्ष घाट पच्चीस हजार वर्ष फिर निर्वाण पधारे छठे चक्रवर्ति कुंथुनाथ तिनका आयु पचाणवें हजार वर्ष तामें कुमारकाल पौणा चौवीस हजार वर्ष अर मंडलीकपना हू चौबीस हजार वर्ष अर दिग्विजय छै सौ वर्ष अर चक्रवर्ति पद तेईस हजार डेढसौ अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल अवस्थामें सोलह वर्ष घाट पौणा चौवीस हजार वर्ष ॥६॥ अरनाथ सातवें चक्रवर्ति तिनका आयु वर्ष हजार चौरासी तामें कुमारकाल हजार इक्कीस अर मंडलीकपना भी इक्कीस हजार वर्ष अर दिग्विजय चारसौ वर्ष अर चक्रवर्ति पद बीसहजार छै सौ वर्ष अर संयमकाल सोलह वर्ष अर केवल अवस्थामें सोलह वर्ष घाट इक्कीसहजार वर्ष अर आठवां चक्रवर्ति सुभूम ताका आयु अडसठ हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष हजार

पाच अर दिग्विजय वर्ष पांचसौ अर चक्रवर्ति पद बासठ हजार पांचसौ अर यह बाल्यावस्थामें परशरामके भयसे सन्यासियोंके आश्रममें गोप्य रहे इन्होंने वैराग्य न धारा इसलिए महातमनामा सप्तम पृथिवीविषैं गए ॥ ९ ॥ अर नवमां चक्रवर्ति महापद्म ताका आयु वर्ष हजार तीस तामें कुमारकाल वर्ष पांचसौ अर मंडलीकपना वर्ष पांचसौ अर दिग्विजय वर्ष तीनसौ अर चक्रवर्ति पद अठारह हजार सातसौ वर्ष अर संयमवर्ष हजार दश तामें मुनिपद अर केवलपद आयगया ये मुनिव्रत धर मोक्ष गए अर दशवें चक्रवर्ति हरिषेण ताका आयु छव्वीसहजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष सवा तीनसौ अर दिग्विजय डेढसौ वर्ष अर चक्रवर्ति पदवी पचीसहजार एकसौ पिचहत्तर वर्ष अर संयमकाल वर्ष साढे तीनसौ यामें मुनिपद अर केवलपद आय गया यह मुनि होय मोक्ष पधारे ॥ १३ ॥ अर ग्यारहवां चक्रवर्ति जयसेन ताका आयु वर्ष तीनहजार तामें कुमारकाल अर मंडलेश्वरपना तीनसौ वर्षका जानो अर दिग्विजय वर्ष सौ अर चक्रवर्ति पदवी उन्नीससौ वर्ष अर संयमकाल वर्ष चारसौ यह भी मुनि होय मोक्ष गए अर बारहवां चक्रवर्ति ब्रह्मदत्त ताका आयु वर्ष सातसौ यह श्रीनेमिनाथके पीछे अर पार्श्वनाथ पहले भए इसलिए कुमार काल वर्ष अठाईस अर मंडलीकपना वर्ष छप्पन अर दिग्विजय वर्ष सोलह अर चक्रवर्ति पद छहसौ यह सातसौ वर्ष भए इन जिनदीक्षा न धारी अर राजहीमें मरकरि सुभूमकी जगह सातमी धरा पधारे ॥१५॥ यह बारह चक्रवर्तियोंका बर्णन किया इनमें आठ मोक्ष गए सिद्ध भए अर दोय स्वर्ग गए अर दोय अधोलोक गए सो भी कई एक भवधर शिवपुर पधारेंगे ॥

अथानंतर—अर्द्ध चार्क्रियोंका कथन करे हैं पहला वासुदेव त्रिपृष्ट अर पहिला बलिभद्र विजय यह दोनों परमस्नेही वासुदेवका आयुवर्ष लाख चौरासी तामें कुमारकाल वर्ष हजार पच्चीस अर दिग्विजय वर्ष हजार अर राज्य त्रियासीलाख चौहत्तर हजार वर्ष ॥ १८ ॥ अर दूसरा वासुदेव द्विपृष्ट ताका आयु बहत्तर लाख वर्ष सो अचल नामा बलभद्रका भाई परम स्नेही तामें पच्चीसहजार वर्ष कुमारकाल अर इतने ही मंडलीक पदके अर

दिग्विजयके वर्ष सौ अर वासुदेव पद इकहत्तर लाख उणचास हजार नवसौ वर्ष अर तीजा वासुदेव स्वयंभू ताका आयूवर्ष सांठ लाख कछू घाट सौ वर्ष धर्म नामा बलिभद्रका छोटा भाई परम स्नेही ताका कुमारकाल पच्चीससौ वर्ष अर इतने ही वर्ष मण्डलीकपना अर दिग्विजय वर्ष नव्वे अर राज्यपद उणसठलाख चौहत्तरहजार नवसौ दश वर्ष ॥ २२ ॥ अर चौथा वासुदेव पुरुषोत्तम सुप्रभनामा बलिदेवका छोटा भाई ताका आयु तीसलाख वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष सातसौ अर मण्डलीक पद तेरह सौ वर्ष अर विग्विजय वर्ष अस्सी अर राज्यपद उणतीसलाख सत्याणवें हजार नवसौ बीस वर्ष अर पांचवां वासुदेव पुरुषसिंह सुदर्शन नामा वलिदेवका छोटाभाई ताका आयु वर्ष लाख दश तामें कुमारकाल वर्ष तीनसौ अर मंडलीक पद वर्ष एक सौ पच्चीस अर दिग्विजय वर्ष सत्तर अर राज्य अवस्था नवलाख निन्याणवें हजार पांचसौ तीस वर्ष ॥ २६ ॥ अर छठा पुण्डरीकनामा वासुदेव नंदी नामा बलदेवका लघुवीर महाधीर ताका आयु वर्ष हजार पैंसठ तामें कुमारकाल वर्ष अढाई सौ अर मंडलीकपद अढाई सौ वर्ष अर दिग्विजय वर्ष साठ अर तीन खंडका राज चौंसठ हजार चारसौ चालीस वर्ष अर दत्त नामा सातवां वासुदेव छोटा भाई नन्दिषेण बलदेव ताकी आयु बत्तीस हजार वर्ष तामें कुमारकाल वर्ष दोयसौ अर मंडलीकपद वर्ष पचास अर दिग्विजय भी वर्ष पचास अर ताका राज्यपद इकतीस हजार सातसौ वर्ष अर आठवां वासुदेव लक्ष्मण सो राम वलदेवका छोटाभाई ताकी आयु वर्ष हजार बारह तामें कुमारकाल वर्ष सौ अर दिग्विजय वर्ष चालीस अर राज्यपद ग्यारहहजारआठसौ साठ वर्ष ॥ ३१ ॥ अर नवमा कृष्णनामा वासुदेव पद्मनामा वलदेवका छोटाभाई ताका आयु वर्ष हजारएक तामें कुमारकाल वर्ष सोलह अर मंडलीकपद वर्ष छप्पन अर दिग्विजय वर्ष आठ अर वासुदेव पदका राज्य वर्ष नवसौ वीस ॥ ३२ ॥ यह वासुदेवोंका वर्णन किया ॥

अथानन्तर—एकादश रुद्र तिनकी आयु काय और समय कहे हैं पहला भीमावली नाम रुद्र श्रीऋषभदेवके समय भया ताका आयु त्रियासी लाख पूर्व अर शरीर पांच सौ धनुष ऊंचा भया ॥ १ ॥ अर दूसरा यतिशत्रु

नामा रुद्र दूसरे तीर्थंकर अजितनाथके समय भया ताकी आयु इकहत्तर लाख पूर्व अर शरीर साढे चार सौ धनुष ऊंचा था ॥ २ ॥ अर तीसरा रुद्र नामा रुद्रनिमें तीर्थंकर पुष्पदंतके समय भया ताका आयु दोय लाख ६०
वर्ष अर शरीर सौ धनुष ऊंचा है ॥ ३ ॥ अर चौथा विश्वानल नामा रुद्र श्री शीतलनाथके समय भया ताका आयु लाख पूर्व अर शरीर नव्वे धनुष ऊंचा अर पांचवां सुप्रतिष्ठित नामा रुद्र श्रेयांसके समय भया ताका आयु चौरासी लाख वर्ष अर शरीर अस्सी धनुष ऊंचा अर छठा अचल नामा रुद्र श्री वासुपूज्यके समय भया ताका आयु साठ लाख वर्ष अर शरीर सत्तर धनुष ऊंचा अर सातवां पुण्डरीक नामा रुद्र श्रीविमलनाथ स्वामीके समय भया ताका आयु पचास लाख वर्ष अर शरीर साठ धनुष ऊंचा ॥ २५ ॥ अर आठवां अजितधर नामा रुद्र श्रीअनन्तनाथ स्वामीके समय भया ताका आयु वर्ष लाख चालीस अर शरीर अठाईस धनुष ऊंचा अर नवमां अजितनाथ नामा रुद्र श्रीधर्मनाथके समय भया ताका आयु वर्ष लाख पचीस अर शरीर तेतालीस धनुष अर दशवां पीठ नामा रुद्र श्रीशांतिनाथके समय भया ताका आयु वर्ष लाख एक अर शरीर चौवीस धनुष ऊंचा अर ग्यारवां सात्विकी तनय नामा रुद्र श्रीमहावीर स्वामीके समय भया ताका आयु उनहत्तर वर्ष अर शरीर सात हाथ ऊंचा सबही एकादश रुद्र ग्यारह अंग अर दश पूर्वके पाठी हैं अर क्रोधरूप हैं स्वभाव जिनका इन ग्यारहके तीन समय एक कुमारकाल अर एक संयम काल ॥ ४२ ॥ तामें चार रुद्रोंका संयमकाल अधिक अर दोयका संयमकाल अर कुमारकाल समान अर सातवें आठवे नवमें रुद्रका कुमारकाल अधिक अर संयमकाल न्यून अर दशवेंका संयमकाल अधिक अर ग्यारहवेंके वर्ष उणहतर तामें कुमारकाल बरस सात अर संयमकाल वर्ष अठाईस अर संयम से च्युत हुवे पीछे असंयमकाल वर्ष चौंतीस ॥ ४५ ॥

अथानन्तर-नव नारद ते ब्रह्मचर्यके धारक बलिभद्र नारायणके परम मित्र वासुदेव समान है आयु अर
काय जिनकी तिनके नाम कहे हैं पहला नारद भीम, दूसरा महाभीम, तीसरा रुद्र, चौथा महारुद्र, पांचवां १६०

काल, छठा महाकाल, सातवां चतुर्मुख, आठवां नरवक्र, नवमां उन्मुख। यह नव नारदोंके नाम कहे सो बलदेवके समय ही होय हैं अर भगवान महावीर स्वामीकूं मुक्ति गये पीछे छह सौ पांच वर्ष भये तव राजा वीर विक्रमादित्य भया ॥ ५० ॥ अर भगवान पीछे हजार वर्ष गये कलंकी भया या भांति पंचमकालमें कलंकी अर अर्द्धकलंकी व्यालीस होंवेगे यह सब अव सर्पिणीकालका कथन किया।

अथानन्तर—उत्सर्पिणीकालके तीर्थंकरोंका व्याख्यान करे हैं इस पंचमकाल पीछे छठा दुखमादुखमा काल होयगा ताके अन्त प्रलयकाल होयगा सो छठा कालके अन्त अवसर्पिणी तो पूर्ण होयगा अर आगे उत्सर्पिणी लगेगी सो प्रथम ही फिर छठा काल सो उत्सर्पिणीका पहला काल है ताकी रीत छठेकालकीसी परन्तु इस छठे कालमें आयु कायकी घटती अर तामें बढती इकीस हजारका यह फिर छठाकाल भी व्यतीत होयगा ता पीछे उत्सर्पिणीका दूसरा काल सो फिर पंचमा कहिये सो भी इकीस हजार वर्षका होयगा ताके बीस हजार वर्ष तक तो महापुरुष न उपजेंगे अर जब वा पंचमें कालके एक हजार वर्ष रहेंगे तव उत्सर्पिणी कालके कुलकर चौदह, हजार वर्षमें होवेंगे तिनके नाम पहला कनक, दूजा कनकप्रभ, तीजा कनकराज, चौथा कनकध्वज, पांचवा कनकपुंगव, यह पांच तो सोलह पानीके स्वर्णके समान वर्णके धारक होवेंगें अर नलिन अर नलिनप्रभ, नलिनराज. नलिनध्वज, नलिनपुंगव यह पांच कमलदल समान वर्णके धारक होंवेंगे अर ग्यारहवां पद्मप्रभ, वरहवां पद्मराज, तेरहवां, पद्मध्वज, चौदहवां पद्मपुंगव। यह चौदह कुलकर पुनः पांचवेके अन्त ही होवेंगे वहुरि चौथाकाल लगेगा सो व्यालीस हजार वर्ष घाट कोडाकोडी सागरका तामें चौवीस तीर्थंकर होवेंगे तिनके नाम--महापद्म १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४. सर्वात्मभूत ५, देवदेव ६, प्रभोदय ७, उदंक ८, प्रश्नकीर्ति ९, जयकीर्ति १०, सुव्रत ११, अरनाथ १२, पुण्यमूर्ति १३, निःकषाय १४, विपुल १५, निर्मल १६, चित्रगुप्त १७, समाधिगुप्त १८, स्वयंभू १९, अनिवर्तक २०, जय २१, विमल २२, दिव्यवाद २३, अनंतवीर्य २४ यह चौवीस तीर्थेश्वर महा धैर्यादि गुणके धारक होवेंगे।

अथानंतर—आगामी बारह चक्रवर्तियोंके नाम सुनो—भरत १, दीर्घदत्त २, जयदत्त ३, गूढ़दत्त ४, श्रीषेण ५, श्रीभूत ६, श्रीकांत ७, पद्म ८, महापद्म ९, चित्रावाहन १०, विमलवाहन ११, अरिष्टसेन १२, यह बारह चक्रवर्ती कहे।

अथानन्तर—आगामी नव नारायण होवेंगे तिनके नाम सुनो। नन्दी १, नन्दीमित्र २, नंदिन ३, नंदिभूत ४, महाबल ५, अतिवल ६, भद्रवल ७, द्विपृष्ट ८, त्रिपृष्ट ९। यह नव नारायण होवेंगे अर नव बलभद्र होंहिंगे तिनके नाम कहे हैं ॥ ६६ ॥ चंद्र १, महाचंद्र २, चंद्रधर ३, सिंहचद्र ४, हरिश्चंद्र ५, श्रीचंद्र ६, पूर्णचंद्र ७, सुचंद्र ८, बालचंद्र ९। यह नवों बलभद्र चंद्रमा समान कांतिके धारक होवेंगे।

अथानंतर—आगामी नव प्रतिनारायण होवेंगे तिनके नाम कहे हैं श्रीकंठ १ हरिकंठ २ नीलकंठ ३ अश्वकंठ ४ सुकंठ ५ सिषिकंठ ६ अश्वग्रीव ७ हयग्रीव ८ मयूरग्रीव ९ यह नव प्रतिहरि होवेंगे।

अथानंतर—आगामी ग्यारह रुद्र होवेंगे तिनके नाम कहे हैं—प्रमद १, संमद २, हर्ष ३, प्रकाश ४, कामद ५, भव ६ हर ७ मनोभव ८ मारण ९ काम १० अंगज ११ यह आगामी ग्यारह रुद्र कहे यह सब ही पुरुष निर्वाणके पात्र हैं तीर्थंकर कामदेवादि तो तद्भव मोक्षगामी ही हैं अर बलभद्र मोक्षगामी होहैं अर कईएक देवलोकके सुख भोग शीघ्र ही शिवपुर पावेंगे और अन्य यह सब ही भव्य कई एक भवका पार पावे हैं यह सबही जिनभाषित तपधर सिद्धपद पावेंगे यह शलाका पुरुष पुरुषनिमें उत्तम हैं अर रत्नत्रयकरि पवित्र हैं अंग जिनके ॥ ७१ ॥ एक अंतर्मुहूर्त भी सम्यक्तकूं पाय जो सम्यक्त्वसे च्युत होय हैं सो भी शीघ्र मुक्तिका कारण है अर जिनका जन्म ही रत्नत्रयकी प्राप्ति करि पवित्र भया है तिनकूं कथा कहना वह तो मुक्तिके पात्र हैं। रत्नत्रय मोक्षका कारण है ॥ ७५ ॥ याभांति तीनकालका है निरूपण जिनमें अर सकल महा पुरुषोंकी है कथा जिनमें ऐसे नेमनाथ प्रभुके वचन कानोंको सुखदाई तिनकूं एकाग्रचित सुनकरि बलदेव अर वासुदेव आदि समस्त यादव नरेंद्र अर इन्द्र, चन्द्र सूर्यादि सकल देव भगवानकूं नमस्कारकरि तत्वबोध हृदयमें धारि अपने अपने स्थानक गये ॥ ७२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ त्रिशष्टिपुरुषजिनांतरवर्णनोनाम षष्टितमः सर्गः ॥ ६० ॥

अथानंतर—राजा श्रेणिकका अभिप्राय जानकर गौतम गणधर गजकुमारका चरित्र जगतकरि नमस्कार करने योग्य कहते भए। हे राजा श्रेणिक! गजकुमार श्रीनेमनाथके मुख सकल जिनेश्वर चक्रेश्वर अर बलिदेव वासुदेव आदि सब महा पुरुषनिका चरित्र सुनकरि तत्काल सकल मातृपितृ भ्रातृवर्गोंको तजकरि जिनेंद्रके चरणका शरण धारते भए। कैसे हैं वह गजकुमार संसारतैं भयभीत हैं भाव जिनके अर प्रभुके महा भक्त हैं प्रभुकी आज्ञा पाय दिगम्बरी दीक्षा धार महातप करते भए अर राजानिकी पुत्री जिनसे इनकी सगाई भई हुती सो सब पतिका वैराग सुन आर्यकाके व्रत धारती भईं और एक सोमशर्मानामा ब्राह्मण ताकी पुत्री गजकुमार परणे हुते सो विप्र क्रोधरूप अग्निकरि प्रज्वलित भया आधी रात जहां गजकुमारस्वामी अकेले प्रतिमा योगधर तिष्ठे हुते सकल परीषहके सहनहारे तहां वह ब्राह्मण गया अर स्वामीके सिरपर अग्नि प्रजाली ताही समय स्वामीने क्षपकश्रेणीका प्रारंभ किया सो शुक्लध्यानधरि कर्मनिका अंतकरि तत्काल केवल पाय मोक्ष गए श्रीनेमनाथके तीर्थविषैं अंतकृतकेवली भए ॥७॥ इनकी निर्वाण पूजा अर केवल यह दोनों कल्याणक एकही साथ देव करते भए सुर असुर यक्ष किन्नर गंधर्व महोरग आदि सब जातिके देव गजकुमारका कल्याणक करते भए ॥ ८ ॥ अर सब यादव गजकुमारका मरण सुनि अत्यंत दुखकूं प्राप्त भए ताही समय समुद्रविजयकूं आदि देय दश भाई तिनमें वसुदेव बिना नवों भाई मोक्षके अभिलाषी जिनदीक्षा धारते भए अर नवों भाईनिकी सबही रानीमाता शिवदेवीकूं आदि देय आर्यका भईं अर देवकी अर रोहिणीके सिवाय बाकी वसुदेवकी सब राणी आर्यका भईं अर कृष्णकी पुत्री हू आर्यका भईं ॥१०॥ बहुरि सुर नर सबनिकरि पूजिवे योग्य भगवान नेमजिनेंद्र अनेक देशोंविषैं विहार करते भए अर उत्तर दिशिके अर दक्षिण दिशिके अर पूर्व पश्चिम दिशाके अनेक नृप शार्दूल संबोधे अर मध्यदेशके अनेक राजा संबोधे बहुरि विहारकरि गिरनार गिर आए अर समोशरणविषैं विराजे ता समय जिनेंद्रके दर्शनकूं सकल देवोंके इंद्र आए अर स्तुतिकरि नमस्कारकरि अपने अपने स्थानक बैठे अर वसुदेव बलिदेव

वासुदेव अर प्रद्युम्न आदिके कृष्णके पुत्र अर देवकी रोहिणी आदि वसुदेवकी राणी अर वलदेव वासुदेवकी राणी सब यादवनिकी राणी सबही दर्शनकूं आई अर द्वारकाकी वस्तीके लोक आए ॥ १५ ॥ इत्यादि सब ही भाव सहित शिवदेवीके नन्दनकी बन्दनाकूं आये सो अपने अपने स्थानक बैठे तहां भगवान् धर्मका निरूपण करते भये ता समय अवसर पाय भगवान्कूं नमस्कारकरि पद्मनामा वलिभद्र हलका है आयुध जिनके सो हाथ जोड सीस नवाय नमस्कार कर पूछते भये हे नाथ ! यह द्वारिकापुरी कुवेरने निर्मापी है सो अव ताकी कितने वर्ष स्थिति है जो वस्तु कृत्रिम होय सो विनशे यह पुरी काल पाय सहज ही विलय होवेगी या किसीके निमित्तसे विनशेगी अर वासुदेवका परलोक कौन कारण कर होयगा महा पुरुष है तिन्होंका यह शरीर रहे नाहीं । हे प्रभो ! मेरे संयमकी प्राप्ति कव होयगी मेरे अर जगतका ममत्व तो अल्प है एक भाईके स्नेहकरि बंधा है या भांति हलधर ने जिनवरकूं पूछा तव भगवान् सर्वज्ञ हलधरकूं कहते भये । हे महाभव्य ! हे राम ! यह पुरी वारहवें वर्ष द्वीपायननामा मुनिकरि भस्म होयगी उन्मत्तताके योगकरि यादवनिके कुमार द्वीपायनकूं क्रोध उपजावेंगे ॥ ३३ ॥ अर महाभाग जो कृष्ण तिनका कौसांवीनामा वनविषैं सूतेका जरत्कुमारके वाण-करि परलोक होयगा जन्म मरणके निश्चयका कारण तो जगतविषैं रागद्वेषादि भाव हैं अर जब प्रतापका क्षय होय है तब बाह्य कारण भी अनेक मिले हैं ॥ २५ ॥ इसलिये जो ज्ञानी वस्तुका स्वभाव जानै हैं सो प्रतापविषैं हर्ष न करैं अर नाशविषैं विषाद न करैं यह विवेकीनिकी रीति है अर तुमकूं वासुदेवके वियोगका अति संताप होयगा बहुरि प्रतिबुद्ध होय भगवति दीक्षा धारोगे सो महा तपकरि पांचवें ब्रह्मस्वर्ग देव होवोगे । बहुरि नरभव पाय निरंजन पद पावोगे यह वार्त्ता सुनि द्वीपायन रोहिणीका भाई वलभद्रका मामा तत्काल जिनदीक्षा धारता भया अर विहार कर गया बारह वर्ष पूर्वकी दिश रहा तपकरि शरीर क्षीण किया अर कषाय भी मंद पडी ॥ २९ ॥ अर जरत्कुमार अपने वाणकरि हरिका परलोक जान अति दुखी भया अर सब कुटुम्बकूं तजकरि ऐसा दूर गया

जहां हरिका दर्शन न होय जरत्कुमार हरिके स्नेह करि अति व्याकुल होय अकेला दूर वनमें गया सो वनके जीवनिकी न्यांई बन विषै विचरै हरि ही है प्राण जिसके सो यह दोनों तो दिशांतर गये अर सब यादव भगवानकूं नमस्कारकरि द्वारावतीमें गये। होनहार जो दुःख ताकी चिन्ताकरि संतप्त है मन जिनके ॥ ३३ ॥ अर द्वारावती जिन धर्मियोंकी पुरी महा दयाधर्मकी भरी तहां मद्यमांसका प्रयोजन कहां तहां बलदेव वासुदेवका राज वहां कुवस्तुकी चर्चा कहां परन्तु कर्मभूमि है कोई एक पापी गोप्य करता होय यह विचार बलदेव वासुदेवने पुरीविषै घोषणा करी जो मद्य अर मांसकी सामग्री कोई न राख सके जाके यह सामग्री होय सो शीघ्र ही नगर बाहर जाय डाल आवो जो राखेगा सो दंड योग्य होयगा यह आज्ञा सुनि जिनके घरमें छुपा मद्य हुता अथवा मद्यकी सामग्री हुती सो नगर बाहर कदम्ब नामा बन विषै डारी सो सूक करि पाषाण समान होय गई ॥ ३६ ॥ बहुरि वासुदेव द्वारकाविषै नर नारियोंको सब हीको वैराग्यकी आज्ञा कही यह घोषणा पुरीमें फिरी जो कृष्णकी यह आज्ञा है मेरा पिता अर माता अर भ्रात बंधु पुत्र स्त्री पुत्री जो वैराग्य धरे सो शीघ्र धरो मेरे राज लोक अथवा भाईनिके राजलोक अर नगरके लोक नर नारी जो जिनदीक्षा लेय अर तप आचरे सो शीघ्र आचरो मैं किसीको मने न करूं यह आज्ञा हरिकी सुनि करि हरिके पुत्र प्रद्युम्न भानुकुमार आदि चरमशरीरी अर अन्य हू बहुत परिग्रह तज मुनि होते भए अर हरिकी रुक्मिणी सत्यभामा जांबवंती आदि आठोंही पटराणी अर राजोंकी राणी सहित अर सोलह हजार हरिकी राणी इनकी सौत तिनमें कईएक सहित हरिकी आज्ञातैं जिनदीक्षा धारती भई द्वारकाके पुरुष तो मुनि भए अर स्त्री बहुत आर्यका भई माधवने सबोंको यही कही जो संसार समान और समुद्र नाहीं अति गंभीर है अर वीतरागके मार्ग समान अर कोई जहाज नाहीं अर श्रीनेमनाथ समान अर कोई सार्थवाह नाहीं इसलिए संसारकूं असार जान श्रीनेमिनाथका शरण लेवो अर मेरे वैराग्यका उदय नाहीं है अर बलदेवके भी मेरे मोह करि मुनिव्रत नाहीं यह मेरे पीछे मुनिव्रत धारेंगे इसलिए मेरे सबही भाई यादव अर अन्य

वंशके राजा हमारे सगा अर सबही प्रजा जगतका संबंध छोड जिनराजका धर्म आराधो अर श्रावकके व्रत धारो या भांति वासुदेवने आज्ञा करी सो बहुत वैराग्य धारते भए अर कई श्रावक भए अर सिद्धार्थनामा सार्थी ताने बलदेवसे आज्ञा मांगी तब बलदेवने उससे यह प्रार्थना करी जो तुम वैराग्य धारोगे परन्तु जब मुझे कृष्णके वियोगका संताप उपजै तब तुम देवलोकसे आयकर मुझे संबोधियो सो वचन उसने प्रमाण किया अर अनेकनरनारी नेमनाथके निकट व्रत धारते भए ॥

अथानन्तर—महा संघ सहित भगवान पल्लव नामा देशकी ओर विहार किया भव्यरूप कमलनिकों प्रफुल्लित करणहारे जिनरवि धर्मका उद्योत करते भये ॥ ४२ ॥ अर द्वारकाके लोक नगरकी वस्ती छोड बन विषैं जाय वसे हुते अर व्रत उपवास पूजा दानविषैं तत्पर हुते सो बारह वर्षकी गणना भूल गये अर बारह वर्ष बीते जान पहले ही नगर भीतर आय बसे अर द्वीपायन रोहिणीका भाई मुनि होय विदेशविषैं विहारकर गया हुता सो भ्रांतिसे बारह वर्ष बीते जान पहले ही द्वारका आया सो मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मनमें ऐसी जानता भया जो भगवान भवितव्य कहा हुता सो निवृत्त भया। यह विचार द्वारकाके बाहर गिरिके निकट आतापन योगधरि कायोत्सर्ग मांड्या ॥४७॥ अर कृष्णका पुत्र संबुकुमार ताहि आदि देय कईएक यदुकुमार वनक्रीडाकूं गएहुते सो खेदखिन्न भए अर जलकी तृषा अधिक उपजी सो ता बनविषैं कदंबनामा कुंडविषै जो मदिरा पहिले गिरी हुती सो सूक गइ वा वामें जल वर्षा हुता अर कुंडके तट महुवाके वृक्ष हुते तिनके फल उस कुंडके जलमें गिरे अर ग्रीष्मकी उष्णकरि जलमें उष्ण भए सो वह जल सब मदिरा समान होय गया सो तृषाकरि पीडित यादवकुमार तिन्होंने छाणकर पीया वह कदंबवनका जल सो ही भया कादंबरी कहिए मदिरा ताहि पीयकरि यदुकुमार विकारकूं प्राप्त भए ॥ ४९ ॥ वह मदिरा जो पूर्वे कुंडमें डारी सो यद्यपि पुराणी हुती तथापि परिपाकके वशसे नवीन नारीकी न्याईं उनकूं उन्मत्त करती भई इनके नेत्र अरुण होयगए अर बावरे भए कुछका कुछ बकें भंड-

गीत गावैं अर नाचैं जिनके चरण डिगे सिरके केश विखर रहे अर कंठविषैं बनमाला हुती सो विखर गई ॥५१॥ याभांति बेंडे भए नगरीमें आवते हुते सो मार्गमें द्वीपायनकूं देखकरि घूर्णमान है नेत्र जिनके ऐसे ये यदुकुमार परस्पर बतलाए यह द्वीपायन जिनकरि द्वारकांका अंत होनहार हुता सो अब यह देखें हमसे बचकर कहां जायगा ऐसा कहकरि सबही निर्दई पाषाणोंकरि तपस्वीकूं मारते भए सो बहुत मारा ऐसा किया जो तपस्वी पृथिवीमें पडा अर तपसीकूं अधिक क्रोध उपज्या भौंह चढाई अर होंठ डसे अर यादवनिके प्रलयके वास्ते उद्यम किया तब यह यदुकुमार भागकरि द्वारावतीमें आए चलाचल हैं चित्त जिनके सो यह समाचार किसीने बलदेव अर वासुदेवकूं कहे जो कुमारोंने यह विपरीत करी तब दोनों भाई सुनकरि मुनिसे क्षमा करावनेकूं शीघ्र ही मुनि पै गए। छत्र चवंर सिंहासन सर्व सेना तजकरि उसपर गए वह क्रोधरूप अग्निकरि प्रज्वलित हुता क्लेशरूप है बुद्धि जिसकी वक्र है भ्रकुटी जिसकी विषम है मुख जाका अर निरखैं न जाय हैं नेत्र जाके अर कंठगत हैं प्राण जाके महा भयंकर दीपायन दोऊ भाईनिने देख्या अर हाथ जोड नमस्कारकरि नगरीका अभयदान मांगा। हे साधु! रक्षा करो रक्षा करो इस तपका मूल क्षमा है अर क्रोधरूप अग्निकरि तपका नाश होय है यह क्रोध धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थोंका शत्रु है अर आपका अर परका नाशक है मोक्षका साधन जो तप ताहि क्षण-मात्रमें भस्म करै है यातैं इन मूढ प्राणियोंकी मूढ चेष्टा क्षमा करहु अर हम पर प्रसन्न होवो याभांति प्रिय वचनों करि दोऊ भाईनिकरि संयुक्त जो द्वारिका ताके दाहविषैं निश्चय किया ॥६४॥ अर वानैं दोय आंगुली ऊंची करी जो तुम दोय भाई बचोगे और नाहीं ॥६०॥ तब इन दोऊ भाईनिने जानी सबका नाश आय लगा यह खेद खिन्न होय द्वारिकापुरी आए अर अब क्या करिए या चिंताविषैं तत्पर भये ॥६६॥ ताही समय संबुकुमार आदि अनेक यादव कुमार चरमशरीरी अर स्वर्गके जानहारे नगरीसे निकस गिरोंकी गुफाविषैं गए अर द्वीपायन मिथ्यादृष्टि क्रोध रूप अग्निकरि साक्षात् अग्निकुमार स्वरूप होय पुरीकूं भस्म करता भया रौद्रध्यानकरि वानैं विचारी मैं तपसी निरपराध

मुझे इन्होंने मारा सो इन हिंसकोंको पुरी सहित भस्म करूं ऐसा विचार वानैं किया जब द्वारिकाविषैं क्षयका कारण उत्पात भए घर घर सबनिके रोमांच होय आये अर पहली रात्रि अति भयंकर स्वप्न लोकनिने देखे वह पापी क्रोधी तिर्यंच मनुष्योंकरि भरी जो द्वारकापुरी ताकूं दग्ध करता आरम्भता भया सो प्राणियोंके समूह अग्निविषै जले सो जलते प्राणी विलाप करते भये तिनका विपरीत शब्द ऐसा भया जैसा कभी न भया ॥७४॥ अग्निकी ज्वालाविषैं बाल बृद्ध स्त्री पशु पक्षी सब भस्म होने लगे। यहां कोई प्रश्न करै यह महापुरी देवोंने रची अर जाके अनेक देव सहाई सो कहां गये ताका समाधान भवितव्यता दुर्निवार है जब यह होनहार भया तब देव परे गये जो देव न जाय अर उनकी रक्षा होय तो पुरी कैसे जले सो जलनेका समय आया तब देव उठ गये अर सब लोक बैरीके भय करि बलभद्र नारायण पर आये अति व्याकुल भये यह कहते भये जो हमारी रक्षा करहु जब बलभद्र नारायण कोटकूं भेदकरि समुद्रका जल बुझाने विषै लाने लगे सो जल तैलके भावकूं प्राप्त भया ता करि अग्नि अधिक प्रज्वलित भई बलभद्र महा बलवान समुद्रका जल हलकीय अणीसे खैंचा अर पुरमें लाये सो उलटा अग्निकूं प्रज्वलित करता भया तब दोऊ भाई असाध्य जान मातापिताकूं काढवेके उद्यमी भये सो रथमें बैठाये अर रथके घोडे जोये सो न चाले अर हाथी भी न चाले पृथवीविषै रथके पाये ऐसे फसे जैसे कीचमें फंसे तब आप दोऊ भाई हाथी घोडोंसे रथ न चाले देख दोऊ भाई जूपे अर लेकर चले तो भी रथ चाल न सक्या मानों बज्रकरि कीला है जब बलदेव जोर करने लगे तब द्वारके कपाट स्वयमेव जुड गये तब दोऊ भाईयोंने लातोंकी घातकरि कपाट तोडे ता समय आकाशमें देवबाणी भई जो द्वारका ते दोऊ ही निकसेंगे और नाहीं ॥ ८४ ॥ अर मातापिताओंने कही तुम जावो हमारा मरण निश्चय है, पुत्र हो! तुम वंशके तिलक हो तुम जीवोगे तो सब होवेगा अर गमन यहांसे एक पेंड न होय सकै ॥ ८ ॥ तब यह दोऊ भाई माता पिताओंके पांयन पड उनकूं प्रणामकरि उनकी आज्ञा पाय चाले पुरी ते निकस बाहर गये सो कैसा देख रत्नमयी नगरी जले है घर घर

आग लग रहीं है तब दोऊ भाई कंठतैं कंठ लगाय रुदन करते भये अर दक्षिण दिशिकूं निकले अर तहां वसुदेव आदि अनेक यादव अर उनकी राणी प्रायोपगमन सन्यासधारी देवलोककूं गये अर केयक वलदेवके पुत्रादिक तद्भव मोक्षगामी हुते अर संयम धरनेके जिनके भाव भये तिनकूं देव नेमनाथके निकट ले गये अर अनेक यादव अर उनकी राणी जो धर्मध्यानके धारक हुते अर सम्यग्दृष्टि हुते जिनका अंतरंग शुद्ध हुता तिनि प्रायोपगमन संन्यास धारें सो उनको अग्निका उपसर्ग आर्त्त रौद्रका कारण न भया अर वह धर्मध्यानतैं देह तजि देवलोक गये। चार प्रकारका उपसर्ग है देवकृत, मनुष्यकृत, तिर्यंचकृत अर स्वयमेव उपजा यह चार प्रकारके उपसर्ग मिथ्यादृष्टि जीवनिकूं तो आर्त्तध्यान अर रौद्रध्यानके कारण हैं अर सम्यग्दृष्टि जीवोंको कदापि कुभावके कारण नाहीं, जो सांचे जिनधर्मी हैं तिनका मन मरण आये कायर न होय किसी भांति मरण होय अर किसी समय होय उनके दृढता ही है अर अज्ञानी जीवनिके मरण समय क्लेश सबोंके होय है तातैं कुमरणकर कुगति जाय हैं अर जो सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध हैं अर महा पवित्र है मन जिनके सो समाधिमरणकर स्वर्ग पावैं बहुरि परंपराय मोक्ष पावैं जो जिनधर्मी हैं तिनके यही भावना है संसारविषैं उपजा है सो अवश्य मरेगा यह निश्चय है तातैं हमारे समाधिमरण हूजियो। जो उपसर्ग भी आय बने तो भी हमारे कायरता न हूजियो यह भावना सम्यग्दृष्टियोंके सदा रहै है ॥ ९४ ॥ धन्य है वह पुरुष जो अग्निकी शिखाके समूहकरि भस्म होते हुये भी समाधिकूं नाहीं तजै हैं अर कलेवरकूं तजे हैं जो तप करना तो निज परके सुखके अर्थि अर सत्पुरुषनिका जीवना है सोऊ निज परके कल्याणकके अर्थि है अर मरण समय भी किसीपर द्वेष न चिंतवैं क्षमाभावतैं देह तजैं यह संतनिकी रीति है अर द्वीपायन तैंने तप भी बिगाडा अर मरण भी बिगाडा अपना नाश किया अर अनेक जीवनिका प्रलय किया सो दुष्ट निज परकूं दुःखदायी भया जो पापी पराया बध करै है सो जन्म जन्मविषैं अपना घात करै है ॥ ९७ ॥ कषायोंके वश भया तब आतमघाती होय चुका पराया घात कर

सकै अथवा न कर सकै उनका घात तो उनके प्रारब्धके अनुसार है अर याने उनका घात विचारा तब यह आत्मघाती होय चुका अर जीवहिंसाका पाप इसे लग चुक्या। दूसरेकूं हतूं ऐसे भाव करना सो जलते लोहेके गोलेकूं उठाय दूसरेकूं मारना है सो वह तो मरे अथवा न मरे यह तो जल ही चुका सो जो कषायोंके वश भया सो आत्मघाती है। काहूकूं तो तप निर्वाणका कारण होय है अर द्वीपायनकूं तप दीर्घ संसारका कारण भया यह जीव अनादि कालका कर्मनिके वश है सो याके अपराध कहां तक कहिये संसारी जीव तो अपराधी ही है परंतु जो विवेकी हैं तिनकूं मोह वैरी मोहित करै है कोई क्रोधका भरा अपना बुरा भी करे उसका भी सत्पुरुष भला ही करै वह लोक परलोक दोनों सुधारै जो कोई पर जीवकूं दुःख करै है सो आप दुःखकी परंपराय भोगवे है जो परजीवकूं दुःखी करै है ताके दुःख अवश्य उपजे यातैं क्षमा ही करना ॥ ३ ॥ क्रोधकरि अंध जो द्वीपायन तापस ताने भवतव्यताके वशकरि द्वारावती भस्म करी जहां बाल वृद्ध स्त्री अर पशु बहुत भस्म भए वह पुरी जीवनितैं भरी हुती सो छै महीने तक जलती रही यातैं धिक्कार या क्रोधकूं यह क्रोध आप अर परका नाश करनहारा है अर संसारका बढावन हारा है द्वीपायनने जिनवाणीश्रद्धा उल्लंघि ऐसा तीव्र क्रोध किया सो धिक्कार या क्रोधकूं अर अज्ञानी जीवनिकूं जो क्रोध मान, माया, लोभ, मद, मनोज इनके वश परि नरक निगोदविषैं महा दुःख भोगे है ॥ १०५ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ द्वारावतीविनाशवर्णनो नाम एकषष्ठितमः सर्गः ॥ ६१ ॥

अथानन्तर — गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं। हे श्रेणिक! यह बलदेव वासुदेव बडे पुरुष मनुष्योंके वचनसे अगोचर है महिमा जिनकी सो पुण्यके योगतैं परप उच्चताकूं प्राप्त भये हुते अर सुदर्शनचक्र आदि अनेक महा रत्न इनके हुते सो भरतक्षेत्रके भूपति पुण्यके क्षयतैं रत्नोंसे रहित भये बन्धुवर्गतैं वर्जित भये प्राण-

मात्रही है परिवार जिनके सो दोऊ वीर महाधीर शोकके भारकरि पीडित जीनेकी आशा धरि दक्षिणकी ओर चाले। पांडवोंको दक्षिण मथुरा जान उनहींके पास दोऊ भाई चाले ॥ ३ ॥ मार्गमें एक हस्तवप्रनामा नगर तहां आये सो हरि तो नगरके बनमें विराजे अर हलधर भोजनके अर्थि सामग्री लेवेकूं नगरमें गये वस्त्रसे लपेटा है सर्व अंग जाने तहां राजा अछदन्त धृतराष्ट्रके वंशमें है सो पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध महा धनुषधारी है और दुर्जन पराया छिद्र हेरे अर इनका महा शत्रु ॥ ६ ॥ बलदेवने अपना रूप घणा ही छिपाया परि चांद सूर्य्य कैसे छिपे बलभद्रके रूपकी पासकरि खैंचे थके नगरके लोकनिके समूह इनके आस पास भेले होय गये बलदेव नगरमें प्रवेश किया लोग इनका रूप देखि आश्चर्यकूं प्राप्त भये सबनि जानी यह बलदेव स्वामी हैं आप एक वणिककी हाटमें बैठे अर कुंडल धरिकरि अन्नादिक लिये अर नगरतैं निकसि बाहर जाते हुते सो द्वारपालने देख करि राजातैं कही बलदेव जाय हैं तब राजा मूर्ख इनके मारवे अर्थि सब सेना पठाई सो इनकू दरवाजे रोके तब बलभद्र अन्न-पान सामग्री तो सब डाल दी अर आप हाथी बांधनेका थंभ उपार्‍या अर कृष्णकूं हेला दीया सो कृष्ण हू शीघ्र ही आये सो कृष्णने परिघ कहिये दरवाजेकी आगल हाथ ली अर बलदेवने गजथंभ लिया दोऊ वीर महाधीर शत्रुनितैं लडे राजा अछदन्त सकल सेना सहित इनपै आया हुता सो सकल सेना हू भागी अर राजा हू भागा मनुष्य की क्या शक्ति जो इन पुरुषनितैं लडें दोऊ वीर महाधीर अन्नपानादि सामग्री लेयकरि नगरतैं निकसि विजयनामा बनमें गये तहां एक मनोहर सरोवर देख्या ॥ १३ ॥ तहां दोऊ भाईनिने जल छान स्नान करि अपने घटविषैं जो श्रीभगवान नेमनाथ विराज रहे हैं तिनकूं नमस्कारकरि तिनका ध्यान किया अर शीतल जल पीया पवित्र भोजन किया ॥ १४ ॥ ता बनमें क्षणएक विश्रामकरि दक्षिणकी दिश चाले सो कोशाम्बीनामा महा भीम-बन अति दुर्गम ता विषैं पैठे ॥ १५ ॥ कैसा है वह वन खग कहिये महा दुष्ट पक्षी तिनके हैं अशुभ शब्द जहां अर सिंहादिकके हैं भयंकर शब्द जहां अर सुनिये हैं शृगालों (गीदडों) के खोटे शब्द जहां अर तृषाके मारे मृगनिके

समूह जहां दौड़े दौंडे फिरे हैं जहां मृगतृष्णा बहुत दीखै है अर जल दुर्लभ है ॥ १६ ॥ ग्रीष्मका उग्र ताप ताकरि बाजै है विषम पवन जहां सो सही न जाय है अर दावानलकर जल रहे हैं वृक्ष अर वेलोंके समूह जहां तिनकरि महा भयानक बन भासै है जहां नीर अति दूर सो वनके जीव तृषाकरि आतुर, महा व्याकुल भये भ्रमै हैं अर बनचर कहिये भील तिनि हाथीनिके कुंभस्थलविषैं बाण लगाये हैं सो गजमोती विखिर रहे हैं ऐसे भयंकर बनविषैं दोऊ भाई जाय प्राप्त भये ग्रीष्मकी ऋतु है मध्यान्हका समय है अर सूर्य्य मध्यभागविषैं है ता समय कृष्ण बलदेवतैं कहते भये उपजा है तृषाका अति खेद जिनकूं हे आर्य कहिये हे निष्कपट ! मैं प्यासकरि अति पीडित हूं मेरे होठ अर तालवा सूके है अब एक पग हू धरवेकूं मैं समर्थ नाहीं तातैं मोहि शीतल जल शीघ्र पिलावहु जाकरि मेरी तृषा मिटै जैसे अनादि सार रहित संसारविषैं सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति भये भवआताप मिटै ॥ २१ ॥ या भांति कृष्णने बलदेवतैं कही, कैसे हैं कृष्ण स्नेहके भारकरि कोमल है मन जिनका अर तृषाके दाहकरि उष्ण निकसै हैं स्वास जिनके ऐसे हरि तिनकूं हलधर कहते भये हे भ्रात ! हे तीन खंडके तात ! मैं शीतल जल तोहि ल्यायकरि प्याऊंगा इतने तुम जिनस्मरण रूप जलकरि तृषाकूं बुझाओ तुम तो जिनवाणीरूप अमृतके पानकरि सदा तृप्त ही हो अर यह जल तो तृषाकूं अल्प कालही मिटावे है बहुरि तृषा उपजै है अर श्रीजिनराजका स्मरणरूप जल तृषाकूं मूलसे मिटावै है यातैं जिनस्मरण करि हे हरि ! तू जिनशासनका वेत्ता यह शीतल वृक्षकी सघन छाया तहां तू तिष्ठ मैं तेरे आर्थि शीतल जल लाऊं हूं । हे हरि ! शीतलचित्त तू अपने शांत भावरूप भववनविषैं भगवान जिनेश्वरकूं थापि ॥ २५ ॥ ऐसा छोटे भाईकूं बडा भाई उपदेश देयकरि जलके लायवे आर्थि बहुत दूर गया कृष्णके दुःखकरि दुखी है चित्त जाका सो अपना खेद न विचार्या हरिका खेद हरिवेकूं हलधर गया कैसा है हलधर जाके हृदयविषैं हरिही बस रहे हैं ॥ २६ ॥ सो भाई तो जलकूं गया अर जगतका सुखदाई वासुदेव जगदीशका ध्यान करै सघन वृक्षकी छाया कोमल पृथ्वीविषैं पीतांबर ओढे पोढा (लेटगया) अपने

वायें गोडे पर दाहिना चरण धरि हरिने खेद दूर करिवेके अर्थि क्षणएक विश्राम किया ॥ ३८ ॥ ताही समय दैवयोगसे जरत्कुमार तहां आय निकस्या वह पापी मृगयाके अर्थि वनविषैं अकेला भ्रमता हुता हरिहीके प्राणकी रक्षाके अर्थि स्नेहके भारकरि भरा द्वारकातैं निकसि दूर वनविषैं आया हुता अर बनचरोंकी न्याई वनमें वसता हुता सो भवितव्यके योगकरि तहां आया धनुष है जाके हाथमें सो दूरहीतैं देखता भया वह न जानै वासुदेव है केशव पौढे हुते सो इनका पीतांबर पवनकर हालता हुता सो वानैं जानी यह सूते मृगका कर्ण हालै है यह विचारि पापी पारधीने धनुषके बाण लगायकरि चलाया सो हरिके चरणविषैं आय लाग्या पगथळी भेदी गई । तब आप शीघ्र ही उठे अर सब दिशा निरखी सो वृक्षके आसरे नजर न पडा तब केशव कहते भए । या वनविषैं हमारा अब कौन है जानैं हमारा पांव वींध्या सो अपना नाम कहो अर कुल कहो मेरे यह विरद है जो विना नाम अर कुल जाने घात न करूं यातैं कहो तू कौन है ? तेरा कुल अर नाम क्या अर या वनविषैं मेरा अंत करता भया सो वैर कहो या भांति केशव कही तब जरत्कुमार बोला या पृथिवीविषैं हरिवंशविषैं उपज्या राजा वसुदेव अति प्रसिद्ध बलदेवका पिता ताका मैं जरत्कुमारनामा पुत्र हूं पिताके अति वल्लभ सो कायरनिकरि अगम्य जो यह वन ताविषैं अकेला भ्रमूं हूं ॥३९॥ मैं श्रीनेमिनाथकी आज्ञा सुनी जो जरत्कुमारके वाणकरि वासुदेवका वियोग है यातैं वस्ती छोडि वनविषैं वसूं हूं मोहि वनमें वसते बारह वर्ष बीत गए सो मैंनें उत्तम पुरुषनिका वचन अब तक यहां न सुण्या तुम कौन हो सो कहो यह वचन जरत्कुमारके सुनकरि मनमें जानी यह भाई जरत्कुमार है यानैं पूर्वकर्मके उदयतैं जिनधर्म न जाना यातै पारधीकी न्याई भ्रमै है तब केशव बोले हे भाई ! यहां आवो याहि अति आदरसूं बुलाया सो जरत्कुमार हू वासुदेवकूं जानकरि हाय ! धिकार धिकार मोकूं ऐसा शब्द करता धनुष वाण डारि हरिके पांयनि पड्या ॥ ४३ ॥ तब हरिने याकूं उठायकरि उरसूं लगाया वह महा शोकरूप याहि कही हे ज्येष्ठ भ्राता ! तू शोक मत करै भवितव्यता दुर्लंघ्य है तुम मेरे प्राणके अर्थि सुख सम्पदा तजी अर प्रमाद तज्या अर चिरकाल वनका

निवास किया भवितव्यके निवारनेका तलाश बहुत ही किया परन्तु भवितव्य न टरै जब दैव परान्मुख होय तब कोई कहा यत्न करि सकै यातैं तुम अब शोक तजो अर पापका त्याग करो अब श्रावकक व्रत धारो ॥ ४६ ॥ तब यानैं हरिसूं बनके आगमनका वृत्तांत पूछा तब हरि सब कथा आद्योपांत कहते भए जो द्वारिकाका दाह भया जे वैराग्य भये तेही बचे अर सब भस्म भए तब यह गोत्रका नाश सुनिकरि अतिविलाप करने लग्या अर कही सब गोत्रकी यह भई अर तुमसे मैं यह करी। अब मैं कहा करूं अर कहां जाऊं। कैसै चित्त समाधान होय मेरा अपयशहू बहुत भया अर मैंने मोटा पाप उपार्ज्या अर महा दुखी भया ॥ ५१ ॥ इत्यादि विलापका कर्त्ता जो जरत्कुमार ताहि वासुदेव स्वामी कही हे राजेंन्द्र ! प्रलाप तजहु यह जगतके सकल जीव अपने उपार्जे कर्मका फल भोगवै हैं। या संसारविषैं सुख अर दुखका दाता कोई शत्रु अर मित्र नाहीं निश्चयथकी विचारिए तो कर्म ही सुख दुखका दाता है। मोहि जल प्यावनेके अर्थि बलदेव जल ल्यावनै गए हैं सो वे न आवैं ता पहले तुम शीघ्र जाओ। कदापि तुमपर उनका क्रोध होय अर वे तुमकूं मारैं तो अपना वंश ही न रहै अर वंशमें तुम रहे हो तातैं तुम श्रावकके व्रत धारो अर पांडवनिपर जाओ। उनकूं सब वार्ता कहो वे अपने परम हितू हैं हमारे कुलकी रक्षाके अर्थि तुमकूं राज देवेंगे। ऐसा कहि केशवने जरत्कुमारकूं कौस्तुभमणि दी अर कही या सहनानी (चिन्ह) तैं पांडव तिहारा आदर करेंगे। अर या मणिकूं तुम मार्गमें छिपायकरि लेजाइयो। ऐसा कहि याकूं मणि देय विदा किया अर क्षमा कराई। वानैं कही हे देव ! मेरी क्षमा है आप क्षमा करियो अर कौस्तुभमणि लेय वह चल्या अर यतनसूं इनके पांवका बाण काढि वह तो गया। अर हरिके बाणके घावकी अति वदना भई। तब आप उत्तरकी ओर मुख करि पल्लव देशविषैं श्रीनेमिनाथ विराजे हैं तिनकूं नमस्कार किया अर पंच णमोकार मंत्रका स्मरण किया भगवान नेमिजिनेंद्र यादवनिके ईश्वर वर्तमान तीर्थेश्वर तिनके अनन्त गुण स्मरणकरि हाथ जोडि बारंबार नमस्कार किया। अर भूत भविष्यत वर्तमान तीनोंकालके सब तीर्थेश्वर तिनकूं अर सकल सिद्ध-

निकूं साधुनिकूं जिनधर्मकूं प्रणामकरि चौंशरण लेय पृथिवीके नाथ पृथिवीपर पौढे उत्तरकी ओर सिर किया अर दक्षिणकी ओर पांव किए ॥ ५६ ॥ अर वस्त्रसूं ढक्या है सर्व अंग जिनका। अर संसारकी मायासूं निवृत्त है बुद्धि जिनकी सब जीवनिविषैं मैत्री भावके धारक मनमें ऐसा शुभ विचार करते भए। मेरे पुत्र पौत्र स्त्री भ्रातृ गुरुजन बांधव जे अग्निके उपद्रव पहले ही संसारका त्यागकरि सर्वज्ञ वीतरागका मार्ग आराधते भए अर तप-विषैं प्रवर्त्ते ते धन्य हैं। अर जे अग्निके उपद्रव भए मेरी हजारां रानी अर बंधुवर्ग परम समाधियोगकरि देवलोक गए अग्निके उपद्रवकर हू जिनके कायर भाव न भया ते धन्य हैं अर मेरे अप्रत्याख्यान कषायका उदय ताकरि महाव्रत न पले अर श्रावकके व्रतहू न पले केवल सम्यक्त्वहीका धारण भया सो ही मेरे हस्तावलंब है। देव वीत-राग गुरु निर्ग्रंथ साध धर्म जीवदया मेरे यह श्रद्धा दृढ है ॥ ६० ॥ इत्यादि शुभ चिंतवन करते होणहार तीर्थेश्वर परंतु पीछे अंत समय परिणाम संक्लेश तीव्र कषायरूप भये सो कषायकरि अशुभका बंध भया मेघाभूमि सामिग्री मेलि ताहीविषै वासुदेव परलोक पधारे। वे महा प्रवीण तीनखंडके स्वामी नारायण अर्द्ध भरतका राज्यकरि प्रजाकूं भी आनन्द उपजाय वहुत दिन सुख किया यादव वंशरूप समुद्रके बढावनेकूं चन्द्रमा एकहजार वर्षका आयु पूर्णकरि कौशांबीनामा वनतैं परभव पधारे उन पुरुषों हीका शरीर स्थिर नाहीं तो औरकी कहा बात ॥ ६२ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ हरिगत्यन्तरवर्णनोनाम द्विषष्ठिमः सर्गः ॥ ६२ ॥



अथानतर बलदेव स्वामी बासुदेवके अर्थि जल लेवेकूं दूर गए हुते जिनके चित्तमें कृष्णही बसे हैं अर मार्गमें इनकूं अनेक अपशकुन भये पर पाछे न आये। वनमें जल दुर्लभ अर ठौर ठौर मृगतृष्णा सो जानें जल ही भरा है। सो बनके मध्य मृग दौडे दौडे तैसैं यह भी दौडे दौडे फिरैं बहुत दूर दौडे तब हलधरने एक सरोवरी देखी जहां चकवा और कलहंस सारस सुंदर शब्द करै हैं। कमल फूल रहे हैं अर भंवर गुंजार करैं हैं ताहि देखि

हलधर प्रसन्न भये अर इनकूं स्वांस अर शीतल मंद सुगंध पवन सन्मुख आई जाकरि खेद निवृत्त भया ॥ ४ ॥ वा सरोवरीमें अनेक जीव जल पीवनेकूं आवे हैं सो इनकूं देखकरि डरे सो इधर उधर होय गये। ये महादयालु इनकरि काहू जीवकूं भय नाहीं यह जल भरने वा सरोवरीमें गये सो जल वनके गंधहस्तीनकी सुगंध ताकरि सुगंधित होय रहा है। सरोवरीमें जाय जल छाणकरि आप पीया तृषा बुझाई अर भाई अर्थि कमलपत्रनिका भाजन शीतल जलसूं भर वस्त्रतैं लपेट ले चाले ॥ ५ ॥ सो दौडे चले आवें चित्तमें भाईका सोच जो मैं भाईकूं अकेला ही छोड आया हूं अर वनमें विघ्न बहुत हैं अर भाई भोला है सदा आनंदरूप है वह दुखसुखकी कहा जाने। या शंकाकरि कंपायमान है हृदय जाका सो दौडा चला आवे। पगनकरि उठी रज ताकरि धूसरे होय गये हैं सुंदर सिरके केस जिनके ॥ ७ ॥ आयकरि दूरतैं देखैं तो आप पीताम्बर ओढे पडे हैं। वस्त्रकरि आच्छादित है सर्व अंग जाका सो दूरतैं बलदेवने देखकरि विचारी जो वृक्ष तले मैं छोड गया हुता तहां ही तिष्ठे हैं। ये राजा सूरके वंशका सूर्य ॥ ८ ॥ पृथिवीका नाथ सुख निद्रा सोवै है सो आपही सुखतैं जागेगा मैं जगाऊं तो खेद होय यह विचार बलदेव बैठा वासुदेवका मुख जोवे। वह जाने आप ही जागेंगे जब बहुत देर भई अर गिरधर न जागे तब हलधर ऐसे वचन कहि जगायवेका उद्यम करते भये। बलदेव कहैं हैं हे वीर! बहुत कहा सोवो अब शयन तजकरि उठो जल पीवो, ऐसे मधुर शब्दकरि बलदेव जगावे सो सुखनिद्रा सोते होंय तो जागैं हरि तो दीर्घ निद्रा सोते हुते दो चार बार जगाये। जब न जागे तब बलभद्र मौन गहि विराजे बहुरि बलदेवने हरिके चरणके घावकी गंधतैं चींटी वस्त्रके भीतर पैठती देखीं सो पैठ तो गई अर वस्त्रके आवरणतैं निकल न सकीं मो चींटी आकुलता-रूप बडे भाईने देखी तब हरिके मुखका वस्त्र उघाडा सो देख करि जाना याकी तो और ही दशा है यह जगतका प्यारा क्या परलोक चला गया! यह कृष्ण तो तृषाकरि परभव पधारा यह विचार बलदेव वासुदेवके उरसूं लग गया अर याहि मूर्च्छा आई सो मूर्च्छित होय गया सो मूर्च्छा न आई याहि जिवाया यद्यपि यह मूर्च्छा अनिष्ट है

तौ भी उनकूं उपकारकी कर्त्ता भई जो मूर्च्छा न आवती तो तत्काल बलभद्र प्राण तजते हरिकै स्नेहकी पासिकरि हलधर दृढ बंधे हैं, इन जैसा स्नेह जगत्में नाहीं क्षणिकमें बलभद्र सचेत होय वासुदेवका अंग अपने हाथकरि स्पर्शते भये। अर चरणके घाव लगा है सो बलभद्रने देखा हरिकी पगथली तो सदा अरुण ही है अर रुधिरके जोगकरि अति अरुण देखा अर कछुइक रुधिरकी गंध भी असुंदर जानी तब मनमें विचारा जो मेरा भाई तो सूता हुता सो काहू शत्रुने हणा विषम बाणकरि याका चरण बींधा सो वह हरिका मारणहारा कौन है ऐसे कह-करि महाबली बलभद्र सिंहनाद करता भया। सिंहनादकरि वन शब्दायमान होय गया अर माते हाथीनिके मद उतर गये अर सिंह हू गुफामें घुस गये बलदेव वनमें शब्द करै है जा निःकारण वैरीने मेरा छोटा भाई सूता अविधितैं मारा है सो शीघ्र मोहि दिखाई देय। जो क्षत्री शूरवीर हैं ते सूतेकूं अथवा शस्त्ररहितकूं अर असाव-धानकूं अर नम्रीभूतकूं अर जो मान तजे वाकूं अर जो भागे वाकूं अर स्त्रीकूं बालककूं वृद्धकूं अर रोगीकूं न मारैं कैसे हैं क्षत्री यशही है धन जिनके ॥ १८ ॥ या भांति ऊंचे शब्द करता महाबली कितनी दूर वनमें दौडा जब कोई न देखा तब पाछा आय कृष्णकूं उरतैं लगाय रुदन करने लगा, बलभद्र विलाप करै है हा जगत्पति! हा शरणागत प्रतिपाल! हा जनार्दन! हा लोकमित्र! हा जगत्के आश्रय! तू मोहि छोड गया। हे लघुवीर! तू शीघ्र ही आय मोहि दर्शन देहु। या भांति विलाप करै है ॥ २० ॥ अर मनोहर शीतल जल तापका हरणहारा हरिकूं प्यावै। सो हरिके गले कैसे उतरै जैसे अभव्यके अर दूरभव्यके उरविषैं सम्यग्दर्शन न आवै ॥ २१ ॥ तैसें जल कंठविषैं न उतरा बलदेव अपने हाथनिकरि वासुदेवका अंग पूंछे पपोलै अर साम्हने बैठा मुख निरखै अर मुख चूमै, सूंघे, स्पर्शै, मूढ होय गई है बुद्धि जाकी सो हरिके मुखके वचन सुना चाहै है ॥ २२ ॥ कान्हको ऐसे वचन कहै है हे धीर! वैरीनिकरि चोरनिकरि अब समस्त पृथिवी ऊजड होय है। द्वारका तो भस्म भई पर पृथिवीकूं क्यों न सम्भालहु पृथिवी तो अब तक सूबस बसे है तुम सम्भालहु अब तू ऐसा सोच क्यों करै है। जो यदुवंश

अर भोजवंश सबही क्षय भया मेरे कोई भाई न रहा ऐसा सोच मत करहु जो हम अर तू हैं तो सब ही हैं अर तू मेरे अनेक जन्मका भाई है सो मैं तोहि देखता देखता अब तक तृप्त न भया तो अब तृप्त कैसे होंउ ॥ २५ ॥ अर मेरी हू भूल जो तेरे ताईं या गहन बनविषैं अकेला छोड मैं जलकूं गया। हे रत्नोंमें रत्न ! हे गुणभूषण! जो लोकविषैं सारवस्तु हुती सो मेरी हरी गई। जो मैं तेरे पास होता तो मेरे होते ऐसा कौन है जो तेरा घात करै। कंसका मद सोई भया पर्वत ताके चूरिवेकूं वज्रसमान तू अर भूमिगोचरी अर विद्याधर तिनका नायक अर गरुड विमान है वाहन जाका अर देवनकूं जीतनहारा यशका सागर जल थल विषै है आज्ञा जाकी, अर समुद्र तरणहारा सो तू कहा गौके खुरविषैं डूब गया मागध आदि समुद्रके देव तिनका स्वामी साक्षात् सूर्य्य अब कहा अस्त होय है। जैसैं सूर्य्य तिमिरकूं हरकरि जगत् विषैं उद्योत करै तैसैं तैं अन्यायरूप तिमिरकूं हरकरि जगत्विषैं धर्मका प्रकाश किया कोऊ शत्रु तेरे सन्मुख न आया तू जगत्कूं जीतकरि जगविषैं यश उपार्जता भया। हे विष्टरश्रव ! हे माधव ! अब तिहारे सोचकरि सूर्य्य अस्त होय है सो देखहु अर सायंकालकी संध्या करहु तेरे सोयवेकरि सबनकूं सोच उपजा है। तेरी दीर्घनिद्रा देख सूर्य्य हू अपने किरणरूप कर तिनकरि अस्ताचलकूं स्पर्शता संता नीचा उतरै है। तेरे सोवनेका सोच कौनकूं न होय। जैसे तू अपने तेजकरि सकल शत्रूनकूं जीति पृथवीविषै प्रकाश करता भया तैसे तेरी तरह दिन-कर तिमरकूं निवारि सर्व दिशाविषैं उद्योतकरि अब छिपै है सो तू याकी ओर तो देखि यह तेरे सोचकरि व्याकुल भया अस्त होय है ॥ २९ ॥ यह सूर्य्य वारुणी कहिये पश्चिम दिशा ता ओर आय करि अस्त होय है अर नीचा पडै है जैसे कोई वारुणी कहिये मदिराका प्रसंग करै सो नीचा ही पडै है अधोलोक जाय तैसे सूर्य्य वारुणी कहिये पश्चिदिशा ताका संग किया। तातैं मानो नीचा ही पडै है चकवा चकईनिके समूह विलाप करै हैं। यह सूर्य्य चकवा चकईनिकरि चाहा थका हू जैसे कोइ समुद्रमें डूबै तैसे अस्ताचलके आश्रय आया है सो सूर्य्य आकाश

रूप उदधिविषै चुभकी लेयता थका मानो जल ही दे हैं। जो कोई समयका वेत्ता होय सो समय विचारकरि कार्य करे ॥ ३१ ॥ अर संध्याकी आरक्तताके पटल करि दिशा लाल हो गई हैं सो मानों सकल तिर्यंच अर नर तेरी दीर्घनिद्राकरि रुदन करै हैं तिनके नेत्रनिकी मानो अरुणता ही विस्तरी है। हे देवभक्त! वीतराग देवविषै है भक्ति जाकी सो तू संध्या वंदनाकरि यह सामायिक पडकूणेकी १ वेला है। हे देव! अब बहुत निद्रा मत करहु पहिले सूर्य्य गया हुता अब यह साझहू गई रात्रिका समय भया। जैसे खोटे कालविषैं महा दुष्ट कालकी वृत्ति सबनकूं एक वर्ण करै है तैसैं यह तिमिररूप दिशा जगतकूं श्याम वर्ण करै है। सम्यग्दर्शन विना मिथ्यात्वरूप तिमिर फैले तैसे सूर्य्य बिना तिमिर जगतविषैं विस्तरा है। हे भ्रात! यह वन तिहारे विराजवे लायक नाहीं। यहां अनेक पापी जीव विचारै हैं अर कुशब्द होय रहे हैं। तातै यहांतै उठो कोऊ नीका गढ होय तहां चलकरि निशा ब्यतीत करैं तुम मणिमयी महलनिके सौंयवे बारे या बनविषैं कहां सूते? कैसे हैं वे महल नाना प्रकारके पुष्पनके हैं मंडप जहां अर महा कोमल सेज महा मनोहर विछै हैं वस्त्र जहां महा लक्ष्मीकरि मंडित परम शोभाकरि संयुक्त ऐसे मंडपविषैं सुन्दर स्त्रीनिसहित पोढते अर हजारों राजा दर्शनके अभिलाषी रहते जों ओसर पावैं तो हरिके दर्शन करें तो तुम या कुभूमिविषैं पौढे हो। हे पृथिवीपति! यह ठौर तिहारे रहवेका नाहीं यहां बनके दुष्ट जीव गृद्ध काक जम्बुक कहिये स्याल इत्यादि मांसपक्षी जीव विचरै हैं तुम महा चतुर जे तिहारी स्त्री मानवती होती तिनकूं प्रसन्नकरि आप प्रसन्न होते। अर सपूर्ण निशा विलासमें ब्यतीत करते सो अव कहा दशा भई ॥ ३८ ॥ सुन्दर स्त्री गान करती अर बंदीजन मनोहर पाठ करते तब तुम जागते सो अब कहा स्यालनीनके शब्द सुनो हो तुम कूं पौढे देख पहले तो सूर्य अस्त भया फिर सांझ होय गई अर तुम सोये हो अब तो शयन तजो या भांति चार पहर निशा गई। बलदेव विलाप करबो करै बहुर प्रभात भया कमल फूले सूर्य उदयकूं सन्मुख भया तव बलदेव वासुदेवतें कहा विनती करै हैं। हे प्रधान पुरुष! अब सूर्य उदयाचल पर उदय भया है मानों तुमकूं अर्घ ही दिया

चाहे है यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे श्रेणिक ! बलदेवने वासुदवतैं अधिक मोह किया यह दोऊ भाई प्राण वल्लभ हैं सो जेती बात बलदेवने कही तेती सब विफल गई जैसे अति बालक भर्तारविषैं अबलाकी विकार चेष्टा विफल जाय तैसे सब चेष्टा विफल गई आप भाईकूं भुजपंजरमें लिये फिरैं जैसे कंसकी शंकाकरि जन्मतेही कान्हकूं उरतैं लगाय ले गये तैंसे बनमें लिये फिरैं या भांति अनेक दिन अर अनेक रात्रि बलदेवकूं विलाप करते भये न खान न पान न निद्रा, मन वचन काय तीनों कृष्णरूप निरन्तर हरिके शरीरकूं लिये भ्रमते हलधर बनविषैं विश्राम न पावते भये।

अथानंतर—ग्रीष्मऋतु गइ अर वर्षाऋतु आई मेघ गर्जने लगे अर बर्षने लगे अर कारी घटानिमें विजुरी चमकने लगी ता समय वासुदेवकी आज्ञा प्रमाण जरत्कुमार पांडवनके समीप भीलका भेष धरे दक्षिण मथुरा गया सो राजद्वार जाय पहुंचा युधिष्ठिरादिकसे द्वारपाल कही जो हरिका दूत आया है तब राजाने अति आदरतैं बुलाया अर अति आदरतैं निकटि बैठाया अर स्वामीकी कुशल पूछी तब जरत्कुमार शोकका भरा गद्‌गद् बाणी करि द्वारकका दाह अर अपने प्रमादके योगतैं हरिका परलोक गमन कहता भया अर प्रतीतके अर्थ हरिकी दो कौस्तुभ मणि राजा युधिष्ठरकूं देता भया सो कौस्तुभमणि देख हरिका वियोग जान युधिष्ठिर आदि पांचों भाई अति विलाप करते भये। हरिसे है अधिक स्नेह जिनका सो परम स्नेही उच्चस्वरका रुदन करते भये अर ताही समय पांडवनके राजलोकमें कुन्ती माता अर पांचों भाईनिकी स्त्री महा प्रलाप करती भई जैसे समुद्रकी ध्वनि होय तैसी उनके रुदनकी ध्वनि भई। पांडवनके घरके नर नारी सब ही महा विलाप करे हैं। हा प्रधान पुरुष ! महा धीर ! हा संसारके कष्ट दूर करनहारे ! तुम सरीखे पुरुषनिकी यह क्या दशा भई। या भांति सब रुदन करने लगे कितनीक वेर रुदनिकरि बहुरि यह पांडव समस्त रीतिके वेत्ता श्रीकृष्णकूं जल देते भये अर जरत्कुमार भीलका वेष धरे सो भेष दूर कराया अर उसकूं बहुत उलाहना दिया।

जो तुम पारधीनिके कर्म करो यह उचित नाहीं तातैं श्रावकके व्रत धारहु। या भांति याकूं उपदेश देय अग्रेसरकरि पाण्डव महा आर्तके भरे हलधरकूं देखने चाले। सो कईएक दिनमें माता अर पुत्र अर द्रोपदी आदि राजलोक अर अपनी सेना सहित बलदेवके देखवेकूं बनमें आये सो बलदेवकूं कैसा देखा भाईके मृतक शरीरकूं उबटना लगावै है अर स्नान करावै है अर आभूषण पहरावै है तब यह पांचों भाई बलभद्रकूं उरतैं लगाय बहुत रुदन करते भये। बहुरि कुन्ती अति अधीर होय हलधरतैं हरिके दाहके अर्थि वीनती करती भई तब मुंह फर लिया अर कही तू मर तेरे पांचों पुत्र मरें मेरा भाई क्यों मरै यह बात कह परान्मुख होय गये जैसे बालक विषफलकूं गाढ़ा पकडे अर मांगेतैं काहूकूं न देय तैसे बलदेव वासुदेवकूं गाढा गाढा छातीतैं लगावै अर काहूकूं न सौंपे॥ ५६॥ पांडवनिकूं देखकरि बलदेव कहते भये। हे पांडवो! प्रभु बहुत देरके तिसाये हैं सो उठकर पानी पीवेंगे अर कुछ भोजन करेंगे तातैं शीघ्रही सब तय्यारी करहु स्वामीकूं स्नान करावो बहुरि अन्नपान करावो तब पांडवनिने कही जो प्रभु आज्ञा करोगे सोही होवेगा तब तत्काल इन्होंने भोजनकी तैयारी कराई अर स्नानकी सामग्री ले आये सो बलदेव वासुदेवकूं स्नान करावै हैं। अर पानीका कटोरा भर प्यावें अर भोजन करावें सो वह भोजन कहा करैं जब वे अन्नपान न करें तब ये भी न करें। यह दशा बलदेवकी पांडवनिने देखी तब इनकी कृतार्थता वृथा मानते भये परन्तु कहा करें वडेनसे कुछ कहा न जाय तब बलदेव भोजन न करते तो पांडव भी भोजन न करें। पांडव इनके आज्ञाकारी हैं बलदेवके लार लार फिरैं या भांति चातुर्मास पूर्ण करते भये।

अथानन्तर—शरद ऋतु आई मानों यह शरद ऋतु बलभद्रका मोहरूप मेघ पटल दूर करवेकूं आई। सप्तवर्ण जातिके वृक्षनके पुष्पनिकी सुगंधता फैली अर महा सुगंध गिरधारीका शरीर सो हू दुर्गंध भया ताकी दुर्गंधता दूर तक फैली सुगंध अर दुर्गंध ये दोनोंही एकत्र नाहीं जहां सुगन्ध तहां दुर्गन्ध नाहीं अर जहां दुर्गन्ध तहां सुगन्ध नाहीं इन दोऊकी एक ठौर स्थिति न हो॥ ६०॥ अर बलभद्रका प्रतिबुद्ध होयवेका समय आया सो वह

सिद्धार्थ नामा सारथी भाई जो देव हुआ हुता अर जिससे वचन हुआ हुता सो बलदेवके निकट आया अर वाने बलभद्रकूं यह दृष्टान्त दिखाया, वह मनुष्यका रूप धरि मायामई रथमें चढा आया हुता सो पर्वतके विषम तट पर रथकूं नीके लिये आया अर सूधे मार्गमें रथ नाख दिया सो संधि जुदी होय गईं बहुरि बलभद्रकूं दिखाय संधि संवारने लगा। तब बलभद्र पूछी तेरा रथ विषम मार्गमें तो चला आया अर सूधे मार्गमें क्यों पडा अर अब तू इसकूं संवारे है सो यह तो विखर गया संधि संधि जुदी होय गईं तू कैसे करेगा तब वह बोला जो कृष्ण महाराज महाभारथरूप समुद्रकूं उलंघनहारे जरत्कुमारके वाण करि कैसे मूये अर अब कैसे जीवेंगे यह उत्तर दिया तब बलदेव चुपके होय रहे। बहुरि वह जल रहित पर्वतकी सिला पर कमल रोपने लगा तब बलदेव कही कभी सिलापर भी कमल ऊगें हैं तब वाने कही कभी मृतक भी अन्न पानी ग्रहे हैं तब हलधर मौन गहि रहे बहुरि वह सूखे वृक्षकूं सींचता भया तब बलभद्र पूछी कहीं सूखा वृक्ष भी हरा होय है तब वाने कही कभी परलोक गया हुआ भी आवै है तब बलदेव नीचे होय रहे। बहुरि मृतक गायके कलेवरके पास तृण डारता भया अर वाका मुंह फाडकरि जल पिवावे सो वह कैसे पीवे। तब बलदेव कही तू कहा करै है तब वाने कही तुम कहा करो हो बडे पुरुष अपनी भूल न विचारें अर औरनिकी विचारें यह वचन सिद्धार्थनामा सारथी जो देव है ताके ऐसे वचन सुन बलदेव प्रतिबुद्ध भये जानी वासुदेव परलोक गये। जो यह कहै है सो सत्य है जो बीतरागी देवने भाख्या हुता सो भया॥ ६७॥ देखो मेरी भूल मैं भवस्थितिका वेत्ता जिनबाणीका श्रद्धानी छः महीने केशवके कलेवरकूं वृथा लिये फिरा यह सब मोहका कारण है। अर मैं ऐसा भ्रम धारा जो मैं न हुआ तो याके बाण लागा सो यह विचार वृथा है या प्राणीका न कोई रक्षक है न कोई नाशक है आयु कर्महो सबनिका रक्षक है अर आयुके क्षय भये सर्वथा शरीरका क्षय है॥ ६९॥ अर यह राज्यसंपदा हाथीके कान समान चंचल है। अर सुजन संयोग है तहां वियोग है संयोग होय तिसका वियोग होय ही होय अर यह जीवना है सो मरणके

दुःख करि नीरस है तातैं ज्ञानवन्त मोक्षहीका यत्न करै हैं। मैं मन मोहनके मोह करि इतने दिन गृहस्थ अवस्थामें रहा। अब बीतरागका मार्ग धार मुनि होय संसाररूप समुद्रकूं तिरूंगा। या भांति बलदेव स्वामी जगतकी झूंठी माया जानकरि निर्मोह होय जगदीशके मार्गकूं उद्यमी भये मोहके पटलविषैं आय गए हुते सो मोहपटलकूं दूरकरि चंद्रमातैं अधिक दीप्तिमान भए। पाया है आत्मज्ञान जिसने जैसा बलदेवका आगैं रूप हुता तातैं भी अधिक रूप भासता भया ॥ ७१ ॥ अर पांडव अर जरत्कुमार इन सहित तुंगीगिरिके शिखरपर हरिके देहका दाह किया अर जरत्कुमारकूं राज्य दिया ॥ ७२ ॥ अर तुंगीगिरिके शिखर ही पर पांडवनिने अर जरत्कुमारने अनुराग तजि क्षमाभावकरि बलदेवने जैनेश्वरी दीक्षाका निश्चय किया यह संसारका संबंध क्षणभंगुर जाना जा समय बलदेवकूं वैराग्य उपज्या ता समय गिरिपर महा मुनि नाहीं हुते जिनसे दीक्षा लेते सो पलव नामा देशविषै श्रीनेमिनाथ विराजे हुते सो बलदेव पल्लवदेशकी तरफ मुखकरि ठाढे रहे अर यह शब्द मुखतैं कहा जो मैं श्रीनेमिनाथका शिष्य हूं अर उनहीका मेरे स्मरण है अर वे ही मेरे घटमें विराजे हैं 'श्रीनेमिनाथाय नमः' यह शब्द उच्चारकरि अपने सिरके केश अपने हाथनि उपारे। अर अठाईस मूलगुणका धारणकरि महाव्रती भए ॥ ७४ ॥ बहुरि कईएक दिनमें बलदेव स्वामी पारणाके अर्थि नगरमें आए सो नगरके नरनारी इनका अद्भुत रूप देखि मोहित होय गए अर स्त्री ऐसी विह्वल भई जो घडेकी ठौर पुत्रनकूं कूपमें उरासने लगीं तब आप यह विपरीत देख आहार ते पाछे फिरे बनचर्याहीकी प्रतिज्ञा करी जो कोई श्रावक दैवयोगतैं बनमें आवै तो उनके आहार करना अर नगरमें न आवना, कैसे हैं बलदेव जिनराज समान है मुनिराज अवस्था जिनकी यह एकाविहारी जिनकल्पी मुनि हैं बलदेवके वैराग्य भए पीछे पांडवनिने जरत्कुमारकूं बहुत राजकन्या परनाईं। अर पांचों भाई पल्लवनामा देश जहां श्रीनेमिनाथ हैं तहां गए अर माता कुन्ती द्रौपदी सहित प्रभुके दर्शनकूं गई। संयम धारनेकी है इच्छा जिनके सो यह तो सब प्रभुके दर्शनकूं गए अर

६८

बलदेव मुनि होय महातप करते भए अर १२ भावनाका विचार करै हैं इन बारह भावनाओंके विचारतैं वैरागविषैं अति निश्चल होते भये बलभद्र मनमें विचारे हैं। तन, धन, कुटुंब संसारके सुख अर घर यह सब क्षणभंगुर हैं इनकूं जो नित्य माने हैं सो अज्ञान है यह आत्मस्वरूप चिद्रूप नित्य है अर सब राज्य संपदा विनश्वर है संयोग सम्बन्धमें कोई नित्य नाहीं यह अनित्य भावनाका चिंतवन किया बहुरि विचारे हैं जैसे बनमें मृगके बालककूं ब्याधने पकडा ताहि कौनका शरण तैसे कालरूप केसरीने पकडा यह जीवरूप मृग ताहि शरण कौनका यह धन अर बांधवादि जीवकूं शरण नाहीं दुखतैं कोई बचाय न सके एक धर्महीका शरण है। या भांति अशरणानुप्रेक्षाका चिंतवन किया बहुर विचारैं हैं यह संसाररूप चक्र अनादिकालका भ्रमण करै है ताके योगकरि यह जीव अनेक योनि अर कुलकोडिमें भ्रमण करै है कर्मरूपयंत्रीका प्रेरा स्वामीतैं सेवक होय है अर सेवकतैं स्वामी होय है पितातैं पुत्र होय है अर पुत्रतैं पिता होय है। यह संसार भावनाका चिंतवन किया। बहुरि बलदेव विचारैं हैं यह प्राणी अकेलाही जन्मे अर अकेलाही मरे है, चतुर्गतिमें भ्रमै है तो अकेला अर निर्वाण जाय तो अकेला याका सहाई और कोई नाहिं यह एकत्व भावनाका चिंतवन किया ॥ ८२ ॥ बहुरि विचारे है मैं जीव पदार्थ नित्य अर यह शरीर अनित्य अर मैं चेतन यह अचेतन तातैं मेरे अर शरीरके कहा सम्बन्ध सर्वथा यह शरीर ही मोतैं भिन्न है तो और पुत्र कलत्र धन धान्यादिकी कहा बात यह अनित्य भावनाका चिंतवन किया ॥ ८३ ॥ बहुरि विचारे है यह देह वीर्य अर रक्त करि उपजा है मलीन है मूल जाका अर सप्तधातुमई है। अर त्रिदोषकूं लिये है सो या शरीरविषै शुचि कहांसे होय यह महा अपवित्र है अर आत्मा पवित्र है तातैं अपने शरीरविषैं अर स्त्री पुत्रादिकके शरीरविषैं राग करना वृथा है ॥ ८४ ॥ यह अशुचि भावनाका चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारैं है मन वचन कायके योग्य पुण्यपापके आस्रवके कारण हैं। अर यह जीव कर्मबन्धरूप दृढ सांकलसे बंधा चिरकाल संसाररूप वनविषैं भ्रमण करै है यह आस्रवानुप्रेक्षाका

चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारे हैं मिथ्यात्वरागादि यह भावास्रव अर ज्ञानावरणादि कर्मका आगम सो द्रव्यास्रव यह दोय प्रकारका आस्रव तिनका निरोध सो संवर, समिति गुप्ति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहका जीतना सो चारित्र तिनकरि होय है सो निर्जराका कारण है यह संवरानुप्रेक्षाका चिंतवन किया। बहुरि बलदेव विचारे हैं अपने उपार्जे पूर्व कर्म तिनका क्षय सो निर्जरा दोय प्रकार है एक सविपाक दूजी अविपाक सो सविपाक तो सबही जीवोंके होय है पूर्वकर्म बंधे हुये सो अपना फल देय खिरजाय हैं सो यह निर्जरा तो कल्याणकारिणी नाहीं अर अविपाकनिर्जरा संवरपूर्वक होय है विना विपाक दीये सत्ताका सत्ताहीमें स्थिति अनुभाग घाटि खिरै है जहां नवीन कर्म रुके हैं अर प्राचीन कर्म तपकर खिपै हैं सो यह निर्जरा कल्याणकारिणी मुक्तिका मूल ज्ञानी जननि हीके होय है यह निर्जरानुप्रेक्षाका चिंतवन किया बहुरि बलदेव विचारे हैं यह लोक अनादिनिधन है काहूका किया नाहीं अर याका कभी अंत नाहीं अर यह लोक महादुःखका भरा है अर या लोकके शिखर सिद्ध विराजे हैं, ते अनन्त सुख भोगवें हैं अर या लोकविषैं यह षट्कायके जीव सबही दुखित हैं कोई सुखी नाहीं या भांति दशमी लोकानुभावनाका चिंतवन किया॥ ८६॥ बहुरि बलदेव विचारे हैं यह जीव अनादिकालका भ्रमण करै है सो अनन्तकाल थावर योनिमें व्यतीत किये सो थावरते निकल विकलत्रय होना दुर्लभ अर विकलत्रयतैं असैनी पंचेंद्रिय होना दुर्लभ अर असैनीतैं सैनी पंचेंद्रिय तिर्यंच होना दुर्लभ अर पशुतैं मनुष्य होना दुर्लभ तिसमें आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल, दीर्घायु सत्बुद्धि, सत्संगति शास्त्रश्रवण, धर्मकी प्राप्ति अर आत्मज्ञान अति दुर्लभ हैं अर समाधिमरण दुर्लभ है यह ग्यारमी दुर्लभानुप्रेक्षाका चिंतवन किया बहुरि बारहवीं धर्मानुप्रेक्षाका चिंतवन करैं हैं जिनभाषित धर्मही शिव कहिये कल्याण ताकी प्राप्तिका कारण है सो जिनधर्मके लक्षण जीवदया सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य परिग्रहत्याग, क्षमा, निगर्वता, निष्कपटता, पवित्रता, तप, संयम, ज्ञान, वैराग्य आदि अपार है या रूप जिनधर्म है ताका अंगीकार सो निर्वाणका कारण है अर धर्मका त्याग या जीवकूं अनन्त दुःखका

कारण है ऐसा चिन्तवन करना सो धर्माऽनुप्रेक्षा कहिये। यह बारह अनुप्रेक्षानिका चिंतवन बलदेवने बारंवार सूत्रके अनुसार किया भाईका मोह हुता सो अनुप्रेक्षानिके चिंतवनकरि निवार्या अर बाईस परीषह जीतीं ॥ ९१ ॥ वे महापुरुष जिनसूत्रकी आज्ञाके अनुसार तपके करणहारे जठराग्नि जो क्षुधादि ताहि जीतकरि संयमविषैं आरूढ भये अनेक प्रकार व्रतपरिसंख्या तपके भेद धारे ग्राम नगरादिकमें तो आहारकूं आवना तज्या ही हुआ था अर वनचर्या है तामें हू यह विचार करें वनविषैं श्रावक आये हैं सो उनके या भांति मिलैगा तो लेंगे अन्नका अवग्रह करैं जो यह अन्न मिलेगा तो लेंगे अर दिशिका अवग्रह करैं जो या दिशिम मिलेगा तो लेंगे अर कुलका अवग्रह करैं तीन कुलके श्रावकहीके यतीका आहार है शूद्रनिके नाहीं सो इन तीन कुलनिमें ऐसा अवग्रह करैं आज विप्रकुलहीके श्रावकनिके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे अथवा आज क्षत्री कुलहीके श्रावकनिके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे तथा वैश्यकुलके श्रावकनिके अमुक अन्न मिलैगा तो लेंगे ऐसे अवग्रह करैं अथवा आज पुरुषहीके हाथका भोजन करैंगे नारीके हाथका नाहीं इत्यादि अनेक विषम आग्रह धार अर जेती भूख है तातैं आधा आहार करैं मोक्षके साधनके अर्थि प्रथम क्षुधा परीषह जीती बहुरि दावानल समान जो तृषा ताकरि देहके सब अंग जरै हैं अर स्वामीके कुछ बाधा ही नाहीं शीतक्रियाका उपचार नाहीं शांतभावरूप मेघकी घटाकरि सींच्या है हृदयरूप क्षेत्र जिनका ॥ ९२ ॥ ताकरि तृषाका ताप न होता भया यह दूजी परीषह जीती बहुरि शीतकालविषैं विषमभूमि नदी सरोवरके तट निशा पूर्ण करी महा तीव्र पवन महाशीत तामैं जलकी वृत्ति सो तरुके तले व्यतीत करी। रात अर दिन वे योगेन्द्र योग हीमें निश्चल भए नग्न शरीर निराधार निराश्रय निरद्वन्द निर्ग्रंथ निरंजनके उपासक याभांति तीसरी शीत परिषह सहते भए अर ग्रीष्ममें पर्वतके शिखर पर तिष्ठते संते उष्ण परीषह सहते भए पर्वतकी शिला तपै है अर सब ओरसूं दावानलकी धूम संयुक्त लूह चली आवै है सो ध्यानरूप छत्रकी छायाकरि ग्रीष्मका आताप निवारते भए। चौथी परीषह जीती अर पांचमी दंश-

मशकादि परीषह सहते भए। डांस आदि नन्हे जीव दृष्टि थोडे पडें अर गूढवृत्तिकरि शरीरका रुधिर पीवैं ताकरि बलदेव स्वामी कंपायमान न भए। दंशमसकादि परीषह दृढतासूं सहते भये ॥ ९६ ॥ अर छठी नग्न परीषह अपने वश सहते भए। नग्नशरीरकूं शीतकी घामकी दंशमसकादिककी सबकी बाधा होय सो रंचमात्र हू बाधा न गिनी जैसैं उत्तम स्त्री लज्जा लिये तिष्ठै तैसैं नग्न मुद्रा धरे विराजते भये अर सातवीं अरतिपरीषह सही अर अरति खेद न मान्या ध्यान योग जे विषमगिरि तिनके शिखरपर विराजे एकाविहारी जिनकल्पी मनका है निग्रह जिनके अर धर्मसाधनविषै है रुचि जिनकी। जैसैं गृहस्थाश्रमविषैं रनभूमिमें रिपुनिसूं पीछे नाहीं फिरते तैसैं परीषहसूं पाछे न भए। जो शरीरकूं अरति उपजी सो सही अर आठवीं स्त्री परीषह जीती कामरूप योधा स्त्रियनिके भौंहरूप धनुष चढाय अर तिनके कटाक्षरूप बाणनिकी वर्षा करता भया विवेकरूप मित्रके बलकरि कामरूप शत्रुकूं जीत्या अर नवमीं चर्या परीषह सहते भए साधुकूं चौमासा टारि एक स्थानक रहना नाहीं तीर्थ भूमिमें विहार करना यह साधुके आवश्यक है सो विहार करते कंटक कंकर आदि चुभैं अर फांस चुभैं तथा शीत अर उष्णमें मार्गकी धूरि आदि अति शीत होय अर उष्ण होय सो बाधक है राजपदमें गज तुरंग रथ पालकी आदि अनेक बाहन हुते तिनकूं चितारे नाहीं अर चर्या परीषहका खेद न मानै अर दशवीं निषिद्यापरीषह सहते भए जे बलदेवस्वामी ध्यानकरि धोई है बुद्धि जिनने सो पवित्र प्रासुक भूमिविषैं जहां स्त्री नपुंसक बालक मूढ जनका संसर्ग नाहीं तहां स्थान करते भए सो विषमभूमिकी बाधा अर कंकर पत्थरादिककी बाधाकरि खेदखिन्न न होते भए अति दृढतासूं निषिद्या परीषह सहते भए। बहुरि ग्यारवीं शय्या परीषह सहते भए। ध्यानथकी अथवा सूत्रके अध्ययन थकी रात्रि व्यतीत करते भए। अलपकाल अल्प है निद्रा जिनके सो भूमिशय्याविषैं एक करवट रह दूजी करवट न लई अर गृहस्थ अवस्थाके सेज बिछौना विसरण होय गए सो कबहूं न चितारे जाभूमिविषैं कंकर पत्थर तहां शयन करें। या भांति ग्यारहवीं शय्यापरीषह सहते भये अर बारहवीं कुवचनपरीषह

क्षमाभावकरि सही धीर है बुद्धि जिनकी अर शांत है स्वभाव जिनका दुर्जननके कठोर वचन शस्त्र हुते अति तीक्ष्ण हृदयके भेदनहारे अति दुःसह सो स्वामी सहते भये नाहीं है काहूसूं कषाय जाकें अर तेरहवीं वध बंध-परीषह सहते भये। मनमें यह विचारैं जो अग्नि बाणादि दिव्यास्त्र अर खड्गादि सामान्य शस्त्र इनकरि शरीर हत्यां जाय है परंतु आत्मा नाहीं हत्या जाय है। अर नागपासि आदि देवोपुनीत बंधन अर वैरी सांकल आदि सामान्य बंधन इनकरि शरीर बांध्या जाय है आत्मा नाहीं बंधे है। आत्मा अमूर्तिक है ऐसा विचारि वधबंधन-परीषह मुनिवर सहैं। मुनीनिके शत्रु मित्र सब समान हैं ताकरि परीषह जीतैं ॥ ४ ॥ बहुरि चौदहवीं अयाचना-परीषह बलदेव स्वामी सहते भये मुनिकूं काहूसूं कुछ हू याचना न करनी वाह्य अर अभ्यंतर बारह तपके करणहारे स्वामी अस्थिमात्र रह्या है शरीर जिनका अर जिनसूत्रके अनुसार है आचरण जिनका अर अजाची है वृत्ति जिनकी सो कदेहू काहूपै कोई वस्तु नाहीं जांची जे जिनेश्वर सारिखे दातापर मोक्षसारिखा पदार्थ न जांचैं ते औरनपै अर वस्तु कहा जांचैं यह चौदहवीं याचनापरीषह कही अर पंद्रहवीं अलाभपरीषह कहै हैं वे भगवान आत्माराम मौनव्रतके धारक शरीरविषैं हू नाहीं है ममत्व जिनका निर्मलव्रतके आचरणहारे जैसें चंद्रमा बडे मंदिरमें हू प्रकाश करै अर छोटे घरमें हू प्रकाश करै तैसें मुनिराज तीनकुलमें धनवान अर निर्धन सबनिके आहारकूं जांय जैसा आहार मिलै तैसा ही लेवैं अर अंतराय होय तो पाछे आवैं अलाभविषैं खेद न मानैं। यह पंद्रहवीं अलाभपरीषह हलधर मुनिवर सहते भये ॥ ६ ॥ अर सोलहवीं रोगपरीषह बलभद्र जीती वे मनुष्यनिके इंद्र राजानिके स्वामी राज्यअवस्थामें महामनोहर भोजन करते सो मुनींद्रपदमें जैसा मिलै तैसा लेंय कबहूं खारा कबहूं अलूणा कबहूं रूखा कबहूं चिकणा कबहूं उष्ण कबहूं पहर डेढपहरका शीत या भांति प्रकृतिविरुद्ध आहारके लेयवेकरि वात, पित्त, कफ आदि अनेक रोग उपजे सो स्वामीके रोगका जतन नाहीं, एक निर्वाण हीका यत्न है। या भांति रोगपरीषह सही बहुरि सत्रहवीं तृणस्पर्शपरीषह सहते भये दावानलकरि जले तृण तिनकी

सूई समान अणी अर लाखके टूक अर कंकर पत्थर तिनकरि कर्कस जो स्थान ताविषैं शयन अर आसन करते उपजी है अंगविषैं पीडा तोऊ खेद न मानते भये याभांति सत्रहवीं परीषह जीती अर अठारहवीं मलपरीषह सहते भये वे राजेंद्र गृहस्थपनेमें नित्य स्नान अर सुगंधादिका लेप करते सो अब मुनिपदमें स्नान अर विलेपनका त्याग भया तो शरीरविषैं पसेव अर रजके योगकरि मलीनता भासै अर करके नखहूकरि नाहीं है तनका स्पर्श जिनके सो महा धवल कैसे सोहै हैं जैसैं धवलाचलके ऊंचे शिखरपर मेघकी कारी घटाकरि वेढ्या चंद्रमा सोहै है शरीरका नाहीं है संस्कार जिनके या भांति अठारहवीं मलपरीषह जीती। अर उन्नीसवीं सत्कारपुरस्कार परीषह सहते भये जो कोई आदर करै स्तुति करै सत्कार करै तो वासूं राग नाहीं अर जो कोई निरादर करै तिरस्कार करै तो वासूं अरुचि नाहीं विकाररहित शुद्ध है बुद्धि जिनकी शत्रुमित्रविषैं समान भाव हैं जिनके सो उन्नीसवीं परीषह सहते भये। अर बीसवीं प्रज्ञा परीषह जीती। आप महा बुद्धिमान सकल शास्त्रके वेत्ता वादित्वऋद्धिके धारक जिनसूं वादकरि कोई न जीति सकै अर वाग्मी कहिये महावक्ता अर गम कहिये ग्रन्थनिकी टीकाके कर्त्ता अर महाकवि कहिये ग्रन्थनिके कर्ता परंतु जिनके बुद्धिका गर्व नाहीं। जो मैं ऐसा हूं मो समान अन्य नाहीं अर जो कोई मूढजन कहैं जो यह तो बुद्धिहीन है, ऐसे वचन सुनि मनमें खेद न आनैं या भांति प्रज्ञापरीषह सही अर इक्कीसवीं अज्ञानपरीषह जीतते भये जो कोई अविवेकी मिथ्यादृष्टि ऐसे वचन अवज्ञाके कहै जो यह अज्ञानी है मनुष्य नाहीं पशु है कुछ समझ नाहीं वृथा मौन गहि राख्या है ऐसे निन्दा वचन सहते भये इक्कीसवीं परीषह जीती अर बाईसवीं अदर्शनपरीषह सहते भये महापुरुष ऐसा भ्रम मनमें न आनैं। जो उग्रतपका फल महाऋद्धि है आगैं यह बात सुनते सो अब तो नाहीं तातैं यह वचन सत्य है या असत्य है शुद्ध सम्यक्त्वके धारक या भांति संदेह न करैं तपका फल अष्ट सिद्धिका है यह निःसंदेह है अर हमारे काहू वस्तुकी कामना नाहीं शुद्धि होहु अथवा मत होहु हम आत्मस्वरूप चिद्रूप हैं ऐसा विचारिकरि बलदेव स्वामीने अदर्शनपरीषह जीती ॥ १३ ॥ यह बाईस

परीषह तिनके जीतनहारे हलधर स्वामी विषयकषाय दोषनिके हरणहारे अति दुर्द्धर तप करते भए महा जिनधर्मके आराधक तीर्थंविषैं है विहार जिनका सो तीर्थेश्वरका मार्ग मन वचन कायकरि सेवते भए॥ १४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ बलदेवतपोवर्णनोनाम त्रिषष्ठितमः सर्गः ॥ ६३ ॥

अथानंतर——ते पांडव महा पराक्रमी संसारसूं भयभीत पल्लव देशविषै जहां श्रीभगवान नेमिनाथ विहार करै हैं तहां गये चतुर्निकायके देवनिकरि मंडित समवसरणविषैं परमेश्वर विराजे हैं तहां जाय जिनेंद्रकूं प्रदक्षिणा देय भावसहित नमस्कार करते भये भगवानरूप मेघ तिनि ज्ञानरूप अमृतकी बृष्टि करी सो पीयकरि जिनेश्वरकूं अपने पूर्वजन्म पूछते भये सो प्रभु दिव्यध्वनिकरि कहै हैं। या भरतक्षेत्रविषैं चंपापुरीमें राजा मेघबाहन कुरवंशका आभूषण ताके समय नगरीमें विप्र सोमदेव जाके ब्राह्मणी सोमिला ताके पुत्र तीन तिनके नाम सोमदत्त सोमिल सोमभूति तिनका मामा अग्निभूति ताकी स्त्री अग्निला ताके पुत्री तीन——धनश्री, मित्रश्री, नागश्री सो यह तीनों भाई परने यह ब्राह्मण माता पिता अर तीनों भाई अर बहू दोय इतने जीव तो महा जिनधर्मी संसार शरीरतैं उदास शास्त्रके वेत्ता अर तीजे भाईकी स्त्री नागश्री सो अविवेकिनी कैयक दिनमें माता सोमिला तो आर्यिका भई अर पिता सोमदेव दिगंबर भये अर तीनों भाई श्रावक अणुव्रती अर दोऊ बहू श्राविका यह धर्मका साधन करते भये अर नागश्री धर्मसूं विमुख एकदिन धर्मरुचिनामा मुनि आहारके समय इनके घर आये मानूं वे मुनि अखंड धर्मके पिंड ही हैं चांद्रीचर्याके धारक महाव्रती, अणुव्रती श्रावकका घर जानि आये चंद्रमा घर पर उद्योत करै तैसे यह हू धनी अर निर्धनी सबके आवैं। उत्तमकुलका आचारी श्रावक होय ताके घर आहार करैं जब साधु आये तब सोमदत्त बडे भाईपर गये अर कोई कायकी ब्याकुलता भई तब सोमदत्त तीजे भाईकी स्त्री नागश्री ताहि दानकी आज्ञाकरि गया हुता। सो पापिनी निःकारण वैरिणी मुनिकूं विषसंयुक्त आहार दिया

सो महामुनि समाधिमरणकरि सर्वार्थसिद्धि गये अर वे तीनों ही भाई नागश्रीका यह कर्तव्य जानि वरणनामा मुनिके निकट मुनि भये अर धनश्री अर मित्रश्री यह दोऊ भाईनकी बहू गुणवती आर्याके समीप आर्यिका भई संसारके वाससूं विरक्त भईं सो वे तीनों मुनि अर दोऊ आर्यिका रत्नत्रयकूं शुद्धताके अर्थि तपश्चरणविषैं उद्यमी भये सो सब जीवनविषैं समभाव सो सामायिकचारित्र कहिये तहां सकल पापक्रियाका त्याग अर अखंडित संयम अर जहां प्रमादके योगसूं संयमका लोप होय अर पाछा संयम थापै सो छेदोपस्थापना चारित्र कहिये। जहां असंयमके परिहारकरि अर संयमके धारणकरि उत्कृष्ट शुद्धता होय सो परिहारविशुद्धिचारित्र कहिये ॥ १७ ॥ अर जहां सांपराय कहिये कषाय तिनमें क्रोध मान माया यह तीन तो नवमें गुणस्थानके अंत जाते रहे अर दशवें गुणस्थानके सूक्ष्म लोभ रहै सो सूक्ष्मसांपरायनामाचारित्र कहिये समस्त पापका है अभाव जहां ॥ १८ ॥ अर यथाख्यात कहिये जैसा सिद्धांतविषैं कहा है तैसा होय चुक्या सो उपशांतमोह तथा क्षीणमोह मुनिके होय है सो चारित्र साक्षात् मोक्षका मूल है ॥ १९ ॥ अर तप बारह जिनमें छः अभ्यन्तर अर छह वाह्य, तप प्रायश्चित्तादि ध्यान पर्यंत छः अर वाह्य तप अनशन आदि कायक्लेश पर्यंत छह तिनमें प्रथम वाह्य तप कहै हैं संयमादिककी वृद्धिके अर्थ अर ध्यानकी सिद्धिके अर्थ रागभावकी हानिके अर्थ अनेक उपवास करते सो अनशननामा तप कहिये ॥२१॥ अर दोषनिकी शांतता अर संतोषकी वृद्धि अर ध्यान तथा अध्ययनकी सिद्धिके अर्थ अर संयमकी दृढताके अर्थि जागरणका कारण जो अल्प आहार सो करना ताका नाम अवमौदर्य तप कहिये ॥२३॥ अर महामुनि आहारके अर्थि ऐसा विचार करैं जो आज हमकूं एक घर आहार मिलैगा तो लेंगे दूजे घर नाहीं जावेंगे अथवा ऐसा आहार मिलेगा तो लेंगे नातर न लेंगे इत्यादि आशाकी निवृत्तिके अर्थ अवग्रह करना सो वृत्तिपरसंख्यान नामा तप कहिए। अर घृत दधि दुग्ध खीर मिष्टान्नादि गरिष्ट आहारका त्याग सो इंद्रीनिके जीतिवे अर्थि रसपरित्यागनामा तप कहिए ॥ २४ ॥ अर बालक तथा स्त्री अथवा नपुंसक अथवा मूढ मिथ्यादृष्टि इनसूं रहित

प्रासुकस्थानविषैं आसन सो विविक्तशय्यासननामा तप कहिए अर शीतकाल नदी सरोवरके तीर अर उष्णकाल गिरिके शिखर अर वर्षाकाल वृक्षके तले यह त्रिकाल योग अर कायोत्सर्ग अर मासोपवास पक्षोपवास चतुर्मासोपवास इत्यादि तपका धारण शरीरके सुखका त्याग सो कायक्लेशनामा तप कहिए। यह छै प्रकार वाह्यतप कहे सो मोक्षके मार्ग हैं ॥ २६ ॥ यह शरीरादि परद्रव्यकी अपेक्षा लिए अर परवस्तुके निमित्ततैं होय है तातैं यह वाह्यतप कहिये अर मनके निश्चलकरिवे अर्थि माहिले तप छै अभ्यन्तरविषे अशुभकी निवृत्ति अर शुभकी प्रवृत्ति सो प्रायश्चित्तनामा तप कहिये सो प्रायश्चित नवप्रकार है—आलोचना १, प्रतिक्रमण२, आलोचनप्रतिक्रमण दोऊ इकट्ठे ३, विवेक ४, कायोत्सर्ग ५, तप ६, छेद ७, परिहार ८, उपस्थापना ९, अर दूजा विनयनामा तप ताके भेद चार—दर्शनविनय, चारित्रविनय, ज्ञानविनय, उपचारविनय, अर वैयावृत्यके भेद दस—आचार्य १, उपाध्याय, २, तपस्वी ३, शैक्ष ४, ग्लान ५, गण ६, कुल ७, संघ ८, साधु ९, मनोज्ञ १०। यह दसप्रकार मुनि तिनके वैयावृत्य करनें अर स्वाध्यायके भेद पांच पढना १, पृछना २, अनुप्रेक्षा ३, आम्नाय ४, धर्मोपदेश ५, अर संकल्पविकल्पका त्याग सो कायोत्सर्ग ताके भेद दोय ममताका त्याग सो निश्चय अर कायोत्सर्ग आसन सो व्यवहार अर चित्तकी निश्चलता सो ध्यान ताके भेद चार सो कहै हैं तिनमें आर्त्त रौद्र दोय खोटे सो दुर्ध्यान कहिये अर धर्म शुक्ल यह दोऊ नीके सो उत्तम ध्यान कहिये ॥ ३१ ॥ यह बारह प्रकार तप कहे अब इनका विशेष व्याख्यान करैं हैं। प्रायश्चित्तके भेद नव तिनमें प्रथम आलोचना कहिये प्रमादकरि जो आपके दोष उपज्या होय सो गुरुके निकट प्रकट करना अर प्रतिक्रमण कहिये मिथ्या हूजियो मेरे दुराचार इत्यादि शुभ भावनिकरि दोषनिका निराकरण अर तीजा भेद आलोचनाप्रतिक्रमण यह दोऊ केतेक दोष आलोचनाकरि दूर करने अर केतेक प्रतिक्रमणकरि मिटावने सो आलोचनाप्रतिक्रमण शुद्धताका कारण है। अर चौथा विवेक कहिये आपकूं दोषनिसूं न्यारा करना दोऊके मार्ग न चलना अर पांचवा व्युत्सर्ग कहिये शरीरका

राग तजि कायोत्सर्गादि करना ॥ ३५ ॥ अर छठा भेद तप सो अनसनादि जानहु अर सातवां भेद कहिये कैयकदिन कैयकमास दीक्षाका छेद होय अर आठवां भेद परिहार कहिये कैयकदिन कैयकमास मुनियनिके मंडलसूं दूर मुनियोंकी पंक्तिमें न रहे वाहि कोई प्रणाम न करे। नवमां भेद उपास्थान जो पाछी दीक्षा ले यह नव भेद कहे। अब विनयके भेद कहैं हैं शब्दशुद्धि अर्थशुद्धि शब्दोभयशुद्धि समयपाठ अर उपधान स्मृद्धि कहिये बारबार चिंतवन अर बहुमान कहिये जिनधर्म अर जिनधर्मिनिका बहुत सन्मान अर विनयोनमुद्रित कहिये विनयवान होय सम्यग्यज्ञानका आराधन अर गुरुवादि अनिन्हव कहिये गुरुका नाम न छिपावना यह आठप्रकार ज्ञानाचार तिनका विनय ज्ञानविनय कहिये अर अष्टप्रकार दर्शनाचार निःशांकित निःकांक्षित निर्विचकित्सा अमूढदृष्टि उपगूहन स्थितिकरण वात्सल्य प्रभावनाअंग यह आठ तिनका दर्शनविनय कहिये ॥ ३९ ॥ अर तेरहप्रकार चारित्र पंचमहाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति तिनका जो विनय सो चारित्रविनय कहिये ॥ ४० ॥ अर रत्नत्रयके धारक महामुनि श्रीगुरु तिनका प्रत्यक्ष अर परोक्ष विनय करना सन्मुख जाना उठना पहूंचावने जाना उनका नाम सुनि प्रणाम करना स्तुति करनी यथायोग्य सो उपचारविनय कहिये ॥ ४१ ॥ यह चारप्रकार विनयतप कहे आगे दशप्रकार वैयावत्यका वर्णन करे हैं। आचार्य कहिये शिक्षादीक्षाके दायक १ अर उपाध्याय कहिये जिनसूत्रके पाठी पाठक २, अर तपस्वी कहिये महातपके धारक ३, अर शिक्षा कहिये नव दीक्षित आचारांगसूत्रके अभ्यासी ४, अर ग्लान कहिये रोगकरि पीडित ५, अर गण कहिये वृद्ध ६, कुल कहिये एक गुरुके शिष्य ७, अर संघ कहिये ऋषि मुनि यती अनागार ८, अर साधु कहिये घने वर्षनके मुनिराज अर मनोज्ञ कहिये जगतके प्यारे जिनके वचन सर्वोंकूं रुचे १० ये दस प्रकारके दिगम्बर तिनको रोग व्याधि अर दुर्जन कृत संताप अथवा परीषहके उदय अथवा मिथ्यातका संसर्ग जानकरि वैयावृत करैं अर विचिकित्सा कहिए घृणा न करैं जाकरि महापुरुषनिकूं स्थिरता होय सो करैं यह वैयावृत्यका

व्याख्यान किया अर स्वाध्यायके भेद पांच वांचना कहिए ग्रंथनके अर्थ करने १, अर प्रच्छना कहिए प्रश्न करने जो संदेह होय सो गुरुकूं पूछकरि निवृत्त करना २, अर ज्ञानका निरंतर मननकरि अभ्यास सो अनुप्रेक्षा ३, अर शास्त्रकी आज्ञा प्रमाण चलना सो आम्नाय ४, अर औरनिकूं उपदेश देयकरि धर्ममें चलावना सो धर्मोपदेश यह स्वाध्यायके भेद कहे अर रागादिक क्रोधादिक मांहिले परिग्रह अर वस्त्राभरणादि वाहरले परिग्रह तिनका त्याग अर कायकूं असार जानि ममत्व तजना सो कायोत्सर्ग कहिए ॥ ४९ ॥ निसर्गता और निर्भयताके अर्थ अर धन जीवनकी आज्ञाकी निवृत्तिके अर्थ जो वाहिरके अर भीतरके संगका त्याग सो कायोत्सर्ग ॥ ५० ॥ अर मनकी एकाग्रता सो ध्यान यह वारह तप निर्जराके कारण हैं ॥ ५१ ॥ जे संयमके धारक संयमी हैं तिनके तपकरि निर्जरा होय है सो परिणामनके भेदकरि सम्यग्दृष्टिके चतुर्थगुणस्थानतैं लेयकरि वारहवें गुणस्थानपर्यंत वढती निर्जरा है प्रथम तो मिथ्यादृष्टितैं अव्रती सम्यक्तीके असंख्यगुणी निर्जरा है भव्यजीव पंचेंद्री मन संयुक्त पर्याप्त जो सम्यक्त्व योग्य होये ताके अंतरंग शुद्धताकी वृद्धिकरि निर्जराकी वृद्धि होय है अर अव्रती सम्यक्त्वीतैं पंचम गुणस्थानवाले श्रावकके असंख्यगुणी अधिक निर्जरा हैं अर श्रावकसे छठे गुणस्थान मुनिके असंख्यगुणी अधिक अनंतानुबंधीके क्षयवारेके हैं अर वातैं असंख्यातगुणी अधिक उपशम श्रेणीका धारक जो क्षायकसम्यक्ती मुनि ताके हैं तिनमें आठवें गुणस्थानतैं नवमेंतैं दशवें असंख्यात गुणी वढती २ है। अर दशवें गुणस्थानतैं ग्यारहवें गुणठाने असंख्यात गुणी अधिक है अर ग्यारहवें अष्टमगुण ठाणे क्षपकश्रेणीवारेके असंख्यगुणी अधिक है अर अष्टमसे नवमें अर नवमेंसे दसवें क्षपकश्रेणीवारेके असंख्यगुणी है अर दशवेंसे वारहवें असंख्यातगुणी निर्जरा अधिक जानहु अर वारहवेंसे अनंतगुणी केवलीके है जिनके अनंतज्ञानदर्शन है ॥ ५७ ॥ यह सब सूत्रकी चरचा तीनूं विप्र मुनि अर दोऊ ब्राह्मणी आर्यका तिनि निःसंदेह धारी अर मुनियनिके भेद पांच पुलाक १, वकुस २, कुशील ३, निर्ग्रंथ ४, स्नातक ५ यह पांचौंही प्रकारके साधु निर्ग्रंथ हैं अर व्रतशीलके धारक हैं तिनके लक्षण

कहे हैं जिनके चौरासी लाख उत्तरगुणका तो अभाव है। अर काहू कालहू क्षेत्रविषैं मूलगुण अठाईस तिनहूकी न्यूनता नजर आवै। जैसे अन्नका पुला तूप अर कणसंयुक्त हैं तैसैं ताका आचरण गुण दोष संयुक्त है। यह पुलाकका लक्षण कहा ॥ ५९ ॥ अब बकुसका लक्षण कहे हैं मूलगुण विषैं तो अखंडित है अर शरीरका तथा पुस्तकादि उपकरणादिकका किंचित अनुराग है अर जाके शिक्षमन चलचित है अति निश्चल नाहीं अर आप तेजस्वी प्रकृति है यह वकुसके लक्षण जानो अब कुशीलके लक्षण कहे हैं। जाके मूलगुण अर उत्तरगुण परिपूर्ण हैं कदाचित् उत्तरगुणोंमें भंग होय सो कुशील हैं ताके भेद दोय एक प्रतिसेवन कुशील दूजा कषायकुशील जो दशवें गुणठाणे है जहां सूक्ष्म लोभका उदय है अर सब कषाय गए ॥ ६२ ॥ कषायही अभ्यंतरके परिग्रह हैं अर प्रसिसेवना कुशीलके कुछइक शरीरका वैयाव्रत्य करावना है अर शिष्यादिकसे अनुराग है इनमें पुलाक वकुस अर प्रतिसेवना कुशील ये तो छठे अर सातवें गुणठाणे ही होय है अर कषाय कुशील दशवें गुणठाणे ही होय है अर निर्ग्रंथ यह चौथा भेद बारहवें गुणठाणे ही होय है जहां केवलज्ञान उपजनेमें एक मुहूर्त ही रहा है क्षीण कषाय गुणठाणे ही निर्ग्रंथ कहिए जैसैं जलविषैं दण्डकी लीक प्रगट नाहीं दीखै तैसैं क्षीणकषाय संयमीके कर्मका उदय प्रगट न भासै ॥६३॥ अर जिनके च्यार घातिया कर्मका क्षय भया केवली भए ते स्नातक कहिए यह पांचो ही मुनि भावलिंगी हैं नैगमनयकी अपेक्षा सबही निर्ग्रंथ हैं परिग्रहधारी नाहीं।

अथानन्तर—इनके संयमका व्याख्यान करै हैं निर्ग्रन्थ अर स्नातक इनके तो यथाख्यात संयम ही है अर कषायकुशीलके सूक्ष्मसांपराय संयम ही है अर पुलाक वकुस अर प्रतिसेवनाकुशीलके सामायिक अर छदोपस्थापना दोय संयम हैं अर पुलाक वकुस अर प्रतिसेवना कुशील यह उत्कृष्टपन ग्यारह अंग अर दश पूर्व लग भणे अर कषायकुशील अर निर्ग्रन्थ यह ग्यारह अंग चौदह पूर्व सकलश्रुतके पाठी होय हैं अर स्नातक केवली है सर्वज्ञ हैं सो श्रुतज्ञानके पार हैं अर पुलाक मधिपने आचारांगसूत्र भने अर जघन्य-

पने निर्ग्रन्थ पर्यंत सब ही यतीनके पांच समित तीन गुप्ति अष्ट प्रवचन माता तिनहीका ज्ञान है अर पराये आग्रहतैं कबहुक कोई काहू देशकालविषैं प्रमादके योगतैं मूलगुणविषैं अतीचार लगावैं सो पुलाकका लक्षण है अर बकुसके भेद दोय एक शरीर बकुस दूजा उपकरण बकुस जाके शरीरका संस्कार सो शरीर बकुस अर जाके उपकरणनिका बहु अनुराग सो उपकरण बकुस अर प्रतिसेवानुकुशीलके कदाचित् उत्तरगुणमें विराधना होय परन्तु मूलगुणमें न होय अर कषायकुशीलके अर निग्रन्थके मूलगुण उत्तरगुण पूर्ण हैं अर स्नातक परमात्मा ही हैं यह पांच प्रकार ऋषि तीर्थंकरादिके सयय भी होवें अर अंतरालविषैं भी होवें अर यह पांच प्रकार साधु सब ही भावचारित्री अर द्रव्यचारित्री हैं बाहरले परिग्रह दस सो तो काहू मुनिके नाहीं भीतरके चौदह ते निर्ग्रन्थ अर स्नातकके तो सर्वथा नाहीं अर कषायकुशीलके एक सूक्ष्मलोभ है अर नाहीं अर पुलाक बकुस अर प्रतिसेवना कुशीलके नव नो कषाय अर संज्वलनकी चौक है अर निर्ग्रंथ है अर स्नातकके एक शुक्ललेश्या ही है। चौदहवें गुणस्थान लेश्या नाहीं अर कषायकुशील हूके शुक्ल ही है अर पुलाक बकुस अर प्रतिसेवना कुशीलके पीत पद्मशुक्ल यह तीन लेश्या हैं ॥ ७९ ॥ अर पुलाकका उत्पात बारहमें सहस्रार स्वर्ग लग है तहां उत्कृष्ट आयु सागर अठारह है अर बकुस अर प्रतिसेवना उत्पात आरण अच्युत स्वर्ग जो पन्द्रहमां सोलहमें तहां तक है अर कषायकुशील अर निर्ग्रन्थ यह दोनों उपशमश्रेणीवारे क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिनका उत्पात सर्वार्थसिद्धि लग है अर स्नातक मोक्ष ही पावैं अर जघन्यपने पुलाकादिकका उत्पात पहिले सौधर्म स्वर्ग है तहां उत्कृष्ट आयु दोय सागरका है ॥८१॥ अर स्नातकका एक निर्वाणही स्थानक है सो ऊर्द्ध गमनकर लोकके शिखर जाय है अनंतगुण ऋद्धिमई विराजे हैं किथा है कर्मका अन्त जाने ऐसा स्नातक सो ही सिद्ध होय है। इन पांच प्रकार मुनियोंके कषायनके अभावनके निमित्ततैं संयम स्थानके भेद असंख्य होय हैं। अर अनंतगुण संयमलब्धि स्थानिक होय हैं तिनमें पुलाकके अर कषायके सर्व जघन्य लब्धि स्थानक होय है। पुलाक अर कषाय कुशील

यह दोनों एक समयविषैं असंख्य लब्धि थानकविषैं गमन करैं तिनमें पुलाक तो पाछा आवै अर कषाय कुशील पाछा न आवैं असंख्यस्थानके लब्धिविषैं गमन करैं तिनमें बकुस तो पाछा आवै अर प्रतिसेवना कुशील पाछा न आवैं असंख्यात तक गमन करै अर निर्ग्रंथ अर स्नातककी महिमा कहनेमें न आवै वे ईश्वर ही हैं।

अथानंतर—क्षेत्र कालादि बारह भेदनकरि सिद्धनिका कथन करै हैं ॥ ८८ ॥ सिद्धक्षेत्र ही विषय निर्मल सिद्ध है आकाशके प्रदर्शनविषैं लोकके शिखर सिद्ध अलिप्त विराजै हैं ॥ ८९ ॥ अपने स्वरूपमें तिष्ठै हैं अर जन्मकी अपेक्षा तो कर्मभूमिहीतैं मुक्त हैं अर कोई देव विद्याधर पूर्वभवका विरोधी ले आवै ताकी अपेक्षा सकल मनुष्यक्षेत्रतैं मुक्त हैं ॥९०॥ अर कालकी अपेक्षा वर्तमान नयकरि एक समयविषैंमुक्ति है अर उत्सर्पिणीकालकी अपेक्षा चौथे कालहीमें मुक्ति है अर अवसर्पिणीकालकी अपेक्षा अवसर्पिणीके तीसरेके अंतमें अर चौथेकालमें मुक्ति है अर चौथेकालका उपजा पांचवें कालमें मुक्ति जाय अर पांचमेंका उपजा न जाय यह तो जन्मकी अपेक्षा कही अर कोई हर ल्यावै उडाय ल्यावै ताकी अपेक्षा सर्वकालमें सर्व मनुष्यक्षेत्रतैं मुक्ति जानो ॥ ९३ ॥ अर सिद्धगति हीविषैं सिद्ध हैं तथा मनुष्यगतिसे सिद्ध हैं और गतितैं नाहीं अर तीनों वेद वारेनकूं नवमें गुणस्थान स्त्री नपुंसक पुरुषवेदका नाश भए मुक्ति होय है वेद भावनकरि है सो अशुद्धभाव मिटै मुक्ति होय है अर लिंग शरीरका है सो पुरुषलिंग हीतैं मुक्ति है स्त्रीलिंग अर नपुंसकलिंगतैं नाहीं अर निर्ग्रंथलिंग हीकरि मुक्ति है। सग्रंथ लिंगकरि नाहीं अर तीर्थ कहिए तीर्थंकरोंके समयहू मुक्ति अर अन्तरालविषैं हू मुक्ति अर चारित्र कहिए सामान्य नयकरि एक यथाख्यातचारित्रकर मुक्ति अर विशेषताकरि सामायिक छेदोस्थापना सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात इन चारोंकर मुक्ति है अथवा परिहारविशुद्धिचारित्रवालोंकी अपेक्षा पांचोंही चारित्र मोक्षके कारण हैं ॥ ९७ ॥ अर प्रत्येकबुद्ध कहिए स्वयंबुद्ध अर बोधितबुद्ध कहिए गुरुके उपदेशतैं प्रतिबुद्ध इन दोनों हीकूं मुक्ति होय है अर ज्ञान कहिए सम्यग्ज्ञान सो मुक्तिका कारण है ज्ञानके भेद पांच तिनमें केवलज्ञान तो

मुक्तिस्वरूप ही है अर किसीके मतिश्रुतिही होय केवल उपजै अर किसीके मति श्रुत अवधि होय केवल उपजे
अर किसीके मति श्रुति अवधि मनःपर्यय होय केवल उपजे तातैं सवही ज्ञान मुक्तिके कारण हैं दोय तीन चार अंत
केवल अकेला एकही है केवल उपजे औरनिका अभाव है ॥ ९८ ॥ अर अवगाह कहिए शरीरकी अवगाहना
उत्कृष्ट धनुष पांचसौ पचीस अर जघन्य हाथ साढा तीन अर मध्यके भेद अनेक हैं हाथ साडातीनसै अधिक
पांचसै पचीस धनुषसे न्यून यह सव मध्य अवगाहनाके भेद जानहु ॥ १०० ॥ उन अवगाहनामें सिद्ध होय है
कोई सादा तीन हाथसे कोई पांचसै पचीस धनुषसे अर कोई मध्य अवगाहनासे मुक्ति होय है ॥ १ ॥ अर अंतर
कहिए अंतराल जघन्य एक समय उत्कृष्ट विरहकालकी अपेक्षा मास छह अर मध्यके भेद अनेक दोय समयसे
लेकर एक समय घाट छह मास पर्यंत जानहु अर संख्या कहिए गणना जघन्य एक समय एक अर उत्कृष्ट एक
समयमें एक सौ आठ ॥ ३ ॥ अर अल्पवहुत्व कहिए क्षेत्रादिकरि अल्पवहुत्वका भेद कहे हैं अर सिद्धक्षेत्रविषै
कोई सिद्ध तो न्यूनाधिक्य नाहीं अतीतकालके सिद्धनितै अनागतकालके सिद्ध वहुत्व जानहु अर क्षेत्र कहिए
नरक्षेत्र अर नरक्षेत्रसे ही मुक्तिका कारण तामें दोय प्रकार आर्यक्षेत्रोंमें जन्म सिद्ध भए ते वहुत अर परक्षेत्रसे
परक्षेत्रविषैं देव विद्याधरोंके हरे आए अर मुक्त भए ते अल्प यह सर्वज्ञके मार्गविषैं कहा है ॥ ६ ॥ परक्षेत्रके हरे
आए तिनतैं स्वक्षेत्रके जन्म संख्यातगुने जानहु अर कैयक मुनि दुष्टनके हरे उन आकाशसे डारे सो भूमिमें न
पडे आकाशहीतैं मुक्त भए ते अल्प अर कैयकनकूं डारे अर वैरानी भूमिमें जाय पडे ते उनतैं संख्यातगुणे अधिक
अर समभूमितैं सिद्ध भए संते उनसे असंख्यातगुण अधिक ॥ ८ ॥ अर परक्षेत्रोंके हरे समुद्रोंसे सिद्ध होय हैं
सो सबमें लवणसमुद्रके अल्प अर उनतैं संख्यातगुने कालोदधिके जानों अर उनतैं जम्बूद्वीपके संख्यातगुणे अधिक
जानो यह सब भेदसर्वज्ञ देवने दिखाया है। अर जम्बूद्वीपतैं संख्यातगुणे धातकीखंडद्वीपके अर उनतैं संख्यात
गुणे पुष्करार्द्धद्वीपके ॥ १० ॥ यह क्षेत्रके विभागकरि अल्पबहुत्व कहा अर कालादिकके विभागकरि सूत्रके अनु-

सार अल्पबहुत्व जान लेना ॥ ११ ॥ इत्यादि श्रीगुरुके मुखदर्शन ज्ञान चारित्रके भेद धारकरि सोमदत्तादि तीनों मुनि अर वे दोऊ आर्यका आराधना आराधि आरण अच्युत स्वर्गविषैं पांचों जीव बाईस सागर आयुके धारक देव भए ते महासम्यग्दृष्टि स्वर्गके अद्भुत सुख भोगते भए ॥१३॥ अर तीजे भाईकी स्त्री नागश्री जानैं ज़तीकूं आहारमैं विष दिया सो मरकरि पांचवें नरक गई तहां सत्तरह सागर महादुःख भोगे ॥ १४ ॥ तहांतैं निकसकरि अन्तके स्वयंप्रभनामा द्वीपविषैं दृष्टिविष जातिका सर्प होयकरि तीजे नरक गया तहां तीन सागर दुःख भोगे ॥ १५ ॥ तहांतैं निकस तिर्यंच भया बहुरि सागर दोय त्रस अर थावर योनिमें पूर्ण किए ॥१६॥ बहुरि चंपापुरी-विषैं चांडालकी पुत्री भई। तहां समाधिगुप्तनामा मुनिके निकट मद्यमांस मधुका त्याग किया बहुरि मरकरि वाही चंपापुरीविषैं सुबंधनामा सेठ ताके धनवती नामा स्त्रीके सुकुमारिका नामा पुत्री भई ॥ १८ ॥ सो पूर्वले पापके उदयकरि महा दुर्गंध शरीर भई यद्यपि रूपवती है तथापि दुर्गंधके योगकरि कोई न परणै ॥ १९ ॥ अर ताही नगरमें एक धनदेव वणिक ताके अशोकदत्ता स्त्रीके दोयपुत्र एकका नाम जिनदेव अर दूजा जिनदत्त सो बडेकी सगाई दुर्गंधासे भई सो सुव्रतस्वामीके समीप मुनि होय गया। अर कुटुम्बके आग्रहतैं छोटे जिनदत्तने परनी सो हू याहि तजकरि देशांतर उठ गया ॥ २२ ॥ तब यह दुर्गंधा आपको निन्दती सन्ती उपवासादि तप करै एक दिन या दुर्गंधाने क्षाता नामा आर्यकाकूं आहार दिया ताके साथ दोय नवयौवन आर्यका उनकूं देख दुर्गंधा गुराणीकूं पूछती भई हे मात ! यह दोनों आर्यका अतिरूपवान नवयौवनमें कौन कारणतैं वैराग भई। तब गुरानी महा दयावान इनके वैराग्यका कारण याके प्रतिबोधवे अर्थ कहती भई ॥ २० ॥ हे सुकुमारी ! जा कारणकरि यह वैराग्य भई सो तू सुन यह पूर्वभवविषैं सौधर्म इन्द्रके देवी हुती एकका नाम विमला दूजी सुप्रभा सो यह प्रसिद्ध थी ॥२६॥ एक दिन यह नंदीश्वर द्वीपविषैं जिनपूजाके अर्थ गई हुतीं सो इनकूं वैराग्य उपजा तब इतने यह प्रतिज्ञा करी जो या देवगतिविषैं तो तप नाहीं हम मनुष्यभव पाय महातप करैंगी। जाकरि स्त्रीपर्याय मिटै

फिर भवभ्रमण न होय ॥ २९ ॥ यह प्रतिज्ञाकरि यह तिष्ठी सो तहांतैं चयकरि साकेतपुरीविषैं राजा श्रीषेणके रानी श्रीकांता तिनके यह पुत्री भई। एक हरिषेणा दूजी श्रीषेणा जब यह यौवनवन्त भई तब पिताने इनका स्वयम्बर रचा सो पूर्वजन्मकी प्रतिज्ञा चितार कुटुम्बकूं तज आर्यका भई। यह वचन गुराणीके सुनकरि दुर्गंधाहू आर्यका भई तत्काल संसारका त्याग किया ॥ ३३ ॥ यह संसार असार है तामें उत्तम जीव न रमें यह महा तपस्विनी आर्यकानिके साथ तप करती काल व्यतीत करती भई तपकर सोख्या है सर्व गात्र जाने ॥३५॥ एकदिन बनविषैं बसन्तसेना वेश्या क्रीडाविषैं तत्पर सो पंच पुरुषनिसहित आई ताहि देख याके ऐसे भाव भये जो यह सौभाग्यवती है, इन परिणामनकरि याके अजसप्रकृतिका बंध भया तातैं अबुधलोक पंच भरतारी द्रोपदीकूं कहते भये ॥ ३६ ॥ कैयक दिनमें वह तपस्विनी समाधिमरणकरि नागश्रीके भवका भरतार जो सोमभूतिका जीव देव ताके देवी भई। पचावन पल्यका आयु भया तहांतैं चयकरि सोमदत्त सोमदेव सोमभूति यह तीनों भाई तो राजा पाण्डवके रानी कुन्ती ताके तीन पुत्र भये तिनके नाम युधिष्ठर भीम अर्जुन अर धनश्री मित्रश्री इन दोऊनके जीव राजा पांडवके दूजी रानी माद्री ताके नकुल अर सहदेवनामा पुत्र भये ॥ ३९ ॥ अर नागश्रीका जीव राजा द्रुपदके रानी दृढरथा तिनके द्रोपदीनामा पुत्री भई ॥ ४० ॥ सो पूर्वभवके योगकरि अर्जुनसे स्नेह वढा राधा बंधकरि अर्जुनने परनी ॥ ४१ ॥ यह पूर्वभवका वृत्तांत श्रीनेमजिनेंद्रने पांडवनसे कहा अर आज्ञा करी युधिष्ठर भीम अर्जुन तीनभाई तो इसी जन्मतैं सिद्ध होवेंगे अर नकुल सहदेव सर्वार्थसिद्धि जावेंगे सो एक भव धर सिद्ध होवेंगे ॥ ४२ ॥ अर द्रोपदी सम्यग्दर्शनकरि शुद्ध सो तपके प्रभावकरि अच्युत स्वर्गविषैं देव होय नरभव पाय निरंजनके धाम जायगी याभांति पांडव प्रभुके भूतपूर्व भव सुनकरि संसारतैं विरक्त भये अर तत्काल तीर्थेश्वरके निकट संयम अंगीकार किया ॥ ४३ ॥ अर माता कुन्ती तथा द्रोपदी सुभद्रा आदि अनेक रानी राजमतीके समीप आर्यका भई ॥ ४४ ॥ ते पांचों भाई पांडव रत्नत्रयके धारक पंचमहाव्रत पंचसमिति तीनगुप्तिके

पालनहारे आत्मस्वरूपका ध्यान करते विहार करते भये महा उग्र तप किये ॥ ४५ ॥ इनकेसे तप इनहीसे बनें भीमने वृत्तिपरिसंख्या तपविषैं अति दुर्द्धर अवग्रह किए सो छः महीने तक आहारका योग न भया शरीर अति क्षीण होय गया अर युधिष्ठरादिक बेला तेला पक्षोपवास मासोपवासादि महा तपकरि युक्त जिन आगमरूप समुद्रके पारगामी संयमी तीर्थ विहार करते भये ॥ ४६ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ युधिष्ठरादिपंचपांडवप्रवर्ज्यावर्णनो नाम चतुःषष्ठितमः सर्गः ॥ ६४ ॥

आठवां अधिकार।

श्रीनेमनाथका निर्वाणगमन।

अथांनतर—सर्व देवनके देव तीर्थके कर्त्ता धर्मोपदेश कर भव्यनकूं कृतार्थकरि उत्तर दिशातैं सोरठकी ओर गमन किया ॥ १ ॥ जब जिन रवि उत्तरायणतैं दक्षिणायन आये तब या तरफ पूर्वतैं उद्योत भयो ॥ २ ॥ अरहंत पदकी विभूतिकरि मंडित महेश्वर जब दक्षिणकूं विहार किया तब वे दक्षिणके सर्व देश स्वर्गकी शोभाकूं धारते भये ॥ ३ ॥ भगवान भूतेश्वर निर्वाण कल्याणक आया है निकट जिनके सुर असुर नरनकरि अर्चित गिरनार आय विराजे ॥ ४ ॥ पूर्ववत समवसरणकी रचना तहां भई देव दानव मानव तथा तिर्यंच सब ही प्रभुकी दिव्यध्वनि सुनते भये ॥ ५ ॥ श्रीभगवान सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्ररूप जो महा पवित्र जिनेश्वर धर्म ताका व्याख्यान करते भये सो धर्म स्वर्ग मोक्षके सुखका साधन है अर साधुनकूं प्रिय है॥ ६ ॥ जैसा केवलज्ञानके उदयविषैं पहले धर्मका उपदेश दिया हुता तैसा ही विस्तार सहित निर्वाण कल्याणकका एक मास रहा तब लग दिया ॥ ७ ॥ जैसे अग्निका गुण ऊष्ण अर ऊर्धजलन अर जलका गुण शीत अर पवनका गुण शीघ्रगमन अर तिरछा गमन अर सूर्यका गुण प्रकाशपना अर आकाशका गुण अमूर्तत्व अर पृथिवीका गुण अनेक वस्तुनका धारण अर सहन-

शीलपना तैसे कृतार्थ जे जिनेंद्र तिनका गुण धर्मोपदेश है ॥९॥ जैसे ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहनीय अंतराय यह चार घातिया कर्म क्षय किये हुते तैसे योगका निरोधकरि नाम गोत्र आयु अर वेदनीय इन चार घातियानिकाहू अंतकरि अनेक मुनिवरों सहित जिनवर सिद्ध लोककूं सिधारे ॥१०॥ तब इनकूं आदि देय चर्तुनिकायनिके देव निर्वाण कल्याणककी पूजा करते भये ॥ ११ ॥ जब भगवान मुक्त होंय तब देहबंध रूपबंध परमाण होय जांय अनादि कालकी यह रीति है जैसे बिजुरी विलाय तैसे जिनेश्वरका देह विलाय गया अर मायामई शरीर रचकरि इद्राादिक दाहक्रिया करते भये ॥ १२ ॥ अग्निकुमार भवनवासी देव तिनके इन्द्रके मुकुटतैं प्रगट भई अग्नि ताकरि जिनेंद्रकी देहका दाह भया ॥१३॥ गंधपुष्पादि मनोहर द्रव्यनकरि प्रभुकी पूजा करि देव अपने २ स्थान गये इन्द्र वज्रकर गिरनार गिरविषैं सिद्धसिला उकीर गयां वरदत्तादि मुनिकूं वंदनाकरि इंद्रादिक अर नरेंद्रादिक अपेन अपने स्थान गये ॥ १५ ॥ अर समुद्रविजयादि नव भाई अर देवकीके छे पुत्र अर प्रद्युम्न शंभु श्रीकृष्णके पुत्र अर अनिरुद्ध प्रद्युम्नका पुत्र यह गिरनार गिरतैं जगतके शिखर गये सो भव्य जीवनकरि वंदनीक है गिरनार बडा तीर्थ है जहां अनेक भव्य जीव यात्राकूं आवै हैं ॥ १७ ॥

अथानन्तर—पांडव महाधीर प्रभुका सिद्धलोकगमन सुनकरि शत्रुंजय गिरविषैं कायोत्सर्ग धर तिष्ठे ॥ १८ ॥ तहां दुर्योधनके वशका यवरोधन पापी आयकरि वैरके जोगतैं महा दुस्सह उपसर्ग करता भया ॥ १९ ॥ लोहेके मुकुट अति प्रज्वलित इनके सिर पर धरे अर लोहेके कडे अर कटि सूत्रादि लोहेके आभरण अग्निमई इनकूं पहराये ॥ २० ॥ तिनकरि दाहका उपसर्ग अति रौद्र होता भया परन्तु वे महावीर मुनिधीर कर्मके विपाकके जाननहारे कर्मके क्षय करनेकूं समर्थ दाहका उपसर्ग हिमसमान शीतल मानते भये ॥ २१ ॥ तिनमें युधिष्ठर भीम अर्जुन यह तीनों साधु क्षपकश्रेणीविषैं आरूढ होय शुक्लध्यानकरि अष्ट कर्मका क्षयकरि अष्टम भूमि जो निर्वाण तहां पधारे अन्तकृतकेवली अविनाशी भये ॥ २२ ॥ अर नकुल सहदेवने उपशमश्रेणी मांडी हुती

सो ग्यारहवां गुणठाणतैं फिर गिरं चौथे गुणठाणे आय देह तजि सर्वार्थसिद्धि पधारे। तहांतैं चय मनुष्य होय
जगतके सुकुटमणि होहिंगे ॥ २३ ॥ बडे भाईनके आताप देख इनका चित्त कुछयक अथिर भया अर अन्य हू
भव्य जीव कैयक तद्भव मोक्षगामी शुद्ध रत्नत्रयके धारक मोक्ष प्राप्त भये अर कैयक स्वर्गवासी देव भये सो
भव धर अभयपद पावेंगे ॥ २४ ॥ अर नारद भी आय पूर्णकरि परभव पधारे। भवांतरमें भवरहित होहिंगे ॥ २५ ॥
अथानन्तर—बलदेव स्वामी तुंगीगिर शिखरपर नाना प्रकारके दुर्द्धर तप किय एक उपवास दोय उपवास
तीन उपवास पक्ष उपवास मासोपवास छः मासोपवास कर शरीर बहुत सोख्या अर कषाय सोखे अर धैर्य
पोख्या ॥ २७ ॥ नगर ग्रमादिविषैं तो गमन निवारा ही हुता आहारके अर्थ कांतारचर्या धारी हुती सो वनविषैं
विहार करते लोकोंने देखे मानों साक्षात चंद्रमा ही है ॥ २८ ॥ इनकी वार्ता पुरग्रामादि विषैं प्रसिद्ध भई सो
दुर्जन भूपति बलदेवके समाचार सुनकरि शंका मान नाना प्रकारके आयुध धरि उपसर्ग करिवेकूं आये तब सिद्धार्थ
देव उनकूं ऐसी माया दिखाई वे जहां देखे तहां सिंह ही सिंह दीखें ॥ ३० ॥ मुनिके चरणनके समीप सिंहनकूं
देख दुष्ट राजा मुनिकी सामर्थ्य जान प्रणाम कर शांत रूप होय गये ॥ ३१ ॥ तबसे बलदेवकूं लोग नरसिंह
मानते भये दुष्टनिकूं नरसिंहरूप भासै वे महा सुनि सौ वर्ष तपकरि चार प्रकार आराधना आराधि पांचमा ब्रह्म-
नामा स्वर्ग तहां पद्मोत्तर विमाणविषैं ब्रह्मेंद्र भये ॥ ३३ ॥ वह विमान रतनमयी दैदीप्यमान महा मनोहर देव
देवियोंके समूहकरि मंडित सुन्दर हैं मन्दिर अर उपवन जाविषैं ॥ ३४ ॥ ऐसे रमणीक विमानविषैं महा कोमल
उत्पादक शय्या ताविषैं हलधर मुनिवरका जीव ब्रह्मेंद्र भया। जैसे समुद्रविषैं महा मणि उपजै तैसे स्वामी स्वर्ग-
विषैं उपजे ॥ ३५ ॥ आहार कहिये कर्मवर्गणाका आकर्षण अर वैक्रियक शरीर अर पांच इन्द्री अर श्वासोश्वास
अर भाषा अर मन इन षट् पर्याप्त तत्काल पूरे कर वस्त्राभरण मंडित सेजपर विराजे नवयौवन महा सुन्दर
देवनके राजा वह स्वर्ग संपदा देख अर देवांगनाके गीत सुन अर सब देवनकूं नम्रीभूत देख मनमें विचारी यह

सब लोग मेरा मुख निलोकैं हैं मोविषैं अनुरागी हैं। अर या लोकके सकलही चन्द्र सूर्य हुते अधिक ज्योतिवन्त हैं ॥ ३८ ॥ यह कौन मनोहर देश है यहांके सब लोक हर्षित हैं। अर मैं कौन हूं जो यहांका अधिपति भया हूं अर मैं कौन धर्म उपार्ज्या जो ऐसा उत्तम भव पाया है ॥ ३९ ॥ तब यहांके जो मुख्य देव हैं तिन बिनती करी जो यह पांचवां ब्रह्मनामा स्वर्ग है। अर आप ब्रह्मेंद्र होय यहां सबनके स्वामी भये हो महा तपकरि यहां आय उपजे हो तब आप अवधकरि सब वृत्तान्त जान्या ॥ ४१ ॥ पूर्वभवका सब चरित्र प्रत्यक्ष जाना अर देव इनका अभिषेक करावते भये अर इन्द्रपदकी विभूति दृष्टिगोचर करी ॥ ४२ ॥ अर वासुदेवसे अधिक है प्रेम जिनका सो जाय करि भाईसे मिले परस्पर अवलोकनकरि दोऊके हर्ष उपज्या वासुदेव कही आपां दोऊं मनुष्यभव पाय वीतरागका धर्म आराध केवल प्रगटकर मोक्ष पावेंगे। अर द्वारिकाके दाहकरि अर यदुवंशके क्षयकरि लोकापवाद भया सो तुम ऐसा करहु जो भरतक्षेत्रविषै मेरा मूर्त्ति शंख चक्र गदा पद्मादिकर शोभित लोग पूजें यह बचन वासुदेवके उरमें धार बलदेव याही भांति करते भये देवनका किया कहा न होय ॥ ४६ ॥ ठौर ठौर पुरग्रामादिविषै वासुदेवके मन्दिर कराये तिनकी सेवाकी विधि बताय बलदेव स्वर्गविषै जाय जिनेश्वरकी सेवा करते भये ॥ ४७ ॥ अनेक देव अर देवी तिनकरि मंडित स्वर्गके अधिपति सुख भोगते भये। यह कथा गौतम स्वामीनें राजा श्रेणिकसे कही फिर कहैं हैं हे श्रेणिक! यह स्नेही जगतके जीवनकूं जगतविषै भ्रमण करावै है स्नेहके योगकरि जहां मित्र होय तहां जायकरि स्नेहकी अधिक्यतासे आपकूं सुख प्राप्त भये हैं ते न भोगवे अर दुखका उद्यमी होय तातें यह संसारका स्नेह ही मोक्षके सुखका विघ्नकरन हारा है ॥ ४९ ॥ श्रीनेमिनाथ जिनेंद्रका तीर्थ महा मोहका विच्छेद करनहारा ताविषैं वरदत्तनामा मुनि केवली भये हरिवंशविषैं जरत्कुमार राजा राजकी धुराके धारी भये ॥ ५० ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ भगवन्निर्वाणवर्णनो नाम पंचषष्टितमः सर्गः ॥ ६५ ॥

अथानन्तर—राजा जरत्कुमार राज्य करै ताके राज्यमें प्रजा आनन्दकूं प्राप्त होती भई राजा महा प्रतापी जिनधर्मी ताके राजकूं लोग अति चाहैं ॥ १ ॥ सो जरत्कुमारने राजा कलिंगकी पुत्री परनी ताके राजवंशकी ध्वजा समान वसुध्वज नामा पुत्र भया ॥ २ ॥ ताहि राजका भार सौंप जरत्कुमार मुनि भये सत्पुरुषनके कुलकी यही रीति है पुत्रकूं राज देय आप चारित्र धारे ॥ ३ ॥ फिर वसुध्वजके सुवसु नामा पुत्र भया सो चन्द्रमा समान प्रजाकूं प्रिय राजा वसु सारिखा प्रतापी होता भया ॥ ४ ॥ अर वसुके भीम वर्मा भया कलिंग देशका पालक अर ताके वंशमें अनेक राजा भये ॥ ५ ॥ फिर ताही वंशमें हरिवंशका आभूषण राजा कपिष्ट भया अर ताके अजातशत्रु भया ताके शत्रुकेन भया । अर ताके जितार नामा पुत्र भया ॥ ६ ॥ ताके जितशत्रु भया सो हे श्रेणिक ! ताहि तू कहा न जानै है जो राजा सिद्धार्थ महावीर स्वामीके पिताकी छोटी बहन परना महा प्रतापवान शत्रु मंडलका जीतन हारा जगत विषै प्रसिद्ध भया । श्रीभगवान महावीरका फूफा सो प्रभुका जन्म भया तब कुण्डलपुर आया सो राजा सिद्धार्थने बहुत सन्मान किया ॥ ८ ॥ राजा जितशत्रु महा जिनधर्मी इन्द्र समान पराक्रमी ताके यशोदा नाम रानी ताके अशोकवतीनामा पुत्री सो यश अर दयाकरि महा पवित्र ताका अनेक राजकन्या सहित श्रीमहावीरसे विवाह मंगल वांछता भया यह हर्ष देखनेके मनोरथरूप रथविषैं आरूढहुती सो भगवान वीतराग कहा विवाह करे जे स्वात्मानुभूतिसिद्धि रूपके करनहारे तिनके स्त्रीका कहा प्रयोजन ? जब तीर्थेश्वर तप कल्याणकूं प्राप्त भये तब वे राजकन्या आर्यिका होय गईं अर भगवान स्वयंभू जब केवलकल्याण विषैं जगतके तारवे अर्थ विहार किया तब राजा जितशत्रु राज तज मुनिराज भया महातपविषैं प्रवर्त्ता ॥ १० ॥ सो तपके प्रभावकरि जितशत्रुके केवलज्ञान प्रगट भया मनुष्यभवका यही फल है जो केवल पाय मुक्ति जांय ॥ ११ ॥ हे श्रेणिक ! यह हरिवंशकी कथा तोहि संक्षेपसे कही यह कही लोकविषै प्रसिद्ध है अर चौबीस तीर्थेश्वर अर बारह चक्रेश्वर अर नव बलदेव नव वासुदेव यह त्रिषष्ठ शलाकाके महा पुरुष तिनका चारित्र तोहि कहा सो यह पुराणपद्धति तोहि कल्याणके अर्थी होहु ॥ १२ ॥

यह परमेश्वरी कथा गौतमस्वामीके मुख अनेक राजानि सहित राजा श्रेणिक सुनकरि नगरमें गया बारंबार नमस्कार करता भक्तिरूप है बुद्धि जाकी सो चितविषैं धर्महीकूं धारता भया। अर चतुर्निकायके देव अर विद्याधर प्रभुकूं प्रणामकरि अपने २ स्थानक गये धर्मकथा अनुरागी धर्मकूं सार जानते भये ॥ १४ ॥ निर्वाणकी है इच्छा जिनके अर जितशत्रु केवली जगत पूज्य आर्यक्षेत्रविषैं विहारकरि अघातिया कर्म हु क्षपाय अक्षयधामकूं प्राप्त भये अनंत सुखका है अनुभव जहां जाके अर्थ यती यतन करैं हैं सो पद पाया ॥ १५ ॥ अर वीर जिनेन्द्र हू भव्य जीवनके समूहकूं संबोध करि पावापुरीके मनोहर नामा उद्यानतैं कार्तिक वदी अमावस प्रभात समय स्वाति नक्षत्रविषैं योगनका निरोधकरि अघातिया कर्महु खपाये जैसे घातिया कर्मनका घात किया हुता तैंसे अघातियानहूका घातकरि बन्धतैं रहित जो अपवर्ग स्थानक सिद्धक्षेत्र तहां सिधारे निरन्तर है अनन्तसुखका संबंध जहां ॥ १७ ॥ जिनेश्वर शंकर सुगत सदाशिव परम विष्णु बुद्ध महेश्वर पंचकल्याणकके नायक चतुर्निकाय देवनके देव निर्वाण प्राप्त भये तब इद्रादिक देवोंने निर्वाण कल्याण किया प्रभुके मायामई शरीरकी पूजा करि दाहक्रिया करी ॥ १८ ॥ प्रभु परमधाम पधारे ता दिन चतुर्थकालके वर्ष तीन अर मास साढा आठ बाकी हुते दीपोत्सवके दिन जिनवर जगतके शिखर पधारे ता दिन देवोंने दीपनके समूहकरि वह पुरी प्रकाशरूप करी आकाश धरतीविषैं दीपनकी माला प्रज्वलित भई ॥ १९ ॥ इन्द्रादिक सब देव और श्रेणिकादि सकल भूप श्रीमहावीर स्वामीका निर्वाण कल्याणक देख प्रभुतैं ज्ञानकी प्राप्तिकी प्रार्थना कर अपने अपने स्थान गये ॥ २० ॥ ता दिनतैं या भरतक्षेत्रविषैं दीपमालिका प्रसिद्ध भई प्रतिवर्ष भव्यजीव निर्वाणकी पूजा कर अर लोक दीपोत्सव करैं ॥ २१ ॥ अर भगवानकूं मुक्ति गये पीछे बासठ वर्षमें तीन केवली भये गौतम सुधर्म और जम्बूस्वामी सो यह तीनों चतुर्थकालके उपजे पंचमकालमें पंचम गति जो निर्वाण तहां पधारे अर इन पीछे सौ वर्षमें पांच श्रुतकेवली भये ॥ २२ ॥ अर तिन पीछे वर्ष एकसौ तीयासीमें ग्यारह अंग अर

दशपूर्वके पाठी मुनि दस भये और तिन पीछे बरस दो सौ वीसमें पांच मुनि ग्यारह अंगके पाठी भये और तिन पीछे वर्ष एक सौ अठारहमें चार मुनि एक अचारांगके पाठी भये तिनके नाम सुभद्र जयभद्र यशोवाहु लोहाचार्य यहां तक अंग रहे ॥ २३ ॥ बहुरि इन पीछे अंगनके पाठी तो न भये परन्तु महा विद्यावान व्रतनके धारक भये तिनमें कई एकनके नाम कहैं हैं महा तपकी है वृद्धि जिनके ऐसे नयंधर ऋषि, श्रुतिऋषि, गुप्ति, शिवगुप्त, अर्हद्वलि, मंदराचार्य, मित्रवीर, बलदेव, बलमित्र, सिंहबल, वीरवित ॥ २५ ॥ पद्मसेन, गुणपद्म, गुणागुणी, जितदण्ड, नन्दीसेन, तप ही है धन जिनके ऐसे श्रीधरसेन, धर्मसेन, सिंहसेन, सुनन्दसेन, सूरसेन, अभयसेन, ॥ २७ ॥ सुसिधसेन, अभयसेन, भीमसेन, जिनसेन, शांतिसेन, समस्त सिद्धान्तके वेत्ता षट् भाषानमें गुणवान षट्खंडके अखण्ड नाथ ही हैं जिनसे शब्द अर्थ अगोचर नाहीं ॥ २८ ॥ फिर जयसेन नाम सद्गुरु होते भये कर्म प्रकृति नामा श्रुति ताके पारगामी इन्द्रीनके जेता प्रसिद्ध वैयाकरणी महा पंडित प्रभावान समस्तसमुद्रके पारगामी ॥ २९ ॥ तिनके शिष्य अभितेज नामा सदगुर पवित्र पुन्नाटगणके अग्रणी जिनशासनकी है वात्सल्यता जिनके महा तपस्वी सौ वर्ष ऊपर है अवस्था जिनकी शास्त्रदानके वडे दाता पण्डितोंमें मुख जिनके गुण पृथवीमें प्रसिद्ध तिनका बडा भाई धर्मका सहोदर महा शांत संपूर्ण बुद्धि धर्ममूर्ति जिनकी तपोमयी कीर्ति जगत्में विस्तर रही ऐसे कीर्तिसेन तिनका मुख्य शिष्य श्रीनेमिनाथका परम भक्त जिनसेन ताने अपनी शक्तिके अनुसार अल्पबुद्धितैं प्राचीन ग्रंथके अनुक्रमें हरिवंशकी पद्धति कही सो यातैं प्रमादके शब्दमें तथा अर्थमें कहीं भूल होय तो पुराणके पाठी पण्डित सुधार लीजो एक केवली भगवान ही कथनमें न चूके और समस्त चूके ताका अचरज नाहीं। कहां यश प्रशंसा योग्य हरिवंशपुराणरूप पर्वत अर कहां मेरी अल्पसे अल्प बुद्धिकी शक्ति ॥ ३४ ॥ जो काहू ठोर अखाडै तो कहा अचरज है या पुराणविषै जिनेन्द्रके वंशके स्तवन करि पुण्यकी उत्पति है यही वांछा करि मैंने वर्णन किया और काव्य बन्धके प्रबन्धकरि कीर्तिकी

कामना राख कथन न किया ॥ ३५ ॥ काव्य रचनाके गर्वकरि तथा अन्य पण्डितनिके इर्षा कर मैंने यह आरम्भ न किया केवल जिनराजकी भक्ति ही करि यह कथन किया। चौवीस तीर्थंकर और द्वादश चक्रधर अर नव हलधर नव हरि अर नव प्रतिहरि इनका वर्णन किया अर अन्य अनेक राजानके चारित्र कहे। भूमिगोचरी अर विद्याधर सवनके वंशका वर्णन याविषैं है ॥ ३७ ॥ जो धर्म अर्थ काम मोक्षका साधन हरे पुरुषार्थके धारक धीर पुरुष कीर्तिके पुंज तिनकी स्तुतिकर मैं पूर्ण पुण्य उपार्ज्या गुण संचय किया ताका यही फल हूजियो जो या मनुष्य लोकके भव्यजीव जिनशासनविषैं श्रद्धा करि अशुभ कर्मको हरैं ॥ ३८ ॥ यह नेमिजिनेश्वरका चारित्र सकल जीवादि पदार्थका प्रकाशक है यामें षट् द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय की प्ररूपणा है ॥ ३९ ॥ जे महा पण्डित हैं ते याका सभाविषै व्याख्यान करियो अर सभाविषै आवैं जे भव्य, जीवतैं कानरूप हस्तांजलीकरि हरिवंश कथारूप अमृतका पान करियो ॥ ४० ॥ जिनेन्द्रके नाम ग्रहणकरि नवग्रहकी पीडा दुर होय है। यह समस्त पुराण आद्योपांत बांचे अथवा सुने तो पापका नाश होय इसलिये एकाग्र चित्तकरि पण्डित जन याका व्याख्यान अपने अर पराये कृतार्थके अर्थ करहु यह व्याख्यान निज परका तारक है ॥ ४२ ॥ यह पुराण मंगलके अर्थीनिकूं महा मंगलका कारण है अर जो धनके अर्थी हैं तिनकूं धनकी प्राप्तिका कारण है। अर निमित्तज्ञानियोंको निमितज्ञानका कारण है अर महा उपसर्गविषैं शरण है शांतिका कर्त्ता है अर जैनका बडा शकुन शास्त्र है शुभसूचक है ज्ञानार्थीनिकूं ज्ञान, ध्यानर्थीनिकूं ध्यान, योगार्थीनिकूं योग, भोगार्थीनिकूं भोग, राजर्थीनिकूं राज्य, पुत्रर्थीनिकूं पुत्र, विजयार्थीनिकूं विजय, सव वस्तुका दाता यह सर्वज्ञ वीतरागका पुराण है। जो चौवीसों तीर्थेश्वरनिकी महा भक्ति चौबीसों शासन देवता चक्रेश्वरी पद्मावति अम्बिका ज्वालामालिनी आदि सम्यग्दृष्टिनी सव इस पुराणके आश्रित हैं, कैसे हैं यह शासनदेवता सदा जिनधर्म अर जिनधर्मीनके समीप ही हैं ॥ ४५ ॥ अर गिरनारगिरिविषैं श्रीनेमिनाथका मंदिर ताकी

उपासक सिंहवाहिनी चक्रकी धरनहारी जाके आगे क्षुद्रदेवता न टिकैं ऐसी अम्बिका कल्याणके अर्थ जिनशासनकी सेवक हैं तहां परचक्रका विघ्न कैसैं होय ॥ ४५ ॥ नवग्रह अर असुर नाग भूत पिशाच राक्षस यह लोगनिकूं हितकी प्रवृत्तिविषैं विघ्न करै हैं तातैं बुधजन जिनशासनके देवतानके जे गण तिनकरि क्षुद्र देवनकूं शांत करै हैं ॥ ४६ ॥ जे भक्तिकरि यह हरिवंशपुराण पढैं तिनके विना खेद मनवांछित कामकी सिद्धि होय अर धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्राप्ति होय ॥४७॥ तातैं जे निःकपट आर्य पुरुष हैं ते पूजा सहित या पुराणकूं पृथिवीविषैं विस्तारहु कहा करि याकूं विस्तारहु मात्सर्य कहिए पराई उच्चताका न सहना ऐसा अदेखसका भाव ताहि धैर्यके बलकरि प्रबलतारूप जो बुद्धि ताके प्रभावतैं निवारकरि अर जेते मायाचारके आचरण हैं तिन सबनकूं तज करि याका रहस्य विचारहु ॥ ४८ ॥ अथवा भव्य जीवनितैं यह प्रार्थना है कौन अर्थ वे स्वतःस्वभाव ही याही पढैंगे वांचेंगे सुनैंगे विस्तारैंगे जैसैं पर्वत मेहकी धाराकूं सिरपर धारे अर पृथिवीविषैं विस्तारे ॥ ४९ ॥ यह श्रेष्ठ पुराण प्राचीन पुराणके गम्भीर शब्द तेई भये जल तिनकरि पूर्ण सो मुनि मण्डली रूप नदी दोय नयन रूप ढायनेकी धरणहारी तिनकरि पूर्ण चारों दिशि समुद्रान्त विस्तरेगा ॥ ५० ॥ वे जिनेश्वर देव तत्वके द्रष्टा देवनके समूहकरि सेवनेयोग्य जयवन्त होहु प्रजाकूं अति शांतिके देनहारे शान्त है मार्ग जिनका अर निर्मल हैं निद्रारहित केवल नेत्र जिनके ॥ ५१ ॥ अर जिनधर्मकी परम्पराय जयवन्त होहु जो अनादिकालसे काहू करि जीती न जाय। अर प्रजाविषैं कुशल होहु। कबहु दुर्भिक्ष मति होहु मरी मति होहु पापी राजा मति होहु। अर सुखके अर्थ प्रति वर्ष भली वर्षा होहु अर अतिवृष्टि अनावृष्टि मति होहु। पृथ्वी अन्न जल तृण कर सदा शोभित रहो। प्राणीनकूं काहू प्रकारकी पीडा मति होहु ॥५२॥ अर विक्रमादित्यकूं सात सौ पांच वर्ष व्यतीत भये तब यह ग्रन्थ भया। ता समय उत्तर दिशाका राजा इन्द्रायुध कृष्णराजका पुत्र हुता। अर दक्षिण दिशाका राजा श्रीवल्लभ हुता अर पूर्व दिशाका राजा अवंति हुता।

अर पश्चिमका राजा वत्सराज हुता। यह चारों दिशाके चारों राजा महा शूरवीर जीतके स्वरूप पृथिवी मण्डलके रक्षक हुते ॥ ५३ ॥ कल्याण कर बढी है विस्तीर्ण लक्ष्मी जहां ऐसा श्रीवर्धमानपुर तहां श्रीपार्श्वनाथके चैत्यालयविषैं राजा रत्नके राजविषैं यह ग्रन्थ आरम्भा अर पूर्ण भया फिर श्रीशांतिनाथके मन्दिरविषै ग्रन्थ समाप्त किया पूजा भई अति उच्छव भया। जीती है अर संघकी शोभा जाने ऐसा श्रेष्ठ पुन्नाट नामा संघ ताकी परपाटीविषैं उत्पन्न भये श्रीजिनसेन नामा आचार्य तिन सम्यग्ज्ञानके लाभके अर्थ देखा यह हरिवंशचरित्र लक्ष्मीका पर्वत सो या पृथिवीविषैं बहुत काल अति निश्चल तिष्ठो सब दिशिविषै सब जीवनका हरा है शोक जाने ॥ ५४ ॥

इति श्रीअरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्यकृतौ गुरुपर्वक्रमलवर्णनोनाम षट्षष्ठिमः सर्गः ॥ ६६ ॥

भयो कौन विधि ग्रन्थ यह, भाषा रूप बिशाल। सो तुम सुनहु महामती, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ १ ॥
जम्बूद्वीप मझार यह, भरतक्षेत्र शुभ थान। ताके आरिज खंड में, मध्य देश परमान ॥ २ ॥
नगर सवाई जयपुरा, जहां बसे बहु न्यात। राजा पृथिवीसिंह है, सो कछवाहा जाति ॥ ३ ॥
शिरोभाग राजान में, ढूंडाहड पति सोय। ताके मंत्री श्रावका, और न्यातहु होय ॥ ४ ॥
बहुत बसे जैनी जहां, जीवदया व्रत पाल। पूजा करें जिनेंद्र को, आगम सुनें रसाल ॥ ५ ॥
बहुत जीव श्रद्धावती, चरचा मांहि सुजान। ग्रन्थ अध्यातम आतमा, सुने बहुत धर कान ॥ ६ ॥
संस्कृत भाषा मई, भयेजु आदि पुराण। पद्मपुराणादिक बहुर, भाषा भये निधान ॥ ७ ॥
रायमल्ल के रुचि बहुत व्रत क्रिया परवीन। गये देश मालव बिषे, जिन शासन लवलीन ॥ ८ ॥
तहां सुनाये ग्रन्थ उन, भाषा आदि पुराण। पद्म पुराणादिक तथा, तिन को कियो वखान ॥ ९ ॥
सब भाई राजी भये, सुन कर भाषा रूप। तिनके रुचि अति ही बढ़ी, धारी कथा अनूप ॥ १० ॥
रायमल्ल से सबन ने, करी प्रार्थना येह। करवाओ हरिवंश की, भाषा बहु गुण गेह ॥ ११ ॥
आगें दौलतराम ने, टीका भाषा मांहि। करी सो ही अब यह करे, यामें संशय नांहि ॥ १२ ॥
तब भेजी पत्री यहां रायमल्ल धर भाव। लिखो जु साधर्मीन को, करणे धर्म प्रभाव ॥ १३ ॥

तथाजु दौलतराम को, मल्ल लिखी यह बात। करहु भाषा हरिवंश की सबके चित्त सुहात॥ १४ ॥
सब सधर्मिन मिले जब, श्री चैत्यालय मांहि। भाषी दौलत राम से, जिन श्रुतसे अघ जाहि॥ १५ ॥
जिनवानी रस अमृता, जा सम सुधा न और। जाकर भव भरमण मिटे, पावे निश्चल ठौर॥ १६ ॥
यामें विलम्ब न कीजिये, करो शीघ्र ही येह। सफल होहि जाकर सही, उत्तम मनषा देह॥ १७ ॥
रतनचंद दीवान एक, भूपत के परधान। तिन के भाई शुभ मती, विधीचंद परवान॥ १८ ॥
सो दौलत के मित्र अति, भयेजु उद्यम रूप। तिन के आग्रहतैं यह, टीका भई अनूप॥ १९ ॥
दौलत ने अति भाव धर, भाषा कीनों ग्रन्थ। महा शान्त रस को भरो, सुरग मुक्ति को पंथ॥ २० ॥
सीताराम जो लेखका, और सवाई राम। तिन पर लिखवायो जु यह बहुत कथा को धाम॥ २१ ॥
ताकर सुधरे भव यह, अरु पावे शुभ लोक। होवे अति आनन्द अरु, कबहु न उपजे शोक॥ २२ ॥
सुखी होहु राजा प्रजा, होहु सकल दुख दूर। बड़ो धर्म जिनदेव को, जाहि बखाने सूर॥ २३ ॥
सोति जु खंडेलवाल है, गोत्र कासलीवाल। सुत हैं आनन्दराम को, बसवे वास विशाल॥ २४ ॥
सेवक नर पति को सही, नामसु दौलतराम। ताने यह भाषा करी, जप कर जिनवर नाम॥ २५ ॥
अट्ठारह सौ संवता, तापर धर गुण तीस। वार शुक्र पून्यो तिथी, चैत्र मास रति ईस॥ २६ ॥
तादिन यह पूरण भया, श्री हरिवंश पुराण। पढ़ो सुनो अरु सरदहो, पंडित करो बखान॥ २७ ॥
श्री हरिवंश पुराण की, भाषा सुनहु सुजान। सकल ग्रन्थ संख्या भई, सहस बाबीस प्रमाण॥ २८ ॥

इति श्री हरिवंशपुराण भाषा बालबोध वचनिका संपूर्ण।

समाप्त।

श्रीहरिवंशपुराण

(समाप्त)